

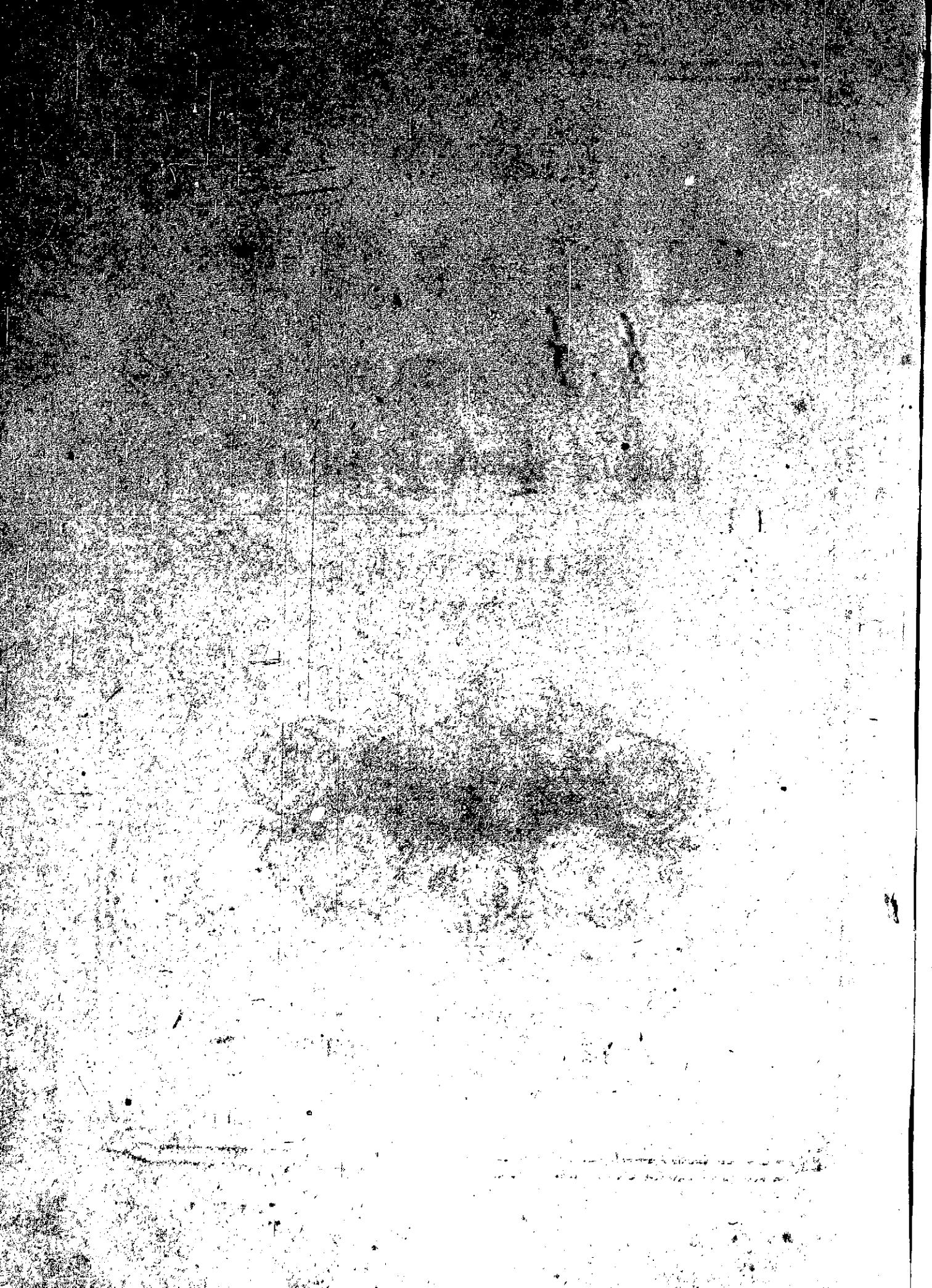
MAGNUM
BULLARIUM
ROMANUM

AUGUSTAE TAURINORUM EDITUM

TOMUS XXIV



SUMPTIBUS
A. VECCO ET SOCIORUM
SUCCESS. SEBASTIANI FRANCO ET FILIORUM
M DCCC LXXII.



BULLARIUM

ROMANUM

PP. II. 8.

BULLARUM
DIPLOMATUM ET PRIVILEGIORUM
SANCTORUM ROMANORUM PONTIFICUM
TAURINENSIS EDITIO

LOCUPLETIOR FACTA

COLLECTIONE NOVISSIMA PLURIUM BREVIUM, EPISTOLARUM, DECRETORUM ACTORUMQUE S. SEDIS

A S. LEONE MAGNO USQUE AD PRAESENS

CURA ET STUDIO

COLLEGII ADECTI ROMAE VIRORUM S. THEOLOGIAE ET S. CANONUM PERITORUM

QUAM

SS. D. N. PIUS PAPA IX

APOSTOLICA BENEDICTIONE EREXIT

AUSPICANTE

RMO AC REVMO DNO S. R. E. CARDINALI

ALOYSIO BILIO.

TOMUS XXIV

CLEMENS XII (ab an. MDCCXXXIV ad an. MDCCXL).

AUGUSTAE TAURINORUM
A. VECCO ET SOCIIS EDITORIBUS
SUCCESS. SEBASTIANI FRANCO ET FILIORUM
M DCCC LXXII.

PIO · IX · PONT · MAX ·

REM · CHRISTIANAM

IAM · ANN · XXVII · FELICITER · MODERANTI

EDITORES · TAVRINENSES

MAGNI · BVLLARII · ROMANI

VOLVMEN · XXIV

QVO · PRIMA · OPERIS · PARS · EXPLETVR

GRATVLABVNDI · DICANT.

XVI · CAL · IVLIAS · ANN · MDCCLXXII.

LECTORI BENEVOLO

EDITORES TAURINENSES

S.

Ad priorem longissimi cursus cum pervenerimus metam, tantisper respiramus, donec ille nobis accrescat subscriptorum numerus qui tot tantisque expensis, quae necesse sunt, compensandis plane sufficiat.

Interim iuverit animadvertisse, opus, quinque ante annos pene deiectum, a nobis relevatum, eo iam nos adduxisse perfectionis, ut unum quoddam per se totum absolutumque conficiat. Quatuor enim supra viginti volumina editionis nostrae hucusque evulgata Magnum Bullarium Romanum Mainardi-Cocquelinianum, viginti et octo voluminibus editionis Romanae olim comprehensum, a Leone M. ad finem pontificatus Clementis XII, quod potissimum desiderabatur, ex integro referunt.

Neque tamen ab incoepto desistimus, usquedum ad
auspicatissimum PII IX pontificatum Ecclesiam Catholi-
cam iam ann. xxvii feliciter moderantis perveniamus. Ac
primum omnium amplissimis laudibus undique celebratum
sapientissimi BENEDICTI XIV Bullarium, quatuor volumi-
nibus constans, anno proximo, ni penitus destituamur
auxiliis, in lucem proferendum nobis proponimus; quod
etiam, prae summa operis praestantia exemplariumque
caritate, separatim empturientibus congruo pretio pro-
stabit. Vale.

Augustae Taurinorum, xvi kal. iulias MDCCCLXXII.

A. VECCO ET SOCI.

INDICULUS

SS. PONTIFICUM CONSTITUTIONUM

QUAE IN TOMO XXIV

EXTRA ORDINEM CHRONOLOGICUM VAGANTUR.

| <i>Datum A. D.</i> | | <i>Pag.</i> |
|-----------------------|---|-------------|
| EUGENIUS IV. | | |
| 14 februarii 1439 | Regularem vitam | 356 |
| CLEMENS VIII. | | |
| 3 februarii 1603 | Alias felicitis recordationis Gregorius PP. XIV | 43 |
| GREGORIUS XV. | | |
| 5 februarii 1622 | Inscrutabili Dei providentia | 72 |
| URBANUS VIII. | | |
| 3 martii 1625 . . | Alias a felicitis recordationis Gregorii XV | 72 |
| 1 iulii 1634 . . . | Sincerae fidei | 369 |
| 20 decembris 1642 | Exponi nobis | 589 |
| ALEXANDER VII. | | |
| 18 martii 1659 . . | Cum sicut dilecti filii | 662 |
| CLEMENS XII. | | |
| 27 aprilis 1735 . . | Avendo noi riconosciuto | 47 |
| 4 iulii (?) 1735 . . | Exponi nobis | 68 |
| 13 iulii (?) 1735 . . | Inter multiplices | 59 |
| 13 luglio 1735 . . | Avendo noi con altra nostra cedola | 150 |
| 14 settembre 1737 | Ci ha fatto rappresentare | 296 |
| 20 settembre 1737 | Avendo la nostra città | 302 |

ADVERTENTIA. Tabulam *novi ordinis* cum *ordine veteri* comparati omittimus, quia sine
ulla mutatione alter alteri adamussim respondet.

INDEX

LECTIONUM VEL MENDOSARUM VEL DUBIARUM

EDITIONIS ROMANAE

QUIBUS OPPONUNTUR SINGULIS SINGULAE EMENDATIONES VEL LECTIONES

NOSTRAE EDITIONIS.

(Vide *Ad. tom. xi pag. xii*).

Edit. Rom. Main. Tom. xiv.

Edit. Taur. Tom. xxiv.

| | | | | | | | |
|-------------|------------------|--------------|--|-------------|------------------|---------------|--|
| <i>Pag.</i> | <i>6 b linea</i> | <i>14-15</i> | <i>tunc interesse deberet.</i> | <i>Pag.</i> | <i>9 b linea</i> | <i>9 ult.</i> | <i>tunc interesse deberet no- vus praepositus provin- cialis (?)</i> |
| " | 6 b | " | 17 ult. ac in re | " | 10 a | " | 20 hac in re |
| " | 7 b | " | 44-45 adstricta... non adstri- ctae... denominatae. | " | 11 b | " | 23-24 adstricta... non adstri- cta... denominata |
| " | 9 a | " | 26 earundem | " | 14 a | " | 2-3 eorundem |
| " | 11 a | " | 16 ut | " | 17 a | " | 16 aut |
| " | 12 a | " | 25 ult. Deo | " | 19 a | " | 14 cum Deo |
| " | 12 b | " | 24 illorumque | " | 19 b | " | 23 illarumque |
| " | 12 b | " | 16 ult. dedicationem | " | 20 a | " | 12 dedicationum |
| " | 15 a | " | 3 ult. relationis | " | 24 a | " | 5 ult. relaxationis |
| " | 15 b | " | 21 instituti | " | 24 b | " | 21 institutis |
| " | 17 a | " | 10 memorati | " | 27 a | " | 2 memoratis |
| " | 18 a | " | 30 retrahi | " | 28 b | " | 13 ult. retrahit |
| " | 18 b | " | 12 ult. nunc | " | 30 a | " | 2 tunc |
| " | 20 a | " | 12 ult. ut : | " | 32 b | " | 1 at |
| " | 22 b | " | 9 ad | " | 36 a | " | 8 ac |
| " | 23 b | " | 6 terras | " | 37 b | " | 14 ult. certas |
| " | 24 a | " | 7 pervertantur | " | 38 b | " | 4 praevertantur |
| " | 24 a | " | 21 servaretur | " | 38 b | " | 18 servatur |
| " | 24 b | " | 5 illos | " | 39 a | " | 12 ult. illis |
| " | 25 b | " | 7 habitae | " | 41 a | " | 4 habitae |
| " | 25 b | " | 26 renovatorum | " | 41 a | " | 22 renovatorum |
| " | 26 b | " | 16 ult. propria | " | 43 a | " | 21 proprio |
| " | 27 a | " | 24 ipsis | " | 43 b | " | 12 si ipsis |
| " | 28 b | " | 23 annuere | " | 46 a | " | 15 amovere |
| " | 28 b | " | 37 sit | " | 46 a | " | 27 est |
| " | 29 b | " | 8 ult. assueta | " | 48 a | " | 17 ult. assumpta |
| " | 33 b | " | 34 Iudices | " | 54b-55a | " | indices |
| " | 34 a | " | 10 ult. Iudices | " | 56 b | " | 15 indices |

Edit. Rom. Main. Tom. XIV.

| | | | | |
|------|------|-------|------------|--|
| Pag. | 24 a | linea | 7 ult. | Indices |
| " | 36 b | " | 36 | moretur |
| " | 37 a | " | 2 ult. | 13 iulii |
| " | 37 b | " | 5 | quae |
| " | 37 b | " | 25 ult. | singulo |
| " | 37 b | " | 20 ult. | ut |
| " | 38 a | " | 25-24 ult. | in quibus |
| " | 38 a | " | 15 ult. | studii |
| " | 38 a | " | 13 ult. | effulgeat |
| " | 38 a | " | 11 ult. | Domino |
| " | 38 b | " | 8 | nuncupata |
| " | 38 b | " | 33 | ac immediata |
| " | 38 b | " | 36-37 | concessionum |
| " | 38 b | " | 49 | eiusdem S. R. E. |
| " | 38 b | " | 50 | conservatione |
| " | 38 b | " | 51 | statueret |
| " | 38 b | " | 7-6 ult. | Innocentii |
| " | 39 a | " | 16 | anno eiusdem Domini |
| " | 39 a | " | 21 | sub eodem Benedicto |
| " | 39 a | " | 24 | emanata fuerit |
| " | 39 a | " | 32 | versa |
| " | 39 a | " | 34 | illius |
| " | 39 a | " | 21 ult. | civitates |
| " | 39 b | " | 9 | prosynodali |
| " | 39 b | " | 10 | approbandam |
| " | 39 b | " | 21-22 | sed omni |
| " | 39 b | " | 9 ult. | attenta |
| " | 39 b | " | 7 ult. | de Verona |
| " | 40 a | " | 4 | attento quo |
| " | 40 a | " | 4-5 | seminarium |
| " | 40 a | " | 11 | aedes |
| " | 40 a | " | 15-16 | ampliaverit |
| " | 40 a | " | 16 | et colonorum |
| " | 40 a | " | 33 | qui |
| " | 40 a | " | 42-43 | eorumque |
| " | 40 a | " | 19 ult. | matraque deliberatione |
| " | 40 b | " | 10 | ipsi |
| " | 40 b | " | 18 | de nova |
| " | 41 a | " | 5-7 | huiusmodi aliaque contra- ria minime emanassent |
| " | 41 a | " | 8 | et |
| " | 41 a | " | 12 | quatenus |
| " | 41 a | " | 23 | constitutionibus et ordina- tionibus |
| " | 41 a | " | 18 ult. | pari |
| " | 41 a | " | 17 ult. | contrariis |
| " | 41 a | " | 16 ult. | quod eorundem |
| " | 41 a | " | 2 ult. | vel ausu |
| " | 41 b | " | 3 | noviter |
| " | 41 b | " | 27 | volumus |
| " | 42 a | " | 18 | ibique |
| " | 42 a | " | 20 | profertur |
| " | 42 a | " | 28 | observantiam |
| " | 42 a | " | 31 | residet |
| " | 42 a | " | 15 ult. | exceptam |
| " | 42 b | " | 31 | 4 iulii |
| " | 43 a | " | 31 | locorum |

Edit. Taur. Tom. XXIV.

| | | | | |
|------|------|-------|---------|---------------------------------|
| Pag. | 56 a | linea | 18 | indices |
| " | 59 b | " | 1 ult. | moretur |
| " | 61 a | " | 6 | 15 iulii |
| " | 61 a | " | 13 ult. | quae pro |
| " | 61 b | " | 17 | cingulo |
| " | 61 b | " | 22 | uti |
| " | 62 a | " | 11 ult. | et quibus |
| " | 62 a | " | 3 ult. | studii |
| " | 62 a | " | 1 ult. | grandescat |
| " | 62 b | " | 2 | Domini |
| " | 62 b | " | 21 | nuncupatae |
| " | 63 a | " | 4 | exemptioneque ac imme- diata |
| " | 63 a | " | 8 | constitutionum |
| " | 63 a | " | 14 | S. R. E. |
| " | 63 a | " | 21 | consecratione |
| " | 63 a | " | 23 | statuerat |
| " | 63 a | " | 2 ult. | Caelestini |
| " | 63 b | " | 23 | anno Domini |
| " | 63 b | " | 27 | sub Benedicto |
| " | 63 b | " | 30 | emanaverit |
| " | 63 b | " | 2 ult. | versae |
| " | 64 a | " | 1 | ullius |
| " | 64 a | " | 16 | civitatem |
| " | 64 a | " | 2 ult. | praesynodali |
| " | 64 a | " | 1 ult. | approbarunt |
| " | 64 b | " | 11 | sed et omni |
| " | 65 a | " | 9-10 | attento |
| " | 65 a | " | 12 | de Verme |
| " | 65 a | " | 24 | attento quod |
| " | 65 a | " | 24-25 | seminarium puerorum |
| " | 65 a | " | 34 | sedes |
| " | 65 a | " | 4 ult. | amplificaverit |
| " | 65 a | " | 2 ult. | colonorum |
| " | 65 b | " | 17 | quique |
| " | 65 b | " | 27 | earumque |
| " | 65 b | " | 6 ult. | meraque liberalitate |
| " | 66 a | " | 18 ult. | ipse |
| " | 66 a | " | 11 ult. | de novo |
| " | 67 a | " | 8 | huiusmodi minime ema- nasset |
| " | 67 a | " | 9 | vel |
| " | 67 a | " | 14 | quavis |
| " | 67 a | " | 11 ult. | constitutionibus |
| " | 67 b | " | 18 | simili |
| " | 67 b | " | 18 | ceterisque contrariis |
| " | 67 b | " | 20 | earundem |
| " | 67 b | " | 7 ult. | vel ei ausu |
| " | 67 b | " | 3 ult. | noverit |
| " | 68 a | " | 24 | voluimus |
| " | 68 b | " | 7 ult. | ubique |
| " | 69 a | " | 2 | praefertur |
| " | 69 a | " | 11 | observantiam |
| " | 69 a | " | 15 | desideret |
| " | 69 a | " | 2 ult. | excerptam |
| " | 69 b | " | 4 ult. | 4 augusti (?) |
| " | 70 b | " | 20-27 | domorum |

| | |
|---|--|
| Pag. 43 a linea 5 ult. monasterii | Pag. 71 b linea 20-21 monasteriis |
| » 44 b » 8 ult. suspensio. | » 73 b » 8 licet suspensio |
| » 45 b » 28 ult. Romanis | » 75 a » 8 Romani |
| » 46 b » 18 ult. quaecumque | » 76 b » 23-24 quaecumque |
| » 47 a » 11 et | » 77 a » 9 si |
| » 49 b » 4 ult. aut. | » 81 b » 27 ad |
| » 51 a » 5 ult. ac de verbo | » 84 a » 21 ult. ac si de verbo |
| » 52 a » 34 vacuumus. | » 85 b » 4-5 vacuas |
| » 53 b » 10 ult. propterea. | » 87 b » 2 praeterea (?) |
| » 53 b » 20 eos... occupatos | » 87 b » 10 ult. eum... occupatum |
| » 55 a » 10 nec | » 89 b » 1 ult. necnon |
| » 55 a » 12 audito | » 90 a » 1 addito |
| » 56 b » 9-10 nominandarum | » 92 a » 8 ult. nominandarum, assignari et expediri |
| » 57 b » 27 pertinentia | » 94 a » 21 pertinerent |
| » 57 b » 29 propitiorem | » 94 a » 24 promptiorem |
| » 57 b » 45 expeditis | » 94 a » 2 ult. expedita |
| » 58 a » 27 ult. dismembraremus | » 95 a » 16 ult. dismembraretur |
| » 58 b » 18 ult. praefatae | » 96 a » 21 ult. praefatae pertinente |
| » 59 a » 11 requisita | » 96 b » 9 requisita, liceat |
| » 59 a » 22 sibi omnes | » 96 b » 20 omnes |
| » 59 a » 12 ult. concessam | » 97 a » 20 concessum |
| » 59 b » 18 direxerit | » 97 b » 7 dirigens |
| » 59 b » 37 iudicibus | » 97 b » 15 ult. iuribus |
| » 59 b » 39 in dicta | » 97 b » 13 ult. qui in dicta |
| » 59 b » 8 ult. vel | » 98 a » 14 ei |
| » 60 a » 40 quorum et quarum | » 98 b » 17-18 eorum et earum |
| » 60 a » 9 ult. quolibet | » 98 b » 1 ult. quodlibet |
| » 60 b » 6 assisterent | » 99 a » 14 ei assisterent |
| » 60 b » 29 revocari. | » 99 a » 5 ult. revocari posse |
| » 60 b » 44 contigerit. | » 99 b » 11 contigisset |
| » 61 a » 23 iurisdictione | » 100 a » 19 iurisdictionem |
| » 61 b » 4 parte | » 100 b » 16 ult. parte derogamus |
| » 61 b » 12 expeditis | » 100 b » 8 ult. expediri |
| » 61 b » 37-38 eorum | » 101 a » 20 eorumque |
| » 61 b » 45 insertis | » 101 a » 15 ult. inserti |
| » 61 b » 48 insertis | » 101 a » 12 ult. inserti |
| » 61 b » 4 ult. omnipotentis | » 101 b » 8 omnipotentis |
| » 62 a » 21 ult. quibus | » 102 a » 20 quibusvis |
| » 63 a » 23 videns | » 103 b » 8 videntibus |
| » 63 a » 32 ipse | » 104 b » 17 et ipse |
| » 64 a » 3 exercenda | » 104 b » 8 ult. ad exercenda |
| » 67 a » 16 visi | » 109 a » 13 uti |
| » 69 b » 7 longe l. | » 112 b » 10 longae |
| » 71 a » 3 pro qua | » 114 b » 11 ult. proque |
| » 71 a » 27 ult. archimandrita | » 115 a » 22 ult. archimandritae |
| » 79 a » 6 non si senti | » 126 b » 8 non si senti |
| » 80 b » 30 che il | » 128 b » 18 ult. che se il |
| » 82 b » 16 ult. le parti. | » 131 b » 21 ult. le porte |
| » 84 b » 10-11 la lettura | » 134 a » 4 la lettera |
| » 85 a » 9 ult. raffreddarsi | » 135 a » 22 raffreddarsi |
| » 87 a » 6 ult. del comune | » 138 a » 1 dal comune |
| » 87 b » 22 ult. dal primo | » 138 b » 6 del primo |
| » 93 b » 37 sia | » 146 b » 23 si è |
| » 96 b » 23 sarà | » 150 b » 14 saria (?) |
| » 100 b » 17 ult. summationem | » 156 a » 8 ult. consummationem |

Pag. 109 a linea 4 prima degli altri, dovrà.

Pag. 167 a linea 14 prima degli altri, e met-
s'ora prima degli altri
dovrà

| | |
|--------------------|-----------------------------|
| » 110 b » 35 | disputata |
| » 119 a » 1 | ogni cosa |
| » 120 b » 5-4 ult. | custodiae S. Francisci . . |
| » 131 b » 42 | converti |
| » 131 b » 6 ult. | negocii |
| » 132 a » 41 | quibus |
| » 132 b » 30 | cum prius |
| » 132 b » 2 ult. | titulo ex |
| » 132 b » 1 ult. | gauderent |
| » 133 a » 10 ult. | innodati |
| » 133 a » 7 ult. | absolutos |
| » 134 a » 27 ult. | dal quale ancora posti, che |
| » 138 a » 6 | da più introdotti |
| » 130 a » 2 ult. | uberes |
| » 130 a » 1 ult. | spiritualium |
| » 131 b » 1 | vel |
| » 134 b » 22 | intenderet |
| » 134 b » 25 ult. | omnibus |
| » 135 a » 25 ult. | maturae |
| » 135 a » 23 | desideret |
| » 137 a » 11 | parte |
| » 137 a » 25 ult. | Sacrificii |
| » 137 a » 20 ult. | magisque |
| » 137 a » 9 ult. | necessarium |
| » 138 a » 29 | ac |
| » 138 b » 20 | concessis |
| » 143 b » 33 | expositio |
| » 144 a » 18 ult. | et |
| » 144 b » 13 | Contii |
| » 144 b » 26 | 1726 |
| » 145 a » 14 ult. | interveniri |
| » 146 a » 19 | ubique |
| » 146 b » 14 | secretariis |
| » 147 a » 29 | absolutos |
| » 147 b » 14 ult. | ibidem |
| » 148 b » 28 | nihil fuisse |
| » 149 a » 33 | eoque |
| » 149 a » 37 | oratione |
| » 149 b » 21 | quoad |
| » 151 b » 3 ult. | casus |
| » 151 b » 1 ult. | ut |
| » 152 b » 30 | retinendi |
| » 153 a » 29 | missa |
| » 153 a » 33 | comparandi |
| » 153 b » 17 | maiori |
| » 154 b » 12 | certaverit |
| » 155 a » 13 | industria |

| | |
|-------------------|---|
| » 169 a » 13 ult. | depurata |
| » 180 a » 21 ult. | ogni casa (?) |
| » 181 b » 15 ult. | custodiae fratrum sancti Francisci 1 |
| » 182 a » 18 ult. | conversi |
| » 183 a » 14 ult. | negociis |
| » 183 b » 10 ult. | quibusvis |
| » 184 b » 13 | eum prius |
| » 185 a » 6 | titulo et |
| » 185 a » 7 | non gauderent |
| » 185 b » 18 ult. | innodatae |
| » 186 b » 16 ult. | absolutas |
| » 187 a » 6 | il quale ancora porti che 2 |
| » 192 a » 7 | (?) |
| » 193 b » 19 ult. | ad uberes |
| » 195 b » 18 ult. | spiritualem |
| » 197 a » 6 ult. | id |
| » 202 a » 20-21 | intentaret |
| » 202 b » 2 | cum omnibus |
| » 208 a » 18 | mature |
| » 203 a » 20 | desiderat |
| » 206 a » 21 ult. | voluntate (?) |
| » 206 b » 3 | lanificii |
| » 206 b » 9 | magis magisque |
| » 206 b » 21 | necessariam |
| » 207 b » 1 ult. | aut |
| » 203 b » 6-7 | concessas |
| » 216 a » 13 ult. | exposito |
| » 217 a » 13 ult. | et aliis quibusvis, etiam |
| » 217 b » 14 ult. | Conty |
| » 217 b » 1 ult. | 1736 |
| » 218 b » 5 ult. | intervenerint |
| » 220 a » 12 | ibique |
| » 220 b » 11 ult. | secretarii 3 |
| » 221 b » 26 | absolutas |
| » 222 b » 6 ult. | ibidem |
| » 224 a » 19 ult. | nihil contrarii fuisse . . |
| » 225 a » 18 | eaque |
| » 225 a » 23 | orationem |
| » 225 b » 9 ult. | praesentibus quoad . . . |
| » 228 b » 1 ult. | coetus |
| » 229 a » 1 | ex |
| » 230 a » 17 | retinenda |
| » 230 b » 7 ult. | missam |
| » 230 b » 3 ult. | comparandis 4 |
| » 231 b » 1 | muniri |
| » 232 a » 16 ult. | certavit |
| » 233 b » 14 | industri |

1 Hanc emendationem nunc addimus.

2 Aptius corrigo dal quale ancora consti, che.

3 At lectio Main, potius sic explicanda: reverendo patre
domino Fagnani de Alteris huius sacrae Congregationis tunc
secretariis.4 Male in nostra editione ex editione Main, legitur com-
parandi.

| | | | |
|------------------------|---|----------------------|--------------------------------------|
| Pag. 155 a linea 21-22 | convicto | Pag. 233 b linea 23 | convictu |
| » 155 a » 28 ult. | quam | » 234 a » 2 | quom |
| » 155 a » 5-4 ult. | Massiliam | » 234 a » 18 ult. | Massilia |
| » 155 b » 27 ult. | qui cum | » 234 b » 10 | quicum |
| » 155 b » 13 ult. | eximia pietate | » 235 a » 8 | eximiae pietatis |
| » 156 a » 10 ult. | offerent | » 235 b » 4 ult. | offerent |
| » 156 a » 2 ult. | providit | » 236 a » 3 | providet |
| » 156 a » 1 ult. | consuluit | » 236 a » 4-5 | consulit |
| » 156 b » 1 | ardemus | » 236 a » 5-6 | ardens |
| » 156 b » 36-37 | laberentur | » 236 b » 2-3 | laborarent (?) |
| » 156 b » 10 ult. | ideoque | » 236 b » 15 ult. | ideo, qui |
| » 157 a » 8-9 | asceterii | » 237 a » 4 | asceteriis |
| » 157 a » 16 ult. | christianorum | » 237 b » 9 | christianarum |
| » 157 b » 6 | offendisset ob | » 237 b » 11 ult. | offendisset. Ob |
| » 157 b » 18 | datori | » 237 b » 1 ult. | datore |
| » 157 b » 28 | labefactaverat ad | » 238 a » 13 | labefactaverat. Ad |
| » 157 b » 35 | langore | » 238 a » 18 | languore |
| » 158 b » 8 | favore | » 239 b » 8 | furore |
| » 158 b » 20 | non | » 239 b » 20 | nos |
| » 159 a » 9 | providebam | » 240 a » 5 ult. | Providebam Dominum |
| » 159 a » 1 ult. | sententiae | » 241 a » 15 | sententia |
| » 159 b » 29 | laboribus | » 241 b » 1 | laboribus fractus |
| » 159 b » 18 ult. | apparet | » 241 b » 14 ult. | appareret |
| » 160 a » 13 | quo | » 242 a » 15 | quod |
| » 163 a » 2 ult. | qui | » 247 a » 1 ult. | quibus |
| » 163 a » 1 ult. | fidem | » 247 b » 1 | fidelem |
| » 163 b » 9 | preces | » 247 b » 11 | precibus |
| » 163 b » 5 ult. | id | » 248 a » 16 ult. | ad id |
| » 164 a » 30 ult. | studio | » 248 b » 11 ult. | stadio |
| » 165 a » 17 ult. | quandocumque | » 250 b » 14-15 | quandoque |
| » 165 b » 9 | parentibus | » 250 b » 2 ult. | parentibus |
| » 167 a » 24 | tractus | » 254 a » 6 ult. | tractu (?) |
| » 168 a » 22 | incidit | » 255 a » 22 | incipit |
| » 168 a » 37 | madibus | » 255 a » 6 ult. | madidus |
| » 172 b » 21 | commemorationem | » 262 a » 18-19 | commemoratione |
| » 172 b » 2 ult. | demum | » 262 b » 25 | decimum |
| » 173 b » 22 ult. | se offerret uno | » 264 a » 20-21 | se offerret. Uno |
| » 174 a » 6 | ambitionem sacculi au- scultavit | » 264 b » 5-6 | ambitionem sacculi. Au- scultavit |
| » 174 b » 2 | exhalans | » 265 a » 12 ult. | exhalans |
| » 175 a » 15 ult. | posset | » 266 b » 16 ult. | potest |
| » 176 a » 5 | robore | » 267 b » 10 ult. | rubore |
| » 176 a » 12 | libere | » 267 b » 2 ult. | liberao |
| » 176 a » 27 | excreverat | » 268 a » 11 ult. | excrevit |
| » 176 a » 28 ult. | surrexerat | » 268 a » 10 ult. | surrexit |
| » 176 a » 7 ult. | caelesti | » 268 b » 11 | caelestis |
| » 176 b » 31 | exequendo | » 269 a » 6 | exequendae |
| » 176 b » 12-11 ult. | cuius | » 269 a » 8 ult. | eius |
| » 177 a » 21 | aegritudinis | » 269 b » 16 ult. | aegritudinibus |
| » 177 a » 26-27 | constructo | » 269 b » 11-10 ult. | constructa |
| » 177 b » 2 ult. | quam | » 271 a » 15 | quum |
| » 181 b » 35 | caelesti | » 276 b » 5 ult. | caelestis |
| » 181 b » 7 ult. | virtutum | » 277 a » 17 ult. | virtutem |
| » 182 b » 9 | aut | » 278 a » 25 | semper autem |
| » 182 b » 13 | virtutum | » 278 a » 29 | virtutem |
| » 183 b » 10-11 | dolorum | » 279 b » 4 ult. | dolorem |
| » 187 a » 14 | ut | » 285 b » 11 | eum ut |
| » 188 b » 40-41 | supplicantibus | » 288 a » 2 | supplicationibus |

| Pag. | lin. | praecepta | pag. | lin. | praecepta |
|---------|-------|--|------|-------|--|
| 188 | 1 | ult. 31 | 288 | 3 | ult. 11 (?) |
| 189 | 28 | quo | 292 | 3 | quod |
| 192 | 28-27 | applicationi | 294 | 28 | supplicationi inclinati |
| 193 | 13 | ult. aliquo | 294 | 16 | aliquo |
| 198-199 | | absolutus | 304 | 2-3 | absolutus |
| 199-200 | | presbyter | 306 | 9 | presbyteris |
| 201 | 28 | ult. 1784 | 308 | 14 | 1785 (?) |
| 201 | 6 | ob turbam | 308 | 12 | obturbari |
| 201 | 27 | suffragetur | 308 | 9 | ult. suffragetur |
| 202 | 15 | ult. ad extracto | 310 | 9 | ult. ab extracto |
| 203 | 11 | ult. cognoverint | 310 | 6 | ult. cognoverit |
| 203 | 16 | illius nimirum | 311 | 25 | illius; laici nimirum |
| 203 | 32 | ad hoc ut sufficiat | 312 | 23 | ad hoc sufficiat |
| 203 | 16 | ult. obtineri | 312 | 3-4 | obtinere |
| 204 | 11 | Domino | 313 | 21-22 | in Domino |
| 204 | 13 | satagimus | 318 | 24 | satagamus |
| 204 | 19 | ordinatus | 318 | 12 | ult. ornatus |
| 205 | 25 | ut serio | 314 | 18 | et serio |
| 205 | 14 | ult. habitationis | 315 | 21 | habitationis oratorio |
| 206 | 28 | ult. domui valetudinario sive archihospitali | 316 | 6-5 | ult. domus, valetudinarii sive archihospitalis |
| 206 | 91 | In | 315 | 3 | Id |
| 207 | 17 | ult. ad centum | 319 | 3 | centum |
| 208 | 18 | ult. ac quarum | 320 | 15 | quarum |
| 209 | 33 | quod ecclesias | 321 | 24 | quod ecclesias |
| 209 | 27 | ult. quarum | 321 | 18 | quorum |
| 210 | 1 | partes | 323 | 9 | ult. pares |
| 211 | 91 | obtinentes | 324 | 3 | ult. obtinentis |
| 211 | 27-28 | apponendi | 324 | 6 | apponendo |
| 211 | 39 | competentia | 324 | 17 | competentibus |
| 211 | 43 | clausula | 324 | 21 | clausa |
| 212 | 3-4 | secundodictae | 325 | 5 | ult. secundodicta |
| 212 | 14 | eiusdem | 326 | 6 | in eiusdem |
| 212 | 25 | excogitabili | 327 | 5 | inexcogitabili |
| 212 | 33 | et cum | 327 | 12 | cum |
| 212 | 3 | ult. inhaerentis | 327 | 5 | inhaerentibus |
| 213 | 21 | reservata | 328 | 13 | reservatae |
| 213 | 12 | ult. a dignitatibus | 329 | 9 | ac dignitatibus |
| 214 | 12 | ult. rationem | 329 | 8 | ult. ad rationem |
| 214 | 9 | ult. ad rationem | 329 | 4 | ult. et ad rationem |
| 215 | 2 | illos | 331 | 22 | illos et illas |
| 216 | 1 | depositiones | 332 | 5 | dispositiones |
| 216 | 17 | computandae | 333 | 5 | computandae, fructus, redditus et proventus ipsis ut praefertur applicatos et appropriatos |
| 216 | 24 | ult. eaque | 333 | 2 | ult. aequae |
| 217 | 20 | easque | 334 | 4 | ult. easdem |
| 217 | 18 | ult. solutionem | 335 | 17 | solutionem |
| 217 | 13 | ult. audiri | 335 | 23 | audiri |
| 218 | 19 | semper | 336 | 13 | super |
| 218 | 9 | ult. resultantes | 336 | 15 | resultante |
| 220 | 26 | et Recanatum | 339 | 7 | ad decanatum |
| 221 | 19 | ult. novo | 341 | 6 | novo |
| 221 | 41 | unico | 342 | 20 | ult. unico |
| 222 | 17 | ult. quoad | 343 | 17 | ult. quae ad |
| 222 | 17-16 | ult. existentes | 343 | 16 | ult. existentem |

| | | | | | |
|-------------------|----------------------|--|-------------------|----------------|---|
| <i>Pag. 222 b</i> | <i>linea 27 ult.</i> | <i>respectue</i> | <i>Pag. 344 a</i> | <i>linea 3</i> | <i>respectue competebat</i> |
| » 222 b | » 9 ult. | <i>iur.</i> | » 344 a | » 29 | <i>iuris</i> |
| » 223 a | » 8 | <i>nec illo.</i> | » 344 a | » 3 ult. | <i>nec illi</i> |
| » 223 b | » 1 ult. | <i>praesentis</i> | » 346 a | » 2 | <i>praefatis</i> |
| » 224 a | » 27 ult. | <i>duas</i> | » 346 b | » 6 | <i>tres</i> |
| » 224 a | » 3 ult. | <i>praesentibus</i> | » 346 b | » 13 ult. | <i>praefatis</i> |
| » 224 b | » 14 | <i>validatis</i> | » 347 a | » 5 | <i>validitatem</i> |
| » 225 a | » 37 | <i>ut infra</i> | » 348 a | » 15 | <i>et ut infra</i> |
| » 225 b | » 12 | <i>ac uti</i> | » 348 b | » 18 | <i>uti</i> |
| » 227 b | » 26 | <i>ampliare</i> | » 352 a | » 17 | <i>ampliata</i> |
| » 230 a | » 13 | <i>quod</i> | » 356 a | » 20 | <i>quoad</i> |
| » 231 b | » 8 | <i>impertitas</i> | » 358 b | » 16 | <i>impertitas collectis</i> |
| » 231 b | » 23 ult. | <i>ut ipse</i> | » 359 a | » 15 | <i>ut ipse habeat</i> |
| » 231 b | » 10-9 ult. | <i>praesentis</i> | » 359 a | » 11 ult. | <i>praefatis</i> |
| » 231 b | » 9 ult. | <i>habitationi dicti</i> | » 359 a | » 11 ult. | <i>ullius habitationis, sed dicti</i> |
| » 234 a | » 27 | <i>insertis</i> | » 363 a | » 5 | <i>insertis habentes</i> |
| » 235 a | » 22-23 | <i>aliique presbyteri</i> | » 364 b | » 17 | <i>aliosque presbyteros</i> |
| » 236 a | » 19 | <i>varietates</i> | » 366 a | » 11 ult. | <i>varietate</i> |
| » 236 a | » 20 | <i>in quibuscumque</i> | » 366 a | » 10 ult. | <i>in quibus cuiuscumque</i> |
| » 237 a | » 9 ult. | <i>domus</i> | » 368 a | » 18 ult. | <i>domui</i> |
| » 238 b | » 5 | <i>ut</i> | » 370 a | » 5 | <i>et</i> |
| » 238 b | » 7 | <i>quem</i> | » 370 a | » 7 | <i>quam</i> |
| » 238 b | » 17 | <i>sicuti</i> | » 370 a | » 18 | <i>sicque</i> |
| » 239 a | » 11 | <i>auditores</i> | » 370 b | » 1 ult. | <i>auditore</i> |
| » 239 a | » 12 | <i>afficiant</i> | » 371 a | » 1-2 | <i>officiant</i> |
| » 239 a | » 31 ult. | <i>exceptionis</i> | » 371 a | » 13 ult. | <i>exceptiones</i> |
| » 240 a | » 11 ult. | <i>tenore</i> | » 373 a | » 15 ult. | <i>tenores</i> |
| » 240 a | » 9 ult. | <i>plenius continetur</i> | » 373 a | » 13 ult. | <i>. (?)</i> |
| » 240 a | » 2 ult. | <i>porrectis</i> | » 373 a | » 5 ult. | <i>porrecto</i> |
| » 240 b | » 7 | <i>quam</i> | » 373 b | » 3 | <i>iam</i> |
| » 240 b | » 17 | <i>nostrum</i> | » 373 b | » 13 | <i>novum</i> |
| » 240 b | » 99 | <i>qua</i> | » 373 b | » 25 | <i>quae</i> |
| » 240 b | » 12 ult. | <i>ac</i> | » 374 a | » 6 | <i>separatis ac</i> |
| » 241 a | » 26 ult. | <i>electionum confirmare</i> | » 374 b | » 11 | <i>electionum confirmatio¹</i> |
| » 242 b | » 10 ult. | <i>seu impressis</i> | » 377 a | » 2 | <i>seu exemplis etiam impressis</i> |
| » 242 b | » 2 ult. | <i>aprilis</i> | » 377 a | » 10 | <i>mai (?)</i> |
| » 243 b | » 29 | <i>remissa</i> | » 378 a | » 11 ult. | <i>remissae</i> |
| » 244 a | » 23 | <i>remissa</i> | » 378-79 a | » 17 | <i>remissae</i> |
| » 245 b | » 16 | <i>regum</i> | » 381 a | » 1 ult. | <i>regnum</i> |
| » 248 a | » 30 | <i>convertant</i> | » 385 b | » 24 | <i>convertantur</i> |
| » 248 a | » 35 | <i>Iuravit</i> | » 385 b | » 14 ult. | <i>Iuravi</i> |
| » 249 b | » 21-22 | <i>parochialium</i> | » 387 b | » 5 ult. | <i>parochiarum</i> |
| » 249 b | » 25 | <i>ut iidem</i> | » 387 b | » 2 ult. | <i>ut iidem quibus ali</i> |
| » 249 b | » 29 ult. | <i>annos</i> | » 388 a | » 16 | <i>annis</i> |
| » 249 b | » 22-21 ult. | <i>gaudent</i> | » 388 a | » 24 | <i>gaudeant</i> |
| » 250 a | » 21 | <i>qui post</i> | » 388 b | » 25 | <i>post</i> |
| » 250 a | » 25-26 | <i>priores provinciales</i> | » 388 b | » 29-30 | <i>prioris provincialis</i> |
| » 250 b | » 32 ult. | <i>tam</i> | » 389 b | » 17 ult. | <i>qui tam</i> |
| » 251 a | » 9 | <i>conficere consolatium</i> | » 390 a | » 26 | <i>adire consulatium</i> |
| » 251 a | » 28 | <i>a die</i> | » 390 b | » 1 | <i>vel a die</i> |
| » 251 a | » 37 | <i>dominorum</i> | » 390 b | » 10 | <i>dominium</i> |
| » 252 b | » 27 | <i>numerus</i> | » 392 b | » 4 ult. | <i>munera</i> |
| » 252 b | » 28 ult. | <i>cathedra aliqua</i> | » 393 a | » 15 | <i>cathedram aliquam</i> |
| » 252 b | » 22 ult. | <i>ac revera</i> | » 393 a | » 21 | <i>ac ut revera</i> |

¹ Vel legi posset *electiones confirmare*.

| | | | | | |
|------------|---------------|---------------------------|------------|----------------|-------------------------|
| Pag. 253 b | linea 18 ult. | infirmittatis | Pag. 394 b | linea 8-7 ult. | infirmittati |
| " 254 a | " 2 ult. | agiter | " 395 b | " 13 ult. | agiter |
| " 257 b | " 11 | legitime | " 399 b | " 20 | legitimae |
| " 257 b | " 14 | sessionem | " 399 b | " 23 | cessionem |
| " 260 a | " 24 | longitudinem | " 402 b | " 4 ult. | dictam longitudinem |
| " 261 b | " 1 | mula | " 404 a | " 11 ult. | mulae |
| " 261 b | " 29 ult. | provinciali | " 404 b | " 18 | a provinciali |
| " 263 a | " 17 ult. | secum | " 405 a | " 1 ult. | secus |
| " 266 a | " 17 ult. | praedictorum | " 410 b | " 1 | praedictorum nomina |
| " 266 b | " 16 ult. | dies enim | " 411 a | " 15 | dies etiam |
| " 267 b | " 6 ult. | ediderit | " 412 a | " 9 ult. | ederit |
| " 268 a | " 5 ult. | subvenerit | " 413 a | " 2-3 | subvenerint |
| " 269 b | " 7 ult. | sermone | " 414 b | " 14 | sermonem |
| " 270 a | " 20-21 | mysterium | " 414 b | " 8 ult. | mysterii |
| " 270 a | " 24 ult. | et sicut | " 415 a | " 13 | et sive |
| " 270 a | " 8 ult. | familiae | " 415 a | " 19 ult. | familiam |
| " 270 b | " 32 | intra | " 415 b | " 19 | infra |
| " 270 b | " 44 | iuxta | " 415 b | " 16 ult. | iusta |
| " 270 b | " 8 ult. | renunciare | " 415 b | " 6 ult. | vel renunciare |
| " 271 a | " 22 | iuxta | " 416 a | " 23 | iusta |
| " 271 a | " 29 | contributione | " 416 a | " 31 | contributione adiuvetur |
| " 271 a | " 33 | alter | " 416 a | " 35 | aliter |
| " 272 b | " 25 | puniatur | " 418 a | " 2-3 | puniat |
| " 273 a | " 11-10 ult. | utuntur | " 419 a | " 1 | utantur |
| " 274 b | " 2 | pro | " 420 a | " 10 | pro ea |
| " 276 a | " 19 | ut si | " 422 a | " 4 | et si |
| " 277 a | " 28 ult. | etsi | " 423 a | " 8 ult. | at si |
| " 277 b | " 8 ult. | emanata | " 423 b | " 13-14 | emanatas |
| " 278 b | " 9 ult. | et | " 425 a | " 8 ult. | ei |
| " 279 b | " 3 | exempti | " 426 a | " 8 | exemplis |
| " 279 b | " 24-25 | quod a gubernio | " 426 b | " 16 ult. | quod gubernio |
| " 280 a | " 3 | ipsemet | " 426 b | " 22 | ipsimet |
| " 281 b | " 18 ult. | docuerit | " 429 a | " 10-11 | docuerint |
| " 281 b | " 18 ult. | studuerit | " 429 a | " 15 | studuerint |
| " 282 b | " 15 | distinguatur | " 430 a | " 10 | distinguantur |
| " 292 b | " 7-6 ult. | designanter | " 430 b | " 5-6 | designantur |
| " 283 b | " 21 ult. | collegiis | " 431 b | " 23 | collegis |
| " 284 a | " 23 | initum | " 432 a | " 15 | initium |
| " 285 a | " 21 | religionibus | " 433 b | " 1 | regionibus |
| " 285 b | " 3-4 | bibliothecarii | " 433 b | " 1 ult. | bibliothecario |
| " 286 a | " 5-6 | expositae sunt | " 434 b | " 9 | exposita sunt |
| " 286 a | " 17 | unitatis | " 434 b | " 20 | unitas |
| " 286 b | " 23 ult. | causa | " 435 b | " 12 | casu |
| " 287 a | " 15 | propterea | " 435 b | " 1 ult. | praeterea |
| " 287 a | " 34 | generalis | " 436 a | " 18 | generales |
| " 287 a | " 14 ult. | generalis | " 436 a | " 7 ult. | generales |
| " 287 b | " 29 ult. | qua | " 436 b | " 9 ult. | quae |
| " 288 a | " 22 ult. | unaquaque | " 437 b | " 11 | unaquaque |
| " 288 a | " 14 ult. | possit et quod | " 437 b | " 22 | possit quod |
| " 288 b | " 14 | eiusdem | " 437 b | " 1 ult. | easdem |
| " 289 a | " 7 | prima | " 438 b | " 13 | primo |
| " 289 a | " 29 ult. | gratia | " 438 b | " 2 ult. | gratiae |
| " 289 b | " 30 ult. | et quae | " 439 b | " 16 | et quod |
| " 290 a | " 8 | erant | " 440 a | " 2 | erunt |
| " 290 a | " 25 ult. | servatur | " 440 a | " 10 ult. | servetur |
| " 291 b | " 2 ult. | idem | " 442 b | " 15 | item |
| " 292 a | " 15-14 ult. | attendatur | " 443 a | " 14 ult. | attendatur |
| " 292 b | " 6 | tunc | " 443 a | " 15 ult. | si par numerus, tunc |

| | |
|---|---|
| Pag. 293 b linea 40-41 decidenter | Pag. 444 b linea 1 ult. decidetur |
| » 293 b » 13 ult. in sexennium | » 445 a » 13 in sexennium celebretur capitulum electivum |
| » 294 a » 20 stante | » 445 a » 4 ult. instante |
| » 294 a » 4 ult. casu | » 445 b » 7 ult. casus |
| » 294 b » 13 praepositas | » 446 a » 8-9 propositas |
| » 294 b » 16 definitoris | » 446 a » 11 definitorii |
| » 295 a » 9 et posset | » 446 b » 20 et possent |
| » 295 a » 38-39 in ecclesia | » 446 b » 2-1 ult. in ecclesiam |
| » 295 b » 5-6 definitori | » 447 a » 14 ult. definitore |
| » 297 a » 8 ult. in | » 449 b » 14 ult. uti |
| » 297 b » 2 designato | » 449 b » 5 ult. designatum |
| » 298 a » 17 privationis | » 450 b » 28 privationis et inhabilitatis |
| » 300 a » 2 quae in his | » 453 a » 22 quae bis |
| » 300 a » 24 ult. quam | » 453 b » 19 quin |
| » 300 a » 3 ult. delegatus | » 453 b » 9 ult. delegans |
| » 303 a » 15 ult. elegerit | » 457 b » 18 ult. elegerint |
| » 303 b » 26 facto | » 458 a » 21 facta |
| » 305 b » 21 ult. ministro | » 461 a » 7 ministrum |
| » 306 a » 4 ult. quae leges | » 461 b » 10 ult. quod leges |
| » 307 b » 34-35 opponant | » 463 b » 17 apponant |
| » 307 b » 27 ult. incipit | » 463 b » 27 qui incipit |
| » 307 b » 1 ult. visitando | » 464 a » 6 visitandae |
| » 308 a » 5 qualibet | » 464 a » 11 quolibet |
| » 308 a » 14 ult. praelatus | » 464 b » 11 praelatis |
| » 308 a » 1 ult. multa | » 464 b » 25 multi |
| » 308 b » 5 ademptum | » 464 b » 18 adeptum |
| » 308 b » 22 ult. debitorum | » 465 a » 25-26 delictorum |
| » 309 a » 29 inveniant | » 465 b » 27 inveniantur |
| » 311 a » 3 omisus | » 468 a » 17 remissus |
| » 312 a » 33 commissarii | » 469 b » 16 visitatio commissarii |
| » 313 a » 16 ult. suis muneris | » 471 a » 14 sui muneris |
| » 314 a » 14 fuerit | » 472 a » 12 fuerint |
| » 316 a » 16 ult. qui bonorum | » 475 a » 27 qui post bonorum |
| » 316 b » 18 ult. segregata | » 475 b » 21 segregatae |
| » 317 a » 1 con-magistros | » 475 b » 10 ult. con-magistrum |
| » 317 a » 27 ult. alia | » 478 a » 21 ult. in alia |
| » 317 b » 15 perdat | » 478 b » 19 pendat (?) |
| » 318 b » 30 ult. religione | » 478 a » 19 ult. regione |
| » 318 b » 25 ult. informantes | » 478 a » 14 ult. informans |
| » 318 b » 20 ult. scribanturque | » 478 a » 11-10 ult. scribaturque |
| » 319 a » 10 ult. accedere | » 479 a » 13 excedere |
| » 319 b » 22 quod | » 479 a » 5 ult. quos |
| » 319 b » 4 ult. illius, sicut et laici | » 479 b » 12 ult. illis, sicut et laicis |
| » 320 a » 33 ne recipiatur | » 480 a » 17 nec recipiatur |
| » 320 a » 17 ult. post octavam | » 480 a » 15 ult. post octavum |
| » 320 a » 5 ult. sit | » 480 a » 4 ult. sit accessus |
| » 320 b » 11 ult. Propterea | » 480 b » 4 ult. Praeterea |
| » 321 a » 20 praevisa | » 481 a » 23-24 praevia |
| » 321 a » 29 distractus | » 481 a » 32 deputatus (?) |
| » 321 a » 41 hoc | » 481 a » 4 ult. hac |
| » 321 b » 3 saltem | » 481 b » 24 saltem per annum |
| » 321 b » 4-5 mittantur ad | » 481 b » 25 mittantur et ad |
| » 322 a » 36 alia | » 483 a » 2 ult. alia |
| » 322 a » 42-43 efficaces | » 483 b » 5-6 efficacia |
| » 323 b » 19 abbatis | » 484 b » 10 ult. abbas |
| » 323 b » 20 secretarii | » 484 b » 9 ult. secretarius |
| » 324 a » 15 ult. barbaris | » 486 a » 16 a barbaris |

| | | | | | |
|-------------------|------------------------------|------------------------------------|-------------------|--------------------|--------------------------------|
| <i>Pag. 324 a</i> | <i>lines 12-11 ult.</i> | <i>designandum</i> | <i>Pag. 486 a</i> | <i>lines 19</i> | <i>designando</i> |
| <i>» 326 b</i> | <i>» 5</i> | <i>habita</i> | <i>» 486 a</i> | <i>» 8 ult.</i> | <i>habitaē</i> |
| <i>» 324 b</i> | <i>» 24</i> | <i>plurium</i> | <i>» 486 b</i> | <i>» 12-13</i> | <i>plurimum</i> |
| <i>» 325 b</i> | <i>» 6</i> | <i>vacationes</i> | <i>» 486 a</i> | <i>» 6</i> | <i>vagationes</i> |
| <i>» 325 b</i> | <i>» 17</i> | <i>constitutionibus</i> | <i>» 488 a</i> | <i>» 16</i> | <i>a constitutionibus</i> |
| <i>» 326 a</i> | <i>» 22 ult.</i> | <i>regula</i> | <i>» 489 a</i> | <i>» 20</i> | <i>regulae</i> |
| <i>» 326 a</i> | <i>» 4 ult.</i> | <i>cancellegii</i> | <i>» 489 a</i> | <i>» 10 ult.</i> | <i>cellerarii</i> |
| <i>» 327 a</i> | <i>» 31</i> | <i>porrexerint</i> | <i>» 490 a</i> | <i>» 6 ult.</i> | <i>perrexerint</i> |
| <i>» 327 a</i> | <i>» 35</i> | <i>generalis</i> | <i>» 490 a</i> | <i>» 2 ult.</i> | <i>generali</i> |
| <i>» 327 b</i> | <i>» 17-18</i> | <i>praescribunt</i> | <i>» 491 a</i> | <i>» 1</i> | <i>praescribuntur</i> |
| <i>» 327 b</i> | <i>» 28</i> | <i>continuae</i> | <i>» 491 a</i> | <i>» 11</i> | <i>continue</i> |
| <i>» 328 a</i> | <i>» 7-8</i> | <i>decesserint</i> | <i>» 491 b</i> | <i>» 10</i> | <i>discesserint</i> |
| <i>» 328 a</i> | <i>» 18-19</i> | <i>excussa</i> | <i>» 491 b</i> | <i>» 21</i> | <i>excusa</i> |
| <i>» 328 a</i> | <i>» 25</i> | <i>praecipuae</i> | <i>» 491 b</i> | <i>» 27</i> | <i>praecipue</i> |
| <i>» 328 a</i> | <i>» 30 ult.</i> | <i>solitae</i> | <i>» 491 b</i> | <i>» 3 ult.</i> | <i>solutae</i> |
| <i>» 328 a</i> | <i>» 27-28 ul. de genere</i> | <i>.</i> | <i>» 492 a</i> | <i>» 1</i> | <i>se gerere</i> |
| <i>» 328 a</i> | <i>» 28 ult.</i> | <i>aliquam</i> | <i>» 492 b</i> | <i>» 18</i> | <i>aliqua</i> |
| <i>» 331 a</i> | <i>» 11 ult.</i> | <i>definiri</i> | <i>» 496 b</i> | <i>» 8 ult.</i> | <i>definire</i> |
| <i>» 331 b</i> | <i>» 21</i> | <i>sibi</i> | <i>» 497 a</i> | <i>» 26</i> | <i>ut sibi</i> |
| <i>» 335 a</i> | <i>» 1</i> | <i>solemne</i> | <i>» 502 b</i> | <i>» 9</i> | <i>solemnes</i> |
| <i>» 335 a</i> | <i>» 21 ult.</i> | <i>aliasque</i> | <i>» 503 a</i> | <i>» 18</i> | <i>aliasque</i> |
| <i>» 336 a</i> | <i>» 15 ult.</i> | <i>et quarum</i> | <i>» 505 b</i> | <i>» 21</i> | <i>ad quarum</i> |
| <i>» 337 b</i> | <i>» 21</i> | <i>erogari</i> | <i>» 506 b</i> | <i>» 3 ult.</i> | <i>et erogari</i> |
| <i>» 339 b</i> | <i>» 11</i> | <i>in parendo</i> | <i>» 510 a</i> | <i>» 12</i> | <i>in non parendo</i> |
| <i>» 339 b</i> | <i>» 12 ult.</i> | <i>promereri</i> | <i>» 510 b</i> | <i>» 15</i> | <i>promereri</i> |
| <i>» 341 a</i> | <i>» 21 ult.</i> | <i>approbari</i> | <i>» 512 b</i> | <i>» 12 ult.</i> | <i>approbati</i> |
| <i>» 342 a</i> | <i>» 6 ult.</i> | <i>loquantur</i> | <i>» 514 a</i> | <i>» 7 ult.</i> | <i>loquantur</i> |
| <i>» 342 b</i> | <i>» 1</i> | <i>culpaē</i> | <i>» 514 a</i> | <i>» 2 ult.</i> | <i>culpa</i> |
| <i>» 342 b</i> | <i>» 4-6</i> | <i>aut ipsi esse</i> | <i>» 514 b</i> | <i>» 2</i> | <i>ut ipsi esset</i> |
| <i>» 342 b</i> | <i>» 21</i> | <i>aliis</i> | <i>» 514 b</i> | <i>» 18</i> | <i>alios aliis</i> |
| <i>» 342 b</i> | <i>» 33</i> | <i>quod</i> | <i>» 514 b</i> | <i>» 29</i> | <i>quam</i> |
| <i>» 343 a</i> | <i>» 20 ult.</i> | <i>oblata</i> | <i>» 515 b</i> | <i>» 22</i> | <i>oblatis</i> |
| <i>» 343 a</i> | <i>» 9 ult.</i> | <i>extrahi</i> | <i>» 515 b</i> | <i>» 16-15 ul.</i> | <i>extrui</i> |
| <i>» 343 b</i> | <i>» 12</i> | <i>provinciae</i> | <i>» 516 a</i> | <i>» 4</i> | <i>nec provinciae</i> |
| <i>» 343 b</i> | <i>» 24</i> | <i>hae omnes</i> | <i>» 516 a</i> | <i>» 15</i> | <i>quā hae omnes</i> |
| <i>» 343 b</i> | <i>» 29-30</i> | <i>necessarii</i> | <i>» 516 a</i> | <i>» 20</i> | <i>necessariiis</i> |
| <i>» 344 a</i> | <i>» 15</i> | <i>et ordinariis</i> | <i>» 516 b</i> | <i>» 18 ult.</i> | <i>ordinariis</i> |
| <i>» 344 a</i> | <i>» 27 ult.</i> | <i>licet</i> | <i>» 517 a</i> | <i>» 9</i> | <i>sic et</i> |
| <i>» 344 a</i> | <i>» 2 ult.</i> | <i>manus</i> | <i>» 517 a</i> | <i>» 13 ult.</i> | <i>aures (?)</i> |
| <i>» 344 b</i> | <i>» 35</i> | <i>instructa</i> | <i>» 517 b</i> | <i>» 22</i> | <i>instructi</i> |
| <i>» 345 a</i> | <i>» 16-17</i> | <i>reddituri</i> | <i>» 518 a</i> | <i>» 23</i> | <i>reddituros</i> |
| <i>» 345 a</i> | <i>» 42</i> | <i>dabuntur</i> | <i>» 518 a</i> | <i>» 1 ult.</i> | <i>dabantur</i> |
| <i>» 345 b</i> | <i>» 30 ult.</i> | <i>sibi</i> | <i>» 519 a</i> | <i>» 14</i> | <i>tibi</i> |
| <i>» 345 b</i> | <i>» 14 ult.</i> | <i>sibi</i> | <i>» 519 a</i> | <i>» 30</i> | <i>tibi</i> |
| <i>» 346 a</i> | <i>» 24 ult.</i> | <i>praesentabunt</i> | <i>» 519 b</i> | <i>» 6 ult.</i> | <i>praesentabuntur</i> |
| <i>» 348 a</i> | <i>» 25-26</i> | <i>prorogata</i> | <i>» 522 a</i> | <i>» 4 ult.</i> | <i>roborata</i> |
| <i>» 348 a</i> | <i>» 32-33</i> | <i>docentur</i> | <i>» 522 b</i> | <i>» 4</i> | <i>docent</i> |
| <i>» 348 a</i> | <i>» 41</i> | <i>est trahet</i> | <i>» 522 b</i> | <i>» 9</i> | <i>et trahet</i> |
| <i>» 348 a</i> | <i>» 20 ult.</i> | <i>oppugnanda</i> | <i>» 522 b</i> | <i>» 21 22</i> | <i>oppugnandae</i> |
| <i>» 348 b</i> | <i>» 15</i> | <i>si nimirum</i> | <i>» 523 a</i> | <i>» 10</i> | <i>si nimirum</i> |
| <i>» 349 a</i> | <i>» 6</i> | <i>possit</i> | <i>» 523 b</i> | <i>» 21-22</i> | <i>possint</i> |
| <i>» 349 a</i> | <i>» 27</i> | <i>habitatione</i> | <i>» 523 b</i> | <i>» 7 ult.</i> | <i>habitationi</i> |
| <i>» 349 a</i> | <i>» 39-40</i> | <i>Virginis</i> | <i>» 524 a</i> | <i>» 5</i> | <i>Virgini</i> |
| <i>» 349 b</i> | <i>» 29 ult.</i> | <i>et</i> | <i>» 524 b</i> | <i>» 28</i> | <i>quoad</i> |
| <i>» 350 a</i> | <i>» 5</i> | <i>sepositio</i> | <i>» 525 a</i> | <i>» 15</i> | <i>seposito</i> |
| <i>» 350 b</i> | <i>» 3</i> | <i>quacumque</i> | <i>» 525 b</i> | <i>» 17 ult.</i> | <i>quamque</i> |
| <i>» 350 b</i> | <i>» 32</i> | <i>expresso consensu</i> | <i>» 526 a</i> | <i>» 11</i> | <i>expressum consensum</i> |
| <i>» 351 b</i> | <i>» 14 ult.</i> | <i>huius</i> | <i>» 527 b</i> | <i>» 18</i> | <i>..... (?)</i> |

| | | |
|------------|-------------|---|
| Pag. 352 a | linea 20 | seu |
| » 352 a | » 10 ult. | perseverent |
| » 352 a | » 9 ult. | sum |
| » 352 b | » 30-29 ul. | reperietur |
| » 353 l | » 39 | istorum |
| » 354 a | » 15 | easque |
| » 354 a | » 23 | dedicatur |
| » 354 b | » 37 | peragant |
| » 354 b | » 4 ult. | ibidem |
| » 355 a | » 29 | hocque |
| » 355 a | » 8 ult. | Collectoribus |
| » 355 b | » 32 | huiatis |
| » 356 a | » 6 ult. | suis |
| » 356 b | » 13-14 | tam eidem Leopoldo moderno quam pro tempore existentibus archiepiscopis Salisburgen |
| » 356 b | » 23 | removendam |
| » 356 b | » 39 | facultatum |
| » 357 a | » 25 | meritorum |
| » 357 b | » 23-24 | nomine |
| » 358 b | » 19 | voces |
| » 358 b | » 26 | definitorium |
| » 358 b | » 30 | facile |
| » 359 a | » 16 | dicti |
| » 359 b | » 21 | Congregationis |
| » 359 b | » 26 | concurrentibus |
| » 360 a | » 37 | dicti |
| » 363 a | » 29 ult. | concessis |
| » 363 a | » 4 ult. | et alium |
| » 363 b | » 19 | correctione |
| » 363 b | » 21 ult. | ad omnium |
| » 364 b | » 13 | opera |
| » 367 a | » 17 ult. | venerata |
| » 369 b | » 10 | deleri |
| » 369 b | » 39 | cuiuscumque |
| » 370 b | » 26 | regis |
| » 370 b | » 40 | gubernentur |
| » 370 b | » 5 ult. | dicto |
| » 370 b | » 3 ult. | regis |
| » 371 a | » 8 | praedictae |
| » 371 a | » 38 | uti fuerunt |
| » 371 a | » 42 | vacamus |
| » 371 b | » 26 ult. | mores |
| » 371 b | » 22 ult. | potuimus |
| » 372 a | » 25-24 ul. | congregationis |
| » 375 a | » 13 ult. | quae |
| » 376 b | » 18 ult. | ab ipsis |
| » 377 a | » 17 | erigendarum |
| » 378 a | » 8 | adversus illos |
| » 378 b | » 31 | quod olim |
| » 378 b | » 12 ult. | illique |
| » 378 b | » 1 ult. | sic |
| » 379 b | » 24 | reditibus |
| » 380 a | » 40 | ne absolvitur |

| | | |
|------------|-----------|--|
| Pag. 528 a | linea 8 | ceu |
| » 528 a | » 2 ult. | perseveret |
| » 528 a | » 1 ult. | sub |
| » 528 b | » 1 ult. | reperietur |
| » 530 a | » 15 ult. | istarum |
| » 530 b | » 18 ult. | eisque |
| » 530 b | » 10 ult. | dedicetur |
| » 531 b | » 23 | peragere |
| » 532 a | » 5 | itidem |
| » 532 a | » 11 ult. | hacque |
| » 532 b | » 24 | collectoribus |
| » 533 a | » 15 | Burani (?) |
| » 534 d | » 18 ult. | a suis |
| » 534 b | » 2-4 | tam eiusdem Leopoldi moderni quam pro tempore existentium archiepiscoporum Salisburgensium |
| » 534 b | » 12 | renovandam |
| » 534 b | » 11 ult. | facultates |
| » 535 b | » 8 | meritis |
| » 536 a | » 10 ult. | minime |
| » 537 b | » 1 ult. | vices |
| » 538 a | » 7-8 | definitorium I |
| » 538 a | » 12 | facili |
| » 538 b | » 24 | sicut dicti |
| » 539 b | » 11 ult. | Congregationis proposita |
| » 539 b | » 6 ult. | concurrentes |
| » 540 b | » 18 | sicut dicti |
| » 545 b | » 15 | concessa |
| » 545 b | » 1 ult. | ad alium |
| » 546 a | » 23 | correctioni |
| » 546 b | » 12 | ac omnium |
| » 547 b | » 13 ult. | operantes |
| » 552 a | » 3 ult. | veneratam |
| » 556 a | » 4 | delere |
| » 556 a | » 9 ult. | cuiuscumque |
| » 557 b | » 8 ult. | regio |
| » 558 a | » 9 | gubernantur |
| » 558 a | » 7 ult. | dicti |
| » 558 a | » 5 ult. | regio |
| » 558 b | » 7 | praedictis |
| » 558 b | » 5 ult. | usi fuerunt |
| » 558 b | » 1 ult. | vacuamus |
| » 559 b | » 13 ult. | morum |
| » 559 b | » 9 ult. | possumus |
| » 560 b | » 18 | congregationi |
| » 564 b | » 5 ult. | quo |
| » 567 a | » 25 | ab ipsis gestantur |
| » 567 b | » 12 | erigendarum gestari solita |
| » 569 a | » 10 | adversus illas |
| » 570 a | » 16 | quoad olim |
| » 570 b | » 2 | illisque |
| » 570 b | » 13 | sicque |
| » 571 b | » 18 ult. | reditibus |
| » 572 b | » 28 | ne absolvitur |

| | | | | | |
|-------------------|---------------------|-------------------------------------|-------------------|------------------|-------------------------------------|
| <i>Pag. 380 b</i> | <i>linea 43</i> | <i>syllabarum . . . *</i> | <i>Pag. 573 b</i> | <i>linea 18</i> | <i>syllaborum</i> |
| <i>" 380 b</i> | <i>" 45</i> | <i>sit</i> | <i>" 578 b</i> | <i>" 20</i> | <i>sint</i> |
| <i>" 380 b</i> | <i>" 51</i> | <i>ceterorum</i> | <i>" 573 b</i> | <i>" 26</i> | <i>exterorum</i> |
| <i>" 382 b</i> | <i>" 26 ult.</i> | <i>intendimus</i> | <i>" 577 a</i> | <i>" 5</i> | <i>intendemus</i> |
| <i>" 382 b</i> | <i>" 6 ult.</i> | <i>abasso</i> | <i>" 577 a</i> | <i>" 23</i> | <i>amisso</i> |
| <i>" 383 b</i> | <i>" 13</i> | <i>praeceptum</i> | <i>" 578 a</i> | <i>" 13</i> | <i>prohibitum (?)</i> |
| <i>" 384 a</i> | <i>" 4 ult.</i> | <i>desponsae</i> | <i>" 579 b</i> | <i>" 9</i> | <i>desponsatae (?)</i> |
| <i>" 385 b</i> | <i>" 17</i> | <i>Primo</i> | <i>" 581 a</i> | <i>" 25</i> | <i>Pro</i> |
| <i>" 385 b</i> | <i>" 2 ult.</i> | <i>Quoniam monachi</i> | <i>" 581 b</i> | <i>" 20 ult.</i> | <i>Quoniam autem, sicut monachi</i> |
| <i>" 386 b</i> | <i>" 20 ult.</i> | <i>reditum</i> | <i>" 583 a</i> | <i>" 19</i> | <i>reddituum</i> |
| <i>" 391 b</i> | <i>" 6</i> | <i>ut infra</i> | <i>" 589 b</i> | <i>" 5</i> | <i>et ut infra</i> |
| <i>" 391 b</i> | <i>" 33</i> | <i>et provinciae</i> | <i>" 589 b</i> | <i>" 13 ult.</i> | <i>provinciae</i> |
| <i>" 393 b</i> | <i>" 15-14 ult.</i> | <i>cuiuscumque</i> | <i>" 592 b</i> | <i>" 13</i> | <i>quibuscumque</i> |
| <i>" 394 a</i> | <i>"</i> | <i>deleri</i> | <i>" 593 b</i> | <i>" 18</i> | <i>delere</i> |
| <i>" 394 a</i> | <i>" 20 ult.</i> | <i>1784</i> | <i>" 595 a</i> | <i>" 9</i> | <i>1785</i> |
| <i>" 395 a</i> | <i>" 6</i> | <i>possit post</i> | <i>" 596 a</i> | <i>" 17 ult.</i> | <i>possit, nisi post</i> |
| <i>" 395 b</i> | <i>" 30.</i> | <i>cum initium</i> | <i>" 596 b</i> | <i>" 10</i> | <i>cui initium</i> |
| <i>" 396 b</i> | <i>" 14 ult.</i> | <i>amplius</i> | <i>" 596 b</i> | <i>" 5 ult.</i> | <i>ampliamus</i> |
| <i>" 396 a</i> | <i>" 15-16</i> | <i>extrahatur</i> | <i>" 597 a</i> | <i>" 26</i> | <i>extrahantur</i> |
| <i>" 396 a</i> | <i>" 41</i> | <i>recitatae</i> | <i>" 597 b</i> | <i>" 13</i> | <i>reitate</i> |
| <i>" 396 a</i> | <i>" 46</i> | <i>ac ipsius</i> | <i>" 597 b</i> | <i>" 20</i> | <i>ad ipsius</i> |
| <i>" 396 a</i> | <i>" 6-5 ult.</i> | <i>cognoverint</i> | <i>" 597 b</i> | <i>" 3 ult.</i> | <i>cognoverit</i> |
| <i>" 396 b</i> | <i>" 25</i> | <i>immune</i> | <i>" 598 a</i> | <i>" 14 ult.</i> | <i>immuni</i> |
| <i>" 396 b</i> | <i>" 26-27</i> | <i>deputanda</i> | <i>" 598 a</i> | <i>" 12 ult.</i> | <i>deputandae</i> |
| <i>" 396 b</i> | <i>" 45</i> | <i>definitionibus</i> | <i>" 593 b</i> | <i>" 9</i> | <i>defensionibus</i> |
| <i>" 397 a</i> | <i>" 32 ult.</i> | <i>apostolicarum</i> | <i>" 599 a</i> | <i>" 6 ult.</i> | <i>et apostolicarum</i> |
| <i>" 397 a</i> | <i>" 31 ult.</i> | <i>solae</i> | <i>" 599 a</i> | <i>" 4 ult.</i> | <i>sola</i> |
| <i>" 398 b</i> | <i>" 13-12 ult.</i> | <i>hospitalia</i> | <i>" 602 a</i> | <i>" 12</i> | <i>hospitalis</i> |
| <i>" 400 a</i> | <i>" 10 ult.</i> | <i>ipsi</i> | <i>" 604 b</i> | <i>" 14</i> | <i>ipsi habeant</i> |
| <i>" 407 a</i> | <i>" 29</i> | <i>persuadeat</i> | <i>" 613 b</i> | <i>" 12 ult.</i> | <i>persuadeant</i> |
| <i>" 409 b</i> | <i>" 6-7</i> | <i>includatur</i> | <i>" 617 a</i> | <i>" 11-12</i> | <i>includantur</i> |
| <i>" 412 b</i> | <i>" 26-25 ult.</i> | <i>altare</i> | <i>" 621 b</i> | <i>" 1</i> | <i>abbate (?)</i> |
| <i>" 418 a</i> | <i>" 8-7 ult.</i> | <i>visitatione</i> | <i>" 629 a</i> | <i>" 26</i> | <i>visitationem</i> |
| <i>" 421 b</i> | <i>" 20</i> | <i>monasterii</i> | <i>" 633 b</i> | <i>" 18</i> | <i>monasterii scribant</i> |
| <i>" 421 b</i> | <i>" 26</i> | <i>officium</i> | <i>" 633 b</i> | <i>" 24</i> | <i>cuius officium</i> |
| <i>" 422 a</i> | <i>" 8</i> | <i>ut</i> | <i>" 634 a</i> | <i>" 20</i> | <i>uti</i> |
| <i>" 424 b</i> | <i>" 17</i> | <i>in iussu</i> | <i>" 637 b</i> | <i>" 28</i> | <i>sine iussu</i> |
| <i>" 427 b</i> | <i>" 33</i> | <i>pone hos</i> | <i>" 642 a</i> | <i>" 7</i> | <i>post hos</i> |
| <i>" 432 b</i> | <i>" 4</i> | <i>cantet</i> | <i>" 648 b</i> | <i>" 25</i> | <i>cantent</i> |
| <i>" 433 b</i> | <i>" 16 ult.</i> | <i>litteris</i> | <i>" 650 b</i> | <i>" 17</i> | <i>litteras</i> |
| <i>" 439 a</i> | <i>" 2 ult.</i> | <i>infirmis</i> | <i>" 658 a</i> | <i>" 2 ult.</i> | <i>infirma</i> |
| <i>" 439 b</i> | <i>" 8</i> | <i>in</i> | <i>" 658 b</i> | <i>" 6</i> | <i>ad</i> |
| <i>" 442 b</i> | <i>" 23 ult.</i> | <i>desiderant</i> | <i>" 662 b</i> | <i>" 3</i> | <i>desiderent</i> |
| <i>" 443 a</i> | <i>" 11 ult.</i> | <i>et iniuncto</i> | <i>" 664 b</i> | <i>" 1</i> | <i>ex iniuncto</i> |
| <i>" 443 a</i> | <i>" 6 ult.</i> | <i>acceperimus</i> | <i>" 664 b</i> | <i>" 6</i> | <i>acceperimus</i> |
| <i>" 443 b</i> | <i>" 14</i> | <i>praecipuae</i> | <i>" 664 b</i> | <i>" 16 ult.</i> | <i>praecipue</i> |
| <i>" 445 b</i> | <i>" 33 ult.</i> | <i>auditoris</i> | <i>" 668 a</i> | <i>" 19 ult.</i> | <i>auditorio</i> |
| <i>" 446 a</i> | <i>" 15</i> | <i>nostri deputavimus</i> | <i>" 668 b</i> | <i>" 11 ult.</i> | <i>deputavimus</i> |

CONTINUATIO PONTIFICATUS

CLEMENTIS XII

CLEMENTIS XII

CONSTITUTIONES

Ab anno quinto pontificatus ipsius et deinceps.

An. C. 1734 **C**LEMENS XII, quem in Romanum Pontificem electum diximus die XII Iulii MDCCXXX, quindecim peractis promotionibus, XXXV creavit cardinales. Sedit in pontificatu annos novem, menses sex, dies vigintiquatuor. Obiit vero die VI februarii MDCCXL. Cuius corpus primum ad S. Petrum delatum, postea in Lateranensi basilicâ tumulatum est in monumento quod sibi vivens extruxerat. Vacavit sedes menses sex, dies undecim.

CXL.

Ut omnes conventus provinciarum Peruntinae et Chilensis Ordinis fratrum Eremitarum S. Augustini in possessionem privilegiorum, in qua usque modo fuerunt, deinceps absque ullâ alteratione permaneant, etiamsi octo

Bull. Rom. — Vol. XXIV.

religiosos de familiâ non habeant, non obstantibus litteris Pauli V, quibus huiusmodi domos supprimi iuebatur. An. C. 1734

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Exponi nobis nuper fecerunt dilecti filii Bernardus Davila, frater expresse professus Ordinis Praedicatorum in sacra theologia magister, et pro sua Peruntina provincia procurator, et Didacus Salinas et Cabrera, frater pariter expresse professus Ordinis Eremitarum S. Augustini, in eadem sacra theologia magister, assistens generalis Hispaniarum, ac pro Peruntina et Chilensi provinciis itidem procurator, quod in vastissimis Americae meridionalis regionibus dictae provinciae plures reperiuntur regulares conventus fundati vel in locis a civitatibus valde remotis vel in oppidis parvis et miserrimis, qui non alio fine illic sunt fundati, quam ut

Conventus Ordinis Praedicatorum et Eremitarum S. Augustini in provinciis Peruntina et Chilensi in America, quamvis tres dumtaxat religiosos de familiâ elegerent, fruebantur privilegia ceterarum domorum regularium.

spirituali christifidelium ibidem commo-
rantium utilitati inserviant. Idem etiam
accidit in aliis conventibus, qui dicun-
tur prioratus, pro Indorum christifide-
lium assistentiâ ac instructione prectis,
qui solum ex tribus provinciis supra
relatis sunt in provincia Peruntinâ eo-
rumdem Ordinum. Praedicti vero con-
ventus, ut plurimum, sunt pauperrimi, et
consequenter nec habent nec alere pos-
sunt nisi dumtaxat sex, quinque, quatuor,
aut tres religiosos de familiâ, cum qui-
bus et spiritualibus fidelium huiusmodi
indigentis abunde providetur et disci-
plinæ regularis sequela, quoad posse,
conservatur. Quibus de causis, tam ex
constitutionibus seu statutis Ordinis,
apostolicâ confirmatione roboratis, quam
ex inconcussâ inveteratâque dictarum
provinciarum praxi, omnibus domorum
seu conventuum regularium usque modo
privilegiis, eorumque priores seu prae-
lati canonice electi voce activâ in capi-
tulis provincialibus eorumque electioni-
bus gaudebant.

Paulus vero V
locavit eos sup-
primi conventus
in quibus, nolo
saltem religiosi
nisi non possint,
mandati huius
executionem e-
piscopis com-
mittens.

§ 2. Anno autem MDCXI, die XXI septem-
bris, a felicis recordationis Paulo V prae-
decessore nostro quaedam litterae in
simili formâ Brevis expeditae emanarunt,
per quas statuebatur quod conventus
provinciarum Americae, qui numerum
saltem octo religiosorum alere non pos-
sunt, supprimerentur, et religiosi in illis
residentes ad alios conventus, ubi regu-
laris vigeret observantia, transferrentur;
committendo earum executionem arbitrio
episcoporum illarum partium, si ipsis
pro divini cultus augumento et regularis
disciplinæ observantiâ expedire videretur,
eorum super hoc conscientiam
onerando.

Sed quamvis
ut supra locatis
factum nunquam
fuerit salis, ex
mente quoque
episcoporum,
qui ea dixerant

§ 3. Sed nunquam usque modo rela-
tae litterae a dictis episcopis executioni
mandatae fuerunt, imo retroactis annis
tunc existens archiepiscopus S. Fidei

novi regni Granatensis tunc etiam exi-
stentibus S. R. E. cardinalibus Congre-
gationis negotiis et consultationibus e-
piscoporum et regularium praepositae
per peculiâres litteras ipsis directas
retulit impossibile prorsus fore ad ea-
rum executionem devenire: et certe per
centum, vigintiduos annos eam haud
omisissent, si dictas litteras aut redu-
cendas ad praxim vel convenientes illic
iudicassent, quum ipsis tam serio et
sub conscientiae gravamine earumdem
executio fuisset demandata. Porro, post
centum fere annos a praedictarum lit-
terarum expeditione, in unâ aut aliâ
provincia aliqui particulares religiosi
(personarum exterarum fulti patrocinio),
ob personales vitiatosque fines, earum
executionem demandarunt, non quoad
conventuum suppressionem, aut quoad
alios effectus in eisdem litteris conten-
tos, sed solum quoad finem excludendi
a suffragio activo in capitulo provinciali
eiusque electionibus priores seu prae-
latos conventuum octo religiosos de
familiâ non habentium; illosque de facto
saepius excluserunt, maximo cum scan-
dalo et pacis regularis iacturâ: ut fre-
quenti experienciâ compertum est, ex
eiusmodi litterarum executione ingentia
ferme pullulare damna, cum illarum
observantia demandetur solum quoad
vocalium exclusionem, et hoc ipsomet
tempore celebrationis capituli, aut im-
mediate ante, nimirum quando praeten-
dentes agnoscunt, se, votum ferentibus
vel non ferentibus dictis prioribus, pos-
se includi vel excludi, consequenterque
solum tendat ad turbandam provincia-
rum pacem et ad fovendas continuas
inter religiosos discordias, vel ad vali-
dandam vel annullandam ad proprium
nutum et libitum electionem, ut memo-
ratus S. Fidei archiepiscopus eidem
Congregationi cardinalium retulit. Et ex

non exequenda;
nonnulli tamen
ad privandos ti-
larum domorum
priores voce
activâ in capi-
tulis provincia-
libus eadem e-
sequi vellunt.

hoc sequitur quod praedictarum litterarum executio modo dicto plus damni quam utilitatis dictis provinciis afferat; et, si quoad suppressionem conventuum in usum adducitur, in maximam dictorum fidelium perniciem redundaret.

Pontifex illis
conventibus an-
tigna iura et
privilegia con-
firmat.

§ 4. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat, ipsi exponentes, quo fraudibus malitiisque via praeccludatur, et conventuum indemnitati et capitulorum religiosorumque quieti consulatur, opportune in praemissis a nobis provideri et ut infra indulgeri summopere desiderent: nos, ipsos exponentes specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et eorum singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innotatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censentes, supplicationibus eorum nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, ut omnes supradicti conventus in possessionem privilegiorum, in qua usque modo fuerunt, deinceps absque ulla alteratione permaneant, etiam si octo religiosos de familia non habeant aut possint alere, eorumque priores seu praelati legitime electi voce activa in capitulis provincialibus aliisque electionibus sicut antea poliantur et gaudeant, et eodem prorsus modo priores conventuum Indorum, auctoritate apostolica, tenore praesentium, indulgemus.

Hasce litteras
perpetuo vali-
datur.

§ 5. Decernentes, easdem praesentes litteras firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, et illis, ad quos spectat et pro tempore spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis respective

inviolabiliter observari, sicque in praemissis, per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

§ 6. Non obstantibus praefati Pauli et aliis Romanorum Pontificum praecessorum nostrorum litteris, per quas determinatus numerus religiosorum in monasteriis praefinitur, aliisque constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon provinciarum, Ordinum et conventuum huiusmodi, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis et de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliis in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Obstantibus
derogat.

§ 7. Volumus autem ut earundem litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiastica dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides adhibeatur, quae ipsis praesentibus adhiberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Transumptis
fidem adhibet.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xix iulii mcccxxxiv, pontificatus nostri anno v.

Dat. die 19 iulii 1734, pontif. anno v.

F. card. OLIVERIUS.

CXLI.

Septuagintaquinque ducatos, qui post obitum singulorum cardinalium officialibus et ministris sacri S. R. E. cardinalium collegii per haereditates defuncti iuxta Pauli V constitutionem solvendi erant, deinceps a singulis cardinalibus in sua ad cardinalatum promotione solvi praecipit.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Paulus V minister sacri collegii solvi iussit a cardinalibus in die promotionis septuaginta ducatos: totidemque post mortem.

§ 1. Alias felicitis recordationis Paulus PP. V praedecessor noster, considerans assiduos labores, quos officiales seu ministri sacri S. R. E. cardinalium collegii in rebus et negotiis eiusdem sacri collegii procurandis sustinebant, per quasdam suas in simili forma Brevis die III Ianuarii MDCXIX expeditas litteras, motu suo proprio, ac ex certa scientia, secretario, clerico et computistae ipsius sacri collegii septuaginta quinque ducatos auri de Camera, nimirum vigintiquinque pro quolibet eorum, a singulis cardinalibus in promotione ad cardinalatus honorem, ac totidem post obitum singulorum cardinalium, etiamsi ad cardinalatus dignitatem promoti Romam nondum venissent, et sive illos in Romanam Curiam, vel extra eam et ubique decedere contingeret, in supplementum mercedis ordinariae eorumdem officialium sive ministrorum deberi, illisque coniunctim per pro tempore existentes cardinales praedictos, seu eorum agentes et haereditates respective, absque mora solvi, et eis consignari debere, sine tamen praepiudicio quorumcumque iurium Camerae Apostolicae quomodolibet debitorum ac solvendorum, auctoritate apostolica perpetuo statuit et ordinavit, prout in Pauli praedecessoris litteris praefatis, quarum tenorem praesentibus pro plene et suf-

ficienter expresso et inserto haberi volumus, uberius continetur.

§ 2. Cum autem, sicut accepimus, septuagintaquinque ducatorum auri huiusmodi eisdem officialibus seu ministris post obitum cardinalium, sicut praemititur, debitorum, ac per defunctorum haereditates solvendorum, exactio perquam difficilis reddatur, praecipue ubi ipsos cardinales extra ditionem ecclesiasticam, et maxime ultra montes ab humanis decedere contingit, ita ut multis eorum solutionem etiam post peractas exactiones diligentias a praefatis haereditatibus nullatenus consequi valuerint, dictique officiales seu ministri eo aegrius istiusmodi emolumentis careant, quod merces eorum ordinaria admodum tenuis existat, sibi que vicissim non mediocres labores aliaque onera incumbant, ac propterea secretario multae etiam expensae faciendae veniant, clerico vero ac computistae praedictis alieno servitio seu ministerio sese addicere per statuta eiusdem sacri collegii vetitum sit: nos, praemissa, ac praesertim dicta emolumenta ipsis officialibus sive ministris tamquam mercedem, seu pro eorum mercede, praestanda fore attendentes, illorumque proinde indemnitati prospicere volentes, motu simili, ac ex certa scientia nostra, septuagintaquinque ducatos, qui post obitum singulorum cardinalium eisdem officialibus seu ministris per haereditates defunctorum iuxta Pauli praedecessoris litterarum praefatarum formam et dispositionem, solvendi et consignandi erant, deinceps a singulis cardinalibus in sua ad cardinalatus honorem promotione per se seu eorum agentes ipsis officialibus sive ministris absque mora, una cum aliis septuaginta quinque ducatis similibus in eorum promotione huiusmodi debitis et assignatis, ut praefertur, solvi et consignari deberi,

Sed cum exactio dictorum septuagintaquinque ducatorum post mortem cardinalium difficilis reddatur,

Eos in ipsa promotione solvi iubet.

sine ullo pariter quorumcumque iurium Camerae Apostolicae debitorum et solvendorum praepiudicio, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, perpetuo itidem statuimus et ordinamus.

Exequutores
mandati huius
deputat.

§ 3. Iniungentes propterea dilectis filiis eiusdem S. R. E. collegii cardinalium moderno et pro tempore existenti camerario, necnon causarum Curiae Camerae praedictae generali auditori, quatenus infra mensem a die promotionis dictorum cardinalium computandum, etiamsi ipsi cardinales nondum, ut supra dictum est, Romam venerint, per collegii praedicti depositarium, vel alias, prout melius expedire videbitur, centum quinquaginta ducatos auri de Camera in totum secretario, clerico et computistae praefatis, quibusvis appellationibus, subterfugiis et cavillationibus remotis, persolvere curent, et etiam cum effectu faciant, ac summarium et expeditum ius illis administrent, omnibusque remediis opportunis sibi benevisis etiam cum invocatione auxilii brachii saecularis cogant et compellant.

Derogat ob-
statibus.

§ 4. Non obstantibus praemissis, ac constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon omnibus et singulis illis, quae memoratus Paulus praedecessor in suis litteris praedictis voluit non obstare, ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xvii augusti MDCCXXXIV, pontificatus nostri anno v.

Dat. die 17 augusti 1784, pontif. anno v.

F. card. OLIVERIUS.

CXLII.

Nonnulla privilegia provincialibus Societatis Iesu in partibus Indiarum exi-

stentibus a sanctae memoriae Pio IV concessa confirmantur.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Cum dudum felix recordationis Pius PP. IV, praedecessor noster, inter alia, ut Societatis Iesu provinciales, vel ab eis deputati presbyteri, cum neophylis Indiarum, aliarumque orientalium regionum, in quocumque seu quibusvis a iure divino non prohibitis consanguinitatis vel affinitatis gradibus vel aliis coniunctis, ut, impedimentis huiusmodi non obstantibus, matrimonium inter se contrahere et solemnizare, seu in iam etiam scienter contractis matrimoniis huiusmodi remanere valerent; in partibus ubi Ordinarii locorum facile adiri poterant, in foro conscientiae tantum, perpetuo, et insuper ibidem, infra tamen viginti annos tunc proxime futuros, quod ipsi locorum Ordinarii, de presbyterorum eorundem tamquam adiutorum et assessorum suorum in locis praefatis, et ubi eorum commode potuisset haberi copia, consilio, et cum illis etiam in iudiciali foro; in reliquis autem provinciis, Ordinariis praesentia destitutis, vel ab eis remotis, quod iidem provinciales et deputati presbyteri cum eisdem neophylis etiam in utroque foro, auctoritate apostolicâ, gratis dispensare libere et licite valerent, plenam et liberam facultatem sub certis modo et formâ tunc expressis, concesserit; et alias prout in ipsius Pii praedecessoris nostri litteris desuper in simili formâ Brevis die xv iulii MDLXIII expeditis uberius continetur; et successive alii Romani Pontifices praedecessores nostri facultatem huiusmodi tam presbyteris quam Ordinariis praefatis non perpetuo sed ad certa limitata tempora, ac novissime, nempe die xi iunii

Pius IV aliquando Pontifices patribus Societatis Iesu facultatem concesserunt dispensandi cum neophylis Indiarum in gradibus affinitatis vel consanguinitatis a iure divino non prohibitis ad contrahenda matrimonia.

Hic Carolus
Clementis XI ter-
minum parit
viginti anno-
rum.

MCCC. recolendae memoriae Clementis PP. XI praedecessor etiam noster ad viginti annos tunc proximos per suas respective in eadem forma Brevis litteras, sub certis modo et forma in illis expressis, inter alia prorogaverit seu de novo concesserit; et, sicut pro parte dilecti filii procuratoris generalis eiusdem Societatis Iesu nobis nuper expositum fuit, praedicti viginti anni, ad quos memorata facultas a Clemente praedecessore prorogata seu de novo concessa fuerat, iamdudum expiraverit, ipseque procurator generalis dubitet, ne in procul dissitis illis regionibus aliqui seu aliquis e missionariis, credentes facultatem eiusmodi a Sede Apostolica fuisse renovatam, cum neophytis praefatis in dictis gradibus bona fide dispensaverint, et, ea de causa, aliqua sint censura innodati; cupiatque propterea dictus procurator generalis nedum eandem facultatem ad aliud nobis bene visum tempus prorogari, sed etiam provincialibus illarum partium et confessariis ab ipsis delegatis indulgeri, quatenus omnes et quoscunque, qui dicta facultate, postquam expiraverat, usi fuerint, in foro conscientiae absolvere, ac dispensationes bona fide concessas ratas habere possint:

§ 2. Ilinc est quod nos, populorum illorum ex gentilitatis tenebris et erroribus ad veri luminis agnitionem et christianae fidei veritatem conversorum et ab hac Sancta Sede remotissimorum animarum saluti et spiritualibus necessitatibus pro pastoralis officii nostri cura prospectum esse cupientes, de venerabilium fratrum nostrorum S.R.E. cardinalium in tota republica christiana generalium inquisitorum adversus haereticam pravitatem auctoritate apostolica deputatorum consilio, tam provincialibus et ab eis deputandis presbyte-

ris, quam locorum Ordinariis praefatis, cum dictis neophytis in quocumque seu quibuscunque (non tamen in primo) consanguinitatis vel affinitatis gradibus vel aliis coniunctis seu se attinentibus, ut matrimonium inter se contrahere, seu in eo etiam scienter contracto remanere valeant, dictis quidem presbyteris in locis et regionibus, ubi Ordinarii non adsunt, vel ultra duas dietas iuxta constitutionem similis memoriae Pauli PP. III etiam praedecessoris nostri editam existunt; ipsis vero Ordinariis e contra, ubi presbyteri praefati adsunt, vel eorum commode haberi potest copia, de eorum tamquam adiutorum et assessorum suorum consilio, et cum illis; ubi autem non adsunt, nec eorum commode copia haberi potest, etiam sine illis; in utroque foro gratis dispensandi, et eos, qui in gradibus prohibitis huiusmodi etiam scienter contraxerint, ab excessibus et excommunicationis aliisque censuris, poenis ecclesiasticis, in utroque foro gratis pariter absolvendi, ac prolem inde susceptam legitimam decernendi; necnon eisdem presbyteris et Ordinariis, servatis locorum circumstantiis et limitationibus huiusmodi, cum eisdem neophytis in primo gradu etiam rectae lineae affinitatis ex copula illicita resultantis se attinentibus, ut matrimonium quoque inter se contrahere, seu in etiam scienter contracto remanere similiter valeant, in occultis tamen et in foro conscientiae tantum, ac urgentibus iustis causis, gratis etiam dispensandi, et eos, qui in primo affinitatis gradu huiusmodi etiam scienter contraxerint, ab excessibus et excommunicationis, aliisque censuris et poenis ecclesiasticis in foro conscientiae tantum gratis similiter absolvendi; dictisque Ordinariis alios presbyteros idoneos a se prius approbatos, in locis ubi non adsint mis-

Hoc expirato
termino illum
prorogat Cle-
mens XII ad
alios viginti
annos.

sionarii similem facultatem habentes, quoad praemissa in sui locum subdelegandi, licentiam et facultatem, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, concedimus et impertimur: praesentibus ad viginti annos a die illarum datae computandos tantum duraturis, ac uno eodemque tempore tam quoad principales et presbyteros Societatis Iesu, quam quoad Ordinarios praefatos expiraturis: salvâ tamen semper in praemissis auctoritate Congregationis eorundem cardinalium.

Matrimonia cum huiusmodi dispensationibus contracta post expiratum dictum terminum validat.

§ 3. Praeterea, eorum, qui matrimonia huiusmodi post expiratam facultatem, a Clemente praedecessore nostro sicut praemittitur prorogam seu de novo concessam, in gradibus huiusmodi forsitan contraxerint, dispensationemque respective ad id concesserint, statui et conscientiarum quieti providere volentes, omnia et singula matrimonia, quae, vigore dispensationis super praedictis gradibus seu impedimentis per missionarios seu etiam Ordinarios illarum partium post expiratam facultatem sic prorogam quomodolibet concessae, aliâs tamen rite et legitime, contracta fuerint, auctoritate et tenore praefatis revalidamus, ac valida et legitima decernimus, in omnibus et per omnia, perinde ac si ab initio et in eorum radice, praevia sufficienti dispensatione, contracta fuissent, absque eo quod illi, qui sic contraxerint, matrimonium de novo contrahere seu novum consensum praestare ullo modo debeant aut teneantur; dictis vero provincialibus Societatis Iesu, et presbyteris ab eis deputandis, necnon Ordinariis locorum, illos, qui expiratâ facultate huiusmodi interim usi fuerint ut praefertur, a quibuscumque censuris et poenis ecclesiasticis, quas propterea quomodolibet incurrerunt, pro hac vice tantum absolvendi, dictâ auctoritate, harum

serie, facultatem similiter tribuimus et impertimur.

§ 4. Decernentes, easdem praesentes litteras firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sique in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Huius concessionis executionem committit.

§ 5. Non obstantibus apostolicis, ac in universalibus provincialibusque et synodalibus conciliis editis, generalibus vel specialibus, constitutionibus et ordinationibus, ac, quatenus opus sit, quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis, in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Obstantibus derogat.

§ 6. Volumus autem ut earundem praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici vel secretarii dictae Societatis Iesu subscriptis, et sigillo praepositi generalis eiusdem Societatis vel alterius personae in ecclesiasticâ dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides tam in iudicio quam extra illud adhibeatur, quae ipsis praesenti-

Transumptis adhiberi fidem habent.

bus adhiberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die IX septembris MDCCXXXIV, pontificatus nostri anno V.

Dat. die 9 septembris 1734, pontif. anno V.

F. card. OLIVERIUS.

CXLIII.

Damnatio et prohibitio libelli gallico idiomate editi sub titulo: Lettre pastorale de monseigneur l'évêque de Montpellier adressée au clergé et aux fidèles de son diocèse pour leur notifier un miracle opéré dans son diocèse par l'intercession de M. François de Paris et les prémunir contre un Bref de N. S. P. le Pape en date du 3 octobre 1733 et deux écrits de monsieur l'archevêque d'Embrun de la même année 1734: ac cuiuscunque alterius similis scripti ab eodem episcopo Montispessulanensi editi, vel quod deinceps edi contigerit.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

§ 1. Cum, sicut ad apostolatus nostri notitiam pervenit, non ita pridem in lucem prodierit quidam libellus gallico idiomate editus, cui titulus: *Lettre pastorale de monseigneur l'évêque de Montpellier adressée au clergé et aux fidèles de son diocèse pour leur notifier un miracle opéré dans son diocèse par l'intercession de M. François de Paris, et les prémunir contre un Bref de N. S. P. le Pape en date du 3 octobre 1733 et deux écrits de monseigneur l'archevêque d'Embrun de la même année, 1734*: nos, relata nobis libelli huiusmodi censura, auditisque desuper nonnullorum venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. car-

dinalium et aliorum in sacra theologia magistrorum sententiis, pro commissâ nobis ab Aeterno Pastore gregis sui curâ, dominicas oves, quantum nobis ex alto conceditur, a noxiis praeservare cupientes, de memoratorum cardinalium consilio, libellum praedictum, uti continentem propositiones respective falsas, scandalosas, simplicium seductivas, perniciosas, temerarias, contumeliosas, auctoritati Apostolicae Sedis et universae Ecclesiae derogantes, impias, schismatici, schismaticis et haeresi faventes, de haeresi suspectas, erroneas et haereticas, sub superius expresso, aliove quovis titulo, ubicumque et quocumque alio idiomate, sen quavis editione et versione, hucusque impressum ac manu descriptum, aut, quod absit, imposterum imprimendum et describendum, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, damnamus et reprobamus, ac legi et retineri prohibemus, ipsiusque libelli impressionem, descriptionem, lectionem, retentionem et usum omnibus et singulis christifidelibus, etiam specificâ et individua mentione et expressione dignis, sub poenâ excommunicationis per contrafacientes ipso facto et absque aliâ declaratione incurrendam, a qua nemo per quemquam nisi per nos et Romanum Pontificem pro tempore existentem, praeterquam in mortis articulo constitutus, absolvi possit, omnino interdiciamus.

§ 2. Volentes, et auctoritate praefata mandantes, ut, quicumque libellum praedictum penes se habuerint, illum, statim atque praesentes litterae eis innotuerint, locorum Ordinariis, vel haereticae pravitatis inquisitoribus, qui autem eidem episcopo Montispessulanensi subsunt, metropolitano tradere atque consignare teneantur; hi vero exemplaria sibi sic tradita illico flammis aboleri curent.

§ 3. Ceterum omne quodcumque aliud

Exemplaria
locorum Ordina-
riis tradi iu-
beo.

Cetera epi-

Libellum de
quo in rubrica
damnat, im-
mi. reliquus
prohibet.

scripti Montis-
penasulensis
scripta dampal.

simile scriptum, a dicto episcopo Montispenasulensi, quovis etiam titulo et idiomate iam editum, vel quod deinceps edi et vulgari contigerit, auctoritate ac tonore praefatis damnamus quoque et reprobamus, illiusque impressionem, descriptionem, lectionem, retentionem et usum sub pari excommunicationis poenâ omnino itidem prohibemus. In contrarium facientibus non obstantibus quibuscumque.

Praesentes lit-
teras praecipit
publicari.

§ 3. Ut autem eadem praesentes litterae ad omnium notitiam facilius perducantur, nec quisquam illarum ignorantiam allegare possit, volumus et auctoritate praedictâ decernimus, illas ad valvas basilicae Principis Apostolorum, ac Cancellariae Apostolicae, necnon Curiae generalis in Monte Citatorio et in acie Campiflorae de Urbe per aliquem ex cursoribus nostris, ut moris est, publicari, illarumque exempla ibidem affixa relinqui, sic vero publicatas, omnes et singulos, quos concernunt, perinde efficere ac si unicuique illorum personaliter notificate et intimatae fuissent;

Transumptis
credi val.

§ 5. Ipsarumque litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiasticâ dignitate constitutae munitis, eandem prorsus fidem tam in iudicio quam extra illud ubique locorum haberi, quae haberetur eisdem praesentibus si exhibitae forent vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xi octobris MDCCXXXIV, pontificatus nostri anno v.

Dat. die 11 octobris 1734, pontif. anno v.

Pro domino cardinali OLIVERIO,

P. L. JACQUET.

Anno a nativitate Domini nostri Iesu Christi MDCCXXXIV, indictione XII, die vero XII mensis octobris, pontificatus sanctissimi in Christo pa-

Bull. Rom. — Vol. XXIV.

tris et domini nostri domini Clementis divina providentiâ Papae XII anno v, supradictae litterae apostolicae affixae et publicatae fuerunt ad valvas basilicae Principis Apostolorum, Cancellariae Apostolicae, Curiae generalis in Monte Citatorio, in acie Campiflorae, ac in aliis locis solitis et consuetis Urbis, per me Franciscum Bartolotti apostolicum cursorem.

PETRUS ORIGHI magister cursorum.

CXLIV.

Confirmatio duorum decretorum seu statutorum a capitulo generali Congregationis clericorum saecularium Doctrinae Christianae in Galliâ editorum circa vocem provincialium in capitulis generalibus, eorumque praesidentiam capitulis provincialibus.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Exponi nobis nuper fecit dilectus Filius Hyacinthus de Benoît, presbyter ac procurator generalis clericorum saecularium Doctrinae Christianae in Galliâ, quod in capitulo generali eiusdem Congregationis hoc anno Parisiis celebrato, cap. II constitutionum inibi editarum, statutum fuit (reservatis tamen desuper nostris et Apostolicae Sedis beneplacito et approbatione), ut, si tempore capituli generalis dictae Congregationis munus praepositi provincialis alicuius provinciae ipsius Congregationis per obitum aut aliâs qualitercumque vacans reperiretur, tunc interesse deberet capitulo generali praefato tamquam vocalis, et eodem modo quo ipse praepositus provincialis eiusmodi munere in eâ provinciâ immediate functus fuisset, vel, eo deficiente, qui ad praescriptum dictarum constitutionum eandem provinciam regeret; et cap. VII cautum est, ut, si novus praepositus provincialis foret de gre-

Procuratoris
hatus Congre-
gationis praes.

1 Quisnam? Deest subiectum (R. T.).

capituli itidem provincialis, nec ei praesit praepositus generalis aut eius delegatus, idem novus praepositus provincialis capitulo provinciali praesideret; si vero¹ esset in eadem Urbe, vel non ita distans ut intra unum vel alterum diem adesse posset, advocaretur, non interrupto capitulo, et, si veniret, exciperetur uti vocalis; idque potiori iure locum sibi vindicaret respectu capituli generalis quoad praepositum generalem huiusmodi, si forte aliquem eligi contingeret qui de gremio ipsius capituli generalis non fuisset. Quare praefatus Hyacinthus procurator generalis nobis humiliter supplicari fecit ut in praemissis opportune providere et ut infra indulgere de benignitate apostolica dignaremur.

Pontifex annuit petitis.

§ 2. Nos igitur, ipsius Hyacinthi procuratoris generalis votis hac² in re, quantum cum Domino possumus, favorabiliter annuere volentes, eumque a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium duntaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censes, supplicationibus eius nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, enarrata duo decreta seu statuta cap. II et VII dictarum constitutionum, a capitulo generali eiusdem Congregationis Doctrinae Christianae sicut praemittitur edita, auctoritate apostolica, tenore praesentium, confirmamus et approbamus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis robur adicimus, ac omnes et singulos iuris et facti defectus, si qui in praemissis quomodolibet intervenerint, supplemus.

Clausulae.

§ 3. Decernentes, ipsas praesentes lit-

¹ Edit. Main. legit vere (n. r.).

² Edit. Main. legit ac pro hac (n. r.).

teras, semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis respective inconcusse observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane quidquid secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Obstantibus derogat.

§ 3. Non obstantibus praemissis, ac constitutionibus apostolicis, necnon, quatenus opus sit, dictae Congregationis, aliusve quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus ei singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis alias in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice duntaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die XIII novembris MDCCXXXIV, pontificatus nostri anno V.

Dat die 13 novembris 1734, pontif. anno V.

F. card. OLIVERIUS.

CXLV.

Quod decanatus Sacrae Rotae auditorii ab episcopo etiam titulari optari non possit; nec in Rotâ cognosci causae ipsorum auditorum eorumque consan-

guineorum in primo gradu : causae vero in Rold semel inductae avocari ab eadem nequeant.

Clemens episcopus,
servus servorum Dei,
ad perpetuam rei memoriam

Prooemium.

In summi pontificatus speculâ a Christo domino constituti, ad quaecumque Urbis tribunalia mentis nostrae aciem dirigentes, ea praecipue, quae auditorum palatii nostri laudem interque eos unanimem tranquillitatem confovere possunt, prae oculis speciatim habemus, ut nempe auditorium ipsum cunctis nationibus, huc pro controversiarum decisione convenientibus, incorruptae mentis praeconio celebretur, eiusque iudicia, ut hactenus factum est, ubique terrarum debito plausu excipiantur.

Causae huius constitutionis.

§ 1. Itaque nos, intimo cordis affectu iustitiam, eo quo par est studio et sedulitate, ac sine ullâ acceptione personarum, in causis iamdudum introductis vel imposterum introducendis administrari et nullo modo retardari cupientes, quod aliâs pia memoriae antecessorum nostrorum Romanorum Pontificum hac de re editis constitutionibus cautum est, omnes longarum litium ambages et controversias, magnâ, ut decet, sollicitudine, ad debitum finem perducere volumus; quandoquidem tam spectatae virtutis auditorium ab iisdem Pontificibus antecessoribus nostris, nobisque ipsis, ob integritatis et utriusque iurisprudentiae famam tanti factum fuisse constat, ut quasi certatim permagnis gratiarum privilegiis et honoribus illud ornare studuerint; quibus ipsi auditores optime instructi, unoque iusti et recti studio prae oculis habito, ius suum cuique tribuere satagerent. Quod hactenus, Dei gratiâ opitulante, factum, amplius deinceps factum iri speramus,

ita ut in toto auditorio vix quidquam desiderandum supersit.

§ 2. Nihilominus, eodem auditorio pro sua vigilantia et probitate nobis humiliter suggerente, animorum suorum quieti iustitiaeque consultum iri, si una et altera controversiae formido e medio tolleretur, quae interdum discordias serere ac totius auditorii animos non sine gravi causarum ventilandarum incommodo turbare possent: quorum nos providam circumspectionem et boni publici studium laudantes, eorumque expositiones plurimi facientes, hac nostrâ constitutione eas effectum per illos optatum assequi volumus. Quae quidem huc summatim reducuntur. Ut imposterum, decanatu auditorii vacante, atque ad munus ipsum decani auditore inter ceteros antiquiore¹, sed tamen episcopali, archiepiscopali, vel etiam patriarchali dignitate, residentiae oneri adstrictae, vel etiam non adstrictae, sed a titulo tantum denominatae², in partibus, ut dicitur, infidelium, qui quidem auditor antiquior, eiusmodi dignitate praeditus, tunc munus locumtenentis occupans, in concursu alterius ex iisdem auditoribus, minus tamen antiqui, atque simili dignitate minime fulgentis, sive etiam qui, uti decanus actu existens, ad aliquam ex memoratis dignitatibus promoveretur, ideo decani munus, pro altero sibi immediate succedenti relinquere deberet: quandoquidem olim hac de re discordes atque inter se diversae fuerint sententiae, ita ut quisque suam, utpote sibi magis gratam, sequeretur, singulis etiam quamdam observantiam pro se adducentibus; unde factum ut in hac sententiarum diversitate diversa etiam interque se discordantia iudicata

Nonnullae controversiae inter ipsos auditores aliquando insurrexere.

Utrum episcopus possit decani munus suscipere.

¹ Syntaxin seq. corrigere desperamus (R. T.).

² Videtur legendum *adstrictâ... non adstrictâ... denominatâ* (R. T.).

prodierint, ut sane contigit tempore felicis recordationis praedecessoris nostri Pii IV, qui in constitutione sua anni MDLII, quae incipit *Dudum siquidem*, datâ apud S. Marcum, vi kalendas augustas, pontificatus anno III, sanxit, decanatum, tamquam non ferendum cum episcopatu Perusino, ad quem Iulius Oradinus auditor antiquior evectus fuerat, propterea tunc temporis tribuendum alteri auditori minus antiquo magistro Petro de Rubais; tempore vero pia memoriae praedecessoris quoque nostri Benedicti XIII, in causâ agitâ inter dilectum filium nostrum Pompeium, nunc S. R. E. cardinalem Aldrovandum nuncupatum, tunc antiquiorem, sed archiepiscopum Neocaesariensem, ac bonae memoriae magistrum Carolum Cerrium in dicto auditorio minus antiquum, per Congregationem particularem ab eodem Benedicto deputatam, decanatus adiudicatus est eidem Pompeio cardinali, utpote archiepiscopali dignitate fulgenti: Altera vero dubitationis occasio nobis proposita haec est: Sanctae memoriae decessor noster Pius IV in constitutione, quae incipit *In throno iustitiae*, datâ apud S. Marcum, vi kalendas ianuaras, pontificatus anno III, sanxit, ne causae propriae auditorum, eorumve familiarium et consanguineorum vel affinium usque ad secundum gradum, iuxta ius canonicum computandum, cognoscantur in Rotae auditorio; quam postea dispositionem pia memoriae antecessor noster Paulus V confirmavit aliâ sua constitutione *De reformatione tribunalium Urbis*, in titulo *De auditoribus Rotae*, quae incipit *Universi agri*, datâ apud S. Petrum, kalendis martii, pontificatus anno VII; nihilominus, hoc minime obstante, in eodem Rotae auditorio successu temporis multas causas agitari contigit, quamvis essent de exceptis in

iamdietis antecessorum nostrorum constitutionibus: idque factum esse reperitur etiam quum sanctae memoriae antecessores nostri Gregorius XV et Alexander VIII in minoribus constituti eidem auditorio adscriberentur: qui postmodum, licet ad supremum gradum pontificatus evecti, deque iamdictâ inobservantiâ optime conscii, nihil tamen contra eam decreverunt.

§ 3. Quapropter hodierni dilecti filii palatii nostri auditores nunc seriô cogitantes, et vim dispositionum, clausularum et decretorum in relatis constitutionibus apostolicis contentorum, ac eorumdem usus discordes memoriâ repetentes, sanctae memoriae decessori nostro Clementi XI supplicationes suas porrexerunt, ut decretum, ab iis hac de re conditum, confirmaret, quo affirmabatur in dictis causis tuto procedi posse utrâque tantum parte consentiente: cui quidem supplicationi Clemens Pontifex per organum bonae memoriae Ioannis Dominici S. R. E. cardinalis Paracciani nuncupati, tunc sui auditoris, die xxx septembris anni MDCCII ita rescripsit: *Quoad tertium* (ubi scilicet de hoc agebatur) *dabitur resolutio postquam maturius examinatum fuerit dubium. Interim Sanctitas Sua permittit servari solitum.*

§ 4. Sed nihilominus adhuc crescente litigantium malitiâ, complures ex iis non solum in causis post praestitum consensum exceptis, sed etiam post editas ab ipso causarum auditorio decisiones, et forte etiam prolatas in primo reditu, quem vulgo turnum appellant, sententias, aliô declinare studuerunt.

§ 5. Quare, ut tam absona a nostro auditorio, in unam iustitiam erga quoslibet exercendam religiose incumbenti, nos, votis eorumdem dilectorum filiorum obsecundantes, providâ curâ arceremus,

In hoc vero auditores supplicarunt Clementi XI ut confirmaret statum ab eis, ut scilicet procedi posset utrâque parte consentiente.

Hinc variae inter auditores opiniones.

Re prius a nonnullis S. R. E. cardinalibus examinata.

Utrum causas auditorum et consanguineorum cognoscendae in Rotâ.

quinque ex venerabilibus fratribus nostris S. R. E. cardinalibus rem totam examinandam commisimus, ut, his omnibus una cum singulis suis circumstantiis diligenter perpensis, quid aequius et utilius a nobis statuendum esset ipsi suggererent: quod quidem die xxx mensis septembris proxime elapsi mature fecerunt. Siquidem in unum convenientes, peracto diligenti totius negotii examine, quid opportunioris remedii esset adhibendum, unanimi consilio exposuerunt.

Constitutiones
ab auctoribus
editas confirmat
Clemens.

§ 6. Quibus grato animo acceptis, ut in Rotae auditorio iustitia et pax se mutuo amplectantur, nos motu proprio, ex certa scientia ac deliberatione nostris, deque apostolicae potestatis plenitudine, omnia et singula, tam super eius decanatu, quam super quibuscumque aliis in eodem auditorio hucusque introductis et discussis, ab eo iudicata, ita ut eorum nullitas ab infrascriptis, non ad aliquod praeteritorum praeiudicium, sed ad exactiorem futurorum regulam, desumi possit, firma et stabilia remanere decernimus. Deinceps vero, et perpetuis futuris temporibus, episcopum, archiepiscopum et patriarcham, etiam titulares, decanatum optare non posse statuimus, sique decanum ad aliquam ex his dignitatibus etiam titularem promoveri contigerit, non obstante etiam retentione loci auditoris expressa in provisione ecclesiae, decanatum ipsum vacare volumus. Dictas vero Pii IV et Pauli V praedecessorum nostrorum constitutiones restringendas esse ad causas proprias auditorum Rotae et consanguineorum in primo gradu tantum, necnon ad eos qui auditorum studiis inserviunt. Ubi vero agitur de aliis, quae iuxta dictas constitutiones in Rotae auditorio cognosci non poterunt, eas in eodem auditorio cognosci posse, sed auditori,

dum cognoscuntur, ab aula exeundum. Quo vero ad causas introductas et introducendas, eas post consensum partium, etiam in casibus in quibus disponitur in Rotâ non cognosci, ex eadem Rotâ advocari minime posse.

§ 7. Praesentes quoque litteras nostras, cum omnibus et singulis in eis contentis, etiam ex eo quod ad id interesse habentes vocati et auditi non fuerint, vel ex eo quod illae, nulla subsistente causa, vel etiam de facto, processisse dici possent, seu etiam processerint, aut ex alia quavis iuridica et legitima etiam necessario exprimenda causa, vel quocumque praetextu, de nullitatis vitio, seu intentionis nostrae aut quovis alio defectu notari, impugnari, invalidari, retractari et ad terminos iuris reduci, aut in ius vel controversiam revocari, seu adversus illas quodcumque iuris, facti vel gratiae remedium aut oris apositionem impetrari, vel etiam motu et potestatis plenitudine similibus concedi, vel sub quibusvis constitutionibus, ac nostrae et Cancellariae Apostolicae regulis editis et edendis, ac litteris apostolicis in contrarium etiam motu pari et concistorialiter emanatis, aut quibusvis aliis similium vel dissimilium gratiarum revocationibus, suspensionibus, limitationibus, aut aliis contrariis dispositionibus, comprehendi nullo unquam tempore posse, sed semper ab illis excipi, et, quoties illae emanaverint, toties in pristinum et eum, in quo ante praemissa erant, validissimum statum restitutas, repositas et plenarie reintegratas, ac de novo etiam sub quacumque posteriori data, per nunc et pro tempore existentes auditorii praedicti seu Rotae auditores quodcumque eligenda, concessas, validasque et efficaces fore et esse, sicque et non alias per quoscumque iudices etiam au-

Hanc constitutionem infringi aut ullo notari vitio non posse statuit.

ditorii iam dicti auditores, ac eiusdem S. R. E. cardinales, et quamcumque eorundem¹ Congregationem apostolicam auctoritate super his quandocumque deputandam, sublata eis et eorum cuilibet aliter iudicandi, definiendi et interpretandi facultate et auctoritate, iudicari, defini et interpretari debere, ac ex nunc irritum quoque et inane quidquid secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari, apostolicam auctoritate perpetuo decernimus, statuimus et declaramus.

Obstantibus
derogat.

§ 8. Non obstantibus, quatenus opus sit, Cancellariae praedictae regulam de iure quaesito non tollendo, ac secundodictam Pii ac praedictam Pauli praedecessorum dictorum, aliisque super decanatu ac causis praedictis contra praemissa quomodolibet disponentibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, dictique auditorii, quatenus opus sit, etiam iuramento, confirmatione apostolicam, vel quavis firmitate aliam roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis, sub quibuscumque tenoribus et formis, ac cum quibusvis clausulis et decretis, etiam motu simili et concistorialiter, ac alias in contrarium quomodolibet concessis, approbatis et innovatis, ac in futurum concedendis, approbandis et innovandis; quibus omnibus et singulis, etiamsi de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa et individua, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio habenda, aut aliqua alia exquisita forma servanda esset, tenores huiusmodi eisdem praesentibus pro expressis, perinde ac si in eis de verbo ad verbum inserti forent, habentes², illis

¹ Male edit. Main. legit earundem

² Vocem habentes non addimus (R. T.).

alias in suo robore permansuris, hac vice dumtaxat, motu et potestatis plenitudine paribus, specialiter et expresse derogamus, et derogatum esse volumus et mandamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Clausulae.

§ 9. Nulli ergo omnino hominum, etc.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, anno Incarnationis dominicae MDCCXXXIV, xv kalendas decembris, pontificatus nostri anno v.

Dat. die 17 novembris 1734, pontif. anno v.

A. card. prodaturus.

F. card. OLIVERIUS.

Visa de Curia:

I. archiep. Ancyranus.

Loco † plumbi.

I. B. EUGENIUS.

Reg. in Secret. Brevium.

CXLVI.

Tubilaeum universale ad implorandam divinam opem pro pace inter principes christianos et aliis Catholicae Ecclesiae necessitatibus.

Clemens Papa XII,

Universis christifidelibus praesentes litteras inspecturis, salutem et apostolicam benedictionem.

Exordium.

Ecclesiae militantis regimini, nullo licet meritorum nostrorum suffragio, divina providentia praesidentes, acerbissimo sane ac pene inexplicabili paterni cordis nostri moerore angimur, dum, mentis nostrae aciem longe lateque circumferentes, attente contemplamur quantis christiana respublica luctuosis hisce temporibus fere undique iactetur calamitatum fluctibus et procellis, cumque potissimum intuemur dirum atroxque bellum inter principes catholicos non ita pridem exortum, ac vehementius in dies recrudescentis, florentis-

simas orbis christiani provincias ac potentissima olim regna caedibus, ruinis, excidiis et vastationibus complere ac misere depascere; et quamvis, de dominici gregis salute ac publicâ tranquillitate solliciti, nihil eorum, quae officii nostri ratio a nobis postulat, humanaque monet prudentia, praetermittamus, ut tot tantisque malis et aerumnis remedium quaeramus, ac praesertim, quidquid in nobis est virium consilii in id conferre non cessemus, quo eorumdem catholicorum principum animi, sublatis gliscentibus dissidiis, ad mutuam concordiam revocentur, ac in pristinae charitatis compagem restituantur; quia tamen vani sunt hominum conatus, nisi gratiae caelestis ope adiuventur, manus et oculos cum lacrymis et gemitu ad Eum assidue attollimus, qui altissimum posuit refugium suum, quique concludit ostiis mare, et ei dicit usque huc venies et non procedes amplius et hic confringes lumentes fluctus tuos, ut Ipse pro suâ clementiâ, in qua praecipue confidimus, motas sedet, ac imminentes repellat tempestates, saevientisque belli et alia divinae suae ultionis flagella a christifidelibus procul avertat.

Christifideles
hortatur ad o-
pem & divinam
implorandum.

§ 1. Quamobrem vos omnes, quibus curam et sollicitudinem nostram impendimus, ad id ipsum coniunctis nobiscum precibus a Deo totius consolationis humiliter efflagitandum excitandos duximus. Fugientes igitur a facie arcus, adeamus cum fiducia ad thronum gratiae, scissis per veram poenitentiam cordibus nostris, caelestem iram, quam iniquitates nostrae provocaverunt, obsecrationibus, ieiuniis, eleemosynis, aliisque piis operibus placare studeamus, ut, qui castigat nos propter scelera nostra, salvet nos propter misericordiam suam, et quam mundus dare non potest, populo suo supplicanti pacem benigne largiatur.

§ 2. Hae autem ut ferventiori spiritus ardore uberiorique fructu fiant, ex prisco Romanae Ecclesiae omnium matris et magistrae more, caelestium munerum thesauros, quorum dispensationem fidei nostrae commisit divina dignatio, aperire et largâ manu erogare decrevimus. Itaque de omnipotentis Dei misericordiâ ac beatorum Petri et Pauli apostolorum eius auctoritate confisi, illâ ligandi atque solvendi potestate, quam nobis Dominus contulit, universis et singulis utriusque sexus christifidelibus in almâ Urbe nostrâ degentibus, qui S. Ioannis in Laterano, Principis Apostolorum et S. Mariae Maioris de eadem Urbe ecclesias, seu basilicas, vel earum aliquam, intra decursum proximae, quae erit secunda Adventus, vel immediate subsequentis hebdomadae, usque ad dominicam sequentem inclusive, saltem semel devotè visitaverint, ibique per aliquod temporis spatium pias ad Deum preces effuderint, ac quartâ et sextâ feriis et sabbato alterius ex praefatis hebdomadis ieiunaverint, et peccata sua confessi sanctissimum Eucharistiae sacramentum in dominicâ die immediate sequenti, vel aliâ die intra eandem hebdomadam reverenter sumserint, ac pauperibus aliquam eleemosynam, prout unicuique suggeret devotio, erogaverint; ceteris vero extra Urbem praedictam ubicumque degentibus, qui ecclesias ab Ordinariis locorum vel eorum vicariis seu officialibus, aut de eorum mandato, et, ipsis deficientibus, per eos qui ibi curam animarum exercent, postquam ad eorum notitiam hae nostrae pervenerint, designandas, vel ecclesiarum huiusmodi aliquam, spatio duarum similiter hebdomadarum a publicatione designationis per Ordinarios vel eorum vicarios seu officiales vel alios ut praefertur faciendae decursura-

Pia opera hic
statuta facien-
tibus indigen-
tas elargitur.

rum, si semel visitaverint, ac quartâ et sextâ feriis ac sabbato alterius ex hebdomadis huiusmodi ieiunaverint, pariterque peccata sua confessi, ac in die dominicâ immediate sequenti, vel aliâ die intra eandem hebdomadam sanctissimâ communionem refecti fuerint, et pauperibus aliquam eleemosynam ut praemittitur erogaverint, plenissimam omnium peccatorum suorum indulgentiam et remissionem, sicut in anno iubilaei visitantibus certas ecclesias intra et extra Urbem praedictam concedi consuevit, tenore praesentium concedimus et elargimur.

Navigantibus, regularibus, infirmisque modum huiusmodi assequendi indulgentias praescribit.

§ 3. Navigantes vero et iter agentes, ut, cum primum ad sua sese domicilia receperint, supradictis peractis, et visitatâ ecclesiâ cathedrali vel maiori aut parochiali loci eorum domicilii, eandem indulgentiam consequi possint et valeant: regularibus autem personis utriusque sexus, etiam in claustris perpetuo degentibus, necnon aliis quibuscumque tam laicis quam ecclesiasticis saecularibus vel regularibus, etiam in carcere aut captivitate existentibus, vel aliquâ corporis infirmitate seu alio quocumque impedimento detentis, qui supra expressa vel eorum aliqua praestare nequiverint, ut illa confessarius, ex iam approbatis a locorum Ordinariis ante praesentium publicationem seu approbandis, eis in alia pietatis opera commutare, vel aliud proximum tempus prorogare possit, eaque iniungere, quae ipsi poenitentes efficere poterunt, pariter concedimus et indulgemus.

Amplius confessarius concedit facultates.

§ 4. Insuper omnibus et singulis christianis utriusque sexus tam laicis quam ecclesiasticis saecularibus et regularibus cuiusvis Ordinis, Congregationis et Instituti, tam in Urbe praefatâ quam extra eam ubique locorum ut praefertur degentibus, licentiam concedimus

et facultatem, ut sibi ad hunc effectum eligere possint quemcumque presbyterum confessarium, tam saecularem, quam cuiusvis Ordinis et instituti regularem, ex approbatis ut praemittitur a locorum Ordinariis, qui eos ab excommunicationis, suspensionis et aliis ecclesiasticis sententiis et censuris, a iure vel ab homine, quavis causâ latis seu inflictis, necnon ab omnibus peccatis, excessibus, criminibus, delictis, quantumvis gravibus et enormibus, etiam locorum Ordinariis, sive Nobis et Sedi Apostolicae, etiam in litteris die Coenae Domini legi solitis contentis, et aliâs per quascumque nostras aut Romanorum Pontificum praedecessorum nostrorum constitutiones, quarum tenores praesentibus haberi volumus pro expressis, quomodocumque reservatis, in foro conscientiae, et hac vice tantum, absolvere et liberare valeant; et insuper vota quaecumque (religionis et castitatis exceptis: in alia pia et salutaria opera commutare, iniunctâ tamen eis et eorum cuilibet in supradictis omnibus casibus poenitentia salutari, aliisque eiusdem confessarii arbitrio iniungendis.

§ 5. Quapropter, tenore praesentium, in virtute sanctae obedientiae districtae praecipimus atque mandamus omnibus et quibuscumque venerabilibus fratribus patriarchis, archiepiscopis, episcopis et aliis ecclesiarum praelatis, ac quibuscumque Ordinariis locorum ubicumque existentibus, eorumque vicariis et officialibus, vel, iis deficientibus, illis qui curam animarum exercent, non tamen qui per dictos praedecessores a S. R. E. communionem quomodolibet separati fuerint, ut, cum praesentium litterarum transumpta aut exempla etiam impressa acceperint, illa statim absque ullâ morâ, retardatione vel impedimento per suas ecclesias et dioeceses, provincias, civi-

Ab Ordinariis locorum huiusmodi indulgentias publicari praecipit.

tates, oppida, terras et loca publicent et publicari faciant, ecclesiasque seu ecclesias visitandas designent.

A supradictis facultatibus irregularitatem excipit.

§ 5. Non intendimus autem per praesentes super aliquâ irregularitate publicâ vel occultâ, notâ, defectu, incapacitate seu inhabilitate quoquo modo contractâ dispensare, vel aliquam facultatem tribuere dispensandi, seu habilitandi, et in pristinum statum restituendi, etiam in foro conscientiae; neque pariter easdem praesentes iis, qui, etiam eorum nomine speciatim non expresso, a communione S. R. E., ut praefertur, segregati, seu a Nobis et Apostolicâ Sede, aut¹ ab aliquo praelato vel iudice ecclesiastico excommunicati, suspensi, interdicti, seu aliâs in sententias et censuras incidisse declarati vel publice denunciati fuerint, nisi intra tempus dictarum duarum hebdomadarum satisfecerint, aut cum partibus concordaverint, ullo modo suffragari posse aut debere.

Obstantium derogatio.

§ 6. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, praesertim quibus facultas absolendi in certis tunc expressis casibus ita Romano Pontifici pro tempore existenti reservatur ut nec etiam similes vel dissimiles indulgentiarum et facultatum huiusmodi concessionibus, nisi de illis expressa mentio aut specialis derogatio fiat, cuiquam suffragari queant, necnon regulâ nostrâ de non concedendis indulgentiis ad instar, ac quorumcumque Ordinum et congregationum sive institutorum regularium, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis, eisdem Ordinibus, congregationibus et institutis, illorumque personis quomodolibet concessis, confir-

¹ Edit. Main. legit ut pro aut (R. T.).

matibus et innovatis; quibus omnibus et singulis, etiamsi de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa et individua, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quaevis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, illorum tenores praesentibus pro sufficienter expressis ac formam in eis traditam pro servatâ habentes, hac vice specialiter nominatim et expresse ad effectum praemissorum derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

§ 7. Ut autem praesentes nostrae, quae ad singula loca deferri non possunt, ad omnium notitiam facilius deveniant, volumus ut earundem praesentium transumptis, vel exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in dignitate ecclesiasticâ constitutae munitis, ubique locorum et gentium eadem prorsus fides habeatur, quae haberetur ipsis praesentibus si forent exhibitae vel ostensae.

Fides transumptorum.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die III decembris MDCCXXXIV, pontificatus nostri anno v.

Dat. die 3 decembris 1734, pontif. anno v.

F. card. OLIVERIUS.

Anno a nativitate Domini nostri Iesu Christi MDCCXXXIV, indictione XII, die vero IV decembris, pontificatus sanctissimi in Christo patris et domini nostri domini Clementis divina providentiâ Papae XII anno v, supradictae litterae apostolicae affixae et publicatae fuerunt ad valvas basilicarum Lateranensis, Vaticanae et Liberianae, Cancellariae Apostolicae, Montis Cimatorii, Aciæ Campiflorae, ac aliis locis solitis et consuetis Urbis per me Petrum Righi apostolicum cursorem.

FRANC. BAROLOTTUS, magister cursorum.

CXLVII.

Summarium indulgentiarum, quae conceduntur fratribus et sororibus Ordinis Servorum B.M.V. et confratribus Septem Dolorum, Ordinis ecclesias statutis anni diebus visitantibus, vel etiam coronam Septem Dolorum nuncupatam recitantibus, adimplendo insuper nonnulla pia opera quae in hac constitutione praescribuntur.

**Clemens episcopus,
servus servorum Dei,
ad perpetuam rei memoriam.**

Exordium.

Unigeniti filii Dei salvatoris nostri Iesu Christi, qui, pro reconciliandâ auctori suo humanâ naturâ, de caelis ad mundi huius infima descendere, nostraeque mortalitatis carnem sumere, et tandem errata nostra ineffabili dignatus est charitate diluere, vices, licet immeriti, gerentes in terris, gregem dominicum curae nostrae commissum ad viam salutis aeternae perducere satagentes, religiosas virorum et sanctimonialium familias, aliosque utriusque sexus christifideles, quorum merita pro demeritis penitus sunt imparia, ad pia et meritoria opera exercenda, propositis spiritualibus indulgentiarum muneribus, ita excitamus, ut per ea felicitatis aeternae praemia facilius consequi mereantur.

Ordinis Servorum B. V. laudes enarrat.

§ 1. Cum itaque, sicut accepimus, Ordo fratrum Servorum B.M.V. nuncupatorum a suis primordiis ad haec usque tempora Catholicae Ecclesiae admodum utilis et fructuosus extiterit, et dilecti filii eiusdem Ordinis fratres quamplurima christianae pietatis et charitatis opera sedulo exercuerint, et praesertim in aeternâ christifidelium salute procurandâ assiduos labores alacriter susceperint, ac dilectus filius noster Petrus Maria tituli S. Ioannis ante Portam Latinam nuncupati S.R.E. pres-

byter cardinalis Pieri nuncupatus, qui Ordinem ipsum expresse professus prioris generalis et nonnulla alia dicti Ordinis munera et officia laudabiliter sustinuit, dudum suas preces pro quibusdam indulgentiarum et peccatorum remissionibus ac poenitentiarum relaxationibus aliisque gratiis spiritualibus favore dictorum fratrum et ecclesiarum ab eis administratarum, nec non super recitatione infrascriptae coronae, quae Septem Dolorum nuncupatur, ac aliâs ab Apostolicâ Sede reportandis, nobis humiliter porrexerit, et nos, ad praemissorum effectum, particularem videlicet dilectorum etiam filiorum nostrorum Antonii Xaverii de Gentilibus prodatrii nostri, et Ioannis Antonii Guadagni, nostri in Urbe eiusque districtu vicarii in spiritualibus generalis, ac Marcelli Passeri, respective nuncupatorum, nostri pro-auditoris respective presbyterorum eiusdem S.R.E. cardinalium Congregationem, assignato illi in secretarium venerabili fratre nostro Carolo Alberto Cavalchini moderno archiepiscopo Philippensi, apostolicâ auctoritate deputaverimus, eidemque Congregationi sic a nobis, ut praefertur, deputatae opportunas ad id facultates concesserimus; deinde vero sub diē xxxi mensis maii proxime praeteriti Antonius Xaverius et Ioannes Antonius ac Marcellus cardinales praefati insimul congregati, et re mature discussâ, infrascriptas indulgentias et peccatorum remissiones ac poenitentiarum relaxationes, aliasque gratias per nos, ut infra, concedendas censuerint; postmodum vero dictus Carolus Albertus archiepiscopus relationem dictae Congregationis et eorum quae in illâ ab Antonio Xaverio ac Ioanne Antonio et Marcello cardinalibus praefatis pertractata, quaeque a nobis concedi posse eis visa fuerunt, sub diē xi

mensis augusti etiam proxime praeteriti nobis fecerit :

Praeter indulgentias alias Ordini concessas, eiusque ecclesias visitantibus, ac praecipue confratribus Septem Dolorum,

§ 2. Nos, qui erga dictum Ordinem peculiarem devotionis affectum semper gessimus, eiusdemque Ordinis protectoris munus, olim a bonae memoriae Nereo, dum viveret, eiusdem S.R.E. cardinale Corsini nuncupato, patruo nostro, obtentum, dum cardinalatus honore fungebamur per plures annos egimus, et ad summi apostolatus apicem divina favente clementia assumpti, quoad vivemus, retinendum duximus, quique, quando, cum Deo placuerit, vita functi fuerimus, ad illud obeundum dilectum etiam filium nostrum Nereum dictae S. R. E. diaconum cardinalem etiam Corsini nuncupatum, nostrum secundum carnem ex fratre Germano nepotem, per litteras apostolicas in formam Brevis sub annulo Piscatoris desuper expeditas apostolica auctoritate praefata deputavimus, Petrum Mariam cardinalem, ac fratres Ordinis huiusmodi, aliosque christifideles ecclesias dicti Ordinis frequentantes, christianaeque pietatis opera penes eosdem fratres aut alias exercentes, specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, ac omnes et quascumque indulgentias, peccatorum remissiones et poenitentiarum relaxationes per quoscumque Romanos Pontifices praedecessores nostros fratribus praefatis et monialibus dicti Ordinis ac utriusque sexus christifidelium confraternitatibus Septem Dolorum eiusdem B. Mariae Virginis nuncupatis, auctoritate pro tempore existentis prioris generalis dicti Ordinis ac vigore facultatis ei ab Apostolica Sede impartitae canonice erectis, eorumdemque confraternitatum confratribus, nec non aliis christifidelibus christianae pietatis opera huiusmodi penes illos exercentibus hactenus concessas,

1 Particulam cum nos addimus (n. t.).

et praesertim indulgentiam plenariam confratribus huiusmodi processioni Septem Dolorum nuncupatae quolibet mense fieri solitae interessentibus per felicitis recordationis Paulum Papam V praedecessorem nostrum per suas binas quasdam videlicet sub datum Romae die x mensis martii anni Domini mdcxi alteras vero sub datum Tusculi die vii mensis iunii eiusdem anni mdcxi in formam Brevis sub annulo Piscatoris desuper expeditas litteras apostolicas concessam et successive per pia memoriae Innocentium PP. XI similiter praedecessorem nostrum per alias suas etiam in formam Brevis sub annulo Piscatoris desuper sub datum Romae die xxiv mensis octobris anni eiusdem Domini mdclxxxii etiam expeditas litteras apostolicas confirmatam, quas omnes, dummodo illae praesentibus non repugnent, salvas et illaesas esse intendimus, illorumque ac aliarum infrascriptarum litterarum apostolicarum recolendae memoriae Benedicti XIII etiam praedecessoris nostri necnon infrascripti summarii tenores etiam veriores ac datas praesentibus pro expressis habentes, motu proprio et ex certa scientia ac matura deliberatione nostris, deque apostolicae potestatis plenitudine et ex voto Congregationis particularis huiusmodi :

Omnibus et singulis utriusque sexus christifidelibus saltem contritis, illis videlicet qui praefatas ecclesias dicti Ordinis quocumque anni die devote visitaverint, inibique saltem orationem dominicam et salutationem angelicam pro christifidelibus tam viventibus quam in Christi charitate defunctis per modum suffragii semel recitaverint, quinquaginta dies; iis vero, qui horis canonicis in ecclesiis Ordinis huiusmodi decantandis seu recitandis, et qui anti-

Novas concessit indulgentias.

1 Videtur legendum illarumque (n. t.).

phionse *Salve Regina* inibi pariter singulis anni diebus decantari seu recitari solitas respective devote interfuerint, et pro S. M. E. exaltatione, haeresum extirpatione, haereticorum et infidelium conversione, ac inter christianos principes conciliandâ et fovendâ pace, concordia et unione, ac pro tempore existentis Romani Pontificis salute, pias ad Deum preces effuderint, ac qui ecclesias Ordinis huiusmodi in earum dedicationum¹ respective diebus a primis vespers usque ad occasum solis dierum huiusmodi, necnon, vere poenitentes et confessi, singulis sabbati diebus respective etiam devote visitaverint, inibique, ut supra, oraverint, quoties id egerint respective centum dies, et eisdem utriusque sexus christifidelibus, etiam vere poenitentibus et confessis ac sacrâ communione refectis, qui a dominicâ Septuagesimae usque ad dominicam Palmarum inclusive semel in unoquoque die septies orationem dominicam ac toties salutationem angelicam praefatas recitantes, ac feriâ iv maioris hebdomadae, feriâ v in Coenâ Domini et feriâ vi in Parasceve cum eleemosynae impartitione, et singulis tertiis cuiuslibet mensis feriis, exceptis tamen illis, quae praefato tempore intra Septuagesimae et Palmarum dominicas huiusmodi inclusae, ac, septies easdem orationem dominicam, et toties salutationem angelicam, sive vespers defunctorum recitando, omnibus domini nostri Iesu Christi, unâ tantum, ac septem eiusdem B. Mariae Virginis, duabus tantum infrascriptis et per infrascriptos superiores regulares eligendis respective exceptis, respective festivitibus, et per octo dies festivitatem eiusdem B. M. V. Septem Dolorum nuncupatae, tertiâ dominicâ mensis septembris celebrari so-

¹ Edit. Main. legit *dedicationum* (R. T.).

litam, etiamsi illa ad aliam diem canonice transferri contingat, sequentes, ac singulis S. Iosephi, S. Augustini et Omnium Sanctorum eiusdem Ordinis, et cum eleemosynae huiusmodi impartitione, Inventionis et Exaltationis sanctae Crucis respective festivitibus, etiamsi aliqua illarum canonice, ut praefertur, transferatur, respective a primis vespers usque ad occasum solis dierum, in quibus omnes et singulae festivitates huiusmodi celebrabuntur, et, quoad Inventionis et Exaltationis huiusmodi festivitates praefatas, etiam per octo dies illas respective sequentes, singulis annis easdem ecclesias dicti Ordinis respective etiam devote visitaverint, inibique etiam pro sanctae matris Ecclesiae exaltatione, haeresum extirpatione, ac aliâs ut praefertur pias ad Deum preces effuderint, respective, septem annos et totidem quadragenas de iniunctis eis aut aliâs quomodolibet debitis poenitentiis in formâ Ecclesiae consuetâ misericorditer in Domino perpetuo relaxamus. Item eisdem utriusque sexus christifidelibus, etiam verè poenitentibus et confessis, ac praefatâ sacrâ communione refectis, qui orationi quadraginta horarum continuatarum, non autem interpolatarum, de locorum Ordinariorum licentiâ in qualibet ex dictis ecclesiis praefati Ordinis semel in anno tantum instituendae, per aliquod temporis spatium devote interfuerint et ut praefertur pias ad Deum preces effuderint, ac in unâ ex solemnitatibus eiusdem domini nostri Iesu Christi, orationem dominicam et salutationem angelicam septies, sive vespers defunctorum recitando, et in duabus respective a superioribus localibus dicti Ordinis eligendis (quae tamen, cum electae fuerint, amplius variari non possint) ex septem eiusdem B. M. V. respective

festivitatibus, ac in illius Septem Dolorum, ut praefertur, nuncupatâ et dominicâ tertiâ mensis septembris, ut praefertur, celebrari solitâ festivitate, etiamsi illa in aliam diem, ut praefertur, canonicè transferri contingat, respective etiam a primis vespers usque ad occasum solis singularum quatuor ultimodictarum festivitatum easdem ecclesias dicti Ordinis etiam annis singulis devote visitaverint, inibique pro dictae sanctae matris Ecclesiae exaltatione, ac aliâs ut praefertur respective pias ad Deum preces effuderint, et quoad ultimodictam festivitatem apud altare seu cappellam Septem Dolorum eiusdem B.M.V. nuncupatae etiam devote oraverint, quoties id in unâquaque ex quatuor posterioribus festivitatibus huiusmodi egerint; necnon praefatis utriusque sexus christifidelibus etiam vere poenitentibus et confessis, ac dictâ sacrâ communione, si id commode fieri poterit, reffectis, vel saltem contritis, qui, antequam ex hac vitâ migraverint, etiam in eorum mortis articulo, in interioris poenitentiae signum, habitum per fratres quoad viros et quoad mulieres per tertiarias dicti Ordinis respective gestari solitum deferendum etiam post illorum obitum humiliter petierint, respective plenariam omnium et singulorum suorum peccatorum indulgentiam et remissionem apostolicâ auctoritate praefatâ etiam perpetuo concedimus et impartimur. Et eisdem fratribus et monialibus dicti Ordinis expresse professis, etiam vere poenitentibus et confessis, ac dictâ sacrâ communione reffectis, praefatas ecclesias eiusdem Ordinis in Nativitatis, Praesentationis, Annunciationis, Visitationis, Purificationis et Assumptionis eiusdem B. Mariae Virginis respective festivitatibus a primis vespers usque ad occasum solis singularum sex festi-

vitatum huiusmodi singulis annis devote, et quoad moniales praefatas intra claustra eorum respective monasteriorum annis singulis visitantibus, inibique pro sanctae matris Ecclesiae exaltatione, ac aliâs ut praefertur pias ad Deum preces effundentibus, infirmitatis tamen aut gravis senii causâ hoc facere impeditis existentibus, aliquod aliud ad arbitrium superioris localis regularis pium opus peragentibus, singulis sex festivitatibus huiusmodi respective plenariam omnium et singulorum peccatorum suorum indulgentiam et remissionem, per eos ad illorum arbitrium pro fratrum et monialium dicti Ordinis illorumque et illarum consanguineorum et insignium benefactorum respective animabus, quae Deo in charitate coniunctae ab hac luce migraverint, per modum suffragii applicabilem, eâdem apostolicâ auctoritate etiam perpetuo concedimus et impartimur. Eisdemque fratribus et monialibus, ut supra, poenitentibus et confessis, ac eâdem sanctâ communione etiam reffectis, de eiusdem superioris licentiâ, in omnibus et singulis vigiliis festivitatum eiusdem B. M. V. in pane et aquâ, aut, hoc facere nequeuntibus, in pane et vino, et, seu etiam id nequeuntibus, uno tantum ferculo per communitatem apposito ad arbitrium eiusdem superioris addito, ieiunantibus, et per dimidium horae de eâdem B. Mariae Virginis devote meditantibus, quoties id egerint, septem annos et totidem quadragenas de iniunctis eis, aut aliâs, ut praefertur, debitis poenitentiis etiam pro fratrum et monialium eorumque consanguineorum et insignium benefactorum huiusmodi animabus praefatis, quae, ut praefertur, Deo in charitate coniunctae ab hac luce migraverint, applicabiles, similiter in formâ Ecclesiae consuetâ pariter perpetuo relaxamus.

Indulgentias
recitantibus co-
ronam Septem
D. Iorum
pellatam.

§ 3. Ac insuper, ut christianus populus ad Dei cultum sub eiusdem B. Mariae Virginis auspiciis ferventius accendatur, quascumque indulgentias et peccatorum remissiones, ac poenitentiarum relaxationes, coronam, quae in Septem principalem Dolorum, quos eadem B. Maria Virgo in unigeniti Filii sui vita et obitu passa fuit, recordationem ex septem septenariis angelicarum salutationum, septemque dominicis orationibus, necnon tribus aliis salutationibus angelicis in honorem lacrimarum eiusdem B. Mariae Virginis cum peculiari dolorum huiusmodi explicatione et meditatione composita existit, pie recitantibus, ab eodem Benedicto praedecessore per suas litteras apostolicas etiam in formam Brevis sub die xxvi mensis septembris pontificatus sui anno i expeditas, et incipientes *Redemptionis Domini*, concessas et impartitas, et in earum summario typis impresso contentas, illis tamen exceptis quae in § v eiusdem summarii continentur, quaeque tantummodo per nos revocatae et abrogatae censeantur, dicta apostolica auctoritate similiter perpetuo confirmantes et approbantes, omnibus utriusque sexus christifidelibus, qui etiam vere poenitentes et confessi, seu firmum confitendi propositum habentes, praefatam coronam, ab aliquo ex fratribus dicti Ordinis mediate vel immediate receptas, pie et devote recitaverint, quoties id egerint, centum annos; illis vero qui coronam praefatam, ut praefertur, receptam secum ferentes, illam singulis secundis, quartis et sextis feriis, ac de praecepto Ecclesiae festis diebus etiam devote recitaverint, et subinde etiam vere poenituerint et confessi fuerint, centum quinquaginta annos; et eisdem christifidelibus, qui, conscientiae suae examine rite peracto, etiam vere poe-

nitentes et confessi, praefatam coronam etiam devote recitaverint, et pro sanctae matris Ecclesiae exaltatione, haeresum extirpatione, ac catholicae religionis augmento pias ad Deum preces effuderint, ducentos annos; eisdemque christifidelibus pariter vere poenitentibus et confessis, ac sacra communione praefata etiam relectis, ac coronam praefatam frequenter recitare secumque deferre solitis, quoties ipsi sacrosanctae missae sacrificio aut sacris concionibus debita cum attentione interfuerint, aut ipsum SS. Eucharistiae sacramentum, dum ad aliquem infirmum deferretur, associaverint, sive devium aliquem ab haeretica pravitate aut blasphemia seu detractionis culpa, aut alias ad viam salutis reducerint, sive pacem cum inimicis propriis vel alienis composuerint, aut septies orationem dominicam et totidem salutationes angelicas praefatas devote recitantes, aliquod aliud spiritualis vel corporalis misericordiae opus in eorundem domini nostri Iesu Christi et B. Mariae Virginis sive alterius sancti eorum patroni honorem egerint, decem annos respective de iniunctis eis, aut alias, ut praefertur, debitis poenitentiis etiam in formam Ecclesiae consuetam similiter misericorditer in Domino relaxamus. Necnon eisdem utriusque sexus christifidelibus, qui quater in qualibet hebdomada memoratam coronam recitare soliti fuerint, die per unumquemque ex eis eligenda, vere poenitentes et confessi praefatum SS. Eucharistiae sacramentum sumpserint, et ipsam coronam devote recitaverint, semel in anno; ac praefatis utriusque sexus christifidelibus, qui per integrum mensem praefatam coronam quotidie recitaverint, et deinde vere poenitentes et confessi dictaque communione relecti pro sanctae matris Ecclesiae exaltatione, chri-

stianorum principum pace et concordia, ac haeresum extirpatione pias ad Deum preces effuderint, et, quoad fratres et moniales, si ipsi, integram coronam praefatam recitare nequeunt, in casu tamen verae impotentiae tantum, aliquem hymnum eiusdem B. M. V. recitaverint, respective, plenariam omnium et singulorum peccatorum suorum indulgentiam et remissionem etiam perpetuo concedimus et impartimur.

Indulgentiae
confratribus
Septem Dolo-
rum concessae
ad fratres et
sorores Ordinis
praefati exten-
duntur.

§ 4. Praeterea quia a nonnullis dubitatum fuit an fratres et moniales praefati de indulgentiis, peccatorum remissionibus, ac poenitentiarum relaxationibus praefatis, confratribus, ut praefertur concessis, huiusmodi participant: nos, omnem et quaecumque ambiguitatem quavis occasione vel causa, aut alias quomodolibet insurgentem, de medio tollere volentes, fratres et moniales huiusmodi de omnibus et singulis indulgentiis, peccatorum remissionibus, ac poenitentiarum relaxationibus, eisdem confratribus per quoscumque Romanos Pontifices etiam praedecessores nostros hactenus quomodolibet concessis et in posterum concedendis (dummodo tamen per eosdem fratres et moniales opera dictis confratribus iniuncta adimpleantur), vere participare, illasque valide lucrari posse, motu, scientia et potestatis plenitudine paribus, dicta apostolica auctoritate etiam perpetuo volumus et declaramus.

Fratribus pro
animabus de-
functorum ce-
lebrantibus eas
a purgatorio
liberantur.

§ 5. Demum, quod praefatae indulgentiae animabus christifidelium, quae similiter Deo in charitate coniunctae ab hac luce migraverint, per modum suffragii applicari possint; item, de omnipotentis Dei ac beatorum Petri et Pauli apostolorum eius auctoritate confisi, quod quotiescumque quilibet presbyter regularis dicti Ordinis missam defunctorum iuxta dicti Ordinis statuta pro ani-

mabus fratrum et monialium eiusdem Ordinis, quae similiter Deo in charitate coniunctae ab hac luce migraverint, in eorum ecclesiis dumtaxat celebraverint, animae ipsae de thesauro Ecclesiae per modum suffragii indulgentiam consequantur, itaut, eiusdem domini nostri Iesu Christi ac beatissimae Virginis Mariae sanctorumque omnium meritis eis suffragantibus, a purgatorii poenis liberentur, apostolica auctoritate praefata etiam perpetuo concedimus et indulgemus.

§ 6. Praesentes quoque litteras nullo unquam tempore de subreptionis vel obreptionis aut nullitatis vitio, vel intentionis nostrae seu alio quantumvis substantiali defectu notari, impugnari vel annullari posse, sed illas semper et perpetuo validas et efficaces fore et esse, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, et omnibus, ad quos nunc spectat et pro tempore quomodolibet spectabit in futurum, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, sicque et non alias per quoscumque iudices ordinarios vel delegatos quavis auctoritate fungentes, etiam causarum palatii apostolici auditores ac dicti Ordinis pro tempore existentem protectorem, ac alios quoscumque eiusdem S. R. E. cardinales etiam de latere legatos, vice-legatos, dictaeque Sedis nuncios, sublati eis et eorum cuilibet quavis aliter iudicandi, definiendi et interpretandi facultate et auctoritate, iudicari, definiri et interpretari debere, et, si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari, irritum et inane decernimus.

Haec litteras
perpetuo vali-
duras declarat.

§ 7. Non obstantibus, quatenus opus sit, nostra et Cancellariae Apostolicae regula de indulgentiis concedendis ad instar, aliisque, etiam in synodalibus,

Obstantibus
derogant.

provincialibus, generalibus universali-
busque conciliis editis vel edendis, spe-
cialibus vel generalibus constitutioni-
bus et ordinationibus apostolicis, pri-
vilegiis quoque, indultis et litteris apo-
stolicis, quibuscumque personis etiam in ge-
nere vel in specie in contrarium prae-
missorum quomodolibet concessis, ap-
probatis et innovatis; quibus omnibus
et singulis, etiamsi pro illorum suffi-
cienti derogatione de illis eorumque
totis tenoribus specialis, specifica, ex-
pressa et individua, ac de verbo ad
verbum, non autem per clausulas ge-
nerales idem importantes, mentio seu
quaevis alia expressio habenda aut ali-
qua exquisita forma ad hoc servanda
foret, eorum tenores praesentibus pro
plene et sufficienter expressis habentes,
illis aliis in suo robore permansuris,
latissime et plenissime ac specialiter
motu, scientia et potestatis plenitudine
similibus derogamus; ceterisque con-
trariis quibuscumque.

§ 8. Volumus autem, quod praefatae
Coronae nemini possint vendi nec com-
modari, et, si secus fiat, indulgentiae,
pro illarum recitatione, ut praefertur,
concessae et impartitae, cessent, nul-
liusque sint roboris vel momenti; quod-
que earumdem praesentium transumptis,
etiam typis impressis, manu alicuius no-
tarii publici subscriptis, et sigillo alicuius
personae in ecclesiastica dignitate consti-
tutae munitis, eadem prorsus fides in iudi-
cio et extra illud adhibeatur, quae eisdem
ipsis praesentibus adhiberetur si illae
exhibitae forent vel ostensae.

§ 9. Nulli ergo omnino hominum li-
ceat hanc paginam nostrae relationis,
concessionis, impartitionis, confirmati-
onis, approbationis, declarationis, indulti,
decreti, derogationis, et voluntatis in-
fringere, etc.

1 Videtur legendum *relaxationis* (N. T.).

Datum Romae, apud S. Mariam Ma-
iorem, anno Incarnationis dominicae
MDCCXXXIV, v idus decembris, pontifi-
catus nostri anno v.

Dat. die 9 decembris 1734, pontif. anno v.

CXLVIII.

*Superiores regulares, etiam locales Or-
dinis Servorum B. M. V. facultate
gaudent ecclesiastica indumenta ad
huius Ordinis ecclesias pertinentia
benedicendi, dummodo in benedictione
huiusmodi sacri Olei unctio non ad-
hibeatur.*

Clemens episcopus,
servus servorum Dei,
ad perpetuam rei memoriam.

Supernâ dispositione, cuius inscruta-
bili providentiâ ordinationem suscipiunt
universa, in Apostolicâ Sede collocati,
de religiosis viris, qui sub peculiaribus
institutiis Deo ferventius famulantur,
praecipuam gerimus curam, illosque
privilegiis augere ac favoribus prosequi
salagimus opportunis.

§ 1. Cum itaque, sicut accepimus,
Ordo dilectorum filiorum fratrum Ser-
vorum B. M. Virginis nuncupatorum a
suis primordiis ad haec usque tempora
catholicae Ecclesiae admodum utilis et
fructuosus extiterit, ac dilectus filius
noster Petrus Maria tituli S. Ioannis
ante Portam Latinam nuncupati S. R. E.
presbyter cardinalis Pieri nuncupatus,
qui, Ordinem ipsum expresse professus,
prioris generalis et nonnulla alia dicti
Ordinis munera atque officia laudabili-
ter sustinuit, dudum suas preces pro
quibusdam gratiis spiritualibus favore
dictorum fratrum et ecclesiarum ab eis
administratarum ab Apostolicâ Sede ro-
borandis nobis humiliter porrexerit;
et nos, ad praemissorum effectum, par-

1 Edit. Main. legit *institutiis* (N. T.).

Prooemium.

Transumptis
hanc littera-
rum credi il-
lud.

Firmitas con-
cessionum.

Ad preces car-
dinalis Pieri
instituta cardi-
nalem Congre-
gationem ad exami-
nandum quas
gratias spiri-
tuales huius Or-
dinis concedi
conveniret

ticularem, videlicet dilectorum etiam filiorum nostrorum Antonii Xaverii de Gentilibus, pro-datarii nostri, et Ioannis Antonii Guadagni, nostri in Urbe eiusque districtu vicarii in spiritualibus generalis, ac Marcelli Passeri, respective nuncupatorum, nostri pro-auditoris respective, presbyterorum eiusdem S. R. E. cardinalium, Congregationem, assignato illi in secretarium venerabili fratre nostro Carolo Alberto Cavalcini moderno archiepiscopo Philippensi, apostolica auctoritate deputaverimus, eidemque Congregationi, sic a nobis, ut praefertur, deputatae, opportunas ad id facultates concesserimus; deinde vero sub die XXI mensis maii proxime praeteriti Antonius Xaverius et Ioannes Antonius ac Marcellus cardinales praefati insimul congregati, et re mature discussa, inter alia, infrascriptum indultum per nos concedendum censuerint; postmodum vero dictus Carolus Albertus archiepiscopus relationem dictae Congregationis, et eorum, quae in illa ab Antonio Xaverio et Ioanne Antonio ac Marcello cardinalibus praefatis pertractata, quaeque a nobis concedi posse eis visa fuerunt, sub die XI mensis augusti etiam proxime praeteriti nobis fecerit:

§ 2. Nos, qui erga dictum Ordinem peculiarem devotionis affectum semper gessimus, eiusdemque Ordinis protectoris munus olim a bonae memoriae Nereo, dum viveret, eiusdem S. R. E. cardinali Corsini nuncupato patruo nostro obtentum, dum cardinalatus honore fungebamur per plures annos egimus, et, ad summi apostolatus apicem divina favente clementia assumpti, quoad vivemus, retinendum duximus, quique, quando Deo placuerit, vita functi fuerimus, ad illud obeundum dilectum etiam filium nostrum Nereum dictae S. R. E. diaconum cardinalem etiam

Corsini nuncupatum, nostrum secundum carnem ex fratre germano nepotem, per litteras apostolicas in forma Brevis sub annulo Piscatoris decuper expeditas apostolica auctoritate deputavimus Petrum Mariam cardinalem, ac fratres Ordinis huiusmodi specialibus favoribus et gratis prosequi volentes, motu proprio, et ex certa scientia ac matura deliberatione nostris, deque apostolicae potestatis plenitudine, et ex voto Congregationis particularis huiusmodi, quod omnes et singuli superiores regulares, etiam locales, dicti Ordinis indumenta et paramenta ecclesiastica ad dicti Ordinis ecclesias tantum spectantia, dummodo in eis sacri Olei unctio non adhibeatur, rite benedicere libere et licite possint et valeant, apostolica auctoritate, tenore praesentium, perpetuo concedimus et indulgemus.

§ 3. Praesentes quoque litteras nullo unquam tempore de subreptionis vel obreptionis aut nullitatis vitio, vel intentionis nostrae vel alio quantumvis substantiali defectu notari, impugnari vel annullari posse, sed illas semper perpetuo validas et efficaces fore et esse, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, et omnibus, ad quos nunc spectat et pro tempore quomodolibet spectabit in futurum, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, sique et non alias per quoscumque iudices ordinarios vel delegatos, quavis auctoritate fungentes, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac dicti Ordinis pro tempore existentem protectorem, ac alios quoscumque eiusdem S. R. E. cardinales de latere legatos, vice-legatos et Apostolicae Sedis nuncios, sublata eis et eorum cuilibet quavis aliter iudicandi, definiendi et interpretandi facultate et auctoritate, iudicari, definiri et interpretari debere,

Firmatas
concessionis.

De huiusmodi
Congregationis
consilio superi-
rioribus locali-
bus huius Ordinis
tribuit benefici-
cendi sacros
apparatus.

et, si agens super his a quocunque, quavis auctoritate, scienter vel ignorant, contigerit attentari, irritum et inane declaratur.

Obstatum derogatio.

§ 4. Non obstantibus, quatenus opus sit, etiam in synodalibus, provincialibus, generalibus, universalibusque conciliis edictis vel edendis, specialibus vel generalibus, constitutionibus et ordinationibus apostolicis, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis, quibuscumque personis etiam in genere vel in specie in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, approbatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, etiamsi de illis eorumque totis tenoribus specialibus, specifica, expressa et individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes mentio seu quavis alia expressio facienda et habenda aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, eorum omnium et singulorum tenores eisdem praesentibus etiam pro plene et sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permansuris, latissime et plenissime ac specialiter et expresse motu, scientia et potestatis plenitudine similibus derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Clausulae praeservatae.

§ 5. Volumus autem earundem praesentium transumptis, etiam typis impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo alicuius personae in ecclesiastica dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides in iudicio et extra illud adhibeatur, quae eisdem praesentibus adhiberetur si illae exhibitae forent vel ostensae.

§ 6. Nulli ergo omnino hominum, etc.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, anno Incarnationis dominicae MDCCLXXXIV, v idus decembris, pontificatus nostri anno v:

Dat. die 9 decembris 1734, pontif. anno v.

CXLIX.

Facultas patribus Capuccinis Gallis missionariis apostolicis in partibus infidelium degentibus exercendi artes medicinae et chirurgiae.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Cum, sicut dilectus filius Cherubinus de Noves, frater expresse professus Ordinis Minorum sancti Francisci Capuccinorum nuncupatorum ac missionum exterarum eorumdem Capuccinorum Gallorum in partibus infidelium degens in Romanam Curiam procurator, nobis nuper exponi fecit, praefati missionarii Galli in eisdem partibus elaborantes medicinae et chirurgiae artibus tum catholicorum, quos in fide consolidant, tum infidelium, quos non raro ad veritatis cognitionem adducunt, benevolentiam sibi conciliant; id vero per constitutiones Ordinis praedicti cap. v, auctoritate apostolica confirmatas, omnibus expresse prohibeatur ne artes huiusmodi extra Ordinem exerceant: nobis propterea dictus Cherubinus humiliter supplicari fecit ut in praemissis opportune providere et ut infra indulgere de benignitate apostolica dignaremur.

Supplicatum patribus pro dispensatione ab observantia regulae quoad hoc caput.

§ 2. Nos igitur, ipsius Cherubini desiderio hac in re, quantum cum Domino possumus, favorabiliter annuere volentes, eumque a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium tantum consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, huiusmodi supplicationibus inclinati, fratribus missionariis Gallis missionum exterarum dicti Ordinis, artium medicinae et chirurgiae huiusmodi

Concessio, de qua in rubrica.

peritis, etiam in sacro presbyteratus ordine constitutis, in memoratis¹ partibus infidelium nunc et pro tempore commorantibus, de superiorum suorum licentia, dummodo in illis locis nullus adsit medicus vel chirurgus saecularis qui infirmis in eorum infirmitatibus medeat, artes medicinae et chirurgiae praefatas, iuxta illarum praecepta, ad commodum et utilitatem catholicorum in partibus infidelium huiusmodi nunc et pro tempore existentium dumtaxat, gratis tamen et sine ullâ prorsus mercede, ac in casu necessitatis tantum, exercere, ac medicamenta et alia necessaria praebere libere et licite, ac sine ullo conscientiae scrupulo, vel irregularitatis, alteriusve poenae vel censurae ecclesiasticae incursu, possint et valeant, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, concedimus et indulgemus.

Obstantium
derogatio.

§ 3. Non obstantibus apostolicis, ac in universalibus provincialibusque conciliis editis, generalibus vel specialibus, constitutionibus, necnon dicti Ordinis, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die v ianuarii MDCCXXXV, pontificatus nostri anno v.

Dat. die 5 ianuarii 1735, pontif. anno v.

F. card. OLIVERIUS.

¹ Edit. Main. legit *memorati* (A. T.).

CL.

Indulgentia plenaria perpetua pro visitantibus aliquam ex ecclesiis fratrum Ordinis Minorum S. Francisci Conventualium nuncupatorum vere poenitentibus et confessis ac sacra communione refectis, tam haecenus erectis quam imposterum erigendis, die festo Ss. martyrum Berardi, Petri, Accursii, Adiuti et Othonis.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Universis christifidelibus praesentes litteras inspecturis, salutem et apostolicam benedictionem.

Caelestium munerum thesauros, quorum dispensationem humilitati nostrae credidit divina dignatio, libenter erogamus, sicut ad fovendam incitandamque fidelium erga sanctos in caelis cum Christo regnantes devotionem salubriter expedire in Domino arbitramur.

Exordium.

§ 1. Supplicationibus itaque dilectorum filiorum Vincentii de Comitibus, ministri, et Ioannis Baptistae Minucci procuratoris generalium Ordinis fratrum Minorum sancti Francisci Conventualium nuncupatorum nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, ac de omnipotentis Dei misericordiâ et beatorum Petri et Pauli apostolorum eius auctoritate confisi, omnibus et singulis utriusque sexus christifidelibus vere poenitentibus et confessis ac sacra communione refectis, qui aliquam ex ecclesiis fratrum dicti Ordinis haecenus erectis ac imposterum erigendis, et ubicumque locorum existentibus, die festo sanctorum martyrum Berardi, Petri, Accursii, Adiuti et Othonis eiusdem Ordinis Minorum professorum a primis vesperis usque ad occasum solis festi huiusmodi singulis annis devote visitaverint, et ibi pro christianorum principum concordia, haere-

Concessio indulgentiarum de quibus supra.

ante ostensionem, ac sanctas matris Ecclesiae orationes, pias ad Deum precibus supplicibus, plenissime meritis vero apostolice Ordinis, ac alia in eorum quolibet monasterio nunc et pro tempore dependentibus, vero pariter poenitentibus et confessoribus, ac sacra communione relectis, quae vultu respective ecclesiam supra dicto festo viderint, et ut praefertur oraverint, plenissime similiter omnium peccatorum suorum indulgentiam et remissionem misericorditer in Domino concedimus. Praesentibus perpetuis futuris temporibus vallituris.

Fides transumptorum.

§ 2. Volumus autem ut praesentium litterarum transumptis seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiastica dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides adhibeatur, quae adhiberetur ipsis praesentibus si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xiv ianuarii mcccxxxv, pontificatus nostri anno v.

Dat. die 14 ianuarii 1735, pontif. anno v.

F. card. OLIVERIUS.

CLI.

Contra homicidas ac deferentes arma prohibita in alma Urbe et reliquo Slatu Ecclesiastico.

Clementis episcopus,
servus servorum Dei,
ad perpetuam rei memoriam.

Prooemium.

In supremo iustitiae solio, meritis licet imparibus, per ineffabilem divinae sapientiae atque bonitatis abundantiam constituti, tametsi subditos nostros charitatis potius vinculo quam legum severitate in officio continere semper optaverimus, considerantes tamen crebra quae

in temporali S. R. E. ditione, ac etiam in hac alma Urbe nostra palrantur homicidia, ac succrescentem in dies virorum sanguinem immanitatem, qui, posthabitis gravissimis praedecessorum nostrorum sanctionibus, ac omnis divini humanique iuris plane obliti, quinimmo vel seris ipsis animantibus, utpote in genus suum minime saevientibus, crudeliores, passim, levissimam etiam quandoque de causa, proximam suam depascuntur, eiusque cruore quasi musto inebrantur, nedum corporibus mortem inferentes, sed non raro animabus quoque pretiosissimo domini et salvatoris nostri Iesu Christi sanguine redemptis (si non sint armis spiritualibus divinam praeveniente gratia munitae) aeternam perditionem procurantes, cogimur, licet inviti, nova validioraque quaerere et adhibere remedia, quibus tam exitiale ac detestabile flagitium de eadem Urbe ac finibus universae ditionis praefatae, cuius peculiaris cura ac tutela nobis a Domino commissa est, propulsetur atque exterminetur, eas in primis ineundo rationes, per quas omnis spes ac fiducia impunitatis, quae illecebra peccandi persaepe esse solet, delinquentibus adimatur, ut, quos a tam atroci scelere nec Dei timor, neque humana necessitudo, nec fraterna charitas retrahit¹, poenarum temporalium sibi quocumque praeccluso effugio, ac evadendi aditu necessario subeundarum formidine deterriti, tandem ab effundendo proximi sui sanguine manus abstineant.

§ 1. Hinc est quod nos, non minus ex iniuncto nobis divinitus apostolicae sollicitudinis munere, quam publicae tranquillitatis ac securitatis studio, multorumque ad nos identidem delatis querimoniis excitati, post maturam, quam super ea re cum nonnullis ex venera-

Malis ex huiusmodi armorum delatione provenientibus ut occurratur,

¹ Male edit. Main. legit retrahi (R. T.).

bilibus fratribus nostris S. R. E. cardinalibus et dilectis filiis Romanae Curiae praelatis ad id a nobis specialiter deputatis, qui rem ipsam iussu nostro diu atque accurate discesserunt, habuimus, deliberationem, de illorum consilio, ac etiam motu proprio et ex certa scientia nostris, deque apostolicae potestatis plenitudine, hac in Urbe praedicta, aliisque civitatibus, terris et locis nobis et eidem S. R. E. in temporalibus mediate vel immediate subiectis, perpetuo valituram constitutione, quae infra sequuntur, ut serpenti morbo huiusmodi occurramus, statuenda et ordinanda duximus.

Prædecessorum Pontificum
similes constitutiones innovat.

§ 2. Ac primum quidem omnes et singulas constitutiones a felicis recordationis Pio II, Paulo II, Sixto IV, Iulio II, Leone X, Clemente VIII, Iulio III, Pio IV, Pio V, Gregorio XIII, Sixto V, Gregorio XIV, Innocentio XI, Innocentio XII, ac Benedicto XIII, et quibusvis aliis Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris adversus homicidas saluberrime editas, quarum tenores praesentibus litteris pro plene et sufficienter expressis et de verbo ad verbum insertis haberi volumus, cum omnibus et singulis in eis contentis, quae ipsis praesentibus contraria non sunt, harum serie approbamus, confirmamus et innovamus, illasque adversus quemcumque non usum, seu contrarium usum, qui quovis modo praetendi vel allegari posset, restituimus et plenarie reintegramus, atque deinceps omnino ac inviolabiliter observari praecipimus et mandamus. Et quia haud satis est delicta prohibere, nisi etiam, quae illa patrandi occasionem ac commoditatem praebent, provide submoveantur, omnes propterea et quascunque praedictorum, ac praesertim Pii IV et Pii V, necnon recolendae memoriae Alexandri VIII, quarum initium est *Et si cuncta, etc.*, aliorumque antecessorum

litteras et ordinationes, quibus vetantur delatio, retentio et venditio sclopulorum, *archibusetti* vulgariter nuncupatorum, pugionum, cultrorum, parvarum sicarum, aliorumque armorum mensurae brevioris tribus palmis, utpote ad eandem clam et dolose inferendam aptorum, prout quoque edictum kalendis ianuarii mdcviii de mandato pie memoriae Clementis Papae XI praedecessoris quoque nostri promulgatum, ceteraque bannimenta hucusque publicata, antedicta aliave similis vel alterius generis arma in Urbe ac ditione praefatis sub diversis etiam capitalibus poenis prohibentia, quae item praesentibus pro expressis et ad verbum insertis haberi volumus, ac omnia et singula in eis contenta similiter approbantes ac innovantes, ne poenarum per eorundem decessorum litteras, edictum et bannimenta adversus illorum transgressores, cuiusvis in illis expressae qualitatibus et conditionis fuerint, statutarum executio ullatenus impediatur, tenore praesentium districte interdiciamus quibuscumque tribunalibus, magistratibus ac iudicibus tam Urbis praefatae quam aliarum civitatum, terrarum et locorum nobis et Sedi Apostolicae mediate vel immediate subiectarum, ac quibusvis eiusdem S. R. E. cardinalibus etiam de latere legatis, ne in causis delationis ac retentionis istiusmodi armorum ulli delinquenti poenas, quas quomodolibet incurrerunt, gratiose remittant aut componant, ac vel in minima etiam parte moderentur, sed ea dumtaxat, quae stricti iuris fuerint, iuxta praecisam formam et dispositionem litterarum edicti et bannimentorum praefatorum decernant et exequantur. Quod si ex peculiaribus quandoque facti circumstantiis, vel ex qualitate personarum, gratiae, compositioni, aut poenae moderationi locum esse, acquirat ita suadente,

praeferat existimaverint, nihilominus neque unquam ad concessionem gratiae, compositionem aut moderationem poenae devenire possint, nisi praevia aeterni ac Romani Pontificis pro tempore existentis expressa approbatione; sub nullitate pastorum, ac inde sequentium, et quoad iudices praefatos, sub pecuniariis insuper aliisque etiam corporalibus nostro et eiusdem Pontificis arbitrio infligendis poenis; memoratisque cardinalium Congregationibus ac cardinalibus etiam de latere legatis quaecumque facultatem, quae eis de iure, usu vel consuetudine, seu aliis quomodolibet competere posset in dictis causis delationis aut retentionis armorum arbitrandi, gratiam impertiendi et componendi, ac moderandi poenas huiusmodi, harum serie abrogamus et revocamus.

Occisor et
canon sit rixae
poenae poe-
na ordinaria.

§ 3. Praeterea, sicuti in bannimentis generalibus pro Urbe praefata ac universo Statu nostro Ecclesiastico editis cavetur homicidas non excusari a poena ordinaria etiam pro homicidio in rixa commisso, si ex processu constiterit rixam ex causa irrationabili seu bestiali, ut vocant, ortam fuisse; ita, quia tantum legibus addendum venit, quantum rixarum et homicidiorum frequentia excreverit, statuimus ut in Urbe ac quibuscumque civitatibus, terris et locis nobis et Sedi Apostolicae mediate vel immediate subiectis praedictis, comprehensis etiam quatuor Legationibus ac civitatibus Bononiensi, Ferrariensi et Beneventana, aliisque etiam specialem et individuum mentionem requiruntibus, occisor poena pariter ordinaria puniatur, licet homicidium sequutum sit in rixa, si homicida rixae auctor fuerit, utque calor iracundiae a poena ordinaria delinquentem nusquam eximat, ubi inter tempus rixae ac patratum ho-

1 Legerem potius tunc (R. T.).

miciidum sex horarum spatium intercesserit, quod sufficere volumus ut reus ad actus extraneos divertit vel divertisse debuerit; declarantes quod, ubi luculenter ex processu huiusmodi constiterit in actu homicidii nullam adfuisse rixam inter occisum et occisorem, nec pro parte occisoris probetur intra dictum intervallum sex horarum homicidium immediate praecedentium aliquam subortam fuisse rixam, interfector poenae ordinariae omnino subiiciatur. Neve praetextu erroneae et nunquam approbatae consuetudinis, sive interpretationis, quispiam decipiatur, ad omnium et singulorum memoriam serio revocamus, praedicta poenam ordinariam teneri nedum ore proprio homicidium confessos, sed etiam qui de commisso homicidio iuxta iuris canonici ac civilis dispositionem, quam in ceteris quibuscumque delictis sartam tectamque fore volumus, convicti fuerint: quibusvis praetensis usu et stylo rebusque iudicatis in contrarium minime attentis.

§ 4. Cumque ad reprimendam sanguinariorum hominum audaciam, quae iam tunc invalescebat, idem Innocentius XII praedecessor, in supradicta sua constitutione incipiente *Viros sanguinum, etc.*, inter alia expresse ac omnino prohibuerit, inquisitos, processatos, condemnatos aut bannitos, sive uti principales, sive uti mandatarios, sive uti complices, aut auxilium aut consilium, vel favorem praestantes ex causa seu occasione homicidii pro quo poena ordinaria vel extraordinaria imposita fuisset seu imponenda foret, et quos quibuscumque futuris temporibus similiter inquiri, processari, condemnari seu banniri contigisset in Urbe et universa ditione ecclesiastica, nullo unquam tempore vel modo, ex aliqua gratia seu compositione, vel per viam cassationis

Confirmata Innocentii XII constitutione de non rehabilitandis his, qui animo doloso et praemeditato occidunt, eam extendit ad homicidas quoque qui sine huiusmodi animo interficiant.

processus, remitti, seu quoquo modo gratiose rebanniri, habilitari, seu cum eis dispensari, minusque illis aliquem saluumconductum seu liberum com meatum (praeterquam pro vero, reali et necessario servitio iustitiae, et tunc pro eo dumtaxat tempore quod huiusmodi servitio congrueret) concedi per quoscumque civitatum et locorum praefatorum gubernatores, provinciarum rectores, dictae Romanae Ecclesiae in temporalibus vicarios et iustitiae officiales, et quoscumque alios, quamvis speciali et individua mentione dignos, ac etiam ipsos cardinales de latere legatos, quorum tamen respectu dictam suam constitutionem locum habere decrevit in homicidiis animo doloso et praemeditato commissis: quamvis nulla suboriri possit dubitatio, quin praedicti cardinales de latere legati, pro eorum eximia dignitate ac laudabili iustitiae zelo, semper ea qua decebat moderatione ac prudenti circumspectione antehac usi sint facultate sibi sic praeservata quoties de homicidiis in rixa aut aliis sine animo doloso et praemeditato sequutis actum fuit; attamen (quia praeconcepta spes veniae consequendae perversos homines animosiores pronioresque reddit ad rixas et contentiones excitandas et confovendas, earumque calore caedes patrandas), quo damnabilis haec praesumptio ex eorum animis penitus evel latur, eorumque saevitia irremissibilium poenarum metu compescatur, enarratam constitutionem ac prohibitionem, quam idem Innocentius XII praedecessor quoad cardinales de latere legatos in homicidiis animo doloso et praemeditato locum sibi vindicare voluit, sicut praemittitur, ad homicidia etiam in rixa et sine praemeditatione commissis per praesentes extendimus et ampliamus; itaut de cetero non liceat eisdem cardinalibus de

latere legatis, neque etiam ipsis cardinalium Congregationibus, sine nostro et Romani Pontificis pro tempore existentis speciali mandato, inquisitos, processatos et condemnatos aut bannitos ex causâ vel occasione homicidii etiam in rixâ et absque praemeditatione patrati, et gratiâ seu compositione, vel per viam cassationis processus, remittere, seu gratiose rebannire, habilitare, seu cum eis dispensare, neque illis aliquem saluumconductum, praeterquam pro vero, reali et necessario servitio iustitiae, et tunc pro eo dumtaxat tempore quod huiusmodi servitio congruat, concedere, etiamsi pacem ab haeredibus vel consanguineis aut filiis defuncti habuerint.

§ 5. Venerabilibus quoque fratribus nostris archiepiscopis et episcopis ac dilectis filiis locorum Ordinariis, in ecclesiasticâ ditione praefata consistentibus, in virtute sanctae obbedientiae, ac sub nostrae Romani Pontificis pro tempore similiter existentis indignationis poenâ, earundem tenore praesentium praecipimus, ne in causis homicidii, si ve qualificati et animo doloso et praemeditato, sive in rixâ commissi, quibuscumque reis eorum iurisdictioni et foro quavis causâ subiectis, iam condemnatis seu bannitis, sive quos in futurum per eorum curiam inquiri, processari, condemnari seu banniri contigerit, ullam similiter gratiam, absolutionem, compositionem, cassationem processuum, poenae remissionem seu moderationem, habilitationem, dispensationem et saluumconductum, liberumve com meatum (excepto dumtaxat dicto reali et necessario iustitiae servitio pro congruo illius tempore) imposterum impertiantur, nisi post elapsam a die admissi delicti quinquennium, et tunc in eiusmodi causis ea tantum, quae stricti iuris canonici fuerint, exequantur: discernentes quidquid

Ecclesiasticis superioribus mandat, ne quibuscumque homicidis sibi subiectis ullam habilitationem, remissionem, absolutionem, compositionem, cassationem, poenae remissionem seu moderationem, habilitationem, dispensationem et saluumconductum, liberumve com meatum (excepto dumtaxat dicto reali et necessario iustitiae servitio pro congruo illius tempore) imposterum impertiantur, nisi post elapsam a die admissi delicti quinquennium, et tunc in eiusmodi causis ea tantum, quae stricti iuris canonici fuerint, exequantur: discernentes quidquid

contra hanc nostram prohibitionem, ab eis omnibusque curiis, necnon etiam a dictis cardinalibus de latere legatis, ac cardinalium congregationibus, factum fuerit, cum inde pariter sequutis, ipso iure nullum ac irritum, nulliusque roboris et momenti fore, nec lata in iudicio quam extra illud delinquenti, etiam ad effectum inducendi et allegandi bonam fidem, ullatenus suffragari posse et debere.

Armerum ignitorum explosiones pro diversitate reatus diversimodo modicandas.

§ 6. Ad haec ne ulla actio, ad necem tendens seu praecordinata, inulta remaneat, sancimus et ordinamus, ut pro armerum ignitorum explosione delinquens, si deliberate explosorit et subsequuta sit offensio, ultimi supplicii poenam in perpetuum incurrat; sin autem non deliberata explosione aliquem offenderit, triremium poenam in perpetuum subeat; et, si animo quidem deliberato, sed absque alicuius offensione, eiusmodi arma laxaverit, poenae triremium per decennium obnoxius sit; ac demum ubi nec praemeditatio nec offensio intervenerint, simplex tamen explosio, quinquennali remigatione vindicetur.

Nominationes gubernatoris Urbis et cardinalium legatorum invalidas.

§ 7. Ad nominationes quoque, quae sunt pro liberatione reorum iam damnatorum a promerito supplicio, nostrae dirigentes considerationis intuitum, in eo quod attinet ad illas nominationes, quibus nonnullae archiconfraternitates, aliaeque societates Urbis et ditionis huiusmodi, ob egregia quae assidue exercent pietatis et christianae charitatis opera, ex specialis Sedis Apostolicae concessione, quae tamen sit in viridi observantia, potiuntur, quaeque satellitibus seu curiae apparitoribus pro bannitorum et in contumaciam condemnatorum captura in praemium laboris concedi consueverunt, nihil praeter consuetudinem innovandum decrevimus;

at nominationes eorundem bannitorum et in contumaciam damnatorum, quas ex gratia dictae Urbis gubernator, cardinalium Congregationes, ac ipsi cardinales de latere legati executoribus iustitiae et aliis quibuscumque attribuere solent, vires deinceps nolumus obtinere, nec nominatis ex causa homicidii in aliquo prodesse, nisi nobis seu eodem Pontifice pro tempore existente prius consultis, habitoque desuper nostro vel eius assensu.

§ 8. Et quoniam experimento compertum est, administrationem ac cursum rectae et expeditae iustitiae, qua reipublicae salus praecipue innititur, summo opere obturbari vel ab excessivo numero privilegiatorum, vulgariter *patentati* nuncupatorum, vel a minus recta intelligentia privilegiorum concessorum: proinde, salvis firmisque remanentibus decretis ac resolutionibus quae temporibus felicitis pariter recordationis Urbani Papae VIII et dictorum Innocentii XI ac Innocentii XII praedecessorum aut alias quandocumque ea super re emanarunt, volumus quod privilegium fori nemini quorumcumque privilegiatorum huiusmodi tam in Urbe quam in reliquo Statu Ecclesiastico praedictis; (officialibus aliisque privilegiatis a Congregatione pro tempore existentium eiusdem S. R. E. cardinalium contra haereticam pravitatem generalium inquisitorum, ac ministris necessariis actu inservientibus, archiepiscopis, episcopis ac Ordinariis praefatis, eorumque curiis, dumtaxat exceptis) pro crimine homicidii suffragetur; sed dicti privilegiati, quatenus clericali caractere insigniti, ecclesiasticae, et quatenus laici fuerint, saeculari iurisdictioni subiaceant; reservantes nobis facultatem declarandi, quinam quotque esse debeant veri fami-

Nemini privilegiato fori privilegium in causa homicidii suffragatur.

(Male ed. Main. legit ut pro at (R. T.)

liares dictorum archiepiscoporum, episcoporum et Ordinariorum, ac officiales necessarii curiis ecclesiasticis verum et actuale servitium praestantes.

Clerici quo
methodo pu-
niendi.

§ 9. Insuper, quia ex illis etiam, qui in sortem Domini vocati sunt, quique aliis irreprehensibilis et ab omni culpa et macula immunis vitae ac virtutum exemplo praelucere deberent, aliqui interdum reperiuntur adeo suae vocationis immemores, ut, impellente humani generis hoste, pluribus etiam homicidiis manus suas cruentare non perhorrescant: nos, perversorum quorumcumque malitiae obviandum esse, non indulgendum, probe intelligentes, ad istorum quoque fraenandam perviciam perpetuo itidem statuimus, quod clericus primae tonsurae nullum beneficium ecclesiasticum obtinens, tametsi conditiones clericis huiusmodi a Concilio Tridentino praescriptas servaverit ac servet, pro duobus tamen homicidiis, animo deliberato et praemeditato per eum patrat, privilegio fori et canonis, in odium tanti excessus, et ad aliorum terrorem, exuatur, et uti incorrigibilis omnino saeculari potestati subiiciatur, ab ea tamquam laicus legitimis poenis plectendus; clericus quoque in minoribus ordinibus constitutus, nec pariter beneficiatus, nec praescripta a Concilio Tridentino servans, tam coelebs quam coniugatus, in causis homicidii dicto privilegio fori non gaudeat, eoque privatus remaneat, neque a proprio episcopo seu Ordinario repeli, minusque habitum clericalem, quem indigne abiecit, reassumere possit, nisi post totaliter expiatam admissi delicti poenam: declaratio autem an reus ante patratum homicidium requisita a Concilio Tridentino servaverit, ad episcopum aliumve loci Ordinarium omnino spectet, non retardata interim delinquentis assecuratione faciendam etiam

per iudicem laicum nomine Ecclesiae, qui illum pariter Ecclesiae nomine ad illius dispositionem retinere possit ac debeat, donec dicta declaratio prodierit: quacumque diversa ac etiam contraria iuris canonici et apostolicarum constitutionum dispositione seu interpretatione necnon consuetudine haud refragante.

§ 10. Porro, cum idem Benedictus praedecessor, animadvertens homicidia huiusmodi suo etiam tempore increbrescere, nec minus quam alia facinora, in celebri constitutione dicti Gregorii XIV etiam praedecessoris, quae incipit *Cum aliis, etc.*, recensita, publicae quieti officere, pro commissi sibi apostolici officii debito per praedictam suam anno Incarnationis dominicae MDCCXXV, sexto idus iunii, cui initium est *Ex quo divina, etc.*, evulgatam constitutionem, laicos animo praemeditato ac deliberato proximum suum interficientes ab ecclesiasticae immunitatis beneficio excluderet et repulerit, ac pro exclusis atque repulsis haberi voluerit: nos, ob gliscentem in dies quorundam ecclesiasticorum nequitiam, qui, nulla proprii status habitâ ratione, non raro in adeo nefarium detestandumque crimen prolabantur, ipsorum Gregorii et Benedicti praedecessorum constitutionibus, quas supra confirmavimus atque innovavimus, inhaerentes, et, quatenus opus sit, criminum in illis exceptorum reos immunitate ecclesiastica nequaquam iuvare iterum decernentes, eandem Benedicti praedecessoris constitutionem, laicos animo praemeditato ac deliberato proximum suum, sicut praemittitur, interficientes a beneficio immunitatis ecclesiasticae excludentem, ad ipsos ecclesiasticos cuiuscumque gradus et ordinis existant in Urbe ac universa ditione nobis et Sedi Apostolicae mediate vel

Ecclesiastici
animo deloso
et praemeditato
occidentis non
gaudent, sicut
etiam laici, im-
munitate eccle-
siastica.

immediate subiecta homicidium animo similiter praemeditato ac deliberato patentes extendimus quoque et ampliamus, dummodo tamen causa admitti per eos homicidii ab illorum iudice ecclesiastico competente cognoscatur, et ab eo, si rei reperti fuerint, citra poenam sanguinis, ad praescriptum sacrorum canonum condignâ puniantur animadversione.

Rel quomodo
extrahendi
loco immuni.

§ 11. Ulterius, ad varias doctorum, qui eiusdem Benedicti praedecessoris mentem quoad personas in dictâ eius constitutione comprehensas interpretari ac explicare voluerunt, sententias et opiniones dirimendas, declaramus homicidii reos natu minores vigintiquinque, maiores vero viginti annis, tam laicos quam clericos, atque omnes et singulos, sive laicos sive clericos, qui mandatum, consilium, instigationem, auxilium cooperativum, aut aliam operam occisori praebuerint, ex quorum singulis pravis actibus homicidium evenit, in dictâ Benedicti praedecessoris constitutione comprehensos esse, ac deinceps censi debere, eamque, quatenus opus sit, ad ipsos pariter extendimus; ita scilicet ut illorum extractio e loco immuni atque traditio curiae saeculari, quoad laicos, ad eiusdem curiae saecularis requisitionem, fiat a curiâ ecclesiasticâ, et clerici ab ipsâ curiâ ecclesiasticâ ex officio omnino extrahantur iuxta normam infra dicendam.

Immunitate
non gaudenti
quoque ex cau-
sa homicidii in
contumaciam
condemnati.

§ 12. Item declaramus omnes et singulos praedictos tam laicos quam ecclesiasticos, qui in Urbe ac ditione praefatis, ex causâ et occasione homicidii etiam in rixâ commissi cum armis seu instrumentis suapte naturâ aptis ad occidendum, inquisiti et processati vel in contumaciam banniti et condemnati fuerint, dummodo homicidium non fuerit casuale vel ad propriam defensio-

nem, immunitatis praefatae beneficio minime etiam gaudere.

§ 13. Utque reorum ratione homicidii ut praefertur excepti inquisitorum seu bannitorum et in contumaciam condemnatorum extractio ab ecclesiis aliisque locis immunibus atque traditio suo cuique iudici competenti legitimis modo et formâ a curiâ ecclesiasticâ fiant, volumus et ordinamus, ut, quotiescumque iudici ecclesiastico competenti innotuerit aliquem laicum seu ecclesiasticum ex causâ homicidii excepti inquisitum atque processatum ad ecclesiam seu locum immunem confugisse, ibique moram trahere, ac ea super delicti qualitate ac personae reitate subministrata vel acquisita suppetant iudicia, quae ad capturam decernendam sufficere videantur, tunc idem iudex ecclesiasticus, ex officio, ac nemine etiam requirente, si delinquens sit clericus, sin vero laicus, postquam a curiâ saeculari requisitus fuerit, ad ipsius delinquentis extractionem ab ecclesiâ seu loco immuni, implorato etiam ad hoc, quatenus opus sit, auxilio brachii saecularis, et cum interventu personae ecclesiasticae ab episcopo deputandae, devenire teneatur; extractumque ad suos, si tuti et securi fuerint, sin minus, ad curiae saecularis carceres adsportari, ibique sub tutâ custodiâ detineri curet et faciat: ubi vero ex processu informativo desuper conficiendo, quoad inquisitum nondum condemnatum, dictus iudex ecclesiasticus ex acquisitis seu subministratis indiciis ad torturam tantum sufficientibus ab extracto homicidium a prefatâ Benedicti praedecessoris et hac nostrâ constitutionibus exceptum patratum fuisse cognoverit, ad declarationem, quod scilicet de casu ita excepto constet, progrediatur, extractumque, si laicus sit, ministris et officialibus

Ordo servan-
dus in extra-
ctione reorum
e loco immuni.

curiae saecularis, si autem clericus, eius competenti iudici ecclesiastico tradere et consignare possit ac debeat, exactis tamen receptisque in actu traditionis et consignationis huiusmodi a iudice quidem saeculari iuramento et ab ecclesiastico promissione in verbo veritatis de restituendo extractum ecclesiae locove immuni, sub poenâ excommunicationis latae sententiae nobis et eidem Romano Pontifici pro tempore existenti reservatae, quatenus extractus in suis defensionibus, quae ad trames iuris et ordinationum apostolicarum ei competunt, praefata elidat seu diluat indicia; et, si illa minime eliserit sive diluerit, et delinquens repertus fuerit, iudici suo, scilicet ecclesiastico in clericum, saeculari in laicum, ut iuris esse censuerit, animadvertere liceat. Quoties autem de iam bannito, aut in contumaciam damnato ex causâ homicidii superius excepti sive laico sive ecclesiastico agetur, quilibet iudex ecclesiasticus, ut praefertur, competens, ad illius, laici nimirum instante curiâ saeculari, et clerici ex officio, extractionem ab ecclesiâ locove immuni, cum inventu quoque personae ecclesiasticae ab episcopo deputandae, ac traditionem suo respective iudici, sicut mox dispositum est, faciendam procedat; solamque sententiae contumacialis et aetorum, quibus illa fundatur, exhibitionem ad hoc sufficere decernimus, ut dictus iudex ecclesiasticus, ex illorum inspectione dumtaxat agnito num istiusmodi sententia contumacialis legitime iusteque prolata sit ad formam constitutionum apostolicarum, pronunciare ac declarare queat et debeat, an bannitus et in contumaciam damnatus consignandus veniat, necne, exactis pariter et receptis, quatenus consignetur, à iudice saeculari iuramento, si delinquens sit laicus, ab

ecclesiastico verò, si fuerit clericus, promissione ipsum ut supra restituendi ecclesiae, locove immuni, sub antedictâ poenâ excommunicationis, si extractus in suis similiter defensionibus ei ad praescriptum praefatarum constitutionum apostolicarum competentibus nullitatem et iniustitiam contumacialis sententiae praedictae ostenderit, et sceleris indicia diluerit; quod si id praestare nequiverit, et ex eisdem sententiâ et actis rite et recte gestis reus repertus fuerit, iudex competens sententiam exequi, et, quando aliquem in poenâ irrogatâ excessum deprehenderit, etiam moderari valeat; ita quod quaecumque declaratio a praedicto iudice ecclesiastico facta in iudicio ecclesiasticae immunitatis super consignatione banniti et in contumaciam damnati eiusque denegatione, nullatenus deservire et a nemine allegari possit in alio diverso ac separato iudicio, in quo scilicet de praefatae sententiae contumacialis executione postmodum disputari contingeret; ad quem effectum dicta declaratio iudicis ecclesiastici perinde habeatur ac si non emanasset, nec ullus exinde scrupulus animo iudicis competentis in cognoscendâ et definiendâ validitate seu nullitate, iustitiâ seu iniustitiâ eiusdem sententiae contumacialis ingeratur.

§ 14. Hanc autem methodum et formam sic a nobis stabilitam exacte et inconcusse ab omnibus deinceps observari volumus et mandamus, quacumque aliâ praedecessorum dispositione aut contrariâ interpretatione ac praxi in quibusvis curiis Urbis et ditionis praefatarum quomodolibet et quandocumque invectâ, necnon declarationibus a tribunalibus dictae Urbis ac etiam a Congregatione pro tempore quoque existentium eiusdem S. R. E. cardinalium immunitati ecclesiasticae et controversiis

Haec extractionis forma semper et incommutanda.

iurisdictionibus praeposita etiam ita-
ralis vicibus emanatis, haudquaquam
obstantibus.

Ampliationes
bullarum Gre-
gorii XIV et Be-
nedicti XIII
disponem eccle-
siasticam lan-
guam.

§ 15. Ceterum quae memoratis con-
stitutionibus Gregorii XIV et Benedi-
cti XIII praedecessorum, in cunctis chri-
stiani orbis partibus iuxta earum teno-
rem ac¹ dispositionem inviolabiliter re-
tinendis ac custodiendis, per modum
extensionis et ampliationis adiicienda
duximus, nusquam ad ceteras regiones,
utpote, sicut in Domino gaudentes ac-
cepimus, non ad eo multiplicia grassan-
tur homicidia, neque ultra ditionem
ecclesiasticam praefatam extendere et
ampliare intendimus.

Præsentium
litterarum vali-
ditas et ex-
equutio.

§ 16. Decernentes, easdem presentes
litteras et in eis contenta quaecumque
semper ac perpetuo firma, valida et
efficacia existere et fore, suosque ple-
narios et integros effectus sortiri et ob-
tinere tam in Urbe quam in reliquis
omnibus civitatibus, terris et locis no-
bis ac S. R. E. mediate vel immediate
subiectis, comprehensis etiam quatuor
Legationibus, ac ipsis Bononiensi, Fer-
rariensi, ac Benévventanâ civitatibus,
aliisque etiam specialem et individuum
requiruntibus praefatis, ac generaliter
in quibuscumque curiis tum ecclesiasti-
cis tum saecularibus, etiam baronali-
bus respective, nullis exceptis, atque
ab omnibus et singulis, ad quos spectat
et pro tempore quandocumque specta-
bil, plenissime observari, sicque et non
aliter in praemissis per quoscumque
iudices ordinarios et delegatos, etiam
causarum palatii apostolici auditores, ac
ipsius S. R. E. cardinales etiam de latere
legatos, et eorundemque cardinalium
Congregationes, aliosve quoslibet qua-
cumque praecellentiam et potestate fun-
gentes et functuros, sublata eis et eor-
um cuilibet quavis aliter iudicandi et

interpretandi facultate, iudicari et de-
finiri debere, ac irritum et inane si
secus super his a quoquam, quavis au-
ctoritate, scienter vel ignoranter, con-
tigerit attentari.

§ 17. Non obstantibus praemissis, ali-
isque apostolicis, ac in universalibus
provincialibusque et synodalibus con-
ciliis editis, generalibus vel specialibus,
constitutionibus et ordinationibus, nec-
non, etiam iuramento, confirmatione apo-
stolica, vel quavis firmitate aliâ roboratis,
statutis, usibus et consuetudinibus,
etiam immemorabilibus, ac quorumcum-
que praedecessorum nostrorum litteris,
privilegiis, indultis et facultatibus, quib-
usvis, etiam dictis cardinalibus eorum-
que Congregationibus, sub quibuscum-
que verborum tenoribus et formis, ac
cum quibuslibet etiam derogatoriis
derogatoriis, aliisque efficacioribus, effi-
cacissimis et insolitis clausulis, ac ir-
rificantibus et aliis decretis, etiam motu,
scientiâ et potestatis plenitudine simili-
bus, etiam concistorialiter, vel aliâs
quomodolibet in contrarium praemisso-
rum concessis, confirmatis et innovatis;
quibus omnibus et singulis, etiamsi
pro illorum sufficienti derogatione de
illis eorumque totis tenoribus specialis,
specifica, expressa et individua, ac de
verbo ad verbum, non autem per clau-
sulas generales idem importantes, men-
tio seu quaevis alia expressio habenda,
aut aliqua alia exquisita forma ad hoc
servanda foret, tenores huiusmodi, ac
si de verbo ad verbum, nihil penitus
omisso et formâ in illis traditâ obser-
vatâ, exprimerentur et insererentur, prae-
sentibus pro plene et sufficienter ex-
pressis habentes, illis aliâs in suo ro-
bore permansuris, ad praemissorum ef-
fectum, hac vice dumtaxat, specialiter et
expresse derogamus; ceterisque contra-
riis quibuscumque.

Obstantium
derogatio.

¹ Male edit. Main. legit ad (R. T.).

Terminus per-
sonarum ad
hanc Constitutio-
tionis obligatio-
nem.

§ 18. Volumus autem, ut, lapsis de-
cem respectu dictae Urbis eiusque di-
strictus, ac viginti diebus respectu to-
tius reliqui Status nostri Ecclesiastici,
postquam praesentes litterae valvis ec-
clesiae Lateranensis et basilicae Princi-
pis Apostolorum et in acie Campiflorae
de eadem Urbe per aliquem ex curso-
ribus nostris affixae et publicatae fue-
rint, omnes et singulos tam in Urbe
quam in Statu praefatis existentes pe-
rinde arcent, ac si unicuique eorum
personaliter ac nominatim intimatae fuis-
sent; utque ipsarum praesentium litte-
rarum transumptis, etiam impressis,
manu alicuius notarii publici subscri-
ptis, et sigillo personae in ecclesiastica
dignitate constitutae munitis, eadem
prorsus fides in iudicio et extra illud
ubique adhibeatur, quae ipsis praesenti-
bus adhiberetur si forent exhibitae vel
ostensae.

Clausulae.

§ 19. Nulli ergo omnino hominum
liceat paginam hanc nostrorum appro-
bationis, confirmationis et innovationis,
prohibitionis, abrogationis, decretorum,
praeceptorum, mandatorum et statuto-
rum, ordinationum, voluntatis et dero-
gationis infringere, vel ei ausu temerario
contraire; si quis autem hoc attentare
praesumpserit, indignationem omnipo-
tentis Dei et beatorum Petri et Pauli apo-
stolorum eius se noverit incursum.

Datum Romae, apud S. Mariam Ma-
iorem, anno Incarnationis dominicae,
MDCCXXXV, kalendis februarii, pontifica-
tus nostri anno v.

Dat. die 1 februarii 1735, pontif. anno v.

A. card. pro-datarius.

F. card. OLIVERIUS.

Visa de Curia:

I. archiep. Ancyranus.

Loco † plumbi.

I. B. EUGENIUS.

Reg. in secret. Brevium.

Anno a Nativitate domini nostri Iesu Chri-
sti MDCCXXXV, indictione XIII, die vero XII
mensis februarii, pontificatus sanctissimi in
Christo patris et domini nostri domini Cle-
mentis divina providentia Papae XII anno v,
supradictae litterae affixae et publicatae fue-
runt ad valvas ecclesiae Lateranensis et ba-
silicae Principis Apostolorum, in acie Cam-
piflorae, ac in aliis locis solitis et consuetis
Urbis, per me Ioannem Triphellium apostoli-
cum cursorem.

IOSEPH OLIVETANI, mag. curs.

CLII.

Annua contributio per monasterium
S. Scholasticae Congregationis Cas-
sinensis Ordinis sancti Benedicti, fa-
cienda monasterio Sacri Specus eius-
dem Congregationis et Ordinis, fieri
censetur etiam titulo compensationis
quorundam bonorum, ac fieri debet
in pecuniâ numeratâ.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Aliàs inter diversas ordinatio-
nes, quas, pro instauratione salubrique
regimine et gubernio monasterii Sacri
Specus prope oppidum Sublacense Con-
gregationis Cassinensis Ordinis sancti
Benedicti, per terras nostras in simili
formâ Brevis expeditas litteras edidimus,
certis ex causis tunc expressis manda-
vimus, ut monasterium S. Scholasti-
cae eorundem Congregationis et Ordinis,
ipsi monasterio Sacri Specus adia-
cens, summam quingentorum quadra-
ginta quinque scutorum monetae ro-
manae quotannis contribuere deberet
in duabus aequalibus solutionibus pro
sustentatione quatuor monachorum duo-
rumque conversorum, ac unius famuli,
cum equo sive mulâ in dicto monaste-
rio Sacri Specus, cum facultate, in di-

Statutum aliàs
a Pontifice, con-
tributionem, de
qua in rubrica,
fieri posse in
pane, vino, etc.
et procurato-
rem generalem
Congregationis
Cassinensis so-
lum esse su-
periorum mo-
nasterii Sacri
Specus.

1 Videtur legendum *certas* pro *terras* (R. T.).

minutionem annuae summae sic contribuendae, subministrandi totum panem, vinum et oleum necessarium alimoniae praefatarum aliarumque personarum in eodem monasterio Sacri Specus pro tempore degentium; ac subinde decrevimus quod procurator generalis praedictae Congregationis Cassinensis itidem pro tempore existens, solus deinceps et unicuique superior et abbas foret ipsius monasterii Sacri Specus, quin abbas alterius monasterii S. Scholasticae se in illius gubernio quoad spiritualia et temporalia ingereret, sed ad dictum procuratorem generalem omnimoda eius administratio atque directio, religiosorumque destinatio et mutatio spectarent: et alias, prout in litteris nostris praefatis, novissimis quidem die iv maii proximi praeteriti emanatis, quarum tenores praesentibus pro plene et sufficienter specificatis et ad verbum insertis haberi volumus, uberius continetur.

§ 2. Cum autem, sicut venerabilis frater noster Petrus Marcellinus episcopus Tusculanus S. R. E. cardinalis Corradinus nuncupatus, supradictae Congregationis Cassinensis apud nos et Sedem Apostolicam protector, nobis novissime exposuit, praefatum monasterium Sacri Specus, antequam eidem Congregationi Cassinensi simul cum alio S. Scholasticae uniretur, non solum proprios priores et monachos haberet, sed plura etiam praedia, census, aliaque bona, res et iura obtineret, quae post obitum prioris et monachorum praedictorum dicto monasterio S. Scholasticae incorporata fuerunt; attentam vero separatione unius monasterii ab altero ita per nos factam, lites controversiae seu praetensiones inter utrumque monasterium huiusmodi, quae religiosam tranquillitatem fraternamque charitatem ac animorum

concordiam inter monachos dictorum monasteriorum summopere necessariam perturbarent, facile progressu temporis, nisi praevertantur¹, excitari possent, sicuti quoque multarum dissensionum et querimoniarum occasio tolleretur, si cautum foret ut praefata summa quingentorum quadraginta quinque scutorum, quam dictum monasterium S. Scholasticae eidem monasterio Sacri Specus annuatim contribuere tenetur, in posterum in pecunia numerata integre percolveretur, quemadmodum ex conventionione inter dilectos filios modernos abbatem et cellararium monasterii S. Scholasticae ac priorem et monachos monasterii sacri Specus praedictorum inita de praesenti servaretur², nobis propterea idem Petrus Marcellinus episcopus cardinalis humiliter supplicavit, quatenus in praemissis opportune providere et ut infra indulgere de benignitate apostolica dignaremur.

§ 3. Nos igitur, ipsius Petri Marcellini episcopi cardinalis votis hac in re, quantum cum Domino possumus, favorabiliter annuere, ac utriusque monasterii praefati paci et tranquillitati prospicere cupientes, huiusmodi supplicationibus inclinati, quod enarrata contributio quingentorum quadragintaquinque scutorum per dictum monasterium S. Scholasticae eidem monasterio Sacri Specus quotannis facienda, sicuti praemittitur, etiam in compensationem, ac ex causa et titulo compensationis praedictorum, censuum, aliorumque bonorum, rerum et iurium, quae olim ad ipsum monasterium Sacri Specus spectabant, dictoque monasterio S. Scholasticae incorporata seu quomodolibet applicata fuerant, fieri censeatur; itaut praefatum monasterium Sacri Specus nihil, prae-

Nova determinatio prout inquitur in rubrica.

¹ Male edit. Main. legit *pervertantur* (R. T.).

² Videtur legendum *servatur* (R. T.).

ter et ultra annuam contributionem huiusmodi, ratione praediorum, censuum, bonorum, rerum ac iurium praedictorum, ab illo S. Scholasticae praetendere aut petere, neque illud desuper molestare vel inquietare valeat, sed eâ contributione contentum sit: ac vicissim dictum monasterium S. Scholasticae summam quingentorum quadraginta quinque scutorum praefatorum singulis annis in duabus solutionibus aequalibus ad praescriptum priorum litterarum nostrarum omnino et exacte pendere ac contribuere teneatur, in compensatione quoque et ex causâ et titulo compensationis huiusmodi, nec e tali contributione ullatenus quovis praetextu et colore sese eximere, illamve differre possit; ac insuper quod istiusmodi contributio perpetuis futuris temporibus in pecuniâ numeratâ integre fieri debeat, ipsisque abbati priori et monachis monasterii Sacri Specus aliunde et undecumque volucrint panem, vinum et oleum emere et parare liberum sit, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, statuimus, declaramus et ordinamus.

Huius praeccepti firmitas.

§ 4. Decernentes, easdem praesentes litteras semper ac perpetuo firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis¹, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis respective inconcusse observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac S. R. E. praefatae cardinales, etiam de latere legatos, et alios quoslibet quavis praeeminentiâ et potestate fungentes et functuros, sublatâ eis et eorum cuilibet quavis aliter

¹ Edit. Main. legit *illos* (R. T.).

iudicandi et interpretandi facultate et auctoritate, iudicari et ~~desiniri~~ *debere*, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari; ipsique Petro Marcellino episcopo cardinali, moderno, ac pro tempore existenti praedictae Congregationis Cassinensis apud Sedem Apostolicam protectori harum scrie iniungentes, ut easdem praesentes litteras executioni mandari, observari et custodiri mandet et faciat.

§ 5. Non obstantibus, quoad ea quae praesentibus adversantur, prioribus litteris nostris praefatis, ac quibusvis constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon omnibus et singulis illis quae in iisdem prioribus litteris nostris concessa sunt non obstare, ceterisque contrariis quibuscumque.

Obstantium derogatio.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxviii februarii MDCCXXV, pontificatus nostri anno v.

Dat. die 28 februarii 1735, pontif. anno v.

F. card. OLIVERIUS.

CLIII.

Statutum ut capitulum generale Ordinis S. Hippolyti Mexicani de cetero de sexennio in sexennium celebretur.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Cum, sicut dilecti filii fratres Ordinis hospitalis S. Hippolyti Mexicani tam suo quam eiusdem Ordinis nomine nobis nuper exponi fecerunt, per constitutiones dicti Ordinis auctoritate apostolicâ confirmatas expresse disponatur, quod illius capitulum generale quolibet triennio celebretur, id vero, cum eiusmodi Ordo per diversas Ame-

Capitula generalia quolibet triennio celebrare, grave Ordini cum esset.

ricae regiones dilatatus sit, gravem incommoditatem afferat, ac superior generalis Ordinis huiusmodi visitationem suam in triennio praedicto complere nequeat; cupiantque propterea iidem exponentes opportune in praemissis a nobis provideri et ut infra indulgeri:

Clemens illud
prohibet ad
sexennium
perpetuum.

§ 2. Nos, ipsos exponentes specialibus in favoribus et gratiis prosequi volentes et eorum singulares personas a quibusvis, etc., censentes, supplicationibus eorum nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, de venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium negotiis et consultationibus episcoporum et regularium praepositorum, qui rem undique mature discusserunt, consilio, ut de cetero (praedictas constitutiones eiusdem cap. iv hac in parte reformantes) capitulum generale praedicti Ordinis hospitalarii quolibet sexennio, a proximo futuro capitulo generali quod anno proxime venturo celebrandum est incipiendo, atque ita de sexennio in sexennium continuando celebretur, auctoritate apostolica, tenore praesentium, statuimus et ordinamus: salva tamen semper in praemissis auctoritate Congregationis eorumdem cardinalium.

Praesentis
constitutionis
firmatae.

§ 3. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficacia existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et spectabit in futurum, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definire debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Contrarium
derogatio.

§ 4. Non obstantibus praemissis, ac

constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon dicti Ordinis, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis et ad verbum insertis habentes, illis aliis in suo robore permansuris, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

§ 5. Volumus autem ut earumdem litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in dignitate ecclesiastica constitutae munitis, eadem prorsus fides ubique habeatur, quae praesentibus ipsis haberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Transumptis
danda fides.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die ix aprilis MDCCXXXV, pontificatus nostri anno v.

Dat. die 9 aprilis 1735, pontif. anno v.

F. card. OLIVERIUS.

CLIV.

Confirmatio decreti Congregationis de Propaganda Fide super tumulatione cadaverum missionariorum regularium in infidelium partibus existentium.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Nuper a Congregatione venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium negotiis Propagandae Fidei praepositorum super tumulatione cadaverum missionariorum Ordinum regularium in partibus Syriae et Palaestinae

Decretum Congregationis de Propaganda Fide super tumulatione cadaverum missionariorum.

emanavit decretum tenoris qui sequitur, videlicet:

Decretum sacrae Congregationis generalis de Propaganda Fide, habitae¹ die VII february MDCCXXXV, referente eminentissimo et reverendissimo domino domino cardinali Petra, praefecto. Sacra Congregatio, ad tollenda iurgia et dissensiones, quae non raro oriri solent in partibus Syriae et Palaestinae occasione tumulationis cadaverum missionariorum Ordinum regularium, confirmavit et renovavit decreta super huiusmodi re alias edita, et praesertim anno MDCCXII, itemque confirmata anno MDCCII, per quae sancitum fuit: quod deferatur private cadaver a propriis religionis; in coemeterio autem tantum adesse debeat parochus cum stola et cruce, et dicat orationes iuxta formam praescriptam in rituali, permittendo postea ut reliquae orationes dicantur a superiore religionis, et per ipsum ac suos religiosos dari sepulturam. Praesens autem decretum renovatorium² praedictorum decretorum eadem sacra Congregatio praecepit notificari superioribus generalibus eorum Ordinum, etiam Societatis Iesu, quorum religiosi missionariorum munus in antedictis partibus obeunt, ut ab omnibus et quibuscumque suis respective subditis illud omnino et inviolabiliter observari curent. Datum Romae ex aedibus eiusdem sacrae Congregationis die XIX martii MDCCXXXV. — V. card. PETRA praefectus. — P. DE MONTIBUS secret. Loco † sigilli.

§ 2. Cum autem, sicut dilectus filius Cherubinus de Nove, frater expresse professus Ordinis Minorum sancti Francisci Capuccinorum nuncupatorum in Romanam Curiam missionariorum Gallorum eiusdem Ordinis in infidelium partibus existentium procurator, nobis subinde exponi fecit, ipse decretum huiusmodi, quo firmiter subsistat, apostolicae confirmationis nostrae patrocinio communi plurimum desideret: nos, specialem ipsi Cherubino gratiam facere volentes, eum-

¹ Edit. Main. legit *habita* (R. T.).

² Edit. Main. legit *renovatorium* (R. T.).

que a quibusvis excommunicationis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, supplicationibus eius nomine nobis super hoc humiliter perrectis inclinati, decretum praesentium, auctoritate apostolica, tenore praesentium, approbamus et confirmamus, illique inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiicimus: salva tamen semper in praemissis auctoritate praedictae Congregationis cardinalium.

§ 3. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac ab illis, ad quos spectat et pro tempore spectabit, inviolabiliter observari, sicque in praemissis, per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

§ 4. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ac, quatenus opus sit, quorumcumque Ordinum, et aliis quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro expressis habentes, illis alias in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Præsentium litterarum firmitas.

Obstantium derogatio.

Huiusmodi decretum a Pontifice confirmatum.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xiii aprilis MDCCXXXV, pontificatus nostri anno v.

Dat. die 13 aprilis 1735, pontif. anno v.

F. card. OLIVERIUS.

CLV.

Confirmatio Brevis Urbani VIII super declaratione quod Ordo fratrum Minorum sancti Francisci Capuccinorum per rectam lineam sine intermissione descendit a lineâ S. Francisci.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Exordium.

Ea, quae a Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris pro religiosa christifidelium divinis obsequiis sub suavi religionis iugo mancipatorum quiete provide facta et declarata fuisse noscuntur, ut solidiore robore persistent, apostolici muniminis praesidio, cum id a nobis petitur, libenter constabilimus.

Urbanus VIII declaravit fratres Ordinis Capuccinorum verum esse Ordinem sancti Francisci.

§ 1. Dudum siquidem felicitis recordationis Urbanus PP. VIII praedecessor noster fratres Ordinis Minorum sancti Francisci Capuccinorum nuncupatorum fuisse et esse ex verâ et nunquam interruptâ lineâ ac veros et indubitatos fratres dicti Ordinis S. Francisci et illius regulae observatores, subque ipsius S. Francisci regulâ militasse et militare, decrevit et declaravit, et aliâs prout uberius continetur in dicti Urbani praedecessoris litteris desuper in simili formâ Brevis expeditis, tenoris qui sequitur, videlicet: *Urbanus PP. VIII, ad perpetuam rei memoriam.* Salvatoris etc¹.

Urbani litteras confirmat Clemens.

§ 2. Cum autem, sicut dilectus filius Bonaventura a Ferrariâ, minister generalis eiusdem Ordinis, nobis nuper exponi fecit, ipse praemissa, quo firmitus subsistant et inviolabilius serventur, a-

¹ Vide suo loco, tom XIII, pag. 562 (R. T.).

postolicae confirmationis nostrae patrocinio communiri summopere desideret: nos, specialem ipsi Bonaventurae ministro generali gratiam facere volentes, eumque a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, supplicationibus eius nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, praeinsertas Urbani praedecessoris litteras, omniaque in eis contenta, dictâ auctoritate, tenore praesentium, approbamus et confirmamus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiicimus.

§ 3. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, et illis, ad quos spectat et pro tempore spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Et hanc declarationem per nos petuo servari praecipit.

§ 4. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon omnibus et singulis illis quae in praesentis Urbani praedecessoris litteris concessa sunt non obstare, ceterisque contrariis quibuscumque.

Obstantibus derogat.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xiv maii MDCCXXXV, pontificatus nostri anno v.

Dat. die 14 maii 1735, pontif. anno v.

F. card. OLIVERIUS.

CLVI.

Concessa facullas generali nunc et pro tempore esistenti Ordinis fratrum Minorum sancti Francisci Capuccinorum nuncupatorum unâ cum definitorio generali concedendi licentiam fratribus Capuccinis presbyteris ad audiendas saecularium confessiones ab Ordinario approbatis in illis locis, ubi conventus sui Ordinis existunt, et in quibus confessoriorum penuria viget.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Clemens VIII.
Gregorii XIV
constitutionem,
qua canetur, ne
Capuccini sae-
cularium au-
diant confes-
siones, abrogans,
eorum ministro
generali facul-
tatem concessit
nonnullos fra-
tres approbandi
ad easdem au-
diendas confes-
siones.

§ 1. Dudum emanarunt a recolendae memoriae Clemente Papa VIII praedecessore nostro litterae in simili formâ Brevis tenoris qui sequitur, videlicet :

Clemens Papa VIII, ad perpetuam rei memoriam. Aliâs felicis recordationis

Gregorius Papa XIV praedecessor noster, ex causis tunc expressis, motu eius proprio¹, suâ perpetuo valiturâ constitutione statuit et ordinavit, quod nullus Congregationis Capuccinorum Ordinis fratrum Minorum nuncupatorum sancti Francisci in laicorum utriusque sexus et clericorum saecularium, quacumque dignitate, praeceminentiâ, auctoritate et facultate suffulti essent, confessionibus occupari, vel confessiones eorum audire, etiamsi ad id faciendum a superioribus Ordinis, aut protectore, aut etiam ab Apostolicâ Sede quomodolibet et sub quacumque verborum formâ licentias eatenus obtinuissent, prout in eiusdem Gregorii praedecessoris litteris in formâ Brevis sub datâ die 1 iunii MDCXI expeditis plenius continetur. Cum autem diversi utriusque sexus christifideles pro eorum erga dictum Ordinem seu Congregationem Capuccinorum devotione cupiant religiosis eiusdem Congregationis confiteri posse: nos, illorum pio de-

siderio benigne annuentes, motu proprio et ex certâ nostrâ scientiâ, deque apostolicae potestatis plenitudine, praefatas Gregorii praedecessoris litteras, quarum tenorem praesentibus pro expresso haberi volumus, ita moderamus, ut minister generalis eiusdem Congregationis Capuccinorum et definitores in capitulo generali congregati, ut, in eodem capitulo tantum, quibusvis eiusdem Congregationis religiosi ad confessiones audiendas approbatis, si¹ ipsis ministro generali et definitoribus videbitur, licentiam audiendi saecularium utriusque sexus confessiones usque ad novi capituli generalis celebrationem, et non ultra, et sic de capitulo generali in capitulum generale concedere respective possint et valeant, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, facultatem concedimus et impartimur; et quascumque licentias audiendi saecularium huiusmodi confessiones quibusvis eiusdem Congregationis fratribus ab illius protectore aut quocumque alio, etiam de expresso nostro mandato, in perpetuum concessas, harum serie revocamus et annullamus: decernentes irritum et inane quidquid secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari. Non obstantibus praefati Gregorii XIV praedecessoris, ac quibusvis aliis constitutionibus et ordinationibus apostolicis; ceterisque contrariis quibuscumque. Volumus autem ut praesentium transumptis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in dignitate ecclesiasticâ constitutae munitis, eadem, quae praesentibus ipsis adhiberetur, fides adhibeatur. Datum Romae, apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die III february MDCCII, pontificatus nostri anno XI.

M. VESTRIUS BARBIANUS.

¹ Edit. Main. legit *propria* (R. T.).

¹ Particulam si nos addimus (R. T.).

Hanc facultatem
extendit
Clemens.

§ 2. Cum autem, sicut dilectus filius Bonaventura a Ferrariâ, minister generalis Ordinis fratrum Minorum sancti Francisci Capuccinorum nuncupatorum, nobis nuper exponi fecit, iuxta quoddam decretum nostrum, sive per nostras pariter in formâ Brevis expeditas litteras, definitorium generale dicti Ordinis in hac almâ Urbe nostrâ de praesenti resideat, et bis in hebdomadâ plerumque pro discutiendis ac resolvendis rebus Ordinis huiusmodi uniatur, dictus vero Bonaventura minister generalis in dies ab Ordinariis et communitatibus et hominibus nonnullorum locorum, necnon multis honorabilibus familiis efflagitur, ut fratres praedicti Ordinis sacramentales christifidelium confessiones excipere possint, ac proinde opportune in praemissis a nobis provideri summopere desideret: nos, ipsum Bonaventuram ministrum generalem specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innotatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, huiusmodi supplicationibus eius nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, eidem Bonaventurae et pro tempore existenti ministro generali praedicti Ordinis, ut unâ cum definitorio generali huiusmodi petitiones sibi super praemissis factas expendere, si et quatenus illas congruentes et necessarias repererit, praesertim in illis locis ubi conventus sui Ordinis existunt, et in eis ceteroqui confessariorum penuria viget, potestatem fratribus Ordinis praedicti in sacri presbyteratus ordine constitutis, et ad audiendas saecularium

confessiones ab Ordinario loci approbatis, concedere libere et licite possit et valeat, quamcumque necessariam et opportunam facultatem, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, tribuimus et impartimur; quemadmodum in capitulo generali eiusdem Ordinis servari consuevit.

§ 3. Non obstantibus praedictâ Clementis praedecessoris, aliisque constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon dicti Ordinis, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis et ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Derogat contrariis.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xiv maii MDCCXXXV, pontificatus nostri anno v.

Dat. die 14 maii 1735, pontif. anno v.

F. card. OLIVERIUS.

CLVII.

Indulgentiae docentibus et pueris discipulis doctrinam christianam in Urbe ac universâ Italiâ, insulisque adiacentibus, extenduntur ad adultos qui catechismo huiusmodi intererint.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Caelestium munerum thesauros dispensationi nostrae a Domino creditos, cum ad catholicae religionis incremen-

Extendim.

tum et animarum salutem profuturos speramus, libenter elargimur.

Extensio de
quâ in rubricâ.

§ 1. Cum itaque ab ipso apostolici regiminis nostri primordio, ad uberes fructus ac spirituales fidelium aedificationem, qui ex assiduo usu et explicatione catechismi sive doctrinae christianae provenire noscebantur, paternae dirigentes considerationis nostrae intuitum, diversas ordinationes a nonnullis Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris ad promovendum hoc pium fidelique populo imprimis necessarium opus, quo ille nimirum fidei catholicae rudimentis ac mysteriis omnibusque christianis virtutibus instruitur, salubriter editas, per edictum die xv novembris MDCCXXX iussu promulgatum confirmaverimus ac etiam ampliaverimus: nunc nos, christifideles tam almae Urbis nostrae, quam universae Italiae, ac insularum adiacentium, pro tempore existentes, ut operi huiusmodi ferventius incumbant, novis spiritualium gratiarum muneribus excitare volentes, omnes et singulas indulgentias et peccatorum remissiones ac poenitentiarum relaxationes, quae a quibusvis Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris praefatum catechismum seu doctrinam christianam iuxta decreta Concilii Tridentini in ecclesiis aut oratoriis pueros docentibus, aut eidem, dum edocetur, intervenientibus, hactenus concessa reperiuntur, ad adultos Urbis, Italiae et insularum praedictarum ipsi catechismo seu doctrinae christianae interessentes, harum serie, apostolicâ auctoritate, extendimus et ampliamus.

Explicatio huiusmodi indulgentiarum.

§ 2. Praeterea de omnipotentis Dei misericordiâ ac beatorum Petri et Pauli apostolorum eius auctoritate confisi, eisdem adultis, qui vere poenitentes et confessi, ac sacrâ communione relecti, eiusmodi pio exercitio devote interve-

nerint, qua vice id egerint, septem annos et totidem quadragenas de iniunctis eis seu aliâs quomodolibet debitis poenitentiis in formâ Ecclesiae consueta relaxamus; qui vero illud assidue frequentaverint, eundem catechismum doctrinamve christianam docentes vel addiscentes, ac vere similiter poenitentes et confessi sacrâque communione relecti pro christianorum principum concordia, haeresum extirpatione, ac S. M. E. exaltatione pias ad Deum preces effuderint, in Nativitatis domini nostri Iesu Christi, Paschalis Resurrectionis dominicae, necnon Ss. Petri et Pauli apostolorum festis diebus plenariam omnium peccatorum suorum indulgentiam et remissionem misericorditer in Domino concedimus. Praesentibus perpetuis futuris temporibus valituris.

§ 3. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ceterisque contrariis quibuscumque.

Uti tantum derogatio.

§ 5. Volumus autem ut ipsarum praesentium transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in dignitate ecclesiasticâ constitutae munitis, eadem prorsus fides adhibeatur, quae ipsis praesentibus adhiberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Transumptorum fides.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxvii iunii MDCCXXXV, pontificatus nostri anno v.

Dat. die 27 iunii 1735, pontif. anno v.

F. card. OLIVERIUS.

CLVIII.

Prohibitio recipiendi in provincia Italiae Ordinis fratrum SS. Trinitatis redemptionis captivorum religiosos cuiusvis Ordinis transitum requirentes, sub poena excommunicationis et pri-

vationis vocis activae et passivae tam contra recipientes quam receptos ipso facto incurrenda.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Prooemium. Sollicitudo pastoralis officii, quo catholicae Ecclesiae regimini divina dispositione praesidemus, nos urget atque impellit, ut, paternam religiosorum Ordinum Altissimi obsequiis mancipatorum uberesque bonorum operum fructus adspirante superni favoris auxilio proferre iugiter satagentium curam gerentes, ea quae Ordinibus ipsis noxia esse noscuntur annuere¹, et illorum professores in salutaris vitae norma, quam amplexi sunt, conservare studeamus.

Per constitutiones Ordinis vetitum religiosorum aliorum Ordinum recipere absque consensu definitorii provincialis.

§ 1. Exponi siquidem nobis nuper fecit dilectus filius Iosephus Aloysius seu Ludovicus Vasta, praesidens provincialis provinciae Italiae Ordinis fratrum SS. Trinitatis Redemptionis Captivorum, quod, cum per constitutiones dicti Ordinis lib. I, cap. XLVIII, § 14 indispensabiliter prohibeatur ne religiosi aliorum Ordinum recipiantur (quemadmodum etiam experientia compertum sit² quantum praeiudicii nonnullis eiusdem provinciae conventibus religiosos translatos in eos recipere allatum sit), in capitulo provinciali provinciae huiusmodi anno MDCCXX ordinatum decretumque fuit ne imposterum aliquis religiosus alterius Ordinis absque consensu totius definitorii provinciae praedictae ad habitum admitti et recipi posset.

Quod tamen cum a nonnullis superioribus non observaretur.

§ 2. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat, nonnulli superiores tam provinciales quam locales, ad instantias et requisitiones personarum saecularium, et ob alias particulares causas, proponere, et in eorum conventus ali-

¹ Videtur legendum *amovere* (R. T.).

² Potius lege *est* (R. T.).

quot religiosos translatos recipere sibi licere existimaverint, ipse vero Iosephus Aloysius seu Ludovicus praesidens provincialis, quo tam sibi quam aliis futuris superioribus memorati Ordinis haec via omnino praecludatur, opportune in praemissis a nobis providere et ut infra indulgeri summopere desideret:

§ 3. Nos igitur, Iosephi Aloysii seu Ludovici praesidentis provincialis votis hac in re, quantum cum Domino possumus, favorabiliter annuere volentes, eumque a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, supplicationibus eius nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, ut de cetero perpetuis futuris temporibus nec ipsi Iosepho Aloysio seu Ludovico praesidenti provinciali, neque alicui alteri superiori, cuiuscumque gradus seu conditionis existat, sub quovis praetextu in capitulo provinciali sive conventuali memoratae provinciae ullum cuiusvis alterius Ordinis religiosum, etiamsi sit dicti Ordinis Excalceatorum nuncupatorum, proponere, et in eandem provinciam seu in aliquem conventum, sine expresso totius definitorii provincialis legitime congregati unanimi in scriptis praestito consensu, excommunicationis, ac privationis eorum officiorum, et inhabilitationis ad illa, ac vocis activae et passivae poenis tam contra recipientes quam receptos ipso facto incurrendis, recipere ullo modo liceat, auctoritate apostolica, tenore praesentium, decernimus, statuimus et declaramus.

Specialiter
statuitur sub
poenis prout in
rubrica.

§ 4. Decernentes pariter, easdem praesentes litteras semper firmas, va-

Sicque in perpetuum servari

ac indicari
praecipitur.

lidas et efficaces existere et fore, suos-
que plenarios et integros effectus sorti-
turi et obtinere, et ab illis, ad quos
spectat et pro tempore quaecumque
spectabit, inviolabiliter observari, sic-
que in praemissis per quoscumque iu-
dices ordinarios et delegatos, etiam
causarum palatii apostolici auditores,
iudicari et definiri debere, ac irritum
et inane si secus super his a quoquam,
quavis auctoritate, scienter vel ignoran-
ter, contigerit attentari.

Obstantium
derogatio.

§ 5. Non obstantibus constitutionibus
et ordinationibus apostolicis, ac qui-
busvis, etiam iuramento, confirmatione
apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ ro-
boratis, statutis et consuetudinibus, pri-
vilegiis quoque, indultis et litteris apo-
stolicis in contrarium praemissorum
quomodolibet concessis, confirmatis et
innovatis; quibus omnibus et singulis,
illorum tenores praesentibus pro plene
et sufficienter expressis ac ad verbum
insertis habentes, illis aliâs in suo ro-
bore permansuris, ad praemissorum
effectum, hac vice dumtaxat, specialiter
et expresse derogamus; ceterisque con-
trariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maio-
rem, sub annulo Piscatoris, die iv
iulii MDCCXXXV, pontificatus nostri an-
no v.

Dat. die 4 iulii 1735, pontif. anno v.

F. card. OLIVERIUS.

CLIX.

*In ratiocinatores Camerae Apostolicae
assumuntur tres legumperiti e pro-
curatorum collegio, cum aliis ordina-
tionibus pro rectâ eiusdem Camerae
ac rerum ad eam spectantium admi-
nistratione.*

Clemens episcopus,
servus servorum Dei,
ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

§ 1. Ad circumspectam Romani Pon-
tificis providentiam pertinet non solum
dominici gregis sibi divinitus commissi
custodiam et saluti iugiter invigilare,
verum ad rectam quoque administratio-
nem pontificii aerarii, unde continua
pro tuitione ecclesiasticae ditionis at-
que communibus etiam christianae rei-
publicae necessitatibus subsidia depro-
muntur, mentis suae aciem convertere,
ac ex eis, quae olim per suos praede-
cessores in eum finem prudenter qui-
dem praescripta ac instituta fuerunt,
ipsâ subinde rerum experientiâ suadente
et rationabilibus ex causis, quibus prae-
sertim feliciori eiusdem aerarii dispen-
sationi consulitur, aliqua interdum mo-
derari et iminutare, aliâsque in his
apostolicae suae sollicitudinis partes
interponere, sicut in Domino magis ex-
pedire arbitratur.

§ 2. Itaque nos, ab ipsis pontificatus
nostri primordiis serio considerantes,
quod iam inde perspectum habueramus
cum in minoribus constituti thesaura-
rii generalis Camerae Apostolicae mu-
nere perfungebamur, eidem nimirum
Camerae Apostolicae conducibile ac
proficuum fore, si ad officia ratiocinato-
rum ipsius Camerae, quae peritis in
computis seu rationibus conficiendis
per Romanos Pontifices praedecessores
nostros eâtenus conferri consueverant,
et novissime a dilectis filiis Ioanne Ba-
pista Leonori, Ioanne Antonio Tartag-
lia, ac Eustachio Mauri omni cetero-
quin fide et probitate gerebantur, im-
posterum assumerentur viri legum scien-
tiâ praediti, ac in rebus et controversiis
forensibus Romanae Curiae imprimis
versati, utpote quibus longe facilius
redderetur publica instrumenta locatio-

Magis profi-
cium Camerae
Apostolicae fore
ducens ut eius
computa per
legum peritos
administrentur.

num, appaltuum, afflictuum, aliorumque contractuum cameralium pro tempore ineundorum, eorumque capitula, pacta et conventiones ordinate et qua par est perspicuitate ad mentem contrahentium componere, ac tabellas, quae, ut moris est, ipsis instrumentis adiunguntur, ad rectam iustamque methodum et oeconomiae regulam disponere, necnon documenta et probationes, ad expeditam litium cameralium definitionem conferentia, ex libris et scripturis penes eos ratione dictorum officiorum existentibus desumere, ac ipsius Camerae defensoribus subministrare (in quibus praecipua eorumdem ratiocinatorum sollicitudo hactenus consistere debuit); ac insuper attendentes per istiusmodi viros doctrinā ac longo negotiorum forensium usu praestantes cumulatus expletum iri quae pro salubri Camerae praefatae regimine inferius statuenda atque iniungenda duximus, quin id eis impedimento foret, quominus minoribus et subalternis curis eandem Camerae concernentibus etiam vacare, maxime vero libros computorum, aliaque rem rationariam spectantia assuetā aliorum ministrorum operā probe ordinare valerent; et propterea, quod animo conceperamus diuque mente agitaveramus, pro maiori praedictae Camerae utilitate atque commoditate ad effectum perducere ac perficere volentes, habitā prius eā super re cum aliquot venerabilibus fratribus nostris S. R. E. cardinalibus, ac praesertim Annibale Albano, episcopo Sabinensi, cardinali S. Clementis nuncupato, nostro ac ipsius S. R. E. camerario, maturā deliberatione, auditisque dilectis filiis magistro Carolo Maria Sacripante moderno thesaurario generali, nonnullisque aliis ministris et officialibus eiusdem Camerae, per schedulam

1 Forsan assumpta (R. T.).

Motusproprii die xxvii mensis aprilis proxime praeteriti propria manu nostra signatam, inter alia, memoratos Ioannem Baptistam Leonori, Ioannem Antonium Tartaglia, et Eustachium Mauri a dictis officiis ratiocinatorum Camerae praedictae, eorumque exercitio, titulo iubilationis, ut vocant, exemimus et absolvimus, ac in illorum locum quoad officia et exercitium huiusmodi dilectos quoque filios Philippum Boschettum, Ioannem Franciscum Marcū et Ioannem Iulianum Rubini e collegio procuratorum seu patronorum causarum palatii nostri apostolici assumptos et electos subrogavimus et deputavimus sub nomine seu appellatione superintendentium computatoriis cameralibus, statuentes, ut, his quandocumque decedentibus, seu alicui eorum decedenti, alii de eodem collegio per nos et Romanos Pontifices successores nostros similiter eligendi itidem subrogarentur, sicque deinceps perpetuis futuris temporibus servaretur; ac subinde per aliam similem schedulam Motusproprii die xiii currentis mensis iulii manu quoque nostra signatam congrua emolumenta singulis tam ratiocinatoribus ut supra absolutis et iubilatis quam superintendentibus praedictis respective constitui-mus et assignavimus; et alias, prout uberius continetur in utraque nostra schedula Motusproprii praefata, tenoris qui sequitur:

§ 3. Primae videlicet: *Clemens PP. XII, Motu proprio, etc.* Avendo noi riconosciuto anche per esperienza avuta in tempo che eravamo tesoriere, che sarebbe di molto vantaggio per la nostra Camera, se le tre computisterie della medesima fossero esercitate da persone della sfera legale, le quali potrebbero con maggior facilità concepire al suo lume e colla dovuta chia-

Motu proprio, emeritis declarant praesentes ratiocinatores, tres curiales e collegio procuratorum ad id muneris exercendum deputati.

rezza degl' istromenti di appalti, affitti ed altri contratti, e rispettivamente i capitoli di detti istromenti, come anche somministrare nelle Congregazioni camerali e dei Conti quei motivi di fatto e di ragione tanto in scritto che in voce, che possono conferire alle risoluzioni delle controversie ed altri affari camerali, che in quelle s' esaminano per giustizia, nel che consiste una delle primarie incombenze di chi esercita le dette computisterie; e considerando ancora, che li tre odierni computisti Giambattista Leonori, Gianantonio Tartaglia ed Eustachio Mauri, avendo esercitate con sommo onore, diligenza e fedeltà le loro cariche, sono ormai in età che merita la nostra indulgenza per isgravarli delli incomodi e fatiche che porta seco il loro ministero: abbiamo perciò determinato di giubilare ciascuno di essi, ed in loro vece e luogo surrogare fin d' adesso altre tre persone da scegliersi da noi nel collegio de' procuratori delle cause del nostro palazzo apostolico, e dimostrare in tal congiuntura la stima che abbiamo della nostra Curia Romana e di esso collegio, in cui sogliono ascrivere i soggetti più qualificati di detta Curia. Quindi è per tanto, che, di nostro moto proprio, certa scienza e deliberazione, e pienezza di nostra volontà e potestà, avendo qui per espresso e di parola in parola inserito il tenore di qualunque Bolla, Costituzione, Motoproprio, Chirografo, o altra qualsivoglia disposizione, sì nostra che de' nostri predecessori, nelle quali si parli o disponga delle dette computisterie della nostra Camera, e de' soggetti da destinarsi all' esercizio delle medesime, ed ogni altra cosa necessaria ed opportuna che ricercasse speciale ed individua menzione, come anche de' Brevi o al-

tre disposizioni, tanto nostre, che di Benedetto XIII di santa memoria nostro predecessore, concernenti le coadiutorie fatte ad Antonio Durani computista del nostro palazzo apostolico ed a Gaetano Caivani computista delle dogane generali con la futura successione alle prime vacanze di computisterie camerali (le quali coadiutorie con il presente rivediamo affatto ed annulliamo, e vogliamo, che siano di niuna forza e valore, come se non fossero ottenute), ordiniamo e vogliamo che li suddetti tre odierni computisti Giambattista Leonori, Gianantonio Tartaglia, ed Eustachio Mauri fin da ora restino e s' intendano giubilati, con la riserva però di quelli emolumenti che da noi si esprimerà in altro nostro Motoproprio, e nel modo e forma che in esso si dirà, e in luogo de' medesimi e di ciascheduno di loro ammettiamo e surrogiamo fin d' adesso all' esercizio e soprintendenza delle tre computisterie della nostra Camera i tre seguenti soggetti, che da noi per tale effetto si scielgono dal suddetto collegio de' procuratori delle cause del nostro palazzo apostolico, cioè Filippo Boschetti, Gianfrancesco Marcus e Giangiuliano Rubini con il titolo di soprintendenti alle medeme computisterie, e con tutti e singoli pesi ed incombenze annesse a dette computisterie, e specialmente di ritenere i ministri soliti e necessari per regolare con tutto il miglior ordine ed esattezza il libro mastro, siccome gli altri libri e scritture che riguardano l' azienda della nostra Camera, e rispettivamente con tutti e singoli onori, emolumenti, certi ed incerti, regalie e prerogative, e preeminenze, da conseguirsi tanto per ora e durante la detta giubilazione quanto dopo la mancanza de' giubilati, nel modo e forma che si dirà nell' altro Moto-

proprio di sopra mentovato; e in mancanza de' suddetti da noi nominati e scelti, e di ciascheduno di loro, vogliamo che in avvenire sempre ed in perpetuo si debbano surrogare, in luogo dei mancanti, altri simili soggetti da sciogliersi da noi e da nostri successori rispettivamente nel predetto collegio di procuratori delle cause del nostro palazzo apostolico, essendo questa la precisa e deliberata volontà diretta al beneficio e vantaggio della nostra Camera, come sopra ci siamo espressi; volendo e decretando che questo nostro Motoproprio debba avere il suo pieno e totale effetto, nè possa in alcun tempo da veruno impugnarsi sotto qualunque pretesto ed eccezione, nè pure per motivo che non vi siano state udite le persone sopra nominate, o altre che vi avessero o potessero avere interesse, e debba in tutto e per tutto eseguirsi ciò che in esso abbiamo ordinato con sola nostra sottoscrizione, benchè non s'ammetta in Camera, nè si registri ne' suoi libri, nonostante la Bolla di Pio IV nostro predecessore *De registrandis*, e quali si siano altre costituzioni ed ordinazioni apostoliche, usi, stili, consuetudini, detti Brevi, o altro come sopra concernente dette coadiutorie con la futura successione alle prime computisterie vacanti a favore de' predetti Antonio Durani e Gaetano Caivani, ed ogni altra cosa che facesse o potesse fare in contrario; alle quali tutte e singole, avendo qui, come sopra abbiamo detto, il tenore per espresso, per questa volta ed al fine suddetto deroghiamo. Proibendo l'opporre di difetto di sorrezione ed orrezione, come anche togliendo la facoltà di giudicare ed interpretare in contrario a tutti li giudici, tribunali anche della nostra Camera e Congregazioni ancora de' car-

dinali, dichiarando perpetuamente irritato, inane ed attentato tutto quello si facesse in opposto, essendo così mente, e volontà nostra espressa. Dato dal nostro palazzo apostolico di Monte Cavallo questo dì xxvii aprile MDCCXXXV.

CLEMENS PP. XII.

§ 4. Alterius vero:

Clemens PP. XII, Motuproprio, etc.

Avendo noi con altra nostra cedola di Motoproprio del dì 27 aprile prossimo passato originalmente esibita per gli atti del Conti, uno de' segretari della nostra Camera, giubilato, per le cause ed effetti in quella espressi, li tre computisti di essa Camera, cioè Giambattista Leonori, Gianantonio Tartaglia ed Eustachio Mauri, ed in loro luogo surrogato con il titolo di sovrintendenti Filippo Boschetti, Gianfrancesco Marcùs e Giangiuliano Rubini del collegio de' procuratori delle cause del nostro palazzo apostolico; e volendo ora in seguito di detta nostra cedola prendere ulteriori provisioni per regolamento delle medesime computisterie, e stabilire il congruo assegnamento sì agli uni che agli altri, come anche ai loro sostituti e giovani, nel modo come appresso: pertanto colla presente nostra cedola di Motoproprio, nella quale abbiamo per espresso il tenore dell'altra da noi come sopra segnata, ed ogni altra cosa quantosivoglia necessaria da esprimersi, di nostro moto proprio, certa scienza e pienezza della nostra suprema potestà, assegniamo a' suddetti tre giubilati computisti, ed a ciascuno di essi, dal 1° di maggio prossimo passato, sinchè naturalmente viveranno, per loro provisione annui scudi ottocento moneta da pagarsi de' denari della nostra Camera con ordini di monsignor tesoriere generale diretti al depositario della medesima, di mese in mese la rata parte, oltre le

Singulis emendatis, novisque rationabilibus emolumentis assignat.

medaglie d'oro e d'argento nella festività dei santi apostoli Pietro e Paolo, e le solite franchigie da essi anche godute per lo passato. Rispetto poi ai detti tre sovrintendenti, vogliamo che siano e debbano essere fra i medesimi non meno eguali le incombenze che gli emolumenti, e che per ridurre le dette tre computisterie a detta uguaglianza, debba esso monsignor tesoriere con la sua solita esattezza e possibile celerità fare il ripartimento degli appalti ed altri interessi camerati, a tenore del quale dovrà ciascuno di detti sovrintendenti soddisfare puntualmente alle incumbenze assegnategli: a' quali ed a ciascuno di essi per loro provizione, affinché debbano con tutta diligenza ed esattezza unicamente applicare alle medesime, oltre la parte di pane, vino e companatici del nostro palazzo apostolico, medaglie d'oro e d'argento nella suddetta festività dei santi apostoli Pietro e Paolo, franchigie solite godersi, e provizione di carta, penne, inchiostro ed altro occorrente per servizio di dette computisterie, assegniamo per ora dal detto di 1° maggio scudi cento per ciascuno il mese, da pagarsi come sopra de' denari di detta nostra Camera, senza la medesima sia tenuta al pagamento di alcuna pigione; e per reintegroamento di detta nostra Camera per li suddetti assegnamenti, e per le provizioni che dovrà la medesima pagare a' sostituti e giovani addetti al servizio di dette computisterie, da notarsi in conto a parte, vogliamo che debbano spettare ad essa nostra Camera tutti e singoli emolumenti, regalie, ed altro in qualsivoglia modo solito ritraersi dai suddetti computisti giubilati, l'importo de' quali ordiniamo che debba in avvenire interamente depositarsi nella depositaria generale di essa nostra Camera, e porsi in conto a

parte, per doversene poi, reintegrata che sarà la medesima di tutte le somme pagate per li suddetti assegnamenti e provizioni, fare la distribuzione, secondo gli ordini che da noi e nostri successori saranno dati al detto monsignor tesoriere. In caso poi di morte di alcuno de' suddetti giubilati, vogliamo che debba subito cessare l'emolumento assegnatogli, e quello a beneficio comune de' nuovi eletti ripartirsi egualmente fra di loro, detratta prima però la somma di cui la nostra Camera dovrà essere reintegrata per quello potesse essere in disborso per il pagato di più tanto ai giubilati, che alli nuovi eletti, loro sostituti e giovani, al quale effetto abbiamo come sopra ordinato, che di detti emolumenti debba tenersene conto a parte, in maniera che, cessata la giubilazione, tutto quello che si troverà depositato e si depositerà successivamente in ciaschedun anno in detto conto a parte per titolo de' suddetti emolumenti, regalie ed altro, doverà, dopo seguita la suddetta effettiva ed intiera reintegrazione, spettare e conseguirsi intieramente dai suddetti sovrintendenti in fine dell'anno per egual porzione. E perchè li sostituti e giovani di dette tre computisterie, oltre la provizione che erano soliti di avere, conseguivano anch'essi diversi altri emolumenti e regalie, distintamente da quelle che si esigevano da' detti giubilati, vogliamo ora ed ordiniamo, che anche l'importo di queste, assieme unito, debba intieramente depositarsi nella suddetta depositaria in conto a parte, e tutto assieme unito e considerato, e servata la debita proporzione, ripartirsi da detto monsignor tesoriere, e poi ad arbitrio di detti sovrintendenti distribuirsi fra li medesimi sostituti e giovani di tutte le suddette computisterie, e rispettivamente

pagarsegli, oltre la detta loro provvisione, di quadrimestre in quadrimestre, con ordine di detto monsignor tesoriere, al quale diamo e concediamo tutte le facoltà necessarie di poter prendere tutt'altre provisioni che egli per l'esecuzione della presente nostra cedola stimerà più proprie ed espedienti, essendo così mente e volontà nostra espressa. Volendo e decretando, che la presente nostra cedola di Motoproprio, benchè non ammessa nè registrata in Camera, a tenore della Bolla di Pio IV nostro predecessore *De registrandis*, vaglia e debba aver sempre il suo pieno effetto, esecuzione e vigore con la nostra semplice sottoscrizione, e che non gli si possa mai opporre di sorrezione, orrezione, nè d'alcun altro vizio o difetto della nostra volontà ed intenzione; ma che così debba sempre dichiararsi, definirsi ed interpretarsi da qualsivoglia giudice, reverendissimo cardinal camerlengo, dal detto monsignor tesoriere, dal tribunale della nostra Camera, e da qualsivoglia altro tribunale benchè collegiale, dichiarando nullo ed invalido tutto ciò che si facesse o si tentasse di fare in contrario, ancorchè non siano stati chiamati, citati nè sentiti monsignor commissario della nostra Camera, li suddetti computisti giubilati e nuovi eletti, e qualunque altro che vi avesse o potesse avere in qualsivoglia modo interesse; non ostante la suddetta Bolla *De registrandis*, e l'altra del medesimo sopra la riforma del tribunale della nostra Camera, e quelle di Paolo II, Paolo IV e del detto Pio IV *De rebus Ecclesiae et Camerae non alienandis*, ed in quello faccia di bisogno, l'anzidetta nostra cedola di Motoproprio come sopra da noi segnata, la regola della nostra Cancelleria *De iure quaesito non tollendo*, e qualsivoglia altre costituzioni

ed ordinazioni apostoliche, Brevi, Motipropri e Chirografi, istrumenti d'appalti confermati ed approvati da noi e dai nostri predecessori, e specialmente li Brevi e Motipropri delle deputazioni in computisteria dei suddetti Leonori, Tartaglia e Mauri, quantunque fatte durante la loro vita naturale, ed ogni altro Breve, Motoproprio, chirografo o altra disposizione, in cui siansi concesse le coadiutorie con la futura successione alle prime computisterie vacanti a favore delle persone nominate nel precedente nostro Motoproprio, e di qualsivoglia altra persona che con qualunque specialità l'avesse ottenuto da noi o dai nostri predecessori, e che meritasse d'essere individualmente nominato, leggi, statuti, riforme, usi, stili e consuetudini, ed ogni e qualunque altra cosa che facesse o potesse fare in contrario; alle quali tutte e singole, avendone il loro tenore qui per espresso e di parola in parola inserito, per questa volta sola all'effetto suddetto pienamente deroghiamo. Dato dal nostro palazzo apostolico di Monte Cavallo, questo dì 13 luglio 1735. — CLEMENS PP. XII.

§ 5. Nunc autem nos, firmiter prae-missorum robori et efficaciae per amplius prospicere cupientes, motu et deliberatione paribus, ac ex certa scientia nostra, deque apostolicae potestatis plenitudine, hac nostra perpetuo valitura constitutione, binas schedulas nostras praeinsertas, ac omnia et singula in eis earumve qualibet quovis modo contenta et expressa, indeque secuta et secutura quaecumque, confirmamus et approbamus, ac rata et grata habemus, illisque omnibus et singulis perennis et inviolabilis ac irrefragabilis apostolicae firmitatis vim, validitatem atque stabilitatem adiicimus, ac quoscumque tam iuris quam facti ac solemnitatum quarumli-

In praesentis
contenta per-
petuo servari
praecipit.

bet etiam quantumvis formales et substantiales defectus, si qui in praemissis vel eorum aliquo quodcumque inter-
venerint, seu intervenisse dici, censi, praetendi vel intelligi unquam possent, etiamsi de illis, ad hoc ut sanari vale-
rent specifica mentio facienda esset, plenissime et amplissime supplemus et sanamus, ac penitus et omnino tollimus, removemus et abolemus.

Novorum ratio-
cinatorum mu-
nus quare esse
debeat.

§ 6. Utque Camera nostra praedicta propositum, optatumque finem conse-
quatur, ac quae exinde expectantur com-
moda reipsa sentiat, meminerint super-
intendentes sic deputati ac pro tempore
deputandi, quod omne eorum studium
ac curam eo iugiter conferre et inten-
dere debeant, ut quibuscumque detri-
mentis, damnis et praeiudiciis, quae ei-
dem Camerae quoquo modo et unde-
cumque obvenire, seu inferri et inten-
tari possent, sedulo occurrant.

Ab eis itaque
ceterisque Ca-
merae aposto-
licae officiali-
bus quae per-
agenda sint de-
clarat.

§ 7. Quo vero ipsis superintendenti-
bus mens et intentio nostra, et quae
sibi facienda et praestanda fuerint, ple-
nius innotescant, tum pro ea quam re-
rum cameralium habemus cognitione
ac experientia, tum ex provida dicti
magistri Caroli Mariae thesaurarii gene-
ralis opus hoc strenue promoventis in-
sinatione, quae mox subiiciuntur spe-
cialiter illis aliisque dictae Camerae
ministriis et officialibus praecipere ac
indicare opportunum existimavimus.

Ratiocinato-
res debent bona
quaecumque
eiusdem descri-
bere in pecu-
nari libro.

§ 8. Postquam igitur confecta fuerit
per eundem magistrum Carolum Mariam
thesaurarium generalem aequalis illa
divisio seu partitio appaltuum et affi-
ctuum cameralium, quam in altera ex
praeinsertis schedulis nostris Motuspro-
prij demandavimus, superintendentes
praedicti, ultra descriptionem genericam
in libro maiore eiusdem Camerae pro
dimetienda totius patrimonii extantis
quantitate faciendam, alteram addant

descriptionem omnium bonorum, rerum
ac iurium dictae Camerae in peculiarem
librum ad id destinandum referendam,
ad evitandam quamcumque eorum dis-
perditionem, utque perpetuae conserva-
tioni ipsius patrimonii magis cautum
sit; in quo quidem peculiari libro di-
ctorum bonorum qualitates, quantitates,
fines ac dependentiae, resque et iura
praefata singillatim specificentur, et si
fieri potest, eorundem bonorum men-
surae annuae redditus recenseantur,
ita ut, si quid quoad bona, redditus, res
et iura praedicta immutatum seu varia-
tum deprehendatur, unde id evenit
dignosci congruumque remedium adhi-
beri possit.

§ 9. Et quia mutationes seu variatio-
nes circa bona, redditus, res et iura
eiusmodi imposterum provenire forsitan
poterunt vel ex novis contractibus in-
eundis vel ex sententiis ac decretis
quae a tribunalibus aut iudicibus ordi-
nariis et delegatis almae Urbis nostrae
desuper proferri contigerit, iidem super-
intendentes in dicto peculiari libro di-
ligenter adnotent omnes et singulas mu-
tationes seu variationes, si quae pro
tempore quodcumque ex dictis con-
tractibus vel sententiis ac decretis aut
aliunde et ex quavis alia causa et oc-
casione processerint; mandantes quo-
que, pro maiore et ulteriore cautela, di-
lectis etiam filiis modernis ac pro tem-
pore similiter existentibus Camerae prae-
fatae notariis seu secretariis, quatenus
singulorum contractuum ac sententia-
rum et decretorum, quae per eorum
acta respective celebrata, lata et pu-
blicata fuerint, statim distinctam, cla-
ram et fidelem notulam tradant illi ex
superintendentibus praefatis, cuius cu-
rae commissa fuerint bona, res et iura
dictae Camerae, quae istiusmodi con-
tractus ac sententiae et decreta respi-

In eoque ad-
notare omnia
eorundem va-
riationes.

clont; simulque de iis certiores red-
dant pro tempore existentem ipsius Ca-
merae commissarium generalem, cuius
sit investigare et recognoscere per se
vel alios, an iidem superintendentes
officio suo hac in parte satisfecerint;
quibus per dictos superintendentes, no-
tarios, seu secretarios, et commissarium
generalem peractis, facile quidem erit
in casu molestiarum in promptu habere
ea quae ad eiusdem Camerae, illiusque
iurium, rerum et bonorum defensionem
ac tuitionem qualibet occasione perti-
nere possunt.

Pacta affi-
cium, locatio-
um etc., cor-
rigere etc., re-
formare.

§ 10. Ipsorum quoque superinten-
dentium assidua opera versari debeant
in corrigendis ac reformandis capitulis
seu pactis et conditionibus locationum,
affictuum et appaltuum cameralium prae-
fatorum, et tabellis eis annecti solitis,
quae sic correcta et reformata, atque
ad debitam perspicuitatem et cohae-
rentiam redacta, mutuo inter eos con-
silio expendere ac scrutari teneantur,
ne aliquando contingat ut capitula u-
nius appaltus, tametsi inter se cohae-
rentia et clara, aliquid tamen contra-
rium aliis appaltibus preferant, ex quo
dicta Camera refectionis damnorum, quas
restauri vocant, aliasve quaestiones vel
cum altero conductore seu appaltatore
subire cogatur, sicut pluries antea ac-
cidisse nobis relatum fuit; eaque post-
modum subiiciant examini eorumdem
thesaurarii et commissarii generalium
pro tempore existentium, atque ubi ab
his revisa et approbata fuerint, tunc de-
mum exhibeant in actis alicuius ex su-
pra dictis notariis seu secretariis: idque
stat octo mensibus, antequam novae ob-
lationes recipiantur, ad hoc ut pro fu-
turis locationibus interim perspecta ac
explorata sint oblatores capitula, pa-
cta et conventiones, quibus res locan-
das conducere poterunt, vix unquam vel

in minimo moderanda, aut quoquo modo
varianda et mutanda, intra quorum pro-
inde limites suas oblationes perstringere
debeant, scituri ex nunc pro tunc et e
contra, quod Camera praefata ad eorum-
dem capitulorum, pactorum et conven-
tionum tramites ac normam novas loca-
tiones erit initura.

§ 11. Cumque etiam post correctio-
nem et reformationem capitulorum et
tabellarum huiusmodi, atque initos iux-
ta eorum tenorem novos contractus,
aliqua super praemissis ab una alterave
parte in Congregatione computorum
nuncupata difficultas, quae humanam so-
lertiā praevideri nequiverat, moveri, no-
vae inde litium occasio emergere pos-
set: unusquisque ex dictis superinten-
dentibus in codice pro appaltibus suae
curae commissis seorsim retinendo dili-
genter adnotet ac referat quascumque
quaestiones ac difficultates, quae super
singulis appaltibus in praefata Congre-
gatione computorum vel alibi pro tem-
pore excitatae atque discussae fuerint,
ut in successivis renovationibus contra-
ctuum eas prae oculis habeant, et ad
novam, si opus fuerit, ipsorum capi-
tulum et tabellarum emendationem et
reformationem devenire valeant, sicque
omnis aditus praecludatur litibus et con-
troversiis, quae ex pactis et conventio-
nibus vel inter se pugnantibus, vel ob-
scurioribus, nec satis clare explicitis,
non raro antehac cum gravi eiusdem
Camerae et appaltatorum incommodo,
cui omnino obviare intendimus, exur-
gere consueverunt.

Singulas-
que difficultates
subinde exortas
aduolare.

§ 12. Ad haec, quo nomina debito-
rum ipsius Camerae, nunc et pro tem-
pore existentium, citius, quam fieri
potest, discutiantur, exigantur, debita-
que pecunia ad eius depositarium gene-
ralem perveniat, superintendentes prae-
fati quolibet trimestri geminos indi-

Quolibet tri-
mestri notulam
debitorum Ca-
merae conficere
et sollicitatori-
bus tradere.

ces nomina eorum debitorum, quibus tempus solutionis vel iam cessit vel prope instat, distincte ac fideliter continentes, ipsi thesaurario generali deferant, quorum unum nobis seu Romano Pontifici pro tempore existenti exhibebit, et alterum penes se retinebit, ac, iuxta nostram seu dicti Romani Pontificis mentem et voluntatem ab eodem thesaurario generali eis explicandam et significandam, consimilem aliamve notam postmodum consignent sollicitatoribus Camerae praefatae, qui ad exactionem nominum praedictorum invigilare debebunt, atque de trimestri in trimestre de nominibus exactis rationem reddent; eorum vero, quae exigenda remanebunt, notulam tradent dicto commissario generali, ut omnibus opportunis iuris viis et rationibus debitorum huiusmodi morositas coërceatur tam in urgenda reali solutione, quam etiam in procuranda securitate eiusdem Camerae pro residuali, si quod supersit, eius credito.

Congregationi
residuorum in-
teresse.

§ 13. Et ad hoc ut singuli superintendentes ceterique Camerae ministri et officiales praefati munus suum eo diligentius exequi studeant, volumus et ordinamus, ut qualibet primâ feriâ tertiâ cuiusvis mensis absque ullâ praeviâ intimatione habeatur quatuor horis ante meridiem coram eodem thesaurario generali Congregatio quae *residuorum* nuncupetur, in qua dicti superintendentes ac ministri et officiales unâ congregati, propositis omnium debitorum nominibus, alteroque ex dictis indicibus per ipsos superintendentes allato, rite perpendant, quid solutum ac residuum fuerit, quidque quacumque ratione dispungendum, et quomodo circa residualia credita providendum veniat, ut scilicet maturiora expeditioraque inveniri ac ferri possint

1 Pessime edit. Main. legit *Iudices* pro *iudices* (R. T.).

remedia, quibus eiusdem Camerae indemnitati ac securitati optime consultum sit; qua quidem in re dictos superintendentes adeo sollicitos esse praecipimus, ut in Congregatione infra memoranda mense septembri cuiuslibet anni cogenda integrum ac generalem statum omnium totius anni residuorum creditorum ipsius Camerae referre valeant.

§ 14. Sedulo quoque curent iidem superintendentes, ut supradictus liber maior rationum, ab altero eorum per ipsum thesaurarium generalem deputando pro tempore retinendus, in quo recepta et expensa per totum annum continentur, recte conficiatur, et sub finem cuiuslibet anni ad generalem computorum aequationem et solidationem perducatur, necnon collatis invicem consiliis in id incumbant, ut generale computum, seu, ut aiunt, bilancium anni praecedentis efformetur, ex quo liquido ac strictim appareat unumquodque caput, sive partita, omnium receptorum et expensorum, cum specificâ mentione titulorum et causarum, unde prodierint, quos et quas dicti superintendentes ita prosequi ac rimari teneantur, ut de iis unâ cum toto statu oeconomico introitus et exitus tam scripturae quam capsae, et cum collatione seu comparisonem unius anni cum alio praecedente, in generali Congregatione camerali (quam citra ullam pariter intimationem quolibet anno ante serias generales, penultima nempe feriâ tertiâ mensis septembris, quatuor pariter horis ante meridiem haberi, et, ad formam et praescriptum cuiusdam ordinationis in libris decretorum ipsius Congregationis cameralis registrandae, celebrari omnino etiam volumus) universam rationem instituere ac perficere queant, quam nobis ac Romanis Pontificibus successoribus praefatis per eundem thesaurarium gene-

Librum maiorem rationum recte disponere ad hoc ut quolibet anno dati et accepti ratio institui possit.

ralem scripto protinus deferri praecipimus et mandamus, ut totam patrimonii ac aerarii pontificii administrationem explanatam ac compendiose et luculenter descriptam inspicere, et si qui fuerint excessus in annuo exitu animadvertere, cunctamque rem oeconomicam prudenti dispensatione ac aequo pondere et mensurâ moderari valeamus, dictique successores nostri valeant: in qua Congregatione praecipimus quoque integrum ac generalem statum omnium totius anni residuorum creditorum Camerae praefatae referri, geminosque illius indices¹ ipsi thesaurario generali tradi, quorum unum nobis seu dicto Pontifici exhibeat, et alterum apud se retineat, sicuti quoad alios similes indices² residuorum creditorum praefatorum quolibet trimestri faciendos supra disposuimus.

Quolibet anno Pontifici bilancium expensarum praeteritis regiminis tradere.

§ 15. Quandoquidem ex annalis administrationis computo, sicut praemittitur peracto, facile resciri poterit initio cuiusvis pontificatus, qui fuerit anteacti regiminis status oeconomicus: quamobrem, statim ac Romanus Pontifex pro tempore existens diem obierit extremum, dicti superintendentes ipsum librum maiorem omnino claudant, nihilque in eum amplius referant, ac novum pro futuro pontificatu similem librum parent ac disponent: item praefati superintendentes de totius praecedentis pontificatus oeconomia fidele conficiant computum seu bilancium, ex quo status Camerae praefatae, ac omnis in dicto pontificatu administratio, tam quoad exitum, quam quoad introitum, eorumque causas tum ordinarias tum extraordinarias, manifeste pateat; dictoque computo seu bilancio illud etiam dati et accepti tempore quo Sedes Apostolica vacave-

¹ Edit. Main. legit *Iudices* (R. T.).

² Edit. Main. legit *Iudices* (R. T.).

rit et Conclavis separatim addant; dictum vero computum seu bilancium novo Pontifici, infra duos menses a die suae creationis computandos, per eundem thesaurium generalem pariter exhibeatur, ut annuus proventus et exitus, ac denique universus Camerae praefatae status ei dilucide innotescat: unde futurum arbitramur ut pontifices noviter assumpti, superiorum temporum administratione prae oculis habitâ, necessaria et salubriora inire possint consilia, quibus apostolicum aerarium bene diligenterque regatur ac procuretur.

§ 16. Speramus itidem non modo eosdem superintendentes, verum etiam ceteros omnes et singulos ministros et officiales dictae Camerae, ad quos disposita in praesenti constitutione respective spectant, omni sedulitate atque ex animi nostri sententiâ officii sui partes expleturos, eos insuper monentes, quod, si in actuali muneris sui exercitio aliquid deprehenderint quod iuxta rerum ac temporum vicissitudines nobis vel successoribus nostris novarum legum et ordinationum seu antiquarum explicationis et declarationis causam et occasionem, pro meliori feliciorque dicti aerarii regimine, merito praebere posset, illud nobis et Romano Pontifici pro tempore existenti libere et aperte renunciare ac suggerere haud praetermittant.

Singuli Camerae officiales moneantur ad suggerendum ea Pontificibus, quae eisdem Camerae rei proficere possent.

§ 17. Denum, ut haec nostra constitutio et in eâ disposita perpetuis futuris temporibus exactius serventur, illorumque memoria e mentibus omnium et singulorum, quos quomodolibet concernunt, nunquam excidat, statuimus ut initio supradictae Congregationis generalis, mense septembris cuiuslibet anni, sicut praemittitur, habendae, eadem constitutio palam et distincte ibidem recitetur; ac primum omnium districte

Quolibet anno perquirendum, ad unumquodque muneris sui aditus fuerit.

inquiratur, num omnes et singuli praedicti iuribus suum, ac praesertim in ipsa constitutione praescripta, per totius anni, de quo pro tempore agetur, decursum, usquequaque ac rite adimpleverint.

Præsentia constitutionis observantia et firmitas.

§ 18. Decernentes, ipsas praesentes litteras et in eis contenta quaecumque, etiam ex eo quod praedicti ratiocinatores ut supra absoluti et iubilati, ac qui in officia eorundem ratiocinatorum expectativae ac futurae successionis aliasve gratias obtinuerant, ut praefertur, aliive quilibet cuiuscumque gradus, ordinis, praeeminentiae et dignitatis, ac quibusvis privilegiis et indultis suffulti, seu alias specificâ et individua mentione et expressione digni, in praemissis seu eorum aliquo ius vel interesse habentes seu habere quomodolibet praetendentes, illis non consenserint, nec ad ea vocati, citati et auditi, nec causae, propter quas praesentes emanarunt, sufficienter adductae, specificatae et iustificatae fuerint, aut ex aliâ quacumque quantumvis iustâ, legitimâ et privilegiatâ causâ, colore, praetextu et capite, etiam in corpore iuris clauso, ac etiam enormis, enormissimae et totalis laesionis, nullo unquam tempore de subreptionis vel obreptionis aut nullitatis vitio, ac etiam intentionis nostrae et interesse habentium consensûs aliove quolibet etiam quantumvis magno, formali, essentiali, ac incogitato et incogitabili defectu notari, impugnari, invalidari, infringi, limitari, retractari, rescindi, aut in controversiam vocari, seu ad viam et terminos iuris reduci, aut adversus illa apositionis oris, restitutionis in integrum, aliudve quodcumque iuris, facti vel gratiae remedium intentari vel impetrari, seu impetrato, aut etiam motu, scientiâ et potestatis plenitudine paribus concesso vel emanato, quemquam in iudicio vel extra iudicium

uti seu se iuvare ullo modo posse; sed easdem praesentes litteras, omniaque et singula in eis contenta huiusmodi, adversus quascumque impugnationes et impedimenta semper et omni tempore valida, firma et efficacia existere, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, in omnibus et per omnia, perinde ac si vocatis vocandis ac de praefatorum aliorumque omnium et singulorum ius et interesse habentium et praetendentium expresso consensu facta fuissent et emanassent, ac proinde ab omnibus et singulis, ad quos spectat et pro tempore quodcumque spectabit, inviolabiliter ac inconcusse observari et adimpleri, sicque et non aliter per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam supradictarum causarum palatii apostolici auditores, ac eiusdem S. R. E. camerarium, et alios cardinales, etiam de latere legatos, nec non vice-camerarium, thesaurarium generalem, praesidentes clericos, commissarium, ceterosque dictae Camerae et Sedis Apostolicae officiales et ministros, aliosve quoslibet quacumque praeeminentiâ et potestate fungentes et quodcumque functuros, sublatâ eis et eorum cuilibet quavis aliter iudicandi et interpretandi facultate et auctoritate, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

§ 19. Quocirca eidem venerabili fratri nostro Annibali Albano episcopo Sabiniensi cardinali S. Clementis, moderno, ac pro tempore existenti, nostro ac ipsius S. R. E. camerario, motu simili per apostolica scripta mandamus, quatenus praesentes litteras et in eis contenta tam in dictâ Camera quam extra eam, ubi, quando et quoties opus fuerit, solemniter publicari, ac per omnes, quos illa

Camerarius S. R. E. eiusdem perpetuus exequutor.

concernunt, exacte observari, ac debitae executioni demandari curet et faciat, ac universos praedictos ad illorum observationem cum effectu cogat et compellat, contradictores quoslibet ac inobedientes et rebelles, seu non parentes, auctoritate nostrâ; appellatione postpositâ, compescendo; nobis ulterius ac eidem Pontifici pro tempore existenti facultatem expresse reservantes in eiusmodi delinquentes, ac etiam eos qui in praemissis peragendis negligentes segnioresve fuerint, seu alias quoquo modo defecerint, pro modo culpa ac negligentiae, nostro dictique Pontificis arbitrio animadvertendi.

Obstantibus
derogat.

§ 20. Non obstantibus praemissis, et, quatenus opus sit, de iure quaesito non tollendo, aliisque nostris et Cancellariae Apostolicae regulis, necnon felicitis recordationis Pii PP. IV praedecessoris nostri, quae incipit *Cum inter ceteras*, super reformatione tribunalis Camerae praedictae eiusque officialium editâ (in iis quae praesentibus litteris nostris adversantur, salvâ ac firmâ remanente in ceteris omnibus illius dispositione), et alterâ eiusdem Pii praedecessoris de gratiis quaecumque interesse Camerae praefatae concernentibus in ipsâ Camera intra certum inibi expressum tempus praesentandis et registrandis, itaut praesentes litteras ibidem praesentari et registrari nunquam necesse sit, aliisque constitutionibus et ordinationibus apostolicis, dictaeque Camerae et quibusvis aliis, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel aliâ qualibet firmitate roboratis, statutis, usibus, stylis et consuetudinibus, etiam immemorabilibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis etiam praedictis et aliis personis, etiam specialem mentionem requirentibus, sub quibuscumque verborum tenoribus et formis, ac cum quibusvis

etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, efficacissimis et insolis clausulis, irritantibusque et aliis decretis, etiam motu scientiâ et potestatis plenitudine similibus, et aliis quomodolibet, etiam concistorialiter, in contrarium praemissorum concessis, confirmatis, ac quantiscumque vicibus approbatis et innovatis, ac illis etiam quae in schedulis nostris praeinsertis volumus non obstat; quibus omnibus et singulis, etiamsi pro illorum sufficiente derogatione de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa et individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quaevis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, illorum omnium et singulorum tenores, formas, causas et occasiones, praesentibus pro plene et sufficienter et exactissime expressis, insertis, servatis, specificatis respective habentes, illis aliâ in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse ac plenissime pariter et amplissime derogamus, et derogatum esse volumus et mandamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

§ 21. Ceterum volumus quoque ut praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in dignitate ecclesiastica constitutae munitis, eadem prorsus fides in iudicio et extra illud habeatur, quae haberetur ipsis praesentibus si forent exhibitae vel ostensae.

Transumptis
credi iubet.

§ 22. Nulli ergo omnino hominum liceat paginam hanc nostrorum approbationis, confirmationis, mandatorum, praeceptorum, decretorum, ordinationum, voluntatis et derogationis infringere, vel ei ausu temerario contraire; si

Prohibitio eam
infringendi.

quis autem hoc attentare praesumpserit, indignationem omnipotentis Dei ac beatorum Petri et Pauli apostolorum eius se noverit incursurum.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, anno Incarnationis dominicae MDCXXXV, pridie idus iulii, pontificatus nostri anno v¹.

Dat. die 14 iulii 1735, pontif. anno v.

A. card. pro-datarius.

F. card. Oly.

Vina de Curia:

I. archiep. A.

Loro † plumbi.

I. B. EUGENIUS.

Registrata in Secretaria Brevium.

Anno a nativitate Domini nostri Iesu Christi MDCXXXV, die vero xv mensis iulii, indictione xiii, pontificatus sanctissimi in Christo patris et domini nostri domini Clementis divini providentia Papae XII anno v, supradicta constitutio affixa et publicata fuit ad valvas ecclesiae Lateranensis, basilicae Principis Apostolorum, Cancellariae Apostolicae, Curiae generalis in Monte Citorio, et in acie Campitorae, ac aliis locis solitis et consuetis Urbis, per me Antonium Pellicia apostolicum cursorem.

NICOLAUS CAPPELLI magister curs.

CLX.

Bona ecclesiarum, iamdiu ab haereticis occupata in Palatinatu inferiore et ducatu Neoburgensi, iis condonantur possessoribus, qui ad fidem catholicam convertuntur¹.

Clemens Papa XII,

ad perpetuam rei memoriam.

Prooemium.

Inter multiplices gravissimasque apostolatus curas, quibus assidue detinemur, in eam potissimum incumbimus, ut, extirpatis haeresum veptibus, catholica fides ubique gentium floreat ac colatur,

¹ A. creatione anno VI.

² Non absimilem conceptionem pro ducatu Saxoniae vid. const. LXVII, tom. praec. p. 414. (R.T.)

ovesque diabolica fraude seductae et per devia misere errantes, agnita tandem veritate, ad gregem dominicum reducantur; piisque orthodoxorum principum de Ecclesia Dei optime meritorum in idipsum laudabiliter tendentibus votis, quantum cum Domino possumus, libentissime annuimus.

§ 1. Cum itaque, sicut dilectus filius nobilis vir Carolus, comes palatinus Rheni, sacri Romani Imperii princeps, elector Heydelbergensis, nobis nuper exponi fecit, tametsi diversa bona ecclesiastica in Palatinatu inferiore ac ducatu Neoburgensi, temporali suae ditioni subiectis, consistentia, quae olim, dum haeresis in illis finitimisque regionibus cuncta misceret ac turbaret, per acatholicos occupata fuerant, progressu temporis, benedicente Domino, recuperata seu alias vindicata fuerint, dictique Caroli principis electoris maiores seu progenitores duces Neoburgenses postmodum a Sede Apostolica ac praesertim felicitis recordationis Alexandro PP. VII praedecessore nostro de aliquibus bonis sic recuperatis quasdam pias fundationes et applicationes aliasque dispositiones fieri seu approbari, necnon tam illi quam etiam ipse Carolus princeps elector nonnullorum aliorum bonorum praefactorum administrationem, quae etiam ad praesens durat, sibi per Sedem praedictam respective concedi ac tribui obtinuerint; nihilominus plura ex bonis ecclesiasticis supradictis adhuc extent, quae etiamnum a dictis acatholicis detinentur ac si sua et propria forent, eorumdem vero acatholicorum plerisque a reditu ad gremium sanctae matris Ecclesiae deterreat ac moretur¹ metus ne bona praedicta, quibus nunc potiuntur, post sui reditum huiusmodi dimittere cogantur, utpote quibus destituti,

Carolus comes Palatinus, praevideat plerosque acatholicos, qui occupata iamdiu ecclesiarum bona detinent, a catholica fide suscipienda exterreri posse, si ad ea restituenda compellerentur,

¹ Edit. Main. legit *moretur* (R. T.)

vitae humanae subsidiis ac commodis, quibus diu assueverunt, exuerentur, eorumque filii et familiae, congruâ ac etiam quandoque necessaria sustentatione carentes, ad inopiam duramque egestatem redigerentur: idem Carolus princeps elector, animadvertens quod, si acatholicis praefatis, postquam ad religionem catholicam conversi fuerint, bona sic occupata retinere liceret, sicut non ita pridem similium honorum occupatoribus in ducatu Saxoniae a nobis concessum fuit, merito sperari posset, fore ut acatholici praedicti, tali sublato metu seu remoto, ad orthodoxae fidei et Ecclesiae unitatem, abiectis erroribus, facilius revertentur, nobis propterea humiliter supplicari fecit, quatenus in praemissis* oportune providere et ut infra indulgere de benignitate apostolicâ dignaremur.

§ 2. Nos igitur, dicti Caroli principis electoris in Deum pietatem et catholicae religionis tuendae et propagandae studium plurimum in Domino commendantes, eiusque desiderio hac in re, quantum nobis ex alto conceditur, obsecundare cupientes, simulque considerantes, salutem animarum, pretioso domini nostri Iesu Christi sanguine redemptarum, terrenarum rerum ceterisque humanis rationibus praecellere, eiusmodi supplicationibus inclinati, firmis salisque remanentibus quibuscumque foundationibus, applicationibus, aliisque dispositionibus de bonis sic recuperatis a Sede Apostolicâ ac praesertim a memorato Alexandro praedecessore factis seu approbatis, necnon administratione aliorum honorum huiusmodi eidem Carolo principi electori concessâ et attributâ, ut praefertur, quibus per praesentes nullatenus derogare aut quicquam de super immutare vel innovare intendimus, omnia et singula bona ecclesiastica, cuiusvis qualitatis et valoris, in

Palatinatu inferiore et ducatu Neoburgensi huiusmodi consistentia, quae praetitorum temporum calamitate occupata, nec hucusque recuperata et vindicata fuerunt, sed a dictis acatholicis adhuc uti sua propria detinentur, sicut praemittitur, modernis eorum possessoribus seu detentoribus, qui ad catholicam religionem deinceps redierint, eorumque successoribus quibuscumque itidem catholicis in sinceritate orthodoxae fidei, et in sinceritate apostolicae potestatis plenitudine harum serie ex specialis dono gratiae remittimus, condonamus, cedimus et relaxamus, dictisque possessoribus seu detentoribus, eorumque successoribus, ut ipsi de bonis praefatis tam inter vivos quam ex causâ mortis, aut aliâs quomodolibet libere disponere possint, plenam tenore praesentium tribuimus facultatem, neque illos pro parte dictae Sedis Apostolicae, ecclesiarum, monasteriorum et locorum piorum aut personarum ecclesiasticarum ad quas et quae bona praedicta olim pertinebant, ratione et occasione praemissorum de super molestari, inquietari aut perturbari posse statuimus et decernimus.

§ 3. Non obstantibus nostrâ et Cancellariae Apostolicae regulâ de iure quaesito non tollendo, aliisque apostolicis, ac in universalibus provincialibusque et synodalibus conciliis editis, generalibus vel specialibus, constitutionibus et ordinationibus, necnon ecclesiarum, monasteriorum et locorum piorum huiusmodi foundationibus, ac quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus et insolitis clausulis, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet con-

Obstantibus derogat.

Eis illa concedi possit a Pontifice.

Qui eadem praesentibus possessoribus remittit, salvis iam actionibus recuperatis, et ex quibus pias foundationes, etc., factae sunt.

cessis, confirmatis et innovatis; ceterisque contrariis quibuscumque.

Transumptio-
rum sdec.

§ 4. Volumus autem ut eorumdem praesentium litterarum exemplis, etc.¹

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die XIII^a iulii MDCCXXXV, pontificatus nostri anno V^o.

Dat. die 13 iulii 1735, pontif. anno V.

CLXI.

Declaratur quod ministro generali Ordinis sancti Francisci Capuccinorum et secundariis superioribus ab eo dependentibus tamquam veris et legitimis filiis eiusdem sancti Francisci conveniat et competat in quocumque loco, civitate, provinciâ et regno, etiam ubi alii Tertiarii eiusdem Ordinis reperiuntur, erigere, instituere et fundare confraternitates.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Prooemium.

Apostolicae servitutis officium, quod inscrutabilis sapientiae atque clementiae Dei altitudo humilitati nostrae, meritis licet et viribus longe impari, committere dignata est, exigit, ut ad ea, quae pro christifidelium sub religiosorum virorum in vineâ Domini strenue allaborantium directione in rebus ad pietatis et devotionis opera gratiasque spirituales pertinentibus conducibilia esse noscuntur, libenter intendamus, sicut, rerum, locorum, temporum et personarum qualitate mature perpensâ, salubriter in Domino expedire arbitramur.

Declaratio de
qua in rubricâ.

§ 1. Supplicationibus itaque dilecti filii Bonaventurae a Ferrariâ ministri generalis Ordinis fratrum Minorum sancti

Francisci Capuccinorum nuncupatorum, ac etiam motu proprio et ex certâ scientiâ ac maturâ deliberatione nostrâ, deque apostolicae potestatis plenitudine, ut sibi et pro tempore existentibus ministro generali et secundariis superioribus ab eo dependentibus, tamquam veris et legitimis filiis eiusdem S. Francisci, conveniat et competat in quocumque loco, civitate, provinciâ et regno, etiam ubi alii Tertiarii eiusdem Ordinis iam reperiuntur, erigere, instituere et fundare praefatum Tertium Ordinem pro quibuscumque piis et devotis personis saecularibus utriusque sexus, atque huiusmodi Tertii Ordinis professoribus scapulare sive habitum cum cingulo¹ conferre, in rebus spiritualibus dirigere, in tertiâ regulâ memorati S. Francisci observandâ privatim et publice eos edocere et instruere, utque ipsi Tertiarii a Capuccinis recepti omnino gaudere atque uti² possint et debeant omnibus et singulis privilegiis, indulgentiis, gratiis et favoribus ac praerogativis per Sedem Apostolicam Ordini Tertiariorum a quocumque ministro generali dependentium sub suo capite, qui unus est idem S. Franciscus, aliâs concessis vel imposterum concedendis, tenore praesentium declaramus et statuimus.

§ 2. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas etc.³

Praesentium
litterarum Ur-
mitas.

§ 3. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon quatenus opus sit, praefatorum Ordinum, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirma-

Contrariorum
derogatio.

¹ Reliqua ut supra pag. 28 a (R. T.).

² Fern. 16, alioquin foret praemitt. praec. (R. T.).

³ A creatione anno VI (R. T.).

⁴ Praeposit. pro nos addimus (R. T.).

¹ Ed. Main. legit *singulo* pro *cingulo* (R. T.).

² Ed. Main. legit *ut* pro *uti* (R. T.).

³ Reliqua ut supra pag. 42 b (R. T.).

lis et innovatis, quibus omnibus et singulis etc.

Transcriptis
danda fidei.

¶ 4. Volumus autem ut earundem praesentium litterarum transcriptis, etc.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub anno Piscatoris, die xxiii iulii mdcclxxxv, pontificatus nostri anno vi.

Dat. die 23 iulii 1736, pontif. anno vi.

F. card. OLIVERIUS.

CLXII.

Ecclesia Ferrariensis, antea episcopalis, in archiepiscopalem erigitur.

Clemens episcopus,

servus servorum Dei,

ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Paterna pontifici nobis, etsi insufficientibus, ex alto commissi muneris assiduo cor nostrum pulsant sollicitudo, ut, universis orbis terrarum ecclesiis, aeterna illius qui humanae debilitati dat vires ac disponente bonitate, praesidentibus ecclesiis ipsas, praesertim cathedralibus insignes, et quibus vigili laudabilium suorum administratorum studium statim auxit, decorem et ornatum debitis praerogativarum et privilegiorum decoremus, ut in eis, sic decoratis, divinis cultus, ad maiorem omnipotentis Dei gloriam augendamque fideliū erga eas devotionem, elucescat maiestas, necnon studii huiusmodi monumentum perpetuo eorumdem administratorum grandescat nomini, nostrorumque apostolici

1. Reliqua ut supra pag. 40 b (A. T.).

2. Reliqua ut supra pag. 58 b (A. T.).

3. Constitutionem hanc ad autographi, quod in archivio curiae archiepiscopalis Ferrariensis servatur, amissum redegitur, nobis benigne favente Sm.^{mo} ac Rev.^{mo} D. card. ALOVISO VANNICELLI-CASANI archiepiscopo Ferrariensi, cui nos ex animo gratos publice prostermur (A. T.).

4. Ed. Main. legit in pro et (A. T.).

5. Ed. M. l. studiis pro studi (A. T.).

6. Ed. M. l. effulgeat pro grandescat (A. T.).

muneris et desideriorum, gratia sic benedicente Domini, vigeat implementum.

¶ 1. Sane, cum insignis ecclesia Ferrariensis, quam venerabilis frater noster Thomas episcopus Praenestinus S. R. E. cardinalis Itutus nuncupatus etiam una cum sua ecclesia Praenestina in administrationem ad sui vitam ex concessione et dispensatione apostolicis laudabiliter ad praesens retinet, ab antiquissimo tempore erecta fundataque, divisque Georgio et Maurelio dicata, in eius aedificiis satis ampla, satisque in eorumdem aedificiorum eleganti structura illustris existat; et in ea septem, archipresbyteratus videlicet post pontificalem maior, praepositura, archidiaconatus, primiceriatus, custodia, thesaurarius et decanatus, dignitates, necnon quatuordecim canonicatus, totidemque, inter quas theologiae et poenitentiarum nuncupatae, praebendae, ac octo perpetua simplicia personalemque residentiam, requirunt beneficia ecclesiastica, mansionarius nuncupata, perpetuo erecta et instituta, annuisque redditibus satis congrue dotata reperiantur; eidemque Ferrariensi ecclesiae, quae caelesti quoque locupletique sacrarum reliquiarum inibi decenter asservatarum thesauro ditata sacrisque suppellectilibus abunde instructa dignoscitur, nedum copiosus dignitatum et canonicorum ac beneficiariorum dignitates ac canonicatus et praebendas necnon beneficia praefata obtinentium coetus, verum etiam quinquaginta clerici seu presbyteri capellani, una cum beneficiatis praefatis unum corpus unumque collegium a dictis canonicis distinctum separatumque constituentes, decorum laudabilemque in divinis exhibeant famulatum; ipsaque ecclesia Ferrariensis usque ab eius felici ortu naturalem

Ferrariensis
ecclesiae status
ac dignitas.

1 Ed. Main. legit Domino pro Domini (A. T.).

2 Edit. Main. legit nuncupata (A. T.).

Illius exemptionis, ac immediatae subiectionis Sedi Apostolicae.

exemptionem immediatamque suam Romano Pontifici pro tempore existenti Sedi Apostolicae sortita fuerit, subiectionem; exemptioneque ac immediata subiectione huiusmodi semper magis magisque, et postquam, omnis vetustiorum quamplurium apostolicarum constitutionum¹ id testantium documentis, felix recordationis Innocentius Papa II, etiam praedecessor noster, per suam in Concilio Lateranensi, sub datum x kalendas maii, anno Domini mcccix, pontificatus sui anno x, desuper editam et a tunc existentium² S. R. E. cardinalium collegio subscriptam constitutionem, quae incipit *Ad hoc*, ecclesiam Ferrariensem, cum tota parochia sua, in iure, dominio ac privilegio S. R. E. ac B. Petri, cuius est patrimonium, conservandam, et sub Romani Pontificis ditione, ordinatione atque consecratione fore et esse, apostolica eius auctoritate statuerat³, ac huiusmodi exemptio et immediata subiectio a recolendae memoriae Caelestino II, Lucio itidem II, et Gregorio VIII, etiam Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris, praefatique Innocentii successoribus, per alias eorum respective desuper emanatas et a tunc pariter existentibus praefatae S. R. E. cardinalibus similiter respective subscriptas litteras approbatae, et in eis praefata ecclesia Ferrariensis manutenta semper extiterat, et subinde ab eiusdem recordationis Clemente III, Caelestino itidem III, Innocentio IV, a quo privilegia Innocentii, Caelestini, Lucii, Gregorii, Clementis et Innocentii⁴ praedecessorum praefatorum, et praesertim

ut ecclesia Ferrariensis esset semper sub Romani Pontificis et illius successorum ordinatione atque consecratione, approbata et confirmata fuerant, ac deinde validius ab Eugenio IV per diversas eius litteras apostolicas in formam Brevis respective desuper expeditas, quae, sicut accepimus, originaliter in archivio episcopali ecclesiae Ferrariensis asservantur, necnon a pia memoriae Nicolao V sibi concessis⁵ gavisa fuerit; eisque sic gaudens, a reliquis pro tempore existentibus, et praesertim ab Alexandro VIII, Innocentio XII et Clemente XI pariter Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris, in eorum respective litteris apostolicis super eiusdem ecclesiae Ferrariensis pro tempore facta provisione expeditis et debita executioni demandatis, Sedi praefatae immediate subiecta, prout semper extiterat, semper enunciata fuerit; et nuper, videlicet de anno⁶ Domini mcccxy, orta super eiusdem ecclesiae Ferrariensis Sedi praefatae immediata subiectione huiusmodi quaestionis materia, eaque ad Concilium Romanum sub eodem⁷ Benedicto praedecessore tunc habitum delata, ab eodem Concilio, cui et nos cardinalatus honore fungentes interfuimus, emanaverit⁸ sententia tenoris sequentis, videlicet:

« Christi nomine invocato, pro tribunali sedentes, et solum Deum praes oculis habentes, per hanc nostram definitivam sententiam, quam de iurisperitorum consilio in his scriptis ferimus in causa et causis, quae primo et in prima seu alia veriori coram nobis versae⁹ fuerunt et vertuntur instantia, vigore specialis commissionis motu

Huiusmodi immediata subiectione Romanae Ecclesiae, a ceterisque ecclesiis exemptio, declarata in Concilio Romano mcccxy.

1 Add. exemptioneque ex aut. Ferr. (R. T.).

2 Edit. Main. legit concessionum (R. T.).

3 Ed. M. addit eiusdem (R. T.).

4 Edit. Main. legit conservatione (R. T.).

5 Edit. Main. legit statueret (R. T.).

6 Videtur legend. Caelestini, nempe III (R. T.).

1 Nempe exemptione ac immediata subiectione praefatis (R. T.).

2 Ed. Main. addit eiusdem (R. T.).

3 Vox eodem praeter rem usque videtur (R. T.).

4 Edit. Main. legit emanata fuerit (R. T.).

5 Edit. Main. legit versa pro versae (R. T.).

proprio et non ad ullius ¹ partis instantiam et de potestatis plenitudine a sanctissimo domino nostro Benedicto Papa XIII signatae ac directae sacro praesenti Concilio Romano cum facultate eligendi et deputandi nonnullos S. R. E. cardinales, archiepiscopos, episcopos, aliosque patres eiusdem Concilii in sacra theologia magistros et respective in decretis doctores, necnon etiam cum facultate procedendi sine strepitu et figura iudicii, et sola facti veritate inspecta, omni et quocumque recursum et appellatione remotis, inter illustrissimum et reverendissimum archiepiscopum Ravennatensem et eminentissimum et reverendissimum episcopum Ferrariensem dictamque civitatem ² et cives super praetensa suffraganeitate ecclesiae Ferrariensis praefato archiepiscopo Ravennatensi, rebusque aliis in actis ~~causae~~ et causarum huiusmodi latius deductis, etc., dicimus, pronunciamus, decernimus, declaramus, ac definitive sententiamus, vigore resolutionis captae in congregatione particulari habita die xxi maii currentis, constare de immediata subiectione ecclesiae Ferrariensis sanctae Sedi Apostolicae, neque illam esse suffraganeam ulli metropolitano, proindeque nullum ius metropoliticum competiisse neque competere archiepiscopo Ravennatensi neque ulli alteri super dicta ecclesia Ferrariensi; sed illam fuisse et esse liberam, exemptam et immediate subiectam sanctae Sedi Apostolicae, prout talem esse pronunciamus, declaramus et sententiamus, facta etiam prius relatione dictae resolutionis praecedenter captae sanctissimo domino nostro et omnibus reverendissimis patribus in Concilio Romano interessentibus, qui omnes, denegando novam audientiam ab archiepiscopo Ravennatensi in publico Concilio petitam die xxii maii, resolutionem ut supra captam in dicta sacra congregatione particulari, tamquam iuri consonam, in congregatione praesynodali ³ habita die xxv eiusdem mensis maii approbarunt ⁴ et publicandam

atque exequendam esse censuerunt: ideoque super praetenso iure metropolitico adversus dictam ecclesiam Ferrariensem tam archiepiscopo Ravennatensi quam cuicumque alteri per hanc nostram definitivam sententiam perpetuum silentium imponendum fore et esse duximus, prout imponimus, et pro imposito haberi volumus et mandamus: et ita dicimus, pronunciamus, decernimus, declaramus, et definitive sententiamus, non solum praedicto, sed et ¹ omni alio meliori modo;

§ 3. Civitas vero nostra Ferrariensis praefata, illustri vetustate, sitis amplitudine, valido moenium munimine, fertili soli amoenitate, copioso tum generis nobilitate pollentium, tum scientiarum armorumque virtute praedictorum civium numero, studio generali, ex quo quamplures viri litterarum scientiarumque liberalium insigni experientia celebres prodierunt, et prodeunt in dies, nec non tribunali seu causarum audientia, Rotam nuncupata, cui iuris utriusque doctores iustitiae et probitatis asseclae praesunt, Concilioque in ea a praefato Eugenio IV habito, et deinde, post quindecim eiusdem Concilii sessiones inibi habitas, Florentiam translato, prout vetera referunt monumenta, centum ecclesiarum in eius circuitu existentium, annuis redditibus divinoque servitio locupletum, quamplurimum virorum et sacrarum virginum monasteriorum, et in eius satis ampla dioecesi centum millium animarum parochianorum inter centum et ultra eiusdem dioecesis parochiales ecclesias divisarum numero referta, una ex insignioribus totius Italiae civitatibus existat, illiusque in temporalibus gubernio unus ex eiusdem S. R. E. cardinalibus cum facultate nostri et pro tempore existentis Romani Pontificis de latere legati praesideat; ac insuper praefatus Thomas cardinalis et episcopus Praenestinus, ob

Populi frequentia, aliaque praeclarae dotes civitatis Ferrariensis.

¹ Male ed. Main. legit *illius* pro *ullius* (R. T.).

² Edit. Main. legit *civitates* (R. T.).

³ Edit. Main. legit. *prosynodali* (R. T.).

⁴ Edit. Main. legit *approbandam* (R. T.).

¹ Coniunct. *et nos addimus ex aut. Ferr.* (R. T.).

eximium, quem semper, et ab eo tempore quo dictae ecclesiae Ferrariensis ex concessione et dispensatione similibus praesul exstitit, erga dictam ecclesiam Ferrariensem gessit et adhuc, prout providum utilemque decet administratorem, corde gerit dilectionis affectum, eiusdem ecclesiae Ferrariensis insignitatem augere concupiscens, attento¹ quod bonae memoriae Thaddaeus Aloysius eiusdem S. R. E. dum viveret cardinalis de Verme² nuncupatus, dictae ecclesiae Ferrariensis etiam dum viveret ultimus ex concessione et dispensatione paribus praesul, in veteri dictae ecclesiae situ nova eiusdem ecclesiae inchoaverat aedificia, unâ ex tribus tertiis eorundem novorum edificiorum partibus dumtaxat completâ, nova aedificia huiusmodi eleganter expleverit, quin et veteri domo episcopali a fundamentis delectâ, novum, decorum amplumque palatium sibi suisque successoribus excitaverit, et, attento quod³ seminarium puerorum⁴ ecclesiasticum Ferrariense, opus ab oecumenicâ Tridentinâ Synodo in qualibet dioecesi apprimè concupitum, in eius situ perangustum exiguumque puerorum numero reperiebatur, illud ad nobiliores amplioresque sedes⁵ transtulerit, illiusque viginti ad septuaginta, et ex eis duodecim ex propriis eiusdem Thomae cardinalis et episcopi Praenestini bonis perpetuo enutriendorum puerorum numerum amplificaverit⁶, aliaque aedificia ad Ferrariensis episcopi pro tempore existentis⁷ coloniarum commodum ruri construxerit.

§ 4. Nos igitur, ecclesiam Ferrariensem praefatam, tot tantisque pretiosis tam suorum quam praefati Thomae cardinalis et episcopi Praenestini meritorum circumamictam varietatibus, ad sublime sibi debitae archiepiscopalis dignitatis fastigium adducere, illamque unâ cum ceteris archiepiscopalibus ecclesiis supra militantis Ecclesiae montem ponere, ac gratas amoris illius, quo bonae memoriae Nerius praefatae S. R. E. dum viveret cardinalis Corsinus nuncupatus, patruus noster, dum in civitate Ferrariensi praefatâ legati de latere huiusmodi munere fungeretur, erga eandem civitatem Ferrariensem tenebatur, quique¹ amor nostrâ quoque altâ mente manens cor nostrum semper tetigit et tangit, ad praesens vices gerere, laudabilibusque praefati Thomae cardinalis et episcopi Praenestini votis benigne annuere, ac specialem sibi gratiam facere volentes, necnon dictam Innocentii II constitutionem, aliorumque omnium Romanorum Pontificum praedecessorum praefatorum omnes et singulas respective litteras praefatas, earumque² singulos tenores, praesentibus pro expressis insertisque habentes, post habitam a nobis super praemissis omnibus maturam cum venerabilibus fratribus nostris praefatae S. R. E. cardinalibus deliberationem, de fratribus eorundem consilio, motu proprio, non ad alicuius super hoc nobis oblatae petitionis instantiam, sed ex certâ scientiâ merâque liberalitate³ nostris, deque apostolicae potestatis plenitudine, sententiam a Concilio Romano ut praefatur emanatam, ac praesentibus nostris litteris insertam, apostolicâ auctoritate perpetuò approbamus et confirmamus, ei-

1 Edit. Main. legit *attenta* (R. T.).

2 Edit. Main. legit *de Verona* (R. T.).

3 Edit. Main. legit *quo pro quod* (R. T.).

4 Vocem *puerorum* add. ex aut. Ferr. (n. r.).

5 Edit. Main. legit *aedes pro sedes* (R. T.).

6 Edit. Main. legit *ampliaverit* (R. T.).

7 Ed. Main. hic interserit coniunct. *et in T.*

1 Edit. Main. legit *qui pro quique* (R. T.).

2 Edit. Main. legit *eorumque* (R. T.).

3 Ed. M. leg. *maturaque deliberatione* (R. T.).

que apostolicae nostrae firmitatis robur adiicimus, omnesque et singulos, tam iuris quam facti, si qui desuper quomodolibet intervenerint, defectus eadem apostolicâ auctoritate supplemus, ecclesiamque et sedem episcopalem Ferrariensem in archiepiscopalem ecclesiam, necnon archiepiscopalis praesidis sedem pro uno deinceps archiepiscopo, qui pallii et crucis usum aliorum archiepiscoporum more habeat, omnibusque aliis insigniis archiepiscopalibus, necnon privilegiis, honoribus et praerogativis ceteris archiepiscopis debitis et concessis uti, frui, potiri et gaudere libere et licite possit et valeat, apostolicâ auctoritate praefatâ perpetuò erigimus et instituimus, eamque nomine, titulo et honore archiepiscopali decoramus, ipsiusque ecclesiae Ferrariensis pro tempore existentem praesulem archiepiscopum declaramus; dictoque Thomae cardinali et episcopo Praenestino ipsiusque ecclesiae Ferrariensis administratori, illiusque pro tempore existenti praesuli, ut ipsi¹ ad nullum provinciale praeterquam Romanum Concilium evocari possit et valeat, ita quod nonnisi ad Romanum Concilium huiusmodi accedere teneatur, eadem apostolicâ auctoritate, cum hoc tamen quod idem Thomas cardinalis et episcopus Praenestinus, absque aliâ sibi de ecclesiâ Ferrariensi praefatâ in administrationem de novo² faciendâ concessione, in eiusdem Ferrariensis ecclesiae administratorem praefectus esse intelligatur et existat, concedimus et indulgemus; dictoque Thomae cardinali et episcopo Praenestino, ut ipse, etiamsi dictae ecclesiae Ferrariensis administrator existat, nihilominus, ac si illi vere praecesset, pallium archiepiscopale ratione dictae ecclesiae

Ferrariensis a nobis petere, illoque libere uti, crucemque deferre libere et licite valeat, licentiam desuper impartimur et facultatem.

§ 5. Praesentes quoque litteras et in eis contenta quaecumque nullo unquam tempore, etiam ex eo quod causae, propter quas haec omnia facta fuerunt, examinatae, verificatae et approbatae, et quicumque in eis interesse habentes ad id vocati non fuerint, nec praemissis consenserint, sive aliâs ex quibuscumque causis legitimis et iuridicis, de subreptionis vel obreptionis aut nullitatis vitio seu intentionis nostrae vel quopiam alio defectu notari, impugnari, retractari, in ius vel controversiam revocari, ad terminos iuris reduci, vel adversus illa quodcumque iuris, facti vel gratiae remedium, etiam apositionis oris, impetrari posse, nec sub quibusvis similibus vel dissimilibus gratiarum revocationibus, suspensionibus, limitationibus, aut aliis contrariis dispositionibus per nos seu Romanos Pontifices successores nostros, sub quibusvis verborum expressionibus et formis, etiam motu, scientiâ et potestatis plenitudine similibus pro tempore factis, comprehendendi, sed, tamquam pro augmento divini cultus concessa, minime comprehendendi, sed semper ab illis excipi, et, quoties illae emanabunt, toties in pristinum et eum in quo antea quomodolibet erant statum restituta, reposita et plenarie reintegrata, ac de novo etiam sub quacumque posteriori datâ per dictum Thomam cardinalem et episcopum Praenestinum et pro tempore existentem ecclesiae Ferrariensis archiepiscopum quandocumque eligendâ concessa fore et esse, suosque plenarios et integros effectus sortiri debere, nec quemquam, quatenus opus sit, ad easdem praesentes in Camerâ nostrâ Apostolicâ, iuxta constitutionem reco-

Praesentes
litterae nullo
unquam notan-
dae vitio.

¹ Ex seqq. legendum, ipse (R. T.).

² Edit. Mûn. habet de nova (R. T.).

lendae memoriae Pii Papae IV pariter praedecessoris nostri desuper editam, aut aliàs quaecumque praesentandum, insinuandum et registrandum teneri, neque illas propterea irritas, sed omnino valere et suffragari, perinde ac si praefati Pii IV praedecessoris constitutio huiusmodi¹ minime emanasset², sicque per quoscumque iudices ordinarios vel³ delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac praefatae S. R. E. cardinales, etiam de latere legatos, vicelegatos, dictae Sedis nuncios, sublatà eis et eorum cuilibet quavis⁴ aliter iudicandi et interpretandi facultate et auctoritate, in quavis causà et instantià iudicari et definiri debere, et si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari, irritum et inane decernimus.

Contrariorum
derogatio.

§ 6. Non obstantibus, quatenus opus sit, nostrà et Cancellariae Apostolicae regulà de iure quaesito non tollendo, necnon eiusdem recordationis Clementis PP. III, ac praefati Caelestini III, necnon Innocentii III ac Honorii quoque III, Romanorum Pontificum etiam praedecessorum nostrorum, super auctoritate et usu pallii editis, aliisque constitutionibus⁵ apostolicis, eiusdemque ecclesiae Ferrariensis, etiam iuramento, confirmatione apostolicà, vel quavis firmitate alià roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis, eidem ecclesiae Ferrariensi, illiusque praesulibus et administratoribus, necnon dilectis filiis illius capitulo aliisque personis, sub quibuscumque tenoribus et formis, ac cum quibusvis etiam derogatoriis

derogatoriis, aliisque efficacioribus et insolitis clausulis, necnon irritantibus et aliis decretis, etiam motu pari et consistorialiter, aut aliàs quomodolibet etiam pluries concessis, approbatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, etiamsi pro illorum sufficienti derogatione de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica et individua mentio seu quaevis alia expressio habenda foret, tenores huiusmodi, ac si de verbo ad verbum, nihil penitus omisso et formà in illis traditâ observatâ, inserti forent, praesentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliàs in suo robore permansuris, hac vice dumtaxat, latissime et plenissime ac specialiter et expresse motu simili⁶ derogamus; ceterisque⁷ contrariis quibuscumque.

§ 7. Volumus autem earundem⁸ praesentium transumptis, etiam impressis, manu notarii publici subscriptis, et sigillo alicuius personae in dignitate ecclesiasticà constitutae munitis, eadem prorsus fides in iudicio et extra illud adhibeatur, quae eisdem praesentibus adhiberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Vides transumptum.

§ 8. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrae approbationis, confirmationis, roboris adiectionis, defectuum suppletionis, erectionis, institutionis, declarationis, concessionis, indulti, decreti, derogationis, et voluntatis infringere, vel ei⁹ ausu temerario contraire; si quis autem hoc attentare praesumpserit, indignationem omnipotentis Dei ac beatorum Petri et Pauli apostolorum eius se noverit¹⁰ incursum.

Temerarij et indigni.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, anno Incarnationis dominicae

¹ Ed. M. addit *aliaque contraria* (R. T.).

² Ed. M. legit *emanassent* (R. T.).

³ Ed. M. legit *et pro vel* (R. T.).

⁴ Ed. M. legit *quatenus pro quavis* (R. T.).

⁵ Ed. M. addit *et ordinationibus* (R. T.).

⁶ Edit. Main. legit *pari* (R. T.).

⁷ Vocem *ceterisque* add. ex aut. Ferr. (R. T.).

⁸ Ed. M. legit *quod eorundem* (R. T.).

⁹ Vox *et* deest in edit. Main. (R. T.).

¹⁰ Male ed. M. leg. *noverit pro noverit* (R. T.).

MDCCXXXV, vi kalendas augusti, pontificalus nostri anno vi.

Dat. die 27 iulii 1735, pontif. anno vi.

F. card. OLIVERIUS.

CLXIII.

Confirmatio cuiusdam paragraphi constitutionis Benedicti PP. XIII circa vacationem abbatiarum obtinendarum in Congregatione regularium S. Salvatoris Ordinis sancti Augustini.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Benedictus XIII decrevit digniores ad abbatias huius Congregationis esse assumendos, quamvis monasterii eiusdem vel provinciae non sint illi.

§ 1: Exponi nobis nuper fecit dilectus filius Ioannes Albertus de Grandis abbas generalis Congregationis S. Salvatoris Ordinis S. Augustini, quod per constitutionem felicitis recordationis Benedicti PP. XIII praedecessoris nostri anno Incarnationis dominicae MDCCXXIX, vii kalendas aprilis, pontificatus sui anno v emanatam, quam nos per aliam nostram constitutionem ad pristinum statum ac terminum omnino reduximus et reduci esse volumus¹, inter alia statuitur et decernitur, quod, licet dispositio, quae habetur in litteris piae memoriae Pauli Papae V praedecessoris pariter nostri, quarum initium est, *Aliis motu proprio*, etc., quibus personae diversae nationis ac patriae ad regimen praelaturarum monasteriorum dictae Congregationis S. Salvatoris assumi vetantur, et natis ubi sita sunt monasteria praelaturas easdem conferri praecipitur, retroactis temporibus utilis esse potuerit, nihilominus, cum ob defectum idoneorum interdum non idoneos promovere, aut praelaturas ipsas non sine magno regularis disciplinae et rerum monasteriorum detrimento vacuas relinquere oporteat, idem Benedictus praedecessor, huiusmodi gravi incommodo

occurrere volens, ac ut deinceps personae, in abbates monasteriorum praedictae Congregationis assumendae, sacris litteris, prudentia et maturitate sint commendabiles, et idoneae ad feliciter in spiritualibus et temporalibus monasteria ipsa dirigenda, dispositionem litterasque praedictas eiusdem Pauli praedecessoris, necnon alias recolendae memoriae Alexandri Papae VII, itidem praedecessoris nostri, incipientes *Ad apostolicam*, etc., quibus, inter cetera, Congregationi S. Salvatoris huiusmodi abbatiam infrascripti monasterii terrae Centi dioecesis Bononiensis presbytero professo et in dicta terrâ orto, vel, in eius defectum, Ferrariensi, conferendi obligatio iniungitur, in hac parte tantum, in reliquis vero in suo robore permansuris, de medio sustulit et abrogavit; occurrentibus vero abbatiarum vacationibus, praecepit ut abbas generalis et quatuor visitatores dictae Congregationis digniorem personam ex provincia, in qua abbatia vacans sita fuerit, desumant, cum hac tamen regula, quod, ceteris paribus, respective praeferri debeant religiosi canonici propinquioris monasterii provinciarum eiusdem Congregationis, quique saltem in trigesimoquinto suae aetatis et duodecimo religiosae professionis anno constituti existant, et postea per novem annos cum laude et discipulorum profectu philosophiam aut theologiam praelegerint, vel tyronum regimen, seu curam animarum, in illis ecclesiis dumtaxat quibus inserviunt iidem canonici S. Salvatoris, ibique¹ viget regularis observantia, exercuerint, seu quadragesimali tempore sacras conciones in civitatibus ad populum habuerint, vel munus praesidentis actualis sustinuerint, seu per quindecim annorum spatium procurationem alicuius monasterii laudabiliter

¹ Edit. Main. legit volumus (R. T.).

¹ Potius lege ubique (R. T.).

gesserint, quos ad abbatias ut praefertur¹ vacantes obtinendas, quibuscumque aliis quacumque ratione ad eas aspirantibus penitus remotis et exclusis, eligere omnino debeant et teneantur, auctoritate apostolicâ perpetuo statuit et declaravit.

Procurator
generalis pro
huiusmodi de-
creti confirma-
tione supplicat.

§ 2. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat, dictus Ioannes Albertus abbas generalis observantia² constitutionis memorati Benedicti praedecessoris in maximum ipsius provinciae, imo totius Congregationis progressum residet³, praesertim quoad illas nationes numero carentes, dum nationales hoc pacto multum operae et laboris in studiis consument ad hoc ut idonei reddantur, iis vero minime existentibus, electio cadet in personas, quae dignitati decorem et toti Congregationi utilitatem afferant: nobis propterea dictus Ioannes Albertus abbas generalis humiliter supplicari fecit ut in praemissis opportune providere et ut infra indulgere de benignitate apostolicâ dignaremur.

Regne prae-
stat Clemens.

§ 3. Nos igitur, eundem Ioannem Albertum abbatem generalem specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censes, huiusmodi supplicationibus inclinati, praeinsertam particulam, ex constitutione Benedicti praedecessoris excerptam⁴, ut praefertur, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, confirmamus et

approbamus, illique apostolicæ firmitatis robur adiicimus, ac illam perpetuo observari mandamus.

§ 4. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore spectabit, plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Sicque servar-
praecipit in fut-
urum.

§ 5. Non obstantibus praemissis, ac constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ac, quatenus opus sit, praedictae Congregationis, aliisque quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, aut quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permanentibus, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Transumptis
crede iubet

§ 6. Volumus autem ut earundem praesentium litterarum transumptis, etc.¹

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die iv iulii² MDCCXXXV, pontificatus nostri anno vi.

Dat. die 4 augusti 1735, pontif. anno vi.

F. card. OLIVERIUS.

¹ Edit. Main. legit *profertur* (R. T.).

² Leg. *observantiam*, vel aliter corrig. (R. T.).

³ *Desideret*, vel aliter corrig. (R. T.).

⁴ Edit. Main. legit *exceptam* (R. T.).

¹ Reliqua ut supra pag. 40 b (R. T.).

² Forsan *augusti*, nam dies iv iulii pertineret ad pontif. annum v (R. T.).

CLXIV.

Omnes regulares etiam Ordinis Cisterciensis in regno Lusitaniae tenentur observare constitutiones Gregorii XV et Clementis X circa parochialium usum et sacramentorum administrationem.

Clemens Papa XII.
ad futuram rei memoriam.

Prooemium. Admonet nos apostolici muneris ratio ad ea serio intendere, per quae provide statuta a praedecessoribus nostris, praesertim ad ecclesiasticam disciplinam tuendam ac pacem et tranquillitatem inter villicos et operarios agri dominici firmandam spectantia, inviolabiliter custodiantur atque observentur.

Causae fere-
dae consti-
tutionis.

§ 1. Exponi siquidem nobis nuper fecit venerabilis frater patriarcha Ulysiponensis, quod regulares regnorum Portugalliae et Algarbiorum diversis temporibus adnixi fuerint sese ab observatione constitutionis felicitis recordationis Gregorii Papae XV praedecessoris nostri, quae incipit *Inscrutabili Dei providentiâ*, subducere ac eximere, freti quibusdam in simili formâ Brevis litteris recolendae memoriae Urbani PP. VIII praedecessoris etiam nostri, die III martii MDCXXV expeditis, tenoris qui sequitur, videlicet:

Dilecto filio magistro Ioanni Baptistae Pallottae in utrâque signaturâ nostrâ referendario, iurium et spoliolum Camerae nostrae apostolicae in Portugalliae et Algarbiorum regnis debitorum collectori generali, Urbanus PP. VIII. Dilecte fili, salutem et apostolicam benedictionem. Aliàs a felicitis recordationis Gregorio PP. XV praedecessore nostro emanarunt litterae tenoris subsequenter, videlicet:

Gregorius XV *Gregorius episcopus servus servorum*

Dei, ad perpetuam rei memoriam. Inscrutabili Dei providentiâ universalis Ecclesiae regimini meritis licet imparibus praesidentes, pastoralis nostrae sollicitudinis partes esse dignoscimus in eam curam praecipue incumbere ut a dignis et probatis tantum sacerdotibus sancte administrentur ecclesiastica sacramenta, atque ut virginum Deo sacrarum monasteria diligentissime custodiantur, et viri assumantur idonei ad praedicationis officium salubriter exequendum. Sane Tridentinae Synodi decretis provide cautum est, nullum presbyterum, etiam regularem, posse confessiones saecularium etiam sacerdotum audire, nec ad id idoneum reputari, nisi aut parochiale beneficium habeat, aut ab episcopis per examen, si illis videbitur esse necessarium, aut aliàs idoneus iudicetur, et approbationem, quae gratis detur, obtineat; necnon ut in monasteriis seu domibus virorum seu mulierum, quibus imminet animarum cura personarum saecularium praeter eas quae sunt de illorum monasteriorum seu locorum¹ familiâ, personae tam regulares quam saeculares eiusmodi curam exercentes subsint immediate, in iis quae ad dictam curam et sacramentorum administrationem pertinent, iurisdictioni, visitationi et correctioni episcopi, in cuius dioecesi sunt sita; itemque ut episcopi universi, sub obtestatione divini iudicii et interminatione maledictionis aeternae, in omnibus monasteriis sibi subiectis ordinariâ, in aliis vero Sedis Apostolicae auctoritate, clausuram sanctimonialium, ubi violata fuerit, diligenter restitui, et ubi inviolata est, conservari maxime procurent; inobedientes atque contradictores per censuras ecclesiasticas aliasque poenas, quacumque appellatione pospositâ, compe-

observanda a
religiosis mem-
bris, in iis quae
curam anima-
rum respiciunt,
declaravit se-
cundum men-
tem Concilii
Tridentini.

¹ Forsan domorum (R. T.).

scientes; atque ut regulares, in ecclesiis suorum Ordinum praedicare volentes, se coram episcopis praesentare, et ab eis benedictionem petere teneantur; in ecclesiis vero, quae suorum Ordinum non sunt, nullo modo praedicare possint sine episcopi licentiâ; contradicente autem episcopo, nullibi etiam in suorum Ordinum ecclesiis praedicare praesumant. Verum, quia experienciâ compertum est ecclesiastici regiminis rationes postulare ut decretis eiusmodi aliquid adiungatur, maturâ deliberatione nostrâ et ex certâ scientiâ, ac de apostolicae potestatis plenitudine, hac generali ac perpetuo valiturâ constitutione decernimus, statuimus et declaramus, ut deinceps tam regulares quam saeculares quomodolibet exempti, sive animarum curam personarum saecularium monasteriis¹ seu domibus regularibus aut quibusvis aliis ecclesiis vel beneficiis sive regularibus sive saecularibus incumbentem exercent, sive alias ecclesiastica sacramenta aut unum ex illis ministrent praevisâ episcopi licentiâ et approbatione, sive quoquo modo in dictae curae exercitio aut in eorundem sacramentorum vel alienius ex illis administratione de facto absque ullâ auctoritate se ingerant, in his quae eiusmodi curam seu administrationem concernunt, omnimodae iurisdictioni, visitationi et correctioni diocesani episcopi tamquam Sedis Apostolicae delegati plene in omnibus subiiciantur. Ad haec, tam regulares quam saeculares huiusmodi, nullis privilegiis aut exemptionibus tueri se possint, quominus, si deliquerint circa personas intra septa degentes, aut circa clausuram, vel circa bonorum administrationem monasteriorum monialium etiam regularibus subiectarum, ab episcopo loci similiter tamquam ad hoc

¹ Edit. Main. legit *monasterii* (n. r.).

Sedis Apostolicae delegato, quoties et quando opus fuerit, puniri et corrigi valeant. Confessores vero, sive regulares sive saeculares, quomodocumque exempti, tam ordinarii quam extraordinarii, ad confessionem monialium etiam regularibus subiectarum audiendas nulloatenus deputari valeant, nisi prius ab episcopo dioecesano idonei iudicentur, et approbationem, quae gratis concedatur, obtineant. Sed et administrantes bona ad eiusmodi monasteria sanctimonialium, ut praefertur, etiam regularibus subiectarum pertinentia, sive regulares extiterint sive saeculares quomodolibet exempti, episcopo loci, adhibitis etiam superioribus regularibus, singulis annis rationes administrationis, gratis tamen exigendas, reddere teneantur, ad idque iuris remediis cogi et compelli queant. Liceatque episcopo ex rationabili causâ superiores regulares admonere ut eiusmodi confessores atque administratores amoveant, iisque superioribus id facere detractantibus aut negligentibus, habeat episcopus facultatem praedictos confessores et administratores amovendi quoties et quando opus esse iudicaverit. Ac similiter possit episcopus, unâ cum superioribus regularibus quarumcumque abbatissarum, priorissarum, praefectarum vel praepositarum eorundem monasteriorum, quocumque nomine appellentur, electionibus per se vel per alium interesse ac praesidere, absque ullâ tamen ipsorum monasteriorum impensâ. Ac demum habeat episcopus tamquam dictae Sedis delegatus auctoritatem coercendi et puniendi quoscumque exemptos tam saeculares quam regulares, qui in alienis ecclesiis, aut quae suorum Ordinum non sunt, absque episcopi licentiâ, et in ecclesiis suis aut suorum Ordinum, non petita illius benedictione, aut ipso contradicente, praedicare prae-

sumpserint; ita ut episcopi in superscriptis casibus in praenominatas personas, in praemissis omnibus et singulis aut circa ea quoquo modo delinquentes, quoties et quando opus fuerit, etiam extra visitationem per censuras ecclesiasticas aliasque poenas uti eiusdem Sedis delegati procedere, omnemque iurisdictionem exercere libere et licite valeant. Decernentes, sic per quoscumque iudices quavis auctoritate fungentes, etiam sacri palatii auditores, necnon S. R. E. cardinales, sublata eis et eorum cuilibet quavis aliter iudicandi et interpretandi facultate et auctoritate, iudicari et definiri debere, irritum quoque et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis in favorem quarumcumque personarum atque Ordinum tam mendicantium quam non mendicantium, militiarum etiam S. Ioannis Hierosolomytani, congregationum, societatum, ac cuiusvis alterius instituti etiam necessario et in individuo exprimendi, monasteriorum, conventuum, capitulorum, ecclesiarum et aliorum quorumcumque tam saecularium quam regularium locorum, necnon illorum, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis vel consuetudinibus, exemptionibus quoque, indultis et privilegiis, etiam in corpore iuris clausis, aut ex causa et titulo oneroso, vel in limine foundationis concessis, etiam Marimagno, seu Bulle aurea, aut alias nuncupatis, conservatorum deputationibus, eorumque atque aliis inhibitionibus, quibus episcopi deferre minime teneantur, et quibusvis aliis, sub quiscumque tenoribus et formis ac cum quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus et insolitis clausulis, necnon irritantibus de-

cretis, etiam motu proprio et ex certa scientia, ac de apostolicae potestatis plenitudine, aut alias quomodolibet etiam per viam communicationis seu extensionis concessis, ac iteratis vicibus approbatis et innovatis, etiamsi pro sufficienti derogatione de illis eorumque totis tenoribus et formis specialis et individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quaevis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma servanda esset, tenores huiusmodi, ac si de verbo ad verbum, nihil penitus omissis, et forma in illis tradita observata inserti forent, praesentibus pro expressis habentes; quibus, quoad ea quae eisdem praesentibus adversantur, illis alias in suo robore permansuris, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque. Ceterum, quia difficile foret praesentes litteras ad singula quaeque loca deferri, ut eae tamen omnibus innotescant, mandamus illas ad valvas Lateranensis et Principis Apostolorum de Urbe basilicarum, atque Cancellariae Apostolicae, et in acie Campiflorae publicari et inibi affigi, et per aliquod temporis spatium dimitti, eisque detractis, earum exempla eo in loco relinquit: ac volumus ut earumdem praesentium litterarum transumptis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo praelati seu personae in dignitate ecclesiastica constitutae munitis, in iudicio et extra illud, ubi opus fuerit, eadem prorsus fides adhibeatur, quae ipsis originalibus adhiberetur, si forent exhibitae vel ostensae. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrorum statuti, declarationis, decretorum, derogationis, mandati et voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire; si quis autem hoc attentare praesumpserit, indigna-

tionem omnipotentis Dei et beatorum Petri et Pauli apostolorum eius se noverit incursum.

Datum Romae, apud S. Petrum, anno Incarnationis dominicae MDCXXII, nonis februarii, pontificatus nostri anno II.

Urbanus VIII ab huiusmodi declarationis executione in procedendum statuit.

Cum autem, sicut accepimus, circa executionem litterarum praedictarum in Portugalliae et Algarbiorum regnis faciendam nonnulla per dilectum filium Michaëlem Suarium Pereira, negotiorum regnorum huiusmodi pro carissimo in Christo filio nostro Philippo Portugalliae et Algarbiorum rege catholico in Romanâ Curia agentem, eiusdem Philippi regis nomine coram dilectis filiis nostris Dominico Ss. XII Apostolorum Gymnasio, Ioanne Garcia Ss. IV Coronatorum Millino, ac Scipione S. Susannae, necnon Antonio S. Honuphrii titulorum presbyteris cardinalibus respective nuncupatis, ad id a nobis specialiter deputatis, deducta fuerint: ideoque, donec deducta, ut praefertur, et quae deducenda fuerint, per Dominicum, Ioannem Garciam, Scipionem et Antonium cardinales praedictos, seu alios a nobis super his deputandos, maturius et plenius videantur atque considerentur, motu proprio, et ex certa scientia ac maturâ deliberatione nostris, deque apostolicae potestatis plenitudine, tibi per praesentes committimus et mandamus ut in regnis Portugalliae et Algarbiorum praedictis tantum ab executione praedictarum litterarum huiusmodi suspenderi auctoritate nostrâ cures et facias, donec aliter a nobis seu Romanis Pontificibus successoribus nostris provisum fuerit: contradictores quolibet et rebelles, ac tibi in hoc non parentes, per sententias, censuras et poenas ecclesiasticas, aliaque opportuna iuris et facti remedia, appellatione postpositâ, compescendo, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii

saccularis. Non obstantibus praefertis litteris huiusmodi, ceterisque in contrarium facientibus quibuscumque.

Datum Romae apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die III martii MDCXXV, pontificatus nostri anno II.

§ 2. Cum autem, sicut eadem expositione subiungebat, ¹ suspensio dictae constitutionis Gregorii praedecessoris vigore praefertarum Urbani itidem praedecessoris litterarum, donec aliter ab ipso Urbano praedecessore seu Romanis Pontificibus successoribus suis provisum fuisset, sicut praemittitur, facta, iamdiu cessaverit, ac e medio sublata fuerit per posteriores ordinationes a Sede Apostolicâ identidem emanatas, potissimum vero per alteram constitutionem similis memoriae Clementis PP. X praedecessoris quoque nostri, cuius initium est *Superna magni patrisfamilias*, usque ab anno MDCCLXX per viam legis universalis promulgatam, ad removenda scilicet dubia et contentiones, quae occasione recensitae constitutionis Gregorii praedecessoris excitata fuerant, quemadmodum novissime etiam a Congregatione venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium Concilii Tridentini interpretum, re discussâ, expensisque Urbani praedecessoris litteris praefertis, resolutum et declaratum fuit, nihilominus nonnulli regulares regnorum praefatorum, et praesertim Ordinis Cisterciensis, executioni eiusdem constitutionis Gregorii et alterius Clementis praedecessorum, necnon decretorum quae ad illarum tramites a dictâ Congregatione cardinalium prodierunt, adhuc obsistere ac refragari pergant, obtendentes ultra dictas litteras Urbani praedecessoris se in neutram ex emanatis constitutionibus comprehensos esse, eo quod in illis expresse nominati minime

Ex huiusmodi suspensione, quamvis sublata per declarationem Clementis X, data occasione, nunquam hactenus, quatenus, constituta, non Gregorii XV praefertum, Cisterciensibus.

¹ Haec deest partic. *licet* (R. T.).

reperiantur, sicuti iuxta asserta eorum privilegia opus fuisse aiunt: nobis propterea praedictus patriarcha humiliter supplicari fecit ut in praemissis opportune providere de benignitate apostolica dignaremur.

Omnes et singuli regulares declarantur obstricti observationi constitutionum Gregorii XV et Clementis X.

§ 3. Nos igitur, ipsius patriarchae votis hac in re, quantum cum Domino possumus, favorabiliter annuere volentes, eumque a quibuscumque excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censes, huiusmodi supplicationibus inclinati, omnes et singulos regulares, praefatorum regnorum Portugalliae et Algarbiorum, etiam dicti Cisterciensis et cuiuscumque alterius Ordinis, congregationis, societatis et instituti, etiam necessario, specialiter ac individuo nominandi et exprimendi, ad exactam et plenariam constitutionum memoratorum Gregorii et Clementis praedecessorum observationem, prout eos concernunt, omnino teneri et obligatos existere et fore, et ad id sub censuris ecclesiasticis et aliis in iisdem constitutionibus contentis poenis cogi et compelli posse, auctoritate apostolica, harum serie, statuimus et declaramus.

Siquis in futurum eas in-
dicandum.

§ 4. Decernentes, sic et non aliter per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac S. R. E. cardinales etiam de latere legatos dictaeque Sedis nuncios, sublata eis et eorum cuilibet quavis aliter iudicandi et interpretandi facultate et auctoritate, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

§ 5. Non obstantibus, quatenus opus sit, praecursoris Urbani praedecessoris litteris, ac constitutionibus et ordinationibus apostolicis, atque quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis alia firmitate roboratis, statutis, usibus et consuetudinibus, etiam immemorabilibus, privilegiis quoque, indulgentiis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis, necnon omnibus et singulis quae in eorum Gregorii et Clementis constitutionibus concessa sunt non obstande, ceterisque contrariis quibuscumque.

Obstantium derogatio.

§ 6. Volumus quoque ut praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiastica dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides in iudicio et extra adhibeatur, quae ipsis praesentibus adhiberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Fides transumptorum.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die XI augusti MDCCLXXXV, pontificatus nostri anno VI.

Dat. die 11 augusti 1735, pontif. anno VI.

F. card. OLIVERIUS.

CLXV.

Pontifex privilegia concedit nonnullis suis familiaribus.

Clemens Papa XII,

Dilectis filiis Nicolao Antonelli Senogallensi, marchioni Chiappino Vitelli Florentino, Virgilio de Cincis Romano, cubiculariis intimis, Ioanni Bottari itidem Florentino¹ respective civitatum et diocesis capellano secreto, ac Ioanni Baptistae Altieri cubiculi nostri auditori, familiaribus, continuis commensalibus no-

¹ Aptius lege Florentinae, et sic antea (A.T.).

stris, salutem et apostolicam benedictionem.

Exordium.

Circumspecta Romani¹ Pontificis gratiarum dispensatoris providentia devotos et fideles suos, illos praesertim qui grata familiaritatis obsequia iugiter ei impendunt, ac quos ad id aliàs propria virtutum merita commendant, honoris et famae amplioribus praeconiis ac praeclaris dignitatum titulis decorare et ornare, necnon specialis benevolentiae favoribus amplecti solet, prout personarum qualitatibus conspiciat convenire.

Hosce cubicularios Sedis Apostolicae notarios creat et palatii comites, cum honoribus et praerogativis.

§ 1. Hinc est quod nos, ad gratiam familiaritatis obsequia, quae vos, qui etiam continui commensales nostri existitis, et quilibet vestrum nobis hactenus impendistis, et adhuc sollicitis studiis impendere non desistitis, necnon ad vitae ac morum honestatem, aliaque laudibilia probitatis et virtutum merita, quibus personas vestras etiam familiari experientia iuvare percepimus, condignam rationem habentes, ac propterea easdem personas vestras peculiaris favore gratiae ac specialis honoris et excellentiae dignitatis titulo sublimare volentes, vosque et quemlibet vestrum a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existitis, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutos fore censentes, motu proprio, non ad vestram vel alterius pro vobis super hoc oblatae petitionis instantiam, sed de mera liberalitate et certa scientia nostris, ac de apostolicae potestatis plenitudine, vos et quemlibet vestrum respective in nostros et Sedis Apostolicae, notarios (sine tamen praeiudicio dilectorum filiorum notariorum de

¹ Edit. Main. legit *Romanis* (R. T.).

numero participantium) apostolicam auctoritate, tenore praesentium recipimus, ac sacri palatii et aulae Lateranensis comites, necnon auratae militiae equites, ac nobiles romanos, et Urbis Romae ac civitatum Avenionensis, Bononiensis, Ferrariensis et Beneventanae, omniumque et singularum aliarum civitatum, terrarum et locorum Romanae Ecclesiae mediate vel immediate subiectorum cives, cum omnibus iuribus, iurisdictionibus, praerogativis et insignibus debitis et consuetis, creamus et constituimus, ac in numerum et consortium aliorum nostrorum et eiusdem Sedis notariorum, necnon palatii et aulae huiusmodi comitum, equitum et nobilium Romanorum, aliorumque civium civitatum et terrarum praedictarum, referimus et conscribimus. Vobisque, etiam si habitum et rocchetto notariorum dictae Sedis iuxta decreta Lateranensis Concilii novissime celebrati non deferatis, aut civitates huiusmodi non incolueritis, nec unquam in eisdem civitatibus domicilium habueritis, ut omnibus et quibuscumque privilegiis et facultatibus, exemptionibus, immunitatibus, libertatibus, favoribus, gratiis et indultis, quibus ceteri omnes notarii nostri, etiam de numero participantium, ac comites, equites et nobiles (citra tamen exemptiones a sacro Concilio Tridentino sublatis, itaut nedum quoad criminalia, sed etiam quoad civilia subiaceatis Ordinariis, ac citra facultates legitimandi, ad gradus promovendi, notarios seu tabelliones creandi, aliaque huiusmodi privilegia a notariis et comitibus praefatis praetensa, itaut illis nullibi uti valeatis, ac irritum et inane existat quidquid secus per vos aut quemlibet vestrum respective attentari contigerit), necnon cives originarii, etiam in dignitatum, beneficiorum et of-

ficiorum ecclesiasticorum et saecularium etiam ex personis romanorum civium originarium vacantium assecutione et exercitio, tam in Urbe, quam in omnibus et singulis civitatibus praedictis, et aliis ubique locorum et gentium, necnon sessionum et conventuum, utuntur, potiuntur et gaudent, ac uti, potiri et gaudere poterunt quomodolibet in futurum, non solum ad eorum instar, sed pariformiter et aequè principaliter, ac si privilegia, facultates, exemptiones; gratiae et indulta huiusmodi pro vobis emanassent, uti, potiri et gaudere, ac in omnibus et singulis apostolicis, aliisque litteris, instrumentis et scripturis publicis et privatis, deinceps nomine vestro conficiendis, notarios, comites, equites et nobiles, ac de nobili genere ex utroque parente procreatos, necnon romanae et aliarum civitatum et terrarum cives, prout libuerit, vos inscribere valeatis, ac pro veris et non fictis notariis, comitibus, equitibus et nobilibus ac civibus habeamini, nihilque, qualecumque illud fuerit, cum iis subscriptionibus subreptitium, vel obreptitium, aut invalidum, sed illud idem efficax in omnibus censeatur, necnon honoris causâ insignia gentis nostrae sive integre sive cum vestris respective composita gestare possitis, prout vobis placuerit, concedimus.

Eorum bona
a quocumque
eximil vecti-
gali.

§ 2. Et insuper vos vestraque beneficia et officia ecclesiastica quaecumque, quocumque et qualiacumque, illorum fructus, res et iura ubicumque locorum, regnorum et provinciarum, necnon in Urbe, civitatibus, terris et locis eidem Romanae Ecclesiae mediate vel immediate subiectis consistentia praedia, domos, possessiones et bona patrimonialia, aliaque temporalia mobilia et immobilia ac semoventia, necnon actiones et iura praesentia et futura, cuiuscumque

qualitatis, quantitatis et naturae, ac cuiusvis etiam annui valoris, fructus, redditus et proventus huiusmodi sint vel fuerint, ac etiam quaecumque a vobis vendenda, ac pro vestris et familiarum vestrarum usibus emenda, ab omnibus et quibuscumque decimis, quartis et dimidiis partibus, subsidiis, etiam charitativis, necnon vectigalibus, portoriis, tributis, doliis, pedagiiis, collectis, et quocumque alio nomine nuncupatis angariis, perangariis, ceterisque oneribus et contributionibus tam urbanis quam rusticis, ordinariis et extraordinariis, realibus, personalibus et mixtis, etiam ratione munitionum moenium et pontium, portarum et moliturarum, et mercium cuiuscumque generis, transitus seu passus et vecturae, etiam in aliud territorium seu provinciam, terrâ, mari et flumine, necnon equorum mortuorum, stabulationum militum, institutionis seminarii ecclesiastici, aut quaecumque¹ aliâ quantumvis gravi et gravissimâ causâ (pro subventionem contra infideles dumtaxat exceptâ) nunc et pro tempore impositis, ita quod vos et quilibet vestrum nihil omnino horum aut aliorum similium subire teneamini, nec per Camerae Apostolicae aut alios commissarios, seu vectigalium et tributorum huiusmodi redemptores, conductores et exactores quocumque privilegio, exemptione et facultate suffultos, aliâs quam ut praefertur valeatis coarctari, quamdiu servitiis nostris institeritis dumtaxat, eximimus et liberamus.

§ 3. Ad haec, vobiscum et cum quolibet vestrum respective, ut quaecumque duo dissimilia vel simplicia similia sub singulis tribus tectis quarumcumque trium cathedralium, etiam metropolitinarum, aut aliarum etiam collegiatarum ecclesiarum consistentia, etiamsi unum

Dispensat a
residentia be-
neficiorum et-
iam cum fru-
ctuum percep-
tione.

¹ Edit. Mainz, legit quaecumque (R. T.).

ex illis omnibus cum curâ aut dignitas etiam maior et principalis, et canonicatus et praebenda, personatus, administratio vel officium fuerit, et ad dignitatem, personatum, administrationem vel officium huiusmodi consueverit quis per electionem assumi, eique cura etiam iurisdictionalis immineat animarum, et alicui vestrum aliâs canonice conferantur, aut quisque vestrum eligatur, praesentetur, aut aliâs assumatur ad illa, et instituat in eis, recipere, et, dummodo illa omnia (uno excepto) personalem residentiam non requirant, insimul, quoad vixeritis, retinere, necnon etiam, quamdiu nobis inservieritis tantum, in beneficiis ecclesiasticis etiam curatis (non tamen parochialibus, nec curatis curâ animarum parochianorum), per vos pro tempore respective obtentis, etiam de iure, statuto, fundatione vel privilegio, personalem residentiam requirentibus, etiamsi dignitates in cathedralibus etiam metropolitanis post pontificalem minores ac collegiatis ecclesiis huiusmodi principales fuerint, personaliter residere non teneamini, nec per locorum Ordinarios aut ecclesiarum earundem capitula seu quosvis alios ad residendum interim in illis inviti compelli possitis, omnesque et singulos nihilominus vestrorum beneficiorum obtentorum fructus, redditus et proventus, durante servitio praedicto, cum eâ integritate (distributionibus quotidianis dumtaxat exceptis), cum qua illos perciperetis si in eisdem ecclesiis sive locis personaliter resideretis, percipere, exigere et levare;

Facultatem dat
sacros ordines
suscipiendi ex-
tra tempora.

§ 4. Ac interim, vel postmodum, si voveritis, in Romanâ curiâ vel extra eam a quocumque quem malueritis catholico antistite gratiam et communionem eiusdem Sedis habente, quem du-

1 Potius lege si pro et (R. T.).

xeritis eligendum, ad omnes etiam sacros et presbyteratus ordines aliquibus tribus dominicis vel aliis festivis diebus, etiam extra tempora a iure statuta, proprii Ordinarii aut cuiusvis alterius licentiâ desuper minime requisita, si aliâs ad id idonei reperti fueritis (super quo antistitis conscientiam oneramus), promoveri, et promoti in illis etiam in altaris ministerio ministrare, necnon, etiamsi presbyteri fueritis, ac dignitates et officia obtinueritis, leges et iura civilia etiam publice in scholis et universitatibus studiorum generalium, ad quinquennium dumtaxat, dummodo trigesimum aetatis annum non excesseritis, audire, et, si habiles et sufficientes reperti fueritis, etiam ad doctoratus gradum in huiusmodi facultate vos promoveri facere, ipsaque iura etiam publice docere, atque iudicis, advocati et procuratoris officium, in causis ecclesiasticis et civilibus tantum, exercere libere et licite possitis et valeatis, auctoritate et tenore praedictis de specialis dono gratiae dispensamus.

§ 5. Liceat quoque vobis et cuilibet vestrum aliquem idoneum et approbatum ab Ordinario presbyterum saecularem, vel cuiusvis Ordinis regularem, in vestrum eligere confessorem, qui, vitâ cuiuslibet vestrum comite, vos et quemlibet vestrum a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, et per vos incursis, et quibus vos etiam apostolica auctoritate illaqueari contigerit, etiamsi absolutio nobis et successoribus nostris Romanis Pontificibus pro tempore existentibus specialiter vel generaliter reservata existat, et quorumcumque volorum et Ecclesiae praeceptorum transgres-

Confessarium
eligendi cum
opportuno la-
cualibus.

sionibus, homicidio casuali, manuum violentiarum in quavis personas etiam ecclesiasticas (non tamen episcopos vel alios superiores praelatos) de praeterito infectionibus, seu consilii vel favoris ad id praestationibus, ieiuniorum omissionibus (non tamen recitationis Horarum Canoniarum, aliorumque divinorum officiorum), et deinde ab omnibus et quibuscumque aliis vestris peccatis, criminibus et excessibus ac delictis, quantumcumque gravibus et enormibus, etiam talibus propter quae Sedes praedicta merito consulenda foret, videlicet a contentis in litteris die Coenae Domini publicari consuetis, semel tantum in vita et mortis articulo, in reliquis vero dictae Sedi quomodocumque reservatis aliisque casibus, semel in anno, confessionibus vestris diligenter auditis, sine tamen alicuius praeiudicio, auctoritate apostolica absolvere, et vobis pro commissis poenitentiam iniungere salutarem, necnon vota quaecumque (ultramarino, visitationis liminum beatorum Petri et Pauli apostolorum, castitatisque et religionis votis dumtaxat exceptis) in alia pietatis opera commutare valeat.

Pensiones resignandi in summa trecentorum ducatorum,

§ 6. Vobisque ulterius, et cuicumque vestrum respective, ut quicumque loci Ordinarii vel canonici metropolitanarum seu aliarum cathedralium ecclesiarum, aut personae in dignitate ecclesiastica constitutae tam in dicta Curia quam extra eam ad id per vos respective coram notario et testibus fide dignis eligendi seu eligendae, quascumque pensiones annuas vobis super mensarum abbatialium seu capitularium ac episcopaliurn et archiepiscopaliurn ac quorumcumque beneficiorum ecclesiasticorum cum cura et sine cura saecularium et quorumvis Ordinum et Militiarum regularium, etiam hospitalis S. Ioannis

Hierosolymitani, quomodocumque et qualitercumque qualificatorum, fructibus, redditibus, proventibus, iuribus, obventionibus et distributionibus etiam quotidianis, seu, illarum loco, fructus, redditus, proventus, iura, obventiones, distributiones et emolumenta vobis nunc et pro tempore assignata et reservata ac reservanda, pro summa videlicet trecentorum ducatorum auri de Camera quoad singulos vestrum, quandocumque alicui vestrum respective placuerit; simul vel successive, in toto vel in parte, etiam in cuiuslibet vestrum mortis articulo, cassare et extinguere, ac, postquam cassatae et extinctae fuerint, alias similes pensiones annuas super eisdem fructibus, redditibus, proventibus, iuribus, obventionibus et distributionibus, emolumentis, seu, illarum loco, fructus, redditus, proventus, iura, obventiones, distributiones et emolumenta huiusmodi, usque ad summam et quantitatem praedictam, uni vel pluribus alijs personis etiam per vos nominandis, etiam quaecumque, quocumque et qualiacumque beneficia ecclesiastica obtinentibus et expectantibus, clericis seu clericali characterem insigniri volentibus, etiam eis quoad vixerint, eorum procuratoribus ad id speciale ab eis mandatum habentibus, iisdem modo et forma, quibus vobis assignatae et reservatae, seu assignata et concessa fuerint respective, etiam absque consensu easdem pensiones solvere debentium, etiamsi illas vel illa alias cassari et reservari de novo faciendi facultatem non habueritis, ac pensiones et fructus, redditus, proventus, iura, obventiones, ac distributiones et emolumenta huiusmodi etiam pluries cassata et de novo assignata fuerint, usque ad summam et quantitatem praedictam, etiam litteris apostolicis super reservationibus et assi-

gnationibus huiusmodi non confectis, ac aliàs cum omnibus et quibuscumque exemptionibus, privilegiis, decretis, clausulis, cautionibus, vinculis, obligationibus et cautelis, ac etiam censuris et poenis in prioribus reservationibus huiusmodi concessis et contentis, necnon cum subrogatione in quibusvis vestris iuribus, etiam quoad quasi possessionem exigendi, in qua tunc eritis, integre persolvendas, servatâ tamen formâ constitutionis felicis recordationis Innocentii Papae XI praedecessoris nostri super translationibus pensionum editae, reservare, constituere et assignare valeant, auctoritate et tenore praedictis de speciali gratiâ indulgemus.

Teslandi etiam
de fructibus be-
neficiorum et
pensionum.

§ 7. Necnon etiam vobis, ut de omnibus et singulis domibus, praediis, possessionibus, terris et locis, ac iurisdictionibus, ceterisque bonis mobilibus et immobilibus, quae tamen non sint altaris seu altarium ecclesiarum vobis commissarum ministerio seu alicui speciali earundem ecclesiarum divino cultui seu usui deputata, seque moventibus, cuiuscumque qualitatibus, quantitatibus, valoribus, speciei, pretii et conditionis existentibus, ac iuribus et actionibus ad vos ratione ecclesiarum, etiam cathedralium et metropolitanarum, quibus vos forsitan praeesse contigerit, necnon monasteriorum, prioratuum, praepositarum, dignitatum et aliorum quorumcumque beneficiorum ecclesiasticorum, cum curâ et sine curâ, saecularium, et quorumvis Ordinum regularium, quae etiam ex quibusvis concessionibus et dispensationibus apostolicis in titulum, commendam, administrationem, ac aliàs quomodolibet obtinueritis, obtinetis et obtinebitis, ac fructuum, reddituum et proventuum ecclesiasticorum, loco pensionum, ipsarumque pensionum annuarum super similibus fructibus, redditibus

et proventibus vobis reservatorum et assignatarum, ac reservandorum et assignandarum, quos et quas perceperitis, percipitis et percipietis in futurum, necnon emolumentorum quorumcumque Romanae Curiae officiorum, et aliàs quomodolibet spectantibus et pertinentibus, ac etiam de dictis proventibus, fructibus, redditibus et pensionibus annuis, necnon vestra et cuiuslibet vestrum industriâ et labore quomodolibet, undecumque, licite tamen, acquisitis et acquirendis, ac aliàs etiam de muneribus et officiis quae exercueritis et vos exercere contigerit, et aliàs quavis occasione vel causâ seu contemplatione ad vos perventis et perventuris, etiamsi in pecuniâ numeratâ, et iocalibus, gemmis aliisque pretiosioribus rebus consistant, tam in dictâ Curia quam extra eam ubique locorum, etiam penes beneficia ipsa existentibus (quorum omnium qualitates et veros etiam annuos valores, etiam si talia forent quae generali appellatione bonorum et supellectilium non venirent, sed specialibus indigerent vocabulis, praesentibus, ac si specificè et singillatim exprimerentur et denominarentur, pro sufficienter expressis ac declaratis haberi volumus), usque ad summam sex millium ducatorum auri de Camerâ pro unoquoque vestrum, ac etiam de ipsis fructibus, redditibus et proventibus, et pensionibus debitis et debendis (servatâ tamen formâ constitutionum apostolicarum iam editarum, et si quas deinceps edi contigerit super fructibus inexactis), etiam cumulative, cum quibusvis aliis similibus vel dissimilibus facultatibus habitis et habendis, tam pro decentibus et honestis impensis funebribus, quam etiam pro remuneratione illorum qui vobis viventibus servierint, etiam ultra servitii meritum, et in vestrorum consanguini-

neorum et affinium ac quorumcumque locorum piorum favorem et usum, ac aliàs pro arbitrio et voluntate vestris et cuiuslibet vestrum absolutis testari, et testamento, codicillis, fideicommissis, legatis, donationibus tam inter vivos quam causâ mortis, et aliis quibuscumque modis et titulis, scripturâ, etiam minus solemnî, coram duobus vel tribus, aut etiam cedulâ solâ manu vestrâ scriptâ vel subscriptâ, et aliàs in omnibus et per omnia prout et quomodolibet vobis videbitur, etiam in ipsâ Curia, et in mortis articulo, etiam nullâ factâ mentione praesentis vel aliarum vobis pro tempore concessarum similium facultatum, aut quod in vim illarum testari seu disponere velitis et intendatis, semel atque iterum aut pluries disponere, statuere et ordinare, itaut quicquid testatum, gestum, aut ordinatum, seu aliàs dispositum a vobis fuerit, etiam in vim simplicis distributionis, ac aliàs omni alio meliori modo valeat, et servari debeat, ipsaque testamenta, codicillos, et dispositiones, ordinationes, legata et statuta pluries, ac toties quoties vobis videbitur, moderari, limitare, ac etiam in totum revocare, et alia de novo condere libere et licite valeatis, auctoritate apostolicâ earundem tenore praesentium plenam et liberam concedimus facultatem.

Spolio Camerae non sunt subiecti. Mortuorum ab intestato bona ad con-anguineos pertinent.

§ 8. Et insuper statuimus et ordinamus, vobisque indulgemus, quod si vos ab intestato, et sine ullâ vel cum minus validâ bonorum et rerum ac fructuum, reddituum et proventuum praedictorum dispositione, in dictâ Curia vel extra eam, tam continuâ quam interpolatâ inibi cuiuslibet vestrum respective mansionem, ac etiam extra beneficia vestra vel alia loca debitae a vobis residentiae personalis, etiam nullâ subsistente causâ, ab humanis decedatis, omnia et

singula bona, res et iura, etiam ut praefertur qualificata, necnon spolia cuiuscumque quantitatis et valoris existentia, etiam ex praedictis et aliàs undecumque provenientia, ad Cameraam Apostolicam seu in dictis beneficiis successores non pertineant, sed ad haeredes vestri sanguinis integre deveniant, et, illis deficientibus, inter familiares vestros, arbitrio personae seu personarum quas ad id scripto nominaveritis, distribuantur, nisi de aliâ dispositione vel intentione vestrâ scripturâ etiam minus solemnî secus appareret, quam tunc velut efficacem ipsae personae vel alii iudices seu executores omnino exequi et adimplere, illique se conformare in omnibus et per omnia debeant; et nihilominus quaecumque huiusmodi testamenta, legata, donationes, dispositiones, et alia forsitan a vobis, etiam nullâ vel minus sufficienti facultate suffultis, de huiusmodi bonis, iuribus, actionibus, fructibus, pecuniis, locatibus aliisque rebus supradictis, etiam in favorem consanguineorum et affinium praedictorum et aliàs quomodolibet facta, cum omnibus inde secutis, ac etiam ea quae per vos in futurum fient, ex nunc prout ex tunc et e contra, pro dictâ summâ sex millium ducatorum approbamus et confirmamus, omnesque et singulos iuris et facti ac solemnitatum omissarum et omittendarum necnon substantiales aliosque defectus quoscumque, si qui intervenerint aut interveniunt in eisdem, etiamsi tales sint vel fuerint quod specialis specifica et expressa de illis mentio praesentibus habenda esset, supplemus.

§ 9. Districtius inhibentes quibusvis archiepiscopis, episcopis, aut aliis ecclesiarum praelatis, necnon Camerae praedictae praesidentibus clericis, ac eorum, necnon fabricae basilicae Prin-

Horum privilegiorum firmitas et perpetua observantia.

cipis Apostolorum de Urbe ac Cruciatæ sanctæ et aliis collectoribus et subcollectoribus, ceterisque cuiuscunque dignitatis, status, gradus et conditionis existentibus, etiam quavis auctoritate et potestate fungentibus, sub excommunicationis maioris aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, ne universitates, collegia ac loca et legatarios, haeredes et personas, necnon testamentorum, voluntatum et ordinationum huiusmodi executores prædictos, directe vel indirecte, quovis quaesito colore vel ingenio molestare audeant quoquo modo vel perturbare.

Clausulae irritantes.

§ 10. Ac decernentes prædicta omnia et singula, præsentisque litteras, et testamenta, donationes, codicillos, fideicommissa, legata ordinationes, derogationes, dispositiones et alia quaecumque, necnon quae in præmissis facta sunt aut fieri contigerit tam vigore præsentis quam etiam aliarum concessionum vobis factarum et deinceps in genere et in specie faciendarum, cum inde secutis et secuturis, etiamsi vos intra Curiam, aut in quacumque aliâ mundi parte extra ecclesias et beneficia personalem residentiam requirentia qualitercumque qualificata per vos nunc et pro tempore obtenta, etiam pro vestrà solâ voluntate et nullâ subsistente causâ non residendi, ab humanis decedere contigerit, sub litteris recolendae memoriae Pii Papae IV prædecessoris pariter nostri contra quoscumque episcopos, archiepiscopos et alios praelatos, necnon parochialium ecclesiarum rectores, ceterosque residentiae personali prædictae adstrictos extra illam quomodocumque decedentes vii kalendas decembris pontificatus sui anno v, aut alio veriori tempore, emanatis, et sub quibuscumque aliis constitutionibus, aut revocationibus, suspensionibus, limitationibus, modificationibus

decretis, declarationibus apostolicis, Cancellariae Apostolicae regulis, ex quibuscumque causis quantumcumque maximis, urgentibus et inexorabilibus, etiam in favorem fidei et divini cultus augmentum, ac consistorialiter etiam a nobis et Sede prædictâ hactenus vel nunc et pro tempore factis et editis, minime comprehendî, sed semper ab illis excepta, et, quoties emanata fuerint, toties in pristinum et validissimum statum, etiam sub posteriori datâ etiam cum derogationibus et clausulis etiam derogatoriis irritantibusque et aliis decretis per vos eligendâ apponendis et latissime specificandis, reposita, restituta et plenarie reintegrata, ac de novo concessa, validaque et efficacia fore, necnon perpetuâ firmitate subsistere, suosque plenarios et omnes effectus, quos de iure, stylo, consuetudine, aut aliâs quomodocumque sortiri poterunt, ac vim veri, legitimi, iurati, stipulati, validi et efficacis contractus inter vos ex unâ ac nos et Camera prædictam ex alterâ partibus habere, nec etiam per promotionem ad¹ ecclesiam cathedrallem, etiam metropolitanam, aut translationem, vel aliam status et personae vestrae mutationem cessare, nec per similes vel dissimiles gratias vobis concessas et concedendas confundi, sed ipsis cumulative in omnibus et per omnia uti, et, si quid in unâ ex facultatibus huiusmodi defecerit, per aliam suppleri deberi, nec haeredes, legatarios ac loca, ad quos, seu quae, bona, iura et actiones huiusmodi devenerint, vel quibus relinquuntur, aut executores prædictos, ad tertiam seu aliam eorum partem, quam etiam ex nunc vobis, ac locis, haeredibus, legatariis, ac donatariis prædictis liberaliter concedimus et donamus, Camerae vel fabricae aut

¹ Male ed. Main. legit aut pro ab (R. T.).

beneficiis praedictis etiam pro expeditione contra infideles et quibuscumque aliis quantumlibet piis usibus, solvendum, ac cum iis desuper componendum, vel vos ad aliam particularem licentiam, sive indulgendum, aut confirmationem praesentium a nobis vel successoribus nostris Romanis Pontificibus petendum aut impetrandum, vel etiam in alia simili gratia seu confirmatione illius, vobis quomodocumque concedenda, de praesenti mentionem aliquam faciendam ullatenus teneri, nec ad id ullam unquam necessitate cogi posse; et sic in praemissis omnibus et singulis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos etiam causarum palatii apostolici auditores et eiusdem S.R.E. cardinales, necnon pro tempore existentes dictae Camerae camerarium, praesidentes, et clericos, in quavis causa et instantia, sublata eis et eorum cuilibet quavis aliter iudicandi et interpretandi facultate et auctoritate, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

§ 11. Quocirca venerabilibus fratribus nostris Ostiensi et Portuensi cardinalibus episcopis et dilecto filio Curiae causarum Camerae Apostolicae generali auditori per apostolica scripta mandamus motu simili, quatenus ipsi, vel duo, aut unus eorum, per se, vel alium, seu alios, praesentes litteras et in eis contenta quaecumque, ubi et quoties pro parte vestra desuper fuerint requisiti, solemniter publicantes, vobisque in praemissis efficacis defensionis praesidio assistentes, faciant auctoritate nostra easdem praesentes litteras et in eis contenta huiusmodi firmiter observari, ac vos illis omnibus pacifice frui et gaudere; non permittentes vos per quoscumque quavis auctori-

tate fungentes contra earundem praesentium lenorem quomodolibet indebite molestari, inquietari vel perturbari; contradictores quoslibet et rebelles per sententias, censuras et poenas ecclesiasticas, aliaque opportuna iuris et facti remedia, appellatione postposita, compescendo; ac, legitimis super his habentes servatis processibus, censuras et poenas ipsas etiam iteratis vicibus aggravando; invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii saecularis.

§ 12. Non obstantibus praemissis, ac pia memoriae Bonifacii Papae VIII praedecessoris etiam nostri de una, et in concilio generali edita de duabus dietis, dummodo ultra tres dietas aliquis auctoritate praesentium in iudicium non trahatur, nec non Lateranensis Concilii novissime celebrati de certo notariorum numero, etiamsi ad illum nondum devenit, fuerit, cui per hoc alias derogare non intendimus, ac de consensu praestando in pensionibus, et quibusvis aliis etiam per nos et Sedem praedictam editis et in posterum edendis Cancellariae Apostolicae regulis, ac stylo in similibus hactenus observato, ac recolendae memoriae Alexandri PP. VI pariter praedecessoris nostri tertiam partem bonorum ecclesiasticorum Camerae praedictae deberi inter alia disponente, nec non eiusdem Bonifacii PP. VIII, per quam concessionem fructus in absentia percipiendi sine praefinitione temporis fieri prohibentur, ac Pii PP. IV praedecessoris etiam nostri de gratiis quaecumque interesse Camerae Apostolicae concernentibus in dicta Camera intra certum tunc expressum tempus praesentandis et registrandis, ita quod praesentes in eadem Camera nullo unquam tempore registrari facere teneamini, ac similis recordationis Urbani Papae VIII pariter praedecessoris nostri de pensio-

Obstantibus derogat.

Committere
praesentium ex-
ecutioni.

nibus alijs translatis iterum transferendis, ac quorumvis aliorum Romanorum Pontificum praedecessorum nostrorum et quibusvis alijs apostolicis, ac in universalibus provincialibusque et synodalibus conciliis editis, generalibus vel specialibus, constitutionibus et ordinationibus, necnon legibus et imperialibus et municipalibus, tam Urbis quam aliarum civitatum et locorum in quibus cives originarii creati existitis, et quarumvis ecclesiarum, monasteriorum, Ordinum et hospitalis praedictorum, necnon quorumvis collegiorum et officiorum dictae Curiae, et regnorum, provinciarum et Urbis ac aliarum civitatum et locorum ac Camerae praedictorum, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis et consuetudinibus, stabilimentis, usibus et naturis, etiamsi de illis servandis et non impetrandis litteris apostolicis contra ea, nec etiam ab alio vel ab alijs impetratis aut alijs quomodolibet concessis utendo, vos per vos vel procuratores vestros praestiteritis forsitan hactenus vel vos in posterum praestare contigerit iuramentum, privilegijs quoque, indultis et litteris apostolicis, dictis ecclesijs, monasterijs, Ordinibus et hospitalibus, illorumque praesulibus, seu administratoribus et superioribus, ac magistris, praeceptoribus, prioribus, militibus, etiam antianis, capitulis, conventibus, civitatibus et locis, alijsque praedictis, ac illorum communitatibus et universitatibus, alijsque personis, etiam particularibus, necnon archiepiscopis, episcopis et alijs Ordinariis, etiam eisdem cardinalibus, ac dictae Curiae officialibus, illorumque collegijs, ac etiam decimarum, pedagiorum, gabellarum et onerum exactoribus et appaltatoribus et aliorum onerum redemptoribus, sub quibuscumque tenoribus

et formis, ac cum quibusvis etiam derogatorijs derogatorijs, alijsque efficacissimis et insolitis clausulis, ac irritantibus et alijs decretis, per quoscumque Romanos Pontifices praedecessores nostros, ac etiam nos et Sedem praedictam, etiam concistorialiter, ac de eorumdem cardinalium consilio, etiam per modum statuti et constitutionis perpetuorum, ac motu et scientia similibus, deque apostolicae potestatis plenitudine, vel ad imperatoris, regum, reginarum, ducum, marchionum et aliorum principum instantiam, seu illorum contemplatione, in genere vel in specie, ac alijs quomodolibet etiam iteratis vicibus concessis, etiamsi in eis ac statutis et stabilimentis praedictis caveatur expresse vel tacite, quod Urbis nisi originariis civibus romanis ac civium eorumdem filiis conferantur, quodque nonnullarum ecclesiarum beneficia, nisi per personas illustres vel nobiles, ac etiam originarios cives, aut alijs certo modo in illis expresso qualificados obtineri non possint, et nulli in cives Urbis ac civitatum, oppidorum, terrarum et locorum huiusmodi admitti, seu illorum privilegijs uti possint, nisi prius in dictis civitatibus, oppidis, terris et locis per certum tempus habitaverint, seu etiam in illis bona etiam stabilia forsitan ad certum valorem ascendente possederint, quodque praeceptoriae et alia beneficia quaecumque dicti hospitalis tam ex eius institutione quam ex stabilimentorum praedictorum dispositione pensionibus clericis saecularibus et alijs personis etiam apostolica auctoritate reservandis gravari non possint, quodque stabilimentis et privilegijs praedictis, etiam vigore implicitae derogationis latissime extendendae, etiam per quascumque litteras apostolicas et quasvis etiam derogatorijs derogatorias, efficaciores et

incolitas clausulas, derogari non possit, nec derogatum censetur nisi derogatio huiusmodi de consilio cardinalium eorundem fiat, et tunc demum magistri et conventus praedictorum ad id accedat assensus, sintque litterae derogationis huiusmodi etiam per dictum magistrum subscriptae, ac illi et praefato conventui per diversas in formâ Brevis aut alias litteras diversis temporibus cum certis intervallis praesentatas intimatae, et non alias nec alio modo, et semper in omnibus quae sic fient etiam de simili consilio derogationibus sit apposita clausula quod illarum effectum sortiantur de consensu magistri et conventus praedictorum, et non alias nec alio modo, quodque ipsi exactores et appallatores decimas, pedagia et onera huiusmodi etiam ab exemptis exigere, et illos ad solutionem seu contributionem cogere et compellere possint seu debeant; quibus omnibus, illorum omnium tenores, ac si¹ de verbo ad verbum insererentur, praesentibus pro expressis habentes, illis alias in suo robore permansuris, hac vice dumtaxat, in genere et in specie, ad effectum praesentium sufficienter et expresse derogamus, ac derogatum esse decernimus, quodque vos primam non feceritis in ecclesiis huiusmodi personalem residentiam consuetam; ceterisque contrariis quibuscumque.

§ 13. Volumus autem, quod, antequam gratiâ creationis in nostros et Sedis Apostolicae notarios vobis ut supra factâ perfrui valeatis, in manibus alicuius personae in dignitate ecclesiastica constitutae professionem fidei iuxta articulos pridem a Sede praedictâ propositos expresse emittere et solitum fidelitatis iuramentum praestare omnino teneamini;

¹ Particulam si nos addimus (R. T.).

§ 14. Quodque praesentium transumptis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis et sigillo personae in dignitate ecclesiastica constitutae munitis, eadem prorsus fides ubique adhibeatur in iudicio et extra, quae adhiberetur ipsis praesentibus si forent exhibitae vel ostensae.

Transumptis
harum litterarum
danda fides.

§ 15. Ceterum volumus pariter atque decernimus, ut illis ex vobis, quibus similes testandi de bonis ac pensiones transferendi facultates a Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris, quorum respective etiam familiares continui commensales erant, concessae fuerunt, praesentes litterae quoad facultates testandi de bonis et transferendi pensiones huiusmodi minime suffragentur.

Exceptio.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxvi augusti MDCCXXXV, pontificatus nostri anno vi.

Dat. die 26 augusti 1735, pontif. anno. vi.

CLXVI.

Revocatio et annullatio duarum epistolarum pastoralium bonae memoriae Francisci episcopi Pekinensis datarum die vi iulii et xxiii decembris MDCCXXXIII circa Ritus Sinenses editarum, reservatâ insuper S. S. et Sedi Apostolicae facultate aperiendi fidelibus illarum partium mentem suam super rebus huiusmodi materiam respicientibus.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Apostolicae sollicitudinis nobis divinitus commissae ratio nos admonet, ut ea, quae christianae religionis catholicaeque fidei propagationi ac incrementis quacumque ratione obsistere posse dignoscuntur, quantum nobis ex alto con-

Prooemium.

Professio fidei
aliis emittenda.

ceditur, recidere ac e medio tollere studeamus.

Ex publicatione praedictarum pastoralium discordiarum inter missionarios exortae sunt.

§ 1. Cum itaque, sicut ad apostolatus nostri notitiam pervenit, occasione binarum epistolarum, quas pastorales vocant, bonae memoriae Francisci, dum viveret, episcopi Pekinensis nuper defuncti, die vi iulii et xxiii decembris anni mdccxxxiii circa ritus Sinenses editarum, graves in imperio Sinarum inter apostolicos illarum partium missionarios exortae fuerint dissensiones, quae uberes fructus, quos sancta mater Ecclesia ex assiduo operariorum in illam agri dominici partem missorum labore praestolatur, impedire aut morari possent:

Ex revocatione Clementis.

§ 2. Nos, ut pristina inter eosdem missionarios pax et animorum concordia, sublatis quibusvis dissidiis, restituatur, de opportuno in praemissis remedio providere volentes, ac epistolarum praedictarum tenores, et alia quaecumque etiam specificam et individuum mentionem et expressionem requirentia, praesentibus pro plene et sufficienter expressis et exacte specificatis habentes, de nonnullorum venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium, qui iussu nostrae epistolas ipsas sedulo ac diligenter examinarunt, consilio, ac etiam motu proprio et ex certa scientia et matura deliberatione nostris, deque apostolicae potestatis plenitudine, binas memorati Francisci episcopi Pekinensis epistolas pastorales praefatas, ac poenas et alia quaecumque in eis contenta, cum omnibus et singulis inde secutis et forsitan quodcumque secuturis, penitus et omnino nulla, invalida et irrita, nulliusque prorsus roboris et momenti esse et perpetuo fore, tenore praesentium declaramus; et nihilominus ad maiorem cautelam, et quatenus opus sit, illa omnia et singula motu, scientia, deliberatione et potestatis plenitudine paribus harum serie itidem

perpetuo revocamus, cassamus, irritamus, annullamus et abolemus, viribusque et effectum penitus et omnino vacuas¹, ac pro revocatis, cassis, irritis, nullis, invalidis et abolitis, viribusque et effectum penitus et omnino vacuis semper haberi volumus: nobis insuper et Apostolicae Sedi reservantes facultatem christifidelibus in eodem regno degentibus aperiendi nostram et dictae Sedis mentem post maturam itidem habitam deliberationem super rebus quae huiusmodi materiam respiciunt.

§ 3. Decernentes, ipsas praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, et ab omnibus et singulis, ad quos quomodolibet spectat et pro tempore quodcumque spectabit, praesertim vero archiepiscopis, episcopis, vicariis, provincialibus et missionariis apostolicis tam saecularibus, quam cuiusvis Ordinis, Congregationis, Instituti et Societatis etiam lesu regularibus in supradicto Sinarum regno nunc et pro tempore existentibus inviolabiliter et inconcusse observari, sicque et non aliter in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac eiusdem S. R. E. cardinales, etiam de latere legatos et Sedis praefatae nuncios, aliosve quoslibet quacumque praecminentiam et potestate fungentes et functuros, sublata eis et eorum cuilibet quavis aliter iudicandi et interpretandi facultate et auctoritate, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari. In contrarium facientibus, non obstantibus quibuscumque.

Invalidationis firmatae.

¹ Aptius lege *vacuamus* (R. T.).

Hei-
rationis
sumptis
fides.

§ 5. Volumus autem ut ipsarum praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiastica dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides in iudicio et extra adhibeatur, quae praesentibus ipsis adhiberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxvi septembris mdccxxxv, pontificatus nostri anno vi.

Dat. die 26 septembris 1735, pontif. anno vi.

CLXVII.

Confirmatio decreti Congregationis episcoporum et regularium, quo statuitur, presbyteros Congregationis S. Hippolyti in partibus Indiarum non posse habere in religione aliquam praelaturam.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Ex praescri-
pto regulae
unus tantum
sacerdos esse
debet.

§ 1. Nuper, pro parte dilectorum filiorum fratrum definitorii generalis Congregationis Charitatis sub titulo S. Hippolyti martyris in civitate Mexicana aliisque partibus Indiarum Occidentalium a felicis recordationis Innocentio Papa XII praedecessore nostro in religionem erectae, Congregationi venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium negotiis et consultationibus episcoporum et regularium praepositorum exposito, quod, cum per constitutiones dictae Congregationis fratrum auctoritate apostolica confirmatas caveretur illius fratres esse debere laicos, utpote deputatos assistentiae aegrotorum in hospitalibus degentium, et in unaquaque domo unum tantum ad presbyteratum promoveri posse, sed deinde comper-

tum fuisset unum dumtaxat presbyterum spiritualibus necessitatibus hospitalium et aegrotorum huiusmodi non sufficere, die xxx septembris mdccxxix praefata Congregatio cardinalium, referente dilecto filio nostro Ludovico eiusdem S. R. E. cardinali Belluga et Moncada nuncupato, indulserat ut duo in singulis hospitalibus praedictis esse possent presbyteri, et in domibus matricibus tres, sub diversis tamen conditionibus: nimirum quod nullus promoveretur ad sacros ordines nisi saltem sex annos professionis in religione iuxta dictas constitutiones habuisset, et, ad effectum se promovendi ad presbyteratum, directe vel indirecte uti valeret intercessionem seu mediationem alterius personae pro licentia a superiore vel definitorio generali dictae Congregationis obtinenda, sed proponendus esset eidem superiori generali a superiore et capitulo conventualibus domus, cui de presbytero providendum veniret; ipsique superior et capitulum conventuales superiori et definitorio generali indicare deberent personas, quas huiusmodi gradum promereri crederent, et, si quispiam aliter ad presbyteratum promotus fuisset, suspensionem a divinis ipso facto incurreret, a qua nonnisi per Summum Pontificem pro tempore existentem absolvi posset; quodque in singulis conventibus nequirent esse plures quam duo presbyteri, exceptis domibus matricibus, ut praefertur, in quibus tres permittebantur, ita ut, si quis ultra hunc numerum ad presbyteratum promoveretur, si id eveniret ex propria culpa, tamdiu suspensus remaneret, donec aliquis locus per obitum presbyteri vacaret; superiores vero, qui hoc permisissent, post expletum officium voce activa et passiva privati essent, presbyteri autem sacrosanctum missae sacrificium iuxta

intentionem prioris localis et obligationes communitatis illius domus celebrare et applicare, quatenus pro celebratione eiusmodi aliquam eleemosynam receperant, illam tradere tenerentur ipsi priori locali, ubi missae celebrarentur, vel cui subesset ille qui extra conventum celebrasset, sub poenis adversus proprietarios inflictis; sicque promoti in omnibus observare deberent vitam regularem, et deferre coronam ad instar sacerdotum Ordinis sancti Iohannis Dei, nec valerent vel ad breve tempus aliquam praelaturam obtinere in religione, nisi ex dispensatione apostolica, sed tantum esse possent discreti conventuum, magistri novitiorum et assistentes provinciae; ac demum quod, si aliquis presbyter aegrotus in aliquo hospitali praedictae Congregationis fratrum ante obitum peteret admitti ad illius habitum regularem, posset dictus superior generalis cum suo definitorio dare licentiam alicui ex prioribus localibus eum admittendi, accedente consensu communitatis, quamvis in ea domo iam duo; vel in matrici tres presbyteri extarent: cumque postmodum supradictae Congregationi cardinalium renunciatum fuisset in religione praefata non adesse provinciae assistentes, ipsa Congregatio cardinalium die xv martii MDCCLXXI, ad relationem memorati Ludovici cardinalis, rescripserat promotos ad sacros ordines non posse habere aliquam praelaturam in dicta religione nisi ex apostolica dispensatione, sed tantum esse posse discretos conventuum et magistros novitiorum, non vero provinciae assistentes:

Statutum tam-
modum ut huius-
modi presbyteri
non nisi conventu-
um discreti
esse possint et
magistri novi-
tiorum.

Sed contra
repositum.

Et in eadem expositione subiuncto, quod nec praefatum officium discretorum conventuum in praedicta Congregatione fratrum reperiretur, ut constat ex praedictis constitutionibus num. XIII, ubi, enumeratis officiis minoribus quarumlibet

domorum, nihil de hisce discretis habetur propterea¹, quod presbyteri esse valeant magistri novitiorum, contrarium videretur constitutionibus praefatis, utpote in quibus sub numero XII referuntur omnia officia eiusdem religionis conferenda in capitulo generali, inter quae quidem recensetur illud magistri novitiorum, sed cap. IV dictarum constitutionum declaratur presbyteros in eodem capitulo generali solum frui posse voce activam, quatenus ob antianitatem eis competat, minime vero voce passivam, ac propterea promoveri nequeunt ad officia ipsius religionis, et, postquam aliqua officia ibidem enumerata sunt, nempe fratris maioris, consilarii, procuratoris generalis et fratris localis, subditur quod neque promoveri possint ad officia maiora religionis praefatae, quod de dicto officio magistri novitiorum, utpote inter officia eiusdem religionis supra recensito, utique verificari debet; accedente insuper, quod praedicto cap. IV praescribatur ut presbyteri administrent sacramenta aegrotantibus, et ex causa huius spiritualis assistentiae infirmis exhibendae perspectum fuerit eos eximendos esse ab aliis officiis, ne illa exercentes a praecipuo eorum circa aegrotos munere deficiant; officium autem magistri novitiorum eos² assidue occupatos³ detineret in recta eorumdem novitiorum institutione, unde propemodum impossibile esset, ut, curam gerens dictorum novitiorum, debitam aegrotis assistentiam praebere posset; sicque a spiritu dictarum constitutionum alienum dignoscatur ut presbyteris praefatis officium magistri novitiorum exercere liceat:

Ac proinde praedictae Congregationi cardinalium, nomine fratrum definitio-

Petito.

¹ Legerem praeterea (H. T.).

² Potius lege eum (R. T.).

³ Cohaerenter lege occupatum (R. T.).

rii generalis huiusmodi, supplicato ut decernere vellet quod presbyteri religionis praedictae nequeant esse neque discreti conventuum, neque magistri novitiorum, sed quoad ipsos, circa facultatem obtinendi gradus, servetur id quod in supradictis constitutionibus a Sede Apostolica approbatis praescribitur:

Emanavit ab eadem Congregatione cardinalium decretum tenoris qui sequitur, videlicet:

Decretum Congregationis episcoporum et regularium hac super re.

Sacra Congregatio eminentissimorum et reverendissimorum S. R. E. cardinalium negotiis et consultationibus episcoporum et regularium praeposita, referente eminentissimo domino cardinali Belluga ponente, re mature perpensa, praevio recessu a decisis sub die xv martii mdccxxxi, iterum decrevit quod promoti ad sacros ordines nequeant habere in religione, neque ad breve tempus, aliquam praelaturam, nisi cum apostolica dispensatione, nec esse possint assistentes provinciae nec magistri novitiorum, sed dicti sacerdotes primi advocentur pro consilio in omnibus congregationibus et coadunationibus faciendis in singulis conventibus. Romae xiiii iulii mdccxxiv. — Card. FRANCISCUS BARBERINUS. — C. archiepiscopus Calcedonensis, secretarius. *Loco † sigilli.*

Confirmat.

§ 2. Cum autem, sicut supradicti fratres definitorii generalis nobis subinde exponi fecerunt, ipsi decretum huiusmodi, quo firmiter subsistat et exactius servetur, apostolicae confirmationis nostrae patrocínio communiri summopere desideret: nos, ipsos exponentes specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, illorumque singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutos fore censentes,

supplicationibus eorundem exponentium nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, decretum praeinsertum, auctoritate nostra apostolica, tenore praesentium, confirmamus et approbamus, illique inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiicimus.

Clausulas.

§ 3. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac ab illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, in omnibus et per omnia inconcusse observari, eisque respective plenissime suffragari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Obstantium derogatio.

§ 4. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon, quatenus opus sit, dictae Congregationis fratrum, aliisque quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die vii octobris mdccxxv, pontificatus nostri anno vi.

Dat. die 7 octobris 1735, pontif. anno vi.

F. card. OLIVERIUS. - P. L. JACQUET.

CLXVIII.

Confirmatio decreti particularis Congregationis cardinalium, quo resolvuntur nonnulla dubia super reformatione constitutionum Ordinis B. Mariae de Monte Carmelo, necnon super quibusdam aliis exortis quaestionibus occasione earundem constitutionum.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

A Congregatione nonnullorum cardinalium emanatum decretum,

§ 1. Nuper a particulari Congregatione nonnullorum ex venerabilibus fratribus nostris S. R. E. cardinalibus emanavit, super reformatione constitutionum Ordinis B. Mariae de Monte Carmelo, necnon super quibusdam aliis exortis quaestionibus occasione earundem constitutionum, a nobis deputatâ, decretum tenoris qui sequitur, videlicet:

Quo statuto, In Congregatione a sanctissimo domino nostro deputatâ eminentissimorum et reverendissimorum dominorum cardinalium Petra, Gotti, Guadagni, Spinelli et Del Giudice pro reformatione constitutionum Ordinis S. Mariae de Monte Carmelo, necnon super quibusdam aliis exortis quaestionibus occasione earundem constitutionum, habitâ die xxiv aprilis mdcclxxxv, in qua interfuerunt iidem eminentissimi et reverendissimi domini, propositum fuit:

i. An prior provincialis provinciae romanae possit exercere iurisdictionem in conventibus S. Martini ad Montes, S. Mariae in Transpontinâ, et S. Antonii civitatis Praeneste;

Priorem provinciae Romanae non habere iurisdictionem super conventibus hic expressis.

Et resolutum fuit, supradictos conventus esse quidem in provinciâ romanâ, non tamen de provinciâ, ac proinde nullam in iisdem conventibus posse provincialem exercere iurisdictionem: hocque esse inserendum in novâ compilatione constitutionum.

ii. An et qui magistri existentes in dictis conventibus, licet sint alterius provinciae, possint gaudere iure suffragii in capitulis provincialibus eiusdem romanae provinciae;

In capitulis Et resolutum fuit, firmâ remanente dis-

positione constitutionum quoad magistros exteros aliosque qui in provinciis a romanâ distinctis degentes iure suffragii gaudent in huiusmodi capitulis provincialibus, esse tamen easdem constitutiones reformandas quoad provinciam romanam; scilicet quod in eius capitulis provincialibus iure suffragii frui possint dumtaxat prior generalis, unâ cum eius secretario sive socio ab eo nominando, et procurator generalis, magistri provinciae romanae quamvis in supradictis tribus conventibus commorentur, necnon priores eorumdem conventuum et lector Sapientiae, ac regens Transpontinae, ita tamen ut hi quinque postremi vocales teneantur solvere taxam consuetam pro capitulo provinciali; votum autem in definitorio provinciali non habent nisi solum pater generalis cum socio et procurator generalis.

provincialibus provinciae Romanae ius suffragii qui habent.

iii. An sociis generalibus competat ius suffragii in capitulo generali tantum, seu potius etiam in definitorio generali;

Sociis generalibus ius suffragii competere in capitulo et definitorio generali.

Et resolutum fuit competere tam in capitulo quam in definitorio generali.

iv. An iisdem sociis generalibus competat etiam praeeminentia in religione;

Iisdem sociis quando competit praeeminentia.

Et resolutum fuit non competere, nisi quando sunt in actuali exercitio muneris, sive scilicet in actu visitationis, sive in capitulo et definitorio generali, sive in quibuscumque aliis peragendis occasione muneris ipsis demandati in Brevi felicitis recordationis Benedicti PP. XIII; extra tamen hos casus praeeminentiam in religione ipsis competere iuxta antianitatem professionis et gradus; atque ita et non aliter statui debere in novâ compilatione constitutionum: modernis autem sociis, attentâ possessione, esse ex gratiâ concedendam praeeminentiam in religione usque ad exitum officii. Pro quorum omnium confirmatione esse supplicandum Sanctissimo.

Et factâ per eminentissimum et reverendissimum dominum cardinalem Spinelli de praedictis relatione Sanctissimo in audientiâ habitâ die xxv aprilis mdcclxxxv, Sanctissimus omnia benigne approbavit, nec iuxta eorum tenorem novas consti-

i Videtur legendum necnon (R. T.).

tutiones reformari mandavit; addito¹ etiam quod ex-ecicii generales, licet Romae degant et sint conventuales vel in conventu S. Martini vel S. Mariae in Transpontina, adhuc tamen iure suffragii non gaudeant in electione vicarii generalis, mortuo, amoto vel promotio patre generali. — V. card. PETRA; F. V. L. card. GOTTI Ordinis Praedicatorum, F. I. A. card. GUADAGNI, I. card. SPINELLUS, N. card. IUDICE.

Ita reperitur in registro autographo decretorum sacrae Congregationis episcoporum et regularium quod asservatur in Secretaria eiusdem. In fidem, etc., hac die II iunii MDCCXXXV. — JOSEPH MARIA archiep. Damascenus, pro-secretarius.

Petita horum
decretorum a-
postolica con-
firmatio.

§ 2. Cum autem, sicut dilectus filius modernus procurator generalis eiusdem Ordinis nobis subinde exponi fecit, ipse decretum huiusmodi, quo firmiter subsistat et servetur exactius, apostolicae confirmationis nostrae patrocinio communiri plurimum desideret:

Conceditur.

§ 3. Nos, specialem ipsi procuratori generali gratiam facere volentes, eumque a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, supplicationibus eius nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, decretum praeinsertum, et omnia et singula in eo contenta et expressa, auctoritate apostolica, tenore praesentium, approbamus et confirmamus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiciamus, ac omnes et singulos iuris et facti defectus, si qui desuper quomodolibet intervenerint, supplemus.

Eorumdem
firmas.

§ 4. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et effi-

¹ Male ed. M. legit *audito* pro *addito* (R. T.).

caces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

§ 5. Non obstantibus praemissis, ac constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ac, quatenus opus sit, dicti Ordinis, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis, in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac ad verbum insertis habentes, illis alias in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Derogatio
contrariorum.

§ 6. Volumus autem ut earundem praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiastica dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides ubicumque locorum tam in iudicio quam extra adhibeatur, quae praesentibus adhiberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Fides tran-
sumptorum.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die IX decembris MDCCXXXV, pontificatus nostri anno VI.

Dat. die 9 decembris 1735, pontif. anno VI.

F. card. OLIVERUS.

CLXIX.

*Extensio indulti circa subsidia dotalia
puellis conservatorii delle Zoccollette
nuncupatis distribui solitis.*

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Septem dota-
lia his puellis
dantur quotan-
nis.

§ 1. Cum, sicut accepimus, iam inde a tempore pontificatus felicitis recordationis Clementis PP. XI praedecessoris nostri, puellis conservatorii Ss. Clementis et Crescentini vulgariter *delle Zoccollette* in regione Regulae nuncupatis de Urbe annua septem subsidia dotalia unâ cum vestibus dari solitis assignata fuerint, quatuor scilicet ex *carcarasiis* etiam nuncupatis per capitulum et canonicos basilicae S. Petri, et reliqua tria ex aliis subsidiis dotalibus per archiconfraternitatem Annunciationis Beatae Mariae Virginis in ecclesia eiusdem S. Mariae super Minervam de Urbe praefata erectam quotannis distribui solitis; dictaeque puellae, ad subsidia huiusmodi a nostro et pro tempore existentis Romani Pontificis elemosynario secreto, qui eiusdem conservatorii superior seu praelatus existit, itidem pro tempore unâ cum deputatis nominatae, processionibus aliisve publicis functionibus occasione distributionis eiusmodi subsidiorum fieri consuevis, non sine earum incommodo antehac interesse debuerint; septem vero dumtaxat subsidia praefata haud satis esse dignoscantur prae ingenti numero puellarum pro tempore pariter degentium in dicto conservatorio, quod, cum institutum fuerit pro puellis periclitantibus, quarum pudicitiae nemo esset qui curam haberet, ac perpaucae admodum nubant, aditus seu ingressus in idem conservatorium aliis puellis similiter periclitantibus praeccludatur:

Modus illo-

§ 2. Nos, pium institutum huiusmodi,

quantum cum Domino possumus, adiuvare, puellasque praefatas, quo facilius statui suo consulere valeant, specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, ac illarum singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censes, necnon quarundam recolendae memoriae Innocentii PP. XII praedecessoris quoque nostri favore puellarum alterius conservatorii sub titulo Divinae Providentiae de eadem Urbe in simili forma Brevis die vi martii MDCXCIV expeditarum litterarum, ac testamentorum et aliarum dispositionum quorumcumque testatorum et piorum largitorum tenores, et alia quaecumque etiam specificam et individuum mentionem et expressionem requirentia, praesentibus pro plene et sufficienter expressis et insertis habentes, auctoritate apostolica, tenore praesentium, statuimus et ordinamus: quod deinceps perpetuis futuris temporibus, in destinatione et assignatione septem subsidiorum dotalium puellis supradicti conservatorii Ss. Clementis et Crescentini pro tempore faciendâ, modus et forma, in dictis litteris Innocentii praedecessoris pro distributione eiusmodi subsidiorum puellis memorati conservatorii sub titulo Divinae Providentiae praescripti, in omnibus et per omnia serventur, itaut puellae primodicti conservatorii, ad aliquod ex eisdem septem subsidiis dotalibus per dictum elemosynarium secretum et deputatos pro tempore nominatae, nullatenus a praefatis capitulo et canonicis dictaeque archiconfraternitatis officialibus et

ministris de cetero visitantur, nec processationibus aliisque publicis functionibus praefatis interesse teneantur, sed, intra ipsum conservatorium, sanctissimum Eucharistiae sacramentum sumere, aliaque pia opera, sive a dictorum capituli et archiconfraternitatis statutis, sive a quorumvis testatorum et piorum largitorum, qui eadem subsidia praestari mandarunt, dispositionibus iniuncta, adimplere possint et debeant; puellaeque sic nominatae ex iusta et rationabili causa per eundem elemosynarium secretum mutari seu variari valeant; ac subsidia illa, quae ob mutationem seu variationem eiusmodi, vel puellarum quibus destinata fuerant obitum ante matrimonium vel monachatum secutum, sive ob cessionem seu renunciationem ab eis factam, eo quod e praedicto conservatorio discedere noluerint, aut alias, effectum suum sortita non fuerint, aliis puellis eiusdem conservatorii per ipsos elemosynarium secretum et deputatos pariformiter nominandis assignentur; nec ista in eorum numero, quae eisdem puellis quotannis assignari debent, ut praefertur, computari, sed alia subsidia novaeque cedulae eorum promissoriae a supradictis capitulo et canonicis dictaeque archiconfraternitatis officialibus et ministris, ad favorem aliarum puellarum eiusdem conservatorii per eosdem elemosynarium secretum et deputatos sicut praemittitur subrogandarum seu nominandarum¹, ipsique elemosynario, modo et forma praedictis, consignari debeant.

§ 3. Porro praemissa omnia et singula locum quoque habere, ac observari volumus et mandamus, quoad quaecumque alia subsidia dotalia quae puellae primodicti conservatorii a capitulo et

canonicis ac archiconfraternitate praefatis, ultra praefixum numerum septenarium huiusmodi, vel a quibusvis aliis archiconfraternitatibus, confraternitatibus, societatibus, communitatibus, ecclesiis, collegiis, oratoriis, hospitalibus, capitulis, locis piis, ac etiam privatis personis quomodolibet iam obtinuerunt, seu quandocumque obtinuerint. Praeterea puellis eiusdem conservatorii Ss. Clementis et Crescentini, utpote in regione Regulae ut praefertur positi, quod ad subsidia dotalia puellis dictae regionis a testatoribus piisque largitoribus destinata seu relicta, ab iis ad quos eorum distributio pertinet, una cum aliis puellis eiusdem regionis admitti et imbussulari debeant, illaque consequi et obtinere libere et licite possint et valeant, perinde ac si in dicta regione natae, ceterisque qualitatibus ad illa consequenda requisitis, quas sola permanentia in dicto conservatorio supplere itidem statuimus, praedictae forent, auctoritate et tenore praefatis concedimus et indulgemus.

§ 4. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac puellis dicti conservatorii Ss. Clementis et Crescentini in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

§ 5. Non obstantibus quorumcumque testatorum ac piorum largitorum praefatorum etiam ultimis voluntatibus et

*Praesentis
statuti firmitas.*

*Obstantium
derogatio.*

¹ Videtur deesse assignari et expediri (R.T.).

¹ Idem modus
in aliis quoque
dotaliis subse-
ditis servandus.

dispositionibus, quas propter praemissa sufficienter et expresse commutamus, ac quibusdam eiusdem Clementis praedecessoris in pari formâ Brevis litteris facultatem eligendi ac visitandi puellas praefatas ratione quatuor subsidiorum carcarasiorum nuncupatorum ipsis capitulo et canonicis attribuentibus, aliisque constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis aliâ firmitate roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Fides transumptorum.

§ 6. Volumus autem ut ipsarum praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, et manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiasticâ dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides in iudicio et extra adhibeatur, quae praesentibus ipsis adhiberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Exceptio.

§ 7. Ceterum non intendimus per easdem praesentes litteras supradictum conservatorium in aliquo approbare.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xx decembris MDCCXXXV, pontificatus nostri anno VI.

Dat. die 20 decembris 1735, pontif. anno VI.

F. card. OLIVERIUS.

CLXX.

Dismembratio officii criminalis ab officiis civilibus notariorum tribunalis eminentissimi almae Urbis vicarii, et eiusdem respective nova erectio, nec non confirmatio facultatum dicti eminentissimi vicarii procedendi tam in Urbe quam in suburbiis et districtu in causis omnibus civilibus et criminalibus et mixtis, mere laicalibus et profanis, et inter mere laicos, ad instar aliorum Romanae Curiae iudicum ordinariorum.

Clemens episcopus,
servus servorum Dei,
ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Romanus Pontifex, providus iustitiae vindex, ex debito apostolicae sibi ex alto commissae sollicitudinis munere libenter intendit ad ea, per quae iustitia ipsa ubique locorum, praesertim in almâ Urbe nostrâ, ab expertis probisque administrata viris, debitum sibi exigat cultum, illumque sic exigens, morum consulat probitati, ac criminum obsit pravitati; et, ut pravitas ipsa attentius detegatur, detectaque sibi debitas experiatur poenas, vetera separat et nova erigit actorum criminum aequâ lance existimandorum loca, aliaque desuper opportuna decernit, prout ad eliminandam pravitatem huiusmodi conspicit in Domino salubriter expedire.

§ 1. Exposuit siquidem nobis nuper dilectus filius noster Ioannes Antonius tituli Ss. Silvestri et Martini in Montibus nuncupati de Urbe S. R. E. presbyter cardinalis Guadagni nuncupatus, noster secundum carnem ex sorore germanâ nepos, nosterque in Urbe praefatâ eiusque districtu vicarius in spiritualibus generalis, quod aliâs felicitis recordationis Benedictus Papa XIII, praedecessor noster, ad promovendum Romanae Cu-

Benedictus XIII statuit quolibet decennio deputandum esse aliquem cardinalem ad visitandam Urbis tribunalia.

riae tribunalium bonum, per suam constitutionem quae incipit *Summi apostolatus officium*, statuit et decrevit, quod, ad litigantium indemnitati et solatio consulendum, singulis decenniis per successores suos Romanos Pontifices pro tempore existentes unus ex eisdem S. R. E. cardinalibus deligeretur, qui iudicarias Romanas Curias (sub certis modo et forma, ac cum plena et libera facultate faciendi, gerendi, corrigendi, exequendi et exequi faciendi omnia et singula quae ad earumdem curiarum, aut alicuius earum, illarumque officiorum notariatuum, notariorum, cursorum et mandatariorum correctionem, si qua opus esset, et pauperum litigantium iuvamen nec non decretorum et sanctionum super dictarum Curiarum regimine editarum implementum pertinentia¹) apostolicam auctoritate visitaret; et ut visitatio huiusmodi omniaque in ea gerenda celeriore et propitiore² sortirentur executionem, eidem cardinali visitatori, sic ut praefertur electo, ut ipse quaecumque mandata et vivae vocis oracula accepta debitae executioni demandari, eisque firmiter et plene obtemperari facere, aliosque convitatores, iurisperitos, praefatos aut forenses et curiales viros, qui votum consultivum in casibus et rebus ex praefati cardinalis visitatoris arbitrio pendentibus haberent, sibi eligi libere et licite valeret, licentiam eadem apostolicam auctoritate concessit et indulgit; et alias, prout in praefata constitutione, sub datum pridie nonas februarii eiusdem Benedicti praedecessoris pontificatus anno II expeditis³, plenius continetur.

¹ Videretur potius legendum *pertinerent* vel *pertinentia iudicaret* (R. T.).

² Forsan *promptiorem* (R. T.).

³ Potius lege *expedita* (R. T.).

§ 2. Proptereaque dictus Ioannes Antonius cardinalis et vicarius noster, in sui vicariatus exordio, prout circumspectum decet praesidem, suum vicariatus tribunal cumiamque, ad incorruptae iustitiae normam sancte custodiendam, et ad evellenda, si qua reperirentur in iis, absurdorum zizania, visitare cupiens, iustitiamque sitiens, et proxime futuri decenni moras pati nesciens, apud nos humiliter enixeque institit, quatenus sibi, ut ipse per dilectum filium magistrum Ferdinandum Mariam de Rubeis in utraque signaturam nostram referendarium, virum doctrinam rerumque experientiam satis praeditum satisque commendabilem; dictique Ioannis Antonii cardinalis locumtenentem, universam sui vicariatus curiam, cum omnibus et singulis praefatis aliisque ad id necessariis et opportunis facultatibus, visitare facere libere et licite valeret, concedere de benignitate apostolicam dignamur.

§ 3. Nos igitur, expositis praefatis hilari paternoque a nobis acceptis exauditu eisque laudatis in Domino benigne inclinati, petitam licentiam cum omnibus et singulis tam in Benedicti praedecessoris constitutione praefata (quam hic pro expressa ac de verbo ad verbum nihil penitus omisso haberi volumus pro inserta) cardinali visitatori generali eligendo praefato quomodolibet concessis, quas ad eundem Ioannem Antonium cardinalem vicarium extendimus, quam aliis quibuscumque facultatibus ad id necessariis et opportunis, apostolicam auctoritate praefata impartiti fuimus.

§ 4. Et licet ex visitatione a praefato magistro Ferdinando Maria laudabiliter attenteque peracta quamplura ad debitum iustitiae in vicariatus tribunali decorem evererint bona a nobis

Vicarius Urbis hanc sibi visitationem demandari petit respectu sui tribunalis.

Data facultate visitavit.

Notarius vicarii Urbis lites tum civiles tum criminales amplectabatur.

excepta laudatque, nihilominus, pro eo quod quatuor dicti vicariatus Curiae notariatuum officiis, ab Eugenio IV, Alexandro VI et Sixto V Romanis Pontificibus eorum apostolica auctoritate erectis, quae vacabilia existunt, in eorundem officiorum respective erectione tam civilium quam criminalium causarum cognitio concessa fuit, ex permixta causarum huiusmodi cognitione assignata criminales causae sic civilibus permixtae vigilem illam, quae eas decet et quam ad procurandum publicum iustitiae morumque probitatis bonum exigunt, indaginem difficiliter obtinent.

Satius docetur materiam huiusmodi discernere, et notariatuum pro causis criminalibus tantum erigere.

§ 5. Et attendentes quod, si criminalium causarum cognitio a causarum civilium cognitione, ut infra, a nobis (et prout, sicut etiam accepimus, in providis praefati Benedicti praedecessoris, dilecto etiam filio nostro Vincentio tituli S. Honuphrii eiusdem S.R.E. presbytero cardinali Petra nuncupato tunc visitatore generali existente id sibi consulente, fuit votis) ab eisdem quatuor officiis praefatis perpetuo, ut infra, dismembraretur¹, eaque sic dismembrata, unum novum notariatuum officium criminale nuncupandum pro causis criminalibus eiusdem vicariatus tribunalis inibi describendis et agendis, ut infra, erigeremus et institueremus, ex dismembratione, erectione et institutione a nobis ut infra faciendis huiusmodi causae criminales inibi debito promoverentur studio, et morum pravitas debitas sibi lueret poenas, et lueretur honestas:

Quatuor notaria vicarii prohibetur in causis criminalibus se ingerere.

§ 6. Nos igitur, ex provida nostri pastoralis officii cura laudabilibus dicti Ioannis Antonii cardinalis vicarii erga bonum causarum criminalium in eius tribunali promovendum votis benigne

¹ Male ut puto edit. Main legit *dismembramus* (R. T.).

annuere volentes, motu proprio et ex certa scientia meraque deliberatione nostris, deque apostolicae potestatis plenitudine, a quatuor notariatuum praedictorum officiis, et eorum quolibet, omnem et quaecumque facultatem quomodolibet scribendi et agendi in quibuscumque causis criminalibus ad dictum vicariatus tribunal quomodolibet spectantibus, eis et eorum cuilibet ab Eugenio, Alexandro et Sixto praedecessoribus praefatis respective in eorum respective erectione quomodolibet concessam, perinde ac si eis et eorum cuilibet nunquam concessa fuisset, sine tamen reliquarum aliarum quarumcumque facultatum ac quorumcumque privilegiorum ac indultorum scribendi et agendi in causis aliisque actis civilibus eis et eorum cuilibet a Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris per eorum respective litteras apostolicas seu in forma Brevis (quarum quidem litterarum respective tenores eisdem praesentibus similiter pro expressis haberi volumus) apostolica auctoritate quomodolibet concessarum (quibus nunc fruuntur et gaudent, et quodlibet eorum fruitur et gaudet, ac quas et quae omnia eis et eorum cuilibet per easdem praesentes eadem apostolica auctoritate approbamus, confirmamus et innovamus, ac, quatenus opus sit, de novo concedimus) praeiudicio (attento etiam quod quatuor officiorum praefatorum, quae, ut praefertur, vacabilia existunt, vacabilitate in huiusmodi modicam eorum detrimenti parte peropportune consultum existit), apostolica auctoritate perpetuo dismembramus, auferimus, delemus, penitusque abolimus.

§ 7. Eaque a nobis per praesentes sic dismembrata, ablata, penitusque abolita, unum novum notariatuum dictae

Novum notariatuum pro causis criminalibus instituit.

vicariatus Curiae officium criminale nuncupandum, ad instar aliorum notariatuum criminalium officiorum Romanae Curiae, quod non vacabile existat, cum omnibus et singulis facultatibus, licentiis ac privilegiis quibus cetera Romanae Curiae notariatuum officia gaudent, ac cuius dispositio ad Ioannem Antonium nostrum et ad pro tempore existentis Romani Pontificis cardinalem vicarium spectet et pertineat, pro uno notario a nostro nunc et pro tempore existentis Romani Pontificis cardinali vicario deputando, qui, privative quoad reliquos alios vicariatus Curiae praefatae notarios, quoscumque processus super causis criminalibus ad vicarii Curiae huiusmodi tribunal spectantibus formare et instruere sciat et valeat ac debeat et teneatur (cum hoc tamen quod nullo modo nulloque praetextu aut quaesito colore in quavis causâ civili ad quemlibet notariorum civilium vicariatus Curiae praefatae se ingerere praesumat, et, si se ingerere praesumpserit, sui notariatus officio privatus existat eo ipso, omnesque et singuli actus, ab eo in causâ civili per eum quomodolibet gesti, in iudicio et extra illud, existant nulli et invalidi, nulliusque roboris et momenti, prout ex nunc per easdem praesentes semper fore et esse decernimus et declaramus), apostolicâ auctoritate perpetuo erigimus et instituimus.

§ 8. Illudque, sic erectum et institutum, omnimodae liberaeque dispositioni, auctoritati et iurisdictioni nostri et Romani Pontificis pro tempore existentis vicarii (ita quod sibi illud locare, dislocare, arrendare, in administrationem concedere, omniaque et singula emolumenta ex eo quomodolibet provenientia in ipsius notariatus officii criminalis nuncupati, a nobis per praesentes

erecti, ministrorumque et inservientium manutentionem, et, si quae, detractis manutentione huiusmodi aliisque expensis, superfuerint, in dicti notariatus officii a nobis per praesentes erecti huiusmodi aliosque pios usus pro eius libero providoque arbitrio convertere, nostrâ vel cuiusvis alterius licentiâ desuper minime requisitâ, liceat¹⁾ eadem apostolicâ auctoritate perpetuo subiiciamus et subiectum esse volumus.

§ 9. Ac insuper cupientes quod praefatus Ioannes Antonius cardinalis vicarius omnimodam liberamque sui vicariatus tam in Urbe praefatâ quam in eius districtu in civiles et criminales causas ad eum quomodolibet spectantes cumulativam cum omnibus aliis iudicibus ordinariis Urbis iurisdictionem pacifice exercere valeat, sibi²⁾ omnes et singulas facultates cardinali Romani Pontificis vicario pro tempore existenti concessas a pluribus Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris, praesertim a Clemente X, Innocentio XIII, et a praefato Benedicto per suum motum proprium desuper editum tenoris sequentis, videlicet:

« *Benedictus episcopus, servus servorum Dei, ad futuram rei memoriam.* In supremo apostolatus solio³⁾, meritis licet imparibus, divinâ dispositione constituti, ex incumbenti nobis pastoralis officii debito ad ea libenter intendimus, per quae almae Urbis nostrae prospero statui et felici directioni opportune consulitur; et propterea, ea quae desuper a praedecessoribus nostris Romanis Pontificibus provide facta fuisse comperimus, partim approbamus et confirmamus,

Præsenti vicario confirmantur facultates alias ei concessae a Pontificibus, ac praesertim a Benedicto XIII.

Benedicti XIII Breve.

Novum officium liberae dispositioni vicarii Urbis reservatur.

¹⁾ Verbum *liceat* nos addimus (R. T.).

²⁾ Ex continuatione syntaxis post sequentem Benedicti XII constitutionem, pronomen *sibi* redundare dignoscitur (R. T.).

³⁾ Confer tom. XXII, pag. 81 (R. T.).

³⁾ Videtur deesse *pertinente* (R. T.).

partim vero, aliis iustis causis ita suadentibus, alteramus et immutamus, ac facultates et iurisdictiones etiam de novo concedimus et indulgemus, aliasque eiusdem officii nostri partes favorabiliter interponimus, prout, rerum, temporum et personarum, illarum praesertim quas in partem apostolicae sollicitudinis evocavit Altissimus, qualitate pensata, conspicimus in Domino salubriter expedire. Sane, cum, sicut accepimus, alias felicitis recordationis Innocentius Papa XIII praedecessor noster officium vicariatus almae Urbis nostrae, tunc suae, et illius suburbiorum et districtus (quod etiam alias piae memoriae Paulus Papa IV etiam praedecessor noster pro uno ex S. R. E. cardinalibus, qui illud per pro tempore existentem Romanum Pontificem sibi concessum¹ absque dispensatione apostolica ad eius vitam obtineret, et per se ipsum, seu ab eo deputatos vicesgerentem et suffraganeum, ac in civilibus et criminalibus locumtenentes, exerceret, de fratrum suorum consilio et communi consensu erexit et instituit, prout in erectione et institutione huiusmodi, et seu forsitan desuper confectis litteris plenius contingitur, quodque alias bonae memoriae Ioannes Dominicus tituli S. Anastasii eiusdem S. R. E. presbyter cardinalis Parracianus nuncupatus, etiam dum viveret, obtinebat), per obitum dicti Ioannis Dominici cardinalis, qui apud Sedem Apostolicam debitum naturae persolverat, vacans, ad prosperum et felicem statum dictae Urbis in spiritualibus dirigendum sollicitis studiis intendens, ad venerabilem fratrem nostrum, tunc suum, Fabritium eiusdem S. R. E. cardinalem Paulutium nuncupatum tunc episcopum Albanensem, ob eximiae circumspectionis industriam, cognitam bonitatem, singularem integritatem, at-

¹ Edit. Main. legit *concessam* (R. T.).

que prudentiam, fidei ac iustitiae zelum, et in magnis et arduis praefatae S. R. E., cuius honorabile membrum existit, negotiis experientiam comprobata, necnon alia multiplicium virtutum bona, quibus eius personam illarum largitor Altissimus insignivit, direxerit² oculos suae mentis, certam in Domino spem habens quod idem Fabritius cardinalis, gratia ei assistente divina, officium ipsum summam cum prudentia, fidelitate et diligentia exercuisset, motu suo proprio, non ad eiusdem Fabritii cardinalis vel alterius pro eo eidem Innocentio praedecessori super hoc oblatae petitionis instantiam, sed ex certa scientia meraque deliberatione suis, deque apostolicae potestatis plenitudine, officium praefatum, sic vacans, eidem Fabritio cardinali per eum, quoad viveret, aut vicesgerentem et suffraganeum, necnon locumtenentem seu locumtenentes suum vel suos exercendum, cum omnibus et singulis privilegiis, facultatibus, praerogativis, praeeminentiis, immunitatibus, exemptionibus et iurisdictionibus, necnon honoribus et oneribus, iuribus³ et emolumentis solitis et consuetis, quibus alii, qui⁴ in dicta Urbe, suburbiis et districtu praedictis vicarii in spiritualibus Romanorum Pontificum praedecessorum pro tempore fuerant, uti, potiri, frui et gaudere potuerunt, seu etiam debuerunt, auctoritate apostolica concesserit et assignaverit; et alias, prout in dicti Innocentii praedecessoris in forma Brevis sub annulo Piscatoris desuper expeditis litteris etiam plenius continetur: et subinde, singularum dictarum litterarum aliorumque praemissorum tenores etiam veriores ac datas, necnon a-

² Ex syntaxis ratione leg. *dirigens* (R. T.).

³ Pessime edit. Main. legit *iudicibus* pro *iuribus* (R. T.).

⁴ Vocem *qui* nos addimus (R. T.).

liss dicti officii vicariatus facultates, si quae essent, pro expressis habens, antedictas officii vicariatus huiusmodi concessionem et assignationem motu, scientia et potestatis plenitudine similibus confirmaverit et approbaverit, ipsamque Fabritium cardinalem in suum et Urbis ac suburbiorum et districtus praefatorum vicarium, necnon Romanae Curiae iudicem ordinarium denuo assumptis, constituerit et deputaverit, curam, regimen et administrationem, liberumque exercitium officii huiusmodi ei¹ plenarie committendo cum potestate omnia et singula faciendi, gerendi, disponendi, ordinandi, mandandi et exequendi, quae ad huiusmodi vicariatus officium de iure, stylo, consuetudine, aut aliis quomodolibet pertinere dignoscantur, et quae omnes alii vicarii Urbis, eiusque suburbiorum et districtus, de iure, stylo et consuetudine, vel alio quocumque modo et titulo dicere, facere, ordinare, mandare et exequi potuerant et debebant, ac etiam vigore omnium et quorumcumque indultorum, facultatum et privilegiorum per felicis recordationis Paulum II, Clementem VII, Paulum III, Iulium item III, Pium IV, Pium V, Clementem VIII, aliosque Romanos Pontifices praedecessores nostros, tunc suos, concessorum ante litteras piae memoriae Pauli Papae V etiam praedecessoris nostri, tunc sui, sub datum kalendas martii anno Incarnationis dominicae MDCXI super reformatione tribunalium Urbis editas, cum declarationibus tamen et reformationibus contentis in litteris praedicti Pauli Papae V (iuxta quas, et respective ad eum statum in quo erant ante easdem litteras praefati Pauli V, etiam felicis recordationis Innocentius Papa XII, similiter praedecessor noster, tunc dicti Innocentii XIII, in

¹ Edit. Main. legit *vel pro et* (n. r.).

~~sub~~ litteris super suppressione, abolitione et abrogatione tribunalium et iudicum Urbis ex privilegiis constitutorum editis et expeditis xv kalendas octobris anno eiusdem Incarnationis dominicae MDCXII, facultates, privilegia et indulta, vicario pro tempore existenti dictae Urbis eiusque districtus per praefatos et alios etiam posteriores Romanos Pontifices concessa, in iudicialibus dumtaxat reduxit seu reformavit), quas quidem constitutiones praedecessorum huiusmodi, omniaque et singula indulta, facultates et privilegia ut praefertur officio vicariatus huiusmodi et vicariis praefatis in iudicialibus concessa, et ad statum praefatum redacta, quarum et quorum¹ tenores idem Innocentius XIII praedecessor pro plane et sufficienter expressis et insertis habens, salvas et salva esse, ac in suo firmitatis robore permanere declaravit, voluit et mandavit; necnon illas² et illa, pro potiori cautela, apostolica auctoritate approbaverit, confirmaverit et innovaverit, eisdemque modis et formis, quibus ab ipsis praedecessoribus suis emanarunt, similibus auctoritate et tenore de novo perpetuo concesserunt et indulserit, firmis quoque et illaesis remanentibus aliis indultis, privilegiis et facultatibus iudicialia non respicientibus eidem pro tempore existenti vicario et vicariatus officio quandocumque etiam post dictam reformationem praefati Pauli V praedecessoris concessis et reformatis et quomodolibet competentibus; ipsumque Fabritium cardinalem in praefata Urbe eiusque suburbiis et districtu vicarium in praemissis et circa praemissa, seu quodlibet³ ipsorum, competentem iudicem

¹ *Legerem earum et eorum* (n. r.).

² Male in loc. parall. tom. XXII, pag. 83 b legitur ex Main. *alias pro illas* (n. r.).

³ Edit. Main. legit *quolibet* (n. r.).

et executorem motu, scientiâ et auctoritate paribus declaraverit et constituerit et deputaverit; et, ut officium praefatum idem Fabritius cardinalis melius et liberius prosequi valeret, motu pari deque scientiâ et potestatis plenitudine similibus, mandaverit omnibus et singulis, ad quos spectat, cuiuscumque status, dignitatis, ordinis, gradus vel conditionis existerent, quatenus in exequendis iis, quae ad officium eius praefatum et iurisdictionem pertinere noscebantur, omnibus possibilibus auxiliis, consiliis et favoribus opportunis¹ assisterent, eique pariter obedirent prout ipsi Innocentio XIII praedecessori; dictoque Fabritio cardinali litteras praefatas in omnibus et per omnia suffragari debere, illasque et in eis contenta quaecumque sub quibusvis similium vel dissimilium facultatum et gratiarum revocationibus, suspensionibus, derogationibus, limitationibus, aut aliis contrariis dispositionibus nullatenus comprehendi, nec per eas immutari, suspendi, limitari, moderari, aut ad terminos iuris reduci posse, sed perpetuo validas et efficaces fore et esse, et, quidquid illarum vigore a dicto Fabritio cardinali gestum, statutum, factum, mandatum, indultum et executum foret, perpetuam iuris et roboris firmitatem obtineret, et nullo unquam tempore de subreptionis vel obreptionis aut nullitatis vitio, seu intentionis dicti Innocentii XIII praedecessoris vel quopiam alio defectu notari, impugnari, vel ad terminos iuris reduci, seu in ius vel controversiam revocari², ac omnes et singulos processus, sententias, quos et quas per quoscumque iudices et officiales in praeiudicium attributae et concessae sibi iurisdictionis praefatae haberi et promulgari con-

tigisset, nullas nulliusque roboris vel momenti fore et esse, et ita per quoscumque iudices ordinarios vel delegatos, etiam causas palatii apostolici auditores, ac praefatae S. R. E. cardinales, sublata eis et eorum cuilibet qualibet aliter iudicandi et interpretandi facultate, in quavis causâ et instantiâ iudicari et definiri debere, et, si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit¹ attentari, irritum et inane, dictâ auctoritate voluerit, decreverit et statuerit; ac aliàs, prout in memorati Innocentii XIII praedecessoris sub datum videlicet xiii kalendas octobris pontificatus sui anno ii expeditis litteris plenius continetur: cumque, sicut etiam accepimus, etiam aliàs felicitis pariter recordationis Clemens Papa X, etiam praedecessor noster, bonae memoriae Gasparem dum viveret eiusdem S. R. E. presbyterum cardinalem de Carpineo nuncupatum in suum et dictae Urbis, suburbiorum ac districtus praefatorum vicarium, necnon Romanae Curiae iudicem ordinarium ad universitatem omnium et quarumcumque causarum cuiusvis qualitatis et speciei, etiamsi essent mere laicales et profanae, et inter mere laicos, ad instar aliorum Romanae Curiae iudicum ordinariorum, ita ut inter eum et illos nulla considerari posset differentia, etiamsi ageretur in gradu recursus a sententiis tantum iudicum Urbis et districtus et inter quascumque personas exemptas et speciali notâ dignas et quae specialem mentionem requirerent, assumpserit, constituerit et deputaverit; ac aliàs, prout in aliis eiusdem Clementis X praedecessoris sub datum Romae apud S. Mariam Maiorem anno Incarnationis dominicae mdcxvi, pridie idus augusti, pontificatus sui anno ii expeditis litteris etiam plenius conti-

¹ Deest pronomen *et* (R. T.).

² Deest *posse* (R. T.).

¹ Aptius lege *contigisset* (R. T.).

netur: nos igitur, qui, quantum cum Domino possumus, ad rerum omnium statum salubriter dirigendum nostrae considerationis intuitum libenter extendimus, et in iis, quae ad illarum regimen et gubernium profutura cognovimus, opem et operas nostras impendimus efficaces, eundem Fabritium cardinalem, modernum episcopum Portuensem et S. Rufinae, dictae almae Urbis nostrae eiusque districtus et suburbiorum vicarium in spiritualibus generalem, amplioribus favoribus et gratiis prosequi, ac dicti vicariatus officii indemnitati ac felici regi mini providere volentes, eundem Fabritium cardinalem et vicarium, aliosque pro tempore dicto vicariatus officio potituros et gavisuros, in iurisdictione¹ vicariatus dictae Urbis illiusque suburbiorum et districtus, iuxta praefatas litteras apostolicas per dictum Clementem X praedecessorem favore memorati Gasparis cardinalis de Carpineo nuncupati dictae Urbis ac suburbiorum et districtus vicarii in spiritualibus generalis emanatas in eam tantum parte in qua idem Clemens X praedecessor disposuit cardinalem vicarium Urbis ac districtus et suburbiorum praefatorum habere iurisdictionem cumulativam cum omnibus aliis iudiciis ordinariis Urbis praefatae in causis civilibus et criminalibus, etiam mixtis, inter personas mere laicas, et in causis omnibus mere laicalibus, et profanis, motu pari, non ad eiusdem Fabritii cardinalis vel alterius pro eo nobis super hoc oblatae petitionis instantiam, sed ex scientia et potestatis plenitudine similibus, tenore praesentium reintegramus et plenarie restituimus, ac iurisdictionem huiusmodi ei et eis de novo concedimus et indulgemus, itant dictus Fabritius cardinalis et ceteri Urbis

praefatae ac districtus et suburbiorum huiusmodi vicarii, qui pro tempore erunt, eorumque vicesgerentes et suffraganei ac locumtenentes, aliique iudices ab eis deputati ac pro tempore deputandi, iurisdictione cumulativa cum omnibus aliis iudiciis ordinariis Urbis praefatae, ut supra, libere et licite uti possint et valeant, absque eo quod a quoquam, quavis auctoritate, praetextu aut causa, impediri quoquo modo possint. Et ita per quoscumque iudices ordinarios vel delegatos, quavis auctoritate fungentes, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac praefatae S. R. C. cardinales, etiam de latere legatos, vicelegatos, Sedisque Apostolicae nuncios, sublata eis et eorum cuilibet aliter iudicandi et interpretandi facultate, in quavis causa et instantia iudicari et definiri debere, et, si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari, irritum et inane decernimus. Non obstantibus dicta constitutione praefati Innocentii XII praedecessoris nostri, cui, quatenus opus sit, in hac tantum parte², aliisque reformationibus et decretis a quibusvis iudiciis quavis auctoritate fungentibus ac etiam vivaec vocis oraculo emanatis, aliisque constitutionibus et ordinationibus apostolicis, etiam in conciliis generalibus editis, stylo palatii, regulis Cancellariae Apostolicae prohibentibus mandata executiva alias quam sub plumbo expeditis³, ac facultatibus et iurisdictionibus praefatae almae Urbis gubernatori, senatori et populo romano, et causarum curiae Camerae Apostolicae generali auditori, praesidi et magistris viarum, ac praefatae S. R. E. cardinalibus, ac aliis quibusvis iudiciis et officialibus, etiam

¹ Videtur deesse *derogamus* (n. r.).

² Potius lege *expediri* (n. r.).

³ Aptius lege *iurisdictionem* (n. r.).

laicalibus, quacumque auctoritate fungentibus, et quibuscumque aliis personis, sub quibuscumque tenoribus et formis, ac cum quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, efficacissimis et insolitis clausulis, necnon irritantibus et fortioribus decretis, etiam motu, scientia et potestatis plenitudine similibus, etiam concistorialiter, per nos seu quoscumque alios Romanos Pontifices praedecessores nostros in contrarium forsitan quomodolibet concessis, confirmatis et approbatis, ac etiam iteratis vicibus innovatis, etiamsi cautum sit in eis expresse quod illis nullatenus, vel nonnisi sub certis inibi expressis et nominatis modis et formis derogari seu contra illa quidquam concedi possit; quibus omnibus et singulis, etiamsi de illis eorum¹ totis tenoribus specialis, specifica, expressa et individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quaevis alia expressio habenda aut alia exquisita forma ad hoc servanda foret, illorum tenores, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso inserti² et forma in illis tradita observata forent, praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis³ habentes, illis alias in suo robore permansuris, hac vice dumtaxat, motu et scientia similibus, specialiter et expresse derogamus, et derogatum esse, nec illa eisdem praesentibus adversari vel obstare, volumus; ceterisque contrariis quibuscumque. Volumus etiam quod earundem praesentium transumptis semper et quodcumque stetur et plenaria fides adhibeatur tam in iudicio quam extra illud, ac si eadem praesentes exhibitae vel

ostensae forent. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrae reintegrationis, restitutionis, concessionis, indulti, decreti, derogationis et voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire; si quis autem hoc attentare praesumpserit, indignationem omnipotentis⁴ Dei ac beatorum Petri et Pauli apostolorum eius se noverit incursurum. Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, anno Incarnationis dominicae MDCCLXXIV, XVI kalendas septembris, pontificatus nostri anno I ».

Eidem Ioanni⁵ Antonio cardinali vicario nostro, motu et auctoritate nostris similibus, approbamus, confirmamus, innovamus, eique de novo concedimus, ac illas semper adversus quodcumque iuris impedimentum sibi suffragari debere, et, quidquid secus adversus eas contigerit attentari, irritum et inane decernimus.

§ 10. Ac demum eidem Ioanni Antonio cardinali, de cuius praecipuo erga felicem tribunalis sibi commissi huiusmodi successum studio plurimum in Domino confidimus, ut ipse, tamquam noster et Sedis Apostolicae delegatus, omnia et singula, quae in sui vicariatus Curia, ad rectius dirigendos iustitiae tramites, et ad pauperum litigantium magis consulendum indemnitati, rerum necessitas et temporum sibi suaserit opportunitas, facere, innovare, decernere et statuere libere et licite possit et valeat, plenam licentiam, plenamque facultatem, earundem pariter tenore praesentium, concedimus et impartimur.

§ 11. Nec non praesentes, omniaque et singula in eis contenta quaecumque, etiam ex eo quod notarii praefati alii-que interesse habentes ad hoc vocati

Supra positum
Breve innovatur pro eminens-
simo cardinali Guadagni.

Eique concedit ea statuere, quae pauperum indemnitati consulere possunt.

Praesens constitutio nullo notarii vitio potest.

¹ Potius lege eorumque (R. T.).

² Edit. Main. legit insertis (R. T.).

³ Edit. Main. legit inserti (R. T.).

⁴ Edit. Main. legit omnipotentis (R. T.).

⁵ Resumitur et continuatur syntaxis § 9 incepta ante bullam insertam Benedicti XIII (R. T.).

et auditi non fuerint, vel ex eo quod illa de facto processisse dici possent, sive etiam processerint, aut ex aliâ quavis iuridicâ et legitimâ etiam necessario exprimendâ causâ, vel quocumque praetextu, de subreptionis vel obreptionis aut nullitatis vitio, seu intentionis nostrae vel alio quovis defectu notari, impugnari, invalidari, retractari et ad terminos iuris reduci, aut in ius vel controversiam revocari, aut adversus illa quodcumque iuris, facti vel gratiae aut aperiitionis oris remedium impetrari, aut etiam motu et potestatis plenitudine similibus concedi, vel sub quibusvis constitutionibus apostolicis, vel Cancellariae Apostolicae regulis editis et edendis, ac litteris apostolicis in contrarium etiam motu pari et concistorialiter emanatis, aut quibusvis aliis similium vel dissimilium gratiarum revocationibus, suspensionibus, limitationibus, aut aliis contrariis dispositionibus comprehendi nullo unquam tempore posse, sed semper ab illis excipi, et, quoties illae emanabunt, toties in pristinum et eum in quo ante praemissa erant validissimum statum restituta, reposita et plenarie renintegrata, ac de novo etiam sub quacumque posteriori datâ per praefatum Ioannem Antonium cardinalem nostrum et pro tempore existentem Romani Pontificis cardinalem vicarium quandocumque eligendâ concessa, validaque et efficacia fore et esse, sicque et non aliâs per quoscumque iudices, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac eiusdem S. R. E. cardinales, etiam de latere legatos, sublatâ eis et eorum cuilibet aliter iudicandi et definiendi facultate et auctoritate, iudicari et definiri debere, irritumque pariter et inanè quidquid secus super his a quoquam, quavis auctoritate,

1 Edit. Main. legit quibus pro quibusvis (n. t.).

scienter vel ignoranter, contigerit attentari, decernimus.

§ 12. Non obstantibus, quatenus opus sit, nostrâ et Cancellariae praedictae regulâ de iure quaesito non tollendo, necnon apostolicis, etiam in provincialibus, synodalibus et universalibus conciliis editis et edendis, specialibus vel generalibus, constitutionibus et ordinationibus, ac quatuor dicti vicariatus Curiae huiusmodi primodictorum notariatuum officiorum respective erectione, dictique tribunalis vicariatus, aliorumque tribunalium, necnon Urbis praefatae, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis cuique ex tribunalibus praefatis, etiam super iure similes causas etiam privative quoad alios cognoscendi et terminandi, et aliis quibusvis, etiam motu simili et concistorialiter, aut aliâs, in contrarium quomodolibet concessis, approbatis et innovatis; quibus omnibus, etiamsi pro illorum sufficienti derogatione de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa et individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quaevis alia expressio habenda aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores huiusmodi, ac si de verbo ad verbum, nihil penitus omissis et formâ in illis traditâ observatâ, inserti forent, eisdem praesentibus etiam pro plene et sufficienter expressis habentes, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse, motu pari, harum serie derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

§ 13. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrae approbationis, confirmationis, concessionis, dis-

Obstaculum derogatio.

Clavulae poenales contra temerarios huius decreti.

abolitionis, decreti, declarationis, erectionis, iurisdictionis, subiectionis, licentiae, impartitionis, derogationis et voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire; si quis autem hoc attentare praesumpserit, indignationem omnipotentis Dei ac beatorum Petri et Pauli apostolorum eius se noverit incursurum.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, anno Incarnationis dominicae MDCCXXXV, IX kalendas ianuarii, pontificatus nostri anno VI.

Dat. die 24 decembris 1735, pontif. anno VI.

F. card. OLIVERIUS.

CLXXI.

Confirmatio decreti Congregationis episcoporum et regularium, quo prohibetur in futurum capitulo generali Ordinis fratrum Eremitarum S. Augustini Excalceatorum nuncupatorum Congregationis Hispaniae et Indiarum, quominus concedat provincialatus honorarios.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Abbas in provinciam Hispaniae et Indiarum interclusus provincialis honorarii titulos gradusque non debendi.

§ 1. Nuper pro parte dilecti filii Alphonsi a Magdalena, fratris expresse professi ac vicarii generalis Congregationis Hispaniae et Indiarum Ordinis Eremitarum S. Augustini Discalceatorum nuncupatorum, Congregationi venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium negotiis et consultationibus episcoporum et regularium praepositae exposito, quod pluribus ab hinc annis in eadem Congregatione abusus conferendi nonnullis religiosis Congregationis praefatae, qui munus ministri provincialis minime exercuerant, gradus, honores, vocem, privilegia et exemptiones, quibus gaudere solebant illi qui pro-

vincialatus huiusmodi munere functi fuerunt, cum nomine provincialium honorariorum, irrepserat, totumque id in detrimentum regularis observantiae redundabat, ambitionis causam praebebat, et in religionis ruinam tendebat, inter religiosos invidiam concitabat, necnon in multis dissidia fovebat, videns¹ non esse necessarios labores in religione pro acquirendis illis honoribus et exemptionibus qui de iure solum illis impertiebantur, idque aliarum dissensionum causa fuerat:

§ 2. Et in eadem expositione subiuncto quod capitulum generale dictae Congregationis die xx maii proxime venturi celebrandum erat, et² ipse Alphonsus praevidebat quod, iuxta abusum praedictum in antecedentibus capitulis introductum, forsitan aliqui non deficiant, qui similes gradus, honores et exemptiones ministrorum provincialium, absque eo quod ministri provinciales fuerint, postularent; ideoque pro parte eiusdem Alphonsi praefatae Congregationi cardinalium supplicato, ut, ad praeccludendam ianuam ad tam perniciosas postulationes et ad providendum tot abusibus, tam vicario generali, ac cuicumque alii pro tempore existenti superiori, quam definitioribus ac capitulis provincialibus et generalibus similes gradus et exemptiones conferendi facultatem interdicti plurimum cupiebat, et casu, quo illi deinceps contra prohibitionem praefatam eiusmodi gradus conferre auderent, nulli et irriti haberentur: emanavit a praedicta Congregatione cardinalium decretum tenoris qui sequitur, videlicet:

Sacra Congregatio eminentissimorum et reverendissimorum S. R. E. cardinalium negotiis et consultationibus episcoporum et regularium praeposita, attentâ relatione pro-

Procurator generalis id interdicti supplicat.

Decretum Congregationis episcoporum et regularium super hoc.

¹ Forsan videntes aut videntibus (A. T.).

² Particulam et nos addimus (A. T.).

curatoris generalis super expositis, censuit rescribendum, prout praesentis decreti vigore benigne rescribit, pro prohibitione in futurum capitulo generali concedendi gradus honorarios. Romae, die xvi decembris MDCCXXXV. — Card. FRANCISCUS BARBERINUS. C. archiepiscopus Chalcedonensis, secret.

Loco † sigilli.

Confirmatio
huiusmodi de-
creti.

§ 3. Cum autem, sicut dictus Alphonsus nobis subinde exponi fecit, ipse decretum huiusmodi, quo firmitus subsistat, apostolicae confirmationis nostrae patrocinio communiri summopere desideret: nos, specialem ipsi Alphonso gratiam facere volentes, et a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censes, supplicationibus eius nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, decretum praesentium confirmamus et approbamus, illique inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiicimus: salvâ tamen semper in praemissis auctoritate memoratae Congregationis cardinalium.

Eiusdem con-
firmationis fir-
mitas.

§ 4. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

§ 5. Non obstantibus constitutionibus

et ordinationibus apostolicis, ac Ordinis et Congregationis praefatorum, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permanens, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die ix ianuarii MDCCXXXVI, pontificatus nostri anno vi.

Dat. die 9 ianuarii 1736, pontif. anno vi.

F. card. OLIVERIUS.

CLXXII.

Confirmatio aliquot novarum constitutionum et ordinationum in capitulo generali Ordinis fratrum Bethlehemitarum in Indiis Occidentalibus anno MDCCXXX in civitate Mexicanâ celebrato pro felici regimine eiusdem Ordinis editarum.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Crediti nobis caelitus sacrosancti apostolatus officii ratio exigit, ut illis, quae pro felici religiosorum Ordinum ad exercenda christianae pietatis atque charitatis praesertim erga aegrotos et convalescentes opera, pie sancteque in Ecclesiâ Dei institutorum regimine et progressu provide constituta atque ordinata esse noscuntur, quo firma semper ac illibata persistant, apostolici muniminis,

Prooemium.

1 Praeposit. ad nos addimus (R. T.).

cum a nobis petitur, adiungamus firmitatem.

Fratres Bethlehemitani nonnullas constitutiones efformant.

§ 1. Exponi siquidem nobis nuper fecerunt dilecti filii praefectus ac definitores generales et fratres Ordinis Bethlehemitarum nuncupati in regnis Mexicano ac Peruano reliquisque Indiis Occidentalibus dudum a Sede Apostolica instituti, quod ipsi in novissimo eorum capitulo generali anno MDCCXXX in civitate Mexicanâ celebrato nonnullas novas constitutiones et ordinationes pro salubri ac prosperâ Ordinis ac fratrum praefatorum directione regularisque ibidem disciplinae observantiâ, praefati eiusdem Ordinis, qui, ut accepimus, maiora in dies, benedicente Domino, in iis partibus suscipit incrementa, statui convenientes et accomodatas, ac propterea ab ipsius Ordinis constitutionibus aliâs auctoritate apostolicâ confirmatis aliquâ ex parte discrepantes, vel etiam forsâ illis adversantes, reservato desuper nostro et dictae Sedis beneplacito, ediderunt, tenoris qui sequitur, videlicet:

De incorrigibilium expulsionem.

I. Imposterum expulsionem fratrum incorrigibilium, quotiescumque casus contigerit, fiant reservatis exacte dispositionibus decretorum felicitis recordationis Clementis VIII, Urbani VIII et Innocentii XII summorum Pontificum Sanctitatis Vestrae praedecessorum; ipsique pro tempore expulsi certiorari et admoneri debeant, ipsos obstrictos nihilominus remanere votis solemnibus in vim suae regularis professionis emissis, quoad ea tamen quae cum eorum statu compatibilia erunt.

De vice generalis facultate procedendi contra eosdem.

II. Cum maxima, ut notum est, inter utriusque regni conventus distantia, et rara admodum atque difficillima ab uno ad alterum sit transfretatio: vicegeneralis pro tempore illius regni, in quo praefectus generalis non residet, contra incorrigibiles aliosque delinquentes super quibuscumque excessibus procedere, eosque carcerare, processus compilare, et, ita exigentibus eorum criminibus,

ex capite incorrigibilitatis eicere possit et valeat, cum eisdem facultatibus quas habet ipsemet praefectus generalis totius Ordinis, servatis tamen decretis et constitutionibus apostolicis supra enunciatis, nec eius assensum et facultatem expectare teneatur, ne inquisiti nimis diuturno carceri subiciantur. Utque in re tanti momenti rite recteque procedatur iuxta praefata apostolica decreta in singulis capitulis generalibus duodecim ex gravioribus religiosis eligi omnino debeant, sex videlicet pro regno Novae Hispaniae, totidemque pro Peruano, de quorum consilio et assensu, tam a praefato generali in regno in quo resederit, quam in altero a vicepraefecto generali, ad incorrigibilium expulsionem deveniatur. Quoties vero tempore intermedio inter unum et alterum capitulum generale aliquem sive aliquos ex memoratis duodecim religiosis ab hac vitâ migrare, vel ultra tres dietas absentes vel legitime impeditos reperiri contingat, tunc praefectus generalis in regno in quo residet, et in altero vicegeneralis, alium vel alios in deficientium locum, unusquisque cum voto propriorum respective assistentium, ad eundem effectum assumere et subrogare possit et debeat.

De vocalibus capituli generalis.

III. In celebratione capitulorum generalium pro electione praefecti generalis concurrere debeant personaliter vel per procuratorem omnes illi vocales qui in constitutionibus Ordinis, cap. ix, § 5, sunt designati, eo modo et formâ quibus in dictis constitutionibus et litteris apostolicis desuper emanatis praescribitur, dummodo praefecti et antiquiores discreti conventuum nunc existentium et imposterum aedificandorum sint illarum domorum sive conventuum, qui prius a praefecto generali cum suo definitorio declarati fuerint conventus formales; nec tales declarari possint, nisi in eis continuo manuteneantur saltem octo religiosi professi, computatis etiam tertiariis professis, vulgo *donatis*. Praefati omnes vocem habeant activam et passivam, discreti vero et novitiorum magistri, qui sacerdotes fuerint, activam tantum.

IV. Nedum assistentium generalium mu-

incompatibili-

litae
rum.

officio- nus, verum etiam assistentium cuiuslibet provinciae semper et quandocumque sit incompatible tam cum officio secretarii generalis quam cum officio praefecti cuiuscumque conventus, et e converso ista cum illis; et, si aliquando evenierit, religiosum, aliquo ex praedictis officiis iam fruente, ad alterum promoveri, tunc officium sive munus, quod prius obtinebat, vacet eo ipso, illudque sic vacans, alteri religioso professo, qui ad id sufficienter idoneus repertus fuerit, conferatur. Quod si religiosus ad secundum munus promotus, illud acceptare noluerit, praefectus generalis cum suo definitorio generali causas recusationis diligenter scrutetur, compertisque nullius aut levis momenti, ad munus subeundum eundem religiosum compellat: si vero iustae et legitimae reperiantur, tunc in officio quod administrabat, quatenus id utile religioni fuerit, usque ad tempus praefinitum perseveret. Denique, quia iuxta disposita in constitutione cap. ix, § 9, assistentes provinciae illius regni, in quo praefectus generalis residet, proprium munus exercere nequeunt; idcirco tunc temporis possint eligi in superiores locales hospitalium, et in illis etiam exercere alia officia conventualia durante ipsius praefecti generalis residentiâ. Istâ vero cessante, eoque ab uno ad alterum regnum se transferente, uni aut alteri officio renunciare teneantur, nec utraque simul retinere praesumant.

De renuncia-
tione officiorum
et subrogatione
ad illa

v. Quotiescumque unus aut plures ex assistentibus generalibus suo officio iustis ac legitimis de causis per generalem eiusque definitorium, ut supra, recognoscendis et approbandis, renunciaverit, aut ab humanis discesserit, tunc idem generalis unâ quoque cum ipsius definitorio eligat aut substituat alium aut alios religiosos in illius seu illorum officiis, quemadmodum Ordinis constitutio praescribit. Si vero, qui dicta officia renunciavit, sit ex assistentibus provinciae illius regni, in quo generalis non residet, tunc poterunt vicegeneralis et eiusdem provinciae assistentes, perpensis prius ac rite examinatis ut supra causis renunciationis, illam reiicere vel admittere, prout iustitia

postulabit. Sic pariter, si aliquis aut aliqui decesserint, ne religio ullum patiatur detrimentum, alterum religiosum sive alios pro interim deputare seu subrogare, ita tamen ut eodem tempore de dictâ renunciatione et causis, nec non de respectivâ alterius religiosi deputatione sive renunciantis confirmatione ab eis provisionaliter factâ, certiores reddere teneantur praefectum generalem, ad quem unâ cum suis assistentibus generalibus spectet tam praefatae renunciationis, quam provincialis subrogationis sive confirmationis in officio approbatio et confirmatio; atque ideo si compererint causas huiusmodi renunciationis nullatenus verificari neque subsistere, tunc, etiamsi a vicegeneralis cum eiusdem provinciae assistentibus dicta renunciatio approbata fuisset, illam reiicere et ad officii exercitium etiam reluctantem adigere, ac similiter deputationem et subrogationem provisionaliter factam in casu mortis, quoties iustum id esse cognoverint, reprobare possint ac valeant.

vi. Nullus in assistentem generalem eligatur, nisi prius vel assistentis provinciae vel secretarii generalis munus per triennium exercuerit, vel per consimile tempus magister novitiorum vel praefectus aut vicepraefectus, sive praesidens cuiusvis conventus, domus vel hospitii fuerit, sacerdotibus tamen semper exclusis.

At in assistentem qui eligi non possint.

vii. Quamvis in constitutionibus Ordinis cap. ix, § 8, expresse disponatur quod eligendus in generalem inter cetera requisita illud etiam habere debeat, quod ad minus bis aliquod ex religionis hospitalibus gubernaverit; nihilominus, ut omnis dubietas de medio tollatur, quae magis idonei electionem aut retardet aut impediat, huiusmodi requisito pollere censeantur omnes et singuli religiosi qui duabus saltem vicibus exercuerint officium praefecti, aut unâ praefecti, alterâ praesidentis, sive unâ praefecti vel praesidentis, alterâ vero secretarii generalis, vel assistentis provinciae (sacerdotibus semper exclusis), dummodo in unoquoque ex praefatis officiis triennium expleverint.

Dux eligendi in generalem.

viii. Cum, experientiâ teste, aliquando

De magistris

novitiorum et
gandis.

haud facile sit religiosos invenire qui officium praefecti exercuerint et ceteroquin aliis omnibus requisitis ac qualitatibus praediti sint, ut in novitiorum magistros, quemadmodum constitutio praecipit, eligi possint: hinc, ne huiusmodi difficultas huic electioni officiat, a qua cetera pendere dici potest, praefectus generalis unâ cum suo definitorio plenam habeat imposterum facultatem eligendi ac nominandi in novitiorum magistrum quemcumque dicti Ordinis religiosum qui morum probitate ac gravitate commendetur et ad huiusmodi officium aptum esse atque idoneum in Domino comperiat, quamvis memorato requisito praefecti careat; isque nihilominus, cum huiusmodi munus magistri novitiorum per triennium exercuerit, in capitulis generalibus vocem habeat tam activam quam passivam; si vero sacerdos, activam tantum.

In omnibus
electionibus re-
quiritur maior
votorum pars.

IX. In omnibus electionibus, is, in quem concurrat maior pars votorum ultra medietatem eligentium, censeatur canonice electus, et electio legitima pronunciabitur; quod si electus inter vocales connumeretur, eius votum sive schedula a scrutatoribus omnino recognosci debeat; compertoque sibimet suffragium dedisse, cum huiusmodi electio sit ipso iure nulla, ad novam deveniatur electionem, quamvis omnia vota in eum convenissent, ac ipse pro illâ vice ineligibilis prorsus evadat.

Nemo gaudet
voce activa et
passiva nisi
post triennium
ab emissâ pro-
fessione.

X. Nullus sive novitiorum sive ex religionis professis voce activâ aut passivâ pro quocumque officio gaudere possit, nisi post elapsum triennium a solemnibus professionis emissionem; neque praefectus generalis nec definitorium generale ullo modo in hoc dispensare valeant vel praesumant.

De intimatio-
nibus pro capi-
tulis generali-
bus.

XI. Intimatio personalis convocatoria ad effectum accedendi et respective suffragandi in futuris capitulis generalibus, transmitti debeat per annum saltem ante illorum celebrationem unicuique ex praefectis localibus, primis discretis et novitiorum magistris utriusque regni, qui in suis respective conventibus propria officia actu exercent. Quod si ad eosdem, et praecipue ad ultramarinos, quibus facilius id accidere poterit,

vel nullatenus, vel tamdiu ante intimatio non pervenerit, se se pro intimatis et convocatis haberi debent. Illi autem pro veris vocalibus habeantur et sint, qui de tempore convocatoriae praefata munera exercent, licet ipsis fuissent iam deputati successores, vel isti, de tempore quo capitulum celebrabitur, suorum munerum iam fuerint possessionem adepti, atque ideo ab officio cessaverint, vel propter triennii lapsum sive aliâ de causâ, non tamen privationis vel depositionis; in hoc quippe casu ad capitulum generale dicti successores accedent; similiter religiosi qui sub nomine et titulo praesidentis a vice-praefecto generali illius regni in quo generalis unâ residet cum suis assistentibus fuissent provisionaliter destinati, et de tempore intimationis reperirentur in actuali regimine conventuum, eorum scilicet qui formales nuncupantur, ipsi ius habeant accedendi ad capitulum tanquam veri vocales vice et loco praefectorum, dummodo tamen isti tunc temporis ad suos conventus non accesserint, neque realem et actualem proprii officii possessionem apprehenderint.

XII. Cum conventus civitatis Guatemalae proximior ceteris et pro accessu et recessu vocalibus utriusque regni commodior sit atque prima domus et matrix totius Bethlehemiticae religionis, in eo perpetuis futuris temporibus capitula generalia celebrentur, et in hisce maior infirmarius eiusdem conventus sive hospitalarius pro tempore suffragium habeat; et firma ceteroquin ac in suo robore subsistant contenta in constitutionibus Ordinis cap. ix, § 14 super alternativâ eligendi primos et secundos assistentes generales utriusque regni, ut apud praefectum generalem religiosi continuo et ubique adstent qui de statu, usibus et moribus eorundem regnorum sint sufficienter instructi.

Capitula generalia celebranda in civitate Guatimala.

XIII. Quotiescumque canonice in praefectum generalem eligatur absens, tunc, ne ob magnam locorum distantiam religio in suo regimine aliquod patiat dispendium aut detrimentum, praedecessor praefectus generalis, sive vicarius generalis, qui, iuxta

Quid praestandum quando absens in generalem eligitur.

litteras apostolicas in formâ Brevis sanctae memoriae Benedicti XIII sub datum ix aprilis MDCCXXVIII, capitulo praefuit, in religionis regimine, nedum tanquam vicarius, sicuti in constitutione cap. ix, § 5 disponitur, continet unâ cum assistantibus generalibus in eodem capitulo generali electis, sed et ab ipso capitulo, antequam dissolvatur, tres alii religiosi per secreta suffragia eligantur, qui in eodem conventu de Guatemala commorentur, donec acceptationis electi nuncius pervenerit. Si autem electioni de se factae iste expresse renunciaret, vel interim decederet, ad novam praefecti generalis electionem deveniatur cum solis votis ipsius vicarii, quatuor assistantium generalium, secretarii generalis eiusdem capituli, et dictorum trium religiosorum. Quod si tunc unus vel plures ex praefatis electoribus ultra tres dietas abessent, vel se huiusmodi munere abdicassent, aut abiissent, in deficientium locum subrogati censeantur religiosi antiquiores iuxta antianitatem professionis qui tunc in dicto conventu aderunt, sive conventuales fuerint, sive interpolatim residentes, dummodo nullum patiantur canonicum impedimentum. Ita pariter si obitus praedicti vicarii vel secretarii generalis acciderit, memorati vocales, assumptis eodem modo ac formâ vocalibus deficientibus e domo praedictâ, novum vicarium novumque secretarium generalem eligant, ut nunquam desint vocales pro novo praefecto generali eligendo. Postremo, eveniente obitu aut renunciatione vel depositione praefecti generalis perdurante novennio sui regiminis, diligenter et exacte serventur disposita per antedictas litteras apostolicas sanctae memoriae Benedicti XIII.

Pro uno regno generali praefectus, pro alio vicegeneralis eligendus.

xiv. Praefecto generali in regno Peruano commorante, vice-praefectus generalis ab ipso unâ cum suo definitorio ex religiosis regni Novae Hispaniae, et viceversâ in regno Novae Hispaniae residente, vice-praefectus generalis ex religiosis regni Peruani, qui tamen non sint praefecti, per secreta suffragia eligantur, quibus suas ipse vices committere debeat, prout in constitutionis cap. ix, § 9 statuitur, atque in dictâ iurisdictione non amplius duret quam per quadriennium cum dimidiâ anni parte tantum a die captae ab eo possessionis computandum, nec in eodem officio pro quadriennio immediate sequenti confirmari quoquo modo possit; quadriennio autem ut supra cum dimidio anni integre expleto, si contigerit alium in regno, ubi generalis non residet, vice-praefectum generalem, qui eius vices sustineat, non fuisse destinatum, sive propter novae electionis dilationem, sive ob electi decessum, illuc debito tempore non pervenisse, tunc pro interim assumat, dictique generalis, durante necessitate, vices exerceat praefectus pro tempore conventus S. Francisci Xaverii civitatis Mexicanae et respective B. Mariae Virginis de Monte Carmelo civitatis Limae; et, si praefectus ut supra subrogatus interim quoque periret, tunc in officio vice-generalis definitorium provinciae suffectum esse censeatur.

xv. Vice-generales, qui huiusmodi officio eo tempore quo capitulum generale celebrabitur exercent, vel intra quadriennium sui officii aliquandiu exercuerunt, in eodem suffragium habeant, quamvis alteruter vel uterque, ob annalem, vel biennem, aut aliam maiorem residentiam et moram generalis in alterutro respective regno, ab illius exercitio, quemadmodum Ordinis constitutio cap. ix § 9 disponit, destiterit. Quoties autem vice-generalis unius vel alterius regni ubi generalis non residet ob legitimam causam abesse contingat, ne religio, durante huiusmodi absentia, careat superiore, deputetur per generalem eiusque definitorium loco dicti vice-generalis alius religiosus qui pro interim gubernio ac regimini incumbat. Et si litterae patentes congruo tempore ante illius discessum non pervenissent, gubernium sit penes eiusdem regni seu provinciae definitorium.

Quis provinciam regere debeat vicegeneralis et generali absentibus.

xvi. Imposterum ad generalem in regno ubi residet, in altero vero ad vice-generalem privative spectet religiosorum numerum augere vel imminuere, eos mutare ac transferre de uno ad alterum hospitale, iuxta opportunitatem seu necessitatem conventuum atque locorum: ad ipsos etiam per-

Ad quem spectet fratrum admissio et translatio.

lineat tempore visitationis computare, cognoscere, rationem exigere, omniaque et singula praecipere et providere, durante dicta visitatione, quae tam pro bono regimine hospitalium, quam pro spirituali ac temporali consolatione infirmorum et religiosorum, qui illorum curam gerunt, necessaria esse, sive iuxta proprias conscientias in Domino expedire censuerint.

De transitu
tertiariorum vel
donatorum ad
professionem.

xvii. Qui ad habitum religiosum cucullatum ob aliquod impedimentum seu legitimam causam admitti non possunt, vel tantum recipiuntur uti¹ simplices tertiarii, vulgo *donati*, si deinde ipsorum aliqui perpetuo in religione vivere optarent et solemnem professionem emittere, postquam per biennium saltem tamquam donati inservierint, possint per praefectos conventuum unâ cum discretis seu gravibus ac prudentibus religiosi proponi praefecto generali eiusque assistentibus, quibus plena et sincera insimul transmittatur informatio super eorum vitâ et moribus; obtentâque licentiâ in scriptis ab eodem praefecto generali eiusque definitorio, ac praemisso anno novitiatus cum clausurâ, servatisque omnibus aliis requisitis, quae cuilibet novitio facienda, gerenda et servanda sunt, admittantur ad professionem sub qualitate et nomine tertiariorum sive donatorum: cucullam nunquam deferant, voce activâ et passivâ perpetuo careant, et solummodo addicti sint illis exercitiis et officiis, quae ipsorum statui conveniunt, sacristiae videlicet, elemosynarum perquisitioni, horti, coquinae, refectorii, aliisque huiusmodi quae unicuique prudenter et opportune distribuentur; de hisce autem ante et tempore novitiatus ac immediate ante professionem certiorari debeant ac plene edoceri, ut probe sciant omnia et singula, ad quae obligantur et servare tenentur, neve ullo unquam tempore quidquam pro nullitate professionis allegare audeant vel praesumant.

Capitula generalia quolibet
cogenda novennio,
data generalis
facultate

xviii. Capitulum generale de novennio in novennium, iuxta antedictas litteras apostolicas sanctae memoriae Benedicti XIII die

¹ Edit. Main. legit *viri* pro *uti* (R. T.).

iv maii MDCCXIV signatas, celebretur. Quia tamen evenire posset, praesentes declarationes, ordinationes et statuta, ob longum nimis ab Urbe ad praefata regna iter, opportuno tempore ante proximi futuri capituli celebrationem non pervenire, neque (ob perdifficilem transfretationem atque raro admodum contingentem ab uno ad alterum regnum, ut dictum est, transfretationis occasionem) ad omnium vocalium notitiam deduci posse: hinc, ad evitandas perturbaciones et controversias quae oriri inde possent, praefectus generalis illud ad annum tantum prorogare valeat, si ita pro bono religionis necessarium fore aut expedire cognoscat, dummodo, ex novem, octo saltem suffragiis, ab eodem praefecto generali, assistentibus generalibus, aliisque qui in litteris apostolicis diei xxvii maii MDCCXXXII pro electionibus praefectorum designantur, secreto praestanda, concurrant: iidem autem vocales ad capitulum ita prorogatum accedant, qui nullâ factâ prorogatione accessissent; et, si eorum aliqui tunc temporis legitimo detineantur impedimento, subrogentur alii, ut supra num. iii et xi statutum est. Cumque non tam facile a praefatis regnis ad Apostolicam Sedem recursus haberi queat, ubi iusta ac urgens causa intercedat, imposterum etiam capitula generalia, eodem tamen prorsus modo concurrentibus octo ex novem praedictis suffragiis, nec unquam ultra annum, prorogari possint.

xix. Ad evitandas quascumque lites, cognitio dubiorum quorumcumque, tam circa praemissa quam reliquas Ordinis constitutiones, quae forsitan imposterum oriri vel excitari poterunt, eorumque interpretatio, resolutio et respective declaratio (dummodo ipsis constitutionibus, Bullis apostolicis, sacris canonibus et decretis sacri Concilii Tridentini non adversentur), ac plenaria executio, ad praefectum generalem eiusque definitorium pro tempore privative pertineant.

Resolutio dubiorum in regula ad quem pertineat.

§ 2. Quare ipsi exponentes nobis humiliter supplicari fecerunt, quatenus in praemissis opportune providere et ut in-

Patita huiusmodi constitutionum executio.

fra indulgere de benignitate apostolica dignaremur. Nos igitur, eosdem exponentes specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, eorumque singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, huiusmodi supplicationibus inclinati, et attentâ relatione venerabilis fratris nostri Ludovici episcopi Albanensis S. R. E. cardinalis Pici nuncupati, supradicti Ordinis apud nos et Sedem praedictam protectoris, qui iussu nostro constitutiones et ordinationes huiusmodi mature diligenterque examinavit, nobis super praemissis factâ, constitutiones et ordinationes praeinsertas, cum omnibus et singulis in eis contentis, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, confirmamus et approbamus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiciamus, ac quoscumque iuris et facti defectus, si qui desuper quomodolibet intervenerint, seu intervenisse dici, praetendi ac censi possent, supplemus et sanamus, ipsarumque constitutionum et ordinationum exactam ac inviolabilem observantiam omnibus et singulis, ad quos spectat et pro tempore quodcumque spectabit, auctoritate et tenore praefatis praecipimus et demandamus.

Eiusdem potentia validitas.

§ 4. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac iis, quos concernunt, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, sicque et non aliter in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici audito-

res, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

§ 5. Non obstantibus praemissis constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon dicti Ordinis, illiusque hospitalium, aliisque quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Obstantium derogatio.

§ 6. Volumus autem ut ipsarum praesentium transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in dignitate ecclesiasticâ constitutae munitis, eadem prorsus fides ubique locorum tam in iudicio quam extra illud adhibeatur, quae ipsis praesentibus adhiberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Praesentium litterarum transumptis danda fides.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxvii februarii mdcxxxvi, pontificatus nostri anno vi.

Dat. die 27 februarii 1736, pontif. anno vi.

CLXXIII.

Confirmatio concordiae inter archiepiscopum et archimandritam Messanae initae super diversis punctis iurisdictionalibus.

**Clemens episcopus,
servus servorum Dei,
ad perpetuam rei memoriam.**

Prooemium.

In apostolicae dignitatis solio, divinâ disponente clementiâ, meritis licet imparibus, constituti, et per immaculata vestigia Eius, qui supra petram aedificavit Ecclesiam, incedere satagentes, pacemque inter christifideles quoslibet inducere inductamque confovere vigilantî sollicitudine meditantes, ad ea libenter intendimus, per quae litibus et controversiis inter eosdem christifideles praesertim pontificali dignitate praeditos occurritur, necnon ea, quae communi concordia terminata sunt, ne in recidivae contentionis scopulum relabantur, approbamus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis robur addicimus, prout conspiciamus in Domino salubriter expedire.

*Causae litium
vertentium iu-
ter partes.*

§ 1. Sane pro parte venerabilium fratrum nostrorum Thomae de Vidal et de Nin, moderni archiepiscopi Messanensis, et Silvii Valentini Gonzaga, moderni archiepiscopi Nicaeni ac nostri et Sedis Apostolicae nuncii Bruxellis commorantis modernique commendatarii archimandritae nuncupati monasterii archimandriatus nuncupati S. Salvatoris de Lingua Phari nuncupati Messanensis, Ordinis S. Basilii, nobis nuper exhibita petitio continebat, quod alias vertentibus variis litibus et controversiis, tam forsân in partibus, quam in Romanâ Curia, coram certis partium illarum et Curiae huiusmodi iudicibus competentibus, inter bonae memoriae Iosephum Migliaccio, dum viveret, archiepiscopum Messanensem, ex unâ, et dictum Silvium archiepiscopum et commendatarium, qui ratione dicti monasterii particulare et separatum territorium habere ac iurisdictionem quasi episcopalem in sibi subiectis locis exercere ac synodum convocare et in eâ examinatores depu-

tare praelendebat, ex alterâ partibus, super exercitio iurisdictionis quasi episcopalis praefatae per pro tempore existentem dicti monasterii commendatarium exercendae (eodem Silvio archiepiscopo et commendatario, quod ipse tamquam vere Ordinarius, cum suâ propriâ dioecesi distinctâ et separatâ ac independente, cum iurisdictione spiritali et temporali, ut quilibet Ordinarius in suâ propriâ dioecesi habet, et vere esse nullius, a praefato Iosepho archiepiscopo recognosci, quodque census, in fundatione dicti monasterii favore pro tempore existentium archiepiscoporum Messanensium constitutus, pro omni iure episcopi pro tempore existentibus archiepiscopis Messanensibus, iuxta quamdam concordiam inter bonae memoriae Ugonem dum etiam viveret archiepiscopum Messanensem et tunc existentem Siciliae regem initam, solvi respective debeat, quodque confugientes ad ecclesias praefato monasterio subiectas propriâ auctoritate extrahere, et in carceribus ad nomen ecclesiae detineri facere, necnon litteras dimissoriales suis subditis concedere, et concursus ad beneficia curata tenere et instituere respective valeat, quodque dispensationes et litterae apostolicae ei dirigi possint; Iosepho archiepiscopo verò praefato, e contra, quod praefatus Silvius archiepiscopus et commendatarius minime sit Ordinarius cum separatâ dioecesi et distincto territorio et vere nullius, quodque census praefatus vigore fundationis praefati monasterii et regionum diplomatum a praefato Silvio archiepiscopo et commendatario debeat, ac recognitio immunitatis ecclesiasticae illiusque declaratio pro confugientibus ad ecclesias eidem monasterio ut praefertur subiectas, eorumque extractio, ad pro tempore existentem dicti monasterii com-

commendatarium spectare non possit, sed hoc privative ad pro tempore existentem archiepiscopum Messanensem tamquam delegatum apostolicum spectet et pertineat, quodque idem Silvius archiepiscopus et commendatarius litteras dimissoriales suis subditis concedere atque concursus ad beneficia curata absque expressâ Sedis Apostolicae concessionem tenere et instituere respective non valeat, necnon dispensationes et litterae apostolicae eidem Iosepho et pro tempore existenti archiepiscopo Messanensi tantum privative quoad omnes dirigi debeant, respective praetendentibus), rebusque aliis in actis causarum et controversiarum huiusmodi latius deductis, et earum occasione in primâ seu secundâ aut aliâ veriori instantiâ pendentibus indecisis:

Concordiam
iure paratâ.

§ 2. Iosephus archiepiscopus et Silvius pariter archiepiscopus et commendatarius praefati, seriò inter se meditatores quam sit absonum ab ecclesiasticâ disciplinâ et praelatorum dignitate lites fovere, eas praecipue quae simplicem iurisdictionem respiciunt, a quibus innumera detrimenta et scandala, quae praelatorum charitati et subditarum animarum regimini sunt quammaxime infensa, prodire solent: ad dirimendas lites et controversias huiusmodi, earumque dubios eventus evitandum, innumerisque sumptibus parcendum, pacemque et benevolentiam inter se conciliandam, de communi iurisperitorum consilio, et, quoad Iosephum archiepiscopum praefatum, de tunc existentium capituli et canonicorum ecclesiae Messanensis consensu, ad infrascriptam sub nostro et Sedis Apostolicae beneplacito deveniunt inter se bonae fidei concordiam seu transactionem, videlicet:

Concordata.

I. Quod dictus Iosephus archiepiscopus eiusque successores recognoscere debeant,

dictum Silvium archiepiscopum et commendatarium eiusque in dicto monasterio successores habere omnimodam iurisdictionem civilem et contentiosam atque criminalem in omnibus ei ratione dicti monasterii subiectis locis, necnon etiam in civitate Messanensi super eius subditos, iuxta tenorem Bullarum apostolicarum ac sententiarum desuper emanatarum, ad quas sententias, pro eo quod respicit hunc tantummodo articulum ordinarietatis dicti Silvii archiepiscopi et commendatarii, nullâ habita consideratione reliquorum articulorum in praefatis sententiis contentorum, quibus per praesentem concordiam seu transactionem in nullo praeiudicatum esse censeatur, relatio et respectus habeatur.

II. Quod praefatus Silvius archiepiscopus commendatarius, eiusque in dicto monasterio successores praefati, dicto Iosepho archiepiscopo eiusque successoribus sexdecim uncias et carolenos octo monetae currentis regni Siciliae iure census debiti iuxta tenorem foundationis dicti monasterii regionumque diplomatum annuatim persolvere obligatus existat.

III. Quod idem Silvius archiepiscopus et commendatarius, eiusque in dicto monasterio successores praefati, litteras dimissoriales ad ordines suscipiendos suis subditis concedere possint, ita tamen ut toties, quoties illos dimittere habeant, teneantur ex pacto vigore praesentis concordiae seu transactionis dimittere, dimissorialesque huiusmodi litteras pro tempore existenti archiepiscopo Messanensi privative dirigere, in casu vero impedimenti eiusdem archiepiscopi vel vacationis sedis archiepiscopalis Messanensis, vel ordinandorum longae¹ absentiae, pro qua longâ absentia intelligi debeat si ordinandi degant extra dioecesim Messanensem, litterae dimissoriales huiusmodi dirigi valeant ad quemcumque episcopum archiepiscopo Silvio et pro tempore existenti dicti monasterii commendatario benevisum, ita tamen quod huiusmodi litterae praesentari debeant in curia archiepiscopali Messanensi, et ab ipsius cancellario subscribi et apponi: ita

¹ Edit. Main. legit *longe* (R. T.).

est, sic ex pacto, et accedente Sanctae Sedis consensu, et quod idem servandum sit in omnibus praedictis casibus et de apostolicis Brevibus super dispensatione aetatis vel temporum interstitiis.

iv. Quod archiepiscopus et commendatarius eiusque successores praefati quoscumque concursus ad parochiales ecclesias ceteraque beneficia curata indicere et instituere possint et valeant, quibus concursibus et institutionibus Iosephus archiepiscopus eiusque successores praefati se opponere minime valeant.

v. Quod si litterae apostolicae et dispensationes matrimoniales pro subditis archiepiscopi et commendatarii eidem archiepiscopo et pro tempore existenti dicti monasterii commendatario directae fuerint, tunc ab eo exequi debeant, et nullum a Iosepho archiepiscopo eiusque successoribus praefatis impedimentum vel obstaculum fieri possit; et e contra, si ex aliquâ speciali causâ pro tempore existenti archiepiscopo Messanensi ab eadem Sede directae fuerint, tunc ab eodem archiepiscopo Messanensi etiam exequi debeant, et nulla per pro tempore existentem monasterii praefati commendatarium fieri possit oppositio.

vi. Quoad recognitionem et declarationem immunitatis pro confugientibus ad ecclesias eidem monasterio subiectas, quod Iosephus et pro tempore existentes archiepiscopi Messanenses iudicare debeant an confugiati in ecclesiis huiusmodi immunitate huiusmodi gaudeant vel non, et sint extrahendi vel restituendi ecclesiis dicto monasterio ut praefertur subiectis; Silvius archiepiscopus vero et pro tempore existentes dicti monasterii commendatarii confugiatos huiusmodi a propriis ecclesiis extrahere, et in suis carceribus ad dispositionem pro tempore existentis archiepiscopi Messanensis custodire, eumque mediante epistolâ certiorum facere, infra terminum quatuor dierum, de extractione et detentione confugiati huiusmodi.

vii. Quod praeservata intelligantur hinc inde omnia iura respectu ceterarum rerum in praesenti concordia seu transactione non comprehensarum.

viii. Et demum ut pro, maiori praemissorum validitate et firmitate, liti huiusmodi omnibusque et quibuscumque supplicationibus, aliisque actis usque modo hinc inde gestis, et unicuique causae et litis pendentiae, super suprascriptis articulis tantum et dumtaxat, respective cedere et renunciare, seque praesenti concordiae seu transactioni non contradicere, nec adversus eam quidquam opponere, sed ei stare et acquiescere, et ab eâ nunquam reclamare velle, promittere respective debeant et teneantur: et alias, prout in instrumento publico seu scripturis publicis desuper confecto seu confectis tenoris sequentis, videlicet:

« *Jesus, Maria, Ioseph.* Die xxiii augusti, vii indictionis, mdcclxxxix, praesens coram nobis, etc., Magnificus Placidus Arnò, procurator fiscalis magnae curiae, archiepiscopali sede vacante huius nobilis, fidelissimae et exemplaris urbis Messanae M. N. C., etc., dicto nomine tam pro suâ indemnitate, quam aliorum, quorum interest, sponte, etc., vigore praesentis exhibuit ac nobis praesentavit, prout exhibet et praesentat, infrascriptum originale alberanum scriptum manu alienâ et subscriptum manibus propriis quondam illustrissimi et reverendissimi D. Ioseph Migliaccio archiepiscopi olim huius urbis, et illustrissimi et reverendissimi D. Silvii Valenti Gonzaga, archimandritae huius praedictae urbis, necnon reverendorum abbatum D. Bartholomaei Dominici Voci et D. Ioseph Coeli testium praesentium, in quo adest inserta infrascripta minuta scripta manu alienâ et firmata in margine calcis manu propria illustrissimi et reverendissimi fratris Ioseph Maria Perimezzi episcopi Oppidensis, in qua adsunt nonnulla verba, nempe unum lineatum et superadditum, et alia acconciata, quorum tenor est, ut infra sequitur, videlicet: *Jesus, Maria, Ioseph.* Cum, pro expellendis differentiis emersis inter illustrissimum et reverendissimum dominum D. Ioseph Migliaccio archiepiscopum Messanensem ac illustrissimum et reverendissimum dominum D. Silvium Valenti Gonzaga archimandritam pariter Messanensem circa quosdam articulos infra

Instrumentum
super hoc confectum.

expressandos, fuerit ab eisdem illustrissimis ac reverendissimis dominis archiepiscopo et archimandrita Messanensibus, pro pace mutuâque benevolentia inter eos in perpetuo conservandâ, omnibusque scandalis compe-scendis, remissa forma concordiae admodum reverendo abbati utriusque iuris doctoris D. Ioseph Buglio ex parte dicti illustrissimi ac reverendissimi domini archiepiscopi Mes-sanensis, et ex parte illustrissimi et reve-rendissimi domini archimandritae, itidem Messanensis, utriusque iuris doctori D. An-dreae Mondiola, et pro utrâque parte utrius-que iuris doctori D. Francisco Campagna, et ultimo tandem illustrissimo et reveren-dissimo domino fratri Ioseph Maria Peri-mezzi episcopo Oppidensi in utrâque censurâ praeclarissimo consulto hinc Messanae quae-dam eius opera typis excudendi causâ de-genti; et ab eo, auditis pluries iuribus utrius-que partis, ac seriò eis perpensis, visisque videndis, consideratis considerandis, concor-diae, transactionis et compositionis ac con-ventionis exemplum expressum fuerit, eo-que bene et attente ac mature perlecto et considerato a memoratis illustrissimis et re-verendissimis dominis archiepiscopo et archimandrita Messanensibus fuerit devenum ad huiusmodi concordiae, transactionis et conventionis conficiendum instrumentum, adhibito ad hoc pro parte dicti illustrissimi ac reverendissimi domini archiepiscopi Mes-sanensis, consensu admodum reverendissi-morum dominorum dignitatum ac canoni-corum huius sanctae proto-metropolitanae Messanensis ecclesiae maiorem partem et totum corpus reverendissimi capituli eius-dem proto-metropolitanae Messanensis ec-clesiae representantium; cuius quidem in-strumentum forma, absque publicâ et solemnî stipulatione, nisi obtento prius beneplacito apostolico a Sanctâ Sede et a sacrâ Con-gregatione eminentissimorum et reverendis-simorum S. R. E. cardinalium ad quam spectat, sub sequenti tenore ac pleniori se-nse perlegitur, videlicet: *Iesus*, etc. Cunctis pateat ubique, et evidenter sit notum, quod in nostrâ notarii testiumque infrascriptorum praesentia personaliter constitutis illustris-

simo et reverendissimo domino D. Ioseph Migliaccio, Dei et sanctae Sedis Apostolicae gratiâ episcopo Messanensi, comite Regal-bruti, domino Alcariae barone Boli, regioque consiliario, etc. (cum consensu tamen infra-scriptorum admodum reverendorum digni-tatum et canonicorum huius sanctae proto-metropolitanae Messanensis ecclesiae, scilicet utriusque iuris doctoris D. Caietani Buglio decani et canonici utriusque iuris doctoris, D. Bartholomaei Castello cantoris et cano-nici, utriusque iuris et sacrae theologiae doctoris, D. Gregorii Milia archidiaconi et canonici, utriusque iuris doctoris, D. Anto-nini Galletti utriusque iuris doctoris, D. Di-daci Migliorino, D. Iohannis Antonii Murto, D. Vincentii Fori, D. Dominici Rizzo, D. An-tonini Granata, D. Antonini Colita, D. Cae-saris Castelli, D. Francisci Brancato, D. Io-annis Marino, D. Gasparis Calcagni, D. Igna-tii Caëta et D. Friderici Moncada, maiorem partem et totum corpus reverendissimi ca-pituli eiusdem proto-metropolitanae Messa-nensis ecclesiae representantium), necnon illustrissimo et reverendissimo domino D. Sil-vio Valenti Gonzaga archimandrita Messa-nensi, et ad haec omnia infrascripta agen-tibus et devenientibus, nempe dicto illu-strissimo et reverendissimo domino de Mi-gliaccio uti archiepiscopo Messanensi, cum consensu, ut supra, dicti reverendissimi ca-pituli, et pro se ac nomine et pro parte illustrissimorum et reverendissimorum archiepiscoporum Messanensium pro tempore et in perpetuum existentium, parte ex unâ, dictoque illustrissimo et reverendissimo do-mino de Valenti Gonzaga uti archimandrita Messanensi, ac pro se et nomine, proque¹ parte illustrissimorum et reverendissimorum futurorum archimandritarum Messanensium, parte ex alterâ, mihi notario plene cognitâ, fuit pro deveniendo ad infrascriptam con-ventionem, compositionem, transactionem et concordiam expositum coram nobis, quod infra perlegitur, videlicet: Anno Incarna-tionis dominicae MDCVI Rogerius rex magnae celsitudinis et recolendae memoriae in pro-vincia et dioecesi Messanensi monasterium

¹ Ed. Main. legit *pro qua vice proque* (R. T.).

SS. Salvatoris sub regulari observantiâ Ordinis sancti Basilii erexit tamquam caput omnium monasteriorum graecorum, ac eidem monasterio archimandritam uti pastorem et praelatum elegit, cui superioritatem et iurisdictionem tribuit in omnes abbates, abbas et monachos sibi subiectos, ita ut ipse archimandrita uti princeps Graecis, quemadmodum ipsum nomen archimandritae graeco idiomate sonat, in omnibus dictis monasteriis et granciis, et abbatibus, monachis, clericis et laicis eorum subiectis, tam in spiritualibus quam in temporalibus, auctoritatem haberet inquirendi, secundum divinos et sacros canones, criminales vel quascumque pecuniarias quaestiones omnium monachorum et praelatorum, qui in ipsis monasteriis et abbatibus sunt, et nulli alii personae responsum facere nisi ipsi regi, cum praestatione tamen census favore archiepiscopi Messanensis in fundatione constituti ab ipsomet rege, quemadmodum ex eisdem verbis fundationis dignoscitur. Et quamvis, ad preces Willielmi regis, felicitis recordationis Alexander III anno MCLXXV fundationem ipsam approbaverit et collaudaverit, dictoque archimandritae¹ in memoratis omnibus monasteriis et obedientiis examinare et iudicare abbates et monachos et laicos, tam in spiritualibus quam in temporalibus, eorumque causas iuste et legitime definire indulserit, et Innocentius III aliique Romani Pontifices monasterium praefatum, obedientias ceteraque monasteria suffraganea ab omni potestate liberaverint, eo modo ut nulli dioecetano archiepiscopo vel episcopo, nisi praefato archimandritae, respondere tenerentur, et Honorius III et Paulus II e converso mandaverint, confirmationem electionis monachorum de archimandrita, munus benedictionis, et annuam visitationem, correctionemque ipsius archimandritae ad archiepiscopum Messanensem spectare, pertinere; nihilominus Sixtus IV felicitis recordationis, his non obstantibus, monasterium ipsum, cum omnibus et singulis iuribus et pertinentiis, suis membris et abbatibus, ac archimandritam, monachos et

¹ Edit. Main. legit *archimandrita* (R. T.).

conventum eiusdem monasterii ab omni iurisdictione, superioritate, subiectione et potestate archiepiscopi et capituli Messanensis ecclesiae et quorumcumque Ordinariorum praesentium et futurorum exemit et liberavit, adeout archiepiscopus et Ordinarii et alii supradicti, etiam ratione delicti seu contractus, aut rei de qua agatur, ubicumque committatur delictum, contractus ineatur, vel res ipsa consistat, nullus possit in archimandritam, monachos et conventum, ministros, personas, monasterium, membra, loca, bona, utpote prorsus et omnino exempta, et Sedi Apostolicae immediate subiecta, seu iurisdictionem, potestatem aut aliquod dominium exercere, et ab eis ratione collectarum vel subsidiorum quidquam petere, nisi tantum censum dicto archiepiscopo Messanensi debitum vi superioris enunciatae fundationis archimandritatus, et prout ex tenore Bullarum apostolicarum memoratorum Pontificum clare liquet, quibus omnibus plena habeatur relatio. Quae quidem archimandritalis abbatia anno MCDXXI in commendam versa fuit, et primus archimandrita commendatarius a rege Alphonso praesentatus Lucas de Bufalis, et a Martino V pontifice maximo institutus. Sic igitur existente fundato archimandrita plurimorum annorum serie ac saeculorum semper inter archiepiscopum Messanensem et archimandritam pro tempore existentes exortae sunt quamplures discrepationes et dissensiones circa potestatem, quam archimandrita ipse praetendit habere, et archiepiscopus omnino negat; unde diversis temporibus in Curia Romanâ introductae sunt variae petitiones, tam ex parte archiepiscopi Messanensis, quam ex parte dicti archimandritae. Qui modo praetendit, ut infra: primo, recognosci ab illustrissimo et reverendissimo domino archiepiscopo Messanensi tamquam vere Ordinarium, cum suâ propriâ dioecesi distinctâ et separatâ ac independenti, cum iurisdictione spirituali ac temporali, ut quilibet praelatus in suâ propriâ dioecesi habet, et vere esse nullius; secundo, censum constitutum in fundatione archimandritatus, modo ad uncias sexdecim et carolenos octo

redactum, non iure recognitionis solvendum esse, sed pro omni iure episcopali deberi archiepiscopo Messanensi et successoribus suis, secundum quamdam concordiam Ugonis archiepiscopi Messanensis cum rege; successive posthac praetendit propria auctoritate confugientes ad ecclesias archimandritales extrahere, et in carceribus detineri ad nomen ecclesiae, etiam de mandato eiusdem; necnon posse litteras dimissoriales suis subditis concedere, item concursus ad beneficia curata posse instituere; demum directiones dispensationum et litterarum apostolicarum ei posse competere. Adversus quas quidem praetensiones supradictus illustrissimus et reverendissimus dominus de Migliaccio archiepiscopus Messanensis dicebat: primo, minime archimandritam esse Ordinarium cum separata dioecesi ac distincto territorio et vere nullius; secundo, censum deberi a dicto illustrissimo archimandrita vigore foundationis praedicti archimandritatus ac diplomatum regionum; tertio, recognitionem et declarationem immunitatis ecclesiasticae pro confugientibus ad ecclesias archimandritales, eorumque extractionem, non posse spectare dicto illustrissimo archimandritae, sed privative hoc pertinere ad dictum illustrissimum archiepiscopum Messanensem tamquam delegatum apostolicum; quarto, litteras dimissoriales nec pariter dictum archimandritam suis subditis posse concedere respondebatur; quinto, instituere concursus ad beneficia curata non posse praetendere absque expressa Sedis Apostolicae concessione; sexto, quoad directionem dispensationum apostolicarum et litterarum Curiae Romanae, respondebatur ad se spectare tam privative quoad omnes. Pro quibus fulciendis responsionibus ex parte dicti illustrissimi et reverendissimi archiepiscopi Messanensis nonnulla documenta, decreta sacrae Congregationis, canones, scripturae et alia favorabilia allegabantur et plenissime adducebantur. At tam dictus illustrissimus et reverendissimus dominus D. Ioseph Migliaccio archiepiscopus Messanensis, quam dictus illustrissimus ac reverendissimus dominus D. Silvius Valenti

Gonzaga archimandrita itidem Messanensis, serio inter se meditantes quam absonum sit ab ecclesiastica disciplina et praelatorum dignitate lites fovere, eas praecipue quae simplicem iurisdictionem respiciunt, a quibus innumera detrimenta et scandala, ut compertum est, prodire solent, quae praelatorum charitati et subditarum animarum regimini sunt quammaxime infensa, sedulo eorum animum applicuerunt ad dirimendas lites, et ad pacem benevolentiamque conciliandam, accedentibus quoque ad hoc profulcienda ex utraque parte lite innumeris sumptibus et dubio litis eventu, de promptiori animo deliberaverunt, remoto omni strepitu et figura iudiciali, differentias iam dictas componere, et rationes, iura et documenta utriusque partis visioni, revisioni et considerationi sapientium et prudentium virorum in utraque iuris censurâ consultorum committere et commendare. Eapropter, confidentes de integritate, zelo, prudentia doctrinâ, probitate, aliarumque virtutum meritis admodum reverendi abbatis, sacrae theologiae et iuris utriusque doctoris D. Ioseph Bugliotti, assessoris ordinarii magnae curiae archiepiscopalis, necnon utriusque iuris doctoris D. Andreae Mendolia fisci patroni magnae curiae archimandritalis, necnon iuris utriusque doctoris D. Francisci Campagna utriusque curiae ordinarii assessoris, eisdem commiserunt ut simul concordēs quidquid benevisum et ipsismet magis proficuum pro conservandâ in perpetuum pace et intuitu benevolentia videretur super praemissis componere et statuere, et quod resolutum, concordatum et compositum fuerit, ab eisdem illustrissimis et reverendissimis dominis archiepiscopo et archimandrita observari et adimpleri, ac perpetuum silentium in huiusmodi quaestionibus interponi. Sed adveniente nuper Messanae, studiorum suorum lucubrationes typis tradendi causâ, illustrissimo et reverendissimo domino Iosepho Maria Perimezzi Ordinis Minimorum sancti Francisci de Paula, sanctissimi domini nostri Benedicti XIII praelato domestico ac pontificio solio episcopo assistente, sanctae Oppidensis eccle-

siae episcopo, zelo, prudentiâ, doctrinâ, probitate et aliarum virtutum meritis praedito, ac in sacrâ theologiâ et in utroque iure praeclarissimo consulto, congruum, sic eis fortunâ aspirante, existimaverunt committere et commendare eidem visionem, revisionem et considerationem dictarum differentiarum, cum iuribus, rationibus et monumentis utriusque partis, prout hilari animo commiserunt et commendaverunt, atque compositionem, transactionem, concordiamque ab eodem quoque exposcere et expectare. Praefatus igitur illustrissimus et reverendissimus dominus frater Ioseph Maria Perimezzi episcopus Oppidensis, amicitiae officiis utrinque accomodatis, reque bene discussâ et deliberatâ, controversias componere, et in hanc conciliationem dissidentes animos inducere satagit. Proinde visis videndis, consideratis considerandis, ac mature attenteque perpensis per dictum dominum episcopum Oppidensem tam in iure quam in facto rationibus, iuribus, capitibus et causis ambarum partium adductis, dictis, et pluries coram eodem discussis, nempe pro parte supradicti illustrissimi ac reverendissimi domini archiepiscopi Messanensis ab eodem reverendo utriusque iuris doctore abbate D. Ioseph Buglio, et pro parte dicti illustrissimi et reverendissimi domini archimandritae ab iuris utriusque doctore D. Andrea Mendolia, necnon pro utrâque parte ab utriusque iuris doctore D. Francisco Campagna, sic ut infra compositionis, conventionis, transactionis et concordiae super enunciatis praetentionibus exemplum expressit, ad quod tam dictus illustrissimus et reverendissimus dominus archiepiscopus Messanensis, quam dictus illustrissimus et reverendissimus dominus archimandrita itidem et pariter Messanensis respicientes, illudque complectentes, decreverunt inter se convenire, et proinde ad faciliorem firmiterque amicitiae nexum, et ut firma in perpetuum inter eorum successores etiam remaneat praesens concordia, et ad hoc praesens documentum, reservato semper sanctae Sedis Apostolicae assensu, devenire statuerunt, prout deveniunt modo et formâ

quibus infra. Hinc est quod hodie praesenti praeteritâ die illustrissimus et reverendissimus dominus D. Ioseph Migliaccio archiepiscopus Messanensis, et admodum reverendi dignitates et canonici dictae sanctae protometropolitanae Messanensis ecclesiae, videlicet, utriusque iuris doctor D. Caietanus Buglio decanus et canonicus, utriusque iuris doctor D. Bartholomaeus Castello cantor et canonicus, utriusque iuris doctor D. Antonius Galletti, utriusque iuris doctor D. Didacus Migliorino, D. Ioannes Antonius Muni, D. Vincentius Foti, D. Dominicus Rizzo, D. Antonius Granata, D. Antonius Colita, D. Caesar Castelli, D. Franciscus Brancata, D. Ioannes Marino, D. Gaspar Calcagni, D. Ignatius Gaëta, D. Fridericus Moncada repraesentantes reverendissimum capitulum, parte ex unâ, et illustrissimus et reverendissimus dominus D. Silvius Valenti Gonzaga archimandrita Messanensis, ex aliâ parte, per se et successores suos in archiepiscopatum et archimandritatum praedictos, implorato prius assensu sanctae Sedis Apostolicae, vigore praesentis documenti perpetuo valituri, mutuâ stipulatione hinc inde interveniente, ad dirimendas omnes controversias et contentiones super infra-scriptis articulis inter se convenerunt et conveniunt, nempe: Primo, quod praedictus illustrissimus et reverendissimus dominus archiepiscopus per se et successores suos recognoscit illustrissimum et reverendissimum dominum archimandritam et successores suos habere omnimodam iurisdictionem ordinariam, civilem, contentiosam et criminalem in omnibus locis suae dioecesis, necnon in urbe Messanae, super suos subditos, iuxta tenorem Bullarum apostolicarum ac sententiarum pronuntiarum, ad quas sententias habeatur respectus et relatio pro eo quod respicit et pertinet ad hunc tantummodo articulum ordinarietatis illustrissimi domini archimandritae, nulla habita consideratione articulorum reliquorum in sententiis contentorum, qui declarantur remanere in eodem statu in quo ad praesens sunt, et vigore praesentium articulorum in hac transactione et concordia contentorum

romanent. Secundo, illustrissimus et reverendissimus dominus archimandrita, ut supra, per se et successores suos obligatus sit, prout vigore praesentis se obligavit et obligat,olvere annuatim illustrissimo et reverendissimo archiepiscopo Messanensi uncias sexdecim et carolenos octo pecuniae currentis huius regni iure census debite iuxta tenorem fundationis regionumque diplomatum. Tertio, convenerunt et conveniunt quod illustrissimus archimandrita et successores sui in archimandritatu possit concedere dimissoriales litteras suis subditis ad ordines suscipiendos, ita tamen ut, toties quoties illos dimittere habeat, teneatur ex pacto vigore praesentis conventionis dimittere, dimissorialesque litteras dirigere private illustrissimo archiepiscopo Messanensi; advenientibus autem contingentibus casibus vel impedimentis domini archiepiscopi, vel longe absentiae ordinandorum, sic peculiariter conveniunt: illustrissimus archiepiscopus assentit, quoties Sancta Sedes annuat, quantum in se est, posse dominum archimandritam litteras dimissoriales dirigere ad praedictum archiepiscopum Messanensem, et eo impedito, ad quemcumque episcopum, iuxta stylum et formam consuetam; quod pariter intelligendum est de apostolicis Brevibus super dispensatione aetatis vel temporum interstitiis; et ad omnem aequivocationem tollendam, statuunt modo pro longa absentia ordinandorum intelligatur quotiescumque reperiantur et sint extra dioecesim domini archiepiscopi Messanensis, ita quod huiusmodi litterae dimissoriales praesentari debeant in magna curia archiepiscopali Messanensi, et a cancellario ipsius apponi et subscribi debeat, *Ita est, sic ex pacto, et accedente Sanctae Sedis consensu*; item conveniunt posse dominum archimandritam dimissoriales litteras concedere ad quemcumque directas in vacatione ecclesiae Messanensis, adiecta particulâ, scilicet *Sede vacante*, hoc tamen expresse declarato quod eiusmodi litterae dimissoriales etiam praesentari debeant in magna curia archiepiscopali Messanensi, et a cancellario apponi et subscribi debeant,

Ita est, sic ex pacto, et accedente Sanctae Sedis consensu. Quarto, in vim praesentis concordiae convenerunt et conveniunt, quod illustrissimus et reverendissimus dominus archimandrita et successores sui possint libereque valeant concursus quoscumque ad beneficia curata in sua archimandritali dioecesi vacantia indicare et instituere, quibus concursibus et institutionibus illustrissimus et reverendissimus dominus archiepiscopus Messanensis per se et successores suos in vim praesentis concordiae promisit et promittit, ex nunc pro tunc et e converso, non se opponere, quoties pariter Sancta Sedes indulgeat. Quinto pariter convenerunt et conveniunt quod litterae apostolicae et dispensationes matrimoniales pro subditis dioecesis archimandritalis si fuerint a Sede Apostolica directae illustrissimo et reverendissimo domino archimandritae, tunc exequi debeant ab ipso archimandrita, et nullum ab illustrissimo et reverendissimo archiepiscopo Messanae praesente, et qui pro tempore fuerit, possit fieri impedimentum vel obstaculum; et e contra, si fuerint ex aliqua speciali causa directae illustrissimo et reverendissimo domino archiepiscopo Messanensi, tunc ab illustrissimo et reverendissimo domino archiepiscopo exequi debeant, et nulla possit per illustrissimum et reverendissimum archimandritam fieri oppositio. Sic ex pacto inter eos et non aliter, etc. Sexto, quoad recognitionem et declarationem immunitatis confugientium ad ecclesias archimandritalis dioecesis, inter se convenerunt et conveniunt, quod, ubi videndum est utrum confugientes gaudeant vel non gaudeant, si sint restituendi vel non sint restituendi ecclesiae, tunc dominus archimandrita eiusque successores debeant illos extrahere ex propriis ecclesiis, et in suis carceribus custodire, cum declaratione eos detinendi ad dispositionem domini archiepiscopi, ad quem private spectat tale ius decisionis, teneaturque dominus archimandrita, mediante epistolâ ex officio, certiore reddere dominum archiepiscopum de extractione et detentione rei extracti intra terminum dierum quatuor. Septimo, pro ma-

iori validitate et firmitate ad invicem liti cesserunt et liti cedunt, omnibus et quibuscumque supplicationibus, aliisque actis usque modo hinc inde gestis, et unicuique causae et pendinae super supradictis articulis ut supra transactis tantum et dumtaxat, promittentes ad invicem unus alteri, et e converso, praesenti transactioni non contradicere, nec adversus ea aliquid opponere, sed eis stare et acquiescere, et ab ea nunquam reclamare, renunciantes ad invicem quibuscumque iuribus et legum dispositionibus ac quibuscumque beneficiis tam de iure canonico quam civili, vel ex quacumque peculiari lege, aliisque forte in contrarium dictantibus, quibus non uti promittunt ex pacto, etc. Pro reliquis vero altercationibus, quaestionibus, aliisque ad invicem praetensis tam decisis quam pendentibus, et tam in iudicio deductis quam non deductis, unusquisque ex eis remaneat in eius primaevis iuribus in quibus erat et est ante praesentem concordiam, et neutri ex eis per praesens instrumentum concordiae et transactionis intelligatur inductum et illatum aliquod praeiudicium, sed omnia et singula intransacta et in praesenti non expressa remaneant in eo statu quo sunt, et quilibet ex eis si voluerit liberas edes habeat iura sua experiendi, prout ante praesentem experiri poterat, firmam tamen et ratam manente hac praesenti concordia super articulis praedictis ut supra transactis, et non aliter, etc. Et ad hoc ut praesens concordia et transactio firma in perpetuum sit, ad invicem sibi ipsis promiserunt et promittunt implorare et obtinere confirmationem a sancta Sede Apostolica, et quilibet ex eis teneatur facere partes suas, et adhibere omnem diligentiam, constituentes ad invicem se ipsos procuratores ad hanc specialem causam implorandi et obtinendi praedictam confirmationem a sancta Sede Apostolica, cum omni amplo et speciali mandato, et quilibet ex eis per se et successores suos respective teneatur, prout se obligavit et obligat, praesentem transactionem in omnibus et per omnia observare et adimplere iuxta tenorem et formam, ac sub

illis legibus quibus fuerit per sanctam Sedem Apostolicam praescriptum, et non alias, etc. Et casu quo non fuerit praesens concordia confirmata a sancta Sede Apostolica, tunc et eo casu nullam habeat vim neque efficaciam, et neuter ex eis teneatur ad illius observantiam, sed unusquisque ex eis remaneat in eius primaevis iuribus et actionibus, prout ante praesentem erat, et nullum per praesentem intelligatur acquisitum ius, nec illatum praeiudicium, et non aliter, etc., ex pacto, etc. Ita est: frater IOSEPH MARIA episcopus Oppidensis. Et volentes partes ipsae ut de praescripto instrumento concordiae, transactionis et conventionis plene constet, et toties a sancta Sede Apostolica beneplacitum super praemissis in transactione praedicta obtentum fuerit, prout ad invicem obtinere et implorare promittunt, illud observari debeat, deliberaverunt etiam ad praesentem alberani formam devenire, prout deveniunt, vi cuius teneantur, quemadmodum se obligarunt et obligant, obtento beneplacito praedicto, et adhibita exinde publica et solemni stipulatione, concordiam praedictam in omnibus et per omnia observare et adimplere, iuxta tenorem et formam, ac sub illis legibus quibus fuerit per sanctam Sedem ipsam Apostolicam praescriptum, et non aliter, etc.; et non obtento beneplacito apostolico, uterque remaneat in iure suo, et praesens alberani forma nullam vim et robur habeat, dum ad hoc devenitur solummodo, ut in obtinendo beneplacito apostolico dignoscatur a Sancta Sede utrumque consensum adesse circa transactionem praedictam ipsorum praedictorum illustrissimorum et reverendissimorum archiepiscopi et archimandritae, qui se in praesenti subscripserunt, unde, etc. Messanae, die xxx augusti MDCCLXXVIII. — IOSEPH archiepiscopus Messanensis. — SILVIUS archimandrita Messanensis. — Abbas BARTHOLOMAEUS DOMINICUS Voci adfui testis, et doctor IOSEPH CELI adfui testis, etc. Ex actis quondam notarii IGNATII SARACI Messanensis extracta est praesens copia per me notarium IOSEPH CHIATTO, etc. »

Plenius et fusius continetur.

Utraque pars
praesentiam
concordiam pe-
nit confirmari.

§ 3. Cum autem, sicut eadem petitio subiungebat, dictus Ioseph archiepiscopus, antequam beneplacitum huiusmodi a nobis impetraretur, debitum naturae persolverit, concordia seu transactio vero huiusmodi pro diu optato bono pacis iniuncta sit, et ex illa non modicum divini cultus et spiritualium animarum dicto monasterio subiectarum huiusmodi consolationum oriturum sit incrementum; ideoque Thomas archiepiscopus et Silvius archiepiscopus et commendatarius praefati plurimum cupiant illam per nos et Sedem Apostolicam ut infra approbari et confirmari, illamque apostolicae firmitatis munimine roborari: quare pro parte Thomae archiepiscopi et Silvii archiepiscopi et commendatarii praedictorum nobis fuit humiliter supplicatum quatenus eis in praemissis opportune providere de benignitate apostolica dignaremur:

Quod concedi-
tur a Pontifice.

§ 4. Nos igitur, qui dissidentium animos in concordiae unitate conciliare et confirmare sinceris exoptamus affectibus, Thomae archiepiscopo et Silvio archiepiscopo et commendatario praedictis specialem gratiam facere volentes, ac Thomam archiepiscopum et Silvium archiepiscopum et commendatarium praefatos a quibusvis suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existunt, ad effectum praesentium tantum consequendum, harum serie absolventes et absolutos fore censentes, ac instrumenti praedicti seu scripturarum praedictarum tenores etiam veriores ac datam praesentibus pro expressis habentes, necnon causas et controversias huiusmodi ad nos avocantes, litesque praedictas, quoad Thomam archiepiscopum et Silvium archiepiscopum et commen-

datarium praefatos tantum, penitus et omnino extinguentes, ex voto Congregationis venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium decretorum Concilii Tridentini interpretum, huiusmodi supplicationibus inclinati, concordiam seu transactionem huiusmodi, et, prout eam concernit seu concernunt, desuper confectum instrumentum seu desuper confectas scripturas huiusmodi, et in eo seu eis contenta quaecumque, licita tamen et honesta, cum omnibus et singulis inde legitime sequutis et sequendis quibuscumque, apostolica auctoritate, tenore praesentium, perpetuo approbamus et confirmamus, illisque perpetuae inviolabilis apostolicae firmitatis robur adii-cimus, ac omnes et singulos tam iuris quam facti, et solemnitatum, aliosque quantumvis substantiales defectus, si qui desuper quomodolibet intervenerint in eisdem, supplemus.

§ 5. Necnon concordiam seu transactionem praedictam, necnon instrumentum seu scripturas huiusmodi validum et efficax, seu validas et efficaces esse et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, et tam a Thoma et Silvio archiepiscopis et commendatario praefatis, quam a quibusvis aliis, ad quos nunc quomodolibet spectat et pro tempore quomodolibet spectabit in futurum, firmiter et inviolabiliter observari, et adimpleri debere, et ab illis resiliari aut recedi nullo unquam tempore posse, ac Thomam et Silvium archiepiscopum et commendatarium praefatos, eorumque in archiepiscopatu Mes-sanensi et monasterio praedictis respective successores pro tempore existentes, desuper a quoque, quavis auctoritate, et quovis praetextu, colore vel ingenio, directe vel indirecte molestari, inquietari vel perturbari nullatenus unquam posse neque debere, necnon easdem

Concordiam
eiusque confir-
mationem nullo
unquam mutari
posse vitio sta-
tuatur.

praesentes de subreptionis aut nullitatis vitio, seu intentionis nostrae vel quopiam alio defectu notari, impugnari vel perturbari, aut aliter quomodolibet infringi vel retractari, seu ad viam et terminos iuris reduci, aut in controversiam revocari, aut adversus eas quodcumque iuris, vel facti, aut gratiae remedium impetrari vel concedi nunquam posse, easque sub quibusvis similium vel dissimilium gratiarum revocationibus, suspensionibus, limitationibus, aut aliis contrariis dispositionibus per nos et successores nostros Romanos Pontifices pro tempore existentes, sub quibusvis verborum expressionibus et formis, et cum quibusvis clausulis et decretis, etiam motu proprio, et ex certâ scientiâ, deque apostolicae potestatis plenitudine, pro tempore quomodolibet factis et faciendis, ac concessis et concedendis, minime comprehendere vel confundi, sed semper ab illis excipi, et, quoties illae emanabunt, toties in pristinum et validissimum statum restitutas, repositas et plenarie reintegratas, ac de novo, etiam sub quacumque posteriori datâ per Thomam et Silvium archiepiscopos et commendatarium praefatos quodcumque eligendâ, concessas esse et fore, ac semper et perpetuo validas et efficaces existere, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac ab omnibus, ad quos nunc spectat et spectare poterit quomodolibet in futurum, perpetuo, firmiter et inviolabiliter observari et adimpleri, sicque et non aliter per quoscumque iudices ordinarios vel delegatos, quavis auctoritate fungentes, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac praefatae S. R. E. cardinales, etiam de latere legatos, vicelegatos, dictaque Sedis nuncios, iudicari et definiri debere, et, si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter,

contigerit attentari, irritum et inane decernimus.

§ 6. Non obstantibus quibuscumque etiam in provincialibus et universalibus conciliis editis vel edendis, specialibus vel generalibus, constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ac ecclesiae Messanensis et monasterii necnon Ordinis praedictorum, et iuramento, confirmatione apostolicâ vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis, illis illiusque capitulo et canonicis et conventui eiusdem monasterii quomodolibet forsitan concessis, approbatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, etiamsi de illis eorumque totis tenoribus et formis specialis et specifica, individua, ac de verbo ad verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quaevis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, illorum tenores, ac si de verbo ad verbum, nihil penitus omisso, et formâ in illis traditâ observatâ, expressi et inserti forent, iisdem praesentibus pro plene et sufficienter expressis et insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, hac vice dumtaxat, latissime et plenissime ac specialiter et expresse harum quoque serie derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Derogatio
contrariorum.

§ 7. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrae absolutionis, avocationis, extinctionis, approbationis, confirmationis, roboris adiectionis, defectuum suppletionis, decreti et derogationis infringere, vel ei ausu temerario contraire; si quis autem hoc attentare praesumpserit, indignationem omnipotentis Dei ac beatorum Petri et Pauli apostolorum eius se noverit incursurum.

Poenae infractoribus
intentalae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, anno Incarnationis dominicae

MCCXXXV, VIII idus martii, pontificatus nostri anno VI.

Del. die 8 martii 1736, pontif. anno VI.

CLXXIV.

Tertiariis Ordinis S. Francisci, iurisdictioni pro tempore existentis ministri generalis Ordinis fratrum Capuccinorum subiectis, indulgentiae confratribus et consororibus B. Mariae de Monte Carmelo concessa communicantur.

Clemente Papa XII,
ad perpetuum rei memoriam.

Exordium.

Sollicitudo pastoralis officii, quo Ecclesiae catholicae regimini divina dispositione praesidemus, nos admonet, ut, paternam religiosorum virorum sub suavi arctioris regulae iugo mancipatorum curam gerentes, pia illorum studia gratiis et favoribus foveamus atque incitemus opportunis.

Ministri generalis Ordinis Capuccinorum preces.

§ 1. Cum itaque, sicut dilectus filius Bonaventura a Ferrara minister generalis Ordinis fratrum Minorum sancti Francisci Capuccinorum nuncupatorum nobis nuper exponi fecit, ipse omnibus utriusque sexus piis personis ubicumque existentibus, tam intra quam extra claustra degentibus, etiam coniugatis, quae sub regula terti Ordinis eiusdem sancti Francisci militant, et quae sub iurisdictione pro tempore existentis ministri generalis dicti Ordinis reperiuntur, omnes et quascumque indulgentias ab hac Sancta Sede Apostolica tam concessas quam imposterum concedendas, quibus confratres ac consorores confraternitatis B. Mariae de Monte Carmelo gaudent (tendentibus etiam in id precibus dilecti pariter filii Ludovici Benzoni prioris generalis secundodicti Ordinis) per nos communicari summopere desideret:

§ 2. Nos igitur, quo praedictus Tertius Ordo sancti Francisci ad maiorem Dei gloriam, religionis incrementum et animarum salutem magis magisque de die in diem augeatur, eiusdem Bonaventurae ministri generalis votis hac in re, quantum cum Domino possumus, favorabiliter annuere volentes, eumque a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatus existit ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censes, supplicationibus eius nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, enarratam communicationem indulgentiarum praedicto Tertio Ordini sancti Francisci, qui militat sub regula S. Francisci et sub iurisdictione pro tempore existentis ministri generalis eorumdem fratrum Capuccinorum reperitur, auctoritate apostolica, tenore praesentium, concedimus.

Communicatio de qua in rubrica.

§ 3. Decernentes, easdem praesentes litteras firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Praesentium litterarum firmas.

§ 4. Non obstantibus nostram et Cancellariae Apostolicae regulam de non concedendis indulgentiis ad instar, aliisque constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon, quatenus opus sit, Ordinum praedictorum, aliisque quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolica

Obstantium derogatio.

licā, vel quavis firmitate aliā roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac ad verbum insertis habentes, illis aliās in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die XIII martii MDCCXXVI, pontificatus nostri anno VI.

Dat. die 13 martii 1736, pontif. anno VI.

F. card. BARBERINUS.

CLXXV.

Confirmatio regularum et constitutionum Congregationis seu Collegii sub titulo Familiae Iesu Christi pro educatione alumnorum Sinensium et Indorum, erecti extra muros civitatis Neapolitanae.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Prohemium.

Iniuncti nobis caelitus pastoralis officii ratio postulat, ut illis quae pro felici congregationum presbyterorum seu collegiorum, in quibus iuvenes ad christianam fidem catholicamque religionem in remotissimis etiam partibus praedicandam et propagandam atque ad ecclesiastica munia opportune instituuntur, directione ac progressu prudenter constituta esse noscuntur, quo firmiter subsistant et servantur exactius, apostolici muniminis nostri praesidium libenter adiungamus.

Alias instit.

§ 1. Alias siquidem per quasdam no-

stras in simili formā Brevis litteras sub certis modo et formā tunc expressis approbavimus et confirmavimus fundationem cuiusdam piae Congregationis presbyterorum saecularium, seu collegii sub titulo *Sacrae Familiae Iesu Christi* extra muros civitatis Neapolitanae positi, cuius praecipuum institutum est educare alumnos Sinenses et Indos, qui ex iis regionibus advenerint pro addiscendis catholicae fidei praeceptis, amplectendo statu sacerdotali, ac se se parandis ad annunciandum in eorum patria Christi Evangelium, ita tamen quod in idem collegium admitti quoque possent alii ex quacumque Europae parte existentes, qui inibi propriis sumptibus alii et sustentari vellent, ad hoc ut ad sacerdotium eiusmodi suscipiendum, sacrasque missiones obeundas rite instruerentur, ac habiles et idonei redderentur; et aliās, prout in praedictis litteris nostris die VII aprilis MDCCXXII desuper expeditis, quarum tenorem praesentibus pro plene et sufficienter expresso et ad verbum inserto haberi volumus, uberius continetur.

§ 2. Et, sicut accepimus, antequam litterae nostrae praefatae emanarent, dilectus filius Matthaeus Ripa, ipsius Congregationis seu collegii fundator, regulas et constitutiones pro salubri prosperoque eiusdem Congregationis seu collegii personarumque ibidem pro tempore degentium regimine et gubernio iam compilaverat, atque exhiberi curaverat Congregationi particulari nonnullorum ex venerabilibus fratribus nostris S. R. E. cardinalibus Propagandae Fidei huiusmodi negotiis praepositorum super rebus Sinarum a nobis deputatorum, ut illarum approbationem obtineret.

§ 3. Quae cum die V aprilis MDCCXXII dictarum regularum et constitutionum inspectionem et examen commisisset ve-

tam huiusmodi a Pontifice approbatam.

A fundatore conditae congregationis.

Eadem a Congregatione de Propaganda Fide approbatam.

MDCCXXXV, VIII idus martii, pontificatus nostri anno VI.

Del. die 8 martii 1736, pontif. anno VI.

CLXXIV.

Tertiariis Ordinis S. Francisci, iurisdictioni pro tempore existentis ministri generalis Ordinis fratrum Capuccinorum subiectis, indulgentiae confratribus et consororibus B. Mariae de Monte Carmelo concessa communicantur.

**Clemente Papa XII,
ad perpetuum rei memoriam.**

Exordium.

Sollicitudo pastoralis officii, quo Ecclesiae catholicae regimini divina dispositione praesidemus, nos admonet, ut, paternam religiosorum virorum sub suavi arctioris regulae iugo mancipatorum curam gerentes, pia illorum studia gratiis et favoribus foveamus atque incitemus opportunis.

Ministri generalis Ordinis Capuccinorum preces.

§ 1. Cum itaque, sicut dilectus filius Bonaventura a Ferrara minister generalis Ordinis fratrum Minorum sancti Francisci Capuccinorum nuncupatorum nobis nuper exponi fecit, ipse omnibus utriusque sexus piis personis ubicumque existentibus, tam intra quam extra claustra degentibus, etiam coniugatis, quae sub regula terti Ordinis eiusdem sancti Francisci militant, et quae sub iurisdictione pro tempore existentis ministri generalis dicti Ordinis reperiuntur, omnes et quascumque indulgentias ab hac Sancta Sede Apostolica tam concessas quam imposterum concedendas, quibus confratres ac consorores confraternitatis B. Mariae de Monte Carmelo gaudent (tendentibus etiam in id precibus dilecti pariter filii Ludovici Benzoni prioris generalis secundodicti Ordinis) per nos communicari summopere desideret:

§ 2. Nos igitur, quo praedictus Tertius Ordo sancti Francisci ad maiorem Dei gloriam, religionis incrementum et animarum salutem magis magisque de die in diem augeatur, eiusdem Bonaventurae ministri generalis votis hac in re, quantum cum Domino possumus, favorabiliter annuere volentes, eumque a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatus existit ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censes, supplicationibus eius nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, enarratam communicationem indulgentiarum praedicto Tertio Ordini sancti Francisci, qui militat sub regula S. Francisci et sub iurisdictione pro tempore existentis ministri generalis eorumdem fratrum Capuccinorum reperitur, auctoritate apostolica, tenore praesentium, concedimus.

Communicatio de qua in rubrica.

§ 3. Decernentes, easdem praesentes litteras firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Praesentium litterarum firmas.

§ 4. Non obstantibus nostram et Cancellariae Apostolicae regulam de non concedendis indulgentiis ad instar, aliisque constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon, quatenus opus sit, Ordinum praedictorum, aliisque quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolica

Obstantium derogatio.

licā, vel quavis firmitate aliā roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac ad verbum insertis habentes, illis aliās in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die XIII martii MDCCLXXVI, pontificatus nostri anno VI.

Dat. die 13 martii 1736, pontif. anno VI.

F. card. BARBERINUS.

CLXXV.

Confirmatio regularum et constitutionum Congregationis seu Collegii sub titulo Familiae Iesu Christi pro educatione alumnorum Sinensium et Indorum, erecti extra muros civitatis Neapolitanae.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Prohemium.

Iniuncti nobis caelitus pastoralis officii ratio postulat, ut illis quae pro felici congregationum presbyterorum seu collegiorum, in quibus iuvenes ad christianam fidem catholicamque religionem in remotissimis etiam partibus praedicandam et propagandam atque ad ecclesiastica munia opportune instituuntur, directione ac progressu prudenter constituta esse noscuntur, quo firmiter subsistant et servantur exactius, apostolici muniminis nostri praesidium libenter adiungamus.

Alias instit.

§ 1. Aliās siquidem per quasdam no-

stras in simili formā Brevis litteras sub certis modo et formā tunc expressis approbavimus et confirmavimus fundationem cuiusdam piae Congregationis presbyterorum saecularium, seu collegii sub titulo *Sacrae Familiae Iesu Christi* extra muros civitatis Neapolitanae positi, cuius praecipuum institutum est educare alumnos Sinenses et Indos, qui ex iis regionibus advenerint pro addiscendis catholicae fidei praeceptis, amplectendo statu sacerdotali, ac se se parandis ad annunciandum in eorum patria Christi Evangelium, ita tamen quod in idem collegium admitti quoque possent alii ex quacumque Europae parte existentes, qui inibi propriis sumptibus alii et sustentari vellent, ad hoc ut ad sacerdotium eiusmodi suscipiendum, sacrasque missiones obeundas rite instruerentur, ac habiles et idonei redderentur; et aliās, prout in praedictis litteris nostris die VII aprilis MDCCLXXII desuper expeditis, quarum tenorem praesentibus pro plene et sufficienter expresso et ad verbum inserto haberi volumus, uberius continetur.

§ 2. Et, sicut accepimus, antequam litterae nostrae praefatae emanarent, dilectus filius Matthaeus Ripa, ipsius Congregationis seu collegii fundator, regulas et constitutiones pro salubri prosperoque eiusdem Congregationis seu collegii personarumque ibidem pro tempore degentium regimine et gubernio iam compilaverat, atque exhiberi curaverat Congregationi particulari nonnullorum ex venerabilibus fratribus nostris S. R. E. cardinalibus Propagandae Fidei huiusmodi negotiis praepositorum super rebus Sinarum a nobis deputatorum, ut illarum approbationem obtineret.

§ 3. Quae cum die V aprilis MDCCLXXII dictarum regularum et constitutionum inspectionem et examen commisisset ve-

tam huiusmodi a Pontifice approbatam.

A fundatore conditae congregationis.

Eadem a Congregatione de Propaganda Fide approbatam.

Sequenter
praedictas re-
gulas.

dearabili fratri Ludovico Albanensi Pico
ac dilecto filio nostris Vincentio eiusdem
S. R. E. cardinalibus Petra respective
nuncupatis Congregationis dictorum car-
dinalium negotiis Propagandae Fidei
praepositorum praefecto, ipsi Ludovicus
episcopus ac Vincentius cardinalis, visis
per eos et mature perpensis regulis ac
constitutionibus praefatis, censuerunt ni-
hil obstar quin praedicta Congregatio
particularis cardinalium nobis pro ea-
rum approbatione consulere posset.

§ 4. Quarum quidem regularum ac
constitutionum tenor est qui sequitur,
videlicet:

REGOLE E COSTITUZIONI

Della Congregazione o Collegio della Sagra Famiglia
di Gesù Cristo.

PRELUDIO.

1. Vedendo arricchita la Chiesa di Dio
d'una santa varietà di religiosi, e d'altre
pie radunanze che con tanto zelo e vantag-
gio de' prossimi mandar sogliano i loro al-
lievi nelle terre degl' infedeli per predicarvi
anche a rischio della propria vita la nostra
santa religione, potrà sulle prime sembrar
temerità più tosto che zelo il pensar d'e-
rigere quest' altra benchè minima Congre-
gazione, e potrà credersi da più d' uno
che come superflua non debba ammettersi
nella santa Chiesa. Et in fatti così per ap-
punto ha giudicato e discusso chi vedendo
tal novità, non ha tuttavia saputo i motivi
dell' erezione, nè il suo fine e lo scopo. Al-
l' incontro poi chi di questi è stato informa-
to, attentamente consideratili, ha giudicato
necessaria, non che utile, tale erezione di
Congregazione nella santa Chiesa. E vagliaci
per tutti Clemente XI di sempre gloriosa
memoria, di cui sono le seguenti parole re-
gistrate in una delle varie lettere scritte
per sua parte dalla sacra Congregazione de
Propaganda Fide a chi fin dall' anno MDCCXIV
cominciò a promoverla in Cina: « La Santità
sua si è chiaramente espressa, che questa

sua condotta è l' unica per ben stabilire la
religione cristiana in cotesto vastissimo im-
perio, e per farla passare da forestiera in
cittadina ». Ed in vero, chi mai potrà stimar
superflua nella Chiesa di Dio tal Congre-
gazione se rifletterà sulle parole del Reden-
tore: *Mensis multa, operarii autem pauci*¹.
Molta certamente è la messe, e numero
innumerable d' anime, ricomprate col pre-
ziosissimo sangue di Gesù Cristo, restano
tuttavia nella cecità del gentilesimo, e pre-
cipitano nell' inferno per mancanza di chi
porti loro la luce dell' Evangelio. E la-
sciando da parte le vastissime regioni del-
l' Indie per parlar solo della Cina, questo
è un impero cotanto vasto e così popolato,
come per le storie pur troppo è noto, che
tutti i sacerdoti dell' Italia neppur bastereb-
bero per sua cultura. E pur dal tempo che
S. Francesco Saverio giunse e morì nel-
l' isola di S. Giano, o sia dal tempo che
poco dopo fu aperta quella missione, fino al
giorno d' oggi, appena si potran numerare
cinquecento missionari di varie religioni
ed istituti, che di mano in mano sono colà
giunti a predicarvi la nostra santa fede.
Sterminata adunque è la messe, e scarsis-
simo il numero degli operari. Necessaria
cosa dunque stimar debbe ognuno il trat-
tarsi di stabilire altre fondazioni, che ab-
biano l' istituto d' andare a predicare la
fede in quelle abbandonate contrade, e do-
vrebbe più tosto ciascheduno, seguitando
l' ammaestramento di Gesù Cristo, *rogare Do-
minum messis ut mittat operarios in messem
suam*². Ma se ognuno dee restar persuaso
della necessità di simili fondazioni, molto
più dee persuadersi della necessità della
nostra presente, se abbia riguardo alla
maniera che si è tenuta in fondarla, ed
alle leggi che se le sono prescritte ed alle
persone che in essa devano vivere, ed a
quelle che in essa debbonsi istruire, ed
al fine di tutte le suddette cose. Ella vien
composta da un collegio, ove debbonsi
abilitare al sacerdozio ed all' apostolico mi-
nistero i giovani nazionali delle missioni

¹ MATTH. IX, 37.

² MATTH. IX, 38.

straniera, e d'una congregazione di ecclesiastici europei che intendano all'istruzione di questi giovani. Or la necessità di tal collegio è evidentissima, imperocchè non potendosi da queste nostre parti mandar facilmente missionari nelle remote e vaste regioni dell'Indie e della Cina, così per le gravissime spese che portan seco viaggi cotanto lunghi, come per la rarità di coloro, che siano mossi dal zelo della propagazione della fede ad esporsi a rischi ed a patimenti che accompagnano questo ministero, e dovendosi pure all'incontro provveder d'operari quelle regioni; miglior mezzo non vi ha che istruire colà a norma degli apostoli i medesimi nazionali, ed abilitandoli per lo ministero apostolico destinarli ad istruire quella gioventù, ed a coltivare quella vastissima vigna del Signore; e questo dovran fare ne' loro paesi quei giovani che continuamente verranno quà in Europa per abilitarsi, e che ivi ritorneranno con quelli ecclesiastici europei (che da detti collegiali tra tanto qui apprenderanno la lor lingua) che dal collegio e congregazione di questa sacra famiglia anderanno nelle missioni straniere.

II. E per quello si attiene alle missioni della Cina, cresce la necessità di collegio sì fatto, imperocchè, oltre alle dette ragioni, ve ne sono gagliardissime che concludono la sua necessità in riguardo a' Cinesi. Imperocchè essendo la loro lingua per gli accenti difficilissima ad apprendersi, e quasi essendo impossibile a ben pronunziarla, in maniera che, anche dopo molti anni di studio postovi dagli europei per apprenderla pur perfettamente, non possano tutti essere intesi senza l'aiuto degl'interpreti, essendo dico così strana tal lingua, ed essendo eziandio il volto degli europei totalmente diverso dal volto dei nazionali, non possono i missionari stranieri occultarsi nei tempi delle persecuzioni in maniera che non siano dalla maniera della pronunzia e dallo stesso lor volto manifestati e scoperti; laddove i Cinesi, se siano missionari, possono ben occultarsi, e praticar francamente anche nelle pubbliche piazze, e, sicuri di non poter es-

sere stimati per forastieri, assistere con facilità alla cristianità del paese. Né giudichi alcuno, che l'istruire tal gioventù e l'abilitarla al santo ministero per ovviare alle persecuzioni che possono sopravvenire, sia bensì buono ed utile, ma non così ancora necessario: egli è più necessario il metterlo ad effetto di quel che alcuno pensar potrebbe, non essendo così rare le persecuzioni in quel paese. E lo dimostra ad evidenza l'avvenuto nel regno dell'imperator *Kang-hi*, padre del regnante *Jung-cing*, il quale avendo nel principio del suo governo mandato in esilio tutti i missionari da tutto il regno al Porto di Cantone, eccetto solo alcuni pochi che dimoravano ristretti nella reggia di Pekino, solo monsignor Lopez, degnissimo vescovo Domenicano, perchè era Cinese, non essendo stato conosciuto per sacerdote, restò libero, e liberamente andò scorrendo per quelle missioni aiutando ed assistendo a quei cristiani destituti d'ogni altra assistenza. Perlocchè sulla fine di gennaio MDCCXXV esaminandosi questo motivo in un congresso, nel quale per comando della felice memoria di Benedetto XIII s'esaminava il progetto di questa fondazione presentata in scritto alla Santità Sua, il reverendissimo padre Giuseppe Cerù, il quale nel congresso assisteva, ed era procuratore generale così del suo Ordine de' Chierici Minori come altresì delle missioni di Propaganda, non solo assicurò tutti, esser verissima la persecuzione anzidetta mossa dall'imperator *Kang-hi*, ma temersi poter avvenire anche sotto il governo de' suoi successori; e soggiunse già essere stato lo stesso sbandeggiamento intimato a' missionari dal regnante *Jung-cing*, come per lettera giunte allora in Roma da Cina verificavasi; e seppe poi ciascuno essere stato vero che il detto imperatore *Jung-cing* aveva sbanditi i missionari; quindi conchiuse esser convenevolissima al bene della Cina la detta fondazione; e questo avvenimento molto giovò per facilitare l'approvazione di questa sant'opera.

III. Or supposta la necessità della fondazione del collegio de' neofiti nazionali, per fine di farli riuscire missionari del paese,

ne siagne per infallibile conseguenza che sia altresì necessaria l'erezione di una congregazione di missionieri europei, che prendano il carico d'istruirli e renderli a ciò idonei, e che questa congregazione sia stabilita con tali regole e leggi che a questo santo fine possano essere convenienti e adatte. Tra le quali la principale è, che d'un medesimo istituto siano, d'un medesimo spirito, e che ad un fine riguardino in tutti i loro pensieri, parole ed azioni; imperocchè se di diversi corpi ed istituto fossero, difficilmente potrebbero lo stesso spirito, lo stesso zelo, e la stessa uniforme maniera di vivere più conforme a tal fine instillare negli animi degli alunni. E se non fossero d'un istituto, di cui l'unica mira sia il dispregio del mondo e di tutte le sue speranze, e l'unico scopo il servir Gesù Cristo nella propagazione della fede per la sola gloria sua, con maggior difficoltà potrebbero formar negli alunni quello spirito generoso apostolico, che a tal opera sopra ogni altra cosa si richiede ed è necessario. Potrasi ancora nella congregazione così eretta, ove tutto¹ il medesimo istituto professar debbano ed alle medesime regole ubbidire, farsi la scelta di quei maestri, lettori ed altri che alla coltura della gioventù straniera saranno conosciuti più idonei; e sempre di mano in mano consegnandosi la gioventù alla cura di chi abbia bevuto lo stesso latte, e sia stato colle stesse massime nella congregazione istruito, si potranno coll'aiuto del benedetto Signore sperare quei frutti di benedizione che ognuno desidera in missioni cotanto necessarie nella Chiesa di Dio, e quella pace e tranquilla uniformità si vedrà fiorire in tutto il corpo che nasce dall'unione della carità, nella quale coll'aiuto del Signore vivranno tutti, considerando il collegio come cosa propria, e mantenendone lo spirito con tutte le loro forze, e con esatta economia amministrandone le entrate, ed affaticandosi tutti, come avvenir vediamo ne' corpi omogenei, per il mantenimento ed aumento di tutto il corpo in tutti li suoi beni spirituali e temporali.

¹ Forsan tutti (n. 7.).

iv. Estendendosi dunque degnata la maestà di Dio d'ispirare opere cotanto necessarie nella sua Chiesa, ed avendo dimostrato la sua onnipotente assistenza in proteggerne l'incamminamento con far superare i tanti e tanto grandi intoppi che si sono incontrati nel cercarsi di stabilirla: acciocchè dal nemico comune non si tenti¹ col tempo di scuotere i fondamenti, sulli quali col favor di Dio si cerca di fondarla, ed acciocchè l'umana fragilità resti sostenuta da buone e sicure leggi, e da mezzi per sempre osservarle coll'aiuto del Signore, e così non venga mai a mancare quello spirito che si desidera che sempre viva vigoroso in questa comunità, prendiamo qui a prescrivere le regole e gli stabilimenti. E perchè di queste regole alcune spettano a tutti, altre a' particolari, ed altre spettano solo a' direttori; perciò si divideranno in tre parti: e nella prima si stabiliranno quelle che da tutto il corpo devono sapersi e osservarsi, le quali da ciascheduno saranno sempre lette e meditate acciocchè sempre possano con ridurle in pratica conservar lo spirito della Congregazione, e mantenerne l'uniforme osservanza: le seconde poi si descriveranno nella seconda parte e serviranno per i novizi, per gli studenti, per i collegiali e per alcuni uffiziali; e finalmente le altre si descriveranno nella terza parte, e serviranno per lo buon governo e direzione di tutta l'opera, e queste dovranno sapersi ed accuratamente osservarsi da chi averà la cura di dirigere, acciocchè, nelle occasioni che nasceranno, possano aver lume e direzione per ben incamminare, regolare e governare il tutto.

PARTE PRIMA

La quale contiene le regole e costituzioni comuni.

CAPO PRIMO.

Scopo e fine dell'istituto.

1. Pria di stabilire la regola di questa nostra comunità, fa di bisogno costituire il fine, acciocchè da ognuno si conosca a che cosa tendano tutte le nostre mire, e che debba sempre proponersi avanti l'animo

¹ Male edit. Main. legit *senti pro tenti* (n. 7.).

chi desidera abbracciare quest'istituto. Il fine adunque d'esso è l'imitazione di nostro signore Gesù Cristo nella vita attiva e contemplativa, avendo sempre davanti gli occhi gli esempi che diede di tutte le virtù, e sforzandosi ciascuno, colla sua grazia, di ubbidire a' suoi precetti e praticare i suoi consigli per riuscire vero suo ministro colla santificazione propria per la conversione delle anime, portando sempre scolpito nel più vivo del cuore quelle parole del Redentore: *Exemplum dedi vobis, ut quemadmodum ego feci, ita et vos faciatis*¹. Devono dunque imitare il benedetto Signore, procurando con tutto lo studio possibile radicar nell'animo e far rilucere in tutte le azioni le virtù alle quali il Signore ci indirizzò coll'esempio e colla dottrina. E devano ancora sull'esempio del Redentore attendere con tutto il fervore e zelo possibile alla conversione delle anime massimamente degl'infedeli nelle missioni straniere, studiandosi di dilatare la santa fede fra' gentili, di difenderla fra gli eretici, e conservarla fra' cattolici, e unir così, seguitando generosamente il divino nostro capitano e amabilissimo Redentore, li soavi esercizi della vita contemplativa colle utili fatiche della vita attiva, tra le quali la principale sarà l'istruire ed abilitare la gioventù straniera per le missioni nelle patrie loro, e questa cura ed opera è il distintivo del presente istituto che lo differenzia dagli altri, cioè, istillando lo spirito nel cuore de' giovanetti stranieri, ed ammaestrandoli nelle lettere, farli idonei a portar la nostra santa fede nelle loro contrade, alla qual cosa attendendo i nostri fratelli adempiranno le amabili brame mostrate dal Redentore della santità delle anime de' giovanetti con quelle parole: *Sinite parvulos venire ad me*, e colla benedizione del Signore possiamo esser partecipi di quel gran frutto, che da costoro poi raccogliersi di conversioni nella vastissima vigna de' paesi loro, ove, bene istruiti e fortificati, saran destinati a lavorare per Gesù Cristo.

II. I doveri dunque principali de' congregati

sono: primo l'attendere alla santificazione propria; secondo procurare la conversione e santificazione delle anime, massimamente degli infedeli nelle straniere missioni; terzo aver cura e direzione della gioventù delle straniere missioni per farli divenire fervorosi predicatori dell'Evangelio.

III. Questa fondazione, che milita sotto il dolcissimo titolo della Sagra Famiglia del Redentore, è composta d'un Collegio e d'una Congregazione.

IV. Il collegio è degli alunni Cinesi, Indiani, o di qualsivoglia altra nazione, e costoro sono giovanetti, i quali aspirano allo stato sacerdotale, e divenire ministri dell'Evangelio nelle straniere missioni; e saranno in questa nostra casa di Europa e ne' paesi degl'infedeli istruiti e mantenuti a spese del collegio, e dovranno fare i seguenti voti semplici: primo di povertà; secondo d'ubbidienza; terzo di farsi sacerdoti; quarto d'andare e persistere nelle missioni; quinto di militare sempre sotto questo istituto.

V. La congregazione poi è composta di ecclesiastici e fratelli laici. Gli ecclesiastici avendo la cura della detta gioventù straniera, si studieranno formarla costì ne' costumi come nelle lettere, quale si richiede per l'opera grande alla quale s'incammina, e, o dimorando qui, o nelle straniere missioni, impiegheranno il tempo, che loro avanza dalla cura di detta gioventù, in servizio della propria chiesa, ed in altri esercizi di salute e vantaggio dei prossimi, così fedeli come infedeli, per la gloria del grande Iddio, e sotto la direzione, condotta e comandi del superiore, e questo con tutta la comunità sotto l'immediata giurisdizione degli Ordinari de' luoghi, e si dovranno mantenere a proprie loro spese, tutto ad esempio de' padri dell'Oratorio di S. Filippo Neri, e de' padri Pii Operari.

VI. I fratelli laici, i quali in tutto saranno sostenuti ed alimentati a spese della comunità, faranno l'ufficio di Marta colla debita umiltà, prontezza, e soggezione totale al superiore, cooperando colle loro orazioni e penitenze alle funzioni del ministero degli ecclesiastici, e colle loro fatiche e servizio

¹ IOANN., XIII, 15.

operando al buon ordine e tranquillità di tutto il corpo.

CAPO SECONDO

Dichiarazione dell' antecedente capo, e regole da osservarsi nella spedizione alle missioni straniere.

i. Il fine principale di questo istituto essendo l'estensione e propagazione della nostra santa fede ne' paesi degli infedeli, a questo devono indirizzarsi tutte le nostre fatiche, e queste devono riguardare tutte le nostre mire, e con avvertenza grande si deve procurare che non s'imprendano altre opere che da questo fine potessero anco un punto sol deviarci. Perciò si proibisce rigorosamente a' collegiali il predicare al popolo, il sentire le confessioni, e l'occuparsi in altri simili esercizi, che possano frastornarli dall'opera alla quale devono unicamente essere intesi. Si eccettuano però i casi seguenti, o quando alcun collegiale per cagion d'infermità abituale non potesse andare nelle missioni straniere, oppure quando per mancanza de' congregati abili si giudicasse dalla consulta esser ben fatto il lasciarlo in casa per maestro o lettore, ed eccettuandosi anche colui de' collegiali che sarà scielto per maestro delle lingue straniere, dovendo farsi in modo che sempre sia nel collegio un maestro di tali lingue; imperocchè in tali casi se desiderasse esercitarsi nel servizio delle anime, se gli potrà permettere di far quell'opere che saran compostibili col suo impiego.

n. Si è detto essere il secondo caso la mancanza de' congregati abili per istruire, imperocchè costoro, e non già i collegiali, debbano aver carico d'istruire, ed esser maestri del collegio, essendo il fine de' collegiali l'andare a missionare ne' paesi degli infedeli, onde quando ci sia alcuno de' congregati abile, questo deve esser destinato dalla consulta per istruire ed insegnare, ed in tutto il tempo di tal impiego non dovranno i superiori impiegarlo in altre occupazioni che possono distraerlo.

iii. Nell'approvare i sacerdoti della congregazione per ispedirli alle missioni stra-

niere, si devono osservare le regole seguenti: colui che tra quelli ecclesiastici sarà dal Signore chiamato alla grand'opera del predicare la sua santa fede ne' paesi stranieri, dovrà segretamente e con ogni schiettezza farne consapevole il superiore della casa, e questi dovrà proporlo alla consulta, al che è tenuto, imperocchè la consulta dee attentamente e con accuratezza insieme col superiore esaminare la vocazione del soggetto, la scienza, e tutte l'altre doti ricercate per l'opera della missione, e ritrovandosi abile, si deve commettere alla prova di sua vocazione. Detta prova dovrà durare almeno tre anni; nello spazio de' quali, ogni sei mesi dovrà esser esaminato sopra la fermezza della vocazione, e ricevere nuova direzione dalla consulta circa i studi che dovrà fare; e devono i consultori dopo ciascun scrutinio giudicare se debba proseguirsi la prova, e risolveranno ciò che giudicheranno il meglio. Passati che saranno i tre anni, e fattosi già l'ultimo esame, e questa volta anche sopra gli studi e l'ultimo scrutinio, se la maggior parte de' consultori daranno voto che può mandarsi, è tenuto il superiore parteciparne la sagra Congregazione de' Propaganda Fide, e far l'istanza che esamini il soggetto, acciocchè, ritrovandolo abile, possa mandarlo in missione. Intorno al tempo di detta prova, si avverta che se l'istesso soggetto, pria di spiegare la sua vocazione, fosse convissuto in questa nostra comunità per due anni continui, o più, allora potrà bastare un sol anno di prova, computandosi per gli altri due quel tempo che con lode ha nella comunità dimorato. Un altro avvertimento necessario si prescrive, ed è, che così il soggetto, come il superiore e consultori, dopo aver saputo la sua vocazione, ed ammessolo alla prova, devono osservare sopra questo negozio rigoroso silenzio, il quale nè dall'ecclesiastico suddetto, nè dalla consulta potrà sciogliersi, se non dopo che egli sarà partito per la missione.

iv. Intorno ai collegiali è da notarsi, come non pria dell'età di 16 anni finiti, nè pria d'un anno almeno di prova da farsi della

1 Particulam se nos addimus (R. T.).

loro vocazione, debbano essere ammessi a fare i voti, ed il modo di spedirli per le missioni sarà il seguente. Finiti che avranno gli studi, la consulta li esaminerà accuratamente coll'intervento ancora del rettore del collegio, il quale darà sincero informo della loro indole, portamenti e costumi, ed averà il rettore in questo esame il voto decisivo, e così col voto di tutti si farà segreto scrutinio nella stessa maniera prescritta di sopra se debbano mandarsi per allora in missione; approvati poi che saranno, s'osservierà lo stesso che di sopra si è stabilito circa lo spedire de' sacerdoti della congregazione, cioè il superiore scriverà i loro nomi alla sagra Congregazione de *Propagandâ Fide*, facendole umilmente istanza che gli esami, acciocchè, ritrovatili abili, si compiaccia mandarli nelle missioni straniere, e dovranno intieramente dipendere dalla medema sagra Congregazione.

v. Per quelli poi, che saranno abilitati, ed ordinati sacerdoti nelle missioni stesse che si faranno in *partibus*, dovrà il superiore, che ivi dimorerà, dar subito avviso alla sagra Congregazione de *Propagandâ Fide* di tali soggetti, e fin tanto che questa non determinerà il luogo, dove vorrà destinarli, il medemo superiore li impiegherà come meglio stimerà nel Signore.

CAPO TERZO

Della povertà.

Benchè questa congregazione non sia fondata in povertà, nè li congregati facciano voto di questa virtù, nondimeno dovranno tutti amarla come preziosa margarita, e studiarsi di praticarla diligentemente in tutte le cose, nelle quali si potrà; imperocchè, così per menare la vita a similitudine della vita di Gesù Cristo, come per conseguire più facilmente e senza intoppi il fine che ci siamo proposti, dobbiamo concepire un odio irreconciliabile agli interessi mondani che ci distraerebbero con non piccolo danno dai nostri apostolici impieghi. Dobbiamo ben persuaderci del gran tesoro e guadagno che nella santa povertà sta rinchiuso, e tener fisso sempre nel pensiero il bel detto

di S. Paolo: *Est autem quaestus magnus pietas cum deficiantia*¹, e dobbiamo desiderare fervidamente di non privarci di quella pace che gode chi non desidera niente qua sulla terra. Teniamo per regola l'ammaestramento di S. Paolo: *Habentes alimenta, et quibus tegamur, his contenti simus*². Per praticarla adunque utilmente si prescrivono le regole seguenti.

I. Ognuno si contenti della povertà del vitto che somministra la comunità, e guardisi di lagnarsi se lo trova mal apparecchiato, anzi più tosto ringrazii sempre il Signore che per mera bontà conceda a lui ciò che tanti poveri e mendichi stimerebbero una lautezza, ed alzerebbono le mani al Cielo se lo avessero. E per praticare santamente questo, rifletta ognuno che tutto gli vien dato per elemosina sopra i meriti suoi, e non solo non si lagni alcuno, ma tutti con allegrezza abbraccino questo piccolo incomodo del povero alimento, considerando che con questo soddisfanno alla divina giustizia per le proprie colpe. Rifletta finalmente con serietà ognuno, che chi ha meritato le pene dell'altra vita, non dee mai lagnarsi per quanto patisca nel brevissimo corso di questa.

II. Cerchi anche ognuno di praticare questa virtù nel vestire, nel letto, ed in tutto il mobile, dovendosi da' congregati fuggire in ogni cosa il superfluo, vano, e curioso, e massimamente il vestir drappi di seta, e l'usar argenteria. Stiano però bene avvertiti a non declinare nell'opposto estremo, cioè nella sordidezza, con andar macchiati, o sporchi, o cenciosi; imperocchè si dee amare la povertà, ma praticare insieme con santa avvedutezza di sfuggire le sordidezze e le lordure, con porre ogni studio acciocchè in tutte le cose e in tutta la casa appa- risca una povera e non affettata politezza.

III. Abborriscono però sempre l'accumular denaro, nè permettano a questa sfrenata passione, che abbia neppur piccolo ingresso nel loro cuore; ma quanto più presto si può, ognuno faccia buon uso delle sue en-

¹ 1 *Timoth.*, vi, 6.

² 1 *Timoth.*, vi, 8.

trate, spendendole, o servandone qualche porzione, secondo richiederà una santa e discreta prudenza, che ci ammonisce di provvedere a' nostri bisogni, ma senza sollecitudine; non serbi però alcuna somma di danaro niuno per impiegarlo in compre di nuovi fondi o altri stabili senza espressa licenza del superiore.

iv. Se avranno cura della coscienza d'alcuno, non s'ingeriscano ne' suoi interessi in modo alcuno, neppur pregati assistano a' testamenti di queste persone.

v. Procurino tener l'animo e il cuore sempre alieno dal desiderio di ottenere dignità, benefizi o pensioni ecclesiastiche; ed il procurarle o direttamente o indirettamente cercandole o facendole cercare, e l'andar cercando mezzi per ottenerle, sarebbe una delle cause potenti per esser licenziati, se però ciò si facesse senza licenza della consulta, come si dirà qui sotto.

vi. Si permette tuttavia che li soggetti ritengano que' benefizi o altre rendite ecclesiastiche che possedevano pria d'entrare in congregazione, purchè non richieggano residenza, nè abbiano annessa cura d'anime.

vii. E colla licenza del superiore da darsi previa la discussione e la maggior parte dei voti consulta, si possano accettare quei benefizi e quelle pensioni che i superiori da per sé ci offeriranno, senza che neppur piccola industria o diligenza sia stata fatta per parte nostra, purchè non portino seco obbligo di residenza o cura d'anime.

viii. E perchè potrebbero nascere vari accidenti ne' quali fosse espediente, anzi necessario, che alcun de' nostri dovesse procurarsi alcun beneficio o pensione, come a cagion d'esempio in caso che, per qualche infortunio, o perisse il suo patrimonio, o in gran parte si deteriorasse, in questi e simili casi, ne' quali chiaramente si veda che non si cerca il superfluo, ma il puro necessario per l'onesta sustentazione, il superiore deve dar licenza al soggetto bisognoso che usi le diligenze per ottenere tanto beneficio o pensione, quanto basti per provvedere a' suoi bisogni, purchè tuttavia i passi, che darà o farà dare per ciò, non

siano strepitosi, e purchè nè a voce nè in scritto allegghi che egli è soggetto della Congregazione della Sacra Famiglia, e molto meno esponga le fatiche in essa fatte; e s'avverta che l'osservanza di questa regola dee essere custodita con singolare esattezza, e la trasgressione dee esser castigata con gran rigore.

ix. Finalmente si prescrive che se pervenisse alla notizia d'alcuni de' nostri, che qualcheduno della congregazione avesse dato passo alcuno, o fatto far diligenze per ottenere qualche dignità, beneficio o pensione, questi, che ne averà avuto la notizia, dee subito parteciparlo al superiore, il quale lo manifesterà alla consulta per farne il debito risentimento, e correggere la trasgressione, e quando la cosa il meritasse, per licenziare ancora dalla congregazione chi avrà in ciò mancato.

x. Se alcuno de' congregati aspirasse a pratica più perfetta di povertà, potrebbe incorporarsi al collegio, alla qual cosa basterà il fare i voti che si fanno dai collegiali, ancorchè non volesse far quello d'andare nelle missionis traniere; in qual caso, benchè egli resti padrone della proprietà del suo patrimonio, tuttavia non ne potrà aver l'uso, nè l'amministrazione, ma la comunità gli somministrerà il tutto, e gli assegnerà per il suo mantenimento parte delle rendite, e dell'altre ne distribuirà come ed a chi meglio le parerà, cioè prima d'entrare, perocchè quando sarà entrato e si sarà incorporato nel collegio, per ciò che spetta all'uso ed amministrazione delle sue rendite, egli ha da portarsi come se affatto non fossero sue. In quanto all'abitazione non è necessario che convivano in collegio, potendo convivere con i nostri della congregazione, e dopo dieci anni di comunità, inclusovi anche quello del noviziato, avranno questi, come ogni altro de' nostri, la voce attiva e passiva.

CAPO QUARTO

Della povertà de' collegiali.

I collegiali fanno il voto semplice di povertà, perchè dovendo imitar Gesù Cristo,

ed abbracciar la vita apostolica, debbono sopra tutto distaccarsi da ogni affetto all' avere e alla roba, onde oltre le pratiche già descritte, devono osservare le seguenti regole.

I. Essi per lo voto non possono possedere nè aver propria cosa alcuna, nè ritenere o usare come proprî alcuni beni, o mobili o stabili che siano, che lor pervenissero, o per donazione, o per limosina, o per qualsivoglia altro titolo d' eredità, o legato, eccetto che se pervenisse loro qualsivoglia cosa per qualsivoglia giusto titolo da parenti fino al quinto grado, poichè in questo caso si permette loro rilasciarlo o donarlo a' parenti fino allo stesso grado, se vi saranno, altrimenti s' intenda tutto che si acquisti alla comunità, ed è e dee essere del collegio, del quale sono figliuoli, e dal quale hanno ricevuto la dottrina e mantenimento, ed al quale sono debitori di tutto ciò che acquistano, acciocchè possa mantenersi e vie più crescere ed aumentarsi per la maggior gloria di Dio e per li vantaggi del prossimo, e dee essere con piena libertà soggetto alla disposizione ed amministrazione del superiore.

II. Senza licenza del superiore nessun di loro può donare, disporre, commutare, e nè men dare in prestito cosa alcuna, come ancora non potrà nessuno dimandare o prendere in prestito nè accettare verun dono.

III. Ne' viaggi che dovranno fare per andare in missione, pria di partire, chiedano licenza dal superiore per le robe necessarie che devono condurre seco, e senza detta licenza non portino cosa alcuna.

IV. Finalmente, oltre la continua vigilanza del rettore, dovrà il superior istesso, almeno una volta l' anno, far la visita delle loro stanze e di tutto il collegio, e se in esse trovasse qualche cosa aliena dalla povertà, dovrà subito portarla via, e castigare la trasgressione, secondo la sua qualità.

CAPO QUINTO

Della castità.

I. Benchè a tutte le persone ecclesiastiche e religiose sia necessario un attentis-

simo studio per conservare la castità, così interna che esterna, essenziale al loro stato, tuttavolta i nostri nel radicare nell' anima questa virtù devono avere principal cura et esattissima, imperocchè a buon' ora devono colle debite cautele imprimer bene nell' animo l' amor d' essa per la necessità che hanno che questa virtù s' impadronisca del loro cuore, e lo renda gagliardo e saldo contro degli assalti che ponno ricevere in varie occasioni; imperocchè dovendo essi conversare quasi di continuo con secolari dell' uno e l' altro sesso, e specialmente nelle missioni straniere in paesi di gran libertà, ove i pericoli di cadere sono gravi e frequenti, se non avranno un amore ben radicato nell' animo e potenze di questa bella virtù, e se non si rivolgeranno sempre a chieder a Dio l' aiuto per custodirla, e se con tutta l' avvedutezza non s' ingegneranno di serbare illeso questo bel giglio con tutte le cautele più sottili e minute, mal potranno esercitare con frutto dell' anime e con loro profitto il ministero che imprenderanno.

II. Primo adunque custodiscano con vigilanza i sensi esterni, e vegolino pure sopra gl' interni, essendo i sensi le parti ¹ per le quali entra il nemico per rubarci sì bella gioia.

III. Mai non si permetta che alcuna donna entri in casa, e richiedendo la necessità che si debba parlare con qualcheduna, si faccia ciò in chiesa, ma colla porta aperta, e giammai dopo dei tocchi dell' *Ave Maria*; e dovendosi andare a confessare qualch' una in casa in tempo d' infermità, s' osservino le cautele di lasciar aperta la porta della stanza in guisa, che, benchè non debbano i domestici sentire, possano però ben vedere il confessore. E ne' colloqui colle penitenti, e nelle lettere che alcuna volta converrà scrivere loro, s' osservi da' nostri il decoro e la gravità de' ministri di Gesù Cristo.

IV. Non si riceva, nè si dia regalo a persona alcuna, la corrispondenza della quale potesse recare scandalo o sospetto, ovvero fomentare qualche simile affezioncella.

¹ Forsan le porte (n. 7.).

v. Si proibisca ancora l'ingresso nella nostra casa a' giovanetti non condotti da conosciuti e lodati soggetti, li quali debbono sempre essere presenti; e similmente a qualsivoglia altro uomo, che non sia ben conosciuto e di gravi costumi; ed ancor questi non s'introducano da alcuno massimamente nella propria stanza senza espressa licenza del superiore, potendosi solamente condurre nella foresteria.

vi. Nessuno tenga chiusa la porta in modo che il superiore non possa da sè entrare, mentre starà in camera accompagnato con qualunque persona sia forestiera o domestica; ed il contravenire a questa regola sarà stimato delitto grave.

vii. Nessuno de' nostri entri in camera altrui senza licenza espressa del superiore, ed ottenutala, pria d'entrare, bussi la porta, ed aspetti ad entrare finchè abbia inteso dir da dentro: *Entrate*.

viii. Senza special licenza del superiore a nessuno si permette l'entrare nelle scuole, studi, e camerate.

ix. Si fugga l'ozio, come la peste, perchè nell'ozio suol nascere e prender vigore il vizio opposto a questa virtù della castità. Per lo che ognuno procuri star quanto più può occupato secondo il suo impiego; e se alcuna volta avanzasse tempo, sano consiglio sarebbe d'impiegarsi in qualche esercizio manuale.

x. Ciascuna mattina, subito che ciascuno si leva dal letto, dopo aver fatto gli atti di cristiano dica con la faccia sul suolo con divozione, e tenerezza tre *Ave Maria*, pregando nostro Signore della purità, acciocchè c'impetri dal divino suo figliuolo la grazia di mantenerci sempre illibati e puri, e la sera poi si dicano le dette tre *Ave Maria* dopo l'esame in comune.

xi. Perchè il solo sospetto, benchè totalmente vano, di questo vizio più nuocerebbe a questa adunanza ed a' suoi apostolici impieghi, che la taccia d'altri vizii che ci fossero imposti, operando queste ombre e questi sospetti che niun frutto si raccoglierebbe dalle nostre fatiche in pro dell'anime, perciò in nome di Gesù e della Sacra Fa-

miglia seriamente s'incarica a' superiori ad esser tutti zelo per l'osservanza puntuale e religiosa delle regole fin ora prescritte, ad essere tutti occhi per provvedere a buon'ora ai disordini, e tutti provvidenza per declinarli; per la qual cosa dovranno usare non solo tutti i mezzi ordinari, ma anche talvolta, richiedendolo la cosa, gli straordinari, come, a cagion d'esempio, proibendo alcune cose, benchè in sè lecite e buone e sante, qualora, secondo il loro prudente giudizio, si temesse che potessero essere fomenti a tali sospetti.

xii. E finalmente quando alcuno dei congregati fosse incolpato di dar sospetto di familiarità poco onesta e pericolosa, ed ancor di qualcuna che desse ammirazione, e dopo la correzione fattagli dal superiore alla presenza dei consultori non si emendasse, allora si tenga la consulta, e si licenzi.

CAPO SESTO

Del voto semplice de' collegiali di farsi sacerdoti, e d'alcune altre cose da osservarsi circa la castità.

i. I collegiali non fanno special voto di castità, ma fanno voto di farsi sacerdoti subito che saranno giudicati abili dalla consulta a tal grado, imperocchè, essendo essi mantenuti ed istruiti per attendere alle missioni, di necessità devono obbligarsi di ascendere al sacerdozio, stato necessario per le missioni, e la consulta non dee abilitarli a questa gran dignità se pria non averà ben conosciuto e sperimentato in essi quelle doti di bontà di vita e profitto negli studi che al sacerdozio si richieggono.

ii. I collegiali Cinesi e Indiani, che hanno fatto il loro studio in Europa, benchè con lode l'abbiano compito, non si promuovano al sacerdozio ordinariamente prima dell'età di trent'anni, e così ancora coloro, che faranno i corsi degli studi ne' loro paesi, non si promuoveranno prima dell'età d'anni trentatré, e per costoro è necessario requisito, che, se dopo il compimento degli studi non averanno detta età, debbano questo tempo che loro avanza fino alla detta età

stabilita impiegarlo in esercitare l'ufficio di catechista.

CAPO SETTIMO

Dell'ubbidienza e maniera con che dobbiamo portarci con i superiori.

I. L'ubbidienza è quella virtù, per cui principalmente le comunità sono ordinate adunanze; imperocchè allora l'ordine in tutte le cose, e la pace tra tutti, e lo spirito di veri congregati in Gesù fioriscono nelle comunità, quando tutti, spogliati del proprio parere e volontà, che sono l'origine e la sorgiva copiosa d'ogni disordine e disturbo, unicamente seguitano i comandi e l'parere del superiore, e, in tutto ciò che ordina e prescrive, si persuadono di sentir Gesù che comandi, e senz'altro scrutinio l'ubbidiscono pienamente, e seguitano a chiusi occhi le ordinanze da lui prescritte con esecuzione sollecita e pronta. Acciocchè adunque virtù cotanto necessaria getti profonde radici nel nostro cuore, ed ognun di noi coll'aiuto di Dio possa pervenire al suo acquisto, si sforzi ognuno persuader l'animo della verità delle seguenti massime, e si studi di praticar con esattezza le regole che seguono.

Prima massima.

II. Questa virtù ci fa simile a nostro signor Gesù Cristo, che, per amor nostro e nostro bene, *factus obediens usque ad mortem*¹, e dobbiamo onorare e ringraziare la sua ubbidienza al divin Padre, praticata in cose così dure e penose, collo studiarci d'ubbidire in tutto con prontezza ed affetto, ricordevoli delle parole di Gesù: *Descendi de caelo, non ut faciam voluntatem meam, sed voluntatem eius qui misit me*².

Seconda massima.

III. Il superiore sta in luogo di Gesù Cristo il quale ci ha lasciato scritto: *Qui vos audit me audit*³; onde chi ascolta il superiore, dee immaginarsi di sentir il benedetto Signore che comandi.

Terza massima.

IV. Chi opera senza la guida dell'ubbidienza, ma secondo il proprio parere e piacimento, genio, inclinazione, ancorchè

¹ Ad Philip., II, 8.

² IOANN., VI, 33.

³ LUC., X, 16.

metta mano all'opere di cose grandi, s'espone a pericolo di non secondare in quelle opere il divino volere, e d'essere illuso.

V. Chi poi si regola colla scorta dell'ubbidienza, negando il proprio giudizio e la propria volontà per seguire l'indirizzo del superiore, vive con sicurezza di piacere al Signore in quell'opera che intraprende, quando non consti chiaramente che sia peccato.

Quarta massima.

VI. Vagliano più le azioni fatte per ubbidire, e colla regola dell'ubbidienza, che le opere di gran mortificazione fatte con volontà propria e di proprio capriccio, anzi dee tremare ognuno che vuol regolarsi col proprio capriccio e volontà, ricordevoli del detto del Signore per Isaia: *In die ieiunij vestri invenitur voluntas vestra*¹, e si dee persuadere che corre gran rischio ed entra in un principio di gran rovina dell'anima sua. Acciocchè adunque ciò si eviti coll'aiuto del Signore, si prescrivono le regole seguenti.

Quinta massima.

VII. Tutti coloro, che si ascriveranno in quest'adunanza della Sacra Famiglia, devono prima d'ogni altra cosa lasciare la propria volontà fuori della porta di questa casa, e vivamente immaginarsi d'esser morto ad ogni proprio lor parere e volontà, e perciò dover in ogni cosa esser pienamente regolati e mossi dalla pura volontà del superiore, e dovranno, abbandonati interamente alla sua ubbidienza, senza replica e mormorazione, eligere non ciò che potrebbe loro apparir buono, ma ciò che il superiore ordinerà, e con pace d'animo riposato facciano quelle opere, abbraccino quell'impiego ed ufficio a che verranno destinati, eseguiscano ciecamente tutto ciò che loro sarà imposto, non eccettuandosi altro che ciò che manifestamente si conosce esser peccaminoso.

Regole

VIII. Si dovrà ubbidire non solo al superiore, ma ancora agli uffiziali ne' comandi che faranno nell'esercizio del loro impiego, e così, chi per esempio sarà posto in aiuto nella cucina, dovrà nelle cose a quella appartenenti ubbidire al cuciniere.

¹ ISAIA, cap. I, 8, 3.

ix. Si dovrà prontamente ubbidire alli segni della comunità per eseguire ciò che da quelli viene significato doverli fare, dovendo ciascuno interrompere pur la lettura¹ per ubbidire.

x. Gli infermi dovranno esattamente ubbidire agli ordini del medico e dell'infermiere senza ritrosia nè replica alcuna.

xi. Se l'ufficio, impiego, o altra cosa imposta si temesse che fosse nociva o pericolosa all'anima o alla salute corporale, dee il suddito esaminare prima innanzi a Dio l'affare, e se tuttavia gli rimane il dubbio, ponendosi in stato di perfetta indifferenza, lo proponga al superiore, aspettando con umiltà sentire dalla sua bocca la volontà di Dio, ed avuta che averà dal superiore la risposta, in essa debba subito senza una minima replica quietarsi.

xii. Niuno ardisca ricorrere al superiore maggiore, o per ottenere qualche licenza, facoltà, o altro che dal superiore della casa gli sia stato negato, senza che spieghi a detto superiore maggiore la negativa avuta, dovendo, nel ricorso che fa, spiegar così questa come la cagione, se gli sia nota.

xiii. Senza licenza del nostro superiore niuno ardisca procurarsi nè direttamente nè indirettamente qualsivoglia privilegio, dispensa, o altra simile grazia, per sè o per altri della comunità, anzi nè meno per la comunità stessa, dal Sommo Pontefice, o da altro superiore ecclesiastico, e nè pure senza detta licenza procuri qualche grazia da principi secolari.

xiv. Al cospetto del superiore ognuno usi tutta la modestia e rispetto. Lo stesso rispettoso ossequio usino li studenti con loro lettori, e massimamente i novizi col loro maestro, il quale non sia facile a farli sedere, nè coprire, fuor del tempo delle conferenze spirituali in comune, o nelle ricreazioni.

xv. Non presuma alcuno d'imporre qualche cosa ad altri, nè di comandare ad alcuno, se'l proprio ufficio non lo richieda, o non abbia special commissione del superiore.

¹ Forsan la lettera (R. T.).

xvi. Niuno lasci di eseguire ciò, a che l'astringe il proprio ufficio o l'ordine del superiore, per altro negozio che gli sopravvenisse, se pria preventivamente non ne avrà fatto consapevole il superiore, acciocchè sostituisca altri in sua mancanza.

xvii. Nessuno entri in cucina, in dispensa, o in altri luoghi non comuni, e ne' quali non avrà da eseguire qualche commissione datagli; e se mai nascesse ad alcuno necessità di portarvisi, chieda prima licenza al superiore o al prefetto almeno di quel luogo.

xviii. Essendoci radunati in questa comunità per vivere e morire sotto l'ubbidienza, persuasi di sentire dalla bocca del superiore la volontà di Dio, per incontrare in tutte le nostre azioni il divino volere; perciò dovrebbe ognuno con gran umiltà svelargli il tutto ed ogni avvenimento, sia di cose interne, sia di cose esterne, e ciascun mese dargli conto di coscienza, e ricevere la sua moderazione e consiglio, per eseguirlo esattamente; ma perchè la molteplicità degli affari potrebbe impedire il superiore di ascoltar tutti, e taluno potrebbe avervi qualche ripugnanza, perciò dovrà la congregazione de' votanti di ciascuna cosa colla maggior parte de' voti eleggere un direttore di spirito, per mutarlo quando alla medesima congregazione parerà, al quale ognuno, in qualsivoglia ora non impedita dagli esercizi di comunità, dovrà ricorrere per direzione e consiglio nelle cose concernenti alla guida delle anime, svelandogli umilmente tutte le sue cose interne ed esterne, ed ogni mese dargli conto di coscienza, per eseguire esattamente i suoi consigli. Si avverta tuttavia che questo direttore non potrà permettere cosa alcuna che esiga dispensa di regole, o induca novità o singolarità, o qualunque altra esterna pubblicità, senza espressa licenza del superiore, la di cui autorità si richieda in tali casi.

xix. Nessuno esca di casa senza licenza del superiore, e nel far ritorno in casa ne lo facciano ancor consapevole. Se il superiore dimanderà chi esce di casa, dove vada, e a che fare, ognuno sarà tenuto a

palesarglielo con ischiettezza e verità, e nel ritorno ognuno domandato del dove siasi portato, e de' negozi fatti, risponderà alla stessa maniera.

xx. Nell'uscire dalla propria stanza, e nel ritorno in essa, ognuno s'inginocchi d'avanti il crocifisso, domandandogli la sua benedizione, indirizzando anco alla Maestà Sua l'azione. Si passi poi per la chiesa, e dopo aver adorato il SS. Sacramento, si devono rinnovare gli atti di indirizzare ogni azione alla gloria di Dio avanti la Maestà Sua.

xxi. Finalmente concludiamo questo capo cotanto importante dell'ubbidienza con questa notevole istruzione che dà S. Tomaso l'Angelico II, II, q. 104, a II: *Voluntas superioris, quomodocumque innolescat, est quoddam tacitum praeceptum, et tanto videtur obedientia promptior, quanto expressum praeceptum obediendo praevenit, voluntate tamen superioris intellecta*; nè dovrà raffreddarsi dall'ubbidir prontamente lo scorgere qualche difetto nella persona del superiore, ma dovremo più tosto ubbidirlo perchè comanda, che mai disubbidirlo perchè difetta, purchè tal cosa che comanda, non sia peccato: essi dovranno dar conto a Dio dei loro proprî difetti, e noi se abbiamo o no ubbidito.

CAPO OTTAVO

Dell'ubbidienza e degli altri due voti semplici de' collegiali.

I. I collegiali, oltre all'essere astretti ad osservare le regole nel precedente capo descritte con ogni esatta puntualità, fanno di più il voto semplice d'ubbidienza, per lo quale sono obbligati, in virtù del voto, sotto peccato mortale ad ubbidire; ma per peccare mortalmente, ed essere violatori del voto, si richiede che il superiore faccia loro comando espresso, ed usi la solita formalità, *vi comando in virtù di santa ubbidienza*.

II. Il quarto voto de' collegiali è l'andare e persistere nelle missioni straniere con dipendere intieramente dalla sacra Congregazione *de Propagandâ Fide*, in vigor del

1 *Potius raffreddarci* (R. T.).

qual voto restano i collegiali astretti sotto colpa mortale: I. Ad andare subito ne' paesi degl' infedeli, per li quali saranno destinati dalla consulta della nostra congregazione, e dove saranno mandati dalla sacra Congregazione *de Propagandâ Fide*, senza il decreto della quale niuno de' nostri potrà partire per tali missioni straniere; II. Dove portandosi, sotto colpa mortale è obbligato a proseguire il viaggio, purchè alcuna necessità o impedimento non lo forzasse a far qualche dimora in qualche luogo; eccetto adunque questi casi, dee sempre proseguire il cammino senza trattenersi per tempo notabile per strada fuor di necessità conosciuta o d'utilità, o altro motivo dettato dalla prudenza; III. E col medesimo obbligo di colpa grave sono tenuti i detti collegiali di persistere effettivamente nelle missioni; IV. Nelle quali i sacerdoti sono tenuti di esercitare effettivamente il ministero apostolico annunziando Gesù Crocifisso ai gentili, ed amministrando i santi sacramenti a' cristiani. Coloro poi, che non sono ancor sacerdoti, esercitino l'ufficio di catechista.

III. Il quinto ed ultimo voto de' collegiali è di militare per tutta la loro vita in servizio della Chiesa in questo istituto e costituzioni, onde per questo voto e promessa niuno può professare qualsivoglia altra religione, nè ascrivere a qualsivoglia altra congregazione, collegio, seminario o istituto, qualunque egli si sia, senza la dispensa del superiore, attesa la maggior parte de' voti della sua consulta.

IV. Ma se alcuni de' collegiali per mancanza di dottrina sufficiente, o per altra cagione, non saranno dalla consulta promossi al sacerdozio, sono in virtù di detto voto obbligati a servire, o in ufficio di catechista, o in altro impiego della comunità, al quale dal superiore saranno destinati.

V. Si avverta finalmente che soltanto ciò che han promesso con questi voti i collegiali sono astretti ad eseguire sotto grave colpa, in guisa che peccheranno mortalmente qualora li violassero colla trasgressione di qualche punto sostanziale di detti voti, massimamente col dissubbidire al for-

male precetto d'ubbidienza dato loro dal superiore: del rimanente, qualora non vi sia disprezzo, niuna delle nostre regole obbliga a colpa nè pur veniale, ma alla pena che il superiore, secondo la qualità della trasgressione, stimerà di dare a' delinquenti.

CAP. NONO

Degli esercizi quotidiani di comunità.

i. La mattina, intesosi il primo segno del campanello, ciascuno levatosi subito da letto senza punto trattenersi, alzerà la mente a Dio, e cominciandosi vestire, l'accompagnerà con qualche pia meditazione o alcuna orazione vocale; subito che sarà vestito, si porrà inginocchiato, e farà i soliti atti da cristiano, di adorazione, ringraziamento, preghiera, fede, speranza e carità, indirizzando a Dio le azioni del giorno, ed offerendogli anche i pensieri e le parole che dirà in unione de' meriti di Gesù Cristo, e farà l'intenzione di guadagnare tutte le indulgenze che può; reciterà poi tre *Ave Maria* alla Vergine Santissima della purità, acciocchè in quel giorno e sempre ci mantenga colla sua intercessione illesa sì bella gioia; indi l'orazione al santo Angelo Custode, ed un *Pater* ed *Ave* ad onore dei santi speciali avvocati; e si tratterrà in qualche pio pensiero finchè non si dia il secondo segno di dover andare a far l'orazione: avvertendo ognuno studiosamente di non fare occupare l'animo da qualche pensiero vano o straniero, ma custodisca il suo cuore acciocchè nel principio del giorno lo pasca solo di pensieri di Dio, del cielo e di spirito, e possa dire col santo Davide: *Quoniam ad te orabo, Domine, mane exaudies vocem meam*¹; sonato poi che sarà il secondo segno, si raduneranno tutti nel luogo destinato, ed adorato il SS. Sacramento, e dettosi il *Veni, sancte Spiritus, etc.*, si farà la mezza ora di orazione mentale, come si è detto.

ii. Nelle stagioni che le notti sono corte, subito finita l'orazione, e nelle stagioni che sono lunghe, all'alba chiara, si suonino

le campane per la prima messa, e per segno altresì della rottura del silenzio. S'apra la chiesa, e si celebri la prima messa, alla quale assisteranno tutti coloro che non la celebrano. Dopo la quale ognuno si ritiri con modestia, e con raccoglimento ed umile tranquillità attenda poi al proprio ufficio.

iii. L'esame di coscienza da far per la mattina si farà immediatamente innanzi al pranzo, e si suonerà il campanello per darne il segno, ed incomincerassi col *Veni, sancte Spiritus, etc.*; indi ognuno adorerà Gesù Cristo sacramentato, e dinanzi alla sua divina presenza farà l'esame generale e particolare, dando una accurata rivista ai suoi pensieri, opere e parole, ad a' proponimenti presi nell'orazione, per vedere se li ha adempiti, e facendo appresso gli atti di pentimento e proposito: in tutte le quali cose, per serbarsi uniformità, il superiore accennerà gli atti, e finito che sarà il tutto, egli intonerà la *Salve Regina*, che si dirà, secondo il solito, con pausa e divozione, e finita che sarà, il superiore s'alzerà, e dopo d'esso gli altri, e si andrà con modestia e decoro nel refettorio, dove si osserverà ciò che vien prescritto nel capo xxii della mensa.

iv. Dopo il pranzo, mentre si fa l'azione di grazie, si darà il segno per la seconda tavola; dopo l'azione di grazie, si ritornerà nel coretto, ed ivi adorato Gesù sacramentato, si reciteranno le litanie della Madonna per li benefattori viventi, ed il *Deprofundis* per i benefattori defunti, e finito ciò, si andrà nel luogo della ricreazione.

v. Coloro che sono della congregazione, faranno la ricreazione in luogo distinto da quello dove si raduneranno i collegiali per la loro, e così si osserverà con fratelli laici. Questa ricreazione durerà per lo spazio d'un'ora, e senza averne licenza, niuno n'è dispensato.

vi. Finita l'ora suddetta, si darà il segno del silenzio, che sarà da tutti osservato, e ciascuno si ritirerà in stanza, o per riposare, o vero per impiegarsi in silenzio ad alcun manuale esercizio che non apporti

¹ Psal., v, 6.

applicazione faticosa, e che non sia di disturbo a' compagni.

vii. Quando li giorni sono lunghi, il riposo durerà per due ore, dopo le quali, al suono del campanello, ognuno con modestia e silenzio si porterà al luogo destinato, ove si farà la mezz'ora di orazione mentale. Quando i giorni sono corti, il riposo sarà di tre quarti d'ora, e la mezz'ora d'orazione si farà la sera con osservarsi il metodo prescritto nel capo xv nell'orazione della mattina.

viii. Nelle stagioni che le giornate sono lunghe, e la seconda orazione si fa ad ora di vespero, il suono del campanello della prima tavola per la cena sarà il segno del silenzio: quando poi le giornate sono più brevi, e la seconda orazione si fa la sera, il segno del silenzio sarà il tocco dell'*Ave Maria*.

ix. Le conferenze, delle quali si parla a suo luogo, in tempo di estate si potranno fare tutte ciascuna nel suo giorno dopo l'orazione che si fa ad ora di vespero. Nel tempo poi dell'inverno, si potranno fare anche dopo il vespero, subito dopo rotto il silenzio, come oggi felicemente si pratica: si eccettua sol quella delle colpe, che si farà la sera dopo l'orazione in comune.

x. Ne' tempi che detta orazione si farà il giorno, si dee osservare il seguente metodo per apparecchio: Prima d'andare a cena, si raccoglieranno tutti in cappella, ove, dopo un breve raccoglimento, si adorerà il SS. Sacramento, si dirà il *Sub tuum praesidium, etc.*, e poi s'anderà a cena, nella quale s'osservierà il metodo del pranzo.

xi. Dal tempo della seconda tavola del pranzo fino a quello della cena devono scorrere al meno otto ore, qualche poco più ne' giorni di digiuno.

xii. Mentre si fa l'azione di grazie dopo la cena si darà il segno per la seconda tavola, e dal refettorio tutti si condurranno modestamente nel coretto, dove, dopo essersi adorato il SS. Sacramento, si diranno alcuni *Pater* ed *Ave* per la conversione degl'infermi, peccatori, per li benefattori, ecc. Si starà poi in modesta ricreazione per lo spazio di tre quarti d'ora, quando non si

digiuna, e ne' giorni di digiuno, per sola mezz'ora, e tutti dovranno onninamente intervenirevi, esentandone solo i dispensati dal superiore.

xiii. Finita la ricreazione, sonato il campanello per l'esame di coscienza (e questo anche sarà il segno del silenzio, che durerà fin al segno della prima messa della mattina), per l'esame tutti si condurranno nel coretto, dove adorato Gesù sacramentato si fa l'esame generale e particolare cogli atti che per chiarezza maggiore si ripetono qui, cioè di dolore e proponimento, di fede, speranza, carità, ringraziamento, preghiere, e con indirizzare a Dio le azioni tutte. Si diranno tre *Ave Maria* colla faccia per terra, dimandando umilmente e con confidenza la benedizione alla Vergine nostra madre, e la grazia di mantenerci sempre puri. Si dirà la preghiera al S. Angelo Custode, ed un *Pater* ed *Ave*, dopo il quale il superiore benedirà tutti coll'acqua benedetta, ed ognuno dopo il silenzio si porterà nella sua stanza.

xiv. Dopo mezz'ora si darà il segno col campanello, acciocchè ognuno smorzi il lume, e vada a letto, ed il superiore averà l'avvertenza di quando in quando d'andare per le stanze, o di mandarvi, per vedere se ciò s'osserva.

xv. Da questo segno all'altro che sarà dello svegliarsi la mattina, devono passare sette ore quando le notti sono lunghe, e sei quando le notti sono corte, perchè all'ora per lo riposo del sonno si supplirà dopo pranzo.

CAPO DECIMO.

Della conferenza sopra le regole.

i. Se mai qualche comunità decadde dal primiero spirito nel quale fu eretta, ciò sarebbe unicamente perchè non si osservano più le leggi sotto delle quali fu stabilita. Non serve che abbiano i fondatori lasciato ottime regole, se dai sudditi non si mettono in pratica e vanno in disuso, e così la comunità perde il suo spirito e la sua vita, che è l'osservanza esatta delle sue costituzioni ed ordini, il che conoscendosi

dal¹ comune nimico, cerca per varie vie e raggiunti rallentare il fervore dell'osservanza, e così farsi strada ad introdurre il rilassamento, e poi il disprezzo delle regole e la rovina della comunità. Acciocchè adunque col favor di Dio ciò non avvenga alla nostra minima comunità, ma sempre vegeto e fresco vi si vegga mantenere lo spirito e l'buon ordine con cui si è fondata, mezzo opportuno ed efficace si giudica il tener sempre innanzi agli occhi le regole, ancor le più minute e che sembrano a prima veduta di poco rilievo, e l'riflettere insieme che tali regole sono i fondamenti, su cui si mantiene in piedi, e li sostegni e puntelli che la sostengano e difendano dalle cadute. Si stabilisce perciò la conferenza da farsi sulle regole comuni e particolari della prima e seconda parte, e ciascun lunedì, nella maniera che siegue.

ii. Il detto giorno del lunedì nelle giornate lunghe finita che sarà l'orazione dopo il riposo, e nelle giornate corte, nelle quali l'orazione si farà la sera, al tocco della rottura del silenzio, tutti dovranno al suono del campanello, che ne darà il segno, radunarsi al luogo destinato.

iii. Radunati che saranno, il superiore comincerà l'esercizio col *Veni, Sancte Spiritus, etc.*, e poi posti a sedere, leggerà, o farà leggere questa regola per lo spazio d'un quarto d'ora incirca, cominciando dal preludio.

iv. Finita che sarà la lettura suddetta, il superiore dimanderà a tutti se hanno notato esservi nella comunità qualche rilassamento o mancanza, e chiederà ancora il rimedio che da ognuno si stima opportuno per metterlo in osservanza, ed ognuno è tenuto dire con tutta la modestia e sincerità il suo sentimento. Non essendovi niente da notare, si dovrà proseguire la lettura per un un altro quarto d'ora incirca, osservandosi il metodo immediatamente detto, e così dovrà farsi finchè finisca la lettura di tutta la regola, e poi si comincerà di nuovo. Quando dopo il primo quarto vi sarà alcuna cosa di rilassamento da notare,

¹ Edit. Main. habet del (R. T.).

se anderà la conferenza in lungo, di maniera che si occupi un'ora, scorsa l'ora, non si farà altro; di maniera che la lettura non dovrà mai eccedere la mezz'ora, e la lettura e lo scrutinio delle mancanze conosciute nella lettura o dal¹ primo quarto o di tutta la mezz'ora insieme, non dovranno mai eccedere l'ora.

v. Si deve poi notare, che in questa conferenza si tratta delle mancanze di tutta, o parte della comunità, e non già di quella de' particolari, imperocchè di queste se ne parla nella conferenza delle colpe, che si fa il venerdì.

vi. Nel caso che si trovasse qualche rilassamento, il superiore dee essere tutto zelo in esortare tutti all'osservanza; ed in pubblico, o, dismessa che sarà la conferenza, in privato, secondo richiede la qualità della materia, conferire con li consultori per prendere quegli espedienti che avanti Dio si stimano più propri ed opportuni per introdurre di nuovo l'osservanza della comunità; e questo importa tanto, quanto importa l'osservanza perpetua in questa comunità.

vii. Questa conferenza si stima di tanta importanza, che, se per qualche festa di prima classe che concorresse o occorresse, o per qualche altro legittimo impedimento, non si potesse fare il lunedì, s'ordina che si supplisca il primo giorno non impedito, imperocchè se si farà sempre coll'avvertenza e spirito che si deve, sarà ciò un de' potentissimi mezzi per mantenere sempre vigorosa l'osservanza delle regole in questa minima comunità.

CAPO UNDECIMO.

Della conferenza spirituale.

i. Gli antichi padri, ricordevoli del detto dello Spirito Santo: *Ducam eam in solitudinem, et loquar ad cor eius*¹, per trovare più facilmente Dio e trattar seco de' loro eterni interessi, benchè volontariamente esiliati ne' monti, e carcerati in strettissime celle, avessero dato bando ad ogni umano commercio, pure considerando il gran utile

¹ Aptius lege del (R. T.).

² OSEA, XII.

che si cava dalle conferenze di spirito, per esser queste non solo la scuola, nella quale si apprendono le regole della perfezione, ma anche la fornace nella quale riscaldansi i cuori da vivi sentimenti proferiti da fervorosi compagni, si acquista forza e lena per sempre più attendere all'acquisto delle virtù, lasciata per qualche ora la solitudine da quando in quando si radunavano e conferivano delle cose eterne. Noi dunque, che per il solo desiderio della perfezione ci ritroviamo congregati in questa casa, volendo con maggior facilità pervenirvi, oltre l'orazione mentale ed esame di coscienza che si fanno in comune, dobbiamo anche radunarci per conferire sopra de' mezzi per giungere alla perfezione che si desidera, non solo per sempre più apprenderne le regole, ma per via più infervorarci, e far nuovo acquisto di forze per porle in pratica: che per tanto si prescrive la conferenza da farsi nel modo che siegue.

II. Ne' giorni non impediti dalla conferenza delle regole e da quella delle colpe o della teologia morale, al segno del campanello, dovranno tutti i nostri radunarsi nel luogo destinato, e dopo d'essersi detto il *Veni, Sancte Spiritus, etc.*, al cenno del superiore si comincerà la lettura d'un libro spirituale, sopra della quale il superiore, o altro di sua commissione, dirà qualche cosa d'edificazione sopra l'istessa materia, e poi dimanderà a qualcheduno degli astanti il sentimento avuto circa la detta lettura, e costui dovrà dire con semplicità quello che stimerà avanti Dio, avvertendo però tutti di non essere troppo prolissi, ma di dire succintamente il loro sentimento, non affettato nè studiato, ma con santa semplicità, e, parendo al superiore, potrà egli spiegare più a lungo il suo o l'altrui sentimento, purchè tra la lettura e conferenza mai non passi un'ora.

CAPO DUODECIMO.

Della conferenza delle colpe.

1. Per la perpetua osservanza di queste regole, oltre de' mezzi proposti nel cap. x, conferendo molto la conferenza delle colpe,

perciò s'ordina che ogni venerdì, immediatamente dopo l'orazione del giorno, si faccia la detta conferenza nel modo che siegue.

II. Il luogo, se comodamente si può, deve essere oscuro, con porta e fenestre serrate, col crocifisso e due candele sopra del tavolino o sopra l'altare: dall'una e dall'altra parte del tavolino vi devono esser de' banchi bassi e senza spalliera, ne' quali ognuno secondo il suo ordine deve sedere, e solo al lato del tavolino dee porsi una sedia per sederci il superiore.

III. Dopo che saranno tutti radunati e seduti, dettosi in ginocchioni il *Veni, Sancte Spiritus, etc.*, e riposti a sedere, il superiore o altro da lui destinato dirà quattro parole *ad fratres* incitandoli all'umiltà ed emenda delle colpe; e finito che egli avrà di dire, potrà ordinare a qualche altro di aggiungere il suo sentimento sopra l'istessa materia; e dopo essersi trattenuto qualche tempo con questi esercizi, darà il segno per cominciarsi la conferenza delle colpe: ed allora il fratello laico più antico si porrà in ginocchioni nel mezzo di tutti, e col capo chino e scoperto, e colle mani giunte avanti il petto, accuserà e non escuserà le sue colpe, supplicando il superiore della penitenza e gli astanti a volerlo ammonire degli altri suoi difetti che egli non conoscesse, sentendo in profondo silenzio e senza scusarsi tutti quelli che gli faranno la carità di avvisarlo de' suoi difetti, ancorchè non fossero tali come gli vengono rappresentati.

IV. Qui però si deve avvertire che il solo superiore, che starà seduto e colla beretta in testa, potrà avvisarlo degli altri difetti, fargli la fraterna correzione, e bisognando, dargli congrua penitenza. Potrebbe altresì ordinare a qualche congregato prudente e discreto d'ammonirlo di qualche altro difetto che conoscesse, ma questo non dovrà inoltrarsi a far correzione alcuna: il che finito, il fratello bacierà la terra, ed anderà a sedere nel pristino luogo, ed in tanto succederà a lui l'altro fratello laico, e così fino all'ultimo, quale, dopo d'aver baciato

la terra, anderà fuori seguendo tutti gli altri fratelli. Gli altri poi siano fratelli laici, chierici o sacerdoti, conoscendo qualche difetto nel compagno, sono tenuti anticipatamente avvisare il superiore, acciocchè egli gli faccia la correzione in questa conferenza in pubblico, o in altri tempi in privato, come meglio stimerà nel Signore.

v. Immediatamente dopo i laici, succederanno li chierici, quali, finito che averanno, anderanno via, osservandosi con questi e coi sacerdoti l'istesso che poco anzi si è detto con i fratelli laici, colla sola differenza, che il superiore in fare alli sacerdoti la correzione, dovrà farla colla beretta in mano.

vi. Dopo i chierici, succederanno i sacerdoti, i quali, dopo essersi accusati, ed aver umilmente ricevuto dal superiore le ammonizioni e penitenze, e dopo che il superiore avrà intonato l'azione di grazie al modo solito, anderanno via, restando il solo superiore col suo ammonitore. Il superiore allora s'inginocchierà avanti di lui, e lo pregherà volerlo ammonire, il che dovrà fare, ma con ogni rispetto ed umiltà, senza riprenderlo, e senza imporgli penitenza, ma solo esporgli i suoi difetti, e lo scandalo che avesse causato.

vii. Li difetti, che si devono accusare o riprendere in questa conferenza, saranno le trasgressioni della regola, le negligenze ed errori commessi nell'amministrazione dei propri uffizi, le mancanze ed offese fatte a' compagni con dimandar loro pubblicamente perdono, li difetti occulti, che non sono scandalosi, e sono in danno del comune, come il versar olio, vino, rompere vasi, ecc., e li difetti resi già pubblici in comunità.

viii. Li difetti poi, che non sono pubblici, e ricercano una confessione segreta al confessore, non si devono dire in questo luogo e molto meno se, dicendoli, generassero qualche scandalo.

ix. Niuno si contristi per qualsivisia correzione, dovendo piuttosto rallegrarsi, e ricevere con rendimento di grazie l'avviso che tende al profitto, emendazione e decoro.

x. La penitenza da darsi dal superiore in simili casi, sarà una delle seguenti, o altre simili, secondo la qualità del difetto, ed egli stimerà meglio nel Signore; per esempio baciare qualche volta la terra, recitare alcuni *Pater et Ave*, o il *Deprofundis* o il *Miserere* colle braccia aperte, servire nella prima tavola, recitare una corona per l'aumento della fondazione, o per l'anime dei nostri defunti, visitare gl'infermi di nostra casa, far baciare li piedi alli primi o agli ultimi sacerdoti, sedere nell'ultimo luogo della tavola, cibarsi seduto in terra, stare in ginocchioni avanti il refettorio, e pregar tutti quelli che entrano a pregar Dio per lui, mentre tutti siedono a tavola, andare in giro dimandando a tutti qualche cosa per limosina, o altre simili.

xi. Si avverta qui, che, quando offendesse taluno l'altro, non si deve aspettare sino al venerdì per riconciliarsi, ma secondo l'avviso di nostro Signor Gesù Cristo, che dice: *Sol non occidat super iracundiam vestram*¹, deve la stessa sera dopo cena in refettorio, subito finita l'azione di grazie, pubblicamente inginocchiarsi, e dimandar perdono al compagno, ed allora il compagno, benchè offeso, deve ancora egli subito inginocchiarsi, e dimandare ancor egli perdono, e riconciliarsi. Il superiore poi essendo consapevole del difetto, farà una breve riprensione con dare o no la penitenza secondo meglio stimerà nel Signore; questo però si deve intendere quando la colpa fosse pubblica, poichè essendo segreta, dovranno segretamente far questi atti tra di loro.

xii. Le colpe e difetti de' novizi li sentirà ogni giorno il loro maestro.

xiii. Li collegiali, finchè non abbiano finito i loro studi, sono dispensati da questo esercizio.

CAPO DECIMOTERZO.

Degli altri esercizi da farsi in diversi altri tempi.

i. Avendo noi sortiti la gran ventura d'essere radunati sotto il dolcissimo e po-

1 *Ad Ephes.*, iv, 26.

tentissimo patrocinio della sagra famiglia di Gesù Cristo, ognuno dee mantenere, e sempre più aumentare quei soavi sentimenti e dovuti di tenera ed ossequiosa divozione verso famiglia cotanto felice e beata, i quali di certo si sentirà ciascuno sorgere nell'animo e sperimenterà sempre nel suo cuore per poco che rifletta alla qualità ed amabilità de' personaggi che godiamo per protettori. Onde ognuno dia fiato spesse volte al fuoco della divozione fervorosa verso la sagra famiglia, e si ecciti il più che può ad offerir loro i più servidi affetti del cuore, e procuri di cercare occasione per onorarli, amarli, trattenersi in dolce conversazione con essi, e talmente imbeverare lo spirito della tenerezza inverso loro, che diano segno al di fuori, facendosi da ognuno conoscere per figli, alunni e confidenti amici e servi della beata famiglia di Cristo, e diffondendo ne' cuori de' prossimi lo stesso affetto, lo stesso ossequio, la stessa tenerezza, la stessa riverenza, fiducia e divozione.

II. In tutte le feste principali di Gesù Cristo e di nostra Signora, come anche nelle feste dei santi Giuseppe, Gioachino, ed Anna, il superiore intimerà le novene, le quali si faranno con quegli esercizi di pietà che detterà ad ognuno la propria divozione coll'indirizzo del direttore. Nei giorni poi della loro festività, tutti siano tenuti comunicarsi.

III. Tutti li sacerdoti si confesseranno almeno una volta alla settimana, e non essendo legittimamente impediti, diranno messa ogni giorno; gli altri poi, che non sono sacerdoti, si confesseranno almeno ogni sabbato, ed ogni vigilia di festa di precetto, e de' santi padroni di questa fondazione, per comunicarsi poi il dì seguente, se così parerà al direttore.

IV. La comunione si deve fare pubblicamente in chiesa da tutti insieme all'istessa messa. Li novizi poi, oltre le dette giornate, si comunicheranno un'altra volta ogni settimana, sempre però coll'approvazione del maestro, alla prudenza del quale si lascia di comunicarsi più spesso.

V. Eccetto i fratelli laici, tutti gli altri si esortano ogni giorno a leggere in ginocchioni e con testa scoperta un capo del Nuovo Testamento, studiandosi di praticare quanto in quello si comanda e consiglia, con riflettere poi ed esaminarsi nell'osservanza o trasgressione in quel giorno.

VI. Ogni anno, ciascuno dovrà fare per otto giorni gli esercizi spirituali con la confessione annua e rinnovazione di spirito. Questi esercizi potranno cominciarsi ai 30 di dicembre, e si farà la rinnovazione di spirito nella vigilia dell'Epifania, festa della manifestazione di Gesù Cristo, ed in cui la santa Chiesa rammenta il principio della sua predicazione, ed il primo miracolo operato a' prieghi della santissima Madre a pro degli sposi di Cana, considerando ciascuno seriamente che noi dobbiamo esser posti sul candeliere per essere da ognuno mirati, e per fare che colle nostre opere, fatiche e buon esempio si convertano alla santa fede i gentili, e tornino alla amicizia di Dio i peccatori: *Sic luceat lux vestra coram hominibus, ut videant opera vestra bona, et glorificent Patrem vestrum qui in caelis est*¹; ed insomma dobbiamo in faccia a tutto il mondo comparire come ministri di Gesù: *Sic nos existimet homo ut ministros Christi et dispensatores mysteriorum Dei*².

VII. Il superiore, qualche giorno prima, intimerà nel refettorio la rinnovazione suddetta, la quale si farà in chiesa, a porte serrate, dopochè saranno finite le messe, e dopo essere andati via tutti i forestieri.

VIII. Ogni mese, in un giorno destinato dal superiore, ognuno dovrà fare un giorno di ritiro, e la confessione di quel mese, e nel giorno seguente, o in altro da destinarsi dal superiore, ognuno darà il conto di coscienza al direttore di spirito, e dovrà ognuno accettare con pronta e cieca ubbidienza tutti i consigli che gli saranno dati, come si è detto nel cap. VII, ove si tratta dell'ubbidienza.

IX. Ne' giorni, ne' quali non si fa la con-

¹ MATTH. V, 16.

² 1, ad Corinth., IV, 1.

serenza di spirito, tutti dovranno per un quarto d'ora fare la lezione spirituale.

CAPO DECIMOQUARTO.

Del modo come dobbiamo conversare fra di noi.

I. La nostra conversazione e colloqui familiari devono dimostrare il sincero e cristiano amore, che tutti scambievolmente dobbiamo portarci, e così dee quella essere tutta amore e carità cordiale, che abbia Iddio per principio, e Iddio per fine; amandoci con quell'amore al quale esortava i fedeli l'apostolo diletto: *Quoniam haec est annuntiatio, quam audistis ab initio, ut diligatis alterutrum*¹.

II. Questo amore ci dovrà fare compassionevoli co' compagni, desiderosi del loro bene spirituale, e pazienti nel soffrire i loro difetti: *Supportantes invicem in charitate, solliciti servare unitatem spiritus in vinculo pacis*².

III. Dee regnar ancora tra noi uno scambievolmente rispetto e stima, considerandosi ognuno come suddito e discepolo del compagno, ponendo sempre mente alle parole del Redentore: *Non veni ministrari, sed ministrare*³, e dell'altre riferite da S. Giovanni: *Si ego lavi pedes vestros, dominus et magister, et vos debetis alter alterius lavare pedes*⁴.

IV. Ma ingegnandosi ciascuno di mostrarsi amico caritatevole ed ossequioso di ogni fratello, avverta a non fomentare amicizia particolare con veruno, essendo questa, non men che l'avversione, origine di rotture, di discordie, e della rovina delle comunità, le quali non possono ben regolarsi e camminar con buon ordine, se non regna in esse una pace equabile in tutti e con tutti, onde sfuggansi le soverchie familiarità e confidenze che non si confanno colla sodezza e rigore del vero spirito, il quale dee, non dico diminuirsi, ma crescere nella santa fraterna cordiale nostra amicizia in Gesù Cristo.

V. Nell'incontrarsi l'uno l'altro si salu-

¹ I, IOH., III, 14.

² Ephes., IV, 2 et 3.

³ MATTH., XXVIII.

⁴ IOH., XIII, 14.

tipo i nostri con rispetto e decoro, così in casa come fuori. A mensa però si levi la beretta solo al superiore, e a qualche personaggio forestiero e di condizione distinta.

VI. Si fugga più che la peste ogni sorte di contesa, e se ne tronchi a buon'ora qualsivoglia radice ancor con perder le proprie ragioni, e se (il che tolga Iddio) accadesse alcun disturbo, sia ognuno ricordevole dell'avviso della sagra Scrittura come altrove si è incaricato: *Sol non occidat super iracundiam vestram*¹.

VII. Niuno ardisca di riprendere o correggere il compagno de' suoi difetti o mancamenti, ancorchè naturali, essendo questo uffizio proprio del superiore, ed il quale niuno dee arrogarsi, ma osservandosi nel compagno alcun mancamento o difetto, se ne dia con segretezza e carità al superiore l'avviso, il quale con la sua prudenza ed autorità metterà in opera i mezzi opportuni per emendare, correggere e castigare ancor il fratello, se il difetto lo richiede, e far cessare il disordine e le mancanze.

VIII. Senza licenza del superiore niuno ardisca parlare con collegiali, con novizi, studenti, e parimente niuno si porti nei luoghi destinati al loro uso o per gli esercizi loro.

IX. Niuno s'intrometta nell'uffizio o impiego del compagno, eccetto quando venisse pregato dagli uffiziali subalterni a porgere aiuto in alcuna cosa, perchè allora, potendo, dia subito la mano, e caritatevolmente l'aiuti, purchè però possa in breve tempo spedirsi la faccenda, perchè, se vi si richiede molto tempo, si dee prima chiedere licenza al superiore.

X. Nelle ore di recreazione severamente si proibiscono le dispute su punti di scienze, per non riscaldare il capo, impedire la digestione ed il sollievo delle anime, che si pretende in questo tempo. Il luogo del disputare è la scuola, ove s'attende nelle scienze e ne' studi.

XI. S'incarica fortemente a servir rigoroso silenzio intorno a tutto ciò che si fa

¹ Ephes., IV, 26.

o si dice in casa, niente discorrendone con forestieri, specialmente se siano difetti o imperfezioni, ancorchè minime. Il buon nome è pur troppo necessario agli evangelici ministri, onde di loro con tutti bisogna parlar di tal guisa, che ognuno resti di loro conversazione e vita edificati. E la pace e fraterno amore è pure assai richiesto nelle comunità, e si dee porre da ognuno qualsivoglia studio e fatica, acciocchè, senza ombra e diminuzione, viva nel cuor di tutti, e con ogni sollecitudine e zelo dee ognuno avvertire, che non abbia a ricevere mancanza, nè a raffreddarsi per colpa sua; onde se in ciò accadesse alcuna mancanza o trasgressione, il superiore non lasci impunito il trasgressore, per leggiero che sia stato il fallo, essendo ciò cagione che l'amore tra i fratelli si raffreddi, cosa che noi dobbiamo sfuggire con tutte le forze possibili.

xii. Non presuma alcuno lamentarsi del vitto, della camera, o di qualsivoglia altra cosa della comunità, nè di qualche mancanza di comodo; e se mai avvenisse cosa alcuna che non soddisfacesse, o dasse non leggiero fastidio, se ne dia segreto e subito avviso al superiore, il quale con discreta prudenza dovrà porvi il rimedio.

xiii. Parlandosi d'altri regni o paesi dei quali sono gli astanti, non se ne dicano i difetti, potendo essere ciò cagione di rompersi la carità fraterna.

xiv. Coloro che hanno deposto l'affetto al mondo, e si sono liberi dalle cure di quello, consecrati agli esercizi apostolici, senza alcuna mira di proprio interesse, debbono anche spogliarsi del soverchio desiderio di sapere le avventure delle guerre e delle cose che succedono ne' governi degli Stati, ma dovranno piuttosto vivere come se per loro non ci fosse mondo, sebbene però non dobbiamo dimenticarci del nostro essentialissimo obbligo di pregar sempre il Signore per li nostri sovrani in primo e principal luogo, indi per tutti i principi cristiani, e loro pace e concordia.

xv. Nelle lettere che si scriveranno i nostri fratelli scambievolmente, evitino ogni soverchia cerimonia ed affettazione, ma così

ne' titoli come nelle espressioni riluca in essi la carità, l'amorevolezza, la confidenza, e sopra tutto la semplicità cristiana. Legga ognuno il cap. xxv del *Cammino di perfezione* di S. Teresa di Gesù, e rifletta a quei mirabili documenti che ivi dà, acciocchè le sorelle si reputino tutte eguali, e certamente ognuno si persuaderà, che niuna distinzione, nè pur nello scriversi l'un l'altro, e niuna maniera che odori di mondo, debba permettere nelle ben regolate comunità.

CAPO DECIMOQUINTO.

Dell' orazione mentale.

i. Se, come dice S. Teresa, la meditazione è cosa che a tutti i cristiani importa la vita il cominciarla, chi mai potrà dubitare che noi dobbiamo con una cura particolarissima far che questo santo esercizio sia l'unico nostro pensiero e le nostre vere delizie, dacchè non solo è debito della nostra vocazione il procurare coll'aiuto del Signore accostarci a lui, e seco in dolce conversazione deliziarci il più che possiamo per mezzo di questo santo esercizio e degli altri atti inverso Dio che negli altri capitoli si prescrivono, ma è altresì principal nostro impiego il trasfondere lo spirito di orazione negli altri prossimi ed istillarlo ne' cuori de' collegiali; onde essendo l'amore dell'orazione il principal fondamento su cui si erige il grande edificio di questa minima radunanza, quanto con più o meno fervore, assiduità e vigilanza si attenderà da noi a tal santo esercizio, tanto maggiore o minore sarà lo spirito della nostra comunità; nella quale benchè un'ora solo d'orazione da farsi in comune s'ordini e comandi, tale determinazione di tempo sia data solamente per tòr via tutte le scuse che alcuno volesse pretendere per non intervenire, non già perchè, soddisfattosi all'obbligo della comunità, dobbiamo menare il resto del giorno senza volger la mente al nostro grande Iddio e dolcissimo padre, essendo tenuto ognuno a sapere che lo spirito del presente istituto esige da ognuno l'osservanza puntuale e fedele delle parole di Gesù Cri-

sto: *Oportet semper orare et nunquam deficere*¹; la qual cosa anco nella folla delle faccende, e nel mezzo degl'impieghi nei quali saranno posti i nostri, potranno facilmente colla grazia di Dio conseguire, osservando la pratica seguente.

II. Si studii e si sforzi ognuno di contrarre l'abito di purificare l'intenzione nel principio di qualsivisia azione, con indirizzarla a Dio ed alla sua maggior gloria, e continuare poi di quando in quando lo stesso atto nel progresso dell'opera, similmente procurando ravvivare di quando in quando la fede della divina presenza, avendo di continuo avanti gli occhi che noi andiam sempre sotto gli occhi di Dio, e così faremo brevemente con sua divina maestà di tempo in tempo alcun colloquio amoroso o qualche aspirazione fervorosa, o alcun atto di fede, speranza e carità, per fare i quali atti non si richiede lunghezza di tempo, ma fervore di volontà e brevissimo lancio d'ossequioso pensiero verso Dio. Si facciano anche familiare i nostri l'uso delle giaculatorie orazioni, particolarmente di quelle che dall'orazione fatta in comune si sono prese, o che l'anima, riflettendo alle verità meditate, ha fatte e fa, essendo utilissimo consiglio quello del grande S. Francesco di Sales che noi dobbiam raccorre dalla meditazione alcuni sentimenti che più ci han mosso, per rimediarli fra il giorno, come chi raccoglie da un orto i fiori che più gli sono piaciuti, e poi tra via gli va tratto tratto odorando; e finalmente nelle ore, nelle quali i nostri saranno liberi e sbrigati dalle necessarie occupazioni, utile pratica sarà o di portarsi in chiesa a fare un poco d'orazione innanzi il santissimo sacramento, o di leggere nelle loro stanze qualche buon libro che accenda la volontà e la porti a far qualche atto fervido verso il suo Dio, ed in questa maniera nelle azioni avendo riguardo a Dio, e per fine Iddio, e nelle ore libere dalle fatiche colla lettura e meditazione illustrando la mente ed intenerendo l'anima, si farà sempre orazione, e si acquisterà il bell'abito di star sempre con Dio anche nel mezzo delle

¹ LUC. XVIII, 1.

più distrattive faccende, e si eseguirà il comando di S. Leandro vescovo di Siviglia alle religiose: *Lectio sit tibi assidua, inique oratio, dividantur tibi tempora et officia, ut, postquam legeris, ores, postquam oraveris, legas.*

III. La mentovata ora d'orazione in comune, acciocchè riesca facile a tutti e niuno possa allegare scusa per non intervenire, si dividerà in due volte: una mezz'ora se ne farà la mattina, e l'altra la notte nella stagione d'inverno, e dopo il riposo del giorno nella stagione di estate. Subito intesosi il segno della detta orazione, ognuno s'immagini d'esser chiamato da nostro signor Gesù Cristo per andar a trattar seco da solo a solo il grande affare dell'eterna salute, e con tal pensiero, lasciando subito ogn'altra cosa che si stesse facendo, vada nel luogo destinato, pensando sempre a chi è colui che lo chiama, ed al negozio per cui lo chiama. Arrivato che sarà ognuno nel detto luogo si porrà in ginocchio, trattendosi, fintanto che s'incominci l'orazione, in atti d'adorazione e di amore inverso il santissimo sacramento, il che si praticherà anche quando per la mattina e sera si raduneranno per l'esame di coscienza.

IV. L'orazione si farà da tutti posti in ginocchioni, e se taluno non potesse proseguire in tal sito, dopo la preparazione potrà levarsi e stare in piedi, ma niuno potrà stare appoggiato o a sedere, senza che pria n'abbia ottenuto la licenza dal superiore.

V. Datosi il segno, il superiore aspetterà uno spazio determinato nel quale ciascuno possa venire dalla sua stanza, dopo il quale, benchè non tutti si siano radunati, egli non aspetterà oltre, ma darà principio all'orazione col *Veni, Sancte Spiritus, etc.*; e lo stesso dovrà farsi in ciaschedun altro esercizio di comunità, non dovendo aspettare più tempo per far ragunare tutti.

VI. Dopo recitato il *Veni, Sancte Spiritus, etc.*, si farà la preparazione, suggerendone il superiore in poche parole il motivo degli atti suoi, e frapponendo fra l'uno e l'altro motivo tanto di spazio, che ciascuno possa brevemente fare gli atti, e nel fine di essa si dirà l'*Ave Maria* col *Gloria Patri*.

vii. Finita che sarà la preparazione, si leggerà un punto per meditare o da' libri del padre Spinola, o da altri scelti dal superiore; e passato che sarà un quarto d'ora in circa, nel quale ognuno hen rifletterà a ciò che ha inteso e si studierà destarsi agli affetti e risoluzioni corrispondenti; si leggerà poi l'altro punto, circa il quale ognuno farà lo stesso, dovendo sempre la meditazione dell'intelletto accendere la volontà, e muoverci all'acquisto e pratica delle virtù. Circa il fine il superiore darà il segno ed i motivi per gli atti della conclusione; e finita la mezz'ora, si dirà con pausa divota la *Salve Regina*, prima della quale potrà il superiore o dire o far dire a chi gli parerà qualche sentimento che siasi ricavato dall'orazione.

viii. La meditazione che si farà per la mattina dovrà farsi sulla Passione di nostro signor Gesù Cristo, fuori de' giorni di comunione, ne' quali dee essere su dello stesso soggetto della comunione; la sera poi si farà su qualche punto della vita purgativa, e spesso sui novissimi.

ix. Durando l'orazione mentale, a niuno sia lecito recitare qualsisia orazione vocale, ma ciascuno sia intento a meditare il punto proposto.

x. Per tutto il tempo che dura la meditazione, si studii ognuno di osservare un esatto e divoto silenzio, seguitando l'esempio de' santi padri antichi, i quali nelle comuni adunanze benchè fossero in numero grandissimo, stavano tuttavia con sì fatta modestia e silenzio, che sembrava che niuno ivi fosse; non tossivano nè raschiavano, anzi neppur piangevano nè sospiravano per non disturbare gli altri. Ognuno dunque rifletta seriamente che ivi si sta per meditare, parlar con Dio, con se stesso, e con serietà proporre ciò che conosce ognuno esser necessario per la riforma de' difetti ed aumento delle virtù, per ricordarsene spesso tra il giorno, e mettere in esecuzione ed in opera i fatti proponimenti.

xi. Se alcuno si addormentasse, sia tenuto chi gli è vicino a destarlo.

xii. E finalmente chi per legittimo impe-

dimento non potesse intervenire all'ora suddetta, dovrà poi supplire in altro tempo e luogo.

CAPO DECIMOSESTO.

Della mortificazione.

1. Gran nemico ed insidiatore continuo è ciascuno a se stesso, ed il secondare le nostre voglie ed appetiti, è un far più forte un tal nemico e renderlo più gagliardo ai nostri danni, e l'unica maniera per superarlo e sottrarsi alle sue insidie ed assalti, è il contrastarlo sempre e mortificare in noi ogni piccol moto di appetito non ben regolato, e star sempre avvertito a considerare, che si pensa, che si desidera, che si stima, che si ambisce, per vedere se in qualche cosa in noi nascesse desiderio di cosa non conforme alla nostra vocazione, per sradicare subito dal cuore tal cattiva semenza che potrebbe far germogliare erbe velenose che soffocherebbero tutto il buon grano che con aiuto di Dio si spera che abbia da raccorsi dalle nostre pratiche ed osservanze della regola che abbiamo abbracciato. Per ben esercitare la mortificazione bisogna prima riflettere che diceva David: *Anima mea in manibus meis semper*¹, cioè porto il mio cuore nelle mie mani, per ben osservare e vedere che pensa, che desidera, e dove si muove; e bisogna poi rompere le voglie disordinate, la sregolata concupiscenza, eseguire il bell'avviso di S. Paolo: *Carnis curam ne feceritis in desideritis*²; anzi per consiglio ed avviso di tutti i direttori di spirito bisogna anche nei desideri leciti mortificarci e andar contro alle proprie inclinazioni per renderci padroni di noi stessi e togliere l'armi al nemico, il quale non può di leggieri credersi quanto si faccia poderoso e terribile, se secondando spesso i suoi appetiti si lascia prender forza contro allo spirito che lo dee tener soggetto e abbattuto; inoltre la mortificazione è qual forte muro per difendere la religiosa osservanza dagli assalti de' nostri nemici, e per fare che quell'anima, che di

¹ *Psal. cxviii, 109.*

² *Rom. xiii, 14.*

tal saldo muro è cinta e difesa; porti senza tema d'alcuno i frutti di acquisto di virtù, di santo zelo, e d'utile nelle anime de' prossimi, che sono le cose alle quali sono indirizzate tutte le nostre fatiche.

II. Si parla adunque in questo capo della mortificazione interna, reprimendo la concupiscenza immoderata delle cose sensibili con mortificare i sensi interiori e le proprie passioni.

III. Il fondamento, sul quale ognuno deve stabilire la sua mortificazione, è il risolversi di lasciar affatto la propria volontà, il proprio giudizio, e regolare ogni azione per tutto il corso della giornata, secondo prescrive la regola, e non andar cercando altro, nè pensando oltre, radicando ben nell'animo la risoluzione di volere con esattezza religiosissima puntualmente osservare ogni minuzia della regola, stimando ogni suo prescritto come un mezzo datoci non dagli uomini, ma da Dio signor nostro per farci diventare gran santi col favor suo. Oh bella, sicura e meritoria sommamente maniera di praticare con frutto grandissimo la mortificazione si è questa, nè creda taluno che sia picciola. Ella è più grave e di maggior difficoltà che pare a prima vista, ma è la maniera sicurissima voluta da Dio, ed alla quale noi abbracciati in breve faremo grandi progressi nella perfezione, e senza questa anderemo piuttosto indietro, benché d'altre volontarie mortificazioni ci caricassimo di proprio capriccio e giudizio. All'incontro, chi esattamente osserverà tutte le regole, ancor le più minute, senza altre mortificazioni di cilizi, digiuni ed altro, diverrà perfetto, e riuscirà, mercè la grazia del Signore, gran santo. E sia così geloso ognuno di tal esatta osservanza, che fissi bene nell'animo tal pensiero, che sarebbe certamente tentazione del nemico il preferire mortificazioni di propria elezione e volontà agli ordini della regola, e ci cagionerebbe non piccol danno e gran ritardo nell'intrapreso viaggio; imperocchè siccome sarebbe sciocchezza propria ed illusione del comune nemico il trasgredire alcun precetto divino o ecclesiastico per os-

servare un punto di regola, così sarebbe ancora inganno del nemico se alcuno volontariamente ed avvertitamente trasgredisse un minimo punto di regola o di costituzione per operare mortificazioni supererogatorie abbracciate per proprio parere e consiglio.

IV. Chi sarà ben della necessità persuaso dell'interna mortificazione, e la praticcherà come si deve, sarà amico dell'esterna, tanto più che questa è molto utile per essere uomini d'orazione, quali dobbiamo essere, mentre dice S. Teresa, che spirito d'orazione ed accarezzamento di corpo non possono star insieme. E poi chi attende a rompere e frenare le voglie proprie in cose anche lecite per avvezzarsi ad essere padrone di se stesso, come non cercherà ogni maniera (prudente però e discreta) di domare anche il suo corpo, sapendo ognuno, che se questo si cura bene, e si tratta con gentilezza e mollezza, dà dei calci e fa gran danno. In questa regola tuttavia poche esterne mortificazioni si prescrivono, e ciò sia fatto acciocchè l'osservanza sia uniforme, e per torre tutte le occasioni di scuse, esenzioni e dispense; del resto, benché abbiamo cotanto inculcato la mortificazione interna, non intendiamo per questo di lasciar senza gagliarde esortazioni di stimolar tutti all'esterna, ma di quella abbiamo con più espressione parlato, come più difficile ed essenzialissima al nostro istituto, e la pratica della quale non si può mai dire che sia eccessiva o soverchia; a questa poi accendiamo tutti, ma con prescrivere, che si regolino col savio parere del direttore per non inciampar in estrema; generalmente però intimiamo a tutti, che la vita del missionario dee essere aspra e mortificata, niente amica di comodi e lautezze, acciocchè possiamo avvezzarci a patimenti ben gravi che s'incorrono nell'esercizio del missionare; perchè se non strapazziamo i nostri corpi, nelle battaglie campali poi, ne' viaggi lunghi e disastrosi e nelle persecuzioni ci sbigottiremo, e forte daremo volta; e principalmente perchè l'evangelizzare porta seco l'obbligo d'imitar la vita di Gesù Cristo

1 Potius lege si è (A. T.).

e degli apostoli, fa d'uopo spesso riflettere sensatamente alle parole di S. Paolo, che scrisse nella prima lettera ai Corinti nel cap. iv dal verso 9 fino al 12. Si avverte però, che, come si è detto, niuno imprendi mortificazione dalla regola non prescritta senza espressa licenza del superiore o direttore di nostra casa, coll'approvazione del superiore.

CAPO DECIMOSETTIMO.

Delli digiuni e discipline.

I. Oltre a' digiuni comandati dalla santa Chiesa, che si dovranno osservare con somma diligenza, si digiunerà ogni venerdì in onore della passione e morte di nostro signor Gesù Cristo, ed ogni sabato in onore di Nostra Signora e di tutta la Sagra Famiglia; sebbene nel tempo pasquale si dovrà fare il solo sabato, se questo ancor non paresse al superiore dispensarlo; e così parimente quando concorresse festa di prima classe, o quando si fosse digiunato il giovedì, dovrà tralasciarsi il digiuno.

II. Si digiunerà di più le vigilie delle feste della Circoncisione del Signore e del Santissimo Sacramento, della Natività e Purificazione della Vergine Santissima, come anche in quella di S. Giuseppe, S. Giovacchino e S. Anna.

III. Si asterranno dalla carne in tutte le vigilie de' santi protettori, cioè S. Giovanni Nepomuceno martire, S. Francesco di Sales, S. Carlo Borromeo, S. Francesco Saverio, S. Filippo Neri e S. Teresa di Gesù, poichè nella vigilia del primo protettore S. Tomaso apostolo s'osserverà la vigilia della Chiesa.

IV. In tutti i venerdì di marzo, eccettuati gl'infermi o convalescenti, tutti gli altri seduti in terra mangeranno una sola cosa calda; e nel venerdì santo, sol pane ed acqua.

V. Ogni venerdì si farà la disciplina, eccetto sol quelli che occorreranno nell'ottava di Pasqua, Pentecoste e Natale; ed in quelli venerdì, ne' quali occorreranno feste di prima classe, o de' santi della Sagra Famiglia o protettori della fondazione, allora la disciplina si farà nelle loro vigilie.

VI. La disciplina dovrà durare un *Miserere*, un *Deprofundis* ed una *Salve Regina* cantati.

CAPO DICIMOTTAVO.

Del silenzio.

I. Essendo il silenzio uno dei principali argini della disciplina regolare, è perciò stimato molto ed osservato con gran rigore dai padri antichi, e da essi pubblicato per uno dei principali mezzi per venire alla santa perfezione; ed avendo noi abbandonato la casa paterna, quanto di comodo e dilettevole il mondo ci esibiva, ed essendoci ritirati in questa comunità, tutto a fine di procurare ad ogni costo l'acquisto delle virtù, per pervenire alla santa desiderata perfezione: pertanto in questo capo s'intima a tutti l'esercizio di questa virtù tanto importante del silenzio, e da tutti se n'esige un'esatta ed intiera osservanza ne' tempi e ne' luoghi, che qui si prescrive.

II. Circa i luoghi, s'osserva silenzio rigorosissimo nel coro, nella chiesa, nella sagrestia, nella libreria, ne' luoghi comuni, ne' dormitori, nelle scuole, nel mentre s'insegna, e tanto nella prima quanto nella seconda tavola. E se in detti luoghi occorresse dire qualche cosa necessaria, si dica, ma in voce bassa ed in poche parole.

III. Circa il tempo, s'osservi silenzio rigoroso nelle ore già stabilite nel cap. ix; nelle altre ore del giorno sarà lecito il parlare, ma nei soli luoghi pubblici ed a ciò destinati dal superiore.

IV. Per custodire il silenzio bisogna essere amici della camera, ed inimici d'andar vagando per la casa e molto più entrare nelle camere altrui; per essere amici della camera bisogna esser ricordevoli sempre della presenza di Dio, ed inimici dell'ozio che rende fastidiosa la camera e fa desiderare la conversazione; e sarà obbligo del superiore che non si vada girando per la casa, e far che ognuno stia applicato nella sua camera. Chi però ha bisogno di sollievo, si sollevi pure, ma ne' luoghi a ciò destinati.

V. Nella camera poi del superiore, ed in

sua assenza, in quella del suo sostituto, vi si può entrare in ogni ora e tempo, quando essi stanno in camera; in loro assenza poi, nessuno ardisca entrarvi.

vi. Nessuno faccia qualsivoglia sorta di rumore ne' tempi di silenzio, tanto fuori quanto dentro la propria stanza; e dovendo però farlo in tempo lecito e durar lungo tempo, lo faccia con licenza del superiore.

CAPO DECIMONONO.

Della modestia.

i. Siccome la modestia nei ministri evangelici ha tanta forza e fa tanta impressione ne' cuori de' secolari, che, senz'altra predica, questa sola l'edifica, e non rare volte è causa di singolari conversioni; così all'opposto un minimo atto d'immodestia, che scovrono in essi, li scandalizza, e spesse volte distrugge tutto quel bene che con le loro apostoliche fatiche a gran stento avranno procurato. Il che essendo pur troppo vero, per ciò con special forza s'incarica a tutti d'osservare rigorosamente in tutte le loro azioni questa santa virtù, dovendo ognuno come di continuo tener scolpito nel cuore il ricordo che S. Paolo incaricò alli primi cristiani: *Modestia vestra nota sit omnibus hominibus*¹; e con tutta diligenza dovrà osservare le seguenti regole.

ii. Siano modesti nel vedere, non andando or qua or là curiosamente guardando, specialmente verso persone di altro sesso.

iii. Siano modesti nel parlare, non mai dicendo parole che ridondino in lode e stima propria, e molto meno in discapito della stima e decoro altrui, ma piuttosto, quando la prudenza il richiegga, lodino le altrui azioni senza affettazione alcuna.

iv. Si sfugga il contrastare e dimostrarsi pertinace nel proprio parere; anzi nelle cose indifferenti, dopo aver bastantemente detto colla solita modestia il proprio sentimento, non bisogna contristarsi, ma si lasci ognuno nella sua opinione.

v. Si esorta ognuno ad una santa allegrezza, con la quale ci dice il Profeta reale che dobbiam servire il Signore: onde sfug-

¹ *Ad Philipp.*, iv, 5.

gano la tristezza e malinconia, della quale lo Spirito Santo parlando dice: *Spiritus tristis exsiccet ossa*¹. Avvertano però che allora sarà santa l'allegrezza, quando sarà moderata.

vi. Incontrandosi per la casa si salutino l'un l'altro, ma non si trattengano lungo tempo a parlare, dovendosi ciò fare ne' luoghi a ciò destinati.

vii. Nel trattare con forestieri e cogli istessi di casa, in tal modo deve ognuno portarsi, che non comparisca nè leggiero, nè rustico, ma sia ciascuno docile et affabile con tutti, e procurino tutti esser sempre li primi in onorare e cedere il miglior luogo.

viii. Così nel gestire che nel camminare sfuggano ogni incompatezza, ogni puerilità, ogni leggerezza, dovendo esser gravi in tutte le azioni, sfuggendosi però sempre l'affettazione.

ix. Si ricerca parimente una gran modestia nel vestire e ne' mobili della camera: circa il vestire la materia non sia di seta, e la forma poi sia come quella degli onesti preti secolari.

x. La sottana dei fratelli laici sia lunga sino a mezza gamba, ed il mantello due o tre dita più lungo.

xi. Così anche nelle vesti interiori nessuno userà seta, nè sorte alcuna di vanità e leggerezza d'ornamenti superflui e curiosi.

xii. Li calzoni e calzette siano di color nero, e procurino per quanto sarà possibile essere uniformi in ogni cosa.

xiii. I mobili della camera siano parimente poveri, modesti e ben ordinati; non sia la stanza sporca, non sia confusa, ma ogni cosa stia pulita e nel suo luogo. Il letto stia sempre rifatto, e la camera sempre spazzata: pertanto ognuno dovrà rifarsi il letto, alzato che sarà la mattina, prima di andare all'orazione, e spazzare la sua stanza almeno una volta la settimana.

xiv. Di notte nessuno cammini per casa senza lume, nessuno esca dalla camera con berettino bianco in testa, o con cinta sciolta, o con fazzoletto al collo, o con altra

¹ *Prov.*, xvii, 23.

simile indecenza; ed acciocchè con maggior prestezza e facilità si acquisti la modestia in pubblico, s'eserciti con rigore nel mentre si sta in camera serrato; e questo si farà più facilmente, considerando che si sta alla presenza di Dio e del nostro angelo custode.

xv. Il resto che spetta alla modestia ed alla buona educazione che s'insegna nel noviziato, s'incarica ad ognuno a mai volersene scordare, ma sino alla morte osservare il tutto con rigore.

CAPO VENTESIMO.

Del distacco del mondo, e quanto dobbiamo star lontani dagli affari e negozi de' secolari.

i. Il fine per lo quale, secondando la chiamata di Dio, ci siamo ritirati in questa casa, è acciocchè lontani da tumulti ed affari del mondo, e così sciolti da que' lacci che potevano legarci lo spirito, potessimo fissare la nostra mente nei pensieri delle cose celesti, e deposta ogni cura, ogni affetto, ogni speranza di mondo, unirci con Dio, cominciando a menare quella felice vita che vivea S. Paolo, e che diceva: *Vivo ego, iam non ego, vivit vero in me Christus*¹; e dee ciascuno così bandire dal cuore qualsivoglia pensiero e speranza del mondo, che possa dire collo stesso: *Mihi mundus crucifixus est, et ego mundo*². E se ciascuno dee stimare il mondo crocifisso, cioè vile, abominevole, e da non prezzarsi dal suo cuore, che errore sarebbe se, accostandosi di nuovo al mondo e fomentando nell'animo di nuovo pensieri del secolo, dimostrasse che ancor lo prezza, e lo ha in istima e l'onora? E qual miseria sarebbe di chi, dopo la generosa risoluzione di vivere in questa comunità come crocifisso al mondo, e dopo d'essersi liberato dalla sua tirannia, e aver preso il porto di sua volontà, per sua colpa ritornando ai pericoli, si soggettasse di nuovo al mondo, e coll'ingerirsi in faccende dei secolari movesse a' suoi danni la tempesta nel porto? Acciocchè adunque tal disgrazia a niuno intervenga, si prescrivono le seguenti regole, e si esorta ognuno a ben ponderare

¹ *Ad Gal.*, II, 20.

² *Ad Gal.*, VI, 14.

le parole di S. Paolo: *Pretio empti estis, nolite fieri servi hominum*¹.

II. Si esorta a tutti e a qualsivoglia dei nostri di procurare di togliere i lunghi discorsi, e le frequenti ed inutili conversazioni con secolari, essendo ciò un far cattivo uso del tempo, e perderlo malamente in cosa che è cagione di distrazione, esca avvelenata che alletta e trae l'animo pria al compiacimento, indi al desiderio delle cose ed affari del mondo.

III. A niuno sia lecito il battezzare, il tener nel battesimo o confermazione qualunque persona, senza licenza del superiore, il quale non la dia facilmente, ma in casi nei quali ci sia manifesta cagione e ragionevole.

IV. Essendo cose nonchè aliene, ancor contrarie al nostro istituto, il difendere o sollecitare le cause o liti criminali o civili, l'assistere a' testamenti, l'essere esecutori testamentari; si proibiscono con ogni rigore queste cose a tutti, e specialmente il trattar matrimoni, contratti o altre simili cose che son proprie de' secolari, e l'Apostolo ci ammonisce: *Nemo militans Deo implicat se negotiis saecularibus*².

V. Niuno dia testimonianza nè in cause civili nè in criminali, se non in caso che venisse a ciò obbligato da legittima potestà, e ne' casi ne' quali la carità o altro degno rispetto ci obbligasse a comparire, e si faccia con la licenza del superiore.

VI. Finalmente si proibisce non solo il governare luoghi pii e trattare i loro affari, ma anche il mostrarsi propensi e inclinati a detti governi e maneggi, se prima non si sia ottenuta licenza del superiore e della consulta, avanti la quale niuno mostri detta inclinazione ad altri, e molto meno il premetta.

CAPO VENTESIMOPRIMO.

Dello spirito d'umiltà che si ricerca in questa comunità, e della stima in cui si devono tenere le altre.

i. Essendo il nostro intento di condurre anime alla luce dell'Evangelo ed alla per-

¹ *I. ad Cor.*, VII, 21.

² *II. ad Timoth.*, II, 4.

fezione della vita cristiana, avendo prescritto a' nostri un esatto e gelosissimo studio per conservarsi puri innanzi a Dio e agli uomini, dobbiamo ben tenerci fermi sullo stabile, sicuro e necessario fondamento della santa umiltà, riflettendo al bell' avvertimento di S. Cipriano: *Custos virginitalis charitas, locus autem huius custodis humilitas*¹. La carità verso Dio e il prossimo ci farà sempre mantenere illibati, e l'umiltà raccoglierà come in sicuro soggiorno le virtù che coll'aiuto di Dio coltiveremo nei nostri cuori. Stimiamo adunque ognuno e si persuada che questa nostra radunanza sia la minima fra tutte le altre, e nel parlare, parli secondo questo fermo giudizio, che così non la preporrà a niuna, ma la posporrà come deve a tutte.

II. Non mai alcun de' nostri dee tacciare o in qualsivoglia modo dir male di qualsivoglia altra comunità, nè del loro modo di governarsi e procedere.

III. Sempre dovranno sentir piacere nell'udire che la tale o tale, questa o quella comunità superi la nostra nella gloria, fama e lode degli uomini, nel favore dei grandi, e nelle occupazioni onorate nelle quali li loro soggetti sono impiegati; e molto più dovremo sinceramente rallegrarci del loro spirituale profitto e della conquista gloriosa di anime a gloria di Gesù, dovendo sempre ricordarci che il fine per il quale è eretta questa nostra minima comunità si è il raccogliere le miche che cadono dalla mensa, e le spiche che fuggono dalle fruttuose falci di tante altre religioni e comunità che con tanto frutto faticano nella vigna del Signore; onde dobbiamo con sincero affetto e consolazione dell'animo compiacerci del bene che quelle fanno nelle anime, e delle loro fatiche ad onore del nostro Dio. Epperò ciascuno de' nostri dee ben fissarsi nell'animo questa massima che il fine di questo nostro istituto è che Cristo sia annunziato e glorificato: or come venga glorificato Gesù Cristo, sia per nostro mezzo o di qualsivoglia altra comunità, dobbiamo sempre rallegrarcene e godere, per essersi già ottenuto il fine che da noi si pretende, e se

¹ De disciplina et habitu virginum

per avventura taluno non ne godesse, darebbe segno che non ama Gesù Cristo, ma ben se stesso, e colle sue azioni e fatiche non cerca la pura gloria di Dio, ma con amor proprio se medesimo. Dobbiamo ancora ben persuaderci e fissare nell'animo questo pensiero e questa massima cristiana, che rallegrandoci e compiacendoci noi del ben fatto dagli altri per puro fine dell'onore di Dio e per il desiderio della salvezza dei prossimi, potremo talvolta meritare più che se da noi medesimi quel bene si fosse procurato ed eseguito; imperocchè facendolo noi, sarà¹ facile che vi si mischiasse amor proprio, che si facesse con compiacenza e soddisfazione di noi medesimi, con intenzione talvolta viziosa o almeno imperfetta; laddove con sincero compiacimento rallegrandoci dell'altrui fruttuose fatiche, dette imperfezioni nel nostro cuore non avranno luogo.

IV. E ponga finalmente ognuno mente in ciò, che in questa umile e caritatevole compiacenza facciamo nostre in parte le altrui fatiche, senza nostro travaglio, ma con gran merito ed utile nostro. Si vesta dunque ognuno del generoso spirito di Mosè, il quale consigliato a proibire di profetare ad alcune persone che profetavano, esclamò: *Quis tribuet ut omnis populus prophetet, et det eis Dominus spiritum suum*²; e questo è non avere spirito d'invidia ed aver spirito buono, che è ciò che ardentemente si desidera in questa piccola radunanza.

V. Avvertasi tuttavia, che, benchè dobbiamo stimare e apprezzare ogni altra radunanza più degna di questa minima nostra, dobbiamo però amare più questa nostra che qualsivoglia altra, con l'amore filiale che ad essa dobbiamo, a guisa de' figliuoli di buona indole che teneramente amano la loro madre, benchè povera e brutta, piùchè qualsivoglia altra donna tuttochè ricca e bella, e i loro fratelli, benchè miserabili e disprezzati, piùchè altri uomini benchè di maggior condizione e di miglior fortuna. Questo amor dunque dee essere verso la

¹ Forsan legendum varia (A. T.).

² Num. xi, 29.

comunità come verso una madre quale essa si sia, non come verso una comunità che contenesse il pregio di qualche eccellenza speciosa e stimabile agli occhi del mondo; imperocchè dobbiamo fuggire nonchè l'applauso particolare nostro, ma ancora l'andar procurando l'applauso di tutta la Congregazione, dovendo solo desiderare che così i soggetti particolarmente, come tutta la Congregazione serva il più che possa al Signore, ma con ispirito d'umiltà. Dee anco all'istesso modo esser tenuto l'amor nostro coi fratelli, desiderando loro gran progresso nelle virtù, grand'animo negli apostolici ministeri, e forza per le fatiche, ma intraprese per pura gloria di Dio; e non desiderando mai loro nome, gloria e stima negli occhi del mondo, ma solo aumento di spirito e merito appresso il nostro grande Iddio e Signore.

CAPO VIGESIMOSECONDO.

Della mensa.

i. Nella nostra casa due sole tavole si dovranno fare: e nella prima dovranno venire tutti coloro che non sono destinati a servire nella comunità, nè sono legittimamente impediti, non permettendosi a niuno l'andare alla seconda tavola, fuori che a coloro che sono di servizio, o sono legittimamente impediti, o avranno l'espressa licenza del superiore.

ii. Appena intesi il segno del campanello, subito dovranno tutti venire e radunarsi nel coretto; dovranno fare l'esame di coscienza generale e particolare; qual finito, ed alzatosi il superiore, si leveranno tutti, e seguitatolo, entreranno in refettorio, ove fatto profondo inchino al crocifisso, aspetteranno che il superiore faccia la benedizione: la quale nella prima tavola si farà da lui secondo il rito romano, nella seconda tavola la farà ciascuno con voce bassa, usando la forma breve; e lo stesso si eseguirà allo stesso modo nell'azione di grazie e nella cena.

iii. Finita che sarà la benedizione, ognuno sederà al suo luogo, e con rispettosa civiltà niuno ardisca di scovrire il pane, finchè il superiore ne dia il segno.

iv. Il lettore porrà, il quale starà come gli altri in piedi e col capo scoperto, mentre il superiore benedice, dopo aver detto il versetto: *Iube, Domine, benedicere, dee aspettare che tutti sedano, e dopo gli altri sedere ancora lui; e covertosi il capo, incomincerà la lezione da un capo della sacra Scrittura, il quale finito, leggerà qualche libro, o di vita de' santi, o d'altra materia divota, secondo la scelta ed ordine del superiore, senza l'avviso del quale non cesserà dalla lettura; se in leggendo commettesse il lettore alcun errore, il superiore potrà subito correggerlo con pronunziar retamente quella voce, nella quale si è errato, senza aggiungere altro, ed il lettore è tenuto ripeterla così come il superiore l'ha detta.*

v. Verso il fine del pranzo e della cena, il superiore darà il segno al lettore, e costui subito darà fine alla lezione, ed all'ora si dovrà cominciare il seguente esercizio. Si proporrà un dubbio la mattina intorno ai casi di coscienza, e la sera di Scrittura: questi non devono essere molto intrigati nè difficili, e saranno proposti da un prefetto destinato dal superiore, e dovranno rispondere coloro che destinerà il superiore: nel fine scioglierà la questione colui che ha proposto, e risolverà il dubbio o approverà la risoluzione forse già fatta da alcuno, ma senza additarlo nè generalmente nè determinatamente nominandolo. Le risposte che si daranno da ciascuno, dovranno essere brevi e senza minima ombra di ostentazione o di riprensione delle altrui.

vi. Al pranzo si darà principio dal superiore, dopo che avrà veduto tutti assisi ed all'ordine, e dopo che con un paio di versi della sacra Scrittura si sarà cominciata la lezione.

vii. Chi giungerà nel tempo che si legge il capo della Scrittura, si dovrà inginocchiare vicino alla porta a vista di tutti; e dopo una breve orazione, levatosi, fatta la riverenza al superiore, si andrà a sedere, ma non già al suo luogo, per non cagionar disturbo, ma dopo l'ultimo seduto. Solo il superiore in qualsivoglia tempo che entri,

dovrà sedere al suo luogo. Coloro che giungeranno dopo la lezione della sacra Scrittura, dovranno aspettare il segno della seconda tavola per entrare in refettorio. Si eccettuano però i confessori, e coloro che dall'ubbidienza saranno occupati, perchè costoro, come legittimamente impediti, potranno entrare in ogni ora.

viii. Se alcuno non ha potuto venire alla prima tavola, non manchi di venire alla seconda, non dovendosi nella nostra casa fare in verun modo la terza; ma chi non sarà venuto prima che si finisca la prima pietanza della seconda tavola, non ardisca d'entrare in refettorio prima d'essere andato a dire la sua colpa al superiore, ed ottenuto da lui la licenza: in quel caso il superiore, conoscendovi colpa, deve correggerlo, acciocchè non s'introduca in casa un tal disordine.

ix. Se ad alcuno non fosse data per isbaglio, o mancasse qualche cosa di quelle che si porgono a tutti, ne farà cenno con segni, e se non sarà inteso, potrà con bassa voce farne accorto chi serve, acciocchè subito ne sia provveduto.

x. Nella seconda tavola egualmente che nella prima s'osservi rigoroso silenzio; nè differiscono esse in altro, se non che nella seconda si lascia la lezione e la proposizione del caso. In niuna volta si porti da alcuno in alcuna delle due tavole cosa alcuna particolare, o particolarmente apparecchiata, dovendo nella nostra comunità trattarsi in ciò tutti dal superiore fino all'ultimo fratello laico senza veruna parzialità, e dovendosi a ciascuno apprestare il medesimo numero di pietanze, e dell'istessissima forma apparecchiate.

xi. La quantità del vitto sia sufficiente, in guisa che possa bastare ad ognuno, onde si desidera che piuttosto si dia più, che si manchi in dar meno, nel che i superiori pongano cura diligente; ma in quanto alla qualità, sia questa ordinaria e comune, non delicata e sontuosa che lusinghi la gola, sia però sana e che non possa nuocere alla salute, il che dovrà osservarsi ancorchè un dì la casa venisse ad esser abbondante di

entrata, dovendo ciascuno de' nostri contentarsi di soddisfare alla necessità, e voler solo il convenevole mantenimento. Ed ognuno nell'esser chiamato a questa comunità stimi essere stato detto a sè ciò che scrive alle sue figliuole S. Teresa: *Risolvetevi, sorelle, a credere che venite a morire per Cristo, e non ad accarezzarvi per Cristo*¹.

xii. Nei giorni delle solennità non si proibisce un pranzo un poco più lauto, ma sempre ne' termini di una religiosa moderazione; e nei medesimi giorni, come ancora nelle domeniche e nei giovedì dell'anno, ed in qualche altro ad arbitrio del superiore, si potrà dispensare dal medesimo il silenzio.

xiii. Senza espressa licenza del superiore niuno potrà leggere in tavola lettere o altra scrittura, e si proibisce al portinaro ed a qualsivoglia altro portar lettere in tavola, o ambasciate a coloro che siedono in refettorio; ed il superiore, ne' soli casi che non patiscano dilazione, dispensi in questo.

xiv. Finito che sarà il pranzo o la cena, si ordina, come conviene ed è decente, che niuno si alzi prima che sia alzato il superiore: allora poi tutti usciranno dai loro luoghi, ed avanti della tavola si fermeranno con modestia e decoro in piedi per fare l'azione di grazie.

xv. Finita l'azione di grazie, uscirà il superiore, e dopo d'esso usciranno tutti, e lavatesi le mani in silenzio, e senza punto trattenersi, si porteranno nel coretto ad adorare il santissimo Sacramento, e dire le *Litanie* ed il *Deprofundis* per i defunti, ed indi si condurranno al luogo della ricreazione per sollevarsi.

xvi. Ognuno, così nel mangiare come nel bere, abbia sempre la mira alla temperanza, studiandosi di praticarla al possibile.

xvii. A niuno sia permesso pranzare e cenare fuori di casa, eccetto il tempo de' viaggi, e coll'espressa licenza del superiore in altri casi, ne' quali però il superiore non sia troppo facile a condescendere, se non sia ragionevole e giusta cagione che a ciò lo spinga.

xviii. In casa finalmente niuno fuor di

1 *Canm. di perf. cap. x.*

tavola possa, senza licenza espressa del superiore, mangiare cosa alcuna.

ix. Niuno avrà l'ardimento di convitare alcun forastiere alla nostra mensa senza licenza del superiore.

ix. I fratelli laici devono servire nella mensa, non già gli altri, se non quando lo ordinasse ad alcuno il superiore.

CAPO VIGESIMOTERZO.

Delle cose concernenti agl'infermi e defunti.

i. Essendo lo spirito di carità quello che ci ha radunati in questa minima Congregazione, dobbiamo negli atti di carità segnalarci verso de' nostri fratelli, e con più specialità ne' loro maggiori bisogni: e perchè, tra tutti gli atti di carità corporale, meritamente sono raccomandati quelli s'esercitano verso gl'infermi ed i defunti, ciascuno dee considerare con quali viscere di carità, di affetto e compassionevole pazienza dee portarsi cogl'infermi, visitandoli, confortandoli, sollevandoli ne' loro patimenti; e similmente ognuno dee concepire un ardore per aiutare appresso il Signore le anime dei trapassati.

ii. Acciocchè adunque nell'assistenza degli'infermi si proceda con buon ordine, infermandosi alcuno, subito ne dia avviso al superiore o all'infermiere, e niuno, senza licenza dell'uno o dell'altro, mandi a chiamare il medico o chirurgo, e molto meno altro medico forastiero.

iii. Il superiore ed infermiere, in sentendo l'infermità d'alcuno, devono tutti carità e piacevolezza portarsi coll'infermo, e con procurare di sovvenirlo in tutte le maniere possibili, senza risparmio di denaro o altro; e mancando il denaro, dovrà il superiore, quando altra via non ci fosse, col parere della consulta, vendere anche i calici, se sia bisogno, per le spese necessarie.

iv. Il superiore deve destinare due dei nostri, acciocchè in diverse ore del giorno si portino a visitare i nostri infermi, ed egli ancora procuri di visitarli, sempre che gli sarà permesso dalle sue occupazioni, e dimandi con premura ed affetto se hanno bisogno o desiderio di cosa alcuna per sov-

venire loro e consolarli. Egliino all'incontro, oltre all'aver pazienza a' loro travagli, e ricevere tutto con uniformità al divino volere, senza risentimento, senza affliggersi soverchiamente, o lagnarsi, abbandonarsi nel volere divino, non dovendo molto angustiarsi nel desiderare la sanità, ma quietamente e con tranquillità d'animo attenderanno dalle misericordiose e giuste mani del signore Iddio ciò che vuol che succeda o d'infermità o di sanità o d'altro.

v. Devono inoltre segnalarsi nell'ubbidienza non solamente verso il superiore ed infermiere, ma anche verso il medico o chirurgo, eseguendo con prontezza ciò che costoro conforme alle regole loro prescriveranno.

vi. Li infermi devano comunicarsi ogni otto giorni almeno, e si porterà il Santissimo Sacramento con tutta la decenza ed ossequio al loro leticciuolo; e se il male aggraverà, si stia con ogni accorgimento per dare loro gli altri sacramenti, prima che perdano i sentimenti. Il superiore subito allora destini due de' nostri sacerdoti, i quali scambievolmente raccomandino l'anima agli infermi così aggravati dal male, e gli esortino con sugose ma brevi parole di tanto in tanto all'imitazione di Gesù Cristo, al desiderio delle cose eterne, al disprezzo del mondo e sua gran vanità, alla pazienza, ecc. Ma spesso, ora con versetto dei salmi, ora con brevi sentenze, porgano al loro cuore motivi di dolore, di speranza e di amore. Quando si avvicinerà il punto del passaggio, se ne dia il segno colla campana, e tutti allora saranno costretti a portarsi nella stanza del moribondo, ove mentre uno gli raccomanda l'anima, gli altri posti in ginocchioni vicino al letto, con salmi e colle altre orazioni approvate dalla Chiesa, raccomanderanno la sua anima a Dio.

vii. Dopochè alcuno sarà morto, si dee subito decentemente vestire, ma non se gli laverà il corpo, eccetto le mani e faccia, nè si faranno altre particolarità strepitose, nè in alcun modo si permetteranno. Poi si dee esporre in chiesa con quattro candele accese ne' quattro angoli del cataletto, e si

reciterà per esso l'offizio de' morti, e poi si canterà la messa, se sarà di mattina, altrimenti si canterà il giorno seguente, e nel tempo che si offia si porranno sei candele sull'altare. Se poi il defunto fosse assente, ciascuno reciterà per esso privatamente l'offizio, e la messa si canterà tuttavia allo stesso modo dalla comunità. Ciascun sacerdote poi, oltre li suddetti suffragi, sarà tenuto celebrare una messa per l'anima del defunto, e nell'altre messe che celebrerà, e nell'orazioni che farà ognuno raccomandi specialmente e faccia memoria de' nostri fratelli defunti, e per qualche tempo li nominerà espressamente col pensiero nel *Memento*. Gli altri poi che non sono sacerdoti, se sono chierici reciteranno tre offizi dei morti, se fratelli laici tre rosari ciascuno di quindici poste, e tutti faranno tre comunioni, nelle quali con ispecialità pregheranno il Signore per il defunto, e quanto prima potranno applicheranno tre volte l'indulgenza plenaria che sia applicabile *per modum suffragii*. Nelle orazioni comuni sempre si raccomandino l'anime de' nostri defunti, e sia ognuno sollecito per guadagnare le indulgenze ed applicarle loro in suffragio. E da ognuno dentro l'ottava dei Morti si celebri per tutti li nostri defunti una messa cantata.

viii. Non solo i nostri usino con ogni diligenza ed affetto la carità d'assistere ai nostri infermi, lo estendano ancora verso de' secolari, come quelli che sono d'ordinario più bisognosi del nostro spirituale aiuto; onde se di giorno saranno chiamati da qualche infermo, chi può non lasci di andare, ma coll'espressa licenza del superiore, e procuri apprestar all'infermo tutto quell'aiuto spirituale che può; e ciò finalmente si dovrà osservare con ispecial cura nelle missioni.

ix. In entrare nella casa dell'infermo si dice: *Pax huic domui, et omnibus habitantibus in ea: Gloria Patri, et Filio, et Spiritui Sancto, etc.*, ed essendovi dell'acqua benedetta nella stanza, con essa s'asperga l'infermo e la stanza. Coll'infermo discorrerà con parole che possano consolarlo ed edifi-

carlo; nè usino i nostri meno carità coi poveri, ma maggiore, e loro mostrino maggior diligenza in servire loro, ricordevoli del detto di Gesù Cristo: *Amen dico vobis, quamdiu fecistis uni ex his fratribus meis minimis, mihi fecistis* ¹.

x. Di nottetempo non escano i nostri di casa per condursi dagl'infermi, et essendo loro chiamati, modestamente e con carità si scusino, allegando la regola che lo proibisce. Non s'intenda però qui proibire al superiore che possa dargli licenza, quando la prudenza o il bisogno lo detterà.

xi. Finalmente, dovendosi ascoltare le confessioni di donne inferme, ciò si faccia con la porta aperta della stanza; e si proibisce assistere a' testamenti di chichessia, come si è parimente detto nel capo xx di questa prima parte.

CAPO VIGESIMOQUARTO.

Degli ordinandi, de' confessori e sacerdoti.

1. Se dalla buona o mala scelta dei soggetti, che dovranno vivere in questa comunità, dipende in gran parte la sua buona edificazione o il suo rilassamento, non vi ha dubbio che la diligente scelta di coloro che dovranno esser promossi agli ordini, o al sentire le confessioni ed esercitare altri impieghi apostolici, importerà molto per il profitto che si pretende ne' prossimi, e gli errori commessi in questa elezione potrebbero di gravi danni essere cagione; onde si osservi ed esami con ogni accorgimento e per sottile chi siano coloro ne' quali spiccano e rilucano le doti necessarie per ascendere al sacro altare, e per esercitare, con frutto e proprio e de' prossimi, gli apostolici ministri di ascoltare le confessioni, predicare, catechizzare, istruire; et acciocchè si possa ovviare agl'inconvenienti che potessero mai in ciò accadere, si prescrivono le regole seguenti.

ii. A niuno sia lecito dar alcun passo per ricevere gli ordini o l'approvazione per le confessioni senza l'approvazione della consulta, e perciò coloro che desiderano esser promossi debbano unilmente spiegar il loro

¹ MATTH. xxv, 11.

desiderio al superiore, con abbandonarsi nel suo giudizio e con sincera risoluzione di voler dipendere dal suo parere e comando.

III. Il superiore allora proporrà ciò alla consulta: e fattosi in essa da tutti un serio esame della loro abilità e doti, il superiore risolverà dargli o no la licenza, ma è tenuto egli però proporli all'Ordinario del luogo, supplicandolo che si contenti di ammetterli.

IV. I confessori però, anche dopo aver ricevuto dall'Ordinario l'approvazione, non dovranno sporsi ne' confessionari per sentire le confessioni, se a ciò non verranno applicati dal superiore.

V. Si proibisce strettamente a' nostri di aver cura di monasteri di monache, conservatori o altre adunanze di donne, ed ancora si proibisce l'essere delle medesime confessori ordinari; possano perciò i nostri, colla licenza del superiore, essere confessori straordinari. È ancora a tutti severamente proibito d'esorcizzare gli ossessi, siano uomini o donne.

VI. Primachè alcuno della Congregazione predichi la prima volta, e faccia catechismo al popolo o altro esercizio pubblico, dee essere a ciò espressamente destinato dalla consulta, nella quale abbia avuto perciò l'inclusiva con due terzi di voti. Dopo poi, ogni volta che dovrà far qualche esercizio dei suddetti, sarà tenuto domandare ed ottenere licenza dal superiore, quando comodamente si possa.

VII. S'incarica a' predicatori di non voler predicare sè stessi, ma Gesù Cristo. Coloro predicano Gesù Cristo, che, scordati d'ogni applauso che potessero esigere dagli uditori, ed ogni vantaggio che potesse loro nascere dal predicare, unicamente mirano la gloria del Signore e il profitto de' prossimi, e nello scegliere la materia, e nel disporla e dichiararla, fuggono tutto ciò che può tornare in loro lode solamente, ma quella materia prendano a trattare che possa compungere e muovere i cuori di chi li ascolta e condurli a Dio, e con quel modo e con quelle figure, che, lontane da ogni vana pompa di eloquenza, servono solo a meglio imprimere negli animi degli ascoltatori le

forti e sode verità che sporranno. Tremino tutti alle parole del Redentore: *Amen dico vobis, receperunt mercedem suam*¹, e riflettano sempre d'operare in modo, che il Signore non abbia loro a dire le medesime parole nel giorno del giudizio; facciano un po' più stima de' loro sudori; e delle fatiche non ne facciano getto così lagrimevole, che dopo molti e molti anni di stento negli apostolici impieghi consumati, avessero poi a restar nonchè vuoti di merito e di mercede, ma con debiti e reità nel cospetto del Signore, che giustissimamente renderà ad ognuno secondo le opere sue.

VIII. Siano dunque avvertiti di purificare l'intenzione, di non oscurar l'occhio dello spirito, di rimirar unicamente la gloria di Dio da cui si aspetta il premio, e siano insieme diligenti ed indefessi in raccorre forte, soda e cristiana materia per predicare, e la dispongano in modo che colpisca, ferisca e santamente spaventi i peccatori, consoli e porti al fervoroso esercizio delle virtù i giusti, e non si risparmi veruna fatica per istudiare, riflettere e meditare ciò che diranno, acciocchè così da una parte si declini la temerità nella quale incorrerebbe chi senza il debito apparecchio avesse l'ardire di predicare, e dall'altra, procurando di meditare e ponderare prima bene le cose e i sentimenti che si avranno da dire, l'animo nostro, commosso pria anch'esso dalle verità che si predicheranno, vaglia con più spirito, vigore e fervore sporle al popolo che ci ascolterà: ed in questo devono affaticarsi, non già in abbellire affettatamente la materia, la quale per questi abbellimenti perde sempre, e scema di quel vigore che noi dobbiamo studiosamente procurare che abbiano le nostre prediche, proponendo al popolo schiette verità, studiandoci allontanarlo dal vizio con fargliene capir bene la schifezza, ed allettarlo alla vita cristiana con proponergli sinceramente la bellezza e gran frutto. In somma dobbiamo seguire l'esempio del divino maestro, che con ammirabile sincerità e chiarezza insegnava nelle sue divine prediche sublimissime verità, ma

¹ MATTH., VI, 2.

in modo che potesse essere inteso da ognuno, e che tutti potessero delle sue divine adorabilissime parole ed istruzioni cavar profitto per le anime loro in ordine all'eterna salute; e questo unicamente dee essere il nostro scopo, acciocchè non meriti (il che cessi Iddio) la taccia di alberi infruttuosi, benchè al parer nostro faticassimo assai, ma non secondo il nostro obbligo nè secondando la vocazione di Dio. Onde se mai accadesse che alcuno dei nostri, invanito de' suoi talenti, volesse nel predicare mostrarsi uomo di bell'ingegno, ed usasse ornamenti vani ed affettati che snervano le prediche, severamente si riprenda, e non emendandosi, se gli proibisca il predicare finchè si emendi.

CAPO VIGESIMOQUINTO.

Degli studi e conferenze sopra la teologia morale e sopra la maniera pratica di predicare.

I. Dedicandoci noi al servizio di nostro signor Gesù Cristo ed a' ministeri apostolici per la propagazione della santa religione, per il profitto spirituale de' prossimi, ciascuno apertamente conosce quanto ci sia necessario lo studio della divina Scrittura e della sacra dottrina, acciocchè, ben provveduti e corredati di massime sode e sante, possiamo custodire e raccorre nella nostra mente quella scienza che illumini ed accenda le menti e i cuori di coloro che *legem requirunt de ore nostro*¹, e possiamo spezzar a tutti quel pane che porga loro sodo e sostanzioso nutrimento che li faccia crescere in uomini adulti e perfetti in ordine alla gloria di Dio ed alla salute eterna, e possano così le nostre fatiche condurre a ciò che scrive S. Paolo: *Ad summationem² sanctorum in opus ministerii, in aedificationem corporis Christi*³.

II. È necessario adunque principalmente far buona scelta di maestri e lettori, la quale si farà nella seguente forma: cioè si radunerà la consulta, e per essere taluno eletto a maestro o lettore, dee in esso con-

correre la maggior parte de' voti dei consultori; i quali avrenno la cura di trovar nei soggetti che vogliano scegliere non solo abilità e perizia per insegnare, ma anche spirito e pietà, la quale li muova a distillare insieme colle dottrine buone massime, che dalle dottrine speculative si possono trarre, e si sanno ben trarre da coloro che nello studiare ed insegnare hanno il riguardo alla gloria di Dio e l'occhio lucido e puro, cioè santa intenzione, e si sanno bene insinuare a' discepoli da que' maestri che avvezzi alla vita interiore ben conoscono la pratica d'indirizzare ogni cosa ad onore del sommo Dio.

III. Perchè le opinioni nove e particolari d'ordinario sono nocive e mal fondate, perciò ognuno dei nostri dee stare molto avveduto a non abbracciarle, ed i lettori molto attenti devono essere a non insegnarle: onde, acciocchè fra noi si conservi sempre la dottrina pura e lontana da ogni pericolo di errore, ed acciocchè, così nei nostri scritti, come anco nelle prediche, discorsi familiari e conferenze, ed insomma in pulpito, nelle cattedre e confessionari, s'osservi uniformità di dottrina, e tutti possan seguire l'avvertimento dato in vari luoghi dall'Apostolo: *Omnes idem sapere et sentire, ac etiam idem dicere posimus*. Perciò la nostra regola comanda a' nostri di non seguire altra dottrina nè altre opinioni che quelle di S. Tommaso d'Aquino dottore angelico, avvertendo i lettori a tenersi lontani da quelli autori, che, non facendo della dottrina del Santo quel buon uso ch'essa merita, e dandole quelle interpretazioni che non le convengono nelle circostanze presenti, vengono ad aprire la strada a' meno cauti d'incorrere in qualche errore. La sua dottrina si spieghi e si siegua sempre da ognuno, e per farsela ognuno vieppiù familiare, s'ordina che dopo il corso e compimento degli studi ciascuno legga ogni giorno un articolo della sua *Somma*.

IV. Avvertano i lettori a non riempire i loro scritti di alcune questioni inutili, soverchie, speculative ed astratte, che poco o nulla giovano, ma proponansi il fine per

¹ MALACH., II, 7.

² Leg. *consummationem* (R. T.).

³ Ad Eph., IV, 12.

cui devono istruire ed abilitare i giovani, il quale è confutare gli errori de' gentili ed eretici nelle missioni, e nei pulpiti e confessionari insegnare ai cattolici le verità di santa fede, e proporre le sode massime per convertire i peccatori, e le pratiche delle virtù per far crescere in ispirito i buoni. E conforme a questo nostro fine e si fatti nostri esercizi, devono esporre a' nostri giovani la santa dottrina e le più sane e sode opinioni.

v. Niuno de' nostri ardisca dare alle stampe un'opera, per picciola che sia, senza aver pria ottenuto la licenza in scritto della consulta, dalla quale si commetterà la revisione a due o tre de' nostri teologi, dopo l'approvazione dei quali si darà la licenza e si richiederanno le debite licenze de' superiori, *servatâ constitutum apostolicarum formâ*.

vi. Richiede il nostro istituto un' esatta e profonda cognizione e scienza della teologia morale, onde si prescrive che se ne faccia conferenza tra i nostri ciascun mercoledì, coll'intervento di tutti i sacerdoti, li quali si conferiranno nel luogo destinato ben preparati a rispondere. La conferenza suddetta si farà nel seguente modo.

vii. Si destinerà dalla consulta uno dei nostri per prefetto della conferenza, e si scelga uno che sia reputato de' più abili per questo esercizio. Costui poi è obbligato di spiegare un capo di questione morale, seguendo l'ordine de' trattati e materie, colla scorta di qualche buon libro che contenga tutto il corso della morale da destinarsi dalla medesima consulta. Dopo spiegato il capo, dee raccogliere nel fine i principi che in esso si contengono, e con quali si risolvano i casi particolari. Indi voltatosi ad uno di coloro che non sono ancor confessori, gli proporrà un caso sopra la stessa materia da risolversi cogli stessi principi, e costui dovrà rispondere. Il che fatto, ognuno per ordine, incominciandosi dai più antichi, potrà proporre allo stesso le difficoltà che sovra il caso occorreranno, ed egli è obbligato a rispondere; e se per avventura errasse, si darà da chi domanda con modestia

e carità la vera risoluzione. Se dopo vi restasse ancora tempo, il prefetto proporrà altri casi, finchè scorra e finisca tutto il tempo destinato per questa conferenza, avvertendo però che non potrà dimandare le risoluzioni de' casi sempre ad uno, ma per ordine, proponendoli pria al primo, poi al secondo, ecc; sicchè nella conferenza seguente nell'altra settimana proporrà il prefetto il caso a colui che sedeva dopo colui nel quale finì la conferenza. E ciò s'ordina d'aversi osservare esattamente, cioè tutti egualmente siano istruiti e si esercitino in questa scienza, non essendo conveniente che il prefetto faccia esercitare più questo che quello.

viii. Può nondimeno il prefetto, dopo finita la risoluzione del primo caso da lui proposto, invece di proporre degli altri, pregare i confessori acciocchè essi propongan dei casi agli altri non ancor confessori, e così un dopo l'altro proponendo e risolvendo si lascerà passare l'ora destinata, dopo la quale si darà termine alla conferenza coll'azione di grazie a Dio. Convien pertanto che ciascuno tenga nella propria stanza il suddetto libro di corso di morale, acciocchè s'apparecchi alla conferenza con istudiare ed esaminare il caso che dee proporsi e sul quale si ha da conferire; dovrà però il superiore fare che nella libreria comune vi sia almeno un corpo del corso medesimo, per comodità di chi voglia ivi studiarlo.

ix. Dopo ogni quarta conferenza, invece del suddetto esercizio, si farà la pratica del penitente e del confessore, e per ordinario s'introdurranno casi pratici che si risolvano con principi discussi nelle passate conferenze, e dovrà il prefetto anticipatamente destinare a far il confessore qualche sacerdote che non ancora lo sia, e dopo avere questo fatto il suo ufficio, domanderà agli stanti la correzione di quello in che avesse errato, e per ultimo il prefetto deciderà.

x. La maniera pratica di predicare si comincerà ad insegnare nel noviziato dal maestro dei novizi o da altro soggetto destinato dalla consulta. I novizi poi di quando in quando dovranno fare in refettorio alcun

breve discorso per proprio esercizio, componendolo essi, e servirà allora tal discorso per la lezione spirituale. E lo stesso con più esattezza s'osserverà nello studentato, e similmente alcuna composizione sarà farsi talvolta dagli studenti, acciocchè da tutti possa conoscersi l'abilità e talento di ciascheduno.

CAPO VIGESIMOSESTO.

Di varie altre regole da osservarsi.

i. Niuno dei nostri fratelli laici apprenda a leggere nè a scrivere, molto men la grammatica, senza licenza della consulta.

ii. Senza l'approvazione della consulta a niuno dei nostri sia lecito iscriversi in niuna congregazione o oratorio fuori di nostra casa, e trovandovisi scritto alcuno prima di entrar fra noi, non gli sia permesso frequentarlo senza licenza del superiore.

iii. Gli arredi della nostra chiesa siano moderati, e la suppellettile della sagrestia sia pulitamente povera e modestamente decorosa, non dovendosi da noi spender denaro in musiche, argenteria, indorature ed altri simiglianti ornamenti. Imperocchè il denaro dovrà impiegarsi in ciò che serve per il nostro fine. Se però alcun divoto volesse spender denaro in simili cose convenienti al culto divino, si intimerà a lui lo spirito della nostra regola; e se egli ciò non ostante persistesse nel suo parere, si accetterà l'offerta, proibendo solo la nostra regola che simili cose si facciano a spese della casa e della sagrestia.

iv. Nell'uscir di casa ognuno dovrà tirar fuori il segno dalla tabella, e lo dovrà riporre nell'entrare, acciocchè si possa sempre sapere chi stia in casa e chi n'è uscito.

v. A tutti è severamente proibito il pernottare fuori di casa: il superiore però con legittima causa può dar licenza per otto giorni, ma per dimora più lunga si richiede la licenza della consulta.

vi. Non sia lecito a niuno il confessarsi ad altri che ai nostri confessori di casa, nè facilmente dispensi in ciò il superiore, se non quando non ci fosse in casa numero competente di confessori; nel qual caso per

li collegiali dovrà il superiore invitare confessori forastieri da lui ben conosciuti e che siano intesi del nostro istituto.

CAPO VIGESIMOSETTIMO.

Dell' indiscretezza ed accidia.

i. Due vizi, benchè opposti, tuttavia ugualmente perniciosi, possono talvolta ritrovarsi in alcuni soggetti della comunità, i quali dapprima insensibilmente insinuandosi nei loro animi sotto sembianza di virtù, in tal guisa vi buttano le radici, che non senza una speciale grazia del Signore si possono dai superiori stradicare, e frattanto aumentando recan notabil danno non solo allo spirito ed al corpo di quei tali, ma generano gran disturbo, fanno grave detrimento alla stessa comunità. Questi vizi sono lo spirito di accidia ed il zelo indiscreto: e dell'uno e dell'altro per rimediarvi si parlerà in questo capo.

ii. Lo spirito di accidia si cuopre e nasconde sotto la bella ma falsa apparenza di discrezione, e così, sotto pretesto di conservar la salute per far cose di maggior gloria di Dio e salute delle anime, si cercano alcune comodità e si fuggono alcune fatiche, ed a poco a poco questo spirito crescendo s'impadronisce in sì fatta guisa dell'animo, che si amano, si cercano e si pretendono comodità soverchie, e si fugge affatto l'asprezza e la fatica compagne fedeli delle virtù e necessariamente richieste da noi e dal nostro istituto.

iii. Il zelo indiscreto, al contrario, sotto il bell'ammanto di penitenze ed odio di noi stessi, talmente s'impadronisce de' nostri cuori (se mai in essi gli darem luogo), che non solo ci fa stravedere con portarci ad abbracciare noi ed imporre ai peccatori penitenze ed asprezze sopra le nostre forze, e così rovinar la salute e recare detrimento notabilissimo al nostro spirito e diminuzione grande ai nostri apostolici impieghi, ma ci conduce a tale che ci fa perdere la cieca ubbidienza dovuta da noi ai superiori, e passando oltre ci fa giudicare e credere che eglino non ci sappian guidare, nè ci guidino bene per la via dello spirito, e che non in-

tendano lo spirito nostro, e ci porta pure al grandissimo male di mormorare della condotta loro sopra di noi, ed a fare il pessimo giudizio che fassi dagl'indiscreti, cioè, che i superiori non tengano in stima la penitenza, e che non l'aminino, e trattano come ciechi dallo spirito cattivo dell'indiscretezza occupati, non veggono le loro rovine, la perdita del tempo, della salute e del merito appresso Dio, il quale non prezza penitenze con disubbidienza, quindi camminando a gran passi verso il lor precipizio non se n'avveggonno e non cercano di voltar indietro, perchè fuggono la guida dell'ubbidienza, la qual sola coll'aiuto di Dio potrebbe farli accorti del loro inganno, e farli mutar vita e strada, e condurli per la via sicura e spedita.

iv. Per isradicare questi due perniciosissimi vizi dalla nostra minima comunità, anzi acciocchè non vi allignino, si deve preventivamente adoperare il rimedio; e questo si è l'osservanza esatta delle regole in modo che niuno senza espressa licenza del superiore ardisca dispensarsi da qualsisia punto per minimo che parrà, sotto pretesto che possa recar danno alla salute corporale; ed all'incontro, con egual avvertenza e soggezione totale al superiore, niuno (come altrove ancora si è ordinato) intraprenda verun esercizio di mortificazione, orazione o altra opera non prescritta nella regola senza licenza del superiore, o del direttore spirituale della casa, coll'approvazione però sempre del superiore: ed ognuno si persuada e fondi su questa massima, che il negozio del nostro spirito e del nostro profitto dee dipendere per volontà di Dio dalla direzione, consigli ed ordini dei superiori, nelle mani dei quali dobbiamo interamente abbandonarci in tutti i casi che avverranno e dubbi che insorgeranno, se vogliamo conoscere la volontà di quel Signore che disse: *Qui vos audit, me audit.*

CAPO VIGESIMOTTAVO.

Della stima e osservanza di questa regola.

1. È di grande importanza il porre avanti gli occhi di tutti di quanto gran momento

sia il custodire con esattezza le regole in ogni minuzia ed osservanza per piccola che comparisca, onde in questo ultimo capo s'inculcherà questo stesso, e si ripeteranno alcuni motivi: il che non dee dar noia, perchè molto importante affare è il far intendere quanto ciascuno debba studiarsi ed affaticarsi per la rigorosa ed esatta osservanza, e quanto debba ognuno tremare, se per sua colpa qualche rilassamento s'introducesse, *che questo hanno le comunità* (come scrive S. Teresa dei monasteri), *che il bene presto cade e manca; ed il male, se una volta incomincia, è difficilissimo da levarsi, e ben tosto il costume di cose imperfette diventa abito*: onde esorta in un altro luogo le sue religiose che procurino sempre vivere in modo che possano servir d'esempio a chi verrà appresso: *sempre* (scrive la Santa) *dovremo considerare, che noi siamo i fondamenti di quelli che verranno; non dice ciò solo dei primi di qualsivoglia istituto, ma di quelli che di mano in mano professeranno, volendo che ciascuno di ogni tempo, se vedrà la sua religione mancando e scadendo in qualche cosa, procuri egli di essere pietra tale, colla quale si torni a drizzar l'edificio; nè credano i nostri che la Santa intenda di mancanza e rilassamenti gravi, perocchè nel cap. xxxiv delle fondazioni scrive: Avvertiscano, che per mezzo delle cose piccole va il demonio trivellando e facendo buchi, per dove poi entrano le cose molto maggiori.* Onde, secondo l'avvertimento dello Spirito Santo medesimo: *Qui spernit modica, paulatim decidet*², apra ciascuno gli occhi, nè si lasci sedurre dal comune nemico, il quale s'ingegnerà di farci trasgredire prima in piccole, poi in maggiori cose le regole delle quali noi dobbiam essere zelantissimi custoditori. Egli ora ce le farà vedere troppo difficili ed ardue a praticare, ora tenterà di destare nei nostri cuori uno spirito di dispiacenza e di accidia per non farcele eseguire, ora ce le dipingerà inutili, superflue, e da potersi prescrivere migliori da

¹ Cam. di perf., cap. v.

² Eccl., xix.

noi medesimi, per farcele disprezzare, ed or con un inganno, or con un sistro, tentare di raffreddare il fervore della nostra ubbidienza, ed introdurre nella comunità il rilassamento; ma noi dobbiamo star saldi e sull'avviso, stimando le regole come legge da noi inviolabile, e dobbiamo sempre più accrescere nel nostro cuore l'amore per esse, ed esser sempre più vigilanti per osservarle esattamente, senza trasgredire volentariamente qualsisia per minima che apparisca; e ciascuno procuri di scolpir la bella massima di S. Teresa nel cuore, cioè che dobbiamo portarci come se la comunità da noi cominciasse, e noi ne fossimo i fondamenti, e da chi devono prendere l'esempio gli altri che dopo verranno. Di gran riprensione adunque sarebbe degno chi si lasciasse uscir di bocca alcuna parola contro d'alcun punto della regola per minimo che sia, dovendosi dimostrare col l'opere e colle parole la stima che di essa e di tutti i suoi punti noi concepiamo nell'animo.

II. Certamente temerario sarebbe si fatto parlare, come ancora se si parlasse contro delle risoluzioni della consulta, o si censurassero gli ordini delli superiori, dovendosi all'incontro tutta l'ubbidienza, il rispetto e la stima così alle regole descritte, come a' decreti che in avvenire si faranno dalla congregazione generale, e tutta ancor l'osservanza verso gli ordini e comandi dei superiori. Li superiori ancora devono essere vigilanti, ed usino tutto lo studio, acciocchè tutte le regole siano da tutti in ogni tempo osservate, correggendo i trasgressori, ed imponendo loro secondo la qualità del difetto la penitenza, senza aver mira all'antichità della comunità o all'età, e senza aver riguardo all'ufficio che esercita alcuno, acciocchè ognuno conosca e si persuada che queste nostre regole debbono da tutti senza eccezione osservarsi: anzi gli uffiziali, mancando in cose pertinenti al loro ufficio, saranno degni di più severa correzione e rimprovero, e mostreranno che non sono degni del posto che occupano, se si mostreranno negligenzi.

PARTE SECONDA

La quale contiene le regole e costituzioni particolari.

CAPO PRIMO.

Regole delli novizi.

I. Quei novizi, che sono stati ammessi per chierici, se il superiore colla sua consulta stimasse bene, potrebbe per lo spazio di sei mesi trattenerli vestiti de' propri abiti nel noviziato; e quei che sono stati ammessi per fratelli laici, tutto l'anno intero; acciò dovendo andarsene, o essere licenziati, si faccia con minor nota.

II. Devono con esattezza e puntualità grande osservare le regole comuni della nostra Congregazione; e per averle sempre avanti gli occhi, e farsele per tutta la vita familiari, dovranno ogni giorno leggerne considerarne almeno un capo, e farsene copia, promettendo però con giuramento di rilasciarla in mano del superiore, qualora uscisse dalla nostra Congregazione e comunità, e questo giuramento dovrà ancor farsi da ogni novizio quando poi le regole saranno stampate.

III. Nel recitare l'ufficio, leggano sempre, ancorchè lo sappiano a mente.

IV. Facciano speciale studio nell'esercizio della presenza di Dio, al qual effetto è buon consiglio che portino sotto la veste una coroncina per segnare le volte che si ricorderanno della Divina Maestà Sua, e si dovranno confondere nell'esame della sera di essersi poche volte ricordato d'un Signore che di continuo pensa a noi.

V. Almeno una volta la settimana devono dar conto di coscienza al loro maestro, scoprendogli con fedeltà tutto l'interno, e quanto di bene o di male vi sarà, cioè tutte le tentazioni, male inclinazioni, moti disordinati, ed abiti mali, tutti i lumi di Dio, tutti i buoni sentimenti e desiderii che nell'orazione o in altro tempo avranno avuto, ed il modo e maniera che procedono nell'orazione, soddisfacendo alle altre dimande che lor farà il maestro, secondo la forma prescritta nel cap. XIV della parte III.

VI. Si proibisce alli novizi ogni commercio con secolari senza licenza; e quando

la necessità lo esigesse, si faccia in presenza d'uno dei nostri da destinarsi dal maestro, non dovendosi permettere il trattare da soli a soli, senza una conosciuta gravissima causa;

vii. Lo scrivere ed il ricevere lettere da qualsivoglia persona benchè congiunta, senza essere state prima presentate a leggere al maestro;

viii. Il parlare cogli istessi nostri di casa, alla riserva di alcuni maturi nello spirito e prudenza da destinarsi dal superiore, dai quali possano ricevere buon esempio, e non già occasione di distrazione;

ix. Il trattare e parlare cogli altri novizi fuori dei luoghi e tempi destinati, e quando la necessità esigesse che si dica qualche parola, si dovrà fare con voce bassa, e soltanto quanto esige il bisogno;

x. L'abitare in una camera due soli, anzi il parlare stesso a solo a solo, eccetto il caso che per la bontà ben conosciuta si permettesse dal maestro;

xi. L'esercitare uffizi pubblici che esigano il trattare con forastieri; e senza una conosciuta gravissima necessità, mai non si deve dispensare a questa regola;

xii. Il fissar gli occhi in faccia ad alcuno, maggiormente se sono donne, o uomini d'alcuna gravità;

xiii. Il tenere il corpo in qualunque modo scomposto, nè pur quando stanno in camera soli;

xiv. L'uscire la porta del noviziato per andare in qualunque luogo senza l'espressa licenza del maestro;

xv. Il parlare di cose inutili, come di mangiare, bere, delle nuove del mondo, e molto più dei difetti degli altri;

xvi. Il regalarsi tra di loro, e molto più il dare o ricevere cosa alcuna d'altri senza espressa licenza del maestro;

xvii. Il toccarsi fra di loro ancorchè leggermente;

xviii. L'andare in camera d'altri per qualunque necessità senza espressa licenza del maestro;

xix. Lo stare in ozio, e il manifestare a compagni le proprie tentazioni e scrupoli.

xx. Nell'esame di coscienza, che si farà la sera, chi troverà d'aver mancato in alcuno di questi punti di regole o in altro delle regole comuni, dirà pubblicamente la sua colpa, e ne dimanderà la penitenza al maestro.

Degli esercizi quotidiani da farsi da' novizi.

I. La mattina, subito svegliati, inteso il primo segno del campanello, ciascuno farà quanto si prescrive nel capo ix della parte I; e dopo il secondo segno, radunati tutti nel luogo destinato, faranno un'ora d'orazione mentale; quale terminata che sarà, con modestia se ne ritorneranno in camera, ove staranno mezz'ora esaminando e scrivendo il lume ed i propositi fatti nell'orazione, ed aggiusteranno la camera.

II. Passata che sarà la suddetta mezz'ora, andranno tutti a sentir messa, e poi radunati nel luogo destinato, sentiranno con attenzione la mezz'ora di lezione e discorso spirituale che si farà ogni giorno non festivo, e dopo per un'altra mezz'ora conferiranno sopra l'istessa materia; il seguente giorno, però in vece della lezione o discorso spirituale, ordinerà il maestro ad uno o più novizi, acciò ripetano con brevità quanto intesero nel giorno antecedente, e proponano qualche difficoltà sopra l'istessa materia, per esempio: come si può vincere la tal tentazione? come si può superare la tal difficoltà? qual sia l'origine del tale impedimento, quale il rimedio per superarlo? e cose simili: e dopo che i novizi averanno detto qualche cosa, il maestro darà la risoluzione del dubbio.

III. Terminata che sarà la suddetta conferenza, il tempo che avanza sino all'esame della coscienza da farsi avanti del pranzo dovranno impiegarlo in qualche lavoro di mani, o in altro esercizio corporale, in leggere un poco la dottrina cristiana e regole, in mandare in memoria le epistole di S. Paolo, di S. Giovanni, o altra cosa, secondo meglio stimerà il maestro.

IV. Dopo l'esame di coscienza, si andrà a pranzare; e finito il pranzo, si tratteranno un'ora in recreazione, alla quale andranno anche quelli che per legittima causa

dovranno pranzare nella seconda tavola. Il discorso sia di cose spirituali o utili, ed il maestro, o altro da lui deputato, dovrà sempre assistervi.

v. Finita la ricreazione, al segno del silenzio, ognuno si ritirerà in stanza, ed al suono del campanello che si dà dalla comunità e del riposo, si porteranno tutti nel luogo destinato, ove avanti il maestro reciteranno quanto la mattina hanno appreso a memoria; dopo di che il maestro spiegherà per una mezz'ora di tempo la dottrina cristiana, ed almeno una volta la settimana il modo di predicare, al che se egli non fosse abile, lo farà un altro, come si è detto nel capo xxv della parte I delle regole comuni. In vece della dottrina cristiana, almeno una volta la settimana si leggeranno le regole, spiegando il maestro il senso di esse.

vi. Finito che sarà il mentovato esercizio, si ritireranno tutti impiegando il tempo in leggere, o far qualche altra cosa impostale dal maestro; ed un'ora e mezza avanti la cena, mezz'ora l'impiegheranno in orazione mentale, e l'ora che avanza, parte l'impiegheranno negli uffizi domestici, e parte negli esercizi corporali, ovvero in altre occupazioni che saranno prescritte dal maestro.

vii. Dopo la cena, ricreazione, ed esame, il maestro proporrà il soggetto della meditazione da farsi la seguente mattina; e ritirati tutti in camera, ognuno si dovrà leggere li punti.

CAPO SECONDO.

Regole de' studenti.

I. Perchè lo studio delle lettere potrebbe distrarre un novello nello spirito dallo studio della propria perfezione, perciò dovendo il novizio passare alli studi delle lettere, accio non si dissipì, oltre l'osservanza delle regole comuni, dovranno osservare li seguenti:

II. Nessun studente ardisca parlare con alcun dei nostri, nè con altri, benchè siano parenti, senza licenza del loro maestro di spirito, e perciò la loro abitazione dovrà esser separata in modo che non possano

praticare con altri, e la chiave della porta dovrà esser diversa dalla comune della casa, e nessuno potrà uscire senza l'espressa licenza del maestro, ed il maestro senza causa legittima non dovrà loro permettere lunghi discorsi, nè lo scrivere e ricevere lettere, senza essere state prima lette da lui, nè il mandare e ricevere doni, nè l'andare alla propria loro casa, e via più il restarvi a pranzo, e dovendo conferire con i loro lettori materie di studi, non sia facile a dar loro licenza, fuora dell'ore a questo effetto destinate dal superiore.

III. Alle scuole, alle conferenze, all'orazione, ed agli altri esercizi comuni andranno tutti insieme e con modestia, e così dovranno ritornare subito che sarà finito.

IV. Devano portare esatta ubbidienza al lor maestro di spirito, il quale benchè sia subordinato al superiore, ad esso però è commessa la cura di quanto spetta dentro la loro abitazione, onde dovrà egli governare e correggere li studenti, eccetto il caso che alcuno d'essi difettasse fuora dello studentato, quando il superiore dovrà correggerlo.

V. Così parimente devono portare ogni rispetto verso i loro maestri e lettori, e commettendo nelle scuole alcun difetto, potranno questi correggerli e mortificarli.

VI. Solo dentro le scuole e ne' luoghi destinati è lor lecito il disputare, ed ad ogni cenno dei loro maestri devono dar fine alle dispute.

CAPO TERZO.

Regole de' collegiali.

I. Quelli che saranno ammessi nel nostro collegio in qualità di collegiali, oltre alle regole comuni, ed alle particolari che a loro sono prescritte nella prima parte, quali dovranno osservare per tutto il tempo della loro vita, se gli prescrivono anche le seguenti, alle quali saranno tenuti sino a che averanno finito i studi, e sarà obbligo del rettore di andargliele spiegando, e di far ogni settimana la conferenza sopra d'esse, ed esaminar bene qual regola non è compatibile al loro impiego, per dispensarla.

ii. Si proibisce alli collegiali non solo il parlare con forastieri e con i loro parenti, ma anche cogli istessi nostri di casa senza l'espressa licenza del rettore; lo scrivere ed il ricevere lettere senza essere state prima presentate al rettore per leggerle; il trattare ed il parlare fra di loro fuori del tempo e luogo a ciò destinato; l'abitare due soli in una camera, e così parimente il parlare da solo a solo, eccettuato il caso che per la bontà conosciuta si permettesse dal rettore; l'esercitare uffizi che esigano il trattare con forastieri, e da questo punto mai si dovrà dispensare senza una conosciuta gravissima necessità; il fissar gli occhi in faccia ad alcuno, specialmente a donne; l'uscire la porta del luogo ove dimorano, senza l'espressa licenza del rettore, il quale dovrà conservare la chiave che deve esser differente dalla comune della casa; il regularsi fra di loro, e molto più il dare o ricevere cosa alcuna da altri, senza licenza espressa del rettore; il toccarsi tra di loro ancorchè leggermente; l'aver camera o cassa, o stipo, o altro luogo da riporre robe, chiuso di maniera che non possa il superiore ogni volta che voglia aprirlo e rivedere ciò che gli pare.

iii. Dovranno finalmente portare esatta ubbidienza al loro rettore, il quale benchè sia subordinato al superiore, essendo però stata commessa a lui la cura del collegio, egli dovrà governare e correggere i collegiali, e questi ubbidirlo come a superiore.

CAPO QUARTO.

Del sagrestano.

i. Il sagristano dovendo maneggiare le cose pertinenti al culto divino, perciò dovrà essere costituito al meno in *sacris*, ed esser persona molto circospetta, divota, esemplare, sollecita, ed amante della pulizia, a cui la consulta dovrà assegnare un compagno.

ii. Al sagristano si consegneranno al principio dell'uffizio tutte le cose della chiesa e sagristia per inventario, e lui coll'istesso in presenza del superiore le consegnerà, lasciando l'uffizio, al successore.

iii. Avrà cura di tenere la chiesa e la sagristia sempre pulita e netta, e che l'acqua benedetta si rinnovi ogni sabato.

iv. Terrà gli altari sempre ben adornati, facendo però differenza tra giorno e giorno.

v. Attenderà che i vestimenti sacerdotali, tovaglie, corporali, purificatori, ed altre cose si fatte siano ben nette e non stracciate, e gli altri paramenti ben tenuti, usando e facendoli posare di quel colore che i tempi richiedono.

vi. Farà che le messe si dicano all'ora debite secondo il rito della Chiesa, e veda per chi ed in che altare si debbano celebrare le messe d'obbligo, e farle soddisfare; e perchè nella sagristia non nasca confusione, dovrà tener esposta una tavoletta, nella quale noterà il tempo e l'ordine delle messe, assegnando la prima e l'ultima, da settimana in settimana, a ciascuno de' nostri per giro, ed ognuno dovrà esser diligente a celebrare alle sue ore determinate; e quando sentiranno chiamarsi dal sagristano, saranno solleciti, lasciando ogni altra applicazione, ancorchè fossero occupati nello studio o in sentir confessioni.

vii. Sarà anche cura sua che alle ore debite si suonino le campane secondo l'uso della nostra casa.

viii. Nella sagristia non faccia mai mancare ostie, e nel tabernacolo il Sacramento, il quale sia rinnovato ogni otto giorni, e faccia che notte e giorno vi stia sempre il lume acceso.

ix. Scriverà le messe che vengano alla giornata, e si faranno soddisfare quanto prima; scriverà parimente le elemosine che per qualsivoglia occasione verranno date alla chiesa, ed avrà cura di far soddisfare l'obbligo. Il suddetto denaro per messe o per elemosine lo consegnerà al depositario, scrivendolo di suo carattere nel libro, e quando avrà bisogno di cera, olio, o altra cosa necessaria, la dimanderà al superiore.

x. Per li nostri defunti disporrà egli l'esequie, e sarà sua cura di far che si facciano li suffragi tutti nel modo prescritto nel capo xxiv della parte i.

xi. La comunione da farsi in chiesa dai nostri, la faccia fare separatamente dai forastieri.

xii. Le sante reliquie si conserveranno sotto due chiavi; una dovrà tenersi da esso, e l'altra del superiore.

xiii. Non alienerà, nè presterà, nè riceverà in prestito cosa alcuna senza licenza espressa del superiore, e con detta licenza facendosi prestar qualche cosa, abbia tutta la cura in conservarla e restituirla quanto prima.

CAPO QUINTO.

Dell' infermiero.

i. Essendo gl'infermi privi dell'uso del corpo tanto necessario alla vita umana, e sopra ciò tormentati dalli dolori che apporta l'infermità, fa bisogno che a loro con più sollecitudine e diligenza che agli altri si provveda; e perciò, oltre le regole prescritte nel cap. xxiii della parte I, si dovranno osservare le seguenti:

ii. Dovrà la Congregazione in eligere l'infermiero far scelta d'una persona ecclesiastica perita e pratica dell'infermeria, a cui s'assegnerà per compagno un fratello laico, che sia forte di corpo per poter sopportare le fatiche e vigilie che tale ministero ricerca, e di animo per soffrire pazientemente e con carità li fastidi dell'ammalato.

iii. L'infermiero si forzerà essere assiduo cogli ammalati, ministrando loro le cose necessarie, secondo l'ordine del medico, al quale dovrà esser presente ogni volta che li visiterà; procurerà che sia netto e ben accomodato il luogo, i letti, e tutte le altre cose dell'infermeria, ed avrà cura, che le cose specialmente del mangiare e medicine le siano apparecchiate bene e pulitamente, a tempi debiti, e per abbracciare con allegrezza la fatica, potrà ricordarsi delle parole del Salvatore: *Infirmus eram et visitastis me. Quamdiu fecistis uni ex his fratribus meis minimis, mihi fecistis*¹.

iv. Faccia studio di sollevare, e consolare l'infermo non solo colle cose ordinate o approvate dal medico, ma anche con pa-

¹ MATTH., cap. xxv, 36. 40.

role spirituali ed allegre: abbia altresì libri, colla lezione de' quali possa sollevarli.

v. Non faccia passare otto giorni senza far comunicare l'infermo, ed aggravandosi il morbo, ne dia avviso al superiore, acciò, pria che perda l'uso di ragione, se gli diano tutti i sacramenti, e deputi quelli che lo devono aiutare a ben morire.

CAPO SESTO.

Del procuratore.

i. Per i negozi che ha da trattare il procuratore, dovrà essere persona molto accorta, prudente, pratica e confidente.

ii. L'uffizio suo è di provvedere la casa di tutte le cose che le fanno di bisogno per il vitto umano, ed apparterrà alla sua prudenza di fare la provvista ai tempi debiti.

iii. Sarà sua cura di appigionare le case ed altri beni del luogo, ed esigere le entrate e crediti che avrà; ed esatto che avrà il denaro, lo dovrà consegnare al depositario, scrivendolo di suo carattere nel libro dell'esito ed introito che si conserverà dal depositario, e che il depositario lo scriverà nel libro che conserverà il procuratore.

iv. Averà un libro, nel quale noterà li stabili che si affittano, a chi, e quanto, li censi, livelli, ed altre simili entrate, e tutto con distinzione.

v. In un altro libro noterà l'entrata ed uscita che si fa ogni giorno a minuto; ed in altro riporterà l'entrata ed uscita d'ogni mese.

vi. Averà finalmente un altro libro, nel quale noterà gli ordini che alla giornata riceverà dal superiore.

vii. Darà ogni giorno denaro allo spenditore, e giornalmente esigerà da lui i conti; egli però dovrà darli ogni mese al superiore; ed al preposito ogni qualunque volta li dimandasse, per esaminare se sono giusti, se si sono fatte spese superflue, e più del consueto e di quello che comporta la casa; ed il superiore è tenuto leggerli nella consulta, acciò li consideri ed esami, sappia lo stato della casa, e vi faccia sotto la dichiarazione in iscritto della retta amministrazione per per mandarla poi alla congregazione gene-

rale per essere dai suoi deputati riveduto, per poi conservarlo nell'archivio.

ym. Abbia il procuratore continua corrispondenza col superiore, e senza sua saputa non faccia niente oltre le cose quotidiane solite e stabilite.

ix. Dovrà soprintendere alle riscossioni ed alle liti; ma perchè da questa distrazione potrebbe facilmente nascere il torpore nell'osservanza delle costituzioni, ed ancora rendersi il soggetto odioso appresso gli stranieri, pertanto, acciocchè si mantenga nella nostra Congregazione sempre vivo il fervore, e si conservino tutti nella stima e nel rispetto de' secolari, si potranno commettere le riscossioni a qualche secolare che dalla consulta sarà stimato idoneo, e così parimente si potrà dare la cura di conferire in giudizio ad un procuratore ovvero sollecitatore.

x. Conserverà finalmente con diligenza una delle due chiavi dell'archivio.

CAPO SETTIMO.

Del depositario.

i. Il depositario dovrà tenere un libro di entrate ed uscite di quanti denari gli vengono nelle mani, notando la quantità, d'onde vengono, per mano di chi li riceva, ed a che si spendano, con le sue giornate; nè pagherà mai partita nè al procuratore, nè a qualsivoglia altra persona senza mandato fatto dal segretario e sottoscritto dal superiore; ed ogni mese dovrà dare il conto al superiore in presenza del vice-superiore e del procuratore, ed il superiore è tenuto darne ragguaglio alla consulta, acciò sappia lo stato della casa. E perchè la cosa vada bene, non sarà lecito ad altri, essendo in casa il depositario, ricevere denari per qualsivoglia causa; ma essendo assente, si ricevano dal superiore, in sua assenza dal vice-superiore; e neppur questo essendo in casa, si piglino da quello che resterà in loro luogo, e subito poi si consegnino a lui.

CAPO OTTAVO.

Del ministro.

i. L'ufficio del ministro è: i. D'aiutare il superiore in tutto quello che sarà per

comandargli per servizio della comunità: intenda dunque il ministro di non aver facoltà di dispensare, d'immutare, o di fare altra cosa senza ordine de' superiori; ii. Invigilare sopra l'osservanza delle regole; iii. Far che gli uffiziali vecchi istruiscano nel loro uffizio i successori; iv. Suggestire al superiore il tempo nel quale si devano mutar le ore della comunità, secondo i giorni vanno crescendo o diminuendo, e darne e farne dare il segno alle ore destinate; v. Ricordare al superiore le provvisioni da farsi a tempo opportuno; vi. Avvisare al superiore chi manca nel suo uffizio e dovere; vii. Invigilare che in tutta la casa e collegio si stia con pulizia decente, e specialmente ne' luoghi che si vedono dai forastieri; viii. Vedere ogni notte se le porte della casa sono serrate; ix. Aver cura che ogni sera si accendano ed estinguano a suo tempo le lucerne comuni; che si serrino ed aprano le finestre pubbliche; che si ponga l'acqua nel lavamano, e che si muti la tovaglia secondo il bisogno; x. Ordinare ogni giorno al compratore quello che dovrà comprare per il vitto, ed al cuciniero come debba prepararlo, con osservare se nella cucina s'ubbidisce, se si procede con pulizia, se le porzioni si fanno eguali, e se le cose del refettorio vanno ben ordinate, secondo le regole prescrivono, ammonendo caritativamente chi mancasse; xi. Sentire dal superiore chi sono quelli che devono servire e leggere a tavola, ed intimare l'ordine acciò si eseguisca.

CAPO NONO.

Del compratore.

i. Il compratore dovrà essere diligente in comprare tutto quello che gli sarà ordinato per l'uso quotidiano della comunità, e dovendo andare più lontano per comprar cose migliori, e con risparmio, non sia trascurato di farlo.

ii. Sia diligente in notare il denaro che riceve dal procuratore, e le cose in che spende, e egli ne dia ogni giorno conto esatto, ed ogni giorno dovrà ricevere l'ordine dal ministro di quello dovrà comprare il di seguente.

CAPO DECIMO.

Del dispensiere.

i. Il dispensiere dovrà avere buona custodia del pane, vino, olio, tovaglie, ed altre cose pertinenti al vitto, e conservando sotto chiave e con pulizia, dando ai tempi debiti il necessario per l'uso del comune, e non mai a particolari senza licenza del superiore. Provvederà, che le tovaglie siano mutate ogni domenica, nè farà cosa oltre l'ordinario che non comunichi prima col superiore. Prima che finiscano le cose commestibili che conserva, ne dia parte al superiore, acciò a tempo dia l'ordine per le nove provvisioni.

CAPO UNDECIMO.

Del refettoriero.

i. L'ufficio del refettoriero è: i. Attendere alle pulizie del refettorio, e di tutto quello che in esso serve; ii. Preparare la tavola, e apparecchiare dopo del pranzo, piegando le tovaglie e scopando il refettorio; iii. Mai non far mancar l'acqua per lavare le mani, e tovaglia netta per nettarle; iv. Ogni domenica il dispensiere dia le tovaglie nette; v. Mai non far mancare li vasi necessari per il refettorio, e tenerli sempre netti; vi. Suonare il campanello ne' tempi destinati per la prima e seconda tavola, dimandando sempre prima al cuoco se tutto è in ordine; vii. Raccogliere con diligenza gli avanzi per ritornarli al dispensatore, o darli ai poveri, secondo disporrà il superiore; viii. Avvisare al cuoco quanti sono quelli che mangiano alla prima tavola, e quanti s'aspettano alla seconda, acciò non erri nella distribuzione de' cibi; e perciò quando alcuno digiunerà e mangierà fuori di casa, il superiore dopo d'aver data la licenza, ne farà avisato il refettoriero; ix. Tenere un inventario di tutto quello che serve al refettorio per mostrarlo quando gli sarà dimandato il conto, e con esso fare la consegna al superiore, in presenza del vice-superiore e del ministro.

CAPO DUODECIMO.

Del cuoco.

i. L'ufficio del cuoco è: i. Di preparare i cibi con pulizia, usando una special carità

con quelli che servono agl'infermi; ii. Tenere netta e pulita la cucina e quanto ad essa appartiene, ed insistere che i suoi aiutanti facciano l'istesso; iii. Far in modo, che un quarto d'ora prima dell'ora determinata per il pranzo e cena sia tutto in ordine; iv. Non cucinare, nè preparare, nè permettere a particolari che cucinino o preparino cosa alcuna per uso proprio o di altri, e si eccettua solo l'infermiere per servizio degli ammalati; v. Tenere un inventario di tutti gli utensili della cucina, e renderne il conto quando gli verrà dimandato, e con esso farà la consegna al successore in presenza del vice-superiore e del ministro; vi. Avrà a cuore la povertà, procurando il risparmio in tutte le cose, consumando il puro necessario, e conservando gli avanzi che dal refettoriero gli saranno consegnati, per distribuirli secondo l'ordine del superiore.

CAPO DECIMOTERZO.

Del portinaro.

Sarà ufficio del portinaro: i. Di tenere una tabella esposta nella porteria, nella quale siano scritti i nomi di tutti quelli che stanno in casa, ed insistere acciò ognuno ch'escatiri il segno, ed avvisare il superiore di quelli che mancassero, acciò li corregga; ii. Dare l'avviso a quelli che vengono chiamati, ma se sarà nel tempo che stanno in orazione, o in tavola, dovrà aspettare sino al fine, quando il negozio non sia di premura, o la persona che fa chiamare non sia di tal condizione ch'esiga altrimenti, e quando quello che vien chiamato stasse fuori di casa, prenderà con distinzione l'ambasciata per fargliela nel ritorno; quando saranno chiamati li novizi, li studenti e li collegiali, dovrà dare l'avviso al loro maestro e rettore, e nelle loro mani dovrà consegnare le letteré, viglietti e regali che loro verranno mandati; iii. Terrà sempre l'antiporta serrata, e dentro e fuori netto. Ogni giorno serrerà con chiave la porta della casa nel tempo del riposo, e non l'aprirà, se non dopo la rottura del silenzio. Così parimente dovrà fare la sera verso il tempo dell'Ave

Maria, e non aprirla sino alla mattina seguente a giorno chiaro; ed ogni volta che alcuno dovrà uscire o entrare in tal tempo per causa urgente, per aprire ne dovrà avere licenza dal superiore. In serrare la porta, se vedrà nella tabella che alcuno non sia ancor ritirato, ne dovrà dar parte al superiore, al quale ogni notte prima d'andare a letto, dovrà consegnare le chiavi delle porte della casa.

CAPO DECIMOQUARTO.

Dello svegliatore.

1. Potrà lo svegliatore andare la sera a letto mezz'ora prima degli altri¹ dovrà alzarsi la mattina, ed all'ora destinata darà il segno col campanello, andando poi camera per camera svegliando ed accendendo il lume a tutti, e terminata la mezz'ora darà il secondo segno per l'orazione. Così parimente dovrà fare dopo il pranzo; terminato il tempo del riposo, darà il segno all'ora destinata ed anderà svegliando tutti, e passato un quarto, darà il secondo segno.

CAPO DECIMOQUINTO.

Del bibliotecario.

1. L'ufficio del bibliotecario è: 1. Tenere ben custodita, netta ed ordinata la libreria, collocando tutti i libri nel proprio luogo; 2. Fare l'indice alfabetico di tutti i libri proibiti, e conservarli tutti in un luogo separato e sotto chiave, e mai non darli a chi non ha la licenza della sacra Congregazione; 3. Fare un altro indice alfabetico di tutti i libri non proibiti; 4. Non dare la chiave della libreria ad alcuno, senza espressa licenza del superiore; 5. Avrà pure un libro nel quale farà fare alli nostri la ricevuta de' libri, che per ordine del superiore dovrà loro prestare, casarla dopo essere stati restituiti, nè presterà libri ad alcuno senza licenza del superiore, e con tal licenza, dovendosi prestare a' forestieri, sia diligente a notarli, ed a suo tempo procurare che siano restituiti.

¹ *Forsan repetendum fuit: e mezz'ora prima degli altri (R. T.).*

PARTE-TERZA.

La quale contiene le regole e costituzioni per lo buon governo e direzione di tutta l'opera.

1. Eccetto i capitolari ed il direttore di spirito, nessun altro de' nostri potrà tenere e leggere o sentir leggere questa terza parte delle regole e costituzioni; onde nè il superiore, nè i capitolari potranno darla in prestito, nè farla copiare, nè leggere ad alcuno, nè permetteranno che si sentano leggere o in qualsivoglia altra maniera pervengano alla notizia d'alcuno, richiedendosi, acciocchè alcuno non capitolare le legga, che la maggior parte dei voti della consulta concorra in darne espressa licenza; e non essendo ancora le nostre costituzioni stampate, potrà ogni capitolare farsi copia di questa terza parte, promettendo con giuramento d'ivi lasciarla in mano del superiore qualora uscisse dalla nostra Congregazione e comunità; e questo giuramento dovrà altresì farsi quando poi saranno stampate.

DEL NOVIZIATO.

CAPO PRIMO.

In chi risiede la facoltà di ricevere i novizi ed i collegiali; e si danno alcuni avvertimenti sopra l'istessa materia.

1. La facoltà ordinaria di ricevere novizi e collegiali risiede nella persona del superiore colli suoi consultori, e la delegata risiede in qualunque dei nostri sacerdoti, al quale dal superiore colla pluralità dei voti della sua consulta sia commessa. Convieue però che mai non si commetta che ai soli superiori, e que' superiori che non avranno tal facoltà, avendo persone idonee che facessero istanza d'essere ammesse, dovranno darne parte al superiore, e nel mentre che aspetteranno la risoluzione, se la necessità lo richiedesse, potrebbero trattenerli in casa come ospiti.

2. Siano tutti avvertiti a non voler mai essere troppo solleciti in procurare soggetti colle sollecite esortazioni, ma studiarsi più tosto chiamarli col buon esempio d'una vita virtuosa e veramente apostolica, dovendo

esser persuasi che quando piacerà al Signore, senza la nostra sollecitudine e soverchie industrie, avremo soggetti assai idonei; e perciò sarà cura dei superiori il raffrenare coloro che in questo particolare si mostrassero difettosi.

III. S'incarica a tutti i consultori ed esaminatori il tenere avanti gli occhi la sola gloria di Dio ed il solo bene della comunità, senza lasciarsi muovere dalle preghiere, o dal riflesso delle ricchezze, o della parentela, o da simile altro men retto motivo, dovendo solamente riflettere all'abilità della persona che fa l'istanza di essere ammessa, se sia o no abile ed idonea per il nostro istituto; e quando si sentissero muovere da somiglianti disordinati motivi, sano consiglio sarebbe il darne parte al superiore, acciò per questo solo caso sostituisca un altro in suo luogo.

IV. E così parimente s'incarica a tutti a non voler ricevere persona alcuna con offesa dei parenti e disturbo della comunità.

CAPO SECONDO.

Degli impedimenti che escludono dall'essere ammesso nella Congregazione e nel collegio.

§ I. — Degli impedimenti più essenziali.

I. Di due sorta sono gl'impedimenti, alcuni sono essenziali e gli altri meno essenziali. Gli essenziali sono: I. L'essere o esser stato contumace, o processato, o sospetto in modo di cattiva dottrina che si possa prudentemente temere poter essere chiamato in giudizio: questo impedimento però non s'estende in quelle persone che nate ne' paesi d'infedeli da parenti infedeli hanno seguitato l'errore, e poi ravvedute si sono convertite alla nostra santa fede; II. L'essere infamato di qualche delitto enorme; III. L'aver voto di religione, o lo aver vestito, benchè per un sol giorno, l'abito d'altro istituto, e poi se ne sia spogliato: il che non s'intende quando per evidente infermità o per altra giusta causa sia accaduto, e poi sia totalmente cessato; IV. L'essere legato in matrimonio; essendovi però il consenso della moglie, e gli

altri requisiti richiesti dalla Chiesa, cesserebbe l'impedimento; V. L'essere schiavo; ma acconsentendo il padrone, non sarebbe più impedimento essenziale, ma meno essenziale; VI. L'aver qualche dignità, capellania, o altro qualunque impiego che esige residenza o cura d'anime: questo impedimento però cesserebbe colla rinuncia; VII. Avere qualche grave infermità abituale o tanta stolidezza d'ingegno che renda affatto inabile la persona per il fine dell'istituto; VIII. L'essere nato di matrimonio illegittimo e dalla legge non legittimato; IX. Il non aver animo di permanenza.

II. Questi nove impedimenti sono di tanto peso, che senza un dono di Dio o altra buona qualità singolare, come si dirà qui sotto, neppure il superiore con tutta la Congregazione può dispensarvi, ed ognuno di essi rende invalida la recezione; che perciò devono gli esaminatori essere tutta vigilanza si nell'esaminare coloro che fanno l'istanza, come nelle informi segrete da prendersi prima di proporsi in consulta, per vedere se hanno alcuno di detti impedimenti; e quando vi fosse, senza passare più avanti nell'esame, dovranno escluderli subito con buone maniere; e s'avverta che questo esame si deve fare con gran destrezza, e senza dire che vi sono impedimenti, acciò il desiderio d'essere ammesso non induca a mentire colui che fa l'istanza. Finito che sarà poi l'esame, non essendosi trovato alcuno dei suddetti impedimenti, si dovrà dire a colui che fa l'istanza, che le nostre costituzioni dichiarano nulla la recezione di quelli che avessero uno de' suddetti impedimenti, e che pertanto sono obbligati in coscienza svelarli, nel caso che n'avessero alcuno: e tacendo, oltre il peccato, ogni qualunque volta si venisse poi a sapere, sarebbe licenziato. Si deve però avvertire, che un esame rigoroso dovrà farsi solamente con persone non ben conosciute, e non già con quelle che sono ben note; ed è finalmente da notarsi, che se nella persona nella quale si trovasse alcuno dei suddetti impedimenti, vi si scorgesse qualche dono di Dio o altra buona qualità sin-

golare, come per esempio sarebbe una grandissima conoscenza o una dottrina rara, non dovrebbe escludersi dagli esaminatori prima di conferir l'affare col superiore, e questo colla consulta; aderendo la pluralità de' voti, come anche la pluralità dei sacerdoti votanti di quella casa nella quale si avrebbe da ricevere, si potrebbe ammettere, dopo essersi ottenuta la dispensa dal Papa o dall'Ordinario nei casi che dalla legge si richieda.

§ 2. — Degli impedimenti meno essenziali, e delle altre domande da farsi.

I. Dopo che gli esaminatori avranno conosciuto non ritrovarsi nella persona che fa l'istanza alcuno degli impedimenti enumerati nell'antecedente paragrafo, dovranno farle le seguenti domande: I. Se ha l'animo risoluto e fermo di abbandonare il mondo; II. Quali sono i veri motivi che ha di abbandonare il mondo e scriversi in questa nostra Congregazione o Collegio, e da quali persone ne ha avuto l'impulso; III. Se il suo Ordinario ha difficoltà d'ordinarlo, e quali sono le difficoltà che gli fa; IV. Da quanto tempo sia che nutre questi buoni sentimenti; V. E se ha animo fermo di vivere e di morire in questa comunità. E soddisfacendo a queste cinque domande, proseguirà l'esame sopra gl'impedimenti che sieguono meno essenziali.

II. Gl'impedimenti meno essenziali alcuni sono interni ed altri esterni. Gl'interni sono: I. Il dominio d'alcuna passione che sembra indomabile; II. L'abito in qualche peccato, senza una grande speranza di emenda; III. L'intenzione non totalmente retta e disputata da ogni secondo fine; IV. La notevole incostanza dell'animo; V. Una notevole tepidezza nel servizio di Dio; VI. La divozione indiscreta: questo impedimento però cesserebbe ogni qualvolta coll'indiscretezza andasse accoppiata la docilità ed ubbidienza al superiore ed al direttore di spirito; VII. L'ignoranza nella scienza, senza una buona disposizione e volontà d'apprendere; VIII. E per ultimo, la notevole durezza nel proprio parere.

III. Gli esterni sono: I. L'infermità abili

Foran depurata (R. T.).

Bull. Rom. — Vol. XXIV.

tuale, benché non grave; II. Una notevole debolezza di complessione; III. Una notevole deformità del corpo, causata o dalla natura o da altra causa estrinseca; IV. La età, meno di quattordici e più di quaranta anni; V. L'aver padre, madre e sorelle povere, che hanno bisogno del loro aiuto; VI. L'essere debitore di denari e robe, prima di fare la restituzione o un pacifico aggiustamento con i creditori.

IV. I mentovati impedimenti meno essenziali, benché di loro natura escludano quelle persone che desiderano iscriversi in questa nostra Congregazione e collegio, ciò non ostante si avverta, che, se con alcuno di essi sia altresì accoppiato nella persona che fa l'istanza alcun dono di Dio o altra eccellente qualità naturale che compensi il detto difetto, potrà il superiore colla sua consulta dispensarvi, ed ammettere il supplicante.

CAPO TERZO.

Delle buone qualità che devono avere le persone per essere ammesse nella Congregazione e Collegio.

§ 1. — Delle buone qualità che si ricercano in quelli che devono esser ammessi al noviziato per ascendere allo stato ecclesiastico.

I. Venendo questa comunità composta da persone ecclesiastiche e fratelli laici, perciò fa bisogno che qui si parli con distinzione delle qualità tanto interne quanto esterne che si richiedono nelle une e nelle altre per essere accettate al nostro noviziato. E parlando in primo luogo degli ecclesiastici, si richiede che siano adornati di virtù, o che almeno nudriscano un vivo desiderio di acquistarle; che abbiano fatto li studi con lode, o che abbiano almeno desiderio e talento per farli; che siano di buona indole, di buon giudizio e memoria; che siano pacifici, discreti, docili, costanti e forti nelle loro buone risoluzioni, desiderosi di promuovere la gloria e servizio di Dio e la salute delle anime; che siano di presenza onesta, di buona salute, di buona grazia nel trattare con i prossimi, e di età fresca.

II. La nobiltà, le ricchezze ed altri si-

mili doni, benchè, trovandosi accoppiati cogli altri requisiti, potrebbero facilitare l'essere ammessi, essi però nè si richiedono nè nostri, nè soli possono esser motivi sufficienti per ammetterli.

§ 2. — Delle buone qualità che si ricercano nei fratelli laici.

i. Le buone qualità spettanti all'animo dei fratelli laici sono: l'essere di buona coscienza e ben inclinati alla divozione ed all'acquisto delle virtù, in modo che si possa sperare dover riuscire d'edificazione tanto alli domestici, quanto alli forastieri; inoltre l'essere quieti, pacifici, trattabili, di talento atto a poter servire la comunità negl'impieghi nei quali saranno destinati; e per fine contentarsi di far ufficio di Marta, senza ambizione di ascendere al sacerdozio.

ii. Le buone qualità spettanti al corpo sono la buona salute, l'età fresca, le forze per sostenere le fatiche secondo i loro impieghi, e l'essere sperti in qualche arte utile alla comunità.

iii. Si avverte a mai non voler prendere maggior numero di fratelli laici di quello che esige il preciso bisogno della comunità; e si sfugga sempre di ricevere persone nobili, o avvezze a studiare, o a vivere delicatamente, o a comandare, come sono gli uffiziali di guerra, a causa che somiglianti persone non sogliono riuscire atte alle fatiche, alla vita umile ed ubbidiente; e nel caso si scorgeasse in loro una speciale chiamata di Dio, prima di ammetterle, se ne dovrebbe fare una lunga e matura prova.

CAPO QUARTO.

De' luoghi destinati per il noviziato e per il collegio, e del primo ingresso in essi.

i. L'appartamento destinato per il noviziato, e l'altro per il collegio, benchè stiano nell'istessa nostra casa, devono però essere separati da una porta, che starà sempre serrata, e con chiave a' nostri non comune; e nell'appartamento destinato per il noviziato vi sia inoltre un luogo separato, che servirà per quelli che dovranno farvi con i loro propri abiti la prima prova.

ii. Dopo che la consulta avrà determinato

ricevere il novizio o il collegiale, dal superiore si dirà loro il giorno nel quale dovranno venire, con avvertirli che, senza un' evidente legittima causa non venendo nel dì destinato, non potrebbero essere ricevuti senza farsi nuovamente consulta, potendo essere indizio di leggerezza, d'instabilità o di poco fervore.

iii. Giunto che sarà in casa il novello novizio, si dovrà condurre nel mentovato luogo separato, per far ivi con propri abiti la prima prova, e consegnatolo al maestro, praticcherà solo con quelli che saranno destinati dal superiore per osservare i suoi andamenti e la sua vocazione; ed in tutto questo tempo se gli dovrà proibire il praticare con secolari a voce ovvero in scritto; e senza una precisa evidente necessità il superiore non dovrà dargliene il permesso; e dovranno stare in questo luogo almen per dodici o venti giorni.

iv. Li collegiali, giunti che saranno in casa, dal rettor del collegio saranno subito introdotti nel luogo ove dimorano gli altri collegiali, e conviveranno con essi colli propri abiti, sin tanto che la consulta del superiore, premesso il consiglio o voto del rettore, stimerà dar loro la sottana. Il medesimo rettore li anderà informando delle regole, li farà fare gli esercizi spirituali a proporzione dell'età, talento e complessione d'ognuno, e la confessione generale; e dopo scriverà il loro nome, cognome, patria ed età, anno, mese, giorno nel libro, che a quest'effetto conserverà appresso di sè.

CAPO QUINTO.

Dell'esame da farsi nella prima prova de' novizi.

i. Il primo ordine che dovrà darsi a quei che, aspirando allo stato ecclesiastico, faranno nel nostro noviziato la prima prova, sarà la lettura delle regole comuni della nostra Congregazione, e dopo due o tre giorni, finito che avranno di leggerle, se gli dovranno fare le seguenti dimande: i. Se hanno animo pronto per osservarle; ii. Se tengano qualche opinione singolare e non ancor ricevuta dalla Chiesa, acciò la depon-

gano; e se in somiglianti casi sono disposti a rimettersi e seguire il parere di quelli a' quali dal superiore saranno rimessi, con avvertirli che se poi non volessero rimettersi dovrebbero essere licenziati dalla Congregazione; **III.** Se vogliano abbracciare e seguitare nella teologia la dottrina del dottor angelico S. Tomaso d' Aquino; **IV.** Se sono determinati ubbidire alli superiori in tutte quelle cose che appartengono al nostro istituto e vocazione; **V.** Se sono disposti ad accettare ogni qualunque penitenza lor venisse imposta dai superiori; **VI.** Se sono contenti che si manifesti al superiore qualunque lor difetto ed errore che venisse in notizia di altri fuori del sigillo sacramentale della confessione; **VII.** Se hanno un animo sincero, pronto e risoluto di servir Dio in tutte le cose ed in ogni luogo; **VIII.** Se vogliano dar il conto di coscienza al superiore o al direttore di spirito; **IX.** E finalmente se sono disposti accettare senza replica qualunque uffizio o impiego che loro verrà imposto dall'ubbidienza.

II. Dopo che il novizio averà soddisfatto a tutte le suddette dimande, se gli faranno fare dieci giorni d'esercizi spirituali, se pur non li avesse fatti in nostra casa per consiglio del superiore; e l'istesso si dice della confessione generale da farsi quando non l'avesse fatta antecedentemente con alcuno dei nostri, o quando la prudenza esigesse altrimenti.

III. A quei che vogliano farsi fratelli laici, dopo essergli state spiegate le regole, se gli faranno le seguenti dimande: **I.** Se sono contenti di non attendere alli studi; **II.** Di non aspirare al sacerdozio; **III.** Di esercitare nella comunità l'uffizio di Marta, abbracciando senza replica e senza lagnarsi qualunque uffizio per vile, abbiatto e faticoso che lor venisse imposto dall'ubbidienza, persuasi di dar così gusto e piacere a Dio. A questi si dovrà ordinare che in questo tempo della prima prova, e ne' dieci giorni di esercizi spirituali, faticino per qualche tempo, ognuno secondo la sua abilità.

IV. Terminate che saranno le suddette cose, dovrà il superiore radunarsi con i suoi

consultori, e se risolveranno che s'ammetta, si farà entrare nella consulta la persona che fa l'istanza, quando il superiore, dopo di avergli dimandato se desidera vivere e morire in questa Congregazione, rispondendo di sì, l'esorterà alla perseveranza, ed ordinerà al segretario che scriva nel libro il di lui nome, cognome, patria, età, anno, mese e giorno, e che si è dichiarato pronto di osservare le regole; ed il novizio dovrà sottoscrivere di sua mano, ed i fratelli laici, che non sapranno scrivere, faranno il segno della croce; e dopo di ciò si consegnerà al maestro dei novizi che lo condurrà nell'oratorio del noviziato, dove trovandosi tutti li novizi, dopo una breve orazione ed abbraccio di tutti, resterà al noviziato.

V. Benchè questa prima prova non si esiga dai collegiali introducendosi subito nel collegio nel modo suddetto, se però il superiore lo stimasse espediente, potrebbe ordinare che si faccia tutto il detto che deve farsi dai novizi della Congregazione.

CAPO SESTO.

Del modo da tenersi nell'ammettere i novizi in congregazione ed i collegiali alli voti.

I. Terminato che sarà il primo semestre, dovrà il superiore far consulta, e sentita la relazione del maestro de' novizi, interrogherà gli altri novizi intorno la conversazione e costumi di quello che ha finito i sei mesi; dopo si prenderanno li voti per deliberare se si debba licenziare, ovvero fargli proseguire l'anno del noviziato; e nel caso che fosse sacerdote e si fosse conosciuto assodato nello spirito ed adornato d'altri boni requisiti, il superiore colla pluralità dei voti della consulta potrebbe dispensare alli altri sei mesi di noviziato, ed ammetterlo nella Congregazione. Finito che sarà l'anno del noviziato, il superiore dovrà nuovamente radunare li consultori, e prendere nuovamente li suddetti informi e voti, e colla pluralità dei voti della sua consulta risolverà se si debba ricevere o differire la recezione, ovvero licenziarlo; e se la risposta sarà che si riceva, il superiore destinerà la giornata nella quale il maestro de' novizi

lo condurrà in chiesa, ove alla presenza di tutta la comunità lo riceverà in congregazione, e lo darà sotto la cura del maestro di spirito degli studenti; se pur non fosse in *sacris*, ed avesse con lode terminato li studi, e si conoscesse dalla consulta essere assodato nello spirito, in qual caso lo potrebbe subito ammettere con i sacerdoti, come dovrà farsi sempre con i fratelli laici, perchè questi non devono studiare, ma faticare per la comunità. E finalmente il segretario del superiore lo scriverà nel libro, e saranno tenuti di vivere secondo le nostre regole e costituzioni, nè potranno partire senza legittima causa, nè prima d'averne ottenuta la licenza dal superiore e sua consulta; e chi partisse senza la detta causa e licenza, non potrà mai più esservi ammesso.

II. Con i collegiali si userà l'istesso metodo, avvertendosi solo che l'informo dovrà prendersi dal rettore e dai collegiali, e non già dai novizi e loro maestro; e siccome i novizi passeranno nello studentato, questi resteranno nello stesso collegio sotto la cura del rettore.

CAPO SETTIMO.

Dell'espulsione dalla Congregazione e dal collegio.

§ 1. — Delle cause per le quali si deve mandar via, ed appresso chi risiede tal facoltà.

I. Essendosi finora detto non convenire che tutti si ricevano in questa nostra Congregazione e Collegio, ma solo quelli che avranno le debite qualità per conseguire il fine del nostro istituto, così parimente è necessario che si mandino via quelli, che, essendo stati ricevuti, in processo di tempo non si ritrovassero tali, e da questa legge nè pure il superiore è esente; è vero però che con cause più gravi si devono mandar via li ricevuti, che non riceverli da principio, e maggior causa si richiede per licenziar uno che un altro, dovendosi considerare li *stati e qualità* delle persone, e le cause più o meno aggravanti che le assistono: quindi è che con minor causa dovrà licenziarsi un novizio ed un collegiale

che ancora non ha fatto i voti, che un altro che sarà stato ricevuto nella Congregazione o nel Collegio, ed avrà fatto i voti. Così con maggior difficoltà e causa si dovrà licenziar uno che per molti anni vi avrà perseverato, o avrà meglio servito, o fatto più bene, ovvero sarà ornato di maggior virtù e doni di Dio, con i quali potrà più giovare alla nostra comunità e compensare al difetto, che un altro che non sia tanto meritevole.

II. E venendo alle cause per le quali si puole licenziare, che per altro tutte devono essere ragionevoli e giuste, queste alcune possono essere con colpa, ed altre senza colpa. Quelle con colpa sono: I. Se la lor vita risultasse in disonore di Dio e della comunità; II. Se si giudicasse che colla lor vita possano apportar danno, come per esempio, se fossero inquieti con disturbo degli altri; III. Se con parole e con fatti inducessero altri al male, o a discordia; IV. Se macchinassero alcun male contro dei superiori o contro la comunità, quando il tollerare tal sorte di persone non solo non sarebbe atto di carità, ma più tosto non aver carità verso il bene comune: ma nel caso, che si dovesse licenziare alcuno, non tanto per la gravità della colpa, quanto per rimuovere agli altri l'occasione, se questo avesse dell'abilità ed altri buoni requisiti colli quali potesse servire, si potrebbe rimuovere l'occasione con mandarlo in altra casa; V. E benchè non dassero scandalo per peccare in occulto, pure, si per l'offesa che si fa a Dio, come per il pericolo in cui si suppone che stia la sua fama, nel caso che non si sperasse l'emenda, nè pure si dovrebbe tollerare, e questo tanto più, quanto più il reato è grave; VI. Quando non volessero vivere sotto l'ubbidienza, e come comanda la regola; e se questo non si deve tollerare nei congregati, molto meno dovrà tollerarsi nei novizi, ed in quei collegiali che ancora non avessero fatti i voti, il che s'intende dopo d'essersi usate le prudenti diligenze per farlo emendare, se pure il bene della comunità in qualche caso non esigesse subito la risoluzione. E queste fra le altre

sono le cause con colpa, per le quali si puole licenziare.

III. Le cause senza colpa sono: I. Se constasse d'aver taciuto nell'esame alcuno degli impedimenti più essenziali riferiti nel capo II § 1 di questa terza parte, in qual caso si dovrebbero senz'altro licenziare; ma se constasse d'aver taciuto alcuno degli impedimenti meno essenziali descritti nel secondo § del capo citato, ovvero avessero taciuto qualche altra cosa nell'esame, in questi casi, benchè si potrebbero con giustizia licenziare, tanto nonostante si lascia alla prudenza del superiore e della sua consulta; II. Se mostrasse l'esperienza che fossero impotenti a sostenere le fatiche che porta seco l'osservanza della regola, o inetti ad ogni esercizio della comunità, sia per causa d'infermità, o per debolezza di corpo o per stupidità di mente, o per altra qualunque causa, purchè non accadesse tutto questo alli novizi dopo d'essere stati ammessi nella Congregazione, ed alli collegiali dopo di aver fatto i voti, se pure prima di essere ricevuti non avessero avuto le dette infermità, in qual caso liberamente si potrebbe licenziare, e tanto più se fossero stati ammessi colla condizione di farsi l'esperienza.

IV. Si deve notare, che sebbene in questa comunità non si dovrebbe tollerare chi venisse convinto di qualche colpa grave contraria alla virtù della castità, pure, se ciò accadesse (del che il Signore ci liberi per sua bontà) nella persona di qualche collegiale, non si dovrebbe subito procedere all'espulsione dal collegio, essendo costoro giovani stretti colli voti descritti; onde debbano procurare i superiori a tutto uomo di correggerli, e non abbandonarli senza guida a loro capriccio, e libertà, ed useranno quelle penitenze che giudicheranno proporzionate al fallo; e si pongano i superiori avanti gli occhi che questo è un delitto gravissimo, e che non si può abbastanza dire quanto sia contrario alla nostra vocazione, onde infiammino il loro zelo, e pongano in opera penitenze severe, e tali che facciano avveduti i collegiali delinquenti

della gravità del lor fallo, con segregarli (se così stimeranno) da' compagni, rinchiuderli in carcere, ecc.; e questo sarà ben rigore, ma utilissimo e necessario, anzi sarà un usar gran pietà verso i rei, i quali così castigati, coll'aiuto di Dio, e concepiranno terrore, e procureranno l'emenda; che se poi lor fallo tale fosse, che per sua frequenza facesse giudicare incorreggibile il collegiale delinquente, e se alla consulta così parerà, anche si licenzi affatto, avendo in queste e nelle altre giuste e ragionevoli cause la facoltà di sciogliere i loro voti.

V. Finalmente si dichiara che la potestà di mandar via dalla Congregazione e dal Collegio risiede in quegli istessi nei quali risiede la potestà di ricevere, cioè nel superiore colla sua consulta; ma la potestà di mandar via il superiore risiede nella congregazione dei sacerdoti votanti, e si richiede almeno due terze parti de' voti.

§ 2. — Cose da osservarsi prima di mandar via, nel mandar via, e dopo essersi mandato via qualche soggetto.

I. Acciò in materia di tanto rilievo non si manchi nella prudenza e nella carità, quindi s'incarica alli consultori a voler esaminare assai maturamente se le cause che s'allegano sono o non sono vere, e di tanto peso che richiedano si licenzi, o comportano altro rimedio, e comportandolo si dovrà usare specialmente quello degli esercizi spirituali, ed acciò non siano tirati da passione corrotta, devono procedere coll'occhio di Dio e nel bene comune, e risolvendo di licenziare, quando la causa è pubblica, si potrà apertamente allegare, acciò tanto li domestici quanto gli estranei intendano che la Congregazione non manda via alcuno senza causa; ma quando la causa fosse segreta, si dovrà colorire in modo, che non causi infamia a quello che si manda via, e neppure si creda che la Congregazione manda via alcuno senza giustissima causa. Con buone parole si dovrà persuadere quello che si licenzia, che la Congregazione non può fare altrimenti, si dovrà aiutare coll'orazione e colli consigli, acciò

fuora possa attendere a far del bene, e si aiuti anche con altro se l'esigesse la carità; avvertendo che nel mentre si tratta l'espulsione non devono li superiori impiegargli in pubblici uffizi, ma più tosto trattenerli in casa.

n. Nel partire che faranno si dia loro tutta la loro roba, e benchè non se gli debba restituire quello che volontariamente avessero donato, ancorchè esistesse, per il bene però della pace, per l'edificazione del pubblico, o per altro giusto motivo, potrebbero restituirgliene parte o tutto, facendosi però sempre restituire le regole e le costituzioni benchè state fossero trascritte da essi.

DELL'ELEZIONE DEGLI UFFICIALI.

CAPO SETTIMO.

Dell'elezione uffizio ed autorità del superiore.

i. Il superiore sarà il capo della Congregazione e del Collegio. Egli dovrà convocare le congregazioni da farsi, e specialmente quelle nelle quali dovranno farsi i nuovi uffiziali, che onninamente dovrà convocarle ogni tre anni, e proponendo in esse gli affari da trattarsi, avendo egli la cura di far adempire quanto in esse sarà per stabilirsi, ed in fine avrà nelle sue mani tutto il governo. Dovrà però avere i suoi consultori, coll'obbligo di congregarli ogni quindici giorni, ed altre volte a suo arbitrio, occorrendo il bisogno, quantunque egli non avesse che consultare, dovendo sentire quello che occorresse ad essi, e senza la maggior parte dei voti di detta consulta non potrà far cosa alcuna che spetti al governo universale della congregazione o del collegio, nè potrà eleggere e rimuovere gli uffiziali, nè punire li consultori, nè far altro che in vari luoghi di queste regole e costituzioni si è espresso esser necessaria la maggior parte dei voti della consulta. E benchè sia egli il capo di tutto il corpo, dovrà con tutto il corpo essere soggetto ed ubbidiente all'Ordinarti dei luoghi.

ii. Dopo l'anno 1750, nessuno si elegga per superiore, che non abbia vissuto dieci

anni in congregazione dopo l'anno del noviziato, ed esercitato l'uffizio di consultore, e che non abbia finito i quarant'anni d'età.

iii. Gli elettori del superiore presentemente saranno tutti i sacerdoti congregati, che hanno finito l'anno di noviziato, e dopo l'anno 1750 saranno solo quelli sacerdoti che dopo l'anno del noviziato avranno vissuto almen dieci anni in congregazione, e saranno presenti e radunati nelle congregazioni, non potendo gli assenti dare il voto.

iv. Il superiore e tutti gli altri uffiziali dureranno tre anni nell'uffizio, e per essere confirmati vi bisogneranno due terzi dei voti.

v. Tutti della Congregazione e del collegio dovranno ubbidire al superiore nel modo che diffusamente s'è detto nel capo vii ed viii della parte i, e terminato l'uffizio, resterà senza alcuna essenzione, e ritornerà al suo luogo secondo l'anzianità.

vi. Dovrà il superiore usar quella cura in governare che si conviene ad un diligente padre di famiglia, e tratterà tutti con paterna carità e da veri fratelli, servando al possibile egualità, schivando di mostrarsi in qualche modo parziale, procedendo però con discrezione e prudenza, secondo li bisogni di ciascheduno.

vii. Mai farà cosa nuova ed inusitata senza l'assenso dei consultori.

viii. Abbia ogni cura a far osservare *ad unguem* le regole e costituzioni, avendo special riguardo alle cose essenziali, e sia egli il primo ad osservarle, perchè agli altri sia di stimolo e di esempio.

ix. Usi ogni vigilanza a vedere come li novizi e li collegiali fanno frutto, e cerchi che a ciò vi si attenda con ogni diligenza, essendo negozio che tanto importa.

x. Sia affabile ed amorevole con tutti, usando parti dolci e piacevoli, guardandosi da ogni sorta di ingiurie; e ritrovando errori, li corregga con parole gravi, dando poi le penitenze secondo le regole prescrivono; userà però prudenza, giacchè non tutti bisogna correggere nello stesso modo, poichè ad altri meglio giovano le lusinghe, altri

hanno bisogno di minacce, e molti anche di riprensione e castighi, e però userà diligenza di conoscere, e poi accomodarsi alle inclinazioni d'ognuno.

xi. Si sforzi essere sempre presente ed il primo alle orazioni, alle conferenze, ed agli altri esercizi di comunità, dovendo operare come un accorto capitano, che volendo efficacemente animare i suoi soldati alla battaglia, si mette lui il primo nel fatto d'armi.

xii. Abbia cura che delle cose necessarie alla casa ne stia sempre provista, facendo comprare quel che fa di bisogno a tempo debito, perchè poi non sia costretta comprarle più caro e di condizione inferiore.

xiii. La facoltà di fare i contratti ed istrumenti risiede nel superiore; però nei casi di molto rilievo deve sentire il parere de' suoi consultori, e resistendo la maggior parte, non deve operare. Per far però affitti di stabili, e vendite dei loro frutti, o altri consimili istrumenti di cose di poco rilievo, e che non passano la somma di scudi trenta, il superiore può farli indipendente dalla sua consulta, bastando il parere del solo procuratore.

xiv. Si proibisce al superiore di spendere di propria autorità più di cinque scudi al mese sopra le spese ordinarie per il mantenimento della casa; onde, se gli occorresse di dover fare spese di maggior somma sino a venti scudi il mese, dovrà proporlo a' suoi consultori; e per somma maggiore, dovrà proporlo nella congregazione di tutti i sacerdoti votanti della casa, e risolvere colla maggior parte de' voti.

xv. Il nuovo superiore, coll'assistenza del vice-superiore, riceva la consegna dal superiore passato, osservando attentamente se esistono tutte le suppellettili, ed ogni altro mobile notato nell'inventario del giorno che prese il possesso e gli fu fatta la consegna dal precedente superiore, fino al giorno presente; ed esamini la causa per la quale si trovassero mancanti; ed è tenuto farne in iscritto la ricevuta nel detto libro d'inventario, che dovrà consegnarsi nell'archivio.

xvi. Il tempo dell'elezione sarà la terza domenica dopo Pasqua di Risurrezione, quando ogni tre anni si celebrerà la congregazione da intimarsi dal superiore, e nel caso di sua morte dovrà intimarsi dal vice-superiore.

xvii. Nell'elezione del nuovo superiore presiederà l'antico, e nel caso di sua morte presiederà il vice-superiore, e chi presiederà dovrà decidere, nel caso di parità di voti, col secondo voto che a questo effetto gli si concede.

xviii. La prima cosa che dovrà farsi sarà di dire il *Veni, creator Spiritus, etc.*, colla solita orazione *ante congregationem*, il che s'osserverà in ogni altra congregazione che dovrà farsi; di poi si leggerà tutto questo capo, attendendo ognuno a quanto vi si prescrive; di poi quello che presiede farà una diligente esortazione che nell'elezione del superiore e degli altri uffiziali si proceda con vero zelo di Dio e della Congregazione.

xix. Nell'elezione del superiore, ogni votante porrà il suo voto in scritto nella bussola, che sarà portata in giro da due sacerdoti a questo effetto eletti dalli consultori; ed a vista dei medesimi due sacerdoti, il segretario l'estrarrà dalla bussola, e li leggerà ad alta voce, notando il numero di essi; e quello resterà eletto superiore, il quale n'avrà più della metà; e nel caso di parità di voti, deciderà il vice-superiore col secondo voto che a questo effetto se gli concede; coll'avvertenza che non sarà lecito ad alcuno dar la voce per la sua persona; e lo stesso s'intenda proibito in tutte le elezioni degli altri uffiziali; e perciò se la suddetta parità di voti cadesse sopra la persona del vice-superiore e sopra altra persona, deciderà il secondo consultore; e se quest'altra persona fosse il secondo consultore, deciderà il terzo consultore; e potendosi dare il caso che nel primo scrutinio il superiore non restasse eletto, si potrà ripetere sino alla decima volta; e se nè pure restasse eletto, si dovrà votare sopra le due sole persone, che negli antecedenti scrutini avranno avuto maggior

numero di voti; e se nè pure succedesse l'elezione, si ripeterà due altre volte lo scrutinio sopra le istesse due persone, e potendosi dare il caso, che nè pure restasse eletto, allora si dovrà fare il compromesso, eleggendosi cinque de' votanti, acciò questi cinque colli loro voti, uno almeno più della metà, eleggano per superiore uno dei suddetti due. Acciò l'elezione dei mentovati cinque elettori resti fatta subito, ogni votante darà il suo voto ad uno de' votanti presenti: quelli resteranno eletti che avranno maggior numero di voti. Sia per esempio: due avranno avuto sette voti, due altri sei, uno quattro, altri, chi tre, chi due, e chi uno; or li due primi che hanno avuto sei, e l'altro che ne ha avuti quattro, saranno li cinque elettori; e gli altri, che ne hanno avuti tre, due ed uno, resteranno esclusi.

xx. Nell'eleggere il superiore ed ogni altro ufficiale, dovranno li votanti considerare assai bene, che, oltre il comando di questa regola, lo stesso debito naturale della giustizia esige che si dia il voto a quella persona che in coscienza ed avanti Dio stimano essere più degna e più abile al buon governo; ed il superiore, dopo di essere stato eletto, dovrà colla sua vita ed operare dimostrarsi tale, e sopra tutto dovrà aver sempre avanti gli occhi il detto di S. Paolo: *In omnibus te ipsum praebe exemplum bonorum operum*¹; sia divoto verso Dio e zelante del culto divino, sia assiduo nell'orazione, grave nella vita, esemplare nelli costumi, sollecito nell'operare, paziente nelle cose avverse, umile nelle prospere, severo nel riprendere, diligente nel castigare, specialmente li difetti gravi, cercando di rimediare nel principio: in somma sia tale quale conviene ad un padre di tanti e tali figli.

xxi. Terminata l'elezione, subito il superiore eletto, senza replica, dovrà andare al suo luogo, ed intonare il *Te Deum*, e risponderanno gli altri; e rispondendo gli altri s'incammineranno verso la chiesa, ove,

¹ Ad Tit. II, 7.

finito che sarà il *Te Deum*, il superiore si sederà, e tutti in ginocchioni un dopo l'altro gli bacieranno la mano in segno d'ubbidienza, dopo del che si procederà all'elezione degli altri ufficiali, leggendosi sempre i capi spettanti al loro ufficio.

CAPO NONO.

Dell'elezione, ufficio ed autorità del vice-superiore, consultori e segretario.

I. Quattro consultori dovrà avere il superiore; ma quando i sacerdoti della casa fossero men di dieci, basteranno due: il primo di questi sarà sempre vice-superiore; e l'ultimo segretario. Il vice-superiore ed il secondo consultore dopo tre anni termineranno il loro ufficio, e per la conferma vi bisognano due terzi dei voti della congregazione. Non essendo confirmati, si eleggeranno dalla congregazione due nuovi consultori, ed allora il segretario passerà all'ufficio di vice-superiore, il terzo consultore all'ufficio di secondo consultore, ed uno dei due nuovi consultori si eleggerà per segretario; ed in tutte le suddette elezioni si praticherà il metodo descritto nell'elezione del superiore.

II. L'ufficio del vice-superiore sarà di sedere nel luogo del superiore, e fare tutto quello, che può fare il superiore, avendo l'istessa autorità nel caso che il superiore morisse, rinunciasse o venisse deposto a causa di qualche infermità abituale che lo rendesse affatto inabile al governo, o commettesse alcun difetto (il che *absit*) degno di privazione, in qual caso però vi bisognano due terzi de' voti de' sacerdoti votanti, e la congregazione dovrebbe intimarsi dalla consulta. Vivendo però il superiore, l'ufficio del vice-superiore sarà d'aiutare il superiore in tutte le cose che gli commetterà con somma ubbidienza ed esattezza, e di porre mente a tutte le cose di casa, sì perchè, dovendo essere come un occhio del superiore, possa avvisarlo di quanto egli non avvertisse, e sì anche acciò in assenza sua possa, sapendo le cose, provvedere al bisogno; e terrà in assenza del superiore il suo luogo, però senza poter risolvere cosa

alcuna di qualche importanza senza il parere de' consultori.

iii. Avrà buona corrispondenza col superiore, e non farà mai, nè in sua presenza, nè in sua assenza, cosa contraria alli suoi ordini, nè nuova o inusitata.

iv. Dopo il superiore, egli sederà in primo luogo, e dopo d'esso sederanno gli altri consultori secondo l'ordine. Dopo di essere stato proposto l'affare dal superiore o dal segretario, il primo a parlare e proferire il voto sarà il primo consultore, cioè il vice-superiore, dipoi il secondo, dopo di questo il terzo, e poi il quarto, cioè il segretario, e per ultimo il superiore.

v. Dovranno li consultori esser persone di maturo giudizio e di gran pratica nelle cose difficili e dubbiose, ed il segretario dovrà di più avere un carattere intelligibile, saper mettere in carta, e formare gli atti necessari.

CAPO DECIMO.

Dell'obbligo ed uffizio del segretario.

i. L'uffizio del segretario sarà: i. Di proporre nella congregazione e nelle consulte le cose che si hanno da trattare, quando ciò non voglia fare il superiore; ii. Di scrivere e leggere quanto sarà bisogno nelle congregazioni e consulte; iii. Scrivere le lettere, che per conto della Congregazione e del Collegio saranno scritte, conforme all'ordine che dal superiore e consultori sarà dato; iv. Fare le patenti secondo il bisogno; v. E custodire diligentemente una delle due chiavi dell'archivio.

ii. Avrà un libro, dove scriverà tutti i congregati e collegiali che hanno fatto i voti, con i loro nomi e cognomi e patria, quando saranno ricevuti, quando avranno presi gli ordini sacri e celebrata la prima messa, notando di tutto il giorno, mese ed anno; e quando alcuno passerà all'altra vita, se ne andasse o ne fosse mandato, ne farà nota in margine; ed il duplicato si conserverà nell'archivio.

iii. In un altro libro noterà tutti i beni stabili, censi, livelli, frutti, emolumenti, ragioni, azioni, concessioni, alienazioni ed

obblighi, così spirituali come temporali, aggiungendo alla giornata quel che di nuove accadrà intorno alle cose suddette, e chiamando di tutto ciò gli atti pubblici ed autentici, per conservarli.

iv. Abbia un altro libro, nel quale andrà scrivendo li decreti ed atti che si faranno nelle congregazioni, notandosi di esse il giorno, il mese ed anno, il luogo e le persone che v'intervengono, ed il duplicato dovrà conservarsi nell'archivio.

v. Terrà un altro libro, nel quale scriverà brevemente i ricordi delle cose che si devano proporre in consulta, e dell'altre che sono state risolte in consulta, ad effetto di doverle poi notare alla distesa, e delle altre cose appartenenti al suo uffizio; e quando quelle note avranno avuto l'effetto, vi farà un segno.

vi. E finalmente avrà in un altro libro un esatto inventario di tutti i libri e scritture che si conservano nell'archivio, col quale inventario, nel lasciar dell'uffizio, in presenza dei consultori dovrà consegnare ogni cosa al successore.

CAPO UNDECIMO.

Dell'elezione ed uffizio dell'ammonitore.

Terminata che sarà l'elezione dei mentovati uffiziali, si dovrà eleggere l'ammonitore, la di cui cura sarà di riferire fedelmente al superiore tutti i disordini, tanto spirituali quanto temporali, che occorreranno nella Congregazione e nel Collegio, che verranno in sua notizia, e con gran rispetto, umiltà e carità lo dovrà parimente ammonire, dove sarà notato di difetto.

CAPO DUODECIMO.

Dell'elezione ed uffizio del maestro de' novizi e suoi compagni.

i. Essendo istituito il noviziato per buttare nell'animo dei novizi un sodo fondamento alla vita religiosa, acciò si faccia con tutta la perfezione che si desidera, fa di bisogno usare tutte le diligenze in scegliere uno che abbia tutte le doti che si richiedono a questo impiego. Deve egli esser parimente eletto dalla congregazione colla mag-

gior parte dei voti, e dal numero di quelli sacerdoti, che, dopo finito il noviziato, hanno dieci anni di comunità. Deve egli esser un uomo fedele, ed assai esercitato nelle cose dello spirito, e dee essere tutto amabilità e carità, acciò, conciliatisi gli animi dei novizi, possa colla sua guida condurli alla perfezione. Intenda pertanto il maestro de' novizi di essergli stata commessa una cura, dalla quale dipende in buona parte la perfezione de' suoi allievi, e la speranza di tutta la Congregazione; si sforzi pertanto collo studio della propria perfezione rendersi sempre più istromento abile a questo importantissimo impiego. Quando i novizi fossero molti, dovrà la medema Congregazione eleggere un sacerdote ed un fratello laico per compagni del maestro, e questi con i novizi lo dovranno ubbidire, perchè la cura di tutta la casa, benchè sia del superiore, tuttavia quella che si restringe dentro le mura del noviziato sarà eseguita dal maestro dei novizi.

II. Il maestro per ben regolare i suoi novizi ha bisogno di conoscere tutto il loro interno ed esterno, e per conseguire ciò, oltre il conto della coscienza, giovando molto il discorrere frequentemente con essi da solo a solo, e quest'istesso esercizio apportando alli novizi gran giovamento, perciò dovrà il maestro servirsi spesso di questo avviso.

CAPO DECIMOTERZO.

Dell'elezione ed uffizio del rettore.

Dalla medema congregazione generale, e colla pluralità dei voti, dovrà eleggersi il rettore del collegio, che parimente dovrà essere sacerdote votante, e quando così stimasse bene la Congregazione, potrà anche eleggersi dal numero dei collegiali, purchè dopo dei voti abbia vissuto dieci anni in comunità.

II. Al rettore dovranno ubbidire tutti i collegiali praticando verso lui quanto si è detto nel capo VII ed VIII della prima parte, ed il rettore e tutti gli altri del collegio dovranno ubbidire al superiore.

III. Dovrà il rettore sforzarsi di praticare verso dei collegiali, quanto il superiore è

tenuto praticare verso degli altri, e specialmente quanto si è prescritto nel n. 4, 6, 7 ed 8 del cap. XII di questa terza parte, e mai dovrà far cosa nuova ed inusitata senza l'approvazione della consulta.

CAPO DECIMOQUARTO.

Dell'elezione ed uffizio del direttore di spirito e degli altri uffiziali.

I. Il direttore di spirito dovrà essere confessore, benchè non si ricerca che abbia vissuto dieci anni in comunità, bastando che sia uomo di spirito, di prudenza e dottrina. Resterà nel suo impiego, finchè non si stimasse di eleggere un altro dalle due parti dei votanti di quella casa.

II. Il suo uffizio sarà di dirigere nello spirito tutta la comunità, eccettuatine i novizi e gli studenti, dovendo essere questi diretti dai loro maestri; e dovrà aver un occhio speciale sopra dei fratelli laici, procurando che vivano in pace, in umiltà e contenti di fare l'uffizio di Marta.

III. Dovrà avere una perfetta cognizione di tutte le nostre regole e costituzioni, e perciò se gli dovrà comunicare questa terza parte, per insistere all'osservanza di esse colle parole o coll'esempio. Egli dovrà mostrarsi amabile con tutti, acciò tutti possano ricorrere a lui con confidenza e svelargli tutto il loro interno, per ricevere i suoi buoni consigli ed essere consolati.

IV. Nel conto di coscienza, che da tutti i nostri, eccetto i novizi e studenti, dovrà prendere ogni mese, sia diligente di dimandare ad ognuno: I. Se viva contento della sua vocazione; II. Come si porta nell'esercizio della virtù, e quale di esse in speciale¹ con maggior ardore desidera, cosa fa per conseguirla; III. Se ha alcuna perturbazione d'animo o alcuna tentazione, se trova facilità o difficoltà nel resistere, quali atti fa per resistere, da qual passione è più predominato, ed a qual difetto è più proclive; IV. Se ha formato alcun sinistro giudizio contro qualche punto di regola, e contro qualche comando dei superiori; V. Se gli pare d'aver molto o poco zelo per la salute della

¹ Nempe in particolare (R. T.).

anime, e specialmente per quelle degl'infedeli; vi. Se ha amore verso le cose spirituali, quanto tempo consuma nell'orazione, quale è il modo di procedere in essa, nell'esame di coscienza, e nell'esame particolare contro qualche difetto, e se consuma più tempo nell'orazione vocale che nella mentale, e quale ne sia la causa; vii. Se trova consolazione nelle cose spirituali, ovvero desolazione, aridità e vagazione di mente, e come in esse si porta; viii. Qual frutto ricava dai sacramenti che riceve, e dall'orazione ed esami che fa, e specialmente dall'esame particolare; ix. Se dall'ultimo conto di coscienza si trova alquanto migliorato; x. Come è osservante delle regole; xi. Come s'appropria della conversazione dei compagni, se ha qualche amicizia o affetto speciale verso qualcheduno di essi, o contro alcuno di essi avversione, e specialmente contro del superiore; xii. Quante e quali mortificazioni fa per domare le passioni sregolate, come sopporta le ingiurie, come si preparerà a sopportarle, e se nutrisce desiderio di riceverne molte per l'amor di Gesù Cristo; xiii. E finalmente, fuori del sigillo sacramentale, dovrà esaminare diligentemente se le penitenze e gli altri esercizi di pietà, che tanto da esso quanto dagli altri si esercitano, offendano la loro testa, la salute, se perturbano gli esercizi di comunità, e se impediscono gli studi e gli esercizi del loro impiego, per moderarli secondo le regole della prudenza; e trovando alcuno che non volesse sottomettersi alla sua discreta moderazione e consigli, ne dia parte al superiore, acciò colla sua autorità vi dia rimedio; e qui s'avverte che, benchè si lasci in libertà dei nostri il dare conto di coscienza al superiore o al direttore di spirito, non per questo restano disobbligati di darlo al superiore, ogni qualunque volta, col previo parere della sua consulta, egli stimasse bene avanti Dio di prenderlo, come deve fare in somiglianti casi.

v. Dopo essere stato eletto il direttore di spirito, eleggeranno il sagrestano, l'infermiere, il procuratore ed il depositario: e terminata che sarà la suddetta congregazione,

dovrà il superiore col parere dei suoi consultori eleggere il ministro, il compratore, il dispensiero, il refettoriero, il cuoco, il portinaro, lo svegliatore ed il bibliotecario.

CAPO DECIMOQUINTO.

Come si ha da provvedere quando mancasse alcuno degli uffiziali.

i. Quando per morte mancherà il superiore, a lui succederà il vice-superiore, il quale persevererà nell'uffizio sino alla prima congregazione generale da farsi nel tempo solito, tre anni dopo dell'ultima; e quando venisse deposto per qualche infermità abituata, che lo rendesse inabile al governo, o per aver commesso (*quod absit*) alcun difetto degno di privazione, perchè la facoltà di deporre e licenziare il superiore risiede nella congregazione generale, e si richiedono due terzi de' voti, perciò la medema congregazione deve eleggere il nuovo.

ii. Quando per morte o per altro accidente mancherà qualche uffiziale eletto dalla congregazione generale, il superiore o consultori provvegano l'altro; e quando sarà di quelli che sono stati eletti dalla congregazione dei sacerdoti votanti delle case, o dal superiore col parere della consulta, il superiore col parere della consulta eleggerà un altro; e tutti dureranno sino al tempo della nuova elezione degli uffiziali, se pure non verranno confermati; e si eccettua solo il direttore di spirito, perchè questo dovendo essere sempre di comune soddisfazione, sempre dovrà eleggersi dalla pluralità dei voti de' sacerdoti votanti della casa.

CAPO DECIMOSESTO.

Dell'amministrazione e conservazione dei beni temporali.

i. Perchè i collegiali devono attendere al solo studio dell'orazione e delle scienze spettanti allo stato ecclesiastico, per poi impiegarsi alla coltura della vigna del Signore, acciò la cura dell'amministrazione del temporale non sia loro d'impedimento, perciò sarà tutta nella congregazione. Il preposito dunque, che è il capo d'essa, avrà colla sua consulta il governo di tutto il tem-

parale; e perchè da sé solo non potrebbe governar tutto, delegherà la facoltà al superiore e consulta d'ogni luogo, eccetto i casi, ne' quali vi bisogna l'assenso apostolico; allora il preposito non potrà delegare, ma colla sua consulta dovrà esaminare le cause; e trovandole giuste, darà in iscritto la licenza, acciò a' ottenga l'assenso dal sommo Romano Pontefice; e nel mentre s'incarica al preposito, ed a tutti quelli che avranno l'amministrazione dei nostri boni a voler esser tutti vigilanza in conservarli, e sempre più aumentarli, dovendoli riguardare come beni di nostro signore Gesù Cristo e patrimonio dei poveri, e dai quali dipende l'utile e conservazione della fondazione; nello stesso tempo rigorosamente si proibisce a tutti, e sotto pena di essere licenziati dalla Congregazione e dal Collegio, il negoziare, o che si faccia da per se stessi, o per mezzo d'altri, anche sotto pretesto e fine d'impiegare il guadagno in servizio delle nostre case, chiese o altre opere pie.

CAPO DECIMOSSETTIMO.

Dell' archivio.

1. Ogni cosa dovrà avere l'archivio, che dovrà essere serrato con due chiavi; una si custodirà dal segretario, e l'altra dal procuratore: ed in esso si custodiranno le scritture necessarie e i libri seguenti: 1. Un libro nel quale s'inseriranno tutti gl'istromenti e scritture necessarie; e le copie dei contratti di maggior rilievo si conserveranno nell'archivio del preposito, al quale si dovranno mandare con opportuna occasione; 2. Il libro nel quale si notano i titoli di tutte le scritture e libri, che vi si conservano e vi si anderanno conservando, ed una copia d'esso si conserverà dal procuratore; 3. Il libro nel quale si notano le scritture che dall'archivio si estraggono, colle ricevute di quelli a' quali saranno consegnate; 4. La platea, la di cui copia si conserverà dal procuratore; 5. Il libro delle elemosine che si ricevono ogni mese; 6. Il libro del denaro che s'introita ogni mese, ed il du-

plicato lo conserverà il depositario; VII. Il libro delle spese che si fanno ogni mese, di cui il duplicato si conserverà dal procuratore; VIII. Il libro de' nomi e cognomi dei debitori e creditori, e del quanto e quando si deve pagare e riscuotere, ed il duplicato si conserverà dal procuratore; IX. Il libro nel quale si noterà tutto quello si spenderà per le liti; X. E finalmente il libro de' nomi de' benefattori, col notamento in ristretto de' benefici ricevuti, e servirà per mostrarci sempre grati verso di essi.

Finis.

LAUS DEO.

(1).

§ 5. Hinc est quod nos, perenni prae-missorum utpote ad animarum salutem fideique catholicae propagationem promovendam laudabiliter tendentium robori et efficaciae, quantum cum Domino possumus, prospicere cupientes, de memoratae Congregationis particularis cardinalium super rebus Sinarum ut praefertur deputatorum consilio, regulas et constitutiones praeinsertas, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, approbamus et confirmamus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis vim et robur adiicimus, ac quoscumque iuris et facti defectus, si qui desuper quomodolibet intervenerint, supplemus; salvâ tamen semper in praemissis auctoritate supradictae Congregationis particularis cardinalium.

Regulae praedictae confirmantur a Pontifice.

§ 6. Decernentes, easdem praesentes litteras ac regulas et constitutiones huiusmodi perpetuo firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et

Qui hasce litteras ac regulas et constitutiones huiusmodi perpetuo validas esse decernit.

(1) Haec in edit. Main. sequitur index omnium capitulorum regularum praeinsertarum, quem omittimus tamquam inutilem titulum iam supra suis locis positorum repetitionem (R. T.).

1 Ita habet edit. Main., ni aliter legend (R. T.).

ab eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane quidquid secus super his a quocumque, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Obstantibus
derogat.

§ 7. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon, quatenus opus sit, ipsius Congregationis presbyterorum saecularium, seu collegii, aliisque quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, stabilimentis, usibus et naturis, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permanentibus, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Transumptis
credi iubet.

§ 8. Volumus autem ut earundem praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiastica dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides ubique adhibeatur, quae praesentibus ipsis adhiberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxii martii mdccxxxvi, pontificatus nostri anno vi.

Dat. die 22 martii 1736, pontif. anno vi.

F. card. OLIVERIUS.

CLXXVI.

Confirmato decreto Innocentii XI, quo Graecis cuiuscumque conditionis prohibentur quaestiones, singulis cardinalibus legatis et nunciis apostolicis, ceterisque ecclesiarum praelatis committitur, eis non tantum litteras quaestuationis, sed quaesitas quoque pecunias adimere.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Dudum emanavit a felicis recordationis Innocentio Papa XI praedecessore nostro in Congregatione tunc existentium S. R. E. cardinalium negotiis Propagandae Fidei praepositorum coram ipso Innocentio praedecessore habita decretum typis subinde impressum ac evulgatum tenoris qui sequitur, videlicet:

Decretum Innocentii XI quo Graecis interdictur eleemosynas quaestuari.

Die xxix ianuarii mdclxxvii, in congregatione generali de Propaganda Fide habita in palatio apostolico coram reverendissimo domino nostro Innocentio Papa XI ac eminentissimis et reverendissimis cardinalibus eiusdem sacrae Congregationis decretum, ne permittatur Graecis cuiuscumque status et conditionis, etc., pecunias quaestuari, vel quovis alio modo eleemosynas petere. Cum sancta loca Hierosolymitana, in quibus Verbum caro factum est, et nostrae reparationis mysteria, Deo miserante, completa sunt, hactenus administrationi et custodiae sancti Francisci de Observantia a sancta Sede Apostolica commissa, nuperrimis hisce diebus a Graecis schismaticis, subornatis aulae Turcicae ministris, de manu dictorum fratrum sancti Francisci summo latinorum dedecore usurpata sint, iis praecipue subsidiis quae ex fidelium christianorum eleemosynis iidem Graeci perceperunt; ut huic sceleri modus imponatur, neve ex fidelium pietate schismaticis et perpetuis Ecclesiae Romanae hostibus aditus ad novas cumulandas iniurias aperiatur, sanctissimus dominus noster Innocentius PP. XI, suorum praedecessorum Summorum Pontificum vestigiis inhaerendo,

etiam de consilio et voto eminentissimorum et reverendissimorum dominorum S. R. E. cardinalium Congregationi de Fide Propaganda praepositorum, omnibus et quibuscumque S. R. E. cardinalibus a latere legatis, nuntiis apostolicis, patriarchis, archiepiscopis, metropolitans, episcopis, abbatibus, ceterisque omnibus Ordinariis de utroque clero saeculari et regulari, ecclesiasticam iurisdictionem tam ordinariam quam delegatam in iurisdictionibus sive suis dioecesis respective exercentibus, in virtute sanctae obedientiae iniungit atque inhibet, ne de ceterum quibuscumque Graecis tam saecularibus quam ecclesiasticis, etiam regularibus, quacumque dignitate, quamvis abbatali seu archimandritiali, episcopali, metropolitana, archiepiscopali sive patriarchali fulgentibus, tacite vel expresse sub quocumque praetextu permittant pecunias quaestuarie, vel quovis alio modo eleemosynas a fidelibus petere, etiamsi de eorum unione cum Ecclesia Latina per abiurationem schismatis et fidei catholicae professionem in manibus episcoporum vel inquisitorum contra haereticam pravitatem litteris testimonialibus docuerint, vel per alios episcopos et locorum Ordinarios similis quaestuationis facultates in scriptis acceperint, vel ad fidem de novo conversi¹ aliorum schismaticorum iram et insidias effugere conati sint, vel ad effectum reparandi ecclesias ab infidelibus dirutas; et non obstantibus aliis quibuscumque praetextibus et causis: immo potius omnes et singulas litteras patentes a quocumque praesule, etiam speciali nota digno, et a tribunalibus Curiae Romanae et eiusdem sacrae Congregationis de Fide Propaganda (dummodo contentis in praesenti decreto specialiter et expresse non fuerit derogatum cum posteriori data), statim ac in eorum Ordinarios manus pervenerint, ad sacram de Fide Propaganda Congregationem transmittant. Et ne contra praemissorum omnium observantiam allegari possit futuris temporibus ignorantia, eadem Sanctitas Sua de consilio eorumdem S. R. E. cardinalium

¹ Male edit. Main. legit *converti pro conversi* (R. T.).

voluit, ut huic decreto, aut etiam litteris ad eius formam expeditis seu expediendis, sive scriptis sive impressis, ab eiusdem tamen sacrae Congregationis praefecto signatis, sigilloque solito munitis, fides eadem adhibeatur, quae ipsis originalibus praestaretur: non obstantibus quibuscumque. Datum Romae, die IV februarii MDCLXXVII. — P. card. DE ALTERNIS, praefectus. *Loco* † sigilli. — V. CERRUS, secretarius.

§ 2. Ac postmodum recolendae memoriae Alexander Papa VIII praedecessor etiam noster, supplicationibus pro parte tunc pariter existentis Bernardi Iosephi a Iesu Maria, fratris expresse professi Ordinis Minorum S. Francisci de Observantia Reformatorum nuncupatorum, ac commissarii et procuratoris generalis in Romanam Curiam Terrasacrae, sibi super hoc humiliter porrectis inclinatus, per suas in simili forma Brevis die XXI octobris MDCXC expeditas litteras idem decretum toto illius tenore inserto approbavit et confirmavit; ac alias, prout in Alexandri praedecessoris litteris praefatis uberius continetur.

§ 3. Cum autem ad apostolatus nostri notitiam pervenerit, non deesse hisce etiam temporibus Graecos schismaticos, qui, subdolis artibus ac ementitis praetextibus christifidelium pietatem circumvenientes, in diversis catholicis regionibus pecunias quaestuarie seu eleemosynas colligere praesumunt, iisque ad eorum schisma confovendum, erroresque pertinacius retinendos, necnon ad ipsius verae fidei et catholicorum perniciem contra eorumdem fidelium mentem ac intentionem nequiter abutuntur: hinc est quod nos, firmiori decreti et litterarum praefatarum executioni et observationi, quantum cum Domino possumus, prospicere, simulque damnatas quaestuationes seu eleemosynarum collectas huiusmodi impedire ac proscribere volentes, motu proprio, ac ex certa scientia et matura

Decretum hoc confirmavit Alexander VIII.

Iterum confirmat Clemens XII.

deliberatione nostris, deque apostolicae potestatis plenitudine, praeinsertum decretum ab Innocentio emanatum, praefatasque litteras super eiusdem decreti approbatione et confirmatione ab Alexandro praedecessoribus editas, sicut praemittitur, cum omnibus et singulis in eis respective contentis, harum serie approbamus quoque et confirmamus ac innovamus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis robur, vim et efficaciam adiungimus.

Quibuscumque legatis et nunciis apostolicis ac ecclesiarum praefatis committitur Graecis non solum litteras ad quaestuationem spectantes, sed etiam pecunias quaestitas adinvenire.

§ 4. Praeterea eisdem S. R. E. cardinalibus, etiam de latere legatis, patriarchis, archiepiscopis, episcopis, dictaeque Sedis nunciis, abbatibus, ac locorum Ordinariis quibuscumque, in virtute sanctae obedientiae, ac sub poenis nostro ac Romanorum Pontificum successorum nostrorum arbitrio reservatis, motu, scientia ac potestatis plenitudine paribus, tenore praesentium, praecipimus et mandamus, ut non solum omnes et singulas litteras patentes, facultates, licentias, scripturas et documenta, quaestuationem seu collectam eleemosynarum huiusmodi quoquomodo concernentia, quae Graecos praefatos habere ac circumferre compererint, sibi tradi ac consignari faciant, et ad memoratam Congregationem cardinalium negociis¹ Propagandae Fidei praepositorum transmittant, ut praefertur; verum omnem quoque pecuniam seu eleemosynas, quas eisdem Graecos ex enarrata quaestuatione sive collecta eleemosynarum accepisseprehenderint, sive penes ipsos Graecos, sive penes alias cuiuscumque gradus, status et conditionis personas, etiam in forma depositi, extiterint, statim sequestro supponant, ac, quanto citius fieri poterit, mitti pariter curent ad supradictam Congregationem cardinalium, a qua postmodum pecunia seu eleemosyna

¹ Edit. Main. legit *negocii* (R. T.).

praefatae in commodum et utilitatem Propagationis eiusdem Fidei, iuxta ipsius Congregationis morem et institutum, et non in alios usus, integre convertantur et erogentur.

§ 5. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quodcumque spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque et non aliter in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac S. R. E. praefatae cardinales, etiam de latere legatos, dictaeque Sedis nuntios, aliosque quoslibet quacumque dignitate et potestate fungentes et functuros, sublata eis et eorum cuilibet quavis aliter iudicandi et interpretandi facultate et auctoritate, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

§ 6. Non obstantibus praemissis, ac constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, usibus, stylis et consuetudinibus, privilegiis sub quibuscumque verborum tenoribus et formis, ac cum quibusvis¹ etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, efficacissimis et insolitis clausulis, irritantibusque et aliis decretis, in genere vel in specie, aut aliis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis; confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, etiamsi pro illorum sufficienti derogatione de illis eorumque totis tenoribus specialis, spe-

¹ Praesentium litterarum firmitas.

¹ Derogatio contrariarum.

¹ Edit. Main. legit *quibus* (R. T.).

cifica, expressa et individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quaevis alia expressio habenda, aut aliqua exquisita forma ad hoc servanda foret, illorum omnium et singulorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis, et ad verbum insertis habentes, illis aliis in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum dumtaxat, specialiter et expresse ac plenissime derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Fides transumptorum.

§ 7. Volumus autem ut ipsorum praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiastica dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides ubique locorum tam in iudicio quam extra adhibeatur, quae praesentibus adhiberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxvi martii MDCCLXXXVI, pontificatus nostri anno vi.

Dat. die 26 martii 1736, pontif. anno vi.

F. card. OLIVERIUS.

CLXXVII.

Confirmatio decreti Congregationis episcoporum et regularium, quo declaratur licere fratribus Ordinis Minimorum sancti Francisci de Paula Congregationis Hispanicae promoveri ad lauream doctoralem et magisterium in publicis universitatibus, in eum finem dumtaxat ut cathedras obtinere et exercere valeant, ita tamen ut huiusmodi assumptio seu promotio nullum penitus gradum neque titulum seu praerogativam in Ordine praedicto inducat, sed circa huiusmodi gra-

duum exclusionem exacte servant quae per constitutiones ipsius Ordinis praescribuntur.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Nuper pro parte dilectorum filiorum fratrum Ordinis sancti Francisci de Paula Minimorum nuncupatorum provinciarum Hispaniae nobis exposito, quod, ad hoc ut quis ad publicas cathedras universitatum studiorum generalium in eadem Hispania existentium concurrere valeat, oportet eum prius magisterii gradum in aliqua ex dictis universitatibus suscepisse; fratres vero praedicti gradus magisterii huiusmodi incapaces eatenus reputati fuerant ex verbis regulae ipsius S. Francisci, ibi: *Ubique tamen observetur quod nullus ad magisterii seu alium gradum assumatur*; indeque factum erat ut nulli ex fratribus praedictis patuerat aditus concurrendi ad praedictas cathedras, in grave detrimentum tum studiorum litterarum, tum plurimorum religiosorum habiliu ad istiusmodi cathedras obtinendas, quae non modicum decus et utilitatem supradictis provinciis allaturae forent: et in eadem expositione subiuncto, quod, diligentius perpensis enarratis verbis regulae, luculenter appareret, mentem eiusdem sancti Francisci fuisse, ad retinendam in dicto Ordine humilitatem, prohibere dumtaxat suis alumnis promoveri ad magisterium ac potiri intra dictum Ordinem iis praerogativis quibus magistri aliorum Ordinum regularium fruebantur, cum verisimile non esset religiosi suis vetare voluisse progressum in litterarum studiis ac concursum ad publicas cathedras huiusmodi ut alios docerent et instruerent; unde, si verus sensus praedictae regulae retineretur

Provinciae
Hispaniae
per
litos.

1 Male ed. Main. legit cum pro eum (R. T.).

seu explicaretur, permitti posse videretur fratribus dictarum provinciarum Hispaniae suscipere magisterium praedictum in eum solum finem concurrenti ad easdem publicas cathedras, qui tamen in ipso Ordine titulo et¹ praerogativis magisterii² gauderent, quando quidem menti eiusdem regulae non repugnabat quod fratres praedicti Ordinis publice docerent, uti servatur in Italia et apud alias nationes, ubi sine titulo et praerogativis magisterii plures ex eis in publicis cathedris docent; solaque difficultas erat pro natione Hispaniae, eo quod magisterium ad concursum praedictum ibidem requirebatur: ac proinde nobis supradictorum exponentium nomine humiliter supplicato, quatenus sibi et pro tempore existentibus fratribus dictarum provinciarum Hispaniae permitteremus, ut extra Ordinem huiusmodi titulum magisterii, ad praecisum effectum concurrenti ad publicas cathedras, assumere possent:

C. concessio de qua in rubrica.

§ 2. Nos supplicem libellum, nobis pro parte eorumdem exponentium desuper porrectum, Congregationi venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium negotiis et consultationibus episcoporum et regularium praepositae remisimus, a qua post maturam rei discussionem emanavit decretum tenoris qui sequitur, videlicet:

Sacra Congregatio eminentissimorum et reverendissorum S. R. E. cardinalium negotiis et consultationibus episcoporum et regularium praeposita, ad quam sanctissimus dominus noster supplicem libellum remisit, audito procuratore generali, ac attentâ relatione eminentissimi domini cardinalis S. Clementis praefati Ordinis apud Sanctam Sedem protectoris, re mature perpensâ, decrevit ac declaravit licere religiosis Minimis sancti Francisci de Paulâ assumi ac promo-

veri ad lauream doctoralem et magisterium in publicis universitatibus in eum finem dumtaxat ut cathedras obtinere et exercere possint et valeant; ita tamen ut huiusmodi assumptio seu promotio nullum penitus gradum neque titulum seu praerogativam in religione inducat, sed, circa huiusmodi graduum exclusionem, ea quae per Ordinis constitutiones praescripta adamussim serventur. Romae XVI martii MDCCXXXVI. — Cardinalis FRANCISCUS BARBERINUS. — C... Chalcodonensis, secretarius. *Loco + s'g'lli.*

§ 3. Cum autem, sicut iidem fratres provinciarum Hispaniae nobis subinde exponi fecerunt, ipsi decretum huiusmodi, quo firmitus subsistat et servetur exactius, apostolicae confirmationis nostrae patrocínio communiri summopere desiderent: nos, eosdem exponentes specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, illorumque singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomolibet innodati¹ existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutos² fore censentes, supplicationibus eorum nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, decretum praeinsertum, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, approbamus et confirmamus, illique apostolicae firmitatis robur adiicimus: salvâ tamen semper in praemissis auctoritate memoratae Congregationis cardinalium.

§ 3. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab

Confirmator.

Praesentium litterarum distinctas.

¹ Male edit. Main. legit *ex pro et* (R. T.).

² Videtur deesse *non* (R. T.).

¹ Aptius lege *innodatae* (R. T.).

² Cohærenter lege *absolutas* (R. T.).

eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et desiniri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Obstatulum
derogatio.

§ 4. Non obstantibus praemissis, ac constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon Ordinis et provinciarum huiusmodi, aliisque quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub anno Piscatoris, die xvi aprilis MDCCXXXVI, pontificatus nostri anno vi.

Dat. die 16 aprilis 1736, pontif. anno vi.

F. card. OLIVERIUS.

CLXXVIII.

Confirmatio constitutionum seu regularum collegii seu Seminarii Corsini nuncupati Italo-Graecorum Albanensium in oppido S. Benedicti de Ullano Bisinianensis dioecesis erecti.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Prolegum.

Ex iniuncto nobis divinitus pastoralis sollicitudinis munere, ea quae pro felici collegiorum seu seminariorum quo-

rumcumque ad rectam iuvenum educationem ac institutionem recenter erectorum regimine provide statuta atque ordinata esse noscuntur, ut firma semper ac inviolabilia persistent, apostolici muniminis nostri praesidio libenter constabilimus.

§ 1. Cum itaque, sicut accepimus, pro salubri collegii seu seminarii Italo-Graecorum Albanensium, quod nuper in oppido S. Benedicti de Ullano Bisinianensis dioecesis instituimus, a gentis nostrae nomine *Corsini* nuncupati, gubernio, prosperaque illius alumnorum nunc et pro tempore existentium in viâ mandatorum Domini directione, diversae constitutiones seu regulae conditae ac praescriptae fuerint, tenoris qui sequitur, videlicet:

Pro collegio
Italo-Graecorum
efformatae re-
gulae.

COSTITUZIONI O REGOLE

Tenor regula-
rum.

da osservarsi dagli alunni del collegio pontificio Corsini di S. Benedetto da Ullano.

CAPO PRIMO.

Fine dell'istituto. e quali condizioni debbano avere gli alunni da riceversi in collegio.

Perchè la pia intenzione ed il fine avuto nell'erezione di questo collegio dalla santa mente del fondatore Clemente XII è stata di provvedere ai bisogni spirituali degli Albanesi commoranti nel regno di Napoli, viventi nel rito greco, e di avere ecclesiastici idonei per la cura di quelle anime, e di tale perfezione che con la vita e loro buoni costumi non solo procurino di assicurare la propria eterna salute, ma come lucerne poste sopra candelieri servano di guida ai popoli, ai peccatori, e massimamente alli scismatici, affinchè ritornino nella via della verità e della giustizia;

A tale effetto pertanto s'incarica a monsignor presidente *pro tempore* di detto collegio, di non ammettere ne' luoghi di alunni se non quei che non hanno nè più di sedici nè meno di dodici anni d'età, l'indole de' quali sembri più degli altri disposta alla

pietà ed alle lettere, e che diano tale aspettazione di sè, sicchè siano per utilmente servire alla Chiesa ed essere di giovamento alle anime de' loro prossimi. Perciò non si potranno nè si dovranno ammettere senza l'attestato degli Ordinari, il quale ancora porti che¹ siano introdotti nella grammatica latina e che sappiano competentemente leggere in greco; nè si ricevano senza la fede del battesimo, d'essere nati di legittimo matrimonio, di padre e madre di rito greco, e battezzati secondo detto rito, con la fede ancora del patrimonio, e di non essere inquisiti, nè di avere contratto verun impedimento canonico; e di questi attestati dovrà tenerne cura chi stimerà monsignor presidente, affinchè il soggetto proposto sia ammesso o rigettato.

Essendo che da tale scelta dipende tutto il bene del collegio, perciò strettamente s'incarica alla coscienza degli Ordinari, che in occasione della santa visita s'informino dell'ingegno, indole e costume de' giovani, per darne notizia a monsignor presidente del collegio o al rettore, da' quali dovrà tenersi il concorso e farsi l'elezione per voti segreti; secondo poi la maggioranza de'voti, monsignore sceglierà e nominerà l'alunno. Si avverte però bene di non ammettere alcuno al detto concorso, se non avrà li sopra accennati attestati e requisiti. Circa poi l'ammissione degli alunni di nomina, si osservi il consueto a tenore delle convenzioni fatte cogli eminentissimi abati.

Esaminati e prescelti che saranno, prima dell'ingresso al collegio, il rettore faccia far l'obbligo per mano di notaro pubblico dal genitore o altro parente più stretto di essi, secondo la forma prescritta nell'istruzione data per monsignor presidente *pro tempore*.

Entrati che saranno in collegio, si tengano per dieci giorni in luogo separato dagli altri, e quivi abbiano chi li istruisca in tutto quello che appartiene alla pietà, assegnandosegli per direttore un alunno dei più maturi ed esemplari per l'osservanza della disciplina domestica e per l'edificazio-

¹ Pessime edit. Main. legit dal quale posti, che pro il quale porti che (n. r.).

ne del buon costume, con dargli in detto tempo dal confessore, o altro che stimerà il rettore, gli esercizi spirituali, ammaestrandoli circa il modo di vivere del collegio e circa l'osservanza della disciplina domestica, ed intanto non trattino con altri, nè altri con loro, eccetto quelli che saranno deputati dai superiori.

Nel medesimo tempo faranno la confessione generale di tutta la vita, o col confessore del collegio o con altro che assegnerà il rettore; e se alcuno per la poca età non fosse giudicato abile al ritiro, nè sufficiente al frutto della confessione generale, differirà l'uno e l'altra, e si ritirerà poi almeno per dieci giorni innanzi di fare il giuramento, ed allora farà la detta confessione, e con meditazioni e con esercizi spirituali ordinerà la vita secondo la sua vocazione; tutti però incominciino da principio ad imparare la dottrina cristiana e li primi ammaestramenti della pietà.

Gli alunni dovranno continuare in tutta la vita nel rito greco, e se alcuno ardisse fingersi d'esso rito, e non lo fosse, ed entrasse in detto collegio con dare il giuramento, verificata tale falsità, sia astretto pagare gli alimenti, e resti nel rito latino, castigato con le pene di falsità e spergiuro.

CAPO SECONDO.

Degli esercizi di pietà.

Perchè il fondamento dello spirituale edificio è la pietà, questa si attenda ad imprimere negli animi degli alunni. Però procurino, mediante la frequenza de'sacramenti, dell'orazione, della lezione de' libri spirituali, e delle esortazioni, d'infervorarsi a conseguire ciò che è proprio di questa vocazione ed istituto; e per ottenere con maggior sicurezza questo fine, dovranno fare, almeno una volta l'anno, gli esercizi spirituali di S. Ignazio per lo spazio di otto giorni, considerando in detto tempo specialmente gli obblighi e doveri dello stato ecclesiastico; facendo nello stesso tempo, secondo il consiglio del direttore spirituale, la confessione generale della vita passata, e misurando le loro forze se possano adempire gli obblighi

dello stato sacerdotale, al quale col tempo dovranno esser assunti.

Si confesseranno ogni otto giorni, e si comunicheranno ogni quindici quelli che sono in età, e di più si comunicheranno nelle feste solenni ed in tutte le domeniche dell'Avvento e della Quaresima. Però imparino gli alunni dal confessore o da altro prefetto delle cose spirituali come possono frequentare con frutto li detti sacramenti.

Udiranno ogni giorno la messa, e la mattina prima di mettersi a studiare faranno mezz'ora di orazione, quale sarà parte vocale, parte mentale per tutti, sì grandi che piccoli, da darsi però dalla viva voce di uno de' ministri o dai più introdotti e capaci del numero degli alunni, secondo la primaria introduzione, tanto per la mattina quanto per la sera; e chi per obbligo dovesse dire l'uffaio divino, lo dica in altro tempo.

Siano obbligati di officiare la chiesa ad ogni ordine del rettore, ed in tutte le domeniche e feste di precetto assistano alla messa cantata, e cantino li vesperi in greco, affinchè imparino il rito e le ceremonie ecclesiastiche che dovranno altrove esercitare, ed ogni giorno sentano la messa greca bassa, con recitare in fine le litanie in greco. Abbiano a bene d'esser corretti da quelli che hanno la cura di presedere al coro, e s'ingegnino d'emendare ogni errore; nè mai lascino gli uffici divini sotto pretesto degli uffici ovvero esercizi letterari o per altra cagione, ai quali assistano con tutta la modestia, e chi in ciò mancasse sia severamente punito.

Gli alunni, quantunque di buon ingegno e studiosi, se riuscissero poco devoti, e con gli esempt e coi consigli ritirassero gli altri dalla pietà, dall'ubbidienza e dall'osservanza de' buoni ordini del collegio, siano ammoniti; e non volendosi correggere, siano licenziati, acciocchè da essi non vengano infettati i buoni.

Ne' giorni di festa non escano di casa se non dopo pranzo finiti i vesperi.

La tutto il corso dell'anno, particolarmente quando non si legge nelle scuole, il dopo pranzo e nelle vacanze dell'autunno,

si esercitino gli alunni in cantare gli uffici divini, e nelle ceremonie ecclesiastiche conforme il rito della Chiesa orientale, acciò le sappiano fare con decoro ed edificazione, e ciò s'incarica alla coscienza del rettore e di monsignor presidente.

E perchè nella chiesa del collegio si dicono da' sacerdoti cittadini molte messe, lecito non sia neppure al rettore di mandare gli alunni a servirle, se non in quel tempo ch'essi stanno ad ascoltarla, affinchè dopo non restino soli in chiesa, nè si disturbino l'ordine della disciplina domestica.

E ad oggetto che sin dal collegio stesso incominciino a rendersi utili operari al loro prossimo, dovranno le domeniche nel dopo pranzo due degli alunni più capaci, per via di dialogo, nella detta chiesa recitare la dottrina cristiana, acciò nell'atto stesso essi ed il prossimo restino istruiti; quale esercizio si dovrà fare con tutta la modestia ed esemplarità, e con l'intervento o del rettore o d'altra persona grave da lui deputata, in modo che gli alunni non si mescolino con persone fuori del collegio.

Di tutti i benefattori del collegio, e soprattutto del fondatore, si abbia memoria ogni giorno nell'orazione; ma del fondatore e di qualche altro benefattore insigne si faccia l'anniversario ogni anno con una messa cantata, e per gli altri benefattori li sacerdoti del collegio diranno l'uffizio e la messa nel giorno della loro morte, nel qual giorno gli alunni canteranno l'uffizio, e questo ancora dovrà farsi ogni volta che morirà il protettore del collegio.

La protezione di detto collegio appresso la Santa Sede sia perpetuamente in un cardinale di S. R. C., da deputarsi dal sommo Pontefice; quale protettore non abbia facoltà di dispensare da queste regole, nè dare alcuna facoltà per l'alienazione o permutazione de' beni del collegio, imposizioni di servitù, ecc., senza espressa facoltà di Sua Beatitudine.

CAPO TERZO.

Degli obblighi e disciplina degli alunni.

Niuno si ritenga in collegio che non dia

speranza e veri segni di pietà cristiana, acciocchè la mala riuscita di un solo non distrugga quanto dalla divozione avrà edificato il profitto di molti; però s'avverta bene che persone di questa sorte (o si conoscano avanti del giuramento o dopo) non si lascino fermare in collegio, come nemmeno dovranno ritenersi quelli che dimostrano d'avere a fare poco profitto nelle lettere, quando sia conosciuta abbastanza l'indole e l'incapacità loro.

Quelli che avranno finiti quattordici anni di loro età e sei mesi di dimora dall'ingresso in collegio, facciano il solito giuramento secondo le formole prescritte, ed avvertano, e particolarmente si ricordino della promessa che in esso fanno, d'osservare, per quel tempo che quivi staranno, l'istituto e le costituzioni del collegio, conforme all'interpretazione de' superiori, e di vivere al modo comune di tutti gli alunni, specialmente in quello che tocca al vitto, all'abitazione e vestito, e di non macchinare cosa alcuna contro li superiori o istituto del collegio medesimo.

Chi poi ricusasse di prestare tal giuramento, sia licenziato dal collegio, e sia tenuto a pagare gli alimenti somministratigli per tutto quel tempo che in esso avrà dimorato.

Si ordina agli alunni che tanto in sedendo in iscuola o altrove, quando camminando, e nel trattamento si dentro come fuori del collegio, debba ciascuno eccitare ad edificazione e modestia il compagno, con iscambievolmente prevenirsi secondo le regole della modestia e carità cristiana.

E poichè dai collegiali non solo la pietà e buone lettere, ma la civile conversazione ancora in collegio apprendere si dee, perciò niuno ardirà nemmeno per burla toccar il compagno con mani, e chi a quest'ordine controvenisse sia severamente castigato; quando poi a giudizio di monsignor presidente qualcheduno avrà gravemente ingiuriato, percosso o ferito il compagno, sia discacciato dal collegio.

Non pernottino fuori del collegio se non in caso d'infermità, e ciò s'intende de' soli cittadini d'Ullano nelle case proprie, o di

quei de' paesi più vicini, colla permissione però sempre del rettore. Nel tempo che staranno fuori per causa d'infermità o altra egualmente grave, si contengano con la dovuta modestia ed esemplarità, che risplenda nel di loro costume ed operazioni, affinchè si possa da tutti, e specialmente da' genitori e congiunti, lodare Iddio e benedire il fondatore del collegio per la loro buona educazione; e se alcuno in detto tempo commettesse qualche mancanza, sia nel ritorno severamente castigato.

Siccome non potranno gli alunni mai uscire avanti giorno, così dovranno essere all'avemaria in casa, nella quale s'abbia particolare cura di tenere custodite le finestre, affinchè quei del collegio non possano affacciarsi se non da quelle che stimerà la prudenza del superiore.

Nessuno degli alunni, di qualunque ordine, grado o condizione si sia, esca di casa senza quel compagno che gli sarà assegnato dal superiore, e non sia il compagno del numero degli alunni, ma altro maturo e fedele, e se alcuno uscisse dal collegio o senza licenza o senza quel compagno che gli sarà stato assegnato, o se lasciasse il compagno per la strada o nella porta per trattare occultamente, sia con severità per altrui esempio punito.

Nessuno tenga denari, ma si depositino in mano del rettore, e li spendano con saputa ed approvazione di esso.

Si osservi con molta diligenza la distinzione delle camerate, perchè importa molto al buon governo del collegio ed all'ammaestramento della gioventù; perocchè nè in casa nè fuori quelli di una camerata parlino nè trattino in modo alcuno con quelli dell'altra, senza espressa licenza da domandarsi volta per volta al rettore, nè si conceda facilmente agli alunni di parlare con altri che con i fratelli o parenti più stretti, e, bisognando, in presenza di chi deputerà il rettore.

E perchè in collegio non vi è se non un solo atrio ossia cortile, perciò in quello non vi discendano se non alternativamente una camerata per volta, affine di divertirsi con le

boccie; nell'orto però conceduto dalla Santità del fondatore non si mandino li collegiali per divertirsi finto che non sia murato.

Nessuno degli alunni esca dalla sua camera senza la previa licenza del prefetto, dicendogli dove ed a che effetto voglia andare; nè se gli permetta l'uscire di camera per ricreazione, ma solamente per necessità; e nessuno entri nelle officine, nè meno nelle stanze degli altri, nè in quelle destinate agli offizj de' servitori, o in altro luogo recondito e fuori di vista.

Non si permetta a' forastieri o cittadini di qualunque grado o condizione di entrare nelle camere degli alunni, e molto meno di quivi parlargli senza l'assistenza del superiore o di chi egli deputerà, e tale licenza non si conceda se non di rado e con molta considerazione.

Trattino con tutta la riverenza col rettore e con gli ufficiali che tengono cura di loro, e facciano prontamente e con umiltà le penitenze che loro saranno date; e se alcuno ricusasse di farle, e con irriverenza si portasse co' superiori, ovvero istigasse altri a disubbidire agli ordini loro, sia mandato via del collegio.

Si ritrovino tutti pronti ed uniti, e con debita ordinanza procurino trovarsi alle funzioni della comunità, tanto di chiesa come di casa e delle scuole, ne quali luoghi si osservi il silenzio; ed in dette scuole gli alunni, secondo l'oracolo della viva voce del fondatore, stiano in luogo separato dagli altri cittadini che in quelle saranno ammessi, se monsignor presidente *pro tempore* vorrà ammetterli.

Niuno ardisca di rimandare in cucina, o di rigettare dispettosamente, o di querelarsi in pubblico della qualità e quantità delle vivande; ma succedendo qualche errore o mancanza, ne facciano consapevole con tutta modestia per mezzo dell'ebdomadario il rettore, da cui poi si prenderà il debito provvedimento.

In nessun tempo gli alunni potranno separarsi nè sottrarsi dagli occhi del prefetto per alcuna causa, nè far circoli particolari di due o tre con discorsi segreti.

Stia ognuno in letto con la camicia, nè mai sia lecito l'estate o l'inverno per qualsivoglia cagione levarsela, eccetto quando dovranno mutarsi, il che faranno con ogni modestia ed avvertendo di non esser visti.

Stiano sempre con tutta la decenza vestiti nelle camerate loro, e vadano tutti uniformemente tosati.

Subito levati la mattina e vestiti, alzino i loro letti, quali staranno così alzati, ben concii e puliti, finto che la sera si vada a dormire; nell'estate sia lecito lo stenderli nel tempo del riposo della mezz'ora, quale incomincerà dalla festa della B. Vergine del Buon Consiglio, che si celebra la domenica *immediate* seguente dopo la festa di S. Marco, e durerà sino alli 7 *esclusive* di settembre, giorno in cui fin dal 1731 fu stabilita la fondazione di questo collegio; onde per l'anniversaria memoria si celebri ogni anno il di seguente una messa cantata in ringraziamento all'Altissimo ed alla B. V., e da tutti li collegianti si applichi la comunione per il fondatore.

Niuno tocchi le cose dell'altro, nè contro voglia del compagno vada al di lui luogo, e molto meno s'appoggi alla di lui scansia o letto.

S'astengano da qualunque contesa, dalle parole ingiuriose ed offensive ancorchè dette per ischerzo, ma piuttosto senza affettazione scambievolmente con civiltà cristiana e proprietà onorandosi l'un l'altro.

Siccome delle robe del collegio si concede loro il solo uso e non dominio, perciò non potranno disporre di cosa veruna ad esso appartenente; così ancora si guarderanno dal prendere o mangiare cosa alcuna fuori del collegio, senza licenza espressa o del prefetto o del lettore.

Nei mesi di estate potranno tre volte la settimana, e più ancora secondo parerà al superiore, uscire dopo finita la scuola del dopo pranzo a prendere aria.

Per togliere a tutti ogni occasione di parzialità o di mormorazione, si proibisce l'uso dei doni si tra gli alunni, come ancora tra li medesimi e li ministri.

Niuno potrà pretendere altro luogo nella

camera, nel refettorio, nelle scuole ed in chiesa, se non quello gli sarà assegnato dal rettore.

Si proibisce a chicchessia degli alunni di scrivere o ricevere lettere senza il permesso del rettore, a cui dovranno portarle aperte, e dal medesimo procurarsene il recapito. Senza la licenza del medesimo non potranno andare a pranzo fuori del collegio, quale licenza non se gli darà se non con genitori, fratelli e zii, e ciò una o due volte al più l'anno; e in tal caso non se gli dia compagno del numero degli alunni, e dandosegli, sia ad elezione del superiore; nè per quel giorno sia lecito ad essi d'andare a spasso con i propri fratelli o zii, ma tornino a dirittura in collegio: non meno questa licenza che ogni altra, e tutto ciò che concerne il buon governo, la pietà ed interessi del collegio, dovrà il rettore regolare secondo l'arbitrio e prudenza di monsignor presidente.

Si concede agli alunni la vacanza una volta la settimana, purchè in questa non s'incontri altra festa; tuttavia però non tralascieranno gli esercizi della pietà e dello studio privato, avvertendo che tutti li discorsi e divertimenti debbano esser convenienti a persone ecclesiastiche, nè fuori di casa sia loro mai lecito qualunque sorta di giuoco; anzi quando vedranno approssimarsi gente e passare avanti di loro, avvertano di ragionare con voce bassa, e di sfuggire i luoghi frequentati, ritirandosi in parti solitarie.

CAPO QUARTO.

Circa lo studio delle lettere e delle scienze.

Si ricordino gli alunni che a spese della santa Sede Apostolica sono alimentati per attendere agli studi; che però dovranno contentarsi di quella moderazione che pagherà al superiore, considerata la qualità dei paesi e le angustie nelle quali si trovasse il collegio. Attendano pertanto con diligenza agli studi per riuscire utili operari di santa Chiesa, riflettendo all'altissimo fine al quale sono stati dal fondatore destinati, e perciò s'incarica al rettore che procuri con ogni

sforzo di togliere dal collegio tutto quello che può impedire il profitto degli studi, affinchè per l'inavvertenza non si perda tanta fatica e spesa che si fa in allevare ed ammaestrare gli alunni.

In quei giorni che non vi saranno lezioni; non si tralasci di studiare privatamente; e toltone il giorno di vacanza tra la settimana, per ordinario se ne restino in casa, sebbene si potrà loro concedere qualche ora di tempo di ricreazione straordinaria.

Quelli che studiano filosofia, teologia morale o scolastica, si ritrovino presenti a tutte le lezioni che si faranno nella scuola assegnatagli, nè dispensi con alcuno il rettore se non in caso di molta considerazione, conferitolo prima con monsignor presidente.

Le controversie di nostra santa fede, che sono con li scismatici ed eretici de' nostri tempi, procurerà il rettore che si spieghino accuratamente con tutte le altre facoltà agli alunni da soggetti de' più capaci e dotti che di tali materie potranno aversi. E qualora nè il rettore nè monsignore trovassero per tale effetto soggetto idoneo, ne scrivano al signor cardinale protettore.

Niuno di qualunque classe o facoltà manchi all'esercizio delle ripetizioni o d'altri atti che si faranno da' lettori e maestri.

Ognuno si applicherà a quello studio, che dal rettore, col parere de' lettori e maestri, gli sarà ordinato; ed acciocchè questo si faccia meglio e con maggior considerazione, quelli che attendono alle facoltà superiori, una volta l'anno in presenza di monsignor presidente siano esaminati, e chi sarà trovato far poco profitto o per difetto d'ingegno o d'applicazione, avuto riguardo al maggior servizio di Dio, si faccia attendere allo studio d'altra facoltà ove possa riuscire.

Non prima siano introdotti allo studio di filosofia che sappiano parlare speditamente in latino, e parlare e comporre elegantemente in greco.

Pertanto, dopo che avranno imparato abbastanza l'una e l'altra lingua, studieranno retorica innanzi d'incominciare la filosofia, e ancora la lingua greca per impararla per-

settimante; e quando attenderanno alle scienze superiori, si esercitino a mantenere la medesima lingua, e soprattutto in fare de' ragionamenti, panegirici e catechismi in chiesa ed in refettorio, almeno tre o quattro volte l'anno per ciascheduno, alla riserva del catechismo, quale da più introdotti¹ si farà in tutte le domeniche dell'anno, siccome l'esercizio dell'oratorio, che dovrà farsi nella loro chiesa per tre sere la settimana, coll'intervento di due o di più della stessa classe, secondo parerà al rettore.

Non si conceda ad alcuno di fare gli atti pubblici di filosofia, o di teologia scolastica o morale, se nel preaccennato esame che si farà, in presenza di monsignore, dal rettore, lettori ed altro che stimasse detto monsignore, non sarà giudicato abile a farli con dignità; nè si ammettano a tale onore se non quelli che siano stimati degni per merito d'osservanza, di buoni costumi e di segnalata dottrina.

S'abbia molto riguardo a far buona scelta di libri che si avranno da leggere nella scuola o privatamente.

Terminati che avranno li studi, non si trattengano in collegio più di quindici giorni, nel qual tempo e sempre siano obbligati come gli altri alunni d'osservare tutte le regole; sia però in arbitrio di monsignore di trattenere alcuni di più segnalata virtù e di buona indole, che servano nel collegio per lettori o in altro grado.

CAPO QUINTO.

Del rettore ed altri ministri, e loro obblighi.

Il rettore del collegio sia di rito greco e nazione Albanese, o che sia stato alunno nel collegio di S. Atanasio di Roma, o in questo stesso collegio, e così anche il maestro di lingua greca, del rito e del canto, siano sempre preferiti gli alunni di questo collegio.

Affinchè niuno possa allegare ignoranza o scusa circa l'osservanza di queste regole, sia obbligo del rettore di farle leggere almeno una volta il mese, tanto nella prima quanto nella seconda mensa, invece della

solita lezione del refettorio, fintanto che intieramente se ne compisca la loro lettura.

Inoltre s'incarica non solo la coscienza di detto rettore, ma ancorà del padre spirituale e degli altri lettori, d'invigilare alla esatta e puntuale osservanza delle medesime regole; e qualora, fatte le solite caritative monizioni, non si vedesse speranza d'emendazione e profitto in qualche alunno, avuto riguardo al maggior servizio di Dio e al buon governo del collegio, speditamente, con la previa partecipazione di monsignor presidente, sia espulso come discolo ed incorreggibile, e sia tenuto di restituire al collegio gli alimenti percetti.

Sia cura del rettore di andar di concerto col padre spirituale nel disporre i giovani a fare il giuramento secondo le forme prescritte, facendoli preparare con quattro giorni d'esercizi spirituali, ne quali si farà loro considerare la natura e peso del giuramento, e gli obblighi dello stato ecclesiastico, come altresì quelli che da essi esige il collegio.

Invigilino, soprattutto il rettore e gli altri ministri, al buon costume de' giovani, eccitandoli sempre al santo timore del Signore con li buoni esempi nei discorsi famigliari; perciò s'avverta bene con essoloro di non discorrere se non di cose spirituali, letterarie, o al più di materie appartenenti al collegio.

Deve inoltre il rettore badare che gli alunni non perdano tempo, e che mai si tralascino per qualunque motivo le solite lezioni nelle scuole, ovvero le pie e lodevoli costumanze introdotte fin dal principio dell'erezione del collegio.

L'amministrazione del medesimo collegio sia presso l'economò ovvero ministro che deputerà monsignor presidente, colla di cui totale dipendenza dovrà fare quelle spese che occorreranno per servizio del collegio, ed in mano d'esso monsignore dovrà render conto di tutto l'introito ed esito, non solo delle entrate del collegio, ma ancora della chiesa; e sia in arbitrio di detto monsignore far rivedere detti conti o da due ministri del collegio o da chi meglio lui stimerà.

Il rettore dee trattare con li ministri,

¹ An recta lectio, iudicet quisque sciens (R. F.).

ciò protettore, padre spirituale e lettori, con carità e proprietà civile, giacchè dalla di loro armonia e prudenza dipende tutto il buon regolamento del collegio.

Per quanto sarà possibile, si schivi la parzialità del trattamento nel mangiare, ed essendo solito il rettore con gli altri ministri pranzare nella seconda tavola, occorrendo che si porti loro qualche cosa di più che non si è data alla comunità, ne facciano partecipi gli alunni che nello stesso tempo pranzano nella seconda tavola, per così togliersi l'occasione di mormorare e di star malcontenti li giovani.

Il rettore e gli altri ministri, per dare buon esempio agli alunni, osservino per quanto sia possibile ancor essi il silenzio ne' soliti tempi, intervenendo alle orazioni ed altri atti di religione della comunità.

Ricordi il rettore a monsignor presidente di registrare nella platea del collegio tutte le scritture concernenti gl'interessi di quello, facendole legalizzare da pubblico notaro, come ancora dovrà detto rettore tener notati in libro separato, secondo il metodo di già principiato, i nomi, cognomi, patria, genitori, portamenti, età, costumi, abilità, giorno ed anno dell'ingresso e partenza dal collegio degli alunni, e sopra tutto s'incarica di formare in luogo separato l'archivio del collegio per tenere e conservare tutte le scritture suddette, ed altre ad esso attinenti, secondo che s'ordina nell'istruzione appartenente a detto rettore.

Faccia osservare il rito greco nel collegio, non solo in quanto ai digiuni, ma ancora in ogni altra cosa.

Eadem approbatum a Congregatione de Propaganda Fide, approbatur a Pontifici.

§ 3. Hinc est quod nos, inviolabili constitutionum seu regularum huiusmodi robori et efficaciae providere volentes, de nonnullorum ex venerabilibus fratribus nostris S.R.E. cardinalibus Congregationis rebus Propagandae Fidei praepositae, qui iussu nostro ipsas constitutiones seu regulas accurate viderunt et perpenderunt, consilio, easdem praeinsertas constitutiones seu regulas, cum omnibus et singulis in eis contentis, au-

toritate apostolica, tenore praesentium, confirmamus et approbamus, illisque irrefragabilis apostolicae firmitatis vim et robur adiicimus, ac quoscumque iuris et facti defectus, si qui desuper quomodolibet intervenerint, supplemus: salvà tamen semper in praemissis auctoritate memoratae Congregationis cardinalium.

§ 4. Decernentes, easdem praesentes litteras ac constitutiones seu regulas semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab illis respective inviolabiliter observari, sique in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane quidquid secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Praesentis constitutionis iuris firmitas.

§ 5. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon, quatenus opus sit, supradicti collegii seu seminarii, aliisque quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliàs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Derogatio contrariis.

§ 6. Volumus autem ut praesentium transumptis, seu exemplis, etiam impres-

Exemplis dante dilectis.

sis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in dignitate ecclesiasticâ constitutae munitis, eadem prorsus fides ubique tam in iudicio quam extra illud habeatur, quae praesentibus ipsis haberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xvi aprilis mdccxxxvi, pontificatus nostri anno vi.

Dat. die 16 aprilis 1736, pontif. anno vi.

F. card. OLIVERIUS.

CLXXIX.

*Religiosi Congregationis monachorum Silvestrinorum Ordinis sancti Benedicti non possunt recurrere ad tribuna-
lia nisi praevia appellatione ab abbate monasterii ad abbatem generalem.*

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Procurator
generalis Or-
dinis supplicat
decerni per nos
appellationem.

§ 1. Exponi nobis nuper fecit dilectus filius Benedictus Bianchini procurator generalis Congregationis monachorum Silvestrinorum nuncupatorum Ordinis sancti Benedicti, quod (cum, ad conservandam regularis disciplinae integritatem debitamque religiosorum erga suos superiores obedientiam et subiectionem, per plures nostras in simili formâ Brevis litteras in diversis Ordinibus regularibus modum imposuerimus appellationibus ac recursibus subditorum adversus gravamina quae sibi a suis praelatis illata esse identidem contendebant) dictus Benedictus procurator generalis id ipsum quoque in praefatâ Congregatione monachorum statui ac exacte in posterum servari plurimum desideret.

§ 2. Nos, eiusdem Benedicti procura-

toris generalis desiderio hac in re, quantum cum Domino possumus, obsecundare volentes, eumque a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, supplicationibus eius nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, auctoritate apostolica, tenore praesentium, statuimus et ordinamus, quod nullus dictae Congregationis monachus, aliave persona, cuiusvis gradus, dignitatis et conditionis existat, in casibus, in quibus de iure vel iuxta constitutiones praefatae Congregationis appellare aut recurrere licet, id aliter deinceps facere valeat, quam gradatim, ab immediato nimirum suo superiore ad abbatem generalem praefatae Congregationis, itaut causae appellationis vel recursus huiusmodi, antequam ab eodem abbate generali cognitae et definitae fuerint, extra dictam Congregationem deferri et agitari nequeant.

§ 3. Ac propterea omnibus et singulis Romanae Curiae tribunalibus ac iudicibus, et quibusvis etiam S. R. E. cardinalium Congregationibus, necnon Sedis Apostolicae nunciis nunc et pro tempore existentibus, ne monachorum ac personarum dictae Congregationis appellationes aut recursus admittant, causasque praedictas cognoscant, nisi prius sibi legitime constiterit illas per dictum abbatem generalem prius cognitae et definitae fuisse, sub poenâ nullitatis actorum ac inde secutorum, et, quoad religiosos appellantes vel recurrentes qui praemissis contraverint, sub gravibus nostro et Romani Pontifi-

Iudicibus causas cognoscendi facultatem adhibuit, nisi prius eis constiterit, recursum habitum fuisse ad eumdem abbatem.

cis pro tempore existentis arbitrio infligendis pœnis, eâdem auctoritate, tenore praesentium, prohibemus.

Praesentium
litterarum
litterarum
litterarum

§ 3. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari; sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Obstantium
derogatio.

§ 2. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ac Congregationis monachorum praefatorum, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo rohere permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Transumptis
danda fides.

§ 6. Volumus autem ut earumdem praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiasticâ dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides ubique tam in iudicio quam extra adhibeatur, quae ipsis praesentibus adhiberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maio-

rem, sub annulo Piscatoris, die iv maii MDCCXXXVI, pontificatus nostri anno vi.

Dat. die 4 maii 1736, pontif. anno vi.

F. card. OLIVERIUS.

CLXXX.

Indulgentiae, aliâs docentibus et adultis discentibus doctrinam cristianam in Urbe, Italiâ, insulisque adiacentibus concessae, ad universos christifideles ubicumque locorum existentes extenduntur.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Pastoralis officii, quo catholicae Ecclesiae regimini divinâ dispositione praesidemus, debitum exigit, ut ad ea potissimum curam et sollicitudinem nostram intendamus, quae ad augendam fidei religionem et animarum salutem in primis conducere in Domino conspiciamus.

Extensum.

§ 1. Aliâs siquidem ad¹ uberes fructus ac spiritualium² christifidelium aedificationem, quae ex assiduo usu et explicatione catechismi sive doctrinae christianae provenire noscebantur, paternae dirigentes considerationis nostrae intuitum, diversas ordinationes, a nonnullis Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris ad promovendum hoc pium fidelique populo adeo necessarium opus, quo ille fidei catholicae rudimentis ac mysteriis christianisque virtutibus instruitur, salubriter editas, per edictum die xv novembris MDCCXXIX iussu nostro promulgatum confirmavimus, ac etiam ampliavimus: et subinde christifideles tam almae Urbis nostrae, quam universae Italiae, ac insularum adiacentium pro tempore existentes, ut operae hu-

Hic Pontifex
indulgentias do-
ctrinam chris-
tianam ad-
docentibus et ad-
discentibus in
Urbe concessas,
ad Italiâ, in-
sulasque adia-
centius extendit.

¹ Praeposit. ad nos addimus (R. T.).

² Aptius lege spiritualem (R. T.).

iusmodi ferventius incumbere, excitare volentes, omnes et singulas indulgentias et peccatorum remissiones, ac poenitentiarum relaxationes, quae a quibuscumque Romanis Pontificibus praedecessoribus quoque nostris praefatum catechismum seu doctrinam christianam iuxta decreta Concilii Tridentini in ecclesiis et oratoriis pueros docentibus, aut eidem, dum traditur, interessentibus, eatenus concessa reperiebantur, ad adultos Urbis, Italiae et insularum praedictarum ipsi catechismo seu doctrinae christianae interessentes extendimus:

Alia superaddidit indulgentias.

§ 2. Praeterea eisdem adultis, qui vere poenitentes et confessi, ac sacra communione refecti, eiusmodi pio exercitio devote intervenirent, qua vice id agerent, septem annos et totidem quadragenas de iniunctis eis seu aliis quomodolibet debitis poenitentiis in forma Ecclesiae consuetam relaxavimus; qui vero illud assidue frequentarent, eundem catechismum doctrinamve christianam docentes vel addiscentes, ac vere similiter poenitentes et confessi, sacraque communione refecti, pro christianorum principum concordia, haeresum extirpatione, ac S. M. E. exaltatione pias ad Deum preces effunderent, in Nativitatis domini nostri Iesu Christi, Paschatis Resurrectionis dominicae, necnon Ss. Petri et Pauli apostolorum festis diebus plenariam omnium peccatorum suorum indulgentiam et remissionem misericorditer in Domino concessimus: et alias, prout in nostris in pari forma Brevis die xxvii iunii mdccxxv desuper expeditis litteris, quas perpetuis futuris temporibus valere statuimus, quarumque tenorem praesentibus pro plene et sufficienter expresso et de verbo ad verbum inserto haberi volumus, uberius continetur.

§ 3. Nunc autem nos, memorati catechismi doctrinae christianae usum et frequentiam tantopere commendabilem ac salutarem ne fideles circumferantur tanquam parvuli fluctuantes omni vento doctrinae, sed firmo fidei fundamento adhaerentes coedificentur in habitaculum Dei in Spiritu Sancto, ubique locorum ac gentium propagari, magisque in dies augeri enixe cupientes, supplicationibus etiam plurimorum ex venerabilibus fratribus archiepiscopis et episcopis extra Italiam huiusmodi existentibus, necnon dilectorum filiorum officialium et confratrum archiconfraternitatis Doctrinae Christianae in Urbe praefatae dudum auctoritate apostolicae erectae nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, concessionem indulgentiarum, et peccatorum remissionem, poenitentiarumque relaxationem docentibus et adultis addiscentibus catechismum seu doctrinam christianam in Urbe, Italia, ac insulis adiacentibus a nobis factam, sicut praemittitur, expeditasque desuper litteras nostras praedictas, ad universos christifideles ubicumque locorum nunc et pro tempore existentes, eundem catechismum doctrinamve christianam similiter docentes, et adultos addiscentes, servatam earundem litterarum nostrarum formam et dispositionem, auctoritate apostolica, tenore praesentium, in perpetuum extendimus similiter et ampliamus.

§ 4. Non obstantibus nostram de non concedendis indulgentiis adinstar, aliisque constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ceterisque contrariis quibuscumque.

Obstantibus derogat.

§ 5. Volumus autem ut ipsarum praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in dignitate ecclesiastica con-

Transumptisque credi iubet.

stitutae munitis, eadem prorsus fides adhibeatur, quae adhiberetur ipsis praesentibus si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xvii maii MDCCXXXVI, pontificatus nostri anno vi.

Dat. die 17 maii 1736, pontif. anno vi.

CLXXXI.

Ne de cetero fratres Ordinis Minorum sancti Francisci Capuccini in provinciis Italiae deputari valeant in confessarios ordinarios monialium ab episcopis seu locorum Ordinariis cavet.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Procurator.

Ex iniuncto nobis apostolicae servitutis munere, in eam curam sollicitis studiis intendimus, ut christifideles Altissimi obsequiis sub arctioris vitae instituto famulantes, sublatis quibusvis impedimentis, in quietis et pacis amoenitate vota sua Domino reddant, felicioribusque in dies proficiant incrementis.

Directio monialium spiritui regulae Capuccinorum confertur.

§ 1. Exponi siquidem nobis nuper fecerunt dilecti filii Bonaventura a Ferraria minister, ac definitores generales fratrum Ordinis Minorum sancti Francisci Capuccinorum nuncupatorum, quod, cum aliàs vigore cuiusdam rescripti felicitis recordationis Benedicti Papae XIII praedecessoris nostri concessum fuerit venerabili fratri archiepiscopo Rossanensi, ut fratres dicti Ordinis in confessarios ordinarios monialium monasterii S. Clarae civitatis Rossanensis deputare posset: ipsi exponentes, vel menti ac spiritui regulae eiusdem sancti Francisci, quam fratres praefati profitentur, adversari considerantes, aliisque rationalibus ex causis in eorum definitorio generali perpensis, opportune in

1 Potius lege id pro vel (R. T.).

praemissis a nobis provideri summopere desiderant.

§ 2. Nos, eosdem exponentes specialibus favoribus et gratis prosequi volentes, illorumque singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censes, supplicationibus eorum nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, concessionem supradicto archiepiscopo Rossanensi per memoratum Benedictum praedecessorem, sicut praemittitur, factam, etiamsi postmodum per Sedem Apostolicam confirmata reperiatur, auctoritate apostolica, harum serie, revocamus et abrogamus.

Concessionem recte factam irritam Clemens.

§ 3. Praeterea, ne fratres praefati Ordinis in provinciis Italiae nunc et pro tempore existentes a venerabilibus fratribus archiepiscopis, episcopis, seu dilectis filiis locorum Ordinariis in confessarios ordinarios monialium quovis sub praetextu, praeterquam ubi per litteras apostolicas confessarii ordinarii alicuius monasterii monialium Capuccinarum nuncupatarum destinati forent, deinceps ullatenus constitui seu deputari valeant, dicta auctoritate, tenore praesentium, statuimus et prohibemus.

An deinceps fratres huius Ordinis in eorum confessarios obligeantur in Italia.

§ 4. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac ab illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, in omnibus et per omnia inviolabiliter observari, sicque et non aliter in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii

Sicut iudicari quodcumque prohibet.

apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Derogat contraria.

§ 5. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon, quatenus opus sit, Ordinis et provinciarum huiusmodi, aliisque quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis alias in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die XXIII maii MDCCXXXVI, pontificatus nostri anno VI.

Dat. die 23 maii 1736, pontif. anno VI.

F. card. OLIVERIUS.

CLXXXII.

Erectio confraternitatis sub denominatione sanctae Catharinae nationis Senensium in Urbe commorantium in archiconfraternitatem, cum facultate aggregandi, etc.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Petito super hoc Papae facultas.

§ 3. Exponi nobis nuper fecerunt dilecti filii officiales et confratres confraternitatis christifidelium nationis Senensium in alma Urbe nostra commorantium sub denominatione S. Catharinae Senensis

canonice erectae, quod ipsa confraternitas, quae, ut asseritur, olim instituta, ac etiam ante initium XVI saeculi diversis identidem gratis et privilegiis decorata fuit, atque, iuxta antiqua ipsius statuta a Sede Apostolica confirmata, auctoritate unius ex S. R. E. cardinalibus uti illius protectoris regitur, a felix recordationis Paulo V et Alexandro VII Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris singulis annis die festo eiusdem S. Catharinae unum reum ex causa capitali damnatum liberandi facultatem obtinuit, postquam iam a recolendae memoriae Paulo Papa V praedecessore pariter nostro, per quasdam suas in simili forma Brevis die XVIII iulii MDCCI expeditas litteras, omnes confraternitates in statu Senensi dumtaxat canonice erectas ac erigendas, servata constitutionis piae memoriae Clementis Papae VIII praedecessoris itidem nostri desuper editae forma et dispositione, aggregandi, illisque omnes et singulas indulgentias et peccatorum remissiones ac poenitentiarum relaxationes a Sede praedicta sibi concessas, et alias communicabiles, communicandi licentia perpetuo ei attributa fuerat; recurrentibus vero annis iubilaei hospitalitatem, quam archiconfraternitates dictae Urbis pie exercere solent, hospitio excipiendo omnes confraternitates praefatas ad eandem Urbem pro lucrando iubilaeo huiusmodi accedentes, assidue quoque exercet.

§ 2. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat, ipsi exponentes, confraternitatem praefatam archiconfraternitatis titulo insigniri, plurimum desiderant: nobis propterea humiliter supplicari fecerunt ut sibi in praemissis opportune providere, et ut infra indulgere de benignitate apostolica dignaremur. Nos igitur, ipsos exponentes specialibus favo-

Concessio de qua in rubrica.

ribus et gratiis prosequi volentes, et eorum singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censes, huiusmodi supplicationibus inclinati, confraternitatem praedictam in archiconfraternitatem, cum omnibus et singulis praerogativis, iuribus, honoribus et praeceminentiis solitis et consuetis, auctoritate praefatâ, tenore praesentium, sine cuiusquam praeiudicio, perpetuo erigimus et instituimus. Ac archiconfraternitatis sic erectae officialibus et confratribus praesentibus et futuris, ut ipsi alias quascumque confraternitates eiusdem instituti, extra Urbem praedictam ubicumque locorum existentes, eidem archiconfraternitati, servatâ tamen formâ supradictae constitutionis Clementis praedecessoris, aggregare, illisque omnes et singulas indulgentias et peccatorum remissiones ac poenitentiarum relaxationes, ipsi confraternitati sic in archiconfraternitatem a nobis erectae a Sede Apostolicâ concessas ac communicabiles, ut praefertur, similiter communicare libere et licite possint et valeant, auctoritate et tenore praefatis, itidem perpetuo concedimus et indulgemus.

Praesentis constitutionis littera.

§ 3. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quodcumque spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores,

iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

§ 4. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ac, quatenus opus sit, supradictae confraternitatis, aliisque quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Derogatio contrariorum.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die 1 iunii MDCCXXXVI, pontificatus nostri anno VI.

Dat. die 1 iunii 1736, pontif. anno VI.

CLXXXIII.

Approbatio et ratificatio sententiae commissariorum apostolicorum et regis christianissimi die XXIX maii proximi preteriti latae super quibusdam controversiis civitati Cavallicensi pro parte nonnullorum subditorum eiusdem regis motis circa derivationem aquarum e flumine Druentiae.

Clementis Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

§ 1. Cum, sicut nobis innotuit, controversiae, quae pro parte nonnullorum subditorum carissimi in Christo filii nostri Ludovici Francorum regis christianissimi dilectis filiis communitati et ho-

controversia, de qua in rubrica.

minibus civitatis Cavallicensis in comitatu nostro Venaissino super derivatione aquarum fluminis Druentiae, seu alias, motae fuerant ac vertebant, a nostris et Sedis Apostolicae ipsiusque Ludovici regis commissariis ad id specialiter respective deputatis decisae ac definitae fuerint per sententiam eorundem commissariorum die xxix mensis maii proxime practeriti latam, cuius, de gallico in italicum idioma versae, tenor est qui sequitur, videlicet:

Sententia commissariorum.

Noi commissarij, dopo aver esaminato le istanze e le giustificazioni rispettivamente rimesse dalle parti, ed unitamente al processo la concessione accordata al vescovo di Cavaglione da Raimondo V, conte di Tolosa, marchese di Provenza, nel 1171, per la derivazione delle acque del fiume Durenza, li titoli ed atti possessori prodotti dalla comunità di Cavaglione essendo delle ragioni o diritti del vescovo, dichiarando la detta concessione del 1771 a noi esibita buona e valevole, ed emanata dalli predecessori di sua maestà cristianissima nel detto contado di Provenza, senza attendere l'ordine del tribunale del dominio delli 7 gennaio 1735, quale, attesa la detta esibizione, resterà come seguito non fosse, abbiamo mantenuto e manteniamo la detta comunità di Cavaglione nel possesso e godimento del diritto di derivare le suddette acque dal fiume Durenza per l'uso del molino di S. Giuliano ed altri, e per li adacquamenti, dopo il fine del territorio del castello della Rocca dalla parte di Provenza spettante alla detta comunità fino al territorio di Coumont, in conformità della detta concessione. Noi ordiniamo inoltre che il giudizio arbitrale delli 2 giugno 1733 sarà eseguito in tutti li suoi capi secondo la sua forma e tenore, e ciò mediante concedendo alla detta comunità atto di desistenza o recesso dalla deliberazione delli 8 dicembre 1733 colla quale era deliberato il firmare opposizione alla derivazione riservata al signor marchese d'Oppede dal giudicato arbitrale, inibiamo e proibiamo tanto alla detta comunità, quanto al detto

signor marchese d'Oppede, e ad ogni altro a chi apparterrà, di turbarsi rispettivamente e darsi impedimento nelle derivazioni delle quali si tratta: circa li altri diritti che sono stati loro riservati dal detto giudicato arbitrale, e sopra tutti li altri fini e conclusioni delle parti, le abbiamo rispettivamente poste fuori d'istanza e di lite: ordiniamo, che la detta concessione del conte Raimondo del mese di maggio 1171, e le concessioni fatte dalli vescovi di Cavaglione nel 1235, 1327, 1352 e 1547 saranno registrate nel processo, e che il nostro presente giudicato sarà riferito al nostro Santo Padre il Papa, ed a sua maestà cristianissima, per essere confermato.

A Cavaglione, li 29 maggio 1736.

Sottoscritti: DE LUZI, commissario. — D. ARBAUD JONQUES, commissario. — P. SCUTELLARI, commissario. — RIBERT, commissario. — PINTAT, segretario di stato ed archivist. — REGIBAUD, notaro.

§ 2. Quare nos, praemissa subsistere exacteque observari cupientes, motu proprio, ac ex certà scientiā et maturā deliberatione nostris, deque apostolicae potestatis plenitudine, sententiam praesertim, cum omnibus et singulis in ea decretis ac contentis, harum serie approbamus, ac ratam et gratam habemus, illique apostolicae firmitatis vim, robur et efficaciam adiungimus.

Confirmatur a Pontifice.

§ 3. Decernentes, easdem praesentes litteras perpetuo firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac inviolabiliter observari, sique et non aliter in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Qui hic in perpetuum iudicari iubet.

§ 4. Non obstantibus praemissis, ac constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon, quatenus opus sit,

Derogatur contrariis quibuscunque.

quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate aliàs roboratis, statutis, usibus et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxvii iunii MDCCXXXVI, pontificatus nostri anno vi.

Dat. die 27 iunii 1736, pontif. anno vi.

CLXXXIV.

Indulgentiae pro recitantibus sub horam noctis ad pulsum campanae psalmum De profundis, vel semel orationem dominicam et salutationem angelicam cum versiculo Requiem aeternam, etc.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Prooemium. Caelestes Ecclesiae thesauros, quorum dispensationem nobis commisit Deus, ad christifidelium pietatem fovendam, augendam, et animarum salutem promovendam libenter erogamus.

Indulgentiae de quibus in rubrica. § 1. Itaque, de omnipotentis Dei misericordiae ac beatorum Petri et Pauli apostolorum eius auctoritate confisi, omnibus et singulis utriusque sexus christifidelibus, qui sub horam noctis ad pulsum campanae psalmum *De profundis* vel semel orationem dominicam et salutationem angelicam cum versiculo *Requiem aeternam, etc.*, in suffragium animarum christifidelium defunctorum flexis genibus devote recitaverint, quo die egerint, centum dies de iniunctis eis seu aliàs quomodolibet debitis poenitentiis in formam Ecclesiae consuetam relaxamus.

Indulgentiae pleniores. § 2. Insuper eisdem christifidelibus

§ 2. Insuper eisdem christifidelibus
Bull. Rom. — Vol. XXIV. 26

vere poenitentibus et concessis et sacra communione relectis, qui per annum praemissa peregerint, ac pro christianorum principum concordiam, haeresum extirpationem, ac S. M. E. exaltationem ad Deum preces effuderint, plenariam in uno die cuiuslibet anni dumtaxat per unumquemque christifidelem ad sui libitum eligendo lucrificandam omnium peccatorum suorum indulgentiam et remissionem misericorditer in Domino concedimus et elargimur. Praesentibus perpetuis futuris temporibus valituris.

§ 3. Volumus autem ut earumdem praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiastica dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides ubique locorum habeatur, quae haberetur ipsis praesentibus si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xiv augusti MDCCXXXVI, pontificatus nostri anno vii.

Dat. die 14 augusti 1736, pontif. anno vii.

F. card. OLIVERIUS.

CLXXXV.

Confirmatio Brevis Benedicti XIII super declaratione quod institutum Congregationis Portugalliae monachorum Ordinis S. Hieronymi sit monachale.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Exponi nobis nuper fecit dilectus filius Hyacinthus a S. Michaële, abbas generalis Congregationis Portugalliae monachorum Ordinis S. Hieronymi, quod, cum status seu institutum monasticum dictae Congregationis a nonnullis in

Transumptis
attribuenda
de.

Congregationem hanc Benedictus XIII ad Ordinem monachalem spectare declaravit.

dubium revocaretur, felicitis recordationis Benedictus Papa XIII praedecessor noster, per quendam suam in simili formâ Brevis die xxviii iunii mcccxxv expeditas litteras, auctoritate apostolicâ edixit ac declaravit praefatam Congregationem Portugalliae ad monasticum Ordinem seu institutum pertinere, illiusque religiosos inter monachos vere et proprie recensendos esse, volens proinde ac mandans, ut, qui Ordini praefato nomen dedissent, illumque expresse professi fuissent, pro veris monachis haberentur, cunctasque de monachali eiusdem Congregationis Portugalliae illiusque alumnorum appellatione ac instituto controversias, si quae excitatae essent, amputavit et removit, districtè praecipiens ne quis in posterum super hac re illis negotium faceretur aut litem intenderet, ac aliâs, prout in supradictis Benedicti praedecessoris litteris, quarum tenorem praesentibus pro plene et sufficienter expresso et de verbo ad verbum inserto haberi volumus, uberius continetur.

Huiusmodi declaratio confirmatur a Clemente.

§ 2. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat, ipse Hyacinthus abbas generalis praemissa, quo firmitus subsistant ac servantur exactius, apostolicae confirmationis nostrae praesidio communiri summopere desideret: nos, specialem eidem Hyacintho abbati generali gratiam facere volentes, eumque a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, supplicationibus eius nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, prae-

1 Potius forsan *intendat* (R. T.).

fatâs Benedicti praedecessoris litteras cum¹ omnibus et singulis in eis contentis dictâ auctoritate, harum serie confirmamus, illaque inviolabilis apostolicae firmitatis robor adiciamus.

§ 3. Decernentes, eandem Benedicti praedecessoris ac praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque et non aliter in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, Sedisque Apostolicae nuntios, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari. In contrarium facientibus non obstantibus quibuscumque.

Clausulae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die x novembris mcccxxxvi, pontificatus nostri anno vii.

Dat. die 10 decembris 1736, pontif. anno vii.

F. card. OLIVERIUS.

CLXXXVI.

Statutum circa appellationes et recursus religiosorum Congregationis clericorum regularium Pauperum Matris Dei Scholarum Piarum.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Cum, sicut dilectus filius Ioannes Felix a Praesentatione, praepositus generalis Congregationis clericorum regularium Pauperum Matris Dei Scholarum

Praepositi generalis supplicatio.

1 Praeposit. cum nos addimus (R. T.).

Piarum nuncupatorum, nobis nuper exponi fecit, per plures nostras in simili formâ Brevis litteras, ad sartam tectam tuendam regularis observantiae disciplinam debitamque subditorum erga suos superiores obedientiam et subiectionem, in diversis Ordinibus ac Congregationibus regularibus modum imposuerimus appellationibus et recursibus religiosorum adversus gravamina quae sibi a suis praelatis illata esse passim asse- rebant: ipse Ioannes Felix praepositus generalis idipsum quoque in praedictâ Congregatione clericorum regularium, ad tollendum abusum frequentium appellationum et recursuum extra eandem Congregationem qui in eam sensim invehitur, et longius, nisi mature¹ occurratur, progredi posset, praescribi atque exacte custodiri summopere desideret²:

Modus recur-
sum declara-
tur.

§ 2. Nos, praedicti Ioannis Felicis praepositi generalis votis hac in re, quantum cum Domino possumus, benigne annuere volentes, eumque a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innotatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censes, supplicationibus illius nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, auctoritate apostolicâ, harum serie, statuimus et ordinamus quod nullus dictae Congregationis clericus regularis, aliave persona cuiusvis gradus, dignitatis et conditionis existat, in casibus in quibus de iure vel iuxta Congregationis praefatae constitutiones a Sede Apostolicâ confirmatas appellare aut recurrere licet, id aliter facere valeat,

¹ Edit. Main. legit *maturae* (R. T.).

² Aptius lego *desiderat* (R. T.).

quam gradatim, nempe a rectore collegii seu domus, utpote immediato superiore, ad praepositum provincialem, et deinde ad ipsum praepositum generalem eiusdem Congregationis, itaut causae appellationis seu recursus huiusmodi, antequam a dicto praeposito generali cognitae et definitae fuerint, extra eandem Congregationem deferri et agitari nequeant.

§ 3. Ac propterea omnibus et singulis Romanae Curiae tribunalibus ac iudicibus, et quibusvis etiam S. R. E. cardinalium Congregationibus, nec non Sedis Apostolicae nunciis nunc et pro tempore existentibus, ne clericorum regularium ac personarum Congregationis praefatae appellationes aut recursus admittant, causasque praefatas agnoscant, nisi prius legitime sibi constiterit illas per eundem praepositum generalem prius cognitae et definitae fuisse, sub poenâ nullitatis actorum ac inde secutorum, et, quoad religiosos appellantes vel recurrentes qui praemissis contraverint, sub gravibus nostro et Romani Pontificis pro tempore existentis arbitrio infligendis poenis, dictâ auctoritate, tenore praesentium, prohibemus.

Secus agi
votatur.

§ 4. Decernentes, ipsas praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab illis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Praesenti con-
stitutioni per-
petua firmitas
adilicetur.

Contrariorum
derogatio.

§ 5. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ac Congregationis huiusmodi, aliisque quibuscumque, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indulgiis et litteris apostolicis, in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Transumptio-
rum fides.

§ 6. Volumus autem ut praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiastica dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides ubique locorum tam in iudicio quam extra habeatur, quae ipsis praesentibus haberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xiv novembris mcccxxxvi, pontificatus nostri anno vii.

Dat. die 14 novembris 1736, pontif. anno vii.

CLXXXVII.

Confirmatio edicti publicati ab eminentissimo domino cardinali Corsino, signaturae iustitiae praefecto, in confirmationem privativae iurisdictionis Rotae Maceratensis.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Eminentissimus
Corsinus ad tol-
lendas appella-
tiones in prae-
iudicium Rotae

§ 1. Exponi nobis nuper fecerunt dilecti filii magistratus civitatis nostrae Maceratensis, quod dilectus filius noster Ne-

rius S. R. E. cardinalis Corsinus nuncupatus, noster secundum carnem ex fratre germano nepos, et signaturae nostrae iustitiae praefectus, exorto in provincia nostra Marchiae abusi appellandi in praeiudicium iurisdictionis tribunalis Rotae nuncupati eiusdem civitatis, contra motum proprium felicitis recordationis Sixti V et quasdam litteras Innocentii X Romanorum Pontificum praedecessorum nostrorum in forma Brevis expeditas, opportunum remedium adhibere cupiens, edictum hac in re edidit tenoris qui sequitur, videlicet:

Maceratensis e-
dictum publi-
cat.

Nerio di S. Adriano diacono cardinale Corsini, prefetto della Segnatura di giustizia. —

Edicti tenor.

Accadendo hen spesso, che nelle cause tanto appellabili che ricorribili della provincia della Marca in pregiudizio della giurisdizione privativa del tribunale della Rota di Macerata, e contro la forma ed il tenore del *Motu proprio* di Sisto V emanato sopra l'erezione della medesima Rota, impresso nel Bollario nuovo in ordine const. xcv, tom. II^o, ed anche, rispetto alle cause ricorribili, d'un Breve speciale dalla santa memoria d'Innocenzo X spedito in data delli 5 marzo 1646, i rei soccombenti avanti i giudici locali si fanno lecito ricorrere al nostro monsignore auditore ad effetto d'ottenere particolarmente nelle cause ricorribili la subdelegazione di un altro giudice nel medesimo luogo, e gli stessi curiali *de partibus* talvolta accordano o fanno accordare da curiali di Roma la deputazione d'un altro giudice locale, inscio anche alle volte lo stesso nostro monsignor uditore, con fare il decreto d'accordo, senza neppur far leggere la citazione, con gravissimo pregiudizio anche del pubblico di detta città, che con titolo oneroso ottenne la detta erezione di tribunale, e con continuo gravissimo dispendio soccombe all'annuo peso di supplire del proprio al mantenimento di cinque uditori della detta Rota, oltre la congrua abitazione che le somministra: desiderando noi pertanto dar l'opportuno rimedio ad un tal abuso, coll'oracolo di nostro Si-

1 In h. ed. tom. ix pag. 81, const. cxlv (n. t.).

gnore, e per debito del nostro officio espressamente ordiniamo, che in avvenire non sia lecito ad alcuno de' litiganti della detta provincia della Marca, e molto meno a' curiali si *de partibus* che di Roma, accordare le deputazioni di altro giudice locale, e far il decreto di accordo, senza far leggere la citazione, dichiarando noi irritate, nulle ed attentate tutte le deputazioni che si faranno in avvenire contro la forma di detto *Motu proprio*, e del detto Breve pontificio, e del presente editto; incaricando a monsignor nostro uditore di rigettare tutti li ricorsi che si faranno avanti di lui, quali giudicherà essere contro la forma e tenore della detta costituzione Sistina e di detto Breve Innocenziano. Quale editto per la di lui piena osservanza ordiniamo che venga affisso e pubblicato ne' soliti luoghi di Roma, ed in tutte le città e luoghi di detta provincia, con doversene ritenere una copia affissa in qualsivoglia cancelleria delle città e luoghi di detta provincia, acciò da niuno possa allegarsene l'ignoranza. Dato in Roma questo dì 13 dicembre 1736. — N. card. CORSINI. — G. CABALLINI, uditore.

Magistratus
Maceratensis
confirmari petiit.

§ 2. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat, praedicti exponentes, edictum huiusmodi, quo firmitus subsistat et servetur exactius, apostolicae confirmationis nostrae patrocinio communiri, summopere desiderent:

Quod praestat
Clemens.

§ 3. Nos, specialem ipsis exponentibus gratiam facere volentes, et eorum singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censentes, supplicationibus eorum nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, edictum praesertum a memorato Nerio cardinali et signaturae nostrae iustitiae praefecto

editum, ut praesertur, cum omnibus et singulis in eo contentis, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, confirmamus et approbamus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiciamus, ac omnes et singulos iuris et facti defectus, si qui desuper quomodolibet intervenerint, supplemus.

Sicque servari
et praecipit.

§ 4. Decernentes, easdem praesentes litteras firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quodcumque spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Derogat contrariis.

§ 5. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ac, quatenus opus sit, dictae civitatis, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis aliâ firmitate, roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis, ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die XIII ianuarii MDCCXXXVII, pontificatus nostri anno VII.

Dat. die 13 ianuarii 1737, pontif. anno VII.

F. cardinalis OLIVERIUS.

CLXXXVIII.

Unio provinciae Lombardiae Ordinis fratrum Minorum sancti Francisci Capuccinorum cum custodia Mantuana, et dismembratio conventus Castellionis Stiverorum a provincia Briziae, eidem provinciae Lombardiae incorporati cum aliis quinque conventibus Mantuae, terrae Hostiliae, Goiti, Aquaenigrae et Sermini vici.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Prooemium.

Sacrosancti apostolatus officium, humilitati nostrae per abundantiam divinae bonitatis nullo licet meritorum nostrorum suffragio creditum, salubriter exequi, adiuvante Domino, iugiter satagentes, ad ea, per quae felici prospereque christifidelium Altissimi obsequiis sub suavi religionis iugo mancipatorum regimini consulitur, libenter intendimus, munerisque nostri pastoralis partes propensâ deâsuper parte¹ interponimus, sicut nos, locorum, personarum, rerum et temporum qualitatibus mature pensatis, ad omnipotentis Dei gloriam et religionis incrementum expedire in Domino arbitramur.

Causae facien-
dae unionis et
respective se-
parationis.

§ 1. Exponi siquidem nobis nuper fecerunt dilecti filii superiores et religiosi Ordinis fratrum Minorum sancti Francisci Capuccinorum nuncupatorum provinciae Lombardiae et custodiae Mantuanae, quod, cum, de consensu etiam ac approbatione carissimi in Christo filii nostri Caroli Hispaniarum catholici necnon Romanorum regis in imperatorem electi, inter se convenerint ut in unam eandemque provinciam Lombardiae uniantur, atque secundodicti superiores et religiosi custodiae Mantuanae declaraverint dilectis pariter filiis ministro generali et definitoribus generalibus

¹ Forsan voluntate (R. T.).

praefati Ordinis tum memoratam custodiam Mantuanam, propter penuriam et defectum praesertim sacrificii¹ unde religiosis commodum vestium provenit, aliter non posse subsistere, tum maxime regularem observantiam in suis respective conventibus per eam contiguae provinciae unionem magis² magisque adiuvante Deo firmatum iri: quam quidem unionem cum accessione conventus Castellionis Stiverorum, a provincia Briziae, quemadmodum ipse Carolus rex in imperatorem electus exoptat, separandi et dismembrandi, et aliorum quinque conventuum, videlicet Mantuae, terrae Hostiliae, Goiti, Aquaenigrae et Sermini vici, iidem minister generalis et generales definitores, utpote laudabilem et regulari observantiae in primis conducibilem, necessariam³ approbarunt.

§ 2. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat, dicti exponentes, unionem huiusmodi per nos stabiliri, sibi propterea in praemissis opportune provideri et ut infra indulgeri, plurimum desiderent: nos igitur, piis utrorumque superiorum ac religiosorum votis ad religionis incrementum et felicem progressum tendentibus, quantum cum Domino possumus, favorabiliter annuere volentes, eosque et illorum singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censentes, supplicationibus eorum nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, supradictam provinciam

Approbatur
Pontifice.

¹ Forsan sacrificii (R. T.).

² Vocem magis nos addimus (R. T.).

³ Edit. Main, legit necessarium (R. T.).

Lombardiae cum custodia Mantuanâ perpetuo unimus, coniungimus, adnectimus et incorporamus, necnon conventum Castellionis Stiverorum, quem a provinciâ Brixiae separamus et dismembramus, cum quinque aliis memoratis conventibus, scilicet Mantuae, terrae Hostiliae, Goiti, Aquaenigrae et Sermini vici, eidem provinciâ Lombardiae perpetuo etiam unimus, coniungimus, annectimus et incorporamus.

Sicque in perpetuum praecipit observari.

§ 3. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, inviolabiliter observari, et illis respective in omnibus et per omnia plenissime suffragari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Obstantibus derogat.

§ 4. Non obstantibus praemissis, ac constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon Ordinis, provinciarum ac conventuum praedictorum, aliisque quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Petrum, sub

annulo Piscatoris, die XXI ianuarii MDCCXXXVII, pontificatus nostri anno VII.

Dat die 21 ianuarii 1737, pontif. anno VII.

CLXXXIX.

Indulgentia plenaria a SS. D. N. Clemente PP. XII benigne concessa missionariis Capuccinis Gallis in partibus infidelium existentibus, tum die quo ad ipsa loca missionum pervenerint, tum in articulo mortis.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Caelestium munerum thesauros libenter impertimur iis, quos salutem animarum et gentilium conversionem procurare intelligimus.

Prooemium.

§ 1. Cum itaque, sicut dilectus filius Cherubinus de Noves, frater expresse professus Ordinis Minorum sancti Francisci Capuccinorum nuncupatorum in Romanâ Curia missionum orientalium et occidentalium ac missionariorum Gallorum eiusdem Ordinis procurator, nobis nuper exponi fecit, et diversis regni Galliae provinciis Ordinis huiusmodi plures religiosi viri in gentium conversione maxime laborent, et Sancti Spiritus gratia multum proficiant:

Procuratoris preces.

§ 2. Nos, eiusmodi pia studia intimo cordis affectu plurimum complectentes, illosque specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, universis dicti Ordinis religiosis earundem provinciarum Galliae, qui pro Christi amore et obedientiae merito conversioni gentilium in praefatis orientalium et occidentalium partibus procurandae se accinxerint, die quo ad ipsa loca missionum pervenerint, si confessione praeviâ sacram communionem sumpserint, necnon in mortis articulo, si contriti ac confessi, ac cum

Indulgentiae, de quibus in rubricâ

1 Videtur legendum aut pro ac (R. T.).

proprio confitendi, in itinere seu in ipsa conversione decesserint, plenariam omnium peccatorum suorum indulgentiam et remissionem misericorditer in Domino concedimus et elargimur.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxviii ianuarii mdccxxxvii, pontificatus nostri anno vii.

Dat. die 28 ianuarii 1737, pontif. anno vii.

F. card. OLIVERIUS.

CXC.

Declaratio, quod Ordinariis locorum in Indiis non liceat visitare confraternitates erectas et erigendas in ecclesiis fratrum Ordinis B. Mariae de Monte Carmelo Excalceatorum nuncupatorum Congregationis Hispaniae, nec eorumdem oratoria ruralia.

Clemens, Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Privilegium Ordinis Carmelitarum Excalceatorum erigendi extra Urbem confraternitates.

§ 1. Exponi nobis nuper fecerunt dilecti filii superiores fratrum Ordinis B. Mariae de Monte Carmelo Excalceatorum nuncupatorum Congregationis Hispaniae, quod ipsi, in vim privilegiorum eis a felicitis recordationis Clemente Papa XI praedecessore nostro die xxiv novembris mdcciii concessorum et novissima a nobis die xxvii iunii mdccxxxv respective confirmatorum, ubique terrarum extra hanc aliam Urbem nostram praevalive confraternitates virorum et mulierum sub titulo eiusdem B. Mariae de Monte Carmelo erigere et fundare possunt.

Confraternitates sicut dicuntur confraternitates.

§ 2. Quae quidem confraternitates nec usum sacrorum, neque proprium oratorium sive intra sive extra claustra, neque redditus, et consuetudinem aut onus recitandi divinum officium aliasque preces habent, ullasque functiones

ecclesiasticas peragunt, sed tantummodo processionibus, quae ab iisdem exponentibus in quolibet mense fieri solent ad effectum lucrandi indulgentias eisdem confraternitatibus a Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris concessas¹, intersunt.

Episcopus Mechoacanensis eas visitare tentat.

§ 3. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat, venerabilis frater modernus episcopus Mechoacanensis in Indiis non solum supradictas confraternitates in eorumdem exponentium ecclesiis erectas, necnon etiam quoddam oratorium rurale cuiusdam praedii per dictos exponentes possessi, in quo religiosi memoratae Congregationis missam pro spirituali colonorum ibidem commorantium consolatione celebrare consueverunt, visitare tentaverit; nobis propterea iidem exponentes, ne quid simile in posterum per alios locorum Ordinarios attentari contingat, opportune in praemissis a nobis provideri et ut infra indulgeri summopere desiderant:

§ 4. Nos, ipsos exponentes specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et eorum singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censentes, supplicationibus inclinati, audito super praemissis venerabili fratre nostro Francisco S. R. E. cardinali Barberino nuncupato, sacri cardinalium collegii decano, episcopo Ostiensi et Veliternensi, ac Congregationis eiusdem S. R. E. cardinalium negotiis et consultationibus episcoporum et regularium praeposito-

Declarat Pontifex huiusmodi confraternitatum et oratoriorum ruralium dicti Ordinis visitationem ad Ordinarios non spectare.

¹ Edit. Main. legit concessis (R. T.).

rum praefecto, si preces veritati nitan-
tur, supradictas confraternitates tam in
occleis eorumdem exponentium ere-
ctas et erigendas, quam illorum oratoria
ruralia ab Ordinariis locorum non esse
visitanda, sed a superioribus praedictae
Congregationis Hispaniae, auctoritate
apostolicâ, tenore praesentium, declara-
mus ac decernimus.

Sicque ubi-
libet aervi
praecipit et iu-
dicari.

§ 5. Decernentes pariter, easdem prae-
sentes litteras semper firmas, validas et
efficaces existere et fore, suosque plena-
rios et integros effectus sortiri et obti-
nere, ac illis, ad quos spectat et pro
tempore spectabit, in omnibus et per
omnia plenissime suffragari, sicque in
praemissis per quoscumque iudices or-
dinarios et delegatos, etiam causarum
palatii apostolici auditores, iudicari et
desiniri debere, ac irritum et inane si
secus super his a quoquam, quavis au-
toritate, scienter vel ignoranter, con-
tigerit attentari.

Obstantibus
derogat.

§ 4. Non obstantibus constitutionibus
et ordinationibus apostolicis, ceterisque
contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Ma-
iorem, sub annulo Piscatoris, die xxxi
ianuarii MDCCXXXVII, pontificatus nostri
anno VII.

Dat. die 31 ianuarii 1737, pontif. anno VII.

CXCI.

*Alternativis factis pro nationibus, quibus
constatur provincia Germanica Ordinis
Servorum B. M. V., iam approbatis a
vicario generali Ordinis eiusdem, robur
confirmationis apostolicae adiicitur.*

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Proemium.

Pastoralis officii nostri divinitus com-
missi sollicitudo nos admonet, ut, pa-
ternam religiosorum virorum, qui se se

Bull. Rom. — Vol. XXIV.

27

sub suavi arctioris vitae iugo devoverunt,
curam gerentes, ea, quae tollendis ani-
morum dissidiis stabiliendâque inter
eos fraternâ concordia provide consti-
tuta esse noscuntur, quo firma semper
atque inviolata persistent, apostolici mu-
niminis nostri praesidio robaremus.

§ 1. Exponi siquidem nobis nuper fe-
cerunt dilecti filii Symphorianus Maria
Holzer, frater expresse professus Or-
dinis Servorum B. M. V. per Germaniam
vicarius generalis, ceterique religiosi na-
tionis Austriacae, quod, cum eorum pro-
vincia ex duabus praecipue nationibus,
Tyrolensi videlicet cum proxime adia-
centibus, ex unâ, Austriacâ vero et
Hungaricâ, ex alterâ parte, compacta
reperiatur; verum, propter varium na-
tionum ingenium, ingentem conventuum
ad invicem distantiam, aliasque pluri-
mas causas, tam spiritualis quam tem-
poralis oeconomia, necnon fraterna cha-
ritas et disciplina regularis, ac iustitia
denique distributiva sancte servari vix
possit, nisi cum praedictis nationibus
aequalitas in omnibus et iusta alter-
nativa firmiter stabiliatur: consentien-
tibus eiusdem provinciae religiosis,
quaedam huiusmodi alternativae capi-
tula hinc inde subscripta fuerunt, quae
deinde cum approbatione imperialis de-
creti munita, et a dilecto filio Iosepho
Maria de Inghirami Curti Viglevanensis,
in sacrâ theologia magistro ac dicti Or-
dinis Servorum B. M. V. vicario gene-
rali apostolico, approbata, et, quatenus
opus est, confirmata fuerunt, tenoris qui
sequitur, videlicet:

Provincia Ger-
manica huiusce
Ordinis diversis
constans natio-
nibus nonnullas
pro unione con-
servandâ sancit
alternativas, a
vicario genera-
li totius Ordinis
postmodum
confirmatas.

Frater Ioseph Maria de Inghirami Curti
Viglevanensis sacrae theologiae humilis pro-
fessor, ac totius Ordinis Servorum B. M. V.
vicarius generalis apostolicus. Dilectis vobis in
Christo admodum reverendo patri vicario gene-
rali nostro, provinciali socio, definitoribus,
prioribus, ceterisque patribus ac fratribus pro-

Tenor con-
cordiae.

viacias nostras Germaniae, salutem in Domino sempiternam. — Cum diu optatum sit a vobis, ut in nostra provincia Germaniae, tam in conventibus distinguendis, iisdemque bene regendis, quam in superioribus iuxta iustitiam distributivam eligendis, ac plerisque aliis, tenor aequitatis observetur; ad hunc autem finem consequendum ratio alternationis optimum medium esse videatur; cumque in variis congressibus, non semel communicatis inter vos consiliis, tandem ad eandem alternationem, habito etiam beneplacito sacrae caesareae regiaeque catholicae maiestatis, pervenire efficaciter cupiatur, mature praeterea dictis consiliis examinatis, communicata insuper nobis subscriptione a partibus respective facta, aliisque visis documentis, necnon praecipue capitulis seu conventionibus alternationis quae sequuntur:

Alternativa
provincialis,
eiusque socii.

I. Quolibet triennio, quo celebrandum erit capitulum provinciale, provincialis et socius assumantur alternative, itaut, dum provincialis est Austriacus, socius sit ex Tyrolensibus, et vicissim; idemque circa provincialem ex Austriacis eligendum observandum erit in primo capitulo provinciali; id ipsum pariter fiet in casu obitus provincialis, vel socii, ita quod provinciali succedat in officio primus definitor eiusdem nationis, et socio secundus definitor eiusdem pariter nationis, cuius fuerit ille qui obierit:

De definitorio.

II. In quolibet definitorio sint aequales patres vocales Tyrolenses ex una parte, et patres Austriaci ex alia. Negocia autem, quae ibi pertractabuntur, concluduntur et definiuntur per pluralitatem suffragiorum. Quod si contingat vota tam favorabilia quam contraria esse, iterum et tertio res proponantur; et, si denuo suffragia secreta adhuc aequalia erunt, decisio sit penes praesidem definitorii seu capituli, iuxta constitutiones Ordinis:

Superioribus
localibus, con-
ventuum

III. Cum conventus constituentes unam alternationis partem, quae Austriaca vocanda erit, sint illi qui in Austria et Hungaria reperiuntur; in superiores locales horum conventuum assumantur Austriaci, vel etiam eidem parti incorporati, quae tamen incorporatio extraneorum patrum pro Austriae

et Hungariae conventibus ad superiores maiores nationis Austriacae spectet. Quod idem omnino vicissim servandum erit ex parte Tyrolensium:

Novitiatus.

IV. In posterum sit novitiatus unus in Austria pro candidatis Austriacis et Hungaris, et alter in Tyrolo pro Tyrolensibus et eorumdem incorporatis:

De recipiendis
in unaquaque
provincia ad
professionem.

V. Huiusmodi candidati suscipiantur in definitorio a superioribus propriae nationis respective in aequali vocalium numero, ut supra dictum est, sicut cuique parti in Domino necessarium esse et expedire videbuntur. In praedicto autem definitorio patres utriusque nationis decernant, ne aliqua natio religiosis inutilibus alterius nationis plus iusto gravetur:

Aerario, legatis
et procuratore
nationis.

VI. Aerarium publicum provinciae dividatur, et haereditates ac legata Austriacorum aut Hungarorum spectent pariter ad aerarium dumtaxat partis Austriacae, sicut vicissim spectantia ad Tyrolenses, ad aerarium Tyrolensium devolvantur. Administratio autem aerarii Austriaci ad patres definitorii Austriacos, et aerarii Tyrolensis ad patres definitorii Tyrolenses tantum pertineat. Porro capitalia tam certa quam dubia ad iustitiae et aequitatis regulam aequa lance dividantur. Si autem quaedam ex his capitalibus, facto unius vel alterius nationis, male fuissent elocata vel distracta, ita quod res certa, incerta et dubia redderetur, parti nocenti attribuantur. In procuratorem autem provinciae assumatur persona idonea non habita ratione nationis, quae exacte se conformet constitutionibus Ordinis:

De non trans-
ferenti religio-
nis ab una ad
altam provin-
ciam, nisi ne-
cessitate con-
gubet.

VII. Nullus deinceps religiosus unius nationis ad conventum alterius nationis, sine publica et gravi necessitate, per patres provincialem et socium approbanda, mittatur, et si fieri contingat, expensa solvantur ab aerario illius nationis, in cuius commodo similes mutationes fient:

Initio alter
nationis.

VIII. Huiusmodi alternationis initium datur in futura diaeta provinciae, quae, attentis circumstantiis et necessitatibus praesentibus, fiat statuto tempore Viennae Austriae, atque in illa res disponantur circa superiores eligendos pro conventibus Austriae et

Hungariae conformiter ad numerum tertium horum articulorum. Nihil tamen innovetur circa definitorium, quod idem omnino perseverabit usque ad capitulum provinciale:

Approbatio
vicarii genera-
lis Ordinis.

Hinc, cum et nos maiorem Dei gloriam, Ordinis nostri incrementum, regularis disciplinae observantiam, sanctae iustitiae administrationem, atque firmiorem animorum concordiam ex hac alternatione futuram esse in Domino confidamus: auctoritate officii nostri, et quantum in nobis est, vobiscum convenientes, hanc alternationem executioni demandandam ratam habemus, approbamus, et, quatenus opus est, confirmamus. *In nomine Patris, et Filii, et Spiritus Sancti. Amen.* In quorum fidem praesentes has nostras manu propria subscriptas ac officii nostri sigillo munitas dedimus. Romae, in conventu nostro S. Marcelli, die xxiii ianuarii mdcxxxvi. JOSEPH MARIA vicarius generalis apostolicus Servorum B. M. V. *Loco + sigilli.* Frater PAULUS MARIA CARDI, secretarius Ordinis.

Confirmatio
Pontificia.

§ 2. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat, praefati Symphorianus Maria per Germaniam vicarius generalis, ceterique religiosi nationis Austriacae, praemissa, quo firmitus subsistant, apostolicae confirmationis nostrae patrocinio communiri summopere desiderent: nos, ipsorum exponentium votis, quantum cum Domino possumus, favorabiliter annuere volentes, et eorum singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censes, supplicationibus eorum nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, alternativam de consensu partium factam, et a memorato Iosepho vicario generali approbatam et confirmatam, ut praefertur, confectamque desuper scripturam praeinsertam, cum om-

nibus et singulis in eo contentis, auctoritate apostolica, tenore praesentium, confirmamus et approbamus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiicimus, ac omnes et singulos iuris et facti defectus, si qui desuper quomodolibet intervenerint, supplemus.

§ 3. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Praesentium
litterarum fir-
mitas.

§ 4. Non obstantibus praemissis, ac constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon praedictorum Ordinis et provinciae, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliis in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Contrariis
derogatio.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die vii februarii mdcxxxvii, pontificatus nostri anno vii.

Dat. die 7 februarii 1737, pontif. anno vii.

CXCH.

Prorogatio indulgentiarum a Romanis Pontificibus concessarum sacramentum Eucharistiae sumentibus in ecclesiis, ubi a patribus Societatis Iesu agitur communio generalis.

Clemens Papa XII,
universis christifidelibus praesentes litteras
inspecturis, salutem et apostolicam
benedictionem.

Indulgentiae
ab Innocentio X
concessae Eu-
charistiam su-
mentibus in ec-
clesiis in quibus
a patribus So-
cietatis Iesu
communio ge-
neralis agitur.

§ 1. Cum felicitis recordationis Inno-
centius PP. X praedecessor noster, ad
augendam fidelium religionem et ani-
marum salutem caelestibus Ecclesiae
thesauris piâ charitate intentus, omni-
bus utriusque sexus christifidelibus poe-
nitentibus et confessis, qui aliquam
Societatis Iesu. vel quamcumque aliam
saecularem ecclesiam ubicumque exi-
stentem, unâ ex dominicis cuiuslibet
mensis, qua communio generalis solli-
citudine dilectorum filiorum clericorum
regularium dictae Societatis, et, quoad
ecclesias saeculares, de licentiâ Ordina-
riorum locorum illarumque rectorum
consensu ibidem ageretur, devote visi-
tassent, et iisdem dominicis in aliquâ
ex praedictis ecclesiis sanctissimum Eu-
charistiae sacramentum sumpsissent,
ibique pro christianorum principum
concordiâ, haeresum extirpatione, ac
S. M. E. exaltatione pias ad Deum pre-
ces effudissent, plenariam omnium pec-
catorum suorum indulgentiam et remis-
sionem, quam animabus fidelium defun-
ctorum, quae Deo in charitate coniunctae
ab hac luce migravissent, per modum
suffragii applicare possent, misericordi-
ter in Domino ad quindecim annos
tunc proximos tantum concesserit;

A succes-ori-
bus prorogatae.

§ 2. Et subinde concessionem huius-
modi recolendae memoriae Alexander VII
etiam ad quindecim annos, ac Inno-
centius XI pariter ad quindecim annos, et

Innocentius XII itidem ad totidem annos,
et Clemens XI quoque ad alios quin-
decim annos, necnon Innocentius XIII,
Romani Pontifices praedecessores etiam
nostri, ad simile temporis spatium pro-
rogaverint; et alias, prout in ipsorum
Innocentii X, Alexandri VII, Inno-
centii XI, Innocentii XII, Clementis XI et
Innocentii XIII praedecessorum litteris
desuper in simili formâ Brevis expedi-
tis, quarum tenores praesentibus pro
plene et sufficienter expressis et insertis
haberi volumus, uberius continetur;

§ 3. Sicut autem pro parte dilecti
filii procuratoris generalis dictae Socie-
tatis nobis nuper expositum fuit, quin-
decim annorum, a memorato Innocen-
tio XIII praedecessore, ut praefertur,
prorogatorum, finis instet, cupiatque
propterea idem procurator generalis op-
portune in praemissis a nobis provideri
et ut infra indulgeri: nos, christifide-
lium pietatem caelestium munerum dis-
positioni nostrae a Domino creditorum
elargitione pariter fovere atque incitare
dictique procuratoris generalis votis hac
in re favorabiliter annuere volentes,
eumque a quibusvis excommunicationis,
suspensionis et interdicti, aliisque ec-
clesiasticis sententiis, censuris et poenis,
a iure vel ab homine, quavis occasione
vel causâ latis, si quibus quomodolibet
innodatus existit, ad effectum praesen-
tium dumtaxat consequendum, harum
serie absolventes et absolutum fore cen-
sentes, supplicationibus eius nomine
nobis super hoc humiliter porrectis in-
clinati, concessionem plenariae indul-
gentiae et peccatorum remissionis, a
memorato Innocentio X praedecessore
ad quindecim annos, et a praedictis
Alexandro VII, Innocentio XI, Inno-
centio XII, Clemente XI et Innocentio XIII
praedecessoribus ad alios quindecim an-
nos prorogam ut praefertur, ad quin-

Ad alios quin-
decim
annos
extenduntur.

decim alios annos a fine novissimae prorogationis huiusmodi numerandos, servatâ tamen praedictarum litterarum firmâ et dispositione, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, prorogamus pariter et extendimus, ac denuo concedimus. In contrarium facientibus non obstantibus quibuscumque.

Contrarium derogatio.

Dandaque transumptis fides.

§ 4. Volumus autem, ut, si pro impetratione, praesentatione, admissione seu publicatione praesentium aliquid vel minimum detur, aut sponte oblatum recipiatur, praesens nullae sint; utque ipsarum litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici vel secretarii dictae Societatis subscriptis, et sigillo praepositi generalis dictae Societatis vel alterius personae in ecclesiasticâ dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides ubique locorum habeatur, quae haberetur ipsis praesentibus si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxii februarii MDCCXXXVII, pontificatus nostri anno VII.

Dat. die 22 februarii 1737, pontif. anno VII.

F. card. OLIVERIUS.

CXCIII.

Confirmatio deliberationum circa smutationem commendarum hospitalis S. Ioannis Ierosolymitani aliâs iam approbatarum a magno magistro Ordinis.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Prostatum.

Militantis Ecclesiae regimini divinâ dispositione praesidentes, illa, quae pro felici celerique et proficuâ dignitatum et munerum ecclesiasticorum quorumcumque, et praesertim Ordinum milita-

rium egregiam reipublicae christianae operam pavantium provisione, ac praecavendis litibus et controversiis quae suboriri possent, provide prudenterque deliberata ac ordinata et decreta fuisse noscantur, ut firma atque illibata permanerent, apostolici muniminis nostri praesidio, cum id a nobis petitur, libenter constabilimus.

§ 1. Exponi siquidem nobis nuper fecerunt dilecti filii magnus magister et consilium hospitalis S. Ioannis Ierosolymitani, quod, pro bono ordine et provisione circa smutationem praceptoriarum seu commendarum eiusdem hospitalis, praevisâ quatuor commissariorum a dicto consilio specialiter deputatorum relatione, deliberationes in eodem hospitali servandae in omnibus casibus smutationum huiusmodi factae fuerunt tenoris sequentis, videlicet:

A consilio huius Ordinis data norma smutationum commendarum.

Frater dominus Raymundus Despuig, Dei gratiâ sacrae domus hospitalis S. Ioannis Ierosolymitani et militantis Ordinis S. Sepulchri dominici magister humilis, pauperumque Iesu Christi custos, universis et singulis praesentes, nostras litteras visuris, lecturis et audituris, salutem. — Notum facimus, et in verbo veritatis attestamus, qualiter infrascriptum decretum extractum fuit ex libro conciliorum in cancellariâ nostrâ conservato, in quo similia notari et registrari solent, quod quidem in hanc publicam formam extrahi et redigi iussimus, ut ubique tam in iudicio quam extra eidem plena et indubitata fides adhibeatur, cuius tenor est qui sequitur, videlicet:

Decretum laudati consilii quatuor commissariorum.

Die x mensis ianuarii MDCCXXXVI ab Incarnatione, perfectâ relatione venerandorum commissariorum die xxx augusti proxime praeteriti deputatorum, cuius tenor est qui sequitur, videlicet:

Eminentissimo signore, e sacro Consiglio.

In adempimento della commissione incaricataci dall'E. V. e da questo suo sacro Consiglio per decreto dei 30 agosto scorso, ed ampliata poi sotto li 11 novembre se-

guente, abbiamo esaminato colla dovuta attenzione così quello viene rappresentato nel memoriale dei procuratori della veneranda lingua d'Italia, come anche altri inconvenienti che ponno occorrere in materia di smutizioni, tanto delle commende che si troveranno in rendita, quanto di quelle che si smutiranno in tempo del mortorio e vacante, e per darvi un opportuno provvedimento, siamo convenuti nel parere che V. E. e questo suo sacro Consiglio debbano stabilire ed ordinare l'osservanza di quanto siegue, cioè:

Che venendo alcuna commenda dimandata da più concorrenti, dovranno questi, alla riserva dell'anziano, comparire senz'altra formalità di citazione, e produrre in cancellaria, fra il termine di otto giorni utili a *die smutitionis*, le eccezioni che intendono allegare contro l'anziano o anziani dimandanti, per trattarsi nel primo venturo consiglio da destinarsi da V. E.; e non comparendo alcuno, s'intenderà acquistata al più anziano di detti concorrenti, in tutto e per tutto, come se non vi fosse concorso alcun altro a dimandarla, senza pregiudizio però del comun tesoro, talchè il più anziano suddetto, col solo estratto della veneranda lingua o priorato, senza l'obbligo di ricorrere al venturo consiglio per l'aggiudicazione, potrà e dovrà a suo tempo cavare le Bolle, e per sua morte, rinuncia o privazione vi dovrà essere nuova smutizione. Per la comparsa in cancellaria d'alcuno di quelli che dimanderanno la commenda nel tempo della smutizione, s'intenderanno comparsi pure in cancellaria i di lui anziani che la dimanderanno, di maniera che questi potranno comparire nel primo venturo consiglio da destinarsi da V. E. come se fossero realmente comparsi in cancellaria nel corso del termine prescritto.

Il termine degli otto giorni utili non potrà nè dovrà esser interrotto che dalle ferie statutarie in *honorem Dei*, non ostante che corrano le ferie canicolari. E dal giorno poi in cui sarà reso e pubblicato il decreto che farà V. E. ed il venerando consiglio, dovrà per le smutizioni passate, le quali per le

dimande de' concorrenti restano tuttavia sospese, osservarsi lo stesso che si stabilisce per li casi avvenire.

Se, passato il mortorio e vacante di una commenda dimandata da più fratelli, si smutirà una o più commende, sarà lecito a quelli che dimanderanno la prima, dimandare le seconde, fino a tanto che seguirà la dichiarazione del venturo consiglio sulla loro capacità o incapacità rispetto alla detta prima commenda, e quello, che sarà dichiarato l'anziano capace di quelli che dimanderanno la prima commenda, non acquisterà alcun *ius* sopra la seconda, ed in caso di morte, dimissione, cessione, rinuncia o privazione di detto fratello durante il termine degli otto giorni o pendente lite, si dovrà fare la suddetta dichiarazione, sentiti il venerando comun tesoro, la veneranda lingua o priorato, ed altri interessati, per ragione del loro rispettivo interesse, dimodochè, dichiarandosi capace, succederà nuova vacanza e nuova smutizione.

Se l'anziano dei concorrenti muore, cede, si dismette, o rinuncia, per passare ad altra commenda, prima che dal sacro Consiglio sarà stato dichiarato l'anziano capace, si dovrà esaminare e provare innanzi il sacro Consiglio da destinarsi da Sua Eminenza la capacità del più anziano che morì, si dimise, cedette o rinunciò, e, trovato capace, procedere a nuova smutizione, perchè il vero *gius* si acquista unicamente dall'anziano capace de' concorrenti.

Sebbene l'ordinazione ottava della cancellaria per l'estrazione delle Bolle delle dignità e commende provvedute prefigga il termine d'un mese dopo la smutizione o provista, nullasiadimeno, per motivo che fino all'entrare in rendita hanno campo li commendatori di cambiare più volte, pare che sia convenevole, che il detto termine di un mese debba correre subito dopo entrati in rendita, sotto la pena prescritta dall'ordinazione suddetta da osservarsi inviolabilmente.

E quando l'E. V. e il suo sacro Consiglio giudicheranno approvare questa nostra relazione, crediamo che si debba fare ricorso

a Sua Santità per la confermazione del decreto che sarà reso sulla medesima, colla derogazione di tutto ciò che potrebbe fare in contrario al presente regolamento. Questo è il nostro sentimento, quale sottoponiamo al più maturo discernimento di V. E. Umilissimi ed obbligatissimi servitori e religiosi ubbidientissimi: il priore di Messina fra ANNIBALE VIMERCATI, il gran priore di Alemagna FILIPPO GUILIELMO conte de Nesselrode, il bali frà EMMANUELE PINTO, le bali DE LAVAL MONTMORENCY.

Approbatio
facta per ma-
gnum magi-
strum.

Eminentissimus et reverendissimus dominus magnus magister et venerabile Consilium, cum suffragiorum scrutinio, nemine discrepante, praeinsertam venerandorum commissariorum relationem confirmaverunt et approbaverunt, illamque executioni mandari decreverunt.

Et quia ita se habet veritas, ideo in huius rei testimonium bulla nostra magistralis in cera nigra praesentibus est impressa. Datum Melitae in conventu nostro, die x mensis ianuarii MDCCXXXVI ab Incarnatione iuxta stilum nostrae cancellariae, secundum vero cursum ordinarium MDCCXXXVII. — F. ROCCHUS DE TAVORA vice-cancellarius. Loco † sigilli.

Confirmator
a Pontifice.

§ 2. Quare, magni magistri et consilii praedictorum nominibus, nobis fuit humiliter supplicatum ut in praemissis opportune providere et ut infra indulgere de benignitate apostolica dignaremur. Nos igitur, magnum magistrum et consilium praefatos specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et eorum singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censentes, huiusmodi supplicationibus inclinati, deliberationes per decretum magui magistri et consilii

praefatorum factas, ut praefertur, cum omnibus et singulis denominationibus, declarationibus, et aliis in eis contentis et expressis, auctoritate apostolica, tenore praesentium, confirmamus et approbamus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiicimus, ac omnes et singulos iuris et facti defectus, si qui desuper quomodolibet intervenerint, supplemus.

§ 4. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac magnum magistrum et consilium, aliaque tribunalia quaecumque hospitalis praefati, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Sequitur
vari praecipit.

§ 5. Non obstantibus praemissis, ac constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon dicti hospitalis, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis et consuetudinibus, stabilimentis, usibus et naturis, ac ordinationibus capitularibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis alias in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Obstantibus
derogatur.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xvi februarii MDCCXXVII, pontificatus nostri anno VII.

Dat. die 26 februarii 1737, pontif. anno VII.

CXCIV.

Confirmatio decreti Congregationis episcoporum et regularium, quo indulsit quatenus vicarii generales Congregationis Hispaniae Ordinis fratrum Eremitarum sancti Augustini Discalceatorum nuncupatorum, pro tempore quo extra capitulum ad dictum munus in vim statutorum Ordinis et Congregationis huiusmodi subintraverint, eisdem privilegiis et exemptionibus, quibus electi in capitulo fruuntur, in posterum fruuntur et gaudeant.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Declaratio, de qua in rubrica, alia emanavit a Clemente XI pro prioribus provincialibus.

§ 1. Nuper, pro parte dilectorum filiorum vicarii et definitorii generalium Congregationis Hispaniae Ordinis fratrum Eremitarum sancti Augustini Discalceatorum nuncupatorum, Congregationi venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium negotiis et consultationibus episcoporum et regularium praepositae exposito¹, quod alias felicitis recordationis Clemens Papa XI praedecessor noster per quasdam suas desuper in simili formâ Brevis die xiii februarii MDCCIV expeditas litteras, quarum initium est *Nuper pro parte, etc.*, omnibus prioribus provincialibus eorumdem Ordinis et Congregationis, qui in eodem officio extra capitulum, et in defectum priorum provincialium in capitulo electorum subintrabant, iuxta praescriptum statutorum dictorum Ordinis et Congregationis auctoritate apostolica confirma-

¹ Edit. Main. legit *exposito* (R. T.).

torum, omnia et singula privilegia et exemptiones, quibus priores provinciales in capitulo electi frui solent, concesserat; et in eadem expositione subiuncto quod eadem erat ratio respective quoad vicarios generales eorumdem Ordinis et Congregationis qui in vim statutorum praedictorum pariter in officio vicariis generalibus extra capitulum in defectum vicariorum generalium in capitulo electorum succedebant; cupiebantque propterea dicti exponentes ut eadem Congregatio cardinalium idipsum pro vicariis generalibus extra capitulum declararet: emanavit a praedictâ Congregatione cardinalium decretum tenoris qui sequitur, videlicet:

Petitur confirmari pro vicariis generalibus.

Sacra Congregatio eminentissimorum et reverendissimorum S. R. E. cardinalium negotiis et consultationibus episcoporum et regularium praeposita, ad quam illustrissimus dominus noster supplicem libellum remisit, audito patre procuratore generali Ordinis, ac attentâ relatione eminentissimi domini cardinalis Firrao praefati Ordinis apud Sanctam Sedem protectoris, oratorum precibus benigne indulsit, quatenus vicarii generales pro tempore, qui extra capitulum ad dictum munus in vim statutorum Congregationis subintraverint, eisdem privilegiis et exemptionibus, quibus electi in capitulo fruuntur, in posterum fruuntur et gaudeant. Romae xxii februarii MDCCXXVII. — FRANCISCUS cardinalis BARBERINUS — L. archiepiscopus..., secretarius. *Loco + sigilli.*

Sacra Congregatio decretum.

§ 2. Cum autem, sicut dicti exponentes nobis subinde exponi fecerunt, ipsi decretum huiusmodi, quo firmius subsistat, apostolicae confirmationis nostrae patrocínio communiri summopere desiderent: nos, ipsos exponentes specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et eorum singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a

Confirmatur a Pontifice.

iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censes, supplicationibus eorum nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, decretum praeinsertum, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, approbamus et confirmamus, illique inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiicimus: salvâ tamen in praemissis auctoritate memoratae Congregationis cardinalium.

Sicque servandum statuitur.

§ 4. Decernentes, ipsas praesentes litteras firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore spectabit, plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Obstantium derogatio.

§ 4. Non obstantibus praemissis, ac constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon, quatenus opus sit, Ordinis et Congregationis huiusmodi, et iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et ex-

1 Forsan deest aliis quibusvis, etiam (R. T.).

Bull. Rom. — Vol. XXIV.

presse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die III martii MDCCXXXVII, pontificatus nostri anno VII.

Dat. die 3 martii 1737, pontif. anno VII.

CXCV.

Confirmantur duo decreta edita in conventu generali Congregationis Missionis ad tollenda dubia quae suboriri possent super intelligentiâ constitutionum eiusdem Congregationis.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam,

Ex iniuncto nobis caelitus apostolicae servitutis munere, illa, quae pro felici directione et tranquillitate congregationum virorum ecclesiasticorum in Ecclesiâ Dei pie sancteque institutarum ac uberes bonorum operum fructus studiosâ charitate iugiter proferentium prudenter provideque constituta et ordinata esse noscuntur, ut firma semper atque illibata persistant, apostolici muniminis patrocinio libenter roboramus.

Prooemium.

§ 1. Exponi siquidem nobis nuper fecit dilectus filius Ioannes Conty¹, superior generalis Congregationis Missionis, quod in novissimo conventu generali ipsius, anno proxime praeterito in civitate Parisiensi habito, bina decreta pro dirimendis tollendisque aliquot dubiis, quae super intelligentiâ seu interpretatione nonnullorum articulorum constitutionum eiusdem Congregationis auctoritate apostolicâ confirmatarum progressu temporis facile suboriri potuissent, edita fuerunt, tenoris qui sequitur, videlicet:

In conventu Parisiensi dicta decreta.

1. In conventu generali Congregationis Missionis, qui mense martio anni MDCCXXVI

Quomodo intelligenda sit maior pars sol.

1 Edit. Main. legit *Coutti* (R. T.).

2 Aut potius 1736 (R. T.).

fragiorum super
medietatem.

Parisiis celebratus est, mota est, de numero suffragiorum necessario ut mediam partem excederent, controversia. Cum enim electores essent numero impares, dubitabatur, utrum maior pars censenda esset mediâ parte superior. Re itaque mature expensâ, auditisque singulorum sententiis, definivit conventus, ex triginta quinque electorum, quibus constabat, suffragiis, novemdecim requiri ut assistantium et admonitoris valeret praesens electio, eo scilicet nixus fundamento, quod talis sit numeri imparis ratio, ut in duas partes inaequales divisi maior pars non superet medietatem, sed sit tantum maior medietas; si vero per compromissarios res dirimenda foret, eorum maior pars sufficeret ad electionis vim et firmitatem. Cumque eadem difficultas in posterum occurrere possit, quoties scilicet numerus suffragantium est impar, et plura medietate requiruntur suffragia: statutum est praesens decretum Sanctae Sedi Apostolicae esse exhibendum, ut eius auctoritate confirmetur, idemque in posterum, servatâ numeri proportionem, fiat quod nunc actum est.

Mortuo superio-
riori generali,
vicario autem
generali legiti-
me impedito,
eius sit Con-
gregationis re-
gero.

II. Quoniam constitutionibus a Summo Pontifice confirmatis sancitum est, defuncto superiore generali, eius esse, quem ipse in vicarium generalem nominaverit, vel primi assistentis, si vicarius nominatus non fuerit aut officio suo fungi non possit, Congregationem regere usque ad electionem superioris generalis, nullusque assignatur modus iudicandi de qualitate et diuturnitate impedimenti, quo vicarius generalis detinetur: censuit conventus solvendam difficultatem ut sequitur, quod: si contingeret illum, qui in schedâ manu propriâ defuncti superioris scriptâ nominatus est vicarius generalis, e vitâ decessisse, aut gravi morbo detineri, aliove modo impediri, quominus intra unam aut alteram hebdomadam suo officio, ut par est, vacare possit (de quo morbo aut impedimento assistentes cum sacerdotibus eius domus, ubi sunt arcuæ, modo in Congregatione post emissa vota sexennium exegerint, ad plura suffragia eodem obitus die, et quamprimum fieri poterit, iudicabunt, ita tamen ut in eâ deli-

beratione primus assistens non sit praesens), tunc primum assistentem superioris generalis admittere tamquam vicarium generalem tenebuntur, ita ut vicarius generalis nominatus, sed impeditus, etiamsi postea convalescat, aut ab absentiae, alteriusve generis impedimento liber fiat, nullum amplius ius habeat ad regendam Congregationem. Cumque praesens decretum maximi sit momenti ad tuendam domesticam tranquillitatem, et ad longe removenda quaelibet dissidia, ad Sanctam Sedem Apostolicam deferretur, ut illi vis ac firmitas inconcussa addatur.

§ 2. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat, ipse Ioannes superior generalis, decreta huiusmodi, quo firmitus subsistant ac servantur exactius, apostolicae confirmationis nostrae praesidio communiri et aliâs opportune in praemissis a nobis provideri summo-
petere desideret:

Petita super
his apostolica
confirmatio.

§ 3. Nos, praedictum Ioannem superiorem generalem specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, supplicationibus eius nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, decreta praefata, cum in eis contentis, auctoritate praefatâ, tenore praesentium, confirmamus et approbamus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiciamus, ac omnes et singulos iuris et facti defectus, si qui desuper quomodolibet interverint, sen intervenisse dici, censeri, vel praetendi possent, supplemus et sanamus.

Concedit
Clemens.

§ 4. Praeterea, quod praefatus as-
sistens, pro tempore, admissus tamquam

Assistenti etiam
generali, admissus
tamquam ri-

1 Male edit. Main, legit *interveniri* (R. T.).

vicario generali,
omnes elargitur
facultates, quas
vicario genera-
li competunt.

vicarius generalis dictae Congregationis modo superius enunciato, gaudeat ac potiatur eisdem facultatibus, quas felicis recordationis Clemens Papa XI praedecessor noster, per suas in simili formâ Brevis die ix septembris mdcxiv expeditas litteras, pro tempore itidem esistenti vicario generali, sive nominato a superiore generali, sive electo in conventu generali Congregationis praedictae, tribuit, auctoritate et tenore praedictis, concedimus et indulgemus.

Sicque ubique
servari, ac de-
fectori praecipit.

§ 5. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac ab iis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, in omnibus et per omnia inviolabiliter observari, illisque respective plenissime suffragari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Tollit con-
traria.

§ 6. Non obstantibus praemissis, ac constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon, quatenus opus sit, dictae Congregationis, aliisque quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxvi martii mdcxxxvii, pontificatus nostri anno vii.

Dat. die 26 martii 1737, pontif. anno vii.

CXCVI.

Indulgentia plenaria iis qui aliquam ex ecclesiis clericorum regularium Barnabitarum visitaverint die festo S. Francisci Salesii.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

§ 1. Aliâs felicis recordationis Benedictus PP. XIII, praedecessor noster, omnibus et singulis clericis regularibus Congregationis sancti Pauli Decollati Barnabitarum nuncupatorum vere poenitentibus et confessis ac sacrâ communione refectis, qui aliquam ex ecclesiis dictae Congregationis ubicumque existentibus die festo S. Francisci Salesii a primis vespers usque ad occasum solis diei huiusmodi singulis annis devote visitassent, et ibi pro christianorum principum concordia, haeresum extirpatione, ac S. M. E. exaltatione pias ad Deum preces effuderint, plenariam omnium peccatorum suorum indulgentiam et remissionem misericorditer in Domino perpetuâ concessit, prout in litteris in simili formâ Brevis die vii aprilis mdcxxxviii pontificatus sui anno iv desuper expeditis plenius continetur.

Indulgentiam
de qua in ru-
brica continetur
Benedictus XIII
solis clericis re-
gularibus Bar-
nabitis.

§ 2. Nunc autem nos, ad augendam fidelium religionem et animarum salutem caelestibus Ecclesiae thesauris piâ charitate intenti, ac de omnipotentis Dei misericordia et beatorum Petri et Pauli apostolorum eius auctoritate confisi, necnon supplicationibus dilecti filii Ioannis Baptistae Gropallo procuratoris generalis eiusdem Congregationis no-

Eandem ex-
tentit Clemens
ad omnes chris-
tianos.

mine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, plenariam omnium peccatorum indulgentiam et remissionem a memorato Benedicto praedecessore concessam, ut petitur, ad omnes utriusque sexus christifideles, qui vere similiter poenitentes et confessi ac sacra communione refecti aliquam ex ecclesiis Congregationis huiusmodi die festo S. Francisci Salesii a primis vespers usque ad occasum solis diei huiusmodi singulis annis devote visitaverint, ibique, ut petitur, oraverint, eandem plenariam indulgentiam et remissionem consequantur, auctoritate apostolica, tenore praesentium, perpetuo extendimus et ampliamus. In contrarium facientibus non obstantibus quibuscumque.

Transumptis
eodem addit.

§ 3. Volumus autem ut earumdem praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiastica dignitate constitutae seu procuratoris generalis dictae Congregationis munitis, eadem prorsus fides adhibeatur, quae adhiberetur ipsis praesentibus si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxviii martii mdccxxxvii, pontificatus nostri anno vii.

Dat. die 28 martii 1737, pontif. anno vii.

F. card. OLIVERIUS.

CXCVII.

Confirmatio decreti Congregationis episcoporum et regularium, quo monasterium S. Mariae Sagittarii Ordinis Cisterciensis unum declaratur provinciae Thusciae eiusdem Ordinis.

1 Male edit. Main. legit ubique (R. T.).

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Emanavit nuper a Congregatione venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium negociis et consultationibus episcoporum et regularium praepositorum, in causa dismembrationis monasterii S. Mariae Sagittarii nuncupati provinciae Thusciae Anglonensis dioecesis Ordinis Cisterciensis sancti Bernardi et reunionis provinciae Calabriae eiusdem Ordinis inter dilectos filios superiores utriusque provinciae super infrascriptis dubiis vertente, decretum tenoris qui sequitur, videlicet:

Decretum Congregationis, de quo in rubrica.

Anglonensis seu Ordinis Cisterciensis. Antiquissimum et insigne monasterium S. Mariae Sagittarii Ordinis Cisterciensis situm in provincia Basilicatae seu Lucaniae dioecesis Anglonensis in regno Neapolis, quod ante annum mdccxxxiii a suo superiore regulari de per se regebatur, fuit ad preces superiorum Calabriae a sanctae memoriae Urbano VIII, qui omnia monasteria Cisterciensium erexerat in provincias, de dicto anno mdccxxxiii unum provinciae Calabriae et Lucaniae. Sed quia modico annorum intervallo sub regimine Calabriae in disciplina regulari et substantiis notabiliter decreverat, provide sanctae memoriae Alexander VII ad obviandum tot malis (audito voto clarae memoriae cardinalis Franciotti, tunc eiusdem Ordinis protectoris, bonae memoriae reverendi patris domini Fagnani, et de Alteriis, huius sacrae Congregationis tunc secretarii¹, postea sanctae memoriae Clementis X), motu proprio et matura deliberatione segregavit a provincia Calabriae, et sub die 1 octobris mdclxiv univit et aggregavit regimini Cisterciensium provinciae Thusciae, sub quo gubernio pacifice et cum incremento spirituali et temporali patres vixerunt, regnantibus sanctae memoriae Alexandro VII et Clemente IX, et solummodo ad sanctam memoriam Clementis X reclamantibus patribus regiminis Calabriae, fuerunt eorum

1 Male edit. Main. legit secretariis (R. T.).

preces a Sanctissimo remissae huic sacrae Congregationi: quae, auditis prius relationibus trium archiepiscoporum viciniorum regni, scilicet Matheranensis, S. Severinae, et Rossanensis, causâ mature discussâ, referentibus clarae memoriae cardinalibus Imperiali et Cybo, post plures propositiones sub die xv martii MDCLXXIV prodiit resolutio: *Observandum esse Breve sanctae memoriae Alexandri VII super unione monasterii S. Mariae Sagittarii factâ Congregationi S. Bernardi eiusdem Ordinis provinciae Thusciae*. A qua resolutione non reclamarunt patres regiminis Calabriae nisi de anno MDCCXCIX, quo tempore, remissis eorum precibus a sanctae memoriae Innocentio XII ad sacram Congregationem super statu regularium, eadem sub die xiii ianuarii MDCCXCIX rescipsit: *Servandam esse resolutionem anni MDCLIV*. Postmodum patres regiminis Calabriae anno MDCCXXVI, inauditis patribus regiminis Thusciae, extorserunt a sanctae memoriae Benedicto XIII Breve subreptitium et obreptitium reunionis eiusdem monasterii praefatae eorum provinciae Calabriae. Sed recurrentibus postea patribus superioribus regiminis Thusciae et monasterii S. Mariae Sagittarii ad SS. D. N. Clementem PP. XII feliciter regnantem pro aperitione oris adversus dictum Breve, ac remissis eorum precibus ad hanc sacram Congregationem, referente prius clarae memoriae cardinali Nicolao Spinula, et postmodum eminentissimo et reverendissimo domino cardinali Porzia, disputata fuerunt infrascripta dubia: I. An intret arbitrium pro aperitione oris adversus Breve sanctae memoriae Benedicti XIII in casu: et, quatenus affirmative: II. An sit standum praedicto Breve, seu potius alteri sanctae memoriae Alexandri VII in casu, etc. Sacra Congregatio eminentissimorum et reverendissimorum S. R. E. cardinalium negotiis et consultationibus episcoporum et regularium praeposita, referente eminentissimo domino cardinali de Porzia ponente, partibus auditis, ac re mature perpensâ, ad suprascripta dubia sequentem in modum respondendum censuit, prout respondit, videlicet: ad primum, affirmative; ad secundum,

servandum esse decretum Alexandrinum. Romae xvii septembris MDCCXXXVI. Repositâ vero causâ sub infrascriptâ die, ponente eodem eminentissimo de Porzia, ipsamet sacra Congregatio rescipsit pro executione decreti emanati sub die xvii septembris MDCCXXXVI. Romae xv februarîi MDCCXXXVII. — Card. FRANCISCUS BARBERINUS — C. arch. Chalcedonensis, secret. Loco † sigilli.

§ 2. Cum autem, sicut dilecti filii monachi primodicti monasterii nobis nuper exponi fecerunt, ipsi decretum huiusmodi, quo firmitus subsistat, apostolicae confirmationis nostrae patrocinio communiri summopere desiderent: nos, ipsos exponentes specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et eorum singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium tantum consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censentes, supplicationibus eorum nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, decretum praeinsertum, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, approbamus et confirmamus, illique inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiciamus; salvâ tamen semper in praemissis auctoritate memoratae Congregationis cardinalium.

§ 3. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore spectabit, plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos etiam causarum palatii apostolici auditores iudicari et definiri debere,

Petita apostolica confirmatione, quae conceditur.

Sic ubique iudicandum.

1 Edit. Main. legit *absolutos* (R. T.).

ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

*Ubstantium
derogatio.*

§ 4. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon provinciarum et Ordinis praedictorum, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis alias in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die 1 aprilis MDCCXXVII, pontificatus nostri anno VII.

Dat. die 1 aprilis 1787, pontif. anno VII.

F. card. OLIVERIUS.

CXCVIII.

Indulgentias, alias concessas pro visitantibus ecclesias seu oratoria missionariorum Capuccinorum Gallorum in partibus infidelium existentium, etiam pro animabus christifidelium per modum suffragii applicari posse benigne indulget.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

*Indulgentias
alias concessas.*

§ 1. Cum, sicut dilectus filius Cherubinus de Nove, Ordinis fratrum Minorum sancti Francisci Capuccinorum nuncupatorum professor, dilectorum filiorum missionariorum Gallorum et Hybernorum eiusdem Ordinis in partibus haereticorum et infidelium exi-

stentium in Romanam Curiam procurator, nobis nuper exponi fecit, alias nos omnibus utriusque sexus christifidelibus vere poenitentibus et confessis ac sacra communione resectis, qui aliquam ex ecclesiis seu oratoriis dictorum fratrum missionariorum, mulieribus vero, quibus ad illas seu illa liber non pateret accessus seu ingressus, quae aliam ecclesiam seu oratorium catholicorum earundem partium a custode vel praefecto missionum huiusmodi designandum, in festis diebus, sub certis modo et forma tunc expressis, visitassent, et ibi pro christianorum principum concordia, haeresum extirpatione, ac S. M. E. exaltatione pias ad Deum preces effudissent, quo die ex praedictis id egissent, plenariam omnium peccatorum suorum indulgentiam et remissionem misericorditer in Domino perpetuo concessimus, prout in nostris desuper in simili forma Brevis die xv maii MDCCXXV pontificatus nostri anno V expeditis litteris plenius continetur.

§ 2. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat, christifideles illas indulgentias christifidelium defunctorum animabus per modum suffragii applicari posse plurimum desiderent: nos, huiusmodi supplicationibus inclinati, omnibus et singulis christifidelibus praedictis, ut indulgentias plenarias iisdem diebus, quas de cetero consecuti fuerint, christifidelium defunctorum animabus, quae Deo in charitate coniunctae ab hac luce migraverint, per modum suffragii applicare possint et valeant, auctoritate apostolica, tenore praesentium, itidem¹ perpetuo concedimus et indulgemus, in contrarium facientes non obstantibus quibuscumque.

§ 3. Volumus autem quod earundem praesentium litterarum transumptis, seu

*Pro animabus
defunctorum
applicari con-
cedit.*

*Transumptis
credi iubet.*

¹ Male ed. Main. legit ibidem pro itidem (R.T.).

exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiastica dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides adhibeatur, quae adhiberetur ipsis praesentibus si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die IX aprilis MDCCXXXVII, pontificatus nostri anno VII.

Dat. die 9 aprilis 1737, pontif. anno VII.

CXCIX.

Confirmatio decreti Congregationis Rituum super approbatione sententiae episcopi Pisaurensis de casu excepto a decretis Urbani VIII sive de cultu immemorabili praestito B. Micheliniae viduae, Pisaurensi, Tertii Ordinis sancti Francisci.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Praefatium.

Mulieres fortes, quae praesertim opibus saeculi, potentia propinquorum, nobilitate originis, et inventute ac pulchritudine decoratae, amissis maritis et filiis, et cunctis despectis, per gratiam Spiritus Sancti, accinctae robore, in spiritu ambulantes, ad pedes advolutae Christi, quasi ipsum tenentes, elegerunt abiectas esse in domo Dei, et per arduas christianae perfectionis semitas in odorem unguentorum caelestis Sponsi alacres cucurrerunt, eo maioribus in catholicam Ecclesiam praeconis sunt condignae, quo fortius sexus infirmitatem transgredientes, inculentioribus praeluxerunt exemplis, ut ceterae mulieres, earundem vestigia sectantes, immarcescibilem gloriae coronam in caelis cum ipsis accipere mererentur. Quamobrem apostolicae servitutis officium, quod in-
scrutabilis divinae sapientiae atque bo-

nitatis altitudo humilitati tenuitatieque nostrae credere dignata est, ad spirituales fidelium aedificationem salubriter exequi, adspirante superni favoris auxilio, iugiter satagentes, mulierum huiusmodi, quas non solum eximiarum christianae pietatis virtutum praesidio, sed etiam signorum splendore insignes, aeternae felicitatis participes fecit misericordiarum Pater, cultum et venerationem in terris libenter promovemus, cum, maxime accedentibus virorum et regum maiestate et ecclesiastica dignitate et religionis virtute fulgentium votis, ad divini honoris decus et militantis Ecclesiae incrementum maximopere conducere conspiciamus.

§ 1. Cum itaque alias, ad relationem dilecti filii nostri Vincentii Lodovici S. R. E. presbyteri cardinalis Gotti nuncupati, commissio introductionis causae canonizationis B. Micheliniae viduae e nobili Metellorum gente civitatis nostrae Pisaurensis, Tertii Ordinis sancti Francisci, in Congregatione venerabilium fratrum nostrorum eiusdem S. R. E. cardinalium sacris ritibus praepositorum habita die XI augusti anni MDCCXXXVI proxime elapsi admissa et a nobis postmodum signata fuisset;

§ 2. Subinde vero, instantibus dilecto filio nostro Fabio eiusdem S. R. E. diacono cardinali de Abbatibus Oliverio nuncupato secretario Brevium nostrorum secretorum et dilecto filio Vincentio de Comitibus, Ordinis Minorum sancti Francisci Conventualium etiam nuncupatorum ministro generali, huiusmodi causae postulatoribus, processus in curia episcopali Pisaurensi super cultu ab immemorabili tempore ipsi Beatae praestito, sive super casu excepto a decretis felicitis recordationis Urbani Papae VIII praedecessoris nostri auctoritate ordinaria formatus, in quo venerabilis frater

Introduc-
tio causae canon-
izationis B. Mi-
cheliniae in Con-
gregatione Rituum.

Processus in-
stitutus in curia
Pisaurensi, et
datum decretum
super cultu im-
memorabili.

Philippus episcopus Pisaurensis sententiam super praedicto cultu protulerat, in eadem Congregatione cardinalium examinatus, simulque a dicto Vincentio Ludovico cardinali propositum fuisset dubium, an sententia praedicti Philippi episcopi lata super casu excepto a decretis ipsius Urbani praedecessoris, sive super cultu publico ab immemorabili tempore dictae Beatae praestito, esset confirmanda in casu et ad effectum de quo agebatur; et eadem cardinalium Congregatio resolutionem distulisset, atque interea mandasset fieri diligentias in civitate praedicta Pisaurensi pro perquisitione ac transmissione cuiusdam modi vivendi, regulae et capitulorum dictae Beatae adscriptorum; atque hisce diligentis expletis, novissime delatus fuisset ad hanc almam Urbem nostram parvus processus a praefato episcopo Pisaurensi confectus; et idem Vincentius Ludovicus cardinalis Gotti, ponens, die vi currentis aprilis relationem fecisset omnium contentorum in dicto parvo processu, unde constitit, nihil fuisse reperi- tum, et eadem Congregatio cardinalium censuisset posse procedi ad ulteriora; subindeque, reposito praefato dubio super confirmatione sententiae, matureque discusso processu informativo hac de re constructo, et tam in voce quam in scriptis dilecto filio magistro Ludovico de Valentibus in utraque signaturâ nostrâ referendario, nostro et Apostolicae Sedis notario protonotario nuncupato supra numerum participantium, ac fidei promotore, desuper audito, memorata Congregatio cardinalium responsum edidit: *Affirmative*:

Confirmatur
a Pontifice.

§ 3. Hinc est quod nos, piis carissimi in Christo filii nostri Iacobi Magnae Britanniae regis illustris volis et enixis demissisque tam praedicti Fabii

1 Forſan deest aliquid, ex g. contrarii (n.r.).

quam aliorum etiam ipsius S. R. E. cardinalium et venerabilium fratrum archiepiscopi et episcoporum Status nostri Urbinatensis necnon praefati Vincentii ministri generalis precibus hac in re quantum cum Domino possumus favorabiliter annuere, eosque specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, supplicationibus eorundem nominibus nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, decretum a memoratâ cardinalium Congregatione editum, ut praefertur, quod scilicet de casu excepto a decretis praedicti Urbani praedecessoris, sive de cultu publico ab immemorabili tempore dictae B. Michelinae praestito constet, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, confirmamus et approbamus, illique apostolicae firmitatis robur adicimus: salvâ tamen semper in praemissis auctoritate memoratae Congregationis cardinalium.

§ 4. Decernentes, easdem praesentes litteras firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et spectabit in futurum, plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Clausulae
confirmatoriae.

§ 5. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ceterisque contrariis quibuscumque.

Contrarium
derogatio.

§ 5. Volumus autem ut ipsarum praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiastica dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides in iudicio et extra illud habeatur, quae

Fides transumptis
danda.

haberetur ipsis praesentibus, si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxiv aprilis mdcxxxvii, pontificatus nostri anno vii.

Dat. die 24 aprilis 1737, pontif. anno vii.

F. card. OLIVERIUS.

CC.

Indulgentia plenaria omnibus christifidelibus, qui orationi Quadraginta Horarum in ecclesiis patrum Capuccinorum interfuerint.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Prooemium.

Ad ea, per quae christifidelium salus procuratur animarum, libenter intendimus, eaque¹ favore prosequimur opportuno.

Indulgentia de qua lo rubrica.

§ 1. Cum itaque, sicut accepimus, dilecti filii fratres Ordinis Minorum sancti Francisci Cappuccinorum nuncupatorum orationem² Quadraginta Horarum ad animarum salutem augendam, in ultramontanis partibus, in ecclesiis civitatum et locorum ubi ipsi conventus habent, instituere soleant: nos, pium et sanctum, necnon Deo acceptabile opus huiusmodi promovere cupientes, omnibus utriusque sexus christifidelibus vere poenitentibus et confessis, ac sacra communione relectis, qui orationi Quadraginta Horarum huiusmodi continuatarum (non autem nisi noctis tempore interpolatarum) de licentia Ordinariorum locorum in quibuscumque ecclesiis dictorum locorum semel in anno instituendae per aliquod temporis spatium devote interfuerint, et ibi pro christianorum principum concordia, haeresum, extirpatione,

¹ Edit. Main. legit *eoque* (R. T.).

² Edit. Main. legit *oratione* (R. T.).

ac S. M. E. exaltatione pias ad Deum preces effuderint, plenariam omnium peccatorum suorum indulgentiam et remissionem misericorditer in Domino concedimus.

§ 2. Omnibus vero et singulis confessariis, ab Ordinariis locorum respective approbatis, qui in ecclesiis praedictis occasione dictae orationis ad audiendas confessiones deputati fuerint, omnes et quoscumque utriusque sexus christifideles poenitentes ab omnibus quibuscumque in praeteritum usque ad diem datae praesentium commissis criminibus et excessibus, etiam nobis et Apostolicae Sedi reservatis (haeresis, simoniae ac duelli, et violationis clausurae monasteriorum monialium, et recursus ad iudices laicos contra formam sacrorum canonum, exceptis) necnon excommunicationis, aliisque sententiis, censuris et poenis, etiam in litteris die Coenae Domini legi solitis contentis, in praeteritum similiter usque ad diem datae praesentium incursis, imposita cuilibet arbitrio suo poenitentia salutari, in foro conscientiae tantum absolvendi facultatem, et auctoritatem, pro prima vice tantum, tenore praesentium, concedimus et impertimur.

Facultates ad id concessas confessariis Capuccinis.

§ 3. Non obstantibus apostolicis, ac in provincialibus et generalibus conciliis editis, generalibus vel specialibus, constitutionibus et ordinationibus, ceterisque contrariis quibuscumque Praesentibus¹ quoad indulgentiae huiusmodi concessionem ad septennium proximum tantum valituris.

Obstantium derogatio.

§ 4. Volumus autem ut praesentium transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiastica dignitate constitutae seu procuratoris generalis dicti Ordinis munitis,

Exemplum transumptum.

¹ Vocem *Praesentibus* nos addimus (R. T.).

eadem prorsus fides adhibeatur, quae adhiberetur ipsis praesentibus si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxii maii MDCCXXXVII, pontificatus nostri anno VII.

Dat. die 22 maii 1737, pontif. anno VII.

F. card. OLIVERIUS.

CCI.

Confirmantur capitulationes a parochis almae Urbis factae, et decretum super iisdem a cardinali vicario editum, pro bonâ directione collegii dictorum parochorum.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Statuta non-
nulla a paro-
chis Urbis edita.

§ 1. Nuper pro parte collegii dilectorum filiorum parochorum huius almae Urbis nostrae expositum nobis fuit, quod, cum ipsi parochi, ut assiduis praeiudiciis contra iura parochialia et decreta statuti Cleri Romani quotidie occurrentibus provideretur, statuerint in singulos annos conferre unum quinarium, vulgo grossum, monetae pro quolibet centenario numero animarum solvendum in die octavâ Ascensionis domini nostri Iesu Christi ex maioribus adventitiis pecuniis vulgo *incerti* nuncupatis quae ex funeribus percipiuntur, ut ex eâ assignatione et procuratori stipendium detur et impensae ad praefatam causam necessariae fiant, ac proinde ad bene dirigendas lites, et examinandum quae ex iisdem litibus intentanda et defendenda sit, constituerint secretam congregationem constantem ex camerario cleri et decem parochis, sex videlicet saecularibus et quatuor regularibus, quotannis pro eorundem medietate mutandis, ut quinque illorum consilii re-

rum praeteritarum remaneant, cum facultatibus eidem congregationi eligendi et mutandi ministros stipendiarios, nominandi parochos pro eadem congregationes deputatos, assignandi ipsis munera, de collatiâ pecuniâ disponendi, et interpretandi in dubiis omnes capitulationes ab ipsismet factas, quae quidem omnes et singulae a dilecto filio nostro Ioanne Antonio S. R. E. presbytero cardinali Guadagni nuncupato, in Urbe praefatâ vicario in spiritualibus generali, decreto interposito approbatae sunt, tenoris qui sequitur, videlicet:

Eminentissimo e reverendissimo Signore. — Il Collegio de' parrochi di Roma, umilissimi oratori dell'E. V., con tutto l'ossequio le rappresentano, come nella Congregazione adunata li 22 febbrajo scorso dal camerlengo del clero, con la benigna permissione dell'E. V., tra le altre cose che ivi fu discorso, si trattò delli molti pregiudizi che alla giornata accadono contro il ius parrocchiale, e che a questi non si dà alcun riparo, perchè trattandosi di liti dispendiose, ogni parroco sfugge di farle, per utilizzare più al proprio interesse, che a quello comune dei parrochi: onde per provvedere a sì continui disordini e pregiudizi, come ancora per mantenere sempre in *viridi* osservanza lo statuto del clero, fu colla maggior parte dei voti creduto espediente di annualmente farsi la contribuzione di un grosso per ogni centinaio d'anime, e da pagarsi da chi gode gl'incerti maggiori ne' funerali, per poter con quest'assegnamento tenere un procuratore per la difesa del detto ius parrocchiale e delle disposizioni statutarie del clero, per pagare le spese di copie di scritture, stampe, avvocato, ed altre cose necessarie.

Eminentissimo
vicario perrecta
pro obtinenda
confirmatione.

Fu anche deputata una Congregazione particolare composta del camerlengo del clero con diciassette parrochi, nove secolari e otto regolari, quali furono:

Seculari: S. Pietro in Vaticano; S. Maria in Trastevere; S. Lorenzo in Damaso; Ss. Celso e Giuliano; S. Maria in Grotta Pinta; S. Lorenzo a' Monti; S. Benedetto in Piscivola

stati già camerlenghi del clero; S. Biagio della Pagnota; S. Tomaso a Cenci;

Regolari: S. Lorenzo in Lucina; S. Nicolò a Cesarini; Ss. Apostoli; S. Agostino; S. Maria sopra Minerva; S. Maria del Popolo; S. Maria in Monterone; S. Maria della pace;

Qual Congregazione dovesse stabilire, quando si dovesse fare il pagamento della suddetta contribuzione, da chi esigersi, e tutt'altro per poter ben regolare la difesa delle liti, e del modo e forma da tenersi nell'adunare per l'avvenire una congregazione segreta. Al tenore dunque di tale deputazione fu adunata la suddetta congregazione particolare li 13 marzo scaduto, e in essa fu determinato:

Tenor statutorum.

i. Che li diciassette di sopra nominati deputati della congregazione generale, tenuta li 22 febbraio, dovranno restare sino alla congregazione generale da tenersi dopo la Pentecoste dell'anno MDCCXXXVIII per bene incamminare le liti ed ogni altra cosa; e nella congregazione che da loro preventivamente si terrà, correranno la bussola per tutti loro, e quelli tre de' parrochi secolari, e li due de' regolari, che averanno maggior numero de' voti favorevoli, resteranno deputati della congregazione segreta per il futuro anno.

ii. In avvenire poi la congregazione segreta conterà di soli dieci parrochi con il camerlengo, cioè sei secolari e quattro regolari.

iii. Di questi dieci parrochi uno sarà camerlengo, due sindaci, un segretario, un archivista, e gli altri deputati alle liti.

iv. Per gli altri cinque deputati da eleggersi di nuovo, due de' parrochi si nomineranno dal camerlengo del clero, cioè un secolare ed un regolare, ed uno per ciascheduno dalli deputati della congregazione segreta; quali nominati si balloteranno poi nella congregazione generale, restando eletti quelli cinque che averanno maggior numero de' voti favorevoli, cioè tre de' parrochi secolari e due de' regolari; e quando mai per qualsivoglia contingenza, a riserva però del caso d'uguaglianza de' voti, come si spiegherà in appresso, non seguisse l'elezione,

o nascesse qualche dubbio circa la di lei validità, s'intenda devoluto il *ius eligendi* delli cinque nuovi deputati, da scegliersi dalli detti dodici già proposti, alla congregazione segreta.

v. La distribuzione degli accennati uffici si farà dalla congregazione segreta.

vi. In caso di morte di qualcheduno della medesima congregazione segreta, questa eleggerà in luogo del defunto uno dei deputati dell'anno antecedente, che non furono confermati, quale supplirà per il restante dell'anno.

vii. Se fosse uguaglianza de' voti nella conferma de' deputati, o nell'elezione delli nuovi, i nomi di quelli si metteranno nella bussola, ed il primo che sarà estratto resterà confermato ed eletto.

viii. Questo sistema tanto nella conferma delli deputati, che nella nomina de' nuovi, e nella elezione di questi, si praticherà ogni anno, affinché nella congregazione segreta sia sempre la metà dei deputati già informati.

ix. La contribuzione d'un grosso per ogni centinaio d'anime, stabilita nella suddetta congregazione generale, si farà a proporzione del numero delle anime che si dà annualmente nella segreteria del signor cardinal vicario.

x. Qual contribuzione ragguagliatamente un anno per l'altro ascenderà a scudi settantacinque, de'quali si potrà pagare scudi trentasei al procuratore, scudi tre al mandataro per tutte le citazioni, e li scudi trentasei che restano, serviranno per far scrivere l'avvocato, per copie di scritture, per stampe ed altro che possa occorrere.

xi. Tal pagamento si dovrà esigere ogni anno dentro l'ottava dell'Ascensione del Signore dalli quattordici parrochi prefetti, rispettivamente dalle chiese loro subalterne.

xii. Il parroco camerlengo esigerà poi il detto denaro dai suddetti prefetti, e lo depositerà nel sacro Monte della pietà a credito del collegio de' reverendi parrochi di Roma.

xiii. I pagamenti sempre si faranno con ordine fatto dal segretario della congregazione segreta, sottoscritto dal camerlengo

del clero, e da due parrochi *antiquiori* che si troveranno nella congregazione segreta, e dall'istesso segretario.

xiv. Ogni anno fra l'ottava dell'Ascensione il camerlengo del clero convocherà la congregazione segreta, nella quale si confermeranno cinque della medema, e si nomineranno gli altri da eleggersi nella congregazione generale da farsi ogni anno dopo la domenica dello Spirito Santo, nel modo e forma che si è detto di sopra.

xv. La congregazione segreta avrà ampia facoltà di rimuovere il procuratore ed altri stipendiati, quando sieno morosi e negligenzi nel loro uffizio, e potrà eleggere il nuovo senza che sopra di ciò abbia veruna ingerenza la congregazione generale.

xvi. La predetta congregazione si adunerà almeno una volta il mese, e vi dovrà intervenire anche il procuratore.

xvii. Sarà obbligato il procuratore a difendere tutte quelle cause che riguardano al *ius* parrocchiale, e tutte quelle delle mercedi de' funerali di ciascuna chiesa parrocchiale, ad ogni richiasta del paroco instante.

xviii. Per quello poi che riguarda all'*ius* parrocchiale, spetterà alla medema congregazione segreta l'esaminare maturamente, prima d'assumere qualunque lite, se la di lei decisione possa formare favorevole stato al ceto parrocchiale.

xix. E anche determinerà se si debbano difendere dal procuratore quelle liti che occorreranno al camerlengo del clero per mantenere il *ius* e decoro del camerlengato, o quando vi sia dissensione, si deve sentire il parere dell'eminentissimo signor cardinale vicario.

xx. La suddetta congregazione segreta abbia la piena facoltà d'interpretare e spiegare tutte e ciascheduna delle suddette disposizioni, in caso che nasca qualche dubbio sopra la loro intelligenza.

xxi. Quanto si è di sopra riverentemente esposto all'E. V. fu letto in congregazione generale, tenuta li 6 del corrente mese di maggio, e dalla medema si è approvato il tutto, dando anche ampia facoltà alla predetta congregazione particolare di eleggere

il procuratore, e destinare gli altri che occorreranno per il buon regolamento, ed ancora di sottoscrivere a nome di tutti la presente supplica. Gli oratori pertanto umilmente supplicano l'E. V. a volersi degnare di approvare con suo special decreto tutte le suddette determinazioni, affinché sempre abbiano il loro vigore, e restino obbligate tutte le chiese parrocchiali per l'accennata contribuzione. Ché della grazia, ecc.

Giuseppe canonico Lancisi, camerlengo del clero; Antonio Ricci, curato di S. Pietro in Vaticano; Francesco Antonio Spadea, paroco di S. Maria in Trastevere; Girolamo Vaselli, curato di S. Lorenzo in Damaso; Antonio Piervenanzi, paroco di S. Benedetto in Piscinola; Adeodato Bartali, paroco di S. Biagio in strada Giulia; Giuseppe Cianti, paroco di S. Lorenzo a Monti; Giovanni Battista Valeriani, arciprete de'Ss. Celso e Giuliano; Gasparo Ori, rettore di S. Tommaso a Cenci; Giovanni Domenico Farsetti, abate e rettore di Grotta Pinta, segretario.

Regolari. Antonio Datodi, curato di S. Lorenzo in Lucina; F. Tommaso Maria Marini, curato di S. Maria del Popolo; F. Bonaventura Ferreri, curato de'Ss. XII Apostoli; D. Giovanni Battista Oddi, paroco a Cesarini; F. Tommaso di S. Carlo, paroco di S. Maria in Monterone; D. Camillo Tacchetti, curato della Pace; F. Giovanni Primieri, curato della Minerva; F. Giovanni Domenico Guazzeroni, paroco di S. Agostino.

Cum ad tuenda iuria parochialia et dispositionem statuti cleri romani congregatio parochialis reverendorum parochorum Urbis per nos ad hunc effectum specialiter deputata, maturo desuper habito consilio, ad superius transcriptas provisiones comuni concordiae voto devenerit, ut scilicet unusquisque parochus certam annuam taxam proportionabiliter contribuat, ad rationem videlicet obolorum quinque pro singulis centenis animarum in sua respective parochia degentium, ut ita, accedente hoc annuo proventu, deveniri possit ad electionem diligentis probatique patroni causarum, qui iura universi casus¹ parochorum sarta tecta-

Approbata a
cardinali vica-
rio.

¹ Videtur legendum *coetus* pro *casus* (R. T.).

quo servet, atque; ex¹ superextantibus pecuniis, iudicialibus quoque et extraiudicialibus sumptibus succurratur, ne in posterum, prout dudum fortasse non raro evenit, parochi huius almae Urbis, gravi litium impendio perterriti, irreparabile sibi et successoribus inferant praeiudicium; proinde, auctoritate qua in hac parte fungimur, et ex debito quod ratione muneris vicariatus Urbis nobis incumbit, ne iura ecclesiarum parochialium et sanctiones eiusdem statuti cleri romani indefensa remaneant, resolutiones et provisiones praefatas, modo et forma in supplici libello expressis, approbamus et confirmamus, easque in posterum ab omnibus parochis huius almae Urbis inviolabiliter servari volumus et mandamus. In quorum, etc. Datum ex aedibus nostris postridie nonas maii MDCCXXXVII.

F. I. A. cardinalis vicarius. *Loco + sigilli.*
Visa: STEPHANUS PALLIANI auditor.

Confirmatio
apostolica
roboratur.

§ 2. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat, praefati parochi capitulationes et decretum huiusmodi, quo firmitus subsistant et servantur exactius, apostolicae confirmationis nostrae patrocinio communiri et aliàs opportune in praemissis a nobis provideri summopere desiderant: nos, ipsos parochos specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et eorum singulares personas a quibusvis excommunicationis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore consentes, supplicationibus eorum nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, praecinsertas capitulationes et decretum, cum omnibus et singulis in eis contentis, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, confirmamus et approbamus, illisque

¹ Male edit. Main. legit et pro *ex* (R. T.).

inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiicimus.

§ 3. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Sicque ubi
que servandum
praecipitur.

§ 4. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon, quatenus opus sit, dicti collegii, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis, in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliàs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Obstantibus
derogatur.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxvii maii MDCCXXXVII, pontificatus nostri anno VII.

Dat. die 27 maii 1737, pontif. anno VII.

CCII.

Confirmatio litterarum procuratoris generalis Ordinis Minorum sancti Francisci Discalceatorum, quibus declarat novum conventum et ecclesiam Ss. XL Martyrum de Urbe ad fratres Discal-

ceatos nationis Hispaniae et Indiarum tantum pertinere.

Clemens Papa XII.
ad perpetuam rei memoriam.

Procurator
generalis Ordinis
ad tollenda
dissidia pro-
curatorum in con-
ventu XL Mar-
tyrum fratres
admittantur a
liarum nationum
praeter
Hispaniam.

§ 1. Exponi nobis nuper fecit dilectus filius Petrus Joannetius de Molina, frater expresse professus Ordinis Minorum S. Francisci Discalceatorum nuntiatorum, secretarius generalis Curiae tam dictorum Discalceatorum quam Recollectorum, quod, iussu nostro, capta pacifica possessione ecclesiae et loci Ss. XL Martyrum almae Urbis nostrae pro erigendo conventu Reformationis S. Petri de Alcantara et residentiâ procuratoris generalis pro tempore existentis eiusdem Reformationis et retinendâ familiâ competenti ad servitium chori atque ecclesiae et observantiam disciplinae regularis, dilectus filius Gildardus Duflos, modernus procurator generalis praefati Ordinis, cupiens praecavere plurima inconvenientia, quae decursu temporis oriri possent si familia praefati novi conventus foret promiscua diversarum nationum quae pendent a generali eiusdem procuratore, pro suo iustitiae, boni communis et disciplinae regularis zelo, communicatis etiam consiliis cum ipso Petro Joannetio, et approbantibus provinciis interesse habentibus, convenit et declaravit, quod novus conventus Ss. XL Martyrum, ut praefertur, tantum esse fratrum Discalceatorum nationis Hispaniae, et quod solummodo iidem Discalceati Hispani deberent et possent componere communitatem seu familiam praefati conventus, reservato tamen procuratori generali pro tempore existenti, cuiuscumque fuerit nationis, iure in eodem conventu cum suis necessariis ministris, quos hactenus haberi consuevit, residendi, ut latius continetur in

1 Edit. Main. legit *retinendi* (n. t.).

litteris a praefato Gildardo priore generali subscriptis, quae sunt tenoris sequentis, videlicet :

Ego infrascriptus frater Gildardus Duflos, procurator generalis fratrum Minorum Discalceatorum et Recollectorum in Romanâ Curia, mature perpendens quod provincia Discalceatorum Hispaniae ex communibus eleemosynis, vel etiam ex emendicatis et procuratis ad hunc finem, administraverunt summam scutorum duo millium trigintaduum monetae romanae, cum qua effectuatâ est emptio loci Ss. XL Martyrum pro foundatione novi conventus in Urbe, et insuper administraverunt aliam summam scutorum mille sexcentum quatuordecim pro emptione alterius domus domini abbatis Iosephi de Herrera Hispani, quae est contigua dicto loco foundationis, et alias pecuniarum summas mittere disponunt ad effectum reducendi ad formam regularem eandem novam foundationem; et praeterea plura mobilia miserunt, signanter pro ecclesiâ et sacristiâ :

Litterae hac
super re datae.

Considerans ulterius quod provinciae Portugalliae nihil prorsus miserunt, neque mittere disponunt ad hunc finem; provinciae autem Recollectorum Galliae, licet ante inceptam foundationem sese exhibuissent ad contribuendum effectuationi eiusdem cum competenti summâ pecuniarum, modo tamen se excusant aliquae adducendo deficientiam eleemosynarum, et aliae protestantes se nolle concurrere, nisi omnes aliae eiusdem nationis effective concurrant; unde fit quod nulla sit spes quod dictae foundationi contribuant :

Et ego solus pro meo posse contribuendo, uti effective applicavi, usque modo summam scutorum tercentum viginti monetae romanae ad me missam¹, pro meâ et sociorum meorum manutentione, principaliter a meâ provinciâ S. Andreae in Belgio: quae quidem summâ partim inservit pro aliquibus mobilibus comparandi², et residuum pro communibus expensis pro victu; et insuper paratus sum ad contri-

1 Edit. Main. legit *missa* (n. t.).

2 Edit. Main. legit *comparandi* (n. t.).

buendum eodem modo in posterum cum eleemosynis quae ad me mittentur, ut omnia exactius constabunt ex registro huius novae foundationis :

His omnibus attentis, quae uti vera sunt coram Deo, ea pro iustitiâ cuique debita volui explicata, et quod provinciae Recollectorum mihi replicatis litteris significaverunt se non curare de hac eadem foundatione: propterea, ne eadem praepediatur, et opus, cum consensu communi provinciarum inceptum ad maiorem Dei gloriam, cum eiusdem detrimento et etiam boni communis nostrae reformationis evanescat, declaro et gratum habeo, id exigente iustitiâ, hanc novam foundationem iam inceptam in loco Ss. XL Martyrum Urbis pertinere ad provincias Discalceatorum Hispaniae, neque aliae nationes poterunt praetendere ius mittendi fratres de familiâ ad hunc novum conventum, sed tantummodo dictae provinciae Discalceatorum Hispaniae, comprehensis provinciis Indiarum catholico regi subiectarum; salvo tamen remanente iure procuratoris generalis, cuiuscumque sit nationis, residendi in dicto conventu cum suis necessariis ministris, et recipiendi advenas et forenses Discalceatos et Recollectos, ad Urbem quoquomodo accedentes, ad tenorem decreti sacrae Congregationis episcoporum et regularium emanati sub die xvi decembris anni Domini mdcxxxv pro peragenda hac novâ foundatione. Et ita declaro omni meliori modo, etc. In hoc nostro conventu S. Paschalis Baylon et Ss. XL Martyrum Urbis hac die xii iulii anni Domini mdcxxxvi.

Et ego infrascriptus secretarius generalis Curiae ex parte provinciarum Discalceatorum Hispaniae et Indiarum acceptavi dictam declarationem et respective praeservationem. Et insuper promitto, quod ubi haec nova fundatio erit in statu manutenendi competentem familiam, et fabrica conventus existet convenienter disposita, ministrabit victum et vestitum procuratori generali pro tempore, et ipsius necessariis ministris, quando sufficient ad omnia eiusdem conventus eleemosynae. In quorum fidem has praesentes litteras dictus admodum reverendus pater

commissarius iussit maiori¹ sigillo sui officii et utriusque subscriptione in dictis conventu, die, mense et anno quibus supra. — F. GILDARDUS DUFLOS qui supra. — Fr. PETRUS IOANNETIUS et MOLINA secretarius generalis Curiae. Loco † sigilli.

§ 2. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat, supradictus Petrus Ioannetius, eodem Gildardo procuratore generali approbante, praemissa, quo firmitus subsistant, ac servantur exactius, apostolicae confirmationis nostrae patrocinio communiri plurimum desideret:

§ 3. Nos, eiusdem Petri Ioannetii votis hac in re quantum cum Domino possumus favorabiliter annuere volentes, eumque a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, supplicationibus ipsius Petri Ioannetii nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, praeinsertas litteras et in eis disposita et contenta quaecumque, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, confirmamus et approbamus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis robur adieciimus.

§ 4. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, etc.²

§ 5. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon, quatenus opus sit, Ordinis praefati, etc.³

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die 1 septembris mdcxxxvii, pontificatus nostri anno viii.

Dat. die 1 septembris 1737, pontif. anno viii.

1 Videtur legend. *muniri* pro *maiori* (R. T.).

2 Ut supra pag. 229 b (R. T.).

3 Ut supra pag. 229 b (R. T.).

Huiusmodi declarationem confirmari possit a Pontifice.

Benigne concedit Clemens.

Hanc constitutionem per se servari mandat.

Contraria nulla.

CCIII.

Canonisatio B. Vincentii a Paulo fundatoris presbyterorum saecularium Congregationis Missionis et Societatis Puellarum quae Charitatis nuncupantur.

**Clemens episcopus,
servus servorum Dei,
ad perpetuam rei memoriam.**

Prooemium.

§ 1. Superna Hierusalem et beata Dei viventis civitas, in qua a caelesti patrefamilias unus aeternae vitae denarius aequaliter omnibus, qui in vinea sua operati sunt, distribuitur, habet diversa loca et mansiones, quas quisque pro suo accepturns est merito. Itaque anxios apostolos de morte Christi, et de sua infirmitate trepidos, et de futuro praemio sollicitos, cum audivissent Petrum promptiorem animo ac fidentiore, et qui ceterorum caput et princeps constitutus fuerat, ter Dominum ad galli cantum negaturum, solatus est Christus dominus, dicens: *In domo Patris mei mansiones multae sunt*, significans his verbis, quod nemo eorum, licet alius alio fortior, alius alio infirmior, alius alio iustior, ab illa felici domo excluderetur, in qua multae essent mansiones, nempe diversae meritorum in una vita aeterna dignitates. Siquidem: *alia est claritas solis, alia claritas lunae, alia claritas stellarum; stella enim a stellâ differt a claritate*. Et non una expressa est in Evangelio secunditas: nam *facit aliud quidem centesimum, aliud autem sexagesimum, aliud vero trigesimum*: ubi centenarius fructus martyribus, sexagenarius virginibus, alius aliis assignatur. Multae igitur in domo Dei mansiones, non una stellarum claritas, non idem, sed multiplex est fructus. Ita etiam non una est corona quae tempore persecutionis accipitur; habet et pax coro-

nas suas, quibus de varia et multiplici congressione victores, prostrato et subacto adversario, coronantur: libidinem subegisse, continentiae palma est; contra iram, contra iniuriam repugnasse, corona patientiae est; de avaritia triumphus est pecuniam spernere; laus est fidei fiducia futurorum, mundi adversa tolerare; et qui superbus in prosperis non est, gloriam de humilitate consequitur; et qui ad pauperum fovendorum misericordiam pronus est, retributionem thesauri caelestis adipiscitur; et qui invidere non novit, quique unanimis et mitis fratres suos diligit, dilectionis et pacis praemio honoratur. In hoc virtutum stadio, ad has iustitiae palmas et coronas accipiendas beatus Dei servus Vincentius a Paulo non solum ipse pervenit, sed alios etiam plurimos operâ et exemplo suo perduxit. Nam, tamquam strenuus Dei miles, deponens omne pondus et circumstans peccatum, propositum sibi certamen, aliis virtute praecurrens, inivit, et ad longævam usque senectutem adversus principes et potestates et rectores mundi tenebrarum harum fortiter ac legitime certavit, et de manu Domini in terrâ illâ beatitudine meruit coronari. Quem autem Deus, qui facit mirabilia magna solus, aeternae felicitatis praemio donaverat in caelis, in terris quoque signis ac prodigiis illustrem reddere voluit, eo potissimum tempore, quo in Gallis novatores falsis fictisque miraculis suos diffundere errores, pacem Catholicae Ecclesiae turbare, simplices ab unitate Romanae Sedis abducere conabantur.

§ 2. Itaque, divinae obsequentes voluntati, ut ad currendam viam salutis excitentur fideles, ut perversorum coërcetur pravitas, et haereticorum confundatur improbitas, servum Dei Vincentium

Etiam canonizationem ad confundendos perversorum errores decernit Summus Pontifex.

1 Edit. Main. legit certaverit (n. r.).

ab universo fideli populo, cuius regi-
mini supernâ dignatione immerentes
praesidemus, Sanctorum cultu et honori-
bus colendum ac venerandum, hodiernâ
die, apostolicâ auctoritate decrevimus.
Exultet igitur et gaudeat Ecclesia, no-
vum a Deo patronum sibi oblatum esse
qui pro peccatis populi apud Dominum
preces adhibeat. Laudent eum universi
fideles, et eo cultu atque iis honoribus
prosequantur, quibus Deus in Sanctis
suis honoratur. In psalmis igitur, in
hymnis et canticis spiritualibus, in com-
punctione cordis et egenorum misera-
tione, praeclaram de mundo ac diabolo
relatam victoriam et spiritualem servi
Dei triumphum celebremus. Tempia qui-
dem in eius honorem immortalî Deo
aedificentur; sed nos, qui templum Dei
sumus, humanae pravitatis labe polluere
ac violare timeamus, demusque operam
ne quid immundum aut profanum tem-
plo Dei, hoc est animae nostrae, infera-
tur, ne offensus sedem, quam inhabitat,
derelinquat. Eius memoriae et altaribus
dona et munera offerantur; sed exhibea-
mus quoque corpora nostra hostiam vi-
ventem, sanctam, Deo placentem: ratio-
nabile obsequium nostrum. Eius denique
religiosa simulacra, sacraeque imagines
in veneratione et cultu habeantur; sed
eius virtutum egregiam formam sanctae-
que conversationis imaginem, divinâ
opitulante gratiâ, in nobis ipsis expri-
mere ac repraesentare, quoad cuiusque
nostrum imbecillitas patitur, sollicite
studeamus.

Vincenti or-
tus et prima
sanctitatis ini-
tia.

§ 3. In humili pago, quem Ranquines
dicunt, Aquensis dioecesis, ex pauperri-
mis sed piis parentibus natus est Vin-
centius a Paulo, qui a pueritiâ tamquam
innocens Abel pastor ovium fuit, et ad
eum et ad munera eius respexit Domi-
nus. Nam in innocentia vivens, de suâ
parsimonia et abstinentiâ gratum Deo

offerebat sacrificium pietatis: siquidem
farinam, dum a molâ rediret, et panem
sibi in tenuem victum a parentibus tradi-
tum, pauperibus distribuebat, impendens
virtuti quod propriae subtrahebat sus-
tentationi, ut fieret refectio pauperum
abstinentia ieiunantis. Ardentem enim
pii adolescentuli charitatem paupertas
non retardabat: licet parvum esset quod
posset de suâ facultate decerpere; tam-
en animi magnitudine censûs angus-
tiam superabat. Itaque dimidium scu-
tum, quod quotidianâ parsimoniâ et in-
dustriâ frugalitate e suis laboribus mi-
nutatim collegerat, occurrenti misero
totum elargitus est, ad exemplum illius
pauperculae viduae, quae a Domino me-
ruit laudari, quia non ex eo quod abunda-
bat illi, sed de penuriâ suâ, omnia
quae habuit misit, totum victum suum.

§ 4. Ab agresti et pastoritiâ vitâ avo-
catus a patre Aquas missus est, ut in
convictu² fratrum Ordinis sancti Francisci
litteris operam daret. Id autem sedulo
ac diligenter executus est, eâ morum
integritate et erga Deum pietate se ge-
rens, ut aequalibus exemplo, maioribus
admirationi fuerit. Hinc Tolosae, deinde
Caesaraugustae in theologiae studiis o-
perâ diligenter positâ, castus, humilis
et modestus, et quales in sortem Domini
vocalos esse decet, per omnes ecclesia-
sticos ordines ad sacerdotii sublimem
dignitatem ascendit.

Stultus adhi-
citur, et sacer-
dos ieiunatus.

§ 5. Vix autem fuerat sacerdotali ho-
nore insignitus, inscius et absens, cum
fama eius probitatis et doctrinae incre-
buisset, ad pinguem beneficii praeben-
dam nominatus est; quam ut rescivit
sine iudiciali controversiâ se adipisci
non posse, sponte ac libenter dimisit;
nam, amans potius iniuriam accipere et
fraudem pati, quam iudicio cum fratre

Ad praeben-
dam nominatus
quam rescivit
ob complicitas
litem.

1 Edit. Main. legit. *industria* (R. T.).

2 Edit. Main. *convicto* (R. T.).

contendere, uberi voluit carere proventu, quem¹ sine lite, ab ecclesiastico viro, ut ipse aiebat, omnino fugiendâ, consequi non potuisset.

Tolosae hitorum cum pietatis edocet.

§ 6. Interea, ne aliis oneri esset, sed sibi et pauperi matri victum honestis laboribus et laudabili industriâ subministraret, humaniores litteras in castro non ignobili, quod Busetum vocant, dioecesis Tolosanae, deinde in ipsâ urbe edocuit. Et quoniam eius potissima cura et vigil sollicitudo erat adolescentum mentes non rerum divinarum (?) sterili dumtaxat notitiâ instruere, sed eorum animos ad caelestem sapientiam amplectendam impellere, et mores ad sublimem christianae professionis virtutem et sanctitatem informare, nobiles viri certatim filios suos eius curae committebant, ut in viâ Domini et in sanctorum scientiâ sub tanti viri proficerent evangelicâ disciplinâ et pietatis magisterio.

Massiliâ Narbonem versus navigans, in mare Turcarum incidit, qui violentiam in Africam dederunt.

§ 7. Profectus Massiliam, ut pecuniam, quae ex credito relictæ sibi haereditatis debebatur, acciperet, cum Massiliâ² Narbonem versus remeaturus Tolosam secundo vento navigaret, in Turcas incidit, qui, navis magistro aliisque interemptis, Vincentium, sagittâ vulneratum, vestibus exutum, et catenis onustum, in Africam captivum adduxerunt. Multa et gravia a Turcarum saevitiâ, ne legem Domini sui desereret, passus est, sciens non esse condignas passiones huius temporis ad futuram gloriam quae revelabitur in nobis.

Catenis concipivi ad ipsum suffecit; tertium herum apostolam convertit, cum quo Avinionem venit, ubi iste Ecclesiae reconciliatur.

§ 8. Narrat, cum forte unum e conservis suis sub gravi catenarum pondere misere laborantem conspexisset, nec ad sublevandas miseri illius angustias haberet quod traderet, se ipsum dedisse in vincula ut corporis sui dispendio

¹ Edit. Main. legit *quam* pro *quem* (A. T.).

² Edit. Main. legit *Massiliam* (A. T.).

alienam redimeret calamitatem. Duris agrorum culturæ laboribus immitti ab hero addictus fuerat qui ultimus extitit, nam tres toto captivitatis tempore habuit, eumque saepe consueverat una ex concubinis herilibus adire, quae a nativitate professione mahumetanâ, christianae tamen religionis instituta et fidem audiendi percupida erat. Quadam die, cum plura de Deo et christianâ religione rogasset, iussit ut aliquid cantaret ex canticis Sion. Tunc vero servus Dei psalmum illum: *Super flumina Babylonis illic sedimus et flevimus*, aliaque pia carmina cecinit. Dum autem ad incircumcisas mahumetanae aures sacrum Domini canticum ex ore Vincentii resonabat, Deus operatus est in corde profanae feminae ut aliquam caelestis dulcedinis suavitatem persentiret. Itaque domum regressa, maritum, qui a christianâ fide, ut Mahumetis sequeretur deliramenta, defecerat, convenit, eumque reprehendit religionem suam reliquisse, quam optimam esse censbat, tum ex iis quae de ore servi audierat, tum ex inusitatâ voluptate quam ex cantico perceperat, quantâ neque in maiorum suorum paradiso se fruituram esse sperabat. Verbis feminae commotus, impius ille respexit foeditatem suam, eamque damnavit atque exuere decrevit, adiuvantibus monitis et orationibus probi famuli sui Vincentii; quicum¹ re compositâ, parvâ naviculâ e Turcarum manibus in Gallias aufugit, ibique a Vincentio Apostolicae Sedis Avenionensi prolegato exhibitus, sacris servatis ritibus, impositâque poenitiâ, Ecclesiae reconciliatus est.

§ 9. Romam deinde servus Dei se contulit, ut sacras martyrum veneraretur exuvias, quorum sanguine expiata

Romam venit loca sacra veneraturus.

¹ Nempe cum quo; male edit. Main. legit *qui cum* (A. T.).

Urbs; quae fuerat sedes superstitionis, facta est mater et magistra religionis, et ut ad sepulchra Apostolorum se prosterneret, et cathedram Petri adoraret, cuius dignitas etiam in indigno haerede non deficit.

In Gallias reversus, duas successore parochias rexit, iuniores clericos disciplina ecclesiastica sedulo imbuens.

§ 10. Reversus in Gallias, suadente eximiae pietatis viro Petro Berullo, auctore Congregationis Oratorii Iesu, et postea S. R. E. cardinali, primum in Parisiensi, deinde in Lugdunensi diocesi parochiam administrandam suscepit: ubi, factus forma gregis ex animo, oves sibi commissas dirigens in viam Domini verbo pavit et exemplo. Et quoniam messis quidem multa, operarii autem pauci, iuniores clericos in aedibus suis alendos, educandosque excipit; quibuscum communem vitam agens, eos in lege Domini instruebat, ut, ad maiorem propecti aetatem, possent verbo Dei et doctrinā salubri Ecclesiam Domini aedificare.

Parisiis re-vertitur Vincentius, quem apprime noscens S. Franciscus Salesius monasterium Ordinis Visitationis praedixit.

§ 11. Fama pietatis Vincentii et odor bonae eius conversationis pervenit ad S. Franciscum Salesium, qui eum sanctimonialibus Visitationis nuncupatis, quarum monasterium nuper Parisiis erectum fuerat, praeposuit: in commissio autem sibi difficili ministerio vigil sacrarum ancillarum custos et prudens animarum rector ostendit et opere comprobavit quam verum et rectum esset iudicium sanctissimi praesulis qui sacerdotem Vincentio digniorem nullum se nosse palam affirmabat. Porro per quadraginta annos singulari prudentiā, curā et sollicitudine sacris illis virginibus ad viam salutis beatus Dei servus consuluit, ut, quae a carnali concupiscentiā recedentes tam carne quam mente se Deo voverant, consummarent opus suum, et ad Dei munera per divina praecepta pervenirent.

1 Edit. Main. legit. *eximia pietate* (R. T.).

§ 12. Sed flagrans Vincentii charitas haud intra sanctimonialium claustra continebatur; sed, cum probe intelligeret nullam esse excellentiorem praestantiorumque curam, quam quae curandis sanandisque animis collocatur, ad ineundam spiritualem pugnam contra concupiscentiam carnis et pravitatem mundi, contra superbiam et malitiam saeculi, contra calamitates et miseras filiorum Adam, contra parvulorum ignorantiam, contra demum spirituales nequitias, instruxit exercitus fortium qui praeliarentur praelia Domini. Nam anno MDCXXV instituit Congregationem presbyterorum saecularium Missionis, qui, contemptis atque desertis mundi huius illecebris, in communem vitam castissimam sanctissimamque congregati, nihil proprium habentes, simul aetatem agerent, viventes in orationibus, in lectionibus, in exhortationibus, aliisque spiritualibus exercitiis, quibus clericos saeculares in scientiā Domini, in ecclesiasticis ritibus, et sacro instruerent ministerio, laicos autem, mandatorum divinarum rerumque caelestium meditatione eis propositā, ad viam salutis currendam accenderent: qui perpetuo voto ad peragendum apostolicum sacrarum missionum opus praesertim in pagis, in villis, locisque campestribus, ubi iacentibus in tenebris et umbrā mortis raro evangelicae veritatis lumen affulget, se Deo obstringerent: qui nullā superbiā tumidi, nullā perviciā turbulenti, nullā invidentiā lividi, sed modesti, verecundi, pacati, concordissimam vitam, et intensissimam in Deum proximumque salutem, gratissimum munus omnium bonorum datori offerrent.

Congregationem Missionis instituit B. Vincentius, cuius officia et functiones enumerantur.

§ 13. Christiana autem charitas erga proximum, quae a charitate Dei tamquam a fonte proficiscitur, et mirabili

Perfecta Vincentii charitas animabus potissime consulit, et pro cor-

1 Edit. Main. legit. *offerent* (R. T.).

poribus suble-
vandis socie-
tatem Puella-
rum Charitatis
latisime diffu-
sam instituit.

quoddam modo tamquam gradibus per-
eam ad perfectum Dei amorem ascen-
ditur, non solum providet¹ salutem anima-
rum, sed etiam corporis indigentis con-
sulit². Itaque servus Dei, perfectâ ar-
dens³ charitate, et animis et corporibus
subvenire ac benefacere satagebat, age-
batque quantum poterat ut proximus
salvus corpore salvusque animo esset,
ita tamen ut omnem corporum curam
ad salutem animarum, de qua potissima
debet esse sollicitudo, referret. Quam-
obrem, totis miserationis visceribus com-
patiens calamitatibus et angustiis mise-
rorum praesertim aegrotantium, senum,
puerorum, puellarumque, qui, viribus
infirmi ac debiles, sibi succurrere non
valentes, saepe necessario destituti au-
xilium, suis miseriis opprimuntur, socie-
tatem Puellarum Charitatis nuncupata-
rum fundavit, quae senibus, pueris,
egenis, et omnis generis aegrotantibus
curandis inserviendisque diu noctuque
allaborarent.

Hinc in singu-
lis ferme paroe-
ciis Matrona-
rum sodalitates,
quae aegrotan-
tium curam ha-
berent; socie-
tates puellarum
Crucis, Pro-
videntiae et S.
Genoveffae
auffermandum
requiorem so-
cium instituit,
promovebat au-
tem.

§ 14. Praeterea non solum in singulis
urbium, sed etiam pagorum et villarum
paroeiciis sodalitates Matronarum insti-
tuit, quarum sollicitâ curâ et diligenti
sollicitudine miserorum pressurae et an-
gustiae levarentur, aegrotantibus re-
media tam corporalia quam spiritua-
lia, calamitosis opes atque auxilium,
egentibus pecunia, nudis vestimenta,
afflictis consolatio afferretur. Erigendas
etiam curavit, variisque in locis iam ante
erectas adiuvit, maximeque promovit
societates puellarum Crucis, Providen-
tiae et S. Genoveffae, a quibus edu-
carentur instruerenturque in femineis
opificiis honestisque moribus pauperes
puellae, ne in maturiorem aetatem adul-

tae ignorantia dominicae legis aut di-
vinorum mysteriorum inscitia laberen-
tur¹, vel otiosae discerent circumire do-
mos, et loquentes quae non oportet,
retro Satanam converterentur, vel ma-
nibus laborare nescientes, domesticis
oppressae difficultatibus, ad flagitia et
peccata inopia et egestate impellerentur.

§ 15. Insuper hospitium pro amenti-
bus custodiendis, domum ad immorige-
ros adolescentes corrigendos, et amplum
hospitale ad fovendos alendosque senes
et artifices, qui ad sibi victum manibus
suis quaerendum impotentes calamitate
aliquâ evaserunt, aedificavit. Demum
valetudinaria pro infirmis remigibus, qui
prius in antra more bestiarum detrude-
bantur, Parisiis et Massiliae enixe pro-
curante regia liberalitate constructa et
dotata fuere, in quae miseri illi aegritu-
dine laborantes translati, et spirituali-
bus et corporalibus subsidiis recreantur.

Hospitium pro
amentibus, do-
mum pro disco-
lis, hospitale
pro senibus ar-
tificibus, vale-
tudinaria pro
remigibus Pa-
risiis et Massi-
liae erigenda
curat.

§ 16. Eximia enim Vincentii probitas
vitaeque integritas eo magis magisque
in diem elucens, quo studiosius ab ipso
occultabatur, clarae memoriae Ludo-
vico XIII Galliarum regi innotuerat;
ideoque² vivens eius opera ad distribuen-
das occultas eleemosynas eiusque con-
silio in nominandis clericis ad episco-
pales cathedras et ecclesiastica bene-
ficia utebatur, moriens in ultimo illo
agone Vincentium sibi adiutorem con-
solatoremque esse voluit.

Ludovicus XIII
rex christianis-
simus eius ope-
ra et consilio
utitur, cui mo-
rienti adstitit.

§ 17. Post vero illius obitum, clarae
memoriae Annae Austriacae, illius uxor et
Galliarum regina, eum, licet reluctantem
et invitum, in sanctius conscientiae con-
siliium adscivit. Ipse autem ubique, et in
palatio inter aulicos, et domi inter suos
Missionis alumnos, et in foro inter ci-
ves, et in privatis domibus inter egentes

Consiliarius
reginae Annae
reluctans effec-
tus, eiusque in
hoc munus exe-
quendo con-
stantia.

¹ Edit. Main. legit *providet* (R. T.).

² Edit. Main. habet *consultit* (R. T.).

³ Male edit. Main. legit *ardemus* pro *ardens* (R. T.).

¹ Ni forsitan legendum sit *laborarent* pro *la-
berentur* (R. T.).

² Ni legendum sit: *ideo, qui* (R. T.).

et calamitosos, et in publicis hospitalibus inter senes et aegrotos, et in villis ac pagis inter villicos et agrestes, et in sacrarum virginum asceteriis¹, et in ecclesiasticis clericorum conventibus, et ubique inter omnes, charitatis officia obibat, sanctitatis lucem diffundebat, bonum Christi odorem disseminabat. Siquidem in regia domo, saeculi vanitate contempta, et divitiis ac honoribus conculcatis, ad Deum conversas et in caelo fixas omnes cogitationes suas habebat. Itaque eius praecipua cura fuit ut parochialibus praebendis, ecclesiasticis dignitatibus et beneficiis, quae sunt bona pauperum et patrimonium Christi, digniores praeficerentur; et cum nobiles viri filios suos commendarent, et promissis aut minis urgerent, vel speranda praemia irrisit, vel praetentas minas calcavit; neque anima fortis et robusta detrimento haereditatis Christi et Crucis dispendio potentes sibi optavit amicos, aut de comminatis malis trepida inimicos formidavit.

Socios suos
exemplo virtutum
suarum erudit.

§ 18. Inter suos autem sacrarum missionum socios, quos secum praesertim ad rusticos et agrestes fidei catholicae mysteria et divina praecepta edocendos voto obligari, tum etiam clero rite instituendo aliisque charitatis operibus addici voluerat, robore accinctus ex alto, toto peregrinationis ac conversationis suae tempore fidelem se ministrum, strenuumque ac indefessum vineae Domini cultorem atque operarium exhibuit.

B. Vincentii
prudentia in
regendo socios
suos.

§ 19. Cum autem illorum regimen, non, ut quidam, vim fecisset ut adipisceretur, sed vim passus esset ut acciperet, ita versabatur ut omnes intimis charitatis visceribus complecteretur. Curabat enim ne quem tristitia affligeret, ne cogitatio saecularis urgeret; et vigili pietatis dispensatione providebat ne il-

¹ Edit. Main. legit *asceterii* (R. T.).

lum nimius labor gravaret, ne nimia hic quiete torpesceret, valentes corpore avocans a desidia, ferventes spiritu cogens ad requiem, suave Christi iugum omnibus allevans, et, quidquid diabolus iniecerisset, avertens, omnes in sanctam animorum societatem et perfectam Christi charitatem unitos ad currendum christianarum¹ virtutum stadium verbo et exemplo animabat.

§ 20. Ipse autem, qui omnibus sanctitatis merito et dignitatis gradu antebat et humili animi demissione inferior erat, semetipsum palam hominem dictabat nihili, filium villici, et olim gregis addictum custodiae. Perpetua suae Congregationis praefectura, in generali conventu se ineptum et imparem muneri ferendo prae humilitate affirmans, se abdicavit, et efflagitanti in locum sui alium substitui, ab iteratis totius conventus precibus vis ei quodammodo illata est ut imposterum exerceret. Etenim quo sublimius ad sanctitatis altitudinem Deum cognoscendo et amando ascendebat, eo inferius agnitione et contemplu sui se dimittebat. Ideo vilissima quaeque domus obibat officia, et saepe genibus flexis et fluentibus lacrimis veniam a suis petebat, quod malis exemplis aliorum animos offenderet. Ob² eximia pietatis opera excellentesque virtutes summani gratiam adeptus erat in aula regia; plurimi enim faciebat eum Galliarum regina; et apud omnes tum episcopos tum cardinales, aliosque optimates et ecclesiasticos et saeculares, et apud omnes cuiusvis generis, status et conditionis homines magno in honore et existimatione habebatur. Ipse vero coram Deo omnium bonorum datore³

Mira ipsius
humilitas com-
mendatur.

¹ Edit. Main. habet *christianorum* (R. T.).

² Pessime puncto sublato edit. Main. legit *offendisset ob*, etc. (R. T.).

³ Edit. Main. legit *datore* (R. T.).

humilians se, nihil vanum aut superbum, nihil procerum aut inverecundum, nihil intemperans aut immoderatum vel in opere vel in sermone praeseferebat; sed omnia ordinata et ad christianam disciplinam et evangelicam sanctitatem composita aperte ostendebant, nihil intus latere tenebrarum, ubi foris tanta lux virtutum praesulgebat.

Matorum clericorum seminariorum origo curat.

§ 21. Temporum iniquitas et civilium bellorum tumultus Galliarum cleri sanctitatem invecit ignorantia corruptisque moribus labefactaverat. Ad reparandum decorem domus Dei, restituendamque ecclesiasticam disciplinam vires omnes et cogitationes suas Vincentius intendit. Itaque, ut restauraretur ecclesiasticae disciplinae vigor, qui langore¹ vitiorum enervatus fuerat, religiosas domos recipiendis clericis, qui ad sacros ordines promovendi essent, assignavit; eosque in sacris ritibus peragendis, sanctisque moribus efformandis qui ad gradus dignitatem responderent, per se suosque Missionis socios instruendos curavit. Hinc autem sacrarum caeremoniarum nitor et venerabilis observantia in multis Galliarum ecclesias revocata est.

Sacerdotes pro collationibus spiritualibus adunat.

§ 22. Insuper coetus adunavit sacerdotum, qui statis diebus de divinis rebus inter se conferrent, et se in sacris disputationibus exercebant, ut potentes essent exhortari in doctrinam sanam et eos qui contradicunt arguere.

Sacrae ordinationi praemittendas a clericis spirituales exercitationes novae ipsius methodo digestas in domibus suae Congregationis disposuit.

§ 23. Exemplo autem Moysis, qui, priusquam a Deo praeficeretur Israëlitico populo ut eum e captivitate liberatum per desertum ad sacrificandum Deo in monte et deinde ad terram promissionis deduceret, a strepitu Pharaonis aulae aufugit in solitudinem; ita

¹ Perperam edit. Main. legit puncto sublato labefactaverat ad, etc. (R. T.).

² Videtur legendum languore vel aliquid aptius (R. T.).

clericis in sortem Domini vocatis, qui, in huius mortalis vitae terram desertam et inaquosam, ad altare Domini ministrantes, verbo et exemplo sanctae Dei plebi tendenti ad caelestem patriam, excusso diabolicae captivitatis iugo, praecire debent, auctor fuit, ut, priusquam ad ecclesiasticos gradus ascenderent, a mundanis tumultibus in sanctam secedentes solitudinem, per aliquot dies divinis rebus meditandis contemplandisque sui muneris officiis vacarent.

§ 24. Profecto non solum Dei servus Vincentius egregius fuit ministrorum altaris institutor, sed et boni et fidelis dispensatoris formam in se exhibuit; nam erat veluti omnium egentium et miserorum perfugium, et cuiusvis generis pauperes, erogatis etiam nonnunquam quae sibi suisque missionum sociis videbantur necessaria, ita largis sublevabat eleemosynis, ut communiter pauperum pater nuncuparetur. Assiduam, licet iam proventus esset aetate, apostolico sacrarum missionum ministerio dabat operam, huc illuc alis charitatis super omnem laborem et super senilis aetatis vires volitans, lucem evangelicae veritatis et divinorum mandatorum scientiam ambulantes in tenebris et vitiorum caligine praeseferebat, praesertim pauperrimis villarum et paganorum incolis, quos, luminis christiana fidei destitutos, in ignorantiae nocte per devia aberrantes, in viam Domini reducebat. Et quoniam charitas mensuram non habet, servi Dei virtus Galliarum terminis restricta non est, sed longe lateque diffusa eluxit; nam ad amplificandam fidem et pietatem evangelicos misit ex suis alumnis operarios non solum in Italiam, Poloniam, Scotiam, Hyberniam, sed etiam ad barbaros et Indos, nostrisque terris dissociatas gentes, quas suorum alumnorum opera

Vincentius usque ad decrepitam senectutem missionibus vacat, et operarios zelo animarum incensos in diversas mundi partes mittit.

dispulsis idolatriae tenebris ad lucem veritatis adduxit.

* Multis Galliae provinciis inopiâ preâis inopiâ pecuniarum copiâ subuenit, et domi suae Parisiorum ad duo millia pauperes quotidie redcit.

§ 25. In remotis autem provinciis animarum salutem expetens, corporum etiam egestatibus consulere non omittebat, ut per temporalia subsidia carnales homines ad Deum attraheret. Itaque non modò Lotharingiam, Campaniam, Picardiam, peste, fame belloque vastatas, largiter refecit, missis ingentibus pecuniarum summis, ad quas distribuendas fidei operâ Puellarum Charitatis utebatur, sed in aliis etiam remotissimis regionibus hominibus inopiâ aut calamitate aliquâ laborantibus subvenit. Et cum ipsa Parisiorum civitas ingenti annonae penuriâ gravissime vexaretur, domi suae ad duo millia pauperum sustentavit.

Tot tantisque vexatus curis, nunquam desinit, sed prout ac summe beneficium omnes aequanimiter accipit, ac si aliud nihil sibi esset agendum.

§ 26. Et quamquam variis multisque tum regiae aulae, tum suae Congregationis, aliorumque locorum quae fundaverat, vel quorum curam habebat, distentus negotiis esset, in quibus omnibus indefessam ad Dei gloriam navabat operam; tamen omnium necessitatibus subveniebat, omnium sublevabat angustias, nullum a se repellebat, omnes in Christo complectebatur. Profecto mirum erat quod nemini ad se negaret aditum, faciles omnium postulationibus accommodaret aures, blande responderet, comiter exciperet, nullius concitaret invidiam; sed, omnibus omnia factus, aliorum curaret corpora, aliorum sanaret spiritus, et prout quisque indigens erat, aut vestimentis, aut sumptibus, aut doctrinâ, vestiret, aleret, instrueret, ostendens quemadmodum, etsi non omnibus omnia, omnibus tamen charitas, nulli debeatur iniuria; etenim iniurias, quae ab aliis sibi propter iustitiam inferebantur, tantum absuit, ut, cum facile posset, ulcisceretur, quin neque unquam de illis queri auditus fuerit, quia, de se humili-

ter sentiens, illas, si quando accipiebat, meritò se pati iudicabat. Itaque adeo patienti animo eas tulit, ut a convivium sibi faciente veniam flexis genibus petiverit; percutienti autem maxillam, alteram humiliter praeberit.

§ 27. Militibus caecâ rabie et insano furore¹ infortunatum quemdam artificem iam vulneratum nudis gladiis, ut morti traderent, persequentibus, corpus suum opposuit, et se in apertum vitae discrimen obiecit, ut Deo lucraretur, quem e faucibus praesentis mortis, periculo capitis et sanguinis sui, eripuisset; et quidem, tantâ tamque inusitatâ animi fortitudine attonitis et verbis servi Dei molitis militum animis, pacati recesserunt; miser autem ille vivus evasit.

Inter furentes militum gladios prostratus, miserum artificem a mortis faucibus eripit.

§ 28. Sed quoniam dominicus ager, cuius nos² operarii sumus, rorante desuper gratiâ Dei, fide munitur, ieiuniis exercetur, eleemosynis seritur, orationibus foecundatur; ideo beatus Vincentius, ne mortalis corporis spirituali culturâ neglectâ generosum germen periret, et innascentibus spinis ac tribulis ea producerentur, quae urenda sunt flammis, non quae dominicis horreis reconduntur, membra sua domare, cilicio conterere, ieiuniis aliisque poenitentiae operibus, praecipue in communibus totius Galliarum regni et Catholicae Ecclesiae calamitatibus, consuevit.

§ 29. Si in negotio aliquo gravi et difficili sententiam rogatus responsum dare cogeretur, aut si aliquid arduum et insolitum faciendum sibi propositum esset, Deum, ut sanctus rex David, priusquam rem aggrediretur, consulebat, et supplex a Patre luminum postulabat ut menti suae lucem eius claritatis infunderet, quâ et quae respondenda aut

Licet affectu aetate et corpore imbecilli, nunquam ieiunia et carnis macerationes intermittere, angustiorum dum Ecclesia regnare in aliquo discrimine versatur.

Nihil decorandum aut agendum nisi post effusas Deo orationes, ad examen accipit, ac priusquam rem aggrediretur, consulebat.

¹ Pessime ed. Main. legit favore pro furors (R. T.).

² Edit. Main. legit non pro nos (R. T.).

agenda essent perspiceret, et quae cognita et perspecta essent divina praeventiente gratia sequeretur, et quod bonum et placitum Deo esset, ea adiuvante perficeret. Quoties e cubiculo domus suae prodibat in publicum, se coram Deo in terram prosternebat, et divinam opem enixis sed brevibus precibus implorabat, ne transiens, licet invitatus, per semitas saeculi, et terrena ac mundana tractans, coeno filiorum hominum inquinaretur. Ubi vero domum rediverat, intrabat secreta cordis sui, et latitantem conscientiam ad examen vocabat, et cogitationibus inter se invicem accusantibus aut etiam defendentibus sollicitè inquirebat, studiose emendabat, severe puniebat, si quid imprudens ex ore excidisset, aut incaute operatus esset, adeo diligens erat in custodiendis viis Domini, qui mandavit mandata sua custodiri nimis.

Orationis
studium inter-
mittere non-
quam videtur,
ac Deum sibi
semper prae-
sentem provi-
dere.

§ 30. Assiduae autem orationi deditus, a divinarum rerum contemplatione nullis negotiis, nullis rebus aut laxis aut tristibus abstrahabatur. Deum enim semper praesentem menti habebat, et in eius conspectu stabat; omnia autem, quae ipsius oculis obversabantur, diligenti cura sanctaeque industria effecerat ut rerum omnium Creatorem in eius mentem revocarent et Dei gloriam divinasque laudes ei suo modo loquentes ad caelestem pulchritudinem contemplandam excitarent. Itaque semper modestus et mitis, mansuetus et benignus, in omnibus mirabili animi aequalitate utens, neque laetis efferebatur, neque turbabatur adversis, quia cum Propheta dicere poterat: *Providebam Dominum¹ in conspectu meo semper, quoniam a dextris est mihi ne commovear.*

A sacrificio
missae nun-
quam abstinuit
agonizantium

§ 31. Ab incruento altaris sacrificio nunquam abstinuit, ita vivens ut quoti-

¹ Vocem *Dominum* nos addimus (R. T.).

die offerre posset. Et quia nonnullis precas, quas ante obitum mensibus, ob libiarum morbum gravissime adauctum, pedibus insistere nequibat, aderat quotidie missae sacrificio, et pane angelico refectus, post humilem gratiarum actionem, solennes Ecclesiae preces pro agonizantibus praescriptas, veluti prope diem ex corporeo carcere ad caelestem patriam migraturus, pro animi sensu recitabat.

§ 32. Vivā enim in Deum fide animabatur, cuius, dum vixit, strenuus defensor et propugnator fuit. Nam, exortā in Galliis haereticā tempestate quae turbine suo cuncta turbaverat, ingemuit Dei servus, postquam sensit catholicam fidem in plerisque lansenianā labe violari, et ab haereticorum astutiā plurimorum illudente simplicitati ex omni ordine multos in pravam sensum trahi. Itaque, sancto Dei zelo succensus, contra communes hostes arma fidei arripienda censuit, et quaerens Deo non hominibus placere, sacros Ecclesiae pastores excitavit, ut, supra Christi domini ovile excubias agentes, non sinerent lupos rapaces dominicas oves latenter occidere. Itaque eo quantum poterat hortante ac suadente, octoginta quinque Galliarum episcopi, quibus postea alii adiuncti sunt, clam irrepentem morbum et latentem pestem ad culmen apostolatus, ad cathedram Petri detulerunt, ad quam pericula quaeque et scandala in regno Dei emergentia, ea praesertim quae fidem laedunt, referenda sunt, ut ibi potissimum damna fidei resarciantur, ubi nequit fides sentire defectum. Itaque, datis ad felicitis recordationis Innocentium X praedecessorem nostrum litteris, Galliarum praesules humillimis precibus postularunt, ut apostolico ore pullulantes damnarentur errores, quo suis constabilitā regulis Ecclesia, et eo, quod illi timebant, pronunciationis iu-

Strenuus Fi-
dei defensor:
hinc subito in
Galliis lanseni-
ano acerrimum
bellum indi-
cens, nihil non
movit, donec
impia dogmata
a S. Sede da-
muarentur.

stae firmatâ decreto, improbis ad eam aditus patere non posset, qui perversis instructi verborum ambagibus et callidis argumentorum argutiis sub imagine catholicae fidei disputantes, et pestiferum exhalantes virus, hominum recte sentientium in deteriorem partem corda corrumpere, et totam veri dogmatis de libero arbitrio et gratiâ Dei et hominum redemptione per passionem et mortem Christi domini quaerebant evertere veritatem.

Damnatis lan-
sentii erroribus,
B. Vincentius
hanc pestiferam
labem ab omni-
bus, quos rege-
bat, ecclesiasti-
cis coetibus ar-
cere, labefacta-
tos, quos potuit,
ad viam verita-
tis reducere; po-
tremo pertinaces
a toto Galliarum
regno a supra-
regni regni
potestate ex-
pelli curat.

§ 33. Ubi vero responsum Româ venit, decretum successoris Petri submissâ animi veneratione suscepit, et exultans in Domino sententiâ Apostolicae Sedis causam finitam esse, ut tandem finiretur error summo studio allaboravit. Et prima eius cura ac sollicitudo fuit, ut ab omnibus religiosis coetibus, quos ipse fundaverat, vel quorum curam gerebat, ut occulta catholicae fidei inimica pestis arceretur, ne labidae alicuius partis contagione sana quoque membra corrumpere-
rentur. Praeterea magnam noscens esse pietatem prodere latebras impiorum, et ipsum in eis, cui serviunt, diabolum debellare, apostolicâ libertate, qualis in negotio fidei servum Dei decet, regem, reginam, regiosque ministros commonere non destitit, ut debitis poenis contumaces ad obedientiam inducerent, pertinaces vero in suis erroribus e toto Galliarum regno tamquam pestiferam luem propellerent, atque ita saecularis districtio prodesset ecclesiasticae lenitati, quae etsi sacerdotali contenta iudicio cruentas refugit ultiones, severis tamen christianorum principum constitutionibus adiuvatur, dum ad spirituale nonnunquam recurrunt remedium, qui timent corporale supplicium.

B. Vincentius,
anno a Nativitate
Christi
MDCLX, aetatis
suae LXXIV, ple-

§ 34. Demum plenus dierum et mensorum, cum ad octogesimum quintum suae aetatis annum pervenisset, non mi-

¹ Male edit. Main. legit *sententiae* (R. T.).

Bull. Rom. — Vol. XXIV.

34

nus senio quam laboribus¹, quos pietatis operibus et animarum saluti iugiter intentus alacriter susceperat et ad extremum usque spiritum fortiter toleraverat, Ecclesiae sacramentis munitus, caelestia anhelans, terrena despiciens, sacerdotibus extrema religionis officia praebentibus, ad verba illa sibi familiaria: *Deus, in adiutorium meum intende*, respondens: *Domine, ad adiuvandum me festina*, non de suâ virtute sed de divino adiutorio confisus, Parisiis in domo S. Lazari presbyterorum saecularium Congregationis Missionum feliciter cursum consummavit v kalendas octobris anno MDCLX.

§ 35. Post eius mortem longe lateque famâ sanctitatis percrebuit, quam etiam multis Deus contestatus est signis et miraculis, quibus admirabilis eius providentia abundantior exanimis servi sui reliquiis venerationem conciliavit, declarans quanto in honore apud Deum eius anima esset, cum apud eius corpus, quod vitâ emigrante tamquam deforme² remanserat, tam evidenter praesens vitae dator appareret³.

§ 36. Itaque Parisiis duo processus, ut moris est, auctoritate ordinariâ constructi fuerunt, alter super famâ sanctitatis, virtutibus et miraculis, alter vero super cultu non exhibito. Quibus permissu felicitis recordationis Clementis XI praedecessoris nostri apertis, eorumque validitate in sacrôrum rituum Congregatione approbatâ, die iv mensis octobris anno Domini MDCCIX, commissio introductionis causae signata fuit. Subinde, praemissis omnibus quae ex Apostolicae Sedis praescripto in hisce cau-

non dierum avo-
lat ad caelum.

Post mortem
viri Dei, eius
fama sanctitatis
et miraculorum
longe lateque
percrebuit.

Instructis so-
litis processibus
auctoritate or-
dinariâ anno
MDCCIX, et pra-
habitis congrega-
tionibus praepa-
ratoris de
anno MDCCXV et
MDCCXVII, postea
in congregatio-
ne generali an-
no MDCCXXVI e-
manatum est de-
cretum constans
de virtutibus in
gradu heroico.

¹ Videtur deesse *fractus*, aut *consumptus*, aut simile (R. T.).

² Nempe, naturali eius formâ, quae est anima rationalis, destitutum (R. T.).

³ Edit. Main. legit *apparet* (R. T.).

sis exiguntur, tractatum est an constaret de virtutibus theologalibus et cardinalibus in gradu heroico. Post ultimam autem Congregationem venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium sacris ritibus praepositorum, quae generalis fuit, pia memoriae Benedictus XIII, qui nobis in pontificatu praecessit, die xxi mensis septembris anno Domini mcccxxvii decretum, videlicet constare de virtutibus tum theologalibus tum cardinalibus in gradu heroico, publicari mandavit.

Construendis
Hic processibus
super miraculis,
in tertia congrega-
tione generali
anno mcccxxvii
approbata fuit
quatuor.

§ 37. Ventum est deinde ad examen miraculorum, quod¹ peractum fuit in tribus congregationibus, quarum ultima generulis habita fuit die xii mensis iulii eiusdem anni, et approbata fuerunt quatuor miracula, scilicet: Primum, subitae sanationis Claudii Iosephi Compoin a caecitate; secundum, instantaneae largitionis loquela et virium Mariae Annae Lhullier puellae octenni a nativitate mutae et ad motum artuum inferiorum impotenti; tertium, instantaneae sanationis sororis Mathurinae Guerin ab inveterato et maligno ulcere in tibia; quartum verò subitae sanationis Alexandri Philippi le Grand ab inveterata et contumaci paralyti.

Hic miracula
admissa, praedi-
cta Congregatione,
Benedicto XIII appro-
bante, censet
H. Vincentium
Beatorum ca-
talogo adscribi
posse et Cle-
mensi XII anno
mcccxxix mis-
sam et officium
de eo concedit.

§ 38. Quod autem de miraculis a praefata Rituum Congregatione iudicatum fuit, idem Benedictus praedecessor noster confirmans, eiusdemque Rituum Congregationis esse locum solemniter servi Dei beatificationi pronunciantis decreto annuens, die xiii mensis augusti anno Domini mcccxxix Vincentium a Paulo in Beatorum numerum adscripsit, et ut de beato Dei servo quotannis die anniversaria felicitas eius obitus quibusdam in locis officium recitaretur et celebraretur missa de Confessore non Pontifice iuxta rubricas breviarii et missalis ro-

¹ Edit. Main. legit *quo pro quod* (R. T.).

mani apostolica auctoritate indulsit, ac deinde ut eiusdem servi Dei nomen inter Sanctos, qui in romano martyrologio leguntur, referretur, et propriae de eodem B. Vincentio lectiones, a praenominata Rituum Congregatione, audito fidei promotore, approbatae, in secundo nocturno publice recitarentur, permisit.

§ 39. Expeditis postea litteris remis-
sorialibus et compulsorialibus pro con-
ficiendo consueto auctoritate apostolica
processu super novis miraculis quae
supervenerant post decretam eiusdem
servi Dei beatificationem, eoque ad Ur-
bem delato, et eiusdem validitate reco-
gnita, praemissis consuetis congregatio-
nibus praeparatoriis et antepara-
toriis, miraculorum examen delatum est
ad nos, qui eidem Benedicto XIII in sa-
cro apostolatus onere divina disponente
bonitate successimus, et congregatione
generali coram nobis habita die xiii
mensis ianuarii anno Domini mcccxxvi,
auditis venerabilium fratrum nostrorum
sententiis, post-imploratum divinae opis
praesidium, die xxiv mensis iunii eius-
dem anni, duo, ex septem quae affere-
bantur, miracula plene approbavimus,
videlicet: Primum, instantaneae sana-
tionis Mariae Theresiae a S. Basilio a pu-
tridis et diuturnis ulceribus cum longa
et contumaci urinae retentione atque
enormi hydrope; et secundum, instan-
taneae sanationis Francisci Richet ab
hernia perfecta inveterata et desperata.

R-assumpta
causa, Summus
Pontifex duo
ex septem
quae afferen-
tur, miracula
mcccxxvi ap-
probat.

§ 40. Quod cum a nobis peractum
fuisset, habita iterum coram nobis ge-
nerali congregatione, in deliberatione
positum est an tutò procedi posset ad
solemnem B. Vincentii a Paulo canoni-
zationem; et unanimi voto venerabilibus
fratribus nostris S. R. E. cardinalibus as-
sentientibus, decretum de peragenda ca-
nonizatione solemniter pronunciamus.

Die x augusti
mcccxxvi de-
cernit posse
deveniri ad
canonizationem
B. Vincentii.

§ 41. Pluribus mensibus postea ela-

In consistorio

secrete die vi
mali mactatum
omnes qui tunc
aderant cardi-
nales unanimi
voce assensum
ad B. Vincentii
canonizationem
deveniri posse.

psis, nos consistorium secretum de more convocari iussimus, in quo dilectus filius Antonius Felix tituli S. Praxedis presbyter cardinalis Zondadari nuncupatus, suo et totius Congregationis sacrorum rituum nomine, primum retulit, scripturas processuum omniaque causae acta ritè confecta fuisse, et plenissimam auctoritatis et legitimae probationis vim obtinere; deinde, B. Vincentii vitâ, virtutibus ac miraculis diligenter expositis, se et ceteros dictae Congregationis cardinales unanimi suffragio censere, B. Vincentium, si ita nobis videretur, posse in Sanctorum catalogum adscribi: in quorum sententiam reliqui omnes cardinales, qui praesentes aderant, concesserunt.

Sequenti publico consistorio Pontifex cardinales, archiepiscopos et ceteros praesentes hortatur, ut orationibus et ieiuniis incumbant.

§ 42. Quare in tam sancto ac gravi negotio nihil omninò necessariae diligentiae praetermittentes, ex more institutoque maiorum decrevimus ut ad ulteriora procederetur. Et post nonnullos dies publico consistorio congregato, in eo dilectus filius Thomas Antamorus consistorialis aulae nostrae advocatus, eximiâ B. Vincentii charitate, vitae innocentia, et miraculis copiosè enarratis, carissimi in Christo filii nostri Ludovici Francorum regis christianissimi et carissimae in Christo filiae nostrae Mariae eorumdem Francorum reginae christianissimae eius coniugis, aliorum catholicorum principum, necnon venerabilium fratrum nostrorum archiepiscoporum et episcoporum, et universi cleri regni Galliarum, totiusque insuper Congregationis presbyterorum saecularium Missionis nomine, ut B. Vincentium in Sanctorum catalogum referre vellemus, suppliciter a nobis postulavit. Nos autem, pro rei gravissimae magnitudine maturius adhuc cum venerabilibus fratribus nostris S. R. E. cardinalibus et ceteris archiepiscopis et episcopis deli-

berandum esse censes, publicas orationes et ieiunia indiximus, atque omnes christifideles hortati sumus ut Deum nobiscum precarentur ut daret nobis spiritum sapientiae et intellectus quo haec arcana caelestia, quae ratione humana comprehendere non possunt, cognosceremus, et illuminaret oculos mentis nostrae, ut, quid in hac gravissimâ causâ secundum divinum beneplacitum statuendum esset, perspiceremus.

§ 43. Deinde aliud consistorium semipublicum a nobis habitum est, in quo etiam patriarchas, archiepiscopos et episcopos in Curia Romanâ existentes, protonotarios quoque nostros, qui ex numero dicuntur, et sacri palatii apostolici causarum auditores interesse iussimus. Quibus praesentibus, cum plura a nobis de eximiâ sanctitate servi Dei ac miraculorum celebritate commemorata fuissent, recensitis etiam instantiis catholicorum principum, et praesertim enixis precibus universae Congregationis presbyterorum saecularium Missionis, omnes rogavimus, ut, quid censerent, liberis suffragiis exponerent. Illi autem singuli ex ordine gravibus sententiis dictis responderunt, uno ore benedicentes Deum, B. Vincentium inter Sanctos Confessores reponendum esse. Horum omnium audito consensu, intimo cordis affectu exultavimus in Domino qui concordet fratrum nostrorum voluntates ut nomen eius glorificaretur in servo suo, ad quem honorandum, quantum homines mortales possunt, corda nostra impelleret et mentes nostras illustraret. Itaque canonizationis diem indiximus, eosque monuimus, ut in orationibus ac ieiuniis perseverantes, nobis in tanto opere exequendo supernum lumen atque auxilium impetrarent.

§ 44. Omnibus autem ritè absolutis, quae ex sacris constitutionibus Roma-

In semipublico consistorio die vii iunii dicti anni, Pontifex diem celebrationis canonizationis indicit.

Omnibus absolutis, die de-
marchi xxi iunii

SS. Trinitati
sacra, B. Vin-
centium nuncu-
pato esse pro-
nunciat, fidei
nunciat, no-
vi Sancti anni
sanctitate die
xix iulii.

naeque Ecclesiae consuetudine peragenda erant, hodie, quae fuit dies dominica SS. Trinitatis, in sacrosanctam Lateranensem basilicam decenter ornatam, cum venerabilibus fratribus nostris S. R. E. cardinalibus, necnon patriarchis, archiepiscopis et episcopis Romanaeque Curiae praelatis, officialibus, familiaribus nostris, clero saeculari et regulari, ac maximâ populi frequentia, convenimus, Ubi repetitis pro canonizationis decreto petitionibus a dilecto filio nostro Nereo S. R. E. diacono cardinali Corsino nuncupato, nostro secundum carnem ex fratre nepote, per eundem Thomam Antemorum advocatum, et decantatis sacris precibus et litanis, ac Spiritus Sancti gratia humiliter implorata, ad honorem sanctae et individuae Trinitatis, ad exaltationem fidei catholicae et christianae religionis augmentum, auctoritate domini nostri Iesu Christi, beatorum apostolorum Petri et Pauli, ac nostrâ, maturâ deliberatione praehabitâ, et divinâ ope saepius implorata, ac de venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium, patriarcharum, archiepiscoporum in Urbe existentium consilio et consensu, B. Vincentium a Paulo Sanctum esse decrevimus, definivimus, ac Sanctorum catalogo adscripsimus, prout tenore praesentium similiter decernimus, definimus et adscribimus, illumque universos christifideles tamquam vere Sanctum honorare et venerari mandavimus et mandamus, statuentes ut ab universali Ecclesia in eius honorem ecclesiae et altaria, in quibus sacrificia Deo offerantur, aedificari et consecrari, et singulis annis die xix mensis iulii memoria ipsius inter sanctos Confessores non Pontifices pia devotione recolli possit.

Canonizationi
adstantibus pie-
tariam pecca-

§ 45. Eademque auctoritate omnibus christifidelibus vere poenitentibus et

confessis, qui annis singulis eodem festo die ad sepulchrum, in quo corpus eius requiescit, visitandum accesserint, septem annos et totidem quadragenas de iniunctis eis aut alias quomodolibet debitis poenitentiis misericorditer in Domino relaxavimus et relaxamus in formâ Ecclesiae consuetâ.

§ 46. His peractis, Deum Patrem aeternum, regemque gloriae Christum dominum Patris sempiterni Filium, et Sanctum Paraclitum Spiritum, unum Deum unumque Dominum, laudibus et confessionibus venerati, sacroque hymno *Te Deum* solemniter decantato, omnibusque christifidelibus tunc praesentibus plenariâ omnium peccatorum suorum indulgentiâ et remissione concessâ, propter corporales nostras infirmitates affectamque valetudinem senilemque aetatem ab eâdem Lateranensi ecclesiâ recessimus, remanentibus in eâ venerabilibus fratribus nostris S. R. E. cardinalibus archiepiscopis, episcopis et universo clero et populo. Quibus praesentibus, a venerabili fratre nostro Thoma S. R. E. cardinali episcopo Praenestino Ruffo nuncupato, tamquam cardinali in ordine antiquiori, in arâ maximâ praefatae basilicae, ex indulto et de licentiâ nostrâ, solemniter missa cum Sancti eiusdem Confessoris commemoratione celebrata est.

§ 47. Decet autem nos gratias agere, et gloriam dare Deo viventi in saecula saeculorum, qui benedixit conservum nostrum in omni benedictione spirituali, ut esset sanctus et immaculatus coram ipso, et, cum illum dederit nobis quasi fulgentem solem in templo suo in hac nocte peccatorum et tribulationum nostrarum, adeamus cum fiducia thronum divinae misericordiae, ore et opere supplicantes, ut S. Vincentius universo christiano populo prosit meritis et exem-

Quibus peractis et Deo gratias actis, ob seculum et aeternam aetatem recessit Summus Pontifex, relictocardinali Ruffo, ex praesentibus antiquiore, ad celebranda sacra mysteria, adstantibus ceteris omnibus cardinalibus, patriarchis, etc.

Itorum gratias Deo agit Summus Pontifex ob dicti Sancti canonizationem eumque christifidelibus invocandum et imitandum proposuit.

plo, precibus adsit et patrocinio, et in tempore iracundiae fiat reconciliatio.

Hinc bul-
lae transumptis
credit mandat.

§ 48. Ceterum, quia nimis difficile foret praesentes nostras originales litteras ad singula loca, ubi opus esset, deferri, volumus, ut earum exemplis, etiam impressis, manu publici notarii subscriptis et sigillo alicuius personae in dignitate ecclesiastica constitutae munitis, eadem, quae ipsis praesentibus, fides ubique adhibeatur.

Sanctio poe-
nalis.

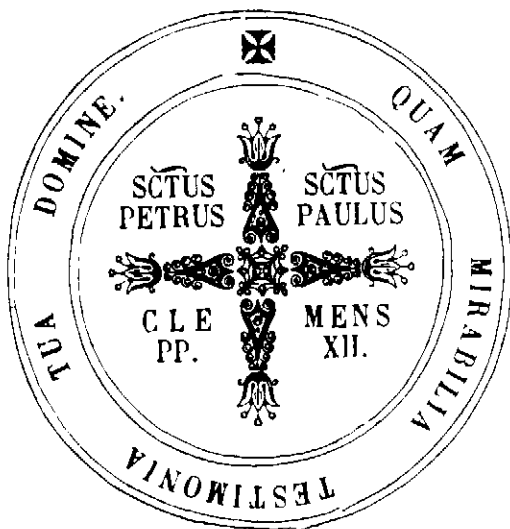
§ 49. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrorum decreti, adscriptionis, mandati, statuti, concessionis, elargitionis et voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire; si quis autem hoc attentare praesumpserit, indignationem omnipotentis Dei ac beatorum Petri et Pauli apostolorum eius se noverit incursurum.

Datum Romae, apud S. Ioannem in Laterano, anno Incarnationis dominicae MDCCXXXVII, XVI kalendas iulii, pontificatus nostri anno VII.

Dat. die 16 iunii 1737, pontif. anno VII.

✠ EGO CLEMENS

CATHOLICAE ECCLESIAE EPISCOPUS.



† Ego Franciscus episcopus Ostiensis cardinalis Barberinus.

† Ego Petrus episcopus Portuensis cardinalis Ottobonus.

† Ego Thomas episcopus Praenestinus cardinalis Ruffus.

† Ego Ludovicus episcopus Albanensis cardinalis Picus.

† Ego Petrus episcopus Tusculanus cardinalis Corradinus.

† Ego Ioannes Antonius tituli S. Laurentii in Lucina cardinalis de Via.

† Ego Antonius Felix S. Praxedis presbyter cardinalis Zondadari.

†

†

†

†

†

† Ego Georgius tituli S. Mariae in Trans-tyberim cardinalis Spinula.

†

† Ego Ludovicus tituli S. Priscæ cardinalis Belluga.

†

† Ego Alvarus tituli S. Bartholomaei in Insula cardinalis Cienfuegos.

† Ego I. B. tituli S. Matthaei in Merulana cardinalis de Alteriis.

† Ego Vincentius tituli S. Petri ad Vincula presbyter cardinalis Petra, maior poenitentiarius.

†

†

† Ego Nicolaus Maria tituli Ss. Ioannis et Pauli cardinalis Lercari.

†

† Ego Franciscus Antonius tituli S. Sixti presbyter cardinalis Finus.

†

† Ego frater Vincentius Ludovicus tituli S. Pancratii presbyter cardinalis Gotti Ordinis Praedicatorum.

† Ego D. Leander tituli S. Callisti presbyter cardinalis de Porzio.

† Ego P. Aloysius Carafa cardinalis tituli
S. Laurentii in Pane et Perna.

+

+

+ Ego Franciscus Burghesius cardinalis tituli S. Sylvestri in Capite.

+

†

† Ego Vincentius tituli S. Petri in Monte
Aureo presbyter cardinalis Bichius.

† Ego Ioseph tituli S. Thomae in Parione
presbyter cardinalis Firrao.

† Ego Antonius tituli S. Stephani in Monte
Coelio presbyter cardinalis Gentili.

† Ego frater Ioannes Antonius cardinalis
Guadagni tituli S. Sylvestri et Martini
ad Montes.

† Ego T. cardinalis de Aquaviva tituli
S. Caeciliae.

† Ego Dominicus Ss. Quirici et Iulittae pres-
byter cardinalis Riviera.

† Ego Marcellus tituli S. Mariae in Aracaeli
presbyter cardinalis Passari.

† Ego Petrus cardinalis Aldovrandus tituli
S. Eusebii.

+

† Ego Fr. P. M. tituli S. Iohannis ante Portam Latinam cardinalis Pieri.

† Ego Iosephus tituli S. Pudentianae pres-
byter cardinalis Spinellus.

† Ego L. S. Mariae in Viaticis, prior diaconorum, cardinalis de Alteriis.

† Ego Carolus S. Agathae in Suburrâ diaconus cardinalis Columna.

† Ego Fabius Ss. Viti et Modesti diaconus
cardinalis Oliverius.

+

† Ego Alexander S. Mariae in Cosmedin
diaconus cardinalis Albanus.

† Ego Nicolaus S. Mariæ ad Martyres diac-
onus cardinalis Indice.

† Ego Nerius S. Eustachii diaconus cardinalis Corsinus.

† Ego B. Ss. Cosmae et Damiani diaconus
cardinalis Ruspulus.

†

+

Loco † plumbi.

A. card. prodaturus.

F. card. OLIVERIUS.

Visa de Curia :

N. ANTONELLUS.

I. B. EUGENIUS.

Reg. in Secret. Brevium.

CCIV.

Beatus Ioannes Franciscus Regis, Societatis Iesu presbyter, Sanctorum Confessorum canoni adscribitur.

Clemens Papa XII,
servus servorum Dei,
ad perpetuam rei memoriam.

Ad sublimem sanctitatis montem, in quo Christus dominus sedens discipulos suos seorsim a iudaicis turbis evocatos christianae sapientiae praecepta edocuit, ex omnibus gentibus et tribubus et populis et linguis, spe firmi, fide robusti, charitate ardentis, gratiâ et virtute divinâ ascenderunt. Hi sunt qui venerunt de tribulatione magnâ, et lavantes stolas suas et dealbantes eas in sanguine Agni, intra densissimam nubem et imperscrutabilis divinitatis caliginem ingressi sunt, ubi divinus Moyses Deum Patrem alloquitur, et ad eius dexteram sedens et compatiens infirmitatibus nostris interpellat pro nobis. Huc autem accedere non audeat carnalis iudaeus, sed intra terminos et septa legalium praeceptorum se contineat, et longe ab imâ montis parte

Procedium.

sumum, caliginem et ignem, fulgura et tonitrua, sonitum et clangorem tubarum, gloriam Domini, hoc est magnalia gratiae suae et prodigia sanctitatis, admiratione simul et terrore percussus prospiciat. Procul hinc omnis fera bestia et animal immundum, ne loci sanctitatem sanguine foedet vel impuritate contaminet. Foris canes, et venefici, et impudici, et homicidae, et idolis servientes, et omnis qui amat et facit mendacium. Accedant autem, qui vitalibus aquis in sacro fonte renati, vel purgati sacramento poenitentiae, amicti sunt stolis candidis; accedant, sed solutis antea calceamentis ex corio mortuorum animalium, nempe mortuis relictis operibus, quia terra sancta est. Arcta est via, arduus atque angustus est limes, et nemo tutus per eum ingreditur et ad culmen securus pertingit, nisi vestigiis insistas Christi domini clamantis et dicentis: *Si quis vult venire post me, tollat crucem suam quotidie*. Ambulandum est igitur vestigiis paribus, et aemulâ ingressionem nitendum; quia non est maior domino suo servus, nec liberatore liberatus, et qui cupimus esse christiani, debemus, quod Christus dixit et fecit, imitari, ut respondeat ad fidem nominis sectatio veritatis.

Ioannes Franciscus Regis hanc viam fortiter ingressus ad illius montis fastigium evasit.

§ 1. Asperâ et laboriosâ hac viâ incessit fortis Dei miles Ioannes Franciscus Regis, qui accinctus robore et in spiritu ambulans, calcatis desideriis carnis et passionibus huius temporis fortiter toleratis, per tribulationes ac contumelias, per labores et angustias, in orationibus, in ieiuniis, in vigiliis ad montis evasit fastigium, aspiciens in auctorem fidei et consummatorem Iesum, qui, proposito sibi gaudio, sustinuit crucem, confusione contemptâ. Nos autem quibus¹ supernâ dignatione com-

¹ Edit. Main. legit *qui* pro *quibus* (R. T.).

missum est fidem¹ Dei plebem in viam salutis dirigere, beatum Dei servum, qui ad locum latitudinis per labores et angustias transivit, qui ad caelestem patriam per huius mortalis vitae tribulationes et aerumnas pervenit, in sanctorum munerum solemniter ex veteri more et instituto Romanae Ecclesiae hodiernâ die adscripsimus, ut, eius propositis virtutibus et apud Deum suffragantibus preces², per merita unius divini mediatoris Iesu Christi nostra adiuvetur infirmitas, excitetur spes, roboretur fides, accendatur charitas. Itaque beati Dei servi, qui in caelis iam a Deo coronatus est, triumphum in terris spirituali laetitiâ exultantes in Domino celebremus; sed ita celebremus ut eius labores, fidem, charitatem, sancteque res gestas intueamur. Celebremus ergo triumphum, laudemus victoriam, ut illius amemus virtutes, ut laboriosam vitam sanctamque conversationem, quam breviter populis pro nostro pastoralis sollicitudinis officio annunciamus, sedulo imitemur; et illius exemplo dirigatur via nostra in conspectu Domini. Angusta est, spinosa est, dura est, sed talibus tamque multis transeuntibus lenis facta est. Transiit prior ipse Dominus, transierunt apostoli intrepidi, postea martyres, pueri, mulieres, puellae, transiit novissime B. Ioannes Franciscus: eius ergo non timeamus laboriosam vitam sequi, si eius praemium cupimus, si locum, si patriam desideramus.

§ 2. Ioannes Franciscus Regis, pueritiâ inter suos mirâ innocentia exactâ, positâque operâ ediscendis primis linguae latinae rudimentis in oppidulo Galliae Narbonensis, cui nomen Fons Coopertus, ubi pridie kalendas februarii

Otus eius, pueritiâ, ad innocentia, ad p-cte transiit.

¹ Videtur legendum *fidam* aut potius *fidelem* pro *fidem* (R. T.).

² Videtur legendum *precibus* (R. T.).

anno MDXCVII natus est, Biterras mittitur ut in gymnasio Societatis Iesu studiorum cursum absolveret. Enituit statim inter aequales eximia adolescentis virtus: nam otium et improhorum consuetudinem veluti pestem declinans, non velitis modo voluptatibus, sed etiam iuvenilibus ludis abstinuit, et quod a litterarum studio supererat temporis, fundendis ad Deum precibus, piis legendis libris, serendis de Deo divinisque rebus sermonibus, visitandis templis Sanctorumque memoriis impen-
debat.

Sub B. Virgine tutela baptismalem innocentiam et virginitatem illibatam custodit.

§ 3: Ut vero nec illecebris caperetur saeculi, nec diaboli superaretur insidiis, nec demum pravis commoveretur exemplis, sed partam baptismo gratiam et illibatum virginittatis florem servaret, Virginem Mariam matrem Domini pio semper coluit affectu, ut hinc sumeret exempla vivendi, ubi tamquam in speculo species castitatis et forma probitatis refulget. Nam potenti Matris Dei apud aeternum filium redemptorem nostrum patrocinio confisus, minime dubitabat a Deo impetraturum, ut, currenti sibi per arduas virtutum semitas, id¹, in quo humana conditio ab infirmis viribus suis destituta languescit, superna Dei gratia sufficeret, et quod non posset infirmitate humanā, assequeretur virtute divinā.

Devotio erga angelum custodem, cuius opem a vitae discrimine liberatur.

§ 4. Angelum quoque sui custodem religioso cultu prosequutus est, ad beati spiritus clientelam eo fidentius confugiens, quod certo sibi persuaserat, se a Dei offensā et aeterno animae interitu illius caelesti operā et internis monitis, divinā annuente misericordiā et Christi adiuvante gratiā, liberatum iri, quia casu quodam, qui ei adhuc puero contigit, plane compertum habebat sancti

angeli tutelar praesidio se ab instanti mortis periculo ereptum fuisse.

§ 5. At enim probo adolescenti non satis visum est Deum colere, Deiparam, aliosque sanctos pie venerari, et, florentis aetatis et mundi calcatis blanditiis, toto animo sectari virtutem, nisi etiam plures ex sodalibus suis raperet ad Deum, quem ex toto corde et totā mente suā amabat. Itaque alios a iuvenili licentiā vel noxiā levitate abduxit, alios ad virtutem impensius sequendam invitavit, ex omnibus sex electis, quibuscum, praescriptā sibi vivendi formā, ab eā, quae a clericis in seminariis servari solet, non dissimili, sanctum sodalittum pietatis inivit. Talibus praeclarae virtutis initiis prolusit ad apostolicum sacrarum missionum opus, iam tum in omnibus iuvenilibus actibus praediscens Deum solum quaerere, et salutem animarum procurandae intentam mentem et devotum Deo pectus habere.

Zelo erga sodales proleat adolesceas apostolicis missionibus.

§ 6. Decimum et nonum aetatis suae annum agens, Societatem Iesu ingressus est, ubi, nunquam interrupto cursu, per altam christianae perfectionis semitas ad Deum contendens, humilitate, odio sui, contemptu mundi, paupertatis amore, orationis assiduitate, divinaeque gloriae studio, ceterisque christianae religionis virtutibus, iis ipsis, a quibus in pietatis decurrendo stadio¹ institui quaerebat, admirationi atque exemplo fuit.

Societatem Iesu ingreditur, alque omni virtute refulget.

§ 7. Postea autem demandato sibi humanas litteras edocendi munere, teneros adolescentium animos non tam litterarum scientiā quam pietate in Deum imbuendos curabat. Itaque saepe de diligendo Deo, de obeundis christianae vitae officiis fugiendoque peccato, et privatim et publice cum disci-

In scholarum ministerio discipulos ad sanctitatem incendit.

¹ Videtur legendum ad id (R. T.).

¹ Edit. Main. legit studio pro stadio (R. T.).

pulis sermonem habebat: quaeque in scholis ex ethnicorum libris explicari solent, quaeque ab adolescentibus scribi tractarique exercitii causa consueverunt, huc referebat omnia ut eorum animos non modo eruditione excultos sed etiam probos sanctosque efformaret: quod tam diligenti curâ et tam uberi fructu per septennium explevit, ut eius discipuli a ceteris gravitate morum vitaeque innocentia discernentur.

Sacerdotio initiatus invandis mortalibus se totum tradit.

§ 8. Ad sacerdotii sublime fastigium prae animi modestia reluctans atque invitatus superiorum iussu ascendit: sacerdos autem factus, cogitans quomodo Deo placeret, cum plane intelligeret nullum certiore gradum ad Dei amorem esse quam hominis erga hominem charitatem, totum se sublevandae egentium inopiae et procurandae animarum salutis devovit.

Praecipue vero pauperum curam gerit.

§ 9. Nemo hominum erat, quem amplius eius non complecteretur charitas; potissimam tamen pauperum curam gerebat, sequens Christi domini exemplum, qui, ut humanam superbiam retunderet, cum, ad sanandum reguli filium, illius domum rogatus ire noluisset, ad centurionis servum, non invitatus, ire paratus fuit. Ita eius servus, spiritu Dei plenus qui super humiles requiescit et humilibus dat gratiam, vili atque humili plebi se praebebat, et pauperibus magisque indigentibus ferebat auxilium, spectabatque in hominibus imaginem qua ad Dei similitudinem facti sunt, et pretium magnum quo redempti sunt, non autem honores et divitias et pompas et vanitatem saeculi.

Admirabilis erga calamitosos quolibet aetatis.

§ 10. Intimis igitur animi sensibus et totis charitatis visceribus, cum pauperum angustias cerneret, commovebatur. Nullum genus erat calamitatis, quod non sublevaret; nullus aeger, cui non succurreret; nullus miser, cui opem

non ferret: alios verbis consolabatur, aliis opere subveniebat. His natum atque inserviendis addictum se putabat, his diurnam nocturnamque operam in ergastulis, in nosocomiis, in eorum casis praestabat: duos praesertim aegrotos, seu potius hominum cadavera, quae foeditate morbi et maleolenti odore omnes a se averterant, ipse adivit, solatus est, et omni officiorum genere fovit: miracula et prodigia fere non in aliorum quam in pauperum gratiam atque in miserorum auxilium patrare videbatur.

§ 11. Despectis insolentis vulgi ludibriis et puerorum exhibitionibus, visus est per mediam urbem et confertas populo vias ire onustus stramentorum fascibus, quos emendicando paraverat, ut aegrotantibus egenis lectum sterneret.

Bailli iustarum opera ad egenos publice portat.

§ 12. Cessante commercio, cum languerent artes, et artificibus nihil valeret industria ut se suamque familiam alerent, eorum opificia ad divites mercatores ferebat, eosque exorabat ut aequo pretio emerent. Puellis, quarum res domi angusta erat, ne egestate opprimerentur aut corrumpere otio, ipse opera feminei artificii facienda quaerebat, ut laboribus suis viverent, nec aliis oneri, nec sibi detrimento atque exitio essent.

Misae ad eos sublevantur industriae.

§ 13. Ostiatim stipem emendicabat, ut deinde collectam ad alendos pauperes et sustentandos carcere inclusos distribueret. Pupillorum et viduarum causas apud iudices strenue tuebatur, ne divitum potentia oppressi, vel improborum fraude circumventi, damnum atque iniuriam acciperent. Itaque miserorum perfugium, pupillorum tutor, viduarum defensor, esurientium cibis, calamitosorum spes, aegrorum solatium, communis omnium parens erat atque ab omnibus vulgo appellabatur.

Captivi, viduae, pupilli succurrunt, vera miserorum omnium pater.

Peste infectis
ministrat.

§ 14. Montem Falconensem oppidum, vicinaque loca, quo ad hibernas missiones ineunte anno MDCXL advenerat, atrox pestilentia invaserat; omnium, qui erant contagioso morbo correpti, curam alacris suscepit, contemnens praesentis mortis periculum, cui vivere Christus erat, mori autem lucrum.

Sarviente fa-
mie, pauperum
greges, frumen-
to etiam ter
miraculum mul-
tiplicato, alit.

§ 15. Anicii gravi saeviente fame, ingentes pauperum greges pauper ipse, sola Dei providentia confisus, alendos suscepit, et, subsidiis undique industria charitate et pia sollicitudine corrogatis, ter etiam multiplicato per miraculum frumento, sustentavit. Siquidem renovavit benignissimus Deus per manus servi sui prodigia Eliae in multiplicatione frumenti quod in alimoniam pauperum, in summam illam caritatem annonae, feminae custodiendum tradiderat. Nam servo Dei iubenti ut pauperibus distribueret, respondit illa arcam iam frequentibus largitionibus exhaustam fuisse; iussa autem inspicere, imperioque parens, frumento exundantem invenit: nec id semel, sed tertio contigit. Sed quoniam perfecta dilectio, quae ab amore Dei profisciscitur, agit quidem quantum potest ut proximus salvus corpore salvusque animo sit, sed curam corporis ad sanitatem animi refert; ideo beatus Dei servus curabat ut per temporalia subsidia homines ad Deum traheret, et per corporalem alimoniam caelesti evangelicae doctrinae cibo reficeret.

In his miseri-
cor'diae officiis,
eo potissimum
spectabat, ut
animabus con-
suleret.

§ 16. Quare Anicii ter quaque hebdomadam omnes in ecclesiam convocatos erudiebat; saepenumero eorum audientibus confessionibus noctes prorsus traduxit insomnes; tanto enim animi studio et charitatis ardore eorum invigilabat salutem, ut nullos labores, nulla vitae incommoda sentiret.

Ardeat divini

§ 17. Numerosam semper pauperum

turbam, ubicumque degeret, stipatus erat: moleste atque inurbane in eum irruentes, suavi excipiebat benignitate, et admirabili ferebat patientiam; aliorum sollevans corporis angustias, aliorum sanans animae infirmitates, nullum a se, si minus temporali succurrere posset, spirituali auxilio destitutum praeteribat: sui enim oblitus, id unum prae oculis habebat ut omnes Christo lucrificaret. Haec erat omnium votorum et cogitationum suarum summa, regnum Christi amplificare, Dei gloriam et hominum salutem promovere; ideo quandocumque dicebat, se nequaquam recusaturum caeli deliciis serius frui, si ea dilatione sibi concederetur ut plures ad Dei agnitionem amoremque perduceret.

§ 18. Quare id unum diu noctuque propositum habebat, id vigili curam, insomni studio, ardentique charitate curabat in urbe, in agris, in templis, in foro, in custodiis publicis, in nosocomiis, in privatorum aedibus, in eo demum, quod poenitentibus mulierculis extruxerat, coenobio, ut bonos inflammaret ad virtutem, scelestos et improbos revocaret a vitiis, curaret languidos, foveret tepidos, sanaret infirmos, sanos validosque ad currendum in viam Domini impelleret.

Nullus ab eius
zelo vacuus for-
cus.

§ 19. Vitiis bellum indixerat, et quietem, famam vitamque ipsam parvipendens, neque laboribus, neque angustis, neque minis, neque metu, neque ulla periculorum denunciatione retardabatur, quominus in discrimine aeternae salutis versantibus accurreret, flagitiosos homines a peccatis revocaret, perditae famae profligataeque pudicitiae mulieres et turpitudinum coeno educeret, orbas parentibus¹ puellas, quarum pudicitia periclitabatur, in tuto collocaret; saepe

Fortitudo in
adversis.

¹ Forsan legend. *quandoque* (R. T.).

² Edit. Main. legit *patentibus* (R. T.).

a flagitiosis hominibus multis obrutus iniuriis, atque etiam verberibus graviter caesus, dum a luporum rapacium manibus innoxias vel infirmas animas abstrahere conatur; saepe ab improbis nebulonibus deceptus et contumeliis atque opprobriis vexatus, dum quasi ad moribundi confessionem audiendam per iocum ac ludibrium evocatur: nunquam tamen fieri potuit ut nocturnam morientibus operam, etiam cum suo gravi damno et detrimento coniunctam, praestare omitteret; aut, ut in procurandâ animarum salute remissius ageret; aut, ut egentibus atque aegrotis opem per se ipsum, si necessitas urgeret, cunctantius afferret: quippe bene redemptam existimabat quolibet suo famae vel capitis periculo quamcumque opem atque auxilium, quod hominibus vel inopiâ vel infirmitate afflictis vel de animae salute periclitantibus ferre posset.

Calicem Christi, aemulus apostolorum et martyrum, bibit in tantis aerumnis.

§ 20. Biberat enim calicem divini amoris, de quo ait Propheta: *Calix tuus inebrians, quam praeclarus est*, et inebriatus fuerat ab ubertate domus eius. Hoc enim calice inebriati ibant apostoli gaudentes a conspectu concilii quoniam digni habiti sunt pro nomine Iesu contumeliam pati; hoc inebriati martyres, laeti euntes ad tormenta, ad leones, ad gladios, ad flammas, ad necem, non agnoscebant uxores flentes, non filios, non parentes, non amicos; hoc inebriatus beatus Dei servus Ioannes Franciscus, non labores, non angustias, non dolores, non contumelias, non infamiam, non mortem ipsam videbat; sed omnia terrena bona fluxa et caduca parvificiens, nihil erat tam arduum, tam difficile, tam laboriosum, tam cum vitae et mundani honoris discrimine coniunctum, quod non ultro laetus et alacris pro Dei gloriâ et animarum salute aggrediretur, in omnibus exhibens se ipsum

sicut Dei ministrum in multâ patientiâ, in tribulationibus, in necessitatibus, in angustiis, in laboribus, in vigiliis, in ieiuniis, in castitate. Mirum dictu est, quot procellis iactatus, quot probris exceptus et maledictis laceratus, quot iniuriis et contumeliis appellitus, quam saepe conspersus luto, in coeno conculcatus, verberibus contusus, plagis pene ad mortem usque vulneratus fuit. Mansit invictum ad mundi procellas evangelicum sacerdotalis pectoris robur; et domum, quae aedificata fuerat supra firmam petram, nec furentes improborum turbines, nec violenti tribulationum fluctus prostravere: mens in pietate solida, in fide firma, Deo devota, non victa est tentationibus aut periculis, sed probata.

§ 21. Maiori enim semper animo et erectiori mente, primis superatis laboribus aut periculis, ad nova impeterritus pro Dei gloriâ veniebat. Itaque, edoctus magisterio dominico, saepe unam percutientibus maxillam, alteram laetus exhibuit; minantibus stricto gladio necem, vel caput obtulit, vel pectus aperuit, sciens animam, qua diligebat Deum, mori non posse, nisi ab ipsâ Dei dilectione, ob quam mors intentabatur, cessaret: si quis illius vicem doleret, corripiebat, admonens eum ignorare quantum in tolerandis pro Christo opprobriis voluptatis inesset. Sed qui propriis non movebatur malis, alienâ sorte moerebat, miserans adversariorum caecitatem, furorem excusans, calamitatem deplorans, et fervidis ad Deum precibus pro eorum salute deprecabatur, atque ita, quemadmodum servi Dei solent, se de suis inimicis ulciscabatur, ut cuiusque animum, quo magis sibi experiretur infensum, eum maioribus demulceret officiis charitatis.

Maxillam unam percutienti alterum praebet stricto gladio necem minantibus nudum pectus offert.

§ 22. Etenim una erat sollicitudo, ardentissimus amor Dei.

una cura, una cogitatio, ne Deus peccatis hominum offenderetur; ideo, cum id vel audiret vel videret, maxime si prohibendi facultas nulla superesset, intimo doloris sensu urebatur, ut ex oculis lacrymae, e pectore suspiria prorumperent, et interdum, prae doloris magnitudine, pene animo deficeret, ut recte cum sancto Davide exclamare posset: *Defectio tenuit me pro peccatoribus derelinquentibus legem tuam.*

Nil cogitat,
ali loquitur, nil
quaerit, nisi
Deum.

§ 23. Plenā enim et integrā charitate in Deum flagrabat, Deum menti praesentem ubique habebat, quem assidue in corde gestabat, neque ab eius suavissimo complexu ullā re avellebatur: nullus illi erat sermo, nisi de Deo divinisque rebus; Deum in prosperis laudabat, ad Deum confugiebat in adversis, eum consulebat in dubiis, in eo omnes delicias et voluptates, omnem consolationem et gaudium, quod non datur impiis, collocatum habebat: magnam noctis partem orans transigebat; quando poterat, in ecclesiā coram sacrosanctā Eucharistiā immaculatam hostiam quotidie Deo immortalī offerebat eā caelestis suavitatis dulcedine, eo fervore charitatis, ut pene a sensibus alienatus videretur.

Corporis as-
peritatem asper-
rimae, praeter
labores assi-
duos.

§ 24. Rebellantis carnis motus salutarī poenitentiae disciplinā obtendi sunt, et terreni corporis infesta labe spiritali vigore calcanda est. Ut igitur caro, quae concupiscit adversus spiritum, omni terrenae infirmitatis pondere deposito, ad Deum anhelantem spiritum sequeretur, servus Dei, ceteris omnibus suavis et mitis, uni sibi asper sancteque inimicus, corpus domabat asperrimo cilicio, cruentis flagellationibus, brevi somno, eoque super nudā tabulā aut humi capto, aquae potu, vilique et modico cibo, quo mortem arceret potius quam famem pelleret, se, ut Deo viveret,

sustentabat: itaque omnes animi motus adeo compositos atque in suā potestate habebat, ut nullus unquam in eo observatus fuerit, qui ad exactam christianae perfectionis regulam non conveniret: nunquam de se suisque rebus in gloriam Dei et proximorum salutem gestis verba faciebat; gratulantibus autem de tot pertinacibus haereticis conversis ad fidem et innumeris peccatoribus ad poenitentiam traductis, modeste respondebat: *Non ego, sed Deus.*

§ 25. Honore ab aliis affectus et laudibus ornatus, vehementer dolebat et graviter tristabatur laudem sibi tribui, quae Deo soli deberetur, palam dictitans, si probe notus esset, ac pro merito tractaretur, se praetereuntium pedibus, ut vilissimum omnium mortalium, proculcatum iri. Nam ex veracissimā divinae magnitudinis et humanae parvilitatis agnitione et abiectissimae filiorum Adam conditionis intuitu, in se ipso quod suum erat contemnens, et omne datum optimum et omne donum perfectum de sursum esse cognoscens, persuasum habebat nullam esse infamiam aut iniuriam quam non promerisset: ideo, si quispiam eum, ut saepe contigit, alapis aut verberibus pessime acciperet: *Gratiam habeo, inquiebat; pro certo habe, me pluribus dignum esse.*

Profunda hu-
militas.

§ 26. Mansuetus, mitis et beneficus erga omnes, angelicam quamdam modestiam in verbis, incessu, vultu, totiusque corporis habitu praeseferebat, ut spectantium animis reverentiam et venerationem sui et amorem virtutis iniiceret.

Mansuetudo,
benevolentia,
modestia plane
angelica.

§ 27. Divinus enim amor, intus latens in pectore, transiverat in decus corporis, et internam sanctitatem externa prodebant signa virtutum: profecto amorem erga Deum et animatam charitate fidem sanguine suo testatam facere,

Incensa pro
Deo patendi
desideria.

et vitam ipsam pro Deo profundere ardentissime cupiebat, ut ei non defuisse credendum sit coronam martyrii, cuius animus patiendi non defuit. Nam praeter certa famae et capitis pericula, quae pro Dei amore libenter atque ultro subivit, non semel dicere auditus est: *Quid mihi optatius, quam pro Christo mori?* Et ad Canadensem missionem, ut mortem pro Christi nomine oppeteret, proficisci voluit; sed altissimo divinae providentiae consilio ei concessum non est, ut suae gentis utilitati serviret.

Missiones in Gallia maxime arduas decennio obit.

§ 28. Quippe ultimos decem vitae annos in sacris peragendis missionibus impendit, quorum sex primos, partim in inferiori Occitania, partim in Vivariensi, Valentinaeque dioecesi, novissimos autem quatuor in restituenda stabiliendaque apud Velaunos Vivariensibus finitimos pietate collocavit. Anicii autem, quod provinciae caput est, aestivum tempus traducebat, hyeme vero agebat in circumpositis urbi locis, cum, frigore et nivibus ab agrorum culturam coloni impediti, in suis tuguriis et mapalibus otiantur.

Ratio villae plane apostolica in illa obvianda.

§ 29. Modus autem ac ratio vitae, quam sibi ab initio constitutam ad finem usque in missionibus constanter servavit, huiusmodi erat. Horas nonnisi binas, vel ad summum ternas somno concedens, reliquam noctis partem meditando, precando, concionesque parando impendebat. Ubi ad destinatum locum pervenerat, imbre licet madidus, aut nive perfusus, itineris lassitudine et labore confectus, divini auxilii exproscendi causam, rectam se ad ecclesiam conferebat, quam si clausam reperisset, prae foribus in genua provolutus, vel humi prostratus, Deum tantam spiritus contentione orabat, ut nec vi frigoris, nec ubertim quandoque cadentibus nivibus a piis cum Deo colloquiis avocaretur. Postridie

summo mane ecclesiam ingressus, obviam familiarique oratione aliquod doctrinae christianae caput explicabat; operam deinde dabat peccata confitentibus; mox dicebat ad populum, apostolico zelo et animi contentione vitia exagitans, impellensque ad virtutem: quo peracto, sedebat rursus in sacro poenitentiae tribunali, quoad, oblato divinae hostiae sacrificio, matutinum tempus clauderet. Pomeridianum trans mittebat erudiendis pueris, visitandis aegris, pauperibus sublevandis, sedandis litibus, et dissidentibus in mutuam gratiam reduendis. Sub vesperam iterum concionabatur, confitentes subinde audiebat ad multam noctem, adeo ut saepe adhuc ieiunum a sacro tribunali parochi vel populi ipsi veluti per vim avellerent.

§ 30. Sermo et praedicatio eius non in persuasibilibus humanae sapientiae verbis, sed in ostensione spiritus et virtutis. Nam simplex quidem, incompta et popularis oratio, sed verbis inerat quaedam occulta vis et caelestis gratiae virtus, quae audientium corda penetrabat, et eorum mentes atque animos sive ad fugiendum vitium, sive ad amplectendam virtutem facile impellebat. Accedebat actio ipsa vehemens et zelo Dei incensa, voxque mire ad movendum efficax, ardoris nempe et suavitatis plena, et, quod longe maius est, constans atque firma apud omnes opinio verae, non adumbratae virtutis, cui respondebant habitus oris ad modestiam et humilitatem compositus, sancta sine fuco simplicitas poenitentiam praeferebat et paupertatem, omnia demum caelestem quamdam spirantia sanctitatem, quae aspectu ipso commovebant animos, et ad Dei amorem rapiebant.

Sermo eius, et praedicatio in ostensione spiritus et virtutis.

§ 31. Hinc incredibilis fiebat ad eum auscultandum, sive ex aequo sive e superiore loco de rebus divinis disse-

Incredibilis ad eum audientum omnis generis hominum concursus.

reret, hominum concursus cuiusvis generis, cuiusvis conditionis, cuiusvis aetatis, ipsique adeo haeretici, virtutis admiratione capti, catholicorum ardorem quodam modo aemulari et vincere certabant.

Innumeros
peccatores et
pertinaces haereticos conver-
tit.

§ 32. Difficile est hominum inire numerum, quos vel ab omni genere flagitiorum ad bonam frugem reduxit et in eâ confirmavit, vel ab haeresi ad Ecclesiae catholicae sinum revocavit; et quod mirabilius est, plures catholicos adversus ipsum pessime animatos et hostili odio incensos, pluresque calvinianos in suis erroribus pertinaces, et quorum conversionem frustra alii catholici dogmatis doctores aggressi fuerant, paucis ipse verbis, sceleribus, erroribusque ereptos, christianae virtuti, catholicaeque veritati restituit. Itaque ubicumque evangelici seminis serendi causâ per aliquod tempus degerat, conspiciabantur compressa odia, extincta dissidia, expulsa impietas, debellata impudicitia, haeresis multorum animis evulsa, perditissimis etiam mulieribus inspiratus amor castitatis, restitutus sacramentorum usus, pueri et maioris aetatis homines in christianâ doctrinâ rite instituti, mores omnium immutati, et ad christianae pietatis regulas conformati: tales erant eius laborum et apostolici zeli fructus, talia eius sanctitatis et evangelicae praedicationis illustra monumenta.

Rusticos per
montes, per sil-
vas, per avia
latibula perqui-
rit studiosissi-
mus animarum
venator.

§ 33. Sacro autem verbi ministerio primum per aliquot dies diligentem navabat operam in oppido vel pago, qui, totius regionis tractus, hominum frequentia et loci quadam dignitate princeps quodammodo erat; deinde curas et labores suos ad loca vicina conferebat; nullus erat locus tam incultus, tam agrestis, quo sua eum charitas non

1 Forsan tractu; aut melius fector acius emendat (N. T.).

propelleret: per vias situ aspectuque horridas, per aperta vitae pericula, rusticos in sylvis et montibus, in suis mapalibus, seu potius latibulis, sparsim degentes studiosissimus animarum venator, pedes semper, et ieiunus, ut plurimum, vel modico cibo refectus, investigabat quos erudiret, quos solaretur, quos omni ope sublevaret; exemplo evangelici pastoris, qui, relictis nonagintanovem, vadit ad ovem quae perierat, donec inveniat eam, et, si invenerit eam, suis humeris imponit gaudens, et ad ovile reducit.

§ 34. Quaerens igitur deperditas oves, ibat anxius et sollicitus, actus impetu divini amoris indefesso cursu per ardua et immania quaeque tendentis; iter faciebat per invia plerumque nemora, per abrupta montium asperrimorum iuga, per duratam frigore glaciem, per congestas vel solutas stagnantesque exundantibus aquis nives, per densissimos imbres, procellososque hiberno caelo ventos, per angustos tramites praecipitiis vallatos, per quos manibus pedibusque reptare nonnunquam cogeatur: nihil est enim tam durum atque ferreum, quod non amoris igne vincatur.

Asperitates et
pericula diffi-
cillimorum itin-
erum.

§ 35. Nullis igitur deterritus incommodis, nullis retardatus periculis, saepe per ignotas calles rectâ deerravit viâ, saepe in desertis mapalibus imbri et frigori apertis pernoctavit, saepe cum rerum omnium inopiâ conflictatus est: arduum aliquando montem superare aggressus, errante per glaciem et nivem vestigio, ita corruit ut crus frangeret; baculo tamen innixus et a socio sustentatus, seu potius divino fretus auxilio, continuavit iter, et cum ad locum, quo tendebat, pervenisset, humanis deficientibus remediis, crus divinitus sanatum est, et obducto callo, mirabiliter coaluit. Viribus interdum adeo fractus erat, ut

Maximi pro-
pterea labores.

pedibus consistere non posset : non semel contigit, ut e suggestu descendens, animo linqueretur : sed nullo commovebatur periculo : omni spe ac fiducia in Deo reposita, quaecumque temporum, locorum, negotiorumque facies esset, eundem oris habitum quietum et serenum praeseferebat, et tranquillissimam animi Deo inhaerentis dulcedine fruebatur : placebat sibi in infirmitatibus suis, in contumeliis, in necessitatibus, in persecutionibus, in angustiis pro Christo : cum enim infirmabatur, tunc potens erat, caelestibus affluens deliciis, quibus servos suos benignissimus Deus consolari solet.

Postrema nussio Lalovesci.

§ 36. Itaque post evangelicae doctrinae semen in multis locis disseminatum, missionem Lalovesci, ignobili Viennensis dioecesis pago, in horridis Helviorum montibus posito, ultimis Adventus dominici diebus habendam incidit¹, quam sibi fore postremam, Deo docente, praedicat. Intolerabilis tunc, adulta iam hyeme, erat vis frigoris, et inexplicabilis viarum difficultas, inter inaccessos montes nivibus ac glacie coopertos vallibusque difficillimis interiectos, superanda occurrebat ; nihilominus, Dei nomine invocato, in viam se dedit.

Ex itinere incommodis dolore lateris et acuta febre correptus

§ 37. Ad ceteros durissimos illius itineris casus accessit, quod recta deerantem viam, cum nox supervenisset, et nemo cum hospitio acciperet, in derelicto tugurio, ventis ac nivibus pervio, intempestam et perfrigidam noctem ducere necesse fuit. Et quoniam sudore madidus² ob laborem itineris constiterat, concrevit aspero frigore constrictus sanguis, et lateris dolore gravissimo simulque acuta febre correptus est. Sed super omnem laboris magnitudinem et poenarum angustias, ferventis amoris vi in

¹ Forsan incipit vel inceptit (R. T.).

² Edit. Main. legit madibus (R. T.).

Deum raptus, trahensque secum terrenum corporis pondus, liber et admirandus supervolitavit animus pennis pulcherrimis et integerrimis, quibus ad Dei amplexum amor castus innititur.

§ 38. Pervenit Lalovescum, ubi Deum solum quaerens, ad caelestia sola aspirans, nullo cuiquam verbo de infirmitate corporis facto, concionem habuit ad frequentem populum e vicinis montibus collectum, in qua labentis corporis imbecillitatem amantis animi fervor et apostolicus sacerdotalis pectoris vigor sustinuit. Inde, nullo sumpto ad respirandum spatio, poenitentes, confessionibus tota die auditis, Deo reconciliavit. Postridie erat Natalis dominici dies : licet deterius semper se haberet, ter ad populum verba fecit, et reliquum temporis in sacro tribunali sedit. Idem fecit in sequenti die, donec, exhaustis prorsus viribus et animo deficiente, humanae conditioni cedere coactus, cecidit. Vix post quartam horae partem spiritu recepto, confessiones audire perrexit, ad focum assidens in domo parochi, quo fuerat a rusticis deportatus ; sed, cum iterum animo linqui coepisset, in lecto repositus est, ubi totius anteaetae vitae sacram exomologesim, quam paucos dies ante peregerat, iterum fecit. Postea ingravoscente morbo, ut summam Christi nascentis humilitatem paupertatemque, quam totius vitae tempore impense dilexerat, in ultimo vitae actu exactius ac diligentius imitando exprimeret, in stabulum deferri precatus est. Sed, ne citius deficeret, iussus lecto se continere, ibi sacrosanctae Eucharistiae viatico et extremae unctionis sacramento munitus, dexteram Crucifixi imaginem tenens, et ad caeleste regnum et immortalis gloriae coronam a Christo domino et Virgine Maria invitatus, qui se videndos ei praebuerunt, animam di-

Missionem nihilominus egreditur et de more continuat.

Exhaustis denique viribus, decumbere coepit.

Inter dilectos vino Salvatore commendatā, inter pauperum et rusticorum turbas, quibus iuvandis et erudiendis omnem vitam suam ac labores impenderat, hilari ac sereno vultu spiritum Deo reddidit circa mediam noctem ultimae diei exeuntis anni MDCXL.

Densa statim agmina montanorum cum parochis, quibus et viginti nodique concurrunt.

§ 39. Ut vero Dei servus ex hac mortali vita decessit, una omnium vox fuit, sanctum obisse, et quamvis rigidissimum anni tempus vias faceret impedittissimas, tamen ad hanc vocem, quasi in vicinis locis omnibus ac montibus exaudita fuisset, duo supra viginti parochi et tam densa convenere montanorum agmina, ut, propter infinitam populi multitudinem concurrentem ad videndum et osculandum defuncti corpus, differri in alium diem funus oportuerit.

Ob hunc sepulchrum Lalovescus, ignobilis antea vicus, miraculorum frequentia nobilitatur.

§ 40. Postmodum, percrebrescente sanctitatis eius ac miraculorum fama, Lalovescus exiguus antea vicus, paucis tantum constans casis et tuguriis, coepit incolis frequentari, et quotannis redundare ingentibus advenarum catervis, eò per asperros montes confluentium ad beatos apostolici viri cineres venerandos, et opem eius in variis morborum et calamitatum generibus implorandam.

Processus ordinarii Aniciensis.

§ 41. Itaque a bonae memoriae Armando de Bethune Aniciensi episcopo auctoritate ordinariā anno MDCLXXVI confectus est processus super vitā et miraculis servi Dei.

Romae signata commissio causae.

§ 42. Duobus supra viginti postea annis elapsis, die xxv ianuarii signata est commissio introductionis causae. Datis subinde litteris remissorialibus ad conficiendum novum processum auctoritate apostolicā super non cultu, coque ad Urbem transmissa, eiusque validitate recognita, die xiii iulii anno MDCC approbata fuit sententia lata ab archiepiscopo Viennensi super cultu non exhi-

bito iuxta decreta felicitis recordationis Urbani PP. VIII praedecessoris nostri.

§ 43. Impetratis subinde litteris tam remissorialibus quam compulsorialibus eidem archiepiscopo Viennensi et episcopis Aniciensi et Valentiniensi directis, quorum in dioecesibus diu versatus est Dei famulus, ut de virtutibus illius ac miraculis nova haberent testium examina, et novos auctoritate apostolicā processus conficerent; quibus, itidem Romam missis, diligenterque expensis, post diuturnum et accuratum examen habitum in pluribus congregationibus venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium sacris ritibus praepositorum, tam super validitate processuum, quam super virtutibus servi Dei: demum, pie memoriae Clemens Papa XI praedecessor noster die xxvii martii anno MDCCXII, auditis antea in generali sacrorum rituum Congregatione S. R. E. cardinalium sententiis, declaravit Ioannem Francum de Regis tres virtutes theologales, quatuor vero cardinales in gradu heroico exercuisse.

Processu apostolici de virtutibus et miraculis.

Clemens XI decernit constare de virtutibus in gradu heroico.

§ 44. Placuit deinde aggredi examen miraculorum, de quibus idem archiepiscopus Viennensis, biennio ante datis, rogatu totius dioecesanae synodi, ad ipsum Summum Pontificem Clementem XI praedecessorem nostrum litteris, testatus fuerat: idemque fecerant, missis ad eundem praedecessorem nostrum litteris, episcopus Aniciensis et episcopus Valentiniensis iudices in causā delegati.

Testantur amplissime multitudinem miraculorum episcopi Viennensis, Aniciensis et Valentiniensis.

§ 45. Quorum antistitum gravissima testimonia confirmaverant viginti duo partim archiepiscopi partim episcopi Occitaniae, quadraginta urbium legati, et universi optimates, quorum nomine ad eundem Summum Pontificem praedecessorem nostrum archiepiscopus Narbonensis in generalibus provinciae comitiis scripsit.

Item episcopi Galliarum plura quam viginti, alii quae gravissimi.

Clementis e-
iusdem XI de-
cretum de mi-
raculis.

§ 46. Sed quoniam tot miracula non poterant propter multitudinem singula seorsim expendi, et multorum, variis de causis, ut accidere solet, legitimae necessariaeque probationes vel deperierant vel haberi non poterant, nonnullis ex omnibus selectis, et in pluribus congregationibus S. R. E. cardinalium sacris ritibus praepositorum per triennium discussis, duo anno mcccxv idem praedecessor noster Clemens XI decreto suo approbavit: miraculum scilicet repentinae liberationis Ioannae Mariae Peret monialis a diuturna inferiorum artuum ad motum impotentia et hydrope-tympanite, et miraculum instantaneae sanationis Ioannis Gasparis Montereymar Aniciensis ab enormi hernia. Et demum, anno insequenti, die xxiv maii, idem praeclaudatus Pontifex praedecessor noster servum Dei Ioannem Franciscum in Beatorum Confessorum numerum solemniter ritu adscripsit.

Nova post bea-
tificationem mi-
racula.

§ 47. Ab illo tempore non destitit Deus pluribus miraculis sanctitatem servi sui magis magisque testari, ut in eius gloriam erga eius fidelem servum cultus et veneratio augeretur. Etenim vere pretiosa est in conspectu Domini mors sanctorum eius, quando, nec terra carnis, vita deserente, contemnitur, et invisibili anima de domo visibili discedente, habitaculum servi cura Domini custoditur, et in gloriam Domini a conservis fidelibus honoratur.

Novi de illis
processibus et a-
postolicum de-
cretum Cle-
mentis XII.

§ 48. Itaque novis apostolicam auctoritate processibus in Gallia conscriptis de miraculis quae per intercessionem B. Francisci post eiusdem beatificationem omnipotens Deus operatus est, septem examini sacrorum rituum Congregationis coram nobis habitae propositis, duo xix die mensis martii currentis anni approvabimus, videlicet: Primum, instantaneae liberationis Mariannae Forget ab

ingentia in infernis artubus ad motum impotentia, Tolosae in ecclesia Societatis Iesu, dum beatificationis solemnia peragerentur; secundum, instantaneae sanationis sororis Mariae Theresiae de Montplaisant monialis professae in monasterio Visitationis civitatis Sanctiamoris dioecesis Lugdunensis ab ingenti duritie seu tumore in ventre, acuta febris, aliisque exitiis symptomatibus mortis iam proximae, nullo remanente morborum vestigio, ac viribus incontinenti receptis.

§ 49. Denique venerabilibus fratribus nostris S. R. E. cardinalibus in generali sacrorum rituum Congregatione unanimi sententia suffragium ferentibus, ad solemnem beati Ioannis Francisci canonizationem tuto deveniri posse, implorato prius a Patre luminum praesidio, die v aprilis solemniter decrevimus.

Decretum A-
iusdem Clementis
XII de ca-
nonizatione.

§ 50. Quod autem faciendum supererat, ut de praemissis omnibus ad universum S. R. E. cardinalium collegium relatio fieret, in consistorio secreto diligenter peractum est a dilecto filio nostro Antonio Felice tituli S. Praxedis presbytero cardinali Zondadario nuncupato, qui, suo et aliorum cardinalium sacrorum rituum Congregationis nomine, B. Ioannis Francisci Regis fidei integritatem ceterasque egregias virtutes et miracula accommodata oratione exposuit, asserens omnia ex sacrorum canonum praescripto optime comprobata fuisse, proinde se collegasque suos censere ad ulteriora, si ita nobis videretur, progredi licere, et beatum Dei servum in sanctorum numerum referri posse; quod ceteri omnes, qui tunc aderant, cardinales, gravibus sententiis dictis, unanimes comprobarunt.

Consistorium
secretum coram
eodem Summo
Pontifice de
more habitum.

§ 51. Convocato deinde publico consistorio, in quo dilectus filius Ioannes Ascevolinus, aulae nostrae consistorialis

Consistorium
publicum.

advocatus, pro eiusdem servi Dei canonizatione eloquenter peroravit, ac nomine carissimi in Christo filii nostri Ludovici Francorum regis christianissimi et carissimae in Christo filiae nostrae Mariae eorundem Francorum reginae christianissimae eius coniugis, et quamplurium venerabilium fratrum archiepiscoporum et episcoporum regni Galliarum, et potissimum provinciae Occitaniae, necnon dilectorum filiorum magistratuum, procerum et populorum eiusdem provinciae, et totius insuper Ordinis clericorum regularium Societatis Iesu, ut ad eam deveniremus, humiliter supplicavit. Nos, rei gravitatem ac magnitudinem prae oculis habentes, cardinales, patriarchas, archiepiscopos, episcopos ibidem praesentes omni animi contentione hortati sumus, ut orationibus, ieiuniis instantes essent, quo benignissimus Deus lucem suae claritatis super mentem nostram effundere, et in voluntate sua dirigere dignaretur.

Item semipublicum.

§ 52. Deinde in semipublico consistorio vocatis non solum cardinalibus, patriarchis, archiepiscopis et episcopis praedictis, sed etiam nostris et Sedis Apostolicis notariis, protonotariis nuncupatis ex numero participantium, ac palatii nostri apostolici causarum auditoribus de more praesentibus, quae opportuna et necessaria videbantur de eximia B. Ioannis Francisci sanctitate commemorata sunt: cumque omnes ad eius canonizationem deveniendum concordibus suffragiis censuissent, nos, unanimi eorum consensu audito, aperuimus os nostrum in benedictionibus, ac Dei nutum et voluntatem secuti, iustum et debitum esse censes, ut, quos Deus honorat in caelis, nos venerationis officio laudemus et glorificemus in terris, celebrandae canonizationis diem indicimus, cunctos adhortati ut in oratio-

nibus, ieiuniis et eleemosynis perseverantes, Spiritus Sancti gratiam nostrae humilitati in tam alto negotio impetrare studerent.

§ 53. Demum, peractis omnibus quae ex sanctorum patrum auctoritate, canonicis sanctionibus, S. R. E. antiqua consuetudine, ac novorum decretorum praescripto agenda et observanda erant, hodie, hoc est die festo SS. Trinitatis, in sacrosancta Lateranensi basilica, in quam solemni ritu cum cardinalibus, patriarchis, archiepiscopis et episcopis supradictis, necnon dilectis filiis Romanae Curiae praelatis, officialibus et familiaribus nostris, clero saeculari et regulari, ac maxima populi frequentia mane convenimus, post repetitas a dilecto filio nostro Nereo S. R. E. diacono cardinali Corsino nuncupato, nostro secundum carnem ex fratre germano nepote, per dilectum filium Thomam Antamorum, consistorialis nostrae aulae advocatum, praedictas instantias, quae dudum Sedi Apostolicae pro huiusmodi canonizatione porrectae fuerant, nobisque a praefato Ordine clericorum regularium Societatis Iesu suppliciter porrigebantur, post sacros hymnos, litanias aliasque preces decantatas, ac Spiritus Sancti gratiam humiliter imploratam, ad honorem sanctae et individuae Trinitatis, ad exaltationem fidei catholicae et christianae religionis augmentum, auctoritate domini nostri Iesu Christi, beatorum apostolorum Petri et Pauli, ac nostram, maturam deliberatione praehabita, et divina ope saepius implorata, ac de venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium, patriarcharum, archiepiscoporum et episcoporum in Urbe existentium consilio et consensu, B. Ioannem Franciscum de Regis Confessorem, Sanctum esse decrevimus et definivimus, ac Sanctorum catalogo adscripsimus,

Canonizatio
demum solemni
ritu celebrata
die festo Sanctissimae Trinitatis ab eodem Clemente XII.

prout tenore praesentium similiter decernimus, definimus et adscribimus; statuentes ab Ecclesiâ universali illius memoriam quolibet anno die xxiv mensis maii inter sanctos Confessores non Pontifices piâ devotione recolere debere; parique auctoritate omnibus utriusque sexus christifidelibus vere poenitentibus et confessis, qui singulis annis dictâ die xxiv maii ad sepulchrum, in quo eius corpus requiescit, visitandum accesserint, septem annos et totidem quadragenas, de iniunctis eis aut aliâs quomodolibet debitis poenitentiis, misericorditer in Domino relaxavimus, et relaxamus in formâ Ecclesiae consuetâ.

Gratiarum
actio.

§ 54. His peractis, Deum Patrem aeternum, regemque gloriae Christum dominum Patris sempiterni Filium, et Sanctum Paraclitum Spiritum, unum Deum unumque Dominum, laudibus et confessionibus venerati, sacroque hymno *Te Deum* solemniter decantato, omnibusque christifidelibus tunc praesentibus plenariâ omnium peccatorum suorum indulgentiâ et remissione concessâ, propter corporales nostras infirmitates, affectamque valetudinem, senilemque aetatem, ab eâdem Lateranensi ecclesiâ recessimus, remanentibus in eâ venerabilibus fratribus nostris S. R. E. cardinalibus, archiepiscopis et episcopis et universo clero et populo; quibus praesentibus, a venerabili fratre nostro Thoma S. R. E. cardinali episcopo Praenestino Ruffo nuncupato, tamquam cardinali in ordine antiquiori, in arâ maximâ praefatae basilicae, ex indulto et de licentiâ nostrâ, solemniter missa cum Sancti eiusdem Confessoris commemoratione celebrata est.

Item gratias
agit Summus
Pontifex.

§ 55. Convenit autem ut Deum caeli benedicamus, et coram omnibus viventibus confiteamur ei, quia fecit nobiscum misericordiam suam, agnoscamusque, non sine magnâ Dei providentiâ

factum esse, ut hisce afflictis Romanae Ecclesiae temporibus, quibus maxime multiplici Sanctorum suffragio indigemus, novus hic suffragator et patronus fidei populo tribueretur.

Preces per
intercessionem
huius Sancti.

§ 56. Quamobrem eundem Patrem misericordiarum, qui humiles exaltat, humiliter deprecemur, ut, per intercessionem S. Ioannis Francisci, Ecclesiae suae pacem et tranquillitatem, regibus et principibus concordiam et unionem, schismaticis et haereticis agnitionem veritatis et salutis, miseris infidelibus catholicae fidei lumen largiatur.

Fides transumptum.

§ 57. Ceterum, quia difficile foret praesentes nostras litteras ad singula loca, ubi opus esset, deferri, volumus ut earum exemplis, etiam impressis, manu tamen publici notarii subscriptis, et sigillo alicuius personae in dignitate ecclesiasticâ constitutae munitis, eadem ubique fides adhibeatur, quae ipsis praesentibus adhiberetur si essent exhibitae et ostensae.

§ 58. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostri decreti, definitionis, adscriptionis, mandati, statuti, concessionis, elargitionis et voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire; si quis autem, hoc attentare praesumpserit, indignationem omnipotentis Dei ac beatorum Petri et Pauli apostolorum eius se noverit incursurum.

Sanctio poenalis.

Datum Romae, apud S. Ioannem in Laterano, anno Incarnationis dominicae MDCCXXXVII, xvi kalendas iulii, pontificatus nostri anno VII.

Dat. die 16 iunii 1737, pontif. anno VII.

✠ EGO CLEMENS

CATHOLICAE ECCLESIAE EPISCOPUS¹.

† Ego Franciscus episcopus Ostiensis cardinalis Barberinus.

¹ Haec sequitur forma sigilli ut supra pagina 245 a (R. T.).

- | | |
|---|---|
| † Ego Petrus episcopus Portuensis cardinalis Ottobonus. | † Ego P. Aloysius Carafa cardinalis tituli S. Laurentii in Pane et Perna. |
| † | † |
| † Ego episcopus Sabinensis cardinalis S. Clementis S. R. E. camerarius. | † Ego Franciscus Burghesius cardinalis tituli S. Silvestri in Capite. |
| † Ego Ludovicus episcopus Albanensis cardinalis Picus. | † |
| † Ego Petrus episcopus Tusculanus cardinalis Corradinus. | † |
| † | † Ego Vincentius tituli S. Petri in Monte aureo presbyter cardinalis Bichius. |
| † | † Ego Ioseph tituli S. Thomae in Parione presbyter cardinalis Firrao. |
| † | † Ego Antonius tituli S. Stephani in Monte Celio presbyter cardinalis Gentili. |
| † | † Ego frater Ioannes Antonius cardinalis Guadagni tituli S. Silvestri et Martini ad Montes. |
| † | † Ego T. cardinalis de Acquaviva tituli S. Ceciliae. |
| † | † Ego Dominicus Ss. Quirici et Iulittae presbyter cardinalis Riviera. |
| † Ego Georgius tituli S. Mariae in Transtiberim cardinalis Spinola. | † Ego Marcellus tituli S. Mariae in Aracaeli presbyter cardinalis Passari. |
| † | † |
| † Ego Ludovicus tituli S. Priscæ cardinalis Belluga. | † |
| † | † Ego frater P. M. tituli S. Ioannis ante Portam Latinam cardinalis Pieri. |
| † Ego Alvarus tituli S. Bartholomaei in insulâ cardinalis Cienfuegos. | † |
| † Ego I. B. tituli S. Matthaei in Merulanâ cardinalis de Alteriis. | † Ego L. S. Mariae in Vialata prior decanorum cardinalis de Alteriis. |
| † Ego Vincentius tituli S. Petri ad Vincula presbyter cardinalis Petra, maior poenitentiarius. | † Ego Carolus S. Agathae in Suburrâ diaconus cardinalis Columna. |
| † | † Ego Fabius Ss. Viti et Modesti diaconus cardinalis Oliverius. |
| † | † |
| † | † Ego Alexander S. Mariae in Cosmedin diaconus cardinalis Albanus. |
| † Ego Nicolaus Maria tituli Ss. Ioannis et Pauli cardinalis Lercari. | † Ego Nicolaus S. Mariae ad Martyres diaconus cardinalis Iudice. |
| † | † Ego Nerius S. Eustachii diaconus cardinalis Corsinus. |
| † Ego Franciscus Antonius tituli S. Sixti presbyter cardinalis Finus. | † Ego B. Ss. Cosmae et Damiani diaconus cardinalis Ruspulus. |
| † | † |
| † | † |
| † | † |
| † Ego frater Vincentius Ludovicus tituli S. Pancratii presbyter cardinalis Gotti Ordinis Praedicatorum. | † |
| † Ego D. Leander tituli S. Callisti presbyter cardinalis de Porzia. | † |

†
†
†
†
†

Loco † plumbi.

A. card. prodaturus.

Pro domino Card. OLIVERO

CAIETANUS AMATUS.

Visa de Curia:

N. ANTONELLUS.

I. B. EUGENIUS.

Reg. in Secret. Brevium.

CCV.

Beata Catharina Flisca Adurna sanctarum viduarum albo adnumeratur, designata ad eius festivitatem annuam peragendam die xv septembris.

Clemens episcopus,
servus servorum Dei,
ad perpetuam rei memoriam

Prooemium. § 1. Gaudet et exultat Romana Catholica Ecclesia suorum filiorum laeta victoriis, qui, telis quidem saecularibus nudi, sed divina virtute armati, adversus blandientis mundi insidias, vel frementis infernalis hostis impetus, vel saecularium turbinum minas, spe vivida, mente incorrupta, constanti fide, charitate ferventi, fortes et stabiles in acie steterunt, et bonum certamen, certamen caeleste, certamen spiritale, praelium Christi decertarunt, gloriosum cursum consumerunt, immarcescibilem coronam de manu Dei meruerunt. Gloriatum igitur, et merito gloriatur pia mater Ecclesia fortitudine martyrum, constantia poenitentium, viduarum pietate, castitate virginum, et ceteris praeclaris suorum fidelium virtutibus; qui, spectaculum facti mundo et angelis et hominibus, militantes fortiter et constanter dimicantes, in se ipsis exhibuerunt su-

pernae prodigia virtutis. Infirma enim mundi elegit Deus ut confundat fortia¹, et ea quae non sunt, ut ea quae sunt destrueret. Omnipotens enim Dei virtus in servorum infirmitate clarescit, et supernae dignationis splendor, quo servos suos illustrat, in Ecclesiae refunditur honorem, quae illos salutare lavacro spiritualiter peperit, doctrinae lacte aluit, sacrarum scripturarum roboravit eloquiis, sacramentis armavit ad pugnam, hortamentis perduxit ad coronam. Itaque, quo inimicorum maior est impetus, saevior pugna, longius certamen, pugnantis autem infirmior aetas, sexus imbecillior, eo magis crescit vincentis meritum et laus, et amantissimae matris gaudium et gloria, quae sanctorum recolens triumphos, eorum exhilarata laudibus et potenti confisa patrocinio, quotidianas, quas ab ingratis accipit filiis, solatur iniurias, et assiduas abstergit lacrymas, quibus funera plangit et ruinas plurimorum. Benedictus Deus, qui non continet in ira misericordias suas, et Ecclesiam suam quotidie non desinit divinae gratiae prodigiis et gloriosis sanctorum victoriis consolari. Cuius consolationis nos, quos nullis nostris meritis universalis Ecclesiae regimini praeficere dignatus est, inter assiduos tribulationum et adversitatum fluctus, quibus pro peccatis nostris graviter vexamur, participes esse voluit in Beata Catharina Genuensi, quae fortis illa mulier fuit, quam inventu difficilem Scriptura edixit, et cuius constantis animi fortitudinem, caelestibus auxiliis roboratam, nec infernalis hostis impetus, nec multarum tribulationum impulsus quaterere potuit, et ab illo avertere, quod in sublimitate mentis suae altissime conceperat, proposito sanctitatis.

¹ Edit. Main habet *fortiora*; at in epist. 1^a ad Corinth., cap. 1, 27, legitur *fortia* (n. r.).

B. Catharinam
sanctarum vi-
duarum catalo-
go adscribi sta-
uit Pontifex.

§ 2. Nam per gratiam Spiritus Sancti naturae usum et sexus infirmitatem transgressa, accincta robore et in spiritu ambulans, desideria carnis non perfecit; sed in divinâ charitate altius fixis radicibus, et domicilio suo super petram robustâ mole solidato, firma et inconcussa ad infernales incursus et ad procellas et turbines saeculi stetit, ut ad Dei munera, per divina praecepta fortiter pergens, feliciter perveniret. Hanc igitur hodiernâ die, servatis de more solemnitatibus, in Sanctarum Viduarum numerum, ad omnibus fidelibus colendam, auctoritate caelitus nobis impertitâ, retulimus: et ideo eius pie sancteque res gestas praeclarasque virtutes breviter exponemus, ut earum commemoratione¹ dolorem cordis nostri et pectoris nostri angustias leniamus, et fideles omnes ad fugienda mundi huius blandimenta sequendasque virtutes praeclaras huius viduae exemplo provocentur. Experientiâ enim docente quotidie ediscimus humanam infirmitatem, in studio virtutum decurrendo, exemplo amplius quam praeceptis proficere; quoniam nec difficile quod iam factum est aestimatur, et utile quod probatum, et religiosum quod haereditariâ quodam paternae virtutis usu in nos est successione transfusum.

B. Catharinae
patria, genus
et primordia.

§ 3. Genuae, quae celebris est in Liguria civitas, et totius Genuensis Reipublicae caput, Catharina nata est anno MCDXLVII. Patrem habuit Iacobum Flicum proregem regni Neapolis, Roberti fratris felicitis recordationis Innocentii IV praedecessoris nostri filium, et matrem Franciscam de Nigro, sanguinis vetustate nobiles, sed longe prole ipsâ nobiliores, quae splendorem generis virtutum praestantiâ, quae sola apud Deum nobilitas est, superavit. Vix enim usu rationis

¹ Ed. Main. legit *commemorationem* (R. T.).

polita, et octavum aetatis suae annum attingens, amore erga Deum, erga parentes obsequio, erga se ipsam contemptu, eximiis virtutum argumentis, ad futuram sanctitatem praeluxit. Etenim, Spiritu Sancto instruente, edocta christianam sapientiam, esse scire Iesum Christum et hunc crucifixum, frequenter in Christi patientis imaginem e pariete cubiculi sui pendentem figebat oculos, cuius obtutu, miro patiendi desiderio accendebatur, ut, crucifixis carnalibus desideriis, mente solutâ et liberâ ad amorem invisibilium tenderet. Itaque iam magisterium virtutis adepta, quae praeiudicium vehebat aetatis, spretâ lecti molitiae, paleis culcitrae, ligno cervicalis vicem et usum praebentibus, somnum brevissimum capiebat; omnia autem puerilia oblectamenta contemnens, rigida silentii custos solâ oratione delectabatur.

§ 4. Quamobrem spiritali orationis cibo nutritâ, adeo in eâ caelestis patriae amor mundique contemptus succreverat, ut decimum¹ tertium annum agens, consilio confessarii sui adhibito, se in sanctimonialium monasterio dicare Deo totamque dedere decrevit. Sed sacrae virgines, quas adulta animi Catharinae fortitudo et spiritale robur latebat, eius teneros annos et imbecillam corporis valetudinem ratae non aptam ferendis laboribus et monasticae vitae muneribus, consuetudinem monasterii excusantes, ob teneram eius aetatem in suum consortium admittere recusarunt. Ita disponente altissimo divinae providentiae consilio, a religioso monasterii secessu repellitur, quae postea in saeculo remanens feminis nuptis ac viduis, quarum mentibus carnalium cupiditatum tenebras mundi consuetudo offuderat, viam Domini ingredi volentibus tamquam

Quamvis monialis esse cuperet, parentum obtemperans voluntati, nubit Iuliano Adurno.

¹ Pessime edit. Main. habet *demum* pro *decimum* (R. T.).

lucerna in tenebroso loco, super candelabrum posita praeluceret. Repulsam Dei ancilla patienter tulit, et intelligens Dominum se obedientiam velle, non sacrificium, parentum voluntati atque imperio obsecuta, nobili atque diviti viro Iuliano Aduerno nupsit.

In ipso con-
gali stato pom-
pas saeculi re-
fugit, qua de
causa multas
patitur a Iulia-
no angustias.

§ 5. Sed ne mundanarum voluptatum fallenti capta dulcedine in viam saeculi abduceretur, tribulationes et pressuras immisit Dominus, qui non derelinquit diligentes se. Sponsus enim ab ipso nuptiarum die eam vehementer aversatus est. Ille enim luxum et pompam, haec frugalitatem et modestiam; ille hominum coetus et frequentiam, haec silentium et secretum; ille ludos et oblectamenta saeculi, haec orationem et castas Deum amantium delicias sequebatur. Ideo, ob contraria voluntatum studia alienato mariti animo, aspere ac dure ab eo tractabatur: ipsa vero, etiamsi nulla erga virum maritalis obsequii et cultus praeteriret officia, maxime tamen illius morum ac vitae taedebat; unde caligantibus tristitiae tenebris oppressum est cor eius, nec erat qui consolaretur eam.

Saeculi viven-
di morem sequi
statuit, ut a
continuo animi
moerore suble-
vetur; sed hinc
gravior animi
angor.

§ 6. Quinquennium in luctu et moerore transegit. Deinde, amicis et consanguineis feminis suadentibus, aliquid pristinae vitae consuetudinis remittere, ut moerentis animi sublevaret tristitiam, aliarum nobilium seminarum coetus ac domos frequentare et vivendi rationem sequi instituit. Sed omnia benignissimus Deus felle amaritudinis consperserat, ut servae suae anima, falsa mundi oblectamenta fastidians, caelestes dulcedines esuriret: habet enim potestas illa iustissima, miris et incomprehensibilibus modis, per quasdam secretissimas successiones rerum sibi servientium quas creavit, et severitatem vindicandi, et clementiam liberandi. Itaque altero fere quinquennio elapso, cum a terre-

nis rebus animi potius augeretur moeror et tristitia, quam levaretur angustia, (severa enim misericordia nihil Deus ancillae suae sinebat dulcescere quod ipse non esset), ita supramodum gravata est supra virtutem, ut taederet etiam vivere, et in se ipsa responsum mortis haberet.

§ 7. Graves inter animi angores, propriam sororem, quae sanctimonialis erat, consuluit, cuius hortatu presbyterum monasterii confessarium adivit; ad cuius pedes vix dum se prostraverat, cum caligantibus iam in saeculo mentis oculis divinae lucis lumen subito affulsit, et doloris simul atque amoris vulnere percussa, parum absuit quin prolaberetur in terram. Ut vero domum rediit, cum ab arcano fundo alta consideratio, irradiante divinae gratiae lumine, contraxisset et conguessisset totam miseriam suam in conspectum cordis sui, obortus est ingens imber lacrymarum, proiecisque mulieribus ornamentis, quae nunquam imposterum resumeret, amarissima cordis contritione, sanctaeque indignatione sui, detestata est anteactae vitae culpas, admirans divinam clementiam ac ineffabilem Dei bonitatem retrahentem recedentes a se et derelinquentes fontem aquae vivae ut fodiant sibi cisternas dissipatas quae continere non valent aquas.

Luce divina
perforata, saeculi
pompas iterum
exiit.

§ 8. Itaque timore divinae iustitiae, admiratione misericordiarum Domini, odio erga mundum, indignatione erga se, dolore de peccatis, tanta denique tamque gravi diversorum affectuum cordis intima agitante procella, accendebatur iam concepta flamma divini amoris, et pectore suspiria, et oculis cadebant flumina lacrymarum, acceptabile ac gratum Deo sacrificium, cum subito mentis oculis apparuit Salvatoris crucem baignantis imago toto corpore san-

Et visione Sal-
vatoris crucem
baignantis in-
gens Cathari-
cae et desiderii
patientia.

guine diffuentis. Quam speciem animo alto infixam, vivisque expressam coloribus, ita mente in posterum retinuit, ut quaecumque oculis cerneret, pretioso Christi sanguine ei viderentur adpersa; quocumque se verteret, Salvatoris patientis imaginem sibi videretur intueri. Hinc ingens patendi ardor, ut se passioni Christi domini conformans, de admissis vel levibus culpis divinae iustitiae in sanguine et per merita divini Mediatoris satisfaceret, et veterem hominem in se crucifigeret, et destrueret corpus peccati, ut non amplius peccato serviret.

Corpus diversimode marital.

§ 9. Itaque carnem suam ciliciis, flagellis, fame, siti, vigiliis, ieiuniis edomuit, ne spinas ac tribulos vitiorum produceret, sed sancta corpore et spiritu hostiam Deo placentem se offerret. Uno¹ vel altero anno ab admirabilis eius conversionis die, voce Christi domini ad interiores cordis aures resonante, invitata est ad peragendum cum divino Salvatore quadragesimale ieiunium, quo exercita, tria illa tentationum genera, quibus ille volens tentatus est, superare edisceret: nempe, intus verbo Dei nutrita, non quaereret in ista mortalis vitae eremo voluptatem, imo ita domitam cupiditatem haberet, ut nec fami cederet; uni Deo tantum subiecta, non desideraret in monte, hoc est in terrenâ elatione, iactantiam, sed nulli creaturae serviens, et neminem praeter Deum adorans, superbiam saeculi et vanitates vanitantium calcaret; aeterno demum incommutabilis veritatis spectaculo inhaerens, curiositatis illecebram contemneret, nec Deum tentaret, nec per fastigium templi, id est per oculos corporis se praecipitem ageret, ut ad temporalia et inferiora, recedendo a Deo templum,

¹ Male edit. Main. puncto sublato legit se offerret uno etc. (R. T.).

hoc est, animam nostram inhabitante, perveniret: atque ita tria illa prorsus sibi subdita et penitus confracta ieiunio et oratione teneret, concupiscentiam carnis, concupiscentiam oculorum et ambitionem saeculi. Auscultavit¹ subito invitamenta dominica fortis Dei mulier, et secuta est spiritum ducentem in desertum poenitentiae, longe a mundanis oblectamentis et saecularibus curis inhabitantibus terras. Et non solum primae illius quadragesimae tempus, sed, per annos tres et viginti, nedum Quadragesimae, verum etiam Adventus serias solo caelestis orationis cibo et sacrosancto Eucharistiae pane sustentata transegit, amarissimo tantum aquae liquatae salis atque aceti potu sitim quandoque excrucians potius quam restinguens: quo tamen ieiunii tempore robustior atque vividior laboriosis charitatis muneribus perfungebatur. Ita per gratiam Spiritus Sancti naturae usum et sexus infirmitatem transgrediens, cibo abstinentiae et potu amaritudinis aluit corpus suum, docens non solum nescire vitia, sed etiam causas nescire vitiorum.

§ 10. Ad sanctitatis igitur sublimitatem per erectas poenitentiae semitas celeri gradu progrediens Catharina, et a divino humilitatis magistro edocta altitudinem perfectionis mensuram esse debere humilitatis, elegit abiecta esse in domo patris sui, magis quam habitare in tabernaculis peccatorum. Itaque se comitem adiiciens, vel potius in pietate ducem aliis nobilibus matronis, quarum cura erat infirmis pauperibusque succurrere, et miserorum calamitates et angustias opere et pecuniâ sublevare, circuibat per vicos et plateas quaerens in pauperibus et infirmis quem diligebat anima sua. Incedebat autem

Egenis et infirmis inservit cum nonnullis matronis.

¹ Perperam iterum puncto sublato eadem edit. legit ambitionem saeculi auscultavit etc. (R. T.).

per urbem gradu sobrio, veste humili, vultu modesto, fixis in terram oculis, itaut praenuntia sanctitatis anteirent signa virtutum. Egenorum vero necessitatibus prompte ac liberaliter subveniebat, et feminas infirmas singulari charitate complectebatur. Sternebat lectos, purgabat sordes, vilia quaeque munia obibat, solabatur verbis, inserviebat manibus, pecuniâ sustentabat, cibis reficiebat. Laboriosum atque humile infirmis inserviendi munus, primum in privatis domibus, deinde in publico nosocomio, cuius regimen ei demandatum est, sedulâ curâ et diligenti sollicitudine exercuit, et ad felicem usque vitae suae finem retinuit, militans stipendiis suis; nihil enim unquam accepit de substantiâ nosocomii, sed, quae sibi pro victu et indumentis erant necessaria, suis expensis sibi ministrari volebat.

Qualis eius
esset amor erga
Deum, suique
contemptus.

§ 11. Assiduis autem charitatis officiis erga proximum, quasi quibusdam gradibus, ad purum illum ac mirabilem Dei amorem ascendit; siquidem, cum eius corpus templum Dei inhabitantis effectum esset, animus, veluti altare Domini in quo sacrificium laudis quotidie Altissimo immolaretur manu aeterni Sacerdotis, excusso mundanorum affectuum pulvere et terrenarum cogitationum remotis cineribus, totus exarsit, vaporem exhalans¹ divini ignis non solum penetrantis inflammantisque cordis intima, sed pertingentis usque ad exteriora corporis, et ad sensus mortalium hominum. Nam thorax ceteraeque corporis partes, quae cor ambiunt, ignem spirare videbantur; nec manibus tangi poterant, quin et dolore afficerentur et intolerabilem ardorem persentirent. Quare, per altas contemplationis vias introducta a caelesti Sponso in cubiculum suum, et ad contemplantam aeternae

¹ Ed. M. leg. *exhalans* pro *exhalans* (R.T.).

maiestatis pulchritudinem admissa, divinae lucis fulgore mens reperiens, intimo cognitionis sensu percipiebat, comparatione immensae illius altitudinis, imam mortalis conditionis paupertatem et miseriam, inanitatem, vilitatemque sui; et cernens fastigium celsitatis sursum, et faciem abyssi deorsum, adeo se contemnebat, seque ab aliis sperni amabat, ut semetipsam nunquam proprio vocaret nomine, atque aegrefferet ab aliis se nominari. Affirmabat enim nihil esse in creaturis, quod bonum esset vel Deo placere posset, sed ex nihilo eductas, et contagione labis primi parentis contaminatas, in malum semper propendere, et frequentissime in illud prolabi, nisi Dei gratiâ misericorditer liberentur: ideo curandum esse ut destruat quod ex nostro est, ut Christus aedificetur in nobis, cuius gratiâ adiuti dicere valeamus cum Apostolo: *Vivo ego, iam non ego, vivit vero in me Christus*. Etenim non solum temporalibus indigentium necessitatibus, et aegrotantium corporibus sanandis curandisque sedulo navabat operam, sed etiam aliorum animis medendis curam omnem ac studium impendebat. Ideo et qui aegrotantes in nosocomio decumbabant, et qui eam adibant, his atque aliis sanctissimis instruebat monitis, quibus et ad peccati fugam et ad Dei amorem impelleret.

§ 12. Imo dilatans spatia charitatis, dialogum etiam scripsit, in quo allegorice inducens animam et corpus peregrinationem facere statuentes, convenientesque absque dissidio iter peragere, mire ostendit quanto detrimento anima caeci amoris sui laqueis implicata in recto aeternae salutis itinere peragendo impediatur.

Dialogum
scribit.

§ 13. Sed maximo ad virtutem sequendam incitamento et exemplo atque admirationi omnibus erat, femi-

Proximo praebet documenta et incitamenta virtutis.

nam splendido genere natam adeo humilem ut vilissima quaeque munera in publico nosocomio exerceret, adeo mitem et patientem ut alacri animo procacium servorum iniurias et contumelias exciperet, tantâ ferventem charitate, ut, corpore licet infirma, omnium aegrotantium curae praesto esset; et quamvis divinae contemplationis dulcedine in extasim rapta frequenter a sensibus alienaretur, tamen, vocata ad peragenda charitatis officia, illico surgebat, et hilari ac rubicundo vultu, veluti ex consortio sermonis Domini, accurrebat, expletisque charitatis muneribus ad orationem redibat; ita Deo unita ut nullius creaturae recordaretur, ita proximorum curae ac animarum saluti intenta ut sui prorsus videretur oblita.

Quam fixa
mente in aeterni
norum rerum
contemplatione
Deique amore
mauerat.

§ 14. Nam a Deo impetraverat, ut, proximorum necessitatibus sublevandis inserviens, tametsi id tantâ sedulitate et diligentia praestaret, quantum alius nemo pari charitate non praeditus adhibere posset, tamen, statim ac officium charitatis impleverat, eius, cui inserviebat, oblivisceretur. Itaque nulla creaturae imago illam, quam alte corde et mente infixam patientis Salvatoris imaginem gerebat, obumbrabat, et flagrantem illam divini amoris flammam, qua cor illius suaviter aestuabat, nullus terrenus affectus vel restinguebat vel minuebat. Idcirco vere cum Apostolo exclamare poterat: *Neque mors, neque vita, neque angeli, neque principatus, neque virtutes, neque instantia, neque futura, neque altitudo, neque profundum, neque creatura alia poterit nos separare a charitate Dei quae est in Christo Iesu domino nostro.* Profecto non illam aspera natura et dissoluti intolerabilesque viri mores, quos semper patienti et remisso animo toleravit; non contemptus et irrisiones, dum pietatis opera per-

agebat, gaudebat enim quod digna habitata esset pro nomine Iesu contumeliam pati; non dura eorum qui nosocomio ministrabant imperia, quae humilis ac lubens exequabatur; non carorum et consanguineorum iactura, quam, benedicens Domino, aequissimo animo tulit; non corporis infirmitas assidueque aegritudines (cum enim infirmabatur, tunc potentior erat; non denique sive prospera sive adversa sive praesentia sive futura a Deo avellere potuerunt: sed tamquam petra immobilis adversus furentes saeculi turbines et frementis hostis impetus stabat, nec caelestibus donis ditata efferebatur, nec adversis concussa deprimebatur; sed perseverantissimâ animi puritate complectens Deum, quem semper praesentem gerebat, ad eum toto affectu se tenens, non habebat quod expectaret vel timeret futurum, nec in praeteritum traiciens quod meminisset, nec in praesens respiciens quod amaret. Ideo nullâ vice variabatur, nec ulla in tempora distendebatur; sed cohaerens summo, vero, et vere aeterno Bono, quod solum animae diligenti illud sufficit, eiusque flagrans desiderium explere posset¹, in nullam temporum varietatem et vicissitudinem ab illo se revolvebat, et ad se declinabat, vel defluebat ad alia: nam, invento quem diligebat anima sua, tenebat eum nec dimittebat; in eo exultabat, gaudebat, gloriabatur; eiusque sanctum nomen semper gerebat in corde, semper habebat in ore, nullum maius persentiens gaudium ac solatium, quam si dulce Iesu nomen etiam ab aliis pronuntiari audiret.

§ 15. Quamdā mulierem, contagiosā febre in extremo vitae laborantem, et vi morbi loquendi facultate privatam, saepius adhortata ut sanctum Iesu no-

Ex saculo mulieris contagiosa febre laborantis, quae Iesu nomen invocaverat, morbum contrahens

¹ Aptius fortasse leg. potest (R. T.).

et postmodum
convalescens
pristina pietatis
erga infirmos
officia repetit.

men pronunciaret, statim atque moven-
tem ora animadvertit, impetu amoris
sanctissimi nominis abrepta, suique ob-
lita, foetidi et pestilentis oris labia ex-
osculata est, quorum contactu, eodem
infecta morbo, parum absuit, quin vitam
cum morte commutaret. Sanitate deinde
Dei voluntate sibi restituta, nihilo secius
ac antea, nullâ cautione adhibita, omni-
que vitae et salutis periculo contempto,
pristina erga infirmos pietatis officia
alacris et laeta repetiit. Ex abundanti
enim divini amoris fonte emanabat mi-
ra illa pectoris constantia et animi fir-
mitas in currendâ viâ Domini et sectan-
dis semitis eius. Nam idem semper vul-
tus, eademque frons, et praeclara in
omni actu vitae aequalitas; humilis,
mitis, modesta et misericors, humana
despiciens, caelestia inquirens, admira-
bilem suavitatem in verbis ac moribus
praeseferebat; omnes ad se confugientes
excipiebat benigne, amanter solabatur,
prudenter admonerat, prompte ac stu-
diose sublevabat; una et assidua eius
cura et perpetua cogitatio erat Dei ho-
nor, gloria et laus nominis eius, vitio-
rum ac scelerum destructio, peccantium
conversio, animarum salus; id curabat,
id satagebat, huc referebat cogitationes
omnes et sedulam illam quam pro cor-
poribus proximorum sanandis sublevan-
disque curam adhibebat.

Virum suis
moribus ad bo-
nam linguam re-
ducit.

§ 16. Plures igitur abeuntes in con-
silia impiorum, et sequentes semitas
saeculi, orationibus et suasionibus suis,
divinâ operante misericordiâ, ad viam
Domini revocavit; et potissimum illud
accidit, quod fore Apostolus praedixerat,
ut sanctificaretur vir per mulierem fi-
delem. Nam etiam Julianum Adurnum
virum suum lucrata est Domino, loquens
illi sanctis moribus suis, quibus eam
Dens pulchram fecerat et reverenter
amabilem atque admirabilem. Etenim

primum ab eo impetravit ut sibi in
castitate vivere liceret; deinde ipse ul-
tro ad illam veniens, collatisque cum
eâ consiliis, a viis saeculi recedens, in-
duto habitu Tertii Ordinis sancti Fran-
cisci, piam vivendi rationem instituit.
Cum autem in postremâ aegritudine suâ,
ut erat ad iram proclivis, morbi incom-
moditatum pertaesus, tantâ esset impa-
tientia et indignatione correptus, ut in
periculo aeternae salutis versari videretur;
id ubi sancta uxor conspexit, in-
gressa cubiculum suum oravit Dominum
qui ventis et tempestatibus imperat, et
serenitatem caelo, mari tranquillitatem
reddit; et statim ab immortalī Deo ob-
tinuit ut tranquillaretur impatiens ma-
riti animus, ut procellosa tempestas
sedaretur. Siquidem, nondum finita ora-
tione, vir, stupentibus omnibus, mutatus
est, et tranquillato animo, submissoque
divinae voluntati, patienterque toleratis
extremae vitae molestiis ac doloribus,
mortem obiit.

§ 17. Anxia autem Catharinae cura et sollicitudo de salute animarum, et fer-

Mra. Catharina
sua anima-
rum sollicitudo.

vor eius charitatis erga proximum, pars
exigua erat immensae flammae, qua in
Dei amorem exarserat, et qua ex animo
refluente in corpus non solum cor vi-
cinaeque partes divini ignis ardore fer-
vere videbantur, sed insuper pars illa
cutis, quae cordis regionem ambit, igneo
rubore¹ suffusa post felicem eius obi-
tum mortalium oculis apparuit.

§ 18. Itaque, ubi non vocabat chari-
tas vel aliorum praecepta impellebant,
ad orationem redibat, in qua caelesti-
bus fruens contemplationis deliciis, alie-
nabatur a sensibus, et animae, a rerum
sensibilium tumultu et perturbatione li-
berae², in suavissimâ quiete supra pectus
divini magistri recumbenti, caelestia re-

Accidit in
oracione

¹ Edit. Main. legit *robore* (n. t.).

² Edit. Main. legit *libere* (n. t.).

velabantur secreta, quae intellectus humanus percipere nequit: ineffabilis scilicet divinae sapientiae modus, quo hominum aeternae consulit saluti; humanae caecitatis misera conditio, quae, lacrymabili insaniens aegritudine, oblata sibi repellit remedia, et divina beneficia in suam perniciem vertit; vis superni amoris, gratiae sanctificantis pulchritudo, aeternae beatitudinis gloria. Quae postea a suis interrogata, cum maxime vellet, humanis verbis exprimere acquiebat; quod enim mens divino lumine illustrata conceperat, lingua, carneis inodata vinculis, parere non poterat; ut iam illud Apostoli usurpare posset: *Scio huiusmodi hominem, sive in corpore sive extra corpus nescio, Deus scit, quoniam raptus est in paradysum, et audivit arcana verba, quae non licet homini loqui.*

Qualis amoris
aestus in Deum.

19. Ita igitur B. Catharinae assiduae orationis et caelestis contemplationis uberibus inhaerentem charitas erga Deum et erga proximum nutriverat ac roboraverat animum; qui cum iam esset sequendo Deo factus idoneus, ac dicere posset caelesti Sponso: *Trahe me post te, curremus*, et divinae maiestatis sublimitas ex tantâ parte, quantam mortali homini vix ferre licet, sese aperuisset, adeo mirabilis ille charitatis ardor excreverat¹, et tantum divini amoris surrexerat² incendium, ut, exusta omni terrena labe, atque interiori homine purgato et sanctificato, caelestis amoris ignis ex animo in corpus exundans vivus et efficax et penetrabilior omni gladio accipiti et perlingens usque ad divisionem animae ac spiritus, infirmam carnem tanto ferendo ardori imparem fere consumpserit, et iam pene solo spiritu viveret, nec in alio corporis sarcinam

sentiret, quam in doloribus et languoribus, quos aestuantis amoris vis atque impetus in eam redundans efficiebat; unde in eâ iam satis appareret quam divine dictum sit: *Ego sum ignis consumens*; et illud: *Ignem veni mittere in terram*; tum etiam: *Lampades eius lampades ignis atque flammaram*. Pleno igitur pectore aestuabat et totis flagrabat visceribus Catharina, et animus morarum impatiens ad castissimum caelestis Sponsi ferebatur amplexum, ut saepe, amoris impetu acta, cum Apostolo dicere cogeretur: *Cupio dissolvi et esse cum Christo*. Nam dulce quidem est vinculum corporis quo ligatus est homo, et ab eo solvi non vult; illa tamen, quia sciebat quid sibi repositum esset, et iam gustaverat primitias spiritus, concupiscebat dissolvi et esse cum Christo, adeo, quod aliis metum ac terrorem ingerit, ipsi gaudio ac solatio esset; si nempe aut de vitâ cum morte commutandâ sermonem audiret, aut si aliquos in nosocomio morientes aspiceret, aut si sacris precibus, aut sancto sacrificio, quod pro mortuis offertur, interesset, internâ quadam laetitiâ et spirituali gaudio afficiebatur. Gemit enim gemitibus inenarrabilibus in peregrinatione suâ recordans Hierusalem, et elevato atque extento sursum corde, caelestem requirebat patriam, amatam patriam, desideratam patriam, pulchram et sanctam civitatem, et Deum super eam regnatorem et illustratorem Patrem, Dominum sponsum suum, dilectum suum, castas et fortes delicias, beatam requiem et solidum gaudium, unum, summum, verum et sempiternum bonum. Gratulabatur ergo, aliquando solvenda esse vincula carnalium membrorum ut acciperet indumenta et ornamenta virtutum; ponendam esse carnem

¹ Aptius Acta SS. habent excrevit (R. T.).

² Aptius ibid. legitur surrexit (R. T.).

¹ Male edit. Main. legit caelesti pro caelestis (R. T.).

ut coronam reciperet; discedendum esse a corpore ut cum Deo coniungeretur; migrandum esse e terris ut ad caelum perveniret: felix mutatio, sancta migratio!

In extremum
incidit morbum,
quod a medicis
divinitus immis-
sum noscitur.

§ 20. Verum divinae exequendae¹ voluntati semper intenta, et solum quod Domino placitum esset faciendi cupida et sollicita, eique omne suum desiderium submittens, omnemque cogitationem ad Dei voluntatem conformans, vitam sibi produci non recusabat, ut per diuturna dolorum tormenta conformior fieret imagini Filii sui, quia, sicut socii passionis erimus, ita erimus et resurrectionis. Quare inter huiusmodi suaviter adversantium desideriorum conflictus, novo quodam caelestis amorisangebatur martyrio, quo factum est ut infirma caro inusitata quadam et gravi aegritudine, quae postrema fuit, correpta succumberet. Cum autem insolitae infirmitati sanandae nulla remedia proficerent, qui eius salutis curam gerebant, ut omnia experirentur et nihil intentatum relinquerent, convocarunt decem medicorum consilium; qui cum iacentem conspexissent, nec ullum morbi indicium appareret, perpensis causis, quibus aegrotare coeperat, aegritudinis symptomatibus diligenter inspectis, cum nulum ex propinatis remediis prodesset, sed tantum caelestes visiones et sacram Eucharistiam, qua tantummodo refecta per quatuordecim ante obitum postremos dies vitam duxit, prostratis eius² viribus solatio et adiumento esse cognovissent, morbi novitate attoniti, quid divinum in mirabili illa infirmitate manifeste comperientes, in eam convenere sententiam, eius aegritudinem non humanam, nec humanis sanandam remediis, sed eam divinitus immissam, et

caelesti animarum medico relinquendam.

§ 21. Sexagesimum tertium aetatis suae annum agebat, cum optatum tempus advenit, quo, dissolutis corporei carceris vinculis, ad optatum caelestis Sponsi complexum libera evolare. Praesentiens igitur iam sibi finem mortalis vitae instare, oculis atque manu caelum indigitans, quo mox profectura erat, verbis illis: *In manus tuas, Domine, commendo spiritum meum*, suavissime pronuncialis, paulo post, magnitudine potius charitatis quam morbi languens, in secreto et mentibus hominum impervio divini amoris silentio placidissime obdormivit in Domino xvii kalendas octobris anno MDX.

Pie moritur.

§ 22. Ubi vero beatæ Dei famulae mortis rumor urbem Genuensem pervasit, ad sacras eius exuvias in magno nosocomio, ubi decesserat, venerandas, ex omni ordine atque aetate viri et mulieres frequentes confluerent; ibique plurimi solatium quibusangebantur molestiis, quibusque afflictabantur aegritudinibus¹ medicinam eius intercessionem invenerunt. Interea corpus eius, quod flexile, incorruptum, rubroque colore circa cor, et vivo omnino simili cernebatur, post aliquot dies in sepulchro in nosocomii ecclesiâ recenter constructo² summâ veneratione collocatum fuit. Post duodeviginti menses illo aperto, ut sanctae viduae corpus ad novum tumulum decentius ornatum transferretur, quo ingenti civium multitudini, quae ad illud venerandum accurrebat, fieret satis, repositum est intra sacelli cancellos, quibus confertim irruentium turba arceretur: per octo continuos dies ita permansit, populorum concursu

Miracula post
mortem patra-
ta.

¹ Edit. Main. legit *exequendo* (R. T.).

² Male edit. Main. legit *cuius pro eius* (R. T.).

¹ Male edit. Main. legit *aegritudinis pro aegritudinibus* (R. T.).

² Edit. Main. legit *constructa* (R. T.).

nunquam deficiente, auctâ praesertim veneratione ex miraculis quae omnipotens Deus circa illud operabatur. Quibus diebus elapsis, in eâdem ecclesiâ ad marmoreum tumulum in sublime erectum delatum est, ubi, miraculis clarum, publicae venerationi expositum, devotionis fervore erga sacras beatae Catharinae reliquias nunquam imminuto, ad nostra usque tempora permansit: divinâ omnipotentia testimonium prodigiis dexterâ suae perhibente, sibi non perire quod moritur, et mortalium mentibus indicante quantâ in gloria esset in caelis anima huius beatae viduae, cuius caro exanimis tam eximiis divinitatis effectibus in terris ornabatur.

Eius corpus non a Genuensibus solum, sed etiam ab aliis populis in veneratione habitum.

§ 23. Itaque nedum Genuensium, verum etiam ceterorum populorum erga hanc sanctam Dei servam devotio, et ad sacrum eius corpus venerandum cuiusvis generis et conditionis hominum assiduus concursus fuit.

Confectis itaque super his omnibus processibus primâ auctoritate ordinariâ, deinde ex commissione apostolicâ, servato ordine, processum est ad singularum rerum diligens examen, decretum, etc.

§ 24. Cultu igitur et veneratione erga illam constanter perseverante, et post centum annorum lapsum percrebescente, post confectos auctoritate ordinariâ processum super eius sanctitate et miraculis, eosque in sacrâ Rituum Congregatione exhibitos, expedita fuit commissio die xxiv mensis maii anno mdccxxvi ad effectum fabricandi processum auctoritate apostolicâ super cultu immemorabili et casu excepto a decretis felicitis recordationis Urbani VIII praedecessoris nostri; illoque absoluto, a bonae memoriae Decio S. R. E. diacono cardinali Azzolini nuncupato, causae relatore, propositum fuit dubium, an sententia ab archiepiscopo Genuensi iudice delegato lata super cultu immemorabili et casu excepto esset confirmanda; et responsum fuit: Constare de casu excepto; proinde praefatam sententiam esse confirmandam. Quod de-

cretum piae memoriae Clemens X pariter praedecessor noster die vi aprilis anno mdclxxv confirmavit. Praeterea eodem cardinali Azzolino causae ponente, obtenta est die xvii mensis augusti anno mdclxxxiii facultas faciendi processum super sanctitate vitae, virtutibus et miraculis, ut ad Beatae canonizationem deveniri posset. Labentibus deinde pluribus annis, ac processu post nonnullas prorogationes ac subrogationes nondum absoluto, suffectoque in ponentem causae bonae memoriae Iosepho Renato Imperiali nuncupato, supplicatum fuit pro concessione officii et missae de eâdem Beatâ, et S. R. E. cardinalium sacris ritibus praepositorum Congregatio edito decreto, a felicitis recordationis Clemente XI praedecessore nostro confirmato, die xix mensis septembris anno mdcccx concessit ut in civitate Genuensi recitaretur officium et celebraretur missa de communi Viduarum in honorem beatae Catharinae; nec multo post eadem concessio ad totum Ianuensis Reipublicae dominium fuit ampliata; ac tandem approbatum extitit officium et missa propria de eâdem Beatâ cum eiusdem elogio in romano martyrologio apponendo. Completo autem processu super virtutibus, propositoque dubio in praefatâ sacrorum rituum Congregatione, prodiit decretum affirmans, constare de virtutibus in gradu heroico, quod fuit a nobis die xiii mensis maii anno mdccxxxii confirmatum.

§ 25. Absolutoque etiam altero processu super miraculis, ventum est ad illorum examen; suffecto interim in causae relatores dilecto filio Georgio tituli S. Mariae Transtiberim S. R. E. presbytero cardinali Spinula nuncupato in locum bonae memoriae Iosephi Renati S. R. E. diaconi cardinalis Imperialis nuncupati, viam universae carnis

Examen miraculorum.

ingressi, in Congregatione coram nobis habitâ die II mensis aprilis anno MDCCLXXVII, ex quatuor miraculis propositis, tria sequentia fuere approbata, videlicet: Primum, subitae sanationis Mariae Magdalенаe Rizzi; haec enim mulier, in qua a novem circiter annis iniqua vitiali humoris feritas defluxa ad infernos artus non minus quam ad latus sinistrum extensa, quantum vetustate suâ in latere acerbos enutriverat acerbioresque per intervalla cruciatus excitaverat, tantum in tumefactis cruribus liberam motus ademerat facultatem, iam diu ad incurabiles amandata, quum¹ totâ nocte sanationem praecedente a lateris dolore saevius torqueretur, post invocationem B. Catharinae brevi somno correpta, sana surrexit diluculo, ac liberatrici suae gratias referens, ad consueta benevolentium officia incolumis reversa est: tertium, sanationis repentinae Mariae Franciscæ Xaveriae Gentilis patritiae Genuensis, quam et scorbutica aegritudo a tredecim fere annis invaserat, et spirandi difficultas, convulsionum cum nervorum in pedibus attractione, ac vivae lucis omnisque rumoris intolerantia ita vexabant, ut nec ambulare, nec decumbere posset omnino nisi cervicalibus plurimis fulciretur; quae in spem consequendae salutis erecta, si Beatae exuvias coram ei datum esset venerari, voti compos facta, in gestatoriâ sellâ a Beatae visitatione domum redux, nil haesitans se divinitus perfectam obtinuisse salutem, domesticas scalas animosa conscendere, sedere, surgere, atque ambulare illico coepit, quibus afflictabatur morbis undequaque depulsis: et quartum, instantaneae curationis Blanchae feminae in hospitali incurabilium a viginti quinque annis

iacentis, quae, ex antiquâ femoris laxatione, artuum infernorum dexterarumque manus paralyti gravabatur, dum ad Beatae sepulcrum toto spiritus conatu salutem flagitat, repente attractam manum extendit, et utrumque crus imbecille expedite movet, ac graditur, perfectae incolumitati restituta.

§ 26. Denique generali sacrorum rituum Congregatione coram nobis convocata, propositâque quaestione, an, stante praefatorum miraculorum approbatione, ad solemnem B. Catharinae Fliscæ Adurnae canonizationem tuto posset deveniri, cum venerabiles fratres nostri S. R. E. cardinales praefatae Congregationis sacris ritibus praepositae affirmative respondissent: nos, post humillimas nostras aliorumque fusas ad Deum preces ut in re tam gravi caelestis adiutorii lumen concederetur ex alto, die XIII aprilis anno MDCCLXXVII ad B. Catharinam solemni ritu in Sanctarum album adscribendam procedi posse declaravimus. Postea die VI sequentis mensis maii in concistorio nostro secreto, a dilecto filio Antonio Felice tituli S. Praxedis presbytero cardinali Zondario nuncupato, praemissorum omnium, quae in causâ acta fuerant, necnon vitae et miraculorum B. Catharinae summam et apposite relationem factâ, cum reliqui cardinales, qui adfuerunt, idem censuissent; in publico consistorio proximo a nobis habito, auditâ per dilectum filium Gabrielem Serianum, consistorialis aulae nostrae advocatum, disertâ oratione de virtutum excellentiâ vitaeque sanctitate B. Catharinae, tum etiam humillimis supplicationibus quae nobis pro eiusdem Beatae Dei servae canonizatione nomine totius cleri et populi inclytæ Genuensis Reipublicae porrigebantur, de re tantâ tamque arduo negotio nos, ut oportebat, cum ve-

Decretum Congregationis Rituum de veniri posse ad solemnem huius Beatae canonizationem.

¹ Edit. Main. legit *quam* pro *quum* (A. T.).

nerabilibus fratribus nostris S. R. E. cardinalibus, archiepiscopis et episcopis maturius deliberaturos responso dato, eosdem cardinales et episcopos ad implorandum eleemosynis, ieiuniis et orationibus divinum auxilium in Domino hortati sumus. Deinde eorumdem cardinalium, patriarcharum, archiepiscoporum et episcoporum in Urbe praesentium consistorio semipublico indicto, in quo etiam nostri et Apostolicae Sedis notarii, protonotarii nuncupati, ex numero participantium, et sacri palatii apostolici causarum auditores vocati adfuerunt, iidem cardinales, patriarchae, archiepiscopi et episcopi omnes B. Catharinam ex iis, quae a nobis proposita et in processibus relata fuerant, in Sanctarum numerum adscribendam esse censuerunt. Quorum sententiis auditis, nos, gratias Deo agentes quod ancillam suam per ministerium nostrum honorificari velle dignaretur, canonizationis diem indiximus, omnesque interim, ut eleemosynis, orationibus ac ieiuniis ad nobis caelestem Spiritus Sancti gratiam in tantâ re gravique negotio impetrandam diligenter ac perseveranter insisterent, iterum adhortati sumus.

§ 27. Demum rite omnibus absolutis quae sanctorum patrum auctoritas, sanctorum canonum statuta, S. R. E. antiqua consuetudo in re huiusmodi peragenda praescribunt, hodie, quae fuit dies dominica SS. Trinitatis, in sacrosanctam Lateranensem basilicam decenter ornatam, cum venerabilibus fratribus nostris S. R. E. cardinalibus, necnon patriarchis, archiepiscopis et episcopis, Romanaeque Curiae praelatis, officialibus et familiaribus nostris, clero saeculari et regulari, ac maximâ populi frequentia convenimus; ubi, repetitis pro canonizationis decreto petitionibus a dilecto filio nostro Nereo S. R. E. dia-

cono cardinali Corsino nuncupato, nostro secundum carnem ex fratre nepote, per dilectum filium Thomam Antamorum consistorialis aulae nostrae advocatum, et decantatis sacris precibus et litanis, ac Spiritus Sancti gratia humiliter implorata, ad honorem sanctae et individuae Trinitatis, ad exaltationem fidei catholicae et christianae religionis augmentum, auctoritate domini nostri Iesu Christi, beatorum apostolorum Petri et Pauli, ac nostrâ, maturâ deliberatione praehabita, et divina ope saepius implorata, ac de venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium, patriarcharum, archiepiscoporum et episcoporum in Urbe existentium consilio et consensu, B. Catharinam de Flisco viduam, Sanctam esse decrevimus et definivimus, ac Sanctarum catalogo adscripsimus, prout tenore praesentium similiter decernimus, definimus et adscribimus, illamque universos christifideles tamquam vere Sanctam honorare et venerari mandavimus et mandamus, statuentes ut ab universali Ecclesia in eius honorem ecclesiae et altaria, in quibus sacrificia Deo offerantur, aedificari possint et consecrari, et singulis annis memoria ipsius die xv mensis septembris inter sanctas nec virgines nec martyres piâ devotione recolere debeat.

§ 28. Eademque auctoritate omnibus christifidelibus vere poenitentibus et confessis, qui annis singulis eodem festo die ad sepulchrum, in quo corpus eius requiescit, visitandum accesserint, septem annos et totidem quadragenas de iniunctis eis aut aliâs quomodolibet debitis poenitentis misericorditer in Domino relaxavimus et relaxamus in formâ Ecclesiae consuetâ.

§ 29. His peractis, Deum Patrem aeternum, regemque gloriae Christum dominum Patris sempiterni Filium, et San-

Omnibus ab-
enitis die xvi
lucti eam San-
ctam esse ded-
nit, assignata
pro annuâ fe-
stivitate die xv
septembris.

Canonizatio-
ni praesentibus
plenariam con-
cedit indulgen-
tiam.

Ceterae ad
hoc peractae
solemnitates re-
censeantur.

ctum Paraclitum Spiritum, unum Deum unumque Dominum, laudibus et confessionibus venerati, sacroque hymno *Te Deum* solemniter decantato, omnibusque christifidelibus tunc praesentibus plenaria omnium peccatorum suorum indulgentia et remissione concessa, propter corporales nostras infirmitates affectamque valetudinem senilemque aetatem ab eadem Lateranensi ecclesia recessimus, remanentibus in ea venerabilibus fratribus nostris S. R. E. cardinalibus, archiepiscopis, episcopis et universo clero et populo: quibus praesentibus, a venerabili fratre nostro Thoma S. R. E. cardinali episcopo Praenestino Ruffo nuncupato, tamquam cardinali in ordine antiquiori, in ara maxima praefatae basilicae, ex indulto et de licentia nostra, solemniter missa cum Sanctae eiusdem nec virginis nec martyris commemoratione celebrata est.

Gratias Deo
agit Pontifex.

§ 30. Cum omni autem humilitate aequum est, ut nos pro tam insigni beneficio gratias Deo agamus, et confiteamur Domino dominorum, per quem amici eius coronantur in caelis et honorificantur in terris, et a quo gloria et honos et pax omni operanti bonum; et quoniam Sanctae huius praesidium videmus nobis divinitus comparatum, ineffabilem Dei clementiam obsecremus, ut cuius in terris voluit his nostris calamitosis temporibus gloriam manifestari, eius suffragantibus precibus, per merita et passionem filii sui Christi domini salvatoris nostri faciem suam a peccatis nostris avertens, nos a praesentibus huius mortalis vitae angustiis liberare, et in hoc saeculo caelesti gratia sua, et in futuro aeterna sanctorum felicitate donare dignetur.

Harum litterarum
transumptis
ubique credi iubet.

§ 31. Ceterum, quia difficile foret, praesentes nostras originales litteras ad singula loca, ubi opus esset, deferri,

volumus ut earum exemplis, etiam impressis, manu publici notarii subscriptis, et sigillo alicuius personae in dignitate ecclesiastica constitutae munitis, eadem ubique fides adhibeatur, quae ipsis praesentibus adhiberetur si essent exhibitae vel ostensae.

Sanctio poe-
nalis.

§ 32. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostri decreti, definitionis, adscriptionis, mandati, statuti, concessionis, elargitionis et voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire; si quis autem hoc attentare praesumpserit, indignationem omnipotentis Dei, ac beatorum Petri et Pauli apostolorum eius se noverit incursurum.

Datum Romae, apud S. Ioannem in Laterano, anno Incarnationis dominicae MDCCXXXVII, XVI kalendas iulii, pontificatus nostri anno VII.

Dat. die 16 iunii 1737, pontif. anno VII.

✠ EGO CLEMENS

CATHOLICAE ECCLESIAE EPISCOPUS¹.

- + Ego Franciscus episcopus Ostiensis cardinalis Barberinus.
- + Ego Petrus episcopus Portuensis cardinalis Ottobonus.
- + Ego episcopus Sabinensis cardinalis S. Clementis S. R. E. camerarius.
- + Ego Ludovicus episcopus Albanensis cardinalis Picus.
- + Ego Petrus episcopus Tusculanus cardinalis Corradinus.

¹ Haec sequitur forma sigilli ut supra pagina 245 a (n. r.).

- †
† Ego Georgius tituli S. Praxedis presbyter cardinalis Spinula.
†
† Ego Ludovicus tituli S. Mariae in Trans-tyberim cardinalis Belluga.
†
† Ego Alvarus tituli S. Bartholomaei in Insula cardinalis Cienfuegos.
† Ego I. B. tituli S. Matthaei in Merulana cardinalis de Alteriis.
† Ego Vincentius tituli S. Petri ad Vincula presbyter cardinalis Petra, maior poenitentiarius.
†
†
†
† Ego Nicolaus Maria tituli Ss. Ioannis et Pauli cardinalis Lercari.
†
† Ego Franciscus Antonius tituli S. Sixti presbyter cardinalis Finus.
†
†
†
† Ego frater Vincentius Ludovicus tituli S. Pancratii presbyter cardinalis Gotti Ordinis Praedicatorum.
† Ego D. Leander tituli S. Callisti presbyter cardinalis de Porzia.
† Ego P. Aloysius Carafa cardinalis tituli S. Priscae.
†
†
†
† Ego Franciscus Burghesius cardinalis tituli S. Sylvestri in Capite.
†
†
† Ego Vincentius tituli S. Laurentii in Pane et Perna presbyter cardinalis Bichius.
† Ego Ioseph tituli S. Thomae in Parione presbyter cardinalis Firrao.
† Ego Antonius tituli S. Stephani in Monte Coelio presbyter cardinalis Gentili.
† Ego frater Ioannes Antonius cardinalis Guadagni tituli S. Sylvestri et Martini ad Montes.
† Ego T. cardinalis de Aquaviva tituli S. Caeciliae.

- † Ego Dominicus Ss. Quirici et Iulittae presbyter cardinalis Riviera.
† Ego Marcellus tituli S. Mariae in Araceli presbyter cardinalis Passari.
†
†
† Ego Fr. P. M. tituli S. Ioannis ante Portam Latinam cardinalis Pieri.
†
† Ego Laurentius prior diaconorum S. R. E. cardinalis de Alteriis.
† Ego Carolus S. Agathae in Suburra cardinalis Columna.
† Ego Fabius Ss. Viti et Modesti diaconus cardinalis Oliverius.
†
† Ego Alexander S. Mariae in Cosmedin diaconus cardinalis Albanus.
† Ego Nicolaus S. Mariae ad Martyres diaconus cardinalis Iudice.
† Ego Nerius S. Eustachii diaconus cardinalis Corsinus.
† Ego B. Ss. Cosmae et Damiani diaconus cardinalis Ruspulus.

ANTONIUS card. prodatarius.

Visa de Curia:

N. ANTONELLUS.

I. B. EUGENIUS.

CCVI.

*Canonizatio B. Iulianae Falconeriae
Tertii Ordinis Servorum B. Mariae
Virginis fundatricis.*

**Clemens Episcopus,
servus servorum Dei,
ad perpetuam rei memoriam.**

Prooemium.

§ 1. Humanum genus, quod morsu infausti pomi primus parens perdidit, aeternus Dei filius Christus dominus e captivitate peccati redempturus, formam servi ex virginali utero accipere voluit, atque ita virginis filius, et ipse virgo, virginem sibi copulavit Ecclesiam, cuius fecunditati non obest virginitas, sicut nec fecunditas adimit virginitatem; casta enim et virgo tota fide, quam nulla haeresis inficit macula, nullus mendax contaminat error, caelestis Sponsi sui sequitur vestigia, laeta numerosa prole filiorum, quos inexhauste et nunquam senescenti partu quotidie sacri lavacri undis aeternam parit ad vitam; sterilis peperit plurimos, et quae multos habebat filios infirmata est. Sed flos ecclesiastici germinis, decus atque ornamentum gratiae spiritalis, laudis et honoris, opus integrum atque incorruptum, Dei imago respondens ad sanctimoniam Domini, illustrior portio gregis Christi, virgines sunt: quae, a carnali concupiscentia et a corruptione saeculi recedentes, tam carne quam mente se Deo voverunt; quae, de virginitate sua gloriam foris non quaerentes, sed spe ad interiora raptae, carnem macerantes ieiuniis, et toto desiderio ad supernam patriam anhelantes, contentae mercede divina, laudes contempsere terrenas; quae, vigiles in praeceptis dominicis, oleum sanctorum operum in vasis habentes, acceptis lampadibus suis obviam caelesti Sponso iverunt, et cum eo intraverunt ad nuptias. Gaudet per illas atque in illis largiter floret Ecclesiae matris gloriosa fecunditas, et, licet saeculi crescat iniquitas, non desinit Ecclesia sancta esse in membris, et copiosa sacrarum virginum prole adversus syna-

gogas satanae quotidie laetari; etenim non parit virgines sacras nisi virgo illa sacra quae desponsata est uni viro casta exhiberi Christo; ex illa, non tota corpore, sed tota virgine spiritu, nascuntur sanctae virgines et corpore et spiritu. Fremat igitur infernalis hostis, et sanctae virginitatis invidia lividus contabescat; primae parentis victor se ab infirmis puellis quotidie victum ingemiscat, et caelestem hanc virtutem, quam improbitas assequi nequit, per suos impietatis ministros infamet. Parit Ecclesia quotidie virgines, quas nulla saeculi contagione coinquinatas offert sponso suo, ut sequantur Agnum quocumque ierit, et quibus os obstruat obloquentium iniqua, et vituperatorum sanctae virginitatis impudentiam confundat. Non deserit enim Deus Ecclesiam suam, neque cessat eam in diem, operans magnalia potentiae suae, novam sanctorum prole secundare, et imbecillitati humanae nova semper parare subsidia, dum in servis suis mira proponit imitationis exempla, quorum merita et orationes nostra vult esse suffragia. Fecit nobiscum misericordiam suam benignissimus Deus, et parvitati nostrae concedere voluit, ut sacram virginem Iulianam Falconeriam, quae in eadem Florentina urbe nata est, ubi primum mortalem hanc lucem aspeximus, et quam iam antea plebi suae in gloria miraculorum manifestaverat, nos cuncto christiano populo Sanctarum Virginum cultu venerandam apostolicam auctoritate decerneremus. Itaque manus ad caelum tollentes gratias agimus omnium bonorum largitori, qui inter multiplices tribulationes, quibus ob peccata nostra assidue affligimur, dedit nobis de beatae virginis virtutibus ac meritis laetari, et sanctam eius conversationem et mirabilia divinae gratiae annunciare populis,

ut, cuius sacras exuvias ac religiosas imagines pio devotionis affectu venerantur, pari religionis ardore vitae sanctitatem imitentur. Non enim beatos esse homines censendum est si iustis et sanctis carnis propinquitate iungantur, vel natali solo socientur; sed si eorum doctrinae ac moribus obediendo atque imitando cohaerescant. Nam, sicut fratribus Christi domini, idest secundum carnem cognatis, qui non in eum crediderunt, nihil profuit illa cognatio; sic et materna propinquitas nihil Mariae profuisset, nisi felicius Christum corde quam carne gestasset.

B. Iuliana ex
sterilibus pa-
rentibus Floren-
tiae nascitur.

§ 2. Ex Falconeriâ gente perillustri, patre nomine clarissimo, et matre Recordatâ, sterilibus atque in senectutem vergentibus, nata est Iuliana Florentiae, tamquam praemium paternae pietatis, eo tempore in lucem prodians, quo eius pater Florentinae Reipublicae consulari potestate princeps, in beatissimae Virginis ab Angelo salutatae honorem, magnificum templum Deo optimo maximo extruendum curabat.

Athne infans
manibus in coe-
lum protensis
nomina Iesu et
Mariae pronun-
ciat.

§ 3. Sed quoniam fastigium nobilitatis est inter Dei filios computari, nec addere nobis quidquam ad dignitatem terrenae originis decus, nisi contemptu suo, potest; ideo sanctorum nobilitatem caelestemque patriam ab infantiâ inquirens B. Iuliana, splendorem terrenae patriae et originis decus respuendo auxit, contemnendo dilatavit. Nam in ipso nutricis sinu, dum fasciis involvitur, infantiles manus sponte suâ in caelum tendens, mutam adhuc per aetatem linguam in dulcissima Iesu et Mariae nomina dissolvit; scilicet ex abundantia cordis sanctissima nomina proferens, quorum amor tenero in pectore latebat, manibus autem in caelum protensis, quasi hominibus indicaret, quo, stadium mortalis huius vitae ingressa, cursum

suum, superno spirito gubernante, dirigeret. Hinc factum est ut puerilia omnia illius aetatis declinans, spiritualibus dumtaxat exercitationibus studeret; quibus in secretiori parte domus, anachoretarum secessus imitata, sedulam adeo navabat operam, ut B. Alexius, Iulianae patruus, unus ex septem Ordinis Servorum Mariae fundatoribus, cuius exemplo et doctrinis instituebatur, in teneris annis grandaevam puellae virtutem admirans, genitrici solitus fuerit dicere, eam non puellam sed angelum peperisse.

§ 4. Et quidem mentis puritatem, qua angelicis spiritibus assimilamur, in primis coluit, diligentissime praecavens omnia quae eam laedere possent; tantâ enim modestiâ usa est, ut oculos nunquam in toto vitae cursu ad hominis faciem intuendam erexerit, non monilium aut vestium quaerens ornamenta, sed morum; speculum, aliaque mulieris vanitatis instrumenta semper abhorruit; et ornamento crinium, quod alienae voluntati obsequens adhibere cogebatur, spissis acicularum aculeis infixis ingeniose caput lacerabat, ne inter mundanos ornatus amor vanitatis irreperet, et mentem castam ac puram Deoque dicatam saecularia desideria profanarent.

Suavitate
respuat nuptias.

§ 5. Decimum quartum aetatis annum agens, conspicuis sibi propositis nuptiis, toto animo exhorruit purissima virgo, probe sciens, quod mulier, quae nupta est, cogitat quae sunt mundi, quomodo placeat viro; quae vero innupta et virgo cogitat quae Domini sunt, ut sit sancta corpore et spiritu. Urgebatur blanditiis et minis consanguineorum; sed forte pectus, quod caelestis Sponsi amor occupaverat, nec mundi illecebrae, nec hominum terramenta expugnare potuerunt. Nam, de suâ infirmitate timens, in auxilium matrem et exemplar

1 Edit. Main. legit caelesti (R. T.).

puritatis Deiparam Virginem ferventibus precibus advocat, ac deinde terrenum coniugium, desiderio nuptiarum caelestium, plurimis lacrymis a se deprecatur. Adfuit famulae suae beatissima Virgo, eiusque ope et potenti apud Deum patrocinio, in cuius manu corda hominum sunt, consanguineorum voluntatis Iuliana victrix evasit.

Mantellae
habitum e manu
B. Philippi Be-
nitio suscipit.

§ 6. Ut vero in futurum mundanarum nuptiarum spem omnem suis adimeret, propriis manibus sibi crine reciso, iampridem carnalibus circumcisis desideriis, eligens abiecta esse in domo Patris sui, sacrarum virginum, quas *Mantellatas* vocant, pauperem habitum humillime petit, exultanter obtinuit. Anno probationis exacto, stetit ad altare Domini hostia pudoris, victima castitatis, et tria solemnia vota, quae iampridem animo conceperat, immortalī Deo nuncupavit, adstante Dei sacerdote B. Philippo Benitio, qui sacrum ei velamen, quo amatoribus mundi occultaretur, imposuit. Qui postea proxime futuri sui obitus certior divinitus factus, Florentiā Perusium ac deinde Tuderum secedere cogitans, excellentem Iulianae virtutem¹ et sanctitatem compertam habens, eius orationibus nedum sacrarum virginum societatem Tertii Ordinis Servorum B. Mariae Virginis, quae tum exorichatur, sed universum Servorum Ordinem commendavit, fore praedicens ut ipsa eiusdem Tertii Ordinis caput et fundatrix, leges ei praescribendo, futura esset, simulque monens ne prae animi humilitate delatum sibi munus pertinacius recusaret.

Remanet in
domo paterna
ut matris inser-
viat.

§ 7. Interea devotum Deo pectus, et mens caelesti Sponso dicata, mundana quaeque contemnens, et saecularia cuncta fastidians, cupiebat elongari fugiens et manere in solitudine, ut, remotis terrenarum rerum turbis, in sanctā Dei

¹ Edit. Main. legit *virtutum* (R. T.).

contemplatione quiesceret. Sed retraxit charitas quae non quaerit quae sua sunt, et lex Domini qua filii honorem et cultum parentibus exhibere praecipuntur. Ideo, ne vidua mater, unicae filiae solatio destituta, moerens solitaria in domo vitam transigeret, debita parenti pietatis et servitutis officia, quoad vixit, praestare non detrectavit. Remansit igitur in saeculo, ut saeculum virtutem edoceret; ibi enim adeo pie sancteque vitam instituit, adeo bonis omnibus virtutum operibus mundo praeluxit, ut complures nobiles virgines ac matronas, saecularibus pompis repudiatis, ad Deo serviendum in eodem religioso instituto exemplo suo provocaverit. Quin mater ipsa, sublimis virtutis et christianae sanctitatis pulchritudinem in Iulianā admirata, se filiae suae in iustificacionibus Domini et sequendis semitis eius pie erudiendam instituendamque dedit.

§ 8. Cum autem ancillarum Dei societas ad eum numerum excrevisset, ut conveniens esse videretur eis, in unum coetum adunatis, aliquam vivendi formam ac regulam praescribi, nulla aptior ad huiusmodi grave opus explendum, ipso B. Philippo Benitio, dum viveret, praemonstrante, iudicata est, quam Iuliana, quae iam imaginem secundi hominis, qui de caelo est, in se portabat: hanc enim virginitas portat, portat integritas, sanctitas portat et veritas. Itaque sapientiam edocta, sapientiam vero non huius saeculi, neque principum huius saeculi, qui destruuntur, tam prudentes ac sapientes regulas condidit, ut huius Apostolicae Sedis auctoritate meruerint approbari. Custos virginitatis charitas est, locus autem huius custodis humilitas, ibi quippe habitat qui dixit, super humilem et quietum et trementem verba sua requiescere spiritum suum. Itaque ancilla Dei, pede humilitatis ad

Virgines
Mantellae re-
gulas scribit.

sublimia virtutum ascendens, quanto magis in sanctitate proficiebat, tanto magis se humiliabat in omnibus, ut coram Deo inveniret gratiam. Defunctâ igitur matre, a iugo piae servitutis libera, nudis pedibus, fune ad collum alligato, ad sanctimonialium, quas ipsa instituerat, domum convolvavit; ibique coram omnibus genuflexa, quae omnium erat mater, tamquam addictissima serva, ut in eorum consortium admitteretur, humillimis precibus efflagitavit. At vero sacrae virgines, profundam magistrae suae humilitatem et sublimem virtutem admiratae, unanimi consensu ei monasterii regimen detulere; quod ipsa invita et reluctans, sed tandem superiorum cedens iussibus, suamque submittens voluntatem, accepit, tantumque oneris ob humilitatem recusatum, ex obedientiâ susceptum, prudentiâ gessit, charitate administravit.

Sacrarum virginum monasterium ingressa, aliam verbis et exemplo educet.

§ 9. Nam corde humilis, verbis gravis, animo prudens, loquendi parcior, orandi studiosior, nunquam otiosa, aut operi manuum intenta, solita quae Dei sunt, non quae sua, quaerere, offendere neminem, iuvare omnes, fugere iactantiam, rationem sequi, amare virtutem¹, facta est forma sui parvi gregis, instruens verbo et exemplo. Etenim frequenter filias suas monere solebat, Deiparam Virginem prae oculis semper habendam esse tamquam perfectissimum virginitatis exemplar, in quo velut in speculo refulget species castitatis et forma virtutis; hinc sumenda exempla vivendi, ubi expressa magisteria probitatis, quid corrigi, quid evitari, quid tenere oporteret, ostenderent: dolorosae earum matri, Dei scilicet genitrici, ut similiores efficerentur, amandam esse potius domum luctûs, quam domum convivii;

¹ Pro aut, fors. legend. *semper autem* (R. T.).

² Edit. Main. legit *virtutum* (R. T.).

spernendam esse vestium vanitatem, ut B. Virginis religioso habitu digniores fierent; militiam esse vitam hominis super terram, ideo semper ad pugnam paratas esse debere; amatorum mundi irrisiones et obtrecrementa, quibus feminae Deo dicatae impetuntur, animae lucrum aestimanda esse, ideoque Apostoli verba animo perpetuo retinenda: *si hominibus placerem, Christi servus non essem*; recte ab eis factum, non semper ab aliis laudatum iri; malum autem magis in Mariae ancillis quam in ceteris mulieribus exaggerandum fore, pro certo haberent; otium ut pestem fugere et aliquid indesinenter operari curarent, vacuum enim desidiosumque pectus vanis cogitationibus et diabolicis insidiis patere; arbitrum mentis non hominem, sed Deum quaerendum; mundi plausus declinandos esse; non a creaturis, sed a solo Deo in afflictionibus solatium, in recte factis laudem ac praemium expectarent; nihil arduum ac insolitum sine praevio maturoque consilio aggrediendum, humanaeque prudentiae dictamen respuendum esse, ubi divinae legis praescripto adversatur; charitatem vero, quae nulli inimica, omnibus mater est, inter sorores ita servandam esse, ut nulla divitum vel pauperum, nulla nobilium aut ignobilium, nulla denique personarum discretio fieret. His atque aliis fidelis et prudens Dei ancilla, quam constituerat Dominus super familiam Matris suae, assiduis virtutum documentis, ad currendum in viâ Domini filias suas muniebat.

§ 10. Ipsa autem luce suarum virtutum omnibus praeibat, et angelicâ quadam modestiâ, admirabili mansuetudine, singulari animi demissione secum ad Deum alias rapiebat. Memor verborum Christi domini, qui fecit et docuit dicens discipulis suis: *Qui maior est in*

Humilitate ceterisque virtutibus excelsit.

vobis, fiat sicut minor, et qui praecessor est, sicut ministrator, quas dignitate anteibat, honore sibi praeferebat, humillima quaeque monasterii munia obibat, infirmas omni officiorum genere fovebat, aliarum voluntati obsequebatur, molestias patienter ferebat, consilia libenter auscultabat, stabilis in fide, humilis in timore, ad omnem tolerantiam fortis, ad sustinendam iniuriam mitis, ad faciendam misericordiam facilis: amabat paupertatem, prosequabatur obedientiam, custodiebat virginitatem adeo religiose, ut ad extremos usque digitos sorores suas manicatas incedere voluerit; ipsa vero adeo verbis, vultu, habitu, incessu modesta fuit, ut externa corporis species simulacrum esset mentis, humilitatis forma, imago integritatis.

Poscitur
operibus corpus
suum in servitu-
tem redigit.

§ 11. Iustitiâ nostrâ, non cruciatibus, delectatur Deus: sed contra illecebras saeculi, contra rebellantis concupiscentiae impetus, contra minaces fremitus invisibilium inimicorum non corporis fortitudine nec carnis est saturitate certandum; cum hoc maxime hominis interiora corrumpat, quod exteriora delectat; et tanto fiat rationalis anima purgator, quanto fuerit substantia carnis afflictior. Itaque haec beata virgo, quae fuit una de numero prudentum, ducta a Spiritu Sancto in desertum poenitentiae, severum hunc vitae tenorem a primis adolescentiae annis ad mortem usque constanti in proposito voluntate retinuit. Sive frigus hiemale glaceret, sive calor arderet aestivus, rudi semper vilique panno reliquum corpus induta, pedibus nudis incedebat. Vino a pueritiâ abstinuit; eo uti vel obedientia vel necessitas cogeret, ita aquâ diluebat, ut omnem prorsus vini saporem adimeret; crura et brachia nodosis funibus, virgineos autem lumbos aculeatâ ferreâque zonâ tam arcte constrinxerat, ut, ad eam

e defunctae corpore extrahendam, superinductam carnem resecare necesse fuerit; aspero cilicio vestiebat corpus suum in servitutem redigens, et quotidianas insuper addebat flagellationes, ut pene examinis quandoque deficere videretur; praesertim feriâ qualibet secundâ durius carnem suam ieiuniis flagisque affligebat, offerens se divinae iustitiae pro animabus in igne purgatorio detentis hostiam placationis per merita unius mediatoris domini nostri Iesu Christi; feriâ vero quartâ et sextâ in Christi passionis memoriam ab omni semper abstinuit cibo, caelesti Eucharistiae panedumtaxat refecta; singulis autem sabbatis in honorem B. Mariae Virginis, quam eius sectando virtutes impense coluit, modico tantum panis frusto et frigidae aquae potu corpus sustentabat; reliquis autem diebus, vilissimis cibis usa est, et quibus non famem satiaret, sed mortem repelleret.

§ 12. Discipula autem divini magistri, qui, manens in terris, non habebat ubi caput reclinaret, super nudâ humo, et, ubi aliquantulum aegro corpori indulgendum esset, rudi super storeâ somnum brevissimum capiebat; reliquum vero noctis in divinarum rerum contemplatione, praecipue vero in Christi eiusque sanctissimae Matris doloribus meditandis impendebat, quos tam ardenti perferendi desiderio incensa fuit, ut, ab eâdem Dei Matre, poenarum, quas in unigeniti Filii morte passa fuit, particeps¹ fieri, iugiter efflagitaret, cupiens se passionum sociam esse, ut esset et consolationis; nec abnuît votis ancillae suae Regina martyrum, tantumque dolorum², tamque acrem sensum ei a Filio impetravit, ut, veluti cruci affixa, quandoque pene mori videretur, atque in eius castissimo pectore

In divinarum
rerum contem-
platione noctes
pene integras
impendit.

¹ Ita habet edit. Main. (B. T.).

² Videtur legendum *dolorem* (B. T.).

et poenarum acerbitate et amoris divinâ dulcedine alternante, dicere saepe consuevisse traditur: *Nemo de corde meo rapial amorem meum crucifixum.*

Prostra diaboli insidiis impetitur.

§ 13. Spiritualibus igitur abstinentiae et poenitentiae armis munita, quibus vitiorum omnium incentiva exciderat, ingressa est generosa virgo ad pugnam contra infernales nequitias, contra antiquum serpentem irreconciliabilem humani generis inimicum. Siquidem invisibilis hostis filiorum Adam, qui, stimulante invidiae livore, primo homini gratiam datae immortalitatis eripuit, non destitit et occultis insidiis et aperto bello sanctissimam virginem per plures annos impetere ut a sancto virginitatis et religionis proposito averteret, et eadem ruinâ, qua ipse perditus est, involveret. Modo enim impurissimis suggestionibus purissimam sanctae virginis mentem polluere, modo terribilibus spectris fortissimum animum terrere tentavit, modo crudelissimis ictibus effertam rabiem ac furorem suum in eam effudit. Quadam die, cum castissimum pectus totis infernalis nequitiae viribus expugnare aggressus esset, et vehementissimo eius incursu virginea mens turbaretur, et iam humana nutaret infirmitas, subito Dei offensae horrore correptam et impetu divini amoris actam ex imo pectore ferunt exclamasse: *Exple, Domine, exple sitim crudelis hostis, meque in infernum deiice; aeternum cruciabor quidem, sed te non offendam.*

Infernalis hostis conatus astringit, et ratione superat.

§ 14. Nihil igitur veteres profuere artes, nihil profuit infernalis astutia, sed irriti ceciderunt diaboli conatus, et virgineum pectus divinâ gratiâ armatum infernalium tela ferire non potuerunt: ut enim potentis inimici tutius superaret insidias, et frementis hostis facilius repelleret impetus, Deo per orationem, quam ad decem usque, saepe ad viginti,

nonnunquam ad vigintiquatuor horarum spatium protrahebat, frequentissime uniri studebat. Ex intimâ autem cum Deo unione factum est ut tam immenso divini amoris flagraret incendio, ut extremo in Dei offensam exardescens odio, ad solum peccati nomen tota contremisceret; quin imo quadam die, sceleris cuiusdam narratione auditâ, tanto percussa dolore est, ut prope examinis corruerit.

§ 15. Flagranti autem charitate, qua Deum amabat, complectebatur et proximos, quos a divinis offensis avertere sedulâ curâ, sollicitâque industriâ, omni-que animi conatu satagebat. Itaque, ex aliorum peccatis maximo animi concepto dolore, aliena crimina severis in se animadversionibus copiosisque lacrymis ulciscabatur. Et quoniam compertum habebat ex publicis dissidiis intestina odia nasci, atque inde multa gigni scelera et peccata, civiles discordias hortationibus et consiliis compescuit, et dissidentes ad pacem et amicitiam revocavit. Praeterea matronarum luxum et vanitatem coërcuit, multos ad poenitentiam adduxit, plurimos virtute firmavit, omnes verbis aedificavit et exemplo; Pauperes et infirmos summâ miseratione et charitate a teneris annis complexa est; nam adhuc adolescentula nudos cooperire et famelicos pascere, propriis vestibus exutis, et pretiosioribus e mensâ dapibus detractis, consuevit, iam tunc in parvo praemeditans cuncta contemnere et sua simul universa largiri. Nam postea, sui iuris facta, paternam maternamque haereditatem ad pauperum et servorum Mariae inopiam sublevandam impendit. Insuper opulentas feminas ad proprias in egentium alimoniam opes distribuendas suasionibus et exemplo perduxit.

Alios a vitiis et peccatis avocare studuit.

§ 16. Publica nosocomia, dum in aedi-

Non solum

proximorum a-
nimis, sed etiam
corporibus co-
natis operam
praebet.

bus maternis habitabat, frequentans, et aegrotantium inserviens necessitatibus, eos verbis animabat ad patientiam, doctrinis instruebat ad pietatem. Quare, ut benignissimus Deus eximiam servae suae virtutem in oculis hominum illustriorem redderet, aegrotos ad eius manum contactum saepe pristinae sanitati restituit. Aliis etiam gratiae donis eam insignivit; inter cetera, ut eos, qui virginitatem colerent, ex mirâ odoris fragrantia cognosceret.

Caelestibus
fruens deliciis
eamdem animi
modestiam ser-
vat.

§ 17. In orationibus autem tantâ caelestis dulcedinis suavitate animus eius perfundebatur, ut in frequentes exstases, corpore e solo in altum sublato, raperetur. At vero illud omnium animos in admirationem sui atque amorem trahebat, quod, inter tam insignia divinae gratiae dona et admirantium eius virtutem laudes, eandem semper modestiam, mansuetudinem et humilitatem servavit, ut, quanto altius virtutum incremento eveheretur, tanto demissius humilitatis profunditate descenderet.

Ad extremum
vitae redacta
refici Eucharis-
tia desiderat.

§ 18. Demum continuatis ieiuniis, diuturnisque carnis macerationibus, tum etiam ob senilem aetatem, quippe septuagenariâ maior, debilitati stomachi morbo graviter affecta, eumque in dies ingravescens hilari semper vultu constantique animo perferens, ad ultimum spiritum redacta est. Cum autem, extremae unctionis et poenitentiae sacramentis receptis, sacram Eucharistiam ob indignantis stomachi vitium sibi denegari intellexit, maximum in modum doluit sacra Dei ancilla in extremo illo agone communionem corporis et sanguinis Christi destituta procedere ad pugnam, et sanctissimo viatico minime refecta ex hac mortali vitâ proficisci, et denique in ultimo vitae momento a dilectissimo Sponso suo quodammodo separari; et ab evangelici patrisfamilias coenâ,

et a regalibus nuptiis, nullâ suâ culpâ, sed solâ vi morbi, excludi, graviter ingemuit.

§ 19. Ut vero amantissimi cordis sui angustias lenimentum aliquod adhiberet, fratrem eiusdem Ordinis Servorum B. Mariae confessarium suum rogavit, ut, sacrâ pixide ad se delatâ, aspectu saltem augustissimi sacramenti dolorem animi sui solaretur. Obsequente eius voluntati sacerdote, statim ac eucharisticus panis illo deferente apparuit, Iuliana, viribus destituta, sed ferventis charitatis robore sustentata, se in formam crucis super terram Dominum suum adoratura prostravit, eiusque facies, antea squalore morbi et macie deformata, angelico quodam decore honestata eluxit. Sed praesentia sanctissimi corporis Christi immensae charitatis exaggerato potius quam restincto ardore, orat ut sibi liceat divinissimum sacramentum deosculari; re-nuente autem sacerdote, supplex iterum efflagitat, ut supra pectus suum candido expanso velo sacra hostia ponatur. Voti compos effecta est; sed panis ille caelestis, ubi virgineum attigit pectus, statim, ut credibile est, interiora sponsae suae pectoris arcana penetrans, ex adstantium oculis disparuit; illa vero eodem temporis momento caelestem sponsum dulciter compellans, ac dicens: *Dulcis mi Iesu*, inter castissimos divini sponsi complexus felicem animam Deo reddidit XIII kalendas iulias anno Christi MCCCXLI.

Caelestis panis
supra eius pec-
tus positus mi-
ro modo inte-
riora penetrans
ex adstantium
oculis disparuit
et paulo post
beata virgo mi-
gravit in cae-
lum.

§ 20. Dum vero sacrae virginis corpus a suis sororibus, ut fieri solet, curabatur, inventa est circa sinistrum pectoris latus hostiae forma carni veluti sigillo impressa, quae Christi crucifixi imaginem referebat; ita divinâ operante omnipotentia, ut imago Christi crucifixi, quem vivens mente et corde semper gestaverat, defuncae in corpore a morta-

Circa sinistrum
pectoris latus
forma hostiae
carni impressa
reperitur.

lium oculis conspiceretur, veluti signaculum divini amoris dilectam hortantis et dicentis: *Pone me ut signaculum super cor tuum, ut signaculum super brachium tuum.*

Valgato eius
mortis auncio,
magnus est po-
puli concursus,
et multi ad eius
feretri seu ve-
stis contactum
sanantur.

§ 21. Ubi autem felix beataque Iulianae mors audita est, fama eius sanctitatis et novo atque inaudito sacrosanctae hostiae miraculo excitata tota ferme Florentina civitas per plures dies ad Virginis Mariae Annunciatæ basilicam confluit, sacrum virginis corpus Spiritus Sancti templum veneratura. Ut vero benignissimus Deus ancillam suam, quam caelesti et immarcessibili gloriâ donaverat, gloriosam quoque in terris efficeret, ad solum illius feretri aut vestis contactum infirmos plurimos a variis morborum generibus mirabiliter liberavit. Quamobrem, ab eiusdem obitus die usque in praesens et miraculis illustris et beatae sanctaeque nomine nuncupata, populis ad eius sacras colendas exuvias undique confluentibus in cultu nunquam intermisso habita est. Nec solum in Etruriâ, sed in multis etiam orbis christiani provinciis ancilla Dei summâ iamdiu veneratione colitur; ubi quoque plura sacrarum virginum monasteria Iulianam veluti matrem suam ac Tertii Ordinis Servorum Mariae institutricem venerantur, eiusque regulam a felicis recordationis Innocentio Papa VIII et Martino Papa V, praedecessoribus nostris, anno MCDXXIV, XVII kalendas aprilis, approbatam profitentur: quin etiam felicis recordationis Paulus V praedecessor noster, in suis litteris in formâ Brevis datis IV idus maii anno MDCVIII ad clarae memoriae Iulianam Gonzagam archiducem Austriae praefati Ordinis professam et in Germaniâ restauratricem, Beatæ atque eiusdem instituti Patronae titulo Iulianam condecoravit.

§ 22. Famâ vero illius sanctitatis ac miraculorum in dies percrebescente, anno sexcentesimo sexagesimo septimo supra millesimum a pia memoriae Clemente IX signata fuit commissio introductionis causae canonizationis, ad effectum etiam recognoscendi, ut cautius in re tam gravi procederetur, eius virtutes et miracula. Ac deinde anno MDCLXXIII, super eiusdem cultu immemorabili et casu excepto, processu Florentiae fabricato, iudicis delegati sententia pro cultu immemorabili et casu excepto emanavit, quae ad relationem bonae memoriae Decii S. R. E. diaconi cardinalis Azzolini nuncupati habitam diebus IX et XXVII mensis iulii anno sexcentesimo septuagesimo octavo supra millesimum a Sede Apostolicâ confirmata fuit. Felicis autem recordationis Innocentius XII diebus X mensis ianuarii et XVII octobris anni MDCXCVI universo Ordini Servorum B. Mariae Virginis et Florentinae civitati facultatem indulsit de illâ celebrandi missam et officium de communi virginum sub ritu semiduplici; quam deinde anno supra millesimum septingentesimo decimo octavo, die X mensis septembris, ad ritum duplicem elevavit pia recordationis Clemens XI praedecessor noster, eo quod B. Iulianam Tertii Servorum Ordinis fundatricem fuisse compertum habuit. Anno denique MDCCXXVIII, die XX mensis martii, a felicis recordationis Benedicto XIII praedecessore nostro approbatae fuerunt lectiones propriae eiusdem officii cum hymno et oratione, dieque VII mensis augusti eiusdem anni B. Iulianae nomen cum elogio inscriptum est in martyrologio romano.

§ 23. Interea temporis, causâ eiusdem canonizationis in sacra Rituum Congregatione mature discussâ, anno MDCCXXV, die V mensis februarii, ab eodem Ponti-

Acta canonizationis.

Examen miraculorum.

fice decretum fuit ita constare de virtutibus eius theologalibus et cardinalibus ut recte pergi possit ad discussionem miraculorum. Quibus subinde in eadem sacrâ Congregatione, ut moris est, ad examen vocatis, denique, die VIII mensis septembris, Nativitati B. Mariae Virginis sacrâ, anno MDCCXXIX, idem sanctae memoriae Benedictus XIII ex novem propositis miraculis quatuor sequentia solemnî decreto probavit, videlicet: Primum, instantaneae sanationis sororis Felicis Fortunatae de Sardis monialis professae in monasterio S. Benedicti civitatis Pisarum ab affectionibus hystericis, convulsionibus atrocissimis, et feбри per quindecim annos continuâ, in tertio genere; secundum, odoris suavissimi promanantis a reliquiâ B. Iulianae, consistente in unâ ex eius costis, in secundo genere; tertium, instantaneae sanationis patris F. Horatii Riminaldi Ordinis Servorum B. M. V. ab apoplexiâ seu paralysi et attractione nervorum; et quartum, instantaneae emissionis fetus in utero Mariae Magdalenae Cittadelli a pluribus diebus iam mortui, iisque in tertio genere.

Quod procedi
possit ad cano-
nizationem.

§ 24. Proposito demum in aliâ generali sacrorum rituum Congregatione coram supra laudato Pontifice die IV mensis octobris anni MDCCXXIX a venerabili fratre nostro Ludovico episcopo Albanensi S. R. E. cardinali Pico de Mirandula nuncupato, subrogato in locum bonae memoriae Iosephi Renati presbyteri cardinalis, dum viveret, tituli S. Laurentii in Lucinâ Imperiali nuncupati, ponentis seu relatoris, altero dubio, quod in hac causâ supererat, nimirum, an, stante approbatione praedictorum quatuor miraculorum, tuto quandocumque procedi possit ad solemnem B. Iulianae canonizationem, omnibusque tam consultoribus quam S. R. E. cardina-

libus affirmative respondentibus, idem Pontifex praedecessor noster, post imploratam de more Sancti Spiritus assistentiam, die V eiusdem mensis et anni decretum de ejusdem Beatae canonizatione suo tempore et loco peragenda pronuntiavit. Cum vero idem Benedictus XIII humanae peregrinationis viam complevisset, nosque nullis nostris meritis, sed solâ divinae gratiae dignatione ad Ecclesiae gubernacula vocati essemus, ad augmentum divini honoris, et sanctae Ecclesiae utilitatem pertinere arbitrati sumus, ut, quod praefatus praedecessor noster faciendum sibi proposuerat, ad effectum et complementum perduceremus. Non plurimum etiam ad praesentium temporum calamitatem levandam interesse existimavimus, si christifidelium devotio erga sanctos et electos Dei, qui pro nobis in tantis necessitatibus intercederent, augetetur.

§ 25. Mandavimus itaque, ut, omnibus, quae in causâ acta fuerant, diligenter inspectis et recognitis, relationum nobis et venerabilibus fratribus nostris S. R. E. cardinalibus in consistorio fieret. Itaque die VI maii praesentis anni in consistorio nostro secreto dilectus filius noster Antonius Felix tituli S. Praxedis presbyter cardinalis Zondadarius nuncupatus totius processus summam, ac suam aliorumque cardinalium sacris ritibus praepositorum sententiam, necnon vitae sanctitatem et miracula B. Iulianae accurate et luculenter exposuit: quibus auditis, reliqui omnes cardinales, qui aderant, ad ulteriora fore procedendum comuni suffragio pronunciarunt. Cum igitur in publico consistorio proxime a nobis convocato dilectus filius Nicolaus Maria Sacripantes consistorialis aulae nostrae advocatus pro eius canonizatione eleganter perorasset; ac, nomine diversorum car-

Supplicanti-
bus pluribus catho-
licis regibus, ac
principibus et
universo Ordine
Servorum
B. Mariae Vir-
ginis et ipsâ fa-
milia Falcone-
ria in sancta-
rum virginum
nominum ad-
scribitur.

tholicorum regum et principum, et praesertim universi Ordinis Fratrum servorum B. Mariae Virginis, et ipsius familiae Falconeriae, ut ad eam procedere dignaremur, humiliter supplicasset: nos, de re tanta venerabiles fratres nostros S. R. E. cardinales et episcopos in Curia praesentes consulturos esse respondimus; atque interim cardinales atque episcopos, qui aderant, in visceribus Christi hortati sumus, ut, orationibus instantes, in ieiuniis et eleemosynis animos suos coram Deo nobiscum humiliantes, precibus a Deo patre luminum exposcerent, ut ex alto super nos lucem et veritatem suam emitteret, quae nos ad voluntatem et beneplacitum eius cognoscendum et perficiendum deduceret.

Consistorium
scriptum publicum.

§ 26. Itaque in semipublico consistorio, quod deinceps congregatum est, advocatis non modo cardinalibus, sed patriarchis, archiepiscopis et episcopis in Curia nostra existentibus, intervenientibus etiam nostris ac Sedis Apostolicae notariis, protonotariis ex numero participantium nuncupatis, ac sacri palatii apostolici causarum auditoribus, cum a nobis de eximia sanctitate ancillae Dei ac miraculorum celebritate, quae necessaria videbantur, commemorata fuissent, omnes concorditer ac uno ore benedicentes Deum amicos suos honorificantem in terris et coronantem in caelis, B. Iulianam in sanctarum virginum numerum adscribendam esse censuerunt. Quorum omnium audito consensu, intimo cordis affectu exultavimus in Domino, gratias agentes Deo et filio eius domino nostro Iesu Christo, quod Ecclesiam suam non dereliqueret, sed gloriam sanctorum suorum illustrare et patrocinio munire dignaretur. Canonizationis itaque indiximus diem, eisdemque fratres ac filios nostros mo-

nuimus ut in orationibus et eleemosynis perseverantes a divina benignitate impetrarent ut in tanto opere exequendo splendor domini Dei nostri esset super nos, qui opus manuum nostrarum ad perficiendam eius voluntatem dirigeret.

§ 27. Demum, rite omnibus absolutis quae ex sacris constitutionibus, Romanaeque Ecclesiae consuetudine peragenda erant, hodie, quae fuit dies dominica SS. Trinitatis, in sacrosanctam Lateranensem basilicam decenter ornatam, cum venerabilibus fratribus nostris S. R. E. cardinalibus, nec non patriarchis, archiepiscopis et episcopis, Romanaeque Curiae praelatis, officialibus et familiaribus nostris, clero saeculari et regulari, ac maxima populi frequentia, convenimus; ubi, repetitis pro canonizationis decreto petitionibus a dilecto filio nostro Nereo S. R. E. diacono cardinali Corsino nuncupato, nostro secundum carnem ex fratre nepote, per dilectum filium Thomam Antamorum consistorialis aulae nostrae advocatum, et decantatis sacris precibus et litanis, ac Spiritus Sancti gratia humiliter impetrata, ad honorem sanctae et individuae Trinitatis, ad exaltationem fidei catholicae, et christianae religionis augmentum, auctoritate domini nostri Iesu Christi, beatorum apostolorum Petri et Pauli, ac nostra, matura deliberatione praehabita, et divina ope saepius implorata, ac de venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium, patriarcharum, archiepiscoporum et episcoporum in Urbe existentium consilio et consensu, B. Iulianam Falconeriam sanctam esse decrevimus et definivimus, ac sanctorum catalogo adscripsimus, prout tenore praesentium similiter decernimus, definimus et adscribimus, illamque universos cristifideles tamquam vere sanctam honorare et venerari mandavimus

Solemnitas
canonizationis.

et mandamus, statuentes ut ab universali Ecclesiâ in eius honorem ecclesiae et altaria, in quibus sacrificia Deo offerantur, aedificari et consecrari possint, et singulis annis die xix. mensis iunii, qua ad caelestem gloriam vocata est, inter sanctas virgines non martyres piâ devotione recolli debeat, eâdemque auctoritate omnibus christifidelibus, vere poenitentibus et confessis, qui annis singulis eodem festo die ad sepulchrum, in quo eius corpus requiescit, visitandum accesserint, septem annos et totidem quadragenas de iniunctis eis aut aliâs quomodolibet debitis poenitentis misericorditer in Domino relaxavimus ac relaxamus in formâ Ecclesiae consuetâ.

Gratiarum
actio.

§ 28. His peractis, Deum Patrem aeternum, regemque gloriae Christum dominum Patris sempiterni Filium, et Sanctum Paraclitum Spiritum, unum Deum unumque Dominum, laudibus et confessionibus venerati, sacroque hymno *Te Deum* solemniter decantato, omnibusque christifidelibus tunc praesentibus plenariâ omnium peccatorum suorum indulgentiâ et remissione concessâ, propter corporales nostras infirmitates affectamque valetudinem senilemque aetatem ab eâdem Lateranensi ecclesiâ recessimus, remanentibus in eâ venerabilibus fratribus nostris S. R. E. cardinalibus, archiepiscopis et episcopis, et universo clero et populo; quibus praesentibus, a venerabili fratre nostro Thoma S. R. E. cardinali episcopo Praenestino Russo nuncupato, tamquam cardinali in ordine antiquiori, in arâ maximâ praefatae basilicae, ex indulto et de licentiâ nostrâ, solemniter missa cum sanctae eiusdem virginis non martyris commemoratione celebrata est. Decet autem ut pro tam insigni beneficio cum omni humilitate benedicamus et glori-

ficemus Deum, cui omnis honor et gloria et potestas in saecula, assiduis precibus ab eo postulantes, ut, per intercessionem electae suae, non secundum peccata nostra faciat nobis, sed infinitam bonitatem suam respiciens, et indignationem suam avertens a culpis nostris, ostendat nobis lucem misericordiarum suarum, et immittat timorem suum super gentes, quae non cognoverunt eum, eum¹ ut cognoscant quia non est alius Deus nisi Deus noster.

§ 29. Ceterum, quia difficile foret, praesentes nostras litteras ad singula loca, ubi opus esset, deferri, volumus ut earum exemplis, etiam impressis, manu tamen publici notarii subscriptis, et sigillo alicuius personae in dignitate ecclesiasticâ constitutae munitis, eadem ubique fides adhibeatur, quae ipsis praesentibus adhiberetur si essent exhibitae et ostensae.

Fides transumptorum.

§ 30. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostri decreti, definitionis, adscriptionis, mandati, statuti, concessionis, elargitionis et voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire; si quis autem hoc attentare praesumpserit, indignationem omnipotentis Dei ac beatorum Petri et Pauli apostolorum eius se noverit incursurum.

Sanctio poenalis.

Datum Romae, apud S. Iohannem in Laterano, anno Incarnationis dominicae MDCCXXVII, xvi kalendas iulii, pontificatus nostri anno VII.

Dat. die 16 iunii 1737, pontif. anno VII.

✠ EGO CLEMENS

CATHOLICAE ECCLESIAE EPISCOPUS¹.

† Ego Franciscus episcopus Ostiensis cardinalis Barberinus.

† Ego Petrus episcopus Portuensis cardinalis Ottobonus.

¹ Vox *eum* redundare videtur (R. T.).

² Eadem forma sigilli ut sup. p. 245 (R. T.).

†
† Ego episcopus Subinensis cardinalis S. Clementis S. R. E. camerarius.
† Ego Ludovicus episcopus Albanensis cardinalis Picus.
† Ego Petrus episcopus Tusculanus cardinalis Corradinus.
†
†
†
†
†
†
†
†
†
† Ego Georgius tituli S. Praxedis presbyter cardinalis Spinula.
†
† Ego Ludovicus tituli S. Mariae in Transiberim cardinalis Belluga.
†
† Ego Alverus tituli S. Bartholomaei in Insula cardinalis Cienfuegos.
† Ego I. B. tituli S. Matthaei in Merulana cardinalis de Alteriis.
† Ego Vincentius tituli S. Petri ad Vincula presbyter cardinalis Petrus, maior poenitentarius.
†
†
†
† Ego Nicolaus Maria tituli Ss. Ioannis et Pauli cardinalis Lercari.
†
† Ego Franciscus Antonius tituli S. Sixti presbyter cardinalis Finus.
†
†
†
† Ego frater Vincentius Ludovicus tituli S. Pancratii presbyter cardinalis Gotti Ordinis Praedicatorum.
† Ego D. Leander tituli S. Callisti presbyter cardinalis de Porzia.
† Ego P. Aloysius Carafa cardinalis tituli S. Priscae.

†
†
† Ego Franciscus Burghesius cardinalis tituli S. Sylvestri in Capite.
†
†
† Ego Vincentius tituli S. Laurentii in Pane et Perna presbyter cardinalis Bichius.
† Ego Ioseph tituli S. Thomae in Parione presbyter cardinalis Firrao.
† Ego Antonius tituli S. Stephani in Monte Celio presbyter cardinalis Gentili.
† Ego frater Ioannes Antonius cardinalis Guadagni tituli S. Sylvestri et Martini ad Montes.
† Ego T. cardinalis de Acquaviva tituli S. Caeciliae.
† Ego Dominicus Ss. Quirici et Iulittae presbyter cardinalis Riviera.
† Ego Marcellus tituli S. Mariae in Araceli presbyter cardinalis Passari.
†
†
† Ego frater P. M. tituli S. Ioannis ante Portam Latinam cardinalis Pieri.
†
† Ego Laurentius, prior diaconorum, cardinalis de Alteriis.
† Ego Carolus S. Agathae in Suburra diaconus cardinalis Columna.
† Ego Fabius Ss. Viti et Modesti diaconus cardinalis Oliverius.
†
† Ego Alexander S. Mariae in Cosmedin diaconus cardinalis Albanus.
† Ego Nicolaus S. Mariae ad Martyres diaconus cardinalis Iudice.
† Ego Nerius S. Eustachii diaconus cardinalis Corsinus.
† Ego B. Ss. Cosmae et Damiani diaconus cardinalis Ruspulus.
†
†
†
†
†
†
†
†
†

†
†
†

Loco † plumbi.

A. card. prodaturus.

Pro domino card. OLIVARIO
CAIETANUS AMATUS.

Visa de Curia:

N. ANTONELLUS.

Reg. in Secret. Brevium.

CCVII.

*Beatificatio servi Dei Iosephi a Leonissa
sacerdotis expresse professi Ordinis
fratrum Minorum sancti Francisci
Capuccinorum.*Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Pastorum princeps Iesus Christus, cuius vices in terris plane immerentes gerimus, quemadmodum nova semper in Ecclesia sua instaurat exempla virtutum, et de terra nostra novos sibi suscitavit et erigit servos, ut collocet eos cum principibus populi sui, et solium glorie teneant in caelis, ac tanquam stellae fulgentes in perpetuas aeternitates illuminent his qui in tenebris et in umbra mortis sedent ad dirigendos pedes nostros in viam pacis. Ita nos debitum sacrosancti apostolatus nostri officium ducimus, et catholicae religioni magis adaugendae et christifidelibus ad pietatem amplius excitandis in hac temporum conditione valde opportunum, ut, benignitatem Dei nostri et memoriam sanctitatis eius in virtutibus ac meritis servorum suorum extollentes ac praedicantes, eorum praesertim debita venerationis cultum promovere satagamus, qui, postquam lubricum inter blandientis mundi illecebras pueritiae iter mirum cum morum innocentia confecissent, ar-

duum perfectionis curriculum sub severioris disciplinae instituto ineuntes, non solum dignos in pietatis et doctrinarum palaestra progressus fecerunt, verum etiam, verbo et exemplo faciem ceteris praeferentes, adeo incredibili divinae gloriae et animarum salutis procurandae zelo exarserunt, ut, omnes Christo lucrificandi causa, labores, ludibria, verbera, cruciatus ac mortem ipsam christianam fortitudine contemnentes, tandem evolarunt ad coronam legitime certantibus repositam in caelis a bonorum omnium largitore Deo, qui servorum suorum agones ac labores, laudabiliter pro sui nominis gloria completos, signis et miraculis illustrare dignatus est.

§ 1. Cum itaque, mature diligenterque discussis atque perpensis per Congregationem venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium sacris ritibus praepositorum processibus de Apostolicae Sedis licentia confectis super vitae sanctitate et virtutibus tam theologicis quam moralibus in gradu heroico, quibus servum Dei Iosephum a Leonissa, presbyterum expresse professum Ordinis fratrum Minorum sancti Francisci Capuccinorum nuncupatorum, multipliciter claruisse, necnon miraculis quae ad eius intercessionem et ad manifestandam hominibus ipsius sanctitatem a Deo patrata fuisse asserebat, eadem Congregatio coram nobis constituta, auditis etiam consultorum suffragiis, uno spiritu, unaque voce censuerit, posse, quandocumque nobis videretur, praedictum servum Dei Beatum declarari cum consuetis indulgis:

§ 2. Hinc est quod nos, piis atque enixis nonnullorum venerabilium fratrum antistitem, catholicorum principum, et universitatum, necnon totius memorati Ordinis fratrum Minorum sancti Francisci Capuccinorum, et nominatim Gregorii a Roma eiusdem Ordinis sa-

Sacrorum Rituum Congregatio declarat venerabilem servum Dei Iosephum a Leonissa Beatum dici posse.

Eundem eodem modo declarat Clemens.

cardotis expresse professi, huiusque causae postulantis, applicationibus nobis et huic Sanctae Sedi super hoc humiliter porrectis benigne inclinati, de supradictae Congregationis consilio et assensu, auctoritate apostolica, tenore praesentium, indulgemus ut praefatus servus Dei Iosephus a Leonissa posterum Beati nomine nuncupetur, eiusque corpus et reliquiae venerationi fidelium (non tamen in processionibus circumferendae) exponantur, imagines quoque radiis seu splendoribus exornentur, atque de eo quotannis die felicis eius transitus, seu alia die non impedita illam immediate sequenti, recitetur officium et missa celebretur de communi Confessoris non Pontificis, iuxta rubricas breviarii et missalis romani.

Officium eius
recitari consue-
lit in locis per-
mittit.

§ 3. Porro recitationem officii et missae celebrationem huiusmodi fieri concedimus dumtaxat in universo Ordine Minorum sancti Francisci Capuccinorum utriusque sexus, in loco Leonissae diocesis Spoletanae, in quo natus est, et ubi venerabile ipsius corpus requiescit, atque in terrâ Amatricis Reatinae diocesis unde ad caelos evolavit, ab omnibus utriusque sexus christifidelibus tam saecularibus quam regularibus, qui ad Horas canonicas tenentur, et quantum ad missas attinet, etiam ab omnibus sacerdotibus ad ecclesias, in quibus festum perageretur, confluentibus.

Primoque anno
a datis hisce
litteris sole-
mnia eius bea-
tificationis per-
agi.

§ 4. Praeterea, primo dumtaxat anno a datis hisce litteris, et, quoad Indias, a die quo eadem litterae illuc pervenerint inchoando, in ecclesiis Ordinis, loci ac terrae praefatorum solemnia beatificationis ipsius servi Dei cum officio et missâ sub ritu duplici maiori, die ab Ordinariis respective constituta, postquam tamen in ecclesiâ Lateranensi

1 Male edit. Main. legit supplicantes pro applicationibus (R. T.).

de Urbe celebrata fuerint eadem solemnia, pro qua re diem xii currentis mensis iunii assignamus, pariter celebrandi facimus potestatem.

§ 5. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ac decretis de non cultu editis, ceterisque contrariis quibuscumque.

Obstantibus
derogat.

§ 6. Volumus autem ut earumdem praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu secretarii dictae Congregationis cardinalium subscriptis, et sigillo praefecti eiusdem Congregationis munitis, eadem prorsus fides ab omnibus et ubique tam in iudicio quam extra illud habeatur, quae ipsis praesentibus haberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Transumptis
credi iubet.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xix iunii MDCCXXXVII, pontificatus nostri anno VII.

Dat. die 19 iunii 1737, pontif. anno VII.

CCVIII.

Confirmatio decreti capituli generalis Ordinis Carmelitarum Excalceatorum super divisione et novâ assignatione conventuum, cum impositione perpetui silentii.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Apostolicae procurationis ministerium, quod pastorum princeps Iesus Christus per ineffabilem clementiae suae abundantiam imbecillitati nostrae imponere dignatus est, a nobis exigit, ut ea interdum, quae certis rationabilibus ex causis etiam a nobis concessa sunt, ipsâ subinde rerum experientia suadente, et maioribus ex causis, quibus praesertim felici christifidelium sub suavi religionis iugo Altissimo famulantium statui et salubri gubernio consulitur,

Prooemium.

revocamus et immutamus, in hisque sollicitudinis nostrae studium interponimus, prout conspiciamus in Domino salubriter expedire.

Divisa provincia Polonica a Lithuania, huius attributos conventus Varsaviensis.

§ 1. Exponi siquidem nobis nuper fecit dilectus filius modernus procurator generalis fratrum Ordinis B. Mariae de Monte Carmelo Excalceatorum nuncupatorum, quod alias in capitulo generali eiusdem Ordinis, in conventu S. Mariae de Scalâ nuncupato de Urbe anno MDCCXXXIV celebrato, novae provinciae Lithuaniae S. Casimiri dictae, ab antiquâ Poloniae provinciâ S. Spiritus nuncupatâ rationabilibus de causis tunc divisae et erectae, inter alios conventus eidem provinciae Lithuaniae insimul attributos, conventus Varsaviensis assignatus fuit, quemadmodum per quasdam nostras desuper in simili formâ Brevis litteras die VII Iunii eiusdem anni MDCCXXXIV expeditas decretum a memorato capitulo generali hac de re editum toto illius tenore inserto confirmavimus.

In capitulo anni MDCCXXXVII decretum ut eius loco uniretur conventus Lublinensis.

§ 2. In capitulo vero generali praesentis¹ Ordinis in conventu Ss. Theresiae et Ioannis a Cruce prope Montem Pietatis nuncupatum de eâdem Urbe die XI maii hoc praesenti anno MDCCXXXVII habito, fratres e gremio praefati capituli, postquam cognovissent et serio expendissent rationes, ac difficultates, quae in praedicti conventus Varsaviensis, ab antiquâ Poloniae provinciâ, ut praemittitur, separati ac disiuncti, et provinciae Lithuaniae de novo erectae assignati et uniti, cessione occurrebant, mature considerassent, decreverunt, nobis humiliter supplicandum esse, ut, praefatis nostris litteris quoad supradictam partem dumtaxat derogantes, vice et loco assignationis saepedicti conventus Varsaviensis provinciae Lithuaniae, assignetur eidem conventus Lublinensis, et prae-

¹ Videtur legendum *praefati* (R. T.).

fatus conventus Varsaviensis remaneat ut ante divisionem antiquae provinciae Poloniae, iuxta alterum decretum eiusdem capituli generalis, tenoris qui sequitur, videlicet:

Propositum fuit an ad maiorem pacem utriusque provinciae Poloniae et Lithuaniae rogandus sit Sanctissimus ad ratam habendam extraditionem conventus Varsaviensis cum omnibus mobilibus et immobilibus religiosis provinciae S. Spiritus Poloniae faciendam a religiosis provinciae S. Casimiri Lithuaniae, ac vicissim extraditionem conventus Lublinensis cum omnibus mobilibus ac immobilibus religiosis provinciae S. Casimiri Lithuaniae faciendam ab illis provinciae S. Spiritus, itaut relinquatur facultas reeligiosis provinciae S. Spiritus procurandi sibi hospitium regulare Lublini, et e converso provinciae S. Casimiri Lithuaniae hospitium consimile Varsaviae ratione causarum agendarum utrobique; et cum tam Varsaviae quam Lublini sint monasteria sanctimonialium Carmelitarum Excalceatorum sub Ordinis iurisdictione, monasterium Varsaviense praedictum sanctimonialium semper gubernetur a religiosis provinciae Poloniae, monasterium vero monialium Lublini, quod vocatur S. Ioseph, administretur a religiosis provinciae S. Casimiri Lithuaniae, aliudque monasterium praedictarum monialium sub titulo Ss. Conceptionis in eâdem civitate Lublinensi existens a religiosis provinciae Sancti Spiritus Poloniae: et responsum fuit affirmative ad omnia cum omnibus votis.

§ 3. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat, ipse procurator generalis non solum praedictas assignationes supradictorum conventuum religiosorum virorum et monasteriorum monialium, ut praemittitur in praecinserto decreto, provinciis ab eodem capitulo generali die XXI maii praesenti anno MDCCXXXVII celebrato respective assignatorum, quo firmius subsistant ac serventur exactius,

Huius decreto petita apostolica confirmatio.

¹ Paulo ante dictum fuit XI (R. T.).

apostolicae confirmationis nostrae patrocinio communiri ac aliàs in praemissis opportune provideri et ut infra indulgeri summopere desideret:

Confirmat
Clemens.

§ 4. Nos, dictum procuratorem generalem specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censes, supplicationibus eius nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, audito etiam super praemissis dilecto filio nostro Nicolao S. R. E. diacono cardinali Iudice nuncupato, universi Ordinis fratrum B. Mariae de Monte Carmelo apud nos et Sedem Apostolicam protectores, et, quoad novas supradictarum conventuum et monasteriorum respective assignationes dumtaxat, praefatis nostris litteris derogantes, decretum praeinsertum a memorato capitulo generali factum, ut praefertur, cum omnibus et singulis in eo contentis, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, confirmamus et approbamus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiicimus, ac omnes et singulos iuris et facti defectus, si qui desuper quomodolibet intervenerint, supplemus, perpetuumque super divisione et assignationibus praefatis silentium utrique parti imponimus, et os occludimus.

Siquis ubi-
que huius
modi ex-
istat.

§ 5. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis re-

spective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Obstantibus
derogati.

§ 6. Non obstantibus praefatis nostris litteris, aliisque praemissis, ac constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon, quatenus opus sit, provinciarum, conventuum et monasteriorum praedictorum, aliisque quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis, in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliàs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxii iunii MDCCLXXVII, pontificatus nostri anno VII.

Dat. die 22 iunii 1737, pontif. anno VII.

CCIX.

Ampliatio indulti Gregorii XV, nempe quod fratres Carthusiani non solum erigere valeant oratoria et altaria in eorum grangiis et domibus in quibus residebunt sacerdotes dicti Ordinis, sed etiam quod ad huiusmodi effectum sufficiat quod dicta oratoria, etc., visitata et approbata sint a patribus visitoribus eiusdem Ordinis.

**Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.**

Ordini Carthusiensi data facultas habendi altaria portatilia in domibus et grangiis.

§ 1. Exponi nobis nuper fecit dilectus filius modernus procurator generalis monachorum Ordinis Carthusiensium, quod, cum, inter cetera privilegia a Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris concessa, felicitis recordationis Urbanus quidem V itidem praedecessor noster per quasdam suas apostolicas litteras vii kalendas maii anno MCCCXXIII expeditas concesserit monachis eiusdem Ordinis facultatem retinendi in suis domibus et grangiis altaria portatilia, atque inibi missam celebrandi, Bonifacius vero IX recolendae memoriae praedecessor noster, constitutione quae incipit *Sacrosancta Romana, etc.*, praefatum Ordinem a quacumque Ordinariorum iurisdictione exemerit;

Hoc exemplo indultum patribus Societatis Iesu ut in locis a superioribus Societatis approbatis missae celebrentur.

§ 2. Quarum concessionum praedicto Ordini Carthusiensi factarum exemplo, pia memoriae Gregorius XIII pariter praedecessor noster clericis regularibus Societatis Iesu, inter alia indulta imperita per constitutionem die iii maii anno MDLXXV emanatam quae incipit *Decet Romanum Pontificem, etc.*, hoc tribuit ut in oratoriis et capellis, quae ipsius Societatis provinciales per se in domibus et collegiis et aliis locis ubi aliqui Societatis residebunt approbaverint et ad divinum dumtaxat cultum deputaverint, missae et alia divina officia, alterius licentiâ minime requisitâ, celebrari possint:

A Congregatione Concilii Carthusiensibus concessum ut in oratoriis simul ab Ordinariis locorum visitatis possint missae celebrari.

§ 3. Congregatio quoque tunc existentium S. R. E. cardinalium Concilii Tridentini interpretum die xxiv septembris anno MDCXXII pro eodem Ordine Carthusiensi edidit sequens decretum, scilicet:

Ut deinceps in capellis seu oratoriis existentibus in domibus ac membris seu grangiis monasteriorum Carthusianorum, postea tamen quam locorum Ordinarii eiusmodi

cappellas semel visitaverint, ac fabricâ atque ornatu sacrâque suppellectili compererint pro dignitate nitere, sacrosanctum missae sacrificium tam per regulares sive eiusdem sive alterius religionis, quam saeculares presbyteros tuto celebrari valeat, missamque inibi audientes diebus festis praecepto Ecclesiae, hac de re edito, satisfacere intelligentur, absque tamen ullo iurium parochialium ecclesiarum praeiudicio:

§ 4. Quod quidem decretum etiam approbatum fuit a felicitis recordationis Gregorio XV itidem praedecessore nostro, qui pariter anno MDCXXIII, per quadragesimam secundam¹ constitutionem quae incipit *Ad uberes, etc.*, largitus fuit saepedicto Ordini Carthusiensi communicationem et extensionem privilegiorum Ordinibus tam mendicantibus quam non mendicantibus respective concessorum, vigore cuius communicationis et extensionis privilegiorum praefatus ordo Carthusiensis semper potius et fruitus est eodem privilegio, quo potiuntur ac fruguntur tam praefati clerici regulares Societatis Iesu quam ceteri regulares, nimirum erigendi in suis grangiis oratoria sine Ordinariorum locorum licentiâ ac visitatione, sed solâ dumtaxat approbatione a suis visitatoribus, qui in dicto Ordine provincialium vices gerunt, factâ.

A Gregorio XV communicata Carthusiensibus oratorum Ordinum privilegia.

§ 5. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat, iidem monachi Ordinis Carthusiensis in grangiâ Turricis nuncupatâ, quae est pars et membrum Carthusiae Trisultinae, in dioecesi Verulanâ² esistenti, oratorium erexissent, et in Congregatione venerabilium fratrum nostrorum eiusdem S. R. E. cardinalium Concilii Tridentini interpretum propositum fuisset dubium, an liceret monachis Carthusianis retinere oratorium ad ce-

Supplicatum itaque Papae ut in vigore huius communicationis Carthusians habere liceat oratoria ad visitationem Ordinibus subiecta.

¹ In hac novâ edit. est sub numero xcix, et legitur in vol. XII, pag. 785 (n. r.).

lebrandum seu celebrari faciendum missae sacrificium in granciâ Turricis, in casu, etc.; quod die xxx iulii anni mdcxxxv resolutum fuit affirmative, praevisâ tamen visitatione episcopi ad formam indulti Gregorii XV praedecessoris: idem modernus procurator generalis, considerans esse valde aequum, ut, quemadmodum praedicti clerici regulares Societatis Iesu aliaeque religiones privilegium erigendi oratoria ad exemplum privilegiorum praefato Ordini Carthusiensi concessorum obtinuerunt, et re ipsâ retinent in suis granciis oratoria et capellas minime subiectas visitationi Ordinariorum locorum, ut ex attestationibus superiorum earumdem religionum constare asseritur, ita Ordinem Carthusiensem, propter memoratam communicationem et extensionem privilegiorum praedictarum religionum sibi impertitam a secundodicto Gregorio praedecessore post annum ab edito decreto eiusdem Congregationis Concilii, iisdem privilegiis potiri et frui posse summopere desideret: nobis propterea humiliter supplicari fecit ut in praemissis opportune providere et ut infra indulgere de benignitate apostolicâ dignaremur.

Concedit
Clement.

§ 6. Nos igitur, ipsum modernum procuratorem generalem specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore consentes, huiusmodi supplicationibus inclinati, toti Carthusianorum Ordini, ut non solum erigi possint et valeant oratoria, capellae et altaria in granciis et domibus religiosis,

1 Ed. Main. habet quo pro quod (R. I.).

in quibus residebunt eiusdem Ordinis sacerdotes, atque in illis celebrare valeant missae sacrificia iuxta praeinsertum decretum praefatae Congregationis Concilii die xxiv septembris mdcxxxii editum et a secundodicto Gregorio comprobatum ut praefertur, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, indulgemus; sed etiam illud ampliando et extendendo, quod ad huiusmodi effectum satis sit et sufficiat quod dicta oratoria capellae et altaria visitata fuerint et approbata a patribus visitoribus eiusdem Ordinis.

§ 7. Decernentes, praesentes litteras firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane, si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Sicque in per-
petuum servari
mandat.

§ 8. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, nec non dicti Ordinis Carthusiensis, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Obstantibus
derogat.

Praesentium
transumptis cre-
di iubet.

§ 9. Volumus autem ut praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiasticâ dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides tam in iudicio quam extra illud ubique adhibeatur, quae ipsis praesentibus adhiberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die XIX augusti MDCCLXXVII, pontificalus nostri anno VIII.

Dat. die 19 augusti 1737, pontif. anno VIII.

CCX.

Nonnullae ordinationes pro administratione bibliothecae et archivii conventus S. Mariae de Arâcaeli de Urbe Ordinis fratrum Minorum sancti Francisci de Observantiâ nuncupatorum.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Prooemium. Ad seraphicae religionis, cui etiam, dum adhuc in minoribus constituti eramus, tuendae provehendaeque, quantum cum Domino potuimus, semper adlaborare curavimus, decus et incrementum in suscepto pietatis praesertim ac litterarum curriculo magis adaugendum, in hac apostolatus speculâ per immensam divinae bonitatis clementiam meritis licet imparibus collocatos nos decet ut maioribus quam antea pontificiae sollicitudinis et apostolicae charitatis studiis advigilemus.

A patre Iosepho ab Eborâ constructa aedificia pro bibliotheca et archivio Ordinis ornata ac libris monachicis quoque referta.

§ 1. Cum itaque, sicut pro parte dilectorum filiorum modernorum ministri provincialis provinciae Romanae et guardiani conventus S. Mariae de Arâcaeli de Urbe Ordinis fratrum Minorum sancti Francisci de Observantiâ nuncupa-

torum nobis nuper expositum fuit, in dicto conventu, qui praecipuum totius eiusdem Ordinis sancti Francisci domicilium, et, praeter ministros et officiales omnium nationum utriusque cismontanae et ultramontanae familiae ibidem residentes, ministri etiam generalis et respective commissarii generalis cismontani pro tempore residentia existit, a fundamentis excitatum sit maximum aedificium praeclarâ dilecti filii Iosephi Mariae Fonseca ab Eborâ exgeneralis praedicti Ordinis operâ, collectis undique magnis pecuniarum, quibus nos etiam non modicam partem contulimus, summis, non solum pro insigni bibliothecâ, quae iam armariis, pluteis et libris omnis generis referta et adornata est, sed etiam pro amplo tabulario sive archivo generali Ordinis praefati, nondum tamen completo, in quo omnia quae poterit idem Iosephus Maria ex universis praedictae religionis carthophylaciis et tablinis sive authographa sive exscripta monumenta non sine magnis sumptibus contracta condere intendit, atque etiam pro aedibus sive mansionibus iam ex omni parte completis et instructis, in quibus bibliothecarius et archivista seu tabularius pro tempore bibliothecae et archivii praedictorum, eorumque custodes, scribae et socii inservientes, necnon praefatae religionis chronologus pro maiori publico commodo et custodiâ commorari debent:

§ 2. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat, nisi cura et administratio bibliothecae et archivii praefatorum eidem Iosepho Mariae cum facultate, quoad vixerit, et in quocumque statu et gradu tam intra quam extra praedictum Ordinem semper et quomodo-cunque extiterit, eam exercendi, et bibliothecarium et archivistam generalem, aliosque custodes, scribas et socios de-

Provincialis provinciae Romanae, et guardianus Aracaelianus Papae supplicavit, ut dictae bibliothecae cura eidem patri Iosepho ad vitam committeretur.

putandi demandetur et committatur, atque insimul exhortetur, ut, quemadmodum pro religionis zelo tam excellens et tantae utilitatis opus incepit, ita maioribus incrementis adaugere ac perficere perseveret, procul dubio timendum sit, ne ad eam, quam idem Iosephus Maria intendit, perfectionem nunquam pervenire possit, imo etiam imperfectum relinquatur: ac propterea praefati exponentes nobis humiliter supplicari fecerunt ut in praemissis opportune providere et ut infra de apostolica benignitate indulgere dignaremur:

§ 3. Nos igitur, praedictos exponentes specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, eorumque singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censentes, huiusmodi supplicationi¹, ac etiam motu proprio et ex certâ scientiâ ac maturâ deliberatione nostris, deque apostolicae potestatis plenitudine, praefati Iosephi Mariae omnem curam et diligentiam hac in re adhibitam plurimum in Domino commendantes, eidem, quoad vixerit, et in quocumque statu et gradu tam intra quam extra praefatum Ordinem semper et quomodocumque extiterit, totam administrationem, custodiam et omnimodam praefecturam tam bibliothecae quam archivi generalis praedictorum, cum omnibus et singulis annexis et connexis, committimus, mandamus et iniungimus, necnon aedium sive mansionum ab ipso Iosepho Maria extructarum usum et habitationem cum omnibus et singulis in eisdem contentis,

¹ Deest inclinatio (R. T.).

quoad vixerit, ut praemittitur, eidem concedimus et impertimur, ac insuper bibliothecarium et archivistam generalem, cum ceteris aliis ministris et officialibus ipsi benevisis, ut praefertur, eique subiectos, constituendi et deputandi, facultatem pariter tribuimus et largimur.

§ 4. Volumus autem ut tam bibliothecarius quam archivista huiusmodi pietate, doctrinâ et religiosâ observantiâ, ceterisque virtutibus insignes de provinciâ Romanâ eligantur, ac sint lectores iubilati. Qui sane bibliothecarius et archivista generalis, necnon chronologus Ordinis aliique¹ ministri subalterni, donec ipse Iosephus Maria in humanis fuerit, habitent in mansionibus sive cellis sibi in conventu praedicto assignatis, seu assignandis; post eiusdem vero Iosephi Mariae mortem, commorentur in aedibus, sive mansionibus, quarum usum et habitationem ipsi Iosepho Mariae ad sui vitam attribuimus.

§ 5. Verum, ut providentiae nostrae decretum huiusmodi firmiter in perpetuum subsistat et servetur exactius, apostolicâ auctoritate ministro generali et commissario generali pro tempore familiae cismontanae Ordinis praefati in virtute sanctae obedientiae tenore praesentium committimus et mandamus totalem praemissorum executionem, atque ut omnia et singula in hisce nostris contenta et statuta atque decreta, prout statuta et decreta sunt, ita observari et manuteneri faciat.

§ 5. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab

¹ Edit. Main. legit *aliisque* (R. T.).

Committit Iosepho patri Iosepho bibliothecae et archivi praefecturam cum facultate idoneis deputandi commissarios, ac utendi ad vitam aedibus ab eodem erectis.

Proprias mansiones bibliothecario, archivista, etc. assignat.

Ministro generali et commissario cismontano praedictorum executionem demandat.

Sic semper et ubique praecipit servari.

eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Derogat con-
trariis

§ 7. Non obstantibus apostolicis, ac in universalibus, provincialibusque et synodalibus conciliis editis, generalibus vel specialibus, constitutionibus et ordinationibus, nec non conventus et Ordinis praedictorum, aliisque quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis, in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xx septembris MDCCXXVII, pontificatus nostri anno VIII.

Dat. die 20 septembris 1737, pontif. anno VIII.

CCXI.

Indulgentiâ aliâs concessa visitantibus ecclesias Congregationis Missionis et Puellarum Charitatis die XXVII septembris applicatur die XIX iulii B. Vincentio a Paulo sacro.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Benedictus XIII
indulgentiam
concedit

§ 1. Aliâs felicitis recordationis Benedictus Papa XIII praedecessor noster

omnibus et singulis utriusque sexus christifidelibus vere poenitentibus et confessis ac sacra communione refectis, qui aliquam ex ecclesiis presbyterorum saecularium Congregationis Missionis tam eatenus erectis, quam in posterum erigendis die XXVII mensis septembris a primis vespere usque ad occasum solis diei huiusmodi singulis annis devote visitassent, et ibi pro christianorum principium concordia, haeresum extirpatione, ac S. M. E. exaltatione pias ad Deum preces effudissent, plenariam omnium peccatorum suorum indulgentiam et remissionem misericorditer in Domino perpetuo concessit;

§ 2. Postmodum vero nos eandem indulgentiam ad ecclesias seu capellas Puellarum Charitatis nuncupatarum regulam seu institutum S. Vincentii a Paulo profitentium extendimus et ampliavimus: et aliâs, prout in litteris felicitis recordationis Benedicti XIII praedecessoris nostri die XIV februarii MDCCXXX, pontificatus sui anno VI, et nostris die XXX augusti MDCCXXX in simili formâ Brevis respective desuper expeditis plenius continetur.

Eandem indulgentiam extendit Clemens ad ecclesias Puellarum charitatis.

§ 3. Nunc autem nos, praedictam indulgentiam, visitantibus aliquam ex dictis ecclesiis die XXVII mensis septembris, ut praefertur, concessam, per praesentes auctoritate apostolicâ revocantes, ac supplicationibus dilecti filii Ioannis Conty, superioris generalis dictorum presbyterorum saecularium Congregationis Missionis nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, omnibus et singulis utriusque sexus christifidelibus vere poenitentibus et confessis ac sacra communione refectis, qui aliquam ex praedictis ecclesiis die festo S. Vincentii a Paulo XIX mensis iulii celebrari solito, dictae Congregationis Missionis ac Puellarum Charitatis nuncupatarum

Revocata itaque huiusmodi concessionibus ex praedicta die applicandâ die XIX iulii S. Vincentio a Paulo sacro.

fundatoris, a primis vespers usque ad occasum solis diei huiusmodi singulis annis devote visitaverint, et ibi pro christianorum principum concordia, haeresum extirpatione, ac S. M. E. exaltatione pias ad Deum preces effuderint, plenariam omnium peccatorum suorum indulgentiam et remissionem misericorditer in Domino concedimus. Praesentibus perpetuis futuris temporibus valituris.

Transumptis
danda fides.

§ 4. Volumus autem ut earumdem praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiastica dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides adhibeatur, quae adhiberetur ipsis praesentibus si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die XXIII septembris MDCCLXXVII, pontificatus nostri anno VIII.

Dat. die 23 septembris 1737, pontif. anno VIII.

F. cardinalis OLIVERIUS.

CCXII.

Confirmatio chirographorum super distributione salis a cartella nuncupata in civitate Anconitana ac illius statu et comitatu faciendâ.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Chirographo
concesserat
Clemens civi-
tati Anconita-
nae deventre
ad distributio-
nem salis dicti
a cartella.

§ 1. Exponi nobis nuper fecerunt dilecti filii communitas et homines civitatis nostrae Anconitanae, quod alias nos, per chirographum manu nostra scriptum, et dilecto filio nostro Dominico S. R. E. presbytero cardinali Riviera nuncupato Congregationis venerabilium fratrum nostrorum eiusdem S. R. E. cardinalium bono regimini communitatum

et universitatum Status nostri Ecclesiastici praepositae praefecto directum, eidem civitati facultatem et gratiam deveniendi ad distributionem salis, ut vulgariter dicitur, *a cartella*, super qualibet personâ, etiam ecclesiasticâ et regulari, privilegiatâ ac privilegiatissimâ, nec non praedictâ civitate, toto illius Statu et comitatu, cum variis facultatibus et provisionibus ad bonum distributionis salis huiusmodi finem tendentibus, concessimus;

§ 2. Et subinde per aliud simile chirographum per nos signatum, eidem Dominico cardinali et praefecto itidem directum, ad tollendam quamcumque dubietatem quae super comprehensione aliarum personarum specificam et individuum mentionem praetendentium exoriri posset, primodictum chirographum confirmantes declaravimus, quod tales personae, Ordines regulares, militares, patentati, privilegiati et privilegiatissimi, qui specificam et individuum mentionem requirerent, comprehensi remaneant; ac iura Camerae nostrae Apostolicae quomodolibet competentia reservavimus: et alias, prout uberius continetur in dictis chirographis tenoris sequentis videlicet:

§ 3. Reverendissimo cardinali Domenico Riviera, prefetto della nostra Congregazione de' sgravi e buon governo.

Declaravit
postmodum in
dicto chirogra-
pho omnes o-
mnino compre-
hendi etiam
specificâ men-
tione dignos.

Tenor primi
chirographi.

Ci ha fatto rappresentare la nostra città di Ancona, che pacificamente godendo e possedendo per legittimi titoli anche onerosi la privativa di vendere il sale in tutta la città, territorio e luoghi e territori del suo Stato e contado, sia spediante per l'indennità di essa città, che per l'addietro ha patito un notabilissimo sbilancio nel provento di tale privativa rispettivamente alle persone a lei soggette per varie irreparabili cause e specialmente delli contrabandi

di sale, atteso il luogo situato vicino al mare, per modo tale che, oltre vari considerabili successi, la speranza ha dimostrato che ne' tempi presenti l'annuo fruttato della suddetta privativa resti eccessivamente diminuito, di venire alla distribuzione de' sali ripartitamente per ogni persona, e come volgarmente si dice *a cartella*, secondo la deliberazione a pieni voti presa nel pubblico e general consiglio celebrato li xxii agosto del passato anno MDCCXXXVI. Ed avendo noi benignamente ricevute le suppliche che sopra tale affare ci sono state umilmente rappresentate, e inteso prima il parere ed informazioni dateci da monsignor Carlo Maria Sagripante, nostro tesoriere generale, anche col voto della nostra Congregazione camerale, e precedenti le informazioni date da monsignor Nicolò Serra governatore di detta nostra città di Ancona, quali cose tutte abbiamo qui per pienamente inserite ed espresse parola per parola, siamo venuti alla concessione del presente Chirografo, col quale commettiamo a voi ed a' vostri successori che in virtù della nostra suprema potestà ed autorità pontificia, e senza bisogno di riportare il consenso di alcuna persona che potesse aver parte ed interesse in qualunque modo nel presente negozio, e molto meno di qualunque giudice o congregazione, eziandio del buon governo, di cui voi siete il prefetto, si della Curia Romana che fuori della Curia Romana, obblighiate ogni e ciascheduna persona si laica che ecclesiastica, si secolare che regolare di qualunque religione, anche della Compagnia di Gesù, dell'Ordine militare di S. Giovanni Gerosolimitano, di qualunque altro che ricercasse e meritasse specifica ed individuale menzione, come esente, privilegiata, privilegiatissima, ed

anche ebrei o ebrei, o altri infedeli domicilianti, abitanti e dimoranti nella detta nostra città di Ancona, suburbii, territorio, luoghi, loro territori, suburbii, ed in tutto lo Stato e contado di detta nostra città di Ancona, dell'uno e dell'altro sesso, e per esse i padri e capi di famiglie, superiori, ed altri che di ragione possono e devono, a ricevere e contentarsi di ricevere ogni anno la distribuzione de' sali volgarmente detta *a cartella*, da regularsi rispettivamente secondo il numero delle anime; e per i luoghi e territori soggetti al detto Stato e contado di Ancona, obblighiate come sopra le comunità o università di ciascheduno di essi luoghi, le quali debbano ricevere e contentarsi di ricevere la medesima distribuzione de' sali, volgarmente detta *a cartella*, proporzionatamente agli abitanti e dimoranti in tali luoghi e territori, d'ogni genere e sorta di persone sopra espresse, quali persone, e ciascheduna di esse, possano e debbano da tali comunità essere costrette a ricevere la detta distribuzione de' sali nello istesso modo, forma e pratica che la detta nostra città d'Ancona, in virtù e forza del presente Chirografo, potrà e dovrà costringere gli abitanti e dimoranti in detta città e suburbio e territorio di Ancona, e le dette comunità o sieno università di detti luoghi e soggetti al suo Stato e contado; e per l'effetto, esecuzione e piena osservanza di ogni e singola cosa contenuta dal principio sino al fine del nostro presente Chirografo, comunicherete tutte singole e ciascheduna facoltà a voi in esso nostro Chirografo concesse al detto presente governatore della nostra città d'Ancona; e tali facoltà dovranno restare e durare, non solo a lui, ma anche a ciascheduno delli di

lui successori *pro tempore*, e dovranno intendersi a lui ed alli di lui successori comunicate, per servirsene e metterle in opera tanto congiuntamente quanto separatamente con voi e colli vostri successori, e tante volte sarà bisognevole e necessario, utile ed opportuno, di modo tale che mai tal facoltà o facoltà suddette terminino e spirino o finiscano: con osservarsi però li seguenti capitoli.

I. Che ciascheduna persona sì laica che ecclesiastica, regolare ed in qualsivoglia modo privilegiata, sopra l'età di anni quattordici compiuti, abbia l'obbligo di comprare e di ricevere annualmente la quantità del sale che si stabilirà nella esecuzione del presente nostro Chirografo da voi o dai vostri successori *pro tempore*, o dal detto governatore della nostra città d'Ancona, o dai successori di esso *pro tempore*, tanto congiuntamente quanto separatamente con voi e con li vostri successori, di quella specie che sarà permessa vendere; ritenere, spacciare alla detta nostra città d'Ancona in vigore della sua privativa; qual sale da distribuirsi, dovrà pagarsi al medesimo prezzo in oggi corrente d'un baiocco per libbra, e nel caso d'incarimento, dovrà accrescersi ragionevolmente, senza però gravare le persone soggette alla distribuzione; debba ogni anno a debiti e convenevoli tempi farsi una deputazione di alcune persone rette ed idonee dal consiglio pubblico, quali, fissato prima il numero annuale d'ogni persona della città, suburbio, territorio, casali, castella e loro territori e casali, con quelle regole che saranno più espedienti e si approveranno ogni volta dal detto consiglio pubblico, facciano sapere e notificare alle persone, comunità, ossieno università, ed a qualunque altro luogo e per-

sona soggette alla distribuzione, il ripartimento fatto, colla destinazione del giorno e termine in cui ciascheduno dovrà ricevere la sua quota o rata che gli tocca; e per tale effetto si potranno e dovranno mettere in esecuzione e pratica, ogni volta che sarà espediente, necessario ed opportuno, tutti quelli usi, consuetudini, regole e pratiche che si trovano e si troveranno messe in esecuzione in altri luoghi, città e terre del nostro dominio e Stato Ecclesiastico nella effettuazione, esecuzione, uso ed osservanza di simile distribuzione dei sali, volgarmente detta *a cartella*.

II. Che siccome le comunità od università soggette alla distribuzione dovranno e potranno essere costrette alla distribuzione ed al pagamento del sale distribuito senza cura della detta nostra città d'Ancona di indirizzarsi sopra ciascheduna persona, famiglia, casa particolare, conventi, monasteri, spedali, seminari o altri simili, così le stesse comunità od università potranno dirigersi per le stesse contro le persone, case e famiglie particolari, conventi, monasteri, ospedali, seminari o altri simili, con quelli medesimi modi e forme che per virtù e forza del presente nostro Chirografo potrà dirigersi la detta nostra città d'Ancona sopra le persone della città, suburbio e territorio proprio; ma però dette comunità od università non potranno nè dovranno esigere altro prezzo del sale, che quello avranno veramente e realmente pagato alla nostra città di Ancona, e potranno solamente accrescere quella poca ed onesta somma che sarà necessaria per la spesa del trasporto del sale dalla città di Ancona a ciaschedun luogo e castello soggetti rispettivamente, e per la spesa della distribuzione da farsi.

III. Che oltre la quantità del sale

proscritta a ciascuna persona, debba inoltre correre l'obbligo di ricevere e contentarsi di ricevere un'altra quantità di sale ragionevolmente considerata rispetto alli formaggi, animali che si trovano nella campagna, carni, pesci ed altro che può considerarsi giustamente, per regolare la distribuzione maggiore di quella che sarà stata destinata alla sola e semplice persona di ognuno; e nello stesso modo le comunità od università de' luoghi soggetti alla distribuzione dovranno ricevere e contentarsi di ricevere anche quella somma e quantità di sale, che per rispetto alli formaggi, animali, carni, pesci ed altro, deve e puole, come sopra, accrescersi, oltre a quella pura quantità che sarà stata tassata e prescritta alla pura persona.

iv. Che il simile s'intenda espressamente detto e prescritto rispetto agli osti, bettolieri, locandieri, macellari, pizzicaroli, ed altri che fanno professione a cui convenga l'uso del sale, nella città e luoghi soggetti, con avere anco riguardo alli forastieri che capitano o alloggiano nelle osterie, bettole, locande, e dimorano nella città e nei luoghi soggetti alla distribuzione.

v. Che debba tenersi aperta la pubblica salara nella nostra città di Ancona per comodo e servizio de' forestieri che siano per fare e facciano realmente breve e corta dimora, e perciò non sia possibile comprenderli sotto la tassa della distribuzione, e per comodo e servizio de' bastimenti che giungono e si fermano nel porto; ed il simile ancora s'intenda per quelle persone che come vere povere non potranno tassarsi sotto la distribuzione, e per quelle altre persone della città, stato e contado, ed anco forastiere, le quali volessero comprare maggiore quantità di sale di quella nella quale sono state tassate.

vi. Che in caso di contumacia di alcune delle persone, sia lecito alla detta nostra città d'Ancona, oltre all'infra-scritto rimedio per via di editto penale, procedere per via di mano regia avanti li giudici competenti rispetto alle persone, famiglie, case, conventi, monasteri, ospedali, seminari e simili, e rispetto alle comunità, università e luoghi soggetti, avanti voi e de' vostri successori *pro tempore*, ed avanti il presente governatore d'Ancona e li di lui successori *pro tempore*, tanto congiuntamente quanto separatamente con voi e con li vostri successori; e tale mano regia possa e debba eseguirsi nella via e forma più privilegiata che si trova e si può, anche *more camerali*, ed aver luogo non solo per quello riguarda il fatto di ricevere e di costringere a ricevere ciascuno e ciascheduna famiglia, casa, convento, monasteri, ospedali, seminari o altri simili, e la comunità od università de' luoghi soggetti, la rata e porzione in cui sarà stata nel ripartimento, come sopra da farsi, tassata e considerata, senza potersi ammettere eccezione alcuna di eccesso, irragionevolezza o ingiustizia, quale anzi all'opposto debba sempre ed in ogni caso intendersi riservata in appresso e dopo che sarà pienamente adempita ed eseguita la distribuzione, ma anche per quello riguarda il totale e pieno pagamento della somma e somme che saranno dovute sulla regola della medesima distribuzione, qual pagamento dovrà onninamente seguire e da ogni giudice farsi adempire, rimossa similmente ogni eccezione, e quella, ne' casi però ne' quali sarà di ragione, riservata in appresso nel modo che si è detto.

vii. Che nell'atto dell'esecuzione del presente Chirografo, possa non solamente dichiararsi da voi e vostri suc-

cessori, e dal presente governatore di Ancona e di lui successori *pro tempore*, tanto congiuntamente quanto separatamente con voi e con li vostri successori, ogni e ciascheduna cosa dubbia che potesse insorgere circa il contenuto nel presente Chirografo, ma ancora possa determinarsi ogni e ciascheduna altra cosa che nel presente Chirografo è espressa; e dove ciò non riesca, debba sempre essere non solo conforme alle regole di ragione, ma inoltre alla buona e spedita condotta di questo negozio, colla maggiore utilità e comodo di detta nostra città d'Ancona, per aver sempre il più pieno ed il più efficace effetto della distribuzione e dell'emolumento da ritrarsi da esso, ed il maggiore accrescimento del provento risultante dalla privativa, sempre in beneficio della detta nostra città d'Ancona, di modo che l'interpretazione e dichiarazione più favorevole e benigna a detta nostra città prevalga e debba sempre prevalere ad ogni altra.

viii. Che in ogni futuro tempo nel quale occorresse o fosse di bisogno oppure utile venire alla mutazione di qualche cosa che riguarda l'ordine ed il modo di esso ordine ed esecuzione una volta già intrapreso sopra la detta distribuzione de' sali volgarmente detta *a cartella*, ciò sia lecito a farsi precedente la pubblica risoluzione del consiglio della detta nostra città d'Ancona e l'approvazione vostra e de' vostri successori *pro tempore*, tanto congiuntamente quanto separatamente con voi e con li vostri successori, senza necessità di sentire o di chiamare alcuno, ma con la sola e semplice ricognizione e verificaione della causa che sarà necessaria, utile od opportuna la detta mutazione, e ciò tante volte quante volte sarà o verrà il caso della mutazione, e

non sarà mai lecito a voi ed a' vostri successori *pro tempore*, e molto meno al presente governatore ed a' di lui successori *pro tempore*, disapprovare la risoluzione e determinazione presa nel consiglio, se non in quel caso in cui non avesse utilità alcuna per la detta nostra città, e fosse del tutto ed affatto irragionevole.

ix. Che per l'esecuzione del presente nostro Chirografo possa e sia lecito a voi ed a qualunque vostro successore, ed al presente governatore d'Ancona ed alli di lui successori *pro tempore*, tanto congiuntamente quanto separatamente con voi e con li vostri successori, ogni volta che se ne farà dalla detta nostra città la richiesta, venire alla pubblicazione ed affissione di qualunque editto penale contro qualunque persona e luogo obbligato e soggetto alla distribuzione del sale, laico, ecclesiastico, regolare, privilegiato, privilegiatissimo ed esente, e ciò per virtù delle facoltà che noi pienamente concediamo a voi ed alli vostri successori *pro tempore*, ed al detto governatore di Ancona ed a' di lui successori *pro tempore*, contra qualunque sorta e qualità di persone, ancorchè meritasse espressa ed espressissima menzione; e particolarmente tale editto pubblicherete e farete affiggere, o detto governatore e di lui successori *pro tempore* pubblicheranno e faranno affiggere, tanto congiuntamente quanto separatamente con voi e co' vostri successori, immediatamente dopo data al presente nostro Chirografo la dovuta esecuzione, e prima di effettuarsi la distribuzione, acciocchè così a tutti sia nota la volontà nostra qui espressa; e le pene da incorrersi dai trasgressori, in qualunque caso delli sopradetti, dovranno applicarsi a beneficio pubblico di detta no-

stra città; e sarà lecito a voi e vostri successori, ed al detto governatore e di lui successori, tanto congiuntamente quanto separatamente con voi e colli vostri successori, di fare giudicialmente seguire il pagamento ed esazione, anche per via di mano regia; contro qualunque persona o luogo sì laico che ecclesiastico, regolare, privilegiato, privilegiatissimo ed esenti, e di qualunque genere, specie e qualità, e ciò per virtù di facoltà speciali che in questa parte colla pienezza dell'autorità e potestà pontificia diamo e concediamo a voi e a detto governatore e di lui successori come sopra.

x. Finalmente, che in qualunque materia e caso riguardante il contenuto di tutto il presente Chirografo, non si debbano attendere le inibizioni di qualunque giudice anche supremo, o delle sagre Congregazioni di Roma, e molto meno di qualunque altro giudice tanto ordinario che delegato fuori di Roma, se tali inibizioni non saranno segnate colla nostra propria mano, e da' sommi Pontefici nostri successori.

E tutto il contenuto dal principio fino al fine del presente nostro Chirografo, e ciascheduna delle cose in esso contenute, vogliamo che si debbano perfettamente, pienamente ed esattamente osservare ed adempire, ed eseguire. Volendo e decretando che al presente nostro Chirografo, e ciascheduna delle cose in esso contenute, non si possa mai oppondere di surrezione, orrezione, nè di alcun altro vizio o difetto della nostra volontà ed intenzione; nè che mai sotto tali o altri qualunque pretesti, quantunque validissimi, legittimi e sostanziali, benchè chiusi nel corpo della Legge, anche di *ius quaesito*, e pregiudizio del terzo, possa essere impugnato, moderato, o rivotato, o ridotto *ad viam iuris*, o con-

cedersi verso di esso l'aperizione *oris*, o altro qualunque rimedio di ragione o di fatto, di grazia o di giustizia, o concessa per moto proprio e con pienezza di potestà, e tali rimedi, anche ottenuti, mai possano giovare ad alcuna persona, o in qualunque modo impedire la perpetua ed inviolabile esecuzione di quanto è stato da noi, come sopra, ordinato e stabilito. E che così, e non altrimenti debba sempre giudicarsi, definirsi ed interpretarsi, sì da voi, e da' vostri successori *pro tempore*, e dal detto governatore di Ancona, e di lui successori *pro tempore*, che da qualunque giudice e tribunale, benchè collegiale, commissario e delegato, Congregazioni, anche de' reverendissimi cardinali, legati *a latere*, camerlengo di santa Chiesa, tesoriere, presidenti, uditori di Rota, chierici di Camera, e qualunque altro, togliendo loro ogni facoltà e giurisdizione di definire ed interpretare diversamente; dichiarando noi, sin da ora, nullo, irritato ed invalido tutto ciò che da ciascuno di essi con qualsivoglia autorità, scientemente o ignorantemente, fosse in qualunque tempo giudicato contro la forma e disposizione del presente nostro Chirografo: quale vogliamo che vaglia e debba aver sempre il suo pieno effetto, esecuzione e vigore colla semplice nostra sottoscrizione, benchè non si ammetta e registrasi in Camera secondo la Bolla di Pio IV nostro predecessore *De registrandis*, e benchè non vi siano stati chiamati, sentiti, nè citati quelli che in qualunque modo vi avessero o pretendessero di avervi qualche interesse. Non ostanti la regola della nostra Cancelleria *De iure quaesito non tollendo*, e qualsivoglia altre costituzioni ed ordinazioni apostoliche, Brevi, Chirografi, anche per via di nuove permissioni e concessioni, ed

altri qualunque indulti nostri e de' nostri predecessori, a favore di qualunque persona, quanto si voglia privilegiata, privilegiatissima, che per comprenderla vi si ricercasse di farne una espressa ed individua menzione, benchè muniti di decreti irritanti, e d'altre formole e clausule, anche derogatorie delle derogatorie, più effrenate, insolite ed inusitate, che avessero bisogno di espressa specificazione, nè che si dovessero registrare e riferire di parola in parola, decreti camerali, leggi civili e canoniche, statuti, riforme, stili, usi, consuetudini, anche immemorabili, e confermati o confermate in forma specifica dalla Santa Sede, e qualunque altra cosa che facesse o potesse fare in contrario; alle quali tutte e singole, avendone il tenore qui per espresso e di parola in parola inserto e registrato, supplendo noi colla pienezza della nostra potestà pontificia ad ogni vizio e difetto, qualunque sostanziale e formale che vi potesse intervenire, per questa volta sola, e per la piena e totale esecuzione ed effetto di quanto si esprime nel presente nostro Chirografo, ampiamente ed espressamente deroghiamo, anco con pienezza di derogatoria delle derogatorie, siccome espressamente deroghiamo a detta Bolla di Pio IV nostro predecessore *De registrandis*. Non intendiamo però che col medesimo presente nostro Chirografo s'intenda o possa intendersi fatto pregiudizio alcuno alle ragioni che in qualsivoglia modo competono alla nostra Camera Apostolica. Dato dal nostro palazzo apostolico di Monte Cavallo, questo dì 14 settembre 1737.

CLEMENS Papa XII.

Tenor secondo
di Chirographi.

§ 4. Reverendissimo cardinale Domenico Riviera, prefetto della nostra Congregazione de' sgravi e buon governo.

Avendo la nostra città di Ancona otte-

nuta da noi la grazia pontificia di un chirografo da noi segnato sotto li 14 del corrente mese di settembre del corrente anno 1737, sopra la distribuzione de' sali volgarmente detta *a cartella*, da farsi sopra ogni e ciascheduna persona, sì laica che ecclesiastica, sì secolare che regolare, di qualunque religione, anche della Compagnia di Gesù, dell'Ordine di S. Giovanni Gerosolimitano, e di qualunque altra che ricercasse o meritasse specifica ed individuale menzione come esente, privilegiata, privilegiatissima, ed anche ebrei o ebrei, ed altri infedeli domicilianti, abitanti e dimoranti nella detta nostra città di Ancona, suburbio, territorio, luoghi, loro territori, suburbi, ed in tutto lo Stato e contado della medesima città di Ancona, dell'uno e dell'altro sesso, e per esse i padri e capi di famiglia, superiori ed altri, che possano e devano essere compresi sotto tale distribuzione, e per tali persone qualunque comunità o università, famiglia, casa, convento, monastero, ospedale, seminario, o altri simili; ed insorgendo, o potendo insorgere dubbio, che sotto tali persone possano rimanere esenti dalla suddetta distribuzione de' sali quelle di tale qualità e specie che tal volta possono pretendere di non venire comprese sotto la disposizione ed espressione generale, sebbene noi con la effrenatezza di parole, delle quali ci siamo serviti, non abbiamo inteso mai che questa sorta di persone debba restare esente, atteso il numero considerabile de' privilegiati e patentati che in detta nostra città di Ancona, o suo Stato e contado dimorano, e talvolta sotto l'ombra del loro privilegio più facilmente si fanno indebitamente lecito di pregiudicare alla medesima nostra città: quindi è, che con questo nuovo nostro presente

Chirografo, avendo primieramente qui per inserta parola per parola, e dal principio sino al fine, tutto il tenore dell'altro suddetto nostro Chirografo da noi segnato sotto il detto giorno dei 14 del corrente mese di settembre, e tutte e singole concessioni, capitoli, deroghe, deroghe di deroghe, ed ogni e qualunque altra cosa da noi fatta e concessuta a favore di detta nostra città di Ancona, quali cose tutte s'intendano, e vogliamo che s'intendano qui repete parola per parola, e dal principio sino al fine, ed in tutto e per tutto confermate ed approvate, siccome di nuovo, quando anche bisognasse, le confermiamo ed approviamo in tutto e per tutto, vogliamo, dichiariamo ed ordiniamo, che niuna persona affatto eccettuata, s'intenda o si possa intendere esente, immune o non compresa sotto la suddetta distribuzione de' sali volgarmente detta *a cartella*, ancorchè la persona o persone, ed anche i luoghi, comunità, università, monasteri, collegi, conventi, seminari ed altri simili, che pretendessero di essere esenti, sieno laiche o laici, ecclesiastiche o ecclesiastici, secolare o secolari, regolare o regolari di qualunque Ordine, istituto e congregazione, quantunque delle Undici, e della Compagnia di Gesù, chierici della nostra Camera, camerale, ministri ed ufficiali del nostro palazzo apostolico, cavalieri di Malta e di S. Stefano, e di qualunque altr'Ordine militare, patentati del S. Ufficio, della S. Casa di Loreto, della rev. fabrica di S. Pietro di Roma, e di qualunque altra congregazione o tribunale, anche collegiato, familiari de' reverendissimi cardinali, arcivescovi, vescovi, prelati, anche assistenti alla nostra cappella, e loro rispettivi ufficiali, ministri, affittuari, coloni, patentati, anche addetti e soggetti al continuo ser-

vizio, generalmente niuna persona affatto eccettuata, di modo tale che la espressione o specificazione delle qualità delle persone non induca mai eccezione a favore di quella qualità di persone che non sia stata da noi espressa e denominata, servendoci, per la totale osservanza ed esecuzione della dichiarazione contenuta in questo nostro Chirografo, di tutte quelle clausole, e ciascheduna di esse, che si contengono nell'altro suddetto nostro Chirografo del 14 corrente, quali nuovamente dichiariamo e vogliamo che qui si abbiano come espressamente, formalmente apposte, espresse e repete, anche rispetto alle facoltà da noi concesse a monsignor governatore di Ancona, e di lui successori, per potere procedere tanto congiuntamente che separatamente con voi e colli vostri successori. Non ostante che le persone, che avessero o potessero allegare di avere circa le suddette cose qualche privilegio, non siano state chiamate e non siano state sentite, poichè questa è la nostra precisa e deliberata volontà. Volendo che il presente nostro Chirografo vaglia e debba aver sempre il suo pieno effetto, esecuzione e vigore, con la semplice nostra sottoscrizione, benchè non si ammetta e non si registri in Camera, secondo la Bolla di Pio IV nostro predecessore *De registrandis*, alla quale, oltre alla Bolla, Moti propri, Brevi, Chirografi, anche per via di nuove permissioni, concessioni, ed altri qualunque indulti nostri e de' nostri predecessori, a favore di qualunque persona quanto-sivoglia privilegiata, privilegiatissima, che per comprenderla si ricercasse di farne una espressa ed individua menzione, benchè muniti di decreti irritanti, ed altre formole e clausole, anche derogatorie più effrenate, insolite ed inu-

sitate, che avessero bisogno di espressa specificazione, e che si dovessero registrare di parola in parola, decreti camerali, leggi civili e canoniche, statuti, riforme, stili, usi, consuetudini, anche immemorabili, confermati e confermate in forma specifica dalla Santa Sede, e qualunque altra cosa che facesse o potesse fare in contrario, avendone di esse e di tutte e ciascheduna di esse il tenore qui per espresso e di parola in parola inserto e registrato, supplendo noi colla pienezza della nostra podestà pontificia ad ogni vizio e difetto, quantunque sostanziale e formale, che vi potesse intervenire, per questa volta sola, e per la piena e totale esecuzione di quanto si esprime nel presente e nell'altro suddetto Chirografo, anche con pienezza di derogatoria delle derogatorie, ed alla regola della nostra Cancelleria *De non tollendo ius quaesitum* ampiamente, pienamente ed espressamente deroghiamo. Non intendiamo, come nell'altro suddetto nostro Chirografo, nè vogliamo che s'intenda o possa intendersi fatto pregiudizio alcuno alle ragioni che in qualsivoglia modo competono alla nostra reverenda Camera Apostolica. Dato dal nostro palazzo apostolico di Monte Cavallo, questo dì 20 settembre 1737.

CLEMENS Papa XII.

*Praedictas
syngraphas con-
firmavit Pontifex.*

§ 5. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat, praedicti exponentes praemissa, quo firmitus subsistant, apostolicae confirmationis nostrae patrocinio communiri summopere desiderarent, nos, specialem ipsis exponentibus gratiam facere volentes, et eorum singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effe-

ctum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutos fore censentes, supplicationibus eorum nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, Chirographa nostra praeinserta, cum omnibus et singulis in eis contentis et expressis ac inde legitime secutis et secuturis quibuscumque, auctoritate apostolica, tenore praesentium, confirmamus et approbamus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiciamus, ac omnes et singulos iuris et facti ac solemnitatum quarumcumque tam ex iuris communis et constitutionum apostolicarum, necnon dictae civitatis aliorumve quorumvis statutorum, eorumque reformationum et novarum additionum praescripto, quam de stylo et consuetudine, seu aliàs quomodolibet in similibus etiam de necessitate observandarum, et alios quoslibet etiam quantumvis formales et substantiales defectus, si qui in praemissis seu eorum aliquo principaliter vel accessorie aut aliàs quomodolibet intervenierint, seu intervenisse dici, censi vel praetendi possent, supplemus et sanamus, ac penitus et omnino tollimus et abolemus.

§ 6. Decernentes, easdem praesentes litteras et in eis contenta quaecumque semper firma, valida et efficacia existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac S. R. E. camerarium et alios cardinales, etiam de latere legatos, necnon Camerae nostrae apostolicae praesiden-

*Iuxta eam ubi
quod iudicandum
esse declarat.*

1 Aptius lege *absolutas* (R. T.).

tes clericos, thesaurarium generalem, ceterosque officiales et ministros nunc et pro tempore existentes, sublatâ eis et eorum cuilibet quavis aliter iudicandi et interpretandi facultate et auctoritate, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Contraria tollit.

§ 7. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon praedictae civitatis, aliisve quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; necnon omnibus illis quae in Chirographis praeinsertis concessimus non obstare; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die VIII octobris MDCCXXXVII, pontificatus nostri anno VIII.

Dat. die 8 octobris 1737, pontif. anno VIII.

CXIII.

Restitutio seu nova erectio provinciae regni Hiberniae fratrum Ordinis B. Mariae de Monte Carmelo strictioris observantiae dudum reviviscentis, cui adiudicantur omnes conventus nunc existentes et imposterum recuperandi.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Pastoralis officii, quo catholicae Ecclesiae per universum terrarum orbem diffusae regimini divinâ dispositione praesidemus, sollicitudo nos admonet, ut felici prosperoque christifidelium, qui e fluctibus saeculi in portum vitae religiosae confugerunt, gubernio atque

directioni, etiam per provinciarum, ubi olim florentes, et idem quod orthodoxa religio accepit detrimentum passae, iterum, benedicente bonorum omnium largitore, revirescere coeperunt, restitutionem sive novam erectionem providere interdum studeamus, sicut, locorum, personarum et temporum qualitatibus mature perpensis, ad Dei gloriam et religionis incrementum atque animarum salutem expedire in Domino arbitramur.

§ 1. Exponi siquidem nobis nuper fecerunt dilecti filii moderni agens venerabilium fratrum catholicorum antistitum regni Hiberniae et procurator dilectorum eidem filiorum fratrum Ordinis B. Mariae de Monte Carmelo strictioris observantiae nuncupatorum eiusdem regni, quod fratres praedicti Ordinis anno MCCLX, tempore Henrici III regis, ut asseritur, Hiberniam ingressi, ita religiosae vitae ac doctrinae exemplis populos illos in eiusdem Ordinis venerationem perduxerunt, ut tempore Eduardi IV sive I Andegavensis regis, circa annum MCCCIII, in provinciam coalescentes, ad triginta duos conventus habuisse, ac per tercentos et amplius annos quamplurimos viros Ordinis praedicti virtutibus ac litteris insignes sacris infulis fuisse decoratos memoriae traditum sit.

Ordo Carmelitarum olim in regno Hiberniae florens.

§ 2. Subinde autem, propter persecutionem catholicis ab assertâ reginâ Elisabethâ motam inflictamque, fratribus praefatis aut occisis aut fugatis, provincia illa extincta fuit; postmodum vero fratres illuc redeuntes ad usque Cromwelli tyranni, a quo penitus deleti fuere, tempus perdurarunt. Sub Iacobo II clarae memoriae, dum vixit, Angliae et Scotiae VII rege, iterum restorationem aggressi, cum ipso etiam rege patrium solum relinquere ab intruso Guillelmo III coacti, se se in Gallias receperunt.

Temporibus variis extitit.

sitate, che avessero bisogno di espressa specificazione, e che si dovessero registrare di parola in parola, decreti camerali, leggi civili e canoniche, statuti, riforme, stili, usi, consuetudini, anche immemorabili, confermati e confermate in forma specifica dalla Santa Sede, e qualunque altra cosa che facesse o potesse fare in contrario, avendone di esse e di tutte e ciascheduna di esse il tenore qui per espresso e di parola in parola inserito e registrato, supplendo noi colla pienezza della nostra podestà pontificia ad ogni vizio e difetto, quantunque sostanziale e formale, che vi potesse intervenire, per questa volta sola, e per la piena e totale esecuzione di quanto si esprime nel presente e nell'altro suddetto Chirografo, anche con pienezza di derogatoria delle derogatorie, ed alla regola della nostra Cancelleria *De non tollendo ius quaesitum* ampiamente, pienamente ed espressamente deroghiamo. Non intendiamo, come nell'altro suddetto nostro Chirografo, nè vogliamo che s'intenda o possa intendersi fatto pregiudizio alcuno alle ragioni che in qualsivoglia modo competono alla nostra reverenda Camera Apostolica. Dato dal nostro palazzo apostolico di Monte Cavallo, questo dì 20 settembre 1737.

CLEMENS Papa XII.

*Praedictas
syngraphas con-
firmavit Pontifex.*

§ 5. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat, praedicti exponentes praemissa, quo firmitus subsistant, apostolicae confirmationis nostrae patrocinio communiri summopere desiderarent, nos, specialem ipsis exponentibus gratiam facere volentes, et eorum singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effe-

ctum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutos fore censentes, supplicationibus eorum nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, Chirographa nostra praeinserta, cum omnibus et singulis in eis contentis et expressis ac inde legitime secutis et secuturis quibuscumque, auctoritate apostolica, tenore praesentium, confirmamus et approbamus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiciamus, ac omnes et singulos iuris et facti ac solemnitatum quarumcumque tam ex iuris communis et constitutionum apostolicarum, necnon dictae civitatis aliorumve quorumvis statutorum, eorumque reformationum et novarum additionum praescripto, quam de stylo et consuetudine, seu aliis quomodolibet in similibus etiam de necessitate observandarum, et alios quoslibet etiam quantumvis formales et substantiales defectus, si qui in praemissis seu eorum aliquo principaliter vel accessorie aut aliis quomodolibet intervenierint, seu intervenisse dici, censi vel praetendi possent, supplemus et sanamus, ac penitus et omnino tollimus et abolemus.

§ 6. Decernentes, easdem praesentes litteras et in eis contenta quaecumque semper firma, valida et efficacia existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac S. R. E. camerarium et alios cardinales, etiam de latere legatos, necnon Camerae nostrae apostolicae praesiden-

*Iuxta eam ubi
quod iudicandum
esse declarat.*

1 Aptius lege *absolutas* (R. T.).

tes clericos, thesaurarium generalem, ceterosque officiales et ministros nunc et pro tempore existentes, sublata eis et eorum cuilibet quavis aliter iudicandi et interpretandi facultate et auctoritate, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Contraria tollit.

§ 7. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon praedictae civitatis, aliisve quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; necnon omnibus illis quae in Chirographis praeinsertis concessimus non obstande; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die VIII octobris MDCCXXXVII, pontificatus nostri anno VIII.

Dat. die 8 octobris 1737, pontif. anno VIII.

CXIII.

Restitutio seu nova erectio provinciae regni Hiberniae fratrum Ordinis B. Mariae de Monte Carmelo strictioris observantiae dudum reviviscentis, cui adiudicantur omnes conventus nunc existentes et imposterum recuperandi.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Pastoralis officii, quo catholicae Ecclesiae per universum terrarum orbem diffusae regimini divina dispositione praesidemus, sollicitudo nos admonet, ut felici prosperoque christifidelium, qui e fluctibus saeculi in portum vitae religiosae confugerunt, gubernio atque

directioni, etiam per provinciarum, ubi olim florentes, et idem quod orthodoxa religio accepit detrimentum passae, iterum, benedicente bonorum omnium largitore, revirescere coeperunt, restitutionem sive novam erectionem providere interdum studeamus, sicut, locorum, personarum et temporum qualitatibus mature perpensis, ad Dei gloriam et religionis incrementum atque animarum salutem expedire in Domino arbitramur.

§ 1. Exponi siquidem nobis nuper fecerunt dilecti filii moderni agens venerabilium fratrum catholicorum antistitum regni Hiberniae et procurator dilectorum itidem filiorum fratrum Ordinis B. Mariae de Monte Carmelo strictioris observantiae nuncupatorum eiusdem regni, quod fratres praedicti Ordinis anno MCCLX, tempore Henrici III regis, ut asseritur, Hiberniam ingressi, ita religiosae vitae ac doctrinae exemplis populos illos in eiusdem Ordinis venerationem perduxerunt, ut tempore Eduardi IV sive I Andegavensis regis, circa annum MCCCIII, in provinciam coalescentes, ad triginta duos conventus habuisse, ac per tercentos et amplius annos quamplurimos viros Ordinis praedicti virtutibus ac litteris insignes sacris infulis fuisse decoratos memoriae traditum sit.

Ordo Carmelitarum olim in regno Hiberniae florens.

§ 2. Subinde autem, propter persecutionem catholicis ab asserta regina Elisabetha motam inflictamque, fratribus praefatis aut occisis aut fugatis, provincia illa extincta fuit; postmodum vero fratres illuc redeuntes ad usque Cromwelli tyranni, a quo penitus deleti fuere, tempus perdurarunt. Sub Iacobo II clarae memoriae, dum vixit, Angliae et Scotiae VII rege, iterum restorationem aggressi, cum ipso etiam rege patrium solum relinquere ab intruso Guillelmo III coacti, se se in Gallias receperunt.

Temporaria variata extitit.

Restituit
postmodum hi-
sae temporibus
Ordo.

§ 3. Denique ad propria reversi, et in dies, Deo propitio, crescentes, sub cura et auxilio provinciae reformatae Turoniae praefati Ordinis fuerunt, a qua praeclaris carissimi in Christo filii nostri Iacobi III magnae Britanniae regis illustris, et dilecti itidem filii nostri Iosephi Renati, dum viveret, tituli S. Laurentii in Lucina presbyteri¹ S.R.E. cardinalis Imperiali nuncupati, Hiberniae apud nos et hanc Sanctam Sedem protectoris, studiis et operâ separatis anno MDCCXXIX unus generalis commissarius et vicarius ex ipsismet fratribus constitutus datusque fuit, sub quo usque ad duodecim conventus recuperati sunt. In congregatione vero eorundem die XXIII septembris proxime elapsi in conventu Dublinensi celebratâ, novos rectores domorum eligentes et suffragantes, pene omnes in favorem generalis commissarii et vicarii dilecto pariter filio moderno priori generali totius praedicti Ordinis preces obtulerunt, ut, quamvis sola ipsis facultas sex simul eidem generali priori praesentandi inesset, tamen dictum generalem commissarium et vicarium sibi superiorem designare et confirmare mallet.

Frates itaque
patres supplicavit
pro nova
erectioe provin-
ciae.

§ 4. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat, praefati fratres, proprium mendicantium institutum adimplentes, ad pastorale animarum ministerium obeundum ab ipsis archiepiscopis et episcopis secum ibidem adhibeantur, atque adeo ab iisdem quoque praesulibus commendentur, ut, quemadmodum ceteri mendicantium Ordines ibidem et alibi propriam provinciam obtinent, ita ipsis etiam suam provinciam habere, provincialem eligere, aliosque ministros et officiales deputare, et omnia, sicut antea in more positum erat, facere et constituere liceat; atque huius rei causâ

¹ Edit. Main. legit *presbyter* (R. T.).

memoratus prior generalis praedicti Ordinis desuper praemissis expostulatus, assistentiam quidem suam promittens, huiusmodi vero facultatem a nobis sibi esse impetrandam responderit: nobis propterea antistites et fratres praefati humiliter supplicari fecerunt ut opportune sibi in praemissis providere et ut infra indulgere de apostolicâ benignitate dignaremur.

§ 5. Nos igitur, eosdem antistites et fratres specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, huiusmodi supplicationibus inclinati, et eorum singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis, sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censentes, huiusmodi supplicationibus inclinati, attentis narratis, et audito dilecto itidem filio nostro Nerio S.R.E. praefatae diacono cardinali Corsino nuncupato, nostro secundum carnem nepote, apud nos et Sedem praefatam eiusdem regni Hiberniae moderno protectore, cui hoc negotium commisimus, super veritate omnium supra expositorum informante, provinciam strictioris observantiae praefati Ordinis totius regni Hiberniae saepedicti, cum omnibus conventibus nunc existentibus et in posterum recuperandis, ceterisque annexis et connexis, in pristinum statum, cum facultatibus eligendi proprium provincialem, definitorium, aliosque officiales et ministros deputandi, auctoritate apostolicâ tenore praesentium restituimus, ac de novo, quatenus opus sit, erigimus et constituimus, ipsique provinciae sic restitutae ac de novo erectae conventum Edemburgi, olim provinciae Sco-

Concedit
Clemens.

tiae existentem, perpetuo unientes et adnectentes, provinciali pro tempore praefatae provinciae Hiberniae futuro facultatem quoque deputandi vicarium provincialem praedictae provinciae Scotiae et priorem praedicti conventus Edemburgi, eadem auctoritate apostolica tribuimus et impertimur.

Primum provincialem ac definitores creant.

§ 6. Insuper, pro hac vice tantum, eidem provinciae de idoneis priore provinciali et definitorebus providere volentes, ac de infrascriptorum fratrum expresse professorum fide, prudentia, charitate, integritate, doctrina, vigilantia et religionis zelo plurimum in Domino confisi, dilectos filios Matthaeum a S. Eliseo in sacra theologia doctorem, alias Lyon, in priorem provincialem; ac Simonem a S. Stoc, alias a Burth, in primum, Patricium a S. Maria Magdalenâ, alias Moans, in secundum, Iacobum a Nativitate, alias Barnis, in tertium, Iacobum a S. Theresia, alias Pendergat, in quartum definitores dictae provinciae sic a nobis erectae, ad tempus quo eiusmodi officia iuxta regularia eiusdem Ordinis instituta durare consueverunt, cum omnibus et singulis praerogativis, praeeminentiis, facultatibus, auctoritate, privilegiis, gratiis et indultis, ac honoribus et oneribus solitis et consuetis, auctoritate et tenore praedictis constituimus et deputamus. Praeterea pro proximo futuro capitulo generali eundem Matthaeum in definitorem generalem, ac Patricium a S. Maria Magdalenâ in primum, ac dilectos pariter filios Ioannem Oneal in secundum socium, necnon Guillelmum Fleyrr in vicarium provincialem Scotiae et priorem conventus Edemburgi, ac Petrum a Pendergat socium et secretarium eiusdem Scotiae, eadem auctoritate instituimus pariter et deputamus. Mandantes propterea in virtute sanctae o-

bedientiae omnibus et singulis memoratae provinciae superioribus, fratribus et personis, ceterisque, ad quos spectat et spectabit in futurum, ut supernominatos fratres ad officia eis respective per praesentes demandata, illorumque liberum exercitium, iuxta earumdem tenorem praesentium, recipiant et admittant, eosque recognoscant, et illis in omnibus ad eadem officia spectantibus pareant et obediant, faveantque et assistant respective.

§ 7. Ac decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab illis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane, si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Huiusmodi litterarum Brevitas.

§ 8. Non obstantibus praemissis, ac constitutionibus et ordinationibus apostolicis, et, quatenus opus sit, provinciarum Hiberniae et Scotiae et Ordinis praedictorum, aliisque quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolica vel quavis firmitate alia roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis alias in suo robore permansuris, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Derogatio contrariarum.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die x octobris, MDCCXXXVII, pontificatus nostri anno VIII.

Dat. die 10 octobris 1737, pontif. anno viii.

CCXIV.

Extensio et ampliatio constitutionis, quae incipit In supremo iustitiae solio, contra homicidas editae pro Statu Ecclesiastico, ad regna Hispaniarum.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Enarratio constitutionum in bulla in supremo.

§ 1. Alias nos per nostras sub plumbo expeditas litteras, nempe vi kalendas februarii anno Incarnationis dominicae MDCCXXXIV¹, pontificatus nostri anno v, ad compescenda et coercenda, atque ab hac alma Urbe totaque in temporali S. R. E. ditione penitus avertenda et eliminanda homicidia, quae a viris sanguinum, divini humanique iuris oblitis, incredili cum immanitate in dies magis magisque increbescente saepissime patrari non sine gravissimo paterni animi nostri dolore ac moerore inaudiveramus, constitutionem, quae incipit *In supremo iustitiae solio*, promulgavimus: in qua, postquam omnes et singulas constitutiones a felicis recordationis Pio II, Paulo II, Sixto IV, Iulio II, Leone X, Iulio III, Pio IV, Pio V, Gregorio XIII, Sixto V, Gregorio XIV, Clemente VIII, Innocentio XI, Innocentio XII, ac Benedicto XIII, et quibusvis aliis Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris, adversus homicidas saluberrime editas approbavimus, confirmavimus et innovavimus, illasque adversus quemcumque non usum seu contrarium

¹ Supra pag. 37 a ponitur data kalendis februarii MDCCXXXV (R. T.).

usum, qui quovis modo praetendi vel allegari potuisset, restituimus et plenarie reintegravimus, quae deinceps omnino et inviolabiliter observari praecepimus ac mandavimus, inter cetera in eadem constitutione contenta, haec praescripta erant, tenoris qui sequitur¹:

« Et quoniam experimento compertum est, administrationem ac cursum rectae et expeditae iustitiae, qua reipublicae salus praecipue innititur, summo opere obturbari² vel ab excessivo numero privilegiatorum, vulgariter *patentati* nuncupatorum, vel a minus recta intelligentia privilegiorum concessorum: proinde, salvis firmisque remanentibus decretis ac resolutionibus quae temporibus felicis pariter recordationis Urbani Papae VIII et dictorum Innocentii XI ac Innocentii XII praedecessorum, aut alias quandocumque ea super re emanarunt, volumus quod privilegium fori nemini quorumcumque privilegiatorum huiusmodi tam in Urbe quam in reliquo Statu Ecclesiastico (praedictis officialibus aliisque privilegiatis a Congregatione pro tempore existentium eiusdem S. R. E. cardinalium contra haereticam pravitatem generalium inquisitorum ac ministris necessariis actu inservientibus archiepiscopis, episcopis et Ordinariis praefatis, eorumque curiis dumtaxat exceptis) pro crimine homicidii suffragentur; sed dicti privilegiati, quatenus clericali character insigniti, ecclesiasticae, et quatenus laici fuerint, saeculari iurisdictioni subiaceant; reservantes nobis facultatem declarandi quinam quotque esse debeant veri familiares dictorum archiepiscoporum, episcoporum et Ordinariorum, ac officiales necessarii cu-

Statutum in ea, ut nemini suffragari valeat quodlibet privilegium in casu homicidii.

¹ Vide sup., pag. 32 b § 8 (R. T.).

² Pessime edit. Maiu. legit *ob turbam* pro *obturbari* (R. T.).

riis ecclesiasticis verum et actuale servitium praestantes.

Clericus tonsuratus secundum homicidii reus fori privilegio non gaudeat.

« Insuper, quia ex illis etiam qui in sortem Domini vocati sunt, quique aliis irreprehensibilis et ab omni culpa et macula immunis vitae ac virtutum exemplo praelucere deberent, aliqui interdum reperiuntur adeo suae vocationis immemores, ut, impellente humani generis hoste, pluribus etiam homicidiis manus suas cruentare non perhorrescant: nos, perversorum quorumcumque malitiae obviandum esse, non indulgendum, probe intelligentes, ad istorum quoque fraenandam pervicaciam, perpetuo itidem statuimus, quod clericus primae tonsurae nullum beneficium ecclesiasticum obtinens, tametsi condiciones clericis huiusmodi a Concilio Tridentino praescriptas servaverit ac servet, pro duobus tamen homicidiis, animo deliberato et praemeditato per eum patrat, privilegio fori et canonis in odium tanti excessus et ad aliorum terrorem exuatur, et uti incorrigibilis omnino saeculari potestati subiiciatur, ab ea tamquam laicus legitimis poenis plectendus; clericus quoque in minoribus ordinibus constitutus, nec pariter beneficiatus, nec praescripta a Concilio Tridentino servans, tam coelebs quam coniugatus, in causis homicidii dicto privilegio fori non gaudeat, eoque privatus remaneat, neque a proprio episcopo seu Ordinario repeti, minusque habitum clericalem, quem indigne abiecit, reassumere possit, nisi post totaliter expiatam admissi delicti poenam; declaratio autem, an reus ante patratum homicidium requisita a Concilio Tridentino servaverit, ad episcopum aliumve loci Ordinarium omnino spectet; non retardata interim delinquentis assecuratione faciendâ etiam per iudicem laicum nomine Ecclesiae, qui illum pa-

riter Ecclesiae nomine ad illius dispositionem retinere possit ac debeat, donec dicta declaratio prodierit: quaecumque diversa ac etiam contrariâ iuris canonici et apostolicarum constitutionum dispositione, seu interpretatione, necnon consuetudine haud refragante.

« Porro, cum idem Benedictus praedecessor, animadvertens homicidia huiusmodi suo etiam tempore increbrescere, nec minus quam alia facinora in celebri constitutione dicti Gregorii XIV etiam praedecessoris, quae incipit *Cum aliâs*, recensita, publicae quieti officere, pro commissi sibi apostolici officii debito, per praedictam suam anno Incarnationis dominicae MDCCXXV, VI idus iunii, cui initium est *Ex quo divina*, evulgatam constitutionem, laicos, animo praemeditato ac deliberato proximum suum interficientes, ab ecclesiasticae immunitatis beneficio excluserit et repulerit, ac pro exclusis atque repulsis haberi voluerit: nos, ob gliscentem in dies quorundam ecclesiasticorum nequitiam, qui, nullâ proprii status habitâ ratione, non raro in adeo nefarium detestandumque crimen prolabantur, ipsarum Gregorii et Benedicti praedecessorum constitutionibus, quas supra confirmavimus atque innovavimus, inhaerentes, et, quatenus opus sit, criminum in illis exceptorum reos immunitate ecclesiasticâ nequaquam iuvare iterum decernentes, eandem Benedicti praedecessoris constitutionem, laicos, animo praemeditato ac deliberato proximum suum sicut praemittitur interficientes, a beneficio immunitatis ecclesiasticae excludentem, ad ipsos ecclesiasticos, cuiuscumque gradus et ordinis existant, in Urbe ac universâ ditione nobis et Sedi Apostolicae mediate vel immediate subiectâ, homicidium animo similiter praemeditato ac deliberato patrant, extendimus

Benedictus XIII laicos deliberato animo idem crimen patrantem ab immunitate ecclesiastica excluserit.

quoque et ampliamus, dummodo tamen causa admissi per eos homicidii ab illorum iudice ecclesiastico competente cognoscatur, et ab eo, si rei reperti fuerint, citra poenam sanguinis, ad praescriptum sacrorum canonum condignā puniantur animadversione.

De aetate ad poenam privationemque immunitatis ecclesiasticae requisita.

« Ulterius, ad varias doctorum, qui eiusdem Benedicti praedecessoris mentem quoad personas in dicta eius constitutione comprehensas interpretari ac explicare voluerunt, sententias et opiniones dirimendas, declaramus homicidii reos natu minores viginti quinque, maiores vero viginti annis, tam laicos quam clericos, atque omnes et singulos, sive laicos sive clericos, qui mandatum, consilium, instigationem, auxilium cooperativum, aut aliam operam occisori praebuerint, ex quorum singulis pravis actibus homicidium evenerit, in dicta Benedicti praedecessoris constitutione comprehensos esse, ac deinceps censi debere, eamque, quatenus opus sit, ad ipsos pariter extendimus; ita scilicet ut illorum extractio e loco immuni atque traditio curiae saeculari, quoad laicos, ad eiusdem curiae saecularis requisitionem, fiat a curia ecclesiastica, et clerici ab ipsa curia ecclesiastica ex officio omnino extrahantur iuxta normam infra dicendam.

De modo extrahendi reos ab ecclesia iuxta qualitates criminis et personae.

« Item declaramus omnes et singulos praedictos, tam laicos quam ecclesiasticos, qui in Urbe ac ditione praefatis ex causa et occasione homicidii etiam in rixa commissi cum armis seu instrumentis suapte natura aptis ad occidendum inquisiti et processati vel in contumaciam banniti et condemnati fuerint, dummodo homicidium non fuerit casuale, vel ad propriam defensionem, immunitatis praefatae beneficio minime etiam gaudere; utque reorum ratione homicidii ut praefertur excepti

inquisitorum seu bannitorum et in contumaciam condemnatorum extractio ab ecclesiis aliisque locis immunibus, atque traditio suo cuique iudici competenti, legitimis modo et forma a curia ecclesiastica fiant, volumus et ordinamus, ut, quotiescumque iudici ecclesiastico competenti innotuerit aliquem laicum seu ecclesiasticum ex causa homicidii excepti inquisitum atque processatum ad ecclesiam seu locum immunem confugisse, ibique moram trahere, ac ea super delicti qualitate ac personae reitate subministrata vel acquisita suppetant indicia, quae ad capturam decernendam sufficere videantur, tunc idem index ecclesiasticus ex officio, ac nemine etiam requirente, si delinquens sit clericus, sin vero laicus, postquam a curia saeculari requisitus fuerit, ad ipsius delinquentis extractionem ab ecclesia seu loco immuni, implorato etiam ad hoc, quatenus opus sit, auxilio brachii saecularis, et cum interventu personae ecclesiasticae ab episcopo deputandae, devenire teneatur; extractumque ad suos, si tuti et securi fuerint, sin minus, ad curiae saecularis carceres adsportari, ibique sub tutā custodiā delineri curet et faciat: ubi vero, ex processu informativo desuper conficiendo, quoad inquisitum nondum condemnatum, dictus index ecclesiasticus ex acquisitis seu subministratis indiciis ad torturam tantum sufficientibus ab¹ extracto homicidium a praefata Benedicti praedecessoris et hac nostra constitutionibus exceptum patratum fuisse cognoverit², ad declarationem, quod scilicet de casu ita excepto constet, progrediatur, extractumque, si laicus sit, ministris et officialibus curiae saecularis, si autem clericus, eius competenti iudici ecclesia-

¹ Male edit. Main. legit *ad pro ab* (n. r.).

² Male edit. Main. legit *cognoverint* (n. r.).

stico tradere et consignare possit ac debeat, exactis tamen receptisque, in actu traditionis et consignationis huiusmodi, a iudice quidem saeculari iuramento, et ab ecclesiastico promissione in verbo veritatis, de restituendo extractum ecclesiae locove immuni, sub poenâ excommunicationis latae sententiae nobis et eidem Romano Pontifici pro tempore existenti reservatae, quatenus extractus in suis defensionibus, quae ad tramites iuris et ordinationum apostolicarum ei competunt, praefata elidat seu diluat indicia; et, si illa minime eliserit sive diluerit, et delinquens repertus fuerit, iudici suo, scilicet ecclesiastico in clericum, saeculari in laicum, ut iuris esse censuerit, animadvertere liceat.

De bannitis et
sententiâ con-
tumaciali irre-
litis.

« Quoties autem de iam bannito aut in contumaciam damnato ex causâ homicidii superius excepti sive laico sive ecclesiastico agatur, quilibet iudex ecclesiasticus, ut praefertur, competens, ad illius, laici¹ nimirum instante curiâ saeculari, et clerici ex officio, extractionem ab ecclesiâ locove immuni, cum interventu quoque personae ecclesiasticae ab episcopo deputandae, ac traditionem suo respective iudici, sicut mox dispositum est, procedat; solamque sententiae contumacialis et actorum, quibus illa fundatur, exhibitionem ad hoc sufficere decernimus, ut dictus iudex ecclesiasticus, ex illorum inspectione dumtaxat agnito num istiusmodi sententia contumacialis legitime iusteque prolata sit, ad formam constitutionum apostolicarum pronunciare ac declarare queat et debeat an bannitus et in contumaciam damnatus consignandus veniat, nec ne; exactis pariter et receptis, quatenus consignetur, a iudice saeculari iuramento, si delinquens sit laicus, ab ecclesiastico

¹ Vocem laici nos addimus (R. T.).

vero, si fuerit clericus, promissione ipsum, ut supra, restituendi ecclesiae locove immuni, sub ante dictâ poenâ excommunicationis, si extractus in suis similiter defensionibus ei ad praescriptum praedictarum constitutionum apostolicarum competentibus nullitatem et iniustitiam contumacialis sententiae praedictae ostenderit, et sceleris indicia diluerit; quod si id praestare nequiverit, et ex eisdem sententiâ et actis rite et recte gestis reus repertus fuerit, iudex eius competens sententiam exequi, et, quando aliquem in poenâ irrogatâ excessum deprehenderit, etiam moderari valeat; ita quod quaecumque declaratio a praedicto iudice ecclesiastico facta in iudicio ecclesiasticae immunitatis super consignatione banniti et in contumaciam damnati eiusque denegatione nullatenus deservire et a nemine allegari possit in alio diverso ac separato iudicio, in quo scilicet de praefatae sententiae contumacialis executione postmodum disputari contingeret; ad quem effectum dicta declaratio iudicis ecclesiastici perinde habeatur ac si non emanasset, nec ullus exinde scrupulus animo iudicis competentis in cognoscendâ et definendâ validitate seu nullitate, iustitiâ seu iniustitiâ eiusdem sententiae contumacialis ingeratur ».

§ 2. Cum autem inter cetera, quae in tractatu vigintisex articulis comprehenso ac per mutuam reciprocamque nostram et carissimi in Christo filii nostri Philippi Hispaniarum regis catholici ratificationem ac ratihabitionem in perpetuum inter apostolicam hanc Sanctam Sedem et earundem Hispaniarum regna firmato ac constabilito contentâ et concordata fuerunt, prout in nostris desuper in simili formâ Brevis die xii currentis mensis novembris expeditis litteris uberius continetur, illud quoque

Constitutio
praedicta in
supremo ad Hi-
spaniarum re-
gna extenditur.

concordatam fuerit ut dispositionem praefatae constitutionis nostrae superius insertam etiam ad Hispaniarum memoratarum regna, in quibus homicidia frequentissima quoque sunt, extendere et ampliare de apostolica benignitate dignaremur: nos igitur, ad tam exitiale ac detestabile homicidiorum flagitium, quantum cum Domino possumus, propulsandum exterminandumque advigilantes, praedictam constitutionem, pro universa, ut praemittitur, S. R. E. praefatae ditione a nobis factam, quoad praeinserta in his praesentibus litteris respective, ad praedicta Hispaniarum regna, apostolica auctoritate, motu proprio, tenore praesentium, extendimus et ampliamus, atque deinceps omnino ac inviolabiliter observari praecipimus et mandamus.

Sola sententia contumacialis exhibitio sufficit ad hoc ut iudex ecclesiasticus possit declarare an in contumacia damnatus consignandus sit, nec ne.

§ 3. Volumus tamen, ut, sicut in nostra ditione ecclesiastica sola sententiae contumacialis, et actorum quibus illa fundatur, exhibitio ad hoc¹ sufficiat ut dictus iudex ecclesiasticus, ex illorum inspectione dumtaxat agnito num sententia contumacialis legitime iusteque prolata sit ad formam constitutionum apostolicarum, pronunciare ac declarare queat et debeat an bannitus et in contumaciam damnatus consignandus veniat, necne; ita pariter pro regnis Hispaniarum sola sententiae contumacialis, ac actorum quibus illa fundatur, exhibitio, ad hoc sufficiat ut iudex ecclesiasticus, ex illorum inspectione dumtaxat agnito num sententia contumacialis legitime iusteque prolata sit ad formam legum et statutorum eorundem regnorum Hispaniarum, pronunciare ac declarare queat ac debeat an bannitus et in contumaciam damnatus consignandus veniat, nec ne.

Praesentium litterarum firmitas et perpetua observantia.

§ 4. Decernentes, easdem praesentes litteras et in eis contenta quaecumque

¹ Partic. ut hinc abiicimus (n. r.).

semper et perpetuo firma, valida et efficacia existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere¹, atque ab omnibus et singulis, ad quos spectat et pro tempore quandoque spectabit, plenissime observari, sicque et non aliter in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac ipsius S. R. E. cardinales etiam de latere legatos, eorundem cardinalium Congregationes, aliosve quoslibet quacumque praeeminentiam et potestate fungentes et funtoros, sublata eis et eorum cuilibet quavis aliter iudicandi et interpretandi facultate et auctoritate, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane quidquid secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

§ 5. Non obstantibus praeinsertis, aliisque apostolicis, ac in universalibus provincialibusque et synodalibus conciliis editis, generalibus vel specialibus, constitutionibus et ordinationibus, necnon, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, stilis, usibus et consuetudinibus, etiam immemorabilibus, ac quorumcumque praedecessorum nostrorum litteris, privilegiis, indultis et facultatibus, quibusvis, etiam dictis cardinalibus, eorumque Congregationibus, sub quibuscumque verborum tenoribus et formis, ac cum quibuslibet etiam derogationum derogatoriis, aliisque efficacioribus, efficacissimis et insolitis clausulis, ac irritantibus et aliis decretis, etiam motu, scientia et potestatis plenitudine similibus, etiam consistorialiter, vel alias quomodolibet in contrarium praemissorum concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, etiamsi

Derogatio contractorum.

¹ Edit. Main. legit *obtinere* (n. r.).

pro illorum sufficienti derogatione de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa et individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quaelibet alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores huiusmodi, ac si de verbo ad verbum, nihil penitus omisso et formā in illis traditā observatā, exprimerentur et insererentur, praesentibus pro plene et sufficienter expressis et insertis habentes, illis aliās in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Terminus indicatus ad huiusmodi constitutionis vigorem adducendum.

§ 6. Volumus autem, ut, lapsis viginti-quinque diebus postquam praesentes litterae per earundem Hispaniarum regna ab ordinario nostro atque apostolicae huius Sanctae Sedis in iisdem Hispaniarum regnis nuntio publicatae fuerint, omnes et singulos in praefatis regnis existentes perinde arceant, ac si unicuique eorum personaliter ac nominatim intimatae fuissent; utque ipsarum praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiastica dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides in iudicio et extra illud ubique adhibeatur, quae ipsis praesentibus adhiberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xvi novembris mcccxxxvii, pontificatus nostri anno viii.

Dat. die 16 novembris 1737, pontif. anno viii.

CCXV.

Patriarchae pro tempore ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis perpetuo conceditur, quod in consistorio immediate sequenti ad eius electionem ac provisionem de patriarchatu ad cardinalitiam dignitatem promoveri debeat.

Clemens episcopus,
servus servorum Dei,
ad perpetuam rei memoriam.

Inter praecipuas apostolici ministerii nostri partes eam esse longe gravissimam nobis iniunctam intelligimus, ut hierarchiam, divinā ordinatione in Catholica Ecclesia institutam, non solum semper stabilem custodire et conservare, verum etiam maioribus gloriae ac splendoris incrementis, cum haec ad divini honoris cultum magis adaugendum ac Catholicae Ecclesiae decus amplius promovendum plane redundatura fore in Domino prospicimus et confidimus, apostolicā sollicitudine ac providentiā cumulare satagamus¹.

Prooemium.

§ 1. Itaque, cum venerabilis frater patriarcha ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis iis insignibus et praerogativis a felicitis recordationis Clemente XI et Benedicto XIII Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris primum ordinatus² fuerit ut profecto inter ecclesiasticos praesules et antistites plurimum excellat, hinc est quod nos etiam congruum et consentaneum propterea fore existimamus, si patriarcha praefatus per laudabilem providentiae et indulgentiae rationem, quam apostolica haec Sancta Sedes, quantum commode fieri poterit, in assumendis S. R. E. cardinalibus habere consuevit erga orthodoxas nationes, inter eosdem S. R. E. cardinales etiam

Causas concedendi privilegium de quo in rubrica.

¹ Praeposit. in nos addimus (R. T.).

² Edit. Main. legit *satagimus* (R. T.).

³ Potius legendum *ornatus* (R. T.).

per antedictae providentiae anticipationem in posterum adnumeretur, quemadmodum ipsum quoque carissimum in Christo filium nostrum Ioannem Portugalliae et Algarbiorum regem illustrem de catholica religione multis nominibus, et praesertim ob eximiam pietatem ac constantem fidelissimamque erga apostolicam hanc Sedem probatam observantiam ac singularem sollicitudinem, studium zelumque in provehendâ propagandâque ad instar omnium Portugalliae et Algarbiorum regum praedecessorum suorum apud barbaras remotissimasque gentes catholicâ fide, meritissimum, ac propterea omnibus apostolicae liberalitatis documentis dignissimum, id ipsum sentientem desiderare accepimus.

Concessio privilegii praedicti.

§ 2. Quamobrem, motu proprio, nostro et successorum nostrorum et Sedis Apostolicae nomine, de nonnullorum etiam venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium consilio, concedimus et indulgemus, ut, memoratâ erga catholicas nationes providentiâ suffragante, in consistorio provisos et electos pro tempore patriarcha ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis, qui alioquin peculiariter iuxta constitutiones apostolicas ad cardinalitiam dignitatem requisita habere debeat, in amplissimum eiusdem S. R. E. senatum in altero immediate sequenti consistorio cooptetur, eique suo tempore, servatâque suâ forma, unus ex cardinalitibus titulis assignetur iuxta constitutiones felicitis recordationis Sixti Papae V. Quod si nulla adsit eandem catholicis nationibus impertiendi apostolicae benignitatis gratiam opportunitas, tamen per anticipationem etiam non semel, et quoties opus fuerit, faciendam, in sacrum cardinalium collegium adscisci eâ quidem lege statuimus, ut, quoties vigore praesentium laudatâ apostolicae Beneficentiae testimonia ac-

ceperit natio Lusitana, toties nulla eidem obsecundandi ratio habeatur, cum opportuna gratificandi aliis nationibus aut Pontifici ipsi, qui patriarcham S. R. E. cardinalem declaraverat, aut sibi succedentibus pro tempore Summis Pontificibus, se obtulerit occasio.

§ 3. Porro huic pontificiae nostrae concessionis providentiaeque motu proprio et ex certâ ac maturâ deliberatione nostris ac de apostolicae potestatis plenitudine initae tunc locum esse statuimus, cum supradictam patriarchalem ecclesiam Ulyssiponensem vacare contigerit, translationibus et dimissionibus omnino exclusis, nisi tamen ad dimissionem admittendam causa adeo urgens publica et necessaria sit, ut serio expensa neque etiam per suffraganei antistitis subsidium patriarchalis ecclesiae indigentia occurrere possit, atque in secreto eorumdem venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium consistorio ac ab ipsis pro tempore Romanis Pontificibus comprobetur; sicque futuris perpetuo temporibus a nobis successoribusque nostris servandum esse decernimus et statuimus.

§ 4. Decernentes pariter, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, sicque et non aliter per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac eiusdem S. R. E. cardinales, etiam de latere legatos et Sedis praefatae nuncios, aliosque quoslibet quacumque praeeminentiâ et potestate fungentes ac functuros, sublata eis et eorum cuilibet quavis aliter iudicandi et interpretandi facultate et auctoritate, ubique iudicari et definiti debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis au-

Non dandus locus coadiutoriae, nisi causis cognitis in consistorio secreto.

Huiusmodi concessionis firmitas.

1 Videtur legendum et pro ut (R. T.).

ctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Obstantium
derogatio.

§ 5. Non obstantibus apostolicis, ac in generalibus conciliis editis, constitutionibus et ordinationibus super praemissis disponentibus; quas omnes, quatenus praesenti constitutioni in aliquo adversantur, illarum tenores pro plene et sufficienter expressis habentes, etiamsi de illis specialis, specifica, expressa et individua, de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio facienda esset, omnino abrogamus, abolemus et annullamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Transumptis
fides danda.

§ 6. Volumus autem ut praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo praelati vel personae in ecclesiastica dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides ubique locorum tam in iudicio quam extra illud habeatur, quae haberetur ipsis praesentibus si forent exhibitae vel ostensae.

Clausulae.

§ 7. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostri indulti, dationis, concessionis, derogationis, decreti et voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire; si quis autem hoc attentare praesumpserit, indignationem omnipotentis Dei ac beatorum Petri et Pauli apostolorum eius se noverit incursum.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, anno Incarnationis dominicae MDCCXXXVII, XVI kalendas ianuarii, pontificatus nostri anno VIII.

Dat. die 17 decembris 1737, pontif. anno VIII.

A. card. pro-datarius.

Pro domino card. OLIVERIO.

C. AMATUS.

Visa de Curia:

N. ANTONELLUS.

Loco † Bullae Aureae.

CCXVI.

Extensio indulti, magistris generalibus Ordinis B. M. V. de Mercede Redemptionis Captivorum a Sede Apostolica concessi celebrandi in privatis oratoriis conventuum dicti Ordinis in quibus eos commorari contigerit, ad ex-generales eiusdem Ordinis.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Exponi nobis nuper fecit dilectus filius Iosephus Mez, frater expresse professus, in sacra theologia magister, ac procurator generalis Ordinis B. Mariae Virginis de Mercede Redemptionis Captivorum, quod alias, auctoritate apostolica, sub certis modo et forma tunc expressis, tunc et pro tempore existentibus magistris generalibus eiusdem Ordinis indultum fuit ut ipsi in privato domus suae habitationis¹ intra claustra conventuum dicti Ordinis, ubi eos pro tempore commorari contigisset, unam missam pro unoquoque die per se ipsos celebrare libere et licite possent et valerent, et alias, prout in apostolicis de super in simili forma Brevis expeditis litteris, quarum tenorem praesentibus pro plene et sufficienter expresso ac de verbo ad verbum inserto haberi volumus, uberius dicitur contineri.

Concessio alias
magistris g-neralibus Ordinis
facta.

§ 2. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat, indultum huiusmodi ad exgenerales eiusdem Ordinis per nos extendi summopere desideret: nos, eiusdem Iosephi procuratoris generalis volis hac in re, quantum cum Domino possumus, favorabiliter annuere volentes, cumque a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel

Extenditur ad
exgenerales.

¹ Vidatur deesse oratorio, vel legendum habitaculo (R. T.).

causâ latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censes, supplicationibus eius nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, indultum praepositum pro tempore existentibus magistris generalibus Ordinis huiusmodi celebrandi in privatis oratoriis conventuum dicti Ordinis, in quibus eos commorari contigerit, ut praefertur, concessum, ad modernos et pro tempore existentes exgenerales ipsius Ordinis, servatâ in reliquis praedictarum litterarum formâ et dispositione, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, extendimus et ampliamus. Non obstantibus omnibus et singulis illis quae in dictis litteris concessa sunt non obstare, ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xx decembris MDCCXXXVII, pontificatus nostri anno VIII.

Dat. die 20 decembris 1737, pontif. anno VIII.

CCXVII.

Confirmatio quarundam resolutionum Congregationis particularis pro expositis archihospitalis S. Spiritus in Saxiâ de Urbe.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Leander cardinalis Portia
visitator huius
archihospitalis
cum facultate
aliâ ad id as-
sumendi.

§ 1. Aliâs nos, nempe die xxx septembris MDCCXXXVII proxime elapsi, ad ecclesiae, domui, valetudinario sive archihospitali¹ mensaeque nummulariae S. Spiritus in Saxiâ nuncupati huius almae Urbis nostrae rationibus opportune providendum, dilectum filium nostrum Leandrum tituli S. Callisti presbyterum

¹ Forsan domus, valetudinarii, sive archihospitalis (R. T.).

S. R. E. cardinalem Portiam nuncupatum visitatorem apostolicum, cum omnibus et singulis facultatibus necessariis et opportunis, ac praesertim sibi in subsidium assumendi unum aut plures Romanae Curiae praelatos, sive personas sibi benevisas, ut quaecumque¹ ad ecclesiae, domus, valetudinarii sive archihospitalis mensaeque nummulariae praedictae levamen utilitatemque proficua ac saluberrima statuenda atque providenda fore existimasset, pro suâ spectatâ fide, prudentiâ, doctrinâ, charitate, religionis zelo, ac rerum agendarum dexteritate et experienciâ, provideret ac statueret, constituimus et deputavimus, prout in aliis nostris in simili formâ Brevis litteris desuper expeditis, quarum tenorem praesentibus pro plene et sufficienter expresso et inserto haberi volumus, uberiorius continetur.

§ 2. Cum autem, inter cetera hactenus inita consilia adhibitaque remedia, illud etiam necessarium esse iudicaverit, ut aliquo pacto diminuerentur magna impendia et sumptus qui fiunt obcuram educationemque infantium expositorum qui ex provinciis etiam Ecclesiastici Status nostri tam extra quam intra districtum almae Urbis praefatae quotidie numerosissimi afferuntur; ac propterea nobis humiliter supplicaverit ut ad huiusmodi effectum Congregationem particularem nonnullorum venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium aliorumque Romanae Curiae praelatorum deputaremus, quemadmodum deputavimus; a qua quidem Congregatione particulari a nobis deputatâ, et habitâ die vii mensis ianuarii proxime praeteriti, considerata et resoluta fuerunt: i. Dictum archihospitale impotens omnino esse ad ferendum onus

A Congregatione particulari statutum, ut in unaquaque provincia stabiliatur molus educandi infantibus expositos.

¹ Edit. Main. legit quaecumque (R. T.).

admittendi ac alendi proiectos intra et extra Urbis districtum natos; ac proinde; II. In¹ incumbere unicuique respectivae provinciae ex iis ex quibus antea deferebantur ad dictum archiepiscopale: ac, ut id exequatur; III. In unaquaque provinciâ statuendum esse locum et modum, ut ii respective alantur; IV. Data fuit eidem Leandro visitatori facultas eligendi aliquem praelatum, qui, cum facultatibus per quam amplissimis a nobis impetrandis, se conferat ad dictas provincias, ac adhibito consilio ordinariorum gubernatorum, necnon deputatorum communitatum, quod resolutum fuit, integre exequatur:

Huiusmodi decretum confirmatur a Clemente.

§ 3. In quorum sequelam idem Leander visitator, ad mentem Congregationis praefatae, praelegit in praelatum ad exequendum praedicta dilectum filium magistrum Martinum Innicum Caraccioli in utrâque signaturâ nostrâ referendarium: subinde vero die XIII eiusdem mensis ianuarii, factâ nobis omnium relatione, praeinsertas resolutiones approbavimus, ac, pro firmiori illarum subsistentiâ, de praesenti motu proprio et ex certâ scientiâ ac maturâ deliberatione nostris, deque apostolicae potestatis plenitudine, tenore praesentium, iterum approbamus et confirmamus, illisque apostolicae firmitatis robur adiciamus.

Firmitas harum litterarum.

§ 4. Decernentes, easdem praesentes litteras firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore spectabit, plenissime suffragari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel igno-

¹ Videtur legendum *Id* pro *In* (R. T.).

ranter, contigerit attentari. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis; ceterisque contrariis quibuscumque.

Obstantium derogatio.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die VII februarii MDCCXXXVIII, pontificatus nostri anno VIII.

Dat. die 7 februarii 1788, pontif. anno VIII.

CCXVIII.

Quarta pars reddituum, a patriarchali, archiepiscopalibus et episcopalibus ecclesiis in Portugalliae et Algarbiorum regnis existentibus aliâs dismembrata favore dignitatum, canonicorum et beneficiarum patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis a felicis recordationis Clemente XI et Innocentio XIII summis Pontificibus, ampliatur ad tertiam dictorum reddituum partem, aliique ecclesiastici redditus pro earundem dignitatum et canonicorum decentiori sustentatione et patriarchalis ecclesiae manutentione perpetuo applicantur.

Clemens episcopus,
servus servorum Dei,
ad futuram rei memoriam.

Religiosa christianorum principum erga divini servitii decorem vota paterno prosequimur affectu, eaque ad debitum, prout pastoralis nostri muneris sollicitudo et laudabilis eorundem principum exigit devotio, perducimus implementum. Quapropter, dum nos providam nostrae considerationis aciem dirigimus ad inclitam et vere regiam charitatem carissimi in Christo filii nostri Ioannis hoc nomine V Portugalliae et Algarbiorum regis illustris, qui in regnis suis non solum temporalium, verum etiam et praecipue spiritualium

Proemium.

rerum¹ sublime nomen ad divini servitii gloriam erigendamque ad beatam Sion populorum suorum devotionem personare, et in eius patriarchali ecclesiâ Ulyssiponensi occidentali, caelestis beatorum civium aulae imaginem exhibente in terris, personas divinis obsequiis iugiter insistentes pro earum debitâ mantentione, et prout patriarchalis ecclesiae praedictae postulat dignitas, novis facultatibus annisque redditibus communiri, eisque sic communitis, caelestis aulae ac beatorum civium praedictorum in patriarchali ecclesiâ huiusmodi sibi populisque suis elucescere maiestatem, piissimis ac vere fidelissimo rege dignis exoptat affectibus, ad desideria sua huiusmodi apostolicae liberalitatis nostrae partes favorabiliter interponimus, prout, pensatis desideriorum praedictorum erga divini servitii decorem meritis, in Domino conspicimus salubriter expedire.

Clement XII
erectam a se
patriarchalem
ecclesiam dicta-
vit ex dismem-
bratione quar-
tas partis fru-
ctuum cetera-
rum ecclesia-
rum.

§ 1. Aliàs siquidem felicitis recordationis Clemens Papa XI praedecessor noster, postquam ipse patriarchalem ecclesiam Ulyssiponensem occidentalem ab eo erectam et institutam, ob suorum insignia meritorum, copioso privilegiorum et indultorum ac aliarum gratiarum apostolica auctoritate concessorum thesauro ditaverat, ut in eâ divinarum rerum cultus suo quoque par esset decori, eiusdemque patriarchalis ecclesia Ulyssiponensis occidentalis fructibus, redditibus et proventibus ecclesiasticis, per quos dignitates, canonici et beneficiati, ceterique dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis ministri se decenter sustentare valerent, suus quoque fulgor elucesceret et maiestas, motu eius proprio a praedictâ patriarchali Ulyssiponensi occidentali ac archiepiscopali et episcopali in Portugalliae

¹ Syntaxin seq. redintegrare dimittimus lectori scio, non enim potuimus (R. T.).

et Algarbiorum regnis consistentibus ecclesiis quartam partem earundem fructuum, reddituum et proventuum naturalium, industrialium et civilium, summam triginta trium millium centum triginta septem ducatorum auri de Camerâ constituentem, dismembravit et separavit; et ex cantoratûs, qui ad centum quinquaginta quatuor, tertiam partem eorum, videlicet quinquaginta unum, ex thesaurariae maioris punctionatae, qui etiam ad centum quinquaginta quatuor, tertiam partem eorum, videlicet quinquaginta unum, ex scholasticae¹ respective dignitatum, qui similiter ad centum quinquaginta quatuor, tertiam partem eorum, videlicet quinquaginta unum; ac ex quindecim canonicatum et praebendarum saecularis et forsâ insignis collegiatae ecclesiae S. Mariae de Alcacova oppidi de Santarem Ulyssiponensis occidentalis dioecesis, qui, videlicet quorumlibet eorum, ad centum quinquaginta quatuor, et insimul ad bis mille trecentos decem, tertiam partem uniuscuiusque eorum, videlicet quinquaginta unum pro quolibet, et insimul septingentos sexaginta quinque; ac ex prioratûs, qui ad trecentos octoginta quatuor, quatuor nonas partes eorum, videlicet sexaginta novem, et ex archipresbyteratûs, qui ad centum quadraginta duos, quartam partem eorum, videlicet triginta quinque, et ex thesaurariae etiam respective dignitatum, qui ad quadringentos, quatuor nonas partes eorum, videlicet centum septuaginta octo; ac ex trium canonicatum et praebendarum etiam saecularis et forsâ insignis collegiatae ecclesiae oppidi de Barcellos Bracharensis dioecesis respective fructibus, redditibus et proventibus, qui, videlicet cuiuslibet eorum, ad centum triginta septem, et insimul qua-

¹ Vel scholasticae ut postea legitur (R. T.).

dringentos undecim, quartam partem eorum, videlicet trigintaquinque pro quolibet, et insimul ad¹ centum quinque; necnon ex prioratûs, qui ad quingentos viginti duos, quatuor nonas partes eorum, videlicet ducentos triginta duos, ex cantoratûs, qui ad trecentos quadraginta septem, quatuor nonas partes eorum, videlicet centum quinquaginta quatuor, ex thesaurariae etiam respective dignitatum, qui ad ducentos sexaginta, quatuor nonas partes eorum, videlicet centum sexdecim; ac ex decem canonicatum et praebendarum pariter saecularis et forsan insignis collegiatae ecclesiae S. Mariae de Ourem Leiriensis dioecesis respective fructibus, redditibus et proventibus, qui, videlicet cuiuslibet eorum, ad centum septuaginta tres ducatos auri de Camera huiusmodi annuatim respective ascendebant, et insimul mille septingentos triginta ducatos auri similes constituiebant, duas quintas partes eorum, videlicet septuaginta pro quolibet, et insimul septingentos ducatos auri pares respective constituentes, respective dismembravit et separavit; ac S. Mariae oppidi de Obidos Ulyssiponensis occidentalis dioecesis, cuius quadringentorum quinquaginta octo, et S. Mametis loci de Lindoso, cuius ducentorum triginta quatuor, ac S. Iacobi loci de Anha, cuius quadringentorum octodecim, ac S. Mariae oppidi Chaves Bracharensis respective dioecesis, forsan habitualementum, nullatenus vero actualementum animarum habentes, ecclesias seu capellas, aut respective in eis vel aliis respective locorum Ulyssiponensis occidentalis et Bracharensis respective dioecesium huiusmodi et respective ecclesiis totidem perpetua simplicia ecclesiastica, prioratus seu abbatias, etiam respective nuncupatas seu nuncupata, ad vel sub

¹ Praeposit. ad delenda videtur (n. r.).

S. Mariae ac S. Mametis et S. Iacobi necnon S. Mariae huiusmodi respective altaria, seu respective invocationibus, cuius quingentorum quinquaginta trinum ducatorum auri similium respective fructus, redditus et proventus valorem annum non excedebant, certo tunc expresso modo vacantes seu vacantia, sub certis modo et formâ tunc expressis suppressit et extinxit: ac quartam partem omnium et quorumcumque fructuum, reddituum et proventuum tam naturalium quam industrialium et civilium patriarchalis Ulyssiponensis occidentalis, archiepiscopaliū et episcopaliū ecclesiarum huiusmodi, necnon alios fructus, redditus et proventus ex dignitatum ac canonicatum et praebendarum collegiatarum huiusmodi fructibus, ut praefertur, dismembratam et separatam, ac dismembratos et separatos, necnon ecclesiarum seu capellarum aut beneficiorum, ut praefertur, suppressarum et extinctarum, seu suppressorum et extinctorum huiusmodi, fructus, redditus et proventus, dignitatibus et canonicatibus et praebendis, necnon duodecim beneficiis eiusdem patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis, sub certis modo et formâ similiter tunc expressis, apostolicâ auctoritate praefatâ, motu eius proprio, et de apostolicae potestatis plenitudine, applicavit et assignavit, ac respective annexuit et incorporavit: ac aliâs, prout in eiusdem Clementis praedecessoris litteris ab eiusdem recordationis Innocentio XIII similiter praedecessore nostro, pro eo quod praedictus Clemens praedecessor, antequam ipsae desuper conficerentur, sicut Domino placuit, ab humanis decesserat, in formâ *Rationi congruit* desuper expeditis¹, sub datum videlicet apud S. Petrum anno Incarnationis dominicae MDCCXXI,

¹ Non leguntur in Bullario (n. r.).

xv kalendas iunii, pontificatus sui anno 1, plenius continetur.

*Causae novas
faciendas con-
cessiones.*

§ 2. Cum autem, sicut accepimus, praedicti fructus, ut praefertur applicati, congruenti ac honorificae pro tempore existentium dignitatum ac canonicorum aliorumque ministrorum eidem patriarchali Ulyssiponensi occidentali ecclesiae inservientium sustentationi et decori, onerumque eidem patriarchali ecclesiae Ulyssiponensi occidentali incumbentium supportationi impares esse dignoscantur, earumdemque litterarum apostolicarum executio suspensa extiterit, et adhuc existat de praesenti :

*Concessio de
qua in rubrica.*

§ 3. Nos igitur, qui patriarchalem ecclesiam Ulyssiponensem occidentalem praefatam pari paternoque prosequimur affectu, probe scientes pia praedicti Ioannis regis erga divini cultus in praedicta patriarchali ecclesia Ulyssiponensi occidentali augmentum eiusque decorem desideria, et ne diutius ipsa convenientibus suae dignitati onerumque ab ipsa sustinendorum supportationi ac congruis ei famulantium manutentioni et honorificentiae orbata remaneat subsidiis, dilectos filios modernos dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis dignitates et canonicos, ac eorum quemlibet, a quibusvis suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet inodati existunt, ad effectum praesentium tantum consequendum, harum serie absolventes et absolutos fore censentes, necnon praefati Clementis praedecessoris litteras ab Innocentio praedecessore praedicto in dicta forma expeditas, earumque totum et integrum tenorem praesentibus pro expressis ac de verbo ad verbum pro insertis habentes, easque ac omnia et singula in eis contenta,

nisi quatenus praesentibus adversentur, approbantes, confirmantes et innovantes, et, si qui desuper defectus quomodolibet intervenerint, revalidantes, motu simili, non ad alicuius nobis super hoc oblatae petitionis instantiam, sed ex certa scientia ac matura deliberatione nostris, deque pari apostolicae potestatis plenitudine, attento consensu dicti Ioannis regis ad hunc effectum, ut accepimus, iam praestito, a patriarchali Ulyssiponensi occidentali, ac archiepiscopalis et episcopalis ecclesiis in Portugalliae et Algarbiorum regnis existentibus praedictis, ac¹ quarum insimul fructus, redditus et proventus ad centum triginta duos mille quingentos sexaginta sex ducatos auri pares, ut etiam accepimus, annuatim ascendunt, ex omnibus et singulis earum respective fructibus, redditibus et proventibus naturalibus, industrialibus et civilibus, ex censibus, laudemis, contributionibus praedialibus, vulgo *pitancas*, aliisque obventionibus, necnon ex iurisdictione etiam temporali et ex cancellariae ac luctuosarum proventibus provenientibus, ceterisque emolumentis quibuscumque ad patriarchalem Ulyssiponensem occidentalem ac archiepiscopales et episcopales ecclesias praedictas quocumque titulo, etiam unionis, donationis, contractus cuiuslibet, etiam onerosi, aut legati, etiam personalis nuncupati, vel alia quavis causa seu iure, nunc et pro tempore, etiam de novo in futurum respective spectantibus, loco quartae partis earum cuiuslibet respective fructuum, reddituum et proventuum a praedicto Clemente praedecessore ab eis respective dismembrae, eiusdemque patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis dignitatibus ac canonicatibus et praebendis applicatae, insimul ad triginta tres mille cen-

¹ Coniunct. ac deleri commode posset (R.T.).

tum trigintaseptem ducatos auri de Camera huiusmodi, ut praefertur, ascendens, tertiam earundem respective fructuum, reddituum et proventuum naturalium, industrialium et civilium ex censibus, laudemis, contributionibus praedialibus, vulgo *pillancas*, aliisque obventionibus, necnon ex iurisdictione etiam temporali et ex cancellariae ac lucluosarum proventibus provenientium, ceterorumque emolumentorum quorumcumque ad patriarchalem Ulyssiponensem occidentalem ac archiepiscopales et episcopales ecclesias praedictas quocumque titulo etiam unionis, donationis, contractus cuiuslibet, etiam onerosi, aut legati, etiam personalis nuncupati, vel alia quavis causa seu iure, nunc et pro tempore etiam de novo in futurum respective spectantium, partem, insimul ad quadraginta quatuor mille centum octoginta octo ducatos auri huiusmodi annuatim nunc et etiam pro tempore ascendentem, et, quoad¹ ecclesias praedictas quae pastoris solatio ad praesens destitutae existunt, a die datae earundem praesentium, quoad alias vero quae suo respective pastore viduatae non reperiuntur, ex nunc pro tunc, et cum primum illas et earum quamlibet eodem pastoris solatio destitui contigerit: necnon ex decanatu post pontificalem maiore, cuius mille ducentorum nonaginta novem, necnon ex cantoratu, cuius quingentorum nonaginta quatuor, et ex uno de Braga, cuius septingentorum quinquaginta sex, ac ex altero archidiaconatibus de Colimbria respective nuncupatis, cuius ducentorum triginta septem, ac ex thesaurariatu maiori nuncupato, cuius aliorum septingentorum quadraginta septem, ac ex scholastiâ respective dignitatibus, cuius octingentorum septuaginta sex et iulii unius;

¹ Male ed. Main. legit *quod* pro *quoad* (R. T.).

necnon ex uno et una, quem et quam Antonius Magalhaens, ac quorum quadringentorum quinquaginta novem, necnon ex alio et alia, quem et quam Simon Barbosa, ac quorum quadringentorum nonaginta octo, ac ex alio et alia, quem et quam Ignatius de Aravio, ac quorum quadringentorum quadraginta septem, ac ex alio et alia, quem et quam Emanuel Pereira de Aravio, ac quorum octingentorum triginta unius, ac ex alio et alia, quem et quam Ioannes Soares Monteiro, ac quorum¹ quadringentorum trigintaquinque, necnon ex alio et alia, quem et quam Antonius Ribeiro de Macedo, ac quorum quingentorum quadraginta trium, ac ex reliquo canonicatibus et reliqua praebendis ecclesiae Bracharensis, quem et quam Gonzalvus Antonius de Sousa, aut alias forsân respective nominati et seu cognominati clerici seu presbyteri dilecti etiam filii, vel eorum aut alicuius eorum forsân successores seu successor, ad praesens respective obtinent, ac quorum quadringentorum octoginta; necnon ex decanatu etiam post pontificalem maiore, cuius mille sexcentorum, ac ex scholastiâ similiter respective dignitatibus, cuius octingentorum quinquaginta octo, necnon ex undecim canonicatibus et, non tamen doctorali et magistrali respective nuncupatis, praebendis ecclesiae Elborensis, quorum et quarum insimul novem mille quadringentorum triginta octo, ac ex quinque canonicatibus cum dimidia praebenda, seu dimidiis canonicatibus et dimidiis praebendis eiusdem ecclesiae Elborensis, etiam ex illo et illa, cuius altera dimidia fructuum pars tribunali sacrae Inquisitionis perpetuo applicata reperitur, ac quorum et quarum insimul bis mille centum quadraginta quinque; necnon

¹ Edit. Main. legit *quarum* (R. T.).

ex decanatu similiter post pontificalem maiore, cuius sexcentorum octoginta septem, necnon ex thesaurariatu maiori nuncupato ecclesiae Colimbriensis, cuius octingentorum quinquaginta octo; necnon ex decanatu post pontificalem maiore, cuius noningentorum triginta, ac ex cantoratu, cuius quingentorum nonaginta quatuor, ac ex uno de Baculo seu de Valdigem, cuius septingentorum sexaginta quinque, ac ex altero archidiaconatibus de Regoa respective nuncupatis ecclesiae Lamacensis, cuius quadringentorum triginta quinque; necnon ex decanatu etiam post pontificalem maiore, cuius mille trecentorum triginta duorum, necnon ex cantoratu, cuius sexcentorum septuaginta duorum, necnon ex scholastria, cuius sexcentorum septuaginta duorum, necnon ex archidiaconatu etiam Baculo seu de Meinedo nuncupato, cuius octingentorum septuaginta, necnon ex archipresbyteratu ecclesiae Portugallensis, cuius sexcentorum sexaginta trium; necnon ex thesaurariatu maiore nuncupato, cuius quingentorum nonaginta unius et iuliorum novem cum dimidio, necnon ex uno de Guarda, cuius ducentorum triginta unius, necnon ex alio de Selorico, cuius ducentorum quinquaginta octo, necnon ex reliquo archidiaconatibus de Covilham respective nuncupatis ecclesiae Egitanensis, nullam vel modicam tantum residentiam requirentibus, cuius aliorum ducentorum triginta unius; necnon ex cantoratu, cuius septingentorum quatuordecim et iuliorum quinque monetae romanae, ac ex scholastria, cuius quadringentorum viginti novem, necnon ex archidiaconatu etiam de Baculo nuncupato ecclesiae Visensis, dignitatibus inibi respective, non tamen post pontificalem maioribus, existentibus, ac quorum et quarum aliquibus ex dignitati-

bus cum dimidia praebenda, seu dimidiis canonicatibus et dimidiis praebendis praedictis, nonnullae parochiales ecclesiae, et seu illarum fructus, perpetuae unitae, annexae et incorporatae, et seu uniti, annexi et incorporati respective reperiuntur, ac cuius, et praedictorum et forsitan aliorum illis respective annexorum, ducentorum triginta unius ducatorum auri de Camera huiusmodi respective fructus, redditus et proventus, secundum communem aestimationem, valorem annum, ut similiter accepimus, non excedunt, quique omnes insimul annuam summam triginta trium millium quadringentorum sex ducatorum auri similium et iuliorum quindecim monetae praefatae cum dimidio alterius iulii similis, ut pariter accepimus, constituunt, totidem singulas dignitatum ac canonicatum et praebendarum; necnon canonicatum cum dimidia praebenda, seu dimidiorum canonicatum et dimidiarum praebendarum, ac eorum et earum cuiuslibet respective fructuum, reddituum et proventuum praefatorum, etiam ex distributionibus quotidianis, decimis et aliis quibuscumque proventibus, etiam ratione eis et eorum cuilibet praefatorum et aliorum forsitan respective annexorum, necnon bonis, proprietatibus, iuribus, censibus, laudemis, contributionibus praedialibus, vulgo *pitanças*, ceterisque proventibus, obventionibus et emolumentis quibuscumque, certis et incertis, in pecunia vel fructibus antiquibuslibet aliis rebus quomodolibet consistentibus, provenientium, et ad dignitates ac canonicatus et praebendas, necnon canonicatus cum dimidia praebenda, seu dimidios canonicatus et dimidias praebendas, illosque et illas pro tempore obtinentes quocumque titulo etiam unionum, donationum, oblationum, luctuosarum, contractus cuiuslibet etiam

onerosi, aut legatorum etiam personarum nuncupatorum, seu alia quavis causa vel iure nunc et pro tempore et seu etiam de novo aut in futurum spectantium, respective tertias partes, quae insimul annuam summam undecim millium centum trigintasex ducatorum auri similium et iuliorum undecim constituent: necnon ex uno Oliveira, cuius mille nonagintaquatuor, illorum medietatem, videlicet quingentos quadragintaseptem, et ex altero archidiaconatibus de Regoa respective nuncupatis praefatae ecclesiae Portugallensis, inibi respective dignitatibus, non tamen post pontificalem maioribus, existentibus, quibus pariter, ut etiam accepimus, nonnullae parochiales ecclesiae, et seu illarum fructus perpetuo respective unitae, annexae et incorporatae, et seu uniti, annexi et incorporati reperiuntur, ac cuius bismille centum nonagintaduorum ducatorum auri parium respective fructus, redditus et proventus, secundum aestimationem praefatam, valorem annuum, ut pariter accepimus, non excedunt, tres ex quatuor eorundem fructuum, reddituum et proventuum ex eis etiam ut praefertur provenientium, et ad eos similiter quocumque titulo aut qualibet ex causa nunc et in futurum ut praefertur spectantium, et seu unitorum, annexorum et incorporatorum praefatorum partes, videlicet mille sexcentos quadraginta quatuor ducatos auri partes¹: ac insuper unius de Barroso, cuius quingentorum duorum, ac alterius S. Christinae, cuius mille ducentorum quadragintasex et iuliorum septem monetae cum dimidio alterius iulii similis, necnon alterius de Fontearcada, cuius mille centum sexaginta quinque et iuliorum duodecim monetae praefatae cum dimidio alterius iulii similis, necnon

¹ Videtur legendum *pares* pro *partes* (B. T.).

alterius de Labruge, cuius quingentorum quatuordecim et iuliorum quinque monetae praefatae, necnon alterius de Neiva, cuius quingentorum, necnon alterius de Villanova de Cerveira, cuius trecentorum triginta unius et iuliorum septem monetae praefatae cum dimidio alterius iulii similis, in praefata Bracharensi, necnon alterius etiam de Baculo, cuius quadringentorum vigintiocto et iuliorum decem monetae praefatae, ac alterius de Sexta, in praedicta Elborensi, cuius quadringentorum vigintiocto quinquaginta septem et iuliorum septem monetae praedictae cum dimidio alterius iulii paris, ac reliqui archidiaconatus S. Petri de Franca respective nuncupatorum, cuius quingentorum septuaginta unius et iuliorum septem monetae praedictae cum dimidio alterius iulii similis in praedicta Vicensi, ac thesaurariatibus maioris nuncupati in eadem Lamacensi respective ecclesiis respective dignitatum, non tamen post pontificalem maiorum, nullamque vel modicam tantum residentiam requirentium, quarum aliquibus etiam nonnullae parochiales ecclesiae, et seu illarum fructus, similiter perpetuo unitae, annexae et incorporatae, et seu uniti, annexi et incorporati respective existunt, ac cuius quingentorum quatuordecim ducatorum auri parium et iuliorum octo monetae praedictae respective fructus, redditus et proventus, secundum aestimationem praedictam, valorem annuum, ut similiter accepimus, non excedunt, omnes et singulos eorum ac cuiuslibet eorum fructus, redditus et proventus praedictos, etiam ut praefertur ex decimis et aliis quibuscumque proventibus, etiam ratione praedictorum et forsitan aliorum eis et eorum cuilibet respective annexorum, necnon bonis, proprietatibus, iuribus, censibus, laudemis, contribu-

tionibus praedialibus, vulgo *pitancas*, ceterisque proventus, obventionibus et emolumentis quibuscumque, certis et incertis, provenientes, ac in pecuniâ vel fructibus aut quibuslibet aliis rebus quomodolibet consistentes, et ad ultimodictas decem dignitates, ac illas pro tempore obtinentes, quocumque titulo, etiam donationum, oblationum, luctuosarum, contractûs cuiuslibet etiam onerosi, aut legatorum etiam personalium nuncupatorum, seu aliâ quavis causâ vel iure, nunc et pro tempore et seu etiam de novo aut in futurum spectantes, qui omnes et singuli ultimodictarum decem dignitatum respective fructus, redditus et proventus annuam summam sex milium centum triginta unius ducatorum auri similium et iuliorum tredecim monetae praedictae, ut pariter accepimus, constituunt: ex nunc, quoad dignitates ac canonicatus et praebendas necnon canonicatus cum dimidiâ praebendâ seu dimidios canonicatus et dimidias praebendas huiusmodi quae et qui actu nunc vacant, quo vero ad illas et illos quae et qui minime vacant de praesenti, ex nunc prout ex tunc et e contra, ac cum primum omnes et singulas dignitates ac omnes et singulos canonicatus et praebendas, necnon canonicatus cum dimidiâ praebendâ, seu dimidios canonicatus et dimidias praebendas huiusmodi, ac illarum quamlibet et illorum quemlibet, per cessum, etiam ex causâ permutationis, etiam in nostris et Romani Pontificis pro tempore existentis manibus, vel decessum seu privationem aut dimissionem vel amissionem quorumcumque illas et illos aut illarum et illorum quamlibet et quemlibet quomodolibet obtinentium et obtinentes¹, aut aliâs quovis modo etiam apud Sedem Apostolicam ex quocumque decreto va-

¹ Potius lege et obtinentis (R. T.).

cationis seu cessationis cuiuscumque iuris, apostolicâ auctoritate in provisionibus de aliis beneficiis illas et illos quomodolibet obtinentibus eadem apostolicâ auctoritate factis quomodolibet apponendo², seu tunc appposito, etiam in aliquo ex mensibus nobis et Romano Pontifici pro tempore existenti Sedique Apostolicae praedictae per constitutiones apostolicas seu cancellariae apostolicae regulas editas vel edendas vel aliâs quomodolibet reservatis, seu ordinariis collatoribus per easdem apostolicas constitutiones, cancellariae praedictae regulas, seu litteras alternativarum, aut alia privilegia et indulta concessa, seu iure ordinario vel aliâs competentia³, vacare contigerit; etiamsi actu nunc, ut praefertur, aut aliâs quovis modo, quem, etiamsi ex illo quaevis generalis reservatio etiam in corpore iuris clausa³ resultet, praesentibus haberi volumus pro expresso, etiamsi illas et illos et illarum quamlibet ac illorum quemlibet nunc obtinentes et obtinens nostri aut Romani Pontificis pro tempore existentis seu cuiusvis S. R. E. cardinalis etiam tunc viventis familiares seu familiaris, continui commensales seu continuus commensalis, aut Romanae Curiae officiales seu officialis, aut aliâs quaecumque reservationem seu affectionem quomodolibet inducentes seu inducens extiterint seu extiterit, seu per illas et illos aut illarum quamlibet et illorum quemlibet obtinentium seu obtinentis, vel quorumvis aliorum, de illis et illarum qualibet et illorum quolibet in Romanâ Curia praedictâ vel extra eam etiam coram notario publico et testibus respective factas liberas resignationes, aut assequutionem alterius beneficii ec-

¹ Male edit. Main. legit *apponendi* (R. T.).

² Fors. *competentibus*, nempe *mensibus* (R. T.).

³ Male ed. Main. h. *clausula* pro *clausa* (R. T.).

clasiastici quavis auctoritate collati, respective vacent seu vacet, etiamsi tanto tempore vacaverint seu vacaverit, quod eorum seu eius collatio, iuxta Lateranensis statuta Concilii, ad Sedem Apostolicam praedictam legitime devoluta existat, ipsaeque dignitates necnon canonicatus et praebendae, ac canonicatus cum dimidia praebenda, seu dimidii canonicatus et dimidia praebendae praefati, ac illarum quaelibet et illorum quilibet dispositioni apostolicae specialiter vel alias generaliter reservatae et reservati, ac reservata et reservatus existant et existat, et super eis seu earum aliqua vel eorum aliquo inter aliquos, cuius statum etiam praesentibus haberi volumus pro expresso, pendeat indecisa, dummodo tamen dignitatibus et canonicatibus et praebendis, necnon canonicatibus cum dimidia praebenda, seu dimidiis canonicatibus et dimidiis praebendis praedictis, illasque et illos pro tempore respective obtinentibus, nulla, nisi ea quae per vicarios perpetuos exerceri solet, cura imminuat animarum, apostolica auctoritate praedicta, perpetuo separamus, dismembramus et seiungimus.

Dis-membratio
tertia pars
eiusque res-
pectiva applica-
tio.

§ 4. Ac omnes et singulos omnium et singulorum respective fructuum, reddituum et proventuum a patriarchali Ulyssiponensi occidentali, ac archiepiscopalibus et episcopalibus ecclesiis praedictis, necnon ex dignitatibus ac canonicatibus et praebendis, necnon canonicatibus cum dimidia praebenda, seu dimidiis canonicatibus et dimidiis praebendis, tertiam et dimidiam, ac tres ex quatuor respective partes praedictas, necnon omnes et singulos fructus, redditus et proventus ab ultimodictis decem dignitatibus, ut praefertur, dismembratas, separatas et seiunctas, ac respective separatos, dismem-

bratos et seiunctos, in viginti quatuor portiones aequales dividi, easque sic divisas, in earum respective naturalibus, industrialibus et civilibus fructibus, redditibus et proventibus praefatis, persolvi debere volumus et statuimus; eisque sic divisis et persolvi debitis, unamquamque ex portionibus huiusmodi unicuique ex dignitatibus, ac unicuique ex canonicis patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis praefatae (cum hoc tamen quod patriarcha Ulyssiponensis occidentalis pro tempore existens, cum consilio et consensu praefati Ioannis regis, super tertia parte fructuum, reddituum et proventuum a patriarchali Ulyssiponensi occidentali, ac archiepiscopalibus et episcopalibus ecclesiis praefatis, a nobis sic, ut praefertur, dismembrata praefata, unam, super tertia vero ac dimidia ac tribus ex quatuor respective partibus a dignitatum et canonicatum et praebendarum, necnon canonicatum cum dimidia praebenda, seu dimidiorum canonicatum et dimidiarum praebendarum, necnon ultimodictarum decem dignitatum respective fructibus, redditibus et proventibus praefatis a nobis per praesentes, ut praefertur, dismembratis praefatis, ac dignitatibus ac canonicatibus et praebendis dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis a nobis ut infra applicandis, alteram eorumdem respective fructuum, reddituum et proventuum quotas Ioanni regi ac patriarchae praefatis benevisas, dummodo tamen primodicta, videlicet, a patriarchali Ulyssiponensi occidentali ac archiepiscopalibus et episcopalibus ecclesiis praefatis quartam, secundodicta¹ vero quotae huiusmodi, ut infra statuendae, tres quartas a dignitatibus ac canonicatibus et praebendis necnon canonicatibus cum dimidia praebenda seu

¹ Edit. Main. legit *secundodictae* (A. T.).

dimidiis praebendis praefatis a nobis per praesentes ut praefertur dismembratorum, separatorum et seiunctorum respective fructuum, reddituum et proventuum praefatorum respective partes respective non excedant, in¹ eiusdem patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis fabricae utilitatem et indigentias necnon ministrorum eidem patriarchali ecclesiae Ulyssiponensi occidentali nunc et pro tempore inservientium substantiationem convertendas, et a singulis dignitatibus et canonicis dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis singulis annis perpetuo persolvendas, infra tempus Ioanni regi ac patriarchae praefatis benevisum, statuere possit et valeat), ita quod liceat nunc et pro tempore existentibus eiusdem patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis dignitatibus et canonicis, et eorum cuilibet, per se vel procuratores, actores, exactores vel oeconomos suos, eorum respective nomine, corporalem, actualement et civilem omnium et singulorum fructuum, reddituum et proventuum a nobis per praesentes, ut praefertur, dismembratorum, separatorum et seiunctorum (quoad ecclesiarum, videlicet, dignitatum, canonicatum et praebendarum, ac canonicatum cum dimidia praebenda, seu dimidiorum canonicatum et dimidiarum praebendarum, quae et qui nunc vacant, videlicet², a die datae praesentium, quo vero ad illarum et illorum, quae et qui minime vacant de praesenti, respective fructus redditus et proventus ut praefertur dismembratos, seiunctos et separatos, et ut infra applicandos praedictos, a die illarum et illorum respective eventurae vacationis respective apprehendendam) possessionem propria

¹ Praeposit. in nos addimus (R. T.).

² Particula videlicet repetita, commodius deleteretur (R. T.).

auctoritate libere apprehendere, et apprehensam perpetuo retinere, ipsosque fructus, redditus et proventus, per se, vel alium, seu alios, in propria specie et non alias, et, si species inseparabilis et individua sit, in quota parte iusti valoris percipere, administrare, exigere et levare, ac tam ex horreis communibus, quam ex aliis quibuscumque locis, ubicumque servati existant, extrahere, eosque libere locare, et in electione exactorum dictorum fructuum, reddituum et proventuum, *priostes* nuncupatorum, aliorumque similium officialium, vocem per ipsos conductores seu eorundem dignitatum et canonicorum dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis procuratores vel oeconomos habere, necnon ab eisdem oeconomis seu administratoribus reddituum cathedralium ecclesiarum et dignitatum ac canonicatum et praebendarum, necnon canonicatum cum dimidia praebenda, seu dimidiorum canonicatum, et dimidiarum praebendarum praefatorum, reliquisque officialibus quibuscumque, ac exactoribus illarum seu illorum, vel et ab ipsis episcopis, dignitatibus et canonicis, quatenus opus sit, iuramentum super vera quantitate quorumcumque respective reddituum praefatorum exquirere, ac eos ad praefatum iuramentum praestandum compellere, ceterosque dictae administrationis actus exercere, dictosque omnes et singulos fructus, redditus et proventus, ex patriarchali Ulyssiponensi occidentali, et archiepiscopalibus et episcopalibus ecclesiis, necnon dignitatibus et canonicatibus et praebendis, ac canonicatibus cum dimidia praebenda, seu dimidiis canonicatibus et dimidiis praebendis praefatis, a nobis per praesentes ut praefertur dismembratos, separatos et seiunctos, ac ut infra applicandos (ab omni decima,

quartâ, mediâ, et quavis aliâ fructuum parte, subsidio etiam charitativo et excusato, et quocumque alio tam ordinario, quam extraordinario onere, cogitabili vel excogitabili¹, etiam reali, perpetuo, vel ad tempus, quomodolibet nuncupato, etiam pro patriarchalis Ulyssiponensis occidentalis, ac archiepiscopalium et episcopalium ecclesiarum praefatarum, vel illis aut unicuique ex dignitatibus ac canonicatibus et praebendis, necnon canonicatibus² cum dimidiâ praebendâ, seu dimidiis canonicatibus et dimidiis praebendis annexarum, cum curâ et sine curâ, ecclesiarum, capellarum, sive altarium, respective fabricâ, et quavis etiam dictâ apostolicâ seu ordinariâ respective auctoritate et regiâ potestate, ac ex quacumque etiam urgenti, urgentissimâ et de necessitate exprimendâ causâ, etiam pro seminario puerorum ecclesiastico, classis triremium reparatione, et fabricâ basilicae Principis Apostolorum de Urbe, Cruciatâ sanctâ, et expeditione contra Turcas ac alios orthodoxae fidei hostes, etiam ad imperatoris, regum, reginarum, etiam Portugalliae et Algarbiorum regnorum praefatorum, necnon ducum, rerum-publicarum, et aliorum quorumcumque principum instantiam, intuitum et contemplationem, ac pro eorum et Sedis Apostolicae praefatae necessitatibus, aut aliâs canonice vel de facto impositis, vel pro tempore quomodolibet imponendis, vel eisdem patriarchali Ulyssiponensi occidentali, ac archiepiscopalibus et episcopalibus ecclesiis, aut dignitatibus et canonicatibus et praebendis, necnon canonicatibus cum dimidiâ praebendâ, seu dimidiis canonicatibus et dimidiis praebendis praefatis, ex fundatione, institutione, vel statuto, sive consuetudine,

etiam ratione mulctarum, vel cuiuslibet alterius poenae, diminutionis, amissionis seu oneris, sive quocumque alio nomine, aut alio quolibet modo et causâ, nunc et pro tempore respective inhaerentis¹, aut quae seu qui ex dictis vel aliis hic non expressis aut futuris et non praevisis causis in diminutionem fructuum, reddituum et proventuum redundare possint, ac etiam quacumque pensione super eisdem fructibus, redditibus et proventibus, apostolicâ auctoritate praefatâ, etiam perpetuâ, etiam in favorem tribunalis sacrae Inquisitionis contra haereticam pravitatem, vel cuiuslibet alterius pii loci, vel aliâs quomodolibet in futurum reservandâ, quae omnia patriarcha Ulyssiponensis occidentalis, archiepiscopi et episcopi, necnon dignitates et canonici praefati nunc et pro tempore existentes solvere teneantur, etiamsi in impositionibus huiusmodi caveatur expresse quod pensionarii seu reservarii partis fructuum patriarchalis Ulyssiponensis occidentalis ac archiepiscopalium et episcopalium ecclesiarum praefatarum, ac dignitatum et canonicatum cum dimidiâ praebendâ, seu dimidiorum canonicatum et dimidiarum praebendarum praefatarum, pro ratâ pensionum, reservationum et applicationum suarum quantumvis exemptarum, contribuere teneantur, ac aliâs, in omnibus et per omnia et omnino quoad omnia liberos, immunes et exemptos, prout per easdem praesentes eximimus et liberamus, ac exemptos et liberatos esse volumus), sub conditionibus infra positis exigere, levare et in communes usus et utilitatem praefatae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis, ut praefertur, eiusque dignitatum ac canonicorum, ceterorumque ministrorum ei in

¹ Potius lege *inexcogitabili* (R. T.).

² Coniunct. *et* hinc abiiicimus (R. T.).

¹ Videretur potius legendum *inhaerentibus*, nempe *decimâ, quartâ, mediâ*, etc. (R. T.).

divinis inservientium indigentias ac sumptus respective, modo et formâ praefatis, convertere, Dioecesani loci vel cuiusvis alterius licentiâ desuper minime requisitâ (cum hoc tamen quod sex dignitates et octodecim canonici dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis, eveniente singulâ ultimodictarum decem dignitatum respective pro tempore vacatione, singulis singulas ultimodictas decem dignitates huiusmodi pro tempore respective obtinentibus, vel earum respective mensae capitulari, centum septuaginta unum ducatos auri pares et iulios septem monetae praefatae cum dimidio alterius iulii similis, summam trecentorum millium regalium monetae Portugalliae constituentes, singulis annis persolvere debeant et teneantur; quodque omnia et quaecumque onera, obligationes, expensae et amissiones, quae ultimodictis decem dignitatibus easque et earum singulas nunc respective obtinentibus respective incumbunt, illa videlicet et illae, quae personalia et personales, ab iis qui easdem ultimodictas decem dignitates pro tempore obtinebunt, alia vero et aliae, quae realia et reales esse dignoscuntur, ab eiusdem patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis capitulo ac dignitatibus et canonicis praefatis, ex nunc, quoad illas ex praefatis decem dignitatibus ultimodictis quae ad praesens vacant, quo vero ad illas quae minime vacant de praesenti, ex tunc, et cum primum illas et illarum quamlibet quomodolibet ut praefertur vacare contigerit, respective supportentur et supportari debeant) apostolicâ auctoritate motuque pari etiam perpetuò applicamus et appropiamus.

Quo pacto et a quibus solvendae sint pensiones super praebendis

§ 5. Porro, attendentes quod super nonnullarum ex dignitatibus, et nonnullorum ex canonicatibus et praebendis

necnon canonicatibus cum dimidiâ praebendâ seu dimidiis canonicatibus et dimidiis praebendis, respective fructibus, redditibus et proventibus praefatis, quarum et quorum eorundem respective fructuum, reddituum et proventuum respective tertia, dimidia, ac tres ex quatuor respective partes per praesentes a nobis, ut praefertur, dismembratae et applicatae existunt, nonnullae pensiones annuae, et forsitan earum aliquae perpetuò, apostolicâ auctoritate praefatâ reservatae¹ reperiuntur: nos, ut earum oneri consulamus, per easdem praesentes decernimus et statuimus, quod, si pensiones huiusmodi perpetuò reservatae reperiuntur, earum integra solutio eiusdemque solutionis onus ad dignitates et canonicatus et praebendas, necnon canonicatus cum dimidiâ praebendâ, seu dimidios canonicatus et dimidias praebendas huiusmodi, super quorum fructibus, redditibus et proventibus reservatae reperiuntur, pro tempore obtinentes omnino spectet et pertineat; pensionum vero, quae dumtaxat ad alicuius vitam reservatae reperiuntur, solutio, etiam ex tertiâ ac dimidiâ ac tribus ex quatuor fructuum, reddituum et proventuum ut praefertur applicatorum praedictorum respective partibus praefatis, et pro ratâ respective partium huiusmodi, donec pensiones ad alicuius vitam reservatae huiusmodi duraverint, facienda sit.

§ 6. Ne autem, ob dismembrationem et separationem a nobis per praesentes ut praefertur factas huiusmodi, ulla dubitationis oriatur occasio super expensis in expeditione litterarum apostolicarum ab eis qui pro tempore ad patriarchalem Ulyssiponensem occidentalem ac archiepiscopales et episcopales ecclesias praedictas pro tempore promovendi erunt,

hic taxatas impositas.

De modo servando in expeditione litterarum apostolicarum provisionis dignitatum canonicatum, etc., taxatorum.

¹ Male edit. Main. legit *reservata* (N. T.).

necnon ab eis, qui de dignitatibus ac canonicatibus et praebendis, necnon canonicatibus cum dimidiâ praebendâ, seu dimidiis canonicatibus et dimidiis praebendis praedictis, ex quarum et quorum respective fructibus praefatis tertia fructuum, ut praefertur, applicatorum pars a nobis per praesentes, ut praefertur, dismembrata, ac¹ dignitatibus et canonicatibus ac praebendis dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis, etiam ut praefertur, applicata existit, pro tempore providendi erunt, respective faciendis, quod ad patriarchalem Ulyssiponensem occidentalem, ac archiepiscopales et episcopales ecclesias praedictas pro tempore promoti, seu ad illas nominati vel electi, necnon de dignitatibus ac canonicatibus et praebendis, necnon canonicatibus cum dimidiâ praebendâ, seu dimidiis canonicatibus et dimidiis praebendis, ex quorum fructibus, redditibus et proventibus tertia fructuum, reddituum et proventuum, ut praefertur, applicatorum huiusmodi pars a nobis per praesentes ut praefertur dismembrata, et dignitatibus ac canonicatibus et praebendis dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis, etiam ut praefertur, applicata existit, per obitum, aut resignationem, vel liberam dimissionem, sive renunciationem, aut per viam deputationis in coadiutorem perpetuum super illarum et illorum respective regimine et administratione cum futurâ in illis respective successione, aut aliâs quomodolibet provisi, omnes et quascumque expensas necessarias et opportunas in expeditione litterarum apostolicarum desuper expediendarum integraliter, ut prius, et prout ante dismembrationem, separationem, seiunctionem, necnon applicationem et appropriationem a nobis per praesentes ut praefertur

tur factas huiusmodi, facere debuissent, absque ullâ diminutione, et absque eo quod, ob dismembrationem, separationem, seiunctionem, necnon applicationem et appropriationem, a nobis per praesentes, ut praefertur respective factas huiusmodi, aliquid unquam a patriarchali ecclesiâ Ulyssiponensi occidentali, eiusque dignitatibus et canonicis praetendere possint et valeant, facere, aliaque omnia et singula iura Datariae et Cancellariae et Camerae nostrae apostolicis debita; quo vero ad unum et alterum archidiaconatus eiusdem ecclesiae Portugallensis, ex quorum fructibus, redditibus et proventibus dimidia, ac tres ex quatuor eorumdem fructuum respective partes huiusmodi, necnon quoad ultimodictas decem dignitates, quorum omnes et singuli fructus, redditus et proventus praefati, a nobis per praesentes ut praefertur dismembratae, seiunctae et separatae, ac dismembrati, seiuncti et separati, necnon dignitatibus ac canonicatibus et praebendis dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis, etiam ut praefertur, applicatae et appropriati extiterunt, quod de uno et altero praefatae ecclesiae Portugallensis archidiaconatibus huiusmodi, necnon de ultimodictis decem dignitatibus, etiam ut praefertur, pro tempore providendi, in expeditione litterarum apostolicarum desuper conficiendarum, Datariae et Cancellariae ac Camerae praefatarum iura et expensas huiusmodi nonnisi ad² rationem partis fructuum, reddituum et proventuum uni et alteri praefatae ecclesiae Portugallensis archidiaconatibus huiusmodi remanentis, et³ ad rationem portionis ultimodictis decem dignitatibus et earum singulis a capitulo necnon dignitatibus et canonicis dictae patriarchalis

1 Praeposit. *ad nos addimus* (R. T.).

2 Coniunct. *et nos addimus* (R. T.).

1 Pessime edit. Main. legit *a pro ac* (R. T.).

ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis ut praefertur persolvendae, et non aliàs, persolvere respective debeant et teneantur; quodque omnes et quicumque fructus, redditus et proventus praefati, a nobis per praesentes ut praefertur dismembrati, seiuncti et separati, et dignitatibus et canonicatibus et praebendis dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis applicati et appropriati, pro aequali ratâ inter fructus certos sive grossos ad unamquamque et unumquemque ex dictis dignitatibus ac canonicatibus et praebendis eiusdem patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis spectantes annumerentur (ita quod sic annumerati, si super dictis dignitatibus ac canonicatibus et praebendis dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis, illarumque et illorum provisionibus, litteras apostolicas expediri contingat, eiusdem patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis¹ dignitatis post pontificalem maioris videlicet fructus, redditus et proventus certi, qui aliàs, iuxta taxam in praefatis eiusdem Clementis praedecessoris ab Innocentio etiam praedecessore nostro praefato desuper in formâ praefatâ expeditis litteris constitutam, summam mille quingentorum quinquaginta trium, computatis vero distributionis quotidianis, mille septingentorum septuaginta septem non excedebant, deinceps bis mille septingentorum quinquaginta trium, computatis vero distributionis praefatis, bis mille noningentorum septuaginta octo, cuiuslibet vero ex aliis quinque dignitatibus et octodecim canonicatibus et praebendis dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis respective fructus certi, qui, iuxta eandem taxam, etiam summam mille quingentorum viginti octo, computatis vero distributio-

¹ Videtur deesse titulus dignitatis (R. T.).

nibus quotidianis, mille septingentorum octo ducatorum auri parium similiter non excedebant, deinceps bis mille septingentorum viginti octo, computatis vero distributionibus praefatis, bis mille noningentorum octo ducatorum auri similium, eorum respective valorem annum non excedere respective exprimantur et exprimi debeant) eâdem auctoritate decernimus et statuimus. Quo vero ad fructuum, reddituum et proventuum praedictorum dispositionem et usum, tam in divisione reddituum quam in vacationibus dignitatum ac canonicatum et praebendarum dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis faciendam, sive faciendum, idem servetur ordo qui a dicto Clemente praedecessore in praedictis litteris in dictâ formâ expeditis praescriptus fuit.

§ 7. Ac demum patriarchae Ulyssiponensi occidentali pro tempore existenti praefato, ad augendum in dictâ patriarchali ecclesiâ Ulyssiponensi occidentali divini servitii cultum, ut ipse, cum paribus consilio et consensu eiusdem Ioannis regis, novum aliquod beneficium ecclesiasticum, seu aliqua nova beneficia ecclesiastica, seu novum canonicatum et novam praebendam, seu novos canonicatus et novas praebendas, pro clerico seu clericis, aut presbytero seu presbyteris idoneo seu idoneis, novo futuro beneficiato, seu novis futuris in dictâ patriarchali ecclesiâ Ulyssiponensi occidentali beneficiatis, seu novo futuro canonico, aut novis futuris dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis canonicis, a praedicto Ioanne rege, ut infra, respective praesentando seu praesentandis, qui omnibus et singulis privilegiis, indultis, gratiis, exemptionibus, libertatibus, immunitatibus et facultatibus, quibus alii dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis

Patriarchae
datur facultas
novos erigendi
canonicatus seu
beneficia.

canonici et beneficiati respective utuntur et gaudent, respective etiam uti, frui, potiri et gaudere possint et valeant, ex redditibus in eiusdem patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis utilitatem, illiusque ministrorum sustentationem, tam a praedicto Clemente praedecessore per supra relatas litteras in dictâ formâ expeditas, quam per praesentes a nobis, ut praefertur, assignatis et applicatis, ex illis videlicet, quos congruis eiusdem patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis fabricae praefatae manutentioni ac ministrorum eidem patriarchali ecclesiae Ulyssiponensi occidentali inservientium sustentationi praefatis superesse contigerit, perpetuò erigere et instituere;isque sic erectis et institutis, pro illorum respective dote, ac illa et illos pro tempore respective obtinentium congruâ sustentatione, redditus in usum fabricae aliarumque dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis indigentiarum ac ministrorum eidem patriarchali ecclesiae Ulyssiponensi occidentali inservientium sustentationem ut praefertur applicatos et appropriatos praefatos, illos videlicet, qui, ut praefertur, superfuerint, perpetuò applicare et appropriare; necnon beneficio seu beneficiis, aut canonicatui et praebendae, seu canonicatibus et praebendis, ab eo ut praefertur erigendo seu erigendis, in actu eius seu eorum erectionis huiusmodi, onera servitii in dictâ patriarchali ecclesiâ Ulyssiponensi occidentali, vel extra illam, ab eo seu ab eis praestandi, praescribere et imponere; necnon privilegia, indulta, gratias, exemptiones, libertates, immunitates, facultatesque praefata ac praefatas, etiam illa vel illas quae de iure canonicatibus et praebendis, necnon beneficiis dictae patriarchalis ecclesiae

Ulyssiponensis occidentalis competere et inesse dignoscuntur, ei vel eis similiter in actu erectionis praefatae limitare libere et licite possit et valeat, eâdem apostolicâ auctoritate similiter perpetuò concedimus et indulgemus.

§ 8. Insuper eidem Joanni et pro tempore existenti Portugalliae et Algarbiorum regi ius patronatûs et praesentandi ac nominandi ad beneficium seu beneficia, aut ad canonicatum et praebendam, seu canonicatus et praebendas, sic ut praefertur ab eodem patriarcha Ulyssiponensi occidentali pro tempore existente praefato erigendum seu erigenda, vel erigendos et erigendas huiusmodi, personam idoneam seu personas idoneas, tam ex primâ vice a primavâ eius aut eorum respective erectione et institutione praefatis vacans seu vacantia, aut vacantes, quam etiam de cetero, dum illud seu illa, aut illos et illas¹ quibusvis modis et ex quorumcumque personis, etiam nostris, aut Romani Pontificis pro tempore existentis, seu cuiusvis S. R. E. cardinalis etiam nunc viventis familiaribus, continnis commensalibus, seu Romanae Curiae officialibus, aut aliis quomodolibet reservationem et affectionem quaecumque apostolicam inducentibus, seu per liberas, etiam ex causâ, permutationem seu resignationes de illo vel illis in Romanâ Curia praedictâ etiam in manibus nostris seu Romani Pontificis pro tempore existentis, vel extra eam, quomodolibet factam seu factas, aut admissam seu admissas, aut assecutionem alterius beneficii ecclesiastici quavis auctoritate collati, seu illud vel illa aut illos et illas pro tempore obtinentium decessum, vel quamvis aliam dimissionem, amissionem, privationem, religionis ingressum, matrimonii contractum, aut aliis quomodo-

Huiusmodi erigendum beneficiorum ius patronatûs regi eiusque successoribus assignatur.

¹ Vocem et illas nos addimus (R. T.).

cumque et qualitercumque, simul vel successive, etiam apud Sedem Apostolicam praedictam vacare contigerit, in illo vel illis per Ordinarium loci ad praesentationem dicti Ioannis et pro tempore existentis Portugalliae et Algarbiorum regis instituendam seu instituendas, motu simili pariter perpetuo reservamus, concedimus et assignamus.

Illudque ius
vere regium
esse decernitur.

§ 9. Necnon ius patronatus et praesentandi ac nominandi huiusmodi vere regium existere, eidemque Ioanni ac Portugalliae et Algarbiorum regi pro tempore existenti praefato non ex privilegio, sed ex vera primaeva, reali, actuali, plena, integra et omnimoda fundatione et perpetua dotatione competere, et ad Ioannem et pro tempore existentem Portugalliae et Algarbiorum regem praedictum pertinere, illudque vim, effectum, naturam, substantiam, essentiam, qualitatem, validitatem et roboris firmitatem iurispatronatus regii huiusmodi obtinere; ac uti tale sub quacumque derogatione, etiam cum quibusvis praegnantissimis et efficacissimis clausulis et decretis, etiam cum clausula *Quorum tenores, etc.*, in quacumque dispositione, etiam per viam constitutionis, legis, regulae Cancellariae nostrae, aut alias quomodocumque facta, nullatenus comprehendi; nec illi ullo unquam tempore, sub quocumque praetextu, et ex quacumque causa quantumvis urgenti, urgentissima et legitima, per nos seu quoscumque alios Romanos Pontifices successores nostros pro tempore existentes, vel Sedem eandem, aut illius legatos etiam de latere, etiam motu, scientia et potestatis plenitudine similibus, seu cuiusvis instituti contemplatione, per quascumque litteras apostolicas etiam in forma Brevis, quasvis etiam derogatorias derogatorias ac fortiores et insolitas clausulas necnon irritantia et alia decreta quaecumque in

se continentes, derogari aut derogatum censi posse neque debere; et in contrarium factas derogationes, necnon quascumque collationes, provisiones, institutiones, vel alias dispositiones de beneficio seu beneficiis, aut canonicatu et praebenda, seu canonicatibus et praebendis a patriarcha Ulyssiponensi occidentali pro tempore existente praefato sic ut praefertur erigendo seu erigendis, et tunc erecto seu erectis, pro tempore quoquo modo respective vacaturo seu vacaturis, absque praefati Ioannis et pro tempore existentis Portugalliae et Algarbiorum regis consensu seu praesentatione aut nominatione respective factas, processusque desuper habendos, et inde tunc secuta et sequenda quaecumque, nulla et invalida, nulliusque roboris vel momenti fore et esse, ac pro nullis et infectis habenda, nec ius vel coloratum titulum possidendi cuiquam per illa tribui, vel a quocumque adquiri posse, decernimus.

§ 10. Et, attento quod praefatus Clementis praedecessor in dictis ab Innocentio praedecessore nostro praefato desuper in dicta forma expeditis litteris inter alia voluit quod applicatio et appropriatio, aliaque per easdem dicti Clementis praedecessoris in praefata forma expeditas litteras in dictae Ulyssiponensis occidentalis patriarchalis ecclesiae praebendarum et beneficiorum respective dotis augmentum concessa et elargita, locum minime habere valerent, nisi prius aliae eiusdem Clementis praedecessoris litterae, super servitio a dignitatibus ac canonicis et beneficiis dictae patriarchali ecclesiae Ulyssiponensi occidentali praestando tunc emanatae, earum debitae executioni demandarentur, secundodictae vero eiusdem Clementis praedecessoris litterae, ex certis

Quando unicusque canonicus cui applicatio reddituum assignatio facienda sit.

1 Edit. Main. legit *depositiones* (R. T.).

rationalibus et nobis notis causis, executioni huiusmodi demandari hucusque nequiverint: nos, ad avellendam omnem dubietatis et controversiae occasionem, primodictarum Clementis praedecessoris praefati litterarum debitae intimationis illarumque tempore habili executionis et quemlibet alium defectum sanantes, easque ad quoscumque effectus extrinsecos, quatenus opus sit, reintegrantes, et plenarie ac plenissime revalidantes, dignitatibus necnon capitulo et canonicis dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis, ut ipsi primodictarum litterarum effectu omnibusque et singulis gratiis et indultis eis in primodictis eiusdem Clementis praedecessoris in praefatâ formâ expeditis litteris concessis et elargitis gaudeant, utantur et fruantur, perinde ac si praefata dicti Clementis praedecessoris voluntas in primodictis litteris nullatenus apposita fuisset, utque dignitates, capitulum et canonici dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis ex patriarchali Ulyssiponensi occidentali, archiepiscopali et episcopalibus ecclesiis, ac dignitatibus et canonicatibus et praebendis collegiatarum respective ecclesiarum, necnon prioratibus seu abbatibus in primodictis praefati Clementis praedecessoris in praefatâ formâ expeditis litteris designatis, quae et qui vacantes reperiantur, quantum legitime oporteat ad complementum summae ex primodictarum dicti Clementis praedecessoris litterarum tenore in dignitatum, canonicorum et beneficiatorum dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis utilitatem applicatae et appropriatae, a die datae primodictarum dicti Clementis praedecessoris litterarum, videlicet v kalendas octobris anno Incarnationis dominicae MDCCXX, quoad illas et illos quae et qui tunc vacabant, quo vero ad alios

et alias quae et qui deinde vacaverunt, vel deinceps vacaturi vel vacaturae fuerint, ab illorum seu illarum respective vacationis respective die respective computandae,¹ (cum hoc tamen quod omnes et singulos fructus, redditus et proventus praedictos, per dictum Clementem praedecessorem et per nos per praesentes dictae patriarchalis Ulyssiponensis occidentalis dignitatibus et canonicis praedictis, ut praefertur, applicatos et appropriatos, dignitates ac capitulum et canonici dictae patriarchalis Ulyssiponensis occidentalis, loco depositi, donec nova servitii in eadem ecclesia patriarchali Ulyssiponensi occidentali ab eis praestandi forma cum opportunis insuper ordinationibus a nobis aut Romanis Pontificibus successoribus nostris praescribatur, illaque debitae executioni demandetur, et huiusmodi depositi distribuendi ratio insimul statuatur, integros et intactos, deductis dumtaxat necessariis expensis, asservare debeant et asservari faciant) percipere et levare, et ad eorum perceptionem et exactionem huiusmodi plenissime exsequendum omnibus et singulis privilegiis, indultis, facultatibus, immunitatibus, exemptionibus aliisque gratiis, tam in primodictis eiusdem Clementis praedecessoris litteris, quam in eisdem praesentibus quomodolibet respective concessis et impartitis, perinde ac si simul, non autem separatim, concessa et impartita fuissent, eaque tam in primodictis Clementis praedecessoris huiusmodi quam in eisdem praesentibus respective litteris totaliter inserta et specialiter expressa fuissent, neque² ac pariformiter uti, frui et gaudere libere

¹ Desunt verba, *fructus, redditus et proventus ipsis ut praefertur applicatos et appropriatos* (n. t.).

² Pessime ed. M. legit *eaque pro aeque* (n. t.).

et licite possint et valeant, dictâ apostolicâ auctoritate, motuque pari, eorundem tenore praesentium, concedimus et indulgemus.

Dati commissarii pro executione litterarum.

§ 11. Ut autem tam praesentes nostrae, quam primodictae eiusdem Clementis praedecessoris in formâ praedictâ expeditae respective litterae, omniaque et singula in eis respective contenta, quae unum eundemque dictae patriarchalis Ulyssiponensis occidentalis decorem illiusque capituli ac dignitatum et canonicorum favorem respiciunt, debitae parataeque executioni, omnimodaeque demandentur observantiae, motu, scientiâ et potestatis plenitudine similibus, etiam dilectis filiis nostro et Sedis Apostolicae nuncio in Portugalliae et Algarbiorum regnis nunc et pro tempore commoranti, necnon duobus dignioribus et antiquioribus ministris, non tamen regularibus, tribunalis Inquisitionis regnorum praedictorum nunc et pro tempore existentibus, in locum dilectorum pariter filiorum Inquisitoris generalis et auditoris seu iudicis ecclesiastici patronatûs regii, quibus unâ cum nuncio praedicto a dicto Clemente praedecessore primodictarum litterarum in praedictâ formâ expeditarum executio demandata et commissa fuit, per praesentes committimus et mandamus, quatenus ipsi, vel duo, aut unus eorum, per se, vel alium, seu alios, etiam quavis difficultate occurrente a praedicto Clemente praedecessore ac a nobis non praevistâ, quae effectum tam primodictarum eiusdem Clementis praedecessoris in dictâ formâ expeditarum quam nostrarum praesentium respective litterarum minime retardare valeat, easque primodictas praefati Clementis praedecessoris, ac praesentes nostras respective litteras, tam quoad quartarum partium praedi-

ctorum fructuum, reddituum et proventuum naturalium, industrialium, et civilium patriarchalis, archiepiscopali et episcopali, nec non quartarum partium fructuum, reddituum, et proventuum ex dignitatibus ac canonicatibus, et praebendis collegiarum respective ecclesiarum praedictarum, quam quoad tertiarum partium praedictorum fructuum, reddituum et proventuum, naturalium, industrialium et civilium earundem patriarchalis, archiepiscopali et episcopali ecclesiarum, nec non quartarum partium fructuum reddituum et proventuum a dignitatibus, nec non canonicatibus et praebendis, ac canonicatibus cum dimidiâ praebendâ, seu dimidiis canonicatibus et dimidiis praebendis, nec non omnium, et singulorum fructuum, reddituum et proventuum ultimodictarum decem dignitatum respective dismembrationes et applicationes, aliaque omnia et singula a praedicto Clemente praedecessore per primodictas in formâ praefatâ expeditas litteras et a nobis per praesentes respective concessa et expressa, debitae executioni demandari faciant, ac, ubi et quando opus fuerit, ac quoties pro parte et ad instantiam pro tempore existentium capituli, dignitatum et canonicorum dictae patriarchalis Ulyssiponensis occidentalis coniunctim vel divisim fuerint requisiti, solemniter publicantes, eisque in praemissis efficaciae defensionis praesidio assistentes, faciant apostolicâ auctoritate omnia et singula praemissa, nec non in primodictis Clementis praedecessoris praedicti in dictâ formâ expeditis litteris contenta et expressa quaecumque, quatenus eisdem praesentibus non adversentur, suum debitum sortiri effectum, ac ab omnibus et quibuscumque personis firmiter et inviolabiliter observari et adimpleri;

1 Potius lege *easdem* (R. T.).

non permittentes modernos et pro tempore existentes capitulum, dignitates et canonicos dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis a quoquam super omnibus et singulis eis a praedicto Clemente praedecessore per primodictas litteras in dictâ formâ expeditas et a nobis per praesentes respective concessis quomodolibet molestari, perturbari, aut inquietari; contradictores quoslibet et rebelles per sententias, censuras et poenas ecclesiasticas, aliaque opportuna iuris et facti remedia, appellatione pospositâ, compescendo, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii saecularis; et insuper iudicibus praedictis, et eorum cuilibet, quoscumque omnium et singulorum praemissorum necnon a Clemente praedecessore praedicto per primodictas in formâ praefatâ expeditas litteras concessorum effectum impediētes, seu pro tempore existentes capitulum, dignitates et canonicos praedictos super eisdem praemissis necnon ab eodem Clemente praedecessore, ut praefertur, concessis molestantes, perturbantes, eisque quovis modo contradicentes, etiam per edictum publicum, constituto summarie de non tuto accessu, citandi, illisque, ac quibus et quoties inhibendum fuerit, etiam per edictum, quoad patriarcham, archiepiscopos et episcopos sub interdicti ingressus ecclesiae, quo vero ad alios inferiores sub excommunicationis, ac etiam pecuniariis, nec non privationis beneficiorum et officiorum saecularium et ecclesiasticorum eorum arbitrio imponendis, moderandis et applicandis poenis, inhibendi, ac eos, quos censuras et poenas praedictas incurrisse constiterit, eas incurrisse, servatâ formâ Concilii Tridentini, declarandi, ac censuras et poenas ipsas etiam iteratis vicibus aggravandi, reaggravandi et inter-

dicendi, plenam et liberam, motu pari, dictâ auctoritate, concedimus facultatem.

§ 12. Denique, pro faciliiori tam eandem dicti Clementis praedecessoris in praedictâ formâ expeditarum, quam nostrarum praesentium respective litterarum executione et effectu, motu, scientiâ et potestatis plenitudine paribus decernimus et declaramus, quod in eventum, in quem pro tempore existentes patriarcha, archiepiscopi et episcopi, nec non dignitates et canonici, aut quicumque alii dignitatum, canonicorum et beneficiarum dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis, ratione applicationum praefatarum debitores, si¹ solutionem ab eis debito tempore faciendam quacumque de causâ etiam legitimâ protrahere seu in dubium revocare vellent, id nullatenus facere possint, nec super hoc in iudicio vel extra audiri² valeant, nisi prius facto deposito, iuxta stylum regni Portugalliae, illius quantitatis quae ab eis controverti vellet, quodque in exactionibus faciendis ab huiusmodi debitoribus procedi debeat viâ executivâ, ut in debitis regulis, ac summarie et sine strepitu et figurâ iudicii, ac solâ facti veritate inspectâ.

§ 13. Volumus ulterius, et eadem auctoritate decernimus, quod executores praefati pro tempore existentes, simul vel separatim, in causis concernentibus liquidationem, exactionem et solutionem quarum, tertiarum, aliarumque quarum dismembratarum et respective applicatarum praefatarum, semper sint iudices privative, et iurisdictione suâ uti valeant contra quascumque personas, et quavis tam archiepiscopali, episcopali quam aliâ quacumque dignitate

Contravenientes solutionem in hac bullâ praescriptam non audiant in iudicio, nisi prius facto deposito pecuniae.

Commissarii hic nominati perpetui iudices etiam privative declarantur in causis quas agitant super his contentis.

¹ Particula *si* delenda (u. r.).

² Pessime edit. Main. legit *auditi* pro *audiri* (u. r.).

praeditas, etiamsi personae huiusmodi gaudeant privilegiis aut indultis ut in earum causis conveniri nequeant nisi in eorum foro et coram certo eorum iudice, quae privilegia, quoad causas liquidationis, exactionis et solutionis huiusmodi, locum habere non debere declaramus, immo ea ad hunc effectum revocamus, et, quatenus opus sit, privilegiis et indultis huiusmodi, quavis et apostolicâ auctoritate eis forsitan concessis, specialiter et expresse derogamus; ita ut super¹ causis praefatis in nullo alio tribunali, praeterquam coram iudicibus praedictis pro tempore existentibus, litigari possit.

Hanc Hilleras
nullo notari vi-
lio posse sta-
tuitur, sed sem-
per fore vali-
dam.

§ 14. Praesentes quoque semper et perpetuò validas et efficaces esse et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere debere, ac nullo unquam tempore ex quocumque capite vel ex qualibet causâ quantumvis legitimâ et iuridicâ, piâ, privilegiatâ, ac speciali notâ dignâ, etiam ex eo quod dignitates, canonici et beneficiati dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis, ac pro tempore existentes patriarcha Ulyssiponensis occidentalis, archiepiscopi et episcopi Portugalliae et Algarbiorum regnorum, necnon dignitates et canonicatus ac praebendas, nec non canonicatus cum dimidiâ praebendâ, seu dimidios canonicatus et dimidias praebendas praefatos nunc et pro tempore obtinentes, seu quicumque alii, cuiuscumque dignitatis, gradûs, conditionis et praeeminentiae sint, in praemissis et circa ea quomodolibet, et ex quavis causâ, ratione, actione vel occasione, ius vel interesse habentes, aut quomodolibet habere praetendentes, illis non consenserint, aut ad illa vocati et auditii non fuerint, et causae, propter quas eadem praesentes emanaverint,

¹ Edit. Main. legit *semper pro super* (R. T.).

adductae, verificatae et iustificatae non fuerint, de subreptionis et obreptionis aut nullitatis seu invaliditatis vitio, vel intentionis nostrae, aut ius vel interesse habentium consensûs, aut quolibet alio quantumvis magno, substantiali, inexcogitato et inexcogitabili, ac specificam et individuam mentionem ac expressionem requirente defectu, sive etiam ex eo quod in praemissis, eorumque aliquo, solemnitates et quaevis alia servanda et adimplenda servata et adimpleta non fuerint, aut ex quocumque alio capite, a iure vel facto, aut statuto, vel consuetudine aliquâ resultante¹, seu etiam enormis, enormissimae, totalisque laesionis, aut quocumque alio colore, praetextu, ratione, etiam in corpore iuris clausâ, occasione, aliâve causâ, etiam quantumvis iustâ, rationabili, legitimâ, iuridicâ, piâ, privilegiatâ, et tali quae ad effectum validitatis praemissorum necessario exprimenda foret, aut quod de voluntate nostrâ huiusmodi et aliis superius expressis nullibi appareret seu aliâs probari posset, notari, impugnari, invalidari, retractari, in ius vel controversiam revocari, aut ad terminos iuris reduci, vel adversus illas restitutionis in integrum, apositionis oris, reductionis ad viam et terminos iuris, et aliud quodcumque iuris, facti, gratiae vel iustitiae remedium impetrari, seu quomodolibet etiam motu et potestatis plenitudine similibus concessio aut impetrato vel emanato uti seu se iuvare in iudicio vel extra posse; neque easdem praesentes sub quibusvis similibus vel dissimilibus gratiarum revocationibus, suspensionibus, limitationibus, modificationibus, derogationibus, aliisque contrariis dispositionibus, etiam per nos et successores nostros Romanos Pontifices pro tempore existentes et

¹ Pessime ed. M. legit *resultantes* (R. T.).

Sedem Apostolicam praefatam, etiam motu pari, ac ex certâ scientiâ, etiam concistorialiter, et quibusvis de causis, ac sub quibuscumque verborum tenoribus et formis, ac cum quibusvis clausulis et decretis, etiamsi de eisdem praesentibus earumque toto tenore ac datâ specialis mentio fieret, pro tempore faciendis et concedendis, comprehendi; sed semper ab illis excipi, et, quoties illae emanabunt, toties in pristinum, ac eum, in quo antea quomodolibet erant, statum restitutas, repositas et plenarie reintegratas, ac de novo etiam sub quacumque posteriori datâ quodcumque eligendâ concessas esse et fore; sicque et non aliâs in praemissis omnibus et singulis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos etiam causarum palatii apostolici auditores ac eiusdem S. R. E. cardinales, etiam de latere legatos, vice-legatos, dictaeque Sedis nuncios, et alios quoscumque quavis auctoritate, potestate, officio et dignitate fungentes, ac praerogativâ, privilegio, praeeminentia et honore fulgentes, sublata eis et eorum cuilibet quavis aliter iudicandi et interpretandi facultate et auctoritate, in quocumque iudicio et in quacumque instantiâ iudicari et definiri debere; et, si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari, irritum et inane decernimus.

Obstantium
derogatio.

§ 15. Non obstantibus nostris et Cancellariae Apostolicae de praestando consensu, de iure quaesito non tollendo, de exprimendo vero annuo valore, ac de unionibus, aliisque in contrarium praemissorum quomodolibet editis et edendis regulis, ac Lateranensis Concilii novissime celebrati uniones seu applicationes perpetuas nonnisi in certis casibus fieri prohibentis, ac dismembrationes perpetuas super patriarcha-

lium, archiepiscopalium mensarum fructibus, redditibus et proventibus nonnisi ex cessionis aut aliâ rationabili causâ, quae in consistorio nostro iusta et honesta habita fuerit, ac certis aliis modo et formâ in dicto Concilio expressis, reservari similiter prohibentis, necnon, quoad praedictam executorum deputationem, recolendae memoriae Bonifacii Papae VIII similiter praedecessoris nostri, aliisque quibusvis in contrarium praemissorum, etiam in synodalibus, universalibus et provincialibus conciliis editis vel edendis, specialibus vel generalibus, constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ac patriarchalis Ulyssiponensis occidentalis, ac archiepiscopalium et episcopalium ecclesiarum praedictarum, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ respective roboratis, statutis, eorumdemque statutorum reformationibus et novis editionibus, stylis, usibus et consuetudinibus, etiam immemorabilibus, dispositionibus et ultimis voluntatibus in contrarium eorumdem praemissorum, quibuscumque privilegiis etiam ex fundatione competentibus, a nobis seu a quibuscumque Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris respective concessis, nec non indultis et litteris apostolicis, illis earumque superioribus et personis ac locis quibuscumque, etiam speciali, specificâ, expressâ et individuâ mentione dignis, sub quibuscumque tenoribus et formis, ac cum quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, efficacissimis et insolitis clausulis, irritantibusque et aliis decretis, in genere vel in specie, etiam motu pari, ac etiam concistorialiter, aut aliâs quomodolibet, etiam iteratis vicibus, in contrarium praemissorum concessis, approbatis, confirmatis et innovatis, etiamsi

in eis caveatur expresse quod illis per quascumque litteras apostolicas, etiam motu simili deque pari apostolicae potestatis plenitudine pro tempore concessas, quascumque etiam derogatoriarum derogatorias clausulas in se continentes, illis¹ derogari non possit, neque censeatur eis derogatum; quibus omnibus et singulis, etiamsi de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa et individua mentio facienda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, eorum tenores eisdem praesentibus, perinde ac si de verbo ad verbum nihil penitus omissio hic inserti forent, pro plene et sufficienter expressis et insertis habentes, illis aliis in suo robore permanens, ad praemissorum omnium et singulorum validissimum effectum, hac vice dumtaxat, latissime et plenissime ac sufficienter necnon specialiter et expresse motu simili derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

A promovendis ad ecclesias in expeditione litterarum apostolicarum non praetendenda reductio taxae ratione praesentis dismembrationis.

§ 16. Volumus autem quod pro tempore promovendi ad patriarchalem Ulyssiponensem occidentalem ac archiepiscopales et episcopales ecclesias praedictas, in expeditione litterarum apostolicarum super promotione de eorum personis ad easdem patriarchalem Ulyssiponensem occidentalem ac archiepiscopales et episcopales ecclesias apostolicam auctoritate praedictam faciendam, reductionem taxae seu communis propter dismembrationem tertiae partis earum fructuum, reddituum et proventuum praedictorum per nos ut praefertur factam nullo modo praetendere valeant, perinde ac si dismembratio, separatio ac seiunctio, nec non applicatio et appropriatio huiusmodi factae non fuissent.

Servanda quantitas in di-

§ 17. Volumus praeterea quod o-

¹ Vox illis importune repetita (R. T.).

mnium et singulorum fructuum, reddituum et proventuum desuper expressorum praedictorum tertia, dimidia, ac tres ex quatuor respective partes, a nobis per praesentes, ut praefertur, dismembratae et applicatae praedictae, in eorumdem fructuum specie, eorumque eventuali quantitate, etiamsi quantitas huiusmodi maior vel minor fuerit quantitate illa quae praesentibus expressa reperitur, persolvi debeant.

scilicet litteris expressis.

§ 18. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrae resolutionis, approbationis, confirmationis, innovationis, separationis, dismembrationis, seiunctionis, exemptionis, liberationis, applicationis, appropriationis, concessionis, indulti, reservationis, assignationis, sanationis, reintegrationis, revalidationis, commissionis, mandati, declarationis, statuti, decreti, derogationis et voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire; si quis autem hoc attentare praesumpserit, indignationem omnipotentis Dei ac beatorum Petri et Pauli apostolorum eius se noverit incursurum.

Poenas contra temerarios bullae huius.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, anno Incarnationis dominicae MDCCXXXVII, VI idus februarii, pontificatus nostri anno VIII.

Dat. die 8 februarii 1738, pontif. anno VIII.

Loco † Bullae aureae.

CCXIX.

Reservatio iuris patronatus et praesentandi ad omnes dignitates ac canonicatus et praebendas ceteraque beneficia cathedralis Ulyssiponensis orientalis serenissimo principi Ioanni V eiusque successoribus Portugalliae et Algarbiorum regibus.

Clemens episcopus,
servus servorum Dei,
ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Circumspecta Sedis Apostolicae sollicitudo christianorum principum, quos ad exhibenda Catholicae Ecclesiae eidemque Sedi eximia servitia promptos alacresque dignovit, liberalitatis et gratitudinis suae testimoniis fovere nunquam destitit.

Ioannis regis
merita erga Ca-
tholicam Reli-
gionem et Se-
dem Apostoli-
cam.

§ 1. Sane, cum carissimus in Christo filius noster Ioannes hoc nomine V Portugalliae et Algarbiorum rex illustris, praeclaris maiorum suorum vestigiis inhaerens, copioso piorum operariorum coetui ad amplificandum in longinquis regionibus agri dominici messem, verbumque Dei seminandum, indefessâ vigilantia et regia liberalitate temporalia vitae subsidia quotannis subministrare consueverit, divinique cultûs assiduum propagatorem se agere semper studuerit, necnon eiusdem Apostolicae Sedis opportunitatibus, ut primum notas habuit, paratissimo obsequio et auxilio, ut fidelissimum decet principem, non sine gravi suo suorumque subditorum incommodo, praesto esse sategerit:

Concessio de
qua in rubrica.

§ 2. Nos, tantis eiusdem Ioannis regis meritis paternae nostrae considerationis lance pensatis, ut servitiorum praedictorum apostolicaeque liberalitatis vicissim praestata munera mutui inter se monumentum et stimulus amoris existant, eidemque Ioanni regi, eiusque in dictis regnis successoribus, uberio-rem, qua piis et benemerentibus ecclesiasticis personis gratificari queant, facultatem subministrare cupientes, motu proprio, et ex certâ scientiâ merâque liberalitate nostris, deque apostolicae potestatis plenitudine, eidem Ioanni et pro tempore existenti Portugalliae et Algarbiorum regi ius patronatûs et praesentandi ac nominandi ad omnes et

singulas infrascriptas dignitates, omnesque et singulos infrascriptos canonicatus et praebendas, nec non capellaniam infrascriptam, ac dimidios canonicatus et dimidias praebendas, nec non quartanarias ecclesiae Ulyssiponensis orientalis, ad decanatum¹ videlicet, qui post pontificalem maior, ac cuius mille et quinque ducatorum auri de Camerâ et iuliorum undecim monetae romanae; et ad cantoratum, qui secunda, ac cuius septuaginta et quadraginta sex ducatorum auri similium et iuliorum trium monetae praedictae; ad archidiaconatum de Lisbona nuncupatum, qui tertia, ac cuius octingentorum et sexaginta quinque ducatorum auri similium et iuliorum duodecim monetae praedictae cum dimidio alterius iulii similis; et ad thesaurariatum maiorem, qui quarta, ac cuius aliorum sexcentorum et quadraginta quinque ducatorum auri de Camerâ huiusmodi et iuliorum duodecim monetae praedictae cum dimidio alterius iulii similis; et ad archidiaconatum de Santarem respective nuncupatum, qui quinta, ac cuius quingentorum et septuaginta unius ducatorum auri de Camerâ huiusmodi et iuliorum septem monetae praedictae cum dimidio alterius iulii similis; et ad scholastriam, quae sexta, ac cuius quadringentorum et viginti duorum ducatorum auri de Camerâ huiusmodi et iuliorum quinque monetae praedictae; et ad archidiaconatum della terza sedia nuncupatum, qui septima, ac cuius sexcentorum et quinquaginta octo ducatorum auri similium et iuliorum quinque monetae praedictae; et ad archipresbyteratum, qui octava inibi respective dignitates existunt, ac cuius quingentorum et septuaginta novem ducatorum auri similium et iuliorum septem monetae prae-

¹ Edit. Main. legit et Recanatum (R. T.).

dictae cum dimidio alterius iulii; nec non ad unum et unam tertii a decani, quorum sexcentorum et decem et octo ducatorum auri similium et iuliorum quinque monetae praedictae; ac ad alium et aliam quarti ab eiusdem decani, quorum quingentorum et septuaginta novem ducatorum auri similium et iuliorum septem monetae praedictae cum dimidio alterius iulii similis; ac ad alium et aliam quarti a cantoris, quorum quingentorum et octuaginta unius ducatorum auri similium et iuliorum duodecim monetae praedictae cum dimidio alterius iulii similis; ac ad alium et aliam quinti a decani praedicti, quorum septingentorum et viginti quinque ducatorum auri similium et iuliorum duodecim monetae praedictae cum dimidio alterius iulii similis; ac ad alium et aliam sexti a decani praedicti, quorum quingentorum et nonaginta quinque ducatorum auri huiusmodi et iuliorum septem monetae praedictae cum dimidio alterius iulii similis; ac ad alium et aliam sexti ab eiusdem cantoris, quorum sexcentorum viginti duorum ducatorum auri similium et iuliorum quindecim monetae praedictae; ac ad alium et aliam magistralem nuncupatam septimi a cantoris praedicti, qui, dum illi pro tempore vacant, clerico seu presbytero in theologia magistro, vel forsan licentiatu, ab universitate studii generalis Colimbriensis, in concursu desuper habendo, approbando et nominando, et ab eodem Ioanne et pro tempore existente Portugalliae et Algarbiorum rege praesentando, ordinariâ auctoritate conferri consueverunt et debent, et de quibus pro tempore provisi novam eorum provisionem a Sede Apostolicâ impetrare et iura Camerae Apostolicae et aliis propterea debita persolvere tenentur, ac quorum sexcentorum viginti octo

ducatorum auri similium et iuliorum decem monetae praedictae; et ad alium et aliam octavi a praedicti decani, quorum sexcentorum octo ducatorum auri similium; ac ad alium et aliam octavi a dicti cantoris, quorum sexcentorum quadraginta sex ducatorum auri similium et iuliorum quinque monetae praedictae; ac ad alium et aliam doctoralem nuncupatam noni ab eiusdem decani, qui, pro tempore quoque vacantes, clerico seu presbytero in iure canonico seu forsan civili doctori, aut forsan licentiatu, ab universitate praedictâ similiter approbando et nominando, et ab eodem Ioanne et pro tempore existente Portugalliae et Algarbiorum rege praedicto etiam praesentando, ordinariâ auctoritate praedictâ similiter conferri consueverunt et debent, et de quibus pro tempore provisi pariter novam illorum provisionem a dictâ Sede impetrare ac iura eidem Camerae Apostolicae et aliis ut praefertur debita persolvere tenentur, ac quorum sexcentorum octo ducatorum auri similium; ac ad alium et aliam duodecimi ab eiusdem cantoris, quorum septingentorum quatuor ducatorum auri similium et iuliorum decem monetae praedictae; ac ad alium et aliam tertidecimi a decani praedicti, quorum sexcentorum undecim ducatorum auri similium et iuliorum septem monetae praedictae cum dimidio alterius iulii similis; ac ad alium et aliam quattidecimi ab eiusdem decani, quorum quingentorum et nonaginta quatuor ducatorum auri similium et iuliorum quindecim monetae praedictae; ac ad alium et aliam quattidecimi a dicti cantoris, quorum septingentorum viginti trium ducatorum auri similium et iuliorum septem monetae praedictae cum dimidio alterius iulii similis, quorum medietatem, seu cuius dimidiam praebendam

exigendi et percipiendi tribunali Inquisitionis contra haereticam pravitatem, ut pariter accepimus, ius competit; ac ad alium et aliam sextidecimi ab eiusdem decani, quorum sexcentorum trium ducatorum auri similium et iuliorum septem monetae praedictae cum dimidio alterius iulii similis; et ad alium et aliam decimiseptimi pariter ab eiusdem decani, quorum sexcentorum quatuor ducatorum auri similium; ac ad alium et aliam decimioctavi etiam ab eiusdem decani, quorum sexcentorum septem ducatorum auri similium et iuliorum septem monetae praedictae cum dimidio alterius iulii similis; ac ad reliquum et reliquam eiusdem ecclesiae Ulyssiponensis orientalis canonicatus, praebendas, deciminoni respective stalli ab eiusdem decani respective latere, quorum sexcentorum sexdecim ducatorum auri similium; nec non ad capellaniam maiorem de Mafra nuncupatam S. Sebastiani in eadem ecclesia Ulyssiponensi orientali per bonae memoriae Ioannem Martius de Soalhaens, dum viveret, episcopum Ulyssiponensem fundatam, cui canonicatus et praebenda etiam de Mafra nuncupati quinti stalli a praedicti cantoris latere apostolicâ auctoritate perpetuò uniti et annexi reperiuntur, ac quae et qui, sicut accepimus, de iurepatronatûs laicorum nobilium, videlicet pro tempore existentis domûs de Vasconcellos de Soalhaens possessoris et administratoris ex fundatione praedictâ vel donatione seu ex privilegio apostolico, cui non est hactenus in aliquo derogatum, existunt, et in cuius capellaniae fundatione praedictâ caveri dicitur expresse quod ad illam pro tempore vacantem clericus de genere eiusdem Ioannis episcopi praedictae capellaniae fundatoris descendens, si idoneus reperiatur, sin autem, alius cle-

ricus seu presbyter idoneus praesentetur et praesentari possit, ac quorum mille ducentorum et viginti auri parium; nec non ad quatuor dimidios canonicatus et dimidiâs praebendas, ad duos videlicet et duas super nono¹ a praedicti cantoris, quorum insimul quingentorum septuaginta octo ducatorum auri similium et iuliorum quindecim monetae praedictae, ac ad alios duos et duas super decimosexto ab eiusdem cantoris, quorum insimul quingentorum octoginta unius ducatorum auri similium et iuliorum duodecim monetae praedictae cum dimidio alterius iulii similis; nec non ad duodecim quartanarias, ad quatuor videlicet super undecimo a praedicti decani, quarum insimul quingentorum septuaginta octo ducatorum auri similium et iuliorum quindecim monetae praedictae, ac ad alios quatuor super undecimo a praedicti cantoris, quarum insimul quingentorum octoginta ducatorum auri similium et iuliorum decem monetae praedictae, ac ad reliquas quatuor quartanarias huiusmodi super tertiodecimo respective stalli ab eiusdem cantoris respective latere respective fundatas, quarum insimul, nec non dignitatibus ac canonicatibus et praebendis nec non capellaniae dimidiisque canonicatibus et dimidiis praebendis ac quartanariis praedictis forsâ respective annexorum, etiam computatis respective distributionibus quotidianis et aliis incertis, quingentorum octoginta ducatorum auri de Camera huiusmodi respective fructus; redditus et proventus, secundum communem aestimationem, valorem annum, ut similiter accepimus, non excedunt (ac quorum et quarum, non tamen quoad dictum decanatum, qui in praedictâ ecclesia Ulyssiponensi orientali dignitas

¹ Edit. Main. legit *nono* pro *nono* (R. T.).

post pontificalem maior, ut praefertur, existit, nec non quoad septimo et decimo dictos canonicatus et praebendas, ac capellaniam huiusmodi eique annexos canonicatum et praebendam praedictos, dum illi et illae pro tempore vacant, collatio, provisio ac institutio, et omni-modi alia dispositio ad pro tempore existentem archiepiscopum ac dilectos similiter filios capitulum et canonicos praedictae ecclesiae Ulyssiponensis orientalis simultaneae, tempore vero sedis archiepiscopalis Ulyssiponensis orientalis vacationis, ad capitulum et canonicos praedictos, cessantibus reservationibus et affectionibus apostolicis, spectat et pertinet; quod quidem ius patronatus et praesentandi, quod ad praedictae domus de Vasconcellos de Soalhaens possessorem et administratorem pro tempore existentem, praedicto dilecto filio nobili viro de Lima et Vasconcellos vicecomite de Villanova de Cerveira moderno praedictae domus possessore et administratore, modernoque unico praedictae capellae illique annexorum canonicatus et praebendae praedictorum patrono, ut accepimus, annuente, et attentâ infrascriptâ ut infra faciendâ et decernendâ compensatione, ac approbandi nominandique, quod ad universitatem praedictam, et exigendi dimidiam praebendam seu dimidios fructus, redditus et proventus praedictos, quod ad dictum Inquisitionis tribunal, necnon conferendi et providendi respective ius, quod ad modernos et respective pro tempore existentes archiepiscopum, capitulum et canonicos praedictos ex quacumque causâ etiam publicae utilitatis, aut aliâs quomodolibet, respective spectat et pertinet, et de consensu eiusdem Ioannis regis, quoad ea in quibus et ad quae ius aliquod

† Forsan legendum unico (R. T.).

eidem Ioanni regi competere potest, et qualenus opus sit, apostolicâ auctoritate per praesentes perpetuò extinguimus et abrogamus), cum primum dignitates, nec non canonicatus et praebendas ac capellaniam huiusmodi, dimidiosque canonicatus et dimidias praebendas, ac quartanarias praedictas, quibusvis modis et quorumcumque etiam nostrorum et Romani Pontificis pro tempore existentis seu cuiusvis S. R. E. cardinalis familiarium et continuorum commensalium seu Romanae Curiae nostrae officialium aut aliâs quomodolibet reservationem inducentibus personis, seu per liberas etiam ex causâ permutationis resignationes, iurium cessiones de illis in dictâ Curia vel extra eam etiam in nostris et Romani Pontificis pro tempore existentis manibus quomodolibet factas vel admissas, aut assecutionem alterius beneficii ecclesiastici quavis auctoritate collati, seu illas et illos pro tempore obtinentium decessum etiam apud Sedem Apostolicam praedictam decedentium, vel quamvis aliam dimissionem, amissionem, privationem, religionis ingressum, et matrimonii contractum, ad cathedralium ecclesiarum vel monasteriorum, etiam consistorialium, seu quaecumque aliam promotionem, aut quomodolibet et qualitercumque etiam apud Sedem praedictam pro tempore vacare contigerit, etiamsi tempore datae praesentium vacent, personas idoneas ut praefertur (non tamen quoad capellaniam eique annexos canonicatum et praebendam praedictos) iuxta dicti Ioannis episcopi foundationem praedictam debite qualificatas, a pro tempore existente archiepiscopo ecclesiae Ulyssiponensis orientalis praedicto approbandas, ita quod personarum huiusmodi in eis institutio ad

† Vocem ecclesiae nos addimus (R. T.).

Compensatio
comiti de Va-
sconcellos pro
capellania de
Maphra, super
qua etiam ius
patronatus et
praesentandi
dicto regi con-
ceditur.

eundem archiepiscopum pro tempore existentem privative, extincto iure simultaneo, quod cum eodem archiepiscopo capitulum dictae ecclesiae Ulysiponensis orientalis, ut praefertur, exercebat, imposterum spectet et pertineat (cum hoc tamen quod dictus Ioannes rex, ne vicecomes praedictus pro iure patronatus et praesentandi huiusmodi ad praedictam capellaniam cum ei annexis canonicatu et praebenda de Mafra nuncupatis praedictis, redditibusque et iuribus ad eosdem pertinentibus, a nobis per praesentes ut praefertur abrogato et extincto, aliquod detrimentum patiatur, prout ex aequa suae regiae liberalitatis ratione teneri vult, Thomae vicecomiti praedicto, uti dictae domus possessori et administratori, pro eius a nobis ut praefertur abrogato et extincto iure, ad illud ei compensandum, aliud ius patronatus et praesentandi ad alios canonicatus et praebendas aliarum cathedralium et collegiarum ecclesiarum, seu alia beneficia ecclesiastica, quae¹ ad Ioannem, et pro tempore existentes² regem praefatum, vel etiam ad aliqua seu aliquas ex commendis Ordinum militarium in Portugalliae regnis existentium, et quorum Ioannes et pro tempore existens rex praefatus gubernator perpetuusque administrator existit, vel ipsas commendas, seu alios ecclesiasticos aut saeculares annuos redditus, bona, iura vel honores, qui vel quae ad Ioannis et pro tempore existentis regis praefati ius patronatus seu ad illius regiae coronae liberam dispositionem spectant et pertinent, et quibus Thomas vicecomes praefatus, eiusque successores, ad quos dictum ius patronatus pro tempore spectare debuis-

¹ Pessime edit. Main. legit quod pro quae ad (R. T.).

² Aptius lege existentem (R. T.).

set, perfrui et gaudere, vel respective eos et ea in proprios usus convertere libere et licite valeant, iuxta rationabilem et congruam inter dictum Ioannem regem ac Thomam vicecomitem praefatum statuendam compensationem; non retardata tamen in reliquis earumdem praesentium executione, quae illico, nullo desuper habito processu, debitae promptaeque executioni demandari debeant, prout nos ex nunc pro demandatis haberi volumus, non obstantibus ad effectum praemissorum quibusvis contrariis dictorum Ordinum, etiam iuramento aut confirmatione apostolica vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, privilegiis, indultis et constitutionibus etiam apostolicis ad eosdem Ordines spectantibus, cedat, assignet seu conferat; et pro eo quod dictus Ioannes rex Ordinum praedictorum gubernator et perpetuus administrator ut praefertur existit, ad hoc ut ipse aliquam ex dictorum Ordinum commendis seu aliqua bona eidem Thomae vicecomiti ut praefertur cedere, assignare seu conferre valeat, eundem Ioannem regem et gubernatorem perpetuumque administratorem a quocumque de non alienandis tam eiusdem regiae coronae quam Ordinum praedictorum respective bonis aut aliis quomodolibet ab eo respective praestito iuramento, voto seu obligatione quacumque, ad praemissorum effectum, apostolica auctoritate praefata absolvimus et liberamus, ac ex nunc absolutum et liberatum esse volumus et declaramus; et quoad approbandi nominandique ad canonicatum et magistralem ac canonicatum et doctoralem respective nuncupatas praebendas, quod universitati praefatae, necnon percipiendi et exigendi dimidiam praebendam seu dimidios fructus, redditus et proventus praefatos respective ius, quod tribunali praefato ante

eiusdem iuris abrogationem et extinctionem a nobis per praesentes ut praefertur factas respective¹, iuris huiusmodi compensatio, prout aequum rationique consonum fuerit, providaque ratio postulaverit, in posterum statuetur), apostolicâ auctoritate, earumdem tenore praesentium, perpetuò reservamus², concedimus et assignamus.

Ina patronatûs praedictum vere regium decernitur.

§ 3. Necnon ius patronatûs et praesentandi ac nominandi huiusmodi vere regium existere, ac eidem Ioanni et pro tempore existenti Portugalliae et Algarbiorum regi praedicto, non ex privilegio apostolico, sed ex verâ primævâ, reali, actuali, plenâ, integrâ et omnimodâ fundatione ac perpetuâ dotatione competere, et ad Ioannem et pro tempore existentem Portugalliae et Algarbiorum regem praedictum pertinere, illudque vim, effectum, naturam, qualitatem et validitatem iuris³ patronatûs regii huiusmodi obtinere, ac uti tale sub quacumque derogatione iurispatronatûs ex privilegio apostolico vel consuetudine aut praescriptione acquisiti, etiam cum quibusvis praegnantissimis et efficacissimis verbis, clausulis, ac etiam irritantibus et aliis fortioribus decretis, etiam cum clausulâ, *Quorum tenores*, etc., in quacumque dispositione, etiam per viam constitutionis legis, nostraeque et Cancellariae Apostolicae regulae, etiam per nos et successores nostros Romanos Pontifices, etiam motu, scientiâ et potestatis plenitudine similibus, etiam concistorialiter, pro tempore quomodocumque factâ, concessâ et emanatâ, nullatenus comprehendî, nec illi⁴ ullo unquam tempore, etiam ratione cuiusvis litis pendenciae vel vacationis apud Sedem

praefatam, etiam ex causâ permutationis, vel devolutionis, seu alio quocumque praetextu, ac ex quacumque causâ quantumvis urgenti et legitimâ, per nos seu Romanos Pontifices successores nostros pro tempore existentes, vel Sedem praedictam, aut illius etiam de latere legatos, etiam motu, scientiâ et potestatis plenitudine similibus, seu cuiusvis intuitu et contemplatione, per quascumque litteras apostolicas, et quascumque etiam derogatoriarum derogatorias, ac fortiores et insolitas clausulas, necnon irritantia et alia decreta quaecumque in se continentes, derogari posse, neque debere, aut derogatum censi; necnon omnes et quascumque collationes, provisiones, commendas, aliasque dispositiones de omnibus et singulis dignitatibus ac canonicatibus et praebendis, necnon capellaniâ praefatâ, ac dimidiis canonicatibus dimidiisque praebendis ac quartanariis praefatae ecclesiae Ulyssiponensis orientalis contra earumdem praesentium tenorem, et aliâs quam ad praesentationem Ioannis et pro tempore existentis Portugalliae et Algarbiorum regis praefati, seu de illius consensu, et in eis institutiones ad praesentationem huiusmodi, aliâs quam per pro tempore existentem archiepiscopum Ulyssiponensem orientalem, ad quem ut praefertur ius instituendi privative pertinere et spectare debeat, etiam apud Sedem praefatam pro tempore vacantibus, quibusvis personis sub quibuscumque verborum expressionibus pro tempore factas seu faciendas, processusque desuper habitos seu habendos, ac inde pro tempore sequenda quaecumque, nulla et invalida, nulliusque roboris vel momenti fore et esse, ac pro nullis et infectis haberi et censi, nec ius aut coloratum titulum possidendi cuiquam tribuere, nec per illa acquiri

¹ Deest verbum ex. g. *competebat* (R. T.).

² Absolvitur syntaxis incepta pag. 359 a (R. T.).

³ Edit. Main. legit *ius* pro *iuris* (R. T.).

⁴ Pessime edit. Main. legit *illo* pro *illi* (R. T.).

posse; necnon veteris iuris respective conferendi, instituendi, approbandi, nominandi, ac praesentandi et percipiendi ac exigendi abrogationem et extinctionem a nobis ut praefertur factas, validas et efficaces fore et esse, suosque plenarios et integros effectus sortiri, nec eas sub quibuscumque contrariis aut similibus vel dissimilibus, specialibus aut generalibus reservationibus, cum quibusvis restrictivis, ac etiam earumdem derogationum derogatoriis clausulis irritantibus, etiam vim contractus inducentibus, aut fortioribus et arctioribus decretis, aut aliis quomodolibet pro tempore concedendis, et cum praefata clausula *Quorum tenores, etc.*, editis vel edendis, nullatenus comprehendis esse et fore, minusque comprehendis posse aut debere, sed semper ab illis exceptas et exclusas esse et censi, ac plenum semper validissimumque sui effectum sortiri debere;

*Præsentium
firmulas.*

§ 4. Nec non omnia et singula praemissa, ac easdem nostras praesentes, nullo unquam tempore de subreptionis vel obreptionis aut nullitatis vitio, seu intentionis nostrae vel alio quovis defectu, etiam ex eo quod causae, propter quas eadem praemissa facta fuerunt, coram Ordinario loci, etiam tamquam Sedis Apostolicae delegato, examinatae, verificatae et ab eo approbatae, necnon archiepiscopus ac capitulum et canonici praefatae ecclesiae Ulyssiponensis orientalis, dictasque dignitates, ac canonicatus et praebendas ac quartanarias nunc respective obtinentes, necnon capellaniam praefatam, dimidiosque canonicatus et dimidias praebendas, ac quartanarias nunc respective obtinentes, nec non alii quicumque in praemissis quodcumque ius vel interesse habentes vel habere praetendentes, ad id vocati et auditi non fuerint, nec eorum desuper

expressum respective consensum praestiterint, seu ex quavis alia causa, et quocumque alio praetextu, quaesito colore vel ingenio, notari, impugnari, invalidari, retractari, ad viam et terminos iuris reduci, seu in ius vel controversiam revocari, aut adversus illa et illas quodcumque iuris vel facti aut gratiae remedium impetrari posse, nec sub quibusvis similium vel dissimilium gratiarum revocationibus, suspensionibus, limitationibus, derogationibus, aut aliis contrariis dispositionibus, per nos et quoscumque Romanos Pontifices successores nostros, ac etiam Sedem praedictam, pro tempore faciendis, comprehendis posse vel debere, sed semper ab illis excipi, et, quoties illae emanabunt, toties in pristinum et cum in quo antea quomodolibet erant statum restituta, reposita et plenarie reintegrata, ac de novo etiam sub quacumque posteriori data per dictum Ioannem et pro tempore existentem Portugalliae et Algarbiorum regem quodcumque eligenda concessa, valida et efficacia, ac concessas, validas et efficaces fore et esse, plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, sicque nostrae mentis et intentionis fuisse et esse, et ita in omnibus et singulis praemissis ab omnibus censi, et ita per quoscumque iudices ordinarios vel delegatos, quavis auctoritate fungentes, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac S. R. E. cardinales, etiam de latere legatos, vice-legatos, dictaeque Sedis nuntios, sublatam eis et eorum cuilibet quavis aliter iudicandi, definiendi et interpretandi facultate et auctoritate, iudicari, definiri et interpretari debere, et, quidquid secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari, irritum et inane, decernimus, statuimus et mandamus.

Commissarii
deputati pro
executione hu-
iusce conces-
sionis.

§ 5. Quocirca dilectis filiis nostro et dictae Sedis nuncio in praefatis¹ regnis nunc et pro tempore commoranti, nec non duobus dignioribus et antiquioribus ministris, non tamen regularibus, tribunalis Inquisitionis regnorum huiusmodi, nunc et pro tempore existentibus, motu simili per apostolica scripta committimus et mandamus, quatenus ipsi, vel duo, aut unus eorum, per se, vel alium, seu alios, praesentes nostras litteras et in eis contenta quaecumque, ubi et quando opus fuerit, et quoties pro parte dicti Ioannis et pro tempore existentis Portugalliae et Algarbiorum regis seu illius ministrorum fuerint requisiti, solemniter publicantes, eisque in praemissis efficacis defensionis auxilio assistentes, faciant auctoritate nostrâ easdem praesentes, et in eis contenta huiusmodi, ab omnibus, ad quos spectat et pro tempore spectabit, firmiter observari; contradictores quoslibet et rebelles per sententias, censuras et poenas ecclesiasticas, aliaque opportuna iuris et facti remedia, appellatione postpositâ, compescendo; ac, legitimis super hoc habendis servatis processibus, sententias, censuras et poenas ipsas etiam iteratis vicibus aggravando; invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii saecularis.

Contrariis cum
derogatur.

§ 6. Non obstantibus nostris et Cancellariae Apostolicae regulis de iure quaesito non tollendo, ac, quatenus opus sit, de exprimendo vero annuo valore, de non concedendis gratiis ad instar, necnon praedictâ dictae capellaniae, aliisque omnium et singulorum dignitatum, canonicatum et praebendarum, dimidiorumque canonicatum et dimidiarum praebendarum ac quartanarum huiusmodi respective foundationibus,

¹ Pessime edit Main. legit *praesentis* pro *praefatis* (R. T.).

et, quoad praedictam iudicum executionem, felicitis recordationis Bonifacii Papae VIII similiter praedecessoris nostri de unâ, et in concilio generali editâ de duabus dietis, dummodo ultra duas¹ dietas quis vigore praesentium ad iudicium non trahatur, aliisque apostolicis, etiam in generalibus, provincialibus et synodalibus conciliis editis, specialibus vel generalibus, constitutionibus et ordinationibus, dictaeque ecclesiae Ulyssiponensis orientalis, et Ordinum militarium praedictorum, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis aliâ firmitate roboratis, statutis aut consuetudinibus, etiam immemorabilibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis, archiepiscopo necnon capitulo et canonicis dictae ecclesiae Ulyssiponensis orientalis, aut Ordinibus praedictis, aut eorum vel aliis superioribus, ac quibusvis aliis personis, sub quibuscumque tenoribus et formis, etiam motu pari et consistorialiter, etiam in dignitatum ac canonicatum et praebendarum necnon praefatâ eiusdem capellaniae ac dimidiorum canonicatum et dimidiarum praebendarum ac quartanarum huiusmodi foundationibus, necnon universitati, vicecomiti et tribunali praefatis² respective quomodolibet concessis, approbatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, aliisque quae eisdem praesentibus quomodolibet obesse possent, etiamsi de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa et individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quaevis alia expressio habenda aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores huiusmodi, etiam veriores, totosque et integros, etiam praesentibus

¹ Forsan legendum *tres* pro *duas* (R. T.).

² Ed. M. h. *praesentibus* pro *praefatis* (R. T.).

pro expressis, insertis ac de verbo ad verbum registratis habentes, illis aliàs in suo robore permansuris, ad effectum earundem praesentium omniumque et singulorum praedictorum validitatem¹, hac vice dumtaxat, motu, scientiâ et potestatis plenitudine paribus, specialiter et expresse harum serie derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Poenae contra
infraactores hu-
ius bullae.

§ 7. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrae extinctionis, abrogationis, absolutionis, liberationis, declarationis, reservationis, concessionis, assignationis, decreti, statuti, commissionis, mandati, derogationis et voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire; si quis autem hoc attentare praesumpserit, indignationem omnipotentis Dei ac beatorum Petri et Pauli apostolorum eius se noverit incursurum.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, anno Incarnationis dominicae MDCCXXXVII, VIII idus martii, pontificatus nostri anno VIII.

Dat. die 8 martii 1738, pontif. anno VIII.

A. card. pro-datarius.

Visa de Curia:

N. ANTONELLUS.

F. PICCIONIUS.

CCXX.

Congregationi et collegio sacrae Familiae Iesu Christi Neapolitanae, eorumque ecclesiae, presbyteris saecularibus, alumni et convictoribus et personis, nunc et pro tempore existentibus, communicantur privilegia, praerogativae, facultates, favores, gratiae, indulgentiae, exemptiones et indulta Congregationibus Oratorii S. Philippi

¹ Male edit. Main. legit *validatis pro validitatem* (B. T.).

Nerii et Piorum Operariorum concessa, ac omnes et singulae indulgentiae ecclesiae S. Mariae ad Martyres vulgo della Rotonda.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Inter praecipuas ministerii nostri partes, in supremâ Catholicæ Ecclesiae administratione, tenuitati nostrae per ineffabilem divinae sapientiae atque bonitatis abundantiam demandatâ, accurate obeundas, illam non ultimam reputamus, ut luculentiora pontificiae benignitatis auctoritatisque privilegia et gratias paterno libentique animo iis dilectis filiis conferamus, qui, sicut novellae olivarum plantationes in iuventute suâ, uberes bonorum operum fructus in Catholicâ Ecclesiâ alacrius proferre satagentes, uberiora apostolicae beneficentiae indulgentiaeque nostrae munera, praerogativas ac favores sibi promereri videntur.

Prooemium.

§ 1. Exponi siquidem nobis nuper fecit dilectus filius Matthaeus Ripa, fundator et modernus superior ac rector Congregationis et Collegii sub invocatione Sacrae Familiae Iesu Christi extra muros civitatis Neapolitanae erectorum, quorum institutum per alias nostras in simili formâ Brevis litteras desuper die VII aprilis MDCCXXXII expeditas approbavimus, ac subinde regulas quoque confirmavimus, quod, cum Congregatio et collegium huiusmodi ad instar Congregationum presbyterorum saecularium Oratorii sancti Philippi Nerii ac Piorum Operariorum nuncupatorum dictae civitatis Neapolitanae fundata et instituta sint; ipse vero exponens, ac presbyteri, alumni, convictores, et aliae personae Congregationis et collegii praefatorum, omnibus et singulis privilegiis, praerogativis, favoribus, gratiis, indulgentiis, exem-

Matthaeus Ripa, dictae Congregationis et Collegii fundator, Papae supplicat.

ptionibus et indultis a Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris tam presbyteris saecularibus Oratorii sancti Philippi Nerii et Piorum Orariorum praedictis, quam ecclesiis, domibus et congregationibus eorundem quocumque tempore quomodolibet hactenus concessis et in futurum concedendis, frui et gaudere posse plurimum desiderant: nobis propterea tam suo quam praefatorum presbyterorum, alumnorum, convictorum et aliarum personarum huiusmodi nomine humiliter supplicari fecit ut sibi in praemissis opportune providere et¹ ut infra indulgere de benignitate apostolicâ dignaremur.

Clemens facultatem et indulgentiarum, de quibus in rubrica, applicationem concessit.

§ 2. Nos igitur, specialem ipsis exponenti et presbyteris, alumnis, convictoribus, aliisque personis, ut praemittitur, gratiam facere volentes, et eorum singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censentes, huiusmodi supplicationibus inclinati, et attento quod dilectus filius noster Ioseph S. R. E. cardinalis Spinelli nuncupatus, archiepiscopalis ecclesiae Neapolitanae ex concessione et dispensatione apostolicâ praesul, ad nos retulerit, praefatos presbyteros, alumnos et convictores non solum in iis ad divini cultus incrementum et animarum salutem in civitate et dioecesi Neapolitanâ spectantibus regulas et instituta tam presbyterorum Oratorii sancti Filippi Nerii quam Piorum Operariorum praedictorum servare, verum etiam maiora ipsis onera imposita esse, iisdem Congregationi et collegio Sacrae

¹ Coniunct. et nos addimus (R. T.).

Familiae Iesu Christi, illiusque ecclesiae ac presbyteris saecularibus, alumnis, convictoribus et personis nunc et pro tempore existentibus, ut omnibus et singulis privilegiis, praerogativis, facultatibus, gratiis et indulgentiis ac exemptionibus et indultis memoratarum Congregationum, earumque ecclesiis, presbyteris et personis per Romanos Pontifices praedecessores nostros quomodolibet concessis et in futurum concedendis, etiam specificâ et individuâ mentione et expressione dignis, et quibus eadem Congregationes earumque ecclesiarum presbyteri et personae ex praedecessorum nostrorum concessione de praesenti utuntur, fruuntur, potiuntur et gaudent, ac¹ uti, frui, potiri et gaudere libere et licite possint et valeant, in omnibus et per omnia, perinde ac si privilegia, praerogativae, facultates, favores, gratiae, indulgentiae, exemptiones et indulta huiusmodi ipsis Congregationi et collegio Sacrae Familiae Iesu Christi, eorumque ecclesiae, presbyteris, alumnis, convictoribus et personis specialiter concessa reperirentur, sine praeiudicio tamen gratiarum, indultorum et privilegiorum iisdem a nobis alias concessorum, apostolicâ auctoritate, tenore praesentium, concedimus et indulgemus.

§ 3. Quoad indulgentias vero ecclesiae et in eâ sitis altaribus Congregationis et collegii Familiae Iesu Christi praefatorum, eas omnes et singulas, quae ecclesiae eiusque respective altaribus S. Mariae ad Martyres *della Rotonda* vulgo dictae de Urbe per Romanos Pontifices praedecessores nostros nosque ipsos hactenus concessae repeririuntur, aut quas in futurum concedendas esse contigerit, cum uno dumtaxat altari privilegiato quotidiano perpetuo, etiam per

Concedit quodque indulgentias iam concessas ecclesiae *della Rotonda*.

¹ Coniunctio ac delenda (R. T.).

modum aggregationis et sine quacumque dependentiâ, concedimus et elargimur.

Clauſulae irritantes.

§ 4. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Obſtantium derogatio.

§ 5. Non obstantibus nostrae et Cancellariae Apostolicae regulâ de non concedendis indulgentiis ad instar, aliisque constitutionibus et ordinationibus apostolicis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis et insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xiv martii MDCCXXXVIII, pontificatus nostri anno VIII.

Dat. die 14 martii 1738, pontif. anno VIII.

CCXXI.

*Extensio indulti, ab Urbano VIII pro
alumnis et convictoribus collegii Propagandae Fidei concessi, ad alumnos
et convictores pro Sinensibus et Indis
collegii Sacrae Familiae Iesu Christi
in civitate Neapolitanâ erecti.*

**Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.**

Exordium.

Pro supremâ Catholicae Ecclesiae procuratione, quam pastorum princeps Iesus Christus altissimo divinae providentiae suae consilio nobis plane immerentibus credere dignatus est, tamquam fideles prudentesque dispensatores praecipua apostolicae benignitatis auctoritatisque argumenta iis potissimum ingenti cum pontificii cordis laetitiâ exhibere satagimus, qui in diebus nostris veluti cooperatores et coadiutores in ministerii nostri opus a nobis adsciti et constituti in excolendâ vineâ Dei sabbaot per universum terrarum orbem plantatâ alacrius adlaborare pergunt atque contendunt.

*Capita concessionum ab
Urbano VIII a-
lumnis collegii
Urbani sacra-
rum.*

§ 1. Exponi siquidem nobis nuper fecit dilectus filius Matthaeus Ripa, fundator et modernus superior ac rector Congregationis et collegii sub invocatione Sacrae Familiae Iesu Christi extra muros civitatis Neapolitanae erectorum, quorum institutum per alias nostras in simili formâ Brevis litteras desuper die vii aprilis MDCCXXXII expeditas approbavimus, ac subinde regulas quoque confirmavimus, quod aliâs felicitis recordatio Urbanus VIII praedecessor noster dilectis filiis tunc et pro tempore existentibus alumnis et convictoribus Congregationis de Propagandâ Fide, aliisque qui quocumque ad instantiam eiusdem Congregationis Romae vel alibi educarentur, ut ipsi, absque litteris dimissorialibus suorum Ordinariorum, et etiam sine titulo beneficii ecclesiastici aut patrimonii, sed ad titulum tantum missionis, a quocumque quem maluerint catholico antistite gratiam et communionem Sedis Apostolicae habente et in propriâ dioecesi residente, vel in alienâ de Dioecesani loci licentiâ pontificalia exercente, ad quatuor minores

etiam unico festivo vel feriato, necnon etiam ad sacros et presbyteratus ordines tribus dominicis, seu aliis festivis, et continuis vel interpolatis diebus, etiam extra tempora ad id a iure statuta, et non servatis a sacro Concilio Tridentino designatis, annique curriculo non expectato, etiamsi, antequam de uno ad alium ordinem promoverentur, in primo quoque suscepto ordine se minime exercuissent, aut alicuius ecclesiae servitio adscripti non essent, dummodo tamen forent aetatis legitimae, ac aliàs idonei, et per triennium continuum essent eiusdem Congregationis alumni seu convictores, aut ad illius instantiam educati, ac denique haberent litteras testimoniales rectorum aut eorum apud quos educarentur et instruerentur de eorum vitâ et moribus ac in scientiis profectibus, nec eis aliquod obstaret impedimentum, promoveri, et promoti in illis etiam in altaris ministerio ministrare libere et licite possent et valerent, auctoritate apostolicâ, sub certis modo et formâ tunc expressis, concessit et indulgit, et aliàs prout in praedictis Urbani praedecessoris litteris desuper in simili formâ Brevis die xviii maii mdcxxxvii expeditis plenius continetur.

§ 2. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat, dictus Matthaeus privilegia seu indulta praedicta ad alumnos et convictores collegii Sacrae Familiae Iesu Christi huiusmodi per nos extendi atque iisdem concedi summopere desideret: nos, piis eiusdem Matthaei votis hac in re quantum cum Domino possumus favorabiliter annuere volentes, eumque et alumnos ac convictores secundodicti collegii huiusmodi a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ la-

tis, si quibus quomodolibet innodati existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutos fore censes, supplicationibus eius nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, de venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium negotiis Propagandae Fidei praepositorum consilio, privilegia, in praedictis Urbani praedecessoris litteris contenta, ad modernos et pro tempore existentes collegiales collegii Sacrae Familiae Iesu Christi civitatis Neapolitanae Sinenses, et ad eos qui ex regionibus Indiarum advenerint, dumtaxat, extendimus, atque iisdem concedimus; nempe, ut ipsi absque litteris dimissorialibus suorum Ordinariorum, et etiam sine titulo beneficii ecclesiastici, sed ad titulum tantum missionis, a quocumque quem maluerint catholico antistite ad quatuor minores etiam unico festivo vel feriato, necnon etiam ad sacros et presbyteratus ordines tribus dominicis, seu aliis festivis et continuis vel interpolatis diebus, etiam extra tempora ad id a iure statuta, et non servatis interstitiis a sacro Concilio Tridentino designatis, annique curriculo non expectato, etiamsi, antequam de uno ad alium ordinem promoveantur, in primo quoque suscepto ordine se minime exercuerint, aut alicuius ecclesiae servitio adscripti non sint, dummodo tamen sint aetatis legitimae, nec eis aliud canonicum obstat impedimentum, et habeant litteras testimoniales rectorum aut eorum apud quos educantur et instruuntur, promoveri, et promoti in illis etiam in altaris ministerio ministrare libere possint et valeant, ita tamen, ut, quotiescumque contingat aliquos ex iisdem Sinensibus et Indis ad ordines promoveri debere, antequam e collegio dimittantur, dictus Matthaeus modernus et pro tempore

Illae novae collegii extra Neapolim fundato conceduntur.

existens superior, si sedes archiepiscopalis Neapolitana sit plena, teneatur eos dirigere cum attestationibus de illorum baptismo, vita, moribus et in scientiis profectu ad dilectum filium nostrum Iosephum S. R. E. cardinalem Spinelli nuncupatum archiepiscopalis ecclesiae Neapolitanae ex concessione et dispensatione apostolica praesulem, seu pro tempore illius existentem archiepiscopum, quatenus vero idem cardinalis et praesul seu archiepiscopus praedictus quacumque ex causâ illorum ordinationem peragere non valeat, liberum sit memorato Matthaeo, et pro tempore esistenti superiori collegii praedicti, illos ad quemcumque catholicum antistitem gratiam et communionem supradictae Sedis habentem pro ordinibus suscipiendis dirigere, servatâ in reliquis praedictarum Urbani praedecessoris litterarum formâ et dispositione, auctoritate praedictâ, tenore praesentium, concedimus et indulgemus.

Obstantium
derogatio.

§ 3. Non obstantibus quibusvis apostolicis, ac in universalibus provincialibusque et synodalibus conciliis editis, generalibus vel specialibus, constitutionibus et ordinationibus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xiv martii MDCCXXXVIII, pontificatus nostri anno VIII.

Dat. die 14 martii 1738, pontif. anno VIII.

CCXXII.

*Impositio datii scutorum decem pro quolibet centenario super mercibus se-
ricis, quae ex alienis intra Statum
Ecclesiasticum adsportari contingat.*

Reverendissimo cardinali camerlengo vescovo di Sabina.

Vestigialia
nonnulla
consilio

§ 1. Dopo che la Congregazione particolare da noi deputata per il sollievo

delle arti e maestranze del nostro Stato Ecclesiastico, secondo le nostre premure tutte intente al sollievo del medesimo Stato, ed a stabilire ed accrescere in esso le manifatture, specialmente di lana e seta, da qualche tempo diminuite, a cagione della soverchia introduzione di pannine, drappi ed altre merci provenienti da paesi esteri, venne nell'anno 1735 in determinazione di doversi imporre una gabella di scudi venti per cento sopra diversi panni forastieri, non eccedenti il valore di scudi cinque la canna, ed un'altra di scudi dodici per cento sopra altre merci parimente forastiere, sopra ogni specie de' panni più nobili, e sopra diverse robe di seta, telerie, ed altre merci fine parimente lavorate fuori del medesimo Stato, che in pregiudizio della nostra Camera e sue dogane generali si vendevano ne' fondachi aperti in alcune città, terre e luoghi posti entro il distretto di quaranta miglia intorno a Roma, comprese ancora le città di Viterbo, Civitavecchia, e Rieti, quali risoluzioni furono poscia approvate con nostri speciali chirografi segnati li 9 maggio di detto anno, ed eseguite per mezzo degli editti pubblicati da voi, e rispettivamente da monsignor nostro tesoriere generale il di 31 del suddetto mese, con riservarsi insieme di prendere ulteriori provvedimenti secondo portasse il bisogno, anche rispetto ad ogni altra manifattura;

§ 2. Avendoci ultimamente riferito monsignor segretario di detta Congregazione, che la medesima, nuovamente adunatasi li 24 agosto e 17 settembre dell'anno 1736, giudicasse spediente per il fine suddetto di procedere all'imposizione di una nuova gabella di scudi dieci per cento sopra tutti e singoli drappi, stoffe, calzette, fazzoletti,

gregationis par-
ticularis super
imposita super
mercibus exteras.

Eadem con-
gregatio con-
stituit novum da-
tium impositi
scutorum decem
pro centum su-
per mercibus se-
ricis eiusdem
generis.

veli, e tutte altre manifatture di seta liscie fabbricate fuori del nostro Stato, di qualunque prezzo e valore elle siano, come ancora sopra li drappi, stoffe di seta fiorate, fabbricate parimente fuori di detto Stato, purché non eccedano il valore di scudi cinque la canna, con doverse ne regolare l'esigenza e l'applicazione nel modo che segue, e con altre dichiarazioni come appresso; quale risoluzione restasse poi non solo confermata dalla medesima Congregazione tenuta li 14 maggio dell'anno prossimo passato, e solamente modificata rispetto alle due Legazioni di Bologna e Ferrara, quali piacque per ora di eccettuare, ma inoltre ampliata¹ in una particolare adunanza avuta li 6 del corrente mese dalla maggior parte dei reverendissimi cardinali di detta Congregazione coll'intervento ancora di monsignor nostro tesoriere generale e di monsignor commissario generale della nostra Camera, con essere stati di unanime sentimento di potersi detta gabella del dieci per cento stendere alli drappi e stoffe di seta fiorate lavorate fuori di Stato del valore di scudi sei la canna; e conoscendo noi il vantaggio e profitto che può recare a' nostri amatissimi sudditi una tale ordinazione, venendo per mezzo di essa ad aumentarsi lo spaccio e consumo di simili drappi ed altre sete lavorate nel medesimo Stato, ed a vie più animarsi i nostri lavorieri all'accrescimento e miglioramento delle loro fabbriche:

§ 3. Perciò, non meno a riflesso delle relazioni da ogni parte avute di andarsi giornalmente perfezionando in esso nostro Stato l'arte e maestranze della seta coll'impiego di quantità considerabile di famiglie in somigliante industria, che delle premurose e replicate istanze

¹ Edit. Main. legit *ampliare* (R. T.).

che abbiamo inteso esser state fatte da tutti i fabbricatori di sete del medesimo stato, siamo di buona voglia condescesi ad approvarla e confermarla come segue.

§ 4. Quindi è che col presente nostro Chirografo, in cui abbiamo per espresso e di parola in parola inserito il tenore delle suddette risoluzioni, degli accennati nostri chirografi delli 9 maggio 1735, e degli editti in seguito di essi come sopra pubblicati, ed ogni altra cosa quanto si voglia necessaria ad esprimersi, benché degna di speciale ed individua menzione, di nostro moto proprio, certa scienza e pienezza della nostra suprema autorità, approviamo e confermiamo colle seguenti dichiarazioni le soprariferite risoluzioni della suddetta Congregazione particolare da noi deputata, e per l'effetto ed esecuzione di esse vogliamo ed ordiniamo che sia lecito ad ogni persona di poter liberamente continuare ad introdurre in qualsivoglia città e luogo dello Stato Ecclesiastico, tanto per uso proprio che per cagione di negozio, tutti e singoli drappi, stoffe, calzette e veli, ed altre qualsivoglia manifatture di sete liscie fabbricate fuori, di qualunque valore e prezzo elle siano, come ancora li drappi e stoffe fiorate di seta fabbricate fuori del medesimo Stato, purché il loro prezzo e valore non ecceda scudi sei la canna, con restare però soggette le suddette merci al pagamento di una gabella di scudi dieci per cento, quale noi col presente nostro Chirografo imponiamo e costituiamo sopra dette merci, ed a tal effetto vogliamo che, o siano i medesimi proprietari, o vetturali, procacci, o qualsivoglia altri portatori di esse si per mare che per terra, debbano darne fedele assegna alli ministri deputati alli

Facultas cui-
que concessa
portandi et as-
portandi intra
Statum Eccle-
siasticum dictae
mercis.

confini del medesimo Stato Ecclesiastico per la distribuzione de' bollettini, o per far dogane, e regolarsi in tutto e per tutto, secondo le leggi ed ordinazioni prescritte nei chirografi ed editti sopra enunciati, concernenti l'imposizione della gabella di scudi venti per cento sopra i suddetti panni forastieri d'inferiore valore di scudi cinque la canna; quali ordinazioni, si per quello riguarda l'apposizione del bollo e pagamento del suddetto annuo dazio del dieci per cento, che rispetto alla comprensione di tutte e singole persone di qualsivoglia stato, grado e condizione, come pure quanto all'incorso ed applicazione delle pene comminate contro i trasgressori, abbiamo qui ad una ad una per ripetute, come se fossero di parola in parola inserite, e non altrimenti, ecc.

Beneficium
huiusmodi datum
applicatur com-
munitatibus.

§ 5. Volendo che la gabella suddetta del dieci per cento debba stendersi per tutto il nostro Stato Ecclesiastico, eccettuatenne bensì per ora le due Legazioni di Bologna e di Ferrara, e che debba cedere a beneficio delle comunità di esso Stato, come l'altra del venti imposta, come sopra, per i panni forastieri, senza però restar comprese sotto l'accennata applicazione le suddette merci di seta che s'introdurranno nelle città, terre e luoghi posti nel distretto delle quaranta miglia intorno a Roma, poichè rispetto a queste ci riserviamo di disporre con altro Chirografo a parte che sarà diretto a monsignor nostro tesoriere generale. E per la stessa ragione di essere il ritratto di questa nuova imposta applicato a beneficio delle suddette comunità, è nostra intenzione che, in caso che le suddette merci fossero soggette ad altra gabella comunitativa, l'importo di essa debba detrarsi dal suddetto dieci per cento, di modo che, giustificandosi il pagamento

con fede autentica del ministro che presiede all'esigenza di detta gabella comunitativa, in tal caso ed in tali luoghi la gabella suddetta sia e debba essere solamente quella somma che manca per arrivare al detto dieci per cento. Intendendo però che sotto l'accennata detrazione cadano solamente i pagamenti come sopra fatti nelle dogane generali delle comunità, e non il pagato per le gabelle di passo, nè l'altre spese occorse per il viaggio alli conduttori di esse merci, come fu ordinato nelli chirografi et editti della gabella de' panni, alli quali la suddetta Congregazione particolare si è riportata anche rispetto a questo nuovo dazio del dieci per cento: *Lasciando altresì alla vigilanza del reverendissimo cardinal Riviera, prefetto della Congregazione del buon governo, il fare quanto stimerà necessario per l'esigenza di detta nuova gabella, come sopra, destinata a beneficio delle comunità.*

§ 6. Ed affinchè le suddette merci una volta che siano introdotte nello Stato Ecclesiastico non passino altri domini senza il pagamento di questa nuova gabella, e si tolga alli mercanti ed altri proprietari il pretesto che sogliono talvolta addurre di essere robe di puro transito, o di esserne seguita la vendita nei porti franchi, o nelle fiere libere del medesimo Stato Pontificio, il che, se si ammettesse, si renderebbero più de' nostri sudditi privilegiati i forastieri: perciò, secondando anche in ciò la mente di essa Congregazione particolare, espressamente dichiariamo ed ordiniamo che s'intenda accordato il transito per lo Stato Ecclesiastico e l'immunità della gabella solo per quelle merci veramente destinate per altri Stati sino dalle spedizioni di paesi esteri, e che tal denuncia debba farsi alli con-

Quae merces
ab hac imposti-
tione liberae
esse debeant.

fini, coll'indirizzo, notato sopra le balle o fagotti, alla persona particolare o luogo preciso fuori di Stato a cui sono destinate, per essere poi in tali circostanze, col solito pagamento del transito, nella conformità che si pratica nelle dogane di Roma, ed in ogni altro dominio, accompagnate col solito bollettone di città in città, senza essere sballate ed aperte sino al loro destino, per togliere in tal forma ogni occasione del ritorno nel medesimo Stato di dette robe non gabellate, con pericolo di cagionare fraudi e sconcerti nella negoziazione.

Antiqua data
et prohibitiones
remaneant in
suo statu.

§ 7. Volendo ancora, che col disposto come sopra non s'intenda indotta alcuna innovazione rispetto all'altra gabella del dodici per cento imposta sopra li drappi ed altre robe di seta fabbricate parimente fuori di Stato che s'introducono nelle città, terre e luoghi posti nel suddetto distretto delle quaranta miglia intorno a Roma, come nè pure rispetto alla proibita introduzione de' damaschi e velluti forastieri nella città di Roma; dovendo in questa parte restare nel suo intiero vigore tutto ciò che si prescrive ne' sopra enunciati nostri chirografi ed editi in sequela di essi pubblicati, e specialmente in quello di monsignor nostro tesoriere generale, e quanto dal medesimo verrà ordinato con altro nuovo editto da pubblicarsi in seguito di questa nostra disposizione.

Cardinali
camerarii da-
ta commissio-
praedicta exe-
quenda.

§ 8. Volendo ancora che per l'effetto delle cose suddette si facciano da voi editi e bandi, ne' quali si dia la norma e regolamento necessario per l'esazione di questa nuova gabella, come praticaste nell'altra de' panni forastieri; con facoltà parimente di procedere in tutte e singole cause tanto criminali che civili appartenenti alla suddetta nuova imposi-

zione, e sopra tutti e singoli loro incidenti, emergenti e dipendenti, nella solita forma che vi compete per tutte le altre cause camerali, e di prendere ogni altro provvedimento che vi parerà adeguato per quelle merci forastiere che si troveranno introdotte in detto Stato prima della presente nostra disposizione, e di fare tutt'altro che crederete confacente alla più facile esecuzione di quanto si è come sopra da noi stabilito, approvando d'adesso tutto ciò che da voi sarà fatto in adempimento delle cose predette, essendo tale la mente e volontà nostra espressa.

§ 9. Volendo e decretando che il presente nostro Chirografo, ammettendosi e registrandosi in Camera a tenore della Bolla di Pio IV nostro predecessore *De registrandis*, vaglia e debba aver sempre il suo pieno effetto, esecuzione e vigore colla semplice nostra sottoscrizione, e che non gli si possa mai in alcun tempo opporre di surrezione, orrezione, nè di alcun altro vizio o difetto della nostra volontà ed intenzione, e così e non altrimenti debba sempre nelle cose premesse giudicarsi, definirsi ed interpretarsi dalla suddetta Congregazione deputata, da voi, da monsignor tesoriere generale, dal tribunale della nostra Camera, e da qualunque altro giudice e tribunale, ancorchè collegiativo e composto di reverendissimi cardinali; togliendo loro ed a ciascuno di essi la facoltà di giudicare, decidere, definire ed interpretare diversamente; dichiarando noi d'adesso preventivamente nullo, irritato ed invalido tutto ciò che scientemente o ignorantemente si facesse in contrario, ancorchè non vi sia stato chiamato, citato, nè sentito monsignor commissario della nostra Camera, e qualunque altro che vi avesse o potesse avervi interesse.

Firmitas prae-
sentis schedu-
lae.

Derogatio
contrariorum.

§ 10. Non ostanti la regola della nostra Cancelleria *De iure quaesito non tollendo*, e quali si siano altre costituzioni ed ordinazioni apostoliche nostre e de' nostri predecessori, leggi civili e canoniche, concili generali e provinciali, esenzioni ed indulti concessuti e confermati da noi e da questa Santa Sede, anche per via di contratto ed a titolo veramente oneroso, e con clausole quanto si voglia insolite ed effrenate, anche derogatorie delle derogatorie, statuti, riforme, usi, stili, consuetudini ed ogni altra cosa che facesse o potesse fare in contrario; alle quali tutte e singole, avendone il tenore qui per espresso e di parola in parola inserto, e supplendo noi colla pienezza della nostra suprema apostolica potestà a qualunque vizio e difetto quantunque sostanziale e formale che nelle cose premesse potesse intervenire, per questa volta sola e per l'effetto suddetto pienamente deroghiamo.

Dato dal nostro palazzo apostolico Quirinale questo dì 15 marzo 1738.

Dat. die 15 martii 1738, pontif. anno VIII.

CLEMENS PP. XII.

CCXXIII.

Dignitatibus et canonicis nunc et pro tempore existentibus patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis conceditur licentia celebrandi seu celebrari faciendi quotidie etiam per horam ante auroram et per horam post meridiem unam missam in privatis domorum suarum existentibus oratoriis in sua ac familiae praesentia.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Causae con-
cedendi privi-
legii.

§ 1. Insignem dilectorum filiorum capituli, dignitatum et canonicorum pa-

triarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis ordinem, cui non solum felicia recordationis Clemens Papa XI praedecessor noster tot ecclesiastica ornamenta, privilegia et praerogativas, ad instar nonnullorum etiam aliarum cathedralium ecclesiarum saecularium canonicorum et abbatum mitrae usum habentium, apostolicam auctoritatem suam contulit, verum etiam carissimus in Christo filius noster Ioannes Portugalliae et Algarbiorum rex illustris praeclara saecularis honorificentiae decora, bona, et congruentes redditus, quibus eam dignitatem cum debito etiam magnatum regni honore coniunctam sustinerent, regali liberalitate attribuit, nos, etsi non obscuris pontificiae beneficentiae argumentis, ad ipsius Ioannis regis supplicationem, adaugere non omisimus, tamen novo etiam paternae, qua dignitates et canonicos huiusmodi complectimur, benignitatis testimonio ornandi cumulantique opportunam occasionem praeterire non patimur.

§ 2. Itaque tam dignitati, quam spiritali consolationi eorumdem dignitatum et canonicorum, quantum cum Domino possumus, benigne consulere, eosque et alios pro tempore existentes amplioribus favoribus et gratis prosequi volentes, ipsorumque singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censes, modernis et pro tempore existentibus dignitatibus et canonicis patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis praedictae, ut in privatis domorum suae habitationis in Portugalliae et Al-

Concesso da
qua in rubrica.

garbiorum reguis existentibus oratoriis ad hoc decenter muro extructis et ornatis, seu extruendis et ornandis, ab omnibus domesticis usibus liberis, per Ordinarios respective locorum prius visitandis et approbandis, ac de ipsorum Ordinariorum licentiâ, unam missam pro unoquoque die per semetipsos celebrare, sive per quemcumque sacerdotem ab Ordinario approbatum saecularem, seu de superiorum suorum licentiâ regularem, sine tamen quorumcumque iurium parochialium praeiudicio, ac Paschalis Resurrectionis, Pentecostes et Nativitatis domini nostri Iesu Christi, aliisque solemnioribus anni festis diebus exceptis, in sua ac consanguineorum et affinium secum insimul in eadem domo habitantium familiaeque, et, quoad¹ oratoria ruri existentia, etiam in hospitum nobilium suorum praesentiâ, etiam per horam tantum ante auroram, et item per horam post meridiem, celebrari facere libere et licite possint et valeant, ac quilibet eorum possit et valeat, itant nec ipsis nec sacerdoti taliter celebranti id ad culpam valeat quomodolibet imputari, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, in perpetuum concedimus et indulgemus.

Derogatio
contrariorum.

§ 3. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ceterisque contrariis quibuscumque.

Fides transumptorum.

§ 4. Volumus autem quod familiares servitiis suis tempore dictae missae actu non necessarii ibidem missae huiusmodi interessentes, ab obligatione audiendi missam in ecclesiâ diebus festis de praecepto minime liberi censeantur; quemadmodum etiam ut earundem praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo

¹ Edit. Main. legit quod pro quoad (R. T.).

personae in ecclesiasticâ dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides in iudicio et extra illud adhibeatur, quae ipsis praesentibus adhiberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxii martii MDCCXXXVIII, pontificatus nostri anno VIII.

Dat. die 22 martii 1738, pontif. anno VIII.

CCXXIV.

Confirmatio et innovatio litterarum Eugenii IV circa transitus monachorum Ordinis Cisterciensis Congregationis Portugalliae ad alios Ordines.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Emanarunt dudum a felicis recordationis Eugenio Papa IV praedecessore nostro quaedam litterae sub plumbo tenoris sequentis, videlicet:

• *Eugenius episcopus, servus servorum Dei, ad futuram rei memoriam.* Regu-

larem vitam professis sic decet omnem vagandi materiam omnemque inquietudinis causam amputare, quod in eorum vocatione persistant, ac sedulum et devotum Altissimo exhibeant famulatum. Sane pro parte dilectorum filiorum patris abbatis monasterii Cisterciensis Cabilonensis dioecesis et aliorum Cisterciensis Ordinis abbatum exhibita nobis nuper petitio continebat, quod nonnulli monaci dicti Ordinis, alii videlicet melioris frugis ficto colore, alii vero ut iugum obedientiae et salutaris medicinae effugiant disciplinam, ad alios regulares Ordines se divertunt, et, ut in illis remanere libere possint, licentiâ Apostolicae Sedis in exquisitis coloribus satagunt obtinere. Nos igitur, quorum interest animarum providere saluti, et

Eugenius IV
sub certis po-
nis Ordinis hu-
ius religiosus
transitum ad
quemcumque al-
ium Ordinem
praeter Carthu-
sienium inter-
dixit.

huiusmodi salubre remedium adhibere, eorumdem patris et abbatum supplicationibus inclinati, harum serie decernimus, et etiam ordinamus, quod nullus Ordinis praedicti professus ad alium quemcumque praeterquam Carthusiensium Ordinem etiam praetextu litterarum maioris poenitentiarii nostri, etiamsi in illis plena et expressa de praesentibus mentio habeatur, absque eiusdem patris abbatis licentiâ speciali, causam rationabilem et urgentem, quare licentia huiusmodi concedi debeat, nobis et successoribus nostris Romanis Pontificibus expresse et specificè allegantis, audeat seu praesumat quomodolibet se transferre. Decernentes nihilominus contrafacientes eosdem correctioni sui abbatis et dicti Ordinis omnino subesse, eosque transeuntes, et abbates eorum ipsis ad alium praeterquam dictum Ordinem Carthusiensium transeundi licentiam concedentes, ipso facto excommunicationis sententiae subiaccere. Non obstantibus quibuscumque privilegiis ac indultis quavis auctoritate concessis vel concedendis, quae, quoad hoc, nullius decernimus existere firmitatis, et contrariis quibuscumque. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrae voluntatis et constitutionis infringere, vel ei ausu temerario contraire; si quis autem hoc attentare praesumpserit, indignationem omnipotentis Dei et beatorum Petri et Pauli apostolorum eius se noverit incursurum.

Datum Florentiae anno Incarnationis dominicae MCDXXXIX, XVI kalendas martii, pontificatus nostri anno VIII.

Eugenii litterae confirmantur a Clemente.

§ 2. Cum autem, sicut dilectus filius modernus procurator generalis Congregationis Portugalliae eiusdem Ordinis Cisterciensis nobis nuper exponi fecit, quo litterae praedictae, usque adhuc observatae, deinceps, non obstante quo-

cumque abusu qui nuper in regularis disciplinae detrimentum prodire coeperit, suum sortiantur effectum, confirmationis nostrae patrocinio communiri summopere desideret: nobis propterea humiliter supplicari fecit ut in praemissis opportune providere et ut infra indulgere de benignitate apostolica dignaremur. Nos igitur, ipsum modernum procuratorem generalem specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, huiusmodi supplicationibus inclinati, praeinsertas memorati Eugenii praedecessoris litteras, cum omnibus et singulis in eis respective contentis et expressis, quoad monachos dicti Ordinis Cisterciensis Congregationis Portugalliae, auctoritate apostolica, tenore praesentium, approbamus et confirmamus ac innovamus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiicimus, et, quatenus opus sit, ad monachos Congregationis Portugalliae Ordinis Cisterciensis huiusmodi dictâ auctoritate extendimus et ampliamus, et de novo, ne moderni et pro tempore existentes monachi Congregationis praefatae ad quemcumque alium Ordinem seu Congregationem vel institutum a Sede Apostolica approbatum, praeterquam ad illum Carthusianorum etiam praetextu litterarum ab officio Poenitentiariae Apostolicae sibi concessarum, licet in illis plena et expressa de eisdem litteris mentio habeatur, absque abbatis generalis dictae Congregationis licentiâ se transferri possint, sub eadem excommunicationis

poenā, auctoritate et tenore praedictis
interdicimus et proibemus.

Qui sic ubique
praecipit ser-
vari.

§ 3. Decernentes, eandem praesentes
litteras semper firmas, validas et effica-
ces existere et fore, suosque plenarios
et integros effectus sortiri et obtinere,
ac ab omnibus et singulis, ad quos spe-
ctat et pro tempore quandocumque spe-
ctabit, inviolabiliter observari, sicque in
praemissis per quoscumque iudices or-
dinarios et delegatos, etiam causarum
palatii apostolici auditores, ac S. R. E.
cardinales, etiam de latere legatos, in-
dicari et definiri debere, ac irritum et
inane si secus super his a quoquam,
quavis auctoritate, scienter vel ignoran-
ter, contigerit attentari.

Quibuscumque
non obstanti-
bus.

§ 4. Non obstantibus praemissis, ac
constitutionibus et ordinationibus apo-
stolicis, necnon omnibus et singulis il-
lis, quae idem Eugenius praedecessor
in suis litteris praefatis voluit non ob-
stare, ac, quatenus opus sit, dictae Con-
gregationis, etiam iuramento, confirma-
tione apostolica vel quavis firmitate aliā
roboratis, statutis et consuetudinibus,
privilegiis quoque, indultis et litteris ap-
ostolicis in contrarium praemissorum
quomodolibet concessis, confirmatis et
innovatis; quibus omnibus et singulis,
illorum tenores praesentibus pro plene
et sufficienter expressis et insertis habenti-
bus, illis aliis in suo robore perman-
suris, ad praemissorum effectum, hac vice
dumtaxat, specialiter et expresse dero-
gamus; ceterisque contrariis quibus-
cumque.

Transumptis
hac danda.

§ 5. Volumus autem ut earumdem prae-
sentium litterarum transumptis, etiam
impressis, manu alicuius notarii publici
vel abbatis generalis dictae Congrega-
tionis subscriptis, et sigillo personae
in ecclesiastica dignitate constitutae aut
supradicti abbatis vel Congregationis
praedictae secretarii generalis munitis,

eandem prorsus fides ubique locorum
tam in iudicio quam extra habeatur,
quae ipsis praesentibus haberetur si
forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maio-
rem, sub annulo Piscatoris, die xxvii
martii mdccxxviii, pontificatus nostri
anno viii.

Dat. die 27 martii 1738, pontif. anno viii.

CCXXV.

*Decretum ut novae aedes, ad conventum
B. M. V. de Nive de Palazzola Or-
dinis fratrum Minorum de Observantiā
constructae, nulli alio usui applicari
possint nisi ad hospitium benefacto-
rum eiusdem Ordinis.*

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Exponi nobis nuper fecit dile-
ctus filius Iosephus Maria Fonseca ab
Ebora, exgeneralis Ordinis fratrum Mi-
norum S. Francisci de Observantiā nun-
cupatorum, quod, cum ipse ex pecuniis
per suos religiosos industrios labores
ac per eleemosynas a piorum christifi-
delium elargitione sibi impertitas¹, insi-
mul ad summum fere octoginta millium
scutorum monetae romanae ascenden-
tibus, conventum B. Mariae Virginis de
Nive de Palazzola nuncupatum provin-
ciae Romanae eiusdem Ordinis paulo
ante refici, in eoque, intra claustra, et
in illius planis inferioribus, et extra
illud, nonnullas aedes seu mansiones
construi curaverit, quibus ipse Iosephus
Maria de praesenti ad sui usum et com-
moditatem politur; ut autem ecclesia
praefati conventus, et praemissa, quae
absolvenda sunt, ad perfectionem per-
ducere valeat, usum et commodum dic-
tarum aedium seu mansionum ad sui

Causae ho-
iusce declara-
tionis, scilicet
nova constru-
ctio conventus
et nonnullarum
aedium ei an-
nexarum.

¹ Videtur deesse collectis (R. T.).

vitam a nobis concedi plurimum desideret :

Reservatio constructori dictarum aedium usque ad sui vitam, statuitur, ut lo-
eis imposterum
feminas nullo
modo pernoctare
possint, sed
benefactorum
hospitio dumtaxat
debeant
dictae aedes in-
servire.

§ 2. Nos, ipsum Iosephum Mariam specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, supplicationibus eius nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, eidem Iosepho Mariae, ut ipse¹, quoad vixerit, et in quocumque statu et gradu tam intra quam extra Ordinem praedictum semper et quandocumque extiterit, usum et commodum dictarum aedium seu mansionum, per eum tam in supradicto conventu quam extra illum constructarum, cum omnibus et singulis suis membris, annexis et connexis, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, concedimus et indulgemus. Praeterea, ne, post eiusdem Iosephi Mariae obitum, aedes seu mansiones, per ipsum, sicut praemittitur, extra supradictum conventum edificatae, unâ cum suis membris et annexis praefatis², habitationi³ dicti Ordinis benefactorum aliarumque personarum inibi pro tempore adventantium, occasione eorum transitûs, hospitio tantum excipiendorum, et non alteri cuicumque usui destinari ac inservire debeant, nec ullus conventûs et Ordinis praefatorum superior aut religiosus, vel quisquam quavis auctoritate vel superioritate aut officio fulgens, in eisdem aedibus seu mansionibus (praeterquam eâ de causâ)

etiam praetextu rusticationis degere, vel quovis alio modo habitare possit, minusque mulieres et feminei sexus personae, cuiuscumque status, gradus et conditionis existant, in aedibus et mansionibus praefatis pernoctare valeant, aut ut ibi pernoctent permittere audeat seu praesumat, sub excommunicationis latae sententiae Sedi Apostolicae reservatae, a qua nemo nisi a nobis seu Romano Pontifice pro tempore existente, praeterquam in mortis articulo constitutus absolutionis beneficium obtinere queat, et, quoad regulares, etiam privationis vocis activae et passivae poenis, per contrasacientes ipso facto absque aliâ declaratione incurrendis, auctoritate et tenore praedictis interdiximus et prohibemus.

§ 3. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ac, quatenus opus sit, conventûs et Ordinis praedictorum, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Contraria tolluntur.

§ 4. Volumus autem, ut, secuto eiusdem Iosephi Mariae obitu, praesentis prohibitionis exemplum in valvis dicti conventus, seu aedium vel mansionum praedictarum, aut in aliquo alio conspicuo loco, ubi ab omnibus cerni et legi possit, affixum continuo remaneat.

Praesens Rescriptum in his auctoritatibus.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die ix

¹ Vel deest verbum *habeat*, vel voces *ut ipse delendae sunt* (R. T.).

² Ed. M. legit *praesentis* pro *praefatis* (R. T.).

³ Videretur legendum *ullius habitationi*, sed, etc. (R. T.).

aprilis MDCCXXVIII, pontificatus nostri
anno VIII.

Dat. die 9 aprilis 1738, pontif. anno VIII.

CCXXVI.

Prohibitio, ne confessarii absolvere possint ministros S. Officii Inquisitionis revelantes et publicantes illius acta, tractata et gesta in regnis Portugalliae et Algarbiorum.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Sub poena excommunicationis interdictum a Pontifice officialibus Inquisitionis in Portugallia gesta ulla eiusdem tribunalis cuiquam aperire.

§ 1. Cum nos aliàs, per quasdam nostras desuper in simili formâ Brevis expeditas litteras, supplicationibus dilecti filii nostri Nuni, presbyteri S. R. E. cardinalis de Cunha nuncupati, in Portugalliae et Algarbiorum regnis et dominiis ab eis dependentibus carissimo in Christo filio nostro Ioanni eorundem regnorum regi illustri mediate vel immediate subiectis inquisitoris generalis Officii Inquisitionis adversus haereticam pravitatein auctoritate apostolicâ instituti, humiliter porrectis inclinati, omnibus et singulis Officii Inquisitionis huiusmodi in memoratis regnis et dominiis, sive minoribus inquisitoribus, sive consiliariis, procuratoribus, tabellionibus, sive ministris et officialibus, aliisque quibuscumque personis ecclesiasticis et saecularibus, etiamsi quavis praefulgeant dignitate, qui de cetero perpetuis futuris temporibus in tractatis, gestis, statutis et ordinationibus quomodocumque ad praedictum Inquisitionis officium spectantibus interfuerint, ne quibusvis personis tractata, gesta, statuta et ordinationes huiusmodi, tacite vel expresse, per se, vel alium, seu alios, publicare vel revelare auderent seu praesumerent, sub excommunicationis latae sententiae, a qua nemo ab-

solutionis beneficium nisi a nobis seu successoribus nostris praeterquam in mortis articulo constitutus obtinere valeret, aliisque per contraventores ipso facto absque aliâ declaratione incurrendis poenis, districtius, auctoritate apostolicâ, inhibuerimus, ac praeceperimus et mandaverimus; ac aliàs, prout in nostris desuper in simili formâ Brevis die XIII iulii anni proxime praeteriti expeditis litteris, quarum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis et insertis habere volumus, plenius continetur:

§ 2. Cum autem, sicut dictus Nunus cardinalis et inquisitor generalis nobis nuper exposuit, ipse litteras praedictas adhuc publicare seu publicari facere praetermiserit, considerans quod, si ministri alique officiales supradicti tractata, gesta, aliaque ad dictum Inquisitionis Officium spectantia publicaverint seu revelaverint, excommunicationis per eos eâ de causâ incursae absolutionem a quocumque confessario tam saeculari quam cuiusvis Ordinis regulari in vim facultatis per Bullam Cruciatæ ab Apostolicâ Sede in eisdem regnis concessae illis ut praefertur attributæ reportare et ii concedere respective possint; cupiatque propterea dictus Nunus cardinalis et inquisitor generalis, ne tractata et gesta aliaque praemissa ab eisdem ministris et officialibus in posterum magno cum catholicae orthodoxaeque fidei detrimento, sub spe reportandi ex eorum criminibus absolutionem a dictis confessariis vigore indulti Bullae Cruciatæ huiusmodi, revelentur et publicentur, omnes difficultates, quae circa excommunicationis poenam per nos comminatum exoriri possent, auferri:

§ 3. Nos, piis eiusdem Nuni cardinalis et inquisitoris generalis votis hac in re, quantum cum Domino possumus, favo-

Per generalem inquisitionem dubitatur, quominus hac in re delinquentes absolutionem obtineant vigore Bullae Cruciatæ.

Hoc idem cavet Pontifex de dat.

rabiliter annuere volentes, huiusmodi supplicationibus inclinati, omnibus et singulis modernis et pro tempore existentibus in eisdem Portugalliae et Algarbiorum regnis et ab eis dependentibus dominiis, praedicto Ioanni regi mediate vel immediate subiectis, confessariis, tam saecularibus quam cuiusvis Ordinis vel Congregationis aut instituti regularibus, quocumque privilegio seu indulto eis ab hac Sanctâ Sede concessio, seu praetento, absolutionem impertiendi a casibus reservatis suffultis, ne ipsi ministros et officiales quoscumque eiusdem Inquisitionis Officii, cuiusvis status, gradus et conditionis vel auctoritatis existant, qui tractata, gesta aliaque similia, et in eisdem nostris litteris sicut praemittitur expressa, ad dictum Inquisitionis Officium spectantia et pertinentia, publicaverint seu revelaverint quoquo modo, eâque de causâ poenam excommunicationis latae sententiae huiusmodi per nos inflictam incurrerint, ab excommunicationis huiusmodi poenâ per eos sic incursâ ullo unquam tempore, etiam praetextu indulti seu facultatis in Bullam Cruciatæ praedictæ comprehensæ, et sibi ut praefertur attributæ, absolvere possint et valeant, perpetuo, auctoritate apostolicâ, servatâ in reliquis praedictarum nostrorum litterarum formâ et dispositione, tenore praesentium interdiciamus et prohibemus; et, quatenus confessarii praefati praedictam absolutionem illis impertiri praesumpserint, ipso facto absque aliâ declaratione sub eâdem excommunicationis poenâ nobis seu successoribus nostris praedictis reservatae comprehensi censeantur; eisdemque confessariis omnem facultatem et auctoritatem, vigore indulti Bullæ Cruciatæ huiusmodi, eis ut praemittitur attributam, absolvendi supradictos ministros et officiales tractata et acta praedicta revelan-

tes et publicantes, auctoritate et tenore praedictis per praesentes revocamus et annullamus, ac revocatam et annullatam esse volumus et declaramus.

§ 4. Non obstantibus omnibus et singulis illis, quae in dictis nostris litteris volumus non obstare, ceterisque contrariis quibuscumque.

Obstantibus derogat.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die x aprilis MDCCXXXVIII, pontificatus nostri anno VIII.

Dat. die 10 aprilis 1738, pontif. anno VIII.

CCXXVII.

Confirmatio decreti Congregationis episcoporum et regularium, per quod declaratur, quod generalis Ordinis fratrum B. Mariae Virginis de Mercede Redemptionis Captivorum canonice ac rite electus confirmationem et approbationem a Sede Apostolicâ obtinere minime teneatur.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Nuper, pro parte dilecti filii procuratoris generalis Ordinis fratrum B. Mariae Virginis de Mercede Redemptionis Captivorum, Congregationi venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium negotiis et consultationibus episcoporum et regularium praepositae exposito, quod, cum, iuxta praescriptum constitutionum eiusdem Ordinis auctoritate apostolicâ in formâ specificâ confirmatarum, dilecti quoque filii magister generalis, seu eius vicesgerens, necnon omnes exgenerales, cunctique vicarii provinciales, aut eorum vicarii, ac prior conventus Barchinonensis, et idem procurator generalis pro tempore existentes, ac insuper ex unâquaque dicti Ordinis provinciâ quatuor vocales, ad domum

A procuratore generali Ordinis proposita Congregationi episcoporum et regularium instanti, ut ad formam Ordinis mendicantium magister generalis legitime electus confirmationem ab Apostolicâ Sede petere non teneatur.

designatam pro capituli generalis celebratione accedere, et inibi interesse tenerentur, et praedicti omnes voto et suffragio in electione magistri generalis eiusdem Ordinis gauderent; secutâ vero rite et canonice electione huiusmodi, de consensu magistri generalis electi et capituli, procurator vel procuratores, qui electionem huiusmodi pro illius approbatione et confirmatione obtinendâ huic Sanctae Sedi exhibeant, constituerentur: et in eadem expositione subiuncto, quod, cum ex Sedis praedictae benignitate fere omnibus Ordinibus regularibus, et praesertim Mendicantibus, inter quod ex eiusdem Sedis gratiâ Ordo B. Mariae Virginis de Mercede huiusmodi numeratur, indultum fuerit, ut eorumdem Ordinum generales, canonice electi, ipso facto confirmati intelligerentur, nec ulteriori confirmatione indigerent: dictus procurator generalis tam suo quam totius memorati Ordinis nomine cupiebat, quatenus praedictum privilegium, tot religiosis familiis concessum, etiam dicto suo Ordini concedere dignaremur: emanavit ab eadem Congregatione cardinalium decretum tenoris qui sequitur, videlicet:

Congregatio
consultat aequum.
dum.

Sacra Congregatio eminentissimorum et reverendissimorum S. R. E. cardinalium negotiis et consultationibus episcoporum et regularium praeposita, ad quam sanctissimus dominus noster supplicem libellum remisit, referente eminentissimo domino cardinali Belluga ponente, censuit, si eidem sanctissimo domino nostro placuerit, oratoris precibus indulgeri posse pro gratiâ ad formam aliarum religionum. — Romae, xiv martii MDCCXXXVIII.

Ex audientiâ sanctissimi habitâ ab infra-scripto domino secretario sub die xxix eiusdem mensis martii MDCCXXXVIII, Sanctitas Sua benigne annuit, iuxta votum sacrae Congregationis. — Romae, etc. F. card. BARBERINUS. -- C. archiep. Damiatæ, secretarius.

§ 2. Cum autem, sicut dictus procurator generalis nobis subinde exposuit, ipse decretum huiusmodi, quo firmitus subsistat, apostolicae confirmationis nostrae patrocínio communiri summo opere desideret: nos, ipsum procuratorem generalium specialibus favoribus et gratiis prosecui volentes, et a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, supplicationibus eius nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, decretum praeinsertum, auctoritate apostolica, tenore praesentium, confirmamus et approbamus, illique inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiicimus: salvâ tamen semper in praemissis auctoritate memoratae Congregationis cardinalium.

Decretum
praefatae Con-
gregationis a-
postolica aucto-
ritate roboratur.

§ 3. Decernentes, easdem praesentes litteras firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore spectabit, plenissime suffragari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Clausulae.

§ 4. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon dicti Ordinis, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum

Derogatio
contrariorum.

quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes¹, illis aliàs in suo robore permansuris ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xv aprilis MDCCXXXVIII, pontificatus nostri anno VIII.

Dat. die 15 aprilis 1738, pontif. anno VIII.

CCXXXVIII.

Ampliatio litterarum Pauli III, ad favorem presbyterorum confessoriorum per custodes et confratres deputationum confraternitatis hospitalis B. Mariae de Gratiâ, Consolatione, et Porticu nuncupatae almae Urbis concessarum, ad quoscumque presbyteros, qui, audiendarum confessionum causâ, ad archihospitale S. Spiritûs in Saxiâ solent accedere.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

§ 1. Aliàs felicis recordationis Clementi Papae XI praedecessori nostro, pro parte bonae memoriae Fabritii, dum vixit, episcopi Liciensis, et Congregationis venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium et dilectorum filiorum Romanae Curiae praelatorum super negotiis visitationis apostolicae ecclesiarum et locorum piorum almae Urbis nostrae institutae deputationum pro-secretarii, exposito, quod dudum felicis recordationis Paulus PP. III etiam praedecessor noster presbytero et presbyteris

per custodes et confratres confraternitatis hospitalis B. Mariae de Gratiâ, Consolatione et Porticu nuncupatae praedictae Urbis pro tempore existentes deputatis et deputandis, etiamsi presbyteri saeculares vel cuiusvis Ordinis etiam Mendicantium regulares fuissent, omnium et singulorum utriusque sexus christifidelium personarum tunc et pro tempore ad dictum hospitale pro sanitate recuperandâ confluentium, cuiuscumque qualitatis, etiamsi divites, et etiamsi clerici regulares vel cuiusvis Ordinis etiam Mendicantium regulares fuissent, confessiones, quotiescumque confiteri voluissent, audiendi, et, illis auditis, eos ab omnibus et singulis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis quomodolibet latis, et votorum quorumcumque, iuramentorum, et Ecclesiae mandatorum transgressionibus, ieiuniorum, poenitentiarum iniunctarum, ac divinorum officiorum omissionibus, manuum violentarum in quasvis personas iniectionibus, ac periuriorum et homicidii mentalis vel casualis, necnon adulterii, incestus, stupri, fornicationis, ac sacrilegii reatibus, omnibusque aliis et singulis eorum peccatis, criminibus, excessibus et delictis, quantumcumque gravibus et enormibus, etiam Sedi Apostolicae reservatis, de quibus corde contriti et ore confessi fuissent, etiamsi talia fuissent, propter quae merito Sedes Apostolica esset consulenda, absolvendi, et pro commissis poenitentiam salutarem iniungendi, necnon vota quaecumque (ultramarino, visitationis liminum apostolorum Petri et Pauli, S. Iacobi in Compostella, necnon religionis et castitatis votis dumtaxat exceptis) in alia pietatis opera commutandi, iuramenta quaecumque relaxandi, ipsisque infirmis ecclesiastica sacramenta, prout eatenus

Clemens XI facultates a Paulo III concessas confessoribus hospitalis B. M. de Consolatione reformat, easque sic reformatas ad confessorios aliorum hospitalium Urbis extendit.

¹ Vocem *habentes* nos addimus (R. T.)

fecerant, ministrandi, ac eis in articulo mortis plenariam omnium peccatorum suorum indulgentiam et remissionem, etiamsi mors non subsequeretur, et quoties mors immineret, vel in dicto mortis articulo constituti viderentur, impendendi, licentiam et facultatem, sub certis modo et formâ tunc expressis, auctoritate apostolicâ concesserat et elargitus fuerat; et in eâdem expositione subiuncto quod facultates a memorato Paulo praedecessore per litteras supradictas dicti hospitalis confessariis concessas, ut praefertur, etiam ad aliorum eiusdem Urbis hospitalium confessarios extendi plurimum desiderabat: idem Clemens praedecessor, ipsius Fabritii episcopi votis hac in re favorabiliter annuere volens, supplicationibus eiusdem Fabritii episcopi nomine sibi super hoc humiliter porrectis inclinatus, praefatas Pauli praedecessoris litteras, pro dicto hospitali Consolationis sicut praemittitur datas, auctoritate apostolicâ reformavit et declaravit, itaut facultas in eis concessa intelligeretur pro foro conscientiae tantum, exceptis casibus in Bullâ *Coenae Domini*, necnon publicae violationis clausurae monialium ad malum finem, presbytericidii publici, ac casus publici violatae immunitatis ecclesiasticae, imo etiam occulti in terminis constitutionis piaë memoriae Gregorii XIV pariter praedecessoris nostri, quae incipit *Cum alijs nonnullis*, etiamsi eiusmodi violatio auctoritate publicâ secuta fuerit, ac citra ullam facultatem dispensandi super irregularitate; indultumque huiusmodi, sic reformatum et declaratum, etiam alijs praedictae Urbis hospitalibus concessit; et alijs, prout in Pauli et Clementis praedecessorum praedictorum litteris de super in simili normâ Brevis diebus XIII iunii MDCLXIV et XI ianuarii MDCCXIV expeditis, quarum tenores praef-

sentibus pro expressis et insertis haberi volumus, uberius continetur.

§ 2. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat venerabilis frater Antonius Maria archiepiscopus Naupactensis, memoratae Congregationis pro-secretarius, ac archihospitalis S. Spiritus in Saxia de eâdem Urbe praeceptor, nobis nuper exponi fecit, ipse acceperit, fratres cuiuscumque Ordinis et Congregationis de Urbe praefatâ, qui quotidie, iuxta ordinem a dilecto filio nostro Ioanne Antonio S. R. E. cardinali Guadagni nuncupato in dictâ Urbe vicario in spiritualibus generali praescriptum, ad archihospitalia et hospitalia praefata accedere debent, alique presbyteri saeculares, qui devotionis causâ ibidem pro eiusdem pietatis opere exercendo sese conferre solent, dictâ facultate et licentiâ absolvendi infirmos, in eisdem archihospitalibus et hospitalibus exceptos, a casibus reservatis praedictis, minime gaudere, cum facultatem praedictam per Clementem praedecessorem ad omnia archihospitalia et hospitalia huiusmodi extensam confessariis ordinariis per custodes seu administratores hospitalium praedictorum deputatis concessam esse videatur; ipse vero Antonius Maria prosecretarius et praeceptor, ut animarum infirmorum ad praedicta archihospitalia et hospitalia accedentium saluti et conscientiae quieti, quantum fieri potest, opportune consulatur, licentiam et facultatem a memorato Paulo praedecessore confessariis hospitalis de Gratiâ et Consolatione huiusmodi concessam, ut praefertur, ad omnes confessarios ordinarios aliorum archihospitalium et hospitalium de eâdem Urbe, necnon presbyteros saeculares et regulares ad illa, supra expressis de causis,

Praeceptor archihospitalis S. Spiritus Pontifici supplicat, ut eadem facultates extendantur quoque ad presbyteros quoscumque, qui confessionum audiendum causâ ad archihospitalia solent accedere.

1 Potius lege *aliosque presbyteros* (R. T.).

accedentes, per nos extendi et ampliari plurimum desideret: nobis propterea humiliter supplicari fecit ut in praemissis opportune providere et ut infra indulgere de benignitate apostolicâ dignaremur.

Annuit Pontifex concedendo facultates in litteris Pauli III comprehensas.

§ 3. Nos igitur, ipsius Antonii Mariae prosecretarii et praeceptoris votis hac in re, quantum cum Domino possumus, favorabiliter annuere volentes, et a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, huiusmodi supplicationibus inclinati, memoratas Pauli praedecessoris litteras, ad favorem presbyterorum confessariorum per custodes eiusdem hospitalis de Gratiâ et Consolatione deputandorum, ut praefertur, cum omnibus et singulis facultatibus absolvendi a quibusvis casibus et excessibus Sedi Apostolicae reservatis in eisdem litteris comprehensis et expressis editas, non obstantibus illarum reformatione et declaratione a memorato Clemente praedecessore factis, ad omnes et singulos confessarios quorumcumque et singulorum archihospitalium et hospitalium in eadem Urbe existentium, necnon presbyteros saeculares, et cuiusvis Ordinis vel Congregationis, aut instituti a Sede Apostolicâ approbati, regulares, ad sacramentales christifidelium confessiones excipiendas approbatos, qui ad illa tam iuxta ordinem a memorato Ioanne Antonio cardinali et vicario statutum quam devotionis causâ sese conferunt, auctoritate praedictâ extendimus et ampliamus; eisdem confessariis archihospitalium et hospitalium praedictorum deputatis et pro tem-

pore deputandis, necnon aliis presbyteris tam saecularibus quam regularibus praedictis, eisdem de causis ad archihospitalia et hospitalia praedicta accedentibus, ut omnium et singulorum utriusque sexus christifidelium infirmorum nunc et pro tempore in eisdem archihospitalibus et hospitalibus, ac etiam puellarum in conservatorio archihospitali S. Spiritus praedicto annexo et in infirmariâ dicti conservatorii existentium, sacramentales confessiones excipere, illosque et illas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, quomodolibet latis, ac aliis casibus reservatis, et in supra dictis Pauli praedecessoris litteris expressis, in foro conscientiae tantum, absolvendi, et pro commissis poenitentiam salutarem iniungendi, dictisque infirmis ecclesiastica sacramenta ministrandi, et in articulo mortis plenariam omnium peccatorum suorum indulgentiam et remissionem impendendi, licentiam et facultatem, servatâ tamen memoratarum Pauli praedecessoris litterarum formâ et dispositione, auctoritate et tenore praefatis, concedimus et indulgemus.

§ 4. Non obstantibus praedictis Clementis praedecessoris litteris, aliisque constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon omnibus et singulis illis quae in praedictis Pauli praedecessoris litteris concessa sunt non obstare, ceterisque contrariis quibuscumque.

Contraria tollit.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem sub annulo Piscatoris, die xxviii aprilis mdccxxxviii, pontificatus nostri anno viii.

Dat. die 28 aprilis 1738, pontif. anno viii.

CCXXIX.

Condemnatio Societatis seu conventicularum, vulgo De' liberi muratori, aut Des francs massons, sub poenâ excommunicationis ipso facto incurrendâ, eius absolutione, excepto mortis articulo, Summo Pontifici reservatâ.

Clemens episcopus,
servus servorum Dei,

Universis christifidelibus, salutem
et apostolicam benedictionem.

Prooemium. In eminenti apostolatus speculâ, meritis licet imparibus, divinâ disponente clementiâ constituti, iuxta creditum nobis pastoralis providentiæ debitum iugi, quantum ex alto conceditur, sollicitudinis studio iis intendimus, per quæ, erroribus vitiisque aditu intercluso, orthodoxæ religionis polissimum servetur integritas, atque ab universo catholico orbe difficillimis hisce temporibus perturbationum pericula propellantur.

Conventiculae, quibus de in rubricâ, a principibus saecularibus interdictae.

§ 1. Sane, vel ipso rumore publico nunciante, nobis innotuit longe lateque progredi atque in dies invalescere nonnullas societates, coetus, conventus, collectiones, aggregationes, seu conventicula, vulgo *de' liberi muratori*, seu *francs massons*, aut aliâ quavis nomenclaturâ pro idiomatum varietate¹ nuncupata, in quibus cuiuscumque² religionis et sectae homines, affectatâ quadam contenti honestatis naturalis specie, arcto aequae ac impervio foedere secundum leges et statuta sibi condita invicem consociantur, quaeque simul clam operantur, tum districto iureiurando ad sacra biblia interposito, tum gravium poenarum exaggeratione, inviolabili silentio obtegere adstringuntur. Verum,

¹ Edit. Main. legit *varietates* (R. T.).

² Male edit. Main. legit *in quibuscumque* pro *in quibus cuiuscumque* (R. T.).

³ Edit. Main. legit *incurrendae* (R. T.).

cum ea sit sceleris natura, ut se ipsum prodat et clamorem edat sui indicem: hinc societates seu conventicula praedita vehementem adeo fidelium mentibus suspicionem ingesserunt, ut iisdem aggregationibus nomen dare apud prudentes et probos idem omnino sit ac pravitatis et perversionis notam incurrere, nisi enim male agerent, tanto nequam odio lucem haberent. Qui quidem rumor eo usque percrebuit ut in plurimis regionibus memoratae societates per saeculi potestates tamquam regnorum securitati adversantes proscriptae ac provide eliminatae iampridem extiterint.

§ 2. Nos itaque, animo evolventes gravissima damna, quae ut plurimum ex huiusmodi societatibus seu conventiculis, nedum temporalis reipublicae tranquillitati, verum etiam spirituali animarum saluti inferuntur, atque idcirco tum civilibus tum canonicis minime cohaerere sanctionibus; cum divino eloquio doceamur, die noctuque, more servi fidelis et prudentis dominicae familiae praepositi, vigilandum esse, ne huiusmodi hominum genus veluti fures domum perfodiant, atque instar vulpium vineam demoliri nitantur, ne videlicet simplicium corda pervertant, atque innoxios sagittent in occultis; ad latissimam, quae iniquitatibus impune patrandis inde aperiri posset, viam obstruendam, aliisque de iustis ac rationalibus causis nobis notis: easdem societates, coetus, conventus, collectiones, aggregationes, seu conventicula *de' liberi muratori*, seu *francs massons*, aut alio quocumque nomine appellata, de nonnullorum S. R. E. cardinalium consilio, ac etiam motu proprio, et ex certâ scientiâ ac maturâ deliberatione nostris, deque apostolicae potestatis plenitudine, damnanda et prohibenda esse statuimus et decernimus,

Easdem damnat, prohibetque Pontifex.

prout praesenti nostrâ perpetuo valiturâ constitutione damnamus et prohibemus.

Se illa aggregare, dilatare, auxilium quodcumque praestare cavet sub poenâ excommunicationis.

§ 3. Quocirca omnibus et singulis christifidelibus cuiuscumque status, gradus, conditionis, ordinis, dignitatis et praeeminentiae, sive laicis vel clericis, tam saecularibus quam regularibus, etiam specificâ et individuâ mentione et expressione dignis, districte et in virtute sanctae obedientiae praecipimus, ne quis sub quovis praetextu aut quaesito colore audeat vel praesumat praedictas societates *de' liberi murtori*, seu *frances massons*, aut aliâs nuncupatas, inire vel propagare, confovere, ac in suis aedibus seu domibus vel alibi receptare atque occultare, iis adscribi, aggregari, aut interesse, vel potestatem seu commoditatem facere ut alicubi convocentur, iisdem aliquid ministrare, sive aliâs consilium, auxilium vel favorem, palam aut in occulto, directe vel indirecte, per se vel alios, quoquo modo praestare, necnon alios hortari, inducere, provocare, aut suadere ut huiusmodi societatibus adscribantur, annumerentur, seu intersint, vel ipsas quomodolibet iuvent ac foveant, sed omnino ab iisdem societatibus, coetibus, conventibus, collectionibus, aggregationibus seu conventiculis prorsus abstinere se debeant, sub poenâ excommunicationis per omnes ut supra contrafacientes ipso facto absque ullâ declaratione incurrendâ, a qua nemo per quemquam, nisi per nos seu Romanum Pontificem pro tempore existentem, praeterquam in articulo mortis constitutus, absolutionis beneficium valeat obtinere.

Transgressores puniendi episcopis et contra haereticam pravitatem inquisitoribus dat potestatem.

§ 4. Volumus insuper et mandamus, ut tam episcopi et praelati superiores, alique locorum Ordinarii, quam haereticæ pravitatis ubique locorum deputati inquisitores, adversus transgressores,

cuiuscumque sint status, gradus, conditionis, ordinis, dignitatis vel praeeminentiae, procedant et inquirant, eosque tamquam de haeresi vehementer suspectos condignis poenis puniant atque coërcèant; iis enim et eorum cuilibet contra eosdem transgressores procedendi et inquirendi, ac condignis poenis coërcendi et puniendi, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, brachii saecularis auxilio, liberam facultatem tribuimus et impartimur.

§ 5. Volumus autem ut earundem praesentium transumptis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis et sigillo personae in dignitate ecclesiasticâ constitutae munitis, eadem fides prorsus adhibeatur, quae ipsis originalibus litteris adhiberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Eidem transumptis addit.

§ 6. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrae declarationis, damnationis, mandati, prohibitionis et interdictionis infringere, vel ei ausu temerario contraire; si quis autem hoc attentare praesumpserit, indignationem omnipotentis Dei ac beatorum Petri et Pauli apostolorum eius se noverit incursurum.

Clauſulae poenales.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, anno Incarnationis dominicae MDCCXXXVIII, IV katendas maii, pontificatus nostri anno VIII.

Dat. die 28 aprilis 1738, pontif. anno VIII.

A. card. prodaturus.

Visa de Curia.

N. ANTONELLUS.

I. B. EUGENIUS.

CCXXX.

Confirmatio decreti Congregationis particularis a Sanctissimo deputatae, per quod decernitur quod procurator ge-

neralis Congregationis Doctrinae Christianae Avenionensis in domo provinciae Romanae residere debeat.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Facili serie. § 1. Emanavit nuper a Congregatione particulari nonnullorum venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium, a nobis in causâ Congregationis Doctrinae Christianae Avenionensis inter dilectos filios presbyteros saeculares provinciae Romanae ex unâ et provincias Galliae dictae Congregationis ex alterâ partibus vertente deputatâ, decretum tenoris qui sequitur, videlicet:

Decretum S. Congregationis. Die xiv aprilis mdccxxxviii. Congregatio particularis a sanctissimo domino nostro deputata eminentissimorum et reverendissimorum dominorum cardinalium Barberini, Spinulae, Portiae, Gentili, subrogati in locum clarae memoriae cardinalis Orighi, et Guadagni, ac mei infrascripti subrogati in locum reverendi patris domini Jachet cum voto, in causâ Congregationis Doctrinae Christianae Avenionensis inter provinciam Romanam et provincias Galliae, auditis quoque partibus super Bullâ unionis provinciae Romanae ecclesiae et domus¹ S. Mariae in Monticelli sanctae memoriae Benedicti XIII, sub datum anni mdccxxvi, iv kalendas martii, rescripsit ad mentem. Mens est: Consulendum Sanctissimo, quod ibidem residere debeat procurator generalis totius Congregationis Doctrinae Christianae Avenionensis, solutis alimentis.

Factâque etiam super hoc, die sequenti, relatione huius resolutionis per me infrascriptum eidem sanctissimo domino nostro, Sanctitas Sua supradictae Congregationis particularis sententiam in hac quoque parte probavit, ac iuxta eam opportunas litteras in formâ Brevis expediri mandavit. — FRANCISCUS episcopus Ostiensis cardinalis BARBERINUS. — NICOLAUS XAVERIUS archiepiscopus Athenarum, secretarius. *Loco † sigilli.*

¹ Forsan domui (R. T.).

§ 2. Cum autem, sicut presbyteri saeculares provinciarum Galliae Congregationis Doctrinae Christianae huiusmodi nobis subinde exponi fecerunt, ipsi decretum huiusmodi, quo firmitus subsistat et servetur exactius, apostolicae confirmationis nostrae patrocínio communiri summopere desiderent: nos, ipsorum exponentium votis hac in re, quantum cum Domino possumus, favorabiliter annuere volentes, et eorum singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censentes, supplicationibus eorum nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, decretum praeinsertum, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, confirmamus et approbamus, illique inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiicimus.

§ 3. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

§ 4. Non obstantibus constitutionibus et ordinati-
ostolicis, ac, quatenus opus sit, larum provinciarum, etiam iuramento, confirmatione aposto-

Confirmatio
pontificia.

Praesentium
litterarum fir-
mitas.

Obstantium
derogatio.

licâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die 11 maii MDCCXXXVIII, pontificatus nostri an. VIII.

Dat. die 2 maii 1738, pontif. anno VIII.

CCXXXI.

Confirmatio Brevis Urbani VIII confirmatorii aliorum a Pio II, Iulio II et Sixto V editorum, nonnulla privilegia et indulta communitati et hominibus civitatis Beneventanae concessa continentium, praesertim, quod primae et secundae instantiae causarum temporalium vel civilium extra dictam civitatem cognosci non possint.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Prooemium.

Paterna, quam de nostris et S. R. E. etiam quoad temporalia subditis gerimus, cura nos urget atque impellit, ut, eorum commodis iugi vigilantia studentes, ea, quae a Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris pro civitatibus, oppidis et terris temporalis eiusdem S. R. E. ditionis in pacis amoenitate conservandis benigne sapienterque concessa et ordinata esse noscuntur, quo perenni firmitate subsistant, apostolici muniminis nostri patrocínio constabiliamus.

§ 1. Dudum siquidem felicitis recordationis Urbanus PP. VIII praedecessor noster omnia et singula statuta dilectorum filiorum communitatis et hominum civitatis nostrae, tunc suae, Beneventanae, necnon quaecumque privilegia et indulta eisdem communitati et hominibus per alios Romanos Pontifices praedecessores nostros, tunc suos, et eorum quemlibet, quomodolibet concessa, confirmata et innovata, praesertim a felicitis recordationis Pio II et Sixto V (qui etiam, ut ad unguem observarentur, statuit et perpetuo ordinavit) Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris, tunc suis, approbavit et confirmavit, et, ut in bannimentis generalibus circa Statum Ecclesiasticum editis et edendis civitas Beneventana praedicta non censeretur comprehensa, nisi expresse nominata fuisset, concessit et indulsit; et aliâs, prout uberius continetur in ipsius Urbani praedecessoris litteris desuper in simili formâ Brevis die 1 iulii MDCCXIV expeditis, tenoris qui sequitur, videlicet: « *Urbanus PP. VIII, ad perpetuam rei memoriam.* Sincerae fidei et devotionis affectus, quo dilecti filii communitas et homines civitatis nostrae Beneventanae nos et Romanam prosequuntur Ecclesiam, promeretur, ut, eorum votis quantum cum Domino possumus annuentes, specialibus eos in dies favoribus et gratiis prosequamur. Aliâs siquidem felicitis recordationis Pius PP. II praedecessor noster civibus et incolis et habitatoribus civitatis praefatae, ne in quibuscumque causis temporalibus seu civilibus in primis, et post deputatum iudicem appellationis secundis instantiis, per quoscumque extra civitatem praedictam, quavis auctoritate vel occasione, trahi seu conveniri possint, et, si forte traherentur vel convenirentur, ipsis se trahentibus, seu quomodolibet conve-

Concessum ab Urbano privilegium.

Tenor brevis Urbani.

nientibus extra civitatem ipsam de iustitiâ respondere minime tenerentur, concessit; et subinde Iulius PP. II etiam praedecessor noster concessionem praedictam approbavit, quodque ut¹ prima et secunda instantia causarum praedictarum non alibi quam² in dictâ civitate cognosci deberent, de novo concessit; Sixtus vero PP. V praedecessor noster statuit et ordinavit quod statuta dictae civitatis, tam civilia quam criminalia, a dilectis filiis Camerae Apostolicae generali et procuratore fiscali per eundem deputatis revisa, reformata et subscripta, in posterum praesertim a gubernatore et aliis officialibus in eadem civitate pro tempore existentibus ab unguem observarentur; sicuti³ per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores et S. R. E. cardinales, sublata eis et eorum cuilibet quavis aliter iudicandi et interpretandi facultate et auctoritate, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari, decrevit; praeterea, quia dicti communitas et homines in Sedis Apostolicae et Camerae praedictarum necessitatibus summam scutorum duodecim millium de iuliis decem pro scuto solverunt, eis concessit quod futuris temporibus, in quibus de iure vel aliâs veniant confiscanda bona, per fiscum non posset capi nisi vigesima bonorum omnium, exceptis tamen criminalibus haeresis, laesae maiestatis, falsae monetae et latrocinii ad viam publicam: prout in Sixti V, ac Pii II et Iulii etiam II praedecessorum praedictorum litteris desuper expeditis plenius continetur. Cum autem, sicut dicti communi-

tas et homines nobis nuper exponi fecerunt, ipsi concessionem Pii et Iulii, necnon statutum et ordinationem Sixti praedecessorum huiusmodi, ac ipsius communitatis privilegia et statuta apostolicae nostrae confirmationis robore communiri, et propterea per nos ut infra indulgeri summopere desiderent: nos, dictos exponentes specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, eorum singulares personas, a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censentes, re prius diligenter et mature de mandato nostro discussâ, huiusmodi supplicationibus inclinati, omnia et singula statuta civitatis praedictae, necnon omnia et singula privilegia et indulta eisdem exponentibus per praedecessores nostros et eorum quemlibet quomodolibet concessa et confirmata et innovata, illorum tenores, perinde ac si de verbo ad verbum praesentibus insererentur, pro sufficienter expressis et insertis habentes, quatenus illa in viridi sint observantia, et decretis Concilii Tridentini, constitutionibusque apostolicis non repugnent, necnon statutum et ordinationem ac concessionem Sixti supradictam, necnon aliam Pii II et Iulii etiam II praedecessorum concessionem praedictam, qua conceditur quod primae et secundae instantiae causarum temporalium vel civilium extra dictam civitatem cognosci non possent, etiam cum hoc ut tunc inhibitiones, obtentae a quibuscumque almae Urbis iudicibus et causarum curiae Camerae Apostolicae auditores⁴ ac sacri

¹ Forzan et pro ut legendum (R. T.).

² Edit. Main. legit quem pro quam (R. T.).

³ Legendum sicque pro sicuti (R. T.).

⁴ Legendum auditore vel auditoribus (R. T.).

palatii causarum auditoribus, non afficiant¹, iudicesque civitatis Beneventanae inhibitionibus iudicum Urbis et dictorum curiae Camerae Apostolicae ac palatii apostolici auditorum parere non teneantur, neque censuris et poenis in ipsis inhibitionibus comminatis vel inflictis affici, vel aliquo modo adstringi, vel aliàs, ne in causis coram ipsis pendentibus procedant, impediri vel remorari possint, nisi commissiones essent signatae manu nostrâ vel Romani Pontificis pro tempore existentis, apostolicâ auctoritate, tenore praesentium, approbamus et confirmamus, ac omnes et singulos tam iuris quam facti defectus, si qui desuper intervenerint, supplemus. Necnon eisdem communitati et hominibus in dictis casibus, in quibus vigesima dumtaxat pars bonorum confiscanda erit, quod, datâ cautione idoneâ ad favorem fisci pro vigesima parte huiusmodi, quae ad eum, in eventum condemnationis rei, spectaret, bona descripta et inventariata in domo eiusdem rei per fiscum relinqui debeant; quo vero ad cautiones de non offendendo, ad quas parentes et consanguinei et affines delinquentis usque ad quartum gradum adstringuntur, quod illi consanguinei et affines, qui exceptionis² de iure sibi ad dictas cautiones excludendas competere adduxerint, ad ipsas cautiones praestandum adstringi non possint, nisi prout de iure; denique quod in bannimentis generalibus circa Statum Ecclesiasticum dicta communitas non censeatur comprehensa, nisi expresse fuerit nominata, apostolicâ auctoritate et tenore praedictis, concedimus et indulgemus. Decernentes, easdem praesentes litteras validas, firmas et efficaces existere et fore, dictisque expo-

nentibus plenissime suffragari, sicque per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ac quibusvis bannimentis et edictis generalibus huiusmodi, omnibusque illis quae in dictis litteris praedictorum nostrorum praedecessorum concessa sunt non obstare, ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die 1 iulii MDCXXXIV, pontificatus nostri anno XI. — M. A. MARALDUS.

§ 2. Cum autem, sicut pro parte dictorum hominum et communitatis nobis nuper expositum fuit, ipsi praemissa, quo firmiter subsistant et servantur exactius, apostolicae confirmationis nostrae robore communiri summopere desiderant: nos, specialem ipsis exponentibus gratiam facere volentes, et eorum singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censentes, supplicationibus eorum nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, praecursoris Urbani praedecessoris litteras, omniaque et singula in eis contenta et expressa, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, perpetuo approbamus et confirmamus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiciamus. Et ut statuta huiusmodi ad unguem quoad hanc partem in omnibus observentur, statuimus et perpetuo or-

Comunitas Beneventi eadem privilegia confirmari petiit a Clemente.

Annot. Pontifex.

¹ Ni malueris legendum *officiant* (N. T.).

² Forsan *exceptiones* (R. T.).

dinamus, necnon perpetuis futuris temporibus moderno et pro tempore existentibus dictae civitatis gubernatoribus dictâ auctoritate per praesentes praecipimus et mandamus, ut bannimenta praedicta ac quascumque alias ordinationes et constitutiones generales per Statum nostrum Ecclesiasticum hactenus edita et publicata, seu in posterum edenda et publicanda, in civitate huiusmodi publicari nequeant, minusque illa et illas debitae executioni mandari current et faciant, nisi eisdem bannimentis, ordinationibus et constitutionibus expresse civitas praedicta Beneventanâ monita fuerit, ac de illorum observantiâ et publicatione in dictâ civitate expressa fiat mentio, seu iisdem gubernatoribus, officialibus et ministris, aliisque quibuscumque de observantiâ et publicatione praedictis per peculiare mandatum nostrum et Romani Pontificis pro tempore existentis notificetur; itaut quaecumque huiusmodi in contrarium huius nostrae declarationis et sanctionis hactenus proposita, publicata et mandata, sive in posterum proponenda, publicanda et mandanda a quibuscumque quavis auctoritate praeter quam quod praemissum est, omnia et singula nullius roboris ac momenti, irrita, ac nulla, et tamquam non proposita, publicata et mandata esse et fore intelligantur.

Præseentium
litterarum firmitas.

§ 3. Decernentes, easdem praesentes litteras et in eis contenta quaecumque semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac S. R. E. cardinales, etiam de latere

legatos, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

§ 4. Non obstantibus nostrâ et Clementis praedecessoris, aliisque constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon omnibus et singulis quae in dicti Urbani praedecessoris litteris concessa sunt non obstando, ceterisque contrariis quibuscumque.

Contrarium derogatio.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die III maii MDCCXXXVIII, pontificatus nostri anno VIII.

Dat. die 3 maii 1738, pontif. anno VIII.

CCXXXII.

Confirmatio duorum Brevium Benedicti XIII, necnon nonnullarum conventionum inter provincias Galliae et Romanam Congregationis clericorum saecularium Doctrinae Christianae incolarum.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Ex iniuncto nobis caelitus apostolicae servitutis munere, illa, quae a Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris pro felici prosperoque christifidelium divinis obsequiis sub suavi religionis iugo mancipatorum statu conservando, illorumque religiosâ quiete firmiter stabilendâ, pie provideque emanasse noscuntur, ut solidiori robore perennent, apostolici muniminis nostri praesidio, cum id a nobis petitur, libenter constabilimus.

Prooemium.

§ 1. Emanavit nuper a Congregatione particulari nonnullorum venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium, nempe Francisci Barberini, Georgei Spinulae, Leandri Portiae, Antonii Xaverii Gentili, in locum bonae memoriae Curtii,

Congregatio particularis consilii sanctissimo pro confirmatione litterarum Benedicti XIII.

dum vixit, eiusdem S. R. E. cardinalis Orighi nuncupati, subrogati, ac Ioannis Antonii Guadagni, necnon venerabilis fratris Nicolai Xaverii archiepiscopi Athenarum, uti secretarii, cum voto pariter, in locum venerabilis illidem fratris Petri Aloysii episcopi Gippontensis secretarii, in causâ inter dilectos filios clericos saeculares Congregationis Doctrinae Christianae Avenionensis provinciae Romanae, ex unâ, et provinciarum Galliae, ex alterâ partibus, vertente, a nobis deputatâ, auditis partibus verbo et scripto informantibus, in secundâ causae huiusmodi propositione rescriptum: *Ad mentem*. Mens est, ut nobis consuleretur pro confirmatione quarumdam litterarum felicitis recordationis Benedicti PP. XIII praedecessoris nostri desuper in simili formâ Brevis super unione et incorporatione praedictae Congregationis Doctrinae Christianae regni Neapolis alteri Congregationi huiusmodi Avenionensi sub xxviii septembris MDCCXXV et xvi iunii respective diebus datis annorum MDCCXXVII editarum, quarum tenores¹ praesentibus pro expressis et insertis haberi voluit, plenius continetur², ac pro approbatione conventionum datarum a praedictis provinciae Galliae in sexdecim capitulis comprehensarum, ab omnibus clericis saecularibus de provinciâ Romanâ subscriptarum, prout in eorundem clericorum saecularium utriusque Congregationis nomine supplici libello nobis aliâs porrecto³ tenoris sequentis, videlicet:

Partes Papae
eidem suppli-
cant pro confir-
matione capitula-
rum initae
conventionis.

« Beatissime Pater. Exponunt Sanctitati vestrae Hiacythus De Benoît, procurator generalis Congregationis clericorum saecularium Doctrinae Christianae in Galliâ, et

Caetanus Cioffi Congregationis Doctrinae Christianae in Neapolis regno consistentis quam¹ praepositus generalis et tunc procurator electus provinciae Romanae seu Neapolitanae itidem Doctrinae Christianae, quod felicitis recordationis Benedictus XIII praedecessor vester eidem Congregationi, per litteras apostolicas in formâ Brevis die xxviii septembris MDCCXXV, Congregationem clericorum pariter saecularium Doctrinae Christianae in regno Neapolis consistentem univit et incorporavit. Ut autem in pontificatu vestro nostrum² decus huic unioni accedat maiorque firmitas, humillime deprecantur Sanctitatem vestram iidem oratores, ut eam pro suâ benignitate dignetur novo Brevi confirmare, sanando in primis quod in eâ infirmum esse potest, speciatim ex parte consensûs Congregationis Gallicanae, in qua³ posthac unanimi voce illarum consensum dedit in duobus ultimis capitulis generalibus Lutetiae Parisiorum celebratis, simulque approbando et apostolicâ auctoritate confirmando eiusmodi unionis condiciones sequentes, quae⁴ in eisdem capitulis statutae sunt de consensu concilii provincialis, rectorum et domorum omnium seu collegiorum quibus constat provincia Romana per ipsam unionem erecta.

CAPITULA.

I. Congregatio clericorum saecularium Doctrinae Christianae, quae in regno Neapolis consistit, Congregationi clericorum similiter saecularium Doctrinae Christianae in Galliâ perpetuo manebit unita et incorporata, itaut ex nunc et imposterum unica sit ex duabus unumque corpus, quod simpliciter Congregatio Doctrinae Christianae nuncupetur, venerabilem virum Caesarem De Bus fundatorem et parentem agnoscat, et constitutiones dictae Congregationis in Galliâ consistentis observet.

Unio Congregationis Neapolitanae cum Gallicana.

II. Provincia Romana, per unionem istam erecta, composita manebit e sex domibus,

Provincia Romana erecta.

¹ Edit. Main. legit *tenore* (R. T.).

² Comma *plenius continetur* non cohaeret praecedentibus (R. T.).

³ Male edit. Main. legit *porrectis* (R. T.).

¹ Forsan legendum iam pro *quam* (R. T.).

² Videtur legend. *nostrum* pro *nostrum* (R. T.).

³ Comma istud aliquâ eget correctione (R. T.).

⁴ Edit. Main. legit *qua* pro *quae* (R. T.).

domusque
attributae.

in quibus tota constabat Neapolitana Congregatio, nempe collegiis Neapolis, Laureti, Laureani, Sorbi, S. Ioannis in Galdo, atque Casertae, et octo domibus in Italia ad Congregationem Gallicanam pertinentibus et a provinciâ Avenionensi¹ ac collegiis civitatis Vetulae, Roncilionis, S. Martini, Ferentilli, Sospitelli, et Ipporegiae, quae quidem a provinciâ Avenionensi manebunt in perpetuum dismembrata, ac dictae provinciae Romanae attributa, sicuti et domus seu collegium Romae nuper erectum.

Provincia Romana nomen mittit ad capitulum generale etc.

III. Provincia Romana ad evitanda tot longorum itinerum incommoda et pericula, et ne totius Congregationis expensas pro aequali parte sustinere cogatur, neminem mittet ad capitulum generale, nec assistentem habebit apud generalem, nullumque officialem in definitorio generali, derogando quibuscumque contrariis. Quibus omnibus et singulis eadem Romana provincia sponte et libenter renunciat in perpetuum.

Per generalem visitanda quotlibet sexennio.

IV. Vivet haec provincia sub obedientiâ reverendi presbyteri generalis, qui sumptibus quidem totius Congregationis eam semel singulis sexenniis poterit, vel per se vel per alium electum, visitare iuxta constitutiones nostras: qui alius de hac provinciâ sumendus erit.

Penes quos eiusdem gubernium esse debeat.

V. Illius provinciae Romanae regimen erit penes vicarium generalem cum suis consiliariis, provincialem cum suis pariter consiliariis, et superiores locales qui rectores nuncupabuntur. Vicarii generalis quatuor erunt consilarii, duo scilicet assistentes, unus provinciae procurator, et secretarius unus. His quinque munere sexennali functuris componetur concilium, quod Italiae definitorium appellabitur. Provincialis duo erunt consilarii ordinarii, duobus aliis insuper assumptis de consensu Ordinariorum ubi de iudicio aut electione agendum erit.

De capitulis provincialibus et electione superiorum in eis peragendis.

VI. Singulis trienniis mense maio, incipiendo ab anno MDCCXXXII, quo loco et tempore indictum fuerit a provinciali, vicarii generalis nomine et iussu, capitulum provinciale celebrabitur, in quo eligentur provincialis, eius consilarii et denique rectores.

¹ Forsan deest *separatis* (R. T.).

In capitulo autem provinciali, quod immediate capitulo generali proximum fuerit, eligentur praeterea vicarius generalis eiusque consilarii, quorum et suae electionis ad sexennium duraturae confirmatio ad capitulum generale vel ad definitorium generale pertinebit, eo modo quo et provincialium et rectorum aliarum omnium provincialium electionis confirmatio. Provincialis vero, eius consiliariorum, item et rectorum electionum confirmatio¹, ad vicarium generalem eiusque definitorium pertinebit.

Verum si quis adsit vicarius generalis retroproximus, ille vicarii generalis erit primus consiliarius aut assistens natus. Similiter si quis adsit provincialis retroproximus, ille itidem in concilio provinciali erit primus consiliarius natus: quibus in casibus unus vicarii generalis assistens et unus provincialis consiliarius dumtaxat eligentur.

Vocales capituli provincialis.

VII. In capitulo provinciali vocem habebunt vicarius generalis, provincialis et rectores, qui tamen, ob maximam diversorum collegiorum inter se distantiam et reddituum tenuitatem, voci suae in capitulis provincialibus renunciare poterunt, vel per procuratorem suffragari, ita tamen ut duae tertiae partes vocalium iis intersint capitulis, et nemo quovis titulo vel praetextu plusquam duo suffragia habere et ferre possit.

Praeses eiusdem.

VIII. Capitulo provinciali sicut et definitorio Italiae praeerit vicarius generalis, eoque vel absente vel infirmo, vicarius generalis retroproximus, si adsit, istoque vel absente vel infirmo, assistens.

Quid agendum, unus ex definitorii vocalibus si sit absens.

IX. Si quem ex definitorii praesentis vocalibus abesse contigerit, deque gravi negotio agendum sit, alium in absentis locum sufficienter superstitibus definitorii vocales.

Quo pacto eligendus vocalis loco deficientis.

X. Si vero aliquis ex dicto definitorio vocalis, aut aliquis rector, aut provincialis, aut aliquis eius consiliarius obierit, aut quocumque modo defecerit, unum ex tribus a concilio provinciali extraordinario nominatis in demortui vel quocumque modo deficientis

¹ Male edit. Main. legit *confirmare* (R. T.).

locum eligent superstites definitorii vocales, ita tamen ut in hoc casu semper sit quinarium eligentium numerus, quem per electionem complebunt vocales praedicti.

Dispensatio a votis a quibus dari possit.
 xi. Dispensatio a votis dari non poterit nisi vel a Summo Pontifice aut a capitulo generali definitorio, iuxta Breve Apostolicum Alexandri VII datum xxvi septembris MDCLIX.

Provincia Romana nullum Breve ad universam Congregationem pertinet, postulare potest incullo capitulo generali.
 xii. In reliquis definitorium Italiae ad capitulum vel definitorium generale recurrere non tenebitur; nullum tamen Breve Apostolicum, quod ad universam Congregationem pertineat, postulare poterit, nisi iussu capituli generalis, imo neque aliud spectans ipsam Romanam provinciam, nisi approbante ipso capitulo generali aut generali definitorio.

Officiales eligendi post obtentum Breve confirmationis, unionis, erectionis etc.
 xiii. Post Brevis impetrationem conveniet praepositus provincialis cum suis consiliariis ordinariis, reverendo patre Caietano Cioffi, nuper vicario generali, tribusque rectoribus Romanae provinciae per eos assumendis; a quibus septem congregatis eligetur vicarius generalis cum suis definitoribus, duobus scilicet assistentibus, uno provinciae procuratore, et uno Italiae secretario. Istae autem electiones a reverendo patre generali eiusque definitorio confirmatae durabunt usque ad provinciale capitulum quod immediate capitulo generali proximum fuerit, in quo provinciali capitulo vicarius generalis ac eius definitores pro alio sexennio eligentur.

Quid agendum pro erectione novae provinciae.
 xiv. Quod si, benedicente Domino, alia in Italia aliquando sit erigenda provincia, non poterit omnino illud fieri nisi consulto et approbante capitulo generali, aut, si res moram non patiat, neque possit, sine detrimento, praedicti capituli tempus expectari, consulto et approbante generali definitorio cum consensu tamen consilii extraordinarii omnium Congregationis provinciarum et generalis capituli sequentis confirmatione.

Quo adveniente, ut nova scilicet provincia erigatur, eius provincialis cum suis consiliariis et domorum rectores in provinciae Romanae capitulo eligentur. Quod si tunc vicarius generalis eiusque definitores

suum sexennium impleverint, alia fiet electio et vicarii generalis et unius assistentis ex utraque provincia et procuratoris et secretarii, quorum alteruter ex nova provincia desumetur, ut sint duo pro qualibet provincia vocales.

xv. Deinceps tertio quoque anno in nova illa provincia celebrabitur capitulum provinciale eodem prorsus modo quo de provincia Romana dictum est. Praeterea mense aprili immediate ante capitulum generale habebitur in Italia congregatio seu conventus loco et tempore per vicarium generalem designatis, in qua congregatione seu conventu vocem habebunt idem vicarius generalis cum suis definitoribus, duoque provinciales, cum uno a qualibet provincia discreto, qui simul vicarium generalem et definitores eligent, et ea tractabunt quae ad bonum Italarum provinciarum gubernium pertinere dignoscerit, quae praedictae electiones et acta congregationis a capitulo generali vel definitorio generali confirmantur.

xvi. Si autem decursu temporis provincia tertia erigatur de consensu capituli vel definitorii generalis, ut supra dictum est, in dicta congregatione mense aprili celebranda eligetur novae provinciae provincialis cum suis consiliariis, et Italiae definitorio per electionem adiungatur tertius assistens, et fundationum promotor, itaut in praedicto Italiae definitorio sint duo pro qualibet provincia vocales. — G. DE BENOIT procurator generalis qui supra.

§ 2. Cum autem, sicut dilecti etiam filii Paulus Guignard procurator generalis Congregationis clericorum saecularium Doctrinae Christianae in Gallia, in locum dilecti etiam filii Iliacynthi de Benoît suffectus, et Caietanus Cioffi, ad praesens vicarius generalis provinciae Romanae eiusdem Congregationis, nobis nuper exponi fecerunt, ipsi praemissa, quo firmiter subsistant et inviolabiliter serventur, apostolicae confirmationis nostrae patrocínio communiri summo opere desiderant:

In ea quoque cogenda capitula provincialia singulis trienniis.

Quid agendum quoque pro erectione tertiae provinciae.

Eadem apostolica auctoritate roborari debent.

Anod. Clement.

§ 3. Nos, felici Congregationum praedictarum sic unitarum statui et commodis, quantum nobis ex alto conceditur, providere cupientes, specialemque eisdem exponentibus gratiam facere volentes, et eorum singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censentes, supplicationibus eorum nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, de memoratorum Congregationis particularis praedictae cardinalium consilio, praedictas memorati Benedicti praedecessoris binas litteras, ac in eis contenta quaecumque, nec non conventiones a provinciis Galliae Congregationis Doctrinae Christianae datas, et a Congregatione huiusmodi provinciae Romanae subscriptas, ut praefertur, hoc modo:

Cum quibusdam modificationibus.

Quoad III: possit provincia Romana praefata mittere ad capitulum generale vicarium generalem vel provincialem, vel assistentem eiusdem provinciae Romanae, aut etiam deputare unum ex provinciis Galliae praedictae;

Quoad IV: praepositus generalis semel singulis sexenniis possit visitare provinciam Romanam per se ipsum vel per alium graduatum, qui tamen sit de dictâ provinciâ Romanâ: haec tamen visitatio durare non possit ultra sex menses;

Quoad VI: electio vicarii generalis et consiliariorum notificanda erit praeposito generali;

Quoad XII: capitula praefatarum conventionum: nil novum postulari possit ab hac Sanctâ Sede quod pertineat vel ad universam provinciam Romanam vel ad universam Congregationem Doctrinae Christianae praedictae, nisi certiorato prius illius praeposito

generali, vel definitorio generali, et omnia supradicta servanda erunt, etiamsi in Italiâ novae erigantur provinciae:

Auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, confirmamus et approbamus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis robur adicimus, ac omnes et singulos iuris et facti defectus, si qui desuper quomodolibet intervenerint, seu intervenisse dici vel praetendi possit, dictâ auctoritate sanamus.

§ 4. Decernentes pariter, ipsas praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quodcumque spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab illis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Praesentium litterarum firmitas.

§ 5. Non obstantibus omnibus et singulis illis quae in memoratis Benedicti praedecessoris binis litteris concessa sunt non obstare, necnon, quatenus opus sit, dictarum provinciarum etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Contraria tolluntur.

Transumptis
adhibenda
des.

§ 6. Volumus autem quod praesentium litterarum transumptis, seu¹ impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo alicuius personae in ecclesiastica dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides ubique habeatur, quae praesentibus ipsis haberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die ix aprilis² MDCCXXXVIII, pontificatus nostri anno VIII.

Dat. die 9 aprilis 1738, pontif. anno VIII.

CCXXXIII.

Investitura regni utriusque Siciliae et Hierusalem pro serenissimo Carolo Borbonio Infante Hispaniarum.

Clemens Episcopus
servus servorum Dei,
ad perpetuam rei memoriam.

Prooemium.

Ad excelsum pastoralis officii culmen, meritis licet imparibus, Eo disponente sublevati, qui cunctis imperat, et cui omnia obediunt, sicuti curis urgemur assiduis ut apostolicae sollicitudinis partes ad tutamen et incrementum dominici gregis nobis caelitus commissi, quantum cum Domino possumus, diligentius intendamus, sic etiam, rebus et temporibus itaulantibus, saepe adstringimur ad bona temporalia S. R. E. oculos circumspeditionis et sollicitudinis nostrae dirigere, ut dominiorum et regnorum temporalia iura Sedis Apostolicae sarcta semper et tecta tueamur, et nobis eidemque Sedi debitam dictorum dominiorum et regnorum subiectionem more praedecessorum nostrorum iustâ et opportunâ ratione semper et perpetuo servare valeamus.

¹ Videtur addendum more solito *exemplis, etiam* (R. T.).

² Ex ordine bullarum leg. foret *mai* (R. T.).

§ 1. Dudum siquidem felicitis recordationis Iulius Papa II praedecessor noster regnum Siciliae et Hierusalem cum totâ terrâ quae est citra Pharum usque ad confinia terrarum S. R. E., civitate nostrâ, tunc suâ, Beneventanâ cum eius territorio et pertinentiis dumtaxat exceptâ, ad ius et proprietatem eiusdem Ecclesiae pertinens, et tunc ad ipsum praedecessorem et dictam Ecclesiam devolutum, quovis modo et ex quavis causâ illud ad eandem Ecclesiam devolutum esset, aut aliâs eius dispositio ad praedictum praedecessorem pertineret, cum omnibus iuribus et pertinentiis suis, clarae memoriae Ferdinando Aragoniae et utriusque Siciliae ac Hierusalem regi, pro se suisque in dicto Aragoniae successoribus et haeredibus, tam masculis quam feminis, ex eo rectâ lineâ descendantibus, certo tunc expresso modo natis et nascituris, in feudum perpetuum, pro annuo censu, et sub diversis conditionibus, modis, formis, adiectionibus, promissionibus, clausulis, cautelis, voluntatibus et ordinationibus etiam tunc expressis, sine tamen praeiudicio iuris ipsi Ferdinando regi aliâs in eodem regno forsân competentis, cui tunc noluit derogari, de fratrum suorum consilio pariter et assensu, et ex certâ scientiâ, ac de apostolicae potestatis plenitudine, concessit et elargitus fuit, dictam civitatem Beneventanam cum eius territorio, districtu et pertinentiis, per ipsum praedecessorem seu Romanum Pontificem distinctis seu distinguendis, cum eorum incolis, prout illam sibi dudum antea praedicta Ecclesia retinuerat et reservaverat, sibi et Sedi Apostolicae specialiter reservando, prout in ipsius praedecessoris desuper confectis litteris, in quibus idem praedecessor inter alia voluit, quod dictus Ferdinandus rex et

Similis investitura a Iulio II data Ferdinando regi Aragoniae.

sui in dicto regno Siciliae cum terrâ citra Pharum haeredes et successores darent praedecessori et Ecclesiae praedictis eorum privilegium aureâ bullâ bullatum, in quo proprio iuramento faterentur et recognoscerent expresse regnum Siciliae et Hierusalem, et totam eorum terram quae est citra Pharum usque ad confinia eiusdem Ecclesiae, exceptâ civitate Beneventanâ praedictâ cum territorio, districtu et pertinentiis suis, ex solâ gratiâ et merâ liberalitate Sedis et praedecessoris praedictorum sibi suisque haeredibus et successoribus fuisse concessum, ac eos recepisse et tenere regnum Siciliae et terram huiusmodi a praedecessore et Ecclesiâ praedictis, sub pactis, modis et conditionibus tunc ut praefertur expressis, prout in litteris desuper confectis plenius continetur.

Sub eadem conditionibus a Leone X concessa Carolo V, addita lege consignandi iudicio delinquentes ad alteram partem confugiendos.

§ 2. Et deinde pie memoriae Leo Papa X, etiam praedecessor noster, regnum Siciliae cum terrâ citra Pharum clarae memoriae Carolo Romanorum imperatori semper augusto, tunc Romanorum et Hispaniarum regi catholico, in imperatorem electo, in feudum, eisdem modo et formâ, quibus per praedictum Iulium praedecessorem praedicto Ferdinando regi concessum fuerat, et sub praedictis, quae tunc per eandem Sedem remissae non apparent, et certis aliis tunc expressis conditionibus, de novo concessit, et de eo etiam ipsum Carolum imperatorem investivit, et dictus Carolus imperator, per quondam Ioannem Emanuelem aurei velleris equitem tunc in humanis agentem, et ipsius Caroli imperatoris apud Leonem et Sedem praedictam oratorem et procuratorem specialem, promisit, et se et omnes regnum ipsum Siciliae vigore il-

lius concessionum tam per Iulium quam per Leonem praedecessoris huiusmodi factarum pro tempore obtinentes obligavit ad inviolabiliter observandum et adimplendum omnia in litteris Iulii praedecessoris contenta, super quibus de dispensatione aut illorum remissione per eandem Sedem non constaret seu appareret, et solvendum singulis annis in perpetuum Camerae Apostolicae septem mille ducatos auri de Camera in festo B. Petri ultra solitum censum parafreni albi pro recognitione veri et directi dominii ipsius regni Siciliae, et ad Leonis praedecessoris et Camerae praedictorum requisitionem delinquentes in terris eidem Ecclesiae mediate vel immediate subiectis, ad dictum regnum et illius civitates, terras et loca confugientes, capi, et ad Urbem vel alium locum remitti faciendum, sub poenis in litteris Iulii praedecessoris huiusmodi contentis, dummodo idem Leo praedecessor et successores sui Romani Pontifices ac praedicta Camera ad ipsius Caroli imperatoris et officialium suorum requisitionem delinquentes in terris et locis dicti regni, ad terras et loca Ecclesiae confugientes, pariter ad eos remitterent, prout in instrumento publico desuper confecto et in certis ipsius Leonis praedecessoris litteris de verbo ad verbum inserto plenius continetur.

§ 3. Ac successive recolendae memoriae Iulius Papa III praedecessor etiam noster, praeviâ renunciatione dicti Caroli Romanorum imperatoris semper augusti, dictum regnum Siciliae et Hierusalem cum totâ terrâ citra Pharum usque ad confinia Romanae Ecclesiae, exceptâ civitate Beneventanâ cum eius territorio et districtu, ut supra, inclitae memo-

A Iulio III data Philippo II regi.

1 Edit. Main. legit *remissa* (R. T.).

1 Edit. Main. legit *remissa* (R. T.).

riae Philippo II tunc Angliae regi et Hispaniarum principi pro se suisque haeredibus et successoribus Aragoniae regibus, tam masculis quam feminis, ex eo rectâ lineâ descendantibus, natis et nascituris, ac aliis personis in concessionibus Iulii et Leonis comprehensis, et per eos vocatis, in feudum perpetuum, pro solito annuo censu septem mille ducatorum auri de Camerâ et unius parasfreni albi solvendo, et sub conditionibus, modis, formis, adiectionibus, promissionibus, clausulis, cautelis, voluntatibus et ordinationibus in litteris Iulii et concessione Leonis praedecessorum huiusmodi contentis, quae per eandem Sedem remissae¹ non apparerent, similiter concessit, et de eo ipsum Philippum regem investivit, et dictus Philippus rex per quondam Ferdinandum Franciscum Avalos de Aquino marchionem Piscariae tunc in humanis agentem, et ipsius Philippi regis apud Iulium praedecessorem et Sedem praedictos procuratorem specialem, obedientiam, homagium et iuramentum fidelitatis consuetum praestitit, prout in ipsius Iulii praedecessoris litteris plenius continetur. Quae omnia idem Philippus rex successive per Bullam suam auream sub datum Bruxellis anno Domini MDLV die 1 octobris manu suâ subscriptam approbando et acceptando confessus fuit et recognovit.

¹ A Clemente VIII data Philippo III.

§ 4. Postea vero felicitis recordationis Clemens Papa VIII praedecessor noster, eodem Philippo II viam universae carnis ingresso, regnum ipsum Siciliae et Hierusalem cum totâ terrâ citra Pharum usque ad confinia terrarum eiusdem Romanae Ecclesiae, exceptâ civitate Beneventanâ cum eius territorio, districtu et pertinentiis per se seu eius et nostros praedecessores Romanos Pontifices distinctis, ac eorum incolis, quam

sibi et eidem Ecclesiae specialiter relinquit, clarae memoriae Philippo III etiam Hispaniarum regi catholico pro se suisque haeredibus et successoribus Aragoniae regibus, tam masculis quam feminis, ex eo rectâ lineâ descendantibus, natis et nascituris, et aliis personis in concessionibus utriusque Iulii et Leonis praedecessorum huiusmodi comprehensis, et per eos vocatis, in feudum perpetuum pro solito annuo censu septem mille ducatorum similium et unius parasfreni albi ut praefertur solvendo, et sub conditionibus, modis, formis, adiectionibus, promissionibus, clausulis, cautelis, voluntatibus et ordinationibus, in litteris utriusque Iulii et concessione Leonis praedecessorum huiusmodi contentis, quorum remissionem per Sedem praedictam factam fuisse non apparet, praestitis tamen prius eidem Clementi praedecessori et Sedi et Ecclesiae praedictis nomine ipsius Philippi III regis per bonae memoriae Antonium de Cardona et Corduba, ducem Svessae, Sornae et Vahenae, comitem Labrae et Palamos, vicecomitem de Ibregar, et ipsius Philippi III regis consanguineum et consiliarium, apud eundem Clementem praedecessorem et Sedem praedictam oratorem et procuratorem ac mandatarium suum specialem, et per eundem Clementem admissis, obedientiâ atque homagio ac iuramento fidelitatis, sub certâ tunc expressâ formâ pariter concessit et elargitus fuit, et regnum ipsum Philippo III regi, modo et formâ praemissis, infeudavit, prout in praedicti Clementis praedecessoris sub plumbo sub datum Romae apud S. Marcum anno Incarnationis dominicae MDXCIX, v idus septembris, pontificatus sui anno VIII, expeditis litteris plenius continetur.

§ 5. Subinde autem, defuncto Philippo III, Gregorius XV praedecessor etiam

¹ A Gregorio XV concessa Philippo IV.

noster idem regnum Siciliae et Hierusalem cum totâ terra praedictâ citra Pharam usque ad confinia terrarum Ecclesiae Romanae, exceptâ civitate Beneventanâ cum eius territorio, districtu et pertinentiis per se seu eius et nostros praedecessores Romanos Pontifices distinctis, ac loco Pontiscurvi eiusque territorio, quae sibi et eidem Ecclesiae specialiter retinuit, clarae memoriae Philippo IV etiam Hispaniarum regi catholico pro se suisque successoribus Aragoniae regibus, tam masculis quam feminis, ex eo rectâ lineâ descendentibus, natis et nascituris, ac aliis personis in concessione utriusque Iulii et Leonis, ac Clementis praedecessorum huiusmodi comprehensis, et per eos vocatis, in feudum perpetuum pro solito annuo censu septem mille ducatorum similium et unius parafreni albi solvendo, ut supra, et sub conditionibus, modis, formis, adiectionibus, promissionibus, clausulis, cautelis, voluntatibus et ordinationibus in litteris dictorum Iulii II et III, ac Clementis, quarum remissionem per Sedem Apostolicam factam fuisse non appareret, praestitis tamen prius eidem Gregorio praedecessori et Sedi et Ecclesiae praedictis nomine ipsius Philippi IV regis per quondam Franciscum de la Cueva ducem de Albuquerque, apud eum et Sedem praedictam oratorem et procuratorem ac mandatarium suum specialem, et per eundem Gregorium admissâ obedientiâ atque homagio et iuramento fidelitatis, sub certâ tunc expressâ formâ concessit et elargitus fuit, ac regnum huiusmodi praedicto Philippo IV regi, modo et formâ praemissis, infeudavit, prout in praedicti Gregorii XV praedecessoris sub plumbo sub datum Romae apud S. Petrum v kalendas decembris MDCXXI sui pontificatus anno 1 expe-

ditis litteris plenius continetur. Quae omnia idem Philippus IV rex successive per Bullam suam auream sub datum Matrili v novembris MDCXXII manu suâ subscriptam approbando et ampliando confessus fuit et recognovit.

§ 6. Postremo vere, dicto Philippo IV rege ab humanis exempto, pia memoriae Alexander VII praedecessor itidem noster praedictum regnum Siciliae et Hierusalem cum totâ terrâ citra Pharam usque ad confinia terrarum eiusdem Ecclesiae Romanae, exceptâ praedictâ civitate Beneventanâ cum eius territorio et districtu et pertinentiis per se seu Romanos Pontifices distinctis, unâ cum terrâ Pontiscurvi eiusque territorio, quae sibi et eidem Ecclesiae specialiter reservavit, clarae memoriae Carolo II Hispaniarum regi catholico, tunc in minori aetate constituto, pro se suisque haeredibus et successoribus Aragoniae regibus tam masculis quam feminis ex eo rectâ lineâ descendentibus, natis et nascituris, ac aliis personis in concessionibus utriusque Iulii, Leonis, Clementis ac Gregorii praedecessorum huiusmodi comprehensis, et per eos vocatis, in feudum perpetuum, pro solito annuo censu septem mille ducatorum similium et unius parafreni albi ut praefertur solvendo, et sub conditionibus, modis et formis, adiectionibus, promissionibus, clausulis, cautelis et ordinationibus in litteris utriusque Iulii, Clementis ac Gregorii et concessione Leonis praedecessorum huiusmodi contentis, quarum remissionem per Sedem praedictam factam fuisse non appareret, concessit et elargitus fuit, ac regnum ipsum eidem Carolo regi infeudavit, eumque de illo investivit; et dictus Carolus rex, mediante clarae memoriae Mariannâ ab Austria reginâ Hispaniarum eius matre, tutrice atque gubernatrice, per bonae memoriae

Ab Alexan-
dro VII data
Carolo II regi.

Fridericum, dum viveret, tituli S. Petri ad Vincula cardinalem Sfortia procuratorem et mandatarium suum specialem, eidem Alexandro praedecessori ac Sedi et Ecclesiae praedictis obedientiam, homagium et iuramentum fidelitatis praestitit, prout in ipsius Alexandri praedecessoris litteris pariter sub plumbo apud S. Mariam Maiorem anno Incarnationis dominicae MDCLXVI, XIII kalendas iunii, pontificatus sui anno XII emanatis uberius continetur. Quae omnia idem Carolus II rex postmodum tam per suam Bullam auream sub datum Matrili XXIX martii MDCLXVII a memorata Marianna regina eius matre, tutrice et gubernatrice subscriptam, quam per aliam similem Bullam sub datum pariter Matrili VII aprilis MDCLXVI, propria ipsius Caroli regis interim maioris ac sui iuris effecti manu signatam, approbando et ampliando confessus fuit et recognovit.

Defuncto Carolo II iustis de causis Clemens XI abstulit a concedenda investitura.

§ 7. Anno autem MDCC, dicto Carolo II rege sine liberis e vivis crepto, Europa ferme tota inde in partes divisa diuturno bello conflagravit, ac felicitis recordationis Clemens Papa XI praedecessor etiam noster, iustis et gravissimis causis adductus, ab infeudatione atque investitura dicti regni Siciliae et Hierusalem cum tota terra citra Pharum concedenda, tametsi pluries oblato etiam censu praedicto ad id requisitus fuisset, inter saevientis belli eiusmodi motus supersedendum esse duxit, salvis tamen et illaesis remanentibus iuribus sibi et dictae Sedi super eodem regno competentibus, quae per plura chirographa propria eius manu signata, in quibus itidem cautum fuit tempus et tempora non currere, luculenter praeservavit.

Innocentius vero XIII eam dedit Carolo VI romano imperatori.

§ 8. Postmodum vero pia memoriae Innocentius XIII pariter praedecessor noster praedictum regnum¹ Siciliae et Hierusalem cum tota terra citra Pharum

usque ad confinia terrarum eiusdem Ecclesiae Romanae, excepta civitate Beneventana cum eius territorio et districtu et pertinentiis, per se seu Romanos Pontifices distinctis, una cum terra Pontiscurvi eiusque territorio, quae sibi et eidem Ecclesiae specialiter reservavit, carissimo in Christo filio nostro Carolo VI Hispaniarum catholico et Romanorum regi in imperatorem electo, qui in eodem regno Siciliae et Hierusalem ac tota terra citra Pharum successerat et pacifice possidebat, pro se suiique haeredibus et successoribus tam masculis quam feminis ex eo recta linea descendentes, natis et nascituris, servata inter ipsos descendentes praerogativa sexus, ita quod masculis ex masculis, omnibus feminis earumque descendentes maribus et feminis, cuiuscumque lineae essent aut gradus, semper praeserrentur, in feudum perpetuum pro solito annuo censu septem mille ducatorum similium et unius parafroni albi ut praesertur solvendo, et ceteroquin in omnibus et per omnia sub conditionibus, modis et formis, adiectionibus, promissionibus, clausulis, cautelis, voluntatibus et ordinationibus in litteris utriusque Iulii, Clementis, Gregorii ac Alexandri et concessione Leonis praedecessorum huiusmodi contentis, quarum remissionem per Sedem praedictam factam fuisse non appareret, concessit et elargitus fuit, ac regnum ipsum eidem Carolo regi infeudavit, ipsumque de illo investivit, praestitis tamen prius eidem Innocentio praedecessori et Sedi et Ecclesiae praedictis nomine ipsius Caroli regis per bonae memoriae Michaëlem Fridericum, dum viveret, tituli S. Sabinae cardinalem de Althann, procuratorem et mandatarium suum specialem, et per eundem Inno-

¹ Edit. Main. legit *regum* (R. T.).

centium admissâ obedientiâ atque homagio et iuramento fidelitatis, prout in ipsius Innocentii litteris sub plumbo, apud S. Mariam Maiorem, anno Incarnationis dominicae MDCCXXII, v idus iunii, pontificatus sui anno II expeditis plenius continetur. Quae omnia idem Carolus rex deinde per Bullam suam auream sub datum Luxemburgii die XVI mensis maii anno a Nativitate Domini MDCCXXIII manu suâ subscriptam approbando et ampliando confessus fuit et recognovit.

Cardinalis de Acquaviva nomine Caroli Infantis Hispaniarum regnum Neapolitanum iam pacifice obtinens iuramentum fidelitatis Sedi praestat. Investituram quo petit.

§ 9. Verum, cum annis proxime elapsis inter catholicos principes non sine gravi animi nostri dolore repentinum et luctuosum in Italiâ iterum insurrexerit bellum longe lateque etiam in aliis Europae partibus diffusum, adeout inter acerbissimos belli motus Italia pene tota misere exarserit, cumque per hoc bellum, et inde subsequuta, dilectus in Christo filius noster Carolus Borbonius Hispaniarum Infans, praedicti regni nostri Siciliae cum totâ terrâ citra Pharum usque ad confinia terrarum Ecclesiae, armis a patre Philippo Hispaniarum rege sibi traditis et donatis, integram et pacificam possessionem superioribus annis obtinuerit, et etiam nunc, nemine contradicente, retineat, volens modo dictus Carolus debitam obedientiam ac fidelitatis et homagii iuramentum in manibus nostris praestare, et ea quae ratione ipsius feudi tenetur adimplere, dilectum filium nostrum Troianum tituli S. Caeciliae cardinalem de Acquaviva procuratorem et mandatarium suum specialem fecit, constituit et deputavit specialiter et expresse ad se, nomine praedicti Caroli, quoties opus fuerit, coram nobis humiliter et cum omni reverentiâ praesentandum, ac a nobis investituram regni huiusmodi petendam, eamque acceptan-

dam, necnon nobis nomine eiusdem Caroli pro praedicto regno Siciliae et Hierusalem cum totâ terrâ citra Pharum debitam obedientiam exhibendam ac etiam fidelitatis et homagii iuramentum ratione feudi dicti regni praestandum, quod requisitum necessarium et opportunum foret ex ipsius feudi naturâ, et quemadmodum illud praestitum fuerat a Carolo Hispaniarum et Romanorum rege in imperatorem electo, atque ab aliis praedecessoribus suis in eodem regno solitum fuerat praestari, et dictus Troianus cardinalis de Acquaviva, procurator, in vim constitutionis et deputationis huiusmodi, ad praemissa omnia et singula nomine praedicti Caroli peragenda et exequenda, coram nobis humiliter et cum omni reverentiâ sub die IV mensis maii currentis anni se praesentavit, et in generali venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium Congregatione, quae sub hac die XII eiusdem mensis maii coram nobis in palatio nostro apostolico Montis Quirinalis ad hoc specialiter convocata et habita fuit cum pluribus archiepiscopis, episcopis, aliisque praelatis ibi assistentibus, nomine ipsius Caroli, nobis et Sedi Apostolicae ac Romanae Ecclesiae praedictis obedientiam atque homagium et iuramentum fidelitatis sub formâ inferius adnotatâ praestiterit:

§ 10. Nos, eiusdem regni Siciliae quieti ac securitati providere volentes, considerantesque ipsius Caroli erga nos et Romanam Sedem devotionem eiusque haereditariam pietatem et regnandi consuetudinem, quod populos sibi commissos sciet et völet pacis felicitate et iustitiae cultu confovere, ac nos et Romanam Ecclesiam ipsius regni proprietarios ac directos dominos gratâ devotione et fide sincerâ recognoscere; nec diutius volentes a concessione in-

Concedit Clementis Pontifex de consilio cardinalium.

vestiturae et infeudationis praedictae ac directi domini nostri usu et exercitio abstinere, sed potius, novis ac iustis causis ita suadentibus, praesentique rerum et temporum statu accurate perpenso, Romanorum Pontificum praedecessorum nostrorum vestigiis inhaerendo, nostra et eiusdem Sanctae Sedis iura per novam concessionem huiusmodi asserere et conservare intendentes, habitâ super his cum venerabilibus fratribus nostris S. R. E. cardinalibus prius in consistorio, et deinde etiam in aliâ simili congregatione generali ad hoc nominatim habitâ sub die ix praedicti mensis maii in eodem palatio nostro, ibique mandato procurationis ipsius Caroli publice et altâ voce perlecto et diligenter inspecto, deliberatione maturâ, de ipsorum fratrum consilio pariter et assensu, et ex certâ nostrâ scientiâ et de apostolicae potestatis plenitudine, in nomine Patris et Filii et Spiritus Sancti obedientiam ab eodem cardinali de Acquaviva procuratore nomine ipsius Caroli nobis et Sedi et Camerae praedictis ut praemittitur praestitam, itemque homagium et iuramentum fidelitatis huiusmodi laeto atque hilari animo admittimus, ac regnum ipsum Siciliae et Hierusalem cum totâ terrâ praedictâ citra Pharum usque ad confinia terrarum eiusdem Ecclesiae Romanae, exceptâ civitate Beneventanâ cum eius territorio et districtu et pertinentiis per nos seu Romanos Pontifices distinctis, ac eorum incolis, quam nobis, prout illam sibi dudum praedicta Ecclesia specialiter retinuit et reservavit, harum serie, unâ cum terrâ Pontiscurvi eiusque territorio, nobis et eidem Ecclesiae specialiter reservamus, eidem Carolo Borbonio Hispaniarum Infanti pro se suisque haeredibus et successoribus masculis per lineam masculinam descendantibus,

in perpetuum, cum hoc quod inter dictos descendentes masculos servetur semper primogeniturae ratio, et praevaleat praerogativa lineae, iisque deficientibus, et eiusdem Caroli lineis masculis extinctis, succedant ceteri eiusdem Caroli fratres ex carissimis in Christo filiis Philippo et Elisabetha Hispaniarum rege et reginâ catholicis utrinque coniunctis nati et nascituri, eorumque descendentes masculi per lineam masculinam, servatâ itidem inter ipsos fratres eorumque descendentes masculos semper lege primogeniturae et lineae praerogativâ, quibus etiam deficientibus lineis masculis, praedicti Caroli suorumque fratrum utrinque coniunctorum, iuxta ordinem et dispositionem iuris, veniant et succedant feminae superstites, servatâ etiam inter ipsarum descendentes et lineas praerogativâ sexus et lineae cum ordine primogeniturae, in feudum perpetuum, pro solito annuo censu septem mille ducatorum similium et unius parafreni albi ut praesertur solvendo, et ceteroquin in omnibus et per omnia sub conditionibus, modis et formis, adiectionibus, promissionibus, clausulis, voluntatibus et ordinationibus in litteris utriusque Iulii, Clementis, Gregorii, Alexandri et Innocentii atque concessione Leonis praedecessorum huiusmodi contentis, quarum remissionem per nos et Sedem praedictam factam fuisse non apparebit, omni meliori quo possumus modo concedimus et elargimur, ac regnum ipsum dicto Carolo, modo et formâ praemissis, infeudamus, eumque de illo per ipsius Troiani cardinalis de Acquaviva procuratoris ad osculum pedum nostrorum admissionem investimus.

§ 11. Volentes et intendentes, ut infra annum a datâ praesentium computandum idem Carolus rex privilegium

Carolo regi inuncta lex declarandi, se regnum huiusmodi obtinere ex

merit liberalitate Sedis Apostolicae.

suum bulla aurea bullatum, in quo proprio iuramento fateatur et recognoscat expresse regnum Siciliae et Hierusalem, ac totam terram eorum quae est citra Pharum usque ad confinia terrarum ipsius Ecclesiae Romanae, exceptis civitate Beneventana et loco Pontiscurvi cum illius territoriis, districtibus et pertinentiis, quae eidem Ecclesiae remaneant, praedicto Carolo regi suisque haeredibus et successoribus dicti regni Siciliae regibus ex sola gratia et mera liberalitate Sedis Apostolicae et nostra fuisse concessa, eosque recepisse et tenere regnum Siciliae et terram huiusmodi a nobis et dicta Romana Ecclesia sub pactis, modis et conditionibus supradictis, nobis seu Romano Pontifici pro tempore existenti dare et tradere teneatur.

Reservatio iurium quorumcumque.

§ 12. Per praemissa autem non intendimus iuribus quibuscumque in aliquo praeiudicare.

Condonantur regi Caroli census decursi et non soluti.

§ 13. Demum, ut idem Carolus rex eo magis ad sinceram illius quam in nos et hanc Sanctam Sedem profitetur devotionis et observantiae debita argumenta nobis et eidem Sedi exhibenda excitetur, quo nos et Romana Ecclesia in eum propensiores et munificentiores invenerit, scientiam et potestatis plenitudine paribus, ipsi Carolo regi omnes et singulos census ratione supradicti regni hactenus decursos, et non solutos, ex speciali dono gratiae liberaliter remittimus et condonamus, ipsumque de illis absolvimus, quietamus et plenarie liberamus, et ex causa dictorum censuum hucusque decursorum a quocumque nulloatenus molestari posse decernimus, dummodo tamen in proximo festo S. Petri, et sic successive, perpetuis futuris temporibus, singulis annis ipse Carolus rex, eiusque haeredes et successores, alique vocati, praedictum censum

nobis et successoribus nostris cum solitis solemnitatibus integre persolvere omnino debeant.

§ 14. Forma autem iuramenti per dictum cardinalem praestiti talis est: « Ego Troianus cardinalis de Acquaviva, serenissimi domini Caroli Hispaniarum Infantis et Dei gratia regis Siciliae et Hierusalem cum tota terra citra Pharum procurator ad haec omnia specialiter constitutus speciali mandato per dictum Carolum regem sub die III mensis maii currentis anni subscripto, plenum homagium, ligium et vassallagium nomine dicti Caroli regis faciendum vobis beatissimo domino nostro domino Clementi XII et Ecclesiae Romanae pro regno Siciliae et Hierusalem ac tota terra quae est citra Pharum usque ad confinia terrarum ipsius Ecclesiae, excepta civitate Beneventana et toto territorio et omnibus districtibus et pertinentiis secundum antiquos fines territorii et pertinentiarum et districtus civitatis eiusdem per Romanos Pontifices distinctos, et in posterum distinguendos, in animam dicti serenissimi regis principalis mei iuro, quod idem serenissimus dominus Carolus ab hac hora in antea fidelis et obediens erit B. Petro, et vobis domino Clementi XII, vestrisque successoribus Romanis Pontificibus canonice intrantibus, sanctaeque R. E. Apostolicae; non erit in consilio, consensu vel facto ut vitam perdatis seu perdant, aut membrum, seu capiamini vel capiantur mala captione; consilium vero, quod sibi credituri estis per vos aut nuncios vestros vel per litteras, ad vestrum vel eorum damnum scienter nemini pandet; et si sciverit fieri vel tractari seu procurari aliquid quod in vestrum vel eorum damnum cedat, illud pro posse impediet, et si hoc impedire non poterit, illud vobis vel eis significare curabit; Papatum

Forma iuramenti praestiti a cardinale de Acquaviva.

Romanum, et regalia S. Petri tam in regno Siciliae praedicto quam alibi consistentia, adiutor vobis vel eis erit ad defendendum vel retinendum, ac recuperandum et recuperata manutenendum contra omnem hominem; universas et singulas condiciones supradictas, et quas-cumque alias in litteris felicis recordationis Iulii Papae II super ipsius regni et terrarum infeudatione sive investitura confectis contentas, ac omnia et singula quae in eis continentur, plenarie adimplebit et inviolabiliter observabit, et nullo unquam tempore veniet contra ea, nec procurabit per se, vel alium, seu alios, quoquomodo, ut eligatur vel nominetur in regem et imperatorem Romanum, seu regem Theutoniae, aut dominum Lombardiae, seu Thusciae; et si electionem vel nominationem ad imperium vel regnum Romanum, seu regnum Theutoniae, vel dominium Lombardiae et Thusciae, aut maioris partis eorumdem, de eo celebrari contingeret, nullum huiusmodi electioni seu nominationi assensum praestabit, nec intromittet se modo aliquo de eorum vel alicuius eorum regimine; nec de civitate Beneventana, et suis territoriis, districtibus et pertinentiis, seu Campaniâ, neque de Maritimâ, ducatu Spoletano, ducatu Urbini, neque Marchiâ Anconitanâ, Patrimonia B. Petri in Thusciâ, Massâ Trebariâ, Romandiolâ, almâ Urbe, civitatibus Perusinâ, civitatibus Castelli, Bononiensi, Ferrariensi, Avenionensi et comitatu Venaissino, seu aliis terris quibuscumque vestris et feudis ipsius Ecclesiae ubilibet constitutis, ex successione vel legato, seu donatione aut venditione, seu alio quovis titulo vel contractu, nihil unquam sibi acquireret seu vindicabit, vel poterit acquirere seu quomodolibet vindicare, et nihil unquam recipiet vel habebit seu retinebit, vel poterit reci-

pere, habere vel etiam retinere in illis, nec ullam potestariam, capitaniam vel rectoriam nullumque aliud officium recipiet seu recipere poterit in eisdem, seu ipsorum aliquo, nec etiam occupabit vel occupari permittet seu faciet praemissa vel parte aliqua eorumdem, neque illam offendat aut molestabit, neque etiam Romanam Ecclesiam quoquo modo, sub censuris poenisque spiritualibus et temporalibus in conditionibus et infeudatione praedictis contentis, quas hic haberi volo in singulis suis partibus aliâs pro specificis expressis et repetitis, schismatico aut haeretico cuicumque vel a fide devio ab ipsâ Ecclesiâ praeciso, eiusque sequacibus et dantibus eis auxilium, consilium vel favorem, non dabit quovis modo, per se, vel alium, seu alios, directe vel indirecte, publice vel occulte, auxilium, consilium vel favorem, nec ab aliis, quantum in eo erit, si impediri poterit, dari permittet, sed eos, iuxta posse suum, donec convertant¹, persequetur et impugnabit. Et ulterius promitto quod ipse Carolus rex infra annum omnia et singula mediante aureâ Bullâ ratificabit. Sic dictum Carolum regem Deus adjuvet, et haec sancta Dei Evangelia. — Iuravit², ut supra. — Ego TROIANUS card. de ACQUAVIVA ».

§ 15. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrae reservationis, admissionis, concessionis, elargitionis, infeudationis, investiturae, voluntatis vel intentionis infringere, vel ei ausu temerario contraire; si quis autem hoc attentare praesumpserit, indignationem omnipotentis Dei ac beatorum Petri et Pauli apostolorum eius se noverit incursurum.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, anno Incarnationis dominicae

¹ Forsan convertantur (R. T.).

² Forsan legendum Iuravi (R. T.).

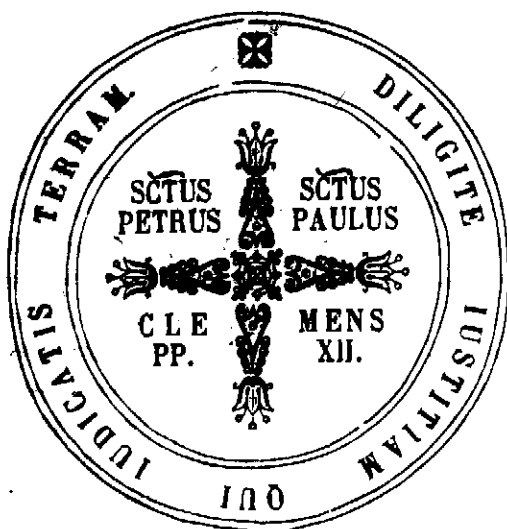
Clausulae.

MDCCXXVIII, IV idus maii, pontificatus
nostri anno VIII.

Dat. die 10 maii 1728, pontif. anno VIII.

✠ EGO CLEMENS

CATHOLICAE ECCLESIAE EPISCOPUS.



† Ego Franciscus episcopus Ostiensis cardinalis Barberinus decanus.

† Ego Petrus episcopus Portuensis cardinalis Ottobonus S. R. E. vicecancellarius.

† Ego episcopus Sabinensis cardinalis S. Clementis S. R. E. camerarius.

† Ego Ludovicus episcopus Albanensis cardinalis Picus.

† Ego Petrus episcopus Tusculanus cardinalis Corradinus.

† Ego I. A. tituli S. Laurentii in Lucina cardinalis de Via.

†

†

†

†

†

†

†

†

† Ego Georgius tituli S. Praxedis presbyter cardinalis Spinola.

†

† Ego Ludovicus tituli S. Mariae in Trastiberim cardinalis Belluga.

†

† Ego Alvarus tituli S. Bartholomaei in Insula cardinalis Cienfuegos.

† Ego I. B. tituli S. Matthaei in Merulana cardinalis de Alteriis.

† Ego Vincentius tituli S. Petri ad Vincula cardinalis Petra, maior poenitentiarius.

†

†

†

†

†

† Ego Franciscus Antonius tituli S. Sixti S. R. E. presbyter cardinalis Finus.

†

†

†

† Ego frater Vincentius tituli S. Pancratii cardinalis Gotti Ordinis Praedicatorum.

† Ego D. Leander tituli S. Callixti cardinalis de Porzia.

† Ego P. Aloysius tituli S. Priscae cardinalis Carafa.

†

†

† Ego Franciscus tituli S. Sylvestri in Capite cardinalis Burghesius.

†

†

† Ego Vincentius tituli S. Laurentii in Pane et Perna cardinalis Bichius.

† Ego Ioseph tituli S. Thomae in Parione cardinalis Firrao.

† Ego Antonius tituli S. Stephani in Monte Celio cardinalis Gentili.

† Ego frater I. A. tituli S. Sylvestri et Martini in Montibus cardinalis Guadagni.

† Ego Troianus tituli S. Caeciliae cardinalis de Acquaviva.

† Ego Dominicus tituli Ss. Quirici et Iulittae cardinalis de Rivera.

† Ego Marcellus tituli S. Mariae in Araceli cardinalis Passari.

†

†

† Ego frater P. M. tituli S. Ioannis ante Portam Latinam cardinalis Pieri.

† Ego Ioannes tituli S. Pudentianae cardinalis Spinaula.

†
†
†
†
†

† Ego Laurentius S. Mariae in Vialatâ prior diaconus cardinalis de Alteriis.

† Ego Carolus S. Agathae in Suburrâ diaconus cardinalis Columna.

† Ego Carolus S. Mariae in Aquiro diaconus cardinalis de Marinis.

† Ego Alexander S. Mariae in Cosmedin diaconus cardinalis Albanus.

†

† Ego Nerijs S. Eustachii diaconus cardinalis Corsinus.

† Ego B. Ss. Cosmae et Damiani diaconus cardinalis Ruspulus.

†

†

†

†

† Ego Carolus S. Nicolai in Carcere diaconus cardinalis Rezzonicus.

†

†

†

†

Loco † plumbi.

A. card. prodaturarius.

Visa de Curia:

N. ANTONELLUS.

I. B. EUGENIUS.

CCXXXIV.

Ut quatuor dumtaxat antiquiores doctrinarii seu parochi provinciae SS. Nominis Iesu in regno Mexicano Ordinis fratrum Eremitarum sancti Augustini, omnibus privilegiis et indultis, quibus illi, qui priores provinciales provinciae et Ordinis praedictorum fuerunt, fruuntur et gaudent, frui et gaudere valeant.

Clemente Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Exponi nobis nuper fecit dilectus filius Didacus Salinas et Cabrera, assistens generalis Hispaniarum ac provinciae SS. Nominis Iesu in regno Mexicano Ordinis fratrum Eremitarum sancti Augustini procurator, in sacra theologia magister, quod, cum ex septuaginta sex conventibus in dictâ provinciâ existentibus sexaginta sex doctrinae, seu parochiae, annexam habentes sacramentorum administrationem et curam animarum, in totidem ferme numerosis populis christiano antiquorum dictae provinciae fratrum zelo ad fidem catholicam conversis reperiantur, quibus sane doctrinis seu parochiis in ministerio parochiali, praeviâ canonicâ Ordinarii collatione, dictae provinciae fratres ministerio huiusmodi parochorum perpetuo addicti, et non sine ingentibus laboribus et gravi incommodo inservientes, intra Ordinem et provinciam huiusmodi dignitatibus et officiis principalioribus, nempe magistrorum, definitorum, visitorum et priorum conventuum praecipuorum, orbatî usque modo fuerunt et sunt; ac proinde dictus Didacus assistens et procurator, ne deinceps fratres huiusmodi condignâ mercede privati maneant, et simul aliis incitamento sint ut apostolicum onus sustinendo parochi ministerium obire satagant, et intuitu praemii ad illud amplectendum fratres fortius alacriusque alliciantur, quatuor dictarum doctrinarum seu parochialium antiquioribus rectoribus omnia iura, privilegia, gratias et exemptiones dictae provinciae ex-provincialium, nempe provincialium absolutorum, ut iidem pariformiter potiantur et gaudeant ac si ex-provinciales po-

Causae novum huiusmodi praemium dandi fratribus, qui Mexico parochias administrant.

1 Forsan parochiarum (R. T.).

2 Forsan iidem . . . quibus alii, etc. (R. T.).

liantur et gaudent (sequentibus tamen conditionibus: I, quod sexdecim annis completis in una aut diversis doctrinis seu parochiis huiusmodi ab Ordinario canonica collatione traditis animarum curae et sacramentorum administrationi laudabiliter inservierint: II, quod si doctrinarius seu parochus post completos sexdecim administrationis annos, sed ante sexagesimum aetatis annum completum, ministerio renunciaverit, eiusque renunciatio acceptata fuerit, enunciatis privilegiis ex-provincialium minime frui et gaudere possit; secus vero si completis sexdecim administrationis annis¹ etiam sexagenario maior, causa adversae valetudinis, ministerio huiusmodi renunciaverit, tunc, etiamsi renunciatio acceptetur, dictis privilegiis frui et gaudere debeat: III, quod ex dictis doctrinariis, seu parochis, quatuor dumtaxat in ministerio parochiali antiquiores dictis ex-provincialium privilegiis gaudeant² et poliantur, minime vero reliqui, etiamsi recensitas condiciones habeant, quousque per alicuius ex dictis quatuor antiquioribus cessum vel decessum eis locus fiat secundum ordinem antiquitatis ministerii parochialis, cui solum attendendum erit, non vero professionis in religione, nisi concurrente omnimoda aequalitate in dicto ministerio: IV, quod dicti quatuor doctrinarii, seu parochi, relatis privilegiis nequaquam gaudere incipiant, quin a definitorio pleno provinciae in capitulo provinciali aut congregatione intermedia eorum requisita et merita fuerint recognita et approbata, et hac recognitione et approbatione sic factis, statim absque alia diligentia huiusmodi privilegiis frui et gaudere incipiant, et quoad locum semper immediate sequantur post

¹ Edit. Main. legit. annos (R. T.).

² Edit. Main. legit. gaudent (R. T.).

patres ex-provinciales, qui revera provinciam gubernarunt, aut deinceps gubernaturi sint) a nobis concedi plurimum desideret: nobis propterea dictus Didacus assistens et procurator eiusdem provinciae nomine humiliter supplicari fecit, ut in praemissis opportune providere et ut infra indulgere de benignitate apostolica dignaremur.

§ 2. Nos igitur, eiusdem Didaci assistentis et procuratoris votis hac in re, quantum cum Domino possumus, favorabiliter annuere volentes, et a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, huiusmodi supplicationibus inclinati, ut quatuor dumtaxat antiquiores doctrinarii seu parochi provinciae et Ordinis praedictorum, qui¹, post adimpletas condiciones et declarationes supradictas, omnibus et singulis privilegiis, praerogativis, praeeminentiis, honoribus, gratiis et indultis, quibus illi qui priores provinciales² provinciae et Ordinis praedictorum munere perfuncti, tam de iure, usu et consuetudine, quam alias quomodolibet utuntur, fruuntur et gaudent, ac uti, frui et gaudere possunt et poterunt in futurum, pari modo et absque ulla prorsus differentia uti, frui et gaudere libere et licite possint et valeant, auctoritate apostolica, tenore praesentium, concedimus et indulgemus.

§ 3. Decernentes, easdem praesentes litteras firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, et

Concessio privilegii, de quo in rubrica.

Praesentium litterarum firmitas.

¹ Vox qui praeter rem esse videtur (R. T.).

² Potius lege prioris provincialis (R. T.).

illis, ad quos spectat et pro tempore quaecumque spectabit, plenissime suffragari; sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Derogatio
contrariorum.

§ 4. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon, quatenus opus sit, provinciae et Ordinis praedictorum, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus, pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Transumptis
danda fides.

§ 5. Volumus autem ut earumdem praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiastica dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides in iudicio et extra illud adhibeatur, quae ipsis praesentibus adhiberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxviii maii MDCCXXXVIII, pontificatus nostri anno viii.

Dat. die 28 maii 1738, pontif. anno viii.

CCXXXV.

Variae ordinationes pro restituendâ et conservandâ in hospitali S. Ioannis

Hierosolymitani consuetudine armandi naves contra piratas.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Praecipuas apostolicae auctoritatis charitatisque partes, quibus, pro debito pastoralis officii nostri ministerio a misericordiarum patre nobis iniuncto, sine personarum acceptione ad omnium christiani nominis nationum profectum, commodum utilitatemque, prout temporum, rerum et personarum qualitate pensatâ in Domino perspicimus expedire, solliciti advigilare tenemur, hilari libentique animo suscipere ac peragere gestimus.

Exordium.

§ 1. Cum autem nobis innotuerit paucas sub vexillo hospitalis S. Ioannis Hierosolymitani in insulâ Melitensi armari naves, ex quo non leve praeiudicium inferri videbatur nedum pauperibus Graecis christianis, qui a piraticis navibus sub exteris vexillis armatis facillime depraedantur, verum ipsi etiam hospitali, quod ad christifidelium tuitionem expertis nautis in opportunitatibus provideri minime potuisset: hinc est quod nos, qui tam hospitale praedictum illiusque magnum magistrum et fratres adversus quoscumque orthodoxae religionis hostes assiduis laboribus et periculis dimicantes paterno complectimur affectu, quam eosdem Graecos christianos in visceribus Iesu Christi diligimus, ut inordinatae huic rei salutare leges atque opportuna remedia adhiberentur, diuturnâ maturâque, sicut negotii gravitas flagitabat, consultatione adhibitâ, auditisque desuper nonnullorum venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium sententiis, pro facili, rectâ et ordinatâ praedictarum navium directione sequentem normam perpetuis futuris temporibus valituram praescribere ac sancire

Ad augendum
navium Meli-
tensium nume-
rum sequentes
latae leges.

† Vocem qui nos addimus (n. r.).

decrevimus, quam de cetero ab omnibus, ad quos spectat et in futurum spectabit, inconcusse et inviolabiliter observari volumus et mandamus.

Decretum anni
MDCCXXXIX ser-
vandam etiam
infra scriptis de-
clarationibus.

§ 2. Auctoritate igitur apostolica statuimus decretum in Congregatione particulari a felicis recordationis Benedicto PP. XIII praedecessore nostro specialiter deputatâ sub die XXII aprilis MDCCXXXIX editum observandum esse, cum infra scriptis declarationibus et ordinationibus, videlicet:

Mercium Graecorum praedatio quando sit licita.

§ 3. Licitam esse depredationem mercium dilectorum filiorum christifidelium Graecorum repertarum in turcicis, sive piraticis, sive bellicis, non vero in aliis navibus onerariis, quamvis turcicis, legitime tamen probato, ut infra, mercium dominio; et tam in hoc quam in aliis quibuscumque casibus, in quibus Graeci praedicti praetendant depredationem non esse legitime factam, depredantes, statim, secutâ depredatione, portum viciniorem appellere teneantur, ibique depredati debeant omnino conficere consolatium¹, vel per se vel per alios, denunciando merces quas proprias praetendunt, cum suis qualitatibus et quantitativis, et in termino unius anni a die portus appulsionis proponere instantiam cum legitimis documentis et probationibus, quo elapso, non amplius audiantur, dummodo non probetur legitimum impedimentum, probandum tamen in loco, ubi dictum impedimentum evenit, cum testimonio consulis sive viceconsulis, si ibi adsit, vel, in eorum defectu, cum testimonio personae fide dignae, quae in eodem loco reperitur; quo probato, possit iudex dictum terminum prorogare ad alium annum, vel amplius pro suo arbitrio.

Quid de interesse agendum.

§ 4. Quo vero ad interesse, iudex procedat in illius taxatione, vel a die mo-

¹ Forsan adire consolatium (R. T.).

tae litis, a die depredationis, prout de iure, ad rationem tamen scutorum duodecim monetae romanae pro quolibet centenatio et anno.

§ 5. Ad arcendas autem fraudes et collusiones, quas Graeci cum Turcis admittere possent, occultando Turcarum merces, easque uti proprias describendo et obsignando, dictâ auctoritate statuimus, ut dominorum earumdem mercium probandum sit, nec aliter probari possit, quam per denunciationem iuratam et descriptionem aut navigationem factam coram aliquo consule seu viceconsule catholico, si haberi possit, sin minus, coram quocumque consule sive viceconsule, vel, iis deficientibus, coram personâ fide dignâ, designatâ navi, et illius institore seu capitaneo, relictâ penes ipsum consulem seu viceconsulem, vel aliam fide dignam personam huiusmodi, descriptionis et denunciationis copiâ legali; similis etiam descriptio fieri debeat in cartulario navis; si vero in eo loco, ubi oneratur navis, nullius consulis sive viceconsulis copia sit, descriptio facta coram personâ fide dignâ iterari debeat omnino coram consule sive viceconsule primi portus quem navis appulerit.

Descriptio mercium quomodo faciendâ ad fraudes impediendâs.

§ 6. Quod si depredatio secuta sit, antequam potuerit navis appellere aliquem portum, ubi sit aliquis ex consulibus sive viceconsulibus praedictis, sufficiat descriptio mercium facta, ut supra, coram praedictâ personâ.

Quid agendum si depredatio eveniat, priusquam navis portum aliquem appellat.

§ 7. Ultra praedicta, depredatus, sive eius legitimus procurator, iurare debeat in principio iudicii in manibus sacerdotis graeco-catholici, si causa sit Melitae cognoscenda; alibi autem, iuxta ritum cuiuscumque regionis, easdem merces ad se ipsum vel eius principalem

Iuramentum a procuratore rerum depredatarum emittendum.

¹ Videtur legendum vel (R. T.).

² Videtur legendum dominium (R. T.).

pertinere, nullamque fraudem vel simulationem subesse, ut inde iudex cognoscere possit, an iuramentum consonum sit vel dissonum a denunciatione iurata ut supra facta in loco operationis mercium.

Aliud iuramentum ab armatore praestandum.

§ 8. Causae vero in prima instantia a dilectis quoque filiis magistratu armamentorum privative ad quodcumque aliud tribunal insulae Melitensis examinentur, ordinationesque et statuta ad eam rem pertinentia observentur, et praecipue, quod armator navigationem non ineat, nisi prius iusiurandum de non depraedandis christianorum bonis, ac idoneam fideiussionem praestiterit; quae fideiussio priusquam a notario magistratus praefati iuxta morem approbetur, omnibus illis officialibus, qui cetera armatorum requisita solent examinare, proponi debeat, ut eam veluti unum ex requisitis valde necessariis dignoscant et approbent, non tamen eorum periculo, verum iuxta conscientiae dictamen ob maiorem christianorum indemnitatem securitatemque in casu iniustae depraedationis.

Duae sententiae transeant in rem iudicatum.

§ 9. Ac insuper dicta auctoritate declaramus in praedictis depraedationum causis, secundum hospitalis praedicti statuta et privilegia auctoritate praedicta concessa, duas sententias conformes omnino sufficere pro efformanda re iudicata; quo in casu, ac in quocumque alio ubi duae adsint sententiae, sive emanatae ambae in insula praedicta, una a supradicto magistratu et altera a dilectis itidem filiis tribunali audientiae, sive prolatae una in dicto tribunali, cetera in alma Urbe nostra, quoties a succumbente gravamen evidens producat ob quod ulteriori appellationi locum esse contendat, auditor noster citationem pro signanda commissione non expediet, nisi cum vehemens de iniustitia suspicio

haberi possit; qua habita, citationem et compulsoriales expediat, ac deinde transmissis ad Urbem praedictam actis, perpendet an ulterior appellatio admitenda vel quibus clausulis commissio signanda videatur.

§ 10. In causis tamen parvi momenti, in quibus petitio pretium scutorum trecentorum monetae romanae non excedat, si auditor noster praedictus commissioni locum esse censuerit, eas semper iudici in insula Melitensi committenti et partibus minime suspecto committet, interposito decreto quod litterarum apostolicarum huiusmodi vim habeant; in iis autem causis, de quibus quaestio sit an petitio scutorum trecentorum summam excedat nec ne, ipse auditor noster, prout iustitiae ratio exposcere videbitur, iudicabit.

§ 11. Decernentes, easdem praesentes litteras et in eis contenta quaecumque firma, valida et efficacia existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac ab illis, ad quos spectat et pro tempore quodcumque spectabit, in omnibus et per omnia inviolabiliter et inconcusse observari et adimpleri, sicque et non aliter in praemissis censi, atque ita per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac S. R. E. cardinales, etiam de latere legatos, et dictae Sedis nuncios, aliosque quoslibet quacumque praesentia et potestate fungentes et functuros, sublata eis et eorum cuilibet quavis aliter iudicandi et interpretandi facultate et auctoritate, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane quidquid secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Præsentium litterarum per totam observantia.

§ 12. Non obstantibus praemissis, ac, quatenus opus sit, nostra et Cancellariae

Derogatio contrariorum.

Apostolicæ regulæ de iure quaesito non tollendo, ac felici recordationis Bonifacii Papæ VIII prædecessoris nostri de una, et concilii generalis de duabus dietis, itaut vigore præsentium etiam ultra duas pluresque dietas quilibet in iudicium trahi possit, aliisque constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon dicti hospitalis et magistratus, ac tribunalium prædictorum, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, stabilimentis, usibus et naturis, ac ordinationibus capitularibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium præmissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores præsentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâ in suo robore permanens, ad præmissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Fides data
transumptis.

§ 13. Volumus autem quod præsentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personæ in ecclesiasticâ dignitate constitutæ munitis, eadem prorsus fides ubique habeatur, quæ ipsis præsentibus haberetur si forent exhibitæ vel ostensæ.

Datum Romæ, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die XVI iunii MDCCXXXVIII, pontificatus nostri anno VIII.

Dat. die 16 iunii 1738, pontif. anno VIII.

CCXXXVI.

Indultum, ut tres dumtaxat fratres Ordinis eremitarum S. Augustini provincie SS. Nominis Iesu antiquiores doctores graduati in universitate Me-

xicand, qui conditiones ad præmissum effectum præscriptas adimplerint, privilegiis magistrorum dicti Ordinis uti valeant.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Exponi nobis nuper fecit dilectus filius Didacus Salinas et Cabrera, assistens generalis Hispaniæ a provinciâ SS. Nominis Iesu in regno Mexicano Ordinis fratrum Eremitarum sancti Augustini procurator specialiter deputatus in sacrâ theologiâ magister, quod in civitate Mexicanâ publicâ auctoritate et privilegio regio studii generalis universitas omnibus numeris celeberrima erecta existit, in qua plures cathedrae sumptibus carissimi in Christo filii nostri Philippi, seu bonæ memoriæ, dum vixerunt, Hispaniarum regum, institutæ et fundatæ reperiuntur, quæ per publicam oppositionem seu concursum, ut vocant, obtinentur. Etsi autem plurimum splendoris et ornamenti tam Ordini quam provincie huiusmodi inde allatum iri constat, quod illius religiosi doctoratus laureâ in universitate prædictâ decorentur, et ad concursus publicos pro adipiscendis lecturis idonei reddantur; nullus tamen eorum religiosorum viginti ab hinc circiter annis invenitur, qui tam laudabili exercitio oppositionum seu concursuum prædictorum ad cathedras earumque lectionum assidue applicatus cathedram aliquam aut lectoriam huiusmodi obtinuerit. Enim vero, præter plura incommoda quibus subiacere debent similia numerum¹ extra consecuturi, intra vero provinciam² huiusmodi etiam honoris gradum propterea promereantur, sed tamquam alii qui-

Canasæ novi
concedendi pri-
vilegii.

¹ Forsan munera (R. T.).

² Syntaxim seq. reordinare et corrigere dimittimus lectori scio (R. T.).

cumque Ordinis praedicti lectores et habentur et existimantur.

Procurator
provinciae Pa-
pae supplicat
super hoc.

§ 2. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat, dictus Didacus assistens et procurator, ut deinceps eiusdem provinciae alumni intuitu praemii avidius alacriusque tam ad doctoratus lauream assumendam, quam ad substinendam talem oppositionem seu concursum pro huiusmodi publicis lecturis capessendis excitentur, tribus antiquioribus doctoribus dictae universitatis, qui publicis argumentis, assidueque lectionum et oppositionum exercitationi, quoties cathedra aliqua¹ in dicta universitate vacare contigerit, fuerint adstricti et addicti, omnia iura, indulta et privilegia, quibus ceteri in sacra theologia magistri provinciae et Ordinis praedictorum de iure, usu et consuetudine potiuntur et gaudent, ac ut² revera tamquam magistri eorundem Ordinis et provinciae sint et habeantur (sequentibus tamen

Conditiones
necessariae ad
huiusmodi con-
sequendum.

praevis conditionibus, nempe: 1. Quod nullus ex dictae provinciae fratribus ad gradum doctoratus in dicta universitate promoveri valeat, nisi de licentia moderni et pro tempore existentis prioris generalis dicti Ordinis, prout per constitutiones Ordinis praedicti auctoritate apostolica confirmatas, parte v, cap. v et viii, praescriptum reperitur: 2. Quod nullus doctor in dicta universitate Mexicanam magistri privilegia obtinere incipiat, nisi postquam laudabiliter suae lectionum philosophiae et sacrae theologiae praedictae tempus compleverit, et a pleno definitorio provinciae huiusmodi, sive in capitulo provinciali, sive in congregatione intermedia, lector iubilatus declaretur, et tunc, absque novo examine, cum iam in susceptione doctoratus in eadem universitate praecesserit,

¹ Rectius *cathedram aliquam* (R. T.).

² Coniunct. *ut nos addimus* (R. T.).

et alia gradus susceptione istiusmodi, doctores privilegiis magistrorum gaudere incipiant, et tamquam magistri a pariter moderno et pro tempore existente priore provinciali recognoscantur et declarentur, ac in libro, in quo ceteri eiusdem Ordinis magistri describuntur, adnotentur, et ex tunc demum, non autem secundum tempus suscepti doctoratus, eorum antiquitas inter magistros Ordinis computetur: 3. Quod ex dictis doctoribus universitatis, qui, ut supra, assidue lectionum et oppositionum exercitationi fuerint adstricti et addicti, tres dumtaxat antiquiores, qui gradu magisterii Ordinis praedicti non sint aliunde decorati, magistrorum privilegiis fruantur, reliqui autem, si qui fuerint, quamvis ceteris qualitatibus supra expressis praediti reperiantur, illa minime obtineant, quousque per alicuius ex dictis tribus doctoribus antiquioribus cessum vel decessum eis locus fiat secundum ordinem suae antiquitatis, nempe doctoratus in eadem universitate, non autem antiquitatis professionis seu lectionum a nobis concedi plurimum desideret, prout ab hac Sancta Sede et a nobis aliis earumdem Hispaniarum provinciarum Ordinis praedicti concessum fuisse asserit: nobis propterea dictus Didacus assistens et procurator eiusdem provinciae nomine humiliter supplicari fecit ut in praemissis opportune providere et ut infra indulgere de benignitate apostolica dignaremur.

§ 3. Nos igitur, eiusdem Didaci assistentis et procuratoris votis hac in re, quantum cum Domino possumus, favorabiliter annuere volentes, et a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa fatiis, si quibus quomodolibet innodati existunt,

Procuratoris
petitioni annuit
Clemens.

ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutos fore censes, huiusmodi supplicationibus inclinati, ut tres dumtaxat antiquiores doctores dictae universitatis Mexicanae, in quibus supradictae conditiones et declarationes concurrerint, inter magistros provinciae et Ordinis praedictorum adnumerentur, et ut tales habeantur, auctoritate apostolica, tenore praesentium, statuimus et ordinamus, eisdemque tribus antiquioribus doctoribus, ut omnibus et singulis privilegiis, favoribus, praerogativis, praeeminentiis, gratiis et indultis, ac honoribus et oneribus, quibus ceteri provinciae et Ordinis huiusmodi magistri tam de iure, usu et consuetudine, quam alias quomodolibet utuntur, fruuntur et gaudent, ac uti et frui et gaudere possunt et poterunt quomodolibet in futurum, uti, frui et gaudere libere et licite possint et valeant, dicta auctoritate concedimus et indulgemus.

Hanc concessionem ubique suum plenum vigorem habere statuit.

§ 4. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Contraria tollit.

§ 5. Non obstantibus praemissis, ac constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon provinciae et Ordinis praedictorum, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et lit-

teris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis alias in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

§ 6. Volumus autem quod praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu notarii publici subscriptis, et sigillo alicuius personae in ecclesiastica dignitate constitutae, seu secretarii generalis eiusdem Ordinis munitis, eadem prorsus fides ubique habeatur, quae ipsis praesentibus haberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Harum litterarum transumptis fidem addit.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die III iulii MDCCXXXVIII, pontificatus nostri anno VIII.

Dat. die 3 iulii 1738, pontif. anno VIII.

CCXXVII.

Confirmatio constitutionum fratrum Discalceatorum Ordinis SS. Trinitatis Redemptionis Captivorum Congregationis Hispaniae.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Inter religiosorum Ordinum instituta, in militantis Ecclesiae procurazione a pastorum principe Iesu Christo infirmati¹ nostrae demandata, magno cum christianae reipublicae commodo, divini cultus incremento et animarum salute per assidua pietatis charitatisque officia in opus apostolici ministerii nostri alia aliis temporibus altissimo divinae providentiae consilio adscita, sa-

Huiusce Ordinis praecleara merita enarrantur.

¹ Edit. Main. legit. *infirmatatis* (A. T.).

lutaribus Apostoli monitis, memores vincitorum, tamquam simul vincti, et laborantium, tamquam in eodem corpore morantes, Ordinem dilectorum filiorum fratrum SS. Trinitatis Redemptionis Captivorum Excalceatorum nuncupatorum, qui pro lucrandis redimendisque fratribus suis, sub catenis barbarorum in aperto aut catholicae fidei eiurandae aut vitam misere finiendi discrimine versantibus, animas ponere alacres non verentur, praecipuis paternae pontificiaeque benevolentiae studiis semper complexi sumus. Eapropter illa, quae pro felici prosperoque eorumdem regimine debitaeque tam arctioris disciplinae observantia alias disposita et ordinata, nonnullis evidentissima utilitate correctionibus et emendationibus indigentia, pie prudenterque emendanda et corrigenda esse dignoscuntur, cum emendata et correcta atque maturo examine in melius digesta et comprobata, ut firma semper atque illibata persistent, apostolici muniminis praesidio corroborari a nobis petitur, libenter confirmare et perpetuam stabilitate communire satagimus.

Procurator
generalis hae
de causa Con-
gregationis epi-
scoporum et
regularium sup-
plicat.

§ 1. Exponi siquidem nobis nuper fecit dilectus filius modernus procurator generalis praefati Ordinis, quod ipse alias de mandato nostro ad Congregationem venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium negotiis et consultationibus episcoporum et regularium praepositam supplicem obtulit libellum tenoris qui sequitur, videlicet:

Eminentissimi et reverendissimi domini. — Religio Excalceatorum SS. Trinitatis Redemptionis Captivorum, ut constat ex decretis capitulorum generalium, necnon definitorii generalis, vehementer desiderat sub uno diplomate a Sancta Sede confirmari, et ad vitandam confusionem sub uno codice imprimendas uniendasque esse suas constitutiones: quarum nonnullae diu observantur

et confirmatae sunt a felicis recordationis Clemente X, ceterae autem, quas definitorium generale, crebro studio et quotidiana meditatione praemissis, integroque quotidianis sessionibus anno statuit, vi Brevis pia memoriae Benedicti XIII qui die xxvi februarii anno mdccxxviii per suas litteras concessit capitulo generali proxime celebrando, et deinde definitorio generali facultatem condendi leges seu constitutiones ad uniforme gubernium generale Ordinis et provinciarum spectantes. Istarum autem aliae sunt pro gubernio provinciarum confirmatae die xi septembris anni mdccxxx a sanctissimo domino nostro Clemente XII feliciter regnante, et aliae ad gubernium totius religionis ab eodem sanctissimo domino nostro sub die x decembris mdccxxxiii. Ceterum, quia ex determinatis ab illo definitorio paucae remanent quae adhuc non sunt propositae ad confirmationem illarum consequendam, quas capitulum generale celebratum Compluti anno mdccxxxiv approbavit, et ex decreto illius novum definitorium subsequens revidit et approbavit etiam, et utrumque per sua decreta curavit, et confirmationem petendam esse a Sancta Sede praecepit procuratori generali: quare ipse procurator generalis humiliter supplicat EE. VV. quatenus dignentur deputare eminentissimumponentem huius causae ad hoc ut referat huic sacrae Congregationi iustitiam huius causae. Et de gratia, etc. Quam Deus, etc.

Constitutiones, de quibus agitur, sunt quae sequuntur, videlicet:

Constitutiones
referuntur.

CONSTITUTIONES

Fratrum Discalceatorum Ordinis SS. Trinitatis Redemptionis Captivorum Congregationis Hispaniae.

REGULAE CAPUT I.

Fratres Discalceati Ordinis SS. Trinitatis, etc

CAPUT I. — *De tribus votis essentialibus obedientiae, castitatis et paupertatis, ac de quarto non ambiendi.*

1. Sine obedientia nulla gubernatio, nullumque regimen potest stare, quia integra

§ 1.
De voto obedi-
entiae.

† Edit. Main. legit *agiter* (n. t.).

potestas et auctoritas superiorum a subditorum submissâ voluntate dependat. Sed nostrae Congregationis fratres intelligant, quod obedientia tunc erit hominibus dulcis Deoque acceptabilis, si non trepide, non tarde, neque lepide, aut cum murmure vel cum responsione nolentis efficiatur, quia obedientia, cum maioribus praebetur, ipsi exhibetur Deo dicenti: *Qui vos audit, me audit.*

II. Ceterum volumus et declaramus ut constitutiones nostrae non obligent nos ad culpam laetalem aut venialem, sed ad poenam, nisi propter praeceptum vel contemptum.

III. Praeceptum autem nullum intelligi volumus, nisi quod spectat ad tria vota essentialia, et quantum non ambiendi in clericis, et non transeundi ad statum clericalem et sacros ordines in laicis, vel quod in his constitutionibus vel a superioribus praecipitur sub poenâ excommunicationis, vel in virtute sanctae obedientiae. Transgressionem vero vel omissionem aliorum, secluso contemptu, nolumus obligare, nisi ad poenam impositam, vel a superioribus pro eorum prudenti arbitrio imponendam.

IV. Quod si aliquis (quod Deus avertat) quoad reverentiam superiori debitam in re gravi deliquerit, ceteri religiosi diligenter sub poenâ gravis culpa curent ut reus severe puniatur, nullaue culpa irreverentiae erga superiorem, quantumvis levis, impunita maneat.

V. Si aliquis religiosus coram superiore alicui praecepto quantumvis simplici (praecepta enim simplicia pertinent ad vitam monasticam, cuius gubernium impossibile est solum per praecepta formalia) non obediit, et suam inobedientiam mordicus et pertinaciter defenderit, continuo incarceretur tamquam contumax et rebellis, et voce activâ ac loco privatus sit pro tempore culpa proportionato ab arbitrio ministri. Et eadem poenâ mulctentur, qui contra superiores insurrexerint, istorum officia usurpantes, vel eorum executionem impediētes.

VI. Ille vero, qui murmurando vel dissentiendo, gestu, voce aut scripto, praelatorum

ordinationes cum spreto non adimplevit, pro primâ vice ieiunet in pane et aquâ tantum; pro secundâ eadem poena duplicetur; pro tertiâ, in qua iam aliqua consuetudo vel illius suboritur aliqua suspicio, incarceretur, usque dum resipiscens coram communitate reum agat, et ad praelati pedes petendo veniam, emendationem Deo ac ipsi communitati promittat.

VII. Religiosi nihil omnino agant sine licentiâ superioris; praesertim absque illâ cum extraneis non loquantur, nec scribant, nec recipiant litteras, quin prius illas manifestent superiori, qui eas legat, et curet ne scribantur nec recipiantur quae convenientes non fuerint. Poterunt tamen sine licentiâ ad suos praelatos superiores et ad quoscumque definitores scribere, atque illorum litteras accipere.

VIII. Si subditus aliquis aperuerit vel non tradiderit litteras superioris generalis, cuiuscunque definitoris generalis vel provincialis, vel suorum ministrorum provincialium vel conventualium, vel illas quae ad ipsos mittuntur, sit incarceratus, et voce ac loco privatus pro tempore culpa proportionato. Si vero delinquens praelatus fuerit, sit suspensus a suo officio per quatuor menses. Quod si aliquis inferior aperuerit vel non tradiderit litteras, quas quilibet religiosus alteri mittat, poenâ culpa gravis puniatur; et eadem poenâ mulctetur etiam quilibet praelatus, qui litteras sibi non subditorum aperuerit.

I. Castitatis virtus angelorum est aemula, et religiosorum quoque propriissima. Ad quam perfectissime custodiendam, prae oculis habere debent illud monitum regulae praecipientis, quod omnis status, gestus, vita, actio, et omnia alia honesta in eis reperiantur. Ceterum si (quod Deus avertat) aliquis religiosus contra castitatem deliquerit, et de eo convictus fuerit, incarceretur per sex menses, ieiunet, et flagelletur arbitrio superioris, attentâ gravitate delicti, et per spatium unius anni privatus sit officio, voce et loco. Quod si delictum publicum fuerit apud saeculares, disciplinâ conventuali flagelletur, ac per integrum annum in carcere

§ 2.
De voto castitatis.

sit, et voce ac loco per triennium careat. Si autem in simile peccatum relabatur, praedicta poena duplicetur.

ii. Quoniam autem de huiusmodi delictis plena probatio raro fieri valeat, praecipimus praelatis, ut religioso de praedictis diffamato, nisi famam suam prius ita purgaverit ut nullum sinistrae de se opinioni locum reliquisse videatur (quod quidem pro timorata eorum conscientia atque prudentia iudicabunt), honores denegent et gratias quae aliis concedi solent, videlicet officia, studia, ordines, lecturas, facultates concionandi et confessiones audiendi et e conventu exeundi, etc. Patrumque provincialium ac ministrorum conscientias oneramus ut specialem curam similium religiosorum habeant.

§ 3.
De voto pau-
pertatis.

i. Ad paupertatis votum spectat, nil tamquam proprium, aut etiam nomine conventus, possidere vel tenere. Quare, si secus fecerit, vel aliquid custodiendo, intra vel extra domum praelato celaverit, tamquam gravissime delinquens, et poenam proprietarii ac aliis ad arbitrium superiorum puniatur. Poterunt tamen religiosi uti rebus necessariis sibi a religione medio superiore impertitis. De his autem, sive eorum usu, renunciationem ante receptionem sacrae Eucharistiae pro casu infirmitatis coram suo praelato facient infirmi, alioquin si aliter malitiose fecerint, tamquam proprietarii reputentur post mortem. Nullus praeterea, quamvis sit praelatus, extra conventum reservet aliquid, sub eadem proprietarii poenam. Quod si aliquis inventus fuerit habere pecunias sine licentia, etiamsi illas habeat ad emendandum aliquid sibi commissum, vel ad faciendam aliquam restitutionem, vel per modum depositi, sive alio quovis praetextu, poenam gravi afficiatur. Religiosus vero qui sine licentia praelati, aut expressa permissione utentis, sibi sumpserit rem aliquam ex illis quas sibi ad usum habuerit alter, severe puniatur a praelato. Sciant enim religiosi, quod cuncta nostra sunt, sed non semper et quandocumque, et cum quisque voluerit, sed tunc nostra, cum a praelato conceduntur ad usum.

ii. Quilibet religiosus poterit in cella ha-

bere mensam parvam, et scabellum ex pino, ac imaginem Crucifixi, et B. M. V. in pariete depictam, seu in papyro, absque aliqua tamen illuminatione; nec auro, nec argento, bombice, et similibus aliquis utatur, etiamsi sit in parva quantitate, et in ornatum reliquiarum seu imaginum. Dum autem ex rebus sibi ad usum concessis aliqua non utatur, eam reponat in officinam comuni, ad quam pertinet, et nullus unquam utatur verbis istis: *meum, tuum, etc.*

iii. Omnia, quae et quocumque titulo obvenierint religioso, sive in communi, sive in particulari, tradantur statim praelato, ut de illis disponat tamquam de bonis propriis communitatis, et in officinam communi reponantur.

iv. Pecunia semper sit in arca, quae tres habeat distinctas claves. Nec superior illam habere, nec expendere, nec licentiam alicui religioso dare poterit ut illam habeat vel expendat, quin prius in dictam arcam fuerit intromissa; ab illa autem educetur ut ab officialibus conventus expendatur cum expressa praelati licentia.

v. Quando definitorium generale, cui solum competit, concesserit alicui facultatem accipiendi pecuniam aliquam, sive a parentibus vel propinquis specialiter relictam pro religiosis suis usibus et necessitatibus, intelligatur huiusmodi licentia cum expressa conditione de eo quod singulis annis tempore actualis visitationis rationem reddat suo provinciali de expensis a se factis, et quantitate pecuniae extractae, et sibi redditae ex arca trium clavium, in qua custodiri debet, sub poena privationis ab officio in perpetuum, casu quo a ministro aliter expendatur quam in usus pro quibus religiosus praefatam licentiam reportavit.

vi. Nullus religiosus habeat clavem cellae, arcae, capsulae vel alterius similis rei, exceptis superioribus generalibus et eorum secretariis: patres vero definitores generales et provinciales, atque ministri provinciales, procuratores generales, redemptores, atque provinciae procuratores ad custodienda scripta et suorum officiorum sigilla poterunt habere clavem alicuius capsulae seu scrinii.

Patres quoque ministri conventuales clavem habere poterunt capsulae sub mensâ cellae, cuius altitudo digitorum quatuor, longitudo vero duorum sit palmorum: ac etiam habeant claves magistras pro clausurâ. Religiosi item officiales habebunt claves suarum officinarum. Huiusmodi capsulam habere poterunt chronistae, scriptores generales, et alii omnes quibus definitorium concesserit facultatem, iuxta n. vii, aliis vi: architecti, fabri lignarii, caementarii que habere poterunt clavem alicuius dictae officinae vel arcae ad custodienda instrumenta suorum officiorum. Officinae tamen sint extra dormitorium, neque in eis habitent neque dormiant officiales aliive religiosi. Claves omnium officinarum sint duplicatae, et alteram ex eis habeat minister, qui aliquoties officinas visitabit, et ab eis removebit quae vel ad munera praedictorum officialium vel usum religiosorum necessaria non fuerint.

vii. Definitorium generale in casu necessario concedere poterit alicui religioso clavem alicuius arcae vel capsulae, necnon, praeviâ informatione patrum ministrorum, poterit definitorium provinciale concedere lectoribus et praedicatoribus manticas cum serulis, in quibus conciones et alia scripta custodiant.

viii. Et ne saeculares ultro possint ingredi religiosorum cellas, sit communis et uniformis clausura omnium illarum, dummodo huiusmodi clausura non sit clavium, nec per instrumentum simile clavibus, iuxta decretum et normam capituli generalis Compluti celebrati anno MDCCXXXIII.

ix. Patres ministri de trimestri in trimestre visitent manticas lectorum et praedicatorum, necnon arcas, capsulas, scrinia et omnia alia quae quomodolibet fuerint clausa, et cuncta visitent in suorum subditorum praesentiâ, sub poenâ suspensionis pro tempore, ad arbitrium patrum provincialium. Ab hac tamen visitatione excipiuntur quicumque habuerint mandatum procurae a superiore vel definitorio generali concessum. Similiter, sub poenâ suspensionis per quindecim dies, bis saltem in anno visitabunt cellas, scripta, habitus, ceteraque alia quae

religiosi ad suum habuerint usum, superfluaeque et inutilia auferent, quamvis illa habeant cum praelati superioris licentiâ, ac de necessariis absque morâ providebunt fratribus indigentibus. Ad hanc autem visitationem exequendam, praecepto imposito, subditos obligabunt, ut omnia absque aliâ exceptione patefaciant.

x. In conventibus et collegiis nostris permitimus in solemnioribus festis, et funeribus personarum gravium usum dalmaticarum pro diaconis et subdiaconis, necnon collarium pro acolytis, neutiquam vero manicarum in crucibus processionalibus, nec in inferioribus partibus albarum et rochetorum ornatum, qui apud Hispanos dicitur *fa'don*.

i. Omnes nostri religiosi ad chorum deputati, tempore suae professionis, immediate post tria vota essentialia, quartum emittant non praetendendi in nostrâ religione officia vel praelaturas, videlicet ministri, nec vicarii generalis, commissarii, vicecommissarii, vel definitoris generalis, item nec ministri, vicarii provincialis, aut definitoris provinciae; praeterea nec ministri conventuales, visitatoris ac praesidentis, necnon socii ad capitulum procuratoris generalis curiae Romanae vel regiae, Ordinis vel familiae, sive procuratoris provinciae; similiter non praetendendi, nec admittendi aliquam praelationem extra nostram religionem, iuxta formam dispositam a felicitis recordationis Paulo Papa V. Si quis autem inventus fuerit praetendisse aliquam praelationem seu officium ex praedictis, incarceretur per mensem, et officio, voce et loco per triennium privatus sit.

ii. Praeterea omnes fratres laici in suâ professione, post tria vota essentialia, quartum emittant, et de non transeundo ad statum clericalem et ordines sacros, et de non praetendendo directe vel indirecte dictum transitum, iuxta Breve felicitis recordationis Alexandri Papae VII: qui vero secus fecerit, loco sit privatus per triennium, et ad arbitrium patris provincialis mulctetur graviter ad formam quarti voti. Non ambiendi formula invenitur cap. XLIII. § 1, n. 1.

§ 4.
Ex voto non
ambiendi.

REGULAE CAPUT II.

Omnes res undecumque hodie veniant, etc.

CAPUT II. — *De redemptione captivorum.*

§ 1.
De ratione et
cura, qua appa-
randum et cu-
stodiendum est,
quod pertinet
ad redemptionem
captivorum.

I. De rebus omnibus, quae ad nos licite veniant, quid faciendum, praecipit regula dicens: quod, in quantum duae partes sufficient, id est non plus nec minus, sed in tantum exequantur opera misericordiae cum sui ipsorum et eis necessario famulantium moderatâ sustentatione, ut unica et tota tertia pars reservetur ad redemptionem captivorum. Vi autem praedictae dispositionis praecipimus stricte omnibus praelatis nostrae religionis, ut omni curâ adimpleant obligationem quam habent separandi pro redemptione captivorum tertiam partem omnium rerum quae iuxta sanctam regulam nostram separari debet. Et oneramus conscientias patrum visitorum ut invigilent huius legis observantiae.

II. Separatio ista in quolibet conventu et collegio per ministrum seu praesidentem et consiliarios fiat, statim ac receptum fuerit quodlibet genus fructuum aliarumve rerum, et separatim conservetur in propria specie quod ad redemptionem pertinuerit, et in libro redemptionis scribatur. Et post quamlibet visitationem, dictus minister seu praeses mittat redemptori suae provinciae declarationem ab ipso et consiliariis subscriptam omnium rerum quae secundum hanc constitutionem pertinent ad redemptionem.

III. Quotiescumque determinate pro redemptione captivorum recepta fuerit aliqua considerabilis seu magni momenti quantitas cuiuscumque generis sit, similis fiat declaratio a praefatis tribus subscripta, et redemptori quamprimum mittatur. De parvis autem quantitatibus pro redemptione determinate receptis haec fiet declaratio post quamlibet visitationem, et tunc redemptori mittetur. Patres vero redemptores librum habeant, in quo distincte scribant omnia quae ex praedictis declarationibus constiterit spectare ad redemptionem in omnibus conventibus et collegiis, unusquisque videlicet pro sua provinciâ.

IV. Nullus minister seu praeses etiam cum

consiliariis, neque adhuc consentiente communitate, audeat titulo aliquo sive praetextu vendere, emere vel alienare dictas species, sive ex separatis pro tertiâ parte iuxta tenorem regulae, sive ex datis determinate ad redemptionem, sine licentiâ sui provincialis. Quem tamen tam ipse quam consiliarii monere teneantur tempore apto de periculo quod potest esse in conservatione rerum vel fructuum in propria specie, ut de illis disponat in maiorem redemptionis utilitatem.

V. Insuper integra pars tertia separatur pro redemptione captivorum ex mobilibus haereditatis et bonorum a parentibus relictorum; similiter etiam separabitur, medietate deductâ iuxta regulam pro expensis in culturâ, ex fructibus et proventibus possessionum provenientibus ex bonis sive ratione legitimae¹, sive haereditatis, sive donationis acquisitis. Quando autem definitorium vel conventus aliquis seu collegium cessionem² fecerit alicuius legitimae, ad quam ius habet, nunquam cedat partem legitimae illius ad redemptionem spectantem.

VI. Praecipimus omnibus superioribus, quod in conventibus sive collegiis, in quibus non fuerit designata particularis arca pro custodiendâ pecuniâ pertinente ad redemptionem captivorum, illa reponatur et custodiatur in arcâ trium clavium communi conventus vel collegii, in loco tamen eius separato.

VII. In qualibet provinciâ unus sit conventus seu collegium per capitulum generale assignatus, in quo erit particularis arca trium clavium, deserviens duntaxat pro custodiendis pecuniis pertinentibus ad redemptionem, quae et erit communis pro pecuniis totius provinciae. Ex dictis autem clavibus altera sit apud ministrum, altera apud redemptorem illius provinciae, vel, ad eius defectum, apud procuratorem illius conventus seu collegii, et altera apud consiliarium antiquiorem. Quod si in aliquo alio conventu vel collegio evenierit quod sit arca particularis pro custodiendis tantum pecuniis

¹ Edit. Main. legit *legitime* (R. T.).

² Edit. Main. legit *sessionem* (R. T.).

ad redemptionem pertinentibus, illius claves habeant praedicti minister, consiliarius antiquior, et procurator conventus vel collegii; nunquam autem praefatae arcae aperiantur sine assistentiâ trium clavariorum, qui distincte ac perspicue scribant omnia quae recipiuntur et in negotiis redemptionis expenduntur.

viii. Redemptores captivorum bis quotannis patri provinciali rationem reddant in scriptis omnium ingressuum, expensarum, causarum, litium, etc., pertinentium ad bona redemptionis. Finito autem triennio praecedentium rationum, atque (si forte fuerint) debitorum alicuius conventus vel collegii, tum pater provincialis, tum etiam et aliunde ex loco ubi deget pater redemptor, ad suum superiorem generalem transumpta mittat ante celebrationem sui capituli provincialis.

ix. Superior et consiliarii cuiuscumque conventus et collegii ad finem singulorum mensium conferant et summam conficiant omnium quantitatuum ad redemptionem pertinentium, tam ex separatis pro tertiâ parte, quam ex donatis determinate ad ipsam redemptionem, et in libro eiusdem redemptionis illa scribant ac propriis nominibus subscribant.

x. Ad hoc ut pecunia captivorum integra et in fideli ac securâ custodiâ perseverat, praecipimus in virtute sanctae obedientiae, et sub praecepto, omnibus religiosis tam praelatis quam subditis, et unicuique in singulari, ne extrahant, nec expendant (quamvis sit ratione mutui vel commodati, aliove titulo non spectante ad redemptionem) ipsam redemptionem captivorum, sine licentiâ in scriptis sui definitorii generalis: definitorium autem eam concedere non poterit, nisi omnibus consentientibus suffragiis, et ad tempus determinatum pro solutione. Superior autem qui constitutioni isti contraverit, suo officio sit privatus, et inhabilis ad ulteriora Ordinis officia praelati, ac similiter quilibet alius religiosus voce et loco sit privatus per triennium et ad officia praelati maneat inhabilis.

xi. Insuper praecipimus quod quilibet praelatus expendens vel in toto vel in parte res in specie propria vini, tritici, ordei, ac similes iam destinatas et separatas pro captivis, suspensus sit a suo officio per mensem unum, vel amplius, iuxta qualitatem culpae; et visitator curet ut absque morâ reintegretur et restituatur quod expensum vel alienatum fuisse constiterit.

xii. Patres provinciales seu visitatores in suis visitationibus colligant ex arcis captivorum quod pro ipsorum redemptione invenerint separatim iuxta rationem in libro conventus seu collegii factam, et schedulam extractae et receptae pecuniae suis nominibus subscriptam relinquunt; quod idem fiat quando redemptor vel alius religiosus de consensu et dispositione dicti redemptoris vel definitorii extraxerit ex arcis aliquid ad redemptionem spectans. Quilibet autem visitator librum habeat, in quo scribat quod colligit et recipit in unoquoque conventu seu collegio ex pertinentibus ad redemptionem, in quo et subscribant minister et consiliarii vel clarii arcae redemptionis respective.

xiii. Praefati autem provinciales seu visitatores praedictas pecunias pro captivis, ut dictum est, ab ipsis collectas, reponant in arcâ generali suae provinciae antequam discedant a conventu, ubi talis est arca, sub poenâ suspensionis ab officio per tres menses.

xiv. Praecipimus patribus redemptoribus captivorum, ne pro redemptionibus aes alienum sine licentiâ sui definitorii generalis contrahant, sed observent instructionem ab ipso definitorio illis iniunctam, sub poenâ privationis vocis activae et passivae per triennium.

xv. Patres provinciales ad capitulum generale deferant testimonium subscriptum a claviis arcae generalis redemptionis captivorum, in quo scripta sint omnia tunc temporis existentia pro captivis in omnibus conventibus et collegiis suarum provinciarum respective: superiores autem generales etiam deferre debent ad capitulum generale transumpta ad ipsos missa toto illo sexennio antecedenti, ut ex his omnibus

instum et rigorosum fiat examen tum observantiae tum fidelitatis circa ea quae ad institutum pertinent religionis.

§ 2.
De modo per-
tendi eleemosy-
nas pro capti-
vis.

I. Pro maiori curâ et diligentia colligendi eleemosynas et omnia ad captivos spectantia, in qualibet provincia sint duo vel tres religiosi procuratores redemptionis ad arbitrium patris provincialis, qui designabit eis terminos ad petendas et colligendas dictas eleemosynas; id tamen totum fiat consulto redemptore provinciae; qui eos tenetur dirigere, itaut nunquam sint extra conventum seu suum collegium per maiorem partem anni. Insuper praecipimus patribus redemptoribus captivorum, quod designent in civitatibus et oppidis syndicos et collectores saeculares cum facultate sufficienti ad exigenda, recipienda et custodienda legata testamentorum, operum piorum, monstrencorum (ut vocant), et omnium aliarum rerum pertinentium ad redemptionem; quae omnia, tempore apto, redemptores ipsi colligent vel per se vel per religiosos procuratores. Et quando in proximo sint pro redemptione exequenda postulent pro illâ eleemosynas a principibus ecclesiasticis et saecularibus, capitulis, communitatibus, aliisque personis gravibus.

II. Praeterea praecipimus procuratoribus redemptionis, imo etiam generalibus et conventualibus omnibus nostri Ordinis, ut sint valde solliciti in procurandis eleemosynis pro captivis. Et omnes similiter religiosi, tam praelati quam subditi; in districtu suarum domorum diligenter procurent eleemosynas pro redemptione; et superiores inquirent ab inferioribus quid in hac re actum receptumve sit.

§ 3.
De electione
et qualitate re-
demptorum.

I. Capitulum provinciale, finitis electionibus canonicis, albis nigrisque lapillis eligat redemptorem captivorum pro suâ provinciâ. Redemptores autem erunt vitâ, merito, doctrinâ et sapientiâ praediti, et qui officio provincialium vel definitorum saltem provincialium vel ministrorum conventualium aliquando potiti, vel saltem capaces ut talibus muneribus potiantur.

II. Pro singulis provinciis singuli eligantur redemptores. Si autem intra aliquam

provinciam fuerint plurium principum curiae, poterunt eligere plures redemptores ad arbitrium ipsius capituli provincialis; sed ita subordinati intra se, ut unus tantum reputetur redemptor principalis provinciae, ad quem alter vel alteri omnium rationes ad suum officium pertinentium mittere tenentur. Si vero plures provinciae insimul redemptionem fecerint, mutua redemptorum subordinatio a suo definitorio generali designabitur. In qualibet domo nostrâ et suae provinciae in qua fuerint vel per quam transierint redemptores, et, si fuerint ad redemptionem, etiam extra suam provinciam, conventualitatem habeant, et praecedant omnes non praelatos (excepto procuratore generali Ordinis Romae aut curiae regiae) etiam vicarios. In regimine vero et administratione domus non se intromittant. Ad egrediendum tamen e domo, socium postulant a vicario in absentia ministri, sine deosculatione tamen scapularii, nisi forte praeses fuerit, propter absentiam ministri ultra viginti quatuor horas.

III. Stricte praecipimus redemptoribus captivorum, ac aliis eorum sociis proficiscentibus ad redemptionem, ne comportent aliquas res non conducentes ad illius effectum, nec sibi, nec aliis ex infidelium regionibus in reditu similia trahant; alias gravissimae et irremissibili punitioni ad arbitrium sui definitorii generalis subiacebunt.

IV. Redemptores captivorum intra tres menses post reditum ab executione redemptionis, expensarum istius, et aliarum rerum, ad munus istud aptius in futurum perficiendum, rationem reddant suo definitorio generali. Quod si omiserint, graviter puniantur iuxta culpae qualitatem.

REGULAE CAPUT III.

Omnis Ecclesiae istius Ordinis, etc.

CAPUT III. — De divisione familiarum, provinciarum, et earum nominibus, ac de conventuum differentia et eorum aedificiis.

I. Ut constat ex Brevi et dispositione sanctissimi domini nostri Clementis XII, ad melius regimen, in duas familias venit univ-
versus Ordo divisus; quarum una nomina-

§ 4.
De nominibus ec-
clesiarum, fa-
miliarum, pro-
vinciarum et

domorum dispo-
sitionem.

bitur intra-Hispana, et extra-Hispana altera; et utraque erit sub titulari sibi electo. Quapropter titulus familiae intra-Hispanae erit *Iesus Redemptoris*, et alterius familiae erit *Matris Redemptoris*. Ex decreto ultimi capituli generalis, similiter provinciae debent intitulari nominibus iam electis, quibus uti consuevit utraque familia usque adhuc. Omnes tamen ecclesiae istius Ordinis intitulentur nomine *Sanctissimae Trinitatis*, quamvis habeant secundum titularem in patronum.

II. In Ordine nostro quatuor sint differentiae conventuum. Prima novitiorum et professorum, ubi a magistris in caeremoniis, mortificatione, vitaeque spirituali instruuntur. Secunda collegiorum, ubi iam professi philosophiam sacramque theologiam edocentur, et ubi postea conferendo perficiantur in eisdem. Tertia conventuum, in quibus religiosi spirituali profectui tam proprio quam proximorum incumbant. Quarta demum domorum in desertis ubi soli Deo vacent.

III. Statuimus ne fiat nova conventus fundatio, nisi in eo numerus religiosorum, a regula nostra stabilitus, commode, cum observantia, et sine distractione sustentari queat.

IV. Situs conventus (si fieri possit) eligatur intra civitatem vel oppidum, in loco tamen ad religiosorum quietem opportuno, et in quo permansurus sit. Nec in eo assistant ultra tres vel quatuor religiosos, qui de fabrica curent donec ecclesia et habitatio cum sufficienti clausura constructa sit.

V. Pro nova conventus seu collegii fundatione minister eligi non possit, quin tresdecim sint fratres, quos regula exposcit. Interim tamen gubernetur per praesidentem a superiore generali seu provinciali nominatum.

1. Statuimus ne alicuius conventus seu collegii fabrica incipiatur quin praecedat illius descriptio seu exemplar delineatum ab architecto aliquo nostri Ordinis, examinatum a superiore generali, qui reformabit excessus, si qui contra constitutiones infra ponendas inventi fuerint. Semel autem a superiore generali examinato, nihil sine il-

lius licentia contra illud fiat, sive per additionem, sive per diminutionem. Qui vero in toto vel in parte huic constitutioni contravenit vel contravenire permiserit, suspensus sit ab officio suo, iuxta gravitatem culpa.

II. Ecclesiae latitudo sit saltem viginti quatuor pedum, et ad summum viginti septem; cui latitudini correspondeat longitudo et altitudo, iuxta regulas architecturae; pinaculum item sive extremitas capellae maioris humilis sit; nec extra ecclesiam opera affabre elaborata et curiosis crustis ornata fiant. In sacrario vero aliquam permittimus faciem, ut vocant.

III. De pariete ad parietem claustrum in longitudine sit saltem spatium quinquaginta et quinque pedum, non tamen ultra sexaginta. Transitus autem pro latitudine novem vel decem pedes capiat.

IV. Cellae habeant undecim pedes in quadrato, illarum fenestrae, ad summum, altitudinis tres pedes et digitos quatuor, latitudinis pedes duos et quinque digitos. Transitus autem dormitorii sex pedes latitudinis ne excedat. Cellae vero infirmariae poterunt habere sexdecim pedes in quadro.

V. Officinae, quae sunt in terra, duodecim tantum pedes altitudinis habeant, itaut parietes conventus a pavimento claustrum usque ad tectum non excedant altitudinem viginti et sex pedum, nisi id exigat angustia situs, vel ne religiosi de foris videantur. Solaria autem et prospectus plani sint operis, et parvis expensis fabricentur.

VI. Observata subscripta aedificiorum proportionem, interiores officinae et mansiones disponantur iuxta arbitrium prudentis architecti. In praedictis autem mensuris, per pedem intelligimus tertiam partem ulnae castellanae. Praecipimusque dictas mensuras immutari non posse nisi per capitulum generale.

VII. In civitatibus magnisque oppidis, ecclesiae et claustra excedere poterunt longitudinem latitudinemque, modestiam tamen in omnibus servata. In minoribus vero oppidis nunquam excedant minorem mensuram.

1 Deesse videtur minorem vel dictam (n. t.).

ram designatam, nec sint infra illam. Idemque volumus, proportione servatâ, de curiositate ecclesiarum, quae semper iuxta regulam nostram debent esse plani operis. Maior autem cellarum et officinarum numerus in unoquoque conventu disponatur iuxta maiorem vel minorem religiosorum numerum, qui ibidem sustentari valeat.

REGULAE CAPUT IV.

Fratres debent esse in unâ cohabitatione, etc.

CAPUT IV. — *De numero religiosorum qui debet esse in quolibet conventu.*

In nostris conventibus et collegiis sit competens numerus fratrum iuxta prudentem patris provincialis dispositionem. Nunquam tamen sint infra tresdecim continuo habitantium intra claustra, sicut praecipit regula, praeterquam in aliquâ novâ foundatione, ut supra dictum est.

REGULAE CAPUT V.

Omnibus fratribus suis sicut sibi met, etc.

CAPUT V. — *De curâ quam praelati tenentur habere erga subditos suos.*

In omnibus nostris conventibus et collegiis sint officinae communes, ex quibus omnia necessaria tam de victu quam de vestitu, tam pro salute quam pro infirmitate, aequaliter ministrentur religiosis omnibus tam praelatis quam subditis, sub poenâ suspensionis ab officio superiori erga hoc negligenti. Curet tamen quod res, quae religiosis conceduntur ad usum, sint prout decet discalceatos.

REGULAE CAPUT VI.

Vestimenta sint lanæ et alba, etc.

CAPUT VI. — *De vestitu nostrorum religiosorum.*

I. Exterior vestis seu habitus fratrum nostrorum sit ex sago albo, nec per tres digitos ad terram perveniat, nec latitudo infima in circuitu tres ulnas excedat, eiusque manicae strictae sint, et versus manum unius palmi latitudinem pertingant, sed non excedant. Interior vestis etiam erit ex sago albo, brevior tamen exteriori tribus digitis. Scapularium similiter sit ex sago albo latum

ad palmum et dimidium palmi, altum vero a terrâ per palmum et duos digitos. Capitulum interius sit etiam ex eodem sago albo, et strictum, nec illius acuta extremitas ad cinctorium per quatuor digitos accedat.

II. Cappa sit ex rudi sago fuscî coloris, stricta, sine plicaturis, alta a terrâ per dimidiam ulnam et quatuor digitos. Capitulum exterius sit etiam fuscî coloris, et aequale interiori. Mensurae autem praefatae accipiendae sunt de ulnâ castellanâ.

III. Corrigiae sint nigrae, et absque aliquâ curiositate, et tribus digitis longiores scapulario. Sandalia sint ex canabe seu sparto, unius solae, et ex omni parte aperta; zocholi ex ligno, et cum corrigiis angustis.

IV. Tunicae immediatae corpori sint ex stamenâ albâ et rudi. Femoralia vero ex lino rudi et communi. Nullusque religiosus tam illas, quam ista, mundandas tradat externae personae privatae, et distinctae ab eâ quae similia vestimenta communitatis totius abstergit.

V. Linteola pro emungendis naribus minime sint alba sive serica, sed honesta prorsus et rudia; et galeri pro itineribus faciendis nigri vel fuscî coloris.

VI. Novitii eisdem vestibus utantur, excepto quod quatuor extremitates scapularii erunt circumcissae vel retortae. Oblati, seu donati, eisdem vestibus utantur ac professi; ceterum non habebunt capitulum ullum, et illorum scapularia ad genua non pertingent, nec longiora poterunt esse a tergo.

VII. Quicumque contra statuta in hoc capitulo in toto vel in parte fecerit, puniatur poenâ gravi per unum aut plures dies iuxta qualitatem culpae.

REGULAE CAPUT VII.

Laceant in laneis, etc.

CAPUT VII. — *De lectulis pro cubitu fratrum nostrorum.*

I. Lectulus sit ex tabulis; eius latitudo trium palmorum cum dimidio, altitudo vero tertiae partis ulnae castellanae; cum duobus tantum stragulis sive lodicibus laneis, et cervicali uno etiam ex lanâ.

II. Ne autem religiosum aliquem sine

habita mori contingat, praecipimus quod omnes dormiant cum scapulario parvo lino, quod quidem infirmi in lecto cubantes nunquam dimittant.

REGULAE CAPUT VIII.

In cappis et scapularis fratrum, etc.

CAPUT VIII. — De cruce portandâ in cappâ et scapulario.

Cruz rubei et caerulei coloris, quam iuxta regulam portare debent religiosi nostri in cappâ et scapulario, sit absque curiosâ suturâ, longitudinis unius palmi, et latitudinis unius pollicis.

REGULAE CAPUT IX.

In rasurâ Ordinem S. Victoris sequantur clerici, etc.

CAPUT IX. — De rasurâ nostrorum religiosorum.

i. Fratres deputati ad chorum tonsuras clericales amplas habeant, ita ut circulus capillorum trium digitorum latitudinem non excedat, neque ad radices aurium per duos digitos pertingat. Ad uniformitatem autem servandam in qualibet domo sit mensura qua in die rasurae dicti circuli latitudo mensuretur.

ii. Laici barbas crescere modeste permittant ad praescriptum regulae, itaut temporum capilli uniantur cum barbâ. Nec illis unquam clericalis corona concedatur.

REGULAE CAPUT X.

Asinos sive mulos Hospes eis ascendere, etc.

CAPUT X. — De his quae fratres debent observare quando iter faciunt, et de modo petendi eleemosynas.

i. Muli sive mulae¹, quas fratres nostros ascendere regula permittit, mediocres sint staturae; exhortamurque religiosos ut curent observare laudabilem Ordinis consuetudinem asinos ascendendi.

ii. Quando religiosi iter faciunt in mulis propriis religionis non utantur ephippiis, sive sellis, sed clitellis non fraeno cum habenis corrigatis, sed ex canabo, nec stapedibus ferreis, sed ligneis. Qui secus fecerit, subiaceat poenae ad arbitrium superioris.

¹ Edit. Main. legit *mula* (n. r.).

iii. Nullus iter faciat absque licentiâ in scriptis superioris, cui compellit illam concedere, in qua iste designabit tempus pro itinere, statione et reversione. Et superior ac consilarii conventus, a quo egredietur, dictam facultatem subscribant notando diem mensem et annum per verba et non per numeros. Qui autem ultra tempus determinatum remoratus fuerit, a superiore conventus puniatur attentâ morâ.

iv. Itinerans, ad locum dumtaxat et opidum in licentiâ designatum, et viâ rectâ, pergat. Curiam regiam adhuc intra suam familiam nullus ingreditur, nec illius ambitum per spatium unius leucae, sine sui superioris generalis facultate; neque praetextu conventualitatis, sine illius consensu praestito¹ provinciali illius provinciae, sub poenâ privationis vocis et loci per unum annum tum ingredienti tum eum mittenti statim applicandâ. Ceterorum autem principum curias intra suas provincias existentes ex licentiâ sui provincialis ingredi poterunt. At vero, ut unius provinciae religiosi ingrediantur curiam intra ambitum alterius, a superiore generali erit expectanda facultas: quo vero ad accessum ad Curiam Pontificiam, serventur exacte constitutiones et decreta summorum Pontificum, et signanter felicitis recordationis Clementis VIII.

v. In locis, in quibus sunt conventus nostri, nullus religiosus iter faciens, sive pergat, sive veniat, saecularium domos ingreditur absque licentiâ praelati, sub poenâ gravis culpa per tres dies.

vi. Ad quemlibet Ordinis conventum religiosus pervenerit, licentiam patentem faciat, alioquin superior illam postulet absque exceptione alicuius personae. Quae licentia, si frater pro conventuali venerit, custodiatur in arcâ trium clavium conventus, subscripta a ministro et consiliariis post adnotationem diei in quo praedictus frater pervenit. Qui vero litteras patentes non ostenderit, ipso facto careat voce et loco.

vii. Nullus religiosus de unâ familiâ egredietur in aliam sine licentiâ in scriptis

¹ Videtur deesse praeposit. a (n. r.).

ministri generalis, sub poenâ apostasiae et privationis officii, vocis et loci in perpetuum. Quod si laicus fuerit, portet habitum fuscî coloris per triennium; praelatus vero, qui sine praedictis requisitis et facultatibus miserit aliquem religiosum extra suam familiam, privatus sit a suo officio, et inhabilis in perpetuum existat ad ulteriora Ordinis officia.

VIII. Pater minister generalis mittere poterit quemlibet religiosum, etiam definitorem generalem, quocumque expedire viderit; commissarius vero generalis intra ambitum familiae suae; provincialis intra ambitum provinciae suae; ministri vero conventuales per spatium leucarum duodecim a suis conventibus, non ultra.

IX. Provinciales autem a conventibus sub suâ iurisdictione existentibus poterunt sibi subditos amovere. Ceterum ad negotia aut lites non mittant ad curias principum sine consilio et assensu sui superioris generalis. Neque similiter ministri conventuum aut collegiorum adhuc existentium intra ambitum duodecim leucarum ingredi, aut sibi subditos mittere poterunt ad huiusmodi curias, sine praedictâ facultate. Si autem sine eâ aliquis religiosus ingredi praesumat, a ministro domus consistentis in curiâ statim recludatur, et superior generalis, iuxta gravitatem culpae, eum puniat; ipseque et superior, qui eum misit, poenam privationis incurrant, ut dictum est num. IV.

X. Attento spiritu paupertatis et clausurae religionis nostrae, statuimus ut sine gravi et urgente necessitate non detur religiosis facultas itinerandi, nec mutandi conventualitatem, neque ad hoc ut sint extra conventus a Paschate usque ad festum SS. Trinitatis eo anno quo celebratur capitulum generale vel suae provinciae, nisi occurrat negotium speciale Ordinis quod differri non valeat.

XI. Ad patriam suam nullus pergat absque provincialis licentiâ, nec sine socio absque superioris generalis concessione, vel nisi in oppido illo sit coenobium nostrum: praelatus autem, qui secum¹ quemquam miserit,

¹ Forsan secus (R. T.).

poenae suspensionis ab officio per mensem unum subiaceat.

XII. Iter facientibus permittimus usum caligarum sive tibialium ex sago albo, vel simili materiâ, absque aliquâ curiositate, et in urgenti necessitate usum pedaliû ex eâdem materiâ; et superiores omnia itineri necessaria eis praestent. Itinerantes autem tenues et moderatos sumptus faciant, et in omnibus se ipsos exemplar virtutum praebeant. Quod si excessus commiserint, a praelato vicinioris conventus mulcentur, iuxta gravitatem culpae.

I. Religiosi nostri per areas non postulent nec quaerant eleemosynas, nec pro illis petendis ultra duodecim leucas a conventibus se extendant, absque superioris generalis seu provincialis licentiâ. Nec item frater aliquis cuiuslibet conventus vel collegii quaerat sive postulet eleemosynam aliquam (cuiuscumque rationis haec sint) in oppido, villâ, seu districtu, vel termino designato a provinciali pro altero conventu seu collegio etiam intra praedictum spatium duodecim leucarum. Quod si nihilominus ita quaerens aliquam receperit eleemosynam, provincialis eam conferri faciat domui illi, in cuius districtu quaesita fuit; et praeterea tam subditum, quam superiorem, in toto vel in parte contravenientes contentis in istâ constitutione, arbitrato suo puniat¹ iuxta qualitatem culpae ipsorum; limitatio autem praefata duodecim leucarum, non comprehendit procuratores redemptionis; exhortamurque praelatos, ut ad postulandam ostiatim eleemosynam non alios mittant quam fratres laicos, et semper cum sociis.

II. Nullus religiosus postulet aut recipiat eleemosynam aliquam pro suis parentibus, cognatis aut aliis personis extra religionem, absque superioris generalis licentiâ, sub poenâ reclusionis iuxta gravitatem culpae. Si autem aliquis parentes pauperes et egenos habeat, moneat provincialem, qui, cognitâ necessitate, sine interventu dicti religiosi, ac consideratis circumstantiis, opem ferat iuxta possibilitatem et paupertatem Ordinis.

¹ Nempe ipse provincialis (R. T.).

§ 3.
De modo postulandi eleemosynas.

REGULAE CAPUT XI.

In regularibus horis morem S. R. E. observant.

CAPUT XI. — De officio divino, missâ et communione fratrum, et de his qui sacris initiandi sunt.

§ 1.
De diligentia
et sedulitate,
qua convenire
debent religiosi
ad recitandum
et concinendum
officium divi-
num.

I. Omnes religiosi, audito primo signo ad chorum, expediantur et se praeparent, considerantes se pergere ad angelorum officium exercendum; et, antequam secundum cymbali signum finiatur, sint in choro, sub poenâ culpae levis, vel gravis, si de more habuerint.

II. In omnibus conventibus nostris matutinum inviolabiliter dicatur mediâ nocte, nisi urgens obstet necessitas, vel rationalis causa vere excusans, de qua provincialis in visitatione rigorose inquirat, vel in Ordinis instructione fuerit statuta recreatio: idque praecipimus patribus ministris et praesidentibus in virtute sanctae obedientiae et sub praecepto formali. At vero matutinum feriae v in Coenâ Domini, Parasceves et Sabbati Sancti, necnon Pentecostes, SS. Trinitatis, festi Corporis Christi, si venerationi expositum fuerit per totam eius octavam, ac in festivitibus sanctorum patriarcharum nostrorum Ioannis et Felicis, dicatur horâ quintâ post meridiem. Matutinum primae diei Paschae et per eius octavam usque ad sabbatum in Albis dicatur ad auroram, sive circa horam quartam diei. Omnes aliae Horae canonicae, atque defunctorum officia, recitentur tempore constituto in caeremoniali Ordinis.

III. Integrum matutinum cum laudibus cantetur in die Nativitatis Domini, in primâ die Paschae, et primo Pentecostes, in festo SS. Trinitatis et SS. Sacramenti, ac feriâ quintâ, sextâ et sabbato maioris hebdomadae, necnon festivitibus sanctorum patriarcharum nostrorum Ioannis et Felicis. In aliis vero festivitibus primae et secundae classis, in quibus primae et secundae vesperae cani debeant, ac in die octavâ SS. Trinitatis et Corporis Christi, et (si istud venerationi patenter expositum fuerit) per totam eius octavam, in matutino cantetur invitorium cum hymno sequenti, et hymnus quoque

Te Deum laudamus; et in Laudibus, a capitulo usque ad ✠ *Benedicamus Domino* et eius ✠ *Deo gratias* inclusive. In die vero Epiphaniae (cum non sit invitorium) in tertio nocturno cantabitur psalmus *Venite exultemus*, cum suâ antiphonâ. In reliquis vero duplicibus solus hymnus *Te Deum*.

IV. In cantando integre matutino cum laudibus expendantur saltem duae horae; hora vero cum dimidiâ, quando solum canitur invitorium, hymnus et *Te Deum laudamus*, et in laudibus a capitulo, et quando officium est de dominicâ, et quando, licet sit aliud, cum eo tamen recitatur officium parvum B. Virginis Mariae vel defunctorum; in reliquis vero matutinis et laudibus hora una cum quadrante.

V. Prima canatur tantum in vigiliâ Nativitatis Domini, tertia in festis in quibus vel integrum matutinum vel saltem cani debet invitorium modo dicto num. III, excepto die Ascensionis, in quo cantabitur nona. In cantando autem qualibet minori horâ canonicâ consumatur dimidia hora; quartum vero horae istius in illâ recitandâ, et aliquid amplius quando coniungitur cum officio parvo B. Mariae Virginis.

VI. Missa conventualis canatur omnibus diebus, quibus tertia, et omnibus dominicis et diebus feriatis, et in omnibus festivitibus Ordinis et B. Virginis Mariae, atque in feriâ IV Cinerum, feriâ V in Coenâ Domini, feriâ VI in Parasceve, sabbato sancto, vigiliâ Pentecostes, et in die Commemorationis defunctorum, necnon quando sit officium de aliquo sancto martyre in conventu illo ubi corpus vel insignis reliquia asservatur. Insuper in die unâ infra octavam Omnium Sanctorum cantabitur vigilia, missa et solemne responsum pro captivis defunctis, et in die immediato post festum omnium sanctorum Ordinis, et similiter canatur vigilia, missa, solemneque responsum pro nostris religiosis defunctis. In cantandâ autem qualibet missâ tres partes horae consumantur; in recitandâ vero, dimidia hora: quod si quis celerior fuerit, a superiore puniatur poenâ culpae mediae, imo et gravis, si de more habuerit.

vii. Primae et secundae vesperae canantur in omnibus festivitibus primae et secundae classis, quae ad colendum pronunciantur, et eiusdem ritus, quamvis non colantur, in his quae fuerint Christi domini eiusque sanctissimae Matris, sanctorum patriarcharum nostrorum, titularis alicuius familiae, provinciae, conventus vel collegii, atque S. Agnetis secundo; in reliquis vero festivitibus Ordinis primae tantum vesperae canantur, vesperae autem secundae sanctorum omnium dicantur sine cantu, et eis finitis canantur vesperae defunctorum. Si tamen festum Omnium Sanctorum celebretur in sabbato, eorum secundae vesperae tunc cantentur, in die dominicâ sequenti vesperae defunctorum. In omnibus autem vespers cantandis tres quadrantes horae consumentur; in recitandis vero, fere dimidia hora. Superior qui supradicta celerius cantari vel recitari permiserit, severe puniatur.

viii. Praedicta, quae in festivitibus cani debent, non concionantur quando dictae festivitates transferuntur, sed tantum quando in propriis diebus ab Ecclesiâ designatis celebrentur; non tamen propterea omittenda, sed cantanda est missa in quocumque die feriato, quamvis de festo illius diei officium non fiat; nec cantanda sunt supradicta quando in choro non sint saltem sex religiosi qui canere possint. Missa vero et alia quae ratione donationis vel eleemosynae essent canenda cum paucioribus, et etiam si sint solemnitates translatae, cani debent.

ix. Totum, quod in officio divino et missâ cantatur, sit tono plano, aequali, gravi et devoto, absque modulatione et armoniâ, sub poenâ culpae gravis contravenienti, et suspensionis ab officio superiori permittenti. Quae autem recitantur, cum devotione dicantur et pausatione competenti pro insumendo spatio temporis designato.

x. Officium parvum B. Virginis Mariae in omnibus conventibus recitetur diebus in breviario assignatis, et quamvis non tantâ pausatione, quantâ maius, non tamen minori devotione.

xi. Fratres laici assistant officiis divinis, iuxta prudentem superioris dispositionem,

attento uniuscuiusque labore et occupatione, et loco officii divini, singuli recitent quinquagies orationem dominicam, et totidem vicibus salutationem angelicam, nempe pro Matutino quindecies, pro Laudibus quinques, et pro unâquaque Horâ etiam quinques.

xii. Religiosus, qui Matutino abfuerit sine licentiâ, vescatur in terrâ sine capiti id quod ceteris ministratur, praeter piscem, vel quod eius loco praestatur. Si vero alteri cuicumque Horae canonicae non adstiterit, arbitrio superioris puniatur.

xiii. Tempore divinorum officiorum nullus sine urgenti necessitate praesidenti exprimendâ, et cum illius licentiâ, a choro exeat, nisi ad rem ipsi choro et officio pertinentem. Eademque causa et licentia praecedat, quotiescumque aliquis religiosus a quolibet actu communi egressurus fuerit.

i. Omnes nostri sacerdotes singulis diebus sacra faciant, exceptis feriâ v, vi et sabbato maioris hebdomadae, et quando urgenti causâ impediti fuerint: in hoc tamen casu cum licentiâ omittent superioris. Qui autem absque istis circumstantiis rem sacram facere omiserit, pane tantum et aquâ die unâ vescatur.

ii. Sacrificium missae peragere debent in propriis conventibus, nisi superior, urgenti causâ, et raro, licentiam concedat, ut nonnullus extra propriam ecclesiam sacrificet.

iii. Feriâ v in Coenâ Domini omnes religiosi recipiant sacram Eucharistiam de manu sui praelati. Qui sacerdotes non sunt, caelesti se pane reficiant omnibus dominicis diebus et feriis v totius anni. Potest tamen functio ista anteponi vel postponi propter aliquod solemne festum. Praecipimus insuper praefatis omnibus fratribus non sacerdotibus, quod quotidie missae sacrificio intersint, sub poenâ ieiunii in pane tantum et aquâ.

iv. Magistri novitiorum et professorum in diebus feriatis sacra faciant in ecclesiâ; in aliis diebus in oratorio suo celebrare poterunt.

v. Societates et confraternitates saecularium absque definitoriâ licentiâ non admit-

§ 2.
De missâ et
communione re-
ligiosorum.

tantur in nostris conventibus et collegiis. Qui secus fecerit, ad arbitrium dicti definitorii puniatur.

§ 3.
De eleemosynis
et missarum.

i. Nullus religiosus recipiet eleemosynam missarum, nisi tantum pro suo conventu; quod si itinerans pro mutatione conventualitatis aliquam acceperit, pro illo sit conventu in quem tendit conventualis futurus. Superiores vero etiam generales, et alii qui ministri non subsunt, eam quam acceperint eleemosynam ad arbitrium sui immediati, cui illico exactam rationem reddere teneantur, in promptu habeant: nulli enim libera eleemosyna relinquitur, nec intentio ulla, nisi raro ex concessione sui praelati pro una aliave celebranda missa.

ii. Pro una missa, etsi cantata, unicum dumtaxat stipendium accipiat, sub poena suspensionis ab officio per tres menses praelato contravenienti.

iii. In nostris conventibus et collegiis non recipiantur eleemosynae pro capellaniis et missis perpetuis, sine superioris generalis licentia in scriptis, nec pro patronatu conventus, ecclesiae, vel capellae maioris vel minoris, vel pro oratione, disciplina, aliove communitatis exercitio, absque sui definitorii generalis licentia in scriptis, quam concedet consulto provinciali provinciae illius cuius est conventus vel collegium cui conceditur.

iv. Eleemosynae receptae pro missis perpetuis, memoriis, capellaniis, patronatibus dictis, et sepulturis perpetuis, nullatenus in totum vel in partem (etiam consentiente conventu) expendantur, sed ad censum annuosque redditus imponantur. Ex licentia tamen sui definitorii generalis (omnibus consentientibus suffragiis) dictae eleemosynae iam investitae converti poterunt in redditus indemniores et utiliores conventui, nunquam tamen pro eis subrogari bona alia antea monasterio acquisita. Ad hoc autem ut sedulo custodiatur pecunia impertita pro missis et reliquis in hac constitutione enumeratis, praecipimus in virtute sanctae obedientiae, sub praecepto, omnibus religiosis, tam praelatis quam subditis, et cuilibet in particulari, quod, dum dicta pe-

cunia non investitur, nihil ex ea expendant, etiam titulo mutui alioque quocumque. Superior autem contraveniens, privatus sit officio suo, aliusque vero quicumque frater voce et loco per triennium.

v. Pecuniae receptae pro supradictis rebus, dum non investuntur, seu in annuos redditus conferuntur, in propria conserventur specie. Si incrementum habuerit, cedat in favorem memoriae, si vero decrementum (absque culpa tamen conventus vel collegii) cedat contra memoriam.

vi. Ut constet de memoriis ac missis perpetuis, quae sunt in quolibet conventu et collegio, iusteque adimpleantur, praeterea quod adnotatae erunt in libro magno, cui titulus *protocollo*, scribantur in tabula publica in loco.

i. Fratres nostri sacris initiandi examinentur prius de sufficientia sua a ministro conventus et aliis duobus religiosis a provinciali designatis, et postea de vita et moribus per secreta suffragia capituli conventualis approbentur. Nec praelati superiores suas litteras concedant, donec illis constet de sufficientia, vita, moribus et aetate. Nullus diaconatus aut subdiaconatus gradum recipiat, quin duos annos integros professionis habeat, nec presbyteratum ante elapsam integrum triennium a professione.

§ 4.
De his, qui
ordinandi sunt.

ii. In dioecesi propria, ubi est conventus, recipiant ordines religiosi nostri; si ibi non conferantur, poterunt aliam adire dioecesim, non distantem tamen a monasterio ultra vigintiquatuor leucas. Qui secus fecerit vel permiserit, poenam gravi per tres dies puniatur.

iii. Sacerdos primam missam non celebret, quin prius praelato constet tum de ordine recepto per litteras testimoniales ei patefactas, tum etiam de sufficienti novi sacerdotis scientia, sacrarum caeremoniarum ad iudicium ipsius praelati et aliorum duorum religiosorum ab eodem designatorum, et quin ulterius per decem dies in exercitiis spiritualibus se se praeparaverit dictus novus sacerdos, qui neququam primum sacrum extra proprium coenobium faciat sub poenam gravis culpa per tres dies.

REGULAE CAPUT XII.

Omnibus secundis feriis, etc.

CAPUT XII. — *De suffragiis faciendis pro defunctis.*

§ 1.
De suffragiis
defunctorum in
communi.

I. Omnibus secundis feriis ad praescriptum regulae nostrae dicatur missa defunctorum. In conventibus quidem cum cantu, nullumque pro ea stipendium recipiatur. Missa autem finita, fiat per claustrum processio, prout in manuali. Ubi vero claustrum non fuerit, absolutio canatur in choro.

II. In omnibus conventibus, temporibus a nostro manuali designatis, quatuor fiant anniversaria pro defunctis religiosis, pro captivis, benefactoribus, parentibus, cognatis, confratribus, amicis, pro sepultis in nostris coenobiis, ac denique pro omnibus fidelibus defunctis. In quolibet anniversario dicatur integrum officium defunctorum, et canatur solemniter missa de requiem, fiatque processio per claustrum, et ubi non fuerit, cantetur absolutio in ecclesia: idemque prorsus fiat in die Commemorationis omnium fidelium defunctorum.

§ 2.
De suffragiis
pro nostris re-
ligiosis defun-
ctis et pro aliis.

I. Quando aliquis religiosus e vita decederit, devote ac solemniter sepeliatur, servato officio sepulturae in nostro manuali assignato; et superior conventus, seu collegii, in quo frater obiit, scribat suo superiori generali, provincialibus et ministris totius suae familiae, atque chronistis, generali atque provinciali provinciae suae, referens domum, in qua mortuus fuit, tempus, et causam mortis, nomen, patriam, aetatem, professionis tempus, et exercitia, seu officia, quae defunctus habuerit, et virtutes, in quibus specialiter resplenderit. Et de defunctis, qui professi fuerant ante confirmationem constitutionum factam die x decembris anni MDCCXXXIII, superior generalis statim illius mortem denunciaret superiori generali alterius familiae, ut iste ceteris provincialibus notam faciat, ut et illi intra suam familiam, et unusquisque intra provinciam suam omnibus conventibus et collegiis idem denuntient, ut iusta sine mora persolvant, et ministri de receptione ista-

rum litterarum provinciales suos moneant. Et in archivio nostrorum Matritensis Romanique S. Caroli conventuum una ex dictis litteris cuiuslibet defuncti servetur, ut, si forte dignus sit, de illo in chronicis commemoratio fiat.

II. In collegio seu conventu, in quo obiit religiosus, praeter vigiliam, quae cantatur in officio sepulturae, integrum officium defunctorum recitetur, et tres missae de requiem cum suis responsoriis in ecclesia canantur, et praeterea novem sine cantu dicantur. Cum illae tres cantantur, in medio capellae maioris sit tumultus altitudinis palmorum quinque panno nigro coopertus, et supra ipsum habitus Ordinis.

III. Singuli sacerdotes conventus seu collegii pro religioso ibidem defuncto tres missas privatas celebrent, et post quamlibet recitent responsorium in tumultu. Singuli quoque fratres ad chorum deputati tria integra defunctorum officia, et laici tria integra rosaria recitent, et in ipsa die mortis vel sequenti Eucharistiam sacram recipiant pro defuncti anima, ac insuper pro illa duas alia offerant communionem.

IV. Et quia futuris temporibus suffragia pro nostris religiosis defunctis solum fieri debent intra familiam eorum, et non in toto Ordine, nisi pro illis, qui ante constitutionum confirmationem professi fuerant, ut supra dictum est: quilibet conventus et collegium illius familiae pro anima cuiuslibet religiosi defuncti integrum officium defunctorum recitet et missam unam cantet, ac responsorium circa tumultum, ut dictum est. Praeterea singuli sacerdotes duas missas privatas dicant cum responsoriis. Fratres ad chorum deputati, duo integra officia defunctorum, et laici duo integra rosaria, et in die, quo notitia mortis pervenerit, vel in sequenti, omnes praedicti fratres simul sacram communionem pro defuncti anima recipiant, illamque pro illa offerant.

V. Si vita functus fuerit minister generalis vel vicarius generalis Ordinis, in toto Ordine; si vero commissarius generalis vel vicecommissarius generalis, solum intra familiam suam; si provincialis vel vicarius

provincialis, solum in sua provinciâ; si minister, in suo conventu sive collegio duplicentur missarum sacrificia, officia choristarum et rosariâ laicorum. Si autem fuerit definitor generalis actualis Ordinis, vel qui antea munus ministri generalis vel vicarii generalis expleverat, in toto Ordine; si definitor generalis actualis familiae, vel qui munus commissarii generalis vel vicecommissarii generalis ante expleverat, solum intra suam familiam; si vero fuerit definitor provincialis actualis, vel munus ministri provincialis vel vicarii provincialis expleverat antea, solum intra suam provinciam omnes sacerdotes missam unam, fratres ad chorum deputati unum officium, et laici unum rosarium recitent, ultra id quod pro particulari religioso recitare tenentur. Praeterea si defunctus fuerat aliquando definitor generalis Ordinis, vel familiae, vel actualis procurator generalis Ordinis vel familiae in Curia Romanâ, sive Hispaniae in curia regiâ, vel redemptor captivorum, vel procurator provinciae, tunc respective, vel in toto Ordine, si pro eo, si pro eâ, in sua tantum familiâ, vel solum in provinciâ suâ, quando pro illâ ultimo officium exercuit: pro his omnibus et animabus eorum quilibet conventus seu collegium in communi recitet integrum officium defunctorum et unam missam de requiem cantet, atque qui non fuerint sacerdotes, unam communionem efferant, ultra praefatâ pro aliis.

vi. Si defunctus fuerit novitius vel donatus, recitetur pro eo integrum officium defunctorum, et cantetur una missa in conventu in quo obiit, et quilibet illius sacerdos unam missam privatam, choristae unum integrum officium, et laici unum rosarium integrum pro eius animâ recitent.

vii. Ad hoc ut de istarum constitutionum adimplemento constet, sit ante chorum tabula, in qua scribantur religiosi, qui decedunt in quolibet triennio, et notetur in illâ dies, in quo iusta illis soluta sunt.

viii. Religiosi nostri semper sepeliantur in claustris, vel alio in loco illis dumtaxat deputato, ac segregato a saecularium sepulchris, et scribantur et signentur fratrum prae-

dictorum¹ sepulturae, maxime illorum qui sanctitatis famâ decesserunt.

ix. Insuper statuimus quod in omnibus conventibus et collegiis nostris, cum notitia sit de obitu Summi Pontificis et domini cardinalis protectoris Ordinis nostri, solemnes fiant exequiae pro illis. Similiter fiant exequiae solemnes pro principe dominanti, et eius consorte, in conventibus et collegiis ditionis suae.

x. Praeterea, dum fuerit notitia de morte parentum vel fratrum alicuius religiosi in eo conventu vel collegio, ubi iste conventualis fuerit, una missa dicatur pro defuncto. Idemque fiat pro habente epistolam nostram confraternitatis in eo conventu vel collegio, cuius religiosos frequentius hospitio excipiebat.

REGULAE CAPUT XIII.

Singulis diebus si fieri possit, etc.

CAPUT XIII. — *De oratione mentali, lectione, examine conscientiae, et communi flagellatione, et exercitiis spiritualibus.*

i. Singulis diebus in qualibet domo communis fiat ad Deum mentalis oratio per duas horas; una diluculo, in conventibus quidem, a die primâ martii usque ad ultimam septembris, ab horâ quintâ usque ad horam sextam, et a die primâ octobris usque ad ultimam februarii, ab horâ sextâ usque ad septimam; altera vero tempore vespertino, semper a quintâ usque ad sextam horam. Insuper post finitum matutinum et coronam Virginis Mariae, quae post illud immediate recitatur, reliquum temporis usque ad secundam noctis horam in orationem impendatur. Quod si quis absque licentiâ ab oratione mentali abfuerit, comedat in terrâ, sine capitis, idem quod ceteri, excepto pisce, vel quod eius vice ministratur.

ii. Ne autem servor spiritus tepescat, imo exercitium orationis augeatur, praecipimus nostros religiosos singulis diebus saltem per dimidiam horam immediatam ante orationem vespertinam librorum spiritualium incumbere lectioni.

¹ Videtur deesse nomina (R. T.).

III. Omnes in communi bis in die, nempe immediate ante prandium et post antiphonam *Benedicta*, conscientiae faciant examen per spatium fore octavae partis horae. Qui autem communitati tunc adesse nequivit, ubicumque fuerit, eadem horâ faciat examen.

IV. Omnibus feriis secundis, quartis et sextis totius anni post Completorium, vel post examen nocturnum, communis fiat flagellatio, et tamdiu duret, quamdiu cantetur psalmus *Miserere* cum antiphonae versibus et orationibus in nostro caeremoniali assignatis. Excipiuntur vigilia et dies Nativitatis Domini cum tribus immediate sequentibus, dies enim¹ vespertinus et dies ipse Circumcisionis, necnon vigilia et dies ipsa Epiphaniae, dies vespertini et dies ipsi sanctorum patriarcharum nostrorum Ioannis et Felicis, ac denique feria secunda Paschae, feria secunda Pentecostes, et utraque feria quarta ante Ascensionem scilicet et festum Corporis Christi. Si autem in supradictis feriis venerit solemne festum, poterit in antecedenti, vel sequenti die, vel in ipso festo post matutinum fieri flagellatio. Quae quidem fiat in omnibus feriis maioris hebdomadae, itaut feriâ IV, V et VI psalmus *Miserere* ter cantetur in qualibet disciplinâ, cum ✠. *Christus factus est pro nobis, etc.*, et oratione *Respice*, ut in officio illorum dierum, fiatque post matutinum.

V. Praecipimus in virtute sanctae obedientiae, et sub praecepto formali, omnibus religiosiis tam praelatis quam subditis, quod singulis annis faciant per decem dies exercitia spiritualia in cellis suis, vel in alio loco separato ad id destinato, modo et formâ in Ordinis instructione praescriptis. Quo tempore cum communitate solum intersint matutino, primae, completorio, orationi mentali, examini conscientiae, disciplinae et refectorio, iuxta prudentem instructionis dispositionem. Huiusmodi autem exercitia ita fieri debent ut medietas totius communitatis insimul et primo faciat, et postea immediate altera medietas, nisi, attento religiosorum numero, minister in tres partes suam communitatem iudicet dividendam.

¹ Videtur legendum etiam (R. T.).

Tempus vero, in quo fieri debent exercitia, erit ab instructione praescriptum.

REGULAE CAPUT XIV.

Singulis quoque noctibus pro statu et pace S. R. E., etc.

CAPUT XIV. — *De sacrificiis et orationibus faciendis pro exaltatione sanctae catholicae fidei, pace inter principes christianos, captivis, benefactoribus et reliquis Ecclesiae necessitatibus.*

I. Stricte praecipimus omnibus nostris religiosiis, quod in suis sacrificiis, orationibus, communionibus et aliis bonis operibus, tam in communi quam in particulari exercendis, Deum orent pro exaltatione sanctae catholicae fidei et pace S. R. E., pro Summo Pontifice, nostris regibus et principibus, pro domino cardinali protectore nostri Ordinis, pro eiusdem Ordinis conservatione et augmento spirituali, pro benefactoribus et captivis christianis, et his pro quibus universalis Ecclesia consuevit orare. Specialiter autem pro fine isto sequentia fiant.

II. Singulis noctibus, antequam ad somnum capiendum religiosi se conferant, omnes simul in ecclesiâ vel in choro magnâ devotione recitent antiphonam SS. Trinitatis *Benedicta sit sancta, etc.*, cum ✠ et oratione, prout in nostro manuali; et finito conscientiae examine, recitent similiter litaniam lauretanam sanctissimae Dei Parentis, prout in eodem manuali: et qui legitimâ impeditus causâ interesse ei non potuerit, illam privatim recitet.

III. In omnibus domibus, non collegiis, sabbatis totius anni cantetur missa B. Virginis Mariae, illis exceptis in quibus occurrerit alia missa canenda ex designatis cap. XI, § 1, num. VI, necnon vigiliâ Nativitatis Domini, octavis privilegiatis, sabbato infra octavam Corporis Christi, et sabbato in quo celebrari incipit capitulum nostrum generale vel provinciale. Si autem in alio aliquo sabbato occurrerit obligatio canendi alias missas pro dotatione, aliove titulo, sive gratuito, sive oneroso, non ideo omittenda est praedicta missa SS. Virginis, pro qua (nisi fuerit dotata) stipendium non recipiatur. Praeterea in omnibus conventibus et

collectis cantetur solemniter *Salve Regina* sabbatis totius anni, et diebus vespertinis festivitatum B. Mariae Virginis et Ordinis simul. Qui vero sine licentiâ dictae missae vel antiphonae non interfuerit, semel in terrâ comedat sine capitis.

REGULAE CAPUT XV.

Jeunent ab idibus septembris, etc.

CAPUT XV. — De ieiuniis.

1. Praeter ieiunia in regulâ nostrâ praecepta, ieiunent etiam religiosi nostri omnibus feriis sextis totius anni, necnon in diebus vespertinis SS. Sacramenti, B. Mariae Virginis, et sanctorum patriarcharum nostrorum Ioannis et Felicis, ac in die S. Marci Evangelistae, et feriâ II, III, IV immediatâ ad festum Ascensionis Domini, nisi sollemnis festivitas intervenerit. Per solemnes autem intelligimus festivitates nostri Ordinis (inter quae festum titularis familiae in familiâ, provinciae in provinciâ, et domus in domo), festa B. Virginis Mariae, et quae ad colendum pronunciantur. Ieiunium vero feriae sextae maioris hebdomadae erit in pane et aquâ tantum.

II. In ieiuniis Ecclesiae pro serotinâ refectiunculâ ministretur frustulum panis et pomum aliquod, vel quid simile. In ieiuniis vero Ordinis cum pane nonnulla praebeantur, ut moris est, ita ut forma ieiunii non excedatur.

REGULAE CAPUT XVI.

Carnibus vesci liceat tantum in dominicis diebus, etc.

CAPUT XVI. — De abstinentiâ a carnibus.

1. Si quis religiosus, absque licentiâ et causâ, in diebus per regulam nostram prohibitis id ediderit¹ quod Ecclesia in die veneris manducari prohibet, pro primâ vice ieiunet semel in pane et aquâ tantum, pro secundâ vero circulare recipiat flagellationem. Quod si fuerit praelatus, severe puniatur ad arbitrium sui superioris; et si comederit coram saecularibus, per decem dies exercitia faciat spiritualia. Superior item, qui sine necessitate praebuerit darive

¹ Edit. Main. legit *ediderit* pro *ederit* (R.T.).

permiserit carnes toti magnaeve parti communitalis, suspendatur ab officio per duos menses.

II. Ad maiorem vero observantiam sanctae nostrae regulae, praecipimus in virtute sanctae obedientiae omnibus et singulis nostris religiosis, ne comedant extra domos nostrae religionis in locis prohibitis per regulam, nec carnes comedant extra domos nostrae religionis in diebus prohibitis per illam, absque licentiâ praelati sui, iuxta tenorem regulae ipsius. Quod autem dicitur in regulâ, cap. XIX incipiente *In civitatibus, in villis, sive castellis*, intelligatur domus in oppido, villâve aut civitate, quando per mille passus non distat ab eis; si autem sit extra praedefinitum spatium, non erit contra praeceptum nec adhuc vesci carnibus in diebus prohibitis per regulam, praehabitâ licentiâ praelati. Si aliquis in morbum inciderit sufficientem ut carnibus vesci liceat ei in die veneris, distansque fuerit a conventu, itaut non possit facile obtinere licentiam a praelato, eis vesci poterit virtute huius constitutionis.

III. Nullus religiosus, quamvis imbecillum habeat valetudinem et frequentes indispositiones, carnem comedat, vel linteo utatur, absque licentiâ sui ministri, qui eam concedet, mature perpensâ necessitate, et pro tempore durationis illius.

IV. Ministri curent et charitate hortentur religiosos, qui pro infirmâ valetudine carnibus vescuntur, ut ab his pro aliquo tempore se abstineant. Experientiâ namque compertum est, quamplures fere a salute desperatos, recuperasse illam, vitae communi se conformantes, et in Domino fiducialiter sperantes.

REGULAE CAPUT XVII.

Possint emere ad suum victum, etc.

CAPUT XVII. — De cibo et honestâ fratrum recreatione.

1. Superiores suppedient necessaria de victu religiosis iuxta indigentiam ipsorum; quod si propter negligentiam, vel domus paupertatem, non provideant, fratres tamquam veri Christi discipuli patienter ferant;

§ 4.
De cibo monachorum religiosorum.

attamen, si necessitas postulaverit, humiliter illos moneant; quod si adhuc non subvenerit¹, liceat eis provinciali denunciare, qui praelatos convictos puniat.

II. Omnes in refectorium ad primam mensam convenient. In illo mantilia non sint, sed pro singulis fratribus singulae parvae mappae: patinae, scutellae, paterae, et similia alba non sint, nisi tantum pro infirmis.

III. Omni tempore in quantitate cibi servetur uniformitas, nec superior unquam variationem quoad hoc permittat, exceptis magnis festivitibus, in quibus extraordinaria, prout moris est, ministrantur; mos enim et consuetudo in instructione reperitur expressa.

IV. In refectorio semper meridie et sero lectio habeatur spiritualis, servatâ ceremonialis nostri dispositione.

V. In omnibus conventibus et collegiis prandium fiat post undecimam horam; quando vero ieiunatur ex Ecclesiae praecepto, post undecimam et dimidiam fiat. Coena sive refectionuncula nunquam sit ante completorium.

VI. Extra communitatem nemo comedat vel bibat absque expressâ superioris licentiâ.

VII. In refectoriis nostris non admittantur saeculares, nisi raro benefactores vel personae graves. Idque praesertim vitari debet in festis solemnibus, professionibus et primis sacris.

I. In conventibus nostris omnes fratres simul in loco uno semper post prandium per unam horam recreationem habeant, exceptis feriis maioris hebdomadae, et insuper aliam horam post coenam seu vespertinam refectionem, a Paschate usque ad ultimam diem septembris, ac in festivitibus solemnibus totius anni, et a vigiliâ Nativitatis usque ad Epiphaniam, atque in feriâ secundâ et tertiâ post dominicam Quinquagesimae, necnon quando ex instructione fuerit statuta recreatio. Attamen novitii et recens professi, qua die sacrâ communione refecti fuerint, post prandium non recreentur. Et tam ipsi quam philophae scholastici cum suis magistris semper habeant recreationem disiunctim a conventualibus.

¹ Videtur legendum *subvenerint* (R. T.).

II. In recreationibus omnes cum modestiâ et honestâ gravitate se gerant; legatur ibi res aliqua spiritualis, vel de illâ agatur, et saltem de rebus indifferentibus; non vero de genealogiis, stirpibus, nationibus, patriis, nuntiis et rumoribus inutilibus ad aedificationem et profectum animarum; verbaque iocosa, faceta, detractoria non dicant, nec contentiones habeant. Ut autem supradicta observentur, superior recreationibus adesse curet, et huic constitutioni contraveniens flagellatione puniatur.

III. Quando recreationis gratiâ religiosi e conventu exierint, maneant intra illum qui eius obligationibus satisfacere valeant. Si recreationes extraordinariae extra conventum fuerint, in aliquâ villâ seu suburbanâ domo, vel praedio, praelatus designet terminum, ad quem religiosi accedere possint, et quem non trasgrediantur absque expressâ ibidem praesidentis licentiâ.

IV. Nullo tempore religiosi nostri comediis, aliosve actus, tametsi spirituales, agant, nec praelati ab eis agi permittant, nec pro quovis alio ludo et oblectatione vestes saecularium de foris portent, nec propriis non dentur. Qui autem contravenerit vel contravenire permiserit, a provinciali severe puniatur. A vigiliâ vero Nativitatis usque ad Epiphaniam dumtaxat poterunt nostri musicis uti instrumentis.

V. Nullus unquam procuret nec permittat quod in nostris ecclesiis repraesentationes etiam omnino spirituales fiant; qui secus fecerit, gravi poenâ ad arbitrium provincialis puniatur.

REGULAE CAPUT XVIII.

Vinum sumendum a fratribus, etc.

CAPUT XVIII. — *De sobrietate servandâ.*

I. A religiosis, praesertim discalceatis, valde aliena est intemperantia et ebrietas: proptereaque quilibet in hac materiâ defectus magnopere reprehendi et puniri debet. Quare si quis (quod Deus avertat) ebrius aliquando deprehensus fuerit, si acciderit sine scandalo, poenâ culpae gravis puniatur per sex dies; si cum scandalo, sit incarcerationatus per tres menses, et privatus loco et

voce per annum annum. Quod si fuerit laicus, habito fasci coloris induatur, si cum scandale, per unum annum, si absque illo, per quatuor menses.

REGULAE CAPUT XIX.

In civitatibus, in villis, sive castellis, etc.

CAPUT XIX. — *De abstinentiâ a cibo et a potu servandâ a religiosis extra conventum, in oppidis ubi illum habemus.*

I. Qui in loco, ubi est coenobium nostri Ordinis, extra illud comederit vel hospitatus fuerit, incarceretur per quindecim dies: si pernoctaverit, suspensus sit ab officio, voce et loco per sex menses; si biduo pernoctaverit, ultra dictam poenam, incarceratus existat per dies viginti; quod si amplius perduraverit, augeatur poena, attentâ gravitate culpae et transgressione regulae.

REGULAE CAPUT XX.

Nequaquam in tabernis, etc.

CAPUT XX. — *De locis in quibus religiosi hospites non esse tenentur.*

I. Regula dirigit omnes nostras actiones ad honestatem maioremque perfectionem; ideo maximo iure praecipit, ne habitemus, comedamus vel bibamus in tabernis, cauponibus et huiusmodi locis minus honestis, et contravenientes subiicit poenae culpae gravis ad arbitrium ministri. Quod praecipimus stricte observari.

REGULAE CAPUT XXI.

Talis sit charitas inter fratres clericos et laicos, etc.

CAPUT XXI. — *De vitâ aequali et de communi, ac de consensu fratrum.*

§ 1.
De vitâ communi et aequali.

I. Aequalitas est parium et imparium ordo; ordo enim horum est aequalitas: nec contrarium praecipit regula, quippe solum praescribit aequalitatem inter clericos et laicos, et hanc circa victum, mensam et vestitum. Scire enim debent religiosi, quod non erit ordo, sed confusio, quando inferiores eriguntur animo ut sint sicut superiores, et iuvenes sicut senes, quia hoc est superbiae vitium, loco virtutis humilitatis, qua superiores deprimi debent, ut et ipsi videantur

inferiores. Observent enim omnes aequalitatem praecipiam a nostrâ regulâ, et non illa abutantur. Qui vero absque superioris licentiâ dederit aut receperit cibum alium et diversum in quantitate, qualitate et condimento ab eo qui in communi ceteris ministratur, puniatur iuxta qualitatem culpae.

II. Nullus religiosus alium ex nostris etiam ministrum generalem titulo appellet reverendissimi aut paternitatis, sed sacerdotes omnes nominentur patres et reverentiae, et non sacerdotes fratres et charitates. Ratione tamen submissionis et reverentiae debitae superioribus, omnes religiosi in toto Ordine cum sermonem¹ agunt de patre ministro generali vicarioque generali Ordinis, necnon de praedecessoribus in eodem munere, aut de definitoribus generalibus Ordinis, dicant noster pater, eodemque pronomine *noster* decorentur intra suam familiam commissarius aut vicecommissarius actualis, eorum praedecessores, atque etiam definitores generales actuales eiusdem, similiter provincialis actualis et actuales definitores provinciales ab omnibus suae provinciae, et minister a subditis sui conventus seu collegii. Nec ideo aliquis eo pronomine utatur si loquatur de tertio cum superiore utriusque.

III. Titulus doctoris, magistri et huiusmodi nulli nostrorum praestetur, tametsi ante ingressum in religionem illo gradu et titulo frueretur, nec, illius intuitu, aliquis immunitate libertateque in Ordine nostro gaudeat.

IV. Nullus inter nostros conservet aliquod cognomen, aut eo utatur, sui generis quod habebat in saeculo, nec a loco suae natiuitatis accipiat pronomen: omnes enim a sua professione eligere debent mysterium² aut sancti alicuius cognomen, sub cuius tutelâ et patrocinio recipiantur in Ordine, et postea sub eo cognomine dignoscantur.

I. Decernimus quod pater minister generalis vel vicarius generalis habeat primum locum et sedem in totâ religione: superior generalis familiae, absente superiore gene-

¹ Ed. M. legit *sermone* pro *sermone* (R. T.).

² Forsan *mysterii* (R. T.).

§ 2.
De consensu inter fratres servandâ.

rali Ordinis, in totâ suâ familiâ: pater minister vel vicarius provincialis in suâ provinciâ, absentibus his duobus superioribus generalibus: et his tribus absentibus, minister in suo conventu vel collegio. Deinde volumus quod observetur hic ordo: Pater commissarius vel vicecommissarius generalis, intra suam familiam, post ministrum vel vicarium generalem; et extra illam, post definidores generales Ordinis: postea definidores generales Ordinis in toto Ordine post ministrum domus, extra suum definitorium, et sicut ¹ intra illud, quamvis aliud definitorium, sive generale familiae, sive provinciale, actu celebretur in domo: definidores generales familiae extra actuale definitorii celebrationem intra suam familiam sedeant post ministrum sicut definidores generales Ordinis, et extra suam familiam omnes alios hospites iam ministros quam provinciales praecedant: definidores provinciales in suâ provinciâ, deinde definidores generales familiae hospites, provinciales hospites intra suam familiam, et similiter definidores provinciales hospites, iuxta antiquitatem suarum provinciarum, praecedant provinciales et definidores provinciales alterius familiae, qui extra propriam familiam ² antiquitatem suarum provinciarum servabunt, ministri hospites intra et extra suam provinciam iuxta antiquitatem suarum domorum, procurator generalis Ordinis in Romanâ Curiâ et Hispaniae in regiâ, redemptor provinciae, procurator generalis familiae, redemptores hospites iuxta antiquitatem suarum provinciarum, nisi inter illos fuerit statuta subordinatio: procurator provinciae, procurator generalis familiae, hospites patres vicarii in domibus suis, patres vicarii hospites, iuxta antiquitatem suarum: domorum patres procuratores provinciae hospites iuxta antiquitatem suarum provinciarum, et qui fuerit plurium provinciarum praecedat alios: patres sacerdotes professi, qui fuerint confessarii, sive conventuales, sive hospites sint, praecedere debent, intra et extra familiam, provinciam

¹ Forsan sive; ceterum haec et sequentia dimittimus lectori scio (R. T.).

² Male edit. Main. legit *familiae* (R. T.).

aut domum suam, omnes alios non confessores, si professi fuerint a die xxxi martii anni MDCCXXXIV, ut decretum fuit post constitutionem anno praecedenti confirmatam a capitulo generali: post praedictos confessarios sequuntur sacerdotes simplices professi, iuxta antiquitatem suarum professionum; fratres diaconi professi, iuxta antiquitatem professionis; fratres subdiaconi professi, iuxta antiquitatem professionis; fratres professi choristae, iuxta antiquitatem professionis; novitii sacerdotes, iuxta antiquitatem habitus; fratres laici professi, iuxta antiquitatem professionis; novitii choristae, iuxta antiquitatem habitus; novitii laici, iuxta antiquitatem habitus.

II. Tempore capituli vel definitorii patres definidores et capitulares locum habebunt et sedem infra¹ designatam cap. xxxix, § 3, num. III; ac similiter in domibus, in quibus adfuerit superior immediatus illorum. Patres visitatores, dum tali munere funguntur, praesideant, et praecedant omnes alios ab ipsis visitandos.

III. Nullus praesidentiam vel loci praecedentiam habeat, eo quod in religione functus fuerit aliquo officio, etiam generalatu.

IV. Quando in itinere fuerint, praesidentiam et graduationem num. I assignatam observent, nisi iustâ² de causâ praelatus aliquem minus antiquum in praesidentem designet.

REGULAE CAPUT XXII.

Infirmi seorsum dormiant et comedant, etc

CAPUT XXII. — *De charitate erga infirmos.*

1. Superior conventus praesto sit infirmis, provideatque de omnibus necessariis pro ipsorum medelâ et curatione, quin paupertate conventus excusari velit, quamvis vera sit paupertas, ³ renunciare debeat officium; alioquin, facto a provinciali processu, privatus sit a definitorio generali suo, ut sollicitior alius, loco illius, subrogetur. Superior vero non permittat, quod extra conventum cibis condatur, nisi in aliquâ gravi infir-

¹ Edit. Main. legit *intra* (R. T.).

² Edit. Main. legit *iuxta* (R. T.).

³ Aliquid deesse videtur ex. g. *vel* (R. T.).

mitale, et aliquo condimento a nostris ignoto. Quod si defectus in aliqua re acciderit, hortamur aegrotos, ut tamquam pauperes patienter ferant.

II. Quotidie superior visitet infirmos, et curet tempore apto illis sacramenta ministrari. Quod si sua negligentia absque Poenitentia, Viatico, vel Extrema Unctione aliquis decesserit, suspensus sit ab officio per unum annum, vel augeatur poena arbitrio provincialis iuxta culpam; et infirmarii, si quam culpam habuerint, iuxta illius gravitatem mulcentur. Curet insuper praelatus quod aegroti semel saltem in hebdomada (dum infirmitatis accidentia non impediant) caelesti reficiantur pane, et quod in Paschate pro adimplatione praecepti ecclesiastici sacra Eucharistia solemniter ministraretur non valentibus surgere a lecto, prout in nostro manuali.

III. In quocumque conventu vel collegio quis aegrotaverit, quamvis sit hospes, curetur, donec salutem recuperet, nisi iusta de causa provincialis illum mittat in aliam domum, et conventuales illum cum charitate recipiant, ac de necessariis provideant sicut ceteris conventualibus.

IV. Si propter infirmorum frequentiam conventus aliquis in egestatem devenerit, facta, cum licentia superioris generalis, aliqua per conventus contributione².

V. Nullus aegrotus ex nostris curetur extra conventum, etiam in domo parentum suorum, nisi casu quo morbus ita sit gravis quod ab illo aliter³ non posse evadere prudenter iudicetur, et tunc quidem fiat cum licentia in scriptis patris provincialis, et in oppido in quibus coenobium nostrum non est.

VI. Balnea medicinalia nullus intret aegrotus absque patris provincialis licentia in scriptis, sub poena privationis vocis et loci.

VII. Sine expressa licentia sui praelati nemo medicum consulat, nec medicinis utatur sub poena gravis culpae.

¹ Edit. Main. legit *iuxta* (R. T.).

² Aliquod deest, exempli gratia *adiuvetur* (R. T.).

³ Edit. Main. legit *aliter* pro *aliter* (R. T.).

VIII. Liceat infirmis cum praelati benedictione uti tibialibus et pedalibus, vel aliqua alia re ex sago albo, vel simili materia, ut se protegant et foveant, dummodo nisi in agrum de domo non exeant, nec saecularium domos antea vel postea ingredi praesumant, sub poena reclusionis intra conventum per integrum annum.

REGULAE CAPUT XXIII.

Si qui religiosi ad hospitandum devenerint, etc.

CAPUT XXIII. — *De charitate exercenda cum hospitibus religionis ac saecularibus.*

I. Superiores benevole recipiant hospites nostri Ordinis, et necessaria illis suppeditent, sub poena culpae gravis. Ceteri religiosi familiariter cum illis agant, a primaque nocte ipsorum pedes laventur; ac simili charitate et benevolentia recipiatur quilibet alterius Ordinis religiosus, qui ad hospitandum in domos nostras advenerit.

§ 1.
De hospitibus
religiosis.

II. Hospites nostri Ordinis, transacta prima die, choro et aliis functionibus communitatis assistant, nisi forte, propter prolixitatem itineris, superior longiorem illis requiem concedat.

III. Si ultra quatuor dies in conventu remoreantur, pecunias, si quas habent, superiori tradant, ut in trium clavium arca custodiantur, alioquin poenae culpae gravis per tres dies subiaceant; et superior illas integre restituat, sub poena suspensionis ab officio per mensem unum.

IV. Statim ac hospites ad conventum accesserint, ministro declarent quid curae et negotii habeant, et absque illius licentia (quamvis conventuales vel provinciales vel definitores alicuius provinciae sint) non egrediantur e conventu, obediuntque, sicut conventuales, ordinationibus et praeceptis ipsius praelati, nisi hospes sit superior generalis vel definitor generalis alterius familiae, qui tamquam definitores generales Ordinis habendi sunt circa haec.

V. Transactis duobus diebus, hospites missas celebrent pro intentione et obligatione conventus vel collegii illius in quo hospitantur. Si tamen venerint ut conventuales, a primo die pro illo sacra faciant.

§ 2.
De hospitibus
saecularibus.

I. Etiam saeculares benevole et charitative recipiantur; non tamen in communi dormitorio, sed in loco separato hospitentur.

II. Non permittentur saeculares intrare celles et officinas conventus, quamvis illius famuli sint; bene tamen aliqua persona gravis, sed raro, et cum superioris licentiâ et religioso comitante. Delinquentes autem, qui ad nos confugerint, solum permittantur per tres dies.

REGULAE CAPUT XXIV.

Nullus frater laicus sive clericus, etc.

CAPUT XXIV. — De otiositate a nostris fugiendâ.

I. Nullus religiosus (sicut praecipit regula) sit sine proprio officio, iuxta prudentem praelati dispositionem.

II. Officia in communi tabulâ singulis hebdomadis aequaliter distribuantur, et imponantur omnibus religiosis tam praelatis quam subditis, et iuxta vires et occupationes uniuscuiusque, prout in nostro caeremoniali disponitur; et sacerdotibus, qui iam triginta et octo annos ab habitu recepto expleverint, solum imponatur humilitatis officium; nec insuper fratres laici, qui eosdem triginta octo annos habitus compleverunt, vel si coquinae, vel pulsatoris ad matutinum et mane ad orationem aurorae officia laudabiliter exercuerint, unumquodque per duodecim annos integros et continuos aut saltem per breve tempus discontinuos, immediatos tamen post professionem, cogantur pulsare mediâ nocte ad matutinum, nec mane ad orationem aurorae, nec ad coquinam destinantur. Et praecipimus patribus ministris, quod solis his hoc modo exemptis, et aliâs aptis, onus committant postulandi eleemosynas ostiatim. Et similiter praecipimus patribus provincialibus quod tantum hos iam sic exemptos, et non alios, licet aptiores, ad procuracionem redemptionis, sacristiae officium, administrationem laborum agri, vel alia huiusmodi, eligant aut designent, nec eligere permittant. Praeterea fratres laici, qui per sex annos, post illos duodecim, officiorum administratoris, procuratoris redemptionis, eleemosynarii,

Bull. Rom. — Vol. XXIV.

53

aut sacristae exercitium laudabiliter compleverint, praeter humilitatis officium aliud illis in communi tabulâ non imponatur ulterius.

III. Praedictae tabulae officia cum magnâ curâ fratres adimpleant. Quod si quis urgenti causâ adimplere quandoque non valuerit, superiorem tempore apto moneat ut alium substituat, sub poenâ disciplinae non monenti.

REGULAE CAPUT XXV.

Silentium observent semper in ecclesiâ suâ, etc.

CAPUT XXV. — De silentio, clausurâ, et modo servando in exitu a conventu.

I. Praeter loca in quibus regula nostra praecipit semper observare silentium, etiam inviolabiliter servetur in sacristiâ et clauastro, et insuper in omni loco servetur facto signo post prandium ut religiosi ad cellas se conferant usque ad vespervas, vel aliud simile signum, necnon ab examine conscientiae nocturno usque ad Primam diei sequentis. Licebit tamen eis cum superiore his temporibus loqui super aliquo quod differri non possit.

§ 1.
De silentio.

II. Praecipimus singulis religiosis nostris, quod nec inter se, nec cum saecularibus unquam deambulent, nec confabulentur in clauastro. Si cui opus fuerit alterum alloqui, id faciat in aulâ, sive loco ad id destinato a superiore, cum illius licentiâ.

III. Omnes religiosi mutuo se honore aficiant; non tamen hoc fiat urbanitatibus alienis ab humilitate discalceatorum.

I. Singuli religiosi in singulis seorsim habitent cellis, a quibus non exeant sine urgenti necessitate, vel ad chorum, idque praesertim observetur temporibus silentii.

§ 2.
De clausurâ.

II. Nullus alterius cellam (etiam superioris, absente ipso) ingrediatur, sub poenâ comedendi semel super terram. Quod si privatim cellam de nocte intraverit, privatus sit voce et loco per mensem; si autem in aliquo conventu defectus erga hoc reperiat, superior, ad illum vitandum, praeciptum imponat et maiorem poenam.

III. Nullus ab alterius cellâ extrahat codi-

coe, libros vel rem aliam, sine licentiâ superioris, qui contraventionem severe puniatur¹.

iv. Laudabilis nostri Ordinis consuetudo observetur, nempe in nocte post litaniam lauretanam pulsantur tabellae in dormitoriis, et dicatur sententia spiritualis, cuius meditatione religiosi in cellas lectulosque se conferant, ac intra quadrantem horae lucem extinguant; qui intra illud spatium non extinxerit, pronus in terram die sequenti comedat.

v. Superiores, per se, vel per suum vicarium, quando expedire viderint, cellas nocturno tempore visitent; clausuram vero singulis noctibus, portas iterum obserando magistrâ clavi, quam semper apud se retineant. Qui autem negligens in debitâ clausurâ observandâ fuerit, suspensus sit ab officio per tres menses.

vi. Quando solitae processiones per nostra sunt claustra, non permittatur ingressus mulierum in illa. Qui secus fecerit, graviter ad arbitrium provincialis puniatur.

i. Superiores, redemptores captivorum, procuratores, eleemosynarum quaestores, vel loco procuratoris conventus alius religiosus, cum suis sociis, poterunt dumtaxat ad oppidum exire; et praedicatores similiter ad concionandum, et confessarii ad audiendas confessiones. Quod si in aliquo conventu fuerint plures hospites et negotia, poterunt alii egredi cum licentiâ definitorii. Superior autem huiusmodi constitutioni contraveniens poenâ culpae gravis puniatur. Ipseque ita sit assiduus in domo, quod subditi eius exemplo libenter ferant inclusionem suam. Nec uno eodemque tempore minister et eius vicarius extra coenobium unquam sint.

ii. Nullus superior, in locis in quibus sunt conventus nostri, religiosum aliquem, etiam eleemosynae quaestorem, sine socio ad oppidum mittat, sub poenâ culpae gravis, prudenterque se gerat in assignatione sociorum; quos autem designaverit, recipiant subditi absque excusatione, sub poenâ etiam culpae gravis. Qua etiam poenâ afficiantur socii,

¹ Potius lege puniat (n. r.).

qui extra monasterium ita separantur, ut mutuo se non videant, praesertim dictae eleemosynae quaestores.

iii. Ante horam orationis matutinae a domo nullus exeat absque urgenti necessitate, redeantque omnes ante noctem; contraveniens autem pronus in terram panem et aquam die sequenti comedat. Nec exeant in diebus feriatis, et in illis, quibus saeculares habeant ludos et publicas laetitia, spectacula et similia, exceptâ causâ gravis et ita urgentis negotii, quod differri non valeat. Qui vero absque illâ licentiam diebus praedictis petierit vel concesserit, poenae culpae gravis subiaceat.

iv. Quando religiosi nostri ad oppidum exeunt, in illas tantummodo ingrediantur domos, ad quas expressam licentiam habent, nec negotia suscipiant, nisi a superiore commissa; quod si aliquod occurrerit, in regressu ad conventum praelato expoant. Qui vero parti alicui huius constitutionis contraverit, poenâ culpae gravis afficiatur, vel maior, si ratione alicuius circumstantiae culpa augeatur.

v. Egressurus a conventu, obtentâ licentiâ, indutus cappâ, simul cum socio, benedictionem accipiat a praelato, et sanctissimo sacramento breviter orans, idemque faciat in regressu. Tempore autem visitationis actualis, a visitatore benedictionem accipient. Semperque eandem accipient praelati ab aliis sibi superioribus in eadem domo existentibus.

vi. Nunquam religiosi nostri simul in communi egrediantur ad funera vel cantanda responsoria, nisi in eis locis in quibus unicus fuerit conventus vel collegium nostri Ordinis, vel ad funera et exequias regum, episcoporum, praelatorum et similium gravium personarum, quando aliae religiones concurrant. In his autem et quibusvis aliis functionibus, singulari modestiâ nostri resplendeant, nec a communitate aliquis unquam separetur, sub poenâ culpae gravis per tres dies.

vii. Hortamur patres ministros, ne permittant ut religiosi, qui pro suâ infirmâ valetudine carnibus vescuntur, lino, sive

§ 2.
De egressu
fratrum a con-
ventu.

aliâ re nostrae austeritati oppositâ utantur¹, iter faciant, vel a conventu exeant, nisi raro, et iustâ de causâ, vel in agrum, iuxta dicta de charitate erga infirmos num. viii.

viii. Nullus religiosus, sub poenâ gravis culpa, e domo egrediatur ad agenda negotia saecularium, etiam suorum parentum; si tamen commode excusari non possit, id licet ei, obtentâ prius alicuius praelati superioris licentiâ.

REGULAE CAPUT XXVI.

Iuramenta non faciant, nisi magna necessitas, etc.

CAPUT XXVI. — *De circumstantiis quae concurrere debent pro iuramentis a nostris religiosis faciendis.*

Iuramenta non faciant, nisi magna occurrerit necessitas in causis iustis et honestis, cum licentiâ sui praelati, vel iussi ab aliquo qui id praecipere eis possit. Qui autem absque istis circumstantiis iuraverint, disciplinâ conventuali plectantur.

REGULAE CAPUT XXVII.

Pignora non accipiant, depositum auri, etc.

CAPUT XXVII. — *Prohibetur nostris religiosis accipere pignorum et depositorum.*

Praecipit nostra regula capite isto, ne pignora vel deposita auri, argenti, vel pecuniae a nostris suscipiantur. Quare qui contraverint, tamquam violator regulae puniatur.

REGULAE CAPUT XXVIII.

Si quod vitium in re quae venditur, etc.

CAPUT XXVIII. — *Praecipitur quod defectus rei vendendae manifestetur emptori.*

Religiosi nostri veritatis et iustitiae amatores esse debent; ideo manifestent emptori vitium, si aliquod notum ipsis fuerit, in re quam vendere volunt, sub poenâ gravis culpae infligendae non indicanti.

REGULAE CAPUT XXIX.

Capitulum si feri possit singulis dominicis diebus, etc.

CAPUT XXIX. — *De capitulo conventuali et consiliariis conventus.*

i. Nullus nisi sacerdos, et post tres annos a professione, votum habeat in capitulo conventuali.

¹ Edit. Main. legit *utuntur* (R. T.).

ii. Quando, iuxta nostram regulam et constitutiones, res aliqua a capitulo conventuali decerni debet, superior illam proponat communitati die antecedenti, et in sequenti definitur per secreta suffragia a praelato et consiliariis regulanda.

iii. Ut semper constet quatenam res definitae et determinatae sunt a capitulo conventuali, in quolibet conventu et collegio sit secretarius electus de corpore ipsius capituli, et ab eodem capitulo cum consilio et assensu provincialis; qui quidem secretarius in libro ad id destinato scribat omnia decreta praedicti capituli, approbationes Ordinariorum, et similia; et postquam ea legerit ipsi capitulo, minister et consilarii subscribant, et ipse quoque secretarius tamquam attestans.

iv. De omnibus actis et determinatis in capitulo semper custodiatur secretum. Si quis vero aliquid revelaverit aliis religiosis non capitularibus vel saecularibus, maxime quando praelatus secretum commendavit, ad arbitrium provincialis privetur voce activâ in capitulo conventuali, iuxta inconvenientia ex revelatione subsequuta.

i. In quolibet conventu seu collegio pater provincialis designet quatuor consiliarios, ex quibus duo primi officium exercent, et in eorum absentia alii duo. Et cum actu exercentibus consulat praelatus omnes res ad conventus administrationem pertinentes, exceptis gravioribus maiorisque ponderis: istae enim per maiorem partem capituli conventualis decerni debent.

ii. In singulis conventibus et collegiis singulae sint pro custodiendis pecuniis arcae trium clavium, quarum alteram superior, et duas alias consilarii officium exercentes habeant. Et sine assistentiâ cunctorum trium, neutiquam arca ista aperiatur.

iii. In dictâ arcâ sit liber, in quo scribatur omnis pecunia quae recipitur et expenditur, et ex quo procedit. Sit etiam alter liber, in quo clare et distincte scribatur quomodo satisfactum est oneribus missarum, suffragiorum, ceterarumque obligationum perpetuarum et temporalium, quae conventus habet, et qualiter etiam sit satisfactum mis-

§ 2.
De consiliariis conventuum et eorum officio.

§ 1.
De capitulo conventuali.

ais et suffragiis pro nostris religiosis defunctis. Sit quoque liber alter, in quo scribantur quantitates tritici, ordei, vini, olei, et similia, quae quocumque titulo recipiuntur et in conventu expendantur. Ac denique sit liber alius pro redemptione captivorum, ut dictum est cap. II, § 4, n. IX, in quo scribantur non solum quae conventus separat pro dicta redemptione, sed etiam omnia, quae quoque modo et titulo pro ea¹ recipiuntur. Et de omnibus in hoc numero dictis, superior et consiliarii in fine cuiusvis mensis rationem conficiant, et in praedictis libris scribant et subscribant. Quod si in hoc fuerint negligentes, severe puniantur ad arbitrium provincialis.

IV. Etiam in quolibet conventu et collegio sit in arcâ trium clavium, seu in archivio, liber magnus nomine *protocollo*, in quo clare et cum distinctione scripta sint et scribantur fundatio et status conventus, obligationes perpetuae missarum, suffragiorum, bona stabilia et immobilia, et census tam in favorem quam contra. Et in eodem protocollo sit quoque index et inventarium omnium scripturarum in favorem conventus, cum notatione loci, temporis et scribae a quo signatae sunt, ac denique in dictâ arcâ vel archivio custodiantur omnes et quaecumque scripturae, instrumenta et inventaria pertinentia ad conventus vel collegii bona.

REGULAE CAPUT XXX.

Non solum fratribus, sed et familiae domus, etc.

CAPUT XXX. — *De capitulo, collatione spiritali, ac exhortatione in diebus dominicis.*

I. Singulis dominicis diebus ante Primam in omnibus conventibus et collegiis capitulum iuxta tenorem regulae in aulâ capitulari fiat, in quo praelatus hortetur religiosos ad observantiam, maioremque perfectionem illorum, culpas corrigat, agatque de receptis ac separatis et separandis pro redemptione captivorum, de statu domus et eius substantiâ, audiatque subditos capitulares quae ad perfectius ipsius conventus vel collegii regimen in ipso capitulo propo-

¹ Vocem eâ nos addimus (R. T.).

suerint, et quod expediens videntur, exequi curet. Quibus finitis, si adhuc non sit hora recitandi Primam, reliquo tempore usque ad illam omnes in communi mentaliter orent.

II. Primâ cuiuslibet mensis dominicâ, ante correctionem culparum et ante omnia praedicta num. I, habeant fratres per spatium dimidiae horae collationem spiritualem de aliquo vitio extripando, seu virtute adipiscendâ, vel de puncto aliquo orationis, et omnes suam sententiam et iudicium pronuncient: ac denique superior brevem erga eandem rem concionem agat; minister vero, qui per integrum annum praedictam collationem omiserit, inhabilis declaretur, imo vi huius constitutionis tamquam declaratus habeatur, et a provinciali privetur.

III. Insuper, praeter dominicos dies, bis etiam in hebdomadâ advertentiae culparumque correctio in eadem aulâ capitulari fiat, a Paschate quidem usque ad primam diem octobris, immediate post vespas; reliquo vero tempore anni post Completorium.

IV. Omnia praedicta tam videlicet collationes et exhortationes, quam culparum correctiones solum fieri possunt a superioribus generalibus, provinciali, ministro, praesidenti vel vicario.

REGULAE CAPUT XXXI.

De omnibus rebus et clamoribus, etc.

CAPUT XXXI. — *De correctione culparum, de earum gravitate et poenis.*

I. Singulis hebdomadis designetur sacerdos, cuius officium sit zelare observantiam, et charitative ac simpliciter proponere in capitulo culpas religiosorum, infra hebdomadam quidem leviores, die vero dominicâ, quae maioris sint ponderis; idemque faciat capituli praeses. Hortamurque zelatorem, quod fideliter et sine personarum acceptione suum adimpleat officium. Ne autem ausui alicui imputetur, sine praeviâ consultatione sui ministri, gravium, seniumque religiosorum culpas, quantumvis leves, non proponat in publico.

II. Ut sanctae nostri Ordinis consuetudines observentur, superiores, pro culpis levibus,

§ 1.
De modo animadvertendi culpas in capitulo.

flagris caedant religiosos, imponentque mortificationes ordinarias et extraordinarias per refectorium in publicâ mensâ faciendas, in quarum exercitio ipsi voluntarie praecedant, ut eorum vestigia subditi libenter sequantur.

III. Hortamur religiosos, quibus in capitulo nulla fuit adscripta culpa, quod ipsimet se accusent pro humilitatis exercitio.

IV. Animadversus aequo animo ferat, et humiliter poenitentiam accipiat absque satisfactione, nisi de aliquo fuerit a praeside interrogatus, et tunc submisce et breviter satisfaciât. Sit tamen iustitia et lenitas in corrigente, et in correcto submissio.

V. Si quis in capitulo suas vel alienas culpas, absque licentiâ excusare et defendere voluerit, statim severe puniatur ad arbitrium praesidis capituli, nisi, prudentiâ dictante, melius videatur punitionem in commodius tempore differre. Nemoque de culpis animadversis conqueratur, sub poenâ ieiunii in pane et aquâ tantum.

§ 2.
De gravitate
culparum et earum
poenis.

I. Non solum generalibus gratiae Dei auxiliis, verum et specialibus religiosi mununtur; attamen talis est humana fragilitas, ut timere possint lapsus etiam graves, cum in caelo, paradiso et collegio apostolico nonnulli defecerint. Quare prudenter praevidentes designamus omni generi culparum (nempe laevi, mediae, gravi, graviori et gravissimae) sequentes poenas.

II. Culpa levis est errantem in choro, in recitatione vel cantu non statim terram osculari; praesto item non esse actibus communitatis; manducare et bibere absque licentiâ, et his similia. Pro culpis istis infligatur poena nonnihil recitandi, vel faciendi in refectorio aliquam mortificationem ordinariam.

III. Culpa media est minus decenter divinis officiis interesse, frangere aliquod capitulum praeceptivum regulae, de more habere negligenter, et tarde interesse actibus et functionibus communitatis, negligentem quoque esse in adimplendo officio de communi tabulâ, vel in exequendis simplicibus mandatis superiorum, contendere immoderate cum saecularibus, vagari per conventum, res ad ecclesiam pertinentes irriver-

renter tractare, libros et alia huiusmodi communia negligenter curare. His culpis arbitrio superioris poenae corresponderent.

IV. Culpa gravis est committere quodcumque peccatum mortale absque scandalo. Si alicui ex istis non fuerit in constitutionibus nostris peculiaris poena designata, minister (cui competit gravem culpam iudicare) delinquentem poterit in carcerem conicere, vel aliam poenam ad arbitrium imponere, attentis qualitatibus culpae.

V. Etiam reducitur ad culpam gravem ludere absque scandalo cartis pictis, taxillis et similibus, sumere absque licentiâ aliquas res communes ab officinis, vel eas quas fratres habent ad usum, dicere aut scribere alteri aliquod opprobrium aut malitiosum verbum, verba quoque inbonesta proferre, aut cum mulieribus immodeste et inverecunde colloqui. Pro his et similibus plectantur rei flagellis in capitulo, et ieiunio in pane et aquâ tantum, vel recludantur in cellis per aliquot dies, post asperam reprehensionem.

VI. Culpa gravior est committere quodcumque peccatum mortale cum scandalo, vel quodcumque peccatum incontinentiae, contumaciae, inobedientiae vel apostasiae etiam sine scandalo. Pro his culpis et unaquaque illarum reus incarcerationi per tres menses, et privabitur voce et loco per annum, vel in capitulo flagellabitur a praeside et a totâ communitate, et semel ieiunabit in pane et aquâ tantum, ac in cellâ recludetur pro tempore culpae proportionato. Qua poenitentiâ durante nullus reus exerceat officium. Quod si sacerdos fuerit, missam non celebret; si frater ad chorum deputatus, poterit circulus coronae pro tempore carceris ei radi; si vero laicus, indui poterit vestimento fuscis coloris. Quas et similes poenas adhibere valebit provincialis pro arbitrato suo, semper tamen proportionatas cum qualitatibus culpae.

VII. Culpa gravissima est committere delictum, cui in iure poena mortis vel trilemum inflicta est, v. g. ponere libellos infamatorios, fingere et adulterare subscriptiones vel sigilla superiorum, patrare fa-

claus aliquod, propter quod delinquens expelli debeat: propter haec a definitorio generali suo gravissimo puniantur rei, attentâ delicti qualitate, vel deponantur, ut¹, si iudicibus visum fuerit ex meritis causae, expellantur a religione, servatâ formâ infrascriptâ cap. xxxiii, § 2. Gravissimas enim culpas iudicare definitorio competit.

1. Quando in nostris constitutionibus ponitur poena suspensionis vel privationis (aliâmsi inibi dicatur *ipso facto*) non intelligatur ante, sed post sententiam iudicis super facto. Et quando absolute dicitur, quod aliquis careat voce, intelligatur de utrâque, activâ nimirum et passivâ.

II. Si in capitulo dominicali praesens fuerit aliquis sacerdos privatus voce, postquam egressi sint ab illo omnes fratres laici et choristae, praeses corrigat eum, si vel ipse vel zelator aliquam notavit culpam, et statim praefatus e capitulo exeat. Privatus sede seu loco, si sacerdos sit, sedeat post omnes alios sacerdotes, nisi iudex alium inferiorem locum illi designaverit; et, proportionem servatâ, similiter fiat cum non sacerdotibus.

III. Quando in nostris constitutionibus designatur poena privationis officii et vocis, si delinquens officium et vocem non habeat, infligatur illi alia proportionata poenitentia.

IV. Suspensi ab officio remaneant in suis propriis domibus, nisi suspendens vel superior generalis alios conventus illis assignet pro tempore suspensionis.

V. Quando pro poenitentia imponitur ieiunium in pane et aquâ, poenitens adimpleat in refectorio ad primam mensam pronus in terram, absque mapulâ et capitis.

VI. Volumus quod illi, qui de more habuerint committere culpas leves, puniantur augendo poenam proportionatam culpae, iuxta continuationem in eâ, itaut, dum non resipiscant, semper poena augeatur: et contra vero superior, qui poenitentiam imposuit, poterit prudenter, et attentis circumstantiis, minuere illam eis qui hu-

militer adimplent et signa emendationis ostendunt.

VII. Culpis illis, quibus constitutiones nostrae poenas non statuunt, superiores pro suo arbitrio imponant proportionatas semper cum delictis et circumstantiis, et ad similitudinem hinc designatarum.

VIII. Ad puniendum delicta semper attendantur personae et circumstantiae, ut sic vel augeatur vel minuat poena.

IX. Praelatus inferior obligatus sit fidem facere superiori, qualiter poenitentia ab ipso imposita executioni mandetur.

I. In omnibus nostris conventibus et collegiis sit locus securus ac deputatus ad custodiam reorum, non tamen adeo rigorosus ut in discrimen veniat salus religiosorum inibi inclusorum, et sint in eo compedes, vincula, aliaque necessaria ad poenam et maiorem custodiam delinquentium.

II. Si aliquis, propter sufficientem alicuius gravis delicti probationem, iussus fuerit a iudice incarcerari, exuatur in ipso carcere habitu albo, et induatur vestimento fusc coloris; poteritque, si reus fuerit ad chorum deputatus, in eodem carcere coronae circulus ei radi.

III. Si propter negligentiam vel malitiam custodis carceris reus aufugerit, custos in carcere coniciatur, et iuxta gravitatem culpae puniatur.

IV. Si quis quoquo modo opem tulerit incarcerato ut aufugiat, si effectus non fuerit secutus, incarceretur per viginti dies; si effectus secutus, sit in carcere toto tempore quod delinquens debebat esse. Carcerem autem confringentibus, tempus incarcerationis duplicetur.

V. Si quis sine licentiâ superioris visiterit vel alloquutus fuerit incarceratos, poenae culpae gravis per unum diem subiacet.

VI. Praelatus per se vel per alium curet de solatio incarceratorum et de exhortatione ad tolerantiam. Libros spirituales illis concedat, sed non atramentum nec alia ad scribendum requisita, nisi raro, pensatis circumstantiis, et cum scientiâ eorum quae scribunt.

1. De poenitentia animadvertendis erga dictas poenas.

1. 4. De carcere nostrorum conventuum.

1 Videtur legendum et pro ut (R. T.).

REGULAE CAPUT XXXII.

Malus fratrum fratrem suum in publico accusat, etc.

CAPUT XXXII. — *De poenâ contra laedentes famam aliorum.*

I. Si quis alterius famam apud religiosos nostri Ordinis laeserit, et convictus fuerit, poenâ talionis puniatur, sicut praecipit regula, et ante omnia famam restituat. Si vero nostrae religionis decorem et suorum religiosorum existimationem infamiae labe denigraverit apud saeculares vel religiosos alterius Ordinis, praeter poenam supradictam, careat voce activâ per triennium, et inhabilis sit ad omnia Ordinis officia.

II. Si quis falsum testimonium in re gravi contra alium dixerit, et convictus fuerit, praeter poenam talionis, nunquam in testem produci valeat.

REGULAE CAPUT XXXIII.

Si quis scandalum vel aliquid huiusmodi fecerit, etc.

CAPUT XXXIII. — *De apostatis et fugitivis, incorrigibilibus, et manus violentas in alios iniicientibus.*

I. Ille reputandus habendusque est ut apostata (quantum ad poenam), qui absque licentiâ superiorum vagatur extra conventum sine habitu, habeat, vel non, intentionem redeundi ad claustra, aut etiam cum habitu, si per octo dies extra claustra permanserit. Iste ergo ipso facto sit excommunicatus, et pro tali promulgetur a superiore coram communitate. Item qui de nocte sine licentiâ e conventu exierit, eodem modo sit excommunicatus, et velut apostata puniatur.

II. Si quis absque licentiâ exierit e suo conventu, vel a confinio et iurisdictione sui praelati immediati, statim ac domum redeat, incarcerationetur; et¹ si constiterit confugisse ad superiorem praelatum, non habeatur pro excommunicato: poterit tamen arbitrio superioris puniri, si iustam causam recursus non reddiderit. Si vero aliorum divertit, et viâ rectâ superiorem non adivit, severe puniatur.

III. Statim ac sit notitia de alicuius reli-

giosi exitu a conventu sine licentiâ, quamvis recurrat ad superiores, praelatus illius processum formet de fugâ, et certiores faciat superiores generalem et provincialem de illâ, et de die et causâ ipsius fugae. Superior vero generalis fugam denuntiet procuratori generali pro sua familiâ existenti in Curia Romanâ.

IV. Et quia felicitis recordationis Urbanus VIII per suas litteras in formâ Brevis sub die aprilis MDCXXXVII incipientes *Alia a nobis* (post alteras quoque ab eodem et a felicitis recordationis Paulo Papa V emanatas¹) praecipit ut nullus nostri Ordinis religiosus ad alium quemquam Ordinem, religionem sive congregationem (excepto Ordine Carthusianorum, petita et obtenta licentiâ a superioribus nostri Ordinis), sub apostasiae et infamiae perpetuae notâ, atque excommunicationis latae sententiae poenâ, etiam emissionis quarti voti seu perfectioris et humilioris vitae praesumptione, aut strictioris regulae seu observantiae praetextu vel contemplatione, vel quavis iustâ, probabili aut legitimâ causâ se transferre audeat; ideo litterae praefatae inviolabiliter servantur.

V. Apostatae et fugitivi pro primâ vice et fugâ puniantur iuxta qualitatem culpae, et ipso facto amittant antiquitatem sedis et loci, et in futurum illorum antiquitas incipiat a die regressus ad Ordinem post dictam primam fugam, nisi capitulum generale illis antiquitatem restituat. Qui secundam fecerit, eâdem poenâ afficiatur, et insuper per unum annum incarcerationetur. Pro tertiâ vero fugâ (vel per unum annum, si per annum duraverit), si tales non expelluntur, poenis impositis pro primâ et secundâ fugâ plectantur, et praeterea inhabiles sint ad praelaturas Ordinis, et voce activâ careant, nisi a capitulo generale restituatur eis. Si quis vero apostasiae ratione excommunicatus celebraverit, gravioribus poenis severiusque mulctetur.

VI. Denique non solum patribus ministris, verum etiam omnibus religiosis facultatem

¹ Videtur potius legendum *at pro et* (R. T.).

¹ Edit. Main. legit *emanata* (R. T.).

et actionem conciliatam, et in casu necessitate possint capere et comprehendere apostatos et fugitivos, cuiuscunque provinciae aut domus sint. Hortamurque in Domino superiores et eorum conscientias oneramus, ut curent diligenter et caute compellere et revocare fugitivos, sub poena gravis culpe per tres dies.

§ 2.
De incorrigi-
bilibus et eo-
rum expulsionem.

1. Ille religiosus iudicandus est incorrigibilis, qui, audens committere et repetere graves culpas, admittere non vult poenitentiam legitime a superiore pro illis impositam. Similiter illa qui tribus diversis vicibus punitus pro culpis gravibus, ad meliorem vite rationem non reddit. Etiam ille cuius emendatio desperatur propter ipsius obstinationem et praves mores.

II. Incorrigibiles, vel ergastulo sunt mancipandi, vel a religione expellendi, observando in omnibus decreta sacrae Congregationis Concilii publicata de mandato felicis recordationis Urbani VIII anno MDCXIV die XXI septembris, et Innocentii XII die XXIV iunii anno MDCXCIV. Quando autem expulsio alicuius fuerit executioni mandanda, prius in capitulo conventuali sententia legatur, et flagris caesus, a communitate eorum ipsa expolietur habitu.

III. Nullus superior nec pater minister generalis expulsis litteras testimoniales concedat, illos ad Sedem Apostolicam reiciens, vel iubens aliam ingredi religionem, sed tantum tradat litteras fidem facientes de expulsionem facta, iuxta dicta decreta sacrae Congregationis, et in quibus etiam exprimentur poenae expulso impositae a iudicibus in sententia expulsionis.

IV. Sententiae in causis criminalibus prolatae, et reis intimatae, non statim executioni mandentur, quin prius revideantur, et iterum examinentur causae, si rei ipsi erga hoc supplicationem fecerint, et humiliter id postulaverint.

V. Appellare a correctione et poenitentia regulari ad externum iudicem prohibitum est per felicis recordationis Sixtum V, Gregorium XIII et Clementem VIII. Quare si quis ab illa appellaverit, severe puniatur ad arbitrium definitoris sui.

1. Si quis minus fuerit, vel manus violentas in aliquem iniecerit, vel eum percusserit, arbitrio ministri puniatur, attentam gravitate culpe; quod si ea commiserit contra aliquam praelatum inferiorem provinciali, incarceretur, et aliis poenis afficiatur ab ipso provinciali, considerata prudenter qualitate delicti; si vero contra provincialem vel definitorem generalem, a suo priore generali delinquens puniatur, attentam semper qualitate culpe; si autem contra superiorem generalem, a suo definitore generali. At si ira ductus aliquis praelatus in subditum suum violentem manus iniecerit, praedictis poenis afficiatur a suo immediato superiore.

§ 3.
De iniuriis
bus manus vio-
lentas in alios.

REGULAE CAPUT XXIV.

Si quis frater in fratrem peccaverit, etc.

CAPUT XXIV. — De inferentibus iniuriam aliis, ac de correctione fraternam.

1. Religiosus, qui alteri iniuriam fecerit, sive praesenti sive absenti, iuxta arbitrium ministri puniatur, attentam culpe gravitate.

II. Si quis scit alium commisisse aliquod peccatum, si occultum est et speratur emendatio, corripiat eum secreto, iuxta Evangelium, et nulli, neque superiori per praeceptum adhuc intra visitationem inquirenti, id revelet, sub poena carceris per tres menses, si ex tali revelatione scandalum sequatur; si vero non sequatur, afficiatur poena culpe gravis per sex dies, et semper ante omnia honorem restituat: mens enim religionis non est scrutari occulta ante correctionem fraternam. Si vero correctio facta non prodesset, vel si, antequam illam faciat, prudenter iudicet quod nihil proderit, revelet superiori pio et cordato, ut suo consilio et efficaciori documento, vel aliis convenientibus mediis, reus ad meliorem se frugem recipiat.

III. Si quis contra bonum commune et honorem nostrae religionis aliquod delictum patraverit, qui de illo notitiam habuerit, denuntiet superiori, ut patri; et, si culpe qualitas et circumstantiae exigunt, etiam ut iudici deferat, qui lapsi salutem procuret, et decorem religionis recuperet.

REGULAE CAPUT XXXV.

Si pro necessitate domus debitum aliquod
fuerit contrahendum, etc.

CAPUT XXXV. — *De modo contrahendi debita
et de curâ in eis soluendis.*

I. Nullus, sive minister, sive praeses, sive procurator, sive particularis quilibet religiosus, audeat, imo nec valeat debitum aliquod contrahere, sine consilio et assensu capituli conventualis, ut praecipit regula.

II. Nullus minister in fine sui officii relinquat domum suam oneratam debitis excedentibus quantitatem centum ducatorum, absque licentiâ sui provincialis, sub poenâ inhabilitatis perpetuae ad ulteriora Ordinis officia: definitorium autem provinciale, attentis rationibus statuum, conventuum et collegiorum, quae ante suum capitulum mitti debent ad ipsum, praedictam inhabilitatem declarare tenebitur, eandemque declarationem et merita ipsius tradere praesidi capituli ante primam eius sessionem, ut praeses ipse curet quod in archivio generali custodiatur in futurum. Si autem aliquâ viâ nobis authenticâ constiterit, ministrum et consiliarios subscripsisse huiusmodi rationem status suae domus sublicendo debita, consilarii priventur officio, et voce careant deinceps in capitulo conventuali, minister vero renunciare debeat officium tamquam qui antea fuerat inhabilis, nisi attento rerum statu per ministrum generalem dispensetur. Et praecipimus in virtute sanctae obedientiae, et sub praecepto formali, ministro successori, ut curet solvere confestim debita sui antecessoris, et ante illorum solutionem nullas expensas faciat, nisi praecise pro victu et vestitu religiosorum, sub poenâ suspensionis ab officio et¹ infligendâ a definitorio post puram informationem de non solutione debitorum et expensis factis in fabricâ aliisque praeter dicta.

III. Inhibemus conventibus omnibus et collegiis nostris ne accipiant pecuniam ad censum sine requisitis solemnitatibus ac licentiâ in scriptis sui definitorii provincialis.

¹ Videtur legendum *ei* pro *et* (R. T.).

REGULAE CAPUT XXXVI.

Si quisquam de substantiâ domus violentiam fecerit, etc.

CAPUT XXXVI. — *De modo servando in litibus
et negotiis.*

I. Nullus, sive praelatus sive procurator, incipiat causam et litem, quin observet circumstantias, quas regula nostra disponit, et praeterea a suo provinciali vel immediato superiore prius obtineat licentiam. Quod si hoc facile haberi non possit, et causa urgeat, lis inchoari poterit de consensu capituli conventualis, et statim provincialis vel superior certior fiat.

II. Stricte praecipimus omnibus religiosis, ne ipsimet, nequidem extrajudicialiter, adeant tribunalia saecularia pro negotiis mere temporalibus agendis, nisi urgente causâ nostrae religionis; neque inconsulto suo immediato superiore iudices alloquantur, intercedendo vel instando, sub poenâ reclusionis intra claustra, vel suspensionis a suo officio per annum.

III. Nullus ex nostris, sine sui praelati superioris facultate, officium exerceat testamentarii, sub poenâ suspensionis a suo officio, voce et loco per tres menses. Si vero aliquis executor testamenti fuerit nominatus, et commode absque inorâ praedictâ licentia haberi non possit, et iudicio ministri et consiliariorum expediens videatur statim exercere dictum officium, illud exerceat, ita tamen ut ad prosecutionem et perfectionem illius obtineat intra duos primos menses praefatam facultatem. Copia item testamenti subscripta a ministro et consiliariis mittatur suo superiori immediato, ut iudicet, an expediat, vel non, et pro quo tempore ac quibus circumstantiis, concedere facultatem.

IV. Nulli superiori liceat iudicis conservatoris munus exercere absque speciali Summi Pontificis licentiâ.

V. Nullus item religiosus sit patronus piaë alicuius memoriae, vel administrator bonorum quae non sint nostrae religionis, sine expressâ licentiâ sui definitoris generalis, nisi casu quo patronatus et administratio annexa sint officio quo quis fungitur in religione.

REGULAE CAPUT XXXVII.

*Sollicito vero minister provident, etc.*CAPUT XXXVII. — *De diligentia adhibenda a praelatis erga observantiam regulae.*

I. Hortamur in Domino omnes praelatos, sint valde solliciti in observantia sanctae nostrae regulae, sicut ipsa disponit, ut ipsorum exempti¹ subditi perfectius adimpleant illius praecepta. Ipsosque praelatos de docendo monemus, ne se iudicent legum arbitros quando poenae non reservantur arbitrio illorum; et ut penitus sublato praetextu pietatis in matrem religionem exutiles² ipsi vigiles et pastores pro viribus teneantur observantiam, praecipimus in virtute sanctae obedientiae, et sub praeepto formali, omnibus et singulis quantumvis superioribus nostrae religionis praelatis, quibus per has constitutiones nulla fuerit commissa facultas, quod minime dispensare praesumant, nec audeant dissimulare, quando culpis in eisdem statuitur poena suspensionis, privationis, aut inhabilitatis. Quod quidem praecipimus sub eadem poena, reo non applicata, quam solum minister generalis poterit dispensare, attentis circumstantiis quae occurrant.

II. Nullus praelatus ita se occupet in negotiis, etiam causarum piarum, quod a³ gubernio domus et vita communi sequenda impediatur. Nec subditi id ipsum ullo modo permitti debeat.

III. Ministri a suis conventibus seu collegiis absentiam ultra octo dies non faciant sine licentia sui provincialis.

REGULAE CAPUT XXXVIII.

*Non liceat superioribus subditorum confessiones audire, etc.*CAPUT XXXVIII. — *De confessariis, praedicatoribus, lectoribus, studentibus, collegiis et bibliothecis.*

I. Visitatores in qualibet visitatione deputent in scriptis confessarios pro religiosis; illorumque facultas durabit usque ad sequen-

¹ Forsan exemplo vel exemplis (R. T.).² An recta lectio iudicet quisque sciens (R. T.).³ Praeposit. a redundat (R. T.).

tem visitationem, in qua, facta designatione, cesset praeterita, etiamsi concessa fuerit a praelato superiori illi qui tunc visitat. Et nullus, vive hospes, sive conventualis, nisi antea fuerit praelatus superior illius domus, vel definitor generalis, vel minister illius, audeat confessiones religiosorum audire sine praedicta designatione pro illo conventu vel collegio, in quo existit, quamvis ad munus istud deputatus sit pro alio conventu vel collegio etiam eiusdem provinciae.

II. Patres tamen definitores generales actuales Ordinis in toto Ordine, familiae in sua familia, et definitores provinciales actuales intra suam provinciam poterunt absque limitatione audire confessiones cuiuslibet religiosi nostri Ordinis, et similiter cuicumque sacerdote idoneo peccata sua confiteri. Eodem modo patres ministri absque limitatione excipere possunt confessiones suorum subditorum, in casibus a regula dispositis, et ipsemet¹ confiteri peccata sua cuilibet subdito suo idoneo.

III. Magister novitiorum confessiones eorum audiat: semel tamen in quolibet mense (die a patre ministro assignanda) permittatur illis confiteri alteri confessario approbato pro religiosis, designando etiam ab eodem ministro. Recenter professi semper confiteantur suo magistro, et alteri confessario ex approbatis, deputando etiam a ministro. Idemque intelligatur de collegis artibus studentibus.

IV. Si in aliquo conventu vel collegio deficiant sacerdotes approbati a superioribus pro excipiendis confessionibus religiosorum, minister deputet idoneos et ad id necessarios, donec sit copia approbatorum. Poteritque tam istis quam illis (quando expedire iudicaverit) impedire ne audiant confessiones. Et cuilibet ex sibi subditis poterit dare facultatem confitendi cuicumque sacerdote idoneo sui conventus, etiam non deputato a superiori praelato, tametsi sit copia approbatorum: id tamen raro fiat.

V. Quando religiosi nostri iter faciunt vel sunt in aliquo oppido ubi monasterium nostrum non est, nec habeant confessarium

¹ Videtur legendum ipsimet (R. T.).

noſtri Ordinis approbatum, poterunt conſiteri peccata ſua ſacerdoti ſimplici idoneo noſtræ religionis, vel cuilibet confeffario approbato religioſo vel ſæculari.

vi. Decernimus quod ſacerdotes noſtri non habentes facultatem audiendi confeffiones religioſorum noſtrorum conſeſſam vel per conſtitutiones noſtras vel per ſuperiores qui illas concedere poſſunt, non valeant accipere confeffiones etiam ſacerdotum noſtrorum.

§ 2.
De confessa-
riis
ſæculari-
um.

i. Nulli ex noſtris liceat audire confeffiones virorum ſæcularium, ſine eo quod habeat tres annos completos ſui ſacerdotii, et ſine facultate Ordinarii ac ſui provincialis. Qui quidem prius, ſimul cum miniſtro conventus et alio religioſo docto ac virtute prædito ab ipſo provinciali designato, illum examinet de ſcientiâ morali, per ſecreta ſuffragia approbent vel reprobenſ. Si autem provincialis non potuerit intereſſe examini, alium pro illo deputet religioſum loco ipſius.

ii. Ad audiendas confeffiones ſeminarum quilibet ex noſtris debet habere licentiam ſui definitorii generalis, petitam a patre provinciali, conſulto miniſtro domus; ac inſuper debet prius audiſſe confeffiones virorum ſæcularium laudabiliter et per duos integros annos.

iii. Qui ſine requisitis et facultatibus expreſſis in duobus numeris antecedentibus auſus fuerit confeffiones audire, vel examini Ordinarii ſine licentiâ Ordinis ſe exponere, privatus ſit miniſterio excipiendi confeffiones, neque ad illud ei unquam licentiâ concedatur, niſi per capitulum generale.

iv. Ad hoc autem ut confeffarii, poſt obtentam facultatem excipiendi confeffiones, negligentes non ſint in ſtudio, nec doctrinam moralem pro derelictâ habeant, præcipimus in virtute ſanctæ obedientiæ et ſub præcepto formali patribus miniſtris, quod inviolabiliter curent, et ad id obligent omnes confeffarios tam virorum quam ſeminarum (exceptis qui ſint vel fuerint prælati vel miniſtri vel ſacræ theologiæ lectores), ut ſemel in hebdomadâ habeant inter ſe conferentiam moralem, nullo eorum deficiente, niſi propter infirmitatem: dies

autem tempusque designabitur a miniſtro. Præterea omnes, qui intereſſe debent conferentiæ, examinentur indiſpenſabiliter in ſecundâ viſitatione cuiuslibet triennii a viſitatore et a duobus religioſis designatis num. i huius §, qui per ſecreta ſuffragia approbent vel reprobenſ, et a reprobatò licentiam auferat viſitator. Hoc autem examen ſemper fiat, donec confeffarii expleverint viginti annos laudabilis exercitii audiendi confeffiones, et poſt viginti annos non amplius examinentur.

v. In eccleſiis noſtris ſint confeffionaria amovibilia ex decenſe ligno fabricata. Nullus autem confeffarius ſeminarum audiat confeffiones, niſi in aliquo ex prædictis confeffionariis, neque earum confeffiones excipiat, niſi qui actualiter ſit vel aliquando fuerit prælatus, vel qui ætatis annos quinquaginta habeat, vel licentiam a ſuo prælato pro caſu raro, et expreſſam pro quolibet vice. Ad confeffiones autem virorum poterunt eſſe confeffionaria in clauſtri parietibus elaborata, dummodo cum eccleſiâ nec parvam communicationem habeant.

vi. In nullo ex dictis confeffionariis religioſus aliquis ſedeat, qui ſeminarum confeffarius ſit, niſi tunc eccleſia ſit clauſa. Qui ſecus fecerit, poenâ culpæ gravis puniatur; quod ſi iteraverit, inhabilis maneat ad obtinendam facultatem audiendi mulierum confeffiones, vel aliâ æquivalenti poenâ afficiatur, iuxta ſtatum ſuum.

vii. Licentiæ excipiendi confeffiones virorum ſive ſeminarum non intelligantur absolute et in perpetuum conſeſſæ, ſed dependenter a voluntate religionis, quæ illas poterit limitare, abolere et tollere ſine obligatione reddendi cauſam. Quod non intelligatur cum illis religioſis qui ſunt vel fuerint prælati, vel qui habeant quinquaginta ætatis annos: aliorum autem licentiæ tantum iudicentur continuari et permanere, quas ſubſcriptas relinquat viſitator in ſuâ viſitatione, vel ſuperior generalis quando conventus perambulet; et ita non ſubſcriptæ eo ipſo ceſſent.

viii. In oppidis, in quibus ſunt conventus noſtri, non concedatur licentiâ ad exitum de

domo pro audiendis continuò in diebus determinatis confessionibus saecularium, nisi raro et cum licentiâ in scriptis superioris generalis.

ix. Nullus religiosus in loco aliquo officium parochi exercent, etiam pro parte, sub poenâ culpae gravis per tres dies, nisi domui nostrae sit annexa cura animarum, alias nec definitorium generale valeat dispensare in constitutione istâ; nec fratres, qui feminarum confessarii non sunt, mittant praelati pro audiendis virorum confessionibus ad oppida illa, in quibus non est conventus noster.

§ 3.
De praedicatoribus.

i. Nullus religiosus audeat concionari, quin prius per triennium philosophiae, et per aliud triennium theologiae scholasticae vacaverit, et obtentâ in scriptis licentiâ patris provincialis, et cum examinadoribus, sub § 2, num. 1, assignatis, experietur quid scientiae et virtutis habeat, et praesertim eum sedulo examinabit de praecipuis sanctae nostrae fidei mysteriis, et de sensibus sacrae Scripturae, et per secreta suffragia approbatio vel reprobatio fiat; et insuper, ut de eius genio ac ingenio constet, disponet intra tempus illi assignandum, et habebit concionem coram communitate, et si fieri possit, coram patre provinciali.

ii. Nullus publice concionetur, quin prius praesentetur Ordinario, sub poenâ privationis vocis et loci per sex menses.

iii. Praedicatores in suis concionibus solum intendant morum reformationem ac virtutum augmentum. Qui vero in hoc defectuosus fuerit, et a superiore aliquoties admonitus non se emendaverit, officio concionatoris privetur.

iv. In civitatibus vel locis in quibus non est conventus noster non admittantur sermones Quadragesimae, itaut totâ vel maiori parte illius religiosus sit extra claustra absque licentiâ superioris generalis. Praedicatores autem conventuales designentur a provincioli pro qualibet domo, iique teneantur praedicare quicquid vel ex obligatione conventus vel ex dispositione ministri praedicandum fuerit pro eâ domo, et gaudeant privilegiis lectorum philosophiae, ex-

cepto examine. Capitulum vero provinciale, attentis circumstantiis domorum nostrarum, facere debet earum graduationem, quam provincialis immutare non poterit, nisi consentiente capitulo, ut iuxta eam assignentur praedicatores, et mutantur de domo in domum, postquam in qualibet exercentur per triennium, ut sic ad civitates et curias seligantur dextiores.

v. Praedicatores solo titulo concionandi, etiamsi pro totâ Quadragesimâ sermones habeant, carnibus non vescantur. Qui vero, nisi illis vescatur Quadragesimae tempore, concionari non valeat, cesset a concionibus, excepto casu, quo aliquis, independentem a praedicatione, pro suâ infirmâ et aegrâ valetudine carnibus vescatur. Talis enim praedicando in Quadragesimâ illas edere poterit cum licentiâ provincialis, caute tamen, frugaliter et exemplariter.

vi. Si superiori expediens visum fuerit, disponat quod in loco, in quo est conventus Ordinis, religiosus aliquis dominicis diebus exeat ad docendum populum doctrinam christianam.

vii. Liceat praedicatori non interesse choro, excepto tempore orationis mentalis, tribus aut quatuor diebus ante concionem. Disponentibus vero sermones pro Quadragesimâ plus temporis indulgeat superior.

viii. Pater provincialis in secundâ visitatione cuiuslibet triennii examinet praedicatores (his exceptis qui sunt vel fuerint praelati aut lectores, vel qui per duodecim annos laudabiliter munus concionandi exercuerunt), et auferat facultatem ab illis qui in virtute et scientiâ fuerint defectuosi vel inutiles ad animarum profectum, et ab illis qui titulo praedicationis a choro et vitâ communi se eximunt, et faveat foveatque eos qui in concionibus suis doctrinam, zelum et spiritum ostendunt.

i. Superior generalis, praevisâ informatione ministri et lectorum biennii, deputet duos vel tres studentes seu collegas, qui ad capitulum provinciale, finitis electionibus, concurrant, ut coram communitate ipsoque capitulo per conclusiones et argumenta invicem examinentur, et postea per

§ 4.
De lectoribus.

secreta suffragia a praeside capituli provincialis, qui spirat, et duobus prioribus vocalibus praeteritis approbentur vel reprobentur, ut ex conlectoribus vel huiusmodi approbatis superior generalis libere eligat lectores philosophiae et conlectores eorum, prout opus fuerit. Similiter superior generalis libere eligat lectores theologiae scholasticae, expositivae et moralis, eorumque conlectores, ex illis qui philosophiam docuerint¹, praevia informatione ad eum missa per definitorium provinciale circa mores, applicationem et intelligentiam, vel etiam ex illis qui in collegio nostro romano per triennium studuerint², et a sacra Propagandae fidei Congregatione ministroque et lectoribus fuerint approbati. Si autem nec huiusmodi collegae, neque philosophiae lectores, qui triennium peregerint, fuerint in provincia, eligat superior generalis quem voluerit in lectorem theologiae ex conlectoribus, praevia semper informatione praedicta. Ipse superior generalis eos, quos elegerit in lectores, praeviat sex mensibus ante cursum, ut se praeparent, semperque deputet personas doctas, observantes, amantes docere doctrinam S. Thomae, non quaestiones inutiles et periculosas; quod si secus fecerint, priventur lecturâ, et, si fieri possit, lectores sint ex provincia in qua sunt collegia. Et omnes semper in scriptis dictabunt, nisi a superiore generali aliud disponatur in casu raro. Praeterea provincialis eligere debet lectores theologiae moralis practicae pro domibus, in quibus, vel ex donatione, vel ex alio titulo, huiusmodi facultatem docere tenemur, eosque, consulto suo definitorio, et non aliter, eligat. His vero lectoribus, sub poenâ privationis ab officio, prohibetur tractare quaestiones scholasticas, sive scholastico modo, easque, quas practice tractare debent, in scriptis dictare; nec huiusmodi lectores quoad graduationem et privilegia inter ceteros ex iam dictis computandi sunt, sufficiunt enim illis infra dicenda.

11. Assistant semper lectores duabus in-

¹ Edit. Main. legit *docuerit* (R. T.).

² Edit. Main legit *studuerit* (R. T.).

tgris horis orationi mentali, integroque matutino et laudibus Nativitatis Domini, Paschae et Pentecostes, festis SS. Trinitatis, SS. Sacramenti (si fuerit expositum), in diebus infra octavam, necnon matutino omnium festivitatum Christi domini et eius sanctissimae Matris, quae fuerint primae classis, et nostrorum sanctorum patriarcharum. Assistant etiam choro et ecclesiae omnibus functionibus maioris hebdomadae, necnon assistant omnibus vespers quae cantu celebrantur, ac in festivitibus quae ad colendum pronunciantur, et B. Mariae et Ordinis nostri, etiamsi non canuntur, nisi in aliquo ex istis diebus habeant conclusiones. Et etiam (si non habeant conclusiones in ipsâ die) assistant missae solenni, quae in praedictis festivitibus celebratur, necnon Primae in vigiliâ Nativitatis, Nonae in die Ascensionis Domini, et Tertiae quando canitur. Insuper assistant processionibus generalibus et Ordinis nostri, antiphonae *Salve regina*, officiis et exequiis et missis quae cantantur et fiunt pro nostris religionis defunctis, sive pro Papa, protectore religionis, vel principibus territorii, et in Commemoratione omnium fidelium defunctorum. Assistant denique examini conscientiae, flagellationi communi, ceteris actibus et functionibus communitatis extra chorum ecclesiamve. Illis tamen in communi tabulâ tantum imponatur humilitatis officium.

III. Tempore cursus seu lectionum suarum non exeant lectores ad praedicandum, neque ad audiendas confessiones extra locum in quo est collegium; id tamen eis licebit in maiori hebdomadâ.

IV. Religiosus, qui habuerit licentiam in scriptis a definitorio generali pro scribendo libro qui typis mandandus est, exemptionibus fruatur, quibus gaudent lectores, dum illum scripserit, vel etiam dum excudatur, si ipse correctioni assistat. Et similiter scriptores teneantur quotannis praesentare ante suum definitorium elucubrationes suas, ut ab ipso iudicetur an digni sint pro illis praefato privilegio et exemptione.

V. Nullus religiosus percipiat redditus ex cathedrâ in aliquâ universitate, nec illam

petat aut praetendat, nec pro alio substituat, neque, ut alius eam adipiscatur, suffragium ferat. Poterunt autem nostri docere intra claustra, si ex dotationis aut fundationis gravamine teneamur ad id, dummodo studentes nostri nihil cum saecularibus habeant commune. Conlectores autem, vulgo passantes, non cognominentur lectores, sed cognomine respondente hispano vocabulo (in sua quisque provincia distinguatur¹ lingua vernacula): illorum enim officium est praeesse conferentiis in praesentia lectoris, cuius materia in conferentia est disputanda, legere, explicare lectiones, et conclusionibus praeesse ob lectoris infirmitatem, arguere in omnibus conclusionibus; item in actibus litterariis ad extra praesidere collegiis, ut moris est. Conlectores theologiae, qui iam philosophiam docuerunt, philosophiae vero conlectores hac eadem exceptione potiri debent, quando casus occurrerit, quo lecturam ob lectoris infirmitatem ex integro agant suppleantque, et pro illo tantum tempore.

§ 3.
De studentibus et collegiis.

I. Patres provinciales designent religiosos (unum saltem annum completum post professionem habentes), qui philosophiae, theologiae scholasticae, expositivae et moralis studiis vacaturi sunt; illosque eligant virtute ac genio praeditos, viribusque robustos, pro iungendo studio cum austeritate vitae nostrae; et antequam in collegium pergant, eos inviolabiliter examinari faciant de sufficientia grammaticae a religiosis ab ipsis assignatis: nec nisi approbatis studia concedant, alioquin a superiore generali priventur studiis, et in domo professorum usque ad praefixum tempus mittantur. Collegas autem pro collegio nostro romano Propagandae Fidei solus minister generalis poterit designare, iuxta Breve sanctissimi domini nostri Innocentii XIII. Eos autem designare tenebitur, consulto superiore generali alterius familiae, si ex illa fuerint; eligatque semper eos, qui saltem per biennium theologiae scholasticae studuerint, et in ea, iudicio provincialis, ministri et lectorum, non mediocriter profecerint. Si autem

¹ Forsan distinguantur (R. T.).

aliquis sic electus excusationem sibi simul let aut praetendat, inhabilis reddatur perpetuo ad Ordinis lecturas et studia biennii. Sciant praeterea omnes nostri religiosi dissuadentes, et male consulentes ne qui designanter¹ in praedictum pergant collegium, se incurrere poenam privationis vocis activae et passivae, ac alias iuxta praedictum Breve.

II. Collegae nostri per triennium philosophiae, et per aliud triennium theologiae scholasticae, ac denique per biennium expositivae et morali theologiae operam dabunt, vel saltem per biennium theologiae scholasticae, per triennium in collegio nostro de Propaganda Fide linguarum atque dogmatum studiis vacare debent. Omnes autem tempore vacationum in suis collegiis maneant, nisi superior, qui illos designaverit collegas, aliud disposuerit. Dum autem artium et theologiae studio incumbunt, non audiant confessiones, nec concionentur: in ultimo tamen anno huiusmodi theologiae scholasticae liceat eis in munere concionatorio se instruere, praedicando coram communitate et in refectorio vel aula capitulari.

III. Collegae philosophi vel theologi scholastici tempore cursus ordines sacros non recipiant, nisi isti conferantur in loco ubi est collegium, vel in oppido a collegio non distante ultra sex leucas. Nec collegae isti, dum tales sunt, in patriam suam adibunt, nec alia itinera agent, nec a domo exibunt (etiamsi sint in aliquo conventu extra collegium), nisi cum communitate, vel cum suo ministro, vel cum patribus definitoriis. Ad exercitia tamen litterarum poterunt exire cum suis lectoribus; sed solum illi, qui a visitatore designentur ad hoc. Collegis biennii, vel eis qui in collegio Propagandae Fidei actualiter fuerint, aequae, et non alia officia distribuuntur in tabula, nisi quae conventualibus distribuuntur.

IV. Nullus collega ingrediatur cellas patrum lectorum.

V. Omnes studentes diligenter examinentur in singulis visitationibus a visitatore, ministro et lectoribus, et qui in facultate,

¹ Videtur legendum designantur (R. T.).

cui vacat, culpabiliter aut inculpabiliter non profecerit, seu progressum non facturus iudicetur, a collegio excludatur per secreta examinatorum suffragia. Si tamen collegae fuerint minus observantes, vel fractae valetudinis, ut simul cum studio communem vitam sequi non valeant, tales visitator solus excludere poterit a collegio. Exclusus autem, vel quia culpabiliter non proficiebat, vel propter alias culpas, non egrediatur a conventu in quem missus fuerit, per spatium temporis arbitrio superioris; nec concedatur ei facultas ut sacris initiatur, nisi transactis duobus annis, ultra permissos a nostris constitutionibus. Si vero iam fuerit sacerdos, facultas audiendi confessiones ei non concedatur, nisi transactis etiam duobus annis ultra requisitos pro reliquis sacerdotibus a nostra constitutione. Semel autem exclusus, ad studia non redeat, quin prius constet cessasse causam, propter quam fuit studiis privatus vel a collegio eiectus.

vi. Stricte praecipimus in virtute sanctae obedientiae et sub praecepto formali omnibus nostris religiosis, quod nullus petat nec sibi procuret mediis intercessionibus extra Ordinem nostrum studia, ordines, licentias audiendi confessiones, concionandi, pergendi in patriam suam, conventualitates, et alia huiusmodi, sub poenâ inhabilitatis ad id quod petit et per talia media procurat; superioribusque sub eodem praecepto praecipimus, quod hanc constitutionem diligenter observent, non solum negando quod pro ipsis petitur, sed etiam severe reprehendendo illum, contra quem vehemens invenitur suspicio de influxu in saeculares ad id.

§ 6.
De collegiis.

i. In singulis provinciis nostri Ordinis tria ad minus sint collegia, unum pro philosophiâ, alterum pro theologiâ scholasticâ docendâ, tertium vero, in quo theologiae expositivae et morali vacent per biennium collegae, qui iam cursus suos scholasticae theologiae peregerunt. Ad hoc autem collegium biennii studentium simulque conferentium anteacta studia selectiores, quorum sit spes in futurum, solum adire debent, ad arbitrium provincialis, qui tantum approbatos a se et lectoribus theologiae

scholasticae poterit designare. Collegium tamen Propagandae Fidei erit semper pro omnibus provinciis religionis; pro omnibus enim concessum est. Omnia autem et singula collegia, definitivum generale designet.

ii. Ministri collegiorum docti sint et observantes, et, si fieri possit, qui aliquando fuerint lectores, ut sedulo curent, conlectores et collegae causâ studiorum non omitant orationis et mortificationis exercitiâ, nec observantiam nostrarum constitutionum tam particularium pro collegiis quam communium quae illis non opponuntur.

iii. In collegiis philosophiae sint magistri spirituales, sub quorum disciplinâ in habitatione separatâ vivant studentes qui sacerdotes non sint. In collegiis vero theologiae scholasticae magistrorum vices obtineant vicarii.

iv. Conventuales aliquot sint in collegiis ad officia eorum agenda, ad conciones habendas, et audiendas confessiones, ut sic satis temporis maneat collegiis ad studium, et quando tempore vespertino, ut moris est, conclusiones defendantur, si conventuales tempore orationis mentalis ei non assistunt, orent in choro. Monemusque ministros, ne permittant quod aliquis conventualis nec conclusionibus nec choro intersit.

v. Cursus litterarius incipiat a die S. Lucae evangelistae, et duret usque ad vigiliam Pentecostes exclusive. Huius temporis decursu singulis diebus non feriatis singuli lectores philosophiae duas dicent lectiones; singuli vero theologiae unam. Et quaelibet cuiuslibet lectoris lectio per unam duret horam. Similiter, singulis diebus lectivis, vespere expendatur una hora in conferentiâ litterariâ, cui praesit conlector, et in eius defectu lector, cuius materiae conferentia habetur, qui semper interesse debet ei conferentiae quam docet. Hortamur tamen lectores quod intersint conferentiis aliorum lectorum, et tres horae expendantur in conclusionibus defendendis singulis dominicis diebus, ab horâ videlicet tertiâ post meridiem usque ad sextam. Post cursum vero, tempore vacationum, bis in heb-

1 Forsan collegis legendum (A. T.).

domadā conferentiae per spatium unius horae sint, et semel singulis mensibus conclusiones per duas horas tantum. Patres autem ministri, lectores, prout illis melius expedire visum fuerit, designabunt tempora pro dictis exercitiis litterariis, exceptis conclusionibus tempore cursus, quae in iam designato defenduntur.

vi. Communis mentalis oratio, tam matutina quam vespertina, semper sit a quinta hora usque ad sextam. Et finita matutina, recitentur simul Prima, Tertia, Sexta et Nona, in spatio aliquantulum longiori dimidia hora, et quandoque prolixiori, iuxta maiorem earum quantitatem. Et ad initium¹ Primae, et non antea, incipiat missarum celebratio.

vii. In vigilia Nativitatis Domini cantetur Prima, et in die Ascensionis Nona, eo modo et tempore ac in conventibus. Tertia quoque canatur immediate ante missam conventualem in die Nativitatis Domini, prima die Paschae, ac prima Pentecostes, necnon in festivitibus SS. Trinitatis, Epiphaniae, Assumptionis B. Mariae, Nativitatis S. Ioannis Baptistae, natalitii sanctorum apostolorum Petri et Pauli, sanctorum patriarcharum nostrorum Ioannis et Felicis, nisi horum festa cum aliarum religionum celebretur concursu et assistentia, ac in festo Omnium Sanctorum, in quibus diebus Sexta et Nona dicentur eodem tempore et pausatione ac in conventibus.

viii. Missa conventualis canatur omnibus dominicis et diebus feriatis, ac in festivitibus B. Mariae Virginis et Ordinis nostri, atque etiam in die Cinerum, in feria v, vi et sabbato maioris hebdomadae, in vigilia Pentecostes, in die Commemorationis omnium defunctorum, atque etiam in die immediato post festum omnium sanctorum Ordinis, in quo fieri debent exequiae pro nostris religiosi defunctis, cum vigilia et responso in ecclesia, sicut in conventibus, aut in quatuor anni anniversariis, necnon quando sit officium de aliquo sancto martyre in collegio illo ubi corpus vel insignis eius reliquia asservatur. Praeterea in omnibus collegiis

¹ Videtur legendum *initium* (n. r.).

debet cantari missa in exequiis nostrorum religiosorum defunctorum, et quando ex dotatione vel alia obligatione perpetua aut temporali ad id tenetur. Secundis vero feriis a regula designatis dicatur missa sine cantu pro defunctis, et ea finita, fiat a communitate absolutio fidelium defunctorum cum cantu. In quatuor autem praedictis anniversariis et in commemoratione fidelium defunctorum post missam fiat processio per claustrum, et ubi hoc non fuerit, cantetur absolutio in ecclesia.

ix. Vesperae canantur tam primae quam secundae (eo tempore et solemnitatem ac in conventibus) tribus primis diebus Nativitatis Domini, tribus Paschatis, ac tribus Pentecostes; necnon in festivitibus SS. Trinitatis, Corporis Christi, Circumcisionis, Epiphaniae, Ascensionis Domini, Purificationis et Assumptionis B. Mariae, in Nativitate S. Ioannis Baptistae, natalitio sanctorum apostolorum Petri et Pauli, ac beatorum patriarcharum nostrorum Ioannis et Felicis, et in secundo festo S. Agnetis virginis et martyris, nostri Ordinis patronae, ac in festo titulari familiae, provinciae aut domus, in quo et missa solemnis canenda est. In festivitate autem Omnium Sanctorum semper canantur primae vespere; quoad secundas vero observetur, sicut et quoad vespere defunctorum, quod dictum est de conventibus, cap. xi, § 1, n. viii. In reliquis vero festivitibus primae et secundae classis, quae ad colendum pronunciantur, solum vespere secundae canantur, nisi eodem die defendendae sint conclusiones, quae semper praeferri debent vespere secundis festivitatum in quibus hae solum cani debeant. In recitandis autem quarta pars horae expendatur.

x. Immediate post mentalem orationem vespertinam dicatur Completorium, quod fere per quadrantem horae durabit; et eo finito, cellas petant ad studendum usque ad horam octavam cum dimidia, nisi quies et recreatio ex instructione sit habenda. Si autem fuerit nox communis flagellationis, flagellentur tempore hyemis post Completorium ante studium: reliquis vero anni temporibus post nocturnum conscientiae examen.

x. Matutinum recitetur inviolabiliter horâ noctis octavâ cum dimidiâ, nisi ex instructione fuerit nox recreationis; tunc enim immediate post Completorium recitetur, et recitatio eius duret fere per horam. Cantetur autem cum laudibus (tempore, et solemnitate, ac in conventibus) in die Nativitatis et Resurrectionis Domini, ac in triduo maioris hebdomadae, et in festo Corporis Christi (si istud venerationi expositum fuerit) per totam eius octavam, id eadem solemnitate canatur, quod cani debet in conventibus. At vero in festo SS. Trinitatis et primae diei Pentecostes, et sanctorum patriarcharum nostrorum Ioannis et Felicis cantetur etiam matutinum cum laudibus horâ quintâ post meridiem.

xii. Circa religiosorum numerum qui requiritur ad canendum omnia praedicta in solemnitatibus, et quid quando celebrantur non in propriis diebus, observetur quod dictum est de conventibus, cap. xi, § 1, n. viii.

xiii. Insuper praecipimus quod in quatuor anni anniversariis recitetur in omnibus nostris collegiis integrum officium defunctorum, sicut in conventibus. Collegae philosophiae recitare tenentur coram B. V. M. in suo oratorio cum suo magistro post antiphonam *Benedicta*; scholasticae theologiae studentes in choro, et omnes collegiorum religiosi sive collegae biennii, sive Propagandae sive conventuales sint, qui eandem non recitaverint in communi, illam recitent privatim.

xiv. In recreationibus nocturnis, a Paschate usque ad Pentecostem, solum poterunt perseverare usque ad Nonam, et in residuo tempore aestivo ad summum usque ad dimidiam post Nonam. Semper tamen studentes in communitate cum conventualibus congregentur ad minus per unam horam; nisi fuerint collegae philosophiae, qui congregari debent cum suo magistro.

xv. Non admittantur in collegiis nostris universitatum externae personae ad lectiones, conclusiones vel alia litteraria exercitia. Nec religiosi nostri extra proprias domos publice arguant vel defendant. At

vero in regionibus¹ illis, in quibus apud alias religiones² similiter exalcentur consuetudo oleverit in contrarium, idem licebit nostris. Vitandum tamen erit, quantum possibile sit, commercium saecularium cum nostris studentibus, praesertim ad lectiones. Qui autem constitutioni isti omnino vel partim contraverit, privatus sit voce et loco, iuxta gravitatem culpa.

i. In quocumque conventu ac collegio nostro sit communis bibliotheca, cuius incrementum ac in dies augmentum ministri procurent. In ea sint libri ad studia religiosorum, spiritualem ipsorum profectum, et proximorum salutem. Sit deputatus a provinciali religiosus qui illam mundatam clausamque habeat, et libros suo ordine iuxta ipsarum diversas facultates dispositos. Qui et etiam necessarios religiosos ad lectionem studiumque distribuât cum licentiâ praelati, et sit quoque in ipsâ bibliothecâ inventarium recto ordine alphabetico dispositum omnium librorum conventus vel collegii.

ii. Ut autem libri non diminuantur nec deficient, praecipimus in virtute sanctae obedientiae omnibus et singulis religiosis, ne praebeant, nec alienent, nec ad alium conventum nec collegium portent vel mittant librum aliquem, quinternum, codicem aut codices, aliave manuscripta existentia in bibliothecâ alterius conventus vel collegii sive ad illa pertinentia, etiam illa, vel ex illis libris, quinternis, codicibus seu manuscriptis, quae religiosi habent in cellis, vel alio in loco ad studium, lectionem vel usum suum, nec similiter commodent praedictos libros, codices, quinternas, manuscripta, aut portent extra conventum vel collegium, ad quod pertinent. Minister vero poterit libellum aliquem spiritualem praebere alicui personae devotae seu benefactori. Poterit etiam aliquos libros sui conventus vel collegii commodare aliquibus personis, prout expedire viderit. Semper tamen in bibliothecâ remaneant scripti a bibliothecario² libri, qui, et personae, quibus com-

§ 7.
De bibliothecâ.

¹ Pessime edit. Main. legit *religionibus* pro *regionibus* (R. T.).

² Edit. Main. legit *bibliothecarii* (R. T.).

moderantur, cum annotatione diei, mensis et anni. Non poterit tamen minister, etiam capitulo consentienti consentiente, alienare aliquam vel aliquos libros, nisi sint inutilis et pro utilibus permanentur. Quod si secus fecerit, poenae culpae gravis subiacet.

III. Pater provincialis, quando illi conveniens visum fuerit, potest concedere licentiam religioso ut secum habeat et portet ad usum librum aliquem spiritusalem, bibliam parvam, et compendium casuum conscientiae. Nec libros alios poterit quicquam secum portare, nisi de licentia definitoris provincialis vel sui superioris generalis.

IV. Codices aliaque manuscripta religiosorum defunctorum in bibliotheca domus illius, in qua decedunt, vel in archivio generali Ordinis reponantur.

V. Denique, sub eodem praecepto ut supra num. II, praecipimus ut nullus extrahat a bibliotheca aliquem vel aliquos libros, quin-ternas, codices, vel manuscripta, absque licentia praelati. Similiter omnibus praelatis praecipimus, sub eodem praecepto, quod neque sibi reservare, neque alteri audeant concedere manuscripta religiosorum defunctorum. Religiosus autem extrahens, notitiam praebeat bibliothecario, et similiter illum praemoneat ut colligat et in bibliotheca reponat libros et cetera ad illam spectantia, quando ipse religiosus longam absentiam a conventu facere intendit vel in alium migrat.

REGULAE CAPUT XXXIX.

Generale capitulum de tridinio in triennium, etc.

CAPUT XXXIX. — *De familiis, earum capitulis generalibus, et congregationibus.*

§ 1.
De familiis.

I. In nostra religione exalceatā erunt duae familiae, in quas totus veniat universalis Ordo divisus: quarum una denominabitur intra-Hispana, et extra-Hispana altera: utraque erit sub titulari sibi electo.

II. Ex his duabus familiis unus minister generalis in caput et earum superior eligendus est, et postea commissarius generalis in superiorem generalem familiae de qua minister generalis non fuerit assumptus,

habeat ministrum generalem, tanquam superiori omnium commissarius generalis et ceteri omnes humiliter pareant et obediant, quin, sub poena transgressionis obedientiae, ulli ceterorum nec toti definitorio alterius familiae liceat resistere illius mandatis, praesertim post secundam iussionem, in qua expressa sit clausula: « non obstantibus his, quae nobis exposita sunt », quande exposita referantur ad litteram.

III. Similiter sua familia obedire tenebitur suo commissario generali qui vel iurisdictione ordinaria vel delegata in aliquo casu gubernium totius familiae tenet, quin impediri nec retardari possit ab aliquo, quam ab omnium superiore ministro generali Ordinis.

IV. Ut semper ac futuris temporibus, sine alicuius familiae sive religionis murmure aut querela, unitas¹ religionis sub uno capite permanere possit et debeat, in proxima futura electione ministri generalis facienda iuxta sanctam regulam eligendus et assumendus est in hoc munus filius familiae Hispanae, et in commissarium generalem alterius familiae, scilicet extra-Hispanae, assumendus est filius eius.

V. Finito sexennio post praedictam primam electionem futuram eligendus est in ministrum generalem Ordinis filius extra-Hispanae familiae, et in commissarium generalem pro sua familia filius familiae Hispanae.

VI. Hac semper vicissitudine imposterum fiat electio ministri generalis Ordinis in capitulo generali.

VII. Si durante sexennio ministrum generalem Ordinis mori contingat, vel alia quavis causa eius officium vacaverit, ex eadem familia eligendus est vicarius generalis Ordinis; qui, excepto nomine ministri, in omnibus et per omnia eandem iurisdictionem et praeminentiam habere debet ac minister generalis habuerat. Et eius officium durabit dumtaxat usque in finem illius sexennii, ne privetur familia superiore gene-

¹ Edit. Main. legit *expositas* (R. T.).

² Edit. Main. legit *unitatis* (R. T.).

rali Ordinis adhuc per breve tempus ante capitulum, nec inter familias alteretur vicissitudo.

viii. Si contingat commissarium generalem deficere in aliâ familiâ, mortis, renunciationis, aut aliâ quavis causâ, tunc minister generalis ex eâdem eius qui defecerit familiâ eligat vice-commissarium, qui, auctoritate delegatâ et nomine delegantis expresso, omnes illi commissas facultates usque ad proximum capitulum exercent.

§ 2.
De tempore
et loco, in quo
celebrandum
est capitulum
generale.

i. Generale capitulum de triennio in triennium celebretur sabbato ante quartam dominicam post Pascha, nisi iustâ de causâ, iudicio definitorii generalis Ordinis, omnibus votis praeter unum concurrentibus, differatur; et tunc die assignandâ ab ipso definitorio celebretur: si vero, instante tempore quo iuxta regulam capitulum generale celebrari debet, praeses capituli infirmetur, itaut assistere non valeat, tunc ipsemet poterit capitulum differre per mensem tantum.

ii. Capitulum generale ad praescriptum regulae celebretur de triennio in triennium sabbato ante quartam dominicam post Pascha extra curias principum in domo assignandâ a ministro generali Ordinis quatenus ipse praesideat, consulto definitorio generali ipsius, vel a commissario generali consultis definitoribus suae familiae, ministro generali non praesidente.

iii. Tempore capituli non admittantur hospites, nec domum capitularem ingrediantur vocales per duos menses ante celebrationem capituli, nisi fuerit pater provincialis illius provinciae, exceptis socio, si minister fuerit, et vocale illo qui ante annum habeat in eâdem domo suam illi designatam residentiam continuam.

iv. Minister generalis et eius definitorium praeesistere debent ante capitulum in eâdem domo capitulari, et ceteri vocales ingredi teneantur feria quintâ ante praedictam dominicam quartam post Pascha.

v. Pater minister generalis, tempore apto ut omnes qui vocandi sunt ad capitulum congregentur, mittat litteras vocatorias omnibus vocalibus qui teneantur concurrere,

et invitatorias quibus licitum sit concurrere, easque omnes mittat cum expressione temporis et loci celebrationis imminantis capituli generalis; et si huiusmodi litterae ad aliquem capitularem non pervenerint, nihilominus ipse concurrat et vocatus intelligatur, dummodo constet de promulgatione capituli generalis factâ et in suâ provinciâ aliis notâ.

i. In capitulo generali Ordinis semper praesideat superior generalis illius, sive minister, sive, causâ¹ ministri defectus, vicarius generalis cognominetur; et si congregato iam capitulo ipse aegrotaverit, vel propter aliam causam non accesserit ad capitulum, tunc commissarius generalis alterius familiae erit praeses capituli; eiusque praesidentia durabit usque ad finem dicti capituli, nisi praesens fuerit noviter electus in ministrum generalem, quia tunc praesidentiam habere debet. Et si etiam contingat, congregato capitulo, ministrum generalem et commissarium generalem alterius familiae simul deficere, tunc praeses capituli eligatur ab omnibus vocalibus simul, et usque in finem capituli praesidentiam habeat, nisi noviter electus in ministrum generalem sit praesens.

ii. In capitulo generali suffragium tantum habeant sequentes: praeses capituli, sive sit minister generalis, sive vicarius generalis, sive commissarius alterius familiae, sive praeses electus a capitulo; deinceps commissarius generalis vel vice-commissarius familiae ex qua minister generalis assumendus est; item definitores generales Ordinis, et postea definitores generales familiae; omnes ministri vel vicarii provinciales; singuli loci primi pro singulis provinciis Ordinis; procurator generalis Ordinis, itaut quoties in Hispaniâ celebretur capitulum generale, suffragium habeat procurator generalis Hispaniae, et quoties celebretur capitulum extra Hispaniam, suffragium habeat procurator generalis Curiae Romanae; atque etiam suffragium habebit secretarius generalis ministri generalis qui spirat; et propterea² suffragium habere poterit qui

§ 3.
De praeside
et lectoribus in
capitulo gene-
rali.

¹ Potius lege casu pro causâ (N. T.).

² Videtur legendum praeterea (N. T.).

aliquando fuerat superior generalis Ordinis vel familiae minister, scilicet vicarius commissarius, vel vice-commissarius. Et sub poenâ privationis ad ulteriora Ordinis officia, nullas, ne ad capitulum adeat, nisi propter infirmitatem excusari possit; illis exceptis qui antea superiores generales fuerant, quibus, dummodo actu non sint vocales, liberum erit adire vel non adire ad capitulum propter aetatem et labores antea susceptos. Nullusque poterit suffragium suum compromittere.

iii. Primo loco sedeat in capitulo praeses, et ad eius dexteram tota familia ipsius ministri generalis qui spirat; secundo loco, et ad sinistram praesidis, superior generalis alterius familiae cum totâ suâ familiâ; itaut superiores generales¹ caput agant ad latera; et post quoslibet, intra propriam eius, ceteri sequantur hoc ordine: definitores generales, ministri aut vicarii provinciales, socii primi et etiam secundi, quando subrogantur pro vocali aliquo, quamvis subrogentur pro illo qui superiorem sedem haberet, praeterea actualis procurator generalis qui habeat suffragium, deinde secretarius generalis, et denique, post vocales suae familiae, qui aliquando fuerat superior generalis pro eâ, et, si plures fuerint, qui aliquando munus superioris generalis habuerint: qui fuit superior generalis Ordinis, praecedat eum qui fuerat superior generalis familiae: et si eodem munere plures functi fuerint pro eâdem familiâ, antiquior in professione praecedat: qui quidem ordo intra et extra aulam capitularem servandus erit, quando sive in refectorio sive in choro ad latera sedent: post ministrum generalem sedebit commissarius generalis familiae, postea definitores generales¹ Ordinis, deinde definitores generales familiae, postea patres provinciales, iuxta antiquitatem earumdem, praeterea procurator generalis, et post eum secretarius generalis, ac denique qui fuerant superiores generales, itaut qui minister generalis fuerat praecedat eum qui solum fuerat com-

missarius generalis, et, si plures fuerint ministri, antiquior praecedentiam habeat, cuiuscumque familiae fuerint.

iv. Si quis ex capitularibus aliquâ ex causâ fuerit inhabilis, vel activâ voce privatus, seu dubium super hoc fuerit, ad definitorium generale Ordinis spectet id determinare vel declarare. Cui determinationi vel declarationi omnes stent sub poenâ privationis vocis activae vel passivae in illo capitulo.

v. Quando contigerit praelatum aliquem superiorem proferre sententiam suspensionis ab officio vel privationis vocis contra praelatum sibi inferiorem suffragium habentem in capitulo generali vel in definitorio, effectum non habeat, quin prius consulatur idem definitorium, casu quo in vim dictae sententiae impediatur dictum suffragium praefato reo. Quod intelligatur etiam quando sententia tantum est declarativa dictae poenae impositae videlicet ipso facto a iure, vel a Bullis seu Brevibus Pontificiis, vel a nostris constitutionibus.

vi. Nullus sive in capitulo generali sive in definitorio audeat subornare electores directe vel indirecte, vel precibus, pollicitationibus, minis, aliove modo illos inducere ut alteri praestent vel denegent suffragium. Et contraveniens, tamquam pacis perturbator, puniatur poenâ privationis officii et loci per triennium.

1. Cum in capitulo generali suffragium habere debeat socius uniuscuiusque provinciae, et nominandus sit ab ipso capitulo pro futuro, in quo alii erunt ministri, et alii non statutum est¹ quod capitulum generale (cui impossibile est scire neque intelligere personas, quâ post sexennium sint ministri) designet socios qui ratione officii concurrere debeant ad capitulum; ideoque quaelibet familia seorsim ex qualibet provinciâ suae familiae designare debet duas domos, quae capitulares cognominentur, ut, qui fuerint earum ministri immediate ante capitulum generale Ordinis aut familiae suae, vi solius electionis in ministros earum domo-

§ 4.
De sociis ad capitulum generale, eorumque officio, qualitatibus et electione.

¹ Edit. Main. legit *generalis* (n. r.).

¹ Edit. Main. legit *generalis* (n. r.).

¹ Intelligat vel corrigat quisque sciis (n. r.).

² Fors. qui, vel quae, pro qua legend. (n. r.).

rum, socii sint ad capitulum generale futurum: ita ut minister domus prius in hoc capitulo designatae sit primus socius, et in capitulo futuro suffragium habeat; et minister alter, scilicet domus posterius designatae pro eadem provincia, sit socius secundus, et in defectum alicuius capitularis, quatenus illius munus solum sit concurrere extra domum capitularem in loco proximo ad illam, ut praesto et in promptu sit ad hoc, ut, si opus fuerit, ob defectum alicuius vocalis provinciae suae, suffragium habeat, supplendo pro eo, nisi vocali, qui deficiat, liberum fuerit abesse capitulo, quippe eorum suffragia suppleri non debent.

II. Et quia socius debet esse praeditus doctrinâ, observantiâ et experientiâ in regimine, monemus patres capitulares provinciarum, quod in suis capitulis provincialibus immediatis capitulo generali eos eligant in ministros domorum capitularium qui digni sint ut concurrant tamquam socii suae provinciae ad capitulum generale; et quod etiam caveant ne eligatur in ministrum alicuius domus capitularis pro triennio immediate capitulo generali, qui iam socius fuerat in antecedenti capitulo.

III. Si per mortem, infirmitatem aut aliam iustam causam minister alicuius domus capitularis non possit interesse capitulo, tunc definitorium generale suae respectivae familiae seligere possit domum alteram, cuius minister actualis concurret ad capitulum semper ut socius secundus. Si autem contingat utrumque socium pro aliquâ provincia simul deficere, minister domus prius electae a definitorio in illo casu erit socius primus.

IV. Si quis minister vel alter religiosus aliquid animadvertendum vel notatione dignum habeat remittendum ad capitulum, tradat socio suae provinciae, vel suo provinciali, ut unus vel alter portet.

I. Feriâ quintâ ante dominicam quartam post Pascha congregentur omnes capitulares utriusque familiae ante meridiem, in domo designatâ ad capitulum celebrandum, ut ad vespervas praeses capituli congreget omnes illos. Vespere autem idem praeses imponat

illis praeceptum in scriptis iubendo, quod, si quis scelerit alicuius capitularis impedimentum propter quod non debeat admitti ad capitulum, illud manifestet statim ante ipsum. Quod si, factâ sufficienti probatione, impedimentum aliquod inventum fuerit, ad definitorium generale Ordinis pertinebit declarare, inhabilem esse habentem tale impedimentum, et illum a capitulo excludere.

II. Die vero sequenti, scilicet feriâ sextâ, congregentur familiae, unaquaeque¹ seorsim ab aliâ. Praeses cuiuscumque vocalibus suae familiae notos faciat catalogos omnium religiosorum ipsi designatos a provincialibus suae familiae et a suis definitoribus provincialibus approbatos, in quibus contineantur religiosi omnes, qui, intra provincias, inspectis solum graduatione et interstitiis, apti reperiantur, iuxta² nostras constitutiones, ad munera et officia suae familiae in eo capitulo pertinentia, ut nullus postea conqueri possit et³ quod sua aptitudo non fuerit praesens omnibus vocalibus suae familiae. Illa autem aptitudo ex purâ graduatione et interstitiis iudicanda erit, quin ad mores et observantiam aliquo modo referatur, ut alii includantur, excludantur alii, aliâs daretur dissensionum et causa litium.

III. Deinde postea eodem die, aliâ tamen sessione, iterum congregentur familiae seorsim, ut eligibilitatis scrutinium fiat ab unaquaque sequenti modo. Quod familia quaevis iuxta suam conscientiam faciat seligibilitatis scrutinium toti familiae suae proponendum, et id faciat ita, ut unusquisque vocalium in schedulâ unâ seligat quinque ad electionem capitis pro suâ familiâ, sive pertinentis ad illam; et illos quinque eligat ex aptioribus positâ in catalogis, eos tamen, quos suo iudicio iudicaverit aptiores. Schedulas vero omnes tradere debent suo superiori. Superior autem, facto antea iuramento fidelitatis coram totâ suâ congregatione, ab ipso et duobus sibi immediate vocalibus eiusdem³ regulabit schedu-

¹ Edit. Main. legit *unaquaque* (R. T.).

² Coniunctio *et* delenda (R. T.).

³ Forsan *easdem* (R. T.).

lar, et quinque illos eligibiles, qui plures voces habuerint in praedictis vocalium schedulis, eligibiles declarare, et omnibus gremiis suae familiae manifestare tenebitur, ostendendo illis schedulam, manu unius scrutatoris scriptam, subscriptam ab alio scrutatore, et signatam a se ipso praeside familiae; et statim hanc suae regulationis schedulam totius capituli praesidi tradere tenebitur: praeses familiae, ex qua assumenda est minister generalis, ut praeses capituli, toto capitulo manifestet eam ante electionem.

iv. Eadem feriâ vi simile fiat scrutinium, in quo unusquisque vocalium scribat, seligendo ex catalogo inter aptos ad definitoris officium pro sua familia duodecim, ut ex omnibus schedulis, duodecim continentibus, a scrutatoribus et praeside familiae regulatis vocibus, duodecim, qui plures voces quam ceteri habeant, scribantur in alia schedula modo dicto, et similiter publicata postrema schedula ut de proxime eligibilibus constet, tradatur praesidi. Si autem contigerit quod in eligibilitatis scrutinio duo vel tres aequalem numerum suffragiorum seu vocum habeant, illi omnes reputentur eligibiles. Si vero huiusmodi aequalitas reperiatur, quando iam ad numerum eligibilium solum deficiant unus, duo vel tres, tunc antiquiores in professione eligibiles reputentur. Ceterum, si fere omnes voces singulorum vocalium pro duobus, tribus aut quatuor eligibilibus reperiuntur, et singularis¹ pro aliis fiat secundum scrutinium ad eligibilitatem illorum qui usque ad numerum proxime eligibilium defuerint. Si quis autem inventus fuerit, se ipsum nominasse in schedula selectionis ad eligibilitatis scrutinium, eo ipso ineligibilis sit, quamvis, seclusa voce illius, ceteras omnes habeat pro se. Caveatur stricte ne scrutatores ulli vocalium revelare audeant numerum vocum, quas habuerat aliquis, qui eligibilis publicatur.

v. Factis ab unaquaque familia praedictis scrutiniis, traditaque praesidi capituli schedula eligibilium, modo dicto efformata pro

¹ An recta lectio iudicet sciens (R. T.).

eligibilibus suae familiae, praeses totius capituli familiam generalis, qui spirat, certiores faciat de eligibilitate sibi nota ad electiones proxime futuras a toto capitulo faciendas.

vi. Si in aliquo scrutinio eligibilitatis, vel supra eo, aliquae difficultates occurrant, determinandae sunt a definitorio generali eiusdem familiae, cuius resolutioni standum erit sub poena ad arbitrium ipsius definitorii.

vii. His omnibus eadem feriâ vi expeditis, sequenti die, sabbato nempe, et prima¹ diluculo cantetur, assistantibus omnibus religiosis, missa solemnis de Spiritu Sancto cum commemoratione B. Virginis Mariae et sanctorum nostrorum patriarcharum. Idemque etiam fiat in omnibus conventibus et collegiis Ordinis pro felici capituli eventu. Ac praeterea in omnibus domibus, toto tempore capituli, communis et particularis fiat oratio ut Deus illuminet capitulares ad hoc ut conformiter omnia faciant et operentur ad maiorem Domini gloriam et religionis utilitatem et incrementum.

viii. Finita missa, praeses capituli (etiamsi forte aliquis vel aliqui ex vocalibus non pervenerint) iubeat fieri signum cum cymbalo ad capitulum generale; et postquam omnes gremiales congregentur in aula capitulari, illico coram omnibus praeses capituli concionem habeat spiritualem idiomate omnibus communi, hortando vocales ut in omnibus actionibus et electionibus prae oculis habeant maiorem Dei gloriam et religionis incrementum.

ix. Exhortatione finita, ut sine scrupulo ad electiones procedatur, genuflexis omnibus, praeses ad cautelam illos absolvat ab omnibus et quibuscumque censuris, forma sequenti. Omnes dicent confessionem generalem, et praeses capituli prosequatur dicens: *Misereatur vestri, etc. Indulgentiam, etc. Si tenemini aliquo vel aliquibus vinculis excommunicationis, suspensionis aut interdicti, in quantum se extendunt gratiae² et privilegia Ordini nostro indulta mihi commissa et nobis*

¹ Forsan primo (R. T.).

² Edit. Main. legit gratia (R. T.).

concessa, ego absolvo vos ad effectum electionum faciendarum, et restituo vos sacramentis Ecclesiae, communioni et unitati fidelium. In nomine Patris †, et Filii, et Spiritus Sancti. Amen. Item eadem auctoritate ego vos absolvo ab omnibus aliis, de quibus fieri consuevit absolutio in consimilibus capitulis, ut sitis absoluti hic et in tribunali domini nostri Iesu Christi, ut habeatis vitam aeternam, et vivatis in saecula saeculorum. Amen.

x. Capitularibus sic absolutis et adhuc genuflexis ante imaginem Crucifixi (quae debet esse supra primam et principalem mensam aulae capitularis), gratiam Spiritus Sancti invocabunt devote dicentes hymnum *Veni Creator Spiritus*, etc. Quo finito, praeses capituli, ceteris respondentibus, prosequitur: †. *Emitte spiritum tuum et creabuntur.* †. *Et renovabis faciem terrae.* †. *Benedicamus Patrem et Filium cum Sancto Spiritu.* †. *Laudemus et superexaltemus eum in saecula.* †. *Mitte eis, Domine, auxilium de Sancto.* †. *Et de Sion tuere eos.* †. *Ora pro nobis, sancta Dei genitrix.* †. *Ut digni efficiamur promissionibus Christi.* †. *Exultent iusti in conspectu Dei.* †. *Et delectentur in laetitia.* †. *Domine, exaudi orationem meam.* †. *Et clamor meus ad te veniat.* †. *Dominus vobiscum.* †. *Et cum spiritu tuo.*

OREMUS.

Mentes nostras, quaesumus, Domine, Paraclitus, qui a te procedit, illuminet, et inducat in omnem, sicut tuus promisit filius, veritatem.

Omnipotens sempiternus Deus, qui dedisti famulis tuis in confessione verac fidei aeternae Trinitatis gloriam agnoscere, et in potentia maiestatis adorare unitatem, quaesumus, ut eiusdem fidei firmitate ab omnibus semper muniamur adversis.

Defende, quaesumus, Domine, beatâ Mariâ semper Virgine intercedente, istam ab omni adversitate familiam, et toto corde tibi prostratam ab hostium propitius tuere clementer insidiis.

Deus, qui, per sanctos patres nostros Ioannem et Felicem, Ordinem SS. Trinitatis ad redimendum de potestate Saracenorum captivos caelitus instituere dignatus es; praesta, quaesumus, ut eorum suffragantibus meritis a capti-

vitato corporis et animas, te adiuvante, liberemur.

Omnipotens sempiternus Deus, qui facis mirabilia magna solus, praetende super congregationes illis commissas spiritum gratiae salutaris, et, ut in veritate tibi complacent, perpetuum eis rorem tuae benedictionis infunde.

Deus, largitor pacis et amator charitatis, da famulis tuis veram cum tua voluntate concordiam, ut ab omnibus, quae nos pulsent, tentationibus liberemur. Per Christum, etc.

xi. Rogatione finita, electores omnes ante supradictam imaginem Crucifixi faciant iuramentum, quo se obligent ad eligendum digniores et aptiores respectu officiorum, quae proponuntur, et quod¹ prae oculis habeant in omnibus electionibus maiorem Dei gloriam et progressum religionis, iuxta tenorem nostrae regulae. Idem quoque iuramentum faciant electores sociorum, et definitores in definitorio, vel in qualibet alia congregatione, quando facienda est aliqua electio alicuius praelati vel socii.

Forma iuramenti talis est: *Ego frater N. de N. iuro et promitto Deo omnipotenti, B. Mariae semper Virgini, et beatis patribus nostris Ioanni et Felici, me electurum illos, quos iuxta meam conscientiam credam digniores et aptiores futuros esse Ordini nostro, provinciis et conventibus, quoad spiritualia et temporalia.*

xii. Facto iuramento, capitulares sedentes eligant per secreta suffragia secretarium capituli de eius corpore, et per maiorem suffragiorum partem electus pronuntiabitur a praeside capituli, in cuius manus secretarius electus faciat iuramentum fidelitatis et servandi secretum, sequenti formâ:

Ego frater N. de N. iuro et promitto Deo omnipotenti, B. Mariae semper Virgini, et beatis patribus nostris Ioanni et Felici, me in omnibus ad meum officium spectantibus fidelitatem et secretum servaturum.

xiii. Confestim capitulum eligat per secreta suffragia tres capitulares in scrutatores ad regulandum suffragia in electionibus. Isti autem (si aliud visum non fuerit capi-

¹ Edit. Main. legit quae pro quod (R. T.).

tudo, quod per secreta suffragia determinabit) semper erunt praeses capituli et duo immediate sedentes ad dexteram et ad sinistram illius; qui quidem scrutatores statim faciant coram capitulo iuramentum fidelitatis et secreti, sequenti formâ:

Ego frater N. de N. iuro et promitto Deo omnipotenti, B. Mariæ semper Virgini, et beatis patribus nostris Joanni et Pauli, me scrutatoris officium fideliter facturum, et secretum semper servaturum, non revelando personas quas suffragia praestiterunt vel negaverunt huic vel illi.

xiv. Deinde capitulum per secreta quoque suffragia eligat ex scrutatoribus unum qui officium faciat secretarii praeclise in scrutinii, et electus faciat, statim ac pronuntietur a praeside, iuramentum in manus istius eâ formâ quae posita manet num. xii pro secretario capituli.

xv. Rursus capitulum eligat per secreta suffragia unum ex vocalibus, qui post regulata suffragia in electionibus nomine ipsius capituli faciat et pronunciet electiones formâ signandâ sequenti §, num. iv, et pro casu quo suffragia concurrant pro aliquo officio in ipsum electorem seu pronunciatorem, capitulum eligat alterum qui eius electionem pronunciet. Quod si aliter visum non fuerit capitulo (quod per secreta suffragia determinabit), semper primus scrutator erit elector seu pronunciator, et pro casu electionis suae, secundus scrutator.

xvi. Eadem forma, idemque totum quod tribus numeris antecedentibus dictum est erga scrutatores, secretarium scrutinii et electores seu pronunciatores electionum, servatur omnino, quotiescumque in definitorio, sive in aliâ quacumque congregatione, extra vel intra capitulum generale, faciendâ sit aliqua electio canonica praelati vel socii.

xvii. Praedictis igitur praecambulis finitis, procedat capitulum ad electiones, et praecedat omnes, fiatque ante prandium electio patris ministri generalis, et, si praesens sit, sedeat immediate post patrem ministrum

1 Edit. Main legit erant (R. T.).

2 Forsan legendum servetur (R. T.).

generalem qui spirat, sive post praesidem capituli; non tamen praesideat, nec officium exerceat usquequo finiator capitulum. Nihilominus omnes tam capitulares quam ceteri religiosi conventus, statim ac electio facta sit, pergant processionaliter cum electo in ecclesiam cantantes hymnum *Te Deum laudamus*, et ibi accipiant ab eo benedictionem, et omnia fiant iuxta formam dispositam in nostro manuali. Tamen si pater minister generalis electus praesens non fuerit, illum non expectet capitulum, sed prosequatur.

xviii. Post vespervas eiusdem diei congregentur in aulâ capitulari vocales omnes illius familiae, pro qua minister generalis spirat, et praeside eodem qui totius capituli praeses fuerit, atque sibi electis secretario, scrutatoribus, modo dicto, omnes simul canonice eligant commissarium generalem ad triennium immediate futurum pro suâ et ex suâ familiâ assumptum, eodem modo et ritu quibus minister generalis Ordinis ante prandium electus fuerat.

xix. Sequenti die, videlicet dominicâ, congregentur omnes utriusque familiae vocales, et similiter per secreta suffragia eligant ad futurum sexennium sex definitores generales Ordinis iuxta Breve sanctissimi domini nostri Clementis Papae XII, quod incipit *Pastoralis officii*, expeditum mense septembris, die x, anno mcccxxx, qui quidem definitores semper assumendi erunt ex familiâ ministri generalis noviter electi.

xx. Similiter post vespervas huius diei congregentur omnes qui commissarii generales fuerant pridie electores, et ex suâ familiâ, et pro eâ, sex alios definitores generales familiae eligant ad futurum triennium, qui nec vocari possint nec reipsâ erunt definitores generales Ordinis.

xxi. Definitoribus omnibus electis, congregetur tota solaque familia intra-Hispana, et praeside eodem capituli generalis, canonice et ad triennium ex suâ familiâ eligat ministrum nostri conventus romani S. Caroli. Et postea familia, ex qua minister generalis spirat, similiter canonice et ad triennium eligat ex suâ familiâ ministrum nostri collegii romani de Propagandâ Fide.

xxii. Immediate feriâ ii, familia ministri generalis qui spirat, albis nigrisque globulis aut lapillis assumptis, eligat ad sexennium procuratorem generalem Ordinis pro Romanâ Curiâ ex suâ familiâ assumptum, cui totum capitulum, antequam finiatur, dare tenebitur Ordinis mandatum generalis procurae, et similiter eligat chronistam generalem pro suâ familiâ. Deinde familia ministri generalis electi, praeside superiore qui spirat, similiter et ex suâ familiâ eligat procuratorem generalem familiae suae pro illius negotiis in Romanâ Curiâ exequendis, qui etiam ante finem capituli dabit suum mandatum procurae, cum expressâ prohibitione, sub praecepto formali, ne in communibus negotiis religionis se immisceat, nec verbo aut scripto a se aut ab aliis suae familiae cognominetur procurator generalis Ordinis; et postremo eligat chronistam generalem pro familiâ suâ.

xxiii. Si fuerit aliqua domus extra provinciam, praeter dictas S. Caroli et de Propagandâ, et minister illius maiorem partem triennii post suam electionem expleverit, familia illa, ad quam domus pertineat, ministrum eligat in eodem capitulo generali ad triennium, quia postea, finito triennio (nisi sit capitulum intermedium) ad definitorium familiae pro alio triennio usque ad capitulum generale pertinebit electio omnium qui per capitulum generale electi fuerant ad triennium. Quod si familia intra-Hispana quando ei competit, capitulum generale intermedium, illud celebrare non possit, illius definitorium generale eligat ministrum nostri conventus romani S. Caroli ad sequens triennium. Et similiter familia, quae praedictum capitulum celebrare iam instante tempore nequeat per suum definitorium generale, eligat ministrum collegii nostri de Propagandâ Fide ad immediatum triennium.

xxiv. Electiones ministrorum horum in capitulo generali poterunt fieri sine scrutinio ex omnibus aptis, quia, propositis quinque ex aptis a definitorio provinciae, ex qua eligendus assumi debeat, familia in eo capitulo eligere poterit quem iudicaverit eligendum.

xxv. Finitis electionibus, prosequantur sessiones necessariae ad agendum de observantiâ, progressu, bonoque communi nostrae religionis, et ante omnia ac praecipue de eius instituto, redemptione nimirum captivorum; et ab ipso toto capitulo confirmantur praecepta in his constitutionibus imposita. Quibus conclusis, capitulum per secreta suffragia eligat octo ex ministris provincialibus actualibus et ministris ex domibus capitularibus, ad hoc ut priores quatuor vel quinque concurrant simul cum definitoriis generalibus Ordinis et familiae (sicut praecipit regula) ad correctionem vel depositionem superioris generalis Ordinis, si in illo sexennio opus fuerit. Reliqui vero ad hoc deputati, iuxta ordinem suae electionis, succedant primis, si ex istis aliquis defecerit, mortis, aut renunciationis, aut aliâ quavis causâ.

xxvi. Insuper idem capitulum eligat sex patres ex gravioribus religionis, quorum consilio et assensu superior generalis (quando casus occurrerit) eiiciat ab Ordine aliquem vel aliquos, instructo processu, et plene probatis causis expulsionis, iuxta decretum sacrae Congregationis Concilii. Et praeterea eligat quoque capitulum ad eundem effectum alios quatuor vel sex patres subrogandos ordine suae electionis in defectum alicuius vel aliquorum ex sex prius electis.

xxvii. Deinde quaelibet familia seorsim designet ex qualibet provinciâ suâ duas domos capitulares, sicut dictum est § 4 huius capituli, num. 1, ut ministri illarum socii sint ad capitulum futurum generale Ordinis vel familiae iuxta dicta.

xxviii. Quibus electionibus factis, legantur coram capitulo decreta sanctae romanae et generalis Inquisitionis, et praeses capituli hortetur ad illorum strictam obedientiam et observantiam. Postea legantur coram suo definitorio epistolae missae ad capitulum, ut, si definitorio visum fuerit, coram toto capitulo notae fiant: decernimus autem quod nec praeses capituli nec capitularis alius praeter assignatos possit legere aut aperire huiusmodi epistolas.

xxix. His omnibus peractis, continuo im-

ponat praeses praeceptum omnibus et singulis vocalibus, ut inter spatium viginti quatuor horarum revelent ante ipsum et manifestent impedimentum, si quod forsitan fuerit, ratione cuius aliquis ex praelatis noviter electis non possit nec debeat confirmari in suo officio. Quod si aliquod impedimentum inventum fuerit, ad definitorium generale Ordinis spectat iudicium de illo; nullo autem invento, capitulum totum confirmet electionem ministri generalis Ordinis iuxta Breve felicitis recordationis Urbani Papae VIII. Deinde omnes vocales ad illius electionem confirmet electionem commissarii generalis familiae: et postea duo definitoria simul cum praeside confirmet electiones definitorum generalium Ordinis: ac demum, ordine servato electionum, quaelibet familia cum praeside confirmet electiones quas canonice fecit.

xxx. His expeditis, socius provinciae modernioris cuiusvis familiae surgat, et coram capitulo legat catalogum religiosorum qui in illo triennio in tota sua familia decesserunt, quem illi tradere tenentur eiusdem familiae provinciales. Deinde surgat secretarius capituli, et coram toto etiam capitulo legat electiones omnes, statuta, decreta et cetera omnia acta et disposita ab utraque familia in ipso capitulo. Quae cuncta debent esse scripta in libro capituli generalis, cum annotatione in qualibet praelatorum electione numeri suffragiorum concurrentium ad illam; et his lectis subscribant in eodem libro omnes vocales, qui usque ad hanc diem et sessionem debent esse aequales inter se, et omnes a solo praeside licentiam, socium, benedictionem, signumque recipere, quamvis, quoad precedentiam inter se et actuum praesidentiam, servandus sit ordo supradictus. Quo facto dissolvitur capitulum.

xxxi. Semper capituli generalis tres erunt publicae conciones missaeque solennes, duae ex festivitatibus Ordinis ad arbitrium praesidis, qui tempore apto monere debet provinciales suae familiae ut praedicatores eligant, quos voluerint, pro determinata ab ipso praeside concione faciendâ in capitulo illo. Monemus tamen provinciales, ut, si

concionatores vel concionator aliquis satirice ad murmur populi excitandum vel complacendum praedicaverint, illico et perpetuo praedicandi et concionandi licentias auferant vel licentiam, itaut, nisi de consensu capituli generalis futuri, minime, qui defecerit, possit intra nec extra domos nostras Spiritus Sancti ascendere cathedram. Iam perfecto dissolutoque capitulo, novum definitorium generale Ordinis visitet superiorem generalem et definitores generales Ordinis, qui iam functi suo munere fuerint. Item novus minister generalis et idem¹ novum definitorium generale visitet superiorem generalem et definitores generales familiae qui in illo capitulo spirarunt. Huiusmodi autem visitatio fiat iuxta dicenda cap. xli, § 1, num. iv. Et receptis depositionibus capitularium contra illos, visitationeque conclusâ (nisi forte insinuentur culpa quae maiorem inquisitionem atque examen requirant, nam tunc fiet quod citato capitulo et paragrapho disponitur), missa sollemnis de Requiem pro defunctis religiosis et benefactoribus Ordinis, et concio habeatur (quae erit tertia), faciendâ ab aliquo illius provinciae, in qua capitulum celebratur, iuxta provincialis electionem. Qua functione peractâ, capitulares se mutuo charitate fraternâ amplexentur, et in suos conventus proficiscantur.

i. Nec pater minister generalis, nec alius superior nostri Ordinis habeat ius nominandi vel proponendi aliquam personam determinatam ut eligatur. Poterit tamen quandoque definitorium, si illi expedire visum fuerit, aliquas personas proponere ex eligibilibus, relinquendo tamen electores liberos ut suffragia sua illis vel aliis praestent ex eisdem.

ii. Postquam omnes sua suffragia dederunt in qualibet electione, scrutatores illa ante omnia numerent, attendendo an correspondant et aequalia sint numero vocalium. Quod si ita est, primus scrutator illa reponat in urnâ, et postea singillatim extrahat et legat, et legenda praebeat duobus aliis scrutatoribus, et secretarius scrutinii illa singillatim scribat et numeret. Si vero, quando schedulae numerantur, non accedunt ad nu-

¹ Forsan item pro idem legendum (R. r.).

§ 6.
De modo servando in electionibus faciendâ.

merum vocalium, vel illum excedunt, comburantur statim, sine eo quod legantur, et iterum de novo suffragia ferantur. Ceterum si aliqua schedula vacua seu alba inventa fuerit, vel cum suffragio cum conditione, vel alternative, vel praestito personae incapaci secundum ius, vel subiecto antea scrutinium eligibilitatis non eligibili, tunc casus scrutatores, suppresso nomine habentis suffragium, vitium, quod notaverint, declarent, et talis schedula pro nulla et pro non suffragio reputanda est; ideoque separatur, et regulatio ac numeratio aliorum suffragiorum fiat, et illis solum attendatur¹ ad videndum, an sit electio vel non. Et praecipimus in virtute sanctae obedientiae et sub praecepto formali scrutatoribus, quod, si tempore electionis aliquod reperiatur suffragium pro subiecto qui ex eligibilibus non fuerit, vitium declaret electoribus ne procedant ulterius.

III. Si in primo vel secundo scrutinio non fuerit electio, scrutatores consulant definitorium generale Ordinis, et istud (si illi expediens visum fuerit) iubeat quod suffragia declarentur, et, quae quisque habeat, manifestentur, ut ita vocales facilius ad electionem conformentur. Si autem facto postea tertio scrutinio, adhuc non sit electio canonica, omissis scrutiniis, ille intelligatur electus vi huius constitutionis, pro quo fuerit maior numerus suffragiorum, quam pro alio aut aliis; ² tunc antiquior in professione reputabitur canonice electus.

IV. Scrutinio facto, pronunciator ad id a capitulo electus, iuxta dicta paragrapho antecedenti, num. xv, faciat et pronunciet electionem pro illo qui habet omnia suffragia vel plusquam medietatem, vel, in casu discordiae, pro eo qui electus deputari debet iuxta immediate dicta, declarando numerum determinatum sequenti formâ, quamvis ipse suffragium electo non dederit.

Ego frater N. de N. nomine meo et omnium electorum praesentium per decem suffragia, v. g., vel (si casus fuerit) in casu discordiae et aequalitatis, eligo in maiorem ac

¹ Edit. Main. legit *attenduntur* (R. T.).

² Videtur deesse *si par numerus* (R. T.).

generalem ministrum nostrae sacrae religionis, vel in definitorem generalem, vel in ministrum provincialem provinciae N., vel in ministrum conventus, vel collegii, N. P. fratrem N. de N. In nomine Patris, Filii et Spiritus Sancti. Amen.

v. Forma ista faciendi seu pronuntiandi quamlibet electionem semper observetur, tam in capitulo, quam in definitorio, vel aliâ quavis congregatione. Schedulae autem esse poterunt scriptae propriâ suffragantis manu vel alienâ. Quae igne comburantur in ipso capitulo, vel definitorio, vel congregatione, antequam vocales surgant.

VI. Omnes controversiae et difficultates ortae in vel super electionibus, etiam patris ministri generalis, in capitulo, vel aliâ quacumque congregatione, determinentur per definitorium generale, cuius resolutioni nemo contradicat, sub poenâ ad arbitrium ipsius definitorii infligendâ.

I. Ut maturiori consilio determinetur quod in capitulo generali v. g. propositum fuerit, liceat ipsi capitulo (si illi expedire videbitur) decisionem differre usque in sequentem diem.

§ 7.
De modo aliquid proponendi et decernendi in capitulo generali.

II. Quotiescumque iudicio trium capitularium conveniens sit proponi vel determinari rem aliquam in capitulo, praeses teneatur illam proponere ut decidatur, dum tamen non sit novam condere constitutionem; ad hoc enim proponendum et conferendum maior capituli generalis Ordinis pars debet petere et instare: praeses autem huiusmodi capituli poterit in eo toto proponere quidquid ipsi expedire videatur, et unica familia, consentientibus antea omnibus suffragiis illius, proponere potuerit toti capitulo ut fiat constitutio pro suâ tantum determinatâ familiâ.

III. Praecipimus quod nullo praetextu a Summo Pontifice postuletur innovatio seu immutatio in re aliquâ sanctae nostrae regulae, nisi hoc fiat per capitulum generale Ordinis, concurrentibus omnibus votis, et nemine discrepante; et contraveniens huic constitutioni, ipso facto privatus sit officio suo, et inhabilis perpetuo ad quaecumque alia. Similiter non postuletur a Sede Apostolica, nisi per idem capitulum generale,

et consentientibus tribus ex quatuor partibus suffragiorum; innovatio, alteratio seu abrogatio, quoad totam vel quoad partem alienius ex constitutionibus confirmatis ab ipsa Sede Apostolica.

iv. Ut aliqua constitutio de novo condetur, eius convenientia in duobus vel tribus capitulis generalibus Ordinis sedulo ac diligenter expendi et agitari debet hoc ordine. Postquam in primo capitulo actum est de re aliqua, si a maiori parte suffragiorum approbata fuerit, statim vim habeat ordinationis, et executioni mandari incipiat usque ad sequens capitulum, in quo mature examinata, si consentientibus omnibus praeter unum fuerit approbata, habeat deinceps vim constitutionis. Si vero a duobus tantum partibus suffragiorum approbata fuerit, perseveret eius executio, ut ordinatio, usque ad tertium capitulum generale. Et si in hoc tertio, expensis convenientibus vel inconvenientibus expertis in eius executione, si adhuc approbetur a tribus ex quatuor partibus suffragiorum, habeat deinceps vim constitutionis; alias non concurrentibus dictis tribus suffragiorum partibus, eo ipso revocata et penitus extincta maneat praefata ordinatio, nec imposterum de ea fiat in capitulo mentio, nisi, mutatis circumstantiis, illi de ea agere videatur, incipiendo examen tamquam de re, de qua nunquam actum fuerat in capitulo. Declaramus autem quod, quando tres vel quatuor partes suffragiorum aequales esse non possunt, non attendatur nec ratio habeatur de votis superabundantibus ad tres vel quatuor partes aequales.

v. Ad hoc autem ut aliqua constitutio, ex non confirmatis in specie a Sede Apostolica, quovis modo alteretur, innovetur vel abrogetur, et ad hoc ut fiat constitutio contraria alicui ex eis, eodem modo in capitulis generalibus examinanda est eius convenientia vel inconvenientia; ita tamen ut si in aliquo ex tribus capitulis omnium omnino concurrant suffragia, aboleatur antiqua constitutio, et executioni mandetur ordinatio nova. Ceterum quamvis in primo

¹ Repetitur si redundat (n. r.).

capitulo consentiat maior pars suffragiorum, non statim executioni mandetur, nec suspendatur per illud sexennium constitutio antiqua. Quod si in sequenti capitulo consentiant duae partes ex tribus suffragiorum, tunc suspendatur per triennium antiqua constitutio, et executioni mandetur nova ordinatio, alioquin ista prorsus extincta maneat. Quod si in tertio capitulo, re diligenter perpensa, consentiant tres partes ex quatuor suffragiorum, aboleatur antiqua constitutio, quoad id in quo per novam alteratur, innovatur, mutatur, seu in contrarium disponitur, nec unquam agatur de ea, nisi, ob rerum vicissitudinem, tamquam de re nova, de qua nunquam fuerat actum. Si vero in hoc capitulo non consentiant dictae tres partes suffragiorum, praefata ordinatio eo ipso nulla sit, et omnino maneat extincta. Poterit vero capitulum generale Ordinis dispensare in constitutionibus, dummodo non sint ex confirmatis a Sede Apostolica, ita tamen quod, si non pertineant ad universalem Ordinis regimen, sufficiat maior pars vocalium; si autem pertineant ad praefatum regimen, fieri debet consentientibus duabus ex tribus capituli partibus. Omnino tamen dispensatio fiat ad tempus, scilicet usque in sequens capitulum, in quo, nisi confirmetur, pro nulla habeatur. Quod etiam intelligatur de dispensationibus, quae, iuxta dicenda, ab aliis congregationibus fieri possunt, demptis quae a solo definitorio fuerint, quae protrahi poterunt usque ad capitulum, cuius definitorium fuerit caput.

vi. Ad facienda quaecumque statuta (nullatenus tamen nostris constitutionibus contradicentia), quae vim habeant decretorum capituli generalis Ordinis, sufficiat maior pars suffragiorum, et ex tunc executioni mandentur. Si autem in capitulo immediate sequenti expresse non confirmetur, eo ipso extincta maneant. Si vero approbentur nendum a maiori sed etiam a duabus partibus suffragiorum, non ideo censeantur extinctae, sed perseverent ut ordinationes iuxta dicta n. iv.

vii. Omnia, quae in capitulo decidentur¹,

¹ Edit. Main. legit *decidentur* (n. r.).

per secreta suffragia determinantur calculis albis et nigris.

§ 8.
De capitulo
generali inter-
medio.

I. Cum, favente Deo, plures sint extra Hispaniam institutae provinciae, et ad felicius faciliusque Ordinis regimen sub unitate unius capitis bipartitio facta fuerit et instituta, ut in omnibus utraque familia dignoscatur aequalis et ad praescriptum regulae de triennio in triennium celebretur capitulum generale, quod quidem iuxta illius tenorem semper celebratum fuit, itaut solum de sexennio in sexennium¹, et post triennium huius capituli electivi aliud capitulum generale, quod ab initio vocatur intermedium: ita etiam servetur imposterum, hoc solo discrimine, quod capitulum electivum, de sexennio in sexennium celebrandum, capitulum generale Ordinis vocetur, et capitulum intermedium solum celebretur in ea familia, ex qua in capitulo generalis Ordinis commissarius generalis electus fuerat; sicque verificabitur quod semper de triennio in triennium aliquod capitulum generale celebretur in Ordine.

II. Capitulum ministri generalis electivum semper celebrari debet intra familiam ex qua minister generalis spirat, cui familiae correspondet celebratio futuri capituli generalis intermedii, ut sic supremum caput religionis nunquam munus suum finiat extra familiam suam.

III. Capitulum generale intermedium celebrari debet iuxta regulam sabbato ante quartam dominicam post Pascha, et post triennium a die celebrationis capituli generalis Ordinis intra propriam familiam extra curias principum in domo designanda a praeside capituli, qui semper erit commissarius generalis familiae, nisi intra illam et extra propriam familiam adsit minister generalis Ordinis, et voluerit praesidere in dicto capitulo intermedio.

IV. Si stante² tempore capituli praeses infirmetur, potest differre capitulum per unum mensem tantum, quo elapso, si adhuc fuerit impeditus, vel si congregato iam capi-

¹ Videtur deesse *celebretur capitulum electivum* (R. T.).

² Potius lege *instante* (R. T.).

tulo aegrotaverit, praesideat definitior generalis familiae actu prior inter alios.

V. Ad huiusmodi capituli celebrationem per suas litteras convocatorias convocare debet, et invitare per invitatorias superior generalis familiae omnes qui concurrere debent et possunt, eo modo quo dictum est de capitulo generali Ordinis, in aliquo anno¹ sit futurus praeses capituli intermedii.

VI. In capitulo intermedio suffragium habere debent minister generalis, si adsit superior generalis familiae, definitores generales illius, ministri provinciales, vel vicarii provinciales eiusdem, ministrique actuales domorum vocalium, quae in capitulo generali Ordinis designatae fuerint, ut earum ministri, finito sexennio, socii sint ad capitulum generale Ordinis, quippe ministri huiusmodi domorum ad capitulum intermedium debent concurrere, et eorum successores in eisdem domibus ad capitulum generale Ordinis, quod etiam intelligitur de sociis in defectum. Praeterea suffragium habebit in hoc capitulo intermedio, intra Hispaniam, procurator generalis Hispaniae, et extra Hispaniam, procurator generalis Ordinis in Romana Curia; deinde secretarius generalis superioris generalis familiae; ac demum qui ex eadem familia assumpti fuerant aliquando superiores generales Ordinis vel familiae; ita ut hi pro libito, ceteri autem sub poena perpetuae privationis, concurrere teneantur, sicut dictum est circa capitulum generale Ordinis.

VII. In capitulo intermedio circa praeperta, scrutinia, selectiones eligibilium, ac cetera praeambula, ea omnia observentur quae dictae manent circa capitulum generale Ordinis.

VIII. Tempore capituli sedeant ordine quo nominati sunt, et si casu² occurrerit, in quo recens electus praesens fuerit, sedeat immediate post commissarium generalem qui spirat, et statim suffragium habeat, quamvis de corpore capituli non sit.

IX. Facta electione superioris generalis familiae, quae semper fieri debet praedi-

¹ Intelligat vel corrigat quisque sciens (R. T.).

² Potius lege *casus* (R. T.).

cto sabbato ante prandium, post eam illico omnes religiosi illius domus atque vocales pergant processionaliter cum electo in ecclesiam cantantes hymnum *Te Deum laudamus*, prout in capitulo generali Ordinis Si autem definitorium generale Ordinis, propter bella aut alias urgentissimas causas illi a toto definitorio generali familiae praepositas¹, nemine discrepante, huiusmodi capitulum intermedium differendum iudicet, tunc iuxta ipsius definitoris² generalis Ordinis arbitrium celebrabitur die assignanda ab eodem, vel non celebrabitur absolute, et tunc casus non celebrationis, ipsum definitorium generale Ordinis per litteras patentes a ministro generali efformatas nomine sui definitorii prorogare et confirmare poterit canonice in futurum triennium et commissarium et definidores generales familiae.

x. Ipso autem die electionis commissarii in capitulo intermedio congregentur ipsius vocales, et sex definidores generales familiae ex eadem eligant; et altera die congregentur omnes in aula capitulari, et si familia fuerit intra-Hispana, primum eligat ministrum nostri conventus romani S. Caroli, at licet intra-Hispana non sit, eligat ministrum nostri collegii romani de Propaganda Fide.

xi. Capitulum generale intermedium nullas alias electiones facere poterit: ideo, his finitis, agere debet de redemptione et observantia, facereque ordinationes et statuta pro sua familia, quae minime opponantur factis a capitulo generali vel definitorio generali Ordinis, atque sibi eligere chronistam pro tota sua familia.

xii. Omnibus peractis, commissarius noviter electus cum toto capitulo repromittat obedientiam, eamque promittat specialem tempore sui muneris superiori generali Ordinis; et postea totum capitulum confirmet patris commissarii electionem: deinde confirmet etiam singulas electiones, quas fecit canonice; et fiant leganturque quae facienda et legenda sunt in capitulo generali iuxta ibidem dicta.

¹ Potius lege *propositas* (R. T.).

² Videtur legendum *definitoris* (R. T.).

xiii. Dissoluto capitulo, capitulares se mutuo fraternam charitate amplectentur, et in suos conventus proficiscantur.

xiv. Illico et quamprimum secretarius qui fuerit definitorii familiae, certiore faciat ministrum generalem Ordinis de omnibus electionibus et de repromissione obedientiae moderni commissarii generalis, qui omnibus noviter electis tradere debet litteras authenticas suae electionis.

1. In casu, quo eligendus sit vicarius generalis Ordinis propter defectum ministri generalis, ut diximus, prior definitor generalis Ordinis, tunc superstes, cui competit in eo casu gubernare totam familiam ut superior generalis Ordinis, usque ad confirmationem novi vicarii generalis, per suas litteras vocatorias congreget omnes vocales suae familiae, qui concurrere tenerentur et possent¹ si in ea familia celebrandum intermedium, designetque domum aptam etiam extra principum curias pro celebratione congregationis, ut in ea congregentur tempore apto, ad ipsius arbitrium, itaut² quamprimum fiat vicarii generalis electio.

ii. Si definitoribus generalibus Ordinis, illo et alio exceptis, constiterit quod per omissionem aut industriam praedicti primi definitoris retardatur congregatio et vicarii generalis electio, liberum sit illis ad Sedem Apostolicam authentice accurrere, ut a Pontifice destinetur vicarius generalis Ordinis.

iii. Praedictus definitor primus erit praeses huius congregationis, in qua imponat praeceptum ad impedimenta detegenda, cunctaque alia exercentur quae exercere debet praeses cuiuscumque capituli.

iv. In praedicta congregatione fiant scrutinia eligibilitatis usque ad numerum quinque eligibilium, prout in capitulis generalibus.

v. Post missam solemnem de Spiritu Sancto, et cetera praeambula quae sunt in capitulis, fiat electio vicarii generalis ante prandium; qua facta, immediate post electionem pergant processionaliter in ecclesia² cantantes *Te Deum*, quamvis noviter

¹ Edit. Main. legit. *posset* (R. T.).

² Aptius lege *ecclesiam* (R. T.).

electus non sit in eadem domo; in qua si fuerit, ab ipso benedictionem accipiant.

vi. Vespere iterum congregentur; et si definitor aliquis electus fuerit in vicarium generalem, congregatio eligat novum definitorem generalem Ordinis; et si occurrat aliquod negotiumurgens pro tota religione aut aliqua familia, determinetur ab omnibus ut moris est.

vii. Postea confirmet electionem vicarii generalis, et deinde, si eam fecit, confirmet etiam electionem definitoris noviter electi.

viii. Postea congregatio dissolvatur, mutuoque amplexentur vocales, quin aliud fiat, neque concionem aliquam habere debeant in hac congregatione. Qua finita, duo primi definitores generales Ordinis et secretarius ministri generalis praeteriti statim mittant attestationem subscriptam ab ipsis tribus, et sigillo definitorii generalis Ordinis munitam, in qua commissario generali alterius familiae et definitorio generali illius fidem faciant electionis factae, ut eam intra eorum familiam nullus simulare audeat aut praesumat. Et postquam superior generalis alterius familiae et definitorium generale illius huiusmodi notitiam habuerit, illico per suas litteras authenticas moderno vicario generali obedientiam promittant; idque facere praecipimus illis sub praecepto formali, in virtute sanctae obedientiae, sub poena suspensionis ab officio ipsi superiori generali familiae et cuicumque definitori illius obedientiam non repromittenti, a definitore¹ generali Ordinis declaranda et applicanda. Si autem aliquis provincialis vel vocalis alter electus fuisset in vicarium generalem, ad definitorium provinciae pertinebit electio sive provincialis sive alterius officii quod electus habuerat.

ix. Si vero non mortis causa, sed ob renunciationem vel privationem a suo officio, munus ministri generalis vacaverit, eodem modo et ab eisdem vocalibus facienda et celebranda est congregatio; eodemque modo eligendus vicarius generalis Ordinis. Quippe congregatio, quae ministerium generalem de-

posuit vel illius admisit renunciationem, suo iam munere functa debet intelligi, quin eadem congregatio ius eligendi vicarium generalem praetendere possit.

x. Si autem vel unius familiae vel totius Ordinis opus fuerit pro urgentissimo casu congregationem generalem iudicio definitorii generalis Ordinis convocare, id fieri debet concurrentibus omnibus ipsius definitorii generalis praeter unum; et celebranda est in domo ad arbitrium ipsius definitorii eligenda, tempore ab ipso destinato, praeside et vocalibus seligendis ab ipso, nisi in his constitutionibus iam designati fuerint pro congregatione in ipsis statutae, ita tamen ut ad congregationem specialem semper concurrat utrumque definitorium, si fuerit Ordinis, semperque definitorium familiae, si unus fuerit familiae tantum:

i. Quoties dicitur in his constitutionibus capitulum vel definitorium generale, et non additur Ordinis, intelligitur de capitulo generali et definitorio generali Ordinis vel familiae. Itaque ad capitulum generale spectat facere omnes electiones praelatorum, et admittere omnes renunciationes eorum, quando fiunt in ipso; condere ordinationes et constitutiones, ut in paragraphis de capitulis dicitur. Sed ad capitulum generale Ordinis spectat impetrare a Sede Apostolica, concurrentibus omnibus suffragiis, immutationem nostrae regulae in re aliqua. Item ad ipsum pertinet dividere provincias, consulta primo Sede Apostolica, dummodo pro nova saltem sint octo conventus. Atque etiam, eadem consulta, relinquere et desertas facere fundationes conventuum iam admissas et possessas.

§ 10.
De pertinen-
tiis privative
ad capitulum
generale.

ii. Et demum dispensare in constitutionibus non confirmatis a Sede Apostolica, ut dictum est: et ex ipsis non confirmatis abrogare, innovare et alterare quamlibet: ceteraque facere et stabilire, quae secundum regulam et constitutiones ipsi reservantur.

iii. Illa autem, quae in capitulo generali Ordinis ab unica familia fieri debent iuxta regimen eiusdem familiae, ab ea proponenda sunt toti capitulo generali Ordinis, et nisi

¹ Edit. Main. legit *definitori* (n. r.).

ab isto determinantur, adhuc pro una familia non poterunt executioni mandari.

§ II.
De definito-
rio generali.

I. In quolibet anno duo celebrentur definitoria, unum generale in qualibet familia die xiii septembris, alterum provinciale pro qualibet provincia die iii maii. Sed quia anno, in quo definitorium generale Ordinis congregari debeat, secundum constitutiones ad electiones faciendas a triennio post capitulum generale Ordinis non congregabitur mense septembris, definitoria provinciarum illius familiae poterunt prorogari ad mensem septembris, ne illis intra annum deficiat definitorii tribunal proprium, ad quod concurrere debent pro expeditione negotiorum suorum.

II. Huiusmodi definitoria generalia semper congregabuntur in conventu vel collegio iam ab ipso definitorio antecedente deputato. Nec ad istud sit necessaria convocatio, nec admittatur aliqua excusatio, nisi aliquis infirmitate aut alia inevitabili sit impeditus. Nec liceat superiori generali aliquem definitorem occupare vel impedire, ita ut dictis temporibus assistere non valeat definitorio.

III. Si superior generalis absens fuerit, infirmus, vel taliter impeditus, ut dictis definitoriis adesse nequeat, congregentur tempore dicto definitores, et, praesidente primo ex eis, celebrent definitoria. Nunquam tamen absente superiore generali aliqua fiat electio, vel admittatur renunciatio, vel nova conventus fundatio.

IV. Congregari etiam poterit definitorium semper ac superiori generali visum fuerit, qui et illud congregare quoque tenebitur quando maior pars definitorum id postula-verit, vel vacaverit aliquod officium per quatuor menses ante celebrationem futuri definitorii.

V. Quotiescumque definitorium celebratur praesente superiore generali, si vacans fuerit aliquod officium definitoris, ante omnia eligatur definitor; idemque fiat casu quo in ipsa actuali definitorii celebratione tale officium per mortem, renunciationem, aut aliam iustam causam vacaverit; et si electus absens est, prosequatur definitorium; nulla

tamen fiat electio, donec novus definitor perveniat, sine illius consensu, si fuerit intra familiam, secus, si extra illam fuerit.

VI. Definitorii tempore congregentur definitores semel saltem in die per spatium unius horae. Durabitque definitorii celebratio diebus necessariis pro expeditione rerum et negotiorum ad arbitrium ipsius definitorii.

VII. Semper ac celebratur definitorium generale, teneatur superior generalis proponere officia tunc vacantia, et ad definitorium generale pertinentia, ut eorum electiones fiant, et similiter negocia occurrentia, quae determinationem definitorii generalis expectant, ut per eius secreta et decisiva suffragia iudicentur.

VIII. Quilibet ex definitoribus poterit proponere quamlibet rem ex attinentibus ad suum definitorium, et, si maiori ipsius parti expedire videatur, per secreta suffragia decidetur.

IX. Res graves, quales sunt electiones, renunciationum admissiones, et similia, proponantur pridie ante decisionem.

X. Quando aliquid determinatum est in definitorio, non agatur iterum de illo in eodem definitorio, absente aliquo ex eis qui primo decreto steterunt. Imo etiam omnibus praesentibus non contravertatur iterum, nisi concurrentibus tot suffragiis quot necessaria sunt ad dispensandum.

XI. Epistolae ad definitorium missae non aperiuntur nisi coram ipso, et ibi publice legantur, nisi aliter eidem definitorio visum fuerit.

XII. Definitorium generale Ordinis poterit mittere aliquem religiosum ad curias pontificiam et regiam, et quò illi expediens visum fuerit pro aliquo gravi negotio ad bonum commune religionis pertinente, dum tamen in hoc conveniant omnes qui fuerint in definitorio, uno dempto.

XIII. Poterit etiam aliquem ex definitoribus in quolibet gravi negotio occurrente occupare intra vel extra familiam, prout illi conveniens visum fuerit.

XIV. Non poterit definitorium generale vices suas concedere nec patri ministro ge-

notali seorsim, nisi quando adiret aliquam provinciam vel conventum videndum, vel in simili casu raro: et semper cum limitatione ad ea tantum, quae probabiliter (iudicio ipsius definitorii) occurrere possunt, designando casus speciales, qui et in libro definitorii scripti manebunt.

xv. Deputet definitorium in suum secretarium unum ex patribus definitoribus, qui statim ac electus fuerit iuramentum emittat servandi secretum et fidelitatem formâ praescriptâ pro secretario capituli generalis, cap. xxxix, § 5, n. xi.

xvi. Quod actum decisumque fuit a definitorio, in eius libro scribatur, et in electionibus canonicis in ipso factis annotetur numerus suffragiorum, et antequam finiatur definitorium, legatur coram ipso, et postea subscribatur a superiore generali, primo defensore et secretario. Ea autem, quae sive in capitulo generali Ordinis sive in aliâ congregatione acta, decisa sive determinata fuerint ab utroque definitorio generali, insimul in eodem libro definitorii generalis Ordinis scribantur subscribanturque a praeside, ab immediato defensore Ordinis, a primo defensore alterius familiae, et a secretario definitorii generalis Ordinis.

xvii. Pater minister generalis determinationes et decreta definitorii generalis Ordinis executioni breviter mandari curet. Quod si remisse in hoc se gesserit, et reverenter monitus non se emendaverit, defensores primus et secundus exequi faciant ea, subscribendo simul cum secretario, et signando definitorii generalis Ordinis sigillo. Superior autem atque et definitorium alterius familiae similiter curent executioni mandari quidquid a definitorio generali Ordinis fuerit decisum aut determinatum: et si aliter fieri contigerit, definitorium generale Ordinis committere poterit suas vices alicui religioso probo, atque intra aliam familiam bene viso, qui aliquando functus fuerit officio superioris generalis vel defensoris generalis, vel ministri provincialis, ut, nomine definitorii generalis Ordinis, superiorem generalem familiae et quemlibet defensorem ceterosque religiosos per prae-

cepta cogat ad obedientiam, eosque, si opus fuerit, suspensos declaret, et de inobedientia processum faciat et informationem, ut, illis inspectis, definitorium generale Ordinis vel eorum renunciationes admittat vel pro qualitate culpa eosdem afficiat poenis.

xviii. Si (quod Deus avertat) superior generalis Ordinis se gereret cum magno saecularium scandalo, vel religionem regeret notabili relaxatione, et observantiam in rebus gravibus negligeret, tunc primus defensor generalis Ordinis convocet omnes alios defensores generales Ordinis, ut in domo omnibus commodiori die ab ipso assignando congregentur. Qui omnes simul iuncti, et non aliter, ac re mature considerata, convocent quatuor vel quinque ministros provinciales per capitulum generale Ordinis deputatos, et simul cum illis humiliter et reverenter vel oretenus bis moneant superiorem generalem Ordinis. Qui si adhuc ab excessibus et culpis non cessaverit, omnes dicti praelati (defensores utique generales Ordinis et ministri provinciales) simul congregati, et maiore illorum parte consentiente, causâ sine figurâ iudicii aut strepitu iudiciali cognitâ, iudicent an mereatur deponi: et ita sententibus et iudicantibus, moneatur ut sui officii faciat renunciationem; quam si non fecerit, deponatur. Et in tali casu, dum causa examinatur, poterunt omnes simul in toto Ordine, cui vel quibus necessarium fuerit, imponere praecepta et censuras, quae in alia quaecumque mandata subscripta a primo et secundo defensore generali Ordinis, et referendata a secretario, fidem faciant et obligent. Et etiam in eo casu poterunt dicti praelati inhibere etiam patri ministro generali praeceptis vel censuris aliisve mediis opportunis, ne, dum causa ipsius agitur et concluditur, officium suum exerceat, nec in alio sit conventu praeter sibi ab eis designato¹.

xix. Huiusmodi congregatio obligari non poterit ad reddendam causam admissionis renunciationis, nisi sacrae Congregationi petenti. Si autem sacra Congregatio id pe-

¹ Videtur legendum uti pro in (N. T.).

² Aptius lege designatum (N. T.).

uerit ad instantiam ipsius superioris generalis, causa et processus instituitur authentice et summarie tantum, ut ipsi Congregationi constet merita causae, et si velit iubeat ipsam ad summarium reduci. Postquam vero minister generalis a suo officio fuerit amotus, primus definitor generalis integram suam familiam convocet, ut quamprimum in domo, in qua fuerat celebratum capitulum generale Ordinis, vicarius generalis electus sit, ut habetur § ix huius capituli.

xx. Si autem superior generalis alterius familiae ob similes causas corrigi meruerit, id fiat a suo definitorio etiam humiliter ac reverenter, et moneatur bis ut emendetur. Si vero non se emendaverit, definitorium ipsum culparum capita et attestationem illarum mittat ad definitorium generale Ordinis, ut instruat; et, si illi visum fuerit ex meritis causae, vel illi, illius honori consulendo, iubeat officio cedere, vel, si hoc facere noluerit, ipsum deponat; in quo casu minister generalis eligere poterit vice-commissarium, ut dictum est.

xxi. Omnes processus, ut causae criminales, custodiantur in archivio generali Ordinis, et patres provinciales et visitatores remittant dictas causas iam absolutas, ut in archivio reponantur: imo et etiam remittant inceptas et nondum finitas, si ab ipsis absolvendae non sunt; idemque faciant patres ministri de causis ab ipsis inchoatis et formatis, vel illas remittant ad suum provincialem ut de illis iudicet. Quo facto, ipse eas mittat ad praedictum generale archivium, in quo conserventur sub clavi, quae apud superiorem generalem vel eius secretarium sit.

xxii. Et ne decursu temporis libri Ordinis, Bullae, Brevia, privilegia, ceteraeque scripturae deperdantur, decernimus quod in nostro conventu Matritensi sit archivium generale, in cuius parte separatâ omnia praedicta reponantur et custodiantur sub duobus clavibus, quarum altera sit apud patrem superiorem generalem, altera vero apud unum ex definitoribus designandum a definitorio. Et similiter ad eundem effectum in conventu nostro S. Caroli Curiae

Romanae sit aliud archivium, cuius claves habeant pater minister et procurator generalis illius Curiae assumptus ex familia intra-Hispanâ, sive sit Ordinis, sive familiae.

xxiii. Deficiente autem superiore generali, et omnibus definitoribus, claves archivii Matritensis erunt apud ministrum conventus et procuratorem generalem Curiae Regiae. Clavis archivii romani, quae erit apud ministrum conventus S. Caroli, si ipse minister fuerit procurator generalis, eam habere debet ex commissione superioris generalis consiliarius antiquior. At vero si procurator generalis Ordinis aut familiae ibi commoretur, et residentiam habeat intra Urbem, ut tamen egeat archivio romano ad sua respective negocia pertractanda, non solum archivium ingredi, sed et clavariis consentientibus extrahere poterit et secum deferre instrumenta aliqua, cum obligatione a se subscriptâ eadem restituendi intra breve tempus; quam obligationem ipsi clavarii servare debent; et praecipimus in virtute sanctae obedientiae et sub praeepto formali tam clavariis consentientibus quam praedictis procuratoribus generalibus extrahentibus instrumenta, ut ea restitui curent, sub poenâ privationis¹ ad ulteriora Ordinis officia non restituenti et clavario omittenti, pro casu non restitutionis, non monenti ministrum generalem ut ea restitui faciat.

1. Privative pertinet ad definitorium generale Ordinis novas conventuum fundationes admittere, declarare dubia erga nostras constitutiones occurrentia, dispensare in eisdem constitutionibus ad universale Ordinis regimen non spectantibus, quod tamen raro fiat et consentientibus omnibus suffragiis praeter unum, dummodo non sint confirmatae a Sede Apostolicâ; atque etiam pertinet ad ipsum dispensare in statutis seu decretis capituli generalis Ordinis. Ad ipsum quoque pertinet admittere renunciationem patris ministri generalis, si actualiter tunc non celebretur capitulum generale Ordinis; sed ad huiusmodi admissionem omnia suffragia concurrere volumus. Prae-

1 Videtur deesse et inhabilitatis (R. T.).

§ 12.
De spectantibus ad definitorium generale.

terea ipsius definitorii generalis Ordinis est deputare religiosos qui redemptionem captivorum exercere debent, et cetera omnia quae illi reservantur in constitutionibus.

II. Ad quodvis vero definitorium generale, sive solius familiae, sive simul Ordinis sit, pertinet fundationes iam admissas et iam factas uno situ transferre in alterum, conventus unius provinciae alteri designare et adscribere, consulendo tamen in praefatis provinciales illarum provinciarum, de qua et ad quam mutatio fiat. Etiam pertinet ad ipsum punire culpas gravissimas, facere statuta, quae communiter acta dicuntur, pro reformatione totius familiae, destinare tempus et locum in quo celebrandum est definitorium generale immediate futurum, admittere renunciationes officiorum ad quae eligere extra capitulum habeat ius, dispensare ut a capitulo provinciali, inspecta utilitate domus, pro eodem reeligi possit aliquis minister consentientibus omnibus suffragiis capituli praeter duo.

III. Insuper praebere consensum ut a Summo Pontifice et eius sacris Congregationibus licentiae obtineantur ut aliqui religiosi nostri transitum faciant ad alias religiones, licentiam concedere ut libri typis mandentur, sine qua, vel sui definitorii provincialis licentia, nemo id audeat facere, sub poena privationis officii vocisque activae et passivae per triennium.

IV. Item facultatem concedere conventibus ut haereditates seu legitimas renuncient, excepta tamen parte ad redemptionem captivorum spectante, et cum conditione, quod, si persona, in cuius favorem facta fuerit renunciatio, absque haerede necessario decesserit, ad religionem legitime redeat. Istae autem renunciationes in libro conventus renunciantis scriptae in memoriam maneant. Deinde potest etiam definitorium generale, et ad ipsum spectat, licentiam concedere ut conventus cum partibus componentur, et ut ad censum sive ad damnum pecunias recipiant, obtenta tamen prius supra praemissis debita Sedis Apostolicae licentia. Et demum ad definitorium familiae intra-Hispanae pertinet eligere ad tri-

ennium procuratorem generalem suae curiae regiae.

V. In electionibus faciendis extra capitulum a definitorio generali quando concurrunt tantum sex electores, si post tres sessiones, in quarum singulis tria scrutinia habita sint, electio canonica non sequatur, servetur id quod dictum est § VI, num. III, huius capituli.

VI. Praecipimus omnibus religiosis tam praelatis quam subditis, ne recurrant ad definitorium generale pro expeditione rerum ad alios superiores pertinentium, nec ad superiorem generalem pro illis quae pertinent ad inferiores praelatos. Qui autem sine debitis circumstantiis recurrerit, iuxta gravitatem culpae puniatur.

VII. Definitorium generale nihil poterit facere ultra concessum a regula et nostris constitutionibus, nec negotium aliquod vel causam ad ipsum non pertinentem poterit sibi arrogare, nisi in casu raro, et omnibus suffragiis concurrentibus.

VIII. Superiores generales, et etiam definitorium generale, quando illis expediens visum fuerit, mittant aliquam instructionem patribus provincialibus suae familiae, quae et pro bono regimine ac reformatione provinciarum et proximorum ac subditorum profectu deserviat.

REGULAE CAPUT XL.

Electio maioris ac generalis ministri de sexennio in sexennium, etc.

CAPUT XL. — *De qualitate eligendorum in praelatos, ac de eorum et aliorum officiis, iure et potestate.*

I. Pater minister generalis debet esse non mediocriter doctus in theologia, sive sacris canonibus instructus, prudensque et zelans regularis disciplinae et splendoris Ordinis, quippe, tamquam caput illius, alios omnes debet excedere, quantum possibile humanae fragilitati permittitur. Ut autem aliquis sit eligibilis in ministrum generalem Ordinis, debet habere viginti et octo annos a professione; et necessarium est quod aliquando fuerit saltem per integrum sexennium lector sacrae theologiae, vel procurator generalis

§ 1.
De officio patris ministri generalis, et his quae ad ipsum pertinent.

Ordinis, vel secretarius patris ministri generalis, vel quod concionatus fuerit octo quadragesimas laudabiliter, et cum conditionibus expressis cap. xi, § ix, num. i; ac demum quod fuerit provincialis vel definitor generalis Ordinis vel familiae.

ii. Ministro autem generali omnes in toto Ordine submitte et humiliter obediant tamquam totius nostrae religionis universali patri et pastori, in quo residet potestas et iurisdictio totius Ordinis non minor sed superior ac in commissario respectu suae familiae, et in provinciali respectu suae provinciae, et in ministro respectu sui conventus. Habet enim potestatem et iurisdictionem sibi concessam sive iure communi, sive privilegiis nostrae religioni concessis, exceptis illis quae limitantur per nostras constitutiones. Quare, cum illi competat regimen totius Ordinis, vigilare et curare maxime debet perfectam regularis disciplinae observantiam per instructionem a se missam provincialibus ministris, et designando zelatores et probos viros, ut per illos statum Ordinis facilius agnoscere possit.

iii. Hortamur tamen patrem ministrum generalem ne se in officia aliorum superiorum intromittat, nisi negligentia vel culpa illorum id exigit, aut aliquando ratio et prudentia suadeat; semper vero debent omnes illi obedire; quod si excesserit in dictâ intromissione, a definitorio generali Ordinis, cui interest, submitte et reverenter moneatur, proponendo inconvenientia, ipsumque informando. Ceterum, si adhuc instet, sub formâ superius positâ c. xxxix, § 4, n. ii, etiam definitorium generale Ordinis obediat humiliter secundae illius iussioni, quia convenientius est aliquid durum pati quam resistere superiori.

iv. Nunquam aliquid disponat, determinet aut praecipiat contra id quod a superiore alterius familiae vel ab aliquo provinciali dispositum, determinatum aut praecipitum fuit, quin prius id notum faciat ipsis qui disposuerunt. Superior generalis Ordinis ex familiâ extra-Hispanâ assumptus nullam iurisdictionem exercent in conventu nostro romano S. Caroli, nisi eam tantum,

quam in alios Hispaniae conventus exercere poterit, et in eo conventu residere non possit; quod potiori iure intelligendum est de commissario generali extra-Hispano.

v. Ad patrem ministrum generalem pertinet praesidere in totâ religione, in definitorio generali Ordinis aut familiae si praesens fuerit et voluerit, et similiter in quovis capitulo generali, atque etiam in capitulis provincialibus suae familiae, per se aut per alium, ut dicetur postea de praeside capituli provincialis: ceterum, si fuerit extra suam familiam, praesidere poterit personaliter in quacumque congregatione et capitulo illius, sive generali sive provinciali, et proponere tam in istis quam in aliis, quae in eis agenda vel determinanda sunt, et executioni mandare quod in ipsis decretum est, et facere quod observentur disposita in nostris constitutionibus.

vi. Item ad ipsum spectat semel saltem in suo sexennio videre omnia monasteria totius suae familiae, et inquirere ac visitare quemcumque conventum vel collegium eius, prout ipsi visum fuerit.

vii. Ad ipsum quoque pertinet religiosos ab unâ in aliam transferre familiam, consulto tamen superiore generali alterius familiae, et intra propriam de unâ in aliam etiam provinciam, consultis provincialibus utriusque. Omnes enim religiosi nostri ad eam tantum provinciam spectare debent, in qua professi fuerint, vel quos superior generalis Ordinis incorporaverit in eâ, aut fuerant conventuales ante eius erectionem, iuxta dicenda de capitulo provinciali. Etiam ad ministrum generalem pertinet confraternitates SS. Trinitatis erigere, et aliarum illi aggregationem facere, necnon epistolas fraternitatis, cui voluerit, concedere. Pertinet etiam ad eum intra propriam familiam designare lectores tam philosophiae quam theologiae scholasticae, expositivae et moralis, et lectoribus praestare licentiam ad quaecumque itinera facienda; deputare magistros novitiorum, recens professorum et collegarum philosophiae, cum consilio provincialis provinciae.

viii. Praeterea pertinet ad ipsum nomi-

nare praesidem, illi delegando suas vices, quoties ipse exierit a sua familia, et etiam facultatem concedere vice-commissario alterius familiae, quem elegerit in superiorem eius, ut praesidem designet pro familia in casu in quo ipse ad capitulum generale vel ad aliud opportunum negotium exeat ab ea. Ac demum ad eum pertinent omnia quae nostrae constitutiones ministro generali concedunt, et curae ipsius committunt. Poterit quoque designare visitatorem cuiuscumque provinciae, et totius alterius familiae, sed filium semper familiae ad familiam, provinciae ad provinciam visitandam, nisi omnibus consentientibus definitorium generale familiae alium exeat visitatorem extra familiam, vel definitorium provinciale extra provinciam suam.

§ 2.
De commissario generali.

I. Commissarius generalis (tamquam superior alterius familiae, qui iurisdictione ordinaria eam regere et gubernare debet in omnibus, quae in¹ his constitutionibus vel definitorio generali Ordinis aut ministri generalis obedientiae non sint opposita) oportet ut sit vir nihilo absimilis a superiore generali religionis, quoad doctrinam, prudentiam et ceteras dotes; quoad graduationem vero et aetatem, ut in capitulo generali eligibilis sit, debet esse talis ut assumi possit in ministrum generalem Ordinis, si in eo capitulo assumendus esset ex sua familia.

II. Ad commissarium generalem pertinent omnia, sed tantum in sua familia, quae ministro generali non reservantur in his constitutionibus, sive definitorio generali Ordinis sive suo definitorio generali familiae non competunt. Poterit etiam intra suam familiam quidquid provinciales ipsius in suis provinciis, et ministri earum in suis conventibus; ceterum servare debet regulam praescriptam ministro generali, § 13, num. III.

III. Ad ipsum quoque pertinet omnes nominare lectores, modo, dicto cap. xxxviii, § 4, num. I, ipsisque licentiam concedere ut itinera faciant; atque magistros sive

novitiorum, sive recens professorum, sive pro collegiis philosophiae designare et eligere, concedere epistolas confraternitatis benefactoribus intra suam familiam: modo autem non poterit erigere, neque aggregare confraternitates SS. Trinitatis, adhuc intra familiam suam, quia huiusmodi facultas tantum est concessa per Sanctam Sedem ministro generali et procuratori generali Ordinis in Curia Romana; ceterum minister generalis ex nunc erigit sive aggregat, quas commissarius generalis assignet, dummodo non nomine proprio, sed nomine ipsius ministri generalis pro tempore, et expresso semper in ipso instrumento erectionis vel aggregationis conferat illud. Demum ad commissarium pertinet intra suam familiam quidquid in constitutionibus assignatur superiori generali quin¹ addatur ministro vel dicatur Ordinis.

IV. Vice-commissarius, quem eligere debet superior generalis Ordinis in casu cuiuscumque defectus commissarii, debet eligi ex quatuor eligibilibus selectis in capitulo generali qui superfuerunt post electionem commissarii generalis. Nec poterit eligere vice-commissarium, nec sic antea eligibilem, nisi casu, quo nullus eorum quatuor superstes sit, vel electio iam fuerit determinata ad unum. Praeterea nunquam eligat in vice-commissarium, qui alia praelaturam fungatur. Hic enim reputabitur tamquam superstes, ut eligatur in vice-commissarium.

V. Vice-commissarius tamen sic electus et delegatus a ministro generali Ordinis ea omnia poterit in tota familia sua, a die in quo notam fecerit suam commissionem in quocumque conventu, quae illi delegatus² designaverit; poteritque vi delegationis designare praesidem suae familiae, pro casu absentiae suae ab illa; cuius officium duret usque ad possessionem praelati noviter electi, et ad delegantis arbitrium.

I. Patres definitores generales Ordinis sex esse debent iuxta Breve felicitis recordationis Alexandri Papae VII expeditum die

§ 3.
De patribus definitores generalibus.

¹ Pessime ed. M. legit *quam* pro *quin* (R.T.).

² Forsan *delegans* (R.T.).

1 Particulam in delenda (R.T.).

xxx ianuarii anno MDCLVIII. Sex etiam debent esse definitores familiae iuxta Breve sanctissimi domini nostri Clementis XII expeditum die x decembris anno MDCCXXXIII. De his omnibus definitores, sive Ordinis sive familiae, idem dicendum est: quippe differunt tantum in eo, quod primi sunt definitores totius Ordinis electi ad sexennium, et intra et extra familiam suam praecedere debent omnes alios; secundi vero sunt familiae, et eliguntur ad triennium, et praecedere debent omnes alios intra familiam tantum, post tamen definitores generales Ordinis. Itaque singuli duo definitores pro singulis provinciis suae familiae eligantur, et omnes intra suam familiam sint aequales in potestate et praeeminentiis, ac filii sint provinciarum pro quibus eliguntur actualiter. Horum enim prior electus, primus sit definitor intra suam familiam; secundo electus, secundus; et sic de ceteris, servata prioritatem electionis.

ii. Ceterum nullus religiosus eligibilis sit in definitorem generalem, quin expleverit viginti annos post professionem, et quin fuerit prius ad minus per triennium lector theologiae, aut secretarius generalis, aut procurator generalis in Curia Romana, vel concionatus fuerit quatuor quadragesimas, aut magister novitiorum per triennium, et quin postea ad minus per triennium fuerit minister conventualis alicuius conventus vel collegii suae provinciae.

iii. Superior generalis et definitores generales, dum post suam electionem primo in definitorio congregabuntur, faciant ante omnia in ipso definitorio iuramentum servandi perpetuum secretum de rebus in eo agendis. Quod iuramentum tunc obliget, quando maior pars definitorii declaraverit debere servari secretum in tali vel tali casu. Qui autem illud fregerit, ab eodem definitorio severe puniatur.

iv. Definitores generales habitent in conventibus designatis a suo superiore generali, et aptis ut opportune scribere et recipere epistolas possint ad suum munus spectantes; et in omnibus conventibus et collegiis, ubi fuerint, suffragium habeant,

sicut ceteri conventuales, sedeantque in toto Ordine iuxta nostras constitutiones, quamvis aliquod definitorium sive provinciale sive generale familiae actu celebretur in ea domo, in qua aliquis definitor generalis Ordinis inveniatur, quo tempore, iuxta nostras constitutiones, provincialis respectu definitorii generalis, et minister etiam respectu definitorii provincialis, amittit locum.

v. Absente ministro domus, si ibi non fuerit praeses designatus per superiorem generalem vel definitorium generale, semper praesideant in actibus et functionibus communitatis, signumque faciant, ut moris est; nunquam tamen se intromittant in regimen domus, nisi absentibus simul ministro, vicario et definitoribus illius provinciae; tunc enim quoad omnia praesides erunt domus; et omnes religiosi semper et ubique eandem illis observantiam et reverentiam praestent, ac suis ministris, sub poena ad arbitrium definitorii generalis suae familiae illis rigore applicanda.

vi. In qualibet domo, ubi fuerint patres definitores generales cum superiore suo generali, ab ipso licentiam, socium et benedictionem accipiant ad exeundum e domo. Si autem superior generalis ibi non fuerit, per se aut per alium dicant ministro, et cum socio ab ipso designato exeant: socius tamen ipse a ministro benedictionem accipiat.

vii. Epistolas quibuscumque religiosis et saecularibus scribere, et ab illis missas recipere liceat definitoribus absque alicuius (etiam patris ministri generalis) impedimento vel examine. Etiam eis liceat alloqui quascumque personas, observando tamen quod regula et constitutiones disponunt quoad loca et tempora loquendi et tacendi.

i. Capitulum provinciale celebretur, ut moris est, in singulis provinciis de triennio in triennium sabbato (si fieri possit) ante quartam dominicam post Pascha, ita ut in duabus provinciis, vel in tribus, si creverit numerus provinciarum cuiuscumque familiae, celebretur anno praecedenti ad capitulum generale, nisi iusta de causa superior generalis familiae aliquod capitulum anteponat vel postponat; quod tantum per tres

menses facere poterit, et tunc celebrabitur tempore et die designato ab ipso superiore generali, semper extra curias principum, in domo ad arbitrium praedicti superioris, consulto tamen definitorio provinciali, destinanda.

II. In quocumque capitulo provinciali cuiuscumque familiae praeses erit superior generalis Ordinis, si adfuerit intra illam; si vero extra illam fuerit, praeses erit in altera familiae superior generalis illius. At si superior generalis Ordinis fuerit extra propriam familiam, praeses erit ille, quem pro tempore suae absentiae elegerit in praesidem totius familiae. Si autem, ob iustas causas, vel quia duo capitula eodem anno concurrant in provinciis longe inter se distantibus, superior generalis nisi magno labore ad aliquod capitulum concurrere nequeat, tunc et eo casu poterit designare praesidem pro capitulo provinciali, cuius praesidentiam pro se non selegerit. Ceterum semper tenebitur eligere praesidem ex provincia, intra quam celebrabitur capitulum; et nisi, instante definitorio provinciali, concurrentibus omnibus suffragiis praeter unum, non poterit designare praesidem ex alia eiusdem familiae provincia assumptum.

III. Ad capitulum provinciale superior provincialis per suas litteras convocet gremiales iuxta instructionem superioris generalis, qui per sex menses ante capitulum tenebitur illi notam facere designationem domus, temporisque et diei, ut ea omnia denunciaret, in litteris convocatoriis et vocatoriis, eis qui concurrere debent et possunt. De his autem convocatoriis idem intelligatur quod dictum est circa capitulum generale Ordinis, ut earum vi gremiales reputentur vocati. At vero de illis superior provincialis certiore faciat praesidem capituli illico ac in domum capitularem accedat praeses.

IV. In capitulo provinciali suffragium habeat post praesidem superior provincialis, duo definitores generales actuales illius provinciae, definitores provinciales, duo ministri socii, redemptor captivorum et procurator provinciae: ceterum, si in aliqua provincia fuerit aliquis procurator plurium

provinciarum in alicuius principis curia, hic suffragium habere debet in capitulo suae provinciae, et in eo casu, licet sit alius particularis procurator provinciae, hic illud non habeat. Deinde suffragium habere possunt, quin cogantur adesse capitulo, qui aliquando fuerint superiores generales ex ea provincia assumpti, vel qui fuerint provinciales illius. Erit tamen hoc discrimen inter vocales, quod (nisi detenti fuerint infirmitate vel inevitabili impedimento) concurrere debent, sub poena privationis vocis activae et passivae in perpetuum, superior provincialis, omnes definitores provinciae, duo socii primi, redemptor captivorum et procurator. Ceteri autem libere possunt adesse vel abesse suo capitulo provinciali. Ac demum ad capitulum et extra domum capitularem sub praedicta poena privationis accedere tenentur duo socii in defectum.

V. In aula capitulari et extra illam tempore capituli sedeant, praecedant et praesideant capitulares ordine quo nominati sunt, ut dictum est de capitulo generali intermedio, ita tamen, ut, qui fuerint voluntarii vocales, et aliquando fuerint superiores generales, ceteros voluntarios praecedant, exceptis definitioribus generalibus actualibus, qui semper erunt immediate post praesidem; deinde qui fuerint aliquando definitores generales pro illa provincia, etsi actu non sint, praecedant eos qui fuerint provinciales illius.

VI. Capitulares solum ingredi poterunt domum capitularem feria v immediata ante celebrationem capituli. Antea vero per duos menses antecedentes ingredi non poterunt, nisi praeses, et definitorium provinciale cum provinciali, exceptis socio, si minister fuerit, vocalis ille qui ante annum habeat in eadem domo suam illi designatam residentiam continuam. Hortamur tamen patres definitores generales actuales, qui non fuerint filii provinciae, ut tempore capituli provincialis extra domum capitularem in alio commorentur conventu, nisi actuali impediuntur infirmitate.

VII. Socii vero secundi, si vocati fuerint, 1 Emendet vel intelligat qui potest (A. T.).

accedere possunt et ingredi eâdem feriâ v; sed si non inbeantur accedere, non ingre-
diantur domum usque ad feriam iii, in qua
studentes etiam ingredi possunt, ut coram
capitulo examinentur, ut dicetur infra. De
cetero autem, circa praeambula ante election-
em, observanda sunt quae statuta manent
circa capitulum generale. At vero eligibili-
tatis scrutinia similiter fiant, hoc nimirum
modo: eâdem feriâ v, praeses capituli omni-
bus gremialibus manifestet catalogum a de-
finitorio provinciali ipsi traditum omnium
religiosorum, qui intra provinciam iuxta no-
stras constitutiones, inspectis graduatione et
interstitiis, apti sint ut ex illis fiat ele-
gibilitatis scrutinium, et ab scrutatoribus, eo-
dem modo ac dictum est de capitulo gene-
rali, regulentur ac publicentur eligibilitatis
scrutinia, ut iuxta ea suo tempore eligan-
tur, quos eligere voluerint vocales.

viii. Deinde fiat secundum scrutinium ad
eligendos quatuor definitores provinciae (qui
in qualibet provinciâ solum eligi debent, et
inter ipsos nulla sit inaequalitas): quisque
gremialium in schedulâ suâ octo debet se-
ligere ex aptis, et scrutinium fieri debet
ex illis octo, qui plures voces habeant, ut
solum nominentur et declarentur proxime
eligibiles in definitores octo ex omnibus aptis,
et ex his tempore suo eligantur quatuor in
definitores provinciae similiter ac dictum
est de definitoribus generalibus.

ix. Praeterea tertium fiat scrutinium ad
ministrorum electiones, et ad illud ex aptis
unusquisque vocalium in suâ schedulâ seli-
gat et scribat talem numerum religiosorum
aptorum, ut in medietate excedat numerum
domorum provinciae; et postea, regulatis
vocibus modo dicto, declarentur eligibiles in
ministros, qui plures voces habuerint in
schedulis, et illi, qui necessarii fuerint, ad
duplicatum numerum ministrorum, qui eli-
gendi sunt pro domibus, quin vocales te-
neantur eligere, nisi quos voluerint, ex
contentis in duplicato numero.

x. Denique ad sociorum electionem, quar-
tum fiat scrutinium, sicuti ad eligibilitatem
definitorum. Ceterum hoc discrimine, quod
quando regulentur voces, quas habuerint in

schedulis electorum, scrutatores debent in
schedulâ publicandâ ita regulare selectos,
ut quatuor, quos invenerint habuisse maio-
rem numerum vocum in schedulis, decla-
rent eligibiles in duos socios primos, et alios
quatuor in duos socios secundos.

xi. Praeses capituli manifestet vocalibus
graduationem domorum a se factam prae-
cise ad eligendos ministros pro illis, et sta-
tim separentur vocales a definitorio, quod
solum deputare debet duos vocales ad legen-
das epistolas missas ad capitulum.

xii. Sequenti die, sabbato nempe, factis
omnibus quae fieri debent in capitulo gene-
rali, congregentur in aulâ capitulari, et
factâ a praeside exhortatione linguâ omni-
bus communi, fiat absolutio, electio secre-
tarii capituli, scrutatorum, secretarii scruti-
nii, et pronunciatoris, eâdem formâ, eisdem-
que factis iuramentis, sicut dictum est de
capitulo generali, et his omnibus finitis, ad
electiones procedant vocales.

xiii. Ante prandium fiat semper, et sola
fiat, electio ministri provincialis: qua factâ,
omnes vocales, praeter praesidem et supe-
riorem provincialem, cuius officium expirat,
pergant processionaliter in ecclesiam can-
tantes hymnum *Te Deum*, et ibi ab eo be-
nedictionem accipiant eo modo et formâ,
quibus iuxta nostras constitutiones fit in
electione ministri generalis.

xiv. Vespere autem congregetur capitulum,
et si provincialis electus praesens fuerit, se-
deat immediate ad praesidis sinistram, non
tamen praesideat aliis vocalibus, quamvis
eos praecedat, nec officium exerceat usque-
quo finiatur capitulum: nec si absens sit,
illum capitulum expectet, sed prosequatur,
et fiant electiones quatuor definitorum pro-
vincialium, quorum praecedentia post con-
firmationem iuxta ordinem electionis regu-
landa erit.

xv. Sequentibus diebus (qui omnes pro
celebratione capituli ad summum erunt no-
vem) fiant electiones ministrorum conven-
tualium, secundum graduationem domorum
antea dictam, et post omnium praelatorum
electiones, eligantur canonice duo socii ex
ministis noviter electis, qui ad capitulum

provinciale futurum concurrere debeant ut socii primi. Praeterea eligantur alii duo, qui fuerint aliquando ministri, quamvis in eo capitulo in ministros non sint electi, ut ad capitulum futurum accedant vocati tamquam socii secundi, quorum primus, deficiente aliquo gremiali, cui concurrere non sit liberum, suffragium habeat pro eo, et secundus suffragium habeat si deficiat alter, quique ambo in loco proximo extra domum capitularem manere debent tempore capituli, ut praesto sint concurrere, si vocentur. Nul- lus autem eligi poterit in socium primum aut secundum, si in eo capitulo socius fue- rit cum exercitio, etiam supplendo pro alio quamvis tunc eligatur in ministrum.

xvi. In casu quo post trinum scrutinium adhuc non fuerit electio canonica secuta, tunc, omissis scrutiniis, eo ipso habeatur tamquam legitime electus, vi huius consti- tutionis, ille, pro quo fuerit maior numerus suffragiorum quam pro alio aut aliis. Si vero pro duobus fuerit aequalis numerus suffragiorum maior quam pro aliis, tunc antiquior in professione reputabitur, et ha- bebatur tamquam legitime electus.

xvii. Si per mortem aut aliam quamvis causam socius aliquis pro suo munere non possit accedere ad capitulum, tunc definitorio provinciale tempore apto eligat socium loco illius.

xviii. Si aliquis praelatus vel particu- laris religiosus aliquid animadvertendum vel notā dignum habuerit, id credat provinciali suo vel alicui socio ex primis suae provin- ciae, ut ipse tradat destinatis a definitorio provinciali ad legendum epistolas.

xix. Factis canonice electionibus, prose- quantur sessiones necessariae ad agendum de observantia, progressu, bonoque communi provinciae, et ante omnia ac praecipue de eius instituto, redemptione nimirum capti- vorum. Capitulum provinciale, quamvis non possit novas constitutiones statuere, poterit ordinationes facere ad melius regimen suae provinciae, dummodo nihilo sint contrariae ordinationibus factis a capitulis generalibus vel generalibus definitoriis.

xx. Ordinationibus factis, extra aulam ca-

pitularem fiat examen studentium qui con- currere debent ut ex illis eligantur lectores.

xxi. Capitulum eligat sex patres ex gra- vioribus provinciae, quorum consilio et as- sensu pater provincialis, quando casus occur- rerit, eiiciat ab ordine aliquem, instructo processu, et bene probatis causis expulsio- nis, servatisque decretis Congregationum et Summorum Pontificum; et praeterea eligat ad eundem effectum alios quatuor vel sex patres subrogandos ordine suae electionis, in defectum alicuius vel aliquorum ex sex prius electis.

xxii. His factis, legantur coram capitulo decreta sanctae Romanae generalis Inquisi- tionis, et praeses capituli hortetur gremia- les ad strictam observantiam illorum.

xxiii. Decretis lectis, praeses capituli im- ponat praeceptum, ut dicitur de capitulo generali; et si aliquod impedimentum in- ventum fuerit, ad praesidem capituli et de- finitorium cum suo provinciali spectet iudi- cium: nullo autem invento, vel, si inventum fuerit, iudicio facto a praeside et toto defi- nitorio provinciali, totum capitulum albis nigrisque lapillis eligat redemptorem capti- vorum pro sua provincia, et procuratorem provinciae pro ea. Si in aliqua familia fuerit curia communis plurium provinciarum Or- dinis, et provinciae alternatim elegerit¹ pro- curatorem omnium illarum; provincia illa, cui secundum dictam alternativam competit electio huiusmodi procuratoris, prius eligat illum in suo capitulo provinciali, et postea eligat procuratorem particularem eiusdem provinciae.

xxiv. Postea totum capitulum confirmet electionem patris provincialis; praesesque, necnon provincialis, cuius officium expirat ad definitorium provinciale, confirmet omnes alias electiones.

xxv. His omnibus expeditis, socius pri- mus surgat, et coram capitulo legat ca- talogum religiosorum qui in illo triennio decesserunt in sua provincia. Deinde si aliqui religiosi (non vocales ipsius capituli, hi enim recurrere debent ad capitulum vel

¹ Videtur legendum *elegerint* (R. T.).

definitorium generale) petierint aliquod sublevamen propter ipsorum fractam valetudinem, aut aliam iustam ac rationabilem causam, capitulum tale sublevamen indulgent quatuor vel quinque magis indigentibus. Ac demum surgat secretarius capituli, et legat electiones omnes, statuta, ceteraque omnia alia acta et disposita in ipso capitulo, quae cuncta scribenda et subscribenda sunt, ut dicitur de capitulo generali, et statim dissolvatur capitulum.

xxvi. Postea immediate praeses capituli imponat praeceptum omnibus capitularibus, ut intra viginti quatuor horas coram ipso manifestent quidquid notarunt circa mores, regimen et observantiam durante triennio in patre provinciali praeterito, necnon circa regimen et suorum officiorum executionem in definitores provincialibus antecedentibus (definitorum enim visitatio circa mores in quacumque visitatione provinciae facta supponitur, qua a visitatore visitari debent etiam definitores provinciae), visitatione conclusa, si aliquid dignum poenâ vel reprehensione fuerit inventum, praeses ipse, si superior sit, reos puniat vel reprehendat; si autem non fuerit superior, visitationem mittat superiori generali familiae, ut ipse iudicet reum aut reos.

xxvii. Die sequenti, ultimoque capituli, missa sollemnis de requiem pro religiosis nostris defunctis et benefactoribus nostris, concioque et solemne responsorium habeatur. Debent autem provinciales curare ne concionator aliquis satirice praedicet sub poenâ impositâ § De capitulo generali num. xxxi; qua functione peractâ, capitulares fraternâ charitate amplexentur, et in suos conventus proficiantur.

xxviii. In casu quo minister generalis designet in praesidem capituli provincialis aliquem ex alio quovis titulo vocalem, tunc minister domus capitularis habeat votum in capitulo provinciali; et si ipse minister fuerit socius actualis, suffragium habeat socius primus in defectum.

i. Definitorium provinciale congregetur immediate post capitulum provinciale, et
1 Edit. Main. legit *facto* (n. r.).

postea de semestri in semestre in domo quam designabit de unâ in aliam congregationem; congregetur etiam quoties provinciali visum fuerit; ordinarie autem quotannis celebrari debet in qualibet provinciâ die iii maii: praedictum autem definitorium consurgere debet ex superiore provinciali, uti praesidente, et ex quatuor definitores provincialibus, qui omnes decisivum suffragium habeant: et in primo definitorio superior provincialis, et omnes definitores provinciae iuramentum facere debent, sicut definitorium generale.

ii. Definitorium provinciale insimul poterit admittere renunciations, eligere definitores novosque ministros redemptores suae provinciae, quotiescumque vacaverint eorum officia, quocumque titulo vacent; poterunt etiam eligere chronistam suae provinciae, necnon, ex concessione definitorii generalis, praebere consensum ut libri typis mandentur, et, ex commissione definitorii generalis, concedere facultatem audiendi confessiones seminarum, cum informatione patris provincialis, quae ad generale pertinet definitorium, cap. xxxviii, § 2, num. ii.

iii. Poterit etiam facere ordinationes ad melius esse suae provinciae, dummodo ordinationibus capituli vel definitorii generalis non opponantur. Praeterea, de consensu superioris generalis, poterit seligere studentem theologiae, ut nominetur et fiat collega nostri Collegii Romani.

iv. Si provincialis deficiat, vel illius officium quocumque titulo vacet, definitorium provinciale, praeside designando vel potius designato pro casu a superiore generali, et socii actuales eligant novum superiorem provinciae, qui vicarius provincialis nominetur, et illius officii cum omnibus auctoritatibus, quas haberet si esset provincialis usque ad immediatum capitulum provinciae duret.

v. In casu discordiae suffragiorum servetur in definitorio, quod stabilitum est pro capitulo provinciali num. xvi.

i. Nullus sit eligibilis in provincialem, nisi eligibilis esset ratione aetatis a professione et graduationis in definitorem gene-

§ 5.
De definitorio
provinciali.

§ 6
De officio pa-
troni provincia-
lium.

ralem Ordinis aut familiae. Electo tamen in provincialem omnes humiliter et prompte obediant tamquam patri et pastori; qui, et ideo magnâ sollicitudine suae provinciae invigilet, et in totâ illâ eamdem habeat potestatem, quam ministri in suis conventibus; in eorum tamen officia non se intromittat, nisi illorum negligentia et culpa exigente, vel necessitate et prudentia postulante.

II. Ad patrem provincialem spectat concedere licentiam ut in religione recipiantur qui ad chorum destinantur. Item, ut tam isti, quam laici (existentes in anno probationis seu novitiatus), recipiantur suo tempore ad professionem. Similiter praestare litteras (vulgo *reverendas*) ut religiosi sacris initientur, facultatem ut concionentur. Primo licentiam seu facultatem concedere, ut religiosi se exponant examini Ordinarii, et post illius licentiam, ut confessiones audiant virorum, et petere a definitorio generali, vel proponere suo, quod religiosi confessiones feminarum audiant. Etiam pertinet ad provincialem in qualibet visitatione designare confessarios pro religiosis.

III. Pro his omnibus hortamur patres provinciales, et eorum conscientias oneramus, ut, antequam praedictas facultates concedant, certam et veram notitiam habere curent de virtute illorum, quibus eas concedunt, ac de ipsorum aetate, scientiâ, et ceteris ad eas requisitis tam a iure quam a Bullis Pontificiis et nostris constitutionibus. Et insuper, dum a definitorio postulaverint licentiam ut aliquis religiosus feminarum excipiat confessiones, mittat simul petitionem proprii ministri eiusdem religiosi, in qua tam minister quam consiliarii eiusdem conventus seu collegii testificentur de annis aetatis, habitus, ac presbyteratus talis religiosi, et quanto tempore confessiones virorum laudabiliter et prompte audierit.

IV. Pertinet etiam ad provincialem suspendere et tollere (quando conveniens iudicaverit) facultates et licentias praedicandi et audiendi confessiones tam virorum quam feminarum. Deinde impertire in suâ provincia benefactoribus et aliis personis epistolas confraternitatis, quibus participes fiant

suffragiorum, ceterorumque bonorum operum suae provinciae, et facultatem praestare conventibus ad perpetuo alienandas sepulturas ecclesiarum, non vero capellae maioris vel minorum.

V. Rursusque singulis annis semel saltem visitare omnes conventus et collegia suae provinciae. Si vero superior generalis aliquam illius provinciae domum visitavit, tunc provincialis non teneatur eam pro illo anno visitare. Quod si contigerit aliquem fratrem germanum provincialis esse ministrum aliquius domus suae provinciae, non visitet domum illam ipse provincialis, sed tunc casu illam visitabit superior generalis vel de illius commissione alter religiosus. Deinde, si pater provincialis infirmitate vel aliâ iustâ causâ impeditus non valeat visitare per se, suumque officium exercere, poterit vices suas alteri religioso provinciae suae committere, nunquam tamen nominare seu instituere vicarium provincialem, sive pro totâ sive parte suae provinciae. Hoc enim ad definitorium generale attinet.

VI. Praeterea ad provincialem spectat suos religiosos ab uno ad alium conventum transferre, et praebere eis (exceptis lectoribus studentibus) licentiam ad itinera facienda, necessitate exigente, et servatis his quae dicta manent supra, cap. x, § 1.

VII. Suspendere quoque ab officio ministrum, qui gubernare nescit, vel qui suâ malitiâ aut negligentia, vel defectu capacitatis, permittit, ansam praebet, vel causa est, quod omnes vel plerique subditorum vivant irreligiose, laxè vel sine pace, aliave inconvenientia tam in oppido quam in conventu sequantur. Quaecumque ergo ex istis causis potest provincialis suspendere aliquem ministrum (quantumvis aliâs bonis moribus ornatum) consuletque definitorium generale, ut, si expedierit, praedictus minister deponatur.

VIII. Ad provincialem etiam pertinet nominare et designare simul cum ministro vicarios omnium conventuum et collegiorum suae provinciae, necnon illos suspendere, imo et consulto superiore generali eosdem privare tam in casibus expressis in nostris

constitutionibus, quam si propter alias culpas id mereantur, sine obligatione reddendi causam et rationem, cur ita fiat, nisi sacrae Congregationi aut superiori generali, quando requisitus fuerit. Item admittere renunciationes officiorum, quorum designatio ad ipsum attinet, tametsi cum ministro nominatio facta fuerit.

ix. Ad ipsum etiam spectat culpas punire usque ad graviores inclusive: absolvere a censuris, ad limites facultatis ei concessae per ius commune vel pontificia privilegia.

x. Habeat provincialis librum, in quo scribat facultates quas concedit ad concionandum, ad virorum confessiones audiendas, et ad ordines recipiendos: et in eo nedum notet diem, mensem, annum et nomen religiosi, sed etiam eius patriam et conventualitatem.

xi. Non liceat provinciali absque expressa licentia superioris generalis contributionem imponere in sua provincia; possit tamen licentiam concedere alicui ministro, ut de consensu maioris partis capituli conventualis opem ferat alteri conventui vel collegio indigenti. Super quo hortamur omnes ministros et conventus, ut mutuo se adiuvent, ut religiosa et fraterna charitas ita exerceatur et conservetur.

xii. Provincialis expirans rationem in capitulo reddat superiori generali de omnibus expensis ab ipso factis in illo triennio, et in quibus eas fecit. Quod si non reddiderit, ipse superior generalis illam exigat.

xiii. Si provincialis obierit, vel alia de causa eius officium cessaverit, praedecessor immediatus sit ipso facto vicarius provincialis, nisi inhabilis vel impeditus sit: nam tunc vicarius provincialis erit definitor generalis primus, filiusque illius provinciae, et in istius defectu secundus, donec, congregatis definitores provincialibus, publicetur electio praesidis designati a superiore generali ad provincialis electionem faciendam in domo ab ipso superiore generali illis destinata, et cum definitorio eligat provincialem.

xiv. In casu mortis alicuius provincialis,

eius secretarius et minister, ac consiliarii conventus in quo obiit, vel vicinioris (si forte extra claustra mortuus fuerit), intra arcem trium clavium ponant et custodiant manticas, codices et scripturas, ac alia similia, quae penes defunctum et ad ipsum attinentia inventa fuerint, et claves manticarum apud secretarium sint, qui etiam unam ex tribus clavibus habebit, donec vicarius provincialis vel provincialis de novo electus accedat, cui omnia (simul cum sigillis et formulario officii) tradentur, nisi superior generalis aliter disposuerit. Et praecipimus in virtute sanctae obedientiae praefatis ministro secretario et consiliariis, ac omnibus et singulis aliis religiosis, quod nunquam aperiant, nec aperire permittant dictas manticas, nec videant seu legant scripta, quae apud se provincialis defunctus habebat.

i. Patres definitores provinciales solum debent esse quatuor pro qualibet provincia, et unusquisque non mediocriter doctus saltem in morali theologia. Nec aliquis eligatur in definitorem provinciae, quin habeat decem et septem annos a professione, et duobus trienniis integris fuerit minister conventualis.

ii. Definitores provinciales habitent in conventibus suae provinciae a provincialibus designatis, nunquam tamen poterunt esse plures quam duo in eodem conventu vel collegio, nisi per breve tempus; et ubicumque fuerint, sedeant post ministrum, nisi praesens fuerit definitor generalis, qui eisdem definitores provincialibus praesidere debet.

iii. Si in conventu non fuerit minister, fuerit tamen praeses designatus per superiorem generalem vel eius definitorium, ipse praeses omnes definitores praecedere debet, sicut minister, neuter tamen praesidere eisdem definitores.

iv. Praedicti definitores provinciales nunquam se intromittant in regimine domus, nisi absentibus ministro, praeside iam dicto, et vicario; tunc enim, quamvis ibidem sit aliquis definitor generalis, praesides erunt domus definitores provinciales; sed defini-

§ 7.
De patribus definitores provincialibus.

lorem generalem non praecedent, nec in actibus, quibus ipse adfuerit, illi praesidentiam habebunt.

v. Ubiunque fuerint definitores provinciales, immediate subiiciantur superiori provinciae, seu provinciali; non vero praecedant ministrum¹ domus, nec praesidem iam dictum, nisi tempore actualis definitorii provincialis.

vi. In aliis domibus, in quibus provincialis non fuerit, definitores provinciales licentiam et benedictionem accipiant a defensore generali in eisdem existente ad exeundum a domo, et a patre ministro socium petant: non tamen ipsi, sed socii tantum benedictionem accipiant a ministro aut praeside per superiorem generalem aut definitorium generale designato.

vii. Si defensor generalis non fuerit domi, ipsi definitores provinciales recurrere debent ad ministrum eo modo et forma, quibus definitores generales recurrere debent, iuxta dicta § 3, num. vi, *De definitoribus generalibus*.

viii. Licet definitoribus provincialibus, sine alicuius etiam superioris impedimento aut examine, scribere aut recipere epistolas ad illos missas, et similiter alloqui quascumque personas, dummodo observent regulam et constitutiones quoad loca et tempora.

ix. Ut possint obtinere officia provinciae, reputentur filii eius omnes in ea professi, et etiam omnes illi qui ante eius erectionem intra eandem functi fuerant aliquo officio, aut fuerant conventuales in illa, necnon illi quos superior generalis incorporaverit iuxta nostras constitutiones. Omnes religiosi semper habere debeant eandem reverentiam definitoribus suae provinciae in provincia, quam praestare tenentur definitoribus generalibus in toto Ordine.

i. Hortamur in Domino visitatores, ut scopus ac finis suarum visitationum semper sit conservare in suo vigore et perfectione observantiam nostrae regulae, semotis interpretationibus quae totam observantiam deturbant, et vim regulae, potius quam

explicent, infringunt; nullius enim est interpretari, nisi supremi capitis, cuius est condere: ideo tamen magna sollicitudine debent visitatores suae vigilantiae aciem dirigere, ut amoveant contrarias intelligentias et abusos, qui contra legem nec usus nec consuetudines possunt dici; maxime circa redemptionem captivorum, quibus iuxta spiritum Ordinis et intelligentiam religiosi semper fit iniustitia, quando vel ex determinate datis ad redemptionem, vel ex tertia parte separanda pro illa, aliquid subtrahitur vel detrahitur a nostris. Eisdem similiter hortamur ut diligenter curent de observantia constitutionum, sanctarum consuetudinum et caeremoniarum, pacem statuere, culpas ac negligentias corrigere et punire.

ii. Pro initio visitationis iubeat signum fieri ad capitulum, et omnibus simul iunctis ac genuflexis incipiat antiphonam: *Veni, Sancte Spiritus*, quam omnes prosequantur; et post eam dicat: *†. Emitte Spiritum tuum et creabuntur, etc.*, et orationes: *Deus qui corda fidelium, etc. Defende quaesumus, Domine, etc. Deus qui per SS. NN. PP., etc.* Postea omnes sedeant, et visitator faciat brevem concionem spiritualem ad intentum pro sua visitatione.

iii. Quo facto, imponat praeceptum et censuram sibi reservatam, ut moris est, ut omnes ante ipsum dicant et denuncient quidquid correctione dignum animadvertent tam in praelato quam in subditis, omni affectione, amore vel odio seclusis, atque an in quaerendis et custodiendis elemosynis pro redemptione captivorum observetur exacte, quae¹ leges nostrae disponunt; et ad hoc ut ante ipsum quoque manifestent omnia quaecumque penes ipsos fuerint, sive pro suo usu, sive pro alio fine quovisve titulo; et insuper sub praedicto praecepto et censura iubeat ab omnibus custodiri silentium in pertinentibus ad ipsam visitationem, tam inter se quam scriptis, exceptis duobus viris doctis, quos designare debet, ut religiosi de sibi dubiis occurren-

§ 8.
De visitatori-
bus et visita-
tione coordi-
natum.

¹ Edit. Main. legit *ministro* (R. T.).

¹ Potius lege *quod* (R. T.).

libris consulant. Durabit autem dictum praeceptum per dies necessarios, sed non pauciores quam quinque.

iv. Ante examen religiosorum visitet SS. Eucharistiae sacramentum, altaria, oleum sanctum, ornamenta, ceteraque alia ad cultum divinum pertinentia.

v. Postea, vocando sigillatim religiosos, visitet, examinet ac diligenter ab eis inquirat: primo, quomodo observentur mandata Dei et praecepta sanctae Ecclesiae, necnon quatuor vota, praecepta Ordinis, eius regula, constitutiones, decreta sui capitali generalis, sui provincialis, sui utriusque descriptorii, et sanctae consuetudines Ordinis; item an fuerit vel sit aliquod scandalum, vel quid habens speciem peccati, tam intra quam extra conventum; an sit pax inter religiosos; an observetur regularis disciplina in officio divino, oratione, silentio, vita communi, clausura, ceterisque obligationibus; an abusus introducatur in vestitu aliisque rebus; an praelatus necessaria religionis praesertim infirmis suppediet: si autem alicui religioso infirmo aut non infirmo necessaria desint, antequam visitationem suam finiat, ministrum obliget, ut, antequam finiatur visitatio, defectum suppleat, nisi constet ab alio ministro eum de vestitu provideri debere, quia scilicet per biennium ante visitationem religiosus alteri conventui inservierat: et an ipse regulam ceteraque alia observet.

vi. Ut visitatores haec adimpleant, necesse est calleant ea quae ad correctionem fraternam attinent et ad regulam, constitutiones et consuetudines; ideoque oportet eos habere summarium principalium statutorum quae observari debent, ut iuxta illud facilius interrogent et examinent religiosos.

vii. Cellas visitent, et videant quae ad usum religiosi habent, et quae paupertati observantiaeque nostrae conveniens non fuerit, amoveant, et necessaria subditis ministrari faciant.

viii. Officinas etiam visitent, et animadvertant si in illis sint necessaria pro religionis tam valentibus, quam male habentibus, vel aliquid superfluum et indecens

nostro statui; carcerem quoque visitent, et notent si in eo sint quae debent iuxta disposita supra cap. xxi, § 4. Bibliothecam quoque videant, et examinent an iuxta eam et eius libros observentur supradicta cap. xxviii, § 7.

ix. Similiter diligenter visitent libros conventus, tam illos in quibus bona stabilia et census continentur, quam illos in quibus notantur recepta et expensa in quacumque specie pecuniae, tritici, ordei, vini, olei, etc., necnon libros redemptionis captivorum et receptionis ad habitum et professionem, ab ultima visitatione usque ad illam; et praelatos contra Bullas et decreta pontificia sive in toto sive in parte recipientes ad habitum vel professionem aliquos novitios, poenis impositis in illis et aliis ad suum arbitrium provinciales afficiant.

x. Deinde visitent tabulam seu catalogum religiosorum defunctorum; librum etiam in quo scribuntur missae et alia suffragia obligationesque perpetuae conventus, et videant an illis sit satisfactum. Si autem satisfactum non fuerit, praeceptum imponent ministro, ne eleemosynae missarum ulteriores recipiantur ab eo, usque dum omnes antecedentes adimpleantur a domo taliter ut, si in integrum non fuerit satisfactum, satisfieri possit sequentibus futuris et paucis diebus. Minister vero tali praecepto contraveniens, privatus sit et inhabilis in posterum ad iurisdictionis officia. Quod si invenerint aliquem defectum, statim curent plene satisfieri, et severe puniant superiorem negligentem.

xi. Praeterea examinent confessarios, concionatores et in collegiis studentes, praeter collegas biennii, iuxta supradicta suis locis.

xii. Insuper coram communitate attente videant habitus, scapularia, cappas et capitia religiosorum, et curent quod exacte observentur mensurae dispositae a nostris constitutionibus, severe puniendo praelatum in hac parte remissum et negligentem et religiosos excedentes.

xiii. His peractis, iterum in aulam capitularem religiosos convocari iubeant, et exhortationem spiritualem faciant laudando

virtutes et observantiam, ac corrigendo defectus et culpas omnium in communi et singulorum in particulari. Ac deinde religiosi, quibus nulla culpa imposita est, defectus suos ipsimet, ut moris est, confiteantur.

xiv. Si minister vel definitor provincialis aliquam commiserit culpam maiori parti communitatis ignotam, visitator illum in publico non reprehendat, sed in secreto, coram aliquibus ex observatoribus et notitiam habentibus. Similiter secreto corripiat secretas ceterorum culpas, et publice publicas ac notorias. Et quando gravitas delicti virgam iustitiae exigit, semper visitator simul misericordiam utatur. Hortamurque illum in Domino, ne impunitas relinquat culpas, ita ut exinde maioribus excessibus occasio et ansa praebeatur. Visitator autem, quamvis sit ipse provincialis, visitare non debet patres definitorios provinciales circa adimplerionem sui officii; haec enim visitatio ad definitorium provinciale pertinet post capitulum; ipsos tamen visitare debet circa cetera ut sibi subditos.

xv. Correctione culparum finita, praeceptum imponat visitator, ut pro tempore, iuxta prudens eius iudicium, necessario omnes et singuli de actis in illa visitatione ad eam pertinentibus strictum silentium observent, tam inter se quam inter alios quoscumque, et tam verbis quam scriptis; quod intelligitur etiam quoad silentium cum superioribus, nisi ab his interrogentur expresse. Deinde omnes in communi leviter flagellis cedat, et postea sequenti absolvat formam, videlicet omnes prostrati dicant confessionem generalem: postea visitator: *Miserereatur vestri, etc. Indulgentiam absolutionem, etc.; et confestim: auctoritate, qua fungor in hac parte, in quantum possum, absolvo vos ab omni sententia excommunicationis maioris vel minoris, suspensionis et interdicti. In nomine Patris, et Filii, et Spiritus Sancti Amen.*

xvi. Si visitatori expediens visum fuerit, aliqua facere statuta (vulgo acta), rebus exigentibus et maturo consilio perpensis, illa in scriptis faciat, et in arcam trium clavium custodiantur. Durabunt autem tantum

usque ad sequentem visitationem, sin ea denuo approbata non fuerint. Omniaque praecepta et censurae cessant, cessante officio provincialis, qui ea imposuit, et solum maneat tamquam simplicia mandata usque ad sequentem visitationem. Monemusque provinciales, ut in primis suis visitationibus scire curent praecepta, censuras, acta et mandata suorum praedecessorum, ut denuo illa approbent, si expedire viderint.

xvii. Si in aliquo conventu visitatores aliquam invenerint culpam excedentem suam iurisdictionem, statim suo definitorio generali notitiam praebeant, mittentes processum (si factum fuerit) vel informantes de delicto. Quod si hoc tale fuerit quod remedium praesentaneum exigit, apponant¹ necessarium, quamvis delictum (ut dictum manet) iurisdictioni suae non subsit.

xviii. Decernimus, quod quilibet praelatus possit punire et puniat quaslibet culpas ad suam iurisdictionem pertinentes, procedendo in earum cognitione sine strepitu et figura iudicii, sola facti veritate inspecta, iuxta concessionem motu proprio factam Ordini nostro a felicis recordationis Paulo Papa V die xvii augusti anno mdcxi, qui² incipit *Circumspecta Sedis Apostolicae*; et ideo quoties in ministro vel definitore ex visitatione deprehendant reatum privationis, visitationem suam non finiant, et suo definitorio denuntient, ut ab eo definitorio generali proponatur causa, ut, si expediens visum fuerit, ab isto deponatur delinquens.

xix. Visitatores, et alii quicumque iudices, in causis quas formaverint, non manifestent reis nomina testium, nec circumstantias aliquas, per quas in illorum cognitionem venire possint.

xx. Denique visitatores, post finitas singulis annis visitationes, rationem reddant suo definitorio generali de statu conventuum et collegiorum.

xxi. Qui per delegationem patris ministri generalis vel definitorii generalis Ordinis totam nostram religionem, vel per delegationem superioris generalis aliquam fami-

¹ Edit. Main. legit *opponant* (A. T.).

² Vocem *qui* nos addimus (A. T.).

liam, vel aliquam illius provinciam vel conventum aut collegium visitaverint, teneantur visitando manifestare commissionem quam portant; itaut visitator electus pro familiâ, eam manifestet in primo conventu familiæ a se visitando¹, visitator provinciae, in primo provinciae, et qui solum fuerit visitator unius aut plurium, sed non omnium provinciarum, aut aliquorum conventuum intra provinciam, eam manifestare tenetur in qualibet provinciâ, vel in quolibet² conventu suae visitationis. Obedientia tamen ei praestabitur statim ac primo illam in aliquo conventu patefecerit, et possessionem acceperit.

xxii. Visitatores praedicti praesideant in omnibus conventibus, ad quos iurisdictio sua se extendit, omnibus aliis religiosis, tam praelatis quam subditis, eadem auctoritate, potestate et praeeminentiâ, qua fungitur qui eos delegavit.

xxiii. Quando vero aliquis pro conventu Curiae Romanae visitando designatus fuerit, tantum praesidebit religiosis illius a die qua illis per se ipsum notoriam fecerit suam commissionem, quae solum durabit usque ad finem visitationis, et hac peractâ cessabit officium, subditusque remanebit ministri dicti conventus, et eo absente, procuratori generali, nisi forte visitator aliâ superior sit. Idemque omnino intelligatur respective de visitatore delegato alterius vel aliorum conventuum in particulari.

xxiv. In reliquis omnibus visitator delegatus servet formam visitandi supradictam (nisi aliquid ei in commissione limitetur) et instructionem etiam sibi datam a delegante, sub poenâ, iuxta gravitatem culpaе, ei infligendâ.

i. Nullus sit eligibilis in ministerium, quin expleverit decem et septem annos a professione, et prius fuerit per triennium lector theologiae, vel secretarius superioris generalis, vel provincialis aut procurator generalis in Romanâ vel Regiâ Curia, vel praedicatus fuerit sex integras quadragesimas, ita ut in qualibet hebdomadâ unius-

cuiusque tres habuerit conciones, et, titulo praedicationis, nec carnes comederit, nec lineis usus fuerit, vel per sexennium fuerit procurator provinciae vel redemptionis, vel fuerit vicarius duorum conventuum vel collegiorum, vel magister novitiorum, aut superioris generalis amanuensis.

ii. Qui tamen aliquam graduationem habuerint, nonnisi nimio adhuc delectu seligendi sunt inter omnes; quippe strictius quam praelatis¹ aliis ministro commissa est observantia et regularis disciplina, quae, si praelatus immediatus non fuerit eximio zelo praeditus, et prudentiâ summâ dotatus, necessario ruet in conventibus, immo et in totâ provinciâ suâ; quia per praecisam mutationem conventualium de uno in alium conventum, in dies grassabitur, ut pestis, ita ut in brevi veniat tota relaxanda provincia.

iii. Ideoque monemus electores, ut ante oculos habeant, tamquam electionis scopum, dotes personales eorum, quos elegerint in ministros, quod non ducantur solâ graduationis specie; quia multa² sunt lecturâ, officio magistri aut praedicatoris approbati, et in ministro deficiunt, quia non omnes sunt ad omnia nati, et in ministerio religioni causant praeiudicium, et bonum nomen iam ademptum (?) ex novo suo deperdunt officio. Caveant ergo electores ne in ministros eligant qui per suam anxietatem animi, vel libertatis quam habent defectum, aut aliam causam, sint inhabiles ad spirituales exhortationes suis communitatibus faciendas; quippe turpius eiiciuntur a suo ministerio, si in hac obligatione deficiant, quam si, quia illam adimplere non possunt, ad officium non eligantur.

iv. Minister noviter electus, statim ac sui officii litteras patentes acceperit, possessionem accipiat: si autem per ipsum steterit, et per tres menses adhuc non acceperit possessionem, ministerium vi huius constitutionis reputetur vacans, et ad definitorium provinciale devolvatur alterius subiecti electio nova.

¹ Aptius lege *visitandae* (R. T.).

² Edit. Main. legit *qualibet* (R. T.).

¹ Pessime edit. Main. legit *praelatus* (R. T.).

² Videtur legendum *multi* (R. T.).

v. Patri ministro humiliter et reverenter sui obediant subditi. Ad ipsum spectat immediate conventus vel collegii regimen; et principalis cura scopusque illius sit spiritualis subditorum profectus, praeunte semper ipso, doctrinâ et exemplo. Quapropter nec minister generalis poterit ministrum aliquem eximere a vitâ communi.

vi. Ad ipsum etiam pertinet hortari frequenter subditos ad observantiam regulae, constitutionum, sanctarum consuetudinum et caeremoniarum, applicando contravenientibus, sine exceptione personarum, poenas per constitutiones nostras impositas. Nec permittat subditos se intromittere in negotia secularium; ministrum autem in executione huius constitutionis remissum pater provincialis ad arbitrium suum puniat.

vii. Disponat et praecipiat minister in suo conventu, quidquid illi conveniens visum fuerit ad maiorem observantiam et subditorum reformationem et correctionem. Quod ut melius ac plenius exequi valeat, decernimus quod faciat et substantiet processum et informationes culparum ac delictorum¹ commissorum a religiosis in suo conventu, vel alio in loco sui confinii, quamvis delicta excedant suam iurisdictionem, puniatque usque ad culpam gravem inclusive; nam graviores, et quibus annexum est scandalum, provinciali eius et definitorio servantur. Ceterum si contigerit quod aliqua culpa suam excedens iurisdictionem brevi indigeat remedio, opportunum adhibeat, illamque puniat, ac statim, sub poenâ suspensionis ab officio per mensem unum, moneat superiorem, ad quem causa spectat; et ceteras informationes culparum, quas ipse non punierit, mittat praelato, cui competat sententiam proferre. Nullus autem minister poterit sui conventus visitationem generalem facere, imponendo praecepta, et censuras: hoc enim proprium est provincialis.

viii. Sit etiam minister in temporalibus valde providus, ut in omnibus suis subditis nihil de necessariis de victu et vestitu deficiat. Ad quae distribuenda non expectet

¹ Male edit. Main. legit *debitorum* (R. T.).

religiosorum petitiones quando necessitas patuerit, sed eas pastoralis sollicitudine praeveniat, et amore paterno aequaliter omnibus iuxta cuiuslibet indigentiam subveniat, ut sic religiosi, relictâ omnium temporalium curâ, spiritualibus magis intenti sint. Provincialis autem in suâ primâ visitatione corrigat severe reprehendendo ministrum in hoc deficientem; et si in secundâ visitatione ex depositione maioris partis communitatis eum non invenerit emendatum, deponentium testimonia suo definitorio tradat, ut in eo determinetur an causa sufficiens sit depositionis, et si sufficiens fuerit, definitorio generali proponatur ab eo.

ix. Disponat et distribuat in suo conventu officia per se solum, vel simul cum provinciali aut capitulo conventuali (iuxta ea quae in diversis particularibus harum constitutionum statuuntur) constituendo in illis personas idoneas. Officiales autem omnia sibi a principio tradita iuxta eorum inventarium suis successoribus vel consiliariis tradant.

x. Curet minister quod in omnibus officinis sui conventus sint inventaria, seu libri in quibus scripta inveniant¹ omnia quae sunt in dictis officinis. Et bis quotannis cum consiliariis et officialibus respective illas et libros visitet, ut incrementa scribantur, et de necessariis quae defecerint diligenter provideat.

xi. Quando superior praelatus miserit litteras patentes pro transferendo aliquo religioso in alterum conventum, non eas subscribant minister et consilarii, donec talis religiosus in procinctu sit ad iter arripendum. Eo autem ipso quod subscribuntur, statim cessat eius conventualitas, et deinde tamquam hospes habeatur. Nec minister alterius domus, ad quam pervenerit vel per quam transierit futurus conventualis alterius, aliam validam refrendationem efficere poterit: computatio enim dierum solum facienda est a primâ refrendatione, usque ad diem ingressus in conventu ad quem.

xii. Si conventus aliquis pecuniam habeat (etiam obligationum seu missarum perpetue)

¹ Forsan inveniantur (R. T.).

tuorum) conferendam in censum, minister (adhuc suffragante capitulo conventuali) id facere non valet sine patris provincialis facultate.

xiii. Nullus minister vel particularis religiosus, quamvis sit procurator conventus, seu administrator bonorum seu facultatum ipsius, destruat, diruat, demoliat aliquam domum vel possessionem, nec radicitus evellet vineas, oliveta, arhusta, imo nec religiosus agricola aut hortolanus arborem (nisi aridam) succidat, sine consensu communitalis et licentiâ in scriptis praelati superioris, qui illam concedet, maiori utilitate inspectâ; nec similiter sine praefato consensu et licentiâ valeat aliquis ex dictis vendere aut alienare aedificiorum dirutorum reliquias et materias, nec etiam emptas aut alio titulo receptas pro novâ fabricâ aut pro reparatione conventuum seu possessionum eorum. Qui autem huic constitutioni contravenit, ex ipso facto sit privatus in perpetuum actuali et simili officio.

xiv. Nullus item minister aut praeses valeat in toto cuiuslibet anni spatio vendere aut alienare triticum, ordeum, oleum, vinum, similia (sive sint ex propriis praediis collecta, sive emptâ, sive pie data), ultra quantitatem et valorem quadraginta ducatorum ex unâquaque specie, sine consensu maioris partis capituli conventualis. Et semper in libro expensarum scribantur quantitas et qualitas venditorum seu alienatorum; et etiam notetur in eo dictus consensus capituli conventualis quando intervenerit; contravenientes autem isti constitutioni, severe puniantur ad arbitrium patris provincialis iuxta qualitatem culpae.

xv. Patres ministri simul cum consiliariis (iuxta formularium) faciant rationum summas (vulgo *carta quantas*) status suorum conventuum, collegiorum, incrementi eorum provisionis, debitorum, aliarumque rerum, idque tempore apto disponant, ita ut dictae rationum summae (a ministro utroque et consiliariis subscriptae) mittantur et perveniant (simul cum libro seu rationibus missarum) ad manus secretarii definitorii provincialis quindecim dies ante capitulum pro-

vinciale, ut praedictum definitorium tempus habeat ad eas videndas. Istarum autem copia et transumptum de verbo ad verbum subscriptum etiam a ministro et consiliariis maneat in conventu in libro deputato ad hunc effectum tantum. Quod si aliquis minister tempore dicto et determinato non miserit dictam rationem, puniatur ad arbitrium ipsius definitorii. Ut autem sine querelâ constet de relictis ab uno et receptis ab alio, minister, qui spirat, tradat per inventarium ministro novo aut praesidi, ut hic etiam tradat novo ministro omnia quae tunc temporis tradenda fuerint, et novus minister eorum quae receperit inventarium tradentis et recipientis manu subscriptum suo definitorio mittat statim, ut, si aliquâ ratione summa facta inveniatur absque debita fidelitate, subscribentes privati sint voce et loco per annum.

xvi. Minister ante finem sui officii provideat conventui seu collegio suo de omnibus rebus necessariis ad sex menses post subscriptum inventarium, quod subscribendum est ante capitulum per unicum tantum mensem et non antea.

xvii. Minister (non socius) in suo conventu vel collegio maneat tempore capituli provincialis, et illum regat et gubernet, ac in eo praesideat etiam post capitulum, donec novus minister accedat possessionemque accipiat, nisi in praelaturâ fuerit electus.

i. Pro casu defectus ministri generalis intra sexennium, prior definitor generalis Ordinis, vi huius constitutionis, erit praeses illius et futurae congregationis usque ad electionem vicarii generalis, ut dictum est cap. xl § 9 n. i. At vero casu, quo superior generalis (etiâsi fuerit minister generalis) exierit a suâ familiâ, praeses illius erit quem ipse designaverit pro tempore suae absentiae, et exercere poterit tamquam familiae superior solum vices illas, quas commiserit illi qui eum nominaverit.

ii. Praeses autem, designatus a superiore generali pro alicuius capituli provincialis praesidentia, eam omnem facultatem habebit tempore capituli ad electiones et regimen ipsius, quam haberet ipse superior. Cete-

§ 10.
De praesiden-
tibus.

rum, si provincialis deficiat, vel illius officium quomodolibet vacet, praeses designatus a superiore ad electionem superioris provinciae eandem potestatem habebit ac si esset praeses capituli provincialis; sed in casu absentiae provincialis a sua provincia, praeses illius erit provincialis antecedens; et si impeditus fuerit hic, definitorium provinciale, praeside provinciali ipso, eligat praesidem provinciae pro tempore absentiae; sed nunquam eligat actuale definitorem provinciae, ne definitorum numerus diminuat. Electus vero vices provincialis, quas ipsi commiserit, exercebit.

III. Quando aliquis praelatus superior deputaverit praesidem alicuius conventus seu collegii, duret eius officium, quamvis cessaverit officium delegantis; usque ad possessionem ministri vel novi praesidis; et idem intelligatur de vicario sive alio praeside deputato pro tempore capituli generalis seu provincialis in conventibus seu collegiis, quorum ministri sunt. Sed solum quando superior generalis vel definitorium generale designaverit praesidem conventus, collegii, seu novae foundationis, eandem potestatem et praeceminentias habeat praeses, ac si esset minister.

IV. In absentia ministri, praeses semper erit vicarius, et in istius defectu, definitor provincialis antiquior, et in absentia omnium definitorum provincialium, antiquior definitor generalis, et istis omnibus deficientibus, redemptor captivorum, ac in istius absentia, procurator generalis, et isto deficiente, nisi minister iusta de causa sacerdotem minus antiquum deputaverit, semper erit praeses sacerdos antiquior in professione: nullus autem ex praefatis aliquid innovet. Si autem minister absens fuerit ab oppido, ubi est eius coenobium, ultra vigintiquatuor horas, poterunt praedicti tunc casus imponere praeccepta, et recipere novitios ad habitum et ad possessionem; adhuc tamen vicarius in isto casu non praecedat in sede definitores, nec isti ab illo socium petant ad exitum a domo.

V. Quamvis in aliquo conventu vel collegio sit vicarius actu exercens suum officium, poterit pater provincialis pro absentia mi-

nistri a domo sua nominare et eligere praesidem ubi et quando expedire viderint.

I. Praelati sunt pastores et patres suorum subditorum, ideoque debent spiritualia pascula eis ministrare, ignorantes docendo, remissos fovendo, iacentes erigendo. Haec execere tenentur singulari amore et benevolentia erga omnes et singulos eorum. Quod ut aptius faciliusque adimpleant, oportet ipsos agnoscere mores, conscientiam et vires uniuscuiusque, viam et profectum spiritualem, orationem, virtutes, in quibus se exercet, mortificationes, quibus utitur, gratias, quas a Deo accepit, et quid ex his et sacrae communionis frequentia utilitatis et fructus percipiat. Hoc est enim pastorem perfecte cognoscere gregem suum.

II. Expedit igitur quod hoc paternum regimen omni cura teneatur ac diligentius observetur a maioribus superioribus. Quapropter superiores generales, provinciales et definitorium etiam generale et provinciale maximo opere invigilare debet pro spirituali profectu sibi subditorum, mittendo quandoque intra suam iurisdictionem litteras pastorales, exhortationes et instructiones ad maiorem observantiam et extinctionem abusus, si aliquis introducat, et illius auctores puniendo.

III. Praeterea praecipimus in virtute sanctae obedientiae, et sub praecepto formali, omnibus religiosis subditis et praelatis, ne investigare audeant zelatores occultos, quos praelati pro bono regimine habere debent aut designare, neque praesumant de his zelatoribus colloquia inter se, neque inter saeculares, quamvis ipsi religiosi zelatores sint, nullo modo, verbo aut scripto habere aut instituere, sub poena inhabilitatis perpetuae ad Ordinis officia.

IV. Provincialibus utpote ordinariis visitatoribus specialius competit cura suorum subditorum: quare in visitationibus observabunt quae dicta sunt supra § 8 huius capituli; nec sibi satisfaciant cum correctione exteriori, sed hominem interiorem dirigere praesertim curent. Pro quo epistolas spirituales etiam mittant (quando illis expedire visum fuerit) per totam suam provinciam,

§ 11.
De gubernio
paterno et spiri-
tualis praela-
torum.

et alias exhortatorias ad progressum et correctionem subditorum.

v. Ministri conventuales immediate hoc regimen incumbit. Ab illis praecipue subditorum salus spiritualisque utilitas pendet, de qua in extremo iudicio strictissimam rationem reddent. Idcirco, ut suae obligationi satisficiant, tenentur spiritualem illorum vitam exemplo suo alere, et doctrinam suam perficere, illam omnibus et singulis pro uniuscuiusque statu et capacitate proponendo, ac de quadrimestri in quadrimestre assabiler cum unoquoque in particulari agendo et communicando omnia quae ad directionem animarum suarum spectant. Minister qui in prima et secunda visitatione repertus fuerit omissus¹ circa huius constitutionis observantiam, illico suspendatur a ministro.

§ 12.
De his qui
possunt vel non
possunt eligi in
praelatos.

i. Nullus religiosus sit eligibilis ad praelaturam aliquam, neque reputetur aptus ad illam, nisi habeat aetatem, graduationem et circumstantias, quae designantur ad illam praelaturam. Qui vero propter fractam aegramque valetudinem alia officia exercere non potuit, si tamen sit persona propectae aetatis, et virtute, doctrinam, consilio, et aliis dotibus praedita, eligi poterit in definitorem. Ceterum tantum erit unus definitor qui vitae communis austeritatem sequi non valet.

ii. At vero in ministrum generalem, commissarium generalem, ministrum provincialem et conventualem eligi non poterit, qui propter fractam valetudinem sit omnino impeditus ut choro interesse non valeat, vel carnibus vescitur, lineisque utitur. Attamen si post electionem ita aegrotaverit (quamvis sit minister generalis) ut iudicio medicorum propter paralysim aut similem infirmitatem desperata sit eius salus, non debet deponi, sed eligendus erit vicarius generalis pro regimine religionis ad inhabilitatis tempus solum, ut in capite finali *De clerico aegrotato* et in capite *Ex parte* disponitur in simili. Idem suo modo dicendum est de aliis superioribus.

iii. Ceterum decernimus, quod nullus eli-

¹ Forsan remissus (R. T.).

gatur ad duas praelaturas simul. Nec praelatus aliquis sit simul procurator generalis, exceptis ministris conventus et collegii Curiae Romanae. Nec similiter sit aliquis simul praelatus et redemptor captivorum.

iv. Pater minister generalis in capitulo, in quo spirat, non possit reeligi in ministrum generalem, neque in aliam praelaturam, commissarii videlicet, definitoris generalis vel provincialis, neque ministri provincialis nec conventualis, usque ad definitorium celebrandum post annum cum dimidio. Deinde commissarius generalis eligi non poterit in ministrum generalem, nisi casu, quo ad suam commissionem electus fuerit per solum annum ante capitulum: nec reeligi poterit in commissarium, nisi per triennium integrum non fuerit functus officio suo in quo spirat.

v. Praeterea nullus praelatus superior neque inferior eligi poterit in capitulo, in quo spirat, ad idem officium, neque ad aliam praelaturam, usque ad praedictum definitorium, nisi in superiorem generalem, ministrum scilicet aut commissarium, si per sex annos integros et continuos functus fuerit officio definitoris generalis, vel uno triennio definitoris generalis vel provincialis, et alio ministri provincialis. Nec aliquis minister eligi poterit in ministrum eiusdem domus, nisi dispensante definitorio generali, ut dictum est cap. xxxix, § 12, num. ii. Reelectio ministri conventus nostri romani S. Caroli, sive collegii nostri de Propaganda Fide, vi huius constitutionis fieri potest, nunquam tamen in favorem eius, qui reeligitur, sed utilitate domus inspecta.

vi. Similiter, qui per sex annos continuos et integros fuerit minister conventualis, vel uno triennio etiam integro praelatus superior Ordinis vel provinciae, tantum poterit eligi in ministrum alicuius domus, ex duabus matricibus suae provinciae, vel pro prima vice tantum in provincialem vel definitorem eiusdem. Per officia autem continua et integra intelligimus illa quae non vacarunt per tres menses continuos, sive in principio triennii, sive in medio, sive in fine.

VII. Insuper duo fratres germani non possunt sibi immediate succedere in eodem officio ministri vel commissarii generalis, definitoris generalis, provincialisve, neque ministri provincialis vel socii, iuxta Breve sanctissimi domini nostri Clementis X expeditum die xv decembris annos MDCLX incipiens *Exponi nobis*. Nec possint etiam dicti duo fratres germani simul, seu in eodem tempore et triennio, habere officia, quibus annexum sit votum in capitulo.

REGULAE CAPUT XLI.

Postquam vero definitores generales, etc.

CAPUT XLI. — De visitatione et depositione praelatorum.

§ 1.
De forma visitandi patrem generalem et definitores.

I. Minister generalis, finito capitulo generali, in quo eius officium expirat, visitetur per novum ministrum generalem et novum definitorium: ad quod novus minister generalis imponat praeceptum omnibus capitularibus, ut intra viginti quatuor horas coram ipso manifestent, si quid animadvertentur seu notarunt in patre ministro generali circa mores, regimen observantiamque nostrae regulae et constitutionum, atque sui officii executionem; et si aliqua culpa apparuerint, praedictus minister generalis noviter electus cum toto definitorio generali Ordinis poterit ei applicare poenitentiam proportionatam. Si vero ex depositionibus factis a capitularibus videatur expedire maiorem facere culparum inquisitionem, praecipimus quod, intra tres menses post celebrationem capituli, omni secreto et diligentia fiat dicta inquisitio, ut, instructo processu, delinquenti applicetur sententia.

II. Definitores generales Ordinis, qui expirarunt, visitentur etiam finito ipso capitulo generali per novum definitorium. Inquisitio autem solum fiat circa executionem suorum officiorum; circa mores enim visitatio et inquisitio reservetur patri ministro generali, qui ante praedictum capitulum tenetur facere illam, et simul cum definitorio iudicare, quando in aliquo ex definitorebus culpa aliqua ponderis apparuerit.

III. Si quis religiosus habuerit aliquid contra superiorem generalem vel definitores,

id manifestet illorum visitatoribus respective, certiores illos faciendo, vel per litteras, vel per provincialem, vel per socium, vel alio convenienti modo.

IV. Commissarius generalis alterius familiae et definitores generales eiusdem visitari debent in capitulo generali Ordinis, in quo expirant, per ministrum generalem novum, et definitorium generale Ordinis tunc electum. Ceterum omnes visitari debent, non solum quoad executionem suorum officiorum, sed etiam quoad mores et observantiam regulae et constitutionum, et de culpis, quae apparuerint, corrigi ac puniri debent a praedictis visitatoribus. In capitulo autem intermedio, ¹ commissarii et definitores generalium qui expirarunt in eo, a novo commissario novoque definitorio fiat: et si apparuerint culpa, proportionata applicetur punitio.

V. Pater provincialis, qui expirat in capitulo provinciali, visitari debet ab eius praeside circa mores, legum observantiam, et sui officii executionem, eo modo et forma quibus dictum est cap. XL, § 4 *De capitulo provinciali*, n. xxvi, ubi de definitorebus provincialibus dicitur etiam.

I. Definitores generales Ordinis seorsim corrigant et emendent excessus patris generalis, qui coram ipsis humiliter se prosternens veniam petat, et stans de suis excessibus se accuset. Quod si praevaricator Ordinis fuerit aut contemptor, aut adeo negligens et remissus ut Ordinis dissolutionem et destructionem inducat, moneatur a definitorebus ut officio generalatus cedat, alioquin eum deponendi liberam habeant facultatem. Quod utique accipiendum iuxta dicta cap. xxxix, § 11, n. xviii.

II. Commissarius generalis et definitores generales Ordinis vel familiae, atque ministri provinciales et ministri conventuales a suis superioribus iuxta regulam amoveantur a suis officiis, casu quo commiserint peccatum aliquod contra tria vota essentialia, et quartum non ambiendi, vel manifeste de ipsis fuerint vehementer suspecti; item si

§ 2.
De causis propter quas praedicti deponi debent.

¹ Videtur deesse visitatio (R. T.).

aliis negotiis dediti non adimpleant suum munus, et ter moniti negocia non relinquant; vel si inutiles aut ita negligentes fuerint ad gubernandum, ut sequatur grave detrimentum regulari observantiae; vel si minis, pollicitationibus, fraudibus, aut alio simili modo procurent alteri officium intra vel extra religionem; aut si accipiant pecuniam vel rem pretiosam ad hoc ut faciant vel expediant aliquid quod ratione officii expedire tenentur.

III. Ceterum tam contra patrem ministrum generalem, quam contra alios praelatos et officiales, et ad certum tempus canonice electos, definitores ad sententiam depositionis minime procedant, nisi prius ex actis legitime constet respective de causis superius expressis, vel aliis quae ex canonicis sanctionibus et nostris constitutionibus ad depositionem requiruntur.

I. Patres superiores generales habebunt tria sigilla. Primum magnum ad signanda negocia gravia et capituli generalis, secundum mediocre ad ordinaria, et tertium parvum pro litteris, hac solâ differentiâ, quod in primo sculpta sit imago SS. Trinitatis; et pater minister generalis habeat in circuitu verba ista: *SIGNUM PRIMITIVUM DISCALCEATORUM SS. TRINITATIS ET CAPTIVORUM*; pater vero commissarius in circuitu solum habebit haec: *SIGNUM DISCALCEATORUM SS. TRINITATIS ET CAPTIVORUM*; in duobus aliis pro utroque superiore incisum sit scutum Ordinis, et in circuitu verba haec: *PATER MINISTER GENERALIS*, vel *PATER COMMISSARIUS GENERALIS*.

II. Deinde definitoria habeant sua sigilla, in quibus incisum sit scutum Ordinis cum inscriptione istâ per circuitum: *DEFINITORIUM GENERALE ORDINIS DISCALCEATORUM SS. TRINITATIS ET CAPTIVORUM*, vel pro alio definitorio generali, si familiam nominare non possit, in circuitu sint haec verba: *DEFINITORIUM GENERALE UNUS FAMILIÆ DISCALCEATORUM SS. TRINITATIS CAPTIVORUM*. Et cum sigillo sui definitorii signabunt negocia, quae superior generalis expedierit nomine illius, addendo etiam in illorum corpore: *De consensu nostri definitorii generalis*. Per

haec enim verba et sigillum distinguenda sunt negocia definitorii ab expeditis a superiore generali solo.

III. Singuli patres definitores singula habeant sigilla parva pro epistolis suis, et in illis sit scutum Ordinis et inscriptio haec per circuitum: *DEFINITOR GENERALIS ORDINIS*, quin addatur *primus*, *secundus*, nec *tertius*. At vero definitores generales familiae in inscriptione non habeant eadem verba, sed solum habeant haec: *DEFINITOR GENERALIS UNUS FAMILIÆ*, vel nominando familiam, si locus fuerit.

IV. Quilibet provincialis tria etiam habeat sigilla: unum magnum pro suo capitulo, in quo incisum sit Ordinis scutum, et per circuitum ista verba, exempli gratiâ: *PROVINCIA SPIRITUS SANCTI*. In aliis duobus, quorum unum mediocre ad ordinaria negotia sui officii, et alterum parvum pro epistolis suis erunt in circuitu sequentia verba: *PROVINCIALIS PROVINCIAE N.*

V. Praeterea definitorium provinciae alterum sigillum habere debet, quod sculptum habeat scutum Ordinis, et in circuitu haec verba: *DEFINITORIUM PROVINCIALE PROVINCIAE N.* Cum hoc enim sigillo pater provincialis signare debet quae expedierit nomine definitorii sui, et etiam addere in corpore: *De consensu nostri definitorii provincialis*; necnon provinciae definitores habeant sua sigilla parva cum hac inscriptione: *DEFINITOR PROVINCIAE N.*

VI. Quilibet etiam minister conventualis habeat sigillum parvum pro epistolis et negotiis occurrentibus; et in illo scutum sit Ordinis, et per circuitum titulus sui conventus vel collegii, verbi gratiâ *MINISTER CONVENTUS MATRITENSIS*.

VII. Visitatores delegati habeant etiam sigilla cum scuto Ordinis et ista inscriptio: *VISITATOR GENERALIS* vel *VISITATOR PROVINCIALIS*. Sigilla autem ista sint apud patrem generalem et provinciales respective, ut ea suo tempore tradant visitatoribus ab eis delegatis, qui et finitâ suâ commissione reddant illa delegantibus.

VIII. Insuper patres redemptores captivorum et procuratores generales et provinciae,

pro negotiis et epistolis sigilla habeant parva et cum scuto Ordinis insculpto et inscriptione per girum: REDEMPTOR CAPTIVORUM, vel PROCURATOR GENERALIS ORDINIS (vel FAMILIAE) N., et similiter procurator provinciae.

IX. Praecipimus, quod nullatenus excedatur a disposito hoc paragrapho, nec ullus alius extra praedictos (cuiuscumque status et conditionis sit) sigillo utatur, sub poenâ gravis culpa.

I. Pater minister generalis in suos secretarios tantum eligere poterit duos sacerdotes, qui suis consiliis, prudentiâ et viribus illum valeant in sui muneris onere portando adiuvere. Illos in scriptis designet, praehendo eis litteras patentes sui officii et secretarii; statim ac eas recipiant, iuramentum emittant in manibus ipsius patris ministri generalis de servando secretum et fidelitatem, iuxta formam praescriptam pro secretario capituli generalis, sub c. xxxix, § 5, num. xii. Horum autem unus erit secretarius generalis Ordinis, quem assumet ex suâ familiâ, aliusque secretarius generalis alterius familiae ex alterâ assumendus: et non alios eligere poterit, nisi qui antea fuerint definitores generales vel ministri provinciales, aut saltem apti a lege ut tales fierent. Casu autem, quo minister generalis deficiat, vicarius generalis electus secretarios remove non poterit, nisi consentiente definitorio generali Ordinis per omnium consilia, praeter unum. Nec praedicti secretarii generales poterunt eligi ex definitoribus generalibus actualibus, aliisve habentibus suffragium in capitulo generali futuro.

II. Commissarius generalis eligere debet ex suâ familiâ secretarium generalem simili et non maiori graduatione praeditum, qui aliunde suffragium non habeat in capitulo generali futuro, nec in intermedio suae familiae, si fuerint; illique sui officii litteras patentes praebere debet; et secretarius, statim ac eas recipiat, in manibus sui superioris iuramentum faciat, ut supra; et a vice-commissario, si casus occurrerit, defe-

ctu commissarii, secretarius removeri non poterit nisi consentiente superiore generali Ordinis. Si autem post triennium fuerit capitulum intermedium familiae, novus commissarius pro libito poterit eligere novum secretarium, vel antiquum assumere sibi.

III. Praeterca superior generalis Ordinis, et similiter superior generalis familiae, sacerdotem amanuensem per litteras patentes sui officii ex eadem familiâ eligere poterit et ad suum arbitrium remove: eos tamen eligere oportet eleganti caractere donatos, mediocriterque communi arithmeticâ instructos, habiles aliunde atque expeditos taliter, ut spes aliqua supponatur de eo quod temporis decursu, et officiorum graduatione transactâ, aptiores fiant ut eligantur in secretarios. Praedicti enim amanuenses, post acceptas sui exercitii nominationis litteras, iuramentum facere debent fidelitatis et secreti in manibus superioris eligentis eos, vel, de illius commissione, in manibus secretarii. Si vero, vel quod ad minimum, fregerint iuramentum, removeantur ab exercitio, et ipso remotionis facto ob hanc causam intelligantur inhabiles in perpetuum ad officia Ordinis.

IV. Patres provinciales suum etiam unicuique secretarium sacerdotem provinciae suae eligere debent, ut suo similiter consilio et prudentiâ sui muneris pondus portare possint et adiuventur, ut ne ducti zelo observantiae rigidioris, vel pietatis specie ducti, mitiores, quam par est, ipsi fiant. Provincialis autem secretarius eligendus est, qui antea fuerit minister, aptusve ut in ministrum electus fuerit, vel saltem qui per triennium fuerit lector theologiae moralis practicae, vel superioris generalis amanuensis, vel per biennium philosophiae lector, aut magister novitiorum vel recens professorum, vel praedicator conventualis; et statim ac litteras patentes acceperit a suo provinciali, in manibus ipsius praedictum praestet iuramentum.

V. Idem omnino faciat visitator delegatus in electione secretarii, et iste in emissionem iuramenti, excepto casu quo delegans in commissione designavit visitatori secreta-

§ 4.
De patribus secretariis praedictorum superiorum.

rium, vel isti litteras patentes dedit: tamen etiam in isto casu secretarius iuramentum faciet in manibus delegati, si in delegantis prius non emisit illud.

vi. Praedicti omnes secretarii et amanuenses immediate subiiciantur (etiam tempore visitationis provincialis) tantum suo superiori in domo in qua adsit; et, licet absens sit in omnibus domibus iurisdictionis sui superioris, dum eorum officium duraverit, conventuales sint cum voce et loco. Si autem vel per breve tempus fuerint¹ in aliquo conventu seu collegio sine suo superiore, quoad omnia subsint immediate provinciali provinciae, et in illius absentia isti ac secretarii provinciales ministro domus, et ad exeundum a domo a suis tantum praelatis, quorum secretarii aut amanuenses sunt, licentiam, socium ac benedictionem accipiant.

§ 5.
De patribus
vicariis conven-
tuum et eorum
officio.

i. Nullus eligatur in vicarium, quin habeat ad minus quatuordecim annos a professione, et sit confessarius virorum ac mulierum, personaque prudens et capax ascendendi ad ministerium post graduationem, dignusque ut sit secundus a ministro in suo conventu vel collegio, et ut in absentia ministri sit praeses ceterorum, etiam senium et nimis graduatorum, quin religiosorum humilitas ex praecedentia et praesidentia minimum sit exercenda. Debet enim eligi in vicarium solus ille qui per sexennium philosophiae et theologiae studuerit, et ulterius per triennium saltem fuerit magister studentium, vel amanuensis superioris generalis, vel procurator redemptionis, vel praedicator alicuius conventus vel collegii, vel concionatus fuerit duas quadragesimas integras, vel in aliquo alio officio fuerit expertus. Definitorium tamen provinciale poterit dispensare in aetate, non autem in aliis requisitis illius.

ii. Vicarius autem ministrum iuvare debet in onere sui officii, pacemque promovere inter subditos et praelatum, ideoque in suis litteris patentibus dicitur, quod convertat cor patris ad filios, et corda filio-

¹ Male edit. Main. legit *fuerit* (R. T.).

rum ad patrem. Munus vicarii non duret ultra mensem unum, postquam accessit ad suum conventum possessionemque accepit minister denuo sive in capitulo provinciali sive in suo definitorio electus, quamvis, si solum per biennium officium exercuerit, poterit reeligari in eodem conventu vel collegio, non vero si ultra biennium, nisi dispensante suo definitorio.

iii. Praecipuum vicarii munus est diligenter curare omnia quae attinent ad officium divinum, et quod exacte observentur sacri ritus et Ordinis caeremoniae, ac cuncta quae disponit nostrum manuale. Quare omnia quae circa chorum, altare, processiones et alia ad officium et cultum divinum pertinentias vicarius ordinaverit, executioni mandentur, nisi aliud minister disponat; est enim vicarius magister caeremoniarum, quas si nesciverit, alios edocere non potest. Unde visitatores qui in aliquo conventu vel collegio earum abusum vel inobservantiam notaverint aut audierint, vicarium corrigant severe, ipsumque moneant; et si in secunda visitatione cuncta in integrum non fuerint restituta ad debitum cultum, ipsum deponant.

iv. Curet etiam vicarius, quod quilibet religiosus adimpleat ministerium in quod ab obedientia est destinatus; et ubi magister novitiorum vel professorum non fuerit, officia tabulae singulis hebdomadibus distribuat vicarius.

v. Singulis dominicis diebus, iuxta praescriptum regulae, familiam sive famulos domus pro capacitate sua vicarius bortetur divertere a malo, bonumque facere, eosque simpliciter moneat quod credere aut agere debeant pro salute animarum suarum et vita aeterna adipiscenda.

i. Procuratores generales genio et litteris debent esse habiles, ut negotiis sine detrimento causarum proindeque religionis incumbere possint, eaque in bonum Ordinis exequantur, neque ideo sint audaces, immodesti, et apud saeculares tribunaliave nimirum reperiantur molesti: debent esse prudentes, et magis iustitiam religiosis vocibus indicare, quam perviciacia ducti ipsam vociferando adquirere velle: sint ergo me-

§ 6.
De procura-
toribus genera-
libus, provin-
cialibus et con-
ventualibus ac
de eorum offi-
cio.

mores sanctae regulae nostrae ut omnis gestus, vita, actio et omnia alia honesta in eis reperiantur.

II. Procuratores generales pro Romana Curia eligendi sunt in capitulo generali Ordinis ad sexennium iuxta dicta c. xxxix, § 5, num. xxii *De forma celebrandi capitulum*, et qui aliquando fuerint definitores saltem provinciae, vel apti ut eligerentur ad tale munus definitoris. Eorum autem unus erit procurator generalis Ordinis assumptus ex familia, ex qua minister generalis expirat; secundus procurator generalis familiae eligendus ex familia ministri generalis electi, iuxta ibidem dicta.

III. Possunt autem eligi non a capitulo, sed a suo defensorio generali, et solum ad triennium, alii procuratores generales eiusdem graduationis pro aliqua curia, in qua tractanda sint omnia provinciarum illius ditionis negotia Ordinis, et hi denominari debent procuratores generales sub nomine illius ditionis in qua fuerit curia, ut modo dicitur procurator generalis Hispaniae, cui vel quibus suum defensorium generale dare debet mandatum procurae. Procuratores, qui non omnium sed plurium provinciarum Ordinis intra aliquam ditionem eligi debent iuxta dicta cap. xl, § 4, num. xxiii, non a defensoribus sed a capitulo provinciali eligendi sunt, nec nominandi procuratores generales, quatenus a suo defensorio provinciali habere debent mandatum procurae.

IV. Quicumque enim ex his procuratoribus confestim ac electi fuerint, faciant iuramentum fidelitatis in manibus superioris generalis, vel alterius de eius commissione. Concurrentibus autem, praecedat et praesideat aliis procurator generalis Ordinis, et post ipsum procurator generalis familiae in Roma, Hispaniae in Hispania, et alterius ditionis in ea. Eorum officium vacet, quando noviter electi possessionem acceperint. Defensorium autem generale Ordinis eos poterit a suis officiis abdicare sine obligatione reddendi causam cur id faciat, nisi sacrae Congregationi, quando requiratur. Procurator autem generalis, qui ex Hispania non fuerit electus, nunquam in conventu nostro

S. Caroli ad Quatuor Fontes Urbis commorari aut residere possit.

V. In provinciis vero a suo capitulo eligi debent ad triennium procuratores provinciarum ad quaecumque negotia suae provinciae, conventuum et collegiorum eius. Hi etiam procuratores eligendi sunt illis prudentiae, modestiae ac genii dolibus ornati, quibus ornari debent procuratores generales, et eligendi non sunt nisi qui duodecim annos post professionem compleverint et studiis per sexennium vacaverint, sintque mulierum confessori, et apti sint ad minus ut eligantur in vicarios. His defensorium provinciale dabit suum mandatum procurae, et ab illis iuramentum de fidelitate fieri debet in manibus sui provincialis, vel alterius de eius commissione.

VI. Praedicti procuratores poterunt e domo exire semper ac negotia id exigant, socio assignato a praelato, et ab isto benedictione accepta. In quocumque conventu suae respective familiae, vel provinciae, ubi fuerint, et pater procurator generalis Ordinis in omnibus conventibus Ordinis, conventuales sint cum voce et loco. Et in actibus et functionibus communitatis praesideant omnibus, quos praecedunt, iuxta supradicta, etiam vicario, a quo in absentia ministri socium postulabunt, sed ab eo benedictionem non accipient, nisi forte vicarius sit simul praeses propter absentiam ministri ab oppido ultra viginti quatuor horas; et nunquam se intromittant in regimen conventus, nisi quando illis competat praesidentia per absentiam ministri, vicarii, defensorum et redemptoris captivorum.

VII. Litteras eorum, quas scribunt et quas recipiunt, nullus praelatus aperire, videre, seu impedire audeat, excepto suo superiore generali, cui respective dicti procuratores notitiam omnium negotiorum Ordinis praestabunt: et praesertim procurator generalis Hispaniae id faciat singulis semestribus per librum, in quo cunctorum rationem scriptam habeat, et in absentia superioris generalis, notitiam illam et rationem praebeat defensori generali antiquiori

existenti in Curia Regia: et ante finem suorum officiorum rationem accepti et expensi in executione eorum suo superiori generali fideliter reddant.

viii. Hortamur patres procuratores generales, provinciales, seu etiam conventuales, ut semper ac commode omni cura et zelo per se, et si id non fieri possit, per saeculares procuratores, negocia expediri faciant, ut sic frequentes illorum egressus e conventu evitentur.

ix. Pater procurator generalis Ordinis Curiae Romanae non valeat sine licentia capituli generalis Ordinis impetrare a Sede Apostolica litteras pertinentes ad regimen universale Ordinis, nec favorem vel auxilium aliis ad id praestare. Quod si in aliquo modo et via ei constiterit, aliquem religiosum id quomodocumque intendere, teneatur sub praestito fidelitatis iuramento patetificare definitorio generali Ordinis. Et in omnibus negotiis religionis servet semper instructionem vel dispositionem definitorii generalis Ordinis, et nihil absque eius licentia operetur.

x. Quilibet religiosus (nisi fuerit definitor generalis Ordinis) Romam petens vel in Italia existens, subdatur superiori generali, et in illius absentia, quoad vitam intra claustra, ministro domus, a procuratore generali suo designandae pro illius residentia: semperque procuratori generali suae familiae, quamvis sit Ordinis, licentiam manifestet et causam viae suae declaret; illique tamquam superiori, cui in omnibus obedire tenebitur, humiliter pareat quoad negotium et causam suae viae. Quod si aliquis absque debita licentia illuc profectus fuerit, vel Romae existere conetur, contra praeceptum superioris generalis familiae suae, idem procurator generalis remittat illum in suam familiam ad suum superiorem generalem vel provincialem provinciae illius, nisi attentis circumstantiis videatur propter culpas eum in carcere conicere, vel alio remedio uti.

xi. Pater procurator generalis Hispaniae sit valde vigilans in expeditione negotiorum sibi a praelatis commissorum, quae quidem

tentur agere et expedire. At vero sine consensu patris provincialis provinciae, cuius negotium fuerit, nunquam saecularium negocia, vel propria personalia, vel alicuius particularis religiosi gerat. Super difficultatibus autem, quae in executione sui officii occurrerint, consulat suum superiorem generalem.

xii. In omnibus conventibus et collegiis indispensabiliter eligatur procurator ad lites et negocia communitatis, et ubi fuerint facultates, seu bona, sive culturae in agro, administrator similiter eligi debet. Hi enim conventuales procuratores eligantur a conventibus et collegiis, consulto et approbante patre provinciali, qui solum approbare debet, immo et potest religiosos modestos, prudentes et habiles ad tractanda negocia, reprobando, si qui proponantur illi, audaces, garrulos, et eos qui solum praebendo vultum negocia exponere volunt.

xiii. Officium procuratoris conventualis expirat transacto mense integro post acceptam a ministro denuo electo possessionem illius conventus vel collegii quod mandatum procuratoris dedit. Si vero patri provinciali et communitati visum fuerit, poterit reeligi cum licentia sui definitorii generalis. Quod quidem, antequam illam concedat, notitiam curet habere de moribus dicti procuratoris et de sedulitate in executione sui officii. Totum autem in hac constitutione expressum quoad procuratores conventuales, prorsus et in omnibus intelligi volumus de administratoribus quarumcumque facultatum seu bonorum cuiuslibet conventus vel collegii. Hi autem non praecise sacerdotes, sed fratres laici poterunt destinari. Provincialis vero eos tantummodo approbet, qui, iuxta dicta cap. xxiv, n. ii, post suae professionis officia eligi possunt.

xiv. Procuratores conventuales in civitatibus seu oppidis, ubi sunt cancellariae regiaque consilia seu audientiae, teneantur suscipere, gerere et expedire lites et negocia Ordinis ad dicta fora regia concurrentia. Et patres ministri huiusmodi conventus non occupent suos procuratores ita ut praedicta Ordinis negocia agere non valeant.

xv. Procuratores omnes conventuales et administratores bonorum seu facultatum cuiuslibet conventus seu collegii singulis quadrimestribus rationem reddant suis ministris et consiliariis de executione suorum officiorum, ac de acceptis et expensis pro eorum expeditione: in quem effectum sit liber in arcâ trium clavium, in quo dictae rationes scribantur, et debita pro et contra conventum, cum annotatione diei, mensis et anni, personarum a quibus, et finis in quem contracta sunt. Et librum istum quando et sicut ceteros monasterii visitet provincialis, et procuratorem vel administratorem non reddentem dictam rationem amoveat ab officio; reddentem vero, sed non fideliter, arbitratu suo puniat.

xvi. Sciant enim ministri et consilarii ipsos non esse procuratores conventuum, nec bonorum administratores; quippe communitates, quorum sunt bona, procuratoribus seu administratoribus per suum authenticum mandatum a se destinatis integram administrationem commiserunt. Ministris vero et consiliariis solum competit rationes receptorum et expensorum sumere, fructusque et redditus, qui¹ bonorum culturam et conservationem atque debitorum solutionem liberi pro conventu seu collegio reperiantur, in arcâ trium clavium et communitatis officinis reponere ad usum et expensas communitatis.

xvii. Ideoque praecipimus in virtute sanctae obedientiae, et sub praecepto formali, patribus ministris et consiliariis, nec non procuratoribus et administratoribus quibuscumque, quod neque primi supradicti audeant aliquid exigere aut accipere a procuratoribus et administratoribus, praeter ea, quae, solutis solvendis, factisque expensis, libera reperiantur pro conventu; nec hi, videlicet procuratores et administratores, aliud ipsis petentibus reddant, et quod si cogantur a suo ministro, illico provincialem certiorum faciant de violentiâ, sub poenâ privationis officii similis in perpetuum omnibus contravenientibus huic praecepto.

¹ Videtur desse *post* (R. T.).

xviii. Nullus, sive minister, sive procurator, sive administrator bonorum possit, nec ad breve tempus, dare in arrendationem bona fructifera, quae conventus habet in agro, si expensis communitatis elaborata fuerint aliquando, nisi consentientibus omnibus suffragiis, non solum habitantium, sed etiam pertinentium ad domum illam, et de licentiâ patris provincialis, qui, inspectâ utilitate, eam concedet, dummodo non dentur ad vitam alicuius, nec ad magis tempus quam ad triennium ministri actualis.

REGULAE CAPUT XLII.

Si quis huius Ordinis frater esse voluerit, etc.

CAP. XLII. — *De novitiis, ac receptione, educatione et approbatione novitiorum.*

I. Superior generalis cum consensu provincialis in qualibet provinciâ designet domos necessarias pro educatione novitiorum. Et semper sint segregatae¹ a frequentia; et semel designatae, non relinquantur sine gravi causâ. Ministri autem dictarum domorum prudentes sint et observantes, et qui iam fuerint (si fieri possit) magistri novitiorum et professorum.

§ 1.
De conventibus, in quibus educandi sunt noviti.

II. Similiter superior generalis eligat magistrum novitiorum cum consilio provincialis, pro cuius provinciâ eligitur, et sit persona spiritualis, prudens, docta et potens viribus ad rigorem vitae communis sustinendum, atque etiam, qui fuerit aliquando magister recens professorum studentium philosophiae, aut con-magister novitiorum, vel vicarius alicuius collegii theologiae studentium aut domus novitiorum. Poterit etiam superior generalis eligere con-magistros², consulto magistro, ut eligat religiosum ipsi benevisum, ac genio et moribus non absimilem, ne forte, si alium eligat, potius discordiam scissurasque inter discipulos introducat, quam magistro iuvamen tribuat.

III. Superiores curent, quod religiosi conventuales novitiatum sint valde observantes et exemplares.

¹ Edit. Main. legit. *segregata* (R. T.).

² Aptius lege *con-magistrum* (R. T.).

iv. Omnes novitii debent suscipere habitum, ipsoque vestiri in domo novitiatus, nisi raro et expressâ licentiâ superioris generalis cum aliquo fiat dispensatio ut habitum recipiat in domo aliâ, in qua fuerit approbatus; et statim ac statutum nostrae religionis habitum susceperit, deducatur ad novitiatum, sub poenâ gravis culpae infligendâ superiori qui illum detinuerit, nec provincialis in hoc poterit dispensare. Ut autem in domo novitiatus habitu nostro induatur, statim ac aliquis perveniat, sufficit quod recipiendus ad chorum ministro et magistro novitiorum consignet litteras patentes provincialis, vel recipiendus ad statum laici litteras superioris generalis praecipientis illis eum habitum vestiri. Praelati vero nunquam similes litteras concedere aut elargiri poterunt, quin prius illis constet authenticè de approbatione informationum et communitalis circa mores, ceterorumque quae fuerint necessaria.

i. Non admittantur ad nostrum habitum, qui infirmitatem habeat contagiosam, vel qui sit vel fuerit mancipium, nec qui saeculari veste indutus nostrum habitum petierit, si fuerit professus, sive valide, sive invalide, in¹ aliâ quacunque congregatione etiam nostri Ordinis, v. g. in patribus nostris Calceatis, aut etiam in Discalceatis vel Reformatis eiusdem Ordinis non subiectis nostrae iurisdictioni. Nec etiam admittatur neophytus, nec qui descenderit per lineam rectam in quolibet gradu a iudaëis, haereticis, mauris vel mauriscis, nec ullus, cuius praedecessores per lineam etiam rectam, ac in quolibet etiam gradu, ob haeresis vel iudaismi vel sectae mahometanae crimina puniti fuerint ab haereticae pravitalis inquisitoribus. Quod si aliquis ex dictis in hac constitutione, celans aliquod ex praenarratis impedimentis, professionem fecerit apud nos, statim ac delegatur tale impedimentum, eliciatur, quia religio non praestat suum consensum ad talem professionem. Quapropter omnes in publico coram communitate moneantur ante receptionem habitus, et etiam ante professionem. Quod si habeant aliquod

1 Praeposit. in nos addimus (n. t.).

ex impedimentis in hoc numero enarratis, professio (etiâsi fiat) invalida et nulla est, quamvis ploribus annis in religione sint. Admonemus tamen ad electionem professi procedi non posse, nisi infra quinquennium a die professionis, et deductis causis coram superiore suo et Ordinario, ad praescriptum sacri Concilii Tridentini; quod, ex sententiâ sacrae Congregationis, vendicat sibi locum non modo quando subditus vult deducere causas nullitatis suae professionis, sed etiam quando superior vult illum elicere tamquam nulliter professum.

ii. Non admittantur praeterea religiosi professi aliorum Ordinum, religionum, congregationum, vel societatum, absque licentiâ capituli generalis, concurrentibus duabus partibus ex tribus suffragiorum vocalium: et eam non concedat, quin prius perdat¹ privilegia dictorum Ordinum et causam transitus, et concurrant alia requisita sacrorum canonum.

iii. Insuper nec recipiatur ad chorum, qui non habeat aetatis quindecim annos; nec ad statum laici, qui non habuerit viginti, vel qui excesserit trigesimumquintum annum; nec aliquis eunuchus, nec uxoratus, si uxor maneat in saeculo; nec irritus aliqua irregularitate, qui difficiliter dispensari possit; nec habens notabilem deformitatem, nec religiosus professus apud patres nostros Calceatos, vel apud aliam nostri Ordinis congregationem extra iurisdictionem nostram, nec aliquis ex comprehensis in interrogatorio pro informationibus novitiorum infra posito paragrapho sequenti. Nullus ex praedictis in hoc numero tertio recipiatur absque licentiâ definitorii generalis illius familiae, et in casibus in quibus illam concedere possit iuxta ius commune et nostras constitutiones, et nunquam illam concedat, ut iterum recipiatur qui fuit antea novitius nostrae religionis vel alterius, sine praevio examine causae sui egressus de ipsius definitorii commissione faciendo. Volumus tamen quod si aliquis ex dictis et prohibitis in his duobus numeris (nempe secundo et tertio huius pa-

1 Forsan pendat (n. t.).

§ 2.
De personis
non admittan-
dis ad nostrum
sanctum habi-
tum.

ragraphi) habitum receperit et professionem fecerit sine licentiâ et facultate requisita et expressâ in praedictis duobus numeris, talis professio sit firma et valida, dum non sit ex comprehensis in num. 1. Si autem sine debitis circumstantiis aliquis receptus fuerit, ad arbitrium ipsius definitorii puniatur minister, qui a praelato licentiam petiit, et religiosus qui fecit informationes: illorum enim quamvis excusari velit ignorantia, inexcusabilis est diligentiae defectus.

iv. Denique praecipimus quod nulla femina admittatur ad nostrum habitum, ut fiat nostri Ordinis mantellata seu trinitaria (vulgo *beata*), absque licentiâ superioris generalis. Nec permittatur sine eadem licentiâ quod emittat votum in manibus alicuius praelati ex nostris vel alterius religiosi, sub poenâ privationis officii praelato, et vocis ac loci per triennium subdito contravenienti.

§ 3.
De formâ faciendi informationes pro admittendis ad nostrum habitum.

1. Antequam ad nostrum supradictum habitum quisquam admittatur, de mandato ministri, extrajudicialiter, et omni possibili sigillo fiat ab aliquo religioso clandestinum examen de officio et qualitatibus parentum et ascendentium praetendentis, ut sic, sine illius nec suorum iacturâ, modeste denegetur assensus praetensioni. Si autem post tale examen nihil notandum repertum fuerit, tunc, de consensu praelati, cui competat licentiam dare, minister poterit praetendentem suae communitati proponere, communitasque ipsum approbare vel reprobare circa mores: postea vero, quando approbatus fuerit, minister a suo provinciali commissionem petat, et religiosus designatus, qui semper sacerdos erit, faciat ex commissione ipsius provincialis informationem iuridicam et plenariam de genere, moribus et vitâ iuxta Bullas summorum Pontificum, recipiendo iuramentum a testibus. Provincialis autem nunquam designet consanguineum, contraneum, amicumve praetendentis, aut parentum eius, neque eum qui in eorumdem locum frequenter assistentiam habeat aut habuerit.

ii. Religiosus, cui commissa fuerit informatio, postquam eam ipsi tradiderit mini-

ster, moneat praetendentem ut provideat circa iter et expensas ad informationem faciendam: idque fieri debet religioso et pauperrimo tali modo, ut saeculares nihil possint murmurando reprehendere; et si aliter ab aliquo fiat, a suo provinciali incarceretur per tres menses, et ante omnia de ipsius mandato saecularibus restituatur superfluum.

iii. Informationem vero faciat per sequens interrogatorium, et, quando visum fuerit, testibus proponere potest religionem iuramenti, ne credant se posse a periurio, falsum deponendo, excusare, eo praetextu quod causa sit religionis et pia, si autem post hanc declarationem testari velint, eos interroget: Primo: Si est propinquus, si est habilis secundum ius ad testificandum, si movetur amicitia, vel odio, vel zelo iustitiae, vel si comprehensus invenitur sub aliqua ex generalibus interrogationibus, vel quare moveatur ad deponendum, et quot aetatis annos habeat;

iv. Secundo: Si cognoscit illum, qui praetendit nostrum habitum, et eius parentes, avos et ascendentes, et a quanto tempore illos cognoscit;

v. Tertio: Si scit dictum praetendentem descendere a iudaëis, haereticis, mauris vel mauriscis, vel a poenitentialis per tribunal sanctae Inquisitionis ob crimen haeresis, vel iudaismi, vel sectae mahomettanae, vel si audivit aliquem ex parentibus seu ascendentibus eius habere aliquem ex praedictis defectibus;

vi. Quarto: Si scit praetendentem esse neophytum, sive noviter conversum ad fidem, vel aliquid erga hoc audivit;

vii. Quinto: Si scit quod dictus praetendens, parentes eius, vel avi sint notati aliqua infamia;

viii. Sexto: Si scit quod sit filius legitimus ex legitimo matrimonio, et ut talis iudicatus et reputatus;

ix. Septimo: Si scit quod sit liber, id est, quod non sit nec fuerit servus nec mancipium;

x. Octavo: Si scit quod dictus praetendens non sit ligatus vinculo matrimonii, vel

fide sponsalium, itaut de suâ personâ disponere non possit;

xi. Nono: Si scit quod habeat aliquam infirmitatem contagiosam;

xii. Decimo: Si scit quod habeat aliqua debita quae solvere non possit, vel si teneatur reddere rationem, ex qua ipsi vel Ordini nostro aliqua lis seu molestia subsequi valeat;

xiii. Undecimo: Si scit quod praetendens fuerit novitius vel professus in nostrâ religione vel in alio quocumque Ordine, congregatione seu societate, etiam in nostris patribus Calceatis, vel Discalceatis, seu Reformatis nostri Ordinis non subiectis nostrae iurisdictioni;

xiv. Duodecimo: Si scit quod praetendens et petit et vult habitum sponte, et proprio affectu ac voluntate allectus, non vi, metu, fraude, aut alio humano respectu;

xv. Decimotertio: Si scit quod parentes praetendentis sint pauperes, itaut ad sustentationem suam indigeant adiutorio illius vel religionis, si recipiatur ad eam;

xvi. Decimoquarto: Si scit verum esse omne quod deponit, itaut, si aliquid esset in contrarium, sciret vel audivisset.

xvii. Si in aliquâ regione¹ vel provinciâ opus fuerit strictioribus aliquibus interrogationibus, superiores illas apponant in interrogatorio, et informantes adimpleant.

xviii. Insuper stricte praecipimus quod quilibet informans² (sub poenâ gravis culpae per tres dies) proferat fidem baptismatis praetendentis, et illam inserat informationi, ut de baptismo et aetate constet, scribaturque³ in libro in quo eius receptio et professio scribenda est. Praelatus autem qui non fecerit testimonium baptismi scribi in dicto libro, et qui aliquem ad professionem admiserit sine dictâ baptismi fide, severe puniatur.

xix. Factâ informatione et clausâ, ipse informans curet illam quamprimum tradere patri ministro conventus vel collegii, in quo praetendens habitu nostro induendus est;

¹ Pessime edit. Main. legit *religione* (R. T.).

² Edit. Main. legit *informantes* (R. T.).

³ Edit. Main. legit *scribanturque* (R. T.).

et dictus minister, ac consilarii, et magister novitiorum vel professorum, vel (si ibi magister non est) vicarius, omnes ulique simul, videant informationem, et approbent vel reproben, et rationem fideliter reddant capitulo conventuali de contentis in eâ. Et oneramus conscientiam examinatorum dictae informationis et religiosorum capitularium super secreto.

xx. Si informatio iuridica fieri commode non possit antequam praetendens recipiat habitum, saltem superior conventus vel collegii, vel, eius nomine, alius religiosus ab eo deputatus, coram examinadoribus destinatis pro informationibus videndis, clare et distincte legat interrogatorium praetendenti, et per ipsum singillatim interroget, accepto ab eo iuramento de veritate dicendâ, et an comprehendatur in aliquo ex ibi contentis. Et postea, quamprimum possibile sit, fiat informatio iuridica et plenaria, quam approbent vel reproben minister, consilarii et novitiorum magister.

i. Quicumque recipiendus est ad habitum nostrum, examinetur prius de suâ vocatione a praelato, vel ab aliquo religioso experto, ab ipso designato, non solum oretenus, sed aliquis fiat experientia; et animadvertat, si est bonae indolis et virium sufficientium ad portandas religionis austeritates.

ii. Ad chorum non recipiatur nisi qui latinitatem sufficientem calleat ad alias scientias adipiscendas. Quod ut constet, pater minister (si voluerit) et quatuor religiosi deputati a patre provinciali (vel aliquo ex istis deficiente, alius loco eius designatus a ministro) examinent praetendentem; per maiorem partem suffragiorum secretorum declaretur eius sufficientia vel insufficientia. Liceat tamen superiori generali, iustâ de causâ, aliquid in defectu grammaticae supplere, maxime quando praetendens ingenii acumine pollet.

iii. Posthaec proponatur suo capitulo conventuali, cui competat probatio, et fideliter illi significantur dotes praetendentis. Postea aperiantur informationes, et cum fuerint approbatae, de omnibus certior fiat provincialis, ut suas litteras concedat praetendenti,

§ 4.
De modo recipiendi novitios.

ut de facto habitum recipiat in domo novitatus. Solum autem recipiatur, qui maiorem partem suffragiorum capituli conventualis habuerit.

iv. Nullus ad chorum recipiatur, immo nec per approbationem disponatur absque licentiâ in scriptis patris provincialis. Provincialis vero eam concedere poterit quando locus vacaverit iuxta numerum praescribendum in capitulo provinciali, vel pro imminenti futuro triennio; quem numerum, nisi de licentiâ superioris generalis et expressâ pro qualibet vice, provincialis excedere non possit, sub poenâ privationis talis facultatis ad triennii finem: aliâs provincia, ultra conventuum vires, religiosos, quos sustentare non posset, pro arbitrio provincialis haberet, in praeiudicium regularis observantiae, quae paupertati religiosae, non vero necessitati innittitur.

v. Nec fratres laici sine licentiâ superioris generalis, quam concedet consulto prius patre provinciali illius provinciae ubi est domus in qua recipiendi sunt, et isti gaudeant integrâ valetudine et viribus ad laborem corporalem, in quo ratione sui status versari et exerceri debent; ideoque ante receptionem capiatur experientia per aliquot dies de perseverantiâ in vocatione, et de salute ac viribus. Nec recipiantur qui legere nesciant, quippe dissonum videtur, et est, quod religiosi nihil spirituale legere possint; nec admittendi sunt qui saltem mediocriter non scribant, hi enim incapaces erunt officiorum suae professionis quae indigent scripturâ. Praeterea, nisi praevis dispensatione superioris generalis petita a definitorio provinciae, non recipiatur aliquis qui exercere non possit aliquod officium manuale ex mechanicis ad usum religiosorum vel utilitatem conventuum deservientibus, aut qui saltem non sit agricola. Nec plures laici admittantur, nisi quos² prudenter iudicaverint superiores necessarios esse pro servitio religionis.

vi. Laici perpetuo conservent nomen, statum et ministerium laicorum, nec ullo tem-

¹ Edit. Main. legit *accedere* (R. T.).

² Edit. Main. legit *quod pro quos* (R. T.).

pore ad clericorum statum admittantur. Et superiores contrafacientes, privationis officiorum et vocis activae et passivae poenam incurrant, prout statuit in motuproprio Ordini nostro concesso felicitis recordationis Paulus Papa V, die xvii augusti, anno mdcxi, incipit *Circumspecta Sedis Apostolicae*; nec illis unquam concedatur corona, nec litterarum studia, sub poenâ privationis officii et vocis activae et passivae per sexennium superiori contravenienti.

vii. Ad habitum donati seu oblati nullus recipiatur sine approbatione capituli conventualis, et obtentâ licentiâ patris provincialis; et qui recipiendi sunt, habeant aetatis saltem viginti annos et amplius, et non excedant trigesimum secundum, polleantque integrâ salute et viribus ad laborem corporalem in quo sunt exercendi. Semel autem recepti, non expellantur sine consensu patris ministri et consiliariorum. Nec donati recipiantur ad habitum laicorum, nisi post triennium experientiae, et illi tantum qui aliâs recipi possent iuxta dicta num. v. De eorum educatione curet pater vicarius conventus vel collegii, et nunquam permittatur e domo exire ante expletum quadrimestre post eorum receptionem ad habitum. Praedicti non utantur lineis, nec calceamentis. Concurrent ad orationem mentalem, ad matutinum cantatum, ad flagellationem, communionem communitatis, et ad exhortationem spirituales, quae dominicis diebus fieri solet, ubi eorum defectus ante religiosorum culpas a zelatore vel praeside advertantur ac corrigantur, et statim a capitulo exeant. Officia tabulae illius, sicut et laici¹ singulis hebdomadis distribuuntur, et, cum obierint, funeralia et officia fiant pro eis sicut et pro novitiis.

i. Patres ministri domorum novitatus nihil pertinens ad novitios vel ipsorum directionem iubeant vel disponant inconsulto magistro illorum. Poterunt tamen, quando voluerint, eos affabiliter communicare circa directionem interiorem et profectum suum, dummodo id fiat uno vel duobus diebus destinatis pro omnibus.

¹ Forsan illis, sicut et laicis (R. T.).

n. Religiosi conventuales novitiatum non loquantur cum novitiis sub poenâ gravis culpae, nec audeant illos reprehendere. Si vero aliquem defectum in novitio aliquo viderint, dicant praelato vel magistro, vel in capitulo culparum animadvertant.

m. Novitiis nunquam iniungantur officia, nec imponantur occupationes, quae occasionem illis praebeant tractandi cum saecularibus. Nec permittatur quod visitentur adhuc a parentibus et cognatis, nisi in casu raro, consentiente et praesente magistro.

§ 6.
De approba-
tionibus novi-
tiorum.

i. In anno approbationis, novitii ter proponantur capitulo conventuali, ut iudicet, an, attentis eorum vitâ et moribus, digni sint ut ad professionem admittantur; ad quam nullus frater laicus approbetur, nec recipiatur, qui aliqua ex officiis propriis sui status et ministerii ad communis servitium recte non didicerit. Nec ad tertiam approbationem choristarum communitas unquam procedat, quin prius novitius fuerit approbatus a ministro, vicario, consiliariis et magistro de sufficientiâ, quoad rubricas missalis et breviarii, et caeremoniale et manuale nostrum. Patres minister et magister novitiorum ante primam approbationem possunt dimittere quemlibet novitium, si eum iudicent religioni noxium vel ineptum.

ii. Post quartum mensem a receptione habitus, proponantur primâ vice novitii dicto capitulo, secundâ post octavum¹, tertiâ post decimum mensem. Ut novitius censeatur approbatus, debet habere maiorem partem suffragiorum secretorum capituli conventualis; quod si ea non habuerit, statim habitu spoliatur, et modeste dimittatur. At iam approbatus a capitulo, habitu non spoliatur, nisi de consensu ipsius capituli conventualis, vel saltem consentientibus et convenientibus ministro et magistro et superiore generali vel provinciali. Quod si ad neutrum ex his duobus facilis sit², rursus suppleat illius defectum consensus duorum religiosorum iam antea ad hunc effectum deputatorum a provinciali.

¹ Edit. Main. legit *ne* (R. T.).

² Edit. Main. legit *octavam* (R. T.).

³ Videtur deesse *via* vel *accessus* (R. T.).

iii. Oneramus conscientias conventualium cuiuscumque novitatus, ut in approbationibus novitiorum (utpote cum sit magni ponderis res) singulari prudentiâ et religionis zelo se gerant, seclusâ omni affectione et humano respectu.

iv. Bona actualiter novitiorum, etiam ipsis consentientibus, immo et petentibus; non distribuuntur adhuc inter pauperes, nec alio modo consumantur. Et praelatus, qui aliter fieri permiserit, poenâ culpae gravis per tres dies puniatur.

REGULAE CAPUT XLIII.

Ad professionem vero aliquis non recipitur, etc.

CAPUT XLIII. — *De professione novitiorum, ac de repetitione illius per professos, et eorum domibus ac bonis.*

i. Peracto integro probationis anno, novitius cum licentiâ patris provincialis admittatur ad professionem, quam faciat iuxta regulam et constitutiones nostrae sacrae religionis in manibus praelati, vel ad minus in praesentia eius, tenore sequenti:

FORMA PROFESSIONIS. *Ego frater N. de N. facio meam professionem, et promitto obedientiam, castitatem et paupertatem B. Virgini Mariae, et sanctis patribus nostris Ioanni et Felici, necnon et nostro reverendo patri fratri N. de N. ministro generali, aliisque meis superioribus Ordinis Discalceatorum SS. Trinitatis Rêdemptionis Captivorum, eorumque successoribus, secundum regulam primitivam dicti Ordinis a felici recordationis domino Papa Urbano VIII ad perfectiorem formam redactam, et secundum constitutiones eiusdem Ordinis, sine mitigatione, usque ad mortem.*

ii. Continuo destinati ad eorum emittant quartum votum non ambiendi iuxta Breve felici recordationis Pauli Papae V expeditum die x februarii mdcx, incipiens *Quae pie ac sancte*; illudque faciant sequenti formâ:

Praeterea¹ promitto, me, directe vel indirecte, per me aut per alios, intra nostram Congregationem, praelationem aliquam, aut officium per constitutiones praelendi prohibitum, mihi

¹ Male edit. Main. legit *propterea* (R. T.).

§ 1.
De professione
novitiorum, et
de repetitione
illius per pro-
fessos.

nunquam praetensurum, et pariter extra nostram Congregationem, neque directe neque indirecte, per me aut per alios, ullam praelationem praetensurum, vel oblatam acceptaturum, nisi praecepto eius, qui mihi praecipere poterit, adstringar.

Fratres laici, quando faciunt professionem (quam vulgari lingua facere debent), post emissionem trium essentialium votorum, continuo emittant quantum non transeundi ad statum clericalem, nec sacros ordines suscipiendi, iuxta praeceptum felicitis recordationis Alexandri Papae VII per suas litteras in forma Brevis expeditas die xvi ianuarii anno MDCLXIII incipientes *Pastoralis officii*, fiatque sequenti modo et lingua, et vulgari:

Praeterea promitto, me nunquam transiturum ad statum clericalem, aut recepturum primam tonsuram, neque directe vel indirecte, per me aut per alium, dictum transitum sive receptionem praetensurum.

III. Professio facta scribatur in libro professionum, notando quod fuit facta praevis¹ et approbat² informatione iuridic³ de genere, moribus et vit⁴, iuxta tenorem Bullarum summorum Pontificum et nostrarum constitutionum, et subscribatur a religioso qui professionem fecit, a praelato domus, a magistro novitiorum, et ab aliis duobus religiosi⁵ qui praesentes professioni fuerunt, et ab illo etiam in cuius manibus illam fecit profitens, si forte distractus² fuit a praelato; et confestim informatio igne comburatur.

IV. Insuper omnes et singuli nostrae religionis professi, tam ad chorum destinati quam laici, tam praelati quam subditi, semel in singulis annis in die vespertino festi omnium sanctorum Ordinis post horam quintam repetant et denuo confirment suam professionem, unoquoque iterum singillatim faciente et renovante quatuor vota quae primo in sua professione emisit, iuxta formam praescriptam in hoc³ paragrapho. Omnesque illam repetant coram communitate in manibus praelati seu praesidis communitatis ipsius, et ante omnes ipse praeses

¹ Forsan praevid (R. T.).

² Forsan deputatus (R. T.).

³ Potius lege hac (R. T.).

coram ipsa communitate. Initio vero formae suprapositae mutant verbum *facio* in verbum *repeto*, et verbum *promitto* in verbum *re-promitto*; et superior generalis Ordinis, loco verborum ad ipsum attinentium in eadem forma, dicat; *Necnon sanctissimo domino nostro Papae N., eiusque et beati Petri apostoli legitimis successoribus*. Superior generalis familiae et definitores generales Ordinis omittere debent illa verba *aliisque meis superioribus*, quae omnes alii praelati et subditi dicere tenentur. Quod si aliquis propter infirmitatem assistere non valuit functioni isti, repetat professionem quamprimum possit in manibus praelati in cella sua, praesentibus duobus religiosi⁵; qui vero ob aliquam legitimam causam absens fuerit, quamprimum eam repetat in choro etiam coram communitate.

I. In qualibet provinci¹ ex designatione superioris generalis sit una vel duae domus ubi recenter professi cum suo magistro in habitatione separata et clausa vivant et perseverent saltem¹ post professionem, vel quousque in collegium mittantur² ad aetatem sacris ordinibus sufficientem pervenerint. Dum tamen in his domibus fuerint, in spiritualibus exercitiis, quibus instructi fuerunt in anno probationis, exerceantur. Interim vero etiam studiis humanarum litterarum (non solum grammaticae) operam dare possint et debeant iuxta instructionem et praescriptum decretorum sanctissimi domini nostri Clementis VIII.

II. Cum magistro professorum, quoad eius assignationem et reliqua omnia, observetur totum quod in diversis partibus harum constitutionum dictum expressumque manet de magistro novitiorum, et quod ministri nihil disponant erga professos inconsulto dicto magistro.

IV. Dicti recenter professi destinati ad chorum dum fuerint in domo professorum non exeant ad oppidum, nec aliorum, nisi cum communitate, praelato aliquo vel magistro, nec propriam patriam adeant (nisi

¹ Videtur aliquid deesse designans tempus, ex. g. *per annum* (R. T.).

² Deest vel aut et (R. T.).

§ 2.
De recenter
professis, et eo-
rum domibus.

ibi conventus sit et pro conventualibus eiusdem designentur) donec sacerdotes sint. Postquam autem a dicta habitatione separata et clausa recenter professorum exierint, quousque sacerdotio initientur, disciplinae vicarii subiaceant, praeterquam in collegiis artium ubi sunt magistri.

iv. Si quis iam sacerdos nostrum habitum accipiat, sub instructione magistri sit etiam integrum annum post professionem, et non amplius, nec a domo egrediatur, nisi post expletum dictum annum, nec in propriam patriam pergat, donec quatuor annos post professionem expleverit, nisi ibi sit conventus noster, et pro conventuali in eum adeat.

v. Fratres laici similiter sub disciplina magistri recenter professorum sint primo anno post professionem, et insuper duobus aliis annis sub ipsius magistri, vel, ubi ipse non sit, sub vicarii instructione. Nec primo dicto anno e conventu exeant, nisi in communitate, neque in patriam pergant, nisi post quatuor annos transactos a professione, vel nisi in ea sit conventus Ordinis et pro conventualibus mittantur.

i. Decernimus quod bona illorum, qui in nostra religione profitentur, dividantur, et medietas detur conventui in quo professionem fecit, et altera medietas sit collegio in quo recepit habitum, vel a quo directus et missus fuit ut habitum reciperet. Quod si non fuit in aliquo collegio receptus, neque ab eo directus sive missus, talis bonorum medietas, quando totum dividendum non excedat summam octoginta scutorum romanorum argenti, iuxta praesentem eorum valorem, deserviat pro expensis a definitorio provinciali designandis; si autem excesserit, pro designandis a definitorio generali, ad quod quotannis mittere debent magistri novitiorum cuiuscumque provinciae notitiam fideliter enarratam, et a se, ministro et consiliariis subscriptam, de profitentium haereditatibus et bonis. Quod illis praecipimus in virtute sanctae obedientiae, sub praeepto formali, et sub poena inhabilitatis in perpetuum aliter facienti.

ii. Ut autem redemptor captivorum non tertiam partem cuiuscumque medietatis ac-

cipiat separatim, sed simul totius integram, totum dividendum est in tres partes, et tertia separata pro captivis, quod reliquum fuerit, declaramus debere in conscientia reddi ac restitui dicto collegio vel definitorio et redemptioni. Hoc autem tantum intelligatur, quando noster professus non fecit testamentum ante professionem in favorem alicuius personae extra Ordinem nostrum; si enim fecit, eius ultima voluntas adimpleatur, dum tamen testamentum aut renuntiatio sit sine gravamine missarum aut alterius piae memoriae, et, si imponatur huiusmodi gravamen, semper intelligatur novitium fundationem facere in favorem religionis, et non alicuius determinatae domus aut personae intra religionem; quia, cum conventus nostri nullum possint recipere onus sine licentia superioris generalis, et aliunde istius conscientiae, iuxta canonicas sanctiones, sit non permittere quod conventus graventur ultra posse, ad ipsum deinceps pertinere debet quod in Ordine adimpleantur ultimae voluntates novitiorum post professionem eorum, sine alicuius conventus iure.

iii. Praeterea praecipimus in virtute sanctae obedientiae, sub praeepto formali, omnibus et singulis nostri Ordinis religionis, tam praelatis quam subditis, ut nullus moneat novitios, neque eos inducat ut testamentum aut renunciationem ante suam professionem faciant in favorem alicuius personae extra nec intra Ordinem nostrum.

iv. In exigendis bonis per fratres in nostra religione professos, relictis nobis vel ad nos pertinentibus, maxima servetur charitas, et prae oculis habeatur indigentia et qualitas fratrum et sororum religiosi, et specialiter hoc observetur cum eius patre vel matre, quando per mortem alterutrius haereditas obvenit nobis, tunc enim (si charitas exigit) volumus ne talium bonorum fructus exigantur vel petantur, donec alter superstes moriatur.

§ 2. Emanavit deinde a Congregatione eorundem cardinalium, re undique mature discussa, decretum tenoris sequentis: Sacra Congregatio eminentissimorum et

Decretum Congregationis episcoporum et regularium praedictae regulae confirmatae.

3.
De bonis haereditatibus profitentium et professorum.

reverendissimorum S. R. E. cardinalium negotiis et consultationibus episcoporum et regularium praeposita, referente eminentissimo domino cardinali Gentili ponente, re undique mature perpensa, suprascriptas constitutiones censuit esse approbandas, prout praesentis decreti vigore benigne approbat atque confirmat. Romae, die xxiii augusti MDCCXXXVII. — Card. FRANCISCUS BARBERINUS, praefectus. — C. archiepiscopus Damiatinae, secretarius. *Loco + sigilli.*

Procurator
generalis Papae
supplicat pro
apostolica con-
firmatione.

§ 3. Quare praedictus procurator generalis nobis humiliter supplicari fecit ut praeinsertas constitutiones et decretum huiusmodi apostolicae confirmationis patrocinio communiri de benignitate apostolica dignaremur.

Annuit Pon-
tifex.

§ 4. Nos igitur, ipsius procuratoris generalis votis hac in re, quantum cum Domino possumus, favorabiliter annuere volentes, eumque a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, supplicationibus eius nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, omnes et singulas constitutiones praeinsertas, et in eis contenta quaecumque, necnon dictae Congregationis decretum, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, perpetuo confirmamus et approbamus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis robor adiicimus, ac omnes et singulos iuris et facti ac solemnitatum quarumcumque in similibus etiam de necessitate observandarum aliosve quoslibet etiam formales et substantiales defectus, si qui in praemissis principaliter vel accessorie aut aliâs¹ quovis modo intervenerint, seu intervenisse dici, cen-

¹ Edit. Main. legit *alia* (n. T.).

seri vel praetendi possint, penitus et omnino supplemus et sanamus.

§ 5. Decernentes, easdem praesentes litteras ac constitutiones et decretum praeinserta semper firma, valida et efficacia¹ existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac S. R. E. cardinales, etiam de latere legatos, et Apostolicae Sedis nuntios, aliosve quoslibet quacumque praecellentia et facultate fungentes et functuros, sublata eis et eorum cuilibet quavis aliter iudicandi et interpretandi facultate et auctoritate, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Hic litteris
perpetui robo-
ris adiicit firmi-
tatem.

§ 6. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ac, quatenus opus sit, Ordinis huiusmodi, aliisve quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis etiam Ordini praedicto, illiusque superioribus, fratribus et personis sub quibuscumque tenoribus et formis, ac cum quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, efficacissimis et insolitis clausulis, irritantibusque et aliis decretis, in genere vel in specie, seu aliâs quomodolibet in contrarium praemissorum concessis, ac pluries confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene

Contraria tollit.

¹ Edit. Main. legit *efficaces* (n. T.).

et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliàs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die II augusti MDCCXXXVIII, pontificatus nostri anno IX.

Dat. die 2 augusti 1738, pontif. anno IX.

CCXXXVIII.

Confirmatio decreti capituli generalis canonicorum regularium Ordinis sancti Antonii Viennensis, per quod statuitur quod laici dicti Ordinis professionem post quatuor annos tantum emittere possint.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Iuxta regulas
Ordinis, laici
novitii post
undecimum an-
num servitii et
novitii ad
professionem
admittendi.

§ 1. Exponi nobis nuper fecit dilectus filius modernus procurator generalis canonicorum regularium Ordinis sancti Antonii Viennensis, quod per constitutiones dicti Ordinis part. II cap. I *De recipiendis in Ordine*, n. VII, cautum reperiatur ne fratres laici seu conversi dicti Ordinis ad professionem per eosdem emitti consuetam, nisi postquam decem annorum spatio dicto Ordini tanquam donati inservierint et subinde novitiatus annum peregerint, admittantur; et, cum pluribus ab hinc annis superiores generales Ordinis huiusmodi malum effectum, quem praedictum tempus afferre solet, agnovissent, nam plurimi ex dictis donatis erga divinum servitium desides, alteri a fallaci licentiâ illecti, et alii demum a cacodaemone instigati, cum tempus emittendi eandem professionem prope imminere animadverterint, a propositâ animi sententiâ

recedunt, per quoddam decretum capituli generalis dicti Ordinis mense maii nuper elapso celebrati tempus undecim annorum huiusmodi ad quatuor annos dumtaxat redigere studuerunt, et aliàs prout in eiusdem capituli generalis decreto tenoris qui sequitur, videlicet:

Extractum ex actis originalibus capituli generalis anni MDCCXXXVIII, ex sessione XIV. Quantum ex fratrum conversorum servitiis rerum temporalium administratores in omnibus Ordinis nostri domibus, sed in hac inclita praesertim abbatiâ, adiumenti capiant, nemini non perspicuum est. Verum hodie paucissimi sunt idonei iuvenes, qui in tali statu Deo militare velint, et ii ipsi, quibus hunc Dominus effectum inspirat, longissimo temporis tractu, quo probantur per decem annos in habitu donatorum, et per annum undecimum in novitiatu, plerumque a proposito deterrenfur: unde, vel habitum non suscipiunt, vel susceptum, urgente daemonis tentatione, cui tamdiu resistere difficile est, leviter dimittunt. Igitur venerabilis coetus, cupiens conversorum fratrum penuriam aut totalem etiam extinctionem avertere, statuit esse breviandum eorum probationis tempus a decennio ad triennium; ita ut post tres annos in statu donatorum emensos, alterumque insuper in novitiatu, si habiles indicentur, ad religiosam professionem admitti valeant. Quapropter procuratori generali in Curia iniungitur, ut necessariam super hoc a sanctissimâ Sede legum seu constitutionum nostrarum dispensationem humiliter expostulet. — *Concordat cum originali.* — N. GASPARINI abbatis¹ generalis S. Antonii. — A. BOUDELS secretarii² capituli generalis. *Loco + sigilli.*

Capituli generalis decreto huiusmodi terminus ad quadriennium redactus.

§ 2. Cum autem, sicut dictus procurator generalis nobis nuper exponi fecit, decretum capituli generalis huiusmodi, quo firmitus subsistat et servetur exactius, apostolicae confirmationis nostrae patrocinio communiri summopere desideret:

Apostolico munimine roborari dictum decretum petit procurator generalis Ordinis.

¹ Forsan abbas (R. T.).

² Aptius secretarius (R. T.).

Confirmat
Clemens.

§ 3. Nos, ipsum modernum procuratorem generalem specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum¹ fore censentes, supplicationibus eius nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, decretum praeinsertum, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, confirmamus et approbamus, illique inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiicimus.

Sicque in po-
sterum iubet
servari.

§ 4. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Obstantibus
derogat.

§ 5. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ac dicti Ordinis, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in

¹ Male edit. Main. legit *absolutos* (R. T.).

suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die 11 augusti MDCCXXXVIII, pontificatus nostri anno IX.

Dat. die 2 augusti 1738, pontif. anno IX.

CCXXXIX.

Confirmatio decreti Congregationis de Propagandâ Fide super facultate praefecto apostolico missionum Mequinez Marochii concessâ instituendi procuratorem dictarum missionum in oppido Matriti.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Nuper, pro parte dilecti filii Francisci Romero a S. Antonio, fratris expressæ professi ac ministri provincialis provinciae S. Didaci in Baetica Ordinis Minorum sancti Francisci Discalceatorum nuncupatorum et praefecti apostolici missionum Mequinez regni Marochii, Congregationi venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium negotiis Propagandae Fidei praepositae exposito, dictas missiones, quoad expensas in eisdem occurrentes tam pro manutentione missionariorum quam regii hospitalis Mequinereci existentis sub curâ eiusdem missionis, dependere praecipue a regiâ liberalitate carissimorum in Christo filiorum catholicorum Hispaniarum regum, qui iam a pluribus retro annis copiosas eleemosynas ad id dare consueverant; nihilominus ipse Franciscus experimento didicerat aliquando eventurum esse, ut, nisi aliquis religiosus dicti Ordinis in oppido Matriti Toletanae dioecesis assistat, qui

Provincia
hae provinciae
S. Didaci Con-
gregationi de
Propagandâ Fi-
de exponit ne-
cessitatem con-
stituendi Ma-
triti procurato-
rem missionum
Mequinez.

et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliis in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die II augusti MDCCXXXVIII, pontificatus nostri anno IX.

Dat. die 2 augusti 1738, pontif. anno IX.

CCXXXVIII.

Confirmatio decreti capituli generalis canonicorum regularium Ordinis sancti Antonii Viennensis, per quod statuitur quod laici dicti Ordinis professionem post quatuor annos tantum emittere possint.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Iuxta regulas
Ordinis, laici
novitii post
undecimum an-
num servitii et
novitii ad
professionem
admittendi.

§ 1. Exponi nobis nuper fecit dilectus filius modernus procurator generalis canonicorum regularium Ordinis sancti Antonii Viennensis, quod per constitutiones dicti Ordinis part. II cap. I *De recipiendis in Ordine*, n. VII, cautum reperiatur ne fratres laici seu conversi dicti Ordinis ad professionem per eosdem emitti consuetam, nisi postquam decem annorum spatio dicto Ordini tanquam donati inservierint et subinde novitiatus annum peregerint, admittantur; et, cum pluribus ab hinc annis superiores generales Ordinis huiusmodi malum effectum, quem praedictum tempus afferre solet, agnovissent, nam plurimi ex dictis donatis erga divinum servitium desides, alteri a fallaci licentia illecti, et alii demum a cacodaemone instigati, cum tempus emittendi eandem professionem prope imminere animadverterint, a proposita animi sententia

recedunt, per quoddam decretum capituli generalis dicti Ordinis mense maii nuper elapso celebrati tempus undecim annorum huiusmodi ad quatuor annos dumtaxat redigere studuerunt, et aliis prout in eiusdem capituli generalis decreto tenoris qui sequitur, videlicet:

Extractum ex actis originalibus capituli generalis anni MDCCXXXVIII, ex sessione XIV. Quantum ex fratrum conversorum servitiis rerum temporalium administratores in omnibus Ordinis nostri domibus, sed in hac inclita praesertim abbatiâ, adiumenti capiant, nemini non perspicuum est. Verum hodie paucissimi sunt idonei iuvenes, qui in tali statu Deo militare velint, et ii ipsi, quibus hunc Dominus effectum inspirat, longissimo temporis tractu, quo probantur per decem annos in habitu donatorum, et per annum undecimum in novitiatu, plerumque a proposito deterrenfur: unde, vel habitum non suscipiunt, vel susceptum, urgente daemonis tentatione, cui tamdiu resistere difficile est, leviter dimittunt. Igitur venerabilis coetus, cupiens conversorum fratrum penuriam aut totalem etiam extinctionem avertere, statuit esse breviandum eorum probationis tempus a decennio ad triennium; ita ut post tres annos in statu donatorum emensos, alterumque insuper in novitiatu, si habiles indicentur, ad religiosam professionem admitti valeant. Quapropter procuratori generali in Curia iniungitur, ut necessariam super hoc a sanctissimâ Sede legum seu constitutionum nostrarum dispensationem humiliter expostulet. — *Concordat cum originali.* — N. GASPARINI abbatis¹ generalis S. Antonii. — A. BOUDELS secretarii² capituli generalis. *Loco + sigilli.*

Capituli generalis decreto huiusmodi terminus ad quadriennium redactus.

§ 2. Cum autem, sicut dictus procurator generalis nobis nuper exponi fecit, decretum capituli generalis huiusmodi, quo firmiter subsistat et servetur exactius, apostolicae confirmationis nostrae patrocinio communiri summopere desideret:

Apostolico munimine roborari dictum decretum petit procurator generalis Ordinis.

¹ Forsan abbas (R. T.).

² Aptius secretarius (R. T.).

Confirmat
Clemens.

§ 3. Nos, ipsum modernum procuratorem generalem specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum¹ fore censentes, supplicationibus eius nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, decretum praeinsertum, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, confirmamus et approbamus, illique inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiicimus.

Sicque in po-
sterum iube-
re servari.

§ 4. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Obstantibus
derogat.

§ 5. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ac dicti Ordinis, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in

¹ Male edit. Main. legit *absolutos* (R. T.).

suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die 11 augusti MDCCXXXVIII, pontificatus nostri anno IX.

Dat. die 2 augusti 1738, pontif. anno IX.

CCXXXIX.

Confirmatio decreti Congregationis de Propagandâ Fide super facultate praefecto apostolico missionum Mequinez Marochii concessâ instituendi procuratorem dictarum missionum in oppido Matriti.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Nuper, pro parte dilecti filii Francisci Romero a S. Antonio, fratris expressae professi ac ministri provincialis provinciae S. Didaci in Baetica Ordinis Minorum sancti Francisci Discalceatorum nuncupatorum et praefecti apostolici missionum Mequinez regni Marochii, Congregationi venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium negotiis Propagandae Fidei praepositae exposito, dictas missiones, quoad expensas in eisdem occurrentes tam pro manutentione missionariorum quam regii hospitalis Mequinereci existentis sub curâ eiusdem missionis, dependere praecipue a regiâ liberalitate carissimorum in Christo filiorum catholicorum Hispaniarum regum, qui iam a pluribus retro annis copiosas eleemosynas ad id dare consueverant; nihilominus ipse Franciscus experimento didicerat aliquando eventurum esse, ut, nisi aliquis religiosus dicti Ordinis in oppido Matriti Toletanae dioecesis assistat, qui

Provincia
S. Didaci Con-
gregationis de
Propagandâ Fi-
de exponit ne-
cessitatem con-
stituendi Ma-
triti procurato-
rem missionum
Mequinez.

nomine provinciae et missionum cum regis ministris praedictas eleemosynas sollicitet, sitque iisdem cognitus et gratus, praedictae eleemosynae in toto vel in magna parte deficient: quapropter ipse Franciscus cum suo definitorio, prospiciens bono dictarum sacrarum missionum, ut ne eadem detrimentum patiantur, plurimum desiderabat, ut sibi facultatem instituendi in praedicto oppido Matriti aliquem ex suis religiosis in procuratorem, qui, continuo ibidem assistens, praedictas eleemosynas sollicitare, et favorem eorumdem regum in necessitatibus et persecutionibus, quae frequenter a barbaris Africanis contra illas excitantur, implorare valeat, ac insuper collocandi dictum procuratorem cum socio illi designandum² (ob deficientiam conventus provinciae praedictae in supradicto oppido) in quocumque ex tribus conventibus diversarum provinciarum Ordinis eiusdem S. Francisci in oppido huiusmodi existentibus, quem ipse Franciscus indicaverit opportunior ad praedictam procuratorem, accedente tamen consensu dilectorum filiorum superioris illius conventus seu etiam ministri generalis pro tempore existentium, concederet: emanavit ad supplicationem praedicti Francisci ab eadem Congregatione cardinalium decretum tenoris qui sequitur, videlicet:

Decretum
Congregationis
praefatae.

Decretum sacrae Congregationis generalis de Propaganda Fide habitae³ die IV augusti MDCCXXXVIII. — Relato per reverendum patrem dominum Philippum de Montibus secretarium suprascripto libello supplici, et audito patre ministro generali Ordinis sancti Francisci, sacra Congregatio oratoris precibus benigne annuit iuxta petita, salva tamen semper procuratoris prout in preci-

¹ Praeposit. a nos addimus (A. T.).

² Potius lege designando (A. T.).

³ Edit. Main. legit habita (A. T.).

bus constituendi, eiusque socii pro tempore, omnimoda ab eadem sacra Congregatione dependentia. Datum Romae, ex aedibus praefatae sacrae Congregationis, die et anno quibus supra. — Cardinalis PETRA, praefectus. — PHILIPPUS DE MONTIBUS secretarius. Loco + sigilli.

Confirmatur
a Clemente.

§ 3. Cum autem, sicut pro parte dicti Francisci nobis subinde expositum fuit, ipse decretum huiusmodi, quo firmiter subsistat, apostolicae confirmationis nostrae patrocínio communiri plurimum⁴ desideret: nos, ipsum Franciscum specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et a quibusvis excommunicationis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, supplicationibus eius nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, decretum praecursorum, auctoritate apostolica, tenore praesentium, approbamus et confirmamus, illique inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiicimus; salva tamen semper in praemissis auctoritate memoratae Congregationis cardinalium.

§ 4. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quodcumque spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Sicque semper
per servandum
praecipitur.

⁴ Edit. Main. legit plurimum (A. T.).

Contraria tollantur.

§ 5. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon provinciae, conventus et Ordinis praedictorum, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die XXII augusti MDCCXXXVIII, pontificatus nostri anno IX.

Dat. die 22 augusti 1738, pontif. anno IX.

CCXL.

Confirmatio quorundam decretorum pro felici regimine Congregationis Cassinensis Ordinis sancti Benedicti iussu capituli generalis editorum¹.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Prooemium.

Ex iniuncto nobis caelitus apostolicae servitutis munere, ea, quae pro felici prosperoque christifidelium Altissimi obsequiis sub suavi religionis iugo manipulatorum regimine et gubernio provide facta et ordinata esse noscuntur, ut firma atque illibata persistent, apostolici muniminis nostri praesidio, cum id a nobis petitur, libenter constabilimus.

^{Septem abbates deputati ad decreta edenda.}

§ 1. Exponi siquidem nobis nuper fecit dilectus filius Michael Franciscus

¹ Consule regulas et declarationes relatas in tom. XIX, pag. 276 et seq. huius edit. (N. T.).

Vaillettus procurator generalis Congregationis Cassinensis Ordinis sancti Benedicti, quod in capitulo generali Congregationis huiusmodi in civitate Paduanâ mense maio proxime praeterito celebrato ad effectum evellendi quosdam abusus qui in nonnulla monasteria dictae Congregationis induebantur, septem digniores abbates eiusdem Congregationis, consilio, sapientiâ et prudentiâ praediti, nempe unus pro quacumque provinciâ Congregationis huiusmodi, electi et deputati fuerunt, qui, pro bono Congregationis praedictae regimine, nonnulla decreta ordinarunt, quae pro constabiliendis regulari disciplinâ statutorumque observantiâ, necnon debitâ huius Sanctae Sedis constitutionibus reverentiâ conservandâ a pleno definitorio approbata fuerunt, tenoris qui sequitur, videlicet:

Decreta pro bono regimine Congregationis. — Cum multi, iique graves, abusus in quibusdam monasteriis nostrae Congregationis irrepserint, et sensim atque in dies serpere intelligantur, quibus disciplina regularis non solum aperte negligitur, sed etiam temere labefactatur: reverendissimi definitores, huic malo occurrere mature et prudenter cupientes, nobis eam provinciam demandarunt, ut, re diligenter examinata, secerneremus ea quae omnino corrigenda viderentur. Quare duximus ea quae sequuntur capita animadvertere, eorumque iudicio decernenda proponere.

I. Quia compertum est ex privatis hospitibus multa et gravia mala proficisci, ideo statuimus ut in locis, in quibus monasteria nostra existunt, hospitia pro abbatum et monachorum habitatione non habeantur, exceptis iis quae ab antiquo tempore constituta fuerunt, dummodo tamen ecclesias ad usum et commoditatem populorum annexas habeant.

II. Ac quoniam in declaratione cap. VI, Non concedendae perennitatis licentiae vero discipulorum extra

¹ Vide loco cit. pag. 284 a (N. T.).

quibus tollantur abusus in Ordine.

Praefatio decretorum.

Ubi sunt monasteria Ordinis, non construenda hospitia pro abbatibus et monachorum habitatione.

monasteria, nec
in his permi-
tendi ludici
actus.

dendi a monasterio infra annum, recrea-
tionis vel etiam devotionis causâ, seu alio
quovis praetextu, fratribus nostrae Congrega-
tionis a defunctoribus vel regimine abt a
praelatis non concedantur, nisi ex rationa-
bili causâ, et raro, ad evitandas vagationes¹,
etc. »: propterea abbates, tempore baccana-
lium, non permittant morari monachos extra
monasteria, neque praetextu adeundi con-
sanguineos vel affines, nec aliâ qualibet
quesitâ causâ. Adolescentibus autem et
iunioribus, donec non fuerint sacerdotio
initiati, non concedant facultatem perno-
ctandi extra claustra, neque recreationis
neque etiam causâ devotionis, nisi in casi-
bus a² constitutionibus permissis.

Quod si causae postulent dari faculta-
tem aliquibus ultra unius diei iter eundi,
tunc omnino serventur ea quae in decla-
ratione cap. LXVII, n. VIII, IX et XIII servanda
commemorantur.

Similiter dicti superiores nunquam per-
mittant aut tolerant, quod monachi, depo-
sito habitu monastico, vel personati incedant,
vel ludicros actus, recreationis causâ, in
ipsomet monasterio aut alibi quomodocum-
que exercent.

Praelati abs-
que legitimâ
causâ a mo-
nasteriis abesse
non debent.

III. Declaratio cap. LXVII ita statuit n. XI:
« Quod si³ praelati mora extra monasterium
tres menses excesserit, praesidens et visita-
tores illi monasterio administratorem depu-
tent »: et merito, cum scriptum sit: *verum-
tamen sanguinem eorum de manu tua requi-
ram*. Quod si etiam minori tempore sine
causâ abfuerint, sciant praelati, se et apud
Deum reos esse, et pro modo culpae a ca-
pitulo generali vel regimine puniendos,
dum constiterit, sine causâ eos abfuisse.

Alibi exemplo
sunt in regula-
ribus observan-
tiis.

IV. Praelati quam diligentissime animum
attendant ad ea quae habet regula in decla-
ratione cap. II, num. II, scilicet: « ut⁴ sub-
ditos reddant in obsequendo promptiores,
ipsi forma gregis fiant et duces agendorum.
Ergo regularibus observantiis, chori, refe-
ctorii, ceterisque semper intersint, etc. ».

¹ Edit. Main. legit *vacationes* (n. r.).

² Praeposit. a nos addimus (n. r.).

³ Tom. XIX, pag. 341 a (n. r.).

⁴ Ibid. pag. 280 a (n. r.).

Quod vero hoc loco abbatibus regiminis fa-
ciendum regula inculcat, id ipsum multo
magis a praelatis faciendum volumus, qui
nullam administrationem habent, vulgo dicti
nullatenenti.

V. Mutationes monachorum non aliâ ra-
tione fiant, quam uti mōnet regula in de-
claratione cap. LXVII, n. XV. Ut autem lites
omnes, quae mutationum causâ oriri solent,
de medio tollantur, statuimus, quotiescum-
que monachi mutati fuerint auctoritate ca-
pituli generalis vel diaetae, vel si extra tem-
pus congressus praelati aliquem mutare vo-
luerint, debere monasteria, a quibus mutati
discedunt, iis suppeditare omnia necessa-
ria. At si quis monachus extra id tempus
mutari petierit, ob eamque rem importune
institerit, etsi discedendi facultatem impe-
tret, nihil tamen a quopiam exigere possit.

De mutatione
monachorum de
monasterio ad
monasterium
non faciendâ.

VI. Cum decretis sacrae Congregationis
Concilii *De regularibus apostatis et eiectis*
anni MDCXXIV cautum sit, ut unaquaeque
religio habeat carceres in qualibet saltem
provincia ad incorrigibiles, scandalosos, cri-
minosos ac similes puniendos et coërcendos,
nos, etsi Congregationis monasteria singula
privatos habent carceres iuxta constitutiones
nostras, tamen, ad tutius et commodius
eosdem illos compescendos, assignamus pu-
blicos carceres in monasterio S. Petri de
Perusio pro provincia Romanâ et Etruscâ,
in monasterio Montis Casini pro provincia
Neapolitanâ, in monasterio S. Martini Pa-
normi pro Siculâ, in monasterio S. Salvato-
ris Papiæ pro Lombardâ et Ligurâ, in mo-
nasterio S. Iustinae de Paduâ pro Venetâ,
in quibus detineantur. Ne vero haec mo-
nasteria iniuste graventur, decernimus o-
mnia necessaria tam pro expensis ad trans-
missionem reorum, quam pro victu et ve-
stitû, ab illo monasterio tribuenda esse, cui
reus nomen dederit. Possint tamen prae-
lati ad aliquod ex assignatis monasteriis
extra provinciam mittere huiusmodi crimi-
nosos, dummodo abbas illius monasterii
consentiat, vel capitulum generale aut re-
gimen id praecipiat, salvis semper quae
de expensis dicta sunt.

De carceribus
publicis provin-
ciarum.

VII. Cum autem non levis inoleverit abu-

De modo pro-

cedendi contra
reos.

sus, quod nempe contra monachos, ut supra, delinquentes non conficiantur processus super qualitate et verificatione delicti ab eis commissi, volumus quod in posterum in singulis casibus, in quibus aliquis monachus crimen patrauerit ob quod puniri mereatur, superior processum per aliquem peritum confici omnino curet, deinde delinquentem pro modo culpae puniat; processum vero in archivio monasterii asservandum reponat, ut, si unquam idem monachus pluries deliquerit, huiusmodi processus inservire possit ad probandam ipsius incorrigibilitatem, quae ut plurimum ex defectu debitae probationis excluditur.

De cavendis
nimis expensis
aedificiorum et
et honesta re-
rum admini-
stratione.

VIII. Quia saepe ex nimia aedificandi cupiditate monasteria iacturam magnam patiuntur, meminerint praelati et visitatores ea quae de aedificiis praescribuntur in declaratione regulae¹, cap. LXVI. Quae quidem de aedificiis constituta intelligi atque observari volumus etiam de extraordinariis expensis in hospitibus suscipiendis, in ornatu monasteriorum et templorum, et aliis huiusmodi. Quare visitatores provinciae curent diligenter, ne hac in re a quopiam peccetur, et si deprehenderint aliquid contra laudati capituli declaratum admitti aut tentari, etiam extra actum visitationis certiores faciant patrem praesidem, qui statim aedificii et sumptuum progressum interdicat. Quod attinet ad reliquam monasteriorum administrationem, abbatibus in memoriam revocamus exactam observantiam constitutionum apostolicarum, maxime vero Alexandri VII *De cellerariis*², qua sub gravissimis poenis praescribitur, ut cellerarii³ nihil sine scientia et iussione abbatis agant, et abbates per se ipsos in rerum temporalium administratione non se ingerant.

Poenae con-
tra monachos
negociatores.

IX. Quoniam monachis negotiationes sacris canonibus interduntur, volumus omnino in eos animadverti, qui illicitis negotiationibus operam dare deprehensi fuerint, eisque infligi poenas cap. LVII nostrae regulae n. II statutas.

1 Edit. Main legit *regula* (R. T.).

2 Habetur in tom. XVI, pag. 59 b et seq. (R. T.).

3 Male edit. Main. legit *cancellarii* (R. T.).

X. Cum nihil magis monachorum vitae et monasticae disciplinae noceat, quam cupiditas honoris et dignitatis, teneantur praeses, visitatores, procurator generalis et monasteriorum superiores patribus definitoribus referre officia, commendationes, preces, quas deferunt saeculares, ecclesiasticae, aliaeque personae quaecumque, ut in Bullis Gregorii XIII et Urbani VIII contra ambientes, in favorem alicuius ad obtinendas praelaturas, dignitates, gradus, officia, administrationes, etc.; qua re cognita, patres definitores eligant duos vel tres abbates, qui accurate inquirant et examinent, si quis fuerit hac in re ita deliquisse denunciatus ut vere convinci possit censuras incurrisset; quod si cognoverint, serventur ea quae statuuntur in Bullis laudatis, sive ipse institerit apud praedictas personas, sive per medium alterius etiam nostrae Congregationis tales instantiae et sollicitationes praesumantur factae de eius commissione seu voluntate; si vero convinci nequeat, et gravis tamen suspicio remaneat, ad eius instantiam preces, commendationes, et officia adhibita fuisse, causa proponatur iterum discutienda in omnibus sequentibus capitulis generalibus, donec definiatur. Interea tamen, qui sic egisse in suspensionem cadit, nullis officiis aut dignitatibus, quae a patribus definitoribus aut capitulo generali conferuntur, ornari possit.

XI. Compertum est, bona temporalia, quae subsidia sunt huius vitae, multum conferre ad regularem disciplinam retinendam. Si igitur ad notitiam regiminis venerit praelatum aliquem male administrare bona monasterii, regimen moneat abbatem, et opportunis remediis curet ut eundem deterreat de sententia, et in officio contineat; quod si abbas desistere noluerit, pro modo contumaciae ad ulteriora procedat, usque ad suspensionem a regimine et deputationem administratoris. Hoc autem loco expedire iudicamus, si decretum alias emanatum a capitulo generali anni MDCCLXXII repetatur, et hic inseratur, quod sic habet: « Praesules monasteriorum in gravibus quibuscumque rebus, quales sunt constructiones, alie-

Vel am-
len-
tes.

De admini-
stratione tem-
poralium per
abbates.

nationes et similia, quae seniorum consensum possunt, ex iure teneantur deinceps eorum suffragium exquirere, non equidem praestandum voce vel nutu, sed secreto instituto scrutinio, ut, quae decet, sit cuique facultas libere proferendi quod in monasterii utilitatem cessurum iudicavit.

A saecularibus nihil exigendum pro victu et vestitu novitiorum.

xii. Ac ut facilius via pateat his qui monasticae vitae desiderio tenentur, eamque ingredi volunt, maxime laudamus morem illum et institutum nihil exigendi a saecularibus pro victu et vestitu novitiorum; quod ipsum institutum arripiendum et retinendum iudicamus, et omnino observari volumus, ut iocalia, pastus, pecuniae, aliaeque res, etiam ad divinum cultum vel usum communem monasterio applicandae non exigantur seu petantur ratione ingressus vel professionis iuxta constitutionem Urbani IV quae incipit *Sane in vinea Domini*, titulo *De simonia*, inter extravagantes communes, ne in poenas gravissimas, praecipue excommunicationis latae sententiae solo Romano Pontifici reservatae ibi inflictas incurrant.

De visitatoribus et modo visitationis.

xiii. Quamquam secundam partem constit. cap. ii, num. xiv, non tenentur patres visitatores in actu visitationis omnes de familia de rerum statu interrogare; quia tamen ob eam rem incommoda multa oriri possunt in detrimentum monasteriorum, et ne ullus suspicionibus, quae charitatis vinculum perumpere possunt, locus detur, necesse esse arbitramur, ut in posterum omnes de familia a patribus visitatoribus vocentur et interrogentur. Ipsi autem patres visitatores meminerint ea, quae ibidem num. xxiii praescribuntur, scilicet ne revelent testes, aut ea quae in visitatione acceperunt, sub poenam ibidem statutam. Caveant etiam diligenter ut acta visitationis ita custodiantur ut a nemine videantur aut legantur in monasteriis quae visitare porrexerint¹.

De computis reddendis, et proprietariis.

xiv. Ut autem patres visitatores rite recteque munus suum fungi queant, constituatur formula pro exhibendis computis monasteriorum capitulo generali², et definitores novis visitatoribus eadem computa con-

signent, qui in actu visitationis ea cum libris conferant, praesertim vero cum computis mensuris, quae in libro vulgo *la Vacchetta* continentur. Computa vero a dictis visitatoribus habita deferantur ad capitulum, ad hoc ut ibi a deputatis ad computa conferri valeant cum aliis computis quae singuli abbates coram ipsis praesentare tenentur. Quoniam vero iidem visitatores inter cetera inquirere debent, an proprietarii aliqui in monasterio inveniantur; propterea, magna adhibita diligentia, visitent capsam depositorum: qua in re, quae gravissimum momentum habet, ipsorum conscientiam oneramus.

Vestitus.

xv. Quoniam vero monachi non intimam solum animi modestiam, sed etiam externam praeseferre debent, hic repetendum censemus decretum editum n. ii in capitulo generali anni MDCCXXXVIII ad tollendos abusos qui in vestimentorum usu apud monachos irrepserint: « Summam etiam diligentiam adhibeant abbates in extirpandis abusibus, si qui forte apud monachos irrepserint in vestimentorum tum interiorum tum exteriorum usu, quae a religiosa simplicitate et humilitate aliena prorsus sunt; praesertim vero solertissime in eos inquirent et severissime etiam animadvertant, qui in pileis, caligis et calceis saeculi pompas religiosis viris indignas affectare videntur. Quod dictum quoque habeatur adversus eos, qui tonsuram monasticam minime gerunt, et ut hisce in rebus praelatis vigilantiam omnem exercent, eorum conscientiam oneramus. Addimus autem expresse huic decreto ut tunica sit undequaque clausa, iuxta Clement. *Ne in agro*, et nullo modo, vel in toto vel in parte, recedat ab antiqua nostra consuetudine. Urgemus etiam integram firmamque observantiam eorum, quae de vestimentis ornamentisque statuuntur in declaratione cap. LV nostrae regulae, quae ab omnibus omnino servari mandamus. Et quoniam liber esse nemo debet ab iis officiis reddendis quae pertinent ad vitae genus et regularis observantiae disciplinam, inviolabiliter servari volumus ea quae capite regulae nostrae LXIII num. xi, *De abbatibus*

¹ Forsan perrexerint (R. T.).

² Edit. Main. legit *generalis* (R. T.).

*titularibus praescribuntur*¹. Teneantur autem ad hanc rem abbates regiminis monere regimen et capitulum generale, quando, quomodo, et quibus in rebus titulares abbates ab officio discedunt.

Decanis in consortium administrationis per abbates suscipiendis.

xvi. Quia praelati decanorum operâ indigent, cum quibus onera partiantur, quique ad ea sustinenda sint pares, hortamur abbates, ut oeconomica officia sacerdotibus non conferant, nisi tempore sacerdotii sui per biennium continue² observantiae regulari vacaverint, aliâs facile poterit accidere, ne in decanos assumi possint ad praescriptum constitutionum cap. xxi, reg. num. iv.

Officio decanorum.

xvii. Qui autem decani sunt constituti sollicitudinem gerant super decanias suas, audiant culpas monachorum, et corrigant eos in mansuetudine et charitate. Visitatores vero, ut in actu visitationis de hac re sedulo inquirant, monemus et obsecramus.

Studiorum frequentatione.

xviii. Cum perspicuum sit, studiis facultatum mores hominum formari ac perfici, rectissime cavet regula cap. xlvii in declaratione num. vii: « Ne tamen³ adolescentes a studiis avocentur, nullus monachorum ad officia oeconomica sive temporalia, etiam domestica, assumi possit, nisi completo suae conversionis anno duodecimo⁴: quod quidem idcirco statutum est ut possint adolescentes studiis facultatum vacare. Quare etiam qui fuerint sacerdotio initiati scholas frequentare omnino teneantur, donec in studiis philosophiae, theologiae et sacrorum canonum secundum monasteriorum consuetudinem cursum confecerint: quae sacrorum canonum studia, ubi vigent, retineantur; ubi vero iacent, restituantur.

Votis commissorum.

xix. Quoniam invaluit falsa quaedam et male consulta opinio de votorum naturâ et vi, quae a nostris commissis emittuntur; ideo, ad eam avellendam, noverint omnes praelati, priores, decani ceterique monachi, commissos nostros fratrum nostrorum nomine censerî, et ip eodem numero computari, atque ideo, donec ipsis nobiscum a superioribus permanere permittitur, teneri

eos servare castitatem, paupertatem et obedientiam per vota simplicia: « a qua obligatione eo ipso solvantur, cum eos a Congregatione dimitti contigerit », uti expresse tradit declaratio cap. lviii nostrae regulae, num. xx¹. Nullo igitur modo solvi possunt a praedictis votis, nisi a Congregatione dimittantur. Hinc reprobanda eorum opinio qui volunt commissos ad arbitrium suum posse se liberare obligatione votorum, si decesserint², petita solum a praelato facultate. Hinc etiam expungenda est interpretatio (quae forte huic opinioni locum dedit) illorum verborum: *A qua obligatione eo ipso solvantur, cum eos a Congregatione dimitti contigerit*, quae per haec alia italice redduntur: *Dall'obbligazione de' quali sono subito sciolti, quando occorre che partono o sono cacciati dalla Congregazione*. Quae interpretatio irrepsit in regulâ italico idiomate semel et iterum Mantuae excusâ³.

xx. Causae autem et modus eos dimittendi habentur cap. xxviii regulae declarationis num. iv. Quare sciant praelati, ac ceteri, eos dimitti non posse, nisi modus eos expellendi regulâ praescriptus servetur, et causae subsint, praecipuae⁴ contumaciae, ob quas, iuxta constitutiones nostras, dimitti possunt; quae si non adsint, non possunt expelli. Ad compescendos autem eos, qui monastico ordini malis moribus magnopere obsunt, necesse ducimus monere patres visitatores et omnes praelatos, ut denuntient patribus definitoribus criminosos, scandalosos, inquietos et processatos, ut describantur eorum nomina in libro incorrigibilium, iuxta praescriptum constitutionis parte i, cap. xvii, n. xii.

Tandem ad tollendum abusum, qui apud eos irrepsit, qui, titulo solutae pecuniae pro victu putant, se liberos esse ab observantiis regularibus; praecipimus praelatis, ut, nulla solutae⁵ pecuniae habitâ ratione, nunquam iis permittant a choro, ceterisque observantiis regularibus abesse, sed ita ut cete-

Causa dimittendi commissorum.

¹ Tom. xix pag. 328 b (R. T.).

² Forsan *discesserint* (R. T.).

³ Edit. Main. legit *excussâ* (R. T.).

⁴ Videtur legendum *praecipue* (R. T.).

⁵ Pessime edit. Main. legit *solitae* (R. T.).

¹ Edit. Main. legit *praescribunt* (R. T.).

² Ed. M. legit *continuae pro continue* (R. T.).

³ Tom. xix pag. 315 b (R. T.).

ros de familiâ cogant eos de genere¹ in singulis, ne immunitatem ab observantiis regularibus vendere videant. Volumus etiam ut in singulis monasteriis mentalis oratio habetur ab omnibus, quae oratio ante vel post horae primae recitationem haberi solet.

Infirmorum
cura.

xxi. Ad extremum, ut infirmis fratribus provideatur, caveant abbates et cellerarii, ne, oeconomiae obtentu, infirmi fratres negligantur. Quod ne accadat, videant cap. xxxvi nostrae regulae, eiusque declarationes.

Haec autem iis, quae de mutationibus dicta sunt, addiendi censemus:

Additiones ad
supraposita de-
creta.

Si quis monachus extra monasterium, cui rite recteque assignatus est de familiâ, antequam ad illud pervenerit, infirmatur et moritur, monasterium professionis consequatur spoliū, et teneatur ad omnes expensas ad victum, ad medicamenta, ad funus necessaria. Si vero convalescat, et ad monasterium, cui rite assignatus est, pervenerit, idem monasterium quemadmodum ius spoliū acquirit, ita teneatur ad omnes expensas commemoratas. Illi vero rite mutati intelliguntur, quos, vel in comitiis sive maioribus sive minoribus, vel extra illa, ubi necessitas vel utilitas postulet, praelati ad se invicem mittunt communi consensu, adiunctâ patris praesidis vel visitorum facultate, uti praescribunt constitutiones nostrae, part. II, cap. IV.

Ut autem praelati sint in mutationibus rite faciendis cautiore, statuimus ut, si monachus mutetur posthabitis conditionibus enarratis, et infirmetur extra monasterium, sive moriatur, sive convalescat, a monasterio, cui assignatus erat, omnes expensae solvantur, et nihilominus ius spoliū amittat, quod acquiritur monasterio professionis, dummodo ad monasterium, ad quod minus recte transmittebatur, non pervenerit.

II. Si quis nostrae Congregationis monachus a monasterio absit, cui assignatus est de familiâ, quacumque de causâ absit, moriatur extra illud, sive in monasteriis nostris, sive in aliis locis, quidquid apud mortuum reperitur, pertineat ad monasterium cui assignatus est.

¹ Videtur leg. se gerere pro de genere (R.T.).

III. Quandocumque aliquis monachus, infirmitatis obtentu, petierit in aliquâ ex grangiis monasterii morari, ei non annuat superior nisi medicorum iuratâ fide testetur et constet observantiam regularem sibi notabiliter obesse; quo casu superior votis annuat et indulgeat, quamdiu infirmitatis causa postulat.

Quicumque autem abbates, alique nostris monasteriis et Congregationi praefecti, cuiuscumque dignitatis, gradus et praeeminentiae fuerint, si graviter in unoquoque praemissorum, etiam unicâ vice, desides fuerint, aut alio modo deliquerint, voce activâ et passivâ sint ipso facto privati: salvis manentibus gravioribus poenis excommunicationum, suspensionum, inhabilitatum, ac ceterarum, quae contra aliqua¹ praemissorum per Bullas apostolicas et nostras constitutiones statuta sunt. Ut autem executioni demandentur, patres visitatores capitulo generali deferre teneantur quae in actu visitationis contra praemissa patrata esse observaverint, quod munus, si diligentissime non expleverint, ipsi quoque eidem poenae ipso facto obnoxii sint. Quapropter patres visitatores, dum comitorum nostrorum more congregati fuerint, super his rebus exactissimum examen instituere teneantur.

Ego D. SERAPHINUS a Matherâ abbas, et electus cum ceteris subscriptis ad examen.

Ego D. IOSEPH ab Augustâ, abbas.

Ego D. BERNARDUS a Pharâ, abbas.

Ego D. CYPRIANUS a Brixîâ, abbas.

Ego D. FORTUNATUS a Mutinâ, abbas.

Ego D. AUGUSTINUS a Brixîâ, abbas.

Ego D. HIERONYMUS a Ianuâ, abbas.

Nos infrascripti definitores electi in capitulo generali Congregationis Cassinensis habito in monasterio S. Iustinae de Paduâ hoc anno MDCCXXXVIII omnia haec et singula amplectimur et approbamus, eademque demisso animo subicimus supremo iudicio sanctissimi domini nostri Papae Clementis XII feliciter regnantis, humillimis precibus sanctissimum ipsum dominum nostrum rogantes, ut ea dignetur apostolicae auctoritatis

Approbatum
capituli gene-
ralis.

¹ Edit. Main. legit aliquam pro aliqua (R.T.).

praesidio ac munimine roborare, additis, mutatis, correctis iis omnibus quae summae Sanctitatis suae sapientiae addenda, mutanda, corrigenda videantur.

Datum in comitiis nostris maioribus habitis in monasterio S. Iustinae de Padua, die IV maii anno MDCCXXXVIII.

D. JOSEPH MARIA a Papiâ, abbas et praesidens.

D. CAROLUS a Perusio, abbas et definitor.

D. ILDEPHONSUS a Neapoli, abbas et definitor.

D. LUCIDUS MARIA a Mantua, abbas et definitor.

D. DOMINICUS a Messanâ, abbas et definitor.

D. VIRGINIUS a Brixia, abbas et definitor.

D. IOANNES PLACIDUS a Saviliano, abbas et definitor.

D. IOANNES ANTONIUS a Padua, abbas, definitor et scriba capituli.

Petita a Papâ
dictorum decre-
torum confirma-
tio.

§ 2. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat, dictus Michaël Franciscus procurator generalis decreta huiusmodi, quo firmitus subsistant et servantur exactius, apostolicae confirmationis nostrae patrocinio communiri summopere desideret:

Concedit Cle-
mens.

§ 3. Nos, ipsius Michaëlis Francisci procuratoris generalis votis hac in re, quantum cum Domino possumus, favorabiliter annuere volentes, eumque a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innotatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censes, supplicationibus eius nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, omnia et singula decreta praeinserta, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, confirmamus et approbamus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiicimus, ac omnes et singulos

iuris et facti defectus, si qui desuper quomodolibet intervenerint, supplemus.

§ 4. Decernentes, eadem statuta, ac praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quodcumque spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos etiam causarum palatii apostolici auditores iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Etque per-
petuo servari
mandat.

§ 5. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon dictae Congregationis, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Obstantibus
derogat.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die XIII septembris MDCCXXXVIII, pontificatus nostri anno IX.

Dat. die 13 septembris 1738, pontif. anno IX.

CCXLI.

Confirmatio constitutionum in formâ communi Ordinis fratrum S. Ioannis Dei Congregationis Hispaniae.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Capitulum ge-
nerale huius
Ordinis habet
facultatem mo-
tandi, adlendi,
etc. constitutio-
nes.

§ 1. Cum, sicut dilecti filii prior seu superior generalis et definitorium Ordinis fratrum sancti Ioannis Dei Congregationis Hispaniae nobis nuper exponi fecerunt, quod, per capitulum cui constitutionum Congregationis et Ordinis huiusmodi auctoritate apostolica in forma specifica tam a felicitis recordationis Paulo Papa V sub vi augusti MDCXI quam a recolendae memoriae Urbano Papa VIII praedecessoribus nostris sub ix novembris MDCXL respective diebus confirmatarum, generali et intermedio capitulis Congregationis et Ordinis huiusmodi facultas mutandi, corrigendi, addendi et reformandi easdem constitutiones concessa reperitur, hac tamen lege ut earundem constitutionum sic mutatarum, correctarum, adiectarum et reformatarum a Sede Apostolica confirmatio petenda foret:

Factas itaque
nuper additio-
nes nonnullas.

§ 2. Ipsi vero exponentes, pro felici earundem Congregationis et Ordinis regimine et directione, nonnullas additiones per Congregationem venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium negotiis et consultationibus episcoporum et regularium praepositam revisas, examinatas et approbatas condiderint:

Prior et de-
finitorium apo-
stolica confir-
matione con-
muniri petunt.

§ 3. Ac proinde exponentes praedicti, quo illae firmitus subsistant, apostolicae confirmationis nostrae patrocinio communiri summopere desiderant:

Praestat Pon-
tifex.

§ 4. Nos, specialem ipsis exponentibus gratiam facere volentes, et eorum singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et

absolutas fore censentes, supplicationibus eorum nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, constitutiones, additiones et statuta praedicta, dummodo tamen sint in usu, ac licita et honesta, ac a supradicta Congregatione cardinalium approbata, sacrisque canonibus et Concilii Tridentini decretis ac constitutionibus apostolicis non adversentur, nec monopolis ansam praebeant, apostolica auctoritate, tenore praesentium, approbamus et confirmamus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiicimus.

§ 5. Decernentes, constitutiones, additiones seu statuta huiusmodi, ac praesentes litteras, firma, valida et efficacia existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac ab omnibus et singulis, ad quos spectat et spectabit in futurum, inviolabiliter observari, sicque per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Easque sic
correctas addi-
tasque servari
praecipit.

§ 6. In contrarium facientibus non obstantibus quibuscumque.

Obstantibus
derogat.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die XVIII septembris MDCCXXXVIII, pontificatus nostri anno IX.

Dat. die 18 septembris 1738, pontif. anno IX.

CCXLII.

Tredecim sextis feriis a S. Francisco de Paula institutis, vulgo ut dicitur La divozione de' tredici venerdi, pia exercitia ab eodem S. Francisco proposita facientibus, indulgentia plenaria concessa.

**Clemens episcopus,
servus servorum Dei,
ad perpetuam rei memoriam.**

Prooemium.

Adiutor et susceptor noster pater misericordiarum, *qui potens est omnia facere superabundanter quam petimus aut intelligimus*, magnâ fidelibus adest virtute, cum, ad ipsum clamantes, illinc in necessitatibus levamen expectant, unde salutis sumpserunt exordium. Quamobrem apostolici muneris nostri partes in iis libenter interponimus, per quae fideles, ut praefertur, superstantes, bonus odor effecti, preces valeant effundere suaviores, eisque exinde, benedicente Domino, votiva promptius proveniant auxilia.

Exercitium tredecim sextarum feriarum S. Francisci institutum.

§ 1. Cum itaque, sicut accepimus, gloriosus S. Franciscus de Paulâ, Ordinis fratrum Minimorum nuncupatorum fundator, tum in humanis agens, dum nonnulli christifideles, suis necessitatibus prospicere cupientes, eiusdem sancti viri apud Deum officia ac preces postulerent, quemdam ipse precandi ritum, vulgo ut dicitur *La divozione de' tredici venerdi*, in domini nostri Iesu Christi ac beatorum duodecim Apostolorum gloriam et honorem eo sensu instituerit qui sequitur, videlicet: *Tredici venerdi vi confesserete, e riceverete il santissimo Sacramento nella messa che farete dire per quella necessità nella quale ricorrete al Signore. Reciterete tredici Pater noster e tredici Ave Maria in onore e riverenza di Gesù Cristo benedetto e dei suoi dodici apostoli. Porrete due candele di cera bianca nella vostra messa, in segno delle due virtù, Fede e Speranza; terrete in mano un'altra candela accesa, mentre reciterete le orazioni e si dice la messa, in protestazione della Carità con cui doveti amar il Signore e chiedergli le grazie, perchè in questa maniera vi si concederanno i fini dei*

vostrî giusti desidert: cumque, sicut pariter accepimus, misericors Deus piis eorumdem christifidelium ad praesentis ritus formam precantium votis ita se propitium exhibuerit et liberalem, ut ipsi christifideles gratiam in opportuno auxilio feliciter invenerint: proptereaque sanctum ritus huiusmodi exercitium a nonnullis praedecessoribus nostris ac S. R. E. cardinalibus, necnon regiâ imperialique dignitate fulgentibus personis, aliisque cuiusvis status, gradus et conditionis christifidelibus ubique terrarum eo eventu peractum fuerit, et in dies respective peragatur, ut via adeundi cum fiducia ad montem sanctum Domini, et intra supernae exauditionis sacrarium a praefato S. Francisco monstrata esse noscatur:

§ 2. Nos igitur, sanctum ritus huiusmodi exercitium plurimum in Domino commendantes, ipsosque fideles illud devote peragentes specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, supplicationibus etiam pro parte dilecti filii Idelfonsi Gutierrez Gavino, procuratoris generalis seu zelosi dicti Ordinis, nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, de omnipotentis Dei misericordia ac beatorum Petri et Pauli apostolorum eius auctoritate confisi, omnibus et singulis utriusque sexus christifidelibus, qui in tredecim sextis feriis a praefato S. Francisco de Paulâ, ut praefertur, institutis, vere poenitentes et confessi ac sacrâ communione refecti fuerint, semel tantum in anno, in unâ ex dictis tredecim sextis feriis per eos ad cuiusque libitum respective eligendâ, indulgentiam plenariam ac omnium et singulorum peccatorum suorum veniam et remissionem apostolicâ auctoritate misericorditer in Domino tenore praesentium perpetuo concedimus et elargimur, in singulis vero ex reliquis tredecim

Illud peragentibus propositae indulgentiae.

sexlis foris huiusmodi septem annos et totidem quadragenas de eis iniunctis vel alijs quomodolibet debitis poenitentijs apostolicâ auctoritate et tenore similibus etiam misericorditer in Domino relaxamus.

Derogatio
contrariorum.

§ 3. Non obstantibus nostris et Cancellariae Apostolicae regulis de indulgentiis et clausulis in illis ponendis, aliisque constitutionibus et ordinationibus apostolicis; ceterisque contrariis quibuscumque. Praesentibus perpetuis futuris temporibus duraturis.

Transumptis
data fides.

§ 4. Volumus autem quod earumdem praesentium transumptis, etiam impressis, procuratoris generalis seu zelosi dicti Ordinis, vel notarii publici et personae alicuius in dignitate ecclesiasticâ constitutae, vel pro tempore existentis correctoris generalis dicti Ordinis sigillo munitis, eadem prorsus fides ubique locorum in iudicio et extra adhibeatur, quae adhiberetur eisdem praesentibus si essent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, anno Incarnationis dominicae MDCCXXXVIII, kalendis octobris, pontificatus nostri anno IX.

Dat. die 28 septembris 1738, pontif. anno IX.

PH. FRIGERIUS. — M. FERRAVILLA.

Visa de Curia

M. A. CAFFARELLUS.

A. MELOCARDUS.

Loco † plumbi.

F. A. PAULETTUS,

R. C. A. secr.

Registrata in Camera Apostolicâ.

CCXLIII.

Moderatio cuiusdam decreti particularis Congregationis super electione religiosorum Ordinis fratrum Eremitarum S. Augustini provinciarum Indiarum.

Clemente Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Exponi nobis nuper fecit dilectus Filius Nicolaus Antonius Schiaffinati, prior generalis Ordinis fratrum Eremitarum sancti Augustini, quod alijs, nempe die XXIV iulii MDCXCIV, in Congregatione particulari nonnullorum tunc existentium S. R. E. cardinalium, a felice recordatione Innocentii Papae XI, praedecessore nostro, ad instantiam tunc pariter existentis procuratoris generalis eiusdem Ordinis, deputatâ pro moderatione decretorum de apostatis et electis a Congregatione tunc quoque existentium cardinalium Congregationis Concilii Tridentini interpretum et a bonae memoriae Urbano Papa VIII itidem praedecessore nostro editorum, sancitum fuit inter alia, ut facultas, in dictis decretis de anno MDCXXIV prioribus et magistris generalibus Ordinum regularium concessa ad eiiciendos incorrigibiles de consilio et assensu sex ex gravioribus patribus in congregationibus generalibus eorumdem Ordinum eligendis, etiam ad priores et ministros provinciales extenderetur, qui, electis pariter in congregationibus provincialibus sex gravioribus de provinciâ religiosis a generali Ordinis pro tempore existente confirmandis, de illorum consilio et assensu causas huiusmodi cognoscere, et, ad effectum eiiciendi incorrigibiles suae provinciae et electionem pronunciandi, accedente approbatione generalis, definiri deberent; salvâ tamen semper huius Sanctae Sedis et eiusdem Congregationis in casu recursus et appellationis auctoritate.

A Congregatione particulari editum decretum super modo cognoscendi causas eiiciendi ab Ordine incorrigibiles.

§ 2. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat, in provinciis Indiarum eiusdem Ordinis, ob summam earum ab hac almâ Urbe distantiam, ap-

Conditiones in praefato decreto appointae per provincia Indiarum exequi difficillime possunt.

1 Aptius lege definire (R. T.).

probatio prioris generalis pro tempore existentis huiusmodi, sive electionis iudicum expulsionis in capitulis provincialibus provinciarum praedictarum factae, sive sententiae a prioribus provincialibus huiusmodi et praedictis sex patribus latae, absque magno provinciarum praedictarum detrimento et incommodo expectari non possit, utpote quia reus, cuius incorrigibilitas probata et uti talis per sex menses in carcere detentus fuerit, per longum tempus in eadem carceris custodia detineri non potest usque dum prior provincialis praedictus approbationem sive electionis iudicum sive sententiae iuxta enunciatum decretum a priore generali praefato accipiat, minusque fieri potest ut reus libertati tradatur, ne ceteros suo pravo exemplo corrumpat;

Prior generalis Ordinis supplicat pro earum moderatione.

§ 3. Ac propterea dictus Nicolaus Antonius prior generalis, supradictum decretum memoratae Congregationis particularis a nobis moderari, plurimum desideret: nobis propterea humiliter supplicari fecit ut¹ sibi in praemissis opportune providere et ut infra indulgere de benignitate apostolicâ dignaremur.

Concedit Clemens.

§ 4. Nos igitur, ipsum Nicolaum Antonium priorem generalem specialibus favoribus et gratis prosequi volentes, et a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censes, huiusmodi supplicationibus inclinati, modernis et pro tempore existentibus earundem provinciarum Indiarum dicti Ordinis prioribus provincialibus, ut ipsi, servatis de iure ser-

¹ Coniunct. ut nos addimus (A. T.).

vandis et aliis in supradictis decretis contentis, non expectatâ eiusdem Nicolai Antonii aliorumque dicti Ordinis pro tempore existentium priorum generalium approbatione sive electionis sex coniudicum sive sententiae expulsionis ab ipsis coniudicibus unâ cum provincialibus praedictis latae, sive ferendae cum effectu, incorrigibiles eicere possint et valeant, facultatem auctoritate nostrâ apostolicâ, tenore praesentium concedimus et impartimur.

§ 5. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, plenissime suffragari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Clauulae pro huiusmodi moderationis firmitate.

§ 6. Non obstantibus praemissis, ac constitutionibus apostolicis, necnon Ordinis et provinciarum huiusmodi, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permanentibus, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Contrariarum derogatio.

§ 5. Volumus autem ut earundem praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius

Transumptis danda fides.

notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiasticâ dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides tam in iudicio quam extra illud ubique locorum adhibeatur, quae praesentibus ipsis adhiberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die VII octobris MDCCXXXVIII, pontificatus nostri anno IX.

Dat. die 7 octobris 1738, pontif. anno IX.

CCXLIV.

Facultas superioribus Ordinis Cisterciensis Congregationis Portugalliae applicandi spolia monachorum collegio universitatis Colimbriensis pro dissolvendo aere alieno.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam,

Iuxta constitutiones Ordinis, defunctorum spolia superiorum arbitrio applicanda.

§ 1. Exponi nobis nuper fecit dilectus filius modernus procurator generalis monachorum Ordinis Cisterciensium Congregationis Portugalliae, quod per statuta seu constitutiones Ordinis et Congregationis praedictorum, auctoritate apostolicâ confirmatas, cautum reperitur, ut, quoties aliquem ex monachis Congregationis praedictae ab hac luce migrare contigerit, illius spoliū et haereditas ad arbitrium superiorum dictae Congregationis applicari soleat.

Aere alieno gravato collegio Cisterciensium attribuit ea petit procurator generalis.

§ 2. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat, de praesenti collegium universitatis studii generalis civitatis Colimbriensis, dictae Congregationis unica domus in qua studia vigent, aere alieno gravata reperitur, eaque de causâ in illâ studentes et magistri necessarii non inveniantur, ac propterea non leve dictae Congregationi detrimentum inferatur, dictusque procurator generalis, a-

gnoscebat quod Congregationi praedictae nullus modus dissolvendi aes alienum praedictum et in dicto collegio magistrōs ac studentes necessarios manutenendi suppetat, quam ut spolia et haereditates praedictas illi usque ad satisfactionem aeris alieni huiusmodi applicentur, nobis propterea humiliter supplicari fecit ut sibi in praemissis opportune providere et ut infra indulgere de benignitate apostolicâ dignaremur:

§ 3. Nos igitur, ipsum procuratorem generalem specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censes, huiusmodi supplicationibus inclinati, modernis et pro tempore existentibus superioribus generalibus dictae Congregationis, aliisque ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, ut ipsi, eveniente obitu cuiuscumque monachi eiusdem Congregationis, illius spoliū et haereditatem collegio universitatis studii generalis civitatis Colimbriensis Congregationis praedictae, usque ad integram satisfactionem aeris alieni quo dictum collegium gravatum existit, libere et licite applicare possint ac debeant, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, concedimus et indulgemus, ac, quatenus opus sit, etiam in virtute sanctae obedientiae praecipimus et mandamus.

§ 4. Decernentes, easdem praesentes litteras firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis

Concedit Clemens.

Sicque semper et ubique servari praecipit.

inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscunque iudices ordinarios et delegatos etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane, si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Contraria tollit.

§ 5. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ac, quatenus opus sit, dictae Congregationis, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die XVII novembris MDCCXXXVIII, pontificatus nostri anno IX.

Dat. die 17 novembris 1737, pontif. anno IX.

CCXLV.

Abrogatis litteris Clementis Papae XI super servitio ecclesiae patriarchalis Ulyssiponensis occidentalis editis, et ab Innocentio Papa XIII in formâ Rationi congruit expeditis, necnon kalendario in illis inserto, patriarchae Ulyssiponensi novi kalendarii conficiendi ac novam servitii formam constituendi, praeviis tamen consilio et consensu Portugalliae et Algarbiorum regis, auctoritas conceditur.

**Clemens episcopus,
servus servorum Dei,
ad futuram rei memoriam.**

Prooemium

Ad sacrosanctam B. Petri cathedram, summâ dispositione illius qui caelestia pariter et terrena omnia providentissime gubernat, meritis licet imparibus evecti, inter multiplices pastoralis vigilantiae nostrae curas, quibus iugiter premimur, in illam praesertim incumbimus, ut in universis Orbis ecclesiis divinus cultus accrescat, illarumque ministri Altissimo alternatim concinentes nunquam intermissas, quae in caelesti Hierusalem Deo resonant, laudes, quantum humana sinit imbecillitas, aemulentur: peculiarem tamen pontificii muneris nostri sollicitudinem adhibemus, ut in iis potissimum, quae conspicuo patriarchalis tituli honore illustrantur, ac frequenti nobilium interventu atque regali personarum praesentia decorantur, divinum servitium magnificentius expleatur, et, ad charitatem erga Salvatorem nostrum in christifidelium cordibus excitandam, divina officia eâ qua par est pietate et maximâ cum honorificentia persolvantur.

§ 1. Cum itaque aliâs (postquam, sicut accepimus, felicitis recordationis Clemens Papa XI praedecessor noster, sub datum videlicet v kalendas octobris, pontificatus sui anno XX, quartam omnium et singulorum fructuum, reddituum et proventuum naturalium, industrialium et civilium a patriarchali Ulyssiponensi occidentali, archiepiscopalibus et episcopalibus in Portugalliae et Algarbiorum regnis existentibus ecclesiis, necnon quotas respective partes a novem dignitatibus et viginti octo canonicatibus et praebendis in certis eiusdem Portugalliae regni collegiatis ecclesiis existentibus, et in litteris eiusdem Clementis praedecessoris expressis, motu suo pro-

Clemens XI
capitulo pa-
triarchalis ec-
clesias, super
erectae ac do-
latae, chori ser-
vitium praescri-
bit, eiusque lit-
teras publicat
roboratque In-
nocentius XIII.

prio ac de apostolicae potestatis plenitudine perpetuo disiunxerat, separaverat et dismembraverat, ac quatuor ecclesiarum seu capellarum, aut beneficiorum, prioratum seu abbatiarum nuncupatorum, per dictum Clementem praedecessorem suppressarum et extinctarum, et suppressorum et extinctorum, respective fructus, redditus et proventus, dignitatibus ac canonicatibus et praebendis ac duodecim beneficiis ecclesiasticis patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis, in illarum et illorum respective dotis augmentum, sub certis modo et formâ inibi expressis, motu pari respective applicaverat et appropriaverat, ac respective annexerat et incorporaverat; et ut in eâdem patriarchali ecclesiâ Ulyssiponensi occidentali divina officia, eâ qua decet assistentiâ ac ministrorum ecclesiasticorum numero et copiositate, prout patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis decus et magnificentia exposcit, celebrarentur, et divinum servitium nullatenus negligeretur, sed dignitates ac canonicalus et praebendas ceteraque beneficia ecclesiastica in eâ obtinentes divinas laudes suis debitis temporibus ac modis maximâ christifidelium ibi assistentium cum aedificatione persolverent, quamdam subinde super eorum celebratione normam ac certum dierum et functionum kalendarium motu simili statuerat atque praescripserat; volueratque insuper quod applicatio et approbatio praefatae, aliaque in augmentum praebendarum et beneficiorum in dictâ patriarchali ecclesiâ Ulyssiponensi occidentali existentium praefatorum respective dotis concessa et elargita, locum minime habere valerent, nisi prius, quae per suas itidem litteras circa dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis servitii formam iuxta praefati

kalendarii ordinem et mulctarum ac poenarum contra inobservantes decretarum dispositionem constituta extiterant, debitae exequutioni demanderentur: super quibus per dictum Clementem praedecessorem, ut praefertur, dispositis, ex eo quia eius obitu superveniente litterae apostolicae confectae minime existerant, ne de illorum validitate haesitaretur, illaque debito frustrarentur effectui, piae memoriae Innocentius Papa XIII itidem praedecessor noster per binas in formâ *Rationi congruit*, sub datum videlicet xv kalendas iunii, pontificatus sui anno 1, desuper expeditas litteras, applicationem et appropriationem praefatas, ceteraque super dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis chori servitio et kalendarii dispositione, ut supra, a dicto Clemente praedecessore statuta et ordinata, apostolicae firmitatis munimine roboraverat:

§ 2. Et ex eo quod secundodictae eiusdem Clementis praedecessoris litterae ex certis rationabilibus et nobis notis causis exequutioni minime demandatae fuerant; proptereaque quartae patriarchalis Ulyssiponensis occidentalis, archiepiscopatum et episcopatum ecclesiarum praefatarum, et quotarum fructuum, reddituum et proventuum praefatorum dignitatum ac canonicatum et praebendarum, necnon quatuor ecclesiarum seu capellarum vel beneficiorum praefatorum per dictum Clementem praedecessorem ut praefertur suppressorum et extinctorum, ac dignitatibus et canonicatibus et praebendis ac duodecim beneficiis ecclesiasticis dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis ut praefertur respective unitorum, applicatorum et appropriatorum, applicatio et appropriatio effectum suum sortitae minime fuerant) nos, per infra-scriptas nostras litteras, ad evellendam

Gratias ac privilegia aliâs a dicto Clemente et concessa, confirmat Clemens XII.

omnem dubietatis et controversiae occasionem, primodictarum Clementis praedecessoris litterarum debitae intimationis illarumque tempore habili exequutionis et quemlibet alium defectum sanantes, easque ad quoscumque effectus extrinsecos, quatenus opus esset, reintegrantes, ac plenarie et plenissime revalidantes, dignitatibus, necnon capitulo et canonicis dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis motu simili concesserimus et indulserimus, ut ipsi primodictarum litterarum effectum omnibusque et singulis gratis et indultis eis in primodictis eiusdem Clementis praedecessoris in forma praefata expeditis litteris concessis et elargitis gauderent, fruerentur ac uterentur, perinde ac si praefata dicti Clementis praedecessoris voluntas in primodictis litteris nullatenus apposita fuisset,

§ 3. Eisdemque dignitatibus, ac capitulo et canonicis, necnon beneficiatis dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis, ut ipsi ex patriarchali Ulyssiponensi occidentali ac archiepiscopali ecclesiis, necnon ex dignitatibus ac canonicatibus et praebendis collegiatarum respective ecclesiarum, ac ex prioratibus seu abbatibus praefatis in primodictis praefati Clementis praedecessoris in forma praefata expeditis litteris ut praefertur designatis, quae et qui vacantes tunc reperiebantur, quantum legitime oporteret ad complementum summae ex primodictarum Clementis praedecessoris litterarum tenore in dignitatum, canonicorum et beneficiatorum dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis utilitatem respective applicatae et appropriatae, a die datae primodictarum dicti Clementis praedecessoris litterarum, videlicet v kalendas octobris, pontificatus sui anno xx, quoad illas et illos, quae et qui tunc vacabant,

quo vero ad alias et alios, quae et qui deinceps vacaverant, vel deinceps vacaturae vel vacaturi erant, ab illarum seu illorum respective vacationis respective die respective computandae,

§ 4. Pro maiori dignitates ac canonicatus et praebendas dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis pro tempore obtinentium decem et commodiori sustentatione, loco quartae partis patriarchalis Ulyssiponensis occidentalis, archiepiscopatum et episcopatum ecclesiarum praefatarum fructuum, reddituum et proventuum naturalium, industrialium et civilium a praefato Clemente praedecessore ut praefertur separatae et dismembratae, eiusdemque patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis dignitatibus et canonicatibus et praebendis applicatae et appropriatae, tertiam eorundem respective fructuum, reddituum et proventuum partem, necnon omnes et singulos fructus, redditus et proventus decem dignitatum, ac quotas respective partes fructuum, reddituum et proventuum nonnullarum aliarum dignitatum, canonicatum, praebendarum et canonicatum cum dimidia praebenda, seu dimidiorum canonicatum cum dimidiis praebendis, in quibusdam dicti regni Portugalliae metropolitanis et cathedralibus ecclesiis existentium, ab ultimodictis dignitatibus ac canonicatibus et praebendis, ac canonicatibus cum dimidia praebenda, seu dimidiis canonicatibus cum dimidiis praebendis per nos dismembratos, separatos et seiunctos, ac dismembratas, separatas et seiunctas, eiusdemque patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis dignitatibus ac canonicatibus et praebendis, sub certis modo et forma inibi expressis, respective applicatos et appropriatos, ac respective applicatas et appropriatas (ea tamen lege quod dignitates ac capitulum et

Huiusmodi quartam partem extendit ad tertiam.

Elque de novo applicat quartam partem reddituum beneficiorum, etc. prius concessam in litteris Clementis XI.

canonici dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis fructus, redditus et proventus, tam a nobis, ut praefertur, quam a praefato Clemente praedecessore per illius primodictas litteras ut praefertur respective dismembratos, separatos et seiunctos, ac applicatos et appropriatos praefatos, loco depositi, donec et quousque nova servitii in eadem patriarchali ecclesia Ulyssiponensi occidentali a dictis dignitatibus et canonicis ac beneficiatis eiusdem patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis a dictis dignitatibus et canonicis ac beneficiatis eiusdem patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis praestandi forma, cum opportunis ordinationibus, a nobis aut Romanis Pontificibus successoribus nostris praescriberetur, illaque debita exequutioni demandaretur, et huiusmodi depositi distribuendi ratio insimul statueretur, integros et intactos, deductis dumtaxat necessariis expensis, asservare deberent, et asservari facerent) percipere, exigere et levare, et ad effectum perceptionis huiusmodi plenissime assequendum omnibus et singulis privilegiis, indultis, facultatibus, immunitatibus, exemptionibus, aliisque gratiis tam in primodictis eiusdem Clementis praedecessoris, quam in infrascriptis nostris desuper confectis litteris quomodolibet respective concessis et impartitis, perinde ac si insimul non autem separatim concessa et impartita fuissent, eaque tam in primodictis praefati Clementis praedecessoris, quam in eisdem nostris desuper confectis respective litteris totaliter inserta ac specialiter expressa fuissent, aequae ac pariformiter uti, frui et gaudere libere et licite possent et valerent, apostolica auctoritate, motu pari, concesserimus et indulserimus, prout in nostris, sub datum videlicet apud S. Mariam Maiorem, anno Incarnationis

dominicae MDCCXXXVII, VI idus februarii, pontificatus nostri anno VIII, desuper expeditis litteris plenius continetur¹:

§ 5. Nos itaque, qui, ut bonorum omnium largitori debitis temporibus et horis in singulis praesertim patriarchalibus ecclesiis a cunctis christifidelibus, ac signanter earundem ecclesiarum servitio adscriptis, solemnes², iuxta catholicam Ecclesiae morem, laudes persolvantur, enixe concupiscimus, ne diutius illarum celebrationis norma ut praefertur praescribenda differatur, ipsique moderni et pro tempore existentes dignitates ac capitulum et canonici et beneficiati eiusdem patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis gratiis et largitionibus, tam a praefato Clemente praedecessore per suas, quam a nobis per praefatas nostras litteras sibi concessis, tandem fruantur et gaudeant, opportune providere volentes, ac secundodictis praefati Clementis praedecessoris super divinorum officiorum, missarum solemnum et privatarum, aliarumque functionum in dicta patriarchali ecclesia Ulyssiponensi occidentali vel extra eam pro tempore celebrandorum et celebrandarum formam editis litteris derogantes, ac kalendarium in illis insertum annullantes, praefatasque litteras, perinde ac si non emanassent, suum effectum minime sortiri debere, ac capitulum et canonicos ac beneficiatos praefatos dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis ad illarum observationem minime teneri, nec obligatos existere, declarantes et decernentes, motu simili, non ad alicuius nobis super hoc oblatae petitionis instantiam, sed ex certa scientia meraque deliberatione nostris, ac de apostolicae potestatis plenitudine, ve-

Abrogata forma servitii per dictum capitulum illi ecclesiae praestandi et a Clemente XI praescripti, patriarchae facultatem concedit eam stabilendi cum consilio regis.

¹ Quam vide supra pag. 317 b et seq.; aut leg. dat. ann. 1738, aut pontif. ann. 7 (N. T.).

² Edit. Main. legit *solemne* (N. T.).

nerabili fratri nostro Thomae S. R. E. presbytero cardinali patriarchae Ulyssiponensi occidentali, eiusque successoribus, ut ipse et ipsi etiam tamquam Sedis Apostolicae praefatae delegatus et delegati, cum consilio tamen et consensu, et non aliàs, carissimi in Christo filii nostri Ioannis hoc nomine V moderni Portugalliae et Algarbiorum regis illustris, cuius sedulam ad divinum cultum in dictâ patriarchali ecclesiâ Ulyssiponensi occidentali eiusque decorem et magnificentiam toto studio promovendum curam maturo animo revolvimus, novum pro dignitatibus ac canonicis et beneficiis dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis kalendarium dierum et functionum, aliaque¹ tam circa residentiam, diesque vacationum, ac numerum eorum, quibus abessendi facultas uno eodemque tempore permitti debeat, necnon distantias, intra quas diebus et functionibus in dicto kalendario vel extra illud praescribendis interesse, legitimo tamen et a iure approbato impedimento cessante, et nisi ab eorundem Portugalliae et Algarbiorum rege vel reginâ, nunc et pro tempore existentibus, ad aliquod sacrum seu ecclesiasticum ministerium publicum peragendum accersiti, aut ab ipso Thoma cardinali patriarchâ eiusque successoribus ut infra vocati abfuerint, omnino teneantur, quam circa alia munia, functiones et officia a dignitatibus ac canonicis et beneficiis praefatis obeunda, opportunas dispositiones facere, condere ac statuere, mulctasque et poenas in pecuniâ, et in diebus vacationum, aut in alterutro, pro kalendarii et dispositionum huiusmodi firmitati observantiâ et executione, imponere, ipsasque mulctas et poenas, diesque statutos, functiones ac distantias, ceteraque quaecumque,

¹ Legendum *aliasque* (R. T.).

quoties ei et eis expedire videbitur, augere, minuere vel reformare possit et valeat, seu possint et valeant, cum consilio et consensu praefatis (quaeque vim legis habere, nec statuentis morte expirare, nec a praefatae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis patriarchâ, seu illius capitulo et canonicis praefatis, neque etiam sede patriarchali vacante, nisi de ipsius Ioannis regis consilio et consensu, reformari aut revocari vel minui posse statuimus atque decernimus), pro dicti Thomae cardinalis patriarchae, eiusque successorum praefatorum arbitrio (etiâsi, quoad mulctarum et poenarum impositiones, tempus residentiae et facultates abessendi respective, aliaque praemissa, ubi servitio, decori aut splendori dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis expedire videbitur, a sacris canonibus et apostolicis constitutionibus, necnon ab ipsius patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis consuetudinibus et statutis, etiam iuramento seu apostolicâ confirmatione vel quavis firmitate aliâ roboratis, in toto vel in parte, de consilio et consensu praefati Ioannis regis, et non aliàs, deflectere opus esset) licentiam et facultatem apostolicâ auctoritate praefatâ tenore praesentium concedimus et impartimur.

§ 6. Ultra vero dies et functiones in novo kalendario huiusmodi de praefatis consilio et consensu ut praefertur conficiendo praescribendas, eidem Thomae cardinali patriarchae eiusque successoribus praefatis motu pari dictâ auctoritate etiam concedimus et indulgemus, quod liceat ei et eis, pro utilitate, necessitate vel decore dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis, seu dignitatis patriarchalis, sub mulctis et poenis ei et eis benevisis, dignitates vel canonicos seu beneficiatos aut alios

Quae concedit auctoritatem canonicos eligendi ad quamcumque aliam functionem ultra servitia stabilienda in kalendario constituenda.

ministros dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis, omnes seu aliquos, modo et formâ pariter ei et eis benevisis, ad congregationes vel capitulum, aliasque similes vel dissimiles functiones ecclesiasticas vel civiles, dignitatis tamen patriarchalis decorem vel eiusdem patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis utilitatem et decus respicientes, et non alias, in pontificalibus, vel aliter, ad tempus vel in perpetuum, dicto Thoma cardinali patriarchâ, seu illius successoribus praefatis, praesente vel absente, seu praesentibus vel absentibus, et ad dictum Thomam cardinalem patriarcham seu eius successores praefatos comitandum, sive ei et eis assistendum, aut servitium ab eo seu ab eis iussum praestandum, etiam civiliter, ex causis tamen superius expressis, etiam in diebus communibus, et tempore quo functiones ipsas exerceri contigerit, pariterque in diebus vacationum, dummodo propter praemissa eiusdem patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis servitium non negligatur, convocare, necnon tam praefatos, quam quoscumque alios actus et functiones publicas et privatas quodcumque et qualitercumque, tam intra quam extra dictam patriarchalem ecclesiam Ulyssiponensem occidentalem, aut civitatem, vel etiam dioecesim Ulyssiponensem occidentalem, non tamen extra Portugalliae et Algarbiorum regna, ex causis superius expressis, et non aliâs, illis indicare, habitu, formâ, die, horâ et loco eidem Thomae cardinali patriarchae et illius successoribus praefatis benevisis, quocumque habitu ipse Thomas cardinalis patriarcha et illius successores praefati tam in his functionibus quam in ceteris in praefato kalendario ut praefertur describendis utantur et utantur, et ad illos seu illas

omnes seu aliquos eorum sub poenis et mulctis praefatis coërcere, etiamsi functiones in kalendario praefato ut praefertur describendas anticipare vel differre opus esset, quod in aliis quoque casibus tam ipse quam illius successores praefati ad eius et eorum arbitrium facere possit et valeat, ac possint et valeant, necnon substitutos a dicto Thoma cardinali patriarchâ et illius successoribus praefatis vel a praefatis capitulo et canonicis dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis de dicti Thomae cardinalis patriarchae eiusque successorum praefatorum mandato nominandos, sub poenis et mulctis eius et eorum arbitrio imponendis, ad exercendas functiones, ad quas nominati fuerint, arctare et compellere, proviso interim ne in usu facultatis huiusmodi nimis grave servitio patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis praefatae praepudicium inferatur, eâ etiam adiectâ lege quod respectu actuum civilium capitulares praefati cogi nequeant ad interessendum, et obsequia patriarchae pro tempore existenti eiusdem patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis praestanda, nisi in habitu ecclesiastico et actibus gerendis proportionato, et ex causis superius expressis, et non aliâs.

§ 7. Ac insuper, quod statuta, ordinationes, capitula et decreta quaecumque, vigore facultatis in actu erectionis capellae regiae in insignem collegiatam ecclesiam erectae capitulo praefatae collegiatae ecclesiae erigendae apostolicâ auctoritate praefatâ concessae, aut alterius cuiuscumque facultatis, etiam a iure vel consuetudine provenientis, ab eodem capitulo edita, etiam iuramento, aut quavis firmitate aliâ roborata, sive etiam consuetudines statutorum vim habentes (exceptis dumtaxat, quatenus

Annulatio
quorumcumque
statutorum an-
te hac factorum.

statutis sive dispositionibus etiam extra statuta huiusmodi a dicto Thoma cardinali patriarcha et illius successoribus praefatis respective factis vel faciendis non adversentur, iis quae regimen aliorum ministrorum, aut fructuum et proventuum mensae capitularis administrationem, aut alias praefati tantum capituli privata negocia concernunt), irrita et inania nulliusque roboris vel momenti existant, motu pari decernimus.

Qualitates in
promovendis ad
canonicatus ex-
petendae.

§ 8. Volumus etiam, et dicta auctoritate statuimus et decernimus, quod unusquisque ex modernis sex dignitatibus et octodecim canonicis dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis ordinem sacrum eorum respective praebendae annexum intra annum suscipere teneatur; alioquin, eo elapso, et ordine huiusmodi non suscepto, dimidiam partem fructuum, reddituum et proventuum sequentis anni, et deinde omnes eiusdem praebendae fructus, redditus et proventus irremissibiliter amittat, et suos non faciat in foro conscientiae, etiamsi praefati fructus, redditus et proventus ei non subtrahantur, nec ad praefatum ordinem suscipiendum a dicto Thoma cardinali patriarcha et illius successoribus praefatis vel a capitulo et canonicis praefatis compellatur. Quod si, intra biennium a die datae earumdem praesentium computandum, praefatum ordinem non susceperit, dignitatibus ac canonicatibus et praebendis praefatis ipso iure et absque sententia privatus existat. Nullusque impostum ad sex dignitatum et octodecim canonicatum et praebendarum praefatorum possessionem admittatur, quin prius saltem in sacro subdiaconatus ordine, et in ea etate, ut infra annum ad ordinem suae praebendae annexum promoveri queat, constitutus, et actu in publica et approbata universitate in theo-

logia magister, aut in altero iurium doctor, seu saltem in altera ex dictis facultatibus licentiatu existat, ac aliter factae provisiones vel apprehensae professiones nullae sint et inanes. Si vero intra annum a die institutionis computandum ordines eorum praebendis annexos suscipere neglexerint, praefatis dignitatibus et canonicatibus et praebendis ipso iure et absque sententia privati respective sint et esse censeantur eo ipso. Dignitates vero, canonici et beneficiati praefatae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis in futurum a dicto Thoma cardinali patriarcha seu eius successoribus praefatis, non uti summo sacellano seu summis sacellanis, sed uti patriarcha aut patriarchis respective instituuntur.

§ 9. Mulas vero, ut praefertur, in praefato kalendario designandas, et quomodolibet, ad quarum solutionem omnes et singulos dignitates, canonicos et beneficiatos dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis, nunc et pro tempore existentes, in foro conscientiae, etiamsi mulas huiusmodi a punctatoriis vel a capitulo et canonicis praefatis non exigantur, teneri et obligatos existere volumus; necnon dignitatum, canonicatum et praebendarum et beneficiorum dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis pro tempore vacantium fructus, redditus et proventus, tam antiquos quam de novo superadditos, et quoscumque alios qui in futurum ipsis dignitatibus ac canonicis et beneficiatis obvenerint, pro rata temporis illarum et illorum respective vacationis, in favorem fabricae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis praefatae, pro illius indigentis, ac sacrorum suppellectilium aliorumque ecclesiasticorum ornamentorum manutentione,

Mulas et
praebendarum
vacantium fru-
ctus cui appli-
candi.

1 Male edit. Main. legit *et* pro *ad* (R. T.).

cedere, necnon partem fructuum, reddituum et proventuum, dignitatum ac canonicalium et praebendarum ac beneficiorum dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis, quae in usum distributionum quotidianarum, iuxta dicti Clementis praedecessoris dispositionem, erogari debuisset, extincto iure accrescendi, inter fructus certos sive grossos earundem dignitatum ac canonicalium et praebendarum dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis computari, et cum illis consolidatam esse et remanere debere, dicta auctoritate decernimus atque statuimus.

Post publicationem novum kalendarium reddituum omnes canonicis, beneficiis etc., dictae ecclesiae applicati per quorumque Clementem, quo pacto sint dividendi.

§ 10. Praeterea eidem Thomae cardinali patriarchae et illius successoribus praefatis, ut ipse seu ipsi, cum primum praefatum novum kalendarium, et dispositiones ut praefertur faciendae, a dignitatibus et canonicis ac beneficiis eiusdem patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis executioni demandari et observari inceperint, omnes et singulos fructus, redditus et proventus, tam per nos in nostris quam per dictum Clementem praedecessorem in suis respective litteris praefatis respective dismembratos et separatos, ac dignitatibus necnon canonicatibus et praebendis ac beneficiis dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis respective ut praefertur applicatos et appropriatos, ex tunc decurrendos, inter dignitates ac canonicos et beneficiatos praefatos, servatâ in omnibus et per omnia praefatarum litterarum, quas hic pro expressis ac de verbo ad verbum insertis haberi volumus, formâ et dispositione, dividi et cum effectu persolvi faciat seu faciant: reliquos vero fructus, redditus et proventus, dignitatibus ac canonicatibus et praebendis dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis, ut praefertur, applicatos et appropriatos,

usque tunc decursos, et loco depositi asservatos, vel nondum exactos, in tres partes dividat seu dividant: quarum duas, pro numero annorum a die datae primodictarum praefati Clementis praedecessoris litterarum, videlicet v kalendas octobris pontificatus sui anno xx, elapsorum, in aequales partes divisas, ac unanquamque partem huiusmodi inter dignitates ac canonicos, qui in unoquoque ex dictis annis dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensi occidentali inservierunt, vel haeredes eorum qui decesserunt, cum onere solutionis debitorum vel legatorum quorumcumque, aequaliter respective distribuat seu distribuant; reliquam vero tertiam eorundem fructuum decursorum partem in fundos vel census, aut utilia aliqua opera, seu in alia reddituum genera in favorem fabricae eiusdem patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis pro ipsius indigentis ac sacrorum suppellectilium aliorumque ecclesiasticorum ornamentorum mantentione, ac novis canonicatibus et praebendis, seu novis beneficiis, iuxta earundem praefatarum nostrarum litterarum dispositionem, erigendis, aliorumque ministrorum sustentatione: quam distributionis rationem praefatus Thomas cardinalis patriarcha seu illius successores praefati erga beneficiatos dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis, quoad fructus dictorum prioratuum seu abbatiarum per praefatum Clementem praedecessorem ut praefertur suppressorum et extinctorum, seu suppressarum et extinctarum, et praefatis beneficiis applicatos et appropriatos, ac ut praefertur decursos, servari, cum consilio et consensu dicti Ioannis regis, ¹ erogari sedulo curet atque praecipiat, seu curent atque praecipiant:

¹ Aptius adderetur hic coniunct. et (R. T.).

Omnimoda
potestas pa-
triarchae data
quocumque
beneficiatum
compellendi ad
exequutionem
eorum, quae
statuantur in
kalendario.

§ 11. Ac demum, ut praemissa omnia et singula in eisdem praesentibus contenta, necnon omnia in novo kalendario ut praefertur conficiendo disponenda, suum debitum sortiantur effectum, et exactius perpetuis futuris temporibus observentur, quod praefatus Thomas cardinalis patriarcha eiusque successores praefati dignitates et canonicos ac beneficiatos aliosque ministros dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis, ac eos ad quos pro tempore spectabit, ultra mulctas et poenas in praefato novo kalendario praefatisque dispositionibus ut praefertur designandas, quibusvis necessariis ac canonicis remediis adhibitis, omni prorsus appellatione remotâ, ad illorum omnium et singulorum observantiam compellere et arctare, et contra inobedientes seu aliâs delinquentes, tam in supradictis quam aliis quibuscumque, sine adiunctis, tam intra quam extra visitationem, procedere possit et valeat, et respective possint et valeant, plenam, integram et omnimodam potestatem, facultatem et auctoritatem, motu simili, apostolicâ auctoritate praefatâ, ipsarum tenore praesentium, pariter concedimus et impartimur.

§ 12. Decernentes, easdem praesentes, ac in eis contenta quaecumque, nullo unquam tempore, et ex quocumque capite vel ex qualibet causâ, quantumvis legitimâ et iuridicâ, piâ, privilegiatâ et speciali notâ dignâ, etiam ex eo quod dignitates et canonici ac beneficiati dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis, seu quicumque alii, cuiuscumque dignitatis, gradus, conditionis et praeeminentiae existant, in praemissis et circa ea quomodolibet et ex quavis causâ, ratione, actione vel occasione, ius vel interesse habentes seu habere praetendentes, illis non consenserint, aut ad illa vocati et auditi non

fuerint, et causae, propter quas eadem praesentes emanarunt, adductae, verificatae et iustificatae non fuerint, de subreptionis vel obreptionis aut nullitatis vel invaliditatis vitio, seu intentionis nostrae aut ius vel interesse habentium consensûs, aut quolibet alio quantumvis magno, substantiali, inexcogitato et inexcogitabili ac specificam et individuum mentionem ac expressionem requirente defectu, seu etiam ex eo quod in praemissis eorumque aliquo solemnitates et quaevis alia servanda et adimplenda servata et adimpleta non fuerint, aut ex quocumque alio capite, a iure vel facto aut statuto vel consuetudine aliquâ resultante, aut quocumque alio colore, praetextu, ratione, etiam in corpore iuris clausâ, occasione, aliâve causâ, etiam quantumvis iustâ, rationabili, legitimâ, iuridicâ, piâ, privilegiatâ, etiam tali quae ad effectum validitatis praemissorum necessario exprimenda esset, notari, impugnari, invalidari, retractari, in ius vel controversiam revocari, aut ad terminos iuris reduci, vel adversus illas restitutionis in integrum, appellationis oris, reductionis ad viam et terminos iuris, aut aliud quodcumque iuris, facti, gratiae vel iustitiae remedium impetrari, seu quomodolibet, etiam motu simili, concesso, aut impetrato vel emanato, uti seu se iuvare in iudicio vel extra posse, neque easdem praesentes sub quibusvis similium vel dissimilium gratiarum revocationibus, suspensionibus, limitationibus, modificationibus, derogationibus, aliisque contrariis dispositionibus, etiam per dictos praedecessores aut per quoscumque alios Romanos Pontifices successores nostros pro tempore existentes et Sedem Apostolicam praefatam, etiam motu pari, ac ex certâ scientiâ, etiam consistorialiter, ac quibusvis de causis, ac sub quibuscumque

Clausulae ad
praesentium lit-
terarum obser-
vantiam indu-
cendam.

verborum tenoribus et formis, ac cum quibusvis clausulis et decretis, etiamsi de ipsis praesentibus eorumque toto tenore ac datâ specialis mentio fiat, pro tempore factis et concessis, ac faciendis et concedendis, comprehendere, sed, tamquam ad maius bonum tendentes, semper ab illis excipi, et, quoties illae emanabunt, toties in pristinum et validissimum, ac eum in quo antea quomodolibet erant, statum restitutas ac plenarie reintegratas, ac de novo etiam sub quacumque posteriori datâ quodcumque eligendâ concessa esse et fore; sicque et non aliâs in praemissis omnibus et singulis per quoscumque iudices ordinarios vel delegatos, quavis auctoritate fungentes, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac praefatae S.R.E. cardinales, etiam de latere legatos, vicelegatos, dictaeque Sedis nuncios, et alios quoscumque quavis auctoritate, potestate, officio et dignitate fungentes, ac praerogativâ, privilegio, praeeminentiâ et honore fulgentes, sublata eis et eorum cuilibet quavis aliter iudicandi et interpretandi facultate et auctoritate, in quocumque iudicio et in quacumque instantiâ iudicari et definiri debere; irritum quoque et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Contraria tolluntur.

§ 13. Non obstantibus secundodictis praefati Clementis praedecessoris, ac omnibus in nostris litteris praefatis super novâ servitii in eadem patriarchali ecclesiâ Ulyssiponensi occidentali praestandi formâ dispositis, ac quibusvis aliis apostolicis, ac in universalibus, generalibus, provincialibus, synodalibusque conciliis, editis vel edendis, specialibus vel generalibus, constitutionibus et ordinationibus, dictaeque patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel

quavis firmitate aliâ roboratis, statutis, eorumque reformationibus, stylis, usibus et consuetudinibus, etiam immemorabilibus, privilegiis etiam ex fundatione competentibus, vel a dicto Clemente praedecessore, aut aliis praedecessoribus nostris aliâs praefatae patriarchali ecclesiae Ulyssiponensi occidentali, dum esset capella regia vel insignis collegiata ecclesia, concessis, quatenus his, quae in ipsis praesentibus expressa sunt, adversentur, necnon inductis et litteris apostolicis, praefatis capitulo et canonicis dictae patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis, aliisque personis quibuscumque, etiam speciali, specificâ, expressâ et individuâ mentione dignis, sub quibuscumque tenoribus et formis, ac cum quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, efficacissimis et insolitis clausulis, irritantibusque et aliis decretis, etiam in genere vel in specie, etiam motu pari et de potestatis plenitudine similibus, ac consistorialiter, aut aliâs quomodolibet, etiam iteratis vicibus, in contrarium praemissorum concessis, approbatis, confirmatis et innovatis, etiamsi in eis caveatur expresse, quod illis per quascumque litteras apostolicas, etiam motu pari pro tempore concessas et concedendas quascumque, etiam derogatorias derogatorias in se continentes, derogari non possit, neque censeatur eis derogatum; quibus omnibus et singulis, etiamsi de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa et individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quaevis alia expressio habenda, aut quaecumque alia exquisita forma ad hoc servanda foret, eorum tenores, formas et causas, etiam quantumvis praegnantibus, piis, privilegiatas, praesentibus pro plene ac sufficien-

ter, ac de verbo ad verbum, nihil penitus omisso, insertis, expressis ac specificatis habentes, illis aliàs in suo robore permansuris, ad praemissorum omnium et singulorum validissimum effectum, hac vice dumtaxat, latissime et plenissime et sufficienter, necnon specialiter et expresse motu simili derogamus, ac derogatum esse et censeri decernimus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Poenae contra temeratores bullae huius.

§ 14. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostri motus proprii, reintegrationis, revalidationis, derogationis, annulationis, licentiae, impartitionis, concessionis, indulti, decreti, statuti, et voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire; si quis autem hoc attentare praesumpserit, indignationem omnipotentis Dei ac beatorum Petri et Pauli apostolorum eius se noverit incursurum.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub anno Incarnationis dominicae MDCCXXXVIII, VIII idus decembris, pontificatus nostri anno IX.

Dat. die 6 decembris 1738, pontif. anno IX.

Loco † Bullae aureae.

CCXLVI.

Confirmatio decreti Congregationis episcoporum et regularium circa religiosos Ordinis fratrum Eremitarum S. Augustini provinciae Mexicanae ad alios Ordines confugientes.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Ex facili religiosorum ad alios Ordines refugio, omnium Ordinum disciplina collabitur.

§ 1. Aliàs pro parte dilecti filii Ignatii Padilla fratris expresse professi, in sacra theologia magistri, provinciae SS. Nominis Iesu Mexicanae Ordinis Eremitarum sancti Augustini procuratoris ad specialia negotia missi, nobis expositum fuit, quod in dicta provincia abusum valde observantiae regulari praeiudicia-

les, nempe quod aliqui religiosi inquieti et parum observantiae sui instituti amatores obedientiam reverentiamque ac subiectionem suis praelatis debitas parvifacientes, ad coenobia aliorum Ordinum vel Congregationum aut institutorum, praetextu evadendae violentiae et effugiendi rigorem suorum superiorum, confugiant, irrepserant; et, licet superiores praedicti a praelatis conventuum, ubi praedicti religiosi confugiant, petant ut patiantur quod obligatio obediendi propriis superioribus, et se se ad propria coenobia restituendi, intimetur, vel quod illos propriis superioribus tradant, neutrum obtineri solet, protestantes aliorum Ordinum vel congregationum aut institutorum praelati, ubi dicti religiosi confugiant, eosdem gaudere immunitate refugii, et consequenter a proprio praelato non posse extrahi, requiri aut notificari, utpote in alieno territorio existentes, neque superiores aliorum Ordinum praedictorum debere dictos religiosos confugientes tradere: et in eadem expositione subiuncto quod dilectus etiam filius modernus prior provincialis provinciae et Ordinis praedictorum in angustias positus ad venerabilem fratrem modernum archiepiscopum Mexicanum illius regni proregem recursum habere coactus fuerat, ut ei auxilium regium impertiretur, quo dispersum gregem ad ovile proprii Ordinis reducere, et hoc tantum medio relatis praeiudiciis occurrere posset; cum autem minime lateat, quod, si haec ianua asili aut refugii religiosi pateat, funditus disciplina regularis ac debita propriis superioribus obedientia corruant, necnon iurgia et discordiae inter superiores respective Ordinum cum saecularium scandalo procul dubio pullulent:

§ 2. Porro, ut tot malis occurrere-

Instantia procuratoris expo-

sentis pro ha-
isamodi compe-
sando.

mus, per nos declarari summopere de-
siderabat quod dictis religiosis ad con-
ventus aliorum Ordinum vel Congrega-
tionum vel institutorum confugientibus
immunitas refugii seu asili minime suf-
fragetur, sed a proprio superiore iudi-
cialiter ex alieno conventu unusquisque
confugientium huiusmodi extrahi, et ad
proprium, quocumque privilegio regula-
ribus concessa hac in parte non obstante,
reduci possit: quod si dicti religiosi
adhuc rebelles in¹ parendo propriis su-
perioribus, ad suum conventum eosdem
redeundi iubentibus, perseverent, vel
dicti superiores eos tituli refugii reci-
pientes et auxilium praestantes propriis
superioribus tradere renuerint, utrique
poenas, fugitivis et eorum fautoribus et
protectoribus necnon rebellibus et ino-
bedientibus per hanc Apostolicam Sedem
impositas, ipso facto et absque aliâ de-
claratione incurrere debeant:

Ad Congrega-
tionem episco-
porum et regula-
rium remissa.

§ 3. Nos, supplicem libellum nobis
porrectum ad Congregationem venera-
bilium Fratrum nostrorum S. R. E. car-
dinalium negotiis et consultationibus
episcoporum et regularium praepositam
remisimus, a qua emanavit decretum
tenoris qui sequitur, videlicet:

Decretum Con-
gregationis, quo
statuitur aucto-
ritas superiorum
huiusmodi Ordini-
nis esse resti-
tuenda sub
conditionibus et
cautelis hic ex-
pressis.

Sacra Congregatio eminentissimorum et
reverendissimorum S. R. E. cardinalium
negotiis et consultationibus episcoporum et
regularium praeposita, ad quam sanctissi-
mus dominus noster supplicem libellum re-
misit, attentâ relatione eminentissimi Fir-
rao, praefati Ordinis apud Sanctam Sedem
protectoris, re mature perpensâ, decrevit,
regulares unius religionis, confugientes ad
ecclesias et monasteria alterius religionis,
superioribus propriae religionis restitui de-
bere a praelatis alterius religionis, ad quo-
rum ecclesias et monasteria confugiunt,
praestito tamen ab iisdem superioribus con-
fugientium iuramento, et factâ obligatione
de servandâ immunitate ecclesiasticâ et de

1 Forsan deest non (R. T.).

restituendo confugientes praefatos ecclesiis
vel monasteriis, ad quae confugerunt, casu
quo procedendum sit ad poenas corporales
carceris perpetui, mortis et tritemium pro-
pter delicta ab ipsis confugientibus com-
missa; secus, si ipsi superiores procedere
deberent ad poenas ordinarias, et ad cor-
rectionem regularium per constitutiones Or-
dinis praescriptas: cuius rei declaratio ad
definitorium provinciale, vel, ubi illud non
fuerit, ad consilium conventus spectabit.
Quod si, constituto regulares confugientes
poenas dumtaxat ordinarias et per constitu-
tiones Ordinis ad correctionem praescriptas
promereri¹, praelati alterius religionis re-
nuant eos propriis superioribus restituere,
vel ipsi regulares ad proprias religiosas do-
mos redire recusent, sacra eadem Congrega-
tio utrosque ad instar apostatarum vel apo-
statas recipientium, in excommunicationem
Summo Pontifici reservatam incursos decla-
ravit. — Romae, v septembris mdccxxviii.
— I. cardinalis FIRRAO. — C. archiepi-
scopus Damiatinae, secretarius.

§ 4. Cum autem, sicut dictus Ignatius
procurator nobis subinde exponi fecit,
ipse decretum huiusmodi, quo firmiter
subsistat et servetur exactius, apostoli-
cae confirmationis nostrae patrocinio
communiri plurimum cupiat:

Supplicatum
Papae pro con-
firmatione.

§ 5. Nos, ipsum Ignatium procurato-
rem specialibus favoribus et gratiis pro-
sequi volentes, et a quibusvis excom-
municationis, suspensionis et interdicti,
aliisque ecclesiasticis sententiis, censu-
ris et poenis, a iure vel ab homine,
quavis occasione vel causâ latis, si qui-
bus quomodolibet innodatus existit, ad
effectum praesentium dumtaxat conse-
quendum, harum serie absolventes et
absolutum fore censentes, supplicationi-
bus eius nomine nobis super hoc hu-
militer porrectis inclinati, decretum
praeinsertum, auctoritate apostolicâ, te-
nore praesentium, confirmamus et ap-
probamus, illique inviolabilis apostoli-

Confirmatio
Pontificia.

1 Edit. Main. legit *promeren* (R. T.).

cae firmitatis robur adicimus: salvā tamen semper in praemissis auctoritate memoratae Congregationis cardinalium.

Decretum firmitatis praesentium litterarum.

§ 6. Decernentes, easdem praesentes litteras firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et spectabit in futurum, plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari; sicque in praemissis per quoscumque iudicem ordinarios vel delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane, si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Obstantium derogatio.

§ 7. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, nec non, quatenus opus sit, eiusdem provinciae, ac praedicti aliorumque quorumcumque Ordinum, congregationum vel institutorum, et etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate aliā roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliās in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Transumptis data fides.

§ 8. Volumus autem ut earumdem praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiastica dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides ubique tam in iudicio quam extra adhibeatur, quae ipsis praesentibus adhiberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xx decembris mdccxxxviii, pontificatus nostri anno ix.

Dat. die 20 decembris 1738, pontif. anno ix.

CCXLVII.

Confirmatio institutionis missionum ab archiepiscopo Salisburgensi in civitate Salisburgensi factae, ac regularum ac legum pro missionariis conditarum, et a Congregatione de Propagandā Fide approbatarum.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Pastorum princeps Iesus Christus, cuius supremā in catholicae Ecclesiae procuracione vices, per ineffabile divinae providentiae consilium infirmitati nostrae demandatas, plane immerentes nos gerimus, eā pontificium animum nostrum, in ovibus suo sanguine redemptis et per viam aeternae perditionis pergentibus ad orthodoxum ovile reducendis sollicitum, caelestis consolationis copiā et laetitiae magnitudine cumulare dignatus est, ut gaudio superabundantes incredibili iubilemus Deo in voce exultationis.

Prooemium.

§ 1. Enim vero venerabilis frater Leopoldus archiepiscopus Salisburgensis pro eximiā pietate suā, singulari orthodoxae religionis zelo, iniuncto pastoralis ministerii munere custodiens vigilas super grege sibi commissio, summā cum nominis sui laude laboribus plurimis ac dispendiis ex suā, in qua commorabantur, amplissimā dioecesi eiectionis ac procul expulsis vigintiduobus millibus et amplius haereticis, eorundem terras catholicae fidei cultoribus habitandas attribuit.

Archiepiscopus Salisburgensis ex antiquo haereticos eliminat.

§ 2. Praeterea veritus ne temporis

Missionarios inducit, limites-

que eis assi-
gnat.

processu, perditissimis hominibus antiquas sedes subleste repetentibus, et ibidem nova execrandae haeresis semina occulte spargentibus, iterum illic pestiferae segetis germina subolescerent, ut aut¹ nequitia elidatur, opportune, nullis parcens industriis et sumptibus, providere studuit. Inter ceteras autem utilissimas providentiae suae ad susceptum saluberrimum opus conficiendum initas rationes, illa in primis maxime commendanda, quod sex perpetuas missiones a religiosis viris aliquot regularium Ordinum et institutorum, intra praescriptos (ne dissidia nulla aut confusio unquam oriri possint) limites, sub nonnullis abs se editis capitulis, regulis et legibus, omnino peragendas, fundaverit institueritque, ac necessariis redditibus et emolumentis ditaverit. Quae quidem omnia capitula, regulae et leges sunt tenoris qui sequitur, videlicet:

*Missiones in dioecesi Salisburgensi
novissime institutae.*

Loca Ordini-
bus regularibus
assignata.

I. Pro patribus Ordinis S. Augustini in praefectura Hallensi et monte Turnbergensi ubi sunt salinarum fossores;

II. Pro patribus Capuccinis in oppido et praefectura Werffensi una cum praefecturis in Abbtenu et Golling;

III. Pro patribus Capuccinis civitatis Radstadiensis intra montana sitae per totam eius nominis praefecturam;

IV. Pro patribus Capuccinis monasterii in Dambsweeg vallis Lungaviae ad confines Carinthiae per totam praefecturam Mossheimensem;

V. Pro patribus Ordinis sancti Benedicti in loco Swarzachiae pro praefecturis ad S. Ioannem Wagrain, P'rosarl, Gostein, Goldegg, et ad S. Vitum;

VI. Pro patribus Recollectis Ordinis sancti Francisci in loco Hunsdorff super praefecturis Taxenbacensi, Raurensi et Zellensi.

¹ Comma istud dimittimus lectori scio; forsitan et ut pro ut aut legendum (n. r.).

Nos Leopoldus, Dei gratia archiepiscopus et princeps Salisburgensis, Sanctae Sedis Apostolicae legatus, natus primas Germaniae.

Cum ea sit haereticae obstinationis conditio, ut, amputatis ramis, illico novi et alii quando fortiores succrescere soleant, ne, quae forte in praefectura nostra Hallensi et in monte Turnberg in latibulis adhuc delitescit haeretica lues, tractu temporis iterum erumpat, novique oriantur, quos, proh! dolor, sumus experti, rogi, continuo nobis providendum est, qua ratione insidiosi impiorum conatus penitus reprimi et opprimi possint, ut, securi velut ad radicem posita, pertinacibus mediis pertinax malum, ne qua resumptis velut viribus augescere possit. Quare, cum statuerimus, quod apostolicae missionis in locis praedictis post ultimam haeticorum emigrationem per tui Ordinis fratres laudabiliter exercitum munus omni futura aetate perduret, paternitati tuae hisce nostris clementer et serio simul iniungimus, quatenus illud futuris perpetuis temporibus eo modo instituat, ut:

I. Tribus, qui batenus de facultate nostra (superiore in censum veniente) in monte Turnberg tui Ordinis fuere patres, quantum, quem tibi ibi habere auctoritate nostra ordinaria hisce nostris permittimus, adiungas, ea verumtamen conditione et lege, quod:

II. Duo ex eis nobis praesententur ad peragendum in praerelato districtu apostolicae missionis munus, vel a Summo Pontifice, vel per sacram Congregationem de Propaganda, seu ab eo cui ab hac talis delegabitur facultas, approbati¹, necessariisque ad missiones apostolicas privilegiis instructi, absque eo quod tibi integrum sit, postquam semel fuerint ad missiones nostras delecti, eos amovere, nisi ubi primi integrum absolverint annum, subrogatione subinde ea ratione faciendam ut unus vel saltem semper adsit qui iam per annum in praemisso Ordini tuo assignato districtu missionarii exercuerit munus, notos habeat incolarum salinarumque fossorum mores, sit in re missionum practicus, potisque in-

¹ Pessime edit. Main. legit *approbari* pro *approbati* (R. r.).

Missiones fra-
tribus Ordinis
S. Augustini da-
tae impositae-
que leges.

struere noviter advenientes; sintque insuper in omne aevum duo missionarii praedicti, quoad ea quae missionis munus concernunt, immediate et unice nostris nostrorumque successorum mandatis, quoad disciplinam monasticam vero atque domus oeconomicae directionem, tibi et superiori eorum subiecti. Volumus autem:

III. Ut mox dictorum missionariorum unica cura sit incessanter intra praedictam Hallensem nostram praefecturam, quâ late haec quoad temporalem iurisdictionem, districtu civico incluso, se protendit, de loco ad locum, et, si necesse fuerit, etiam de domo ad domum excurrere, catechizare, rudes in doctrinâ christianâ instruere, dubitantes ad viam veritatis reducere et in hac confirmare, in haereticos vel de haeresi suspectos, horum consultores, fautores, receptatores, librorum acatholicorum detentores, vel detentorum conscios, et non revelantes, eos in provinciam nostram ferentes vel intrudentes, eorumque auxiliares, conscios, seu participes, inquirere, hosque et alios huiusmodi farinae homines nobis, vel cui per nos et successores nostros demandabitur, sine aliquâ personarum acceptatione, omnique seposito humano affectu, denunciare, verbum divinum et fidei dogmata ubivis et etiam ex cathedrâ (sic tamen ut Ordinariorum non disturbentur ecclesiasticae functiones), intra ipsis designatum districtum, tradere, sic et poenitentiae sacramentum (solâ demptâ confessione paschali, si locorum curiones ultro non annuerent), sacrosanctam vero Eucharistiam in ecclesiâ Turnberg, alibi vero non nisi quam accedente ipsorum curionum assensu, administrare; item aegris et moribundis solatium cum auxilio impendere, atque peragere ea omnia, quae individuum missionarii apostolici exigit munus, iure sepulturae alioque quocumque parochiali, semper et ubique extra montem Turnberg, excepto.

IV. Teneantur pariter in vitam et mores non modo subditorum ipsis quoad missionis ministerium commissorum, sed et eorum quibus ipsi subditi intra designatum districtum ex demandatâ a nobis iurisdictione

subeunt, sedulo invigilare, datoque defectu religioni directæ vel indirecte pernicioso, si fraterna admonitio non tollat, nobis et successoribus nostris ad nostras aures deferre; sicut e converso et nostris demandabimus decanis ruralibus perspectum habendi an missionarii ipsi missionis munus debite adimpleant et assequantur ex asse; quidve operentur adversus has nostras leges, nobis defectus, ubi hos, si aliqui præter spem nostram omnem contigerint, fraterna admonitio non dissipet, debite relaturis.

V. Quapropter praesentabuntur nobis viri cum scientiâ cum et vitae sanctimoniâ clari, iusti, incorrupti, integri, suaves et insimul severi, graves, sagaces, cum in polemicâ, cum et in his quae ad notitiam promovendae haereticalis inquisitionis conducunt, bene versati, nec accipient a subditis quoad missionis munus eis subiectis eleemosynas pro missis, aliave munera, forent licet exculenta vel poculenta tantum, nec valeant egredi ipsis designatum districtum a nobis vel successoribus nostris, præviâ non habitâ licentiâ, hac ipsâ illis non nisi gravi de causâ denegandâ.

VI. Licet porro Ordini tuo apostolicae missionis munus in praedictâ Hallensi praefecturâ in Turnberg et in civico Hallensi districtu privative committamus, liberum tamen semper nobis et successoribus esse volumus, alios quoque alterius religionis viros in districtum praedictum ad tempus mittere missionarios, de districtu vero alibi etiam et extra illum ad missiones ad tempus pariter ablegare, missione Ordinis tui verumtamen fixâ semper manente, suoque in robore firmâ.

Noverit proinde paternitas tua, tuique successores omnes perpetuis futuris temporibus, tam salutare nostrum propositum alacriter exequi atque in partem tam gloriosi laboris vocati haec nostra mandata pro posse explere; quod si vero in adimplendis ex asse omnibus praescriptis negligentes, incurii, segnesve fueritis, omnipotenti Deo, nobis et successoribus nostris, et venerabili nostro capitulo strictissimam rationem reddituros, vosque nostram et horum indi-

gnationem incururos. — Actum Salisburgi, metropoli nostrâ, hac die xiv mensis martii anni MDCCXXXVII.

LEOPOLDUS.

In nomine sanctissimæ et individuae Trinitatis. Amen. — Nos Leopoldus, Dei gratiâ archiepiscopus et princeps Salisburgensis, Sanctæ Sedis Apostolicæ legatus natus, et primas Germaniæ, etc.

*Datæ patri-
bus Capuccinis
stationes.*

Quamvis nos, divinâ favente clementiâ, ad archiepiscopale solium evecti, a primâ ineuntis regiminis nostri die, antiquius nihil unquam habuerimus, quam religionis et catholicæ fidei nostræ curam, quæ semper et ubiquè omni ævo, in omni imperio et apud quaecumque gentem præcipua fuit, quæque securum est publicæ felicitatis pignus, cuius firmamento stant regna, conservantur principatus, continentur subditi, omnigenique boni tutissimum est fulcrum, tantum tamen absuit ut hæresis, hostis eius perniciosissimus, vinceretur, ut potius animus meminisse horreat, ipsaque refugiat oratio terreretur illud bellum, quod ea propter adversus nos, catholicam religionem, et principatum ipsum inferre tentarunt ipsimet subditi nostri, dum exurgens novissime fatale monstrum, ex omnibus pristinarum hæresum concretum, stragem late sacrorum totâ provinciâ nostrâ circumferre, evertere aras, disturbare templa, principis maiestatem in contemptum, huius mandata in ludibrium, iura omnia divina et humana per inauditum furorem et vesaniam nefarie et fedifrage violare parabat, nihil sceleris, nihil doli, nihil iniquitatis intentatum et inausum relinquens ut et plebem reliquam novitatis illacebrâ corrumperetur. Pluribus necesse haud est rem exprimere, quia hæc per se liquet, et loquantur¹ id satis et clamant tot publica acta, tot desuper habitatum inquisitionum volumina; ohliti vero haud sumus, qui tunc sermones hostium, qui rumores amicorum forent, cum dicerent palam, culpæ² maiorum nostrorum incubuisse tamdiu in provinciam hæresis

¹ Aptius lege loquantur (R. T.).

² Forsan culpâ (R. T.).

infandam pestem religioni nostræ in archiepiscopatu, aut³ ipsi archiepiscopatu aut utrique pariter iam iam esse pereundum. Alios namque tantæ molis exterrebatur opus, alios retardabat exitus plenus periculi et aleæ, vel ipse rei tam ancipitis et arduæ fama alios tenebat attonitos metu, expectatione suspensos. Vidit hoc provincia, imo et imperium totum, et vidimus nos summo pastoralis animi nostri moerore, astrudimus ipsamet religione furores, pugnavimus viribus totis, armis, legibus, edictis, metu et poenis. Repulimus viginti et ultra millia utriusque sexus, qui non unam fidem, sicut unum principem, non unum cultum, sicut unum numen, non unam Ecclesiam, sicut unum baptisma, amplecti volebant. Relegavimus alios, aliis mediis ad meliorem reduximus frugem, atque hac demum viâ retulere superi constantiæ nostræ præmium, stetit archiepiscopatus, et vicit; vicit pariter Ecclesia et triumphavit; et obtinuit in simul, quod ab annis ultra biscentum humana vis nulla consequi aut industria poterat, quod piorum omnium vota flagitabant, quod fideles omnes a Deo enixe precabantur, adjuvantibus in id mirifice caelestibus ipsis, qui hoc ipsum nobis reservarunt opus. Verum enim vero, quod³ ita tamen comprimi non potuerit pestiferum huius feralis hidræ virus, quin aliqua pars eius non resideret adhuc in provinciæ nostræ visceribus, atque spiraret rursus immanis hæc bellua, licet centum petita vulneribus, centum vinculis constricta, sensim iterum gliscens, et ad reliqui perniciem corporis tacitâ contagione serpens, clam invalitura in dies, in flammam et incendia, si quis ventilabit, etiamnum eruptura, dum alitur doloso cinere suppositus ignis, nisi tempestive, malo iam nostri edocti, congrua repagula ponamus, atque obviemus appropriatis remediis, antequam morbus rursus aestuare incipiat, non desint nimirum in futurum amplius qui misereantur super

¹ Forsan ut ac deinde esset pro esse (R. T.).

² Videtur repetendum alios (R. T.).

³ Ex syntaxi seq. videtur legendum quum (R. T.).

turbam, ne plures, ut hactenus evenit et meminisse dolet, dimittantur ieiuni et deficiant in viâ, dum, parochis aliisque locorum pastoribus in peragendis sacrificiis, excipiendis confessionibus, administrandâ SS. Eucharistiâ, visitandis infirmis, assistendo moribundis, aliisque animarum curae functionibus continue et ex asse irretitis, non erat qui parvulis frangeret panem, instrueret ignorantes, flecteret dubios, atque ad Ecclesiae ovile reduceret longe lateque dis-sitas oves: hinc est quod, postquam pro pastorali sollicitudine animum, nostrasque de funditus extirpandâ haeresi curas in omnem partem diu multumque versavimus, dumque oculos et mentem nostram in priorum saeculorum monumenta penitus defiximus, unum adhuc idque unicum superesse comperimus, quod possit ignem hunc, seris etiam metuendum successoribus, extinguere, perdere et delere, si plura nimirum ex diversis Ordinibus, continua ut sit, eaque pia inter eos laborandi in vineâ Domini aemulatio, atque in diversis montium locis, in quibus haeretica lues magis hactenus in-senuit, ut firmissima armamentaria Ecclesiae fundentur apostolicorum missionariorum hospitia, qui, incessanter excurrando et catechizando, rudes instruant, dubitantes inflectant, clam inquirant in suspectos, omniaque ea persgant, quae individuum apostolicae missionis munus exposcit. Quapropter, cum ad effectum praemissum inter alios plures strenuissimos Christi milites dilecti nobis in Christo patres Capuccini venerabilis Ordinis sancti Francisci provinciae nostrae Salisburgensis, pro zelo quo flagrant ad animarum salutem, operam suam detulerint, statuimus et ipsos quoque in partem laboris vocare, divinâque freti ope, et constanti experientiâ docti, decrevimus in Domino decernimusque, ad stabiliendam in dioecesi nostrâ, maxime intra montes, orthodoxam religionem, ad profligandas haereses, atque ad propagandam maiorem Dei sanctaeque matris Ecclesiae et archidioecesis nostrae gloriam, eisdem patribus Capuccinis provinciae praetactae, prope oppidum nostrum in Werffen, ad effectum tantum-

modo peragendae apostolicae missionis, sedem stabilem figere, atque sub legibus, pactis et conditionibus infradicendis in perpetuum firmare.

I. Itaque damus, concedimus et tradimus antelatis patribus, ab omni et quocumque onere reali, mixto seu personali penitus liberam et immunem, tantam quantitatem praedii nostri nuncupati, Maiensfeld hactenus ad gaudendum praefecto nostro in Werffen concessi, et siti prope et super oppidum praedictum, quae nimirum orientem versus existit, quaeque sat sit pro desuper extruendo missionis hospitio et aedificandâ parvâ ecclesiâ atque hortulo, iugera scilicet duo circiter, prout praedium praedictum cum quantitate extrahendâ, hac undequaque lineâ rubrâ signatâ, ad oculum praebet delineatio nobis exhibita praesentibus nostris annectenda.

Leges ab eis observandae.

II. Curabunt e contra illi cum totâ provinciâ ad peremptipsum ultro oblata¹ benefactorum eorum largitionibus ipsam domum missionis desuper aedificari, quatuor patrum missionariorum atque unius fratris laici habitationi congruam et aptam, additis duobus cubiculis hospitibus seu patri provinciali usui futuris, praeter refectorium, culinam cum penu, cellam vinariam, et aliud cubile bibliothecae inserviturum, cumque hortulo ad necessitatem et usum culinae, in ampliorem vero formam aedificium nec extrahi² nec redigi possit, quorum insuper benefactorum donis et sumptibus surget pariter sacellum, seu parva ecclesia, tribus ad summum altaribus extructa, B. Virgini Mariae Auxiliatrici dicanda.

III. Missionariorum numerus sit semper et in aevum quaternus, missionis superiore, quem pater provincialis semper designabit, in censum simul veniente, uno fratre laico insuper addito; qui numerus sine expresso nostro, vel successorum, et venerabilis nostri capituli consensu nullis unquam temporibus augeri nec minui possit.

IV. Providebunt porro monasteria de Salzburg et Radstatt, sive ipse pater provin-

¹ Forsan *oblatis*; at syntaxis perplexa (R. T.).

² Forsan *extrui* (R. T.).

cialis et provincia, missionarii praedictis de congrua sustentatione, tum et de suppeditati aliisque necessariis ad usum sacelli, sic ut nec nobis, ¹ provinciae nostrae, vel et subditis ipsis de districtu missionis Capuccinorum sunt onerosi, lignis ab igne tantummodo demptis, quae nos et successores nostri perpetuis futuris temporibus ad usum et necessitatem missionis domus suppeditari mandabimus.

v. Designabimus ipsis ad peragendum apostolicae missionis officium totam praefecturam Werfenaem cum adiacenti praetura in Bischoffhoven, praefecturam in Abbatenu cum illa de Gollingqua, quae ² hae omnes late patent quoad temporalem per nos eorum praefectis delegatam iurisdictionem.

vi. Quia vero missionarii ipsi tam latum longeque disitum districtum peragere haud possent, si excurrentes necessariis ³ ad se se alendos pecuniis non fuerint instructi, hinc assignamus memoratae domui missionis annuos florenos centum ex capitali statibus provinciae a secretæ deputatione nostrâ ex multis haereticis vel de haeresi suspectis hactenus indictis conflato, et ad quincunces usuras, cum omnimodâ immunitate ab omni decimatione, steurâ, aliove excogitabili onere reali aut personali, elocato; volentes insuper et mandantes, utque hactenus per inquisitiones, per Capuccinorum missiones factas in praefecturis Werffen et Radstatt, tum et in praefecturas Wagrain indictae fuerunt, nondum tamen exactae, vel ad casam missionis transmissae, aut quae in futurum dictabuntur pecuniariae poenae adversus subditos missioni eorum commissos, per praefatam secretam deputationem nostram eparentur, denturque successive in censum, ut supra, eum praecise in finem, ut domui missionis praedictae, ad usum et effectum de quibus praemissum est, annui floreni biscenti ex decurrendis usuris valeant titulo eleemosynae persolvi, ubi temporis tractu mox memoratae indictae, et

¹ Videtur addendum nec (R. T.).

² Vozem quâ nos addimus (R. T.).

³ Edit. Main. habet necessariis pro necessariis (R. T.).

non exactae, vel indicendae in futurum multae aliud capitale florenorum bis mille conflabunt.

vii. Quod vero ipsismet patres missionarios attinet, praesentabuntur nobis semper tam nunc tum et successivis temporibus designandi a patre provinciali eorum; ubi vero ad missiones nostras fuerint ab hoc semel delecti ablegatique, et a nobis recepti et approbati, integrum illi haud sit eos aliter amovere et avocare, quam et servato ordine et formâ, ut vel unus saltem semper adsit, qui iam per integrum biennium missionarii in domo praedictâ Werffen exercuerit munus, habentes subditorum perspectos mores, sitque in re missionum versatus, et valeat instruere noviter advenientes.

viii. Erunt autem isti, cum ipsâ domo missionis, quoad ea quae missionis munus concernunt, in omne aevum immediate et unice nostris nostrorumque successorum mandatis subiecti, directione eius tamen et visitatione patris provincialis illaesa et intactâ relicta; in ceteris autem nobis et successoribus nostris sine ullâ contradictione praestabunt et adimplebunt ea omnia, ad quae regulares exempti, iuxta praescriptum sacri Concilii Tridentini, nostrarumque constitutionum synodaliū et provincialium, et ¹ Ordinariis locorum aliâs tenentur, salvâ proinde in hac missionis domo et missionarios ibidem existentes dioecesanâ et ordinariâ nostrâ iurisdictione iure principatus terrae et advocatae, sic tamen ut nobis et successoribus nostris dumtaxat, unice et immediate, uti praemissum est, remaneant semper, etiam quoad ista, subiecti.

ix. Missionariorum officium, finis, atque praecipua, imo unica cura ait, per praefecturas, ut dictum est, ipsis designatas, incessanter de loco ad locum, et, si necesse visum fuerit, de domo ad domum excurrando et cathechizando, missionibus continuo vacare, rudes in doctrinâ christianâ instruere, dubitantes in veritate nostrae fidei confirmare, in haereticos vel de haeresi suspectos, horum consultores, fautores, receptatores,

¹ Coniunct. et videtur delenda (R. T.).

librorum acatholicorum detentores, vel detentorum conscios, et non revelantes, eos in provinciam ferentes et intrudentes, eorumque auxiliores, conscios et participes inquirere atque denunciare, verbum divinum et fidei dogmata ubivis et etiam ex cathedra (sic tamen ut Ordinariorum non disturbentur ecclesiasticae functiones) intra ipsis designatum districtum tradere, sic et¹ poenitentiae sacramentum (solâ demptâ confessione paschali, si locorum curiones ultra non annuant), sacrosanctam vero Eucharistiam in proprio vel tantum missionis sacello, alibi vero non nisi quam accedente ipsorum curionum consensu, administrare, item aegris et moribundis solatium cum auxilio impendere, aliaque peragere omnia quae individuum missionarii apostolici munus exigit, iure sepulturae aliove quocumque parochiali semper excepto.

x. Et quia de religione bene sperari non potest, si ii, qui magistratum ecclesiasticum vel civilem sunt assecuti, moribus scandalosi sint, aut vitiis publice turpes; eapropter teneantur pariter in vitam et mores non modo subditorum ipsis quoad missionis ministerium commissorum, sed et eorum, quibus ipsi subditi intra designatum districtum per demandatam a nobis iurisdictionem subsunt, sedulo invigilare, datoque defectu religioni directe vel indirecte pernicioso, si fraterna admonitio non tollat, nobis et successoribus nostris ad proprias manus² referre, eâ ipsâ ratione qua e converso nostris decanis ruralibus serio demandabimus perspectum habendi an missionarii ipsi missionis muneri debite incumbant, hocque adimpleant ex asse, quidve adversus has nostras leges, condiciones et pacta operentur; quod si praeter spem omnem nostram daretur, eos ad adimplendum et his legibus parendum fraterne moneant; ubi vero nec hac viâ defectus tollantur, et hos similiter nobis habeant referre; praecipue vero curabunt ipsi missionarii ut ecclesia-

sticus et civilis magistratus concordēs vivant, utpote qui, cum non sint duo distincta corpora, sed unius corporis distincta membra, sicut concordia eorum totius reipublicae unica est anchora, qua sublatâ, fluctuant omnia, et religionis contemptus oritur, sic ea servata tuto firmat et immotam securitatem promittit.

xi. Ablegabuntur eapropter a patre provinciali, et nobis praesentabuntur, viri tum scientiâ, tum et sanctimoniâ vitae clari, simplicitatem cum astutiâ commixtam habentes, cordati, sagaces, graves et prudentes, in polemica et in his quae sunt ad bene formandam haereticae pravitatis inquisitionem sufficienter versati, robusti, atque gravissimis missionis laboribus sustinendis idonei et apti, quique esse debeant vel a sanctâ Sede Apostolicâ vel a sacrâ Congregatione de Propagandâ Fide approbati, id est necessariis ad missiones apostolicas peragendas privilegiis instructi¹.

xii. Ut vero penitus a subditis ministerio missionis eorum commissis sint independentes, vetitum sit missionariis pro celebratione missarum eleemosynam ab illis accipere; possint vero a curatis et decurionibus locorum, si hi illis dare velint; et abstinebunt insuper ab omni quaestui seu collecturâ in praedicto ipsis designato districtu (hac integrâ illis, qui hactenus eis in locis eâ gavisi sunt, penitus remanente) contenti in Domino esculentis et poculentis illis quae pii largitores ad hospitii ianuam ultro, liberaliter et charitative detulerint, et pro quibus, si ita visum fuerit, sacrificia peragere possint; signanter autem cavebunt ab omnibus commensationibus cum illis de saepedicto eis designato districtu.

xiii. Fas insuper saepe relatis missionariis haud sit eis designatum egredi districtum a nobis vel successoribus nostris praevis non obtentâ licentiâ, quam tamen non nisi ob gravem causam eis sumus denegaturi.

xiv. Liberum e contra sit semper nobis et successoribus nostris, etsi erigenda domus apostolicae missionis finem principaliter

¹ Ut supra in loc. parall. pag. 513 a: pessime edit. Main. legit licet pro sic et (R. T.).

² Supra pag. 513 b in loco parallelo legitur aures (R. T.).

¹ Male edit. Main. legit instructa pro instructi (R. T.).

praeserant, alios etiam cuiuscumque religionis vel Ordinis in districtum missionis Capuccinorum designatum ad missiones mittere, ipsos autem missionarios Capuccinos alibi ad missiones (ad tempus tamen) ablegare, fundatione domus semper salva, suoque in robore semper firma.

xv. Quod si vero Capuccinorum religio, domus haec missionis, seu missionarii futuris perpetuis temporibus, adversus praedictas leges, pacta et conditiones, quidque per recursum sive dispensationem, privilegia, per latas vel ferendas in contrarium sanctiones, seu et demum per aliam quamcumque viam excogitabilem de mundo, de facto vel de iure, attentare, salubremve intensionem hanc nostram, quae est ut penitus e provinciâ nostrâ eliminantur haeresees, invertere, modificare, vel aliter huic quoque demum modo derogare praesumpserint, noverint illa et isti omnipotenti Deo, nobis, successoribus et venerabili capitulo nostro strictissimam rationem reddituri¹, seque indignationem nostram, successorum nostrorum et praefati venerabilis capituli incursuros, sine quorum et huius expresso consensu, praemissis legibus, pactis et conditionibus nemo, quacumque etiam auctoritate fulgeat, unquam poterit derogare; siquidem derogationem aliquam, modificationem vel commutationem huius nostrae piae intensionis non impetrandi, aut aliter per se se vel alios quidquam in contrarium non attentandi, quin potius vero praedicta omnia et singula perpetuis futuris temporibus pro posse eorum fideliter et iugiter adimplendi, saepe memoratus pater² provincialis et definitores proprio eorum successorum et totius provinciae nomine, datis in id et nobis extradictis reversalibus, solemniter bonaque fide expromiserunt.

In quorum omnium fidem et robur, accedente toties narrati venerabilis nostri capituli consensu, has fieri, eidemque patri provinciali et definitoribus extradi iussimus, subscriptione nostrâ et appensione sigilli nostri maioris munitas. Quae dabuntur³ Sa-

¹ Legendum *reddituros* (n. r.).

² Forsan *dabantur* (n. r.).

lisburgi, in metropoli nostrâ, hac die i mensis aprilis MDCCXXVI.

LEOPOLDUS.

Nos quoque Dei gratiâ Andreas Iacobus comes de Dietrichstein praepositus archiepiscopus, Leopoldus Ernestus L. B. de Firmian, divini pariter gratiâ decanus, Franciscus Maximilianus comes de Liechtenstein senior, totumque capitulum metropolitanae ecclesiae Salisburgensis, fatemur et attestamus omnia, quae in praesentibus litteris continentur, nostro consensu peracta, proindeque perpetuis venturis temporibus observanda esse; pro cuius roboratione sigillum nostrum capitulare appendimus, et nos supradicti praepositus, decanus, ac senior hasce litteras manibus propriis subscripsimus. Datae Salisburgi die xii mensis maii anno MDCCXXVI.

ANDREAS IACOBUS comes de Dietrichstein, praepositus Salisburgensis. — LEOPOLDUS ERNESTUS L. B. de Firmian decanus. — FRANCISCUS MAXIMILIANUS comes de Liechtenstein senior.

Nos Leopoldus, Dei gratiâ archiepiscopus et princeps Salisburgensis, Sanctae Sedis apostolicae legatus natus, primas Germaniae, etc.

Ferventibus votis in id unice intendentes ut, hoste nostro (haereticos seditiosos subditos nostros intelligimus), Deo opitulante, iam fugato, id deleatur penitus, ne intrent, ut perhorrescimus, post discessionem nostram novi lupi rapaces, gregi non parcentes, neve haeresis, herculea veluti hydra, utique cum maiore religionis ac regionis nostrae periculo damnisque continuo repulset, novasque identidem vires reassumere attentet, auctoritate nostrâ archiepiscopali et principali clementer et insimul serio paternitati tuae committimus, quatenus, quae post ultimam haereticorum emigrationem in praefecturâ nostrâ Radstadiensi per patres Ordinis tui sancti Francisci Capuccinorum tam laudabiliter tantoque animarum fructu inceptae et prosecutae fuere catecheses et excursions, sic instituas, ut omni futurâ aetate perdurent. Volumus si-

Consensus capituli Salisburgensis super narratis.

Fundatio missionis Capuccinorum in Radstadi.

quidem, et tibi atque successoribus tuis hisce nostris expresse iniungimus, quod, cum monasterium Capuccinorum in Radstatt a praedecessoribus nostris ad repellendas haereses principaliter fuisse fundatum dignoscatur, duo semper in eo subsistant ad peragendum apostolicae missionis munus in praefectura mox dicta idonei et apti. Erunt vero illi,

Leges missionarii praescriptae.

I. Vel a Summo Pontifice, vel a sacra Congregatione de Propaganda, seu ab eo, cui talis delegabitur facultas, approbati, necessariisque ad missiones apostolicas privilegiis instructi, nec tibi¹ vel successoribus tuis integrum erit, postquam illi semel fuerint ad missiones nostras delecti, eos amovere, nisi ubi primi integrum absolverint annum, subrogatione et praesentatione subinde, atque successivis perpetuis temporibus eâ ratione faciendâ, ut unus vel saltem adsit, qui iam per annum in praemisso Ordini tuo assignato districtu missionarii exercuerit munus, notos habeat subditorum et incolarum mores, sit in re missionum practicus, potensque instruere noviter advenientes, et quos pro tempore missionarios, quoad ea quae missionis munus concernunt, immediate et unice nostris nostrorumque successorum mandatis, quoad disciplinam monasticam vero, sibi² et guardiano eorum volumus et sinimus esse subiectos.

II. Horum missionariorum porro unica cura erit, incessanter intra praedictum Radstadiensis praefecturae districtum, de loco ad locum, et, si necesse fuerit, etiam de domo ad domum excurrando, missionis apostolicae munus alacriter explere, catechizando rudes, in doctrinâ christianâ instruendo, reducendo dubitantes ad viam veritatis, hosque in hac confirmando, in haereticos seu de haeresi suspectos, horumque consultores, fautores, receptatores, librorum achatholicorum detentores, vel detentorum conscios, et non revelantes, eos in provinciam nostram ferentes seu intrudentes, horumque auxiliares, conscios, seu participes, inqui-

¹ Edit. Main. legit *sibi* pro *tibi* (R. T.).

² Edit. Main. legit *sibi* pro *tibi* (R. T.).

rendo, hosque et alios huiusmodi farinae homines nobis, vel cui per nos et successores nostros demandabitur, sine aliquâ personarum acceptione, omnique seposito humano affectu, denunciando, verbum divinum et fidei dogmata ubivis et etiam ex cathedrâ (sic attamen ut Ordinariorum non disturbentur ecclesiasticae functiones) intra ipsis designatum praemissum districtum tradendo, sic et poenitentiae sacramentum (sola demptâ confessione paschali, si locorum curiones ultro non annuerent), sacrosanctam vero Eucharistiam non nisi quam in propriâ eorum monasterii ecclesiâ, vel alibi, habito in id praedictorum curionum assensu, administrando, aegris et moribundis solatium cum auxilio impendendo, atque ea omnia demum peragendo, quae individuum missionarii apostolici exigit munus, iure sepulturae alioque quocumque parochiali semper et ubique Ordinariis locorum reservato.

III. Volumus insuper, quod ipsi missionarii in vitam et mores non modo subditorum ipsis intra praedictae praefecturae fines quoad missionis ministerium commissorum, sed et eorum quibus ipsi subditi ex delegatâ nostrâ iurisdictione subsunt, sedulo invigilare teneantur, datoque defectu religioni directe vel indirecte pernicioso, si fraterna admonitio non tollat, nobis et successoribus nostris ad proprias aures deferre, eâ ipsâ ratione qua e contra nostris demandabimus decanis ruralibus perspectum habendi, an missionarii ipsi missionis munus debite adimpleant et assequantur ex asse, quidve operentur adversus haec nostra mandata, nobis defectus, ubi hos, si aliqui praeter spem nostram omnem contigerint, fraterna admonitio non dissipet, debite relaturis.

IV. Quare praesentabunt¹ semper viri cum scientiâ tum et vitae sanctimoniâ clari, iusti, incorrupti, integri, suaves et insimul severi, graves, sagaces, tam in polemicâ, quam in iis quae ad promovendam haereticalem inquisitionem conducunt, bene ver-

¹ Potius lege *praesentabuntur* (R. T.).

arti; nec accipient illi a subditis quoad missionis munus eis subiectis eleemosynas pro missis, aliave munera, forent licet esculenta, poculenta, multo minus adhuc collecturas seu quaestuos instituent, his et illis ceteris de monasterio patribus, ut hactenus habuerunt, illaesis retentis; qui missionarii insuper, perdurante ministerii eorum praedefinito tempore, Radstadiensem praefecturam egredi non poterunt, a nobis vel successoribus nostris non praehabitâ licentiâ, eis veruntamen non nisi gravi de causâ denegandâ.

v. Licet autem Ordini tuo apostolicae missionis munus in praedictâ Radstadiensi praefecturâ privative committamus, liberum tamen nobis et successoribus nostris esse volumus alios quoque alterius religionis viros in Radstadiensem districtum ad tempus mittere, missionarios de districtu vero alibi etiam et extra illum ad missiones, pariter tamen ad tempus, ablegare, missione pro patribus tui Ordinis veruntamen in Radstadiensi districtu harum tenore semper fixâ et in suo robore firmâ manente.

Curabit proinde paternitas tua, tuique successores omnes, perpetuis futuris temporibus, ut tam salutare nostrum propositum alacriter exequatur, utque in partem pastoralis nostrae sollicitudinis vocati, rite et iugiter expleant haec nostra mandata; quod si in adimplendis ex asse omnibus praescriptis negligentes, incurii, segnesve fueritis, omnipotenti Deo, nobis, successoribus nostris, atque venerabili capitulo nostro districtam reddituros rationem, vosque nostram horumque indignationem noveritis incursum. Actum Salisburgi, metropoli nostrâ, hac die xiv mensis martii anni MDCCXXXVII.

LEOPOLDUS.

Nos Leopoldus, Dei gratiâ archiepiscopus et princeps Salisburgensis, Sanctae Sedis apostolicae legatus natus, primas Germaniae, etc.

Alla missio et praefectura e-iusdem Ordinis in Dambweg. Noverit paternitas tua, quam vesana, proterva, haeretica pravitas caput suum in hac provinciâ nostrâ non ita pridem extu-

lerit, quamque insanis conatibus, abiectâ prorsus fronte, emotâque mente, contra ipsam principalem dignitatem nostram damnablem insurgere non dubitaverit; et noverit quoque, quanto pastoralis animi nostro dolore, palam iam grassante haeresi, armatâ etiamnum vi obsistere fuerimus coacti, viginti et ultra e provinciâ pulsus millibus Lutheri aliorumque haeresiarcharum colluvie, peste simul et exitio involutis. Quia vero statuimus firmissime toto virium nisu hostem adhuc latitantem tamdiu persequi, donec, quod praedecessores nostri voluere semper, potuere nunquam, extremâ internecione per Dei gratiam penitus extinxerimus: hinc de tuâ sollicitudine vigilantia et curâ concreditas nostras oviculas sub unius pastoris ovili iugiter continendi clementer confisi, cumque Capucinatorum monasterium in oppido nostro Dambweg a praedecessoribus nostris ad arcendam a religione nostrâ haeresi luem principaliter fundatum esse dignoscatur, et patres huius in participium tam gloriosi operis vocare, eisdemque perpetuum apostolicae missionis munus in praefecturâ nostrâ Lungaviae, quâ haec late quoad temporalem iurisdictionem patet, clementissime committere tenore praesentium decrevimus. Volumus eapropter et paternitati tuae serio mandamus quatenus:

1. Duo nobis praesententur patres de familiâ monasterii in Dambweg ad praefatum apostolicae missionis ministerium rite obeundum idonei et apti, vel a Summo Pontifice vel a sacrâ Congregatione de Propagandâ, seu ab eo, cui ab hac talis delegabitur facultas, approbati, necessariisque ad missiones apostolicas privilegiis instructi, nec tibi successoribusque tuis integrum sit, postquam illi semel fuerint ad missiones nostras delecti, eos amovere, nisi ubi primi integrum absolverint annum, subrogatione et praesentatione subinde atque successivis perpetuis temporibus eâ ratione faciendâ, ut unus vel saltem adsit, qui iam per annum in praemisso Ordini tuo assignato districtu missionarii exercuerit munus, notos habeat subditorum et incolarum mores, sit

Quid a missionariis sit praestandum.

in re missionum practicus potensque instruere noviter advenientes, et quos pro tempore missionarios, quoad ea quae missionis munus concernunt, immediate et unice nostris nostrorumque successorum mandatis, quoad disciplinam monasticam vero, tibi et guardiano eorum volumus et sinimus esse subiectos.

II. Horum missionariorum porro unica cura erit incessanter intra praedictum Lungaviensis praefecturae districtum, de loco ad locum, et, si necesse fuerit, etiam de domo ad domum excurrando, missionis apostolicae munus alacriter explere catechizando, rudes in doctrinâ christianâ instruendo, reducendo dubitantes ad viam veritatis, hosque in hac confirmando, in haereticos seu de haeresi suspectos, horumque consultores, fautores, receptatores, librorum acatholicorum detentores, vel detentorum conscios, et non revelantes, eos in provinciam nostram ferentes seu intrudentes, horumque auxiliares, conscios seu participes inquirendo, hosque et alios huiusmodi farinae homines nobis, vel cui per nos et successores nostros demandabitur, sine aliquâ personarum acceptatione, omnique seposito humano affectu, denunciando, verbum divinum et fidei dogmata ubivis et etiam ex cathedrâ (sic attamen ut Ordinariorum non disturbentur ecclesiasticae functiones) intra ipsis designatum praemissum districtum tradendo, sic et poenitentiae sacramentum (solâ demptâ confessione paschali, si locorum curiones ultro non annuerent), sacrosanctam vero eucharistiam, non nisi in propriâ eorum monasterii ecclesiâ, vel alibi, habito in id praedictorum curionum assensu, administrando, aegris et moribundis solatium cum auxilio impendendo, atque ea omnia demum peragendo, quae individuum missionarii apostolici exigit munus, iure sepulturae alioque quocumque parochiali semper et ubique Ordinariis locorum reservato.

III. Volumus insuper quod ipsi missionarii in vitam et mores non inodo subditorum ipsis intra praedictae Lungaviae fines quoad missionis ministerium commissorum, sed et eorum quibus ipsi subditi ex delegatâ no-

strâ iurisdictione subsunt, sedulo invigilare teneantur, datoque defectu religioni directè vel indirecte pernicioso, si fraterna admonitio non tollat, nobis et successoribus nostris ad proprias aures deferre; eâ ipsâ ratione qua e contra nostris demandabimus decanis ruralibus perspectum habendi an missionarii ipsi missionis munus debite adimpleant, et assequantur ex asse, quidve operentur adversus haec nostra mandata, nobis defectus, ubi hos, si aliqui praeter spem nostram omnem contigerint, fraterna admonitio non dissipet, debite relaturis.

IV. Quare praesentabuntur semper viri cum scientiâ tum et vitae sanctimoniâ clari, iusti, incorrupti, integri, suaves et insimul severi, graves, sagaces, tam in polemicâ, quam in iis quae ad promovendam haereticalem inquisitionem conducunt, bene versati; nec accipient illi a subditis quoad missionis munus eis subiectis eleemosynas pro missis, aliave munera, forent licet esculenta et poculenta, multo minus adhuc collecturas seu quaestuas instituent, his et illis ceteris de monasterio patribus, ut hactenus habuerunt, illaesis retentis; qui missionarii insuper, perdurante ministerii eorum praedefinito tempore, Lungaviensem praefecturam egredi non poterunt, a nobis vel successoribus nostris non praehabitâ licentiâ, eis veruntamen non nisi gravi de causâ denegandâ.

V. Licet autem Ordini tuo apostolicae missionis munus in praedictâ Lungaviensi praefecturâ privative committamus, liberum tamen nobis et successoribus nostris esse volumus alios quoque alterius religionis viros in Lungaviensem districtum ad tempus mittere, missionarios de districtu vero alibi etiam et extra illum ad missiones, pariter tamen ad tempus, ablegare, missione pro patribus tui Ordinis veruntamen in Lungaviâ praedictâ harum tenore semper fixâ et in suo robore firmâ manente.

Curabit proinde paternitas tua, tuique successores omnes, perpetuis futuris temporibus, ut tam salutare nostrum propositum alacriter exequantur, atque in partem pastoralis nostrae sollicitudinis vocati rite et iugiter expleant haec nostra mandata. Quod

si adimplendis ex asse omnibus praescriptis negligentes, incoris segnesve fueritis, omnipotenti Deo, nobis, successoribus nostris, atque venerabili nostro capitulo districtam reddituros rationem, vosque nostram horumque indignationem noveritis incursum. Actum Salisburgi, metropoli nostrâ, hac die xiv mensis martii anni MDCCXXXVII.

LEOPOLDUS.

In nomine sanctissimae et individuae Trinitatis. Amen. Nos Leopoldus, Dei gratiâ archiepiscopus et princeps Saliburgensis, Sanctae Sedis Apostolicae legatus natus, primas Germaniae, etc.

Missio Benedictionum.

Quamquam, ex quo ad archiepiscopalis et principalis celsitudinis culmen supremi Numinis benignitate fuimus evocati, ac quasi in sublimi speculâ positi, unde per circumspectam sollicitudinis nostrae vigilantiam et imminetia prospiceremus pericula et ad eadem mature depellenda ac dissipanda de opportunis remediis provideremus, id prae primis paternae nobis curae esse voluerimus, ut, qui in commissâ nobis archidioecesi Domini vice fungimur, eiusdem non tantum ipsi mandata, quantum Deo largiente possumus, sedulo expleremus, verum et ad id faciendum subditos nostros verbis et exemplis assiduo cohortaremur, ac concreditas nobis oviculas sub unius pastoris ovili iugiter contineremus, et pabulo salutaris doctrinae veraeque fidei incessanter reficeremus; maiori tamen animi impulsu illuc urgeri credimus, totamque mentis nostrae aciem admovendam esse putavimus, ut haeresi tot archidioeceseos nostrae locis iamdudum fatali, quaeque per duo saecula et ultra, miseret meminisse, tam nefande in provinciam nostram incubuit, tamque altas defixit radices, perpetuum indiceremus bellum, certo autumantes exitio proximos fore principes illos qui haereticos impune tolerant, et causam religionis, quae prorogata sicuti est reipublicae vinculum, ita neglecta eiusdem dissolutio, parum curant, ratique, toleratæ similes, esse in sinu angues fovere,

1 Forsan roborata aut simile (R. T.).

connivere vero ex futurae conversionis spe, esse manifeste rempublicam concutere et commovere. Sudent haec priorum saeculorum monumenta, docentur¹ vero novissima, causam Religionis ita esse cum illa Status coniunctam, ut, illâ turbatâ, et hanc turbari et mutari fiat necesse, cadere vero regna, et imperantes, ubi² religione illâ hi curâ illius deficiunt, traxit namque semper et³ trahet adhuc rempublicam secum religio neglecta aut prolapsa, nec enim esse poterit idem coercendi populi fraenum, ubi non est idem Numinis amor, idem metus, idemque cultus, libertatem credendi licentiâ morum, hanc civium discordiâ subsequente.

Quare ponderantes quod, etsi, spectante Europâ totâ indictum certamen, in comitatum se exhibentibus caelitus auxiliis, pulsus viginti et amplius millibus Lutheri aliorumque haeresiarcharum peste simul et exitio involutorum, adhibitisque tot aliis oppugnandae⁴ haeresi opportunissimis remediis, decretis, inquisitionibus et armis, rite perfecimus victoriam, subsecutis auspiciis et status nostri incrementis, tamen, quae undequaque in provinciâ nostrâ hactenus erat disseminata haeresis, continuo repullulare, et, amputatis licet capitibus, novas identidem vires reassumere seu attentet, seu certo sit attentatura, more scilicet superiorum temporum, quæ hostes nostri (haereticos intelligimus) latius semper grassabantur, quia dumtaxat fugati, deleti nunquam, nisi et de remediis solliciti fuerimus, ut et modicum fermentum tollatur, ne universam massam reiterato corrumpat, neve ex levi flammulâ novi oriantur rogi, divinâ nemesei universos puniente propter unicum haereticum impune toleratum: hinc est quod nostro et maiorum nostrorum malo edocti, tuto opinantes indignum esse catholicum principem sacrilegis imperare, atque expavescentes praenuncium illud divini numinis oraculum: *Quia non custodivisti pactum*

1 Forsan docent (R. T.).

2 Comma istud dimittimus corrigendum lectori (R. T.).

3 Edit. Main. legit ut pro et (R. T.).

4 Edit. Main. legit oppugnanda (R. T.).

meum, et praecepta mea quae mandavi tibi, sciendam regnum tuum a te, et illud dabo servo tuo; postquam pro pastoralis sollicitudine nostrâ diu multumque exquisivimus, quibus mediis magis, ut haeresis penitus extirpetur, neve caput suum herculeum futuris temporibus unquam amplius attollat, nobis et ecclesiae nostrae possit esse consultum, unum demum, idque tutissimum nobis inspiravit divinum Numen, si nimirum¹ per tot annos, seu aliunde huc evocatos, seu de novo a nobis ablegatos, ad perpetua futura tempora stabiliremus apostolicos missionarios, qui incessanter de praefecturâ ad praefecturam, de quarterio ad quarterium, de loco ad locum, de domo ad domum excurrentes, rudes in rebus fidei instruant, in haereticos vel de haeresi suspectos acriter et alacriter inquirant, neve, dum evellitur zizania, eradicetur triticum, vel, eâ relicta et non evulsa, et hoc degeneret, longâ demum experientiâ addiscant unum ab alio discernere et segregare, et cognoscant tandem fictâ religione piorum mentes ludentes, notosque habeant qui, alienas non suas repraesentantes personas, faciunt quod non sentiunt, sentiunt quod non dicunt, et volunt apparere quod esse nolunt, experianturque postremo, et sibi habeant a nobis persuasum, cito, ubi non eradicatur pestis huius radix, totam plebem certo certius iterum iterumque contaminatam iri, quaeque nos in tantâ pastoralis animi nostri amaritudine sumus proh dolor! experti, et inexpertos posteros indubitanter manere.

Quia porro, sicut in huius curae partem sacras religiones in archidioecesi nostrâ diu iam stabilitas evocandas credidimus, ita et aequissimum iudicavimus, ut antiquissimo Ordini sancti Benedicti, a quo, sicut universae prope Germaniae, ita singulariter provinciae huic nostrae verae fidei lumen ante complura iam saecula, et ad ipsa archiepiscopatus nostri initia illatum est, atque assiduo tum probitatis, cum et doctrinae fulgore coruscavit, id pastoralis officii genus eo demandaremus libentius, quo magis ip-

¹ Pessime ed. Main. legit *ninium* pro *nimirum* (R. T.).

sum sacrum Ordinem, ac praecipue universitatem nostram eidem commissam, clementissimâ inclinatione nunquam non prosecuti, ad ipsum incessanter fovendum, et gratiarum nostrarum favoribus prosequendum, tanto provocamur ardentius, quanto frequentius evoluimus flores illos honoris et honestatis fructus, qui, eorum sudore hunc nostrum plantationum hortum irrigante, ubertim succreverunt.

Noverit eapropter praesens aetas et futura, quod venerabilium in Christo honorabilium nobis dictorum abbatum praefati universitati nostrae nobis per omnia subiectae confoederatorum precibus, operam suam, omnisque promptitudinis obsequium, non sine nostro solatio, quod ex zelo eorum concepimus, offerentium, ac humiliter supplicantium ut et ipsi in societatem tam salutaris huius nostri operis admittantur, inque tam gloriosi laboris participium possint¹ venire, clementer annuentes, habito desuper venerabilis nostri capituli consilio, decrevimus, prout tenore praesentium auctoritate nostrâ archiepiscopali et principali decernimus et statuimus, praerelatis universitati nostrae confoederatis abbatibus unam intra Pongoviae montes ex missionibus nostris perpetuis, sub legibus et conditionibus infrascriptis, et quidem in loco Schwazzach dicto committere, perpetuoque firmare, Schwazzachii dicimus, ut unde mors oriebatur, inde vita resurgeret, et quae Schwazzachii per rustico-haereticae seditionis comitia vincebat haeresis, ibi quoque vinceretur.

1. Itaque, propriis eorum sumptibus et expensis, in mox dicto Schwazzachii loco praefati venerabiles confoederati abbates aedificari curabunt missionis domum seu hospitium quatuor patrum missionariorum habitatione² congruum et aptum, quatuor nimirum pro his instructum cubilibus, duobus pro hospitibus, uno pro infirmis, aliisque pro famulis, praeter refectorium, culinam cum penu, cellam vinariam, aliudque cubile bibliothecae inserviturum, cum hortulo, stabulo ac fenile, ultra vero aedificium

Leges servandae.

¹ Edit. Main. legit *possit* (R. T.).

² Aptius lege *habitationi* (R. T.).

hoc extendi ampliari seu in grandiore formam, nec extrui nec redigi possit.

II. *Edificabunt pariter, expensis ut supra, sacellum vel ecclesiam ad plus tribus altaribus provisam Beatissimae Virgini¹ sine labe conceptae dicendam, praeter sacristiam necessariam suppellectili decenter instructam, summam florenorum ter mille dotandam.*

III. *Sustentandis quatuor patribus missionariis, horumque famulis, assignabunt capitale florenorum triginta milium una cum ecclesiae dote mox dicta, penes tota loca ad quincunces usuras, si haberi poterunt, in census elocandum, ab omni decimatione, steura, aliove quocumque excogitabili onere reali, personali vel mixto, semper et ubique immune.*

IV. *Numerus missionariorum sit semper et perpetuis futuris temporibus quaternus, ex quibus saepedicti venerabiles abbates unum pro domo et missionis superiorem, modis et formis quibus hactenus in nominandis professoribus huius universitatis nostrae legitime usi sunt, semper designabunt; designatum vero, ante triennii lapsum, non nisi nobis vel successoribus nostris annuentibus amovebunt, et qui quaternarius numerus sine expresso nostro successorumque nostrorum ac venerabilis capituli nostri consensu nullis unquam temporibus augeri nec minui possit.*

V. *Erunt vero quatuor illi missionarii vel a summo Pontifice vel a sacra Congregatione de Propaganda Fide approbati, idest necessariis ad missiones apostolicas privilegiis a Sancta Sede, vel ab eo, cui talis delegabitur facultas, instructi.*

VI. *Praesentabuntur autem nobis cum primi, cum et his successivis temporibus subrogandi, forma mox supra articulo quarto praescripta, et ubi semel fuerint ad missiones nostras Salisburgenses delecti et ablegati, atque a nobis recepti et approbati, integrum memoratis abbatibus haud esto sive omnes sive singulos a missionis domo et officio remove, nisi ubi primi patres primum triennium ex integro absolverint;*

secuturis vero annis, quolibet missionarius in individuo licentiam abundi a nobis facile obtinebit, ita tamen, ut subrogatio singulis annis singulariter fiat, eo nimirum ordine observato ut semper vel unus saltem adsit, qui iam per integrum triennium missionarii in domo praedicta Schwazzachii excuerit munus, notos habeat subditorum mores, sit in re missionum practicus, potisque instruere noviter advenientes.

VII. *Erunt porro in omne aevum tum missionarii, cum et domus missionis, quoad ea quae missionis munus concernunt, immediate et unice nostris nostrorumque successorum mandatis, quoad disciplinam monasticam vero atque domus oeconomicam directionem, huius pro tempore superiori subiecti, visitatione illius tamen antedictis abbatibus, modis et formis quibus hactenus in visitanda hac nostra universitate legitime usi sunt, concessa, nobis de cetero et successoribus nostris sine ulla contradictione praestantes et omnia ea adimplentes, ad quae regulares, iuxta praescriptum sacri Concilii Tridentini nostrarumque constitutionum synodaliu et provincialium, Ordinariis locorum alias tenentur, sicque salva in hac missionis domo et missionarios ibidem existentes dioecesanam et ordinariam nostram iurisdictionem, necnon iure principatus terrae et advocatiae, sic verumtamen ut nobis et successoribus nostris dumtaxat, etiam quoad ista, uti praemisum, et unice et immediate semper subiaceant.*

VIII. *Designamus autem ipsis privative ad peragendum missionis apostolicae munus integras praefecturas ad S. Ioannem, ad S. Vitum, et Doldegg cum praeturis Gastein, Grossarl et Wagrain, quae hae omnes late patent quoad temporalem per nos ipsis praefectis nostris delegatam iurisdictionem.*

IX. *Et in quibus ipsorum missionariorum officium, finis, et praecipua, imo unica cura erit, incessanter de loco ad locum, et, si necesse fuerit visum, etiam de domo ad domum excurrendo et catechizando, missio-*

¹ Edit. Main. legit *Virginit* (R. T.).

¹ Potius lege *per* vel *quoad* (R. T.).

nibus continuo vacare, rudes in doctrinâ christianâ instruere, dubitantes ad veritatis viam reducere et in hac confirmare, in haereticos vel de haeresi suspectos, horum consultores, fautores, receptatores, librorum acatholicorum detentores, vel detentorum conscios, et non revelantes, eos in provinciam nostram ferentes vel intrudentes, eorumque auxiliares, conscios seu participes inquirere, hosque et alios huiusmodi farinae homines nobis, vel cui per nos et successores nostros demandabitur, sine aliquâ personarum acceptatione, omni seposito¹ humano affectu, spretisque intercessionibus quibuscumque, denunciare, verbum divinum et fidei dogmata ubivis et etiam ex cathedrâ (sic tamen ut Ordinariorum non disturbentur ecclesiasticae functiones) intra ipsis designatum districtum tradere, sic et poenitentiae sacramentum (solâ demptâ confessione paschali, si locorum curiones ultro non annuerent), sacrosanctam vero Eucharistiam in proprio vel tantum missionis sacello, alibi vero nonnisi quam accedente ipsorum curionum assensu, administrare, item aegris et moribundis solatium cum auxilio impendere, aliaque peragere omnia, quae individuum missionarii apostolici exigit munus, iure sepulturae alioque quocumque parochiali semper et ubique excepto.

x. Teneantur pariter in vitam et mores non modo subditorum ipsis quoad missionis ministerium commissorum, sed et eorum quibus ipsi subditi intra designatum districtum ex demandatâ a nobis iurisdictione subsunt, sedulo invigilare, datoque defectu religioni directe vel indirecte pernicioso, si fraterna admonitio non tollat, nobis et successoribus nostris ad proprias manus² deferre.

xi. Quapropter praesentabuntur nobis viri cum scientiâ tum et vitae sanctimoniâ clari, simplicitatem columbae simul et astutiam serpentis habentes, ut virtute et fortitudine praediti valeant disrumpere hominum iniquitates, et bene cordati non extimescant faciem potentis; sint iusti, incorrupti, in-

tegrî, suaves et insimul severi, graves, sagaces, cum in polemicâ tum et in his quae ad notitiam promovendae haereticæ inquisitionis conducunt bene versati, ad labores nati, semper et ubique inhiantes animarum salutî; pro certo demum aliorum periculis habentes, turbare potius male concessa¹ quam ut reducantur errabundi haeretici conniventia nec flecti nec emolliri.

xii. Hinc etiam, et ut vel eo magis omnis tollatur humani affectus occasio, vetitum sit missionariis ipsis a subditis quoad missionis munus eis subiectis pro missis eleemosynas, vel ad de cetero munera aliqua recipere, forent haec licet esculenta vel poculenta, modici etiam num valoris, atque abstinebunt ab omnibus commensationibus cum illis, et quibus missionariis insuper fas haud erit sub quocumque excogitando praetextu literas docere superioris vel primae seu inferioris classis, unice missionis muneri intra ipsis designatum districtum semper incumbentes, quem egredi haud valeant, a nobis vel successoribus nostris praevisâ non habitâ licentiâ, hac eis verumtamen nonnisi ex causâ urgente denegandâ.

xiii. Licet porro missionem hanc Benedictinam in saepefato loco Schwarzach in perpetuum stabilire intendimus, et vigore praesentium stabilimus, privative quoad omnes, quamcumque² privilegiis omnibus, praerogativis et iuribus, hactenus per praedecessores nostros huic nostrae universitati concessis, hisce nostris, quatenus praemissis et infra dicendis legibus et conditionibus non repugnant, condecoratam volumus, et illi parificatam declaramus; liberum tamen semper nobis et successoribus nostris esse pronunciamus, alterius etiam Ordinis missionarios apostolicos in districtum missioni Benedictinae supra designatum ad tempus mittere, ipsos missionarios Benedictinos vero alibi et extra illum, ad missionis munus, et pariter ad tempus tantum ablegare, fundatione domus Benedictinae praemissae semper privative salvâ suoque in robore firmâ.

xiv. Ne vero patres missionarii tempora-

¹ Male ed. M. legit *sepositio* pro *seposito* (R. T.).

² Supra pag. 513 b legitur *aves* (R. T.).

¹ Comma istud non satis perspicuum (R. T.).

² Videtur legendum *quamque* (R. T.).

libus curis impliciti ab apostolico munere suo impediuntur, neve saecularibus graves et odiosi fiant, lex foundationis certa firmaque esto, nec ipsos, nec missionis hospitium, stabilia bona, vel quae sub horum nomine veniunt, sive per actus inter vivos, sive per ultimam voluntatem intra provinciam nostram acquirere, vel quocumque demum praetextando titulo acquisita, citra nostrum vel successorum nostrorum atque venerabilis nostri capituli expresso consensu¹, retinere posse; quod si contra hanc legem futuris unquam temporibus actum fuerit, in arbitrio nostro erit, et successorum nostrorum, vel etiam ante laudati venerabilis capituli nostri, de bonis ipsis emptis, acquisitis, donatis, relictis, aliove quocumque titulo et modo ad ipsos vel ad missionis domum perventis, pro libito et auctoritate principis terrae, atque in vim legis pactique praesentis dantis causam foundationi, et sine qua haec neulquam fuisset concessa, pleno iure disponendi, tollendi et incamerandi, domus superiore adstricto ad singulis annis rationum praesidi et assistentibus huius nostrae universitatis, ubi haec visitatur, vel si visitatio non haberetur, eiusdem rectori reddendi, qui nobis et successoribus nostris teneantur desuper accuratam dare relationem, et quibus de redditibus, si qui super remanentes extabunt, fas sit pro exigentia et congruitate disponendi, hosque, ubi necessitas vel utilitas magis exegerit, applicandi.

xv. Ratificamus verumtamen et approbamus per ipsos venerabiles abbates, sub spe clementissimi nostri rati, in supputationem summae supra pro fundatione definitae florenorum trigintamillium factam, pro faciliiori patrum missionariorum sustentatione, emptiorem cuiusdam praedii in praefectura nostrâ Goldegg siti, vulgo das Uhrfahrlehen nuncupatum, cum huic incorporato praedio Lehenfeld dicto, et alterius praemisso adiacentis fundi Fleidten agnominati, sub praefectura nostrâ S. Ioannis existentis, quaeque praedia, etsi haec iuris directorii camerae nostrae esse, omnibusque angariis et perangariis, steuris,

¹ Potius lege *expressum consensum* (R. T.)

contributionibus, aliisque oneribus communalibus, sicut alia omnia praedia rustica, hactenus subiecta fuisse dignoscantur, ex speciali tamen nostrâ clementiâ, et pro singulari, quo in sancti Benedicti Ordinem ferimur, amore et affectu, accedente venerabilis nostri capituli assensu, ab omni dominio directo, aliisque quibuscumque oneribus, angariis, perangariis, decimationibus, steuris, contributionibus communalibus, provincialibus vel militaribus, perpetuis futuris temporibus, ac donec et usquequo apud ipsam missionis Benedictinae domum permanebunt, deque huius erunt dominio, et non aliter, etc., libera et immunia penitus declaramus, et ut libera et allodialia haberi volumus et mandamus, eâ verumtamen lege et conditione, ut e contra tam praedia ipsa quam conductores eorum, coloni, inquilini, laboratores, famuli, et quaecumque aliae personae saeculares, nullâ penitus exceptâ, quae in futurum habitabunt vel operabuntur in praediis praememoratis, quoad iurisdictionem omnem tum criminalem cum et civilem, nullâ penitus penitusque demptâ, libere iurisdictioni praefectorum nostrorum, ut in antea, subiaceant, quodque etiam¹ ad famulitium laicum ipsorummet missionariorum, seu domus missionis claustra fuerit inventus, ab intra vero sic, ut, factâ in civilibus vel criminalibus causis poenam sanguinis non inferentibus urbanâ apud superiorem missionis domus requisitione, hic comparitionem personalem coram iudice saeculari, laicis sibi domui missionis vel missionariis famulantibus demandare; si vero aliquis ex istis intra dictae domus claustra moreretur, obsignationem et inventarium curiae saeculari sine contradictione aliquâ, cumulative cum ipso domus superiore, permittere sit obstrictus.

xvi. Quod si finaliter saepe relati venerabiles confoederati abbates, eorum Ordo, missionis domus, vel et missionarii ipsi, huius universitatis nostrae praeside et assistentibus scientibus, et absque morâ non obstantibus, perpetuis futuris temporibus adversus praedictas leges, condiciones et pacta

¹ Quae seq. dimittimus lectori scio (R. T.).

quidquam, sive per se vel per alios, per recursum, per dispensationem, per privilegia latas vel ferendas in contrarium sanctiones, seu et demum per aliam quamcumque viam quae posset excogitari, de facto vel de iure attentare, salubremve hanc intentionem nostram invertere, modificare, vel aliter huic quoquo demum modo derogare praesumpserint, aut vero in adimplendis ex asse omnibus praescriptis negligentes, incurii, segnesve forent futuri, noverint illi omnipotenti Deo, nobis, successoribus nostris, et venerabili nostro capitulo strictissimam rationem reddituri, seque indignationem nostram, successorum nostrorum et praefati venerabilis nostri capituli incursuros, sine quorum et huius expresso assensu, praemissis legibus, pactis et conditionibus nemo, quacumque etiam auctoritate praefulgeat, unquam poterit derogare, siquidem derogationem aliquam, modificationem, vel commutationem huius piae intentionis nostrae non impetrandi, aut aliter per se vel alios quidquam in contrarium unquam attentandi, quin potius vero praedicta omnia et singula perpetuis futuris temporibus pro posse eorum fideliter et iugiter adimplendi, praeses et assistentes saepedictae universitatis nostrae, proprio et omnium confederatorum venerabilium abbatum nomine, datis in id et nobis extradictis solemnibus reversalibus, bonâ fide promiserunt.

In quorum omnium fidem et robur, interveniente venerabilis nostri capituli assensu, has fieri, atque mox dicto praesidi et assistentibus extradi iussimus, subscriptione nostrâ et appensione maioris nostri sigilli firmatas. Quae dabantur Salisburgi, metropoli nostrâ, hac die viii mensis decembris anni MDCCXXXVI.

Nos quoque Dei gratiâ Andreas Iacobus comes de Dietrichstein, praepositus et archipresbyter, Leopoldus Ernestus L. B. de Firmian, divini pariter gratiâ decanus, Franciscus Maximilianus, comes de Liechtenstein, senior, totumque capitulum metropolitanae ecclesiae Salisburgensis fatemur ac attestamus, omnia, quae in praesentibus litteris continentur, nostro consensu erecta, proin-

deque perpetuis venturis temporibus observanda esse; pro cuius roboratione sigillum nostrum capitulare appendimus, et nos supradicti praepositus, decanus ac senior hasce litteras manibus propriis subscripimus. Datae Salisburgi die xv martii anno MDCCXXXVII.

ANDREAS IACOBUS COMES DE DIETRICHSTEIN, praepositus. — ERNESTUS L. B. DE FIRMIAN, decanus. — FRANCISCUS COMES DE LIECHTENSTEIN, senior.

Nos Leopoldus, Dei gratiâ archiepiscopus Salisburgensis, Sanctae Sedis Apostolicae legatus natus, primas Germaniae, etc.

Profitemur pro nobis nostrisque in archiepiscopatu successoribus, et notum facimus universis. Postquam honorabilis ac dilectus nobis pater Benjamin Elbel Ordinis Minorum sancti Francisci Recollectorum provinciae Argentinensis provincialis, suo et eiusdem provinciae nomine, necnon totus eiusdem sacri Ordinis conventus huius¹ humiliter supplicando nobis exposuerunt, qualiter dilecta et fidelis nobis Anna Theresia Glickin, nata Laimprucherin, Christophori Michaëlis Glick, Camerae nostrae aulicae quondam secretarii, relicta vidua, missiones apostolicas a nobis ad penitus eliminandam haeresim intra montana deputatas immortalitate donatura, in specie autem ne missio ex nonnullis praefati Ordinis et conventus sacerdotibus iam ad initium anni MDCCXXXII erecta aliquando collaberetur, sed ad futura etiam tempora in perpetuo vigore conservaretur, pro eius fundatione capitale quoddam duodecies mille sexcentos florenos, ad effectum approbationis nostrae, câ cautela, modo ac reservatione deputaverit, ut, si quocumque tempore contingeret patres eiusdem conventus ac provinciae antedictam missionem non amplius habere obeundam, praememoratum capitale a loco detentionis suae relevatum, unâ cum refusione expensarum in erectione domus missionariae factarum, alteri cuidam missioni, hospitio vel fabricae religiosae intra vel extra archidioecesim nostram pro libito et ad pla-

Fundatio missionis Ordinis Minorum Recollectorum in montana.

¹ Vox huius non satis cohaeret (n. r.).

citum provincialis seu superiorum supradictae Argentinensis seu superioris Germaniae provinciae illo tempore praesidentium impendi, aliâ vero ratione nec posset nec deberet applicari: cui intentioni conformiter, pater provincialis et conventus praedicti nobis ulterius humillimè supplicarunt quatenus a nobis, seu¹ Ordinario ac principe territoriali, fundatio et dispositio huiusmodi ratificaretur et confirmaretur, ac demum principali sigillo nostro roboraretur: quem in finem praenominatae Glickin sub datâ xiv novembris novissime elapsi anni mcccxxxv rite confectas ac legitime expeditas foundationis litteras in originali nobis praesentarunt de verbo ad verbum hoc tenore sonantes:

Instrumentum
dictae funda-
tionis factae a
Theresia Glick.

« In nomine SS. Trinitatis, Patris, Filii, et Spiritus Sancti. Ego infranominata, virtute huius publici instrumenti, profiteor ac contestor, quod, posteaquam attentâ consideratione perpendi multiplices fructus ex missionibus sapientissimâ ordinatione celsissimi ac reverendissimi domini Leopoldi archiepiscopi Salisburgensis, etc., domini ac principis mei clementissimi, intra montana erectis, universae Ecclesiae catholicae accrescentes, eosdem aliquâ ex parte cogitaverim perpetuare. Quem in finem oculos mentis meae conieci in reverendos patres Franciscanos hic Salisburgi sic dictae Argentinensis seu superioris Alemanniae provinciae, reflectendo quod non solum pro moderno, quo per binos patres indefesso fervore magnoque Romanae religionis incremento missionem in Binzgaviâ notabili iam tempore obierunt, sed insuper ab immemorabili tempore singulis annis per quadragesimam ex causâ incidentis confessionis paschalis similiter per duos patres ordinariae missioni cum laude et fructu inservierint. Ut igitur sacra missio pro nunc durans praefatorum patrum Franciscanorum dicti conventus nullo unquam tempore collabatur, sed in perpetuo flore et vigore etiam futurâ aetate perseveret², eandem pro tenuitate virium mearum, sub³ spe clementissimae approbationis

celsissimi principis ac domini mei clementissimi, etc., sequenti modo fundare constitui:

« Quandoquidem praememorati patres Franciscani vi suae regulae et statutorum omnis proprietatis ac reddituum sunt incapaces, idcirco consigno, dono et relinquo Deo tamquam patri universali, eiusque immaculatae sponsae S. R. E. velut matri fidelium universali, de bonis ac possessionibus mihi caelitus impertitis, duodecies mille et sexcentos florenos, idest 12600 florenos, partim ad manum actu existentes, partim in domo partis transpontinae ad auream crucem dictâ hodiedum in bonis domini Andreae Ottmann civis et mercatoris Salisburgensis existente censui expositos, cum hac tamen conditione ac reservatione expressâ, ut ex ante dicto capitali equidem bis mille floreni illico in fabricam domus et capellae missionariae loco quodam competente commutari valeant; reliqua vero summa omni tempore ad censum quinque pro centum maneat exposita, cuius pensionis censualis dimidium ad tempus meae vitae patribus Franciscanis missionariis pro tempore existentibus in sustentationem, sub ratione purae eleemosynae, modo meliore quo sunt eius capaces, cedat; altera medietas vero mihi etiamnum pro necessitatibus meis serviat: attamen post obitum meum, sive serius, sive citius, iuxta providentiam divinae voluntatis, eventurum, totum capitale unâ cum pleno censu ad conservationem dictae missionis deputatum sit et esse debeat. In omnem eventum autem, quo contra spem meam quocumque tempore futuro mutatio aliqua circa saepe dictam sacram missionem obtingeret, et patres Franciscani praememorati conventus ac provinciae eandem obire non amplius permetterentur, dispono proprio motu et instinctu (ex causâ spiritualium beneficiorum, quae a saepelaudato Ordine sancti Francisci in singulare animae meae solatium accepi, alioque modo compensare non valui), ut ex tunc totum capitale, ubicumque eo tempore reperietur¹,

¹ Videtur legendum seu pro seu (R. T.).

² Edit. Main. legit perseverent (R. T.).

³ Pessime ed. M. legit sum pro sub (R. T.).

¹ Edit. Main. legit reperientur (R. T.).

relevatum, unâ cum refusione expensarum pro erectione domus missionariae factarum, alteri cuidam missioni, hospitio vel fabricae religiosae, intra vel extra Salisburgensem provinciam, pro libito et ad placitum patris provincialis seu superioris patrum Franciscanorum supranominatae Argentinensis seu superioris Germaniae provinciae eo tempore existentis, et non aliter, applicari debeat vel possit.

« Ut autem haec mea intentio, fundatio, et unice ad augmentum divini honoris colligans dispositio scopum suum exoptatum ex nunc usque in perpetua saecula inviolabiliter attingat, hinc pro quolibet tempore regnaturum principem territorialem ac dominum clementissimum harum vigore tamquam illius executorem, confirmatorem ac protectorem submississime invoco atque exoro, quatenus haec causa Dei nullo non tempore potentissime suffulta sit et permaneat.

« In cuius seriem et irrevocabilis voluntatis meae testimonium ac firmitatem, has litteras propria manu subscripsi, et meo sigillo munivi, et duos testes pro simultaneâ expeditione studiose rogavi. Actum Salisburgi, in aedibus Wengerianis, ex adverso ecclesiae quondam parochialis sitis, in meâ habitatione supra tres scalas, a tempore salutiferae Nativitatis Christi die xvi novembris anno MDCCXXXV. — L. S. ANNA THERESIA GLICKIN nata LAIMPRUCHERIN; T. S. JOSEPH WILHELMUS A KAFLEIN S. CELFF, consiliarius aulicus et civitatis syndicus, nomine procuratoris; T. S. MICHAËL WENGER consul, testis rogatus; T. S. IGNATIUS CHRISTOPHORUS MEZGEC senator, testis ».

Praeterea saepedicti provincialis et conventus nobis humillime exposuerunt, qualiter venerabilis, dilectus et fidelis consiliarius noster ecclesiasticus Marting abbas Michaël Burani, necnon prior et conventus ibidem, consensum ab eis ratione dominii directi debite expetitum sub certis honestisque conditionibus praestiterint, ad intentam domum missionis in quodam fundo per nostrum dilectum et fidelem Antonium Iosephum Placidum Trauner Hundsdorffii prae-

fecturae nostrae Taxenbacensis benevole oblato aedificandam, uti similiter patentales desuper expeditae, et nobis in antigrapho fide digno exhibitae ostendunt tenoris sequentis :

« Nos Martinus, Dei gratiâ abbas venerabilis ecclesiae et monasterii Michaël Burae Ordinis sancti patris Benedicti in archidioecesi Salisburgensi situati, pater Ioannes Baptista Aichhamer p. t. prior, unâ cum toto conventu ibidem, harum virtute, pro nobis, nostris successoribus et ecclesiâ, publice notum facimus universis, quorum interest et quibus scire expedit, qualiter multum reverendum patrem Benjamin p. t. minister provincialis fratrum Minorum Recollectorum superioris Alemanniae supplici libello nobis exposuerit, qua ratione celsissimo ac reverendissimo principi domino domino nostro clementissimo placuerit, ad proseguendam et augendam missionem in Binzgaia ipsis reverendis patribus Franciscanis regularem domum et capellam in eodem districtu, ubi locum necessitatibus suis acomodum invenerint, ibidemque fundum obtinuerint, erigendam concedere. Cum itaque, prout accepimus, competens fundus a nostro nostrique monasterii emphyteuta Antonio Iosepho Placido Trauner affectuose oblatus fuerit, et solus consensus ex parte dominii directi adhuc desideretur: nos, opus laudabilissimum nullatenus retardare, multo minus impedire, sed quantum ex nobis est omni viâ promovere intendentes, huius vigore impertimur consensum nostrum in optimâ formâ qua conformiter statutis nostris provincialibus impertiri potest, absque praesenti impositione cuiusvis canonis vel aliarum emphyteutarum praestationum, quas, sicut ipsum dominium directum, et cetera iura nobis (casu quo haec sacra missio citius vel serius extingueretur, et forte necessaria amplius non foret, ac per consequens haec domus cum pertinentiis ad alias quam similis sacri Ordinis personas devolveretur, aut quocumque demum modo Traunerianis possessoribus ibidem, sicut aequitati convenit, ante omnes alios redhiberetur) reservata volumus. Quem in finem

Consensus capituli monasterii Burani super fundatione missionis in Binzgaia.

hunc domini directi consensum cum nostris abbatiæ et conventus insignibus (attamen sine praeiudicio) expediri, ac propriis manibus subscriptum extradi fecimus. Actum in praememorato monasterio Michael-Burano, vii mensis decembris, an. MDCCXXXV.

MARTINUS, abbas L. S. — L. S. IOANNES BAPTISTA AICHHAMER, prior, et conventus. — Concordat cum originali. — Ita testor, F. CHERUBINUS MAYR, lector iubilatus ».

Confirmatio
fundationis et
donationis Glickianae.

Nos itaque attendentes, quod praefata Glickiana fundatio et donatio, maturâ deliberatione et spontaneâ voluntate facta, ad iuge incrementum et exaltationem sanctae catholicae Ecclesiae cedat: nobis autem eo acceptabilior eveniat, quo acerbiori animi sensu statim in primordio regiminis nostri expediri debuimus, non obstante quod venerabiles praedecessores nostri per duo iam iam saecula summo fervore allaborarint, nec curis nec sumptibus pepercerint ad lutheranam aliasque haereses mox ab origine subingestas penitus extirpandas atque eliminandas, imo nonnulli eorum se opere ipso perfecisse indubitanter crediderint, nihilo tamen secius oppositum (quod fentes dicimus) postliminio se prodidisse, dum, re per orbem imperiumque notissimâ, pars maior nostrorum subditorum intra Alpes sub religionis praetextu damnablem contra nos seditionem concitarunt, ac Augustanae confessioni, aliisque sectis et erroribus nomen addicendo, istorum¹ nunquam hactenus permissum exercitium prope modum vi extorquere contenderunt, satis per hoc contestati quam temerario ac subdole iam ipsi eorum proavi atavique perniciosâ illâ etiam posteris tenaci agglutinâtâ simulatione antedictis praedecessoribus nostris imposuerint; quod tamen perpetuatis inquisitionibus ne vix quidem evenire potuisset, si praesertim pastoribus et curatis locorum ordinariis, qui ob multiplices functiones ex officio praestandas a domibus suis abesse difficulter possunt, missionarii coadiutores in subsidium adiuncti, et ad implorandam veram, contra extirpandam falsam fidei do-

ctrinam ex proposito fuissent destinati: in cuius eventuali intermisso nostris quoque successoribus, tametsi per nos plus quam duo et viginti sectoriorum millia ex nostris ditionibus fuerint expulsa, nil nisi similis rerum alea suo tempore foret expectanda, omni zelo ac severitate ceteroquin frustra fatiscente: propterea, praemissâ sedulâ et maturâ deliberatione, et ex nostri pastoralis officii motu, ne insuper apud istum et omniscium iudicem rei flamus praesentatae sed neglectae occasionis de ipsius honore et animarum lucro promovendo, supra memorati patris provincialis et conventus humillimas preces et motiva duximus admittenda; proindeque praeallegatam fundationem Glickianam simul ac ex titulo domini directi impertitum consensum, reservatis utrinque conditionibus, ex certâ scientiâ, auctoritate nostrâ ordinariâ, et ut princeps terrae, non solum ratificavimus et confirmavimus, sed insuper ulterioribus eorum supplicationibus inclinati eâdem auctoritate concessimus, indulgimus, quatenus Hundsdorffii capella in praefecturâ nostrâ Saxenbacensi sita, ac praenominato Trauner iure haereditario propria, SS. Trinitati sacra (cum, ut praefertur, aliunde parum convenienter situata, angusta, vetus et incommoda, easque¹ ipse patronus attestato nobis in scriptis sub xxi decembris MDCCXXXV exhibito consensit) sine obstaculo destruat, et alia in eius vicem loco vicino erigatur, quae, novae domui missionis ad usum patrum missionariorum annexa, ad retinendam veteris memoriam, honoribus eiusdem SS. Trinitatis ac simul S. Antonii de Paduâ thaumaturgi dedicatur²: demum ex variis oblationibus mille quingentorum florenorum circiter pro veteri sacello congesta dos (demptis quingentis florenis quos ecclesiae vicariali ad B. V. in Brugg absque onere attribuimus et incorporamus) ad fabricam novae aedis missionariae (quam iidem patres posthac sartam tectam et in reliquo decenter instructam conservare debeant) applicari et converti possit.

¹ Forsan eiaque (R. T.).

² Aptius lege dedicetur (R. T.).

¹ Videtur legendum *istarum* (R. T.).

Quae omnia, quatenus opus est, harum vigore, motu proprio, et cum certâ scientiâ, denuo ratificamus, confirmamus, ac respective indulgemus; mandantes ut iisdem quoad omnia et singula puncta firmiter adhaereatur; simul tamen caventes ut vicissim praememorati patres Ordinis Minorum sancti Francisci Recollectorum dictae Argentinensis seu Alemanniae provinciae subiectas condiciones ex suâ parte punctualiter impleant et observent, scilicet:

Conditio-
nes
per
missiona-
rios
adimplen-
dae.

I. Apostolicum missionis officium intra terminos iamdiu sibi praefixos, videlicet in praefecturis ac satrapiis Zellae Pinzgoviensis, Taxenbaci et Rourii, qua late in temporalibus se extendunt, obire teneantur; ultra illos vero, citra nostrum et nostrorum in archiepiscopatu successorum praescitum et consensum, nullatenus progredi eis liceat.

II. Domum missionis unâ cum sacello vel ecclesiâ (cui de omni necessariâ suppellectili, luminibus et vino ad sacrificium providere eisdem incumbit) conformiter foundationi Glickianae in amplitudine moderatâ pro subsistentiâ missionariorum quanto citius et talem in formam extrui procurent, ut illud aedificium pro quatuor patrum missionariorum et unius fratris laici incolatu accommodum, ac praeterea duabus cameris pro provinciali vel hospitibus, necnon refectorio, culinâ, cellâ vinariâ et penuariâ, unâ cum bibliothecâ, pomario et lignili, iuxta ideam praesentatam, competenter instructum: amplius nec ipsum nec ecclesia possit dilatari. Siquidem.

III. Numerus patrum missionariorum cum superiore (cuius institutio pater provinciali competat) inclusive quovis tempore indispensabiliter in quatuor personis consistat, ita ut iste numerus, absque nostro vel nostrorum successorum praescitu et licentiâ, insuper expresso consensu nostri venerabilis capituli metropolitici, perpetuis temporibus nullatenus imminui, multo minus augeri valeat. Qui proinde:

IV. Nobis nostrisque in archiepiscopatu successoribus singuli a patre provinciali nominandi ac praesentandi sunt; factâ autem semel approbatione nostrâ, non aliter ab

eo poterunt revocari et mutari, quin saltem unus ipsorum, qui munus missionis ad biennium obierit, sitque in eo sufficienter exercitatus et expertus, ac per consequens neoadventantium instructioni et manu-ductioni aptus, in hospitio missionis quovis tempore persistat et inveniatur. Propterea:

V. Supradicti patres missionarii ab instanti susceptionis et ablegationis suae, necnon durante missionis officio in praeasignatis dynastiis, solummodo nobis et nostris in archiepiscopatu successoribus immediate subiecti existant; sic tamen ut tam eorum personalis quam localis, seu domus ipsiusmet directio, sicut et consueta visitatio, patri provinciali reservata et illaesa permaneat. Quod autem ipsum missionis officium concernit, iidem

VI. Missionarii, proprio, ut decet, animarum zelo afflati, summo ac irremissibili studio connitentur, turmatim, vel, in casu exigentiae, etiam ostiatim circumeundo, commissum sibi munus apostolicum ita peragant¹, ut instructione, hortatu et excitatione continuâ ignorantes quae sunt fidei catholicae edoceantur, ancipites in viam regiam deducantur, infirmi confortentur, fortes autem ad perfectionem christianam magis, magisque accendantur. Insuper singulari studio explorare satagant, qualesnam personae sui districtus de fide suspectae evaserint, et quinam earum receptatores, fautores, quocumque modo auxiliares existant; ubinam locorum libri haeretici vel ex antiquo reservati vel de novo introducti habeantur; item quis istorum vel alterius eorum notitiam aut partem habeat. Cuiusmodi pestilentes homines, ipsorumque fautores, vel nobis, vel nostrae in causâ religionis erectae secretae deputationi, tempestive denunciandi, et quaecumque ad formandum vel finiendum processum haereticalem necessaria ferventius assumenda et producenda sunt. Insuper verbum Dei et doctrinam catholico-christianam per omnia loca sui districtus (sine impedimento tamen officiorum ecclesiasticorum ordinariorum) populo etiam

¹ Aptius forsân legeretur *peragere* (R. T.).

ex cathedrâ articulate et intelligibiliter proponant, confessiones excipiant, sacram Communionem, tamen in solâ ecclesiâ suae missionis, extra illam vero nonnisi de licentiâ pastoris ordinarii, distribuunt. Paschali ibidem¹ tempore omnes sui districtus subditos pro confessione ac communione ad ordinarios suos curatos indistincte et sine exceptione remittant. Praeterea infirmos saepius invisant, ac solatio reficiant; moribundis quoque (absque usurpatione tamen iuris parochialis vel sepulturae) christianâ charitate assistant; ac demum in his aliisque articulis apostolicum missionis munus secundum essentiam et proprietatem suam indefesse adimpleant. Praesertim vero vigilant² oculo et accuratâ attentione hinc inde observent actiones subditorum non minus ac eorum quibus illi a nobis sunt concrediti; et siquidem nonnullos defectus vel errores deprehenderint, qui religioni quoquomodo seu mediate seu immediate contrariantur, defectuosos paternâ admonitione retrahant; hac vero non proficiente, nobis vel nostris successoribus absque acceptione personarum ad proprias manus transcribant. Quemadmodum e contra nostrum decanum ruralem ad id instrui curabimus, quatenus similiter invigilet, et iugiter observet, an, ex parte saepedictorum patrum missionariorum, iniunctum missionis officium integre impleatur, et in hoc foundationis instrumento praescriptae conditiones punctatim opere exhibeantur; utque is, contrario praeter spem emergente, quoties necessarium videbitur, patrem superiorem eo tempore existentem desuper commoneat; hocque¹ benignâ monitione nihil proficiente, notatos defectus nobis nostrisque successoribus debite denunciât. Ceteroquin tam ipse decanus aliique nostri illis locorum expositi curati quam iidem missionarii nullo unquam tempore obliviscentur mutuâ intelligentiâ et bonâ harmoniâ unus alterum iuvare et communi zelo religionis incrementum cum largâ usurâ animarum promovere. Quem in finem:

¹ Forzan *itidem* pro *ibidem* legendum (R. T.).

² Videtur legendum *hacque* (R. T.).

VII. Iterato mentionatus pater provincialis singulari curâ providebit ad grave hoc missionis officium viros exquisitae pietatis, doctrinae et prudentiae seligere, ac nobis praesentare, qui simul cordati, spectabiles, seriosi, religiositate pleni, ac ita bene imbuti, ut, prudentiam serpentinam cum columbinâ simplicitate optime scientes adunare, imposito muneri omnino pares existant: insuper in polemicis versati, eorum ad minus, quae ad inquisitionem haereticae pravitatis exiguntur, satis experti, praesertim etiam a Sede Apostolicâ seu a Congregatione de Propagandâ Fide potestate missionarii apostolici provisi, ac denique patriotici idiomatis beneperiti inveniantur. Porro:

VIII. Ut iidem missionarii subditis nullâ ratione obstricti, nec aliis onerosi, consequenter apud omnes in eo maiori veneratione ac respectu habeantur, eleemosynam pro lectione sacrorum nullam unquam recipient; similiter ab omni collecturâ (quae tamen collectoribus¹ aliâs ibidem consuetis inviolata permaneat) intra praefixos suae missionis fines abstinebunt, illis contenti quae per homines affectionatos irrequisite ex proprio motu et voluntate ad portam afferentur: quod tamen ad eorum locorum curatos non extendendum, casu quo illi missionariis sacra quaedam legenda relinquere, et propterea sanctam eleemosynam porrigere voluerint.

IX. Prohibetur iisdem missionariis, ne citra facultatem a nobis expetitam (quam tamen nisi ex gravi consideratione haud facile denegabimus) extra assignatum districtum quavis ex causâ se conferant vel absentent. E contrario:

X. Liberum sit nobis ac nostris in archiepiscopatu successoribus quavis vice alios cuiuscumque Ordinis missionarios Zellam, Taxenbacum, et in Rauris, et vicissim eosdem patres Minores Ordinis sancti Francisci ad alias praefecturas et satrapias nostrae archidioecesis, verumtamen hoc illudve ad tempus solummodo, non vero in perpetuum,

¹ Edit. Main. legit *Collectoribus* (R. T.).

in causâ missionis destinare. Quemadmodum etiam:

xi. In omnem eventum, quo super vero intellectu unius alteriusve puncti vel ordinationis ex praefatis quocumque tempore futuro dubietas vel error exurgeret, eisdem iudicalem interpretationem dare, nobis nostrisque in archiepiscopatu successoribus omnimode reservatum volumus.

Pro conclusione demum nobis saepedictus pater provincialis unâ cum definitioribus omnia et singula ex praedictis inviolabiliter quovis tempore servare, nomine totius superioris Germaniae provinciae nec non conventus huiatis¹, spopondit et obtestatus est: et quod nec ab ipso, nec aliis superioribus praefatae provinciae, nec ab eorum successoribus, sub quocumque excoigatu, praetextu et formâ, contraveniendum sit, legitime expeditas reversales in proximo futuro capitulo intermedio nobis submissime extradere promisit.

Cuncta fideliter et absque fuco. In cuius rei testimonium ex huius foundationis, respective confirmationis et indulti causâ praesens libellus confectus, et ab maiorem securitatem a nobis et nostro venerabili capitulo metropolitano propriarum manuum subscriptionibus et appensis sigillis expeditus, sub initium nominato patre provinciali extraditus fuit.

Actum xvii mensis februarii anno post Christi redemptoris nostri salutiferam natiuitatem MDCCXXXVI.

LEOPOLDUS.

Nos Andreas Iacobus, comes de Dietrichstein praepositus, Leopoldus Ernestus L. B. de Firmian decanus, Franciscus Maximilianus comes de Liechtenstein senior, et universum capitulum metropolitum ecclesiae Salisburgensis profiteamur pro nobis ac nostris successoribus, quod omnia, quae in his litteris foundationis continentur, cum nostrâ scientiâ et consensu facta sint, sicque in perpetua saecula observabuntur.

In cuius confirmationem has litteras foundationis modo consueto subscripsimus, et sigillum nostrum maius fecimus appendi.

¹ Sic habet edit. Main., forsân Burani (R.T.).

Actum Salisburgi, i mensis martii anno MDCCXXXVI. ANDREAS IACOBUS de Dietrichstein praepositus.

LEOPOLDUS ERNESTUS L. B. de Firmian, decanus.

FRANCISCUS MAXIMILIANUS comes de Liechtenstein, senior.

§ 3. Praeinserta autem capitula, regulas et leges, postquam praefatus Leopoldus archiepiscopus condidisset, et ad dilectos filios modernos memoratorum Ordinum et insitutorum respective superiores, ut admitterent, exciperent et accepta haberent, proposuisset, iidem moderni superiores, eâ qua par erat animorum consensione et obedientiâ, iam accepta et rata habuerunt, ad nos etiam transmisit, suppliciter rogans ut approbare et confirmare dignaremur. Nos vero illa, ut, quoad omnes partes prius accuratissime examinarentur, ad Congregationem venerabilium fratrum nostrorum S.R.E. cardinalium negotiis Propagandae Fidei praepositorum remisimus.

Praedicta omnia a superioribus Ordinibus acceptata Papae praesentantur pro obtinendâ confirmatione.

§ 23. Porro Congregatio praedicta, tam institutione missionum praedictarum, quam capitulis, regulis et legibus huiusmodi maturo examine perpensis, ad nos retulit, aequum esse, ut, piis eiusdem Leopoldi archiepiscopi votis et precibus obsecundantes, praefata omnia tanquam proficua et salutaria approbaremus, et apostolicae auctoritatis nostrae munimine roboraremus.

Sacra Congregatio approbata censet.

§ 4. Nos itaque, eundem Leopoldum archiepiscopum specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, supplicationi-

Papa confirmat.

Accedit capituli Salisburgensis consensus.

bus eius nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, de eiusdem Congregationis cardinalium consilio, non solum institutionem missionum ab ipso Leopoldo archiepiscopo susceptam statutamque, verò etiam praeinserta capitula, regulas et leges, ac signanter omnes et singulas assignationes ab eodem Leopoldo archiepiscopo pro missionum huiusmodi manutentione factas, ut praefertur, et ab archiepiscopis Salisburgensibus successoribus suis perpetuis futuris temporibus omnino servandas, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, perpetuo approbamus et confirmamus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiciamus, omnesque et singulos iuris et facti ac solemnitatum quarumcumque defectus, si qui desuper in illis quomodolibet intervenerint, dictâ auctoritate supplementum et sanamus.

Missionariis
sic designatis
et designandis
aliorum missionum
prae-rogativis et
privilegiis elar-
gitur.

§ 5. Insuper missionarios, tam ab ipso Leopoldo archiepiscopo iam designatos et nominatos, quam sive ab ipso etiam sive a suis successoribus in posterum iuxta capitula, regulas et leges praeinsertas designandos et nominandos, semper apostolicos missionarios dici, vocari et esse, eâdem auctoritate decernimus et declaramus; eisdemque missionariis, ut omnibus et singulis privilegiis, honoribus, praerogativis et exemptionibus, quibus huiusmodi apostolici missionarii, tam de iure, usu et consuetudine, quam aliâs quomodolibet, utuntur, fruuntur et gaudent, ac uti, frui et gaudere possunt et poterunt in futurum, pari modo uti, frui et gaudere libere et licite possint et valeant, auctoritate praedictâ concedimus et indulgemus.

Eos directioni
et superiori
archiepiscoporum
subdit.

§ 6. Volumus quoque ut missionarii sic ut praemittitur instituti, ac dein-

1 Praeposit. a nos addimus (R. T.).

ceps in praedictâ dioecesi instituendi, tam eidem Leopoldo moderno quam pro tempore existentibus archiepiscopis Salisburgensibus¹ regimini et directioni, in iis quae ad exercitium missionis pertinent, subiacere, eisque omnino parere debeant, ac necessarias facultates ad missiones praedictas exercendas ab eisdem archiepiscopis, iuxta eis tributam et deinceps singulis quinquenniis per organum memoratae Congregationis cardinalium renovandam² mediante formulâ tertiâ praefatarum facultatum auctoritatem, in totum vel in partem, sicut eisdem archiepiscopis magis in Domino expedire videbitur, recipiant: servatâ semper eorumdem archiepiscoporum, tam circa facultates, quam circa loca et tempus easdem exercendi, moderatione: nullo vero modo extra fines suae respective missionis iis uti queant, ad quam donec et quousque pervenerint nullâ prorsus exemptione et privilegio gaudere possint.

§ 7. Hortamur demum paterne simul et efficaciter eosdem archiepiscopos, ne graventur quolibet quinquennio, nempe cum renovari sibi praedictae formulae tertiae facultates³ postulabunt, nos seu Romanum Pontificem pro tempore existentem per organum eiusdem Congregationis de fructu et progressu dictarum missionum certiorare. Salvâ tamen semper in praemissis auctoritate Congregationis eorumdem cardinalium.

Archiepiscopis
omnes iniungit
certiorem red-
dendi dictam
sacram Congre-
gationem de
progressu mis-
sionum.

§ 8. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere,

Praesentium
litterarum fir-
mitas.

¹ Potius legeretur tam eiusdem Leopoldi moderni quam pro tempore existentium archiepiscoporum Salisburgiensium (R. T.).

² Male edit. Main. legit *removendam pro renovandam* (R. T.).

³ Pessimo ed. Main. legit *facultatum* (R. T.).

ac illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac S. R. E. cardinales, etiam de latere legatos, sublatâ eis et eorum cuilibet quavis aliter iudicandi et interpretandi facultate et auctoritate, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Derogatio
contrariorum.

§ 9. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, nec non civitatis et dioecesis Salisburgensis, ac quorumcumque Ordinum, aliisve quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis, ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, hac vice dumtaxat specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die XII ianuarii MDCCXXXIX, pontificatus nostri anno IX.

Dat. die 12 ianuarii 1739, pontif. anno IX.

CCXLVIII.

Facultas moderno et pro tempore existenti collegii italo graeci Corsini nuncupati rectori, ut illius alumnos et convictores ad lauream doctoralem in

philosophiae et sacrae theologiae studiis promoveat.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Praeclara Romanorum Pontificum praedecessorum nostrorum de Graecâ Ecclesiâ cum summâ apostolicae charitatis laude insignitâ meritorum¹ (qui ad nationem Graecorum, tot sanctis Patribus pietate ac doctrinâ illustribus inclitam, semper et ubique in pristinâ catholicae fidei unitate sanaeque doctrinae confessione retinendam confirmandamque eximiis beneficiis cumulare, patrocínio fovere, opibus iuvare, et omnibus pontificiae benignitatis liberalitatisque officiis allicere, et quodammodo obligare adlaborarunt) studia recolentes, nos operam quoque nostram sollicitudinemque, quantum cum Domino possumus, ad eiusdem Graecae nationis commodum, utilitatem ac decus et ornamentum desiderari haud passi sumus, nec imposterum patiemur.

Prooemium.

§ 1. Primum quidem pro dilectis filiis italo-graecis dictis, qui ex patriis regionibus propter catholicae fidei causam iamdudum profugi in Italiam advenientes in aliquot Neapolitani regni provinciis et dioecesibus domicilia fixerunt, ibique commorantes patrios sacros ritus, caeremonias, ceteraque, non solum perpetuâ venerandae antiquitatis traditione integerrime custodita, verum etiam iteratis Apostolicae huius Sanctae Sedis oraculis approbata et confirmata, sanctissime servare dignoscuntur, in Calabriae meditullio, ubi maxima illorum multitudo ac numerus reperitur, seminarium seu collegium de gentilitio nostro nomine Corsinum dictum excitandum instruendumque curavimus;

Clemens collegium pro Italo-Graecis constituit, illudque Corsinum vocat.

¹ An aliquid emendandum, iudicet lector scius, forsân *meritis* (R. T.).

Elque dat in
antistitem si-
mni et directo-
rem archiepi-
scopum Beron-
sem.

§ 2. Deinde vero, praeter rectorem aliosque magistros et ministros, qui sedulam alumnorum convictorumque in praedicto seminario seu collegio pro tempore existentium curam gerunt, venerabilem etiam fratrem Samuelem Beronensem archiepiscopum, qui, huiusce rei instituendae conficiendaeque ab initio nobis auctor, ex antedicta natione italo-graeca oriundus, perfectam omnium eiusdem gentis rerum notitiam doctus, ipsos instrueret, sacris initiaret, ceteraque ad divinum cultum adaugendum, catholicae fidei stabilimentum et animarum salutem procurandam opportuna et necessaria obiret, eidem seminario et collegio antistitem et supremum moderatorem praefecimus, constituimus et deputavimus: et alias prout in nostris sub plumbo desuper expeditis litteris uberius continetur.

Clementi supplicatum ut rectori facultatem concederet alumnis et convictoribus dandi lauream doctorem.

§ 3. Cum autem, sicut pro parte moderni rectoris collegii praedicti nobis nuper expositum fuit, alumni convictoresque, qui, in eodem seminario seu collegio commorantes, philosophiae ac theologiae operam navant, inde, exacto philosophiae ac theologiae ut praesertur curriculo, exeuntes, lauream earumdem scientiarum, quas inibi ediscunt, in aliis publicis universitatibus, laureandi facultatem auctoritatemque habentibus, in quibus alumni convictoresque praedicti nomine¹ scientias huiusmodi percipere possunt, nullo pacto consequi valeant: nobis propterea eorumdem nomine supplicatum est, ut alumnis convictoribusque, tam de praesenti quam in futurum in eodem collegio existentibus, eandem apostolicae benignitatis gratiam, quam alumnis convictoribusque aliorum pontificiorum collegiorum, ac praesertim huius almae Urbis nostrae,

Romani Pontifices praedecessores nostri concesserunt, de apostolicae potestatis plenitudine elargiri dignemur.

§ 4. Nos igitur, volentes ipsis alumnis seu convictoribus quibuscumque, et cuiusvis nationis et ritus existentibus, gratiam facere specialem, eorumque singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censentes, supplicationibus eorum nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, moderno et pro tempore existentibus dicti seminarii italo-graeci Corsini rectoribus, ut ipsi de cetero, de consensu et auctoritate praefati et pro tempore existentis antistitis huiusmodi ut praemittitur moderatores et praesidentis, alumnos seu convictores, qui philosophiae et sacrae theologiae cursum in eodem seminario integrum per sex saltem annos compleverint, atque in ultimo biennio etiam lectioni Sacrae Scripturae per horam quotidie vacaverint, necnon omnibus qualitatibus ad id requisitis praediti fuerint, ad doctoralem tam in philosophiae quam sacrae theologiae studiis lauream auctoritate nostra apostolica promovendi, illisque solita laureae huiusmodi insignia conferendi;

Benigne au-
nit Pontifex.

§ 5. Utque sic promoti et declarati, omnibus et singulis privilegiis, praerogativis, praeeminentiis, gratiis et indultis, quibus alii, qui lauream huiusmodi in quacumque publica studii generalis universitate susceperint, tam de iure, usu et consuetudine, quam alias quomodolibet utuntur, fruuntur et gaudent, ac uti, frui et gaudere possunt et po-

Privilegia et
laurealis con-
cedit.

¹ Videtur legend. *minime* pro *nomine* (R.T.).

terunt in futurum, pari modo et absque ulla prorsus differentiâ uti, frui et gaudere libere et licite possint et valeant, in omnibus et per omnia ad ecclesiasticas quoque quascumque etiam maiores in cathedralibus ac metropolitanis ecclesiis etiam praesulatus dignitates, perinde ac si lauream huiusmodi in aliqua approbatâ studii generalis publicâ universitate susceperint, dictâ auctoritate concedendi et indulgendi, plenam et amplam facultatem, eâdem auctoritate, tenore praesentium, tribuimus et impartimur.

Praesentium
litterarum
gratias.

§ 6. Decernentes, easdem praesentes litteras firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat plenissime suffragari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane, si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Contrariis
derogatio.

§ 3. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xiv februarii MDCCLXXXIX, pontificatus nostri anno ix.

Dat. die 14 februarii 1739, pontif. anno ix.

CCXLIX.

Confirmatio decreti Congregationis episcoporum et regularium super deputatione definitorum quocumque modo deficientium post celebratum capitulum provinciale Ordinis fratrum eremitarum sancti Augustini Excalceatorum nuncupatorum Congregationis Hispaniae.

Bull. Rom. — Vol. XXXIV.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Nuper, pro parte dilectorum filiorum modernorum vicarii generalis et definitorii generalis Ordinis fratrum Eremitarum sancti Augustini Excalceatorum nuncupatorum Congregationis Hispaniae, Congregationi venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium negotiis et consultationibus episcoporum et regularium praepositae exposito, quod, cum, non sine speciali providentiâ, pro bono regimine disciplinae regularis consultum sit in familiis religiosis, ut in singulis earum provinciis, ultra priorem provincialem de triennio in triennium eligendum, eligantur quatuor definitores, quorum praesentia in omnibus negotiis emergentibus praecise concurrat; cumque necessitas huius assistentiae exigat ut definitoria semper sint completa; et hac in parte satis specificè consultum non videatur in constitutionibus Congregationis et Ordinis praedictorum, ut scilicet in casibus, in quibus contingat aliquem seu plures ex definitoribus ob mortem naturalem et civilem aliudve impedimentum perpetuum deficere, eoque casu, definitorium suppleatur per definitores capituli immediate praecedentis; urgentia siquidem negotiorum passim emergentium de cetero non permittat ut illorum accessus expectetur, quatenus illi, post absolutum officium, ut plerumque evenit, ad alias partes transierint; ac proinde desiderabant ut ab eâdem Congregatione cardinalium declararetur, ut, in quocumque casu deficientiae alicuius sive plurium ex definitoribus electis in capitulis provincialibus Congregationis et Ordinis praedictorum, subrogati immediate et semper intelligantur, et supplere debeant eorum voces¹ et vota,

Supplex libellus
Congregationi
episcoporum
et regularium
profectus.

¹ Videtur legendum vices (R. T.).

usquequo novum capitulum provinciale celebratum fuerit, ii qui pro patribus additis definitorio provinciali (sicuti definitorio generali) pronunciari consueverunt, itaut per reliquum deinde ac totum provincialatus triennium, quaecumque detur, et quovis ex casu, definitorium deficientia, semper definitorium illud plenum remaneat, et negotia occurrentia statim et absque ullâ cunctatione, absque alio recursu, ut praefertur, non ita facile¹, iuxta eorum exigentiam expedire valeant: et in eâdem expositione subiuncto, ut, ad uberiores cautelam, in casu deficientiae huiusmodi definitorum provincialium, si neminem ex dictis additis contemporanee superesse contingeret, quibus, sicut praemittitur, indultum fuisset eorum vices supplere, usque ad novi capituli provincialis celebrationem, facultatem vicario generali pro tempore existenti, ut, unâ cum priore provinciali et reliquis de eius definitorio qui supersint, defensores, quotquot defuissent, cum eisdem praeeminentibus, usque ad novum capitulum provinciale eligere possit, impertiri dignaretur:

Dictae Congregationis decretum.

§ 2. Emanavit ab eâdem Congregatione cardinalium decretum tenoris qui sequitur, videlicet:

Sacra Congregatio eminentissimorum et reverendissimorum S. R. E. cardinalium negotiis et consultationibus episcoporum et regularium praeposita, ad quam sanctissimus dominus noster supplicem libellum remisit, attentis relationibus eminentissimi Firrao praefati Ordinis apud Sanctam Sedem protectoris, ac patris prioris generalis, censuit, si Sanctitatis suae placuerit, posse per suas litteras apostolicas in formâ Brevis oratorum precibus indulgeri, ut in quocumque casu, quo unus sive plures ex definitoribus electis in capitulis provincialibus deficient, subrogati semper et quando-

¹ Potius lege *facili* (R. T.).

cumque intelligantur, et supplere debeant eorum voces et vices cum iisdem praeeminentibus usque ad novum capitulum provinciale, alii duo sive plures religiosi qui pro patribus additis definitorio provinciali, quoties celebratur capitulum provinciale, pronunciari consueverunt, sicuti practicatur quoad definitorium generale, itaut per reliquum provincialatus triennium, quicumque detur casus deficientiae, definitorii plenitudo semper conservetur pro expeditione omnium negotiorum occurrentium. In eventum vero, quo deficient unus sive plures ex definitoribus provincialibus, nullus etiam ex dictis additis superesset, ut praefertur, subrogandum, concedatur eidem vicario generali facultas, ut, unâ cum provinciali pro tempore et reliquis qui supersint de eius definitorio, possit eligere defensores quotquot deficient usque ad novum capitulum provinciale. Romae xxiii ianuarii MDCCXXXIX. — A. card. FIRRAO. — C. arch. DAMIATI, secr. — F. MICHAELE priore generali. — *Loco † sigilli.*

§ 3. Cum autem, sicut¹ dicti exponentes nobis subinde exponi fecerunt, ipsi decretum huiusmodi, quo firmiter subsistat, apostolicae confirmationis nostrae patrocinio communiri summopere desiderent:

Ad instantiam definitorii generalis

§ 4. Nos, ipsos exponentes specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et eorum singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censentes, supplicationibus eorum nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, decretum praeinsertum, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, approbamus et confirmamus, illique inviolabilis apo-

Confirmatione apostolica roboratur.

¹ Vocem *sicut* nos addimus (R. T.).

stolicae firmitatis robur adiicimus: salvâ tamen semper in praemissis auctoritate Congregationis eorumdem cardinalium.

Clausulae pro
perpetua ob-
servantia.

§ 5. Decernentes, easdem praeinsertas litteras firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quodcumque spectabit, plenissime suffragari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Contrariorum
derogatio.

§ 6. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon Ordinis et Congregationis praedictorum, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die II martii MDCCXXXIX, pontificatus nostri anno IX.

Dat. die 2 martii 1739, pontif. anno IX.

CCL.

Confirmatio decreti Congregationis episcoporum et regularium, quo declaratur electionem regentis provincialis Ordinis eremitarum sancti Augustini Congregationis Hispaniae, in casibus

mortis civilis seu naturalis alicuius ex prioribus provincialibus, esse faciendam a vicario generali unâ cum definitoribus provincialibus ad formam declarationis cardinalis Sauli anno MDCCXIII factae.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Nuper, pro parte dilectorum filiorum modernorum vicarii generalis et definitorii generalis Ordinis fratrum sancti Augustini Excalcearorum nuncupatorum Congregationis Hispaniae, Congregationi venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium negotiis et consultationibus episcoporum et regularium praepositae exposito, in alterâ scilicet ex constitutionibus Ordinis et Congregationis praedictorum auctoritate apostolicâ confirmatis praescriptum reperiri, quod in casibus, quibus contigerit aliquem ex prioribus provincialibus per mortem naturalem seu civilem deficere, in eius locum exprovincialis immediate absolutus subintret ad regimen provinciae vacantis, adiectâ tamen clausulâ: *nisi pater vicarius generalis aliter disposuerit*; clausula autem huiusmodi in diversis capitulis generalibus eorumdem Ordinis et Congregationis¹, ea omnium intelligentia et resolutio fuisset quod electio regentis provincialis in eiusmodi casibus privative ad vicarium generalem et definidores generales pro tempore existentes, voce et voto concurrentibus², spectare deberet, prout ex actis impressis dictorum capitulorum constare asserebatur; et hucusque observatum esse: in capitulo vero anno MDCCXXX celebrato, habitâ consideratione ad quamdam declarationem

Supplicatio
sacrae Congre-
gationi facta.

¹ Videtur legendum clausulâ *propositâ* (R. T.).

² Aptius legeretur concurrentes (R. T.).

anno MDCXXIII editam per clarae memoriae S. R. E. cardinalem Saulium nuncupatum, tunc sacri venerabilium fratrum nostrorum eiusdem S. R. E. cardinalium collegii decanum, factam, qua statutum fuerat, quod electio omnium officiorum generalium ad capitulum provinciale spectaret et pertineret, novum dubium inter vocales supradicti capituli exoriri coeperat, an electio regentis provincialis, iuxta intelligentiam usque tunc retentam, ad vicarium generalem pro tempore existentem unâ cum definitoribus generalibus, seu potius in vim declarationis unâ cum definitoribus provinciae, ubi vacatio contingeret, spectare deberet: eum autem huiusmodi dubium nunquam resolutum fuisset, ipsi exponentes ad auferendas in posterum ulteriores quaestiones et scissuras, quae ex diversis intelligentiis exoriri possent in subiectâ materiâ disciplinae regularis bono regimini de cetero parum proficuas, et nihil congruentius et solidius in huiusmodi contingentiis agnoscere, quam huius Sanctae Sedis oraculum postulare, plurimum cupiebant per Congregationem eorundem cardinalium declarari dubium in eadem Congregatione propositum, nempe, an in casibus, ut praefertur, quibus aliquem ex prioribus provincialibus, sive Congregationis, per mortem civilem seu naturalem deficere contigisset, electio regentis provincialis, qui in illius locum subintrare deberet, facienda sit a vicario generali pro tempore existente unâ cum suo definitorio generali, seu potius cum definitoribus provinciae ubi vacatio contigisset, ut imposterum absque ulteriori haesitatione in huiusmodi casibus ita firmiter et inviolabiliter sit procedendum:

Congregationis
decretum.

§ 2. Ad eorundem exponentium supplicationem ab eadem Congregatione

cardinalium emanavit decretum tenoris qui sequitur, videlicet:

Sacra Congregatio eminentissimorum et reverendissimorum S. R. E. cardinalium negotiis et consultationibus episcoporum et regularium praeposita, ad quam sanctissimus dominus noster supplicem libellum remisit, attentis relationibus eminentissimi Firrao apud Sanctam Sedem protectoris ac patris procuratoris generalis, decrevit ac declaravit: electionem regentis provincialis esse in his casibus faciendam a vicario generali unâ cum definitoribus provincialibus ad formam declarationis praefati cardinalis Sauli. Romae, xxiii ianuarii MDCCLXXXIX. — I. card. FIRRAO — C. archiep. DAMIATAE — *Loco + sigilli.*

§ 3. Cum dicti autem, sicut¹ exponentes nobis subinde exponi fecerunt, ipsi decretum huiusmodi, quo firmitus subsistat, apostolicae confirmationis nostrae patrocinio communiri summopere desiderent:

§ 4. Nos, ipsos exponentes specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et eorum singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censentes, supplicationibus eorum nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, decretum praeinsertum, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, approbamus et confirmamus, illique inviolabiliter apostolicae firmitatis robor adiicimus: salvâ tamen semper in praemissis auctoritate Congregationis memoratorum cardinalium.

Apostolica
confirmatio.

§ 5. Decernentes, easdem praesentes litteras firmas, validas et efficaces ex-

Decretum pro
perpetua ob-
servatione.

¹ Vocem sicut nos addimus (R. T.).

stere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, plenissime suffragari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, indicari et definiri debere, ac irritum et inane, si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Obstantium
derogatio.

§ 6. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ac Ordinis et Congregationis huiusmodi, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die 11 martii MDCCXXXIX, pontificatus nostri anno IX.

Dat. die 2 martii 1739, pontif. anno IX.

CCLI.

Confirmatio decreti sacrae Congregationis Rituum super electione B. M. V. Immaculatae in patronam principalem regni Siciliae ultra Pharam.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Communi-
tates Siciliae
S. Franciscum
de Paulâ oli-

§ 1. Nuper, sicut accepimus, dilecti filii communitates, universitates et homines regni Siciliae ultra Pharam, pro

ea, quam iidem erga S. Franciscum de Paulâ profitentur, veneratione, in generalibus comitiis per regni praefati, ut vocant, deputatos, eodem S. Francisco in patronum principalem dicti regni electo, etiam a Congregatione venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium sacris ritibus praepositorum electionis huiusmodi approbationem, additâ insuper quoad suffragiorum secretorum defectum sanatione, obtinuerunt.

§ 2. Quoniam autem dubium circa executionem decreti approbationis a Congregatione praefatâ editi a dilectis quoque filiis communitate, universitate et hominibus civitatis Panormitanae, B. M. V. Immaculatam iamdiu principalem regni praefati patronam haberi asserentibus, excitatum fuit; a Congregatione praedictâ supplici libello porrecto pro novâ audientiâ rescriptum fuit.

§ 3. Nos itaque, qui pro supremo apostolici muneris officio sacrosanctam catholicam religionem sacrumque cultum promovere, ut par est, atque in dies, benedicente Domino, augere satagimus, praeviâ avocatione causae ab eâdem Congregatione, ne pia christifidelium aemulatio, examine causae huiusmodi diutius protracto, divinorum officiorum ordinem fortasse inturbaret, ac remature discussâ, piis etiam deputatorum praefatorum precibus per epistolam ad nos nuperrime datam humiliter porrectis, quantum cum Domino possumus, favorabiliter annuere volentes, eorumque singulares personas a quibus excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censentes, de nonnullo-

guntin
patro-
nuu.

Civitas Panormitana iamdiu B. M. V. Immaculatam habuit patronam.

Decernit Pontifex B. M. V. Immaculatam fore patronam principalem.

rum venerabilium fratrum nostrorum eiusdem S. R. E. cardinalium Congregationis praefatae specialiter deputatorum consilio, B. M. V. Immaculatam in principalem regni praefati patronam, ut maiora eidem semper a christifidelibus impendantur obsequia, et religiosa populorum pietas praesentissimo eiusdem fruatur patrocinio, quatenus opus sit, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, denuo confirmamus; necnon clero saeculari totius praefati regni, ut quotannis festum S. Francisci de Paulâ tamquam patroni principalis eiusdem regni ex praecepto Ecclesiae recolant, atque illius officium ac missam cum octavâ recitent et celebrent, auctoritate et tenore praefatis iniungimus.

Derogatio
contrariorum.

§ 4. Non obstantibus praemissis, ac constitutionibus et ordinationibus apostolicis, et, quatenus opus sit, dicti regni, et aliis quibuscumque, consuetudinibus, privilegiis, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis aut innovatis; quibus omnibus et singulis, pro hac tantum vice, et ad hunc dumtaxat effectum, specialiter et expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die XVIII martii MDCCXXXIX, pontificatus nostri anno IX.

Dat. die 18 martii 1739, pontif. anno IX.

Pro domino card. PASSIONE,
CAIETANUS AMATUS.

CCXLII.

*Confirmatio capituli generalis Ordinis
Cisterciensis anno MDCCXXXIX celebrato.*

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Habita tandem
Ordinis Cister-

§ 1. Praeclara Cisterciensis Ordinis ab ipso instituti sui exordio pro catho-

lica religione semper sibi ac potissimum sanctis Stephano et Bernardo in terris agentibus parva merita singulari apostolicae charitatis et pontificiae benignitatis studio nos complectentes, ingenti cum paterni animi nostri voluptate exceperamus, dilectos filios eiusdem Ordinis superiores et abbates aliosque anno proxime elapso, omnibus, quae hactenus obstiterunt quominus generalia Ordinis praedicti comitia Cistercii Cabillonensis dioecesis haberentur, per summam omnipotentis Dei clementiam compositis, illic a die v mensis maii usque ad diem xx eiusdem mensis anni praefati congregatos, eadem generalia comitia celebrasse. Sed maiori laetitia affecti sumus, cum acta ipsorum generalia comitiorum, varia decreta, ordinationes, deliberationes, constitutiones et mandata pro bono eiusdem Ordinis et monasticae disciplinae regimine condita et statuta insimul complectentia, ad nos, ut illis apostolicae confirmationis robur adiceremus, transmissa, et a Congregatione venerabilium fratrum nostrorum S.R.E. cardinalium negotiis et consultationibus episcoporum et regularium praeposita, ad quam examinanda remiseramus, expensa et approbata, apostolico munimine corroborari posse audivimus.

ciensis genera-
lia comitia.

§ 2. Quamobrem, dilecto filio Philiberto Quarré, abbate Uterinae Vallis et praefati Ordinis procuratore generali, nobis humiliter supplicante, ut illa, ut praemittitur, opportunâ confirmatione munire de benignitate apostolicâ dignaremur:

Petitur actio-
nem confirma-
tio.

§ 3. Nos igitur, dictum Philibertum specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occa-

Ea confirmat
Pontifex.

sione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censes, huiusmodi supplicationibus inclinati, de praefatorum venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium negotiis et consultationibus episcoporum et regularium, qui votum dilecti filii nostri S. R. E. praedictae cardinalis de Viâ nuncupati, ad eiusmodi negotium examinandum deputati, attenderunt, consilio, praefata decreta, ordinationes, deliberationes, constitutiones et mandata, cum omnibus inde secutis et sequendis, dummodo tamen sint licita et honesta, sacrisque canonibus et Concilii Tridentini decretis ac constitutionibus apostolicis non adversentur, apostolicâ auctoritate, tenore praesentium, confirmamus et approbamus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiicimus; salvâ tamen semper in praemissis auctoritate Congregationis eorumdem cardinalium.

Illaque, in
iisque statu
perpetuo praec
cipit observari.

§ 3. Decernentes, decreta, ordinationes, deliberationes, constitutiones et mandata, ac praesentes litteras firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtineri, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, plenissime suffragari et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis, per quoscumque iudice ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari. In contrarium facientibus non obstantibus quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxi

martii MDCCXXXIX, pontificatus nostri anno IX.

Dat. die 21 martii 1739, pontif. anno IX.

CCLIII.

Decretum de ordine servando in recursibus faciendis a fratribus Ordinis sancti Francisci Minorum Conventualium.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Ex iniuncto nobis apostolicae servitutis munere ad ea peculiare sollicitudinis nostrae curas libenter intendimus, quae felici christifidelium divini numinis obsequiis sub suavi religionis iugo principum regimini atque tranquillitati conducibilia fore in Domino arbitramur.

Exordium.

§ 1. Exponi siquidem nobis nuper fecerunt dilecti filii Felix Angelus Siodori, vicarius apostolicus, et Ioannes Baptista Minucci, procurator generalis Ordinis fratrum Minorum sancti Francisci Conventualium nuncupatorum, quod, licet per constitutiones Urbanas dicti Ordinis, cap. x, tit. II, num. VII, praescriptum reperiatur, nempe: « sacrosancti propterea Concilii Tridentini vestigiis inhaerendo decernimus et mandamus, ut (nisi ex aliquâ ratione a iure permissâ causa aliâs devolvatur) causae omnes, quae guardiano competunt, in primâ instantiâ ab eo, in secundâ instantiâ a ministris provincialibus vel eorumdem commissariis, in tertiâ demum a generali ministro vel eius commissariis cognoscantur », necnon generali decreto dudum a Congregatione tunc existentium S. R. E. cardinalium negotiis et consultationibus episcoporum et regularium praepositâ iussu felicitis recordationis Sixti PP. V praedecessoris nostri edito caveatur expresse, quod

Abusus exponitur.

regulares cuiusvis Ordinis, in casibus in quibus appellare de iure licet, id facere debeant gradatim ad sui Ordinis superiores, a priore nimirum ad provincialem, et a provinciali ad generalem, antequam Sedem Apostolicam adire possint: nihilominus ipsi exponentes, non sine eorum animi moerore, adverterunt, plures religiosos eiusdem Ordinis, supradicti Ordinis constitutionum ac decreti huiusmodi immemores, illave exoleta et antiquata esse credentes, tum a praefata correctione regulari superiorum provocare, tum, ubi appellatio permittitur, nusquam observatam formam sic praescriptam, ad superiores mediatos sive praelatos maiores Ordinis praefati, ac etiam hanc Sanctam Sedem appellare et recurrere, unde regularis disciplinae detrimentum, immediatorum superiorum eorumque iurisdictionis contemptus, ac non raro impunitas delinquentium, aliaque multiplicia incommoda consequuntur. Quamobrem ipsi exponentes, ut debita subditorum erga praelatos obedientia, exactaque regularis observantia in dicto Ordine conserventur, et, sicubi exciderint, restituantur, opportunum gliscenti malo et abusui eiusmodi remedium adhiberi et alias in praemissis salubriter a nobis provideri summopere desiderant.

Constitutiones
Ordinis super
hoc servari
praecipit Cle-
mens.

§ 2. Nos, ipsorum exponentium votis hac in re, quantum cum Domino possumus, favorabiliter annuere volentes, et eorum singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censentes, supplicationibus eorum nomine nobis

super hoc humiliter porrectis inclinati, omnibus et singulis dicti Ordinis fratribus et personis, cuiusvis dignitatis, gradus et conditionis existant, appellationem a correctione regulari suorum superiorum ad formam enarratarum constitutionum, ac sub poenis in eis contentis, auctoritate apostolica, tenore praesentium, interdicimus; in casibus vero, in quibus iisdem fratribus de iure vel iuxta constitutiones praedictas appellare aut recurrere licet, id non aliter deinceps fieri posse statuimus, quam gradatim, a gravamine scilicet prioris ad provincialem, et a provinciali ad generalem, itaut causae appellationis seu recursus huiusmodi, antequam ab eodem ministro generali cognitae et definitae fuerint, extra dictum Ordinem deferri et agitari nequeant.

§ 3. Ac propterea omnibus Romanae Curiae tribunalibus ac iudicibus, et quibusvis etiam venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. praedictae cardinalium Congregationibus, necnon Sedis Apostolicae nunciis nunc et pro tempore existentibus, ne fratrum dicti Ordinis appellationem seu recursum admittant, causasque praedictas cognoscant, nisi prius eis legitime constiterit, illas per dictos superiores, memorato ordine servato, cognitae et definitae fuisse, sub poenam nullitatis actorum ac inde secutorum, et, quoad religiosos appellantes vel recurrentes qui praemissis contraverint, sub gravibus nostro et Romani Pontificis pro tempore existentis arbitrio infligendis poenis, eadem auctoritate harum serie prohibemus.

Secus eorum
recursus a iu-
dicibus extra
Ordinem ad-
mitti velat.

§ 4. Decernentes, ipsas praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac ab illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, inviolabiliter

Sicque semper
et ubique iubeat
servari.

observari, ac eis respective plenissime suffragari, sicque et non aliter in praemissis, per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Obstantium
derogatio.

§ 5. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ac praefati Ordinis, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis, in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Transumptis
fidem addit.

§ 6. Volumus autem ut earundem praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiasticâ dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides in iudicio et extra adhibeatur, quae praesentibus ipsis adhiberetur, si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die iv aprilis MDCCXXXIX, pontificatus nostri anno ix.

Dat. die 4 aprilis 1739, pontif. anno ix.

D. card. PASSINEUS.

CCLIV.

Confirmatio et innovatio litterarum Pauli V, Urbani VIII, ac etiam S. S. contra transeuntes de Ordine B. Ma-

Bull. Rom. — Vol. XXIV.

riae de Monte Carmelo Congregationis Hispaniae ad alium Ordinem.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Dudum felicitis recordationis Paulus V praedecessor noster, per quasdam suas, quarum initium *Decet Romanum Pontificem, etc.*, in simili formâ Brevis die iii aprilis MDCX expeditas litteras, non solum omnia et singula facultates, gratias et privilegia fratribus Ordinis B. Mariae de Monte Carmelo Discalceatis nuncupatis Congregationis Hispaniae a Romanis Pontificibus praedecessoribus suis usque tunc concessa¹ confirmavit, verum etiam, ut eisdem fratribus Discalceatis omnis a sui instituti praescripto discedendi et vagandi via praecluderetur, statuit et ordinavit, ac in virtute sanctae obedientiae districte praecepit, ut nullus ex ipsis de unâ in alteram Congregationem huiusmodi transire, recipi et admitti valeret, et si secus scienter vel ignoranter fieri contigisset, transitus, receptio ac admissio huiusmodi nullius roboris vel momenti censeretur, necnon ipse sic transiens seu receptus ad propriam Congregationem restitueretur: ac insuper, ut nullus eorumdem fratrum Discalceatorum, post emissam ab eo in praedicto Ordine professionem regularem per eos emitti consuetam, absque speciali pro tempore existentis Romani Pontificis licentiâ, de praedictis litteris earumque datâ expressam, individuatam, ac de verbo ad verbum mentionem faciente, ac ex legitimâ et urgenti causâ prius a Congregatione tunc existentium S. R. E. cardinalium negotiis et consultationibus episcoporum et regularium praepositorum diligenter examinâtâ et approbatâ, ad² alium quem-

Paulus V fratribus Ordinis huius transitum ad alios Ordines velavit.

¹ Male edit. Main. legit *concessis* (R. T.).

² Pessime edit. Main. legit *et pro ad* (R. T.).

cumque Ordinem Mendicantium et non Mendicantium, monachalium seu discalceatorum, aut quamcumque religionum erectarum seu erigendarum, etiam emissionis quarti voti seu perfectioris et humilioris vitae praesumptione, aut strictioris regulae seu observantiae praetextu vel contemplatione, aut aliâ quantumvis iustâ et probabili aut legitimâ causâ, sub apostasiae et infamiae perpetuae notâ ac excommunicationis latae sententiae poenâ ipso facto per contrafacientes incurrendâ, se transferre aude-
ret seu praesumeret (excepto dumtaxat Ordine fratrum Carthusianorum, quatenus ad illum transeundi licentiam a suis superioribus petissent et obtinuissent); et quicumque secus fecisset, cum primum desuper monitus fuisset, nullâ morâ, aut excusatione, seu forensi contentione vel appellatione interpositis, ad propriam suam Congregationem redire, ac superiorum suorum correctioni¹ se submittere teneretur; nec praelati dictarum Congregationum et aliorum Ordinum et religionum huiusmodi ipsos sic translato, seu fugitivos et apostatas retinere, sed eos, etiam postquam novam professionem regularem emisissent, sub privationis suorum officiorum et munerum ac similis excommunicationis poenis, suis superioribus, vel ab eis deputatis, id requirentibus et petentibus, statim absque iudicis ministerio tradere et consignare deberent.

Urbanus VIII
sub gravissima
poena eidem
prohibuit ac-
cessum ad Ro-
manam Curiam
absque superi-
orum genera-
rum licentia.

§ 2. Ac postmodum recolendae memoriae Urbanus Papa, VIII itidem prae-
decessor noster, per alias suas etiam in pari formâ Brevis die iv septembris mdcxxv expeditas litteras, supplicationibus tunc existentis prioris generalis eiusdem Ordinis nomine totius Ordinis et Congregationis huiusmodi humiliter por-
rectis inclinatus, interdixit et prohibuit,

¹ Edit. Main. legit *correctione* (A. T.).

ne de cetero ullus eorundem Ordinis et Congregationis professor quavis ex causâ etiam quantumvis rationabili, privilegiatâ et iustâ, sive sub quocumque praetextu, ad Romanam Curiam, absque expressâ suâ et huius Sanctae Sedis, seu dilecti filii praepositi aut vicarii generalis Ordinis et Congregationis huiusmodi pro tempore existentis licentiâ, sub poenâ carceris arbitrio eiusdem praepositi duraturâ, ac privationis vocis activae et passivae per biennium ac¹ omnium officiorum per eos obtentorum, necnon inhabilitatis ad illa seu alia in futurum obtinenda per contrafacientes eo ipso incurrendis poenis, venire seu accedere aude-
ret seu praesumeret; mandavitque in virtute sanctae obedientiae praeposito seu vicario generali praedicto, aut procuratori generali Congregationis et Ordinis praedictorum, ut ipsi dictam prohibitionem in omnibus eorundem Ordinis et Congregationis provinciis et singulis illarum domibus et aliis locis regularibus publicarent et publicari face-
rent.

§ 3. Aliâs nobis pro parte tunc existentium praepositi generalis aliorumque superiorum Ordinis et Congregationis huiusmodi exposito, quod cum ipsi se obstrictos viderent ad licentiam pro adeundâ praedictâ Romanâ Curia ob importunas instantias concedendam pluribus Ordinis et Congregationis huiusmodi regularibus discipulis, quorum plurimi, nullâ petita licentiâ, Romam adveniebant sub colorato praetextu expostulandi a Sede praedictâ indultum pro transitu ad alium Ordinem regularem, cum aliâs experientia compro-
basset tales regulares nihil aliud ex huiusmodi itinere intendere nec reportare, quam libertatem divagationemque extra claustra, cum magno propriarum anima-

Exposuerunt
Clementi superi-
ores generales
frequenter se
molestari a re-
ligiosis peten-
tibus licentiam
Romam acce-
dendi pro transi-
tu obsecrâto.

¹ Pessime edit. Main. legit *ab pro ac* (A. T.).

rum detrimento, religionis dedecore, saeculariumque scandalo, cupiebant propterea tot malis occurrere, et spirituali suorum subditorum saluti providere, et unumquemque ipsorum in manu consilii sui atque in totâ suâ libertate, quoad transitum ad alios Ordines, relinquere :

Confirmans itaque Urbani VIII litteras, statuit huiusmodi recursum faciendum esse per procuratorem generalem, non tamen concedendam licentiam huiusmodi accessus,

§ 4. Nos, qui religiosorum omnium decorem sinceris desiderabamus affectibus, et personarum saecularium scandalis obviare, atque animarum omnium saluti providere cupiebamus, huiusmodi supplicationibus inclinati, per quasdam nostras sub plumbo xv kalendas septembris, pontificatus nostri anno iv, anno Incarnationis dominicae MDCCXXXIII expeditas litteras, non solum memoratas litteras Urbani praedecessoris praedicti, ac omnia et singula in eis contenta, auctoritate apostolicâ approbavimus et confirmavimus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiecimus, ac insuper, praedictas litteras dictâ auctoritate extendendo et ampliando, interdiximus et prohibuimus ne de cetero ullus ex fratribus Ordinis et Congregationis huiusmodi cuiuscumque gradus et conditionis, qui ad alium Ordinem regularem transire vellet, Romam accedere sub praetextu expostulandi a Sede praedictâ indultum praesumeret, sed, absque eo quod ex conventu a superioribus suis designato seu designando pro adveniendi benevolo receptore egredere-
tur, per procuratorem Ordinis et Congregationis huiusmodi in Romanâ Curia degentem, vel personam sibi benevisam, deberet curare, diligentiasque adhibere pro obtinendo ab eâdem Sede indulto praedicto, ac insimul teneretur statim dictus procurator generalis, si ad hoc fuisset requisitus, dictum indultum, sic obtentum, quantocitius ad eosdem superiores transmittere, qui religioso transitum praetendenti protinus etiam tradere,

et, si quae pro his omnibus peragendis expensae necessariae et opportunae intervenerint, eas omnes superiores ipsi solvere deberent; si quis autem, contra huiusmodi novum mandatum, transitum praedictum aliter se gerere praesumpisset, poenae carceris, arbitrio superiorum, ac privationis vocis activae et passivae, omniumque officiorum, et inhabilitatis perpetuae ad illa obtinenda penitus subiiceretur: et alias, prout in praedictis Pauli et Urbani praedecessorum, quam in nostris litteris, quarum tenores praesentibus pro expressis haberi volumus, uberius dicitur contineri.

§ 5. Cum autem, sicut dilectus filius Vincentius a Conceptione modernus procurator generalis eorumdem Ordinis et Congregationis nobis nuper exponi fecit quod nonnulli ex fratribus Ordinis et Congregationis huiusmodi, ad memoratas nostras ac Pauli et Urbani praedecessorum litteras elevandas declinandasque, per mediatorum sive intercessorum operam ad nostrum et Sedis praedictae in Hispaniarum regnis nuntium confugiunt, ut ad eorumdem libitum conventum valde a suis respective provinciis distantem sibi seligant, atque ita superiores sui nullam sufficientem illos removendi auctoritatem habeant; unde fit ut supradicta opera¹ etiam in domibus saecularium fratres praedicti degentes exemplum eidem Congregationi valde nocens, pacis perturbationem et spirituale damnum ceteris fratribus Congregationis et Ordinis praedictorum afferant, eo magis quod ipsi, non ut ad aliam transeundi religionem, sed ut vagandi libertatem habeant, suum ad eundem nuntium obtinendi causâ indultum huiusmodi accessum obtendant, atque adeo evitent recursum, quem a dictâ Sede, cui unice in vim memoratarum

Iterum exponit procurator generalis fratres ut habeant divagandi facultatem recurrere ad nuntium Hispaniarum.

¹ Forsan operantes (R. T.).

Pauli praedecessoris litterarum eadem facultas reservata fuerat, impetrare debeant: proinde memoratus Vincentius praedictas nostras et eiusdem Pauli praedecessoris innovare et confirmare, ac hanc conventus fratribus Ordinis et Congregationis huiusmodi assignandi facultatem ad supradictam quidem Sedem, non autem ad illius nuncios spectare, per nos declarari plurimum desideret: nobis propterea humiliter supplicari fecit ut sibi in praemissis opportune providere et ut infra indulgere de benignitate apostolica dignaremur.

Declarat Pontifex nuncios apostolicos facultatem non habere fratribus Carmelitae Excalceatis concedendi transitum ad alios Ordines.

§ 6. Nos igitur, ipsum Vincentium specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, huiusmodi supplicationibus inclinati, de venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium negotiis et consultationibus episcoporum et regularium praepositorum, ad quos nos supplicem libellum nobis porrectum remisimus, qui relationem dilecti filii nostri Nicolai eiusdem S. R. E. cardinalis Del Giudice nuncupati, eorumdem Ordinis et Congregationis apud nos et Sedem praedictam protectoris, eisdem cardinalibus factam attenderunt, consilio, ad occurrendum omni ex parte fraudibus, quibus fratres memoratorum Ordinis et Congregationis vagandi cupidi utuntur, inhaerendo decretis, alias a memoratis Paulo et Urbano praedecessoribus et a nobis ipsis in supradictis litteris expressis, et ea super re editis, modernos et pro tempore existentes dictae Sedis legatos seu nuncios facul-

tatem non habere concedendi fratribus Carmelitae Excalceatis indulta transeundi ad alium Ordinem, auctoritate apostolica, tenore praesentium, decernimus et declaramus.

§ 7. Ac insuper modernos et pro tempore existentes legatos seu nuncios praedictos in Domino hortamur et monemus, ut in posterum omnem curam impendant, ne ullus ex fratribus Ordinis et Congregationis huiusmodi ad alium Ordinem vel Congregationem seu institutum absque nostro et huius Sanctae Sedis praedictae indulto per dictum Vincentium modernum et pro tempore existentem procuratorem generalem tantum, iuxta dispositionem in memoratis nostris litteris expressam per illa verba: « Absque eo quod ex conventu a modernis et pro tempore existentibus praeposito generali aliisque superioribus praedictis designato vel designando pro adinveniando benevolo receptore egrediatur », per procuratorem generalem praedictum obtinendo.

Sed nos monere debere ad se recurrentes de adimplendo praedictarum litterarum.

§ 8. Ac insuper dicta auctoritate praecipimus, et omnibus superioribus praedictis in virtute sanctae obedientiae mandamus, ne ipsi facultatem egrediendi e conventibus sub praetextu quaerendi benevolum receptorem, nisi constituto prius de legitima causa et de praedicto indulto, concedant, sed pro executione et observatione praedictarum Pauli ac Urbani praedecessorum praedictorum ac litterarum nostrarum praedictarum, quae super negotio huiusmodi emanarunt, vigilent.

Superiores vero concedere non debere licentiam fratribus quaerendi benevolum receptorem nisi constituto prius de legitima causa et de praedicto indulto ad hoc S. Sedis obtinuisse.

§ 9. Decernentes, easdem praesentes et memoratas Pauli et Urbani praedecessorum, ac alias nostras litteras, et in eis contenta quaecumque, semper firma, valida et efficacia existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spe-

Praesentium litterarum firmitas.

ctat et pro tempore quodcumque spectabit, plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac S. R. E. praedictae cardinales, etiam de latere legatos ac dictae Sedis nuntios, sublata eis et eorum cuilibet quavis aliter iudicandi et interpretandi facultate et auctoritate, indicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Obstantium
derogatio.

§ 10. Non obstantibus omnibus et singulis illis quae in memoratis dictorum Pauli et Urbani praedecessorum et nostris litteris concessa sunt non ob stare, ac constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon dictorum Ordinis et Congregationis, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Transumptis
danda fides.

§ 11. Volumus autem quod earumdem praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiastica dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides ubique locorum, tam in iudicio quam extra habeatur, quae eisdem praesentibus haberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xv aprilis MDCCXXXIX, pontificatus nostri anno IX.

Dat. die 15 aprilis 1739, pontif. anno IX.

CCLV.

Declaratio, quod lectio Sacrae Scripturae, in ecclesiâ S. Augustini de Urbe Ordinis fratrum Eremitarum habenda, inter cetera requisita pro obtinendo gradu magisterii comprehendantur.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Nuper pro parte dilecti filii Nicolai Antonii Schiaffinati, prioris generalis Ordinis fratrum Eremitarum sancti Augustini, nobis exposito quod in capitulo generali eiusdem Ordinis anno MDCLXXXV in almâ Urbe nostrâ celebrato statutum fuerat, ut ii dumtaxat fratres Ordinis praedicti intra Italiam ad magisterii lauream promoverentur, qui vel per quinquennium munus regentis studiorum obivissent, vel per decennium Dei verbum in insignioribus seu principalioribus ipsius Italiae urbibus cum plausu iustâque famâ praedicassent: at, cum saepius animadversum esset postrema eiusdem statuti verba incertum et nimis late patentem sensum continere aut recipere, indeque non raro contingere posse quod nonnullae Italiae urbes ab aliquo priore generali dicti Ordinis (cuius est quaecumque illius Ordinis dubia circa statuta interpretari) non haberentur inter insigniores, quae ab aliis prioribus generalibus pro variâ cuiusque animi affectione tales antehac reputatae fuissent, aut in posterum reputarentur, sicque concio quadragesimalis vel annualis, per religiosos eiusdem Ordinis habita, inter legitima requisita

Decreto capituli generalis anni MDCLXXXV statutum, ut ii tantum lauream assequerentur, qui per quinquennium magisterii munus obivissent, aut per decennium in principalioribus Italiae urbibus Dei praedicassent.

ad magisterium assequendum esset quandoque adnumerata vel adnumeranda, et vicissim quandoque respuenda: hinc ipse Nicolaus Antonius prior generalis, ad tollendam dictam ambiguitatem, certamque in praemissis normam deinceps firmandam atque stabiliendam, cum sua congregatione, ac etiam capituli generali dicti Ordinis tunc novissime celebrati consensu, opportunum censuerat per decretum ab eo desuper editum determinare ac nominatim exprimere urbes Italiae, quae insigniores reputari debuissent quoad concionem quadragesimalem et annualem pro adipiscendo magisterio in Ordine praedicto requisitam, in hoc modo nimirum:

In ultimo tantum capitulo generali designatae urbes nominatim.

Ancona, Andria, Bari, Bologna, Firenze, Genova, Livorno, Missina, Napoli, Padova, Palermo, Pavia, Perugia, Pistoia, Rimini, Roma, Siena, Treviso, Udine, Venezia, Verona, Vicenza, e purchè le dette predicationi siano principiate almeno dalla festa di tutti i santi, e proseguite in tutti i giorni festivi sino alla terza festa del Santo Natale; dichiarando in oltre et espressamente determinando che sotto questa medesima legge sieno e s'intendano compresi anche quei predicatori generali già approvati, e che non hanno conseguito sinora il grado di magistero. Saranno ancora approvate per requisiti come sopra le predicationi quaresimali che avranno fatte per una sol volta rispettivamente nelle infrascritte chiese cattedrali, cioè Ancona, Aquila, Aversa, Bari, Bergamo, Bologna, Brescia, Capua, Catanzaro, Cesena, Chieti, Cosenza, Faenza, Fermo, Ferrara, Firenze, Foggia, Foligno, Genova, Imola, Lecce, Livorno, Mantova, Matera, Messina, Milano, Modena, Napoli, Padova, Palermo, Parma, Pavia, Perugia, Pesaro, Piacenza, Pisa, Pistoia, Prato, Rimini, Roma, in una delle basiliche, Salerno, Siena, Sorrento, Taranto, Terni, Torino, Treviso, Udine, Venezia, Verona, Vicenza, e Viterbo; siccome ancora si approveranno in tal forma i quaresimali che sogliano da

noi darsi per le chiese dell'Ordine esistenti nelle suddette et in altre città; riserbando al nostro arbitrio di approvare in qualità pure di requisito l'annuale di Genazzano per la venerazione che portiamo a quel santuario.

§ 2. Praeterea in eadem expositione subiuncto quod ipse Nicolaus Antonius prior generalis praemissa, quo firmitus subsisterent et exactius servarentur, apostolicae confirmationis nostrae patrocinio communiri et aliàs in praemissis opportune a nobis provideri summo opere desiderabat:

Praedicta confirmari petiit prior generalis.

§ 3. Nos, ipsius Nicolai Antonii prioris generalis supplicationibus benigne inclinati, praedictum decretum, super designatione dictarum urbium Italiae, quae pro concione quadragesimali et annuali requisita ad magisterium in dicto Ordine assequendum insigniores habendae et reputandae debuissent, sicut praemittitur editum, auctoritate apostolica approbavimus, illique inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiecimus, omnesque et singulos iuris et facti defectus, si qui desuper intervenissent supplevimus: voluimus insuper, ac eadem auctoritate declaravimus, decretum praedictum etiam locum habere quoad fratres dicti Ordinis, qui post decennium concionum huiusmodi cum approbatione eiusdem Ordinis priorum generalium ipsius Nicolai Antonii antecessorum iam expletum tamen ad magisterii lauream promoti fuerint in eo comprehendi, itaut conciones ab eis peractae etiam a dictis prioribus generalibus approbatæ vim legitimi ad praemissa requisiti non obtinerent, nisi in aliquâ ex designatis urbibus habitae fuissent: et aliàs prout in nostris desuper in simili forma Brevis die x novembris mdcclxxxiii expeditis litteris, quarum tenorem praesentibus pro expresso et inserto haberi volumus, uberius dicitur contineri.

Benigne praestavit Clemens.

Modo supplicat
declari loca
ctionem S. Scri-
pturae in ec-
clesia S. Augu-
stini de Urbe
per decennium
faciendam suf-
ficere ad lau-
ream conse-
quendam, Pata-
vianque inter
principales ur-
bes adnume-
rari.

§ 4. Quoniam autem, sicut dictus Nicolaus Antonius prior generalis nobis nuper. exponi fecit, inter cetera requisita pro assequendo gradu magisterii huiusmodi, lectio sacrae Scripturae, quae in ecclesia S. Augustini de eadem Urbe Ordinis praedicti habetur, quae maximi laboris est, comprehensa minime reperitur; ac insuper in supradicto capitulo generali (licet in memoratis nostris litteris id minime expressum fuerit) sancitum fuit, quod intra decennium praedicationis unusquisque ex praedicatoribus praedictis omnino in aliquâ ex civitatibus nempe Urbis praedictae, Bononiae et Florentiae absque ullâ indulgentiâ pro assequendo gradu magisterii praedicti verbum Dei praedicare deberet, ipse Nicolaus Antonius prior generalis civitatem etiam Paduanam intuitu universitatis studii generalis, quae in eâ existit, comprehensam etiam esse per nos declarari plurimum desiderat: nobis propterea humiliter supplicari fecit ut sibi in praemissis opportune providere et ut infra indulgere de benignitate apostolicâ dignaremur.

Sicque decla-
rat Pontifex.

§ 5. Nos igitur, dictum Nicolaum Antonium amplioris favore gratiae prosequi volentes, et a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, huiusmodi supplicationibus inclinati, ut de cetero, licet inter alia requisita in decreto capituli generalis supradicti praefinita, et praedicatoribus generalibus eiusdem Ordinis pro assequendo gradu magisterii praescripta, lectio sacrae Scripturae pro tempore in ecclesia S. Augustini de eâ-

dem Urbe dicti Ordinis comprehensa non sit, nihilominus non solum lectio praedicta cuicumque ex fratribus ipsius Ordinis, qui eam in dictâ ecclesiâ peregerit, ad supradictum effectum suffragetur et suffragari debeat, verum etiam quot annis illam expleverit, tot anni pro requisitis praedictis computentur, auctoritate praedictâ, tenore praesentium decernimus et declaramus.

§ 6. Ac insuper pari auctoritate volumus et praecipimus, ut unusquisque ex eisdem fratribus intra decennium praedicationis, ut praemittitur, pro huiusmodi effectu praescriptum in quibuscumque civitatibus supradictis explendum, in aliquâ omnino civitatum sive Urbis nostrae praedictae, sive Bononiae, sive Florentiae, sive Paduae verbum Dei pro assequendo gradu huiusmodi praedicare debeat et teneatur, alioquin conciones per eum peractae vim legitimi ad praemissa requisiti non obtineant.

Etiâ quoad
civitatem Pata-
vinam.

§ 7. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac ab illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, inconcusse observari, illisque respective plenissime suffragari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Clausulae
ad stabili-
dam praedi-
rum ordi-
namentum
observantiam.

§ 8. Non obstantibus praemissis, ac constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon, quatenus opus sit, supradicti Ordinis, aliisve quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque,

Contrariorum
derogatio.

indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliis in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xx aprilis MDCCLXXXIX, pontificatus nostri anno ix.

Dat. die 20 aprilis 1739, pontif. anno ix.

CCLVI.

Iubilaum pro christifidelibus Italiae et insularum adiacentium divinam opem contra Turcas et pestem implorantibus.

Clemens Papa XII,
universalis christifidelibus praesentes litteras
inspecturis, salutem et apostolicam
benedictionem.

In calamitatibus recurrentibus ad Deum Scriptura docente erudimur.

§ 1. Quam in omnibus fere sacrae Scripturae paginis ad eruditionem unicuique traditam doctrinam, luculentissimis tum veteris tum novi foederis exemplis comprobata, confirmari in dies experimur, ut, omnem in Deo nostroponentes fiduciam, opportunum ad avertenda propulsandaque quaecumque impendentia mala per salutaris poenitentiae lamenta, ieiunia, eleemosynas, sincerarumque obsecrationes a misericordiarum patre et Deo totius consolationis auxilium praestolemur, hanc, etsi in christifidelium mentibus insitam semper et venerata¹ tamquam fidei galeam et inexpugnabile salutis scutum in omnibus angustiis assumere decet unumquemque,

¹ Videtur legendum *veneratam* (R. T.).

catholica certe Ecclesia tum maxime se obstrictam esse novit, cum, aut gravissimas urgere necessitates, aut adversus christiani nominis cultores ab insensissimis hostibus arma inferri, calamitatesque et excidium intentari, animadvertit.

§ 2. Nos autem, quibus plane immanentibus suprema omnium ecclesiarum sollicitudo et cura a pastorum principe Iesu Christo demandata est, cum bellum, tertius iam annus est ex quo exarserat, in Hungaria periculosissimum cum Turcarum tyranno agitari inaudivissemus, tum privatis tum publicis indictis precibus Dominum Deum exercituum exoravimus, ut mitteret auxilium suum de sancto, et effunderet iram suam in gentes, quae in fortitudine sua gloriabantur. Hoc idem elapso anno non intermissis obsecrationum studiis praestare non omisimus.

§ 3. Quoniam autem tantum bellum maioribus, quam antea, viribus ex toto Oriente comparatis, et effertiori rabie ab Othomano furore hoc anno instaurari, pestemque adhuc durare accepimus: primum quidem in humilitate cordis nostri cum gemitibus et lacrymis prosternimus preces nostras ante faciem Dei nostri, ut respiceret in haereditatem, quam acquisivit sanguine suo; deinde vero quaecumque potuimus industriae opisque consilia et auxilia alacri studio conferre curavimus. Tandem, scientes concordem supplicantis Ecclesiae ad Dominum orationem potentiorum quam cetera esse, ut ponat ille oculos suos ad placandum et liberandum populum suum ab iis qui confidunt in quadrigis et in equitatu suo et in multitudine bellatorum, publicas quoque preces iterum, sed ardentiori charitatis fervore coniunctas in universa Italiae eique insulis adiacentibus indicendas esse arbitramur, ut dominator caelorum, qui

Ordo itaque bello in Hungaria indictae a Pontifice privatis supplicationes.

Ingravescentia autem huiusmodi bello eas publicas esse statuit.

pious et misericors est, et propitiatur invocantibus se in veritate, Deus noster, et, non secundum armorum potentiam, sed prout ipsi placet, dat dignis victoriam, benedicat nos ac tueatur, et metuant eum adversarii nostri, et confundantur et dispereant, et fiat pax in diebus nostris, et laetemur in salutari suo. Verum, ut orationum suffragia accepta sint in conspectu Dei nostri, et fructuosius omnia peragantur, ex prisco Romanae Ecclesiae omnium matris et magistrae more, caelestium munerum thesauros, quorum dispensationem fidei nostrae commisit divina dignatio, aperire et liberali manu erogare decrevimus.

Jubilaeum universale indicit in Urbe.

§ 4. Itaque, de omnipotentis Dei misericordiae ac beatorum Petri et Pauli apostolorum eius auctoritate confisi, ac illa ligandi atque solvendi potestate, quam nobis Dominus, licet indignis, contulit, omnibus et singulis utriusque sexus christifidelibus, tam in hac alma Urbe nostra, quam in universa Italia et insulis ei adiacentibus huiusmodi degentibus, quorum iis qui in praedicta Urbe nostra solemnem processioni dominica prima mensis maii proxime venturi, in qua Inventionis sanctissimae Crucis D. N. I. C. festum celebratur, ab ecclesia S. Mariae in Vallicella nuncupata de eadem Urbe ad basilicam Principis apostolorum in Vaticano, universo interveniente clero et populo, agenda devote interfuerint, vel S. Ioannis in Laterano, eiusdem Principis Apostolorum, et S. Mariae Maioris dictae Urbis ecclesias seu basilicas, vel earum aliquam, intra spatium duarum hebdomadarum a supradicta dominica inchoandarum, et usque ad dominicam Pentecostes inclusive decurrendarum, saltem semel devote visitaverint, ibique per aliquod temporis spatium pias ad Deum preces ut supra effuderint, ac quarta et sexta feriis et

sabbato alterius ex praedictis hebdomadis ieiunaverint, et peccata sua confessi sanctissimum Eucharistiae sacramentum in dominica die immediate sequenti vel alia die intra eandem hebdomadam reverenter sumpserint, ac pauperibus aliquam eleemosynam, prout unicuique suggeret devotio, erogaverint;

§ 5. Ceteris vero extra Urbem praedictam, ut praemittitur, degentibus, qui ecclesias ab Ordinariis locorum vel eorum vicariis seu officialibus, aut de eorum mandato, et, ipsis deficientibus, per eos qui ibi curam animarum exercent, postquam ad eorum notitiam hae nostrae pervenerint, designandas, vel ecclesiarum huiusmodi aliquam, spatio duarum similiter hebdomadarum a publicatione designationis per Ordinarios vel eorum vicarios, seu officiales, vel alios ut praefertur faciendae decurrendarum, saltem semel visitaverint, ibique ut supra oraverint, ac quarta et sexta feriis ac sabbato alterius ex hebdomadis huiusmodi ieiunaverint, partiterque peccata sua confessi, ac in die dominica immediate sequenti, vel alia die intra eandem hebdomadam, sanctissimam communionem refecti fuerint, et pauperibus aliquam eleemosynam, ut praemittitur, erogaverint, plenissimam omnium peccatorum suorum indulgentiam et remissionem, sicut in anno iubilaei visitantibus certas ecclesias intra et extra Urbem praedictam concedi consuevit, tenore praesentium concedimus et elargimur.

Extra Urbem praescripta forma illud assequendi.

§ 6. Navigantes vero et iter agentes, ut, cum primum ad sua sese domicilia receperint, suprascriptis peractis, et visitata ecclesia cathedrali, vel maiori, aut parochiali loci eorum domicilii, eandem indulgentiam consequi possint et valeant: regularibus autem personis utriusque sexus, etiam in claustris perpetuo de-

Quid peragendum sit a navigantibus statuit.

gentibus, necnon aliis quibuscumque, tam laicis, quam ecclesiasticis, saecularibus vel regularibus, etiam in carcere aut captivitate existentibus, vel aliqua corporis infirmitate seu alio quocumque impedimento detentis, qui supra expressa vel eorum aliqua praestare nequiverint, ut illa confessarius, ex iam approbatis a locorum Ordinariis ante praesentium publicationem, seu approbandis, eis in alia pietatis opera commutare vel in aliud proximum tempus erogare possit, eaque iniungere, quae ipsi poenitentes efficere poterunt, pariter concedimus et indulgemus.

Facultatem
impertitur eli-
gendi sibi con-
fessarium cui
peculiares tri-
buit facultates.

§ 7. Insuper omnibus et singulis christifidelibus utriusque sexus, tam laicis quam ecclesiasticis, saecularibus et regularibus, cuiusvis Ordinis, congregationis et instituti, tam in Urbe praedicta quam extra eam in universa Italia et insulis ei adiacentibus praedictis ut praefertur degentibus, licentiam concedimus et facultatem, ut sibi ad hunc effectum eligere possint quemcumque presbyterum confessarium, tam saecularem quam cuiusvis Ordinis et instituti regularem, ex approbatis ut praemittitur a locorum Ordinariis, qui eos ab excommunicationis, suspensionis et aliis ecclesiasticis sententiis et censuris a iure vel ab homine, quavis causa latis seu inflictis, nec non ab omnibus peccatis, excessibus, criminibus et delictis quantumvis gravibus et enormibus, etiam locorum Ordinariis, sive nobis et Sedi Apostolicae, etiam in litteris die Coenae Domini legi solitis contentis, et alias per quas-cumque nostras aut Romanorum Pontificum praedecessorum nostrorum constitutiones, quarum tenores praesentibus haberi volumus pro expressis, quomodocumque reservatis, in foro conscientiae et hac vice tantum absolvere et liberare valeant: et insuper vota quae-

cumque (religionis et castitatis exceptis) in alia pla et salutaria opera commutare, iniuncta tamen eis et eorum cui-libet in supradictis omnibus casibus poenitentia saluari, aliisque eiusdem confessarii arbitrio iniungendis.

§ 8. Quapropter tenore praesentium in virtute sanctae obedientiae districtae praecipimus atque mandamus omnibus et quibuscumque venerabilibus fratribus patriarchis, archiepiscopis, episcopis et aliis ecclesiarum praelatis, ac quibuscumque Ordinariis locorum ubicumque existentibus, eorumque vicariis et officialibus, vel, iis deficientibus, illis, qui curam animarum exercent, ut, cum praesentium litterarum transumpta aut exempla etiam impressa acceperint, illa statim absque ulla mora, retardatione vel impedimento per suas ecclesias et dioeceses, provincias, civitates, oppida, terras et loca publicent et publicari faciant, ecclesiamque seu ecclesias visitandas designent.

A patriarchis
ceterisque epi-
scopis huius-
modi iubilae-
um publicari
praecipit.

§ 9. Non intendimus autem per praesentes super aliqua irregularitate publica vel occulta, nota, defectu, incapacitate seu inhabilitate quoquomodo contracta dispensare, vel aliquam facultatem tribuere dispensandi seu habilitandi et in pristinum statum restituendi etiam in foro conscientiae, neque etiam easdem praesentes iis, qui a nobis et Apostolica Sede, vel ab aliquo praelato seu iudice ecclesiastico, etiam eorum nomine speciatim non expresso, excommunicati, suspensi, interdicti, seu alias in sententias et censuras incidisse declarati, vel publice denunciati fuerint, nisi intra tempus dictarum duarum hebdomadarum satisfecerint, aut cum partibus concordaverint, ullo modo suffragari posse, aut debere.

Reservatio
casuum.

§ 10. Non obstantibus constitutionibus, ordinationibus apostolicis, prae-

Derogatio
contrariorum.

sertim quibus facultas absolendi in certis tunc expressis casibus ita Romano Pontifici pro tempore existenti reservatur, ut nec etiam similes vel dissimiles indulgentiarum et facultatum huiusmodi concessionem, nisi de illis expressa mentio aut specialis derogatio fiat, cuiquam suffragari queant, necnon regulam nostram de non concedendis indulgentiis ad instar, quorumcumque Ordinum et congregationum, sive institutorum regularium, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis, eisdem Ordinibus, congregationibus et institutis illorumque personis quomodolibet concessis, approbatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, etiamsi de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa et individua, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quaevis alia expressio habenda aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, illorum tenores praesentibus pro sufficienter expressis ac formam in eis traditam pro servatam habentes, hac vice specialiter, nominatim et expresse, ad effectum praemissorum, derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Transumptis
danda fides.

§ 11. Ut autem praesentes nostrae, quae ad singula loca deferri non possunt, ad omnium notitiam facilius deveniant, volumus ut earundem praesentium transumptis, vel exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in dignitate ecclesiastica constitutae munitis, ubique locorum, ut praefertur, eadem prorsus fides habeatur, quae haberetur ipsis praesentibus si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxv

aprilis MDCCXXXIX, pontificatus nostri anno IX.

Dat. die 25 aprilis 1739, pontif. anno IX.

D. card. PASSIONEUS.

CCLVII.

Commissio archiepiscopo Mexicano, ut declaret Tertiarios Ordinis fratrum B. Mariae de Monte Carmelo Discalceatorum nuncupatorum Congregationis Hispaniae aliis Ordinibus adscriptos, omnium Ordinum promiscue indulgentiis uti posse.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Nuper pro parte dilecti filii Vincentii a Conceptione fratris expresse professi ac procuratoris generalis Ordinis B. Mariae de Monte Carmelo Discalceatorum nuncupatorum Congregationis Hispaniae nobis expositum fuit, quod in quamplurimis ex conventibus Ordinis et Congregationis huiusmodi in Indiis existentibus in vim privilegiorum eidem Ordini a felicis recordationis Nicolao V et Bonifacio VIII concessorum, et a Sixto IV et Clemente itidem VIII Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris confirmatorum, Tertius Ordo eiusdem B. Mariae erectus et institutus reperitur.

In Indiis institutus Tertius Ordo Carmelitarum Discalceatorum.

§ 2. Verum, quia non pauci ex tertiariis praedictis Tertio Ordini fratrum Minorum sancti Francisci adscripti existunt, in oppido civitate nuncupata de Toluca Mexicanae dioecesis dubium excitatum fuit, an tertiarii utriusque Ordinis huiusmodi indulgentiis gratiisque spiritualibus promiscue frui possent; et, licet primodicti Ordinis et Congregationis superiores nullam in hac re difficultatem haberent, nihilominus tertiarii eiusdem sancti Francisci absque ulla ratione non

Hic se adscribere nonnulli tertiarii Ordinis S. Francisci, qui, cum ex hoc Ordine ex puncti forent a superioribus, recursum habuerunt ad archiepiscopum Mexicanum.

solum contradicere, verum etiam ex eorum libris omnes illos, qui Tertio Ordini B. Mariae huiusmodi adscripti erant, delere¹ ausi fuerunt. Quare dicti tertiarii B. Mariae de Monte (Carmelo), qui saeculares existunt, et privilegio fori minime gaudent, sed tantummodo indulgentiarum et gratiarum spiritualium indulto fruuntur, eâ de causâ ad venerabilem fratrem modernum archiepiscopum Mexicanum recursum habuerunt qui, auditis rationibus hinc inde deductis, consideransque charitatem, piamque devotionem christifidelium erga regulares Ordines non esse restringendam, sed omnibus ad animarum salutem mediis amplificandam, mandavit tertiarios B. Mariae praedictos reintegrandos, et Tertio Ordini sancti Francisci, unde delati fuerant, iterum adscribendos esse.

Qui declaravit illos esse reintegrandos.

Procurator generalis Discalceatorum hanc sententiam a Pontifice petiti confirmari.

§ 3. Quamvis autem mandatis praedictis tertiarii sancti Francisci praedicti paruerunt, excitataeque controversiae utriusque compositae fuerunt, tamen dictus Vincentius procurator generalis, ad auferendas perturbationes confusionesque quae eâ super re in posterum exoriri possent, instituto Ordinis et Congregationis huiusmodi, hoc unum spectanti ut eiusdem Ordinis et Congregationis tertiarii quodcumque aliud medium ad illorum salutem conducens suscipiant et in illo perseverent, inhaerens, tertiarios utriusque Ordinis, sive alteri ex dictis, sive cuicumque² alii adscriptos, omnibus indulgentiis et gratiis spiritualibus promiscue gaudere, per nos declarari plurimum desideret: nobis propterea humiliter supplicari fecit ut in praemissis opportune providere et ut infra indulgere de benignitate apostolicâ dignaremur.

De consilio itaque Congre-

§ 4. Nos igitur, piis eiusdem Vincentii

¹ Edit. Main. legit *deleri* (R. T.).

² Edit. Main. legit *cuicumque* (R. T.).

procuratoriis generalis votis hac in re, quantum cum Domino possumus, annuere volentes, et a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, huiusmodi supplicationibus inclinati, de venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium Concilii Tridentini interpretum, ad quos supplicem libellum nobis porrectum remisimus, qui dilectum filium modernum procuratorem generalem Ordinis fratrum Minorum sancti Francisci de Observantiâ nuncupatorum audierunt, consilio, eidem moderno et pro tempore existenti archiepiscopo Mexicano per praesentes committimus et mandamus, ut, veris existentibus narratis, ad supradictam declarationem, iuxta petita, auctoritate nostrâ apostolicâ pro suo arbitrio et conscientia gratis deveniat: salvâ tamen semper in praemissis auctoritate Congregationis eorundem cardinalium.

rationis Concilii committit dicto archiepiscopo ut praefatam declarationem publicet.

§ 5. Decernentes, easdem praesentes litteras firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et oblinere, ac illis, ad quos spectat et in futurum spectabit, plenissime suffragari, et ab eis inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Hasce litteras perpetuo praecipit observari.

§ 6. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon,

Derogatio contrariorum.

quatenus opus sit, Ordinum praedictorum, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die XIII maii, MDCCCXXXIX, pontificatus nostri anno IX.

Dat. die 13 maii 1739, pontif. anno IX.

CCLVIII.

Subiectio militiae B. Mariae de Montesa consilio Ordinum a rege catholico instituto.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Adrianus VI et Sixtus V re-
gibus catholicis
militiarum de
Spatha, de Al-
cantara, de Ca-
latrava et de
Montesa admi-
nistrationem et
regimen com-
misere.

§ 1. Nuper pro parte carissimi in Christo filii nostri Philippi Hispaniarum regis catholici nobis expositum fuit, quod dudum felicis recordationis Adrianus VI, per quasdam suas sub plumbo IV nonas maii anni MDXXII, administrationem militiarum S. Iacobi de Spatha, de Calatrava, et de Alcantara regno Castellae et Legionis, ac Sixtus V, Romani Pontifices praedecessores nostri, per suas itidem sub plumbo die xv martii MDLXXVII expeditas litteras, alterius militiae B. Mariae de Montesa filialis supradictae de Calatrava regno Aragoniae, seu illorum regi pro tempore existenti, nonnullis tunc expressis causis, perpetuo confixerunt et incorporarunt, ac omnimodam

facultatem et potestatem ea, quae dictarum militiarum spiritualia concernerent, per personas supradictarum omnium militiarum regulares, per eosdem Castellae et Legionis ac Aragoniae reges, ad illorum nutum amovibiles, deputandas, probe et laudabiliter exercere facere deberent et tenerentur; quibus sic deputatis personis omnia et singula, quae dictarum omnium militiarum magistri, etiam pro tempore existentes, in eisdem spiritualibus de iure, consuetudine, aut aliâs quomodolibet facere, gerere, exercere, disponere, mandare, ordinare et exequi poterant et consueverant, faciendi, gerendi, exercendi, mandandi, disponendi, ordinandi et exequendi, etiam perpetuo tribuerant; et aliâs, prout in eorumdem Adriani et Sixti praedecessorum expeditis litteris, quarum tenores praesentibus pro expressis haberi volumus, uberius dicitur contineri. Militia vero B. Mariae de Montesa huiusmodi ad usque annum MDCCVII (in quo memoratus Philippus rex consilium regni Aragoniae in civitate Valentiae erectum, per quod militia huiusmodi administrabatur, penitus extinxit abrogavitque) aliter, atque supradictae militiae gubernabantur, administrata fuit. Praeterea regna Aragoniae et Valentiae iisdem absque ullâ differentiâ legibus, quibus regnum Castellae regitur, coeperunt moderari. Idem Philippus rex clientelas¹ seu dependentias dictae militiae B. Mariae de Montesia regio² Ordinum huiusmodi consilio univit et incorporavit, et ad dictum Ordinum consilium cognitionem rerum temporalium militiae huiusmodi, et ad illius assessorem generalem rerum spiritualium, prout antea consilium Aragoniae, antequam suppressum fuisset, peragebat, spectare voluit, et totum id

¹ Seu *clientelas* (R. T.).

² Edit. Main. legit *regis* (R. T.).

usque ad obitum tunc in humanis agentis Vincentii Monserrat ultimi assessoris generalis militiae de Montesa huiusmodi permansit.

An per praesidentem dicti consilii cum particularibus definitionibus gubernari voluit.

§ 2. Quoniam autem dictus Philippus rex, exoptans ut dicta militia B. Mariae de Montesa, tam in spiritualibus quam in temporalibus, prout aliae supradictae militiae gubernentur¹, cum huius tamen militiae particularium definitionum observantia in posterum, extincto tamen illius assessoris generalis officio, administretur, ac propter reductionem regnorum Aragoniae et Valentiae gubernio Castellae, ut praemittitur, administratio militiae B. Mariae de Montesa huiusmodi regio Ordinum consilio, prout aliae supradictae militiae existunt, tam in spiritualibus quam in temporalibus, tum pro decisione causarum ad eandem militiam spectantium, tum pro modo nominandi informantes, ac videndi et decidendi probationes militiae huiusmodi, necnon mandandi pro reliquis ordinationibus, quas dictus Philippus rex expedire iudicaverit, absolute subiecta remaneat, et in civitate Valentiae tribunal locumtenentis generalis dictae militiae, cum qualitate substituti seu dependentis in omnibus et per omnia dicti regii consilii Ordinum, cum observantia illius particularium definitionum, sicut praemittitur, remanere debeat, cum conditione quod praesidens seu gubernator regii consilii Ordinum huiusmodi inter ministros dicti² consilii aliquem ex fratribus militibus expresse professis militiae huiusmodi, qui dicto consilio regis³ et negotiis in eo tractandis necessario intersint, semper admittendum et retinendum curet; proinde ipse Philippus rex, officium assessoris generalis militiae hu-

iusmodi tam in spiritualibus quam in temporalibus in posterum, prout aliarum primodictarum S. Iacobi, Calatrava et Alcantara militiarum, cum supra expressis conditionibus, ad dictum consilium Ordinum spectare, et ad hunc effectum praedictis⁴ Sixti seu aliorum Romanorum Pontificum praedecessorum nostrorum constitutionibus derogari plurimum desiderat:

§ 3. Nobis propterea eiusdem Philippi regis nomine fuit humiliter supplicatum ut in praemissis opportune providere, et ut infra indulgere de benignitate apostolica dignaremur.

Et Pontifici supplicat pro huius stabilitamenti approbatione.

§ 4. Nos igitur, piis eiusdem Philippi regis votis hac in re, quantum cum Domino possumus, benigne consulere, ipsumque Philippum regem specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, huiusmodi supplicationibus inclinati, de venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium Concilii Tridentini interpretum, ad quos supplicem libellum nobis porrectum remisimus, qui votum dilecti filii nostri Ludovici S. R. E. praedictae presbyteri cardinalis Belluga nuncupati, ad huiusmodi negotium examinandum ab eisdem cardinalibus deputati, perpenderunt, consilio, officium assessoratus generalis militiae B. Mariae de Montesa, cum omnibus et singulis facultatibus, auctoritate, praeeminentis, iurisdictione, dependentis, annexis et connexis, ad effectum praesentium spectantibus, et pertinentiis, quibus assessores generales pro tempore existentes militiae huiusmodi ante deputati usi⁵ fuerunt, auctoritate apostolica, tenore praesentium, abolemus, revocamus, cassamus, irritamus et annullamus, viribusque et effectu penitus et omnino vacuamus⁶, ac ex nunc

Petitis annuit Pontifex.

¹ Potius lege *gubernantur* (R. T.).

² Edit. Main. legit *dicto* (R. T.).

³ Aptius lege *regio* (R. T.).

⁴ Edit. Main. legit *praedictae* (R. T.).

⁵ Male edit. Main. legit *uti pro usi* (R. T.).

⁶ Edit. Main. legit *vacamus* (R. T.).

pro tunc revocatas, cassatas, irritas et annullatas existere et fore decernimus et declaramus, eandemque militiam B. Mariae de Montesa huiusmodi in futurum tam quoad temporalia quam quoad spiritualia gubernari a consilio aliarum supranunciarum militiarum, et ad instar illarum, cum praeservationibus supra expressis, auctoritate et tenore praedictis praecipimus, volumus et mandamus; ita tamen ut assistentia fratris militis expresse professi dictae militiae de Montesa cum regiis ministris memorati consilii Ordinum esse debeat suffragando cum eisdem quin pro diversitate negotiorum eius assistentia variari possit: salvâ tamen semper in praemissis auctoritate Congregationis eorundem cardinalium.

Sicque semper
et ubique ser-
vari praecipit.

§ 5. Decernentes, easdem praesentes litteras firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore spectabit, plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, scique in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac eiusdem S. R. E. cardinales, etiam de latere legatos ac Apostolicae Sedis nuncios, sublata eis et eorum cuilibet quavis aliter iudicandi et interpretandi facultate et auctoritate, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane, si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Derogat ob-
taustibus.

§ 6. Non obstantibus, quatenus opus sit, dictâ Sixti aliisque Romanorum Pontificum praedecessorum nostrorum constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon dictae militiae, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, stabilimentis, usibus

et naturis, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxii maii MDCCXXXIX, pontificatus nostri anno ix.

Dat. die 22 maii 1739, pontif. anno ix.

CCLIX.

Confirmatio nonnullarum conventionum pro provinciâ Lombardiae Congregationis clericorum regularium sancti Pauli Decollati Barnabitarum nuncupatorum.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Collegia et seminaria, in quibus adolescentes a teneris annis, antequam a vitiorum contagione afflentur, ad pietatem ac religionem informari solent, quantam ad morum¹ compositionem sacrarumque doctrinarum eruditionem in catholicâ Ecclesiâ utilitatem attulerint, semper cogitantes, eorundem institutionem, quantum cum Domino potuimus², promovere, atque incrementa provehere et adaugere statuimus, necnon quaecumque ad ipsorum commodum conducantia, sive pacta, sive uniones, sive conventiones, quocumque modo ac tempore inita, apostolicae nostrae confirmationis robore, cum a nobis petitur, libenter communiri satagimus et gestimus.

Prooemium

¹ Edit. Main. legit *mores* (R. T.).

² Videtur legendum *possumus* (R. T.).

Per provin-
ciam Lombar-
diae exita in-
simul collegia
duo civitate
Mediolanensi
cum apponitis
conditionibus.

§ 1. Exponi siquidem nobis nuper fecit dilectus filius modernus praepositus provincialis provinciae Lombardiae Congregationis clericorum regularium sancti Pauli Decollati-Barnabitarum nuncupatorum, quod collegio a clericis regularibus Congregationis huiusmodi in civitate Mediolanensi ad educandos instituendosque tam in pietate quam in humaniorum bonarumque artium studiis nobiles convictores erecto, cum alterum simile subinde collegium, quod in eadem pariter civitate iuxta piam dispositionem quondam Petri Antonii Longone sub eorundem clericorum regularium regimine ac litteraria disciplinā fundandum erat, eidem unitum et incorporatum fuerit: unio seu incorporatio huiusmodi inter dilectos filios Iosephum Mariam Olivazzi clericum regularem Congregationis praedictae, rectorem primodicti collegii, et deputatos collegii sic erigendi sub nonnullis conventionibus et mutuis cessionibus concordata fuit.

Congregationi
Concilii dictas
conditiones pro-
posuit confir-
mandas.

§ 2. Ipse vero Iosephus Maria, ut nihil omitteret quod ad dictarum conventionum mutuarumque cessionum stabilitatem conservandam conducere, ad Congregationem venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium Concilii Tridentini interpretum pro approbatione et confirmatione earundem conventionum et cessionum supplicem libellum porrexit.

Dicta Congre-
gatio rem re-
misit arbitrio
archiepiscopi.

§ 3. Quae sane Congregatio cardinalium, auditis prius dilectis quoque filiis praeposito generali dictae Congregationis ac vicario in spiritualibus generali venerabilis fratris archiepiscopi Mediolanensis, commisit eidem archiepiscopo, ut, veris existentibus narratis, supradictam collegiorum unionem, cum conditionibus initis, addito tamen pacto reversivo et regressus ad primaeva iura in casu inobservantiae pactorum seu dis-

solationis unionis, pro suo arbitrio et conscientia approbaret et confirmaret.

§ 4. In vim vero decreti huiusmodi, dilectus pariter filius Ioannes Baptista Campagnoli, vicarius generalis archiepiscopi Mediolanensis, vigore facultatis a praedicta Congregatione cardinalium archiepiscopo Mediolanensi praedicto attributae, ad huiusmodi negotium subdelegatus apostolicus, confirmavit et approbavit supradictam unionem, cum conditionibus tenoris qui sequitur, videlicet:

Vicarius gene-
ralis ab archie-
piscopo subde-
legatus eam con-
firmavit.

*Ioannes Baptista abbas Campagnoli I. U. D.,
protonotarius Apostolicus, curiae archiepisco-
pali Mediolani vicarius generalis, et in hac
parte subdelegatus apostolicus, ut infra:*

Visis praesentibus sacrae Congregationi eminentissimorum S. R. E. cardinalium Concilii Tridentini interpretum porrectis pro parte reverendi patris rectoris collegii nobilium Imperialis nuncupati Mediolani, una cum decreto eiusdem sacrae Congregationis diei xxii mensis novembris proxime praeteriti directo pro executione illustrissimo et reverendissimo domino archiepiscopo Mediolani, necnon subdelegatione in nos facta ad illud exequendum tenoris sequentis, videlicet:

Litterae testi-
moniales rei
gestae.

Eminentissimi et reverendissimi signori. Don Giuseppe Maria Olivazzi; chierico regolare di S. Paolo, rettore del collegio Imperiale dei nobili in Milano, oratore umilissimo delle EE. VV., affine di unire con evidente utilità al suo collegio, quasi privo d'ogni reddito, altro collegio detto Longone in prossimo da erigersi da persone laiche, dotato di molti fondi fruttiferi, in guisa che ambidue formino un sol corpo sotto la perpetua direzione de' nominati religiosi, ha concordate colli deputati dell'altro collegio alcune capitolarioni qui appresso descritte, nelle quali alli numeri I, III, IX si cede ai conservatori di detto collegio Longone il dominio ed amministrazione di quei pochi beni che pos-

Supplex libel-
lus Congrega-
tioni Concilii a
praefato provin-
ciali porre-
ctus.

sedevasi il primo collegio, da servirsene però sempre in uso de' padri e conservatori di detto collegio; che però per poter venire a detta cessione validamente supplica umilmente le EE. VV. dell'opportuna facoltà, ecc.

Capitolazioni.

Conventiones
inter utramque
collegium in-
tae.

Essendosi dagl'illustrissimi signori conservatori del collegio Longone sotto giorno il primo ottobre 1723 concessa in affitto ai molto reverendi padri Barnabiti la casa grande in parochia di S. Alessandro, di ragione dell'eredità Longone, in cui aprire potessero un loro collegio de' nobili, quale facesse strada allo stesso collegio Longone, in quel tempo che detti signori conservatori avessero stimato proprio d'aprirlo, e tale accordo fu fatto con quella assistenza ai detti reverendi padri prestata, e con i patti stabiliti che risultano dalla scrittura privata di detto giorno ed anno;

Essendosi pure nel ix capitolo di detta scrittura convenuto che la suddetta concessione avesse il suo fine quando fossero soddisfatti detti signori conservatori de' loro crediti verso detti RR. PP. e determinassero di voler aprire detto collegio Longone, oltre molte altre convenzioni in progresso seguite, delle quali consta per alcune ordinazioni capitolari delli 13 e 17 marzo e 29 giugno dell'anno 1725 passato;

Ed avendo ora li presentanei signori conservatori, dopo diligente scandaglio dello stato dell'eredità Longone, deliberato di aprire nell'anno presente 1737 detto loro collegio Longone, ed in conseguenza di porre fine alla precedente convenzione; del che passatane la notizia ai detti molto RR. PP., abbino stimato proprio di fare varie proposizioni, con che fosse ad essi concessa in perpetuo la direzione di detto collegio, quali riconosciute dai signori conservatori degne della loro approvazione, come è parso ai medesimi di non poter destinare a detto collegio direttori più degni per il regolamento del medesimo, e più confacenti alla mente del fu nobile signor segretario Pietro Antonio Longone, fondatore, quale dimostrò tutta la confidenza ne' medesimi padri, ordi-

nando che li collegiali fossero allevati alle loro scuole: perciò si è venuto alla presente scrittura di convenzione ed accordo, in cui:

1. In primo luogo, atteso gl'infrascritti patti corrispettivi e reciprochi, l'una e l'altra parte si dà per intieramente soddisfatta di quanto rispetto alli signori conservatori hanno sovvenuto e dovrebbero conseguire anche per fitti di case dell'eredità Longone godute da' detti RR. PP. ad uso del loro collegio, e li molto RR. PP. di quanto hanno speso, ed altro nelle case di detto collegio, e nella provizione de' mobili stimati del valore di lire trentadue mila novecento sessantotto, e soldi quattordici, dico lire 32968,14, quali saranno per l'avvenire di piena ragione e dominio del collegio Longone, e dovranno successivamente mantenersi da' molto reverendi padri direttori, come abbasso, col prodotto delle dozzine ed altri emolumenti che potranno ricavarsi da' signori convittori, quali verranno educati in detto collegio: la stima de' quali mobili si consegna presentemente in forma probante da conservarsi nell'archivio dell'illustrissimo capitolo di detto collegio Longone.

II. Per l'avvenire il collegio dovrà chiamarsi il regio ed imperial collegio Longone, esponendosi, ne' luoghi che li signori conservatori stimeranno più propri, le armi di S. M. C., sotto la di cui protezione, anche in seguito della mente del fondatore, dovrà perpetuamente conservarsi, come pure dovranno, dove sarà più conveniente a giudizio de' signori conservatori, esponersi le insegne gentilizie del fu nobile signor segretario Pietro Antonio Longone fondatore del medesimo collegio.

III. Il dominio di detto collegio e suoi beni, tanto presenti quanto futuri, e la totale amministrazione delle rendite, s'intende riservato all'illustrissimo capitolo composto dai signori conservatori, esclusa ogni e qualunque ingerenza de' detti Padri, con dichiarazione però, che le dette dozzine ed altri emolumenti procedenti dalla direzione del collegio debbano passare alle mani del molto reverendo padre rettore *pro tempore*, per va-

lervene nella manutenzione de' Padri, signori convittori, serviti, ed altri usi di detto collegio, dando ogni anno tutti i conti dell'entrata ed uscita all'illustrissimo capitolo, o a quello o a quelli de' signori conservatori che saranno dal medesimo a tal effetto delegati, senza che mai per alcun tempo o per alcuna causa possa proporsi eccezione alcuna per iscusarsi, meno esimersi dal suddetto rendimento de' conti ogni anno; rispetto poi alla casa e beni di Castellazzo de' Barzi, che furono acquistati per istromento del giorno 14 luglio 1736, rogato dal notaro e causidico di Milano signor dottor Antonio Giovanni Battista Besozzi a nome del collegio Imperiale de' padri Barnabiti, si dichiara che detto acquisto sia stato fatto con previa intelligenza ed utilità, comodo e conto del collegio Longone, al quale effetto dal molto R. P. rettore Olivazzi è stato consegnato il suddetto istromento con tutte le scritture attinenti al medesimo per riporle nell'archivio dell'illustrissimo capitolo del detto venerando collegio Longone; e come che il motivo di fare detto acquisto fu quello di avere una casa di villa per li signori convittori nel tempo delle vacanze, nè essendo facile comodo agli illustrissimi signori conservatori il maneggio de' suddetti beni, quale all'incontro riuscirebbe meglio alle mani del padre rettore *pro tempore*, anche per convertire i frutti in uso de' signori convittori, perciò la suddetta casa e beni di Castellazzo saranno in amministrazione dei molto BR. PP. rettori *pro tempore*, unendo li frutti de' medesimi beni col prodotto delle dozzine ed altri emolumenti come sopra per renderne conto come sopra, restando a carico dei medesimi padri rettori di compire ancora con detto prodotto l'interesse dovuto a' PP. Somaschi, ed ogni altro carico spettante a detti beni, il prezzo de' quali dovrà pagarsi nella maniera che si spiegherà sotto il cap. VII.

IV. La direzione poi di questo collegio in perpetuo colle suddette ed infrascritte condizioni si trasferisce in detti molto reverendi padri, tenendo li signori conservatori per fermo che intieramente corrisponderanno

alla confidenza in loro dimostrata dai signori conservatori e dal fondatore medesimo, e nel regolamento de' signori convittori, o nella elezione de' soggetti per tempo.

V. Per formare col beneficio del tempo un collegio regolare, assegnerà l'illustrissimo capitolo del detto collegio Longone, di mano in mano che andrà occorrendo, le case proprie, ed acquisterà l'altra (come e quando più chiaramente si spiegherà abbasso nel cap. IX), che sono necessarie, in conformità del disegno comunicato al detto illustrissimo capitolo, e che al medesimo si consegna per copia autentica da riporsi e conservarsi nel di lui archivio, riservandosi li detti signori conservatori in detto collegio una sala destinata per li capitoli da farsi ogni mese a tenore delle ordinazioni capitolari, ed anche di più, se porterà il caso, con facoltà ad ognuno de' signori conservatori di chiamarlo, quando sarà spediente, ed in questa sala, se così stimeranno li signori conservatori, potranno riporvi il loro archivio, le chiavi del quale resteranno sempre presso quel signor conservatore che secondo l'istituto deve essere segretario decano della cancelleria segreta.

VI. Delle rendite de' fondi ed altri effetti del collegio Longone si riservano li signori conservatori annue lire tremila di netto per risorsa del medesimo, affine massimamente di reintegrarlo di quelle che per causa della suddetta fabbrica verranno a diminuirsi, o per l'assegno delle case proprie, o per l'acquisto delle altre bisognevoli, con dichiarazione ancora che frattanto, per l'uso delle case delle quali attualmente si valgono i suddetti reverendi Padri ad uso del collegio, in avvenire non pagheranno fitto alcuno.

VII. Il di più di dette rendite, oltre le lire tre mila riservate come sopra, che potesse avanzare di tempo in tempo, di anno in anno dall'illustrissimo capitolo dovrà farsi passare al padre rettore *pro tempore*, corrispettivamente a che li Padri mediante l'uso del godimento del collegio senza fitto, ed il prodotto delle dozzine ed ogni altro emolumento da ricavarsi per causa ed occasione dell'educazione de' signori convittori, sa-

ranno tenuti a cinque intiere dozzine, o dieci mezzo dozzine, ad arbitrio de' signori conservatori, per altri tanti signori alunni da eleggersi dai medesimi signori conservatori, e per la manutenzione de' mobili, come pure per la fabbrica del collegio, a cui dovranno ridursi le case esistenti, e da comprarsi come sopra, e finalmente per il pagamento del capitale, prezzo della casa e beni di Castellazzo, al quale effetto molto conta sopra le intenzioni che ha favorito di dare col suo prudente ed applaudito zelo il presentaneo padre rettore Olivazzi.

VIII. Resterà altresì a carico di detti molto reverendi padri la celebrazione della messa quotidiana, a cui soggiace la casa della confraternita di S. Vittorello, dopo che sarà acquistata dai signori conservatori per incorporarla nella fabbrica, sin tanto, col multiplo delle lire tremila annue riservate come sopra, sarà pienamente reintegrata l'eredità Longone di tutta l'annua rendita che resterà diminuita per la suddetta ed ogni altra causa; nel qual caso di totale reintegrazione si dovrà dalla detta rendita ristabilita soddisfare all'elemosina di detta messa per il tempo allora avvenire.

IX. Per maggior chiarezza e dichiarazione de' capi precedenti riguardanti le case che devono servire alla nuova fabbrica del collegio secondo il menzionato disegno tanto proprio del capitolo, quanto da acquistarsi dai signori conservatori a conto dell'eredità Longone, e sempre senza pregiudizio della riserva delle lire tremila di detta annua canna destinata alla reintegrazione delle rendite come sopra, si aggiunge, che, oltre la casa grande, e li casini altre volte goduti dal Cogliati e dal signor dottor Caldara di ragione dell'eredità Longone, presentemente godute ad uso di detto collegio, ed oltre la casa nella contrada del Fieno acquistata dal fu padre D. Bartolomeo Sitoni di buona memoria, come dall'istromento del 28 settembre 1728, 22 febbraio 1729, e 3 agosto 1730, rogati dal notaro e causidico di Milano signor Giuseppe Maria Sitoni, e consegnati da riporsi nell'archivio del collegio Longone, quale si dichiara acquistato a comodo di

questo collegio Longone, e di dovere ad esso spettare ed appartenere, dovrà acquistarsi presentemente la casa del sig. Lombardi, e di tempo in tempo anche la casa della confraternita di S. Vittorello, del Santissimo, di S. Alessandro, del Lucino, e del signor Rosate, e di S. Giuseppe.

X. Riflettendo però, che la fabbrica non può compirsi in tempo breve, dovendosi ricavare il modo di farla dagli avanzi del maneggio del collegio e di altre diligenze che potessero praticarsi dai detti RR. PP., nè dovendo il collegio restare superflualmente caricato di case inutili sino che venga il tempo del bisogno, nè aspettare all'ultimo momento gli acquisti di quelle che di mano in mano possano bisognare, così sarà cura di quel signor governatore, che sarà deputato dall'illustrissimo capitolo, unitamente al padre rettore *pro tempore*, il riconoscere le circostanze nelle quali si ritroverà lo stato della casa maneggiata dal padre rettore, e da quello prendere il lume necessario per il principio e proseguimento della fabbrica ed acquisti da farsi successivamente.

XI. Perfezionata con l'annua rendita delle lire tremila riservate come sopra la reintegrazione totale della rendita attuale dell'eredità Longone, dovrà scaricarsi l'amministrazione del padre rettore delle dette dozzine de' signori alunni, e caricarsi alla stessa eredità Longone, come dovrà farsi la reintegrazione del prezzo sborsato per l'acquisto fatto della suddetta casa del padre Sitoni, restando frattanto li frutti della medesima nell'amministrazione de' padri rettori *pro tempore*, quali frattanto saranno tenuti al pagamento delle tasse, riparazioni ed ogni altro spettante a detta casa, ed il di più delle annue rendite da ricavarli tanto dai propri fondi, quanto dalle dozzine ed ogni altro emolumento come sopra, che risulteranno dall'annuale rendimento de' conti, come anche da ogni e qualunque altra parte, nissuna affatto eccettuata, si dovranno convertire in accrescimento per alunni da eleggersi da' signori conservatori, o in altro vantaggio e comodo del medesimo collegio per il sempre maggior di lei splendore e

avviamento in beneficio pubblico a giudizio dell'illustrissimo capitolo.

xii. Finalmente tutti e singoli li predetti patti vogliono le parti che s'intendano essere come sono corrispettivi fra di loro, con obbligo reciproco d'una perpetua immancabile osservanza ed esecuzione, anche in via di condizione, senza la quale non si sarebbe venuto alla presente convenzione, riportandosi per ogni occorrenza delle cose contenute nella presente convenzione, e principalmente per il caso dell'inadempimento (quale però Iddio mai permetta che succeda), al supremo giudizio e cognizione dell'eccellentissimo senato, obbligandosi inoltre li padri infrascritti riportare di questa convenzione la ratifica del reverendo padre generale in ogni più ampla forma con inserzione delli presenti capitoli e del tenore intero de' medesimi, e questa per maggior abbondanza, non mai perchè si creda necessaria per la validità della medema, attesa la precedente delegazione fatta del detto reverendissimo padre generale, quale resta nell'arbitrio dell'illustrissimo capitolo. E per fede, ecc. Milano, 26 marzo 1737.

Sottoscritto D. FRANCESCO PEZZI, proposto di S. Alessandro e conservatore; GIULIO REYNA, conservatore; CARLO MARIA CAVALLI, conservatore; CRISTOFARO MUSSONE, visconte, conservatore; D. GIUSEPPE MARIA OLIVAZZI, rettore del collegio Imperiale e delegato del molto reverendo padre generale; D. FRANCESCO MARIA SANTINI, delegato del reverendo padre generale, attestando l'assenza del reverendo padre provinciale D. MELCHIOR CARPANI.

Subscript. Ita in actis est. — I. C. PETRUS ANTONIUS RUSCA, not. act. curiae archiepiscopalis Mediolani.

Die xxii novembris MDCCXXXVIII, sacra Congregatio eminentissimorum S. R. E. cardinalium Concilii Tridentini interpretum, attentis relationibus patris generalis Ordinis clericorum regularium S. Pauli et vicarii generalis Mediolanensis, perpensoque voto eminentissimi domini cardinalis Bichii ad huiusmodi negotium examinandum ab eadem sacra Congregatione deputati, beni-

gne commisit archiepiscopo Mediolanensi, ut, veris existentibus narratis, supradictam collegiorum unionem, cum conditionibus superius expressis, addito tamen pacto reversivo et regressus ad primaeva iura in casu inobservantiae pactorum seu dissolutionis unionis, pro suo arbitrio et conscientia gratis approbet atque confirmet.

Signat. A. cardinalis GENTILI praefect.

Subscript. C. A. archiepiscopus PHILIPPENSIS, secret. Et sigillat.

A tergo: Subdelegamus dominum vicarium generalem nostrum, eique vices nostras committimus, hac die xxiv decembris MDCCXXXVIII. *Signat.* C. C. archiepiscopus.

Subdelegatio per hunc facta.

Visis relatione informativa praefatae sacrae Congregationi per nos facta sub die x nuperrime evoluti septembris, ac documentis in ea citatis per oratorem praefatum exhibitis, ex quibus omnibus vera existere narrata comperuimus. Harum itaque serie auctoritate apostolica qua fungimur vigore praemissae subdelegationis, omnique alio meliori modo, etc., supradictam collegiorum unionem, cum pacto tamen reversivo et regressus ad primaeva iura in casu inobservantiae pactorum seu dissolutionis unionis, approbamus atque confirmamus, et seu deveniendi ad ipsam unionem, ac reducendi ad stipulatum, ut supra inter oratorem et praefatos dominos deputatos collegii Longoni concordata, ipsimet reverendo patri rectori facultatem concedimus atque impertimur, decernentes, etc. In quorum, etc. Mediolani ex palatio archiepiscopali hac die xxiv decembris MDCCXXXVIII. *Signat.* I. B. CAMPAGNOLI, vicarius generalis et subdelegatus apostolicus.

Ita in actis est. I. C. PETRUS ANTONIUS RUSCA notarius actuarius curiae archiepiscopalis Mediolani.

§ 5. Interea vero temporis, quae¹ praemissa peragebantur, capitulum generale clericorum regularium Congregationis praedictae in civitate Mediolanensi anni MDCCXXXVII, celebratum fuit: in cuius

Declaratum postmodum in capitulo generali rectori collegii nobilium privilegium competere accedendi ad capitula generalia.

¹ Potius lege qua (R. T.).

Commissio per dictam Congregationem data archiepiscopo Mediolanensi.

celebratione, ad instantiam dicti Iosephi Mariae, duo super unionis et incorporationis dictorum collegiorum concessione fuerunt proposita dubia, nimirum an collegium Imperiale nobilium Mediolani erectum inter alia collegia dictae Congregationis enumerandum esset, et an rectori dicti collegii concedendum esset privilegium accedendi ad capitulum generale. Super quibus responsum fuit affirmative, prout ex particulâ actorum capitularium tenoris qui sequitur, videlicet:

« Feriâ v, die xvi maii MDCCXXXVII, praeside annuente, reverendus pater dominus Marius Maccabei, primus promotor, legit supplicem libellum porrectum a reverendo patre domino Iosepho Maria Olivazzi, etiam de consensu et nomine aliorum patrum in collegio Imperiali Longono secum commorantium, in quo petebatur ut collegium illud hoc anno sufficientibus redditibus in perpetuum firmatum inter alia Congregationis nostrae collegia recenseretur, et rector pro tempore iuribus omnibus ac privilegiis Bononiensis Poenitentiariae rectoris gauderet; cumque dictum fuerit supplicem libellum duas petitiones omnino distinguendas continere, utpote quod secunda maiore indigeret consideratione, idcirco primo facta fuit haec propositio: « Proponitur an collegium Imperiale nobilium Mediolani erectum et modo in perpetuum firmatum enumerandum sit inter alia collegia regularia Congregationis nostrae sub titulo rectoriae ». Et datis calculis, propositio fuit admissa. Secundo facta fuit haec altera propositio: « Proponitur an rectori praedicti collegii concedendum sit privilegium accedendi ad capitulum generale et in eodem votum ferendi »: et, datis calculis, conclusum fuit affirmative. Ego dominus Vacentinus Viani, clericus regularis S. Pauli, et admodum reverendi patris generalis cancellarius, suprascripta omnia fideliter extraxi, et pro fide me subscripsi cum eiusdem admodum reverendi patris generalis maioris sigilli appositione ». *Loco † sigilli.*

§ 6. Cum autem, sicut eadem expositio subiungebat, dictus praepositus provincialis, praemissa, quo firmitus subsistant et servantur exactius, apostolicae confirmationis nostrae patrocínio communiri, summopere desideret:

Provinciale petente.

§ 7. Nos, ipsum modernum praepositum provincialem specialibus favoribus et gratis prosequi volentes, eumque a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innotatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, supplicationibus eius nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, praeinsertas conventiones et cessiones inter praedictos Iosephum Mariam rectorem supradicti collegii et deputatos collegii sic erigendi initas, a memorato Ioanne Baptista vicario generali archiepiscopi Mediolanensis, in vim facultatis a praedictâ Congregatione cardinalium illi attributae, cum omnibus et singulis in eis contentis approbatas, et concessionem a dicto capitulo generali factam, ut praefertur, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, confirmamus et approbamus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiicimus, omnesque et singulos iuris et facti defectus, si qui desuper quomodolibet intervenerint, supplemus et sanamus.

Praedicta omnia confirmatione apostolica roborantur.

§ 8. Decernentes, easdem praesentes litteras et in eis contenta quaecumque semper firma, valida et efficacia existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et in futurum spectabit, plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices

Clausulae ad firmitatem et observantiam inducendam.

ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane, si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Derogatio
contrariorum.

§ 9. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon Congregationis et collegii praedictorum, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis alias in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxii maii MDCCXXXIX, pontificatus nostri anno IX.

Dat. die 22 maii 1739, pontif. anno IX.

CCLX.

Confirmatio decreti Congregationis indulgentiarum sacrarumque reliquiarum, quo declaravit non spectare nec spectasse ad episcopum Terulensem facultatem benedicendi scapularia, seu parvos habitus B. Mariae de Monte Carmelo, non obstante consuetudine, et aggregatos recurrere ad superiores Ordinis pro nova aggregatione.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Congregationis
indulgentiarum
decretum.

§ 1. Emanavit nuper a Congregatione venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium indulgentiis et sacris reli-

quiis praepositorum decretum tenoris qui sequitur, videlicet:

Beatissime pater. Modernus episcopus Terulensis, humillimus S. V. orator, pari humilitate eidem exponit qualiter in civitate Terulensi adest conventus monialium Discalceatarum B. Mariae Virginis de Monte Carmelo nuncupatarum, ac iurisdictioni episcopali subiectarum, in quo ab initio foundationis mos admissus fuit ubique in Hispania receptus induendi nimirum scapularia ab episcopo uti a legitimo superiore benedicta, sive cum ipsius facultate a capellano ordinario, ut usus fert, aliaque ita benedicta mittendi parentibus, propinquis, aut benefactoribus laicis, charitatis aut gratitudinis officio, pia fide omnibus credentibus, scapularia, quae ita benedicuntur, habere indulgentias a Summis Pontificibus concessas eodem modo, quo ea, quae a fratribus Discalceatis eiusdem Ordinis benedicuntur. Nuper autem, cum praedicti fratres in huiusmodi civitate Terulensi fundaverint, nihil unquam super hoc actum, dictum vel in dubium verum est: sed, cum paucis ab hinc diebus prior in suo conventu sermonem populo dicens non dubitaverit publice asserere nullis scapularibus, nisi illis quae ab ipsismet fratribus benedicuntur, ullas indulgentias competere vel esse concessas, et aliter facientes aut sentientes, deceptos esse, ne, si huiusmodi propositio ad aures monialium perveniat, praebat illis ansam dubitandi seu fundandi scrupulum circa banc materiam, et praecipue circa validitatem indulgentiarum: idcirco humiliter S. V. supplicat quatenus benigne declarare dignetur scapularia ab oratore, uti a legitimo dictarum sanctimonialium praelato et superiore, vel ab alio capellano facultatem habente, benedicta, ut moris est, indulgentias praedicto Ordini concessas sine ullo dubio habere, quae utique a gestantibus lucrari valeant, servatis aliis servandis, quemadmodum sic definiri sperat in summa S. V. clementia. Quam Deus, etc.

Episcopi Terulensis expositio.

Die xxii maii MDCCXXXIX, sacra Congregatio indulgentiis sacrisque reliquiis praeposita declaravit non spectare nec spectasse

Dictae Congregationis decretum.

ad episcopum Terulensem facultatem benedicendi scapularia seu parvos habitus B. Mariae Virginis de Monte Carmelo, non obstante consuetudine, et aggregati recurrant ad superiores Ordinis pro novâ aggregatione. L. episcopus Albanensis cardinalis Picus, praefectus. *Loco † sigilli.* I. archiepiscopus Tarsensis, secretarius.

Procuratoris
generalis Ordinis
petitio pro
dicti decreti ob-
tinendâ confir-
matione, quam
elargitur Cle-
mens.

§ 2. Cum autem, sicut dilectus filius Vincentius a Conceptione, modernus procurator generalis Ordinis eorumdem fratrum B. Mariae de Monte Carmelo Discalceatorum nuncupatorum Congregationis Hispaniae, nobis nuper exponi fecit, ipse non solum decretum huiusmodi, quo firmiter subsistat et servetur exactius, apostolicae confirmationis nostrae patrocinio communiri, sed etiam, ad quamcumque dubitationem quae fortasse futuris temporibus super facultate et participatione huiusmodi praecidendam exoriri et excitari possit, facultatem benedicendi parvos habitus sive scapularia, quae christifidelibus distribuuntur, et ab ipsis¹ ad finem lucrandi et participandi indulgentias a Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris illos et illa gerere solitis concessas, ad superiores Ordinis huiusmodi spectare et pertinere, per nos declarari plurimum desideret: nos, specialem ipsi Vincentio procuratori generali gratiam facere volentes, et a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censes, supplicationibus eius nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, decretum praeinsertum, auctoritate apostolicâ, tenore praesen-

¹ Deest *gestantur* aut simile (A. T.).

tium, approbamus et confirmamus, illique inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiicimus.

§ 5. Ac insuper, ad praecidendam quamcumque dubitationem futuris temporibus fortasse exoriendam excitandamque super facultate benedicendi parvos habitus seu scapularia huiusmodi a confratribus confraternitatum sub invocatione B. Mariae de Monte Carmelo in quacumque mundi parte erectarum et erigendarum¹, ac participatione indulgentiarum gratiarumque spiritualium per Romanos Pontifices praedecessores nostros quibusvis christifidelibus habitum seu scapulare huiusmodi gestantibus concessarum, ad superiores Ordinis fratrum B. Mariae de Monte Carmelo, seu ad alios ab illis deputandos, privative spectare et pertinere, auctoritate et tenore praedictis, decernimus et declaramus: salvâ tamen semper in praemissis auctoritate memoratae Congregationis cardinalium.

Declaratio,
ad superiores
Ordinis priva-
tive spectare
benedictionem
scapularium.

§ 6. Decernentes, praesentes litteras et in eis contenta quaecumque firma, valida et efficacia existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane, si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Clausulae pro
decreti huius
firmitate.

§ 7. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ac, quatenus opus sit, Ordinis et Congregationibus huiusmodi, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmi-

Derogatio con-
trariorum.

¹ Videtur deesse *gestari solita* (A. T.).

tate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Transumptis
adhibenda fides.

§ 8. Volumus autem quod praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiasticâ dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides tam in iudicio quam extra illud ubique locorum adhibeatur, quae praesentibus ipsis adhiberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xii iunii MDCCXXXIX, pontificatus nostri anno ix.

Dat. die 12 iunii 1739, pontif. anno ix.

CCLXI.

Ut in priorem generalem Ordinis eremitarum sancti Augustini eligi possint ii, qui officium procuratoris vel assistentis generalis exercuerint, nullâ expectatâ temporis vacatione.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Aliâs declaratum a Pontifice procuratorem et assistentem generales eligi non posse in priorem generalem, nisi post sexennium vacationis officii.

§ 1. Cum aliâs, nempe die v february MDCCXXXIII, nos, motu proprio ac ex certâ scientiâ et maturâ deliberatione nostris, deque apostolicae potestatis plenitudine, statuimus et ordinavimus, ne deinceps, perpetuis futuris temporibus, ille ex fratribus Ordinis eremitarum sancti Augustini, qui procuratoris generalis aut aliquo quatuor assistentium generalium officio perfunctus fuisset, in priorem generalem ipsius Ordinis immediate, ac nisi prius ab officio huiusmodi per integrum sexennium vacaverit seu cessaverit, ullo modo eligi possit et valeret, et aliâs prout in nostris litteris desuper in simili formâ Brevis expeditis, quarum tenorem praesentibus pro plene et

sufficienter expresso et de verbo ad verbum pro inserto haberi volumus, uberius continetur.

§ 2. Nunc vero, iustis et rationabilibus ex causis nobis notis adducti, motu, scientiâ, deliberatione et potestatis plenitudine paribus, statutum et ordinationem huiusmodi a nobis, ut praefertur, factam, expeditasque desuper nostras litteras praedictas, cum omnibus et singulis in eis contentis quibuscumque, tenore praesentium revocamus, cassamus et annullamus, viribusque et effectu penitus et omnino vacuumus, ac ut in proximo futuro anno MDCCXXXIX in conventu S. Ioannis evangelistae civitatis Ariminensis, prout in capitulo anno MDCCXXXIII celebrato statutum fuit, et in quibusvis aliis capitulis generalibus dicti Ordinis pro tempore celebrandis, tam moderni quam pro tempore existentes procuratores et assistentes generales, nullâ temporis vacatione expectatâ, nec non illi et alii quicumque Ordinis praedicti fratres expresse professi, cuiusvis nationis existentes, si ad id idonei ceteroquin reperiantur, et nullum aliud canonicum eis obstat impedimentum, servatis aliâs servandis, ab illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, in priorem generalem dicti Ordinis assumi et eligi, et sic assumpti et electi prioris generalis huiusmodi officium suscipere, gerere et exercere libere et licite possint, respective, motu, scientiâ, deliberatione et potestatis plenitudine similibus, harum serie decernimus et ordinamus, dictosque fratres, quique aliquod ex officiis huiusmodi exercuerint, in pristinum ac eum in quo antequam litterae nostrae praedictae emanassent erant statum, motu, scientiâ et potestate similibus, restituimus et reintegramus, ac in posterum restitutos et reintegratos esse volumus et mandamus.

Dictam tollens declarationem quemcumque pristino restituit iuri.

Sicque in perpetuum servari iubet.

§ 3. Decernentes, easdem praesentes litteras firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, nec de subreptionis vel obreptionis aut de nullitatis vitio, vel intentionis nostrae aliove quolibet etiam formali et substantiali defectu notari, impugnari, infringi, retractari, in controversiam vocari, aut adversus illas aperiitionis oris, restitutionis in integrum, aliudque quodcumque iuris, facti vel gratiae remedium intentari, seu etiam motu, scientia et potestatis plenitudine paribus concessio vel emanato quempiam in iudicio vel extra illud uti seu se iuvare ullo modo posse, sed ipsas praesentes litteras ab illis, ad quos spectat et spectabit in futurum, inviolabiliter observari, sicque et non aliter in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac S. R. E. cardinales, etiam de latere legatos, aliosve quoslibet quacumque praeeminentia et potestate fungentes et functuros, sublata eis et eorum cuilibet quavis aliter iudicandi et interpretandi facultate et auctoritate, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Quibuscumque non obstantibus.

§ 4. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon dicti Ordinis, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis et insertis habentes, illis alias in suo ro-

1 Edit. Main. legit illos (A. T.).

bore permansuris, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxiv iulii MDCCXXXIX, pontificatus nostri anno ix.

Dat. die 24 iulii 1739, pontif. anno ix.

CCLXII.

Confirmatio decreti capituli generalis Ordinis eremitarum sancti Augustini super prohibitione receptionis de mulati et mestizi in fratres provinciae Mexicanae eiusdem Ordinis.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

§ 1. Exponi nobis nuper fecit dilectus filius Ignatius Padilla, frater expresse professus et in sacra theologia magister, ac provinciae Mexicanae Ordinis eremitarum sancti Augustini procurator, quod in capitulo generali dicti Ordinis nuper in civitate Ariminensi celebrato, inter alia decreta a venerabili fratre Nicolao episcopo Iselano tunc dicti Ordinis magistro generali condita, approbatum fuit illud tenoris qui sequitur, videlicet:

In capitulo generali Ariminensi approbatum decretum, quo cavetur recipi in Ordine Mulatos et Mestizos.

Cum compertum sit, summum dedecus nostrae religioni inferri, si ex ignobili vulgo ad illam admittantur, qui in saeculo suis inhonestis et depravatis moribus despectum communem merentur, cuiusmodi sunt omnes illi qui vulgo *mulatos* et *mestizos* appellantur, nimisque indecens existimetur quod isti, animarum regimini incumbentes, superiorum sedes occupare sinantur: stricte praecipimus, sub poenis a nostris constitutionibus, part. II, cap. I, n. IV et VIII contra inhabiles recipientes, ut tales imposterum ad habitum religionis non admittantur; si vero contra hoc decretum recipi aliquando contigerit, irritam et nullam ipso facto receptionem et professionem fore de-

claramus: non enim est animus religionis illos admittere et veluti filios habere, quos respublica saecularis tamquam infamiae notâ affectos contemnit, et ob propriam vilitatem ab officiis honorificis excludit. Quapropter omnibus in futurum religionem ingressuris ante receptionem ad habitum et professionem hoc nostrum mandatum notificari praecipimus. Similiter prohibemus dictos mulatos et mestizos (si qui in dictâ provinciâ iam fuerint admissi) deinceps ad officia cum curâ animarum assumi, sub poenis ipso facto incurrendis nullitatis electionis aut nominationis, et, quoad eligentes et nominantes, privationis vocis activae et passivae per decennium, quod¹ olim respective ad dictos mulatos praeceptum a nostro praedecessore Fulgentio Travalloni in suis decretis anno MDCLXXXVIII pro dictâ provincia expeditis.

Procurator
generalis Ordinis
huiusmodi
decretum pollicetur
confirmari.

§ 2. Cum autem, sicut dictus Ignatius nobis subinde exponi fecit, ipse, decretum huiusmodi, quo firmitus subsistat et servetur exactius, apostolicae confirmationis nostrae patrocinio communi, summopere desideret:

Petitis annuit
Clementis.

§ 3. Nos, ipsum Ignatium specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum; barum serie absolventes et absolutum fore censes, supplicationibus eius nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, decretum praeinsertum, ac omnia et singula in eo contenta, a praedicto Nicolao episcopo et magistro generali condita, et a capitulo generali praedicto approbata, auctoritate apostolicâ, tenore

¹ Videtur legendum *quoad*, seu *iuxta*, alioquin syntaxis suspensa maneret; vel post vocem *praefectum* adde *fuit* (R. T.).

praesentium, approbamus et confirmamus, illique¹ inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiicimus, omnesque et singulos iuris et facti defectus, si qui desuper quomodolibet intervenerint, dictâ auctoritate supplemus et sanamus.

§ 4. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et spectabit in futurum, plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sic² in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Praesentium
litterarum firmitas.

§ 5. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, nec non provinciae et Ordinis praedictorum, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Derogatio
contrariorum.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die vi augusti MDCCXXXIX, pontificatus nostri anno x.

Dat. die 6 augusti 1739, pontif. anno x.

¹ Aut lege *illisque* (R. T.).

² Legendum *sicque* (R. T.).

CCLXIII.

Confirmatio censurarum Sixti V ac nonnullarum Ordinationum pro Bibliothecâ Vaticanâ Apostolicâ.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Stadium Romanorum Pontificum in libris conquirendis ad religionis decus et praesidium.

§ 1. Dignissimam regibus ipsis ac principibus ethnicae quoque superstitionis viris visam per omnes aetates, etiam antequam Evangelii lux in tenebris illuxisset, curam colligendi libros, et bibliothecas instituendi, quo priorum temporum res gestas et illustria vetustatis monumenta ab interitu eriperent, atque in longam, ad factorum celebritati, hominum laudi, et exemplorum splendori, necnon instituendis populis consulendum, posteritatis memoriam eruditionemque propagarent, laudatissimo studio ac sollicitudine incredibili non modo adaequare, sed superare etiam Romani Pontifices praedecessores nostri adlaborarunt, atque in iis praesertim undique conquirendis libris et codicibus, qui ad catholicae religionis decus, praesidium et incrementum conducebant. Quo factum est ut apostolica bibliotheca, ab iisdem non sine magnis sumptibus et laboribus instructa, semper insignis, post varias temporum vires, in Vaticanis demum aedibus, unde Vaticana pariter nuncupari coepit, collocata, atque ibidem a felicis recordationis Sixto V itidem praedecessore nostro, excitatâ a fundamentis elegantioris formae ditiorisque structurae mole, in salubriorem splendidioremque locum translata, ceterarum omnium bibliothecarum nobilissima et celeberrima habeatur.

Constructa bibliotheca Vaticana.

§ 2. Hanc quidem aliis aulis, armariis, pluteis, codicibus, libris, picturisque per felicis recordationis Paulum V, Urbanum VIII, Gregorium XV, Alexan-

drum VIII et Clementem XI pariter praedecessores nostros adauctam, haud excipiendis et adservandis impressis codicibus, quibus coëmendis non mediocrem pecuniae summam nos quoque contulimus, satis esse considerantes, primum quidem aliâ insigni aulâ armariis pluteisque constructis anno mcccxxxii ampliavimus, deinde vero quamplurimis hetruscae vetustatis fictilibus vasis super armaria ipsa affabre dispositis ornavimus, tum etiam trecentaviginti octo aurea, argentea et aerea antiquorum Graeciae et Egypti regum ac Romanorum imperatorum maximi moduli numismata, suis singula ad maius spectantium commodum custodiaeque securitatem mobilibus circulis aereis inauratis innexa, in eâdem bibliothecâ curavimus reponenda, tum demum octoginta scuta monetae romanae in singulos annos in perpetuum eidem bibliothecae pro emendis cartâ, calamis, pergameneis, aliisque huiusmodi necessariis rebus ab apostolico palatio nostro persolvenda assignavimus, ut pecunia illa, quae ex redditibus¹ ex abbatiâ eidem bibliothecae addictâ provenientibus exigitur, ad coëmendos dumtaxat libros et codices erogetur, necnon praeterea quascumque expensas pro specularibus, armariis, pluteis, clavibus, pavimentis, parietibus, tectis, portis, fenestris, ceterisque rebus tam in ipsâ bibliothecâ quam in aedibus eidem annexis sive reparandis sive de novo faciendis necessarias, ab eodem apostolico palatio fieri mandavimus.

§ 3. Quoniam autem diuturnâ experientiâ compertum est, omnia, quae per summam industriam, maximos sumptus, assiduos labores comparata, ac providis etiam ordinationibus aliâs disposita fuerunt, saepe per hominum incuriam

Pro firmiori eius statu atque ordine nonnullas stabiliendas leges decernit.

¹ Edit. Main. legit *reditibus* (R. T.).

ac temporum iniuriis, nisi accurate custodiantur, novisque legibus opportune iterum atque iterum confirmentur, sensim posthabita ac neglecta, deinceps distrahi atque ad interitum perducī; et nos, qui privatam, dum adhuc in minoribus essemus, bibliothecam nobis construētes, quo meliori potuimus ordine cavimus ne quidquam imposterum deperiret, in hac sacrosancti apostolatus speculā plane immerentes per divinae bonitatis abundantiam constitutos maxime decet ut maiori sedulitate ac vigilantia omnes apostolicae auctoritatis providentiaeque nostrae partes ad perpetuam eiusdem Vaticanae bibliothecae tutelam praesidiumque ac rectum ordinem colloceamus.

Inscriptio a
Sixto V portae
bibliothecae sup-
posita.

§ 4. Hinc est quod nos, praedicti Sixti praedecessoris vestigiis inhaerentes, ipsius Sixti tam inscriptionem ad dexteram portae bibliothecae praedictae suppositam hinc ad perpetuam memoriam inserimus, quae est tenoris sequentis, videlicet: « Sixtus V Pontifex Maximus bibliothecam apostolicam a sanctissimis prioribus illis Pontificibus, qui B. Petri vocem audierunt, in ipsis adhuc surgentis Ecclesiae primordiis inchoatam, pace Ecclesiae reddita Laterani institutam, a posterioribus deinde in Vaticanum, ut ad usus pontificios paratior esset, translata, ibique a Nicolao V auctam, a Sixto IV insigniter excultam, quo fidei nostrae et veterum ecclesiasticae disciplinae rituum documenta omnibus linguis expressa et aliorum multiplex sacrorum copia librorum conservaretur ad puram et incorruptam fidei et doctrinae veritatem perpetuā successione in nos derivandam, toto terrarum orbe celeberrimam, cum loco depresso, obscuro et insalubri sita esset, aulā peramplā, vestibulo, cubiculis, circum et infra, scalis, portici-

bus, totoque aedificio a fundamentis extracto, subselliis pluteisque directis, libris dispositis, in hunc editum, perlucidum, salubrem, magisque opportunum locum extulit, picturis illustribus undique ornavit, liberalibusque doctrinis et publicae studiorum utilitati dicavit, anno MDLXXXVII, pontificatus IV »: quam eiusdem decretum, ad laevam quoque appositum, tenoris qui sequitur: « Sixtus V Pontifex Maximus. Perpetuo hoc decreto de libris Vaticanae bibliothecae conservandis, quae infra sunt scripta, hunc in modum sancita sunt, inviolateque observentur. Nemini libros, codices, volumina huius Vaticanae bibliothecae ex eā auferendi, extrahendi, aliōve asportandi, non bibliothecario neque quibusvis aliis cuiusvis ordinis et dignitatis, nisi de licentiā Summi Romani Pontificis scriptā manu, facultas esto. Si quis secus fecerit, libros partemve aliquam abstulerit, extraxerit, erepserit, rapseritque, concesserit, corruperit dolo malo, illico a fidelium communione eiectus, maledictus, anathematis vinculo colligatus esto; a quoquam, praeterquam Romano Pontifice, ne absolvitur¹ »: non solum quoad libros, codices, volumina tunc temporis ab ipso Sixto praedecessore in eandem bibliothecam illata et recondita tenore praesentium apostolicā auctoritate confirmamus; verum etiam quoad omnes et singulos codices, manuscriptos, libros impressos, volumina, numismata, vasa, statuas, et quaecumque alia, sive quae a Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris, ac nobis ipsis, et quibuscumque personis cuiusvis status, gradus et conditionis quocumque tempore hactenus donata et emptā, sive in posterum, ut praemittitur, donanda et emenda, et in eandem bibliothecam invehenda, dummodo ta-

¹ Edit. Main. legit *absolvitur* (R. T.).

men, postquam illuc invecata fuerint, in indicibus seu syllabis librorum rerumque bibliothecae praedictae descripta et adnotata reperiantur, tenore et auctoritate paribus, sub iisdem poenis et consuris a Sixto praedicto praedecessore inflictis, extendimus et ampliamus.

Leges in antecessum latae perpetuo praecipit observari.

§ 5. Praeterea, ne apostolicae providentiae, ordinationis ac regulae alias sapientissime constitutae, lapsu temporis cum eiusdem bibliothecae detrimento in desuetudinem abeant, non solum omnes et singulas leges pro recta administratione et conservatione tum a praefatis Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris, tum a S. R. E. praedictae cardinalibus pro tempore existentibus bibliothecariis, seu eiusdem bibliothecae protectoribus praescriptas, dummodo iis, quae mox statuenda sunt, non adversentur, iterum renovamus et confirmamus, et, quatenus opus sit, de novo ferimus et promulgamus, verum etiam tenore et auctoritate similibus statuimus et in posterum perpetuis futuris temporibus servari mandamus.

Iubet ea praestari, quae custodibus mandata sunt.

I. Ac primum quidem omnia et singula, per alias nostras in simili forma Brevis litteras in deputatione tam primarii quam secundi custodis expeditas cuilibet ipsorum iniuncta, iuxta earumdem litterarum seriem et tenorem omnino praestentur.

Inventarium faciendum et subscribendum a custodibus in adeunda muneris possessione.

II. Antequam utrique, primario scilicet et secundo, eiusdem bibliothecae designato custodi per S. R. E. praedictae cardinalem bibliothecarium seu eiusdem bibliothecae protectorem pro tempore existentem in ipsa bibliotheca detur sive seorsim sive coniunctim muneris demandati possessio, conficiatur repertorium seu inventarium omnium et singularum rerum ac librorum in praedicta bibliotheca existentium, de quibus omnibus et singulis, cum opus

fuerit, ipsi custodes omnimodam reddere tenentur rationem. Repertorii seu inventarii huiusmodi, tum ab altero custode, a quo possessio adeunda est, tum a tabellione seu notario subscribendi, duplex exemplum fiat, alterum in actis eiusdem tabellionis seu notarii, alterum in archivio bibliothecae praedictae custodiendum; semel pro uno custode factum (nova tamen earumdem rerum librorumque praecedente recensione, additaque aliarum fortasse rerum et librorum de novo illatarum et illatorum accessione) eodem pariter modo subscribatur ab altero custode et tabellione seu notario in possessionis huiusmodi additione.

III. Claves indicum seu syllabarum¹ codicum manuscriptorum, librorum impressorum, aliarumque rerum, sit² penes utrumque custodem, exceptis clavibus eorum armariorum, in quibus solita vetustatis monumenta exteris hominibus inspicienda admirandaque exhibentur; hae quidem claves ad effectum huiusmodi et eorumdem hominum exterorum³ commodum conservatoribus vulgo *scopatori* ad ipsorum custodum arbitrium tradi possunt. Verum, ut longior in aperiendis ocludendisque tot armariis, in quibus tam diversa codicum, librorum, rerumque pulcherrimarum copia recondita est, mora auferatur, et maior rerum ipsarum custodia habeatur, in unum aut plura armaria conferantur recondanturque, ea scilicet, quae, ut praemittitur, spectanda sunt.

Iulicum claves penes custodes semper sint, rerum vero quae exteris hominibus inspicienda exhibentur conservatoribus tradi possunt.

IV. In bibliothecam aditus vel accessus, quemadmodum usque ad hanc diem mos tenet, unicuique iis de mane dumtaxat pateat diebus, in quibus custodes,

Nemoi pateat aditus ad bibliothecam nisi statuta diebus et horis.

¹ Edit. Main. legit *syllabarum* (R. T.).

² Videtur legendum *sint* (R. T.).

³ Edit. Main. legit *ceterorum* pro *exteriorum* (R. T.).

scriptores, aliique ministri suis muneribus functuri per integrum trium horarum spatium interesse debent: quo sane tempore elapso, omnes ac praesertim exteros quoscumque homines abire iubeatur.

Quibus diebus ministri bibliothecae ad eam non accedunt, unus conservatorum ad eam accedat pro rebus bene disponendis.

v. Praeter dies in indiculo per dilectum filium nostrum Angelum Mariam S. R. E. cardinalem Quirinum nuncupatum, modernum bibliothecae praedictae protectorem, approbato ac typis edito, et in aulâ quae dicitur *scriptorum* proposito, descriptos, in quibus omnes, ut praefertur, ministri matutinis horis ad ministerii sui oneribus faciendum satis bibliothecam adire tenentur, alter tantum conservatorum seu scopatorum in reliquis diebus feriatis, tam de mane quam post meridiem, per hebdomadam, sive alternis diebus, illuc accedat, ut inspiciat, an omnia bene se habeant, eaque disponat quae ad tutam rerum omnium custodiam necessaria sunt.

Ministri negligentes a cardinali protectore admonendi.

vi. Si contingat, quemcumque ex antedictis ministris, nullâ legitimâ causâ impeditum, cā qua par est frequentia ac debitâ sedulitate per statos dies bibliothecae non adesse, aut officio suo non satisfacere, cērtior fiat cardinalis bibliothecarius seu protector, qui delinquentem admoneat.

Codices praestantiores non conferendi, etc. nisi de licentiâ Summi Pontificis.

vii. Ob ingentem copiam codicum linguis fere omnibus manuscriptorum, tum diurni temporis notis tum rerum abditarum singularitate insignium, quibus, praeter libros typis impressos propter multiplicium elegantiumque editionum praestantiam plurimi habitos, cummulata bibliotheca Vaticana reperitur, cum factum sit ut undique concurratur ad exempla ex ipsis authographis sive exscribenda sive aliunde sumpta cum iisdem conferenda, variantibusque lectionibus illustranda, id nullo pacto nisi de Romani Pontificis pro tempore

existentis facultate in scriptis datâ permittatur, dummodo descriptio sive collatio huiusmodi non foret de rebus non tam gravis momenti, tunc enim facultas, solitis tamen obstricta legibus, penes custodes dumtaxat esto. Verum nolumus, imo expresse prohibemus, descriptiones collationesque praedictas, factâ etiam, ut praemittitur, describendi conferendique potestate, fieri iis diebus, in quibus non solum sunt in bibliothecâ feriae, verum etiam uterque custos fortasse aberit; ab altero enim eorum tradendi sunt codices manuscripti, qui sub utriusque custodia, ut praemittitur, habentur.

viii. Utrique custodi sicut iniungimus ut nullo pacto sinant scriptores atque alios bibliothecae ministros per dies bibliothecariis muneribus addictos in alia quaecumque, praeter ea ad eiusdem bibliothecae utilitatem conducentia et proficua ministeria incumbere; ita eorumdem arbitrio relinquimus, ut, si expediens consuerint, alicui ex scriptoribus, opus publicâ luce dignum fortasse aggresso, interdum in diebus etiam huiusmodi in illo dumtaxat adornando immorari indulgeant. Prodest enim bibliothecae, ut eos habeat scriptores, qui non venales et mercenarios pro aliis, sed praeclaros ingenii labores ad publicam utilitatem conferant.

Horum arbitrio dandum ministris, ut publicae incumbant utilitati.

ix. Collationes descriptionesque quaecumque, sed praesertim ex codicibus manuscriptis faciendae, in eâdem ante bibliothecam aulâ in custodum scriptorumque conspectu fiant, ne manuscripti codices quovis modo corrumpantur, aut folia lacerentur vel decerpantur. Qua super re a custodibus omnem requiramus, iisdemque iniungimus diligentiam.

Collationes, etc. in custodum conspectu faciendae.

x. De manuscriptis omnibus codicibus aliò quacumque ex causâ transferendis et cuicumque commodandis Sixti praedicti praedecessoris sanctionem sub iis-

De codicibus commodandis sanctio Sixti V servanda.

dem poenis et censuris renovamus. De libris vero excusis eadem prorsus ratio et consuetudo, usque ad hanc diem re-tenta, firma remaneat.

Codicum, li-
brorumque pro-
hibitorum invi-
sendorum fa-
cultas a Ro-
mano tantum
Pontifice danda
facultas.

xi. Cum erronea haereticorum alio-
rumque auctorum scripta ac libros pro
eorum perpetuâ damnatione in scriniis
S. R. E. reservari mandasset Conci-
lium Romanum anno dcccxlvi sub san-
ctae memoriae Zacharia Romano Pon-
tifice illidem praedecessore nostro cele-
bratum, ac propterea in eâdem Vaticanâ
bibliothecâ magna codicum librorumque
huiusmodi supellex recondita reperi-
tur; nos per alias pariter nostras in
simili formâ Brevis litteras perpetuis
futuris temporibus valituras, quas tenore
praesentium iterum confirmamus, satis
consuluimus quoad custodes aliosque
bibliothecae praedictae inservientes;
quoad exteros vero, nemini, nisi cui ab
Apostolicâ hac S. Sede facultatem im-
pertitam fuisse constiterit, aut legendi
aut describendi codices librosque pro-
hibitos copia fiat.

Ignes, faces-
que nec de no-
cte in biblio-
thecam indu-
cendae.

xii. Insignibus bibliothecis detrimen-
tum atque interitum ex incuriâ custo-
diae a furibus et ab ignibus allatum
fuisse memores, praecipimus ut accu-
rate portae fenestraeque occludantur,
neque unquam ignes facesque in bi-
bliothecam praedictam deferantur, mi-
nus vero noctis tempore codices, vo-
lumina, libros, ceteraque inibi contenta,
cuicumque personae cuiusvis auctori-
tatis et conditionis adhibitis luminibus
ostendere quivis audeat.

Opera maioris
momenti in per-
gamenis scri-
benda.

xiii. Quod antiquis, antequam ty-
pographica ars inventa esset, in more
positum erat ut res maioris momenti,
perpetuae memoriae ad posterorum uti-
lilitatem consignandae, in membran-
is pergamenisque cartis potissimum scri-
berentur, unde quaecumque illustrium
virorum pauca habemus monumenta

vetustatem temporumque iniurias vice-
runt, in bibliothecâ Vaticanâ, quae
prae ceteris ob ingentem codicum in
membran-
is pergamenisque cartis tam
scite exaratorum multitudinem maxime
commendatur, quantum fieri potest re-
tineatur, cum sive exempla ex vetustis-
simis in vili cartâ descriptis codicibus,
nondum impressis, atque adeo blattis
lineisque corrosis, ne pereant, instau-
randa, sive nova auctorum opera, cetero-
quin luce dignissima, quomodocumque
lucem non visura, sunt describenda.

xix. Praeterea in deputatione cuiusvis
scriptoris in posterum faciendâ omni-
no restituatur ac servetur consuetudo,
paucis ab hinc annis interrupta, can-
didatos nimirum scriptoris officium am-
bientes per plurium concursum, ut di-
citur, probandi, perfecte ne linguam,
cuius munus obituri sunt, praeter lin-
guam latinam in qua debent omnes esse
non mediocriter versati, calleant; po-
litiori etiam elegantiorique eiusdem lin-
guae, praeter latinam pariter, stilo ma-
nuque in exarando praestantiores sint.

Officio scri-
ptoris vacante
candidati per
concursum pro-
baudi.

xv. In emendis quoque libris, editio-
nes elegantiores correctioresque iuxta
dignitatem auctoritatemque Vaticanae
bibliothecae undique conquirantur, at-
que ii maxime libri, adhibita omni
diligentiâ, comparentur, qui ad ortho-
doxae religionis praesidium subsidium-
que salutare et proficui existiman-
tur; nec tamen omittantur libri aliarum
bonarum artium, ac doctrinarum, ut
bibliotheca apostolica omnium celeberrima
magis magisque in dies increseat
et adaugeatur.

In emendis
libris editiones
praestantiores
comparandae.

xvi. Cetera denique, si quae in fu-
tuum novis per temporum vices le-
gibus ordinationibusque indigere com-
pertum fuerit, ordinanda relinquinms
moderno ac pro tempore existentibus
S. R. E. cardinalibus bibliothecariis seu

Cardinalibus
bibliothecariis
data facultas
alias opportu-
nas faciendi le-
gis.

bibliothecae laudatae protectoribus, quos etiam rogantes, iisdem insimul committimus et mandamus ut debitam si-
delemque omnium et singularum legum ordinationumque per easdem praesentes nostras litteras praescriptarum executionem et observantiam curent, promoveant, atque ab iis, quorum interest, fortiter suaviterque exigant.

*Præsentibus
litteris perpe-
tuam dat. firmi-
tatem Pontifex.*

§ 6. Decernentes, easdem praesentes litteras et in eis contenta quaecumque semper firma, valida et efficacia existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quando-
cumque spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, ac irritum et inane si secus super his a quo-
quam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari. In contrarium facientibus non obstantibus quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Ma-
iorem, sub annulo Piscatoris, die xxiv
augusti MDCCXXXIX, pontificatus nostri
anno x.

Dat. die 24 augusti 1739, pontif. anno. x.

CCLXIV.

*Confirmatio ordinationis abbatis gene-
ralis Ordinis canonicorum regularium
sancti Antonii Viennensis super pro-
hibitione gestandi fictitiam caesariam.*

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

*Alias prohi-
bitum canonicis
huius Ordinis
sub poena pri-
vationis officii
gestandi ficti-
tiam caesariam.*

§ 1. Exponi nobis nuper fecit dilectus
filius Petrus Verger, modernus procu-
rator generalis Ordinis canonicorum re-
gularium sancti Antonii Viennensis pro
parte etiam dilectorum filiorum Nicolai
Gasparini abbatis generalis et defnito-
rum dicti Ordinis, quod aliis, ad auge-

rendum abusum, qui inter nonnullos
praedicti Ordinis canonicos regulares ir-
repere coeperat, utendi fictitiâ caesarie,
vulgo *parucca*, illamque publice gestan-
di, die xx aprilis MDCCXV tunc existentes
abbas generalis et defnitores Ordinis
praedicti, sub poenâ formalis inobedien-
tiae, per suum decretum prohibuerunt,
ne canonici regulares praedicti Ordinis
crinitie praedictâ uterentur; quod a ca-
pitulo generali eiusdem Ordinis anno
MDCCXX celebrato, confirmatum fuit, ad-
iectâ in dicto capitulo poenâ privationis
cuiuscumque dignitatis et officii dicti
Ordinis per transgressores seu inobe-
dientes incurrendâ: et subinde per aliud
decretum a defnitorio Ordinis huius-
modi die xiv septembris MDCCXXVII edi-
tum primodictum decretum renovatum
remansit. Insuper, his non obstantibus,
cum abusus huiusmodi sensim magis ma-
gisque in dies augeri videatur, dictus
Nicolai abbas generalis die xi ianuarii
proxime praeteriti, de eorumdem def-
nitorum unanimi voto et assensu, novam
eâ super re ordinationem edidit, qua
praemissa non solum confirmavit et in-
novavit, verum etiam de novo intimavit,
decernens in contravenientes poenam
suspensionis ipso facto incurrendam, ei-
demque poenae subiiciens canonicos re-
gulares praedictos caesarie huiusmodi
utentes, nisi illam intra terminum unius
anni deponerent, prout continetur in
eiusdem Nicolai abbatis generalis ordi-
natione tenoris qui sequitur, videlicet:

*Nicolaus Gasparini Dei et Sanctae Sedis
apostolicae gratia abbas inclitae abbatae san-
cti Antonii Viennensis, necnon canonicorum
regularium sancti Augustini, Ordinis eiusdem
sancti Antonii magni abbatis superior generalis.*

Ad supremum sancti Ordinis nostri re-
gimen, imparibus licet meritis, divina id
iubente providentiâ, vocati, sacrum religio-
sae disciplinae depositum illibatum atque

inviolatum servare, occurrentibus difficultatibus non deterriti, alacri animo, toto affectu et tota mentis contentione, intendimus, atque erecta in Deum fiducia semper intendimus¹; illudque praecipue considerantes, nobis, praeter communem omnibus pastoribus vigilantiae curam, impositum esse onus sartam tectam custodiendi laudabilem reformationis nostrae, elapso ab hinc circiter seculo institutae, formam. Verum, pro dolor!, ubi primum ex hac nostrâ laboriosâ sollicitudine fructum aliquem nos accepturos speramus, saepe comperimus malum hominem non desistere, quominus pravi operis semina iaciat, quae bonum semen obruunt. Mala autem semina vocamus abusus et corruptelas identidem renascentes; quos quidem eradicare eo magis studere debemus, quo abundantius repullulant. Quis vero inter huiusmodi abusus invalescentem in dies quorundam canonicorum nostrorum morem non computet, amisso² naturali capitis praesidio, comas sibi adscitias comparandi, sub vano vel salutis corporalis conservandae praetextu, germani capillitii supplendae raritatis, vel etiam, ut nonnulli aiunt, proprii commodi gratiâ? Nam, praeterquam quod hac nimium delicatâ agendi ratione videntur velle personarum saecularium habitum, qua potis est via, aemulari, infirmisque proinde scandalum ponunt, praeter id, inquam, cogitare deberent illi, non decere homines religiosos, praesertimque reformatos, tantam in curandâ cute cautionem adhibere, cum per professionem suam his vitae commoditatibus quantumvis perlicitis nuntium remiserint. Sed quorsum professionis religiosae obligationes commemoramus? Quandoquidem constat canonibus sacris et pontificiis sanctionibus vetitum esse viris omnibus ecclesiasticis, ne textilem caesariem capiti circumponant; quas certe regulas mandatis episcoporum quamplurium renovatas palam est vigere multis in dioecesibus.

Hunc porro, quem insectamur, abusum sublatum cupiens venerabile definitorium, decretum ediderat xx aprilis die anno MDCCXV,

¹ Videtur legendum *intendimus* (R. T.).

² Edit. Main. legit *abisso* pro *amisso* (R. T.).

quo, sub poenâ formalis inobedientiae, interdicebantur apud nos fictitia capillamenta (gallica *perruques*); quam legem confirmavit generale capitulum anni MDCCXX, sess. XIII, imponens praeterea transgressoribus poenam privationis cuiuscumque dignitatis et officii in Ordine, decreto venerabilis definitorii sub datâ XIV septembris anni MDCCXXVII dein renovatam.

Attamen non sine intimo cordis moerore advertimus, plures e canonicis nostris tam gravis et tam saepe iterati praecepti immemores esse, vel forte, quod peius est, ipsum parvi pendere.

Hac igitur de causâ, de reverendorum patrum definitorum consilio et assensu unanimi, ne videamur silentio nostro subditorum fovere inobedientiam, imo, ut etiam recrudescenti malo fortiora opponamus medicamenta, hocce praesenti mandato innovamus et denuo intimamus decreta tum venerabilis capituli generalis, tum venerabilis definitorii supra laudata; et insuper iubemus ut nemo ea transgredi ultra audeat, aut comas adscititias, vulgo *perruques* dictas, assumat, sub poenâ suspensionis ipso facto incurrendae. Circa eos autem, qui huiusmodi comis fictitiis seu perrucis nunc utuntur, decernimus, ut, nisi eas deposuerint intra annum a praesentium intimatione computandum, simili suspensionis poenae exemplo subiaceant, stricte iniungentes omnibus et quibuscumque respective domorumstrarum superioribus, ut praesens decretum in oratorio publice legi, in libris insinuationum interseri, ac sedulo observari curent, nosque de praedictorum executione certiores faciant. Datum apud S. Antonium Viennensem die XI iannarii anno MDCCXXXIX. N. GASPARINI abbas generalis S. Antonii. De mandato praefati reverendissimi abbatis generalis S. BORDET, def. secr. *Loco et Sigilli.*

§ 2. Quoniam autem, sicut dictus Petrus procurator generalis nobis subinde exponi fecit, ordinatio praeinserta, ad regularis disciplinae manutentionem necessaria, debitae executioni adhuc demandata

Dictam legem sub variis praetextibus inobservatam nonnullis auctoritate apostolicae communis patuit procurator generalis.

non fuit ex eo quod quidam ex praedictis canonicis regularibus, sive in hac alma Urbe nostra, seu in Avenionensi, aliisque civitatibus existentes, sub fictis et ementitis vel saltem vanis et subtilibus praetextibus, caesarie huiusmodi utendi licentiam a nobis seu nostris et Sedis Apostolicae nunciis reportaverint; quod cum religiosae modestiae regularique observantiae contrarium, tum nihil saepius nihilve strictius tum a sacris canonibus tum per Concilium Tridentinum Ordinisque praedicti statuta praeceptum¹ existit, dedecetque viribus regularibus eo uti ornamento: proinde dictus Petrus procurator generalis ordinationem praedictam per nos confirmari, ac in praemissis opportune indulgeri providerique per nos plurimum desideret:

Ex quo itaque
confirmat Cle-
mens.

§ 3. Nos, ipsum Petrum procuratorem generalem specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, supplicationibus suo et eorundem abbatis generalis et definitorum nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, praeinsertam ordinationem a memorato Nicolao abbate generali de unanimi dictorum definitorum voto et assensu ut praefertur factam, cum omnibus et singulis in ea contentis, auctoritate apostolica, tenore praesentium, approbamus et confirmamus, illique inviolabilis apostolicae firmitatis robor adicimus, omnesque et singulos iuris et facti defectus, si qui desuper quomodolibet intervernerint, dicta auctoritate supplemus et

¹ Forsan legendum *prohibitum* (R. T.).

sanamus, necnon quascumque licentias et facultates gestandi caesariam praedictam per quoscumque dicti Ordinis canonicos regulares tam a nobis quam a nostris et Sedis praedictae nunciis seu a quibusvis aliis, sub quavis causa, ratione et praetextu obtentas et pro tempore obtinendas, per praesentes, auctoritate et tenore praedictis, annullamus, cassamus et irritamus, viribusque et effectum evacuamus, ac annullatas, cassatas et irritas, ac nullius roboris et momenti fore et esse declaramus.

§ 4. Decernentes, easdem praesentes litteras, et in eis contenta quaecumque, firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, plenissime suffragari, et ab illis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac S. R. E. cardinales, etiam de latere legatos et dictae Sedis nuntios, sublata eis et eorum cuilibet quavis aliter iudicandi et interpretandi facultate et auctoritate, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Sicque in perpetuum praecipit observari.

§ 5. Non obstantibus praemissis, ac constitutionibus apostolicis, necnon dicti Ordinis, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores, praesentibus pro plene et sufficienter expressis, ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliis in suo robore permansuris, ad praemisso-

Contraria tollit.

rum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die ix septembris MDCCXXXIX, pontificatus nostri anno x.

Dat. die 9 septembris 1739, pontif. anno x.

CCLXV.

Confirmatio regularum pro monachis Graecis Melchitis nuncupatis Congregationis sancti Ioannis Baptistae in Soairo in Monte Libano Romae degentibus ad ecclesiam S. Mariae in Domnicâ, quae ecclesia etiam cum omnibus dependentiis eisdem conceditur.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Prooemium. Sol iustitiae Iesus Christus fidei nostrae auctor et consummator, qui, sicut aquila provocans ad volandum pullos suos et super eos volitans, expandit alas suas et assumpsit eos atque portavit in humeris suis, gallinae quoque similitudinem congregantis sub alas pullos suos assumere voluit, inter praecipua divinae charitatis ornamenta catholicae Ecclesiae sponsae suae legata, hoc prae ceteris in fine commendare dignatus est, ut tamquam communis omnium fidelium mater ex universis quae sub caelo sunt nationibus filios ad ipsius sinum accurrentes amantissime exciperet ac foveret. Eapropter Romanae Ecclesiae Summi Pontifices praedecessores nostri, quos suos in terris vicarios usque ad consumptionem saeculi constituit pastorum princeps, eiusdem exemplis eâ qua docet veneratione semper obsequentes, non solum populos e remotissimis ac dissitis regionibus ad omnium ecclesia-

rum matrem et magistram venientes benignissime complexi sunt, verum etiam in omnes orbis terrae partes apostolicos viros, qui undique conquirerent, allicerent, atque ad ipsam deducerent filios, mittere consueverunt. Nos autem, quibus nullum est iucundius solatium, quam ut Romanae Ecclesiae per spirituale connubium nobis desponsae¹ eos etiam demus filios, qui, licet alibi nati, hic tamen instituti, ad fratres suos communi matri conciliandos aliquando pergant, nunquam omisimus, quin laudatissima eorumdem praedecessorum nostrorum studia consecutemur.

§ 1. Enimvero inter alios diversarum nationum dilectos filios, quibus in hac alma Urbe nostrâ et alibi opportuna apostolicae benignitatis commoda impertiti sumus, dilectis itidem filiis monachis Graecis Melchitis dictis Congregationis S. Ioannis Baptistae in Soairo in Monte Libano, qui e Phoeniciâ sive Syriâ Romam appulerunt, ecclesiam S. Mariae in Domnicâ seu Domnicâ, vulgo *della Navicella*, de dilecti filii nostri Nicolai S. R. E. presbyteri cardinalis Coscia nuncupati eiusdem ecclesiae titularis consensu, die xxiii iulii anno MDCCXXXIV concessimus. Ecclesiae vero adiectarumque eidem parvarum aedium rerumque sacrarum et profanarum possessionem illi die xxix eiusdem mensis et anni adierunt.

§ 2. Interea temporis nonnullas sibi regulas pro debitâ iuxta eorumdem institutum regularis disciplinae observantiâ praescripserunt: quas, cum dilectus pariter filius noster Ludovicus S. R. E. praefatae presbyter cardinalis Belluga nuncupatus accurate perpensas probasset, apostolicae etiam auctoritatis nostrae confirmatione dignas existimavit.

Ecclesia S. Mariae in Domnicâ monachis Soaritibus data.

Regulas ii sibi constituerunt.

¹ Forsan legendum *desponsatae* (R. T.).

Earumdem autem tenor est qui sequitur, videlicet:

Regulas pro monasterio S. Mariae in Domnica monachorum Graecorum Melchitarum Congregationis S. Ioannis in Soiro nuncupatae.

Monachi post studia parati debent esse ad obeundas missiones.

I. Cum hoc monasterium S. Mariae in Domnica a sanctissimo domino nostro Clemente XII, pontifice maximo, ad propagandam conservandamque religionem catholicam Romanam apud Melchitas graeci ritus in Syria, monachis catholicis eiusdem nationis Congregationis S. Ioannis in Soiro concessum sit: dabit operam eiusdem loci abbas ut ex monachis, quos de familia perpetuo habere debet, nonnulli religiosi ad litterarum studium deligantur, qui, eo completo, prompti paratique sint ad eas missiones obeundas, ad quas illos sacra Congregatio de Propaganda Fide mittendos iudicabit.

Qualitates requirendae in monachis Romam ab abbate generali mittendis.

II. Oneratur conscientia abbatis generalis, ne Romam mittat nisi monachos iam professos, singulari pietate ornatos, moribus integerrimis praeditos, et optima corporis valetudine instructos: ii vero, qui ad studia erunt designati, nec sint aetate minores annis duodeviginti, nec maiores annis quadraginta. Omnes praeterea debent, vel esse sacerdotes, vel ad sacerdotium, aetate a sacris canonibus praescripta, hic in Urbe ab episcopo graeci ritus promoveri.

Unus ex cardinalibus Congregationis de Propaganda Fide huic monasterio datur in protectorem.

III. Unusquisque dimissorias abbatis generalis secum deferre teneatur, quae statim eminentissimo domino protectori erunt exhibendae. Is autem semper erit unus ex cardinalibus sacrae Congregationis de Propaganda Fide, cuius directioni ac regimini tam monachi quam monasterium praefatum S. Mariae in Domnica subiaceat.

Iuramentum a monachis studentibus praestandum.

IV. Simul ac Romam pervenerint, expleto mense, spiritualibus exercitiis decem vel octo dierum spatio diligenter incumbant: quibus peractis, qui ad studia sunt destinati, coram abbate iuramentum praestent iuxta formulam hic appositam, exhibendum postea in proprio autographo sacrae Congregationis de Propaganda Fide: *Ego N. N. monachus professus Congregationis monachorum Graecorum Melchitarum S. Ioannis in*

Soiro nuncupatae iuro et promitto in manibus R. P. N. N. abbatis monasterii S. Mariae in Domnica, me ab hoc monasterio non discessurum, neque discedere curaturum mediate vel immediate per me vel per interpositam personam, nisi ex legitima causa admittenda ab eminentissimo ac reverendissimo domino cardinali protectore; insuper pro fide catholica propugnanda ad eum locum sine repugnantia me iturum, ad quem a sacra Congregatione de Propaganda Fide destinatus fuero. Sic me Deus adiuvet, et haec sancta Dei Evangelia.

V. Tam studentes quam ceteri monachi ultra octo annos in praedicto monasterio morari non poterunt. Quod si aliqua urgeat necessitas, et ratio expostulet ut aliquis eorum, vel perpetuo, vel ad aliquod certum tempus, ultra octo illos annos moretur, facultas omnino ab eminentissimo protectore petatur, excepto abbate, cuius mora in hoc monasterio vel regressus in Syriam a generali abbate dependet.

Tempus morae per singulos monachos in hoc monasterio faciendae.

VI. Omnes sint subiecti abbati generali in Syria residenti, itemque abbati qui ab eodem in praedicto monasterio constituitur. Abbas autem ad hoc monasterium destinatus patentes suas litteras eminentissimo protectori exhibebit. Nec abbati verò nec alijs liceat aliquem monachum in Syriam, nondum completis octo annis, absque facultate et consensu eminentissimi protectoris dimittere.

Cui monachi et abbas subiecti esse debeant.

VII. Omnes diligenter observent regulam et monasticas constitutiones, quae apud reliquos eiusdem Congregationis monachos Graecos Melchitas in Syria vigent et solent observari. Praeterea servent ritum graecum a S. R. E. approbatum iuxta decretum sacrae Congregationis de Propaganda Fide, tam quoad sacram liturgiam ac divina officia, quam quoad ieiunia.

Regulae et ritus inibi observandi.

VIII. Monasterii abbas monachos de rebus omnibus necessariis provideat, et in iis quae ad victum et vestitum spectant, quoad fieri poterit, consuetudinem ceterorum Syriae monasteriorum sequatur.

Cura abbatis de monachis.

IX. Doccantur monachi, praeter linguam arabicam et graecam, etiam superiores scien-

Studia, quibus incumbere debent.

nas, videlicet dialecticam, philosophiam ac theologiam, tam moralem quam polemicam. Quod si contingat ut aliquis idoneus ad linguam latinam habeatur, permittat abbas ut ille in monasterio, ultra annos praescriptos, alterum annum vel duos etiam commoretur, habitâ tamen eminentissimi protectoris facultate.

Methodus studiorum praescripta.

x. Lectiones tum linguarum tum scientiarum in publico loco sunt habendae per quinque dies qualibet hebdomadâ, exceptis diebus festis, necnon vacationibus, quas eminentissimus protector describi in catalogo iubebit; horis quidem antemeridianis per horam cum dimidio; horis vero pomeridianis per unam horam: ita tamen ut horarum canonicarum in choro ab omnibus simul pensum quotidianum persolvatur.

Tempore lectionum domo egredi nemo debet nisi ex urgenti necessitate.

xi. Prohibentur lectores et studentes vel se se quotidianis lectionibus eximere, vel domo, diebus sibi ad studium statutis, sub quocumque praetextu vel causâ exire, nisi post completas lectiones absolutasque ceteras exercitationes die illâ peragendas. Primo¹ monasterii tamen necessitate permittitur abbati sacerdotes studentes ad sacram liturgiam celebrandam extra domum destinare ad summum duos per hebdomadam, ita ut in sequenti alii duo primis succedant.

Studentes officiis distractivis non onerandi.

xii. Studentes officiis distractivis non onerentur, ut puta, procuratoris, cellerarii et similibus, quae studiis litterarum obesse credantur.

Visitationes monasterii per eminentissimum protectorem et secretarium sacrae Congregationis de Propagandâ faciendae.

xiii. Quolibet semestri publicum habeatur examen circa cuiusque studentis profectum coram abbate, ceterisque monachis sacerdotibus: semel in anno eminentissimus protector unâ cum reverendo patre domino secretario sacrae Congregationis de Propagandâ Fide, vel hic solus unâ cum aliquo linguae arabicae et graecae perito, necnon scientiarum, quibus monachos operam dare contigerit, visitare monasterium dignetur ad explorandum studentium progressum atque monachorum statum agnoscendum.

Quolibet die domoico habenda catechesis.

xiv. Omnibus diebus dominicis singuli studentes per turnum in publico monachorum

¹ Videtur pro *Primo* legendum *Pro* (R. T.).

conventu concionem, seu catechesim, vel solutionem alicuius casus conscientiae, aut difficultatis ex theologia polemicâ habeant.

xv. Completis annis octo, nullâ interpositâ morâ, monachi studentes, cum consensu eminentissimi protectoris, in Syriam ad abbatem generalem transmittantur; illosque idem abbas generalis in illo monasterio collocabit, prout magis expedire in Domino iudicabit.

Completo studiorum coram monachi in Syriam transmittendi.

xvi. Peregrini Graeci Melchitae, qui ex Syriâ, Palaestina et Aegypto ad Urbem sacra loca visitaturi accedunt, iuxta religiosae hospitalitatis regulam ad triduum excipiantur.

Hospitalitas servanda.

Nos infrascripti regulas istas, monachis Graecis Melchitis Congregationis sancti Ioannis Baptistae in Soairo nuncupatae apud ecclesiam S. Mariae in Domnicâ habitantibus praescriptas, diligenter accurateque perpendimus. Cumque nihil contineant, quod orthodoxae fidei, bonis moribus aut disciplinae monasticae adversetur, dignas iudicamus, quae litteris apostolicis confirmentur. In quorum fidem, hac die III augusti MDCCXXXIX.

Approbatio regularum per cardinalem Bellugam.

LUDOVICUS card. BELLUGA.

§ 3. Quoniam autem, sicut¹ monachi praedicti nobis nuper exponi fecerunt, ipsi supradicta omnia, et praeinsertas regulas, quo firmiter subsistant et servantur exactius, apostolicae confirmationis nostrae munimine corroborari summopere desiderant: nobis propterea humiliter supplicari fecerunt, ut, non solum sibi in praemissis opportune providere, verum etiam emolumenta eidem ecclesiae addicta sub titulo simplicis beneficii seu canonicatus, dilecto pariter filio Francisco Clementi Ceccarini presbytero collati, et per eum de praesenti possessi, ipsis, post eiusdem Francisci Clementis obitum, nunc pro tunc in perpetuum assignare de benignitate apostolicâ dignaremur.

Ipsi monachi eas confirmari possunt.

§ 4. Nos, ipsos exponentes specialibus favoribus et gratiis prosequi volen-

Praestat Pontifex et monasterio unit benefici.

¹ Verba autem, sicut nos addimus (R. T.).

cum simplex
aliis in eadem
ecclesiâ ere-
ctum.

les, et eorum singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innotatae existant, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censentes, huiusmodi supplicationibus inclinati, concessionem memoratae ecclesiae S. Mariae in Dominicâ seu Dominicâ eisdem monachis Graecis Melchitis, de consensu dicti Nicolai cardinalis et titularis, cum omnibus et singulis rebus et suppellectilibus tam sacris quam profanis in eâ existentibus, aediumque ecclesiae praedictae annexarum et connexarum, necnon possessionem praemissorum omnium a monachis praedictis captam, et regulas praeinsertas, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, approbamus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiciamus, omnesque et singulos iuris et facti defectus, si qui desuper quomodolibet intervenerint, supplemus et sanamus, dictosque monachos, donec et quousque ibidem remanserint, et ecclesiae praedictae inservierint, in locum eiusdem Francisci Clementis, quoad possessionem praefati simplicis beneficii ecclesiastici seu canonicatus nuncupati, dictae ecclesiae annexi, post Francisci Clementis praedicti obitum, in omnibus et per omnia, auctoritate et tenore praedictis, substituímus et subrogamus. Ceterum volumus, ut fructus, redditus et proventus dicti beneficii, donec et quousque ipse Franciscus Clemens vixerit, illi persolvantur, et monachi praedicti, nonnisi post obitum huiusmodi, seu renunciationem aut cessionem beneficii huiusmodi per memoratum Franciscum Clementem ad eorum favorem faciendam, dicti be-

neficii possessionem apprehendere, illiusque bonorum ac dictorum fructuum, reddituum et proventum administrationem suscipere, gerere et exercere possint et valeant, nec alicui licitum sit post obitum Francisci Clementis praedicti in illo se ingerere, seu de illo disponere.

§ 5. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac ab illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane quidquid secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Praesentium
litterarum fir-
mitas.

§ 6. Non obstantibus praemissis, ac, quatenus opus sit, piae memoriae Pauli II et aliorum Romanorum Pontificum praedecessorum nostrorum de rebus Ecclesiae non alienandis, aliisve apostolicis, ac in universalibus provincialibusque conciliis editis, generalibus vel specialibus, constitutionibus et ordinationibus, ac dictae ecclesiae et beneficii, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Contrariorum
derogatio.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die XIV septembris MDCCXXXIX, pontificatus nostri anno X.

Dat. die 14 septembris 1738, pontif. anno X.

CCLXVI.

Confirmatio nonnullorum decretorum pro collegio Anglorum noncupatorum de Urbe.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Quare statuta in Concilio Tridentino seminariorum erectio.

Apostolica haec Sancta Sedes, ut, quales ad animarum salutem et Dei gloriam Christi ministros et dispensatores ministeriorum Dei optat, tales sibi formaret integerrimos, atque christiano populo exhiberet, in Tridentinâ Synodo statuendum curavit, ut in omnibus ecclesiis cathedralibus, ubi reddituum¹ locorumque conditio patiebatur, adolescentium collegia, sive seminaria, ex quibus, experientiâ magistrâ, compertum erat quanta catholicae Ecclesiae utilitas extitisset, instituerentur, atque insimul ratio qua erigantur, erectaque ecclesiasticis institutis erudiantur, consultiissime traderetur.

Alorum exemplo diversa nationum collegia a Pontificibus constructa; et proborum virorum visitationi commendata.

§ 1. Hinc Pius IV felicitis recordationis alique subsequentes Romani Pontificis praedecessores nostri, ut ceteris antistitibus exemplo praeirent ac facem praeferrent, quamplurima in hac almâ Urbe praesertim atque alibi a fundamentis excitata, tum pro omnium indiscriminatim tum pro nonnullarum seorsim nationum dumtaxat commodo collegia et seminaria atque instructa, saluberrimis etiam legibus ac regulis communire studuerunt. Quoniam autem omnia sanctissime constituta, nisi advigiletur ut eadem quo ab initio statuta

¹ Edit. Main. legit *reditum* (A. T.).

spiritu, atque iisdem deinceps, quibus dum primus in virtutibus proficiendi ardor fervebat disciplinae studiis servata sunt, imposterum custodiantur, lapsu temporis sensim in desuetudinem abire conspiciuntur, ut non solum sarta tectaue semper consistent, verum etiam stabiliori observantiâ firmarentur, iidem praedecessores nostri consueverunt nonnullos interdum deputare diligentissimos inspectores, qui, collegia seu seminaria huiusmodi, etsi legum regularumque praescriptarum observantissima, adeuntes, abusus, si qui forte irrepsissent, tollerent, novis, quas oportunitas ac ratio suaderent, indicendis legibus collabentem disciplinam instaurarent, et, quaecumque ad virtutum incrementum proficua et magis necessaria perspexissent, praescriberent praeciperentque.

§ 2. Nos vero luculentissime eorumdem praedecessorum nostrorum vestigiis insistentes, quantum cum Domino potuimus, nostras quoque hanc in rem partes conferre non omisimus, ac, postquam nonnulla alibi collegia ereximus, salutaria etiam apostolicae providentiae remedia ceteris huius almae Urbis praedictae collegiis adhiberi voluimus. Quae quidem ne ab ecclesiâ S. Thomae et collegio Anglorum de Urbe nuncupato desiderari pateremur, dilectis filiis nostris Ioanni Antonio de Viâ et Dominico Riviera presbyteris S. R. E. cardinalibus, ac dilectô filio magistro Philippo de Montibus, nostro et Apostolicae Sedis notario protonotario nuncupato, et Congregationis venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. praedictae cardinalium Propagandae Fidei praepositorum secretario, ab anno MDCCXXXIX tale officium commisimus.

Quibus cardinalibus demum mandata collegii Anglicani de Urbe visitatio.

§ 3. Qui sane, pro singulari sapientiâ, religionis zelo, charitate et dexteritate,

Decreta ab eis lata.

iniuncto muneri cum cumulatissime fecissent satis, nonnulla pro rectâ rerum omnium administratione et stabilitate ediderunt decreta tenoris qui sequitur, videlicet:

Decreta sacrae visitationis apostolicae ecclesiae S. Thomae et collegii Anglorum de Urbe.

De ecclesiâ.

Reparationes faciendae.

Cum ex inscripto lapide de consecratione ecclesiae constet, ut in quolibet anno v kalendas octobris celebretur commemoratio, signa consecrationem denotantia, temporis antiquitate quasi penitus deleta, renoventur.

Reapertur lacunaria et tecta, quorum portio ad meridiem vergens decliviori casu deprimatur, renovatis tignis pluviali aquâ marcidis.

Ligneum altare S. Sabini episcopi ex lapidibus construatur, et altare SS. Crucifixi in lateribus restauretur.

Antiphonaria librique chorales rubris obtegantur membranis, et oricalchi muniantur fibulis.

Dealbentur tabulae chorum dividentes a mesaulâ ecclesiae suprapositâ, in cuius extremitate erigitur sacellum B. Mariae Virgini dicatum, quod decentiori formâ custodiendum decernimus.

Liber retinendus pro adnotandis nominibus mortuorum

Cum ex Bullâ Eugenii Papae IV concessum fuerit ecclesiae ius tumulandi, retineatur liber, in quo nomina defunctorum eorumque tumulationis dies adnotentur, ne imposterum ambigendum sit de privilegio nuper in iudicium revocato a paracho S. Stephani de Cacco.

De sacrario.

Sacrae suppellectiles recondendae.

Conficiatur infra mensem inventarium sacrarum suppellectilium et lintheaminum, descriptis etiam argenteis vasibus, et officium custodis sit omnia in suo ordine disposita non minus fideliter quam perpulite asservare.

Addantur armaria, ut linthea et sacra suppellex commodius extendatur; quod si angustia sacrarii non omnia custodienda patiatur, ex superioribus cubiculis unum pro dicto usu occupetur.

Planetæ viridis et violacei coloris cum duobus manipulis et stolis albis renoventur.

Præfectus spiritûs sit etiam præfectus ecclesiae et sacrarii, et omnia, quae ad utriusque pertinent, accurate disponat; et quolibet mense, confecto catalogo missarum et orationum dicendarum, in quolibet recurrentis mensis hebdomadâ de onerum adimplemento diligenter inquiret.

Officium præfecti sacrarii.

De oneribus perpetuis.

In conficiendâ novâ tabellâ onerum missarum in sacrario detinendâ adnotetur missa perpetua, elapsis mensibus relicta ab equite Thoma Déhéram iuxta declarationem faciendam a sacra Congregatione Concilii, et infra duos menses doceatur de adimplemento omnium legatorum; praeterea in libro missarum scribatur proprio celebrantium character non tantum dies, verum etiam altare, in quo et pro quibus fuerit celebratum.

Singulis legatorum satisfaciendum oneribus.

De hospitio peregrinorum.

Nemo excipiat hospitio, nisi sit Anglus et Catholicus, praebeatque litteras testimoniales vicariorum apostolicorum Angliae, et Romam venerit devotionis causâ.

Qui sint hospitio excipiendi, et quoto tempore.

Peregrini nobiles per triduum, ignobiles per dies octo alantur, sicut et sacerdotes, licet nobilitate fulgentes; in reliquis observentur antiqua hospitii statuta et decreta cardinalis Francisci Barberini senioris.

In eleemosynis, quae laudabili consuetudine quotidie ex mensae reliquiis per cystulas egenis partiuntur, familias pauperum Anglorum praeponendas mandamus.

De valetudinario.

In quolibet valetudinarii cubiculo exiguum habeatur tintinnabulum, ut infirmi per eius sonitum commode vocare possint curatorem aegrotantium.

Infirmorum curator.

Ad invisendos infirmos non adeant simul omnes eiusdem camerae alumni, sed tantum duo vel tres horâ recreationis arbitrio eorumdem infirmorum de licentiâ patris ministri.

De bibliothecâ.

Augeantur aeque sumptu libri controversiarum catholicorum auctorum, haereticas praecipue Anglorum opiniones refellentium.

De libris controversiarum augendis.

Distribuantur dies, quibus per classes separatim alumni uti valeant bibliothecâ, ne ad eam turmatim accedant.

Nemo libros sine licentiâ patris rectoris in scriptis obtinendâ in proprium cubiculum deferat, et nactâ facultate, tradat bibliothecae custodi licentiae schedulam, adnotando sub eâ proprio caractere nomen suum, et librum sibi commodatum.

De archivio.

Infra tres menses ordinatim disponantur scripturae et libri relative ad generalem indicem in archivio repertum, et iuxta quem fuerunt olim diligenter retenti.

De collegio.

Porta clathrata introrsum atrii a ianitore clausa custodiatur, ne per eam discurrentibus alumnia per deambulacrum ad vestibulum pateat aditus.

Alumni neque morentur, neque accedant ad vestibulum, neque extraneos in collegium, multoque minus in cubicula admittant absque licentiâ patris rectoris seu ministri.

De cubiculis alumnorum.

Ordo cubiculorum ita disponatur, ut cubicula unius camerae sint prorsus distincta atque seiuncta a cubiculis alumnorum alterius camerae.

Cum de more in quolibet semestri immutanda sint per sortes alumnorum cubicula, eis vetitum sit tabulas pictas, aliasque imagines, praeter illas retineri solitas, muris figere, ne per glutinamentum sive clavorum foramina dealbati parietes deformentur.

Eisdem pariter alumnis sociorum introductio in cubicula atque comestibulum retentio sine licentiâ superiorum sit omnino vetita.

Non liceat alumnis studii tempore et horis somno assignatis e cubiculis egredi, et cura sit patris ministri per se ipsum vel per alium diu nocturne non modo cubicula, sed etiam armariola alumnorum saepesaepe explorare.

De officinis.

Officialis cuiuscumque officinae, et praesertim custos cellae vinariae et obsonator, librum retineat, in quo dietim et distinctim adnotetur introitus et exitus rerum, ad quamlibet ex officinis spectantium, ut com-

puta a patre rectore vel collegii ratiocinatore semper et quandocumque exigi possint.

De coenaculo.

Dum per alumnos in primâ mensâ epulatur, rigorosum observetur silentium, ut pabulo sacrae et ecclesiasticae lectionis manducantes spiritum reficiant.

Nulla penitus differentia intersit inter mensam patrum Societatis in collegio degentium et mensam alumnorum; quintâ et septimâ feriâ una addatur portio, ut prandium suam singulis hebdomadae diebus quantitatem conformem habeat; solemnioribus autem festis, una ex multis portionibus de more dari solitis subducatur: merendae autem, quae diversis anni temporibus praebentur, omnino tollantur; arbitrio tamen patris rectoris relinquitur facultas concedendi merendas, dum autumnalibus vacationibus Monte Portii alumni rusticantur; et denique praeter ientaculum, prandium et coenam vetitum sit quid minimum cibi vel potus, sive ruri, sive in Urbe, alumnis suppeditare.

De administratoribus collegii.

Administratio et gubernii cura in Anglico exercenda collegio cum provide fuerit a Gregorio XIII patribus Societatis lesu commissa; idcirco a superioribus dictae venerabilis Societatis destinentur quinque religiosi sacerdotes et quatuor fratres laici, quibus collegii cura sit demandata, neque praefixus numerus quovis praetextu absque speciali facultate eminentissimi protectoris augeatur neque minuatur, ne per incrementum religiosorum numerus alumnorum decreseat, vel per detrimentum necessarii deficiant officiales.

Ex sacerdotibus constituatur rector, minister, praefectus spiritus et duo magistri; ex laicis ianitor, distributor, obsonator et socius patris rectoris. Praeterea duo adsint praefecti sacerdotes saeculares, et quatuor famuli stipendio conducti, nempe coquus et eius adiutor, sartor et sutor.

De rectore.

Cum non modo rectoris officium sit ea quae ad domesticam collegii disciplinam, sed etiam quae ad rectam reddituum administrationem pertinent exercere, in quo

Numerus patrum Societatis lesu collegio in sorvitiu.

Rector ex illis desumendus.

Cubicula unius camerae et aliterius.

maxima requiritur solertia ad compescendas ministrorum oeconomiam exercentium fraudes atque incuriam, ex quibus collegium non leve tulit detrimentum; ideoque statuimus, ut imposterum deputandi sint rectores Itali, dummodo tamen ex patribus Societatis non adsit Anglus qui diu in Italiâ versatus reperitur idoneus ad officium rectoratus exercendum: sed cum patris Henrici Sheldon zelus et industria in dicto officio nobis innotescat, confirmandum esse duximus per aliud triennium, et ultra, quatenus expedire videbitur.

Iniungimus rectori pro tempore existenti omnia ad suum munus spectantia, et in praesentibus decretis per nos sancita, accurate et diligenter adimplere, et suo exemplo ceteris praeesse, ut unusquisque, a Deo ad evangelicum opus apostolici instituti vocatus, suum munus, de quo erit Deo rationem redditurus, quamdiligeret absolvat.

De ministro et praefecto spiritus.

Patris ministri vigilantiae committitur, ut ab alumnis constitutiones, nec non decreta in praesenti apostolica visitatione circa eorum disciplinam exarata, adamussim observentur; et praefecti spiritus sit nedum illos solidâ pietate imbuere, sed etiam in quolibet mense speciali instructione eis proponere quae missionario decent, et quae sint virtutes excolendae et quae vitia a vineae Christi cultore praecipue vitanda.

De magistris.

Duo sint in collegio magistri, unus controversiarum et sacrae Scripturae, alter theologiae moralis; lectiones vero proponendae aptentur speciali instituto Anglicae missionis, ad quam per iusiurandum fuerunt alumni feliciter vocati.

Magister controversiarum sit etiam praefectus studiorum, et sedulo inquirat de profectu studentium, atque eos particularibus exercent disputationibus suis congruis temporibus praefiniendis.

Magister theologiae moralis habeat onus repetendi lectiones in Collegio Romano auditas a logicis et methaphysicis.

De laicis et famulis.

Fratres laici et famuli singillatim obser-

vent ea quae disponuntur in instructione decretis adiiciendâ.

De numero alumnorum.

Licet ex Bullâ foundationis praescribatur numerus quinquaginta alumnorum, quibus addendi sunt alii duo ex legatis Hugi Orvens et Bernardini Pippi, attamen cum praesentes collegii redditus ad alendum praescriptum numerum minime sufficiant, pro nunc ad quinquaginta tantum comprehensis duobus alumnis legatariis reducimus.

De admittendis et de methodo observandâ in admissione alumnorum.

Nemo admittatur inter alumnos, nisi sit angulus catholicus, et, qui natus fuerit in exterâ regione, saltem a patre anglo sit genitus.

Qualitates admittendorum.

Admittendi humaniores calleant litteras, ut illico ad logicae studium valeant incumbere: et cum hac sanctione, a Bullâ et regulâ foundationis praescriptâ, saepe saepius non sine maximo anglicae missionis detrimento recessum fuerit, ideoque districte iubemus ne imposterum iuvenes in alumnos quavis de causâ recipiantur, nisi humanarum litterarum studia absolverint.

Cum optimus iuvenum delectus non parum ad assequendos uberrimos religiosae institutionis fructus proficiat, summa itaque in electionibus faciendis diligentia adhibeatur; et infrascriptam methodum observandam mandamus:

Rector per annum antea eminentissimum cardinalem protectorem, penes quem tota sit electionis potestas, certior et quae loca fuerint sequenti anno vacatura, ut, expeditis per eum litteris ad vicarios Angliae pro habendis novis alumnis, committat examen iuxta formam praescriptam a decretis cardinalis Barberini senioris; si vero vicarii apostolici optatis iuvenibus careant, tum ab eminentissimo protectore alumni ex collegiis Duaci et Audumaropoli exquirantur.

Ad praelectos candidatos expendantur litterae nominationis subscriptae ab eminentissimo protectore, et eius sigillo munitae, quibus electi Romam venientes labente autumno ingressum in collegium obtinebunt; verum, priusquam in alumnos excipiantur,

Antea probandi per aliquot menses.

per quatuor aut sex menses in probatione manebunt; quo tempore officium sit rectoris, ministri et studiorum praefecti de moribus, indole, ingenio, valetudine et vocatione sedulo inquirere, ut, si quis minus idoneus reperiatur, cum assensu eminentissimi protectoris statim dimittatur.

Elapso probationis tempore in alumnos cooptandi per spiritualia exercitia de iuramento praestando a praefecto spiritus triduo instruuntur; quibus absolutis, iuramentum ab Alexandro VII praescriptum coram patre rectore praestent, subscribendo ulterius formulam praedicti iuramenti, cuius exemplar sacrae Congregationi de Propaganda Fide servandum tradatur.

De alumnorum dimissione et viatico.

Alumni, qui studiorum cursum compleverunt, et ad sacrum presbyteratus ordinem fuerunt evecti, priusquam ad Angliae missionem expediantur, deputatis examinatribus ab eminentissimo protectore coram patre rectore diligenti subiiciantur examini, et idonei reperti, ad missionarii munus subeundum, litteris commendatitiis dicti eminentissimi protectoris ad vicarios apostolicos directis, muniantur, atque in Angliam designato itinere, necnon soluto, arbitrio eminentissimi protectoris, viatico scutorum quadraginta, mittantur.

Caveant alumni ita dimissi, et Angliam profecturi, ne in exteris vagent regiones, minusque a iurata vocatione quovis praetextu, etiam melioris boni, deflectant; quapropter recto tramite et expedite ad exercendam missionem se conferant, vicariisque apostolicis se sistant, eorum mandatis in evangelico ministerio accurate obtemperando.

Cum vero nonnulli ex alumnis sibi male suadeant missionis iuramento satisfacere, si apud monialium anglicarum conventus et monasteria in Belgio existentia confessarii munus suscipiant: maturo hac de re per nos habito examine, necessarium duximus declarare, quod, cum collegii institutum consulere voluerit missionibus peragendis in Angliâ haereticâ pravitate laboranti, praedictum munus, tamquam in exterâ et catho-

licâ regione exercitum, a rectâ collegii institutione declinat. Vicariis tamen apostolicis relinquimus facultatem eligendi alumnos in confessarios praedictorum conventuum et monasteriorum, dummodo alii deficiant idonei presbyteri qui tali munere perfungantur, et de hac facultate praedicti vicarii apostolici certiores fiant.

De alumnorum gubernio.

Alumni omnes in duas pro nunc partiantur cameras, et earum cuilibet praesit sacerdos saecularis, qui tamquam praefectus camerae vigili curâ et prudentiâ eam moderetur, nec sinat quidpiam minus modeste et pie redolere; et si quid corrigendum duxerit, omnia sincere et fideliter rectori et ministro patefaciat.

Inter utramque cameram, quovis tempore etiam autumnalis rusticationis, nullum intersit commercium, quod si alumnus camerae aliquid conferre habeat cum alumno alterius camerae, impetratâ prius licentiâ patris ministri seu rectoris, atque ei expositâ causâ, coram praefecto Camerae alumni postulati italice alloquatur.

Praefectus camerae in associandis alumnis extra collegium curam adhibeat, ne immodeste turmatim et nimis velociter incedant, et ne devient a locis ante egressum a patre ministro designatis.

Constitutiones per nos noviter editae de alumnorum disciplinâ fideliter observentur, et si quid dubium aut omissum in illis inveniat, in levioribus tantum sit in rectore facultas interpretandi atque adiiciendi, neque alumni quovis praetextu ab eius iudicio audeant divertere.

De alumnorum pietate et studiis.

Cum in pietate et studiis reposita sit spes evangelici fructus ex alumnorum educatione praemaxime optati, idcirco districte praecipimus ut omnia pietatis officia laudabiliter introducta sedulo et accurate compleantur, et pro ratione studiorum nova statuatur methodus, per quam nedum alumni in scholis Romani Collegii logicam, methaphysicam, theologiam speculativam, linguasque graecas et hebraicas percipiant, verum etiam in collegio privatas habeant lectiones sacrae

Alumni apud monasteria monialium Anglicarum in Belgio degentes sacramento praestito non satisfaciunt.

Scripturae, controversiarum et theologiae moralis peculiari eorum instituto accommodatas. Quae de re duo in collegio habeantur magistri, qui quotidianis lectionibus et congruis disputationibus scholares exercent, atque eos ad missionis officium idoneos reddant, et ordo lectionum repartendarum imposterum observandus praescribatur.

De convictoribus

Nemo uti convictor recipiatur, nisi viaticum in manibus patris rectoris pro discessu deponat, et anticipate alimenta persolvat, et omnia quae de alumnorum victu, vestitu et disciplina sancita sunt, indiscriminatim, praeter iuramentum missionis, observare promittat.

De statu temporali collegii.

Exhibeantur in mense martii cuiuslibet anni computa eminentissimo protectori, qui cum animadversionibus sui ratiocinatoris ea transmittat ad secretarium sacrae Congregationis de Propaganda Fide, ad effectum examinandi statum oeconomicum in particulari congregatione constituendam ex eminentissimis et reverendissimis cardinalibus praefecto et protectoribus regnorum Angliae, Scotiae et Hiberniae cum secretario praedictae Congregationis.

Insuper, ad evitanda damna collegii redditibus per administratores stipendio conductos grave nimis illata, necessarium duximus praescribendo annectere modum, quo sit imposterum oeconomica administratio a praedictis officialibus exercenda.

Lentaculum, quod per abusum suppeditari consueverat famulis eminentissimorum cardinalium sacrae Congregationis immunitatis ad festum S. Thomae Cantuariensis conventientium, omnino tollatur.

Tandem, cum parum proficiat novas condere leges, nisi in praxim disposita reducantur, et in memoriam saepe saepius revocentur: propterea patri rectori iniungimus, ut, infra sex menses, de adimplemento in hac apostolica visitatione praescriptorum eminentissimum cardinalem protectorem certiorum reddat, atque bis in anno cum interventu omnium ministrorum et officialium

decreta et instructiones per nos modo statutas mandet tempore prandii legendo promulgari.

Et ita, salvo, etc.

Datum xi maii MDCCXXXVI. T. A. cardinalis DE VIA visitator apostolicus, D. cardinalis RIVERA visitator apostolicus, PHILIPPUS DE MONTIBUS, secretarius Congregationis de Propaganda Fide, a secretis.

Ex audientia sanctissimi die xvi septembris MDCCXXXIX: Sanctissimus supradicta omnia approbavit, et litteras confirmatorias in forma Brevis expediri mandavit. PHILIPPUS DE MONTIBUS.

§ 4. Praeinserta autem decreta cum proficua ac salutaria probavissemus, quo firmiter subsistant et servantur exactius, auctoritate apostolica, tenore praesentium, approbamus et confirmamus, apostolicae firmitatis robur iisdem adiacimus, ac omnes et singulos iuris et facti defectus, si qui desuper quomodolibet intervenerint, sanamus et supplemus.

Eadem confirmat Pontifex.

§ 5. Decernentes, eadem decreta, ac praesentes litteras firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore spectabit, plenissime suffragari; sicque in praemissis per quoscunque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane quidquid secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Servandaque ubique statuit.

§ 6. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ceterisque contrariis quibuscumque.

Contraria tollens.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxviii septembris MDCCXXXIX, pontificatus nostri anno x.

Dat. die 28 septembris 1739, pontif. anno x.

Rector intra sex menses debet docere de adimplemento huiusmodi decretorum.

CCLXVII.

Breve Urbani VIII, quo provinciae Lusitanae Ordinis fratrum Minorum sancti Francisci de Observantiâ reformatorum nuncupatorum fratribus prohibetur transitus ad alias provincias eiusdem Ordinis, studendi causâ, extenditur ad provinciam S. Antonii in Brasiliâ ipsius Ordinis.

Clemens Papa XII,
ad futuram rei memoriam.

Ad tollendos
abusus provin-
ciae Lusitanae
Urbani VIII
suo Brevis cavil.

§ 1. Exponi nobis nuper fecit dilectus filius Emanuel a Resurrectione frater expressè professus, necnon minister provincialis provinciae S. Antonii in Brasiliâ Ordinis Minorum sancti Francisci de Observantiâ Reformatorum nuncupatorum, quod aliâs, ut nonnulli abusus, qui in provinciâ Lusitanâ S. Antonii eiusdem Ordinis, ex qua primodicta provincia dismembrata fuit, irrepserant, tollerentur, emanarunt a felicitis recordationis Urbano PP. VIII praedecessore nostro quaedam litterae in simili formâ Brevis expeditae tenoris sequentis, videlicet:

Religiosos eius-
dem provinciam
ad aliam trans-
ire absque pro-
vincialis licen-
tiâ.

Urbanus Papa VIII, ad futuram rei memoriam. Exponi nobis nuper fecit dilectus filius Berardus de Martyribus, minister provincialis provinciae S. Antonii Ordinis Minorum sancti Francisci Reformatorum nuncupatorum regni Portugalliae, quod permulti dictae provinciae fratres Reformati huiusmodi ad illius praelatos superiores recursum habent, ut ab eis licentias se se ad studendum extra dictam provinciam conferendi obtineant, non sine gravi aliorum fratrum Reformatorum eiusdem provinciae, in qua sunt studia, detrimento et perturbatione. Quoniam vero, sicut eadem expositio subiungebat, ignari licentias huiusmodi procurant, quo licentius et liberius vivant, et, cum maximo Ordinis eorundem fratrum Refor-

matorum dedecore, postmodum in eodem habitu incedunt: nobis propterea idem Berardus minister provincialis humiliter supplicari fecit ut in praemissis opportune et¹ ut infra providere de benignitate apostolicâ dignaremur. Nos igitur, eundem Berardum specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, huiusmodi supplicationibus inclinati, quod de cetero nullus dictae provinciae frater Reformatus huiusmodi extra eandem provinciam studendi causâ absque pro tempore existentis dictae provinciae ministri provincialis licentiâ et consensu se se conferre ullatenus possit, sub excommunicationis poenâ eo ipso incurrendâ, apostolicâ auctoritate, tenore praesentium, interdicimus et prohibemus. Volentes et expresse mandantes, ut in eventum, in quem aliquis frater Reformatus huiusmodi litteras apostolicas ad hunc effectum obtinuerit et habeat, ille eidem provinciae, in qua studebit, incorporetur, et habitum praefatae dumtaxat, non autem illius, in qua prius erat, ² provinciae gestari solitum, deferat, dictaeque prioris provinciae, a qua exivit, habitum praeteritum reassumere et in eâ amplius recipi nequeat. Ac decernentes, praesentes litteras validas, firmas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, et ab omnibus et singulis, ad quos spectat et pro tempore spectabit, inviolabiliter observari debere, ac irritum

¹ Coniunct. et nos addimus (R. T.).

² Coniunct. et hinc adiicimus (R. T.).

et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ac Ordinis et provinciarum huiusmodi, etiam iuramento, confirmatione apostolica, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis, in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad effectum praesentium, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die xx decembris MDCXLII, pontificatus nostri anno xx. — M. A. MARALDUS ».

Provincialis
Brasiliae ad
suam provin-
ciam hoc statu-
tum extendi pe-
tit.

§ 2. Quoniam autem dicti abusus de praesenti in primordiali provinciâ vigent, et nonnulla inconvenientia et incommoda experiuntur, ipse Emanuel minister provincialis easdem litteras, ad favorem dictae provinciae Lusitanae a praedicto Urbano praedecessore editas, ad suam provinciam per nos extendi plurimum desiderat. Nobis propterea humiliter supplicari fecit ut sibi in praemissis opportune providere et ut infra indulgere de apostolicâ benignitate dignemur.

Petitis annuit
Clemens.

§ 3. Nos igitur, ipsum Emanuele minister provinciae specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, hu-

iusmodi supplicationibus inelinati, de venerabilium fratrum nostrorum S.R.E. cardinalium negotiis et consultationibus episcoporum et regularium praepositorum, ad quos supplicem libellum nobis porrectum remisimus, consilio, praeinsertas eiusdem Urbani praedecessoris litteras ad favorem provinciae Lusitanae eiusdem Ordinis, ut praefertur, editas, omniaque in illis disposita, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, ad eandem provinciam S. Antonii in Brasiliâ extendimus pariter et ampliamus.

§ 4. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quandocumque spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Sicque in per-
petuum servari
praecipit.

§ 5. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon provinciae et Ordinis praedictorum, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis, in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Contraria tollit.

Transumptis
danda fides.

§ 6. Volumus autem ut earumdem praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiastica dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides ubique habeatur, quae ipsis praesentibus haberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxx septembris MDCCXXXIX, pontificatus nostri anno x.

Dat. die 30 septembris 1739, pontif. anno x.

CCLXVIII.

Irritatio electionis Petri Ioannis Meindarts in pseudo-archiepiscopum Ultraiectensem, qui censuris irretitus suspensusque declaratur, addita prohibitione se in archiepiscopum consecrari faciendi, eaque exercendi quae sunt Ordinis.

Clemens Papa XII.

Dilecti filii, salutem et apostolicam benedictionem.

Dilecti Clemens
inter fideles
Belgas irrepsit
se nonnullis in
religione per
duelles.

§ 1. Magna nos pro supremi pastoralis officii munere tenet sollicitudo et salutaris metus, ne in commissum tenuitati nostrae dominici gregis ovile intrent in vestimentis ovium lupi rapaces, edantque stragem eo maiorem, quo subdole et incautius illatam. Qua quidem sollicitudine vehementius angimur et conflictamur, cum vos isthic vocati in sortem Domini ante oculos nostros obversamini, undique ab iis circumventi, qui, vobiscum veluti in eadem familia degentes, animos vestros non solum veneno depravatae doctrinae dolose inficere, verum et inaniter, archiepiscopo sibi constituto, per speciem adumbratae huiusce dignitatis, in fraudem inducere conituntur. Quamquam enim experti

didicimus, fidem vestram, tamquam aurum igne probatum, puram illibatamque manere; vobisque esse persuasum, quicquid est ecclesiasticae hierarchiae, non nisi in angulari lapide atque in Apostolicae Petrae soliditate fundatum erigi ac stare posse: tamen, ut pro paternae charitate, qua vos amantissime complectimur, longius a vobis instructae fraudis periculum amoveamus, ac diligentius aeternae salutis vestrae cautum sit, apostolici ministerii nostri esse duximus vos edocere, quid a nobis, ut haec paucorum perduellium inverecunda protervitas prorsus profligetur, actum fuerit, et quid a vobis, ut eam fugiatis ac detestemini, praestari debeat.

§ 2. Igitur, ubi molestissimus nuntius ad nos pervenit, aliquos factiosos clericos, qui se stulte atque insolenter iactant canonicos Ultraiectensis capituli ab annis supra centum extincti, eo temeritatis devenisse, ut sceleri quotidie magis addentes, et veterem seditionem recenti crimine cumulantes, ausi fuerint die secundam proxime praeteriti mensis iulii in Ultraiectensem pseudo-archiepiscopum nefarie eligere quemdam Petrum Ioannem Meindarts, pastorem, ut aiunt, Leovardiae, quamquam aperte scirent, istiusmodi execrabile facinus ab ipsis non semel antea patratum, ab Apostolica Sede nefandum, irritum, inane declaratum fuisse, deletum, abiudicatum; nos illico, praedecessorum nostrorum sacrarumque legum morem atque exempla sequuti, hanc modo iteratam, illegitimam sacrilegamque electionem, traditam nobis e caelo potestate, rescidimus, abrogavimus, nullius roboris, vanamque renuntiavimus; eundem vero Petrum Ioannem, et quotquot, ficto ementitoque canonicorum Ultraiectensium nomine, in ipsum suffragia contulerunt, eique adhaerentes, favorem, opem, con-

Electionem
Petri Meindarts
in pseudoarchi-
episcopum Ul-
traiectensem
iam improba-
verat.

silium, consensum praestiterunt, et illius partes sectantur, fovent, tentant, auctoritate omnipotentis Dei excommunicavimus, anathematizavimus, atque ab ecclesiae communione segregatos, ac prorsus schismaticos habendos et vitandos esse constituimus, indiximus et declaravimus.

Ipsi interdicti
ea facere, quae
sunt ordinis, sub
poena excom-
municationis.

§ 3. Mandamus propterea, districteque interdiciamus eidem Petro Ioanni, sub poenam excommunicationis ipso facto sine aliâ declaratione incurrendae, ne audeat iurisdictionem ullam aut pro animarum regimine auctoritatem sibi arrogare, vel pro suscipiendis ordinibus dimissorias litteras dare, pastores, missionarios, ministros, deservitores, aut alios, quocumque nomine nuncupentur, ad animarum curam et sacramentorum administrationem, quovis etiam necessitatis praetextu, constituere ac deputare.

Episcopalem
que adire iurisdictionem.

§ 4. Simul quoque palam edicimus et declaramus, omnes et singulas antedictorum officiorum deputationes pro animarum regimine, quocumque nomine, iam factas aut fortasse faciendas, cum omnibus inde sequutis, prorsus irritas esse, nulliusque roboris ac momenti. Rursus eidem Petro Ioanni praecipimus atque inhibemus, ne, sub simili excommunicationis poenâ, audeat episcopalem iurisdictionem, quam profecto nunquam adeptus est, exercere.

Ab eo sacris
initiat, suspen-
sioni et irregu-
laritati obnoxii.

§ 5. Qui vero per ipsius litteras dimissorias fuerit ecclesiasticis ordinibus initiatus, noverit suspensionis vinculo se obstrictum, atque irregularitati praeterea obnoxium, si susceptos ordines exercuerit.

Cum eo nullo
modo commu-
nicandum.

§ 6. Vobis autem, dilecti filii, et quibuscumque aliis etiam episcopali et archiepiscopali dignitate fulgentibus omnino ac sedulo iniungimus, vetamusque, ne praemonstratum Petrum Ioannem pro vero Ultraiectensi archiepiscopo ha-

beatiliter et agnoscatis, neve cum eodem, ullo pacto, praesertim in divinis, communione, aut ab ipso, aut ab aliis per ipsum perperam deputatis, sacramenta aut ordines accipere, vel ullo modo illi aut illis parere audeatis; immo eosdem, tamquam alienos, Sanctae Sedi contumaces, mandatisque apostolicis refragantes, aversari et vitare praecipimus.

§ 7. Praeterea, sub poenis canonicis atque etiam indignationis nostrae, interdiciamus ac severe prohibemus omnibus cuiuscumque catholicae Ecclesiae archiepiscopis et episcopis, ne antedictum Petrum Ioannem, frustra electum, archiepiscopum consecrare audeant. Cui pariter sub eisdem poenis indicimus atque imperamus, ne se a qualicumque antistite consecrandum praebeat, utpote inaniter et nullo pacto archiepiscopali dignitate donatum; qua sane illicitâ ac nefariâ consecratione tot reliquis subiret canonicas poenas, et nihilominus ab omni suscepti episcopalis eiusdem Ordinis exercitio suspensus maneret.

Velitum ne se
ullatenus con-
secrari faciat,
latis poenis in
id attentantes.

§ 8. Itaque, dilecti filii, mandata haec nostra in spiritu filiorum adoptionis accipientes, iis exequendis navate libenter operam, ac fortiter aversati versuta factionum ingenia, quibus nihil suavius est seditioso tumultu perturbataque religione, debitâ simul obedientiâ prosequuti supremum patrem familiâs unice prospicientem vestrae felicitati, date documentum filios lucis vos esse, nec habere cum iis rem velle, consuetudinem, societatem, qui ambulant in regione umbrae mortis, ac, praeter pestilentis doctrinae tenebras, quibus obruuntur, eâ denique mentis caecitate laborare incipiunt, ut priscos non unius sectae haereticos imitati, ficti archiepiscopi nomen in suos inducere aggrediantur; contra vero cum fideli grege coniuncti,

Adhortatio ad
catholicos.

† Videtur legendum quibuscumque (R. T.).

verique pastoris vocem audientes, per sinceræ fidei, religionis, pietatis pascua eò pervenire contendite, ubi, quantum seductores isti se deceperint, quam rectum vos tenueritis aeternae salutis iter, laeti beatique comperietis. In cuius auspiciis apostolicam benedictionem vobis, dilecti filii, peramanter impertimur.

Datum Romae, etc., die vi octobris MDCCXXXIX, etc.

Dat. die 6 octobris 1739, pontif. anno x.

CCLXIX.

Ut Tertiarii quorumvis Ordinum regularium Tertio Ordini B. Mariae de Monte Carmelo adscripti, indulgentiis et gratiis spiritualibus promiscue uti valeant.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Prooemium.

De salute dominici gregis curae nostrae divinitus commissi paternam charitatem solliciti, caelestes indulgentiarum thesauros, quibus illecti ad ecclesias et pia loca frequentanda et pietatis opera exercenda magis incitentur, libenter erogamus.

In hoc Ordine iam a multo tempore admittuntur si tertiarii.

§ 1. Exponi¹ siquidem nobis nuper fecit dilectus filius Vincentius a Conceptione frater expresse professus ac procurator generalis Ordinis B. Mariae de Monte Carmelo Discalceatorum nuncupatorum Congregationis Hispaniae, quod in quamplurimis ex conventibus Ordinis et Congregationis huiusmodi in Indiis existentibus, vigore privilegiorum eidem Ordini a felicis recordationis Nicolao V et Bonifacio VIII Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris concessorum, et a recolendae memoriae Sixto IV et Clemente itidem VIII pariter

¹ De hac eadem re similem omnino constitutionem habes supra, pag. 555 b (R. T.).

Bull. Rom. — Vol. XXIV.

75

praedecessoribus nostris confirmatorum, Tertius Ordo eiusdem B. Mariae erectus et institutus reperitur.

§ 2. Verum, quia nonnulli ex tertiariis Ordinis sancti Francisci in oppido civitate nuncupato de Toluca Mexicanæ dioecesis dicto Tertio Ordini B. Mariae denuo adscripti fuerunt, dubium excitatum fuit, an tertiarii utriusque Ordinis huiusmodi indulgentiis, privilegiis et gratiis spiritualibus promiscue frui possint; et, licet primodicti Ordinis superiores nullam in hac re difficultatem haberent, nihilominus tertiarii eiusdem Ordinis S. Francisci non solum contradicere, verum etiam ex eorum libris omnes illos, qui Tertio Ordini B. Mariae huiusmodi adscripti erant, deleri¹ ausi fuerunt. Quare dicti tertiarii B. Mariae eâ de causâ ad venerabilem fratrem modernum archiepiscopum Mexicanum recursum habuerunt, qui, auditis rationibus hinc inde deductis, consideransque charitatem piamque devotionem christifidelium erga regulares Ordines non esse restringendam, sed omnibus ad animarum salutem mediis amplificandam, mandavit tertiarios B. Mariae praedictos reintegrandos, et Tertio Ordini sancti Francisci, unde deleti fuerant, iterum adscribendos esse.

Nonnulli sunt insimul tertiarii S. Francisci.

§ 3. Quamvis autem mandatis huiusmodi praedicti tertiarii sancti Francisci paruerunt, tamen dictus Vincentius procurator generalis, ad auferendas perturbationes ac confusiones quae eâ super re imposterum exoriri possent, adscriptos Tertio Ordini sancti Francisci, seu cuicumque alio Tertio Ordini regulari, qui Tertio Ordini B. Mariae huiusmodi adscribi desideraverint, omnibus indulgentiis, privilegiis et gratiis spiritualibus, eorum respective Ordini concessis,

Procurator generalis Carmellitarum supplicat pro nova Pontificia declaratione favore dictorum tertiariorum.

¹ Potius lege *delere*, prout iam monuimus supra in loc. parall. pag. 556 a (R. T.).

promiscue frui posse, per nos declarari plurimum desiderat. Nobis propterea humiliter supplicari fecit ut in praemissis opportune providere et ut infra indulgere de benignitate apostolicâ dignaremur.

Clemens declarat eandem promiscue frui gratiis Ordinum.

§ 4. Nos igitur, piis eiusdem Vincentii procuratoris generalis votis hac in re, quantum cum Domino possumus, benigne annuere volentes, eumque Vincentium procuratorem generalem a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutum fore censentes, huiusmodi supplicationibus inclinati, omnibus et singulis tertiariis cuiuscumque Tertii Ordinis regularis, qui inter tertiarios dicti Tertii Ordinis B. Mariae de Monte Carmelo adscribi desideraverint, ac regulas, statuta et condiciones pro dictis tertiariis B. M. de Monte Carmelo praescripta adimpleverint, omnibus et singulis indulgentiis, privilegiis et gratiis spiritualibus Tertio Ordini B. M. huiusmodi concessis, promiscue unâ cum aliis indulgentiis, privilegiis et gratiis praedictis eorum Tertio Ordini, in quo adscripti reperiuntur, concessis, frui et gaudere possint et valeant, nec tertiarios huiusmodi ab eorum respective Tertio Ordine, in quo adscripti fuerint, propter suam inter tertiarios B. Mariae adscriptionem deleri unquam posse, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, concedimus et indulgemus ac declaramus.

Sicquâ firmiter servati praecipit.

§ 5. Decernentes, easdem praesentes litteras firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis,

ad quos spectat et in futurum spectabit, plenissime suffragari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane quidquid secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

§ 6. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon dictorum aliorumque Ordinum, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum hac vice dumtaxat consequendum, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Contraria tollit.

§ 7. Volumus autem quod earundem litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiasticâ dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides ubique tam in iudicio quam extra illud adhibeatur, quae ipsis praesentibus adhiberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Transumptis eadem addit.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxiii novembris mdccxxxix, pontificatus nostri anno x.

Dat. die 23 novembris 1739, pontif. anno x.

CCLXX.

Nonnulla in Constitutione, quae incipit In supremo iustitiae solio, contra ho-

*micidas pro Ecclesiasticâ Ditione iam editâ, ad dominium et ditiones tam terrae firmæ quam regni Corsicae et insulae Caprariae reipublicae Ianuensis respective extenduntur*¹.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

In constitu-
tione laudatâ
confirmatae le-
ges et poenae
a Summo Pon-
tificibus latae
contra homici-
das.

§ 1. Aliàs nos per nostras sub plumbo expeditas litteras, nempe iv kalendas februarii, anno Incarnationis dominicae MDCCXXXV², pontificatus nostri anno v, ad compescenda et coërcenda, atque ab hac almâ Urbe totâque in temporali S. R. E. ditione penitus avertenda et eliminanda homicidia; quae a viris sanguinum, divini humanique iuris oblitis, incredibili cum immanitate in dies magis magisque increbescente saepissime patrari non sine gravissimo paterni animi nostri dolore ac moerore inaudiveramus, constitutionem, quae incipit *In supremo iustitiae solio*, promulgavimus, in qua, postquam omnes et singulas constitutiones a felicitis recordationis Pio II, Paulo II, Sixto IV, Iulio II, Leone X, Iulio III, Pio IV, Pio V, Gregorio XIII, Sixto V, Gregorio XIV, Clemente VIII, Innocentio XI, Innocentio XII, ac Benedicto XIII, et quibusvis aliis Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris adversus homicidas saluberrime editas, approbavimus, confirmavimus et innovavimus, illasque adversus quemcumque non usum seu contrarium usum, qui quovis modo praetendi vel allegari potuisset, restituimus et plenarie reintegravimus, quae deinceps omnino et inviolabiliter observari praecipimus et mandavimus.

Abatum fori
privilegium ex
patentibus.

§ 2. Inter cetera in eadem constitutione contenta, haec praescripta erant, tenoris qui sequitur: « Et quoniam ex-

perimento compertum est¹, administrationem ac cursum rectae et expeditae iustitiae, qua reipublicae salus praecipue innititur, summopere obturbari vel ab excessivo numero privilegiatorum vulgariter *patentati* nuncupatorum, vel a minus rectâ intelligentiâ privilegiorum concessorum: proinde, salvis firmisque remanentibus decretis et resolutionibus, quae temporibus felicitis pariter recordationis Urbani PP. VIII, et dictorum Innocentii XI ac Innocentii XII praedecessorum, aut aliàs quandocumque eâ super re emanarunt, volumus quod privilegium fori nemini quorumcumque privilegiatorum huiusmodi tam in Urbe quam in reliquo Statu Ecclesiastico praedictis (officialibus aliisque privilegiatis a Congregatione pro tempore existentium eiusdem S. R. E. cardinalium contra haereticam pravitatem generalium inquisitorum, ac ministris necessariis actu inservientibus archiepiscopis, episcopis ac Ordinariis praedictis, eorumque curiis, dumtaxat exceptis) pro crimine homicidii suffragentur, sed dicti privilegiati, quatenus clericali character insigniti, ecclesiasticae, et quatenus laici fuerint, saeculari iurisdictioni subiaceant. Reservantes nobis facultatem declarandi quinam quotque esse debeant veri familiares dictorum archiepiscoporum, episcoporum et Ordinariorum, ac officiales necessarii curiis ecclesiasticis, verum et actuale servitium praestantes.

§ 3. « Insuper², quia ex illis etiam, qui in sortem Domini vocati sunt, quique aliis irreprehensibilis et ab omni culpâ et maculâ immunis vitae ac virtutum exemplo praelucere deberent, aliqui interdum reperiuntur adeo suae vocationis immemores, ut, impellente humani

Statuta forma
animadvertendi
in clericos.

¹ Constitutionem praedictam habes supra, pag. 28 huius tomi (R. T.).

² Male edit. Main. habet 1734 (R. T.).

¹ Vid. ibid. § 8 pag. 32 b (R. T.).

² Vid. ibid. § 9 pag. 33 a (R. T.).

generis hoste, pluribus etiam homicidiis manus suas cruentare non perhorrescant: nos, perversorum quorumcumque malitiae obviandum esse non indulgendum probe intelligentes, ad istorum quoque fraenandam pervicaciam, perpetuo itidem statuimus, quod clericus primae tonsurae nullum beneficium ecclesiasticum obtinens, tametsi conditiones clericis huiusmodi a Concilio Tridentino praescriptas servaverit ac servet, pro duobus tamen homicidiis animo deliberato ac praemeditato per eum patris, privilegio fori et canonis, in odium tanti excessus et ad aliorum terrorem, exuatur, et uti incorrigibilis omnino saeculari potestati subiciatur, ab eâ tamquam laicus legitimis poenis plectendus, clericus quoque in minoribus ordinibus constitutus, nec praescripta a Concilio Tridentino servans, tam caelebs, quam coniugatus, in causis homicidii dicto privilegio fori non gaudeat, eoque privatus remaneat, neque a proprio episcopo seu Ordinario repeti, minusque habitum clericalem, quem indigne abiecit, reassumere possit, nisi¹ post totaliter expiatam admissi delicti poenam. Declaratio autem an reus ante patratum homicidium requisita a Concilio Tridentino servaverit, ad episcopum aliumve loci Ordinarium omnino spectet, non retardatâ iterum delinquentis assecuratione faciendâ etiam per iudicem laicum nomine Ecclesiae, qui illum pariter Ecclesiae nomine ad illius dispositionem retinere possit ac debeat donec dicta declaratio prodierit: quacumque diversâ, ac etiam contrariâ iuris canonici et apostolicarum constitutionum dispositione seu interpretatione, necnon consuetudine, haud refragante.

Sanctum ec-
clesiasticum im-

§ 4. « Porro² cum idem Benedictus

¹ Vocem *non* nos addimus (R. T.).

² Vide ibid. § 10 pag. 33 b (R. T.).

praedecessor, animadvertens homicidia huiusmodi suo etiam tempore increbrescere, nec minus quam alia facinora in celebri constitutione dicti Gregorii XIV, etiam praedecessoris, quae incipit *Cum aliis*, recensita publicae quieti officere, pro commissi sibi apostolici officii debito, per praedictam suam anno Incarnationis dominicae MDCCXXV, vi idus Iunii, cui¹ initium est *Ex quo divina*, evulgatam constitutionem, laicos animo praemeditato ac deliberato proximum suum interficientes ab ecclesiasticae immunitatis beneficio excluserit et repulerit, ac pro exclusis atque repulsis haberi voluerit: nos, ob gliscentem in dies quorundam ecclesiasticorum nequitiam, qui, nullâ proprii status habitâ ratione, non raro in adeo nefarium detestandumque crimen prolabantur, ipsorum Gregorii et Benedicti praedecessorum constitutionibus, quas supra confirmavimus atque innovavimus, inhaerentes, et, quatenus opus sit, criminum in illis exceptorum reos immunitate ecclesiasticâ nequaquam iuvare iterum decernentes, eandem Benedicti praedecessoris constitutionem, laicos animo praemeditato ac deliberato proximum suum, sicut praemittitur, interficientes a beneficio immunitatis ecclesiasticae excludentem, ad ipsos ecclesiasticos cuiuscumque gradus et Ordinis existant in Urbe ac universâ ditione nobis et Sedi Apostolicae mediate vel immediate subiectâ homicidium animo similiter praemeditato ac deliberato patrans extendimus quoque et ampliamus², dummodo tamen causa admissi per eos homicidii ab illorum iudice ecclesiastico competente cognoscatur, et ab eo, si rei reperti fuerint, citra poenam sanguinis, ad praescriptum

munitione non
gaudere illos,
qui doloso et
praemeditato a-
nimo quem-
quam occidunt.

¹ Pessime ed. Main. legit *cum* pro *cui* (R. T.).

² Pessime edit. Main. legit *amplius* pro *ampliamus* (R. T.).

sacrorum canonum condignâ puniantur animadversione.

*Data methodus
extrahendi reos
e loco immuni.*

§ 5. « Ulterius¹ ad varias doctorum, qui eiusdem Benedicti praedecessoris mentem quoad personas in dictâ eius constitutione comprehensas interpretari et explicare voluerunt, sententias et opiniones dirimendas, declaramus homicidii reos natiu minores viginti quinque, maiores vero viginti annis, tam laicos quam clericos, atque omnes et singulos sive laicos sive clericos, qui mandatum, consilium, instigationem, auxilium cooperativum, aut aliam operam occisori praebuerint, ex quorum singulis pravis actibus homicidium evenit, in dictâ Benedicti praedecessoris constitutione comprehensos esse, ac deinceps censi debere, eamque, quatenus opus sit, ad ipsos pariter extendimus, ita scilicet ut illorum extractio e loco immuni, atque traditio curiae saeculari, quoad laicos ad eiusdem curiae saecularis requisitionem, fiat a curiâ ecclesiasticâ, et clerici ab ipsâ curiâ ecclesiasticâ ex officio omnino extrahantur² iuxta normam infra dicendam.

*Immunitate
privata ex causâ
homicidii con-
demnati in con-
tumaciam.*

§ 6. « Item³ declaramus omnes et singulos praedictos tam laicos quam ecclesiasticos, qui in Urbe et ditione praefatis ex causâ et occasione homicidii etiam in rixâ commissi cum armis seu instrumentis suapte naturâ aptis ad occidendum inquisiti et processati, vel in contumaciam banniti et condemnati fuerint, dummodo homicidium non fuerit casuale vel ad propriam defensionem, immunitatis praedictae beneficio minime etiam gaudere.

*Diversimode
agendum in ex-
tractione e loco*

§ 7. « Utque⁴ reorum ratione homicidii, ut praefertur, excepti inquisitorum

seu bannitorum et in contumaciam condemnatorum extractio ab ecclesiis aliisque locis immunibus, atque traditio suo cuique iudici competenti, legitimis modo et formâ a curiâ ecclesiasticâ fiant, volumus et ordinamus, ut, quotiescumque iudici ecclesiastico competenti innotuerit aliquem laicum seu ecclesiasticum ex causâ homicidii excepti inquisitum atque processatum ad ecclesiam seu locum immunem confugisse, ibique moram trahere, ac ea super delicti qualitate ac personae reitate¹ subministrata vel acquisita suppetant indicia, quae ad capturam decernendam sufficere videantur, tunc idem iudex ecclesiasticus ex officio, ac nemine etiam requirente, si delinquens sit clericus, sin vero laicus, postquam a curiâ saeculari requisitus fuerit, ad² ipsius delinquentis extractionem ab ecclesiâ seu loco immuni, implorato etiam ad hoc, quatenus opus sit, auxilio brachii saecularis, et cum interventu personae ecclesiasticae ab episcopo deputandae, devenire teneatur; extractumque ad suos, si tuti et securi fuerint, sin minus ad curiae saecularis carceres adsportari, ibique sub tutâ custodiâ detineri curet et faciat.

§ 8. « Ubi vero³ ex processu informativo desuper conficiendo quoad inquisitum pondum condemnatum dictus iudex ecclesiasticus ex acquisitis seu subministratis indiciis ad torturam tantum sufficientibus ab extracto homicidium a praedictâ Benedicti praedecessoris et hac nostrâ constitutionibus exceptum patratum fuisse cognoverit⁴, ad declarationem, quod scilicet de casu ita excepto conslet, progrediatur; extractum-

*immuti secun-
dum qualitem
personarum et
delicti.*

1 Vide ibid. § 11 pag. 34 a (R. T.).

2 Edit. Main. legit *extrahatur* (R. T.).

3 Vide ibid. § 12 pag. 34 a (R. T.).

4 Vide ibid. § 13 pag. 34 b (R. T.).

1 Pessime edit. Main. legit *recitatus* (R. T.).

2 Male edit. Main. legit *ac pro ad* (R. T.).

3 Ibid. § 13 pag. 34 b (R. T.).

4 Male edit. Main. legit *cognoverint* (R. T.).

que, si laicus sit, ministris et officialibus curiae saecularis, si autem clericus, eius competenti iudici ecclesiastico tradere et consignare possit ac debeat, exactis tamen receptisque in actu traditionis et consignationis huiusmodi a iudice quidem saeculari iuramento, et ab ecclesiastico promissione in verbo veritatis, de restituendo extractum ecclesiae locove immuni, sub poenâ excommunicationis latae sententiae nobis et eidem Romano Pontifici pro tempore existenti reservatae, quatenus extractus in suis defensionibus, quae ad tramites iuris et ordinationum apostolicarum ei competunt, praefata elidat et diluat indicia, et si illa minime eliserit sive diluerit, et delinquens repertus fuerit, iudici suo, scilicet ecclesiastico in clericum, saeculari in laicum, ut iuris esse censuerit, animadvertere liceat.

§ 9. « Quoties autem¹ de iam bannito aut in contumaciam damnato ex causâ homicidii superius excepti sive laico sive ecclesiastico agatur, quilibet iudex ecclesiasticus, ut praefertur, competens, ad illius, laici nimirum, instante curiâ saeculari, et clerici, ex officio, extractionem ab ecclesiâ locove immuni² cum interventu quoque personae ecclesiasticae ab episcopo deputandae³, ac traditionem suo respective iudici, sicut mox dispositum est, faciendam procedat, solamque sententiae contumacialis et actorum, quibus illa fundatur, exhibitionem ad hoc sufficere decernimus ut dictus iudex ecclesiasticus, ex illorum inspectione dumtaxat agnito num istiusmodi sententia contumacialis legitime iustaeque prolata sit ad formam constitutionum apostolicarum, pronunciare et declarare queat et debeat an bannitus

et in contumaciam damnatus consignandum veniat nec ne, exactis pariter et receptis, quatenus consignetur a iudice saeculari, iuramento, si delinquens sit laicus, ab ecclesiastico vero, si fuerit clericus, promissione ipsum, ut supra, restituendi ecclesiae locove immuni, sub antedictâ poenâ excommunicationis, si extractus in suis similiter defensionibus⁴ ei ad praescriptum praedictarum constitutionum apostolicarum competentibus nullitatem et iniustitiam contumacialis sententiae praedictae ostenderit, et sceleris indicia diluerit. Quod si id praestare nequiverit, et ex eisdem sententiâ et actis rite et recte gestis reus repertus fuerit, iudex eius competens sententiam exequi, et quando aliquem in poenâ irrogatâ excessum deprehenderit, etiam moderari valeat; ita quod quaecumque declaratio a praedicto iudice ecclesiastico facta in iudicio ecclesiasticae immunitatis super consignatione banniti et in contumaciam damnati, eiusque denegatione, nullatenus deservire et a nemine allegari possit in alio diverso ac separato iudicio, in quo scilicet de praefatae sententiae contumacialis executione postmodum disputari contingeret: ad quem effectum dicta declaratio iudicis ecclesiastici perinde habeatur ac si non emanasset, nec ullus exinde scrupulus animo iudicis competentis in cognoscendâ et definiendâ validitate seu nullitate, iustitiâ seu iniustitiâ eiusdem sententiae contumacialis ingeratur ».

§ 10. Quoniam autem dilecti filii nobiles viri dux et gubernator reipublicae lanuensis nobis nuper humiliter supplicari fecerunt, ut dispositionem praedictae constitutionis nostrae, superius insertam, ad dominium et ditiones

Dux Iannensis huiusmodi constitutionem ad ditiones Reipublicae petiti extendi.

¹ Ibid. § 13 pag. 36 a (R. T.).

² Edit. Main. legit *immune* (R. T.).

³ Edit. Main. legit *deputanda* (R. T.).

⁴ Pessime edit. Main. legit *definitionibus* pro *defensionibus* (R. T.).

tam terrae firmae, quam regni Corsicae, et insulae Caprariae eidem Reipublicae subiectas, in quibus homicidia quoque frequentissima sunt, extendere et ampliare de benignitate apostolicâ dignamur:

Concedit Pontifex quoad ea quae huic constitutioni adiuncta sunt.

§ 11. Nos igitur, ipsos ducem et gubernatores specialibus favoribus et grâtiis prosequi volentes, eorumque singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censentes, huiusmodi supplicationibus inclinati, et ad tam exitiale homicidiorum flagitium, quantum cum Domino possumus, propulsandum exterminandumque advigilantes, praedictam constitutionem, pro universâ, ut praemittitur, S. R. E. praefatae ditione a nobis factam, quoad praefata in his praesentibus litteris, respective, ad dominium et ditiones praedictas eiusdem Reipublicae, apostolicâ auctoritate, motu proprio, tenore praesentium, extendimus et ampliamus, atque deinceps omnino ac inviolabiter observari praecipimus et mandamus.

Quae vero de dilatione iudiciorum et sententiarum contumaciali sunt, reducit ad terminos iuris municipalis.

§ 12. Volumus tamen, ut, sicut in nostra ditione ecclesiasticâ, tum extractus¹ in suis defensionibus, quae ad tramites iuris et² apostolicarum ordinationum ei competunt, elidat et diluat indicia, tum sola³ sententiae contumacialis et actorum, quibus illa fundatur, exhibitio ad hoc sufficiat ut iudex ecclesiasticus, ex illorum inspectione dumtaxat agnito num

sententia contumacialis legitime iusteque prolata sit ad formam constitutionum apostolicarum, pronunciare et declarare queat et debeat an bannitus et in contumaciam damnatus consignandus veniat nec ne, tum denique si extractus in suis defensionibus ei ad praescriptum praedictarum constitutionum apostolicarum competentibus nullitatem et iniustitiam contumacialis sententiae praedictae ostenderit, et sceleris indicia diluerit, ita pariter in dominio et ditionibus praedictis haec omnia praemissa ad dispositionem iuris et statuta localia domini et ditionum huiusmodi intelligi debeant.

§ 13. Ac insuper volumus, ut, donec et quousque sive per nos ipsos sive per Romanos Pontifices pro tempore existentes declaratio huiusmodi facta non fuerit, ii tantummodo familiares et officiales excepti intelligantur et habeantur, quos de iure et iuxta consuetudinem cuiuslibet loci usque ad hanc diem pro familiaribus et officialibus habitos et deputatos esse et haberi ac deputari solitum est.

Qui pro episcoporum familiaribus accipiendi sunt.

§ 14. Decernentes, easdem praesentes litteras, et in eis contenta quaecumque semper et perpetuo firma, valida et efficacia existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, atque ab omnibus et singulis, ad quos spectat et pro tempore quancumque spectabit, plenissime observari, sicque et non aliter in praemissis per quoscumque iudices ordinarlos et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac ipsius S. R. E. cardinales etiam de latere legatos, eorumdemque cardinalium Congregationes, aliosve quoslibet quacumque praeminentiâ et potestate fungentes et functuros, sublata eis et eorum cuilibet quavis aliter iudicandi et interpretandi fa-

Consulas.

1 Videtur legendum tum restituatur extractus ei; at syntaxis adhuc implexa (R. T.).

2 Coniunct. et nos addimus (R. T.).

3 Male edit. Main. legit solae (R. T.).

cultate et auctoritate, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Obstantibus
derogat.

§ 15. Non obstantibus praemissis, aliisque apostolicis, ac in universalibus provincialibusque et synodalibus conciliis editis, generalibus vel specialibus, constitutionibus et ordinationibus, necnon, etiam iuramento, confirmatione apostolica vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis, stylis, usibus et consuetudinibus, etiam immemorabilibus, ac quorumcumque praedecessorum nostrorum litteris, privilegiis, indultis et facultatibus, quibusvis etiam dictis cardinalibus eorumque Congregationibus, sub quibuscumque verborum tenoribus et formis, ac cum quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, efficacissimis et insolitis clausulis, ac irritantibus et aliis decretis, etiam motu, scientiâ et potestatis plenitudine similibus, etiam consistorialiter, vel aliâs quomodolibet in contrarium praemissorum concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, etiamsi pro illorum sufficienti derogatione de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa et individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quaevis alia expressio habenda aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores huiusmodi, ac si de verbo ad verbum, nihil penitus omisso et formâ in illis traditâ observatâ, exprimerentur et insererentur, praesentibus pro plene et sufficienter expressis et insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

§ 16. Volumus autem, ut, lapsis viginti quinque diebus postquam praesentes litterae per dominum et ditiones praefatas per Ordinarios locorum publicatae fuerint, omnes et singulos in dominio et ditionibus praedictis existentes perinde arctent, ac si unicuique eorum personaliter ac nominatim intimatae fuissent; utque ipsarum praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiastica dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides in iudicio et extra illud ubique adhibeatur, quae ipsis praesentibus adhiberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Terminum
praefigit
ad
praefatas
constitutions
ob-
servantiam in-
ducendam.

Transumptis
idem addit.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xiv ianuarii mcccxl, pontificatus nostri anno x.

Dat. die 14 ianuarii 1740, pontif. anno x.

CCLXXI.

Regi christianissimo eiusque successoribus conceditur indultum nominandi ad beneficia in ditionibus Lotharingiae et Bari.

Clemens Papa XII,

carissimo in Christo filio nostro Ludovico Francorum regi christianissimo, salutem apostolicam benedictionem.

§ 1. Aliâs quidem felicitis recordationis Alexander Papa VII praedecessor noster, ob eximia clarae memoriae Ludovici, dum vixit, Francorum regis christianissimi, avi maiestatis tuae, in rem catholicam merita, eidem Ludovico regi, quoad vixisset, ius ipsi Alexandro praedecessori et pro tempore existentibus Romanis Pontificibus suis successoribus nominandi personas probatas boni nominis et secundum sacrorum

Alexander VII
regi Franciae
nominationem
concessit ad ec-
clesiam Melen-
sem, Tullensem
et Viridunensem.

canonum dispositionem idoneas ad cathedrales ecclesias Metensis, Tullensis et Virdunensis respective civitatum, ab ipso Ludovico rege tunc temporis possessarum, quoties illas quibusvis modis et ex quorumcumque personis (non tamen per obitum apud hanc S. Sedem) vacare contigisset, per eundem Alexandrum praedecessorem suosque successores praedictos ad nominationem praeficiendas reservaverat, concesserat et assignaverat; et alias, prout in ipsius Alexandri praedecessoris litteris desuper in simili formâ die xi decembris MDCLXIV expeditis :

Clemens IX
huiusmodi con-
cessionem ex-
tendit ad omnia
beneficia dicta-
rum dioecesium.

§ 2. Subinde vero felicitis etiam memoriae Clemens Papa IX, itidem praedecessor noster, firmiter in Domino sperans fore, ut tam ipse Ludovicus quam successores reges christianissimi, gloriosis antecessorum regum vestigiis inhaerentes, religionem christianam et fidem catholicam tueri et propagare, dictaeque Sedis Apostolicae honorem et auctoritatem in universis suis et ipsorum regum successorum dominiis illibatas conservare omni studio curaturi, atque in nominandis ad infrascripta beneficia personis, quae vitae integritate, religione, fide et doctrinâ praestarent, summum studium summamque diligentiam semper adhibaturi, nec suam ipsorum conscientiam eâ in re ullo modo laedi forent passuri, amplioremque ipsi Ludovico regi eiusque successoribus exercendae erga personas benemeritas regiae beneficentiae facultatem apostolicâ benignitate ducens concedendam, eidem Ludovico regi eiusque successoribus regibus christianissimis, in unitate catholicae fidei ac Sedis Apostolicae praedictae obedientiâ perseveraturis, ius nominandi ipsi Clementi praedecessori et pro tempore existentibus Romanis Pontificibus successoribus suis personas

probatas bonorum nominis et famae, ac secundum sacrorum canonum dispositionem idoneas, ad quaecumque beneficia saecularia, et quorumvis Ordinum regularia, in praedictis Metensi, Tullensi et Virdunensi civitatibus, earumque territoriis, ditioni et dominio temporalibus tunc temporis eidem Ludovico regi subiectis, consistentia, quae extra Romanam Curiam quibusvis modis et ex quorumcumque personis vacare contigisset, et quorum collatio, provisio et omnimoda dispositio eidem Clementi et Romanis Pontificibus successoribus praedictis et dictae Sedi quomodolibet (non tamen ratione obitus apud Sedem eandem) reservata existeret, per ipsum Clementem praedecessorem eiusque successorem Romanos Pontifices praedictos praeficiendas, et quibus beneficia huiusmodi respective per dictum Clementem praedecessorem suosque Romanos Pontifices successores praedictos conferri debuissent, motu pari, sub certis modo et formâ tunc expressis, reservavit: et alias, prout tam in praefatis eiusdem Alexandri quam in dicti Clementis praedecessoris litteris die xxiii martii MDCLXVIII desuper in simili pariter formâ [Brevis expeditis, quarum etiam tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis haberi volumus, uberius continetur.

§ 3. Nos etiam, eorumdem Alexandri et Clementis praedecessorum praedictorum vestigiis insistentes, ac maiestatem tuam maiorum tuorum regum christianissimorum virtutes aemulantem, deque nobis atque ipsâ S. Sede praeclare mereri pergentem, paternâ charitate complectentes, motu proprio, ac ex certâ scientiâ nostris, deque apostolicae potestatis plenitudine, eidem maiestati tuae, ac successoribus tuis Francorum regibus christianissimis in unitate catholicae fi-

Clemens XII
pari modo dictum ius ampliat in ditionibus Lotharingiae et Barri.

dei et Sedis Apostolicae praedictae obedientiam perseverantibus, ius nominandi nobis et pro tempore existentibus Romanis Pontificibus successoribus nostris personas probatas bonorum nominis et famae, ac secundum sacrorum canonum et Concilii Tridentini decretorum dispositionem idoneas, ad quaecumque et qualiacumque beneficia ecclesiastica saecularia, et quorumvis Ordinum, Congregationum et institutorum (non tamen hospitalia¹ S. Ioannis Hierosolymitani) regularia, etiamsi saecularia, canoniciatus et praebendae, dignitates etiam post pontificalem maiores in cathedralibus, ac principales in collegiatis ecclesiis, personatus, administrationes et officia, regularia vero beneficia huiusmodi, monasteria etiam consistorialia, et in libris Camerae Apostolicae taxata, prioratus etiam conventuales, praepositurae, praepositus, praeceptoriae seu commendae et officia (non tamen claustralia) fuerint, et ad illa consueverint qui per electionem seu alium quemcumque modum assumi (exceptis tamen mediano monasterio, vulgo de *moyen*, Moutier nuncupato S. Hidulphi Ordinis sancti Benedicti, capite Congregationis Ss. Vitoni et Hidulphi, nullius, provinciae Trevirensis in Lotharingia, eidem Apostolicae Sedi immediate subiecto, cui per alias nostras sub plumbo pridie idus ianuarii anno Incarnationis dominicae MCCCXXX seu alio veriori tempore expeditas litteras, quarum tenores praesentibus pro expressis haberi volumus, liberam electionem personae idoneae Ordinis et Congregationis huiusmodi in abbatem dicti monasterii praeficiendae expresse concessimus, aliisque, si quae alia sint, congregationum capita, monasteriis ac parochialibus ecclesiis, earumque per-

petuis vicariis, et aliis beneficiis curam sacramentalem animarum parochianorum annexam quomodolibet habentibus omnibus), in ditionibus Lotharingiae et Barri, quae maiestati tuae et successoribus tuis Francorum regibus subiectae sunt, dumtaxat consistentia, quae extra Romanam Curiam quibusvis modis et ex quorumcumque personis vacare contigerit, et quorum collatio, provisio et omnimoda dispositio nobis et successoribus nostris praefatis et dictae Sedi quomodolibet (non tamen ratione obitus apud Sedem eandem) reservata existat, per nos et successores nostros praedictos monasteriis, prioratibus, aliisque beneficiis praefatis ad nominationem huiusmodi praeficiendas, et quibus eadem monasteria, prioratus et alia beneficia praedicta respective, ut praemittitur, per nos dictosque successores nostros conferri debeant, tenore praesentium reservamus pariter ac concedimus et assignamus.

§ 4. Decernentes, ius nominandi huiusmodi ad monasteria, prioratus et alia beneficia praedicta tibi tisque successoribus regibus memoratas ditiones pro tempore possidentibus competere debere, neque sub quacumque quantumvis speciali derogatione comprehendi, vel ei quovis modo et ex quacumque causa derogari, et, si derogari contingat, id minime suffragari posse, et nihilominus quascumque monasteriorum, prioratum et aliorum beneficiorum huiusmodi provisiones, commendas et alias de eis dispositiones, etiam cum iuris nominandi huiusmodi derogatione, contra earumdem praesentium tenorem etiam per nos et successores nostros praedictos ac Sedem eandem absque tuis successorumque tuorum regum praedictorum nominationibus, etiam motu, scientia et potestatis plenitudine similibus, quoquo

Clausulae pro
concessionis
huius limitate.

¹ Videtur legendum *hospitalis* (R. T.).

modo pro tempore faciendas, ac desuper conficiendas litteras, et inde secuta quaecumque, nulla et invalida, nulliusque roboris et momenti fore et esse, teque vel memoratos reges successores tuos ad docendum de litteris praedictis seu illas ostendendum et in eis contenta quaecumque iustificandum minime teneri, sed eisdem praesentibus tantum uti posse, illisque tam in iudicio quam extra illud stari debere; sicque et non aliter per quoscumque iudices et commissarios, quavis auctoritate fungentes, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac eiusdem S. R. E. cardinales, sublatâ eis et eorum cuilibet quavis aliter iudicandi et interpretandi facultate et auctoritate, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Derogatio
contrariorum.

§ 5. Non obstantibus quibusvis generalibus vel specialibus monasteriorum et prioratum, aliorumque beneficiorum praedictorum reservationibus seu affectionibus apostolicis per quoscumque Romanos Pontifices praedecessores nostros et nos et Sedem eandem quomodolibet factis seu pro tempore faciendis, necnon Cancellariae Apostolicae regulis editis et edendis, ac quibusvis aliis apostolicis, necnon in universalibus provincialibusque conciliis editis, generalibus vel specialibus, constitutionibus et ordinationibus, ac quarumcumque ecclesiarum et monasteriorum, illorumque Ordinum, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis, etiam quasvis clausulas et reservationes in se continentibus, per eosdem praedecessores ac nos et Sedem eandem ecclesiis et monasteriis, illo-

rumque capitulis, conventibus, et Ordinibus, aliisque personis quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, etiamsi pro illorum sufficienti derogatione de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica et individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quaevis alia expressio servanda foret, illorum omnium et singulorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis et ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse, motu, scientiâ et potestatis plenitudine paribus, derogamus, et plene derogatum esse volumus; ceterisque contrariis quibuscumque.

§ 6. Volumus autem ut tam tu quam successores tui reges praefati intra sex menses, a die vacationis monasteriorum, prioratum, aliorumque beneficiorum huiusmodi computandos, personas idoneas nobis et pro tempore existenti Romano Pontifici pro collatione, provisione, seu commendâ obtinendâ nominare omnino teneamini, et ad monasteria seu prioratus huiusmodi in titulum concedi solita clerici saeculares, vel alterius, quam monasterii seu prioratus, ad quod seu quem eos per te vel successores tuos reges praedictos nominari contigerit, Ordinis regulares nominandi, habitum per fratres seu monachos illius monasterii seu prioratus gestari solitum suscipere, et professionem per eosdem fratres seu monachos emitti consuetam expresse emittere, omnesque et singuli nominati praedicti super monasteriis, prioratibus et aliis beneficiis quibuscumque praedictis, cuiuscumque valoris annui etiam minimi existant, litteras apostolicas collationis, provisionis seu commendae respective sub plumbo in-

Terminus
constitutus pro
personis nomi-
nandis.

tra alios sex menses a die factae nominationis computandos expedire, ac iura Camerae Apostolicae ac aliis propterea debita persolvere omnino teneantur; alioquin, diebus sex mensibus respective elapsis, de monasteriis ac prioratibus alisque beneficiis praedictis, ut praefertur, vacantibus, per nos seu pro tempore existentem Romanum Pontificem libere disponi possit.

Huiusmodi privilegio ius quoque concedit Stanislaus regem Poloniae.

§ 7. Volumus pariter ut indulto huiusmodi, tibi ac successoribus tuis regibus christianissimis praedictis ut praefertur concessio, carissimus in Christo filius noster Stanislaus Poloniae illustris ac Lotharingiae et Barri dux non minus pietate quam orthodoxae religionis zelo insignis, quoad vixerit, libere ac licite uti possit et valeat.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xv ianuarii MDCCXL, pontificatus nostri anno x.

Dat. die 15 ianuarii 1740, pontif. anno x.

CCLXXII.

Confirmatio regulae et constitutionum monachorum Maronitarum Ordinis sancti Antonii abbatis Congregationis sancti Isaiae in Syria.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Primus definitor huius Congregationis Romanam concessit.

§ 1. Misericordiarum pater et Deus totius consolationis, qui semper, ac praesertim inter gravissimas sacrosancti apostolatus curas et sollicitudines, consolatur nos in omni tribulatione nostrâ, ut et ipsi paternâ charitate complectentes eos qui in omni pressurâ sunt consolari possumus, ineffabili bonitate suâ consolatus est nos in adventu dilecti filii Petri Hattaya monachi expresse professi ac primi definitoris Ordinis sancti Antonii abbatis

Congregationis Syriae sancti Isaiae appellatae.

§ 2. Hic autem e Syria, ubi orthodoxa catholica fides inter adversas superstitionis et haeresis sectas a Maronitica natione huic Sanctae Sedi semper addictissimâ integerrime colitur et custoditur, adveniens, nobis nuper pro parte dilectorum filiorum Simonis Hariddi abbatibus generalis, et Abrahami Esaf, Bimini Agia, Petri et Pauli Chiami definitorum, atque omnium monachorum Ordinis et Congregationis praefatorum exponi fecit, quod, licet ipsi easdem constitutiones, in nonnullis levibus rebus immutatas, quas, per alias nostras in simili formâ formâ Brevis die xxi martii anno MDCCXXII expeditas litteras a nobis approbatas et confirmatas, dilecti itidem filii monachi Syri Maronitae eiusdem quidem Ordinis sancti Antonii abbatibus sed Congregationis Montis Libani dictae observant, deque ipsorum Congregatione sancti Isaiae in praefatis litteris nostris facta fuerit mentio, tamèn, ut fidelem et constantem, quam eidem Sanctae Sedi profitentur, observantiam et obedientiam alacrius testatam faciant, et nationalis synodi novissime in Monte Libano praedicto celebratae decreto, in quo praescriptum fuit ut monachi omnes Maronitae suas constitutiones ab Apostolica Sede praefatâ approbandas et confirmandas curarent, parere satagant, constitutionum huiusmodi, ut praemittitur, iam approbatarum confirmatarumque pro eadem Congregatione Montis Libani, approbationem confirmationemque pro ipsorum Congregatione sancti Isaiae desiderantes, nobis humiliter supplicari fecerunt, ut sibi in praemissis opportune providere et de apostolicâ benignitate indulgere dignaremur.

Nomine totius Congregationis Papae porrigit constitutiones approbandas.

1 Videtur deesse habeant vel observent (R.T.).

Temor consti-
tutionum.

§. 3. Constitutiones autem sunt tenoris sequentis, videlicet:

CONSTITUTIONES.

Monachorum Syrorum Maronitarum Ordinis sancti Antonii abbatis Congregationis sancti Isaias Syriae nuncupatae.

PARS PRIMA.

Cap. I.
De obedientia.

- I. Debet monachus abbatem suum Christi loco citra omnem disceptationem habere;
- II. Eidemque in omnibus, peccato excepto, obedire;
- III. Et illum honore et amore tum interno tum externo prosequi;
- IV. Nihilque eo inconsulto statuere;
- V. Neque de illius circa fratres regimine subtiliter investigare;
- VI. Omnem propriam conversationem, seu bonam seu minus rectam, illi plane patefacere;
- VII. Nullas expositiones sive tractatus habere aut scribere, neque concionari aut docere, nisi ipso consulto atque annuente;
- VIII. Nec epistolam mittere aut accipere, quam illi non antea exhibuerit;
- IX. Nec illo inconsulto depositum aut pignus suscipere;
- X. Neque mutuum quidpiam dare aut accipere, neque eleemosynam erogare aut petere, nisi illo annuente: servatis tamen iuris solemnitatibus et accepta a legitimo superiore facultate.

Cap. II.
De castitate.

- I. Monachum oportet omnes sensus suos diligentissime cohibere;
- II. Atque a feminarum etiam sibi affinium colloquio et consuetudine abstinere;
- III. Omnes item omnino feminas ab ingressu sui monasterii prohibere;
- IV. Neque cum puero simul habitare: si quos tamen doceri contigerit, extra monasterii claustra docendi erunt;
- V. Omnes denique occasiones castitati noxias amputare atque amovere.

Cap. III.
De paupertate.

- I. Monachum convenit nihil omnino proprium possidere;
- II. Neque aliquid omnino sibi quasi proprium usurpare;
- III. Neque suo cordi aut corpori iungere quidpiam ex bonis parentum aut consan-

guineorum; necessitate autem cogente, sibi id praestare intelligat non consanguinitatis iure, sed non secus atque ceteris externis.

I. Monachum decet primatum nusquam appetere, sed contra, aliis ubique cedere, atque novissimum locum tenere;

Cap. IV.
De humilitate.

II. Omnes actus et mores suos externos ad abiectiorem et humilitatem componere, et fratribus ubique deferre;

III. Fratres item praevenire verbo *parce mihi*, si rei, quae agitur, natura istud exigat.

I. Monachum oportet quam diligentissime ea omnia procurare, quae ad communem concordiam et pacem cum reliquis fratribus conducere intellexerit.

Cap. V.
De fraternâ
charitate.

II. Debet itaque reverentiam, urbanitatem, comitatemque verbo et opere exhibere fratribus, non modo superioribus sed etiam aequalibus atque inferioribus, et praecipue illis qui sibi ista praestare detrectant;

III. Caveat item accuratissime, ne quempiam condemnet aut vituperet, neve sibi verbum gestusve excidat, ex quo audientibus moestitia aut suspicio quaevis oritur.

IV. Satagat praeterea cor habere mundum a quavis appetitione superioris sortis, ne inde livor et invidia subrepat, vitium maxime detestandum et charitati exitiale.

I. Monachus debet verbo et opere se ad patientiam comparare perfectae mortificationis studio;

Cap. VI.
De patientiâ.

II. Subortâ autem tentatione, aestu iracundiae agitari perturbari se non sinat; sed longanimitate et silentio omnem sedare perturbationem studeat;

III. Tentationibus atque difficultatibus pressus, ubique Deo gratias agere assuescat.

I. Monachus debet habitum nigrum habere;

Cap. VII.
De habitu monachorum.

II. Superiorem vestem laneam, cui sancti patris Antonii *Tau* caerulei coloris in sinistro latere sit assutum, adhibeat;

III. Zonâ nigrâ strictâ se cingat; tyrones vero fune ex pilis caprarum contexto;

IV. Zonam non solvat, nec monasticum cucullum deponat aut aliam vestem, cubitus, nisi quae zonae subesse non solet;

V. In habitu, calceamentis, lecto et stragulis paupertas servetur.

Cap. VIII.
De mori in
cella.

I. Monachus sine causâ cellam deserere non debet;

II. Neque secum in illâ habitare quempiam permittere;

III. Neque fratris cellam citra ipsius annutum ingredi;

IV. Si quempiam ad eum venire contigerit, illo in cellâ praesente, ianua pateat, neque occludatur, donec illa abierit;

V. Monachi cella ita clausa maneat, ut communi, qua reliquae fratrum cellae, clave reserari valeat;

VI. Cellae munditiem et ordinem curet.

Cap. IX.
De iter agendis.

I. Monachus non debet sine socio extra claustra abire. Quapropter ante suum e monasterio egressum, comitem ab abbate petat.

II. Nullum iter suscipiat, nisi de licentiâ abbatis.

III. De monasterio non exeat, nisi tempore ab abbate constituto.

IV. Sine litteris abbatis sui de altero in alterum monasterium non pergat.

V. Quodcumque monasterium intraverit, eius loci abbati usque ad suum inde discesum omnino pareat.

Cap. X.
De mensâ.

I. Mensa monachi cibo obvio et parabili instruat.

II. Bis in die dumtaxat cibum sumere, prandium, scilicet, et coenam, contentus sit. Si quid amplius sumere necesse fuerit, abbatem consulat.

III. Carnibus abstineat, nec illis, nisi aegritudinis causâ, vesci fas esto, idque de licentiâ abbatis.

IV. Hominem saecularem ad mensam intra monasterii claustra non adhibeat;

V. Ad mensam sine abbatis licentiâ non sedeat supra seniore.

VI. Mensae assidens neminem salutet.

VII. Post refectionem fas est tantisper animum relaxare, vel in solitario secessu, vel unâ cum fratribus.

Cap. XI.
De opere manuum.

I. Monachum oportet operi seu mentali seu corporali vacare, praesertim si firmâ corporis valetudine utitur;

II. Opus autem fratribus utile esto;

III. Illud vero, nisi de licentiâ abbatis, non capiat: sique res ipsa postulat, etiam

officinae, in qua est operaturus, praefectum consulat, eiusque annutum petat.

I. Monachus debet silentium discrete observare;

Cap. XII.
De silentio.

II. Idque tribus praecipue temporibus, a Completorio, nimirum, ad Tertiam diei sequentis; praeterea in ecclesiâ atque ad mensam: et si quid dicendum fuerit, submissâ voce dicatur.

I. Monachus mane et vespere orationi mentali ad semihoram vel horam vacabit: idque fiat vel post absolutas vocales preces, vel ante ad abbatis nutum;

Cap. XIII.
De oratione mentali.

II. Oraturus, vel cum aliis fratribus in ecclesiâ conveniat, vel solus in cellâ maneat;

III. Huiusmodi autem orandi genus non suscipiant, qui laboriosis ministeriis adduntur, nisi de licentiâ abbatis.

I. Monachus septem orandi tempora observet iuxta monasterii consuetudinem: 1^o officium vespertinum sub occasum; deinde Completorium ante cubitum; 3^o, officium mediae noctis sub horam propriam; 4^o, officium matutinum simul cum horâ tertiâ; postremo officium sextae simul et nonae.

Cap. XIV.
De oratione vocali.

II. Annectendae sunt completorio litaniae Deiparae singulis sabbatis, feriis quartis, et in festis beatissimae Virginis Mariae. Completorio succedit conscientiae examen ad octavam horae, quod etiam mane fieri debet post tertiam.

III. Feriâ quartâ et sextâ singuli in cellas suas secedant sub vesperam post conscientiae examen, et psalmum quinquagesimum manibus in crucis figuram extensis recitent quinquies: ceteris vero diebus quinquies orationem dominicam et salutationem angelicam recitent.

IV. Poenitenciales genuflexiones, quas metanoas vocamus, ad Laudes singuli peragant.

I. Monachus peccata sua sacerdoti ad confessiones excipiendas constituto confiteri debet: si autem alteri sacerdoti, abbatem consulat.

Cap. XV.
De confessione sacramentali.

II. Idque semel quavis hebdomadâ saltem praestet.

III. Sub ingressum in religionem generali confessione peccata sua apud sacerdotem ab Ordinario approbatum deponat; nec re-

ciatur, nisi exhibitâ attestatione quod confessionem sacramentalem emiseric.

CAP. XVI.
De sanctorum
mysteriorum
communione.

I. Monachus debet opere et desiderio perpetuo paratum se praebere ad perceptionem sanctorum sacramentorum;

II. Eorumque communionem frequentare atque suscipere diebus dominicis et festis de praecepto;

III. Sique in eadem hebdomadâ plura concurrant festa, propter sacramenti reverentiam, iuxta abbatis consilium, in quibusdam a communione abstineat;

IV. Monachus vero sacerdos sacrum non omitat unquam, nisi causâ ab abbate probatâ, vel confessarii consilio;

V. Ob divinorum mysteriorum reverentiam nullus monachorum, sive sacerdos, sive clericus, sive laicus; missam celebret, aut divinam Eucharistiam recipiat, nisi aperto capite;

VI. Cucullum etiam monachi omnes capite deponant, dum sacro interveniunt, et cum datur a celebrante benedictio in choro: ubi demum SS. Sacramentum in ecclesiâ conservatur, quoties ante illud est transeundum, caput detegant et genuflectant;

VII. Monachus diaconus coronam in capite, quam sacerdos paulo minorem, gestet, nec missae solemni nisi habitu diaconi indutus ministret.

CAP. XVII.
De modestiâ.

I. Monachus e cellâ egressurus, proprium habitum induat, neque sine eo a quopiam se conspici permittat;

II. Memineritque inclinare caput abbatibus et sacerdotibus senioribus, circumstantiis loci atque temporis id exigentibus, iuxta traditionem et ordinem atque morem fratrum;

III. Abiturus, aut cellam subiturus, aut fores patefacturus, aut clausurus, aut pulsaturus, modestiâ atque silentii memor esto;

IV. Charitatem hilaritatemque cum timore Dei coniunctam in familiari cum fratribus colloquio praeseferat;

V. In summâ intelligat, in omnibus dictis factisque suis sibi modestiâ gravitatisque leges esse servandas.

CAP. XVIII.
De aegrotis.

I. Monachus Deo gratias agere debet in statu aegritudinis magis quam in statu va-

letudinis, sciens se ad proprium profectum a Domino visitari;

II. Inconsulto abbate corpus affligere aut vexare non debet;

III. Aegritudinem praesentens, abbatem moneat;

IV. Pharmaca et remedia abbate inconsulto non adhibeat.

PARS SECUNDA.

I. Licet abbati in suo monasterio novitios suscipere, atque etiam expellere, de consilio congregationis monachorum.

CAP. I.
De novitiis.

II. Novitius non probetur, nisi in monasterio, in quo plures monachi degunt, qui et monasticam regulam observant, et statutis temporibus canonicas preces ceterosque ecclesiasticos ritus peragunt.

III. Habitent novitii in loco a ceteris separato, et curabit abbas generalis ut pro novitiatu designetur monasterium determinatum, et in eo locus separatus.

IV. Novitiatus ad annum producat, neque quisquam ante expletum hoc spatium ad habitum admittatur, nisi ex causâ a congregatione hegumenorum probatâ; si vero novitius expleto anno ad hoc minus idoneus reperiatur, omnino dimittendus est.

V. Novitius ante expletum aetatis annum sextum decimum non suscipiatur, neque maior sit quadragesimo quinto: pertinet autem ad congregationem hegumenorum in hoc casu, si aliunde noverit illum Ordini profuturum, sive in defectu aetatis, sive in excessu dispensare, modo non sit minor annis quindecim.

VI. Novitium 1^o oportet esse christianis parentibus natum atque orthodoxum; quare si ipse aut alteruter eiusdem parentum christianus non est, aut christianam fidem negavit, vel neophytus ad illam accessit, aut a catholicâ fide ad sectam haereticorum transiit, absque licentiâ congregationis generalis a nemine suscipiatur: qui vero haereticis aut schismaticis parentibus natus est, ab abbate monasterii suscipiendus non est, nisi de licentiâ abbatis generalis: 2^o si excommunicatus, interdictus, suspensusve ab exercitio sui Ordinis fuerit, ante absolu-

tionem atque benedictionem proprii episcopi non recipiatur: — 3° non recipiatur novitius publice suspectus vel delatus de criminibus spectantibus ad negotium fidei orthodoxae, vel de homicidio, aut enormi in re turpi delicto, neque notorie infamis, nisi certa sinceræ poenitentiae signa antea ostenderit, et obtingerit absolutionem aut dispensationem a legitimo superiore, prout de iure; — 4° nec recipiatur alieno aere obstrictus, neque reddendis de administratione rei alienae rationibus obnoxius, neque ludicis sententiâ exilio mulctatus, nisi creditoribus et magistratibus satisfecerit; — 5° nec coniugio ligatus, nisi de consensu coniugis, et factâ coram episcopo separatione; — 6° nec in ecclesiasticâ dignitate constitutus, cui curâ animarum annexa sit, nisi in manu sui praelati illam abdicaverit; — 7° nec nothus, neque alio vitio laborans irregularitatem inducente et processum ad sacros ordines impediens, nisi obtentâ ab habente facultatem absolutione, seu dispensatione; — 8° nec aeger corpore, nec morbo cuiusvis obnoxius, nec insanus, aut mentis minus compos suae, sed corpore sanus et integer sit, et interno externove vitio careat, quo ab ordinibus suscipiendis aut exhibendo fratribus ministerio impediatur; — 9° nec qui in alio monasterio aut Ordine professionem emisit, nisi petita a proprio praelato veniâ, et nostrâ generali congregatione annuente. Monachi vero, qui sua nobis monasteria, superiorum permissu, tradiderint, si congregationem nostram optaverint, ad annum sunt probandi, quo peracto, rogatis congregationis monachorum de more suffragiis, ad professionem admittantur, locum vero post monachos, quos invenerunt, obtineant. Qui vero novitius in alio monasterio aut Ordine fuerit, non recipiatur nisi de licentiâ abbatis generalis.

VII. Abbas monasterii, antequam novitium admittat, exploret circa omnia praedicta, et examen fiat in congregatione monachorum. Si abbas novitium post praemissum examen admiserit, deinde vitium in eo deprehenderit, aut impedimentum quodlibet, continuo illum e monasterio dimittat; si vero praedictum

examen neglexerit, ab abbate generali graviter erit puniendus. Qui autem novitium susceperit, sciens impedimentum aliquod ex praedictis obstare, ex gradu suo excidat, qui id ausus fuerit, sine morâ, nec ad ullum deinceps in religione gradum idoneus dignusve censeatur ipse et omnes monachi, qui in congregatione unâ cum illo interfuerint, ad triennium; quo expleto, a congregatione hegumenorum restitutionem obtineant. Novitius vero eum in modum receptus, si necdum professionem emisit, e monasterio expellatur; sin autem professus fuerit, res ad congregationem hegumenorum devoluta censeatur, quae cum reverendissimo domino patriarcha aut legitimo superiore causam defluet.

VIII. Debet insuper abbas de novitii aetate, indole, scientiâ, valetudine, causâ vocationis ad statum religiosum, et ceteris huiusmodi cognoscere: idque fiat in congregatione monachorum.

IX. Postquam ergo abbas cum monachorum congregatione admissionem novitii probavit, tum vero locum a fratribus separatum illi assignabit, ibique ad octo saltem dies citra habitus mutationem maneat, atque interea regulas Ordinis, statuta et consuetudines examinet. Et primum novitius generalem peccatorum confessionem apud sacerdotem ad excipiendas saecularium confessiones ab episcopo approbatum obeat, atque sacram communionem percipiat; postea convocatis monachis, sive matutino sive vespertino tempore, abbas novitium induat tyronum habitu iuxta ritum syriacum.

X. In quolibet monasterio habeatur liber, in quo abbas describat nomen novitii, cognomen, patriam, diem, mensem et annum, quo habitum novitii suscepit. Similiter in codice annotetur dies, in quo professus est, monasticum habitum suscipiendo, et praedictus liber in archivio monasterii reponatur.

XI. Tyrocinii annus supputandus erit a die quo habitum novitii induerit; et prior tempore potior sit in gradu: at sacerdos eum qui sacerdos non est praecedit, et diaconus non diaconum.

XII. Non liceat abbati, neque aliis exigere

aut accipere a novitiis quidquam pro ipsorum receptione ad probationem; sed nec pretium vestis ad probationem necessariae. Si vero novitius sponte quidpiam monasterio obtulerit, id porro palam et in publico conventu fiat, cedatque in communem monasterii usum.

xiii. Novitiorum vestes resque omnes certo in loco reponantur, postquam in codicem singula relata fuerint, ipso novitio praesente unâ cum fratribus; nec ulli liceat inconsulto domino quidpiam ex illis sibi usurpare, aut monasterio applicare: sed nec ipse novitius de rebus suis disponere valeat, probatione durante, aut alteri earum usum cedere, absque abbatis consensu. Si novitius ad saeculum redierit, res suas auferre non prohibetur: illas tamen repetere non poterit, quas sponte et expresse monasterio donaverit, aut si professio sequuta fuerit.

xiv. Novitius ante professionem quovis etiam brevissimo temporis spatio potest de rebus et bonis suis pro arbitrio disponere: post factam vero professionem nullum illi remanet in eâ dominium, nec item abbati, sed illud ad Ordinem statim transire censetur.

xv. Currente probationis tempore, ter de novitio fratrum suffragia rogentur: et primum quidem expletis tyrocinii sex mensibus; iterum vero post nonum mensem; postremo post duodecimum, hoc est elapso probationis anno. Si in postremâ congregatione fuerit approbatus, habitum suscipiat, quamvis in geminis prioribus congregationibus reprobatus fuisset: et e contrario, si in tertiâ reprobatus fuerit, dimittatur, nec priorum duarum congregationum ulla ratio habenda erit.

xvi. Suffragiis monachorum approbatus censetur qui vel unum pro receptione supra medietatem suffragium habet. Si vero suffragia fuerint paria pro receptione et pro reprobatione, iterum rogentur: sique adhuc paria fuerint, reprobatus censeatur.

xvii. Si forte novitius tyrocinii tempore in grave crimen publicum et manifestum prolapsus fuerit, re prius cum congregatione monachorum communicatâ, abbas illum sine

morâ eiiciat, ita tamen ut eius famae apud saeculares, quoad fieri poterit, consulatur.

xviii. Novitius, postquam ad suscipiendum habitum in tertiâ congregatione approbatus fuerit, abbas illi habitus susceptionem ad triduum differat: quo intervallo iubeat eundem de statu suo deliberare; utrum scilicet illi placeat vota emittere, aut contra ad saeculum redire. Si evoluto triduo novitius statuerit religiosam professionem emittere, et monachus fieri, ad ecclesiam adducatur, fratrum coetu deducente; atque coram abbate ad altaris latus assidente genua flectat, duobus saltem monachis professis praesentibus, et abbas de ipsius proposito ac mente illum interroget; sique habitum petierit, induatur iuxta ritum syriacum, postquam pronunciaverit hanc votorum formulam:

Ego N. N. promitto ac voveo Deo omnipotenti et reverendissimo abbati generali N. N. eiusque successoribus obedientiam, castitatem et paupertatem voluntariam usque ad mortem, iuxta regulam et constitutiones Congregationis nostrae monasticae. Item promitto ac voveo, me nullam dignitatem quaesitum, sive in nostra Congregatione sive extra, nec ambiturum per me ipsum, nec per alios procuraturum, neque subdole aucupaturum, neque etiam acceptaturum nisi ad id me coegerit imperium superioris mei, cui teneor obedire.

xix. Si Novitius Ordinem deseruerit, atque ad saeculum fuerit reversus, seu sponte suâ seu congregationis monachorum suffragio dimissus, non erit iterum recipiendus, nisi annuente congregatione hegumenorum: sique horum permissu receptus, sponte suâ aut a congregatione monachorum dimissus fuerit, nunquam deinceps recipiatur. Qui vero post primam discessionem receptus fuerit, probationis eius annus a die reditus supputetur, nec prioris tyrocinii ulla ratio habeatur.

xx. Si novitius a proposito resilierit, et ad saeculum fuerit reversus, atque ibi ab sacros ordines eundem promoveri contigerit, sine congregationis permissu recipiendus non est.

xxi. Nec abbas, nec congregatio monacho-

rum suffragia ferre potest pro admissione novitii ad professionem absque abbatis generalis consensu, vel expresso vel tacito, quem ille sine legitimâ causâ negare non debet: et nisi expresse et nominatim negaverit, dare consensum censendus est.

xxii. Cum tempus probationis novitius expleverit et professus fuerit, abbas ad generalem abbatem de eodem referat.

xxiii. Non permittenda est novitio promotio ad ullum ordinem ecclesiasticum, neque abbati liceat eundem ad sacram ordinationem offerre. Qui novitium ad sacros ordines provehi concesserit, a gradu suo excidat, et novitius ad habitus susceptionem inhabilis censeatur.

xxiv. Novitius cum monachis professis suffragium non ferat, neque de rebus ad Ordinem spectantibus interrogetur, neque ullam dignitatem in Ordine habeat dum probatur, sed ministeriis tantum monasterii addici potest. Probationis quoque tempore novitius a monasterio, in quo ad tyrocinium admissus fuerit, ad aliud monasterium non trasferatur sine iustâ causâ, nec sine consilio congregationis monasterii, quò transferendus est, et ex permissione abbatis generalis. Sic autem translatus, cum tempus probationis expleverit, pro eius admissione, eorum monachorum suffragia rogentur, ubi moratur.

xxv. Novitius habitum gerat ab habitu monachorum professorum diversum, nec ante professionem habitum illorum induat.

xxvi. Sacramenta Poenitentiae et Eucharistiae novitius quavis hebdomadâ semel saltem frequentet, neque a divinorum mysteriorum participatione prohibendus est sine consilio patris spiritualis ab abbate eidem assignati. Et si qui sacerdos fuerit, a sacrâ oblatione quotidie peragenda suspendendus non est, nisi est ex causâ et consulto abbate.

xxvii. Si contingat novitium clericum missae inservire cum altero superioris gradus et loci, sive professus ille sit sive novitius, epitachelion, hoc est, clericalem stolam non induat, nisi clericus ille, qui loco graduque superior est, illud pariter induerit.

xxviii. Novitium decet silentium tenere praesentibus abbate atque magistro, neque

loqui nisi interpellatur, aut ex iustâ legitimâque causâ, neque cum saeculari, nisi abbate et magistro annuentibus, et alio monacho praesente.

xxix. Novitius mensae non assideat, nisi iussus ab abbate aut seniore inter fratres. Si contingat ipso sedente praeterire abbatem aut sacerdotem, statim assurgat, et iunctis in crucis modum supra pectus manibus, submissâ cervice, oculisque in terram defixis, perstet, donec ille pertransierit. Pari submissione reverentiâque se gerat, abbate aut alio sacerdote ipsum alloquente, nec nisi iussus assideat.

xxx. Novitius ab abbate aut a magistro reprehensus, statim in genua procidat, tacitusque audiat arguentem: nec, nisi iussus, pro se verba faciat, aut sibi obiecta refellat, nec, nisi illo iubeute, assurgat.

i. Magister novitiorum intelligat rem esse magni momenti sibi commissam, quandoquidem ex primâ novitiorum institutione pendet maiori ex parte eorundem profectus et spes nostri Ordinis. Curet igitur ut in dies per studium propriae perfectionis instrumentum aptius ad eos iuvandos reddatur.

ii. Amabilem se praestet et vitae integritate ac discretionem ita se gerat, ut omnes novitii ad ipsum in suis tentationibus confidenter confugiant, eique res suas libere aperiant, et ab eo consolationem et auxilium in omnibus sperent.

iii. In domo probationis monasterio coniunctâ, vel in monasterio ipso (nam locum novitiorum separatim esse magis expediret), refectorium quidem sit commune, sed mensa aliqua novitiis designetur post omnes professores.

iv. Magister novitiorum privatas tantum poenitentias suis novitiis imponere poterit; publicas vero nonnisi consulto abbate.

v. Habeat hic idem magister novitiorum potestatem ordinariam a praelatis absolvendi a casibus reservatis novitios suos, nisi abbati haec facultas aliquâ de causâ restringenda videretur, vel alteri concedenda: sed statutis anni temporibus, saltem bis in anno, extraordinem confessarius novitiis offerendus est.

vi. Magistrum novitiorum versatum esse

CAP. II.
De magistro
novitiorum.

oportet in lectione librorum spiritualium, ut deceptiones, quae in spiritali vitâ accidunt, intelligat. Novitiis vero eos tantum legendos tradet, quos ad eorum profectum conducere iudicabit, quique sint orthodoxi et ab Ecclesiâ catholicâ non reprobati. Semihorae vero spatio eosdem docebit orationem mentalem et vocalem, doctrinam christianam, et regulas atque statuta nostri Ordinis: preasertim qua ratione accedere debeant ad sacramenta Confessionis et Eucharistiae, et quomodo bonis canonicis et sacrae liturgiae interesse eos conveniat. Qui autem litteras nesciunt, illos statutas preces recitare docebit.

vii. Abbatis est unum ex sacerdotibus monasterii, qui sit prae ceteris morum probitate et doctrinâ commendatus, magistrum novitiorum designare. Hunc autem si negligentem in novitiis instituendis, aut minus prudentem in eis corrigendis deprehenderit, pro qualitate culpaepuniat: idque coram professis, non coram novitiis fiat. Eum vero ab officio remove non poterit, nisi congregatione monachorum consultâ.

CAP. III.
De professis.

i. Postquam novitius professionem emisserit, aliquamdiu, abbatis arbitrio, sive in ministerio fratrum, sive in studiis litterarum exerceatur, ut appareat an ad clericorum ordinem promovendus sit, an vero in laicorum coetu manere debeat; nemo enim in nostrâ Congregatione ante novitiatum ad statum clericorum sive laicorum deputatur, sed omnes indifferenter ad quemcumque statum admittuntur: et solum post peractam professionem, postque edita idoneitatis suae signa, ab abbate, consultâ monachorum congregatione, ad clericatum sive ad statum laicorum designantur. Hae tamen in re conscientia ipsius abbatis oneratur, ut nimirum et rationem idoneitatis uniuscuiusque habeat, et monasterii necessitatibus de conveniente numero sacerdotum, clericorum et laicorum consulat.

ii. Antequam vero professus ad statum aliquem determinetur, semper maneat sub custodia et curâ vicarii abbatis; et quantum fieri potest, nullum commercium habeat, vel cum novitiis, vel cum aliis monachis,

nisi cum paribus et aequalibus suis, aut cum iis qui in eodem ministerio aut studiis iisdem versantur.

iii. Quamquam autem aliquis ab abbate ad statum clericorum deputatus sit, et ordinem etiam aliquem ecclesiasticum acceperit, intelligat tamen ad ulteriorem gradum sibi aditum nequaquam patere, nisi illum bonis moribus et comparatâ ex studiis scientiâ promeruerit. Abbatis igitur et congregationis monachorum arbitrio relinquitur, ut ipsum ab ulteriore ordine accipiendo, ad tempus, vel etiam perpetuo arceant: idque potissimum de ordinibus infra diaconatum intelligendum est: nam qui, servatis servandis, ad diaconatum promotus est, is a sacerdotio accipiendo, nisi urgentissimâ de causâ, nequaquam removeatur.

iv. Pari ratione qui diu in ministerio laicorum deservit, si idoneus postea repertus fuerit, potest ab abbate et monachorum congregatione ad ordines etiam maiores promoveri, dummodo tamen, postquam ab abbate ad ministerium laicale addictus est, nec litteras didicerit, nec libros legerit, nisi ipso consulto.

i. Nemo ad ordinem ecclesiasticum promoveatur, nisi aetate in sacris conciliis praescriptâ, aut dispensatione a legitimo superiore obtentâ, et de licentiâ congregationis monachorum atque abbatis, qui ordinandum cum litteris testimonialibus ad episcopum loci aut ad reverendissimum dominum patriarcham mittere debet, tenoris sequentis:

CAP. IV.
De clericis
studentibus, et
magistris.

Reverendissime et religiosissime domine episcopo civitatis N. (aut Beatissime patriarcha noster domine N.), nos abbas et monachi Ordinis sancti Antonii congregati S. Isaiae monasterii N. testamur reverendum patrem N. monachum professum nostri Ordinis, in legitimâ aetate constitutum (vel dispensationem aetatis hic annexam habentem), et sufficienti doctrinâ bonisque moribus praeditum, nulloque impedimento irretitum, dignum esse qui ordinem N. a reverendissimâ dominatione tuâ (vel a beatitudine tuâ) accipiat. Quamobrem has ei litteras patentes dedimus sigillo monasterii nostri munitas, et subscriptione nostri abbatis

firmatas, die N., mense N., anno N. Loco † sigilli. N. abbas monasterii N.

II. In libro monasterii adnotabitur nomen ordinati et episcopi ordinantis, et dies, mensis et annus.

III. Si quis ex professis permiserit se ordinari absque licentiâ abbatis et congregationis monachorum, negotium eius ad abbatem generalem deferatur, qui illum ab exercitio ordinis suspendat, aliisque poenis plectat.

IV. In quolibet monasterio clericis ab abbate magister deputetur, qui eos doceat, et ipsi litteras diligenter excolant, quarum opere choro deservire valeant, et sacerdotii onera digne ferre, eiusque munera pro dignitate exequi.

V. In qualibet provinciâ, si fieri potest, unum ex monasteriis frequentioribus ab abbate generali ad excolenda studia designetur, in quo, praeter magistrum grammaticae, sint etiam alii duo magistri, alter dialecticae et philosophiae, et alter theologiae, vel saltem unus magister, post peractum grammaticae, dialecticae et philosophiae curriculum, sacram theologiam exponat, et dogmaticam praesertim atque moralem, iuxta methodum ab eodem abbate generali praescribendam. Praeterea constituatur praefectus studiorum, cuius cura esse debet, ut tum a scholaribus, tum ab horum magistris statutus ordo et regula studiorum servetur: idemque praerit omnibus actibus litterariis et examinationibus scholarium. Etsi autem ad abbatem generalem spectat tam praefectum studiorum quam magistros praedictos deputare, in mortis tamen aut infirmitatis alicuius eorum casu, congregatio monachorum unâ cum abbate illius monasterii alium in eius locum subrogare poterit, donec abbas generalis consulatur: cuius erit spatium etiam annorum assignare, quo grammaticae, philosophiae et sacrae theologiae studium perficiatur, distributionem quoque temporis, tam matutini quam pomeridiani, et vacationes per hebdomadas et annum; ita tamen, ut neque horarum canonicarum, sacrae liturgiae tempora, aliaque monastica exercitia a communi regulâ et constitutionibus prae-

scripta perturbentur, neque vires studentium aut magistrorum opprimantur.

VI. Quolibet mense disputatio publica fiat, et bis in anno examen. Diebus autem dominicis habeantur collationes vel de sacra Scripturâ, vel de casibus conscientiae, aut controversiis in Oriente vigentibus adversus schismaticos, haereticos et infideles, iuxta directionem praefecti studiorum.

VII. Syriacam et arabicam linguam probe callere curabunt, ut sacras scripturas, et patres doctoresque legere atque interpretari valeant.

VIII. Omnia ad studium necessaria subsidia ab abbate studentibus procurentur. Studentes vero curent: — 1°, ut animi puritatem et rectam in studiis intentionem habeant; — 2°, ut fervor studiorum non extinguat aut minuat amorem solidarum virtutum; — 3°, ut iis facultatibus operam dent, eosque audiant magistros, quos abbas destinabit; — 4°, ut boras studio tam communi quam privato attributas diligenter observent; — 5°, ut, si magistros studiorum causâ convenire debent, horam certam ab abbate destinatam habeant, extra quam illorum cellas sine peculiari facultate non adeant.

IX. In nostrâ congregatione nullus gradus aut praerogativa magistris aliisve debetur; sed solum abbati generali, hegumenis et abbatibus provinciarum atque monasteriorum, donec in eâ dignitate fuerint; postea sacerdotibus professis, iuxta tempus professionis; deinde clericis item professis, ac postremo laicis. Abbas tamen generalis curabit pro laborum et meritorum ratione, tam magistros quam alios quoscumque sacerdotes monachos remunerari, eos vel monasteriis praeficiendo, vel ab oneribus, quae iunioribus imponi solent, eximendo.

X. Nemo ex monachis librum aliquem, aut tractatum, aut orationem, sive concionem scribat, nisi consulto abbate, qui opus per se legat, aut alicui ex magistris legendum committat. Illud autem in publicum prodire aut typis imprimi non licebit, nisi prius ab abbate generali et episcopo, aut reverendissimo domino patriarcha probatum fuerit.

Cap. V.
De sacerdoti-
bus.

I. Quae de disciplinâ religiosâ et instituto nostro servanda omnibus proposita sunt, ea sacerdotes pro ratione sui gradus sibi praecipue dicta existiment et observent.

II. Divinum officium nitantur attente, devote et opportuno tempore recitare, et ad chorum cum ceteris convenire statutis horis. Caeremonias sacrae liturgiae aliarumque ecclesiasticarum functionum accurate discant et observent, sintque hac in re uniformes, patriarchalem ecclesiam sibi tamquam normam proponentes. Cantus etiam ecclesiasticos calleant. Sic demum in liturgiâ divinisque officiis celebrandis pronunciationem, cantum et quamcumque aliam exteriorem actionem moderentur, ut non minus aliorum aedificationi, quam propriae devotioni serviant.

III. Curam animarum nemo ex nostris suscipiat, neque in iis, quae parochorum aut episcoporum iuris sunt, se immisceat. Si quando autem ab episcopo aut reverendissimo domino patriarcha iussus fuerit abbas monasterii ut ipse vel aliquis monachorum in monasterio aut in vicinis seu remotis locis populum doceat, vel confessiones audiat, aut alia quaecumque sacramenta administret, ab eo facultatem in scriptis habere curet.

IV. Nemo ad confessiones nostrorum audiendas accedat, nisi ab abbate deputatus, qui simul intelligat, quam facultatem ad hoc munus habeat. Saecularium vero nemo confessiones audiat, nisi obtentâ episcopi licentiâ. Perspectos autem unusquisque habeat casus reservatos tum reverendissimo domino patriarchae et episcopo, tum abbati generali.

V. In casibus conscientiae, iisque praesertim, qui ad censuras, restitutiones et casus reservatos pertinent, se se diligenter exerceant, earumque rerum compendia et brevem interrogandi methodum, et contra singulorum peccatorum species remedia salutaria, et sacris praesertim canonibus, comparare studeant, collationesque de praedictis inter se diebus festis babeant.

VI. Confessarii ita audiant poenitentes, ut mutuum aspectum fugiant. Quod si lo-

cus non erit huiusmodi, ut tabula confessorium a poenitente dividat, manu interpositâ inter faciem propriam et poenitentem, qui ad latus genua flectere debet, id praestabit. In audiendis vero seminarum confessionibus, severos potius quam familiares se exhibeant, ita tamen ut paterna quaedam et spiritualis gravitas in eis cluceat. Nemi- ni autem petere, aut accipere quidquam liceat, sive ab iis, quorum confessiones audiverint, sive ab aliis, quod in pauperes distribuat, vel alteri satisfactionis nomine restituat, inscio et inconsulto abbate.

VII. Qui vocantur ad eos iuvandos, qui morti vicini sunt, ea in promptu habeant, quae eo tempore ad salutem animarum usui esse possint. Caveant autem, ne quem sermonem de loco sepulturae in coemeterio monasterii eligendo, aut de haereditate vel elemosynâ monachis relinquendâ, infirmo iniiciant.

VIII. Nemo ex nostris ad ullam archipresbyteri, periodeutae, aut chorepiscopi dignitatem se promoveri sinat, sed sacro presbyteratus ordine contenti sint omnes, etiam abbates. Si vero reverendissimus dominus patriarcha voluerit abbates benedicere, eam benedictionem recipere poterunt.

I. Intelligant omnes, primum vocationis monasticae finem esse inservire divinae maiestati et propriam salutem procurare, illudque ministerium obire, quod ex obedientiâ sibi commissum fuerit. Contenti ergo statu laicali, ad quem ipsos abbas et monachorum congregatio destinaverit, et in praescripto sibi ministerio sic vitam omnem exigant, ut sibi persuadeant¹, se in eâ re obsequium praestare Creatori, ob cuius amorem schema monasticum induerunt.

II. Qui syriace legere et canere norunt, divina officia in choro statis horis cum ceteris persolvant. Qui vero arabice tantum, horas diurnas et nocturnas ad usum laicorum compositas legant. Qui autem legere nesciunt, certum precum et psalmorum numerum ab abbate sibi praescriptum ad singulas horas memoriter recitare discant. Qua in re ministerii uniuscuiusque ratio habebitur, ac

¹ Edit. Main. legit persuadeat (R. T.).

Cap. VI.
De monachis
laicis.

praesertim eorum qui in laboriosis exercitationibus occupantur, quique vel primâ luce monasterio ad opus egrediuntur, vel usque ad vesperam regredi nequeunt: his enim horarum loco certas præcationes abbas constituet privatim recitandas. Omnes tamen, qui legitimâ causâ impediti non sunt, quotidie divinae liturgiae intersint.

III. Postquam sui officii ministeriis satisfecerint, si quid vacui temporis superfuerit, id totum in alias exercitationes spirituales aut corporales impendant, eiusque rei causâ abbatem adibunt, ut ipsius voluntatem exquirant.

IV. Curent peculiari studio erga omnes clericos, et praecipue in sacris ordinibus existentes, respectum humilitatemque exhibere, idque magis erga sacerdotalem ordinem, sciantque, quod; etiamsi professi sint, in sacris tamen functionibus cedere debent clericis etiam novitiis ecclesiastico habitu indutis.

V. Quia tamen patres nostri statu laicali, vel minoribus ordinibus, aut diaconatu tantum contenti, Deo servisse, fratribusque praefuisse noscuntur; ideo monachos laicos, vel clericos aut diaconos scientiâ sufficienti praeditos et regimini idoneos, non omnino ab officiis etiam insignibus excludimus, sed posse eos tam ab abbate generali et congregatione hegumenorum, quam ab abbate et congregatione monachorum, atque etiam a congregatione generali eligi in hegumenos, oeconomos, procuratores et consultores, et ad alias similes dignitates promoveri declaramus; hac tamen salvâ conditione, ut nunquam in abbatem generalem aut abbatem provinciae sive monasterii, qui sacerdotes esse debent, eligantur. Qui autem eo, quem diximus, modo electus fuerit hegumenns, intelligat sibi primum post sacerdotes locum convenire extra congregationes; in congregationibus vero post hegumenos sacerdotes, et ante omnes alios etiam sacerdotes.

VI. Caveant monachi laici, ne quid sibi capiant, aut aliis dent, commodent, mittant, aut quidquam huiusmodi faciant absque expressâ licentiâ abbatis, aut eius qui operi praestet.

VII. Librum nullum retinere aut legere iis licebit sine abbatis licentiâ, cuius prudentiae erit eos illis legendos assignare, qui magis ad spiritualem ipsorum profectum expedire videbuntur.

I. In unoquoque monasterio distributio horarum in tabellâ describatur et in loco patente ponatur, in qua secundum anni tempora diligenter notentur horae chori, idest vesperarum, completorii, nocturni, matutini cum tertiâ et sextae atque nonae; item hora liturgiarum privatarum et solemnium; item hora prandii et coenae; denique hora operis manuum seu ministeriorum aut studii, et hora qua fratres cubitum eunt, usque ad signum quo excitantur.

II. Ab abbate constituatur monachus, sive vicarius, sive alius quicumque, cuius officium erit, tempore orationi et reliquis exercitiis assignato, observare num omnes iis vacent: item observare omnia quae ad honestatem et decentiam externam pertinent, ecclesiam et monasterium in locis publicis perlustrando, et si quid inconveniens deprehenderit, ad abbatem referat.

III. Ad mensam habeatur lectio. Silentium autem nunquam ab abbate dispensetur. Si quem vero extraneum ecclesiasticum aut saecularem contigerit ad monasterium divertere, ipse abbas solus, vel adhibito aliquo alio monacho pro illius viri dignitate, poterit simul cum illo cibum sumere, idque, si fieri poterit, extra refectorium: alioquin vel ante vel postquam monachi in refectorio cibum sumpserint.

IV. Cum monachus de monasterio exire non debeat, nisi socio adhibito quem sibi abbas assignaverit, advertat abbas ut sic socios accomodet, ne sociis graves sint aut molesti, neque nimis familiares aut suspecti.

V. Nisi necessitas coegerit (quae tamen ab abbate erit cognoscenda et probanda) monachi, ad ministeria siye ad studium intra monasterium addicti, de monasterio egredi non permittantur, nisi bis in hebdomadâ, et cum interpolatione dierum, peractisque prius ministeriis necessariis: idque ita ab abbate per turnum distribuatur, ut et di-

CAP. VII.
De ordine domestico, et de honestate extra monasterium servanda.

disciplina regularis in monasterio nihil detrimenti capiat, et omnibus per hebdomadam monachis facultas exeundi e monasterio aequaliter detur. Diebus autem dominicis et festis maioribus nemo possit veniam exeundi obtinere, nisi celebratis prius divinis officiis, aut eo dumtaxat temporis spatio, quod a divinis officiis vacuum est.

vi. E monasterio egressi, honestatem et modestiam incessu, manibus, colloquio, oculis exhibeant: loca remotiora et ecclesias minus frequentes adeant; personas, vias, aedes, officinas suspectas aut infames devitent: cum saecularibus non tantum familiaritatis habeant, ut vel secreta monasterii iis revelent, vel ex frequenti eorum conversatione a monastica disciplina relaxentur: multoque magis a feminarum colloquio abstineant, neque eas invisant, aut ad illas scribant, nisi in magnâ necessitate, aut cum spe magni profectus spiritualis, et consulto expresse abbate.

vii. Non permittat abbas ut monachi munuscula offerant magistratibus, aut eorum aulas frequentent, aut amicitias quocumque modo ambiant; praesertim si deprehenderit eos hac viâ ad ecclesiasticam dignitatem vel in religione gradum prorepere: si quem vero huius ambitus reum invenerit, graviter puniat, et ad abbatem generalem deferat. Idem de abbate dicendum, si, praeter consuetas et necessarias magnatum visitationes, munerumque oblationes, vel quid novum introducere tentaverit, vel ipse magnatum amicitias plus aequo captare deprehensus fuerit.

i. Nullum monasterium, nisi accedente consensu et benedictione episcopi et reverendissimi domini patriarchae, et de licentiâ abbatis generalis atque hegumenorum, nobis a fundatoribus aut patronis oblatum, accipere debemus, vel de novo fundare possumus. Quisquis vero abbas, sive propriâ, sive congregationis etiam monachorum auctoritate id fecerit, poenae gravioris culpae subiaceat in religione, si licentia tantum abbatis generalis et hegumenorum defuerit; et puniatur etiam ab episcopo et reverendissimo domino patriarcha, si absque horum

consensu id factum fuerit; omnesque monachi abbati consentientes, eidem poenae subiaceant, et actus monastici ibidem facti, ut novitiorum admissio ac professio, irriti et inanes declarantur.

ii. Illud vero solum monasterium fundare vel accipere, ut supra, nobis licet, in quo monastica disciplina observari possit, sufficiens monachorum numerus ali; idque vel ex annuis redditibus monasterio legatis, vel ex terrae fundo, de quo ex labore manuum vivere possunt.

iii. Omne monasterium, quod monachi nostrae Congregationis inhabitant, honestâ clausurâ muniatur. Sic autem sit clausum ut mulieribus cuiuscumque dignitatis aut ordinis nullâ ratione pateat.

iv. Extra ipsius monasterii clausuram, vel in loco intra monasterium ad id destinato, hospitium erigatur, in quo hospites ad nos divertentes accipi possint, et mulieres quidem in loco valde remoto ac prorsus separato a viris et a monasterio. Neque abbas, neque congregatio monachorum potest alicui vel ecclesiastico vel saeculari cellam in ipso monasterio vel ad breve tempus assignare, nisi in hospitio locus omnino defuerit, aut personae accipiendae minime convenerit, ut cum episcopus aut reverendissimus dominus patriarcha ad nos divertit.

v. Nulli abbati aut oeconomo licebit monasterium aere alieno gravare absque inevitabili necessitate, nec vendere aut commutare vel quovis modo alienare possessiones, fundos aut annuos census monasterio donatos aut acquisitos, sub poenâ depositionis ab officio et inhabilitationis tam abbatis quam oeconomi et monachorum, si assensum ad hoc praeberint, nisi obtentâ prius facultate ab iis ad quos spectat, et consensu abbatis generalis.

vi. Pecuniae exactae de redditibus monasterii, aut a benefactoribus monasterio donatae, non retineantur in manu cuiusquam, sed in arcâ statim reponantur sub duplici clave, quarum una sit penes abbatem, et altera penes oeconomum. Item instrumenta fundorum monasterii, vel rerum donatarum, testamentorum clausulae, aut alia quaecum-

CAP. VIII.
De fundatione
monasteriorum,
et receptione
hospitum, de
que vitanda mo-
nachorum vaga-
tione.

que documenta ad res temporales monasterii spectantia, in publicâ formâ redacta, in arcâ vel in archivio communi reponantur sub duplici clave, ut supra.

vii. Quaecumque monacho professo donantur, sive ex haereditate proveniunt, tam mobilia quam immobilia, omnia monasterio statim et sine dilatione applicentur; usus tamen aliquarum rerum, ut librorum, ei concedi poterit ex licentiâ abbatis, ita tamen ut ex eo usu paupertas religiosa non laedatur, neque murmuratio aut aemulatio in ceteris fratribus oriatur.

viii. Inventarium bonorum tam mobilium quam immobilium in omnibus monasteriis fideliter et accurate descriptum in archivio conservetur, et unum illius exemplar ad abbatem generalem mittatur. Item habeatur inventarium onerum sive obligationum erga fundatores et benefactores tam vivos quam defunctos, quibus abbas satisfieri diligenter curet.

ix. Monasteria nostra ita sint invicem coniuncta, ut monachi possint, abbatis generalis arbitrio, ex uno in alterum libere transferri, et, ubicumque is voluerit, ad tempus vel perpetuo collocari. Eius tamen prudentiae erit ut non temere monachos sic transferat, sed habitâ ratione necessitatis monachorum et monasteriorum, et consultis prius, si fieri poterit, aut expedire iudicaverit, abbatibus, qui debent ipsum de statu suorum monachorum ac monasteriorum certiores facere. Bona vero mobilia aut immobilia unius monasterii ad alterum nequaquam transferantur; maxime si a fundatoribus ea fuerint certo loco assignata: sed quae monachorum labore, vel ex haereditate consanguineorum, aut donatione amicorum cuiquam eorum factâ, ad monasterii redditus accesserint, iis poterit abbas generalis necessitatibus monasteriorum indigentium prudenter subvenire; sic tamen ut abbates occasionem inde non arripiant monasteria sua negligenter administrandi.

x. Si abbas experimento compererit, quemquam suorum monachorum vel caeli inclementiam ferre non posse, vel aliâ qua-

cumque de causâ communitati expedire ut inde discedat et ad aliud monasterium proficiscatur, de consilio congregationis monachorum abbatem generalem admoneat, qui illum pro suâ prudentiâ ad aliud monasterium migrare iubebit. Si vero in longinquâ regione fuerint, ita ut abbas generalis consuli tempore opportuno nequiverit, tunc abbas de consensu congregationis monachorum mittere poterit monachum cum litteris ad abbatem generalem, qui illum in quodcumque voluerit monasterium transferet. Sive autem ob infirmitatem, sive ob pravos mores dimissus fuerit monachus, omnia, quae ad iter necessaria erunt, magnâ charitatis significatione subministrentur ab eo monasterio, unde dimittitur. Si vero in commodum et utilitatem alterius monasterii mittitur, illius sumptibus et expensis mittetur. Caveant tamen frequentes monachorum translationes, ne monasteriis oneris sint, nec illas sine necessitate fieri permittant.

xi. Quemadmodum nulli monachorum licet recedere de monasterio, in quo per abbatem generalem collocatus est, ita nulli abbatum fas erit advenientem monachum recipere, nisi licentiâ proprii abbatis generalis in scriptis obtentâ: alioquin tam qui recipit, quam qui recipitur, poenam monachorum vagorum subeant arbitrio abbatis generalis. Si quis vero monachus a proprio abbate, vel a fratribus eius monasterii in quo versatur, se iniuriam aut persecutionem pati affirmaverit, volueritque abbatem generalem adire, non idcirco ei licebit inconsulto eodem abbate generali, aut saltem abbate et congregatione monachorum sui monasterii annuente, e monasterio proficisci; sed debet ad ipsum abbatem generalem scribere, et licentiam ab illo primum obtinere: aliâs ab eodem abbate generali tamquam vagus puniatur.

xii. Nullus, etiamsi abbas fuerit, possit ire extra suam provinciam quocumque titulo vel praetextu, neque ad parentes, consanguineos vel affines, neque ullam peregrinationem etiam sacram suscipere, absque speciali licentiâ abbatis generalis, neque ex uno

monasterio ad aliud se transferre, etiam pro rebus proprii monasterii, absque consensu congregationis monachorum, nisi monasterium, ad quod se confert, adeo vicinum sit, ut uno die ire ad illud et redire ad proprium monasterium valeat. Si quis abbas huic constitutioni contravenerit, ab abbate generali puniatur. Ceteri vero monachi non abbates, qui sine licentiâ abbatum suorum de uno monasterio in aliud pergunt, vel peregrinationem suscipiunt, in monasterio includantur¹ arbitrio abbatis, qui ieiunium insuper illis ad tempus praescribat.

xiii. Nulli tam monachorum quam abbatum licebit ostiatim, aut per pagos, sive per ecclesias mendicare. Si tamen aliqua necessitas urgens suaserit aliquid petendum ab aliquâ personâ, id fiat religiose et modeste per monachos ab abbate designatos. Si vero per pagos vel civitates propter gravem monasterii necessitatem mendicandum fuerit, id non fiat nisi licentiâ ab episcopo et reverendissimo domino patriarcha in scriptis habendâ.

Cap. IX
De subiectione
erga praelatos.

I. Cum noster Ordo in medio nationum haereticarum et infidelium versetur, atque ab universalis Ecclesiae capite marium terrarumque spatiis disiunctus sit, diligentissime curent abbas generalis, hegumeni et abbates monasteriorum atque provinciarum, eorumque vicarii, ne aut ex locorum distantia aut proximarum gentium consuetudine charitas atque devotio monachorum erga S. Petri apostolorum principis cathedram et Romanos Pontifices quoquomodo refrigescat; quin sedulo satagant ut omnes monachi intelligant obedientiam et obsequium erga Sedem Apostolicam Romanam esse velut nostrae religionis fundamentum et characterem, quo a ceteris Orientis nationibus Syri Maronitae se discerni voluerunt. Pretiosissimum itaque hoc maiorum nostrorum depositum custodire summopere nitantur, et omni ope contendunt, ut tum opere tales se esse palam et publice fateantur, quales eos esse oportet, qui officii sui et beneficiorum ab Ecclesiâ Romanâ acceptorum haudquaquam immemores sunt. Et quoniam

¹ Edit. Main. legit *includatur* (n. t.).

divino mandato iubemur proximi etiam nostri salutem curare, diligentissime studeant, antiquorum nostrorum patrum, ac praesertim monachorum S. Maronis, qui pro catholica religione strenue decertarunt, vestigiis inhaerendo, occasiones capere ad orthodoxae fidei propagationem, et ad profectum nationum ab Ecclesiâ Catholica dissidentium, inter quas versantur: neve earumdem desperent aut negligent conversionem, sed cum omni charitate et patientiâ, divino adiutorio freti, procurare illam, opportune, importune, arguendo, increpando, obsecrando, nitantur.

ii. Honoret quoque post Summos Romanos Pontifices matrem suam Antiochenam Ecclesiam et reverendissimum dominum patriarcham toti nationi Ordinique nostro ab eadem Romanâ Ecclesiâ praepositum, cui tamquam patri peculiari affectu et devotione addicti sint, eiusque decretis et constitutionibus omnibus, quae fidei catholicae aut Romanis Pontificibus non adversantur, pareant et obtemperent. Nomen quoque eius post Romanum Pontificem tam in sacrâ liturgiâ quam in divinis officiis de more commemorent. In rebus dubiis et gravibus, quae Ordinem nostrum concernunt, illum consulant. Antequam congregatio generalis fiat, eius benedictio ab abbate generali petatur; postquam facta est, electi abbas generalis et hegumeni ipsum adeant benedictionem accepturi. Si operâ nostrâ, in rebus ecclesiasticis ad sedem patriarchalem Antiochenam spectantibus, uti voluerit, paratos se exhibeant. Nullum cum ipso aut reliquis praelatis dissidium habeant, neque rebus ad eius sive praelatorum auctoritatem pertinentibus se immisceant; sed meminerint se illius et praelatorum, in quorum dioecesibus versantur, obsequentissimos filios esse. Si quis huic regulae quoquo modo contravenisse compertus fuerit, severissime puniatur. Post reverendissimum patriarcham, episcopo loci debitum honorem et obsequium deferant, eius quoque nomen in sacris diptychis recitantes. Sacramenta exteris non administrent, neque concionem ad illos habeant, aut catecheses faciant, aut

ullum ministerium sacrum publicum obeant ad populum, sine expressâ eius licentiâ.

iv. Episcopos, chorepiscopos, archipresbyteros et parochos, omnesque tam reverendissimi domini patriarchae quam episcopi ordinarii ecclesiasticos ministros, quo par est honore prosequantur. In eorum officiis sese ne immisceant, neve sacram ullam functionem cum saecularibus vel erga saeculares exercent, nisi iussu episcopi et beneplacito parochorum. Curam animarum perpetuam monachi ne gerant, neque etiam ad tempus civitatibus, sine licentiâ reverendissimi domini patriarchae et episcopi ordinarii: in pagis vero, ac praesertim in locis monasterio contiguis, possunt, si episcopus voluerit, ad tempus supplere absentiam vel defectum parochorum, sacramenta necessaria administrando, concionando et catecheses faciendo.

v. Quomodo autem monachi cum principibus et potestatibus saeculi se gerere debeant, monet Apostolus, inquit: *Omnis anima potestatibus sublimioribus subdita sit, non solum propter iram, sed etiam propter conscientiam; nec tantum bonis et modestis, sed etiam dyabolis.* Reddere autem iubemur omnibus debita, cui tributum, tributum: cui vectigal, vectigal: cui timorem, timorem: cui honorem, honorem. Si quem igitur principum saecularium contigerit ad nostra monasteria divertere, maxime si fidelis fuerit, omni honore illum prosequantur. In negotiis tamen magnatum nequaquam se ingerant: *Nemo enim militans Deo, implicat se negotiis saecularibus;* neque eorum aulas frequentent, aut amicitias ambiant; multoque minus eorum operâ aut patrocínio adversus ecclesiasticas potestates utantur. Si quid vero cum illis circa bona temporalia monasteriorum agendum aut trasigendum erit, id ab abbate aut oeconomo sic fiat, ut religiosae humilitatis nunquam obliviscatur. Curent denique, quantum fieri poterit, ut monasteriorum fundi possessionesque a tributis et vectigalibus immunes sint.

Cap. X. De his quae observari debent in exigenda ab abbatibus et redditibus

i. Cum huius regulae finis sit spirituale auxilium monachorum, abbas summo opere caveat, ne vitio suo eadem fratribus gravis et intoleranda fiat, atque ab eius observa-

tione paulatim avertantur, cum magno suarum animarum atque Ordinis detrimento. In hoc proinde casu se patrem exhibeat, adeo ut monachus ad ipsum cum filiali fiducia recurrere assuescat.

ii. Non est cogendus monachus ut conscientiam suam abbati aperiat in iis rebus de quibus confessus est aut confiteri debet apud sacerdotem. Omnia autem, quae abbati in hac materiâ revelantur, intelligat ea sibi sub secreto naturali dicta; quod tamen de iis dumtaxat intelligendum est, quae quis de se ipso suisque defectibus aut tentationibus abbati aperit: quae enim de aliis monachis denunciat, ea sub secretum non cadunt, nisi quoad personam denunciantis.

iii. Hoc secretum abbas cautissime servet, nec faciat quidquam ex notitiâ inde habita, quoad res denunciantis, nisi expressam ab eodem habuerit facultatem. Si quis vero huius secreti fidem quovis modo fregisse convictus fuerit, denunciatur abbati generali, qui delinquentem severe puniet. Hinc abbas vel praefectus rerum spiritualium satagat, ut fratres intelligant poenas impositas fractioni praedicti sigilli, ut inde metum omnem deponant, et ad usum huius praxis promptiores reddantur.

iv. In domesticis exhortationibus ab abbate inculcetur tam sanctus et laudabilis mos a sanctis patribus nostris inductus, et alumnis suis maxime commendatus. Item eius necessitas et utilitas, non solum ad privatum, sed etiam ad commune bonum spirituale ostendatur.

v. Unusquisque igitur magnâ cum puritate sub sigillo secreti naturalis, aut quacumque ratione ei placuerit, totam animam suam abbati manifestam faciat, aperiendo defectus suos, eos praesertim quibus magis gravatur. Quos vero in fratribus suisprehenderit defectus, eidem abbati revelet, ut congruum remedium aptare possit.

vi. Capita autem, quibus conscientiae propriae ratio reddenda erit, haec fere sunt; ex quibus cum ea retulerit quae ad plenam sui manifestationem dicenda putaverit, petat ab abbate, ut se ipsum interrogando iuvet, ac suppleat, si quid esse iudicet quod ad

a monachis ratione conscientiae.

maiores ipsius monachi profectum opportunum esse videatur. Primo, an vivat contentus iuxta suam vocationem, et quomodo se habeat circa vota substantialia religionis. Secundo, an sentiat aliquas animi perturbationes, molestias, et de facilitate seu difficultate et modo eis resistendi, et ad quos affectus vel peccata sit magis propensus et incitatus, et quomodo observet quae ex constitutionibus et regulis tum communibus tum officii sui ad ipsum pertinent. Tertio, quomodo rebus spiritualibus sit affectus, quarum virtutum studio praecipue intentus, quantum temporis orationi tribuat, et num vocali, an potius mentali iuvetur, num in exercitio rerum spiritualium consolationem habeat, an vero contra, desolationem et vagationem mentis patiat; de fructu, quem ex sacra communione et confessione et aliis exercitiis spiritualibus percipiat; de mortificationibus, poenitentiis, et aliis quae faciunt ad spiritus profectum, et in specie de praeparatione ad iniurias et alia molesta aequo animo ferenda. Quarto, de fratribus, et quomodo ex eorum conversatione proficiat in Domino; et an alicui sit plus familiaris, quam aliis; an aversionem animi sentiat ab aliquo, et an offensus sit in aliquo a quopiam, et quomodo sit affectus erga omnes. Quinto, num post ultimam rationem conscientiae, quam reddidit, maiorem aut minorem fructum fecerit.

VII. Quod monachus cum abbate, idem praestare debet abbas cum aliquo ex monachis circa rationem conscientiae propriae reddendam.

CAP. XI.
De renovatione
votorum.

I. Ut firmiter monastica disciplina retineatur, monachi nostri in die festo sancti patris Antonii, die XVII mensis ianuarii, vota solemnia quolibet anno renovent hoc modo:

II. In congregatione monachorum una hebdomada ante festum sancti patris nostri Antonii abbas moneat omnes religiosos de futura votorum renovatione, ut unusquisque se praeparet ad confessionem sacramentalem in pervigilio festi vel ipso die faciendam, ubi, communione fratrum ac liturgia absoluta, congregentur omnes in locum a saecularibus separatam, in quo abbas faciat

brevem adhortationem de votis mox renovandis; deinde cantatis litanis B. V. M., et recitatis secreto oratione dominica et salutatione angelica, ipse abbas, flexis genibus coram altari, legat clara voce sequentem formulam: *Ego N. N. renovo meam professionem monasticam, et promitto Deo omnipotenti, beatissimae Virgini Mariae, sancto patri nostro Antonio et reverendissimo meo abbati generali N. N. eiusque successoribus obedientiam, paupertatem et castitatem usque ad mortem, iuxta regulam et constitutiones nostras. Item promitto me nullam dignitatem sive in Ordine nostro monastico, sive extra, ambiturum vel postulaturum per me ipsum aut per alios, seu acceptaturum nisi iussu superiorum.* Si sit abbas generalis, omittat ea verba, et reverendissimo meo abbati generali, eiusque successoribus, et eorum loco dicat, et reverendissimo abbati generali pro tempore esistenti. Tum surgens abbas, ad latus dexterum altaris sedeat. Mox alii monachi iuxta antiquitatem suam in professione eandem formam renovationis votorum ex cartula sive libro in manibus abbatis existente genuflexi ante ipsum abbatem proferant. Quibus finitis, surgat abbas, et omnibus aliis genuflexis faciat absolutionem, dicens: *Deus miseratur vestri, et dimittat debita vestra, et condonet peccata vestra, et perducat vos ad vitam eternam.* Respondent: *Amen.* Abbas: *Benedicat vos omnipotens Deus, Pater, et Filius, et Spiritus Sanctus.* Respondent: *Amen.*

I. Cum monachus graviter aegrotare coeperit, statim confiteatur abbati vel confessorio ab eodem deputato, et sacra communione reficiatur, servata ad hoc hora magis conveniente, antequam cibum capiat, nisi infirmitas nimium urgeret. Nec ultra unum a gravi infirmitate diem confessio differri poterit, et, si fieri potest, etiam communio. et statim, praesentibus duobus vel tribus monachis, debet infirmus abbati vel occonomo revelare bona omnia, quorum usum habuit, nec in inventario descripta sunt. Alioquin si monitus ab abbate, omnia quae supra dicta sunt, facere detrectaverit, atque illum mori contigerit, ecclesiastica sepultura

CAP. XII.
De monachis
infirmis et de-
cedentibus.

privetur et suffragiis divinis. Si vero temporalium bonorum administrationem habuerit, postquam coeperit graviter aegrotare, et maxime si nulla sit spes salutis, abbas duobus aut tribus testibus monachis omnia illius repositoria visitet, et faciat debitum inventarium. Siquae necessitas postulaverit, eius ministerium alteri tradat, donec infirmus convalescat vel moriatur. Idem de abbate infirmo dicendum, sive abbas monasterii sit, sive hegumenus, sive etiam abbas generalis. Quaecumque autem in cella monachi post eius obitum reperta fuerint, monasterio applicentur.

ii. Diligens cura infirmorum habeatur, eisque secundum infirmitatis indigentiam et secundum medicorum consilium provideatur de omnibus necessariis. Et aliquis religiosus ac pius monachus non aliunde occupatus eis specialiter assignatur, qui sciat, possit et debeat ministrare. Cumque horas canonicas gravati morbo per se ipsos recitare non possint, tunc, si sustinere possunt, dicantur coram eis ab aliquo.

iii. In quolibet monasterio, ubi commode fieri poterit, segregetur locus pro infirmis, etiam cum oratorio: ubi singulis diebus missa celebretur, si quis sit infirmus, qui eam audire possit.

iv. Item in ecclesia monasterii decenter et honeste conservetur sacrosancta eucharistia pro monachis et familiaribus nostris, in casu necessitatis eis porrigenda.

v. Item oleo benedicto infirmum ungat abbas vel eius vicarius, iuxta ritum sacrae lampadis sive extremae unctionis: et habeantur in quolibet monasterio libri rituales, tam pro eucharistiae administratione quam pro extrema unctione, et pro commendatione animae et exequiis.

vi. Nullus monachus permittatur uti scientia medicinae tam pro monachis quam pro saecularibus, nisi dispensationem a legitimis superioribus habeat, idque sine periculo, et sine mercede, sed ex sola charitate faciat.

vii. Abbas monasterii obitum cuiusque monachi in suo monasterio decedentis sine dilatione abbati generali et abbatibus ceterorum monasteriorum denunciet per epistolam

encycliam, ut pro mortuo fiant suffragia; nempe in monasterio, in quo monachus obierit, fiant exequiae more solito et missa sollemnis, et unusquisque sacerdos dicat ter psalterium orationum dominicarum et salutationum angelicarum; item dicatur pro eo missa sollemnis in die quadragesimo obitus et in anniversario. In reliquis vero monasteriis una missa dicatur a quolibet sacerdote, et unum psalterium orationum dominicarum et salutationum angelicarum a non sacerdote. Pro abbate vero generali et unoquoque ex quatuor hegumenis idem fiat in toto Ordine, quod fit in monasterio in quo monachus moritur; idque intelligendum est de illis etiam qui aliquando munere abbatis generalis et hegumenorum functi sunt, etiamsi tales non fuerint cum mortui sunt. Hunc autem missarum et orationum numerum, quem supra expressimus, augere vel diminuere poterit congregatio generalis pro maiori vel minori monachorum numero.

viii. Audita morte summi Romani Pontificis, vel reverendissimi domini patriarchae nostri, fiant exequiae sollemnes in singulis monasteriis, et unusquisque sacerdos dicat unam missam, et non sacerdos centum *Pater noster* et *Ave Maria*, quod est integrum psalterium precum. Idem fiat pro episcopo in monasteriis quae in eius dioecesi sunt, et pro benefactoribus insignibus in monasterio cui benefecerunt.

ix. In omnibus coemeteriis nostris monachi a saecularibus semoti sepeliantur in habitu, quem gessere, sive professorum vel novitiorum.

x. Bis in anno fiat commemoratio pro omnibus monachis defunctis nostri Ordinis; bis quoque pro parentibus, affinibus et amicis monachorum, et pro omnibus qui in coemeteriis nostri Ordinis sepulti sunt, et bis pro benefactoribus et pro illis qui litteras fraternitatis Ordinis nostri habuerunt. Semel scilicet mense novembris, et semel ante initium ieiunii quadragesimalis. In utraque commemoratione dicatur in unoquoque monasterio missa sollemnis, et quilibet sacerdos dicat unam missam, et non sacerdos psalterium precum.

CAP. XIII.
De eremitis
et inclusis.

i. Quoniam patres nostri non modo coenobiticam vitam, sed etiam eremiticam coluere, nobisque tradidere, ideo, vestigiis eorum inhaerentes, decernimus, fas esse unicuique monacho professo, post exactum tamen a professione monastica quinquennium, et petita prius obtentaque ab abbate licentia, in cellam a communi aliorum monachorum consortio semotam, claustro tamen munitam, secedere ad tempus vel in perpetuum prout ipsi abbati et congregationi monachorum visum fuerit, ubi orationi et spiritualibus exercitationibus vacet. Et si firmo corpore fuerit, agellus ei colendus tradatur, vel illud manuum opus exerceat quod utile fuerit et conveniens. Probet autem abbas spiritum monachi, antequam illi dictam licentiam concedat, ne quid diabolicae fraudis in huiusmodi secessu subrepat.

ii. Minus quam duo non sint apud monasterium eremitae, iique in duabus cellis separatis; neque plus quam tres, in totidem cellis. Quod si monasterium frequens sit, et voluerint plures quam tres monachi vitam eremiticam colere, tunc bini bini eremitae separatim ab aliis in sua quisque cella manebunt, et alter alteri eremita ministrabit in rebus spiritualibus et temporalibus, eadem omnino ratione, quae a regula et constitutionibus praescribitur coenobitis erga socios: idque, si ambo vel unus eorum sacerdos fuerit; nam sacram liturgiam et sacramenta confessionis et communionis eodem modo in oratorio privato frequentabunt quo frequentantur a monachis in ecclesia monasterii. Si vero ambo non sacerdotes fuerint, id praestare debebunt in ecclesia monasterii, ad quam pro rebus spiritualibus convenient certis horis certisque diebus; tum ad cellas suas abibunt. In festo autem Paschatis Resurrectionis et in festo Nativitatis Domini debent omnes eremitae tam sacerdotes quam non sacerdotes ad ecclesiam monasterii accedere, ibique divinum officium cum monachis celebrare, et missam dicere vel audire: tum, si voluerint, poterunt in communi refectorio cibum sumere; alioquin, peractis divi-

nis officiis, et salutato altare¹, in cellas suas pergent.

iii. Curet abbas monasterii quae circa illos aguntur perspecta habere, et invigilet ne praetextu eremiticae vitae otio se dent, aut aliud faciant, quam quod huiusmodi institutum postulat. Assignet praeterea unum ex monasterio, qui temporibus suis victum, potum, vestitum et omnia necessaria inclusis, sive eremitis subministret.

iv. Semel in anno per decem aut octo dies tenentur monachi omnes in cellas suas a communi aliorum consortio secedere et spiritualibus exercitationibus vacare: idque sive ante Nativitatem Domini, sive ante dominicam Palmarum. Provideat autem abbas ut secessus huiusmodi inter monachos sic distribuatur, ut nullum vitae communi aut necessariis monasterii ministeriis detrimentum inferatur.

i. Monialium curam Ordo noster non suscipiat, nisi de consensu reverendissimi domini patriarchae et episcopi dioecesani in scriptis habendo; eoque habito, regimen earum ad abbatem generalem immediate pertinebit, qui illarum post reverendissimum dominum patriarcham et episcopum visitator ordinarius erit et gubernator et director, et ad eum spectabit eis providere de patribus spiritualibus seu confessariis, tam ordinariis quam extraordinariis; et ipse etiam poterit earum confessiones per se ipsum audire, si voluerit, et visitatorem aliquem ex monachis nostrae Congregationis substituere, si impeditus fuerit.

ii. Si plura fuerint monialium monasteria, nullam ab invicem dependentiam habebunt, nec unius abbatissa alteri praeesse poterit, sed unumquodque a sua abbatissa administrabitur, et omnibus abbatissis praeerit abbas generalis, ut modo dictum est. Poterunt tamen moniales ex uno monasterio in aliud ob urgentem necessitatem transferri, modo adsit consensus duarum saltem partium monialium, ad quas transfertur, et episcopi illius loci.

iii. Nulla virgo a parentibus aut aliis

¹ Legend. altari, ni potius abbate (n. r.).

CAP. XIV.
De monialibus.

coacta, vel seducta, recipiatur in monasterio, nullaue habitu monialium induatur, absque licentiâ abbatis generalis, et nisi ex consensu seu suffragiis plusquam medietatis monialium. Habeat autem eas omnes respective conditiones, quae in novitiis monachis iuxta constitutiones nostras requiruntur; sitque sexdecim annos nata, cum novitiatum incipit, neque annum aetatis quadragesimum quintum excedat. Profiteri autem non poterit ante completum biennium novitiatus. Si qua vero novitia in aetate legitimâ constituta, probationis anno nondum expleto, ob infirmitatem ab hoc saeculo migratura, pro consolatione animae suae ad habitum professarum admitti desideraverit, coram abbatissâ et monialibus ab abbate generali vel ex eius commissione ab aliquo sacerdote monacho admitti poterit ad professionem faciendam.

iv. Non multiplicentur novitiae vel moniales ultra numerum earum, quae ex redditibus propriis monasterii vel ex consuetis elemosynis commode possint sustentari. Nihil vero pro earum receptione in novitiatu vel professione a monasterio exigatur, excepto vestitu novitiarum; et quando vestiendae erunt habitu novitiarum vel habitu professarum, id fiat in ecclesiâ monasterii coram abbatissâ et monialibus in manibus abbatis generalis, praevio consensu episcopi, vel in manibus ipsius episcopi, monito prius abbate generali.

v. Velum consecrationis nulli monialium detur, nisi ab episcopo; idque virginibus quidem anno aetatis quadragesimo; viduis vero anno sexagesimo; nec nisi expletis saltem quinque annis post emissam professionem. Sic autem velatae, reliquis non velatis, exceptâ abbatissâ, praecedant, et veli formâ distinguantur.

vi. In electione abbatissae, omniumque officialium, moniales professae, quae duos integros post professionem annos in monasterio egerunt, suffragia ferant coram abbate generali vel eius substituto, et coram eo cui de iure competit. Et quoad aetatem eligendae, servetur dispositio iuris canonici: eaque debet esse, quae annos saltem quinque post emissam professionem in monasterio

laudabiliter vixerit. Reliquae vero officiales post exactum a professione biennium, omnium officiorum capaces sunt.

vii. Nulla abbatissa vel officialis ultra triennium in eadem dignitate vel officio manere potest aut confirmari, nisi a dignitate vel officio per integrum triennium vacaverit, nisi necessitas ad petendam dispensationem a reverendissimo domino patriarcha coegerit. Nullaque monialis succedere poterit in eodem officio alteri sorori germanae, neque in electionibus officiorum, praeter duas sorores, tertia vel quarta suffragium habere potest.

viii. Moniales omnes vitam communem servant, omni vitio proprietatis penitus ablato. Curet proinde abbatissa, ut omnibus de necessario victu, vestitu, ceterisque aequaliter et sine ullâ distinctione provideatur.

ix. Quoad orationem vocalem et mentalem, et sacramenta confessionis et communionis, et quoad missam audiendam, rationem reddendae conscientiae, silentium, lectionem ad mensam, et ceteras regulas sive constitutiones, omnia observentur a monialibus, quae monachis praescripta sunt. Debent enim in choro temporibus suis horas canonicas cantare, abbatissâ seu vicariâ praesidente; orationi mentali per semihoram in die vacare; peccata sua sacerdoti designato semel quavis hebdomadâ confiteri; Eucharistiam diebus dominicis et festis suscipere; missam quotidie audire; feriâ vi et iv post vespertinum officium, in cellam suam secedentes, manibus in crucis figuram extensis psalmum *Miserere* quinquies recitare; non tamen abbatissae, sed sacerdoti confessario rationem conscientiae suae reddere, idque satis erit si semel in hebdomadâ fiat; silentium in ecclesiâ, in mensâ et a completorio ad tertiam horam diei sequentis diligenter observare; in communi mensâ lectionem libri spiritualis recitare; omnes denique regulas et constitutiones observare, quae earum sexui et statui non repugnant.

x. Operi quoque manuum assuescant, quod nimirum monasterio et sororibus utile sit. Officia autem pro monialium viribus abbatissa et sorores in electione officialium sic

distribuant, ut quae nimium laboriosa sunt, ter, vel quater in anno mutare possint et debeant: alioquin abbas generalis, si quae oriantur contentiones vel murmurationes inter sorores de gravaminibus officiorum, auctoritate sua providere poterit, omniaque officia, praeter abbatissae solius dignitatem, mutare. Abbatissam autem, neque sorores omnes, neque abbas generalis, ante expletum triennium, deponere poterit, absque episcopi aut reverendissimi domini patriarchae licentia.

xI. Confessarius monialium eligatur ab abbate generali, qui sit sacerdos gravis, bonae famae et propectae aetatis; nec audeat ingredi earum monasterium, nisi urgente necessitate, et ob gravem alicuius infirmitatem, et nunquam solus, sed cum socio viro probo et maturae aetatis, qui ab eius latere non recedat, ita ut semper alter ab altero videatur; nec ingrediatur, nisi cum stolâ super habitum monasticum; nec aliquam monialem visitet, aut alloquatur; sed ab abbatissâ vel eius vicariâ, unâ cum duabus aliis monialibus, ducatur cum socio ad cellam eius, quae peccata sua confiteri, vel sacramentum Eucharistiae et extremae unctionis recipere debet. Reliquae sacramenta a proprio confessario recipiant in ecclesiâ monasterii: curandumque ut inducatur receptus mos, ubi necdum inductus est, ut nimirum moniales ex patente ad hunc dumtaxat finem fenestellâ communicent, quae, peractâ communione, claudenda erit, clavisque ab abbatissa custodienda. Confiteantur autem per interpositas crates. Horas vero canonicas ex choro decantent cratibus munito.

xII. Curabit abbas generalis, ut quovis triennio confessarius ordinarius mutetur, et alter in eius locum succedat. Quolibet autem anno ipsis monialibus extraordinarius confessarius quater exhibeatur, qui omnium confessiones audire possit.

xIII. Nisi in monasterio sint, quae alias moniales legere, scribere et horas canonicas cantare docere possint, ipse confessarius extra ostium monasterii sedens id praestare poterit, quatuor saltem monialibus praesentibus.

xIV. Etsi curandum sit ut moniales extra septa monasterii nunquam egrediantur, quia tamen id ubique commode obtineri non potest, curent saltem ut ad possessiones monasterio contiguas, ad quas pro necessitatibus monasterii exire coguntur, nisi binae, ternae aut quaternae, non procedant: nec ullum virum quovis praetextu ibi versari, vagari, aut illinc transire permittant. Idque abbas generalis et confessarius ab ipso deputatus, qui in loco a monialibus prorsus separato et aliquantulum remoto domicilium cum socio habebit, apud episcopum et reverendissimum dominum patriarcham diligenter provideat. Si quid vero in dictis possessionibus, aut etiam intra monasterium faciendum erit, quod operarum ministerium requirat, id praesente confessario cum socio, et semotis monialibus fiat. Ad visitandas autem vicinas saecularium vel monachorum ecclesias, vel quaslibet ecclesiasticas aut saeculares personas, e monasterio exire nullatenus permittantur, nisi parentes sint vel affines usque ad tertium gradum, quos graviter decumbere contigerit: ad illos enim, si in vicinia habitent, accedere poterunt, modo tamen sint ternae vel quaternae, nec ibi prandeant, aut coenent, aut pernoctent.

xV. Semel in anno per se ipsum, vel per substitutum sacerdotem monachum, abbas generalis visitet monasterium monialium, et inquirat de observantiâ monasticâ, deque ceteris quae ad moniales monasteriumque spectant. Caveat tamen, quoad fieri poterit, ingressum monasterii; idque nisi urgente causâ non faciat; sique fecerit, unum vel duos socios secum testes adhibeat.

xVI. Nullus ex monachis, etiamsi hegumenus vel abbas fuerit, praeter eos qui ab abbate generali ad regimen spirituale monialium deputati sunt, poterit ad monasterium earum accedere, vel missam in earum ecclesiâ audire aut celebrare, vel illas alloqui aut ad eas scribere, sive litteras et munera ab iis accipere, sub poenâ gravis culpa. Neque moniales possunt ad quemquam monachum, praeter abbatem generalem et confessarium actualem, litteras scribere, aut ad colloquium admittere. Quae-

cumque in hoc deliquisse deprehensas fuerint, severe puniantur.

PARS TERTIA.

CAP. I.
De communi
regula abbatum
et superiorum.

I. Cum abbatum, eorumque omnium qui ad regimen aliquod in nostro Ordine assumuntur, officium sit commune totius Ordinis bonum procurare, nec vires eorum ad tantum onus ferendum sufficere certum sit, in primis divinam opem ipsi implorare non desinant, idque potissimum facient, cum necessitas occurrerit. Deinde noverint se ad laborem et sollicitudinem magis quam ad honorem assumptos esse; meminerintque se exemplo bonorum operum debere fratribus praeire. Communes itaque regulas ipsi accurate servant, et particularia in cibo, indumentis et aliarum rerum usu, quantum fieri potest, devitent.

II. Calceant rationes officii sui, et ex frequenti constitutionum, tam privatarum suarum, quam communium, aliorumque officiorum sibi subiectorum, lectione intelligant, non temere et pro suo arbitrio rem sibi agendam esse, sed ex praescripto regulae, constitutionum et receptorum consuetudinum regendum Ordinem, fratresque gubernandos. Quare receptos mores et a superioribus vel decessoribus suis approbatos servant ac servari faciant, nec mutare vel abrogare valeant, inconsulta superiore potestate; ipsi vero nullos, nisi superiore approbante, introducant.

III. Caveant, ne, familiaritate atque indulgentia cum quibusdam, alios offendant, aut occasionem offensionis quoquo modo in hac parte praebeant. Neque alienum ab aliquo animum ostendant, sed erga omnes aequaliter et sine personarum acceptione se gerant.

IV. Dent operam ut omnibus fratribus cum omni sollicitudine invigilent, eosdemque ab iis quae nocere possint domi et foris defendant, tum praeveniendo, tum etiam, si quid mali acciderit, remedium adhibendo, ita ut in omnibus honori et famae tum fratrum singulorum tum Ordinis totius consulatur.

V. Efficiant ut secum vel cum aliis a se deputatis de propria conscientia statis temporibus fratres tractatum habeant; nec spi-

ritualium collationum consuetudinem neglegant, sed crebro et magna cum charitatis significatione alloquantur subditos, eorumque necessitatibus, non corporis tantum, sed multo etiam magis animi, paterno affectu prospiciant. Quem vero intelligent gravi aliqua tentatione pulsari, eius peculiarem curam, non solum per se, sed etiam, si necesse fuerit, per alios gerant, caveantque, ne, remedium differendo, difficiliorem morbi curationem faciant.

VI. Quamvis in virtute obedientiae iubere possint, nonnisi rarissime et ex gravi urgente causa id faciant.

VII. In correctionibus et poenitentiis iniungendis caveant iracundiae aut alterius pravae affectionis speciem; sed personarum dispositionem considerent, aedificationis universalis et particularis illarum rationem habentes. Nisi autem prudentia rebus particularibus adhibenda aliud dictaverit, in correctionibus procedendum erit hoc ordine, ut, qui peccant, primo in charitate quidem, sed eo tamen modo ut eis confusio et rubor iniiciatur, tertio, amor ea, quae timorem incutiant, si opus erit, adiiciantur. De publicis vero defectibus publica debet esse poenitentia.

VIII. Sic regimini aliorum tum spirituali tum etiam temporali incumbant, ut nihil de virtutum exercitationibus propriaeque salutis cura remittant. Omnia igitur, quae ad religiosam perfectionem spectant, monachisque erga abbates et superiores exercenda praecipiuntur, ut puta, reddendae conscientiae ratio, recessus a communi aliorum consortio per aliquot dies spiritualium meditationum causa, et cetera huiusmodi, ea ab ipsis abbatibus et superioribus facienda intelliguntur.

I. Cum dudum, Dei favente gratia, ex plurimum monasteriorum Ordinis sancti patris nostri Antonii unione Congregatio nostra in Domino coaluerit, cumque in omni bene constituto hominum coetu necesse sit esse aliquem, vel etiam plures, qui boni universalis curam gerant, praeter eos, qui certis provinciis et particularibus monasteriis praesunt, eligendus est abbas generalis, qui

CAP. II.
De regimine
et de ordine,
atque praemi-
nentia abba-
tum.

hunc sibi finem constituat, ut universa Congregatio monachorum bene gubernetur, conservetur et augeatur.

II. Quare potestas abbatis generalis summa erit, et ad omnes et per omnia, pro sacrorum canonum dispositione, nostrarumque constitutionum praescripto, extendatur.

III. Is porro ad triennium instituendus est: quo expleto, nisi a congregatione generali ad alterum triennium confirmetur, officium continuo dimittat.

IV. In subsidium vero regiminis, generali abbati in eam quam diximus amplitudinem commissi, eligendi erunt in congregatione generali quatuor hegumeni, quorum officium pariter ad triennium durabit, nisi ab eadem congregatione generali ad alterum triennium confirmetur.

V. Singulis autem provinciis et monasteriis abbates praeficiantur, quorum potestas etiam expleto, ut supra, triennio cessabit.

VI. Quamobrem quolibet triennio congregatio generalis cogenda est, ad quam vocandi ab abbate generali erunt, praeter quatuor hegumenos supramemoratos, omnium provinciarum et monasteriorum abbates atque officiales maiores, et quotquot officio generalis, hegumeni et abbatis defuncti sunt, modo non fuerint ob aliquos defectus depositi.

VII. Huius generalis congregationis potestas in Ordine nostro suprema est, generallemque abbatem et hegumenos confirmare, atque etiam, si opus fuerit, deponere potest.

VIII. Congregatio hegumenorum singulis saltem semestribus ab abbate generali et quatuor hegumenis habeatur, eiusque potestas omnes et omnia contineat, salvo tamen generalis congregationis decretis.

IX. Quolibet anno congregatio provinciae habeatur ab abbate eiusdem provinciae et reliquis abbatibus monasteriorum subiectorum, eiusque potestas in provincia summa est, salvo decretis abbatis generalis et congregationum supramemorarum.

X. Quolibet saltem mense congregatio monachorum ab abbate monasterii et sacerdotibus professis, quos abbas generalis ei consultores assignaverit, fiat, eiusque potestas

in monasterio summa est, salvo decretis congregationum antedictarum, iisque omnibus, quae abbas generalis vel abbas provinciae ordinaverint.

XI. Praeeminentia abbatis generalis excedit omnes aliorum officialium gradus, ita ut ceteris omnibus et loco et ordine praecedat. Post hunc quatuor hegumeni pro sua quisque electionis prioritate, si presbyteri omnes sint vel dignitate; si quis eorum presbyter, et alius non presbyter sit, primum in consensibus et suffragiis ferendis locum tenet. Secundum hegumenos vero, abbates provinciarum; deinde abbates monasteriorum, iuxta uniuscuiusque monasterii dignitatem. Tum ii qui officio abbatum vel hegumenorum defuncti sunt, eodem ordine ut supra. Demum monachi professi, servata inter eos sacerdotii dignitate et professionis prioritate.

XII. Si quando autem contigerit, ut eligatur vicarius abbatum ad hegumenorum, is locum illius tenebit, cuius vicariam potestatem gerit, ut puta, vicarius abbatis generalis primum locum ante omnes hegumenos, et sic de vicario hegumenorum et abbatum provinciarum atque monasteriorum. Reliquorum vero officiorum, ut secretarii congregationum antedictarum, socii abbatum vel hegumenorum, procuratoris generalis aut provinciae sive monasterii, et reliquorum, non alia ratio habebitur quam prioritatis sacerdotii et professionis.

I. Abbas generalis, cum totius Ordinis curam habere debeat, a toto Ordine in congregatione generali eligendus erit. Is autem ex eorum numero esse debet, qui diu in Ordine et laudabiliter vixisse perspecti sunt: cui proinde nec desit eximia probitas, nec amor erga Ordinem, nec idonea doctrina, nec, ad sustinendum tantum onus, animi corporisque firmitas, qui demum nullum ex iis impedimentis habeat, quae infra cap. *De electionibus* recensentur.

II. Cum vero canonice electus fuerit, et in sua dignitate legitime confirmatus, omnimodam potestatem habeat in Ordine nostro ad normam regulae et constitutionum. Ad eius itaque auctoritatem pertinet: — 1º, prae-

CAP. III.
De abbate generali.

esse toti Ordini, hegumenis, abbatibus et monachis omnibus, nisi quando in eadem congregatione generali de ipsius causâ pertractandum sit, ut infra de depositionibus abbatum dicitur; — 2°, in omni congregatione etiam generali suffragium abbatis generalis habet praerogativam praelationis et praecedentiae, ubi suffragia fuerint paria; — 3°, per se vel per alium potest praesidere omnibus congregationibus, visitare omnia monasteria, et quemlibet monachum de provincia ad provinciam, vel de monasterio ad monasterium transferre, exceptis hegumenis et abbatibus, omnibusque officialibus qui in congregatione generali aut hegumenorum instituti sunt, quos ab uno loco in alium transferre non poterit inconsultâ congregatione hegumenorum; — 4°, per se, vel per abbates provinciae aut monasteriorum, ad habitum recipere potest eos qui ad institutum idonei videbuntur; potest etiam eosdem dimittere, si factâ probatione minus idonei reperti fuerint; — 5°, ab omnibus abbatibus, sive provinciarum, sive monasteriorum, eorumque vicariis aut procuratoribus, ceterisque officialibus, potest rationes exigere sibi vel aliis reddendas de commissio illis officio aut regimine tum spirituali tum temporalis; — 6°, audire potest ac decidere causas omnium abbatum aut monachorum ad se appellantium a gravamine superiorum, vel aequalium vel inferiorum; — 7°, consultâ congregatione hegumenorum recipere potest ad Ordinem omnes monachos fugitivos, sive apostatas, et tam cum illis quam cum aliis monachis, qui contra regulam sive constitutiones quocumque modo peccaverint, misericorditer dispensare super poenitentia, sive partem poenitentiae sive etiam totam remittendo, prout ad eorum salutem conducere in Domino iudicaverit; potest etiam poenitentias, quae ad satisfactionem quorumcumque defectuum convenire videbuntur, iniungere, habitâ ratione personarum et aliarum circumstantiarum, quarum consideratio eius charitati cum prudentiâ coniunctae committitur; itaut rectitudinem et severitatem cum benignitate et mansuetudine misceat,

eo modo se gerendo, ut, etiam qui corripiuntur, hoc ipsum agnoscere laterique compellantur; — 8°, potest locum et vocem his, qui amiserunt, restituere, et inhabiles habilitare ad officia et gradus, nisi commississent tales culpas aut defectus tales haberent, quorum dispensatio per constitutiones congregationi generali et hegumenorum, aut per sacros canones episcopo vel reverendissimo domino patriarchae reservetur; — 9°, potest congregationem generalem etiam ante praescriptum tempus convocare ex causâ rationabili, vel post exactum terminum differre in aliud tempus usque ad biennium vel triennium, consultis tamen hegumenis et habitâ facultate a reverendissimo domino patriarcha; idem dicendum de congregatione hegumenorum, quam ipse solus convocare potest, quoties de rebus agendum est illius auctoritatem exigentibus; — 10°, potest constituere, quando videbitur sibi expedire, procuratorem apud sedem Apostolicam Romanam, et alterum apud sedem Antiochenam, qui causas Ordinis nostri nomine ipsius abbatis generalis pertractet; — 11°, potest etiam et debet vicarium suum generalem nominare et eligere, qui ipsius e vivis erepti vel legitime impediti vices gerat, tum in regimine totius Ordinis, tum in congregatione hegumenorum, aut etiam generali, usque ad novi abbatis electionem: is autem vicarius semper debet esse primus ex quatuor hegumenis: cumque contigerit abbatem generalem, ut supra, e vivis decedere, aut legitime impediri, tunc hegumenis ipsis fas esto quantum hegumenum eligendi, qui locum quarti tenebit, cum primus, ut dictum est, tamquam abbatis generalis vicarius habendus sit; — 12°, penes abbatem generalem est omnis facultas agendi quosvis contractus emptionis aut venditionis quorumlibet bonorum temporalium, tam mobilium quam immobilium, omnium monasteriorum, in eorumdem utilitatem et bonum; item nova, si offerantur, monasteria acceptare ex consilio hegumenorum et consensu episcopi ac reverendissimi domini patriarchae; alienare autem aut omnino dissolvere monasteria non poterit, sed tan-

tum ad tempus suspendere, constituto prius oeconomio, idque de consensu congregationis hegumenorum; de iis vero, quae Ordini nostro relinquuntur, si dominus certum monasterium aut determinatum pium opus non designaverit, poterit abbas generalis disponere, prout expedire ad communem Ordinis utilitatem iudicaverit; — 13°, sicut ad abbatem generalem pertinet ut Ordinis constitutiones ubique servandas curet, ita ad eum spectat non modo easdem constitutiones interpretari, quando dubium aliquod occurrerit, sed etiam, ubi opus est, in iis quae accidunt ex iustâ et legitimâ causâ cum aliquibus dispensare, regulæ finem intuenso, qui alius non est quam maius Dei obsequium, et illorum qui hoc institutum susceperunt utilitas et profectus; non est autem censendum eum dispensare, nisi expressam constitutionum mentionem faciat in quibus dispensat; non potest tamen constitutiones in congregatione generali iam approbatas omnino abrogare aut irritare; — 14°, sicut potest abbas generalis nostri Ordinis monachos ex legitimâ causâ vinculis censurarum ligare, ita plenam facultatem habet eosdem absolvendi ab omnibus censuris contractis post ingressum religionis; dummodo casus non sint reservati episcopo aut reverendissimo domino patriarchae, quorum notam apud se descriptam habebit, ut sciat limites suae potestatis, tam quoad absolutionem a censuris, quam quoad dispensationem in irregularitate; — 15°, potest casus aliquos in toto Ordine sibi et abbatibus provinciarum aut monasteriorum reservare, a quibus deputati ad audiendas monachorum confessiones, nisi habitâ ab ipso aut abbatibus licentiâ, absolvere nequeant; illos tamen debet in notâ expressos, et in congregatione hegumenorum approbatos, monachis significare; — 16°, cum abbas generalis talenta hominibus nostri Ordinis donata cognoscere debeat, officia magistrorum, praedicatorum, confessoriorum et alia huiusmodi per se distribuere potest, aut abbatibus provinciarum sive monasteriorum distribuenda committere: ad hunc autem finem curet per

abbates provinciarum et monasteriorum certior reddi de statu omnium monasteriorum bis saltem in anno, item de numero et qualitatibus monachorum: etsi vero aliis inferioribus abbatibus suam facultatem communicet, poterit tamen approbare vel rescindere quod illi fecerint, et in omnibus, quod videbitur, constituere, et semper ei obedientiam ac reverentiam ab omnibus praestari oportebit; — 17°, potest abbas generalis omnia et singula in toto Ordine facere, quae abbates provinciarum et monasteriorum in suis provinciis et monasteriis, et insuper omnia illa, quae ei per constitutiones reservantur. — Denique abbas generalis, et quicumque hac dignitate functus fuerit, potest uti mitrâ et baculo pastoralis in ecclesiis monasteriorum nostrorum tantum, extra autem illas nonnisi cum facultate reverendissimi domini patriarchae aut Ordinarii.

III. Ut officio suo abbas generalis rite fungatur, debet: — 1°, statim atque electus sit, litteras ad omnia monasteria mittere, quibus monachos ad regulæ constitutionumque observantiam sedulo cohortetur; — 2°, semel quolibet anno monasteria, saltem viciniora per seipsum, remotiora vero per se vel per vicarium visitet; adiuncto ei uno ex monachis maxime idoneis, acceptoque prius ab illis iuramento de servandâ iustitiâ et secreto visitationis, quam postea subscriptione propriâ firmatam sigilloque munitam ad se transmittant, vel personaliter accedentes exhibeant; — 3°, habeat apud se omnia documenta, quae ad Ordinem spectant; catalogum itidem omnium monasteriorum cum suis redditibus et oneribus, et alterum personarum omnium, quae in quovis monasterio versantur, ubi eorum nomina et qualitates scribantur, ita ut omnia perspecta habet, tuteque providere possit quae ad gloriam divinam pertinere iudicaverit; — 4°, rescribere quidem ad abbatem, qui ordo tenendus sit in singulis negotiis rebusque dubiis in quovis monasterio, ad abbatem generalem spectat: sed executionem ordinariis officialibus demandabit: intelligat itaque rebus universalibus sibi

vacandum esse, quæ solus ipse obire potest, ita tamen ut de gravioribus particularibus certior fieri curet; non solum autem ad res particulares, ut dictum est, ministris opus habet, sed etiam ad universales; quamobrem hegumenos frequenter consulat, eorumque congregationem in rebus magni momenti semper convocet; in eo vero monasterio, in quo residet, curabit habere apud se viros graves et instituti peritos, quibuscum conferre de rebus occurrentibus possit; — 5º, a congregatione generali eligendum erit monasterium, in quo abbatis generalis et hegumenorum ordinaria sit residentia; ab illo autem, nisi ex legitimâ causâ, abesse non poterit, nec residentiam in aliud monasterium transferre, inconsultâ congregatione hegumenorum; nullius vero monasterii ordinarium regimen per se ipsum exercebit abbas generalis; sed, si contigerit ipsum in aliquo monasterio moram trahere, quod abbate ordinario destitutum sit, illud per substitutum vicarium regere poterit, usque ad novi abbatis electionem in congregatione hegumenorum vel generali faciendam: et sicut ipse non debet abbates ordinarios a regimine monasteriorum impedire aut in illo sese immiscere; ita abbates Ordinarii debent reverentiam et obedientiam generali abbati in suis monasteriis commoranti exhibere, nihilque ipso inconsulto agere; — 6º, ab omni fastu et pompâ absteineat, tam intra monasterii septa, quam extra; nec præter unum aut duos socios secum habeat, cum e monasterio egreditur, nisi aliud necessitas suadeat; — 7º, monachos in suis gravaminibus ad se recurrentes benigne excipiat et patienter audiat; caveat tamen, ne inde ansam accipiant superiores contemnendi; sed potius curam omnem adhibeat ut subditi superioribus amorem ac reverentiam exhibeant; — 8º, si contingat, aliquid a Summo Pontifice, sive a reverendissimo domino patriarcha, decerni circa monachos nostros, curet illud diligenter promulgari et observari; utriusque etiam favorem et protectionem Ordini nostro conciliare studeat; quod idem præstet cum episcopis locorum Ordinariis, atque magistratibus lai-

cis, in quorum ditione monasteria nostra sita sunt.

I. Hegumeni quatuor in congregatione generali eligendi sunt, qui abbatem generalem in gubernatione totius Ordinis adiuvant.

Cap. IV.
De hegumenis.

II. Ad hegumenorum vero auctoritatem pertinet: — 1º, ut in omni congregatione et extra congregationem primum locum post abbatem generalem teneant; — 2º, in omnibus negotiis decidendis ad suam et generalem congregationem devolutis sententiam definitivam post abbatem generalem ferunt; — 3º, unâ cum abbate generali omnes abbates tum provinciarum tum monasteriorum constituunt, et, si opus fuerit, destituunt, vel loco abbatum defunctorum alios substituunt; idem dicendum, si quis hegumenorum obierit, possunt enim eius loco alium eligere cum abbate generali; — 4º, cum eodem abbate generali, aut eo e vivis erepto, vel legitime impedito, soli possunt quintum hegumenum eligere, qui locum quarti teneat in eo casu, quo primus hegumenus tamquam vicarius, abbate generali legitime impedito aut defuncto, toti Ordini præesse debebit, usque ad novi abbatis generalis electionem; quam, si expedire visum fuerit, possunt etiam differre, donec triennium expleatur, quo generalis congregatio convocanda erit; sic etiam possunt vicarium hegumeni deputare, si contigerit illum ex legitimâ causâ ab officii sui executione impediri; — 5º, possunt generalem congregationem convocare, quando abbas generalis in eos casus inciderit, ob quos de eius publicâ reprehensione, aut ab officii suspensione, aut etiam depositione agendum esset: modo tamen convenient suffragia trium aliorum abbatum, quos in tali casu convocare debent, et tunc suffragia maiora prævalebunt; — 6º, omnia et singula facere possunt, quæ ipsis per constitutiones reservantur.

III. Curare debent hegumeni, ut cum abbate generali perfectam concordiam et obedientiam servant: idque tum factis, tum verbis ostendant, auctoritatem ipsius apud omnes non solum conservando, sed omnibus etiam, quibus poterunt, modis au-

gendo. Ipsi vero inter se in sententiis ferendis consentiant, alterque alterum honore praeveniant. Si autem contigerit aliquem eorum in congregatione singularis esse sententiae, nemo ab illo ullam aversionem habeat vel ostendat. Quae vero in congregatione proposita aut dicta sunt, nemo illorum revelet, aut aliis indicet, sub poenâ ad libitum congregationis hegumenorum. Quae demum definientur, ea per secretarium descripta, sigillisque abbatis generalis et uniuscuiusque hegumenorum, manusque eorum subscriptione firmata, cum opus esse iudicaverint, promulgabuntur. Exemplar autem eodem modo firmatum et subscriptum, in archivo Ordinis conservabitur.

iv. Ordinaria hegumenorum residentia, quandocumque fieri potest, unâ cum abbate generali erit in monasterio per congregationem generalem deputando, a quo, inconsultâ congregatione hegumenorum, nemo illorum poterit abesse, neque ordinarium alicuius monasterii regimen exercere. Quod si contigerit quempiam eorum, ex legitimâ causâ in eâdem hegumenorum congregatione probandâ, ad monasterii regimen, sive visitationem¹ deputari, in quo officio ultra sex menses versari debeat, tunc vicarius ei ab eâdem hegumenorum congregatione substituendus erit, qui vices ipsius et auctoritatem gerat. Ut scilicet numerus quatuor hegumenorum abbati generali assistentium nunquam minuatur.

i. Abbas provinciae in congregatione hegumenorum eligitur ab abbate generali, et a quatuor hegumenis, cuius auctoritas terminis suae provinciae includitur. Provinciae autem earumque abbatum residentia in congregatione generali designentur. Eiusmodi congregationis arbitrio erit huiusmodi abbates instituere, ubi necessarii sunt, vel destituere, ubi illos supervacaneos esse iudicaverit.

ii. Singulis annis debet monasteria provinciae suae visitare per seipsum, vel, si impedimentum legitimum occurrerit, per vicarium, ut supra de abbate generali dictum est: et visitationis decreta sigillo suo manusque subscriptione firmata ad abbatem generalem transmittere.

¹ Edit. Main. legit *visitatione* (R. T.).

iii. Bis quolibet anno ad eundem abbatem generalem scribat de statu monasteriorum suae provinciae, deque numero et qualitate monachorum.

iv. Non potest esse abbas ordinarius ullius monasterii, neque debet ingerere se in regimine immediato illius monasterii, ubi residet: sed illum liberum et absolutum proprio abbati relinquere, qui tamen in omnibus primum locum abbati provinciae deferat, nihilque magni momenti eo inconsulto suscipiat et praecipienti pareat.

v. Potest monachos de uno monasterio in aliud eiusdem suae provinciae ex causâ rationabili, prout in Domino expedire iudicaverit, pro residentiâ mittere vel transferre, etiam sine consensu abbatis utriusque monasterii; ita tamen ut de hac monachorum missione vel translatione litteras patentes suo sigillo manusque subscriptione munitas conficiat. Non potest autem monachos sibi subiectos ad monasteria diversae provinciae pro residentiâ mittere vel transferre, nisi de consensu abbatis generalis. Sed pro negotiis aut necessitatibus provinciae suae, vel alicuius monasterii sibi subiecti, potest monachos de suâ provinciâ ad aliam mittere cum litteris testimonialibus, in quibus causam significet, tempusque reversionis limitet.

vi. Monachos provinciae suae neque suspendere, neque excommunicare potest, aut casum aliquem sibi in confessione reservare, sine abbatis generalis licentiâ; sed eos regere et iudicare debet ex praecepto regulae et constitutionum, in quibus dispensare nequit, eodem abbate generali inconsulto.

i. Abbas monasterii eligitur in congregatione hegumenorum ab abbate generali et a quatuor hegumenis, et a quibus etiam non expleto triennio ob legitimam causam ab officio suspendi, aut deponi poterit.

ii. Antequam officio suo fungatur, litteras praefecturae ostendat monachis, easque in publico loco legi faciat. Et, si abbas provinciae in eodem monasterio versetur, illi eas praesentet, vel earum exemplar sigillo monasterii munitum ad illum mittat, si absens fuerit. Postquam vero litterae congrega-

tionis hegumenorum lectae fuerint, monachi omnes coram eo genuflectant, eiusque tamquam abbatis benedictionem poscant. Ipse vero a praedecessore suo vel vicario eius monasterii sigillum et inventarium rerum omnium recipiat, praesente monasterii congregatione, et in cellam abbati destinatam secedat.

III. Domestica ministeria statim distribuat, officiales eligens vel confirmans, quos in Domino idoneos iudicaverit (exceptis quibusdam, quorum electio ad abbatem generalem pertinet) et suas cuique regulas tradens. Ac primo vicarium suum constituat, deinde oeconomum seu procuratorem monasterii, mox alios officiales, iuxta indigentiam et consuetudinem coenobii; eosque identidem visitet, et prout in Domino visum fuerit convenire, vel in eisdem ministeriis delineat, vel ab eis removeat: quod de reliquis officialibus intelligendum est, praeter vicarium et oeconomum: hos enim remove nequit, nisi ex consilio congregationis monachorum. Quia vero officia quaedam, ut bene fiant, experientiam requirunt, non facile mutari debent; et in hac mutationis officialium negotio vitium inconstantiae omnino vitandum est.

IV. Non potest monachos de monasterio, cui praeest, in aliud transferre: sed si necesse fuerit, consulat prius abbatem provinciae, aut abbatem generalem. Pro negotiis vero monasterii sui potest monachum ad aliud monasterium mittere cum litteris testimonialibus congregationis monachorum, in quibus causam significet, et tempus reversionis definiat. Item non potest monachos monasterii sui suspendere vel excommunicare vel casum aliquem in confessione sibi reservare, inconsulto abbate generali.

V. Semel saltem in anno visitet possessiones et bona monasterii: et quolibet mense ab oeconomio rationem accepti et expensi, praesente vicario, exigat, ut totius monasterii administrationis ratio ipsi constet, quam reddere debet unoquoque anno, semel quidem abbati generali, bis autem abbati provinciae. Ut vero nihil ex bonis monasterii depercat, debet infra sex menses suae prae-

fecturae conficere inventarium authenticum omnium rerum, quae ad illud coenobium pertinent, tam mobilium quam immobilium: eiusque inventarii duo describantur exempla, quorum alterum maneat in archivio monasterii sub duabus clavibus, in quo etiam reponantur omnes scripturae ad idem monasterium spectantes; alterum transmittatur ad abbatem provinciae vel ad abbatem generalem. Dictae autem claves sint, altera penes ipsum abbatem, aut eius vicarium, et altera apud oeconomum. Sub iisdem clavibus reponantur redditus monasterii, ita ut nihil inde possit extrahi, nihil magni momenti expendi, sine abbatis seu vicarii et oeconomi notitia.

VI. Praeter congregationem monachorum, quae saltem unoquoque mense fieri debet, alternis hebdomadis cum suis consultoribus conveniat (nisi pro re nata aliquid extraordinarie consultandum esset) deque occurrentibus negotiis cum illis agat, et quamquam, iis auditis, penes ipsum est de singulis statuendi facultas, consultores tamen benigne audiat, et praecipue eum cui monitoris officium commissum est.

VII. Praecepta, edicta et litteras superiorum diligenter legat et exequatur; babeatque librum in quo scribantur visitationes monasterii ab abbate generali aut provinciae factae, et ordinationes illorum alicuius momenti. Legat etiam eas quas praedecessor suus adnotaverit. Distinguat tamen perpetuas ab iis quae ad tempus datae fuerunt. Institutum, quod in regimine monasterii tenere debet, cognoscat, tum lectione regularum tam communium quam sui officii et aliorum qui sub eius cura sunt, tum ex observatione consuetudinum receptarum et executione ordinationum superiorum, ac demum in rebus dubiis ex recurso ad superiores.

VIII. Sit sollicitus, ne vicarius, oekonomus, et reliqui officiales suo desint officio: item curet, ut ordo, pax, unio et conformitas servetur a monachis in cella, in choro, in refectorio, et ubicumque locorum. Quare per se ipsum vel per vicarium visitet chorum, officinas et monachorum cellas. Portam monasterii claudi faciat hora competenti, cla-

vesque sibi vel vicario tradi. Discursus et vagationes monachorum maxime iuniorum, compescat. Iurgia et contentiones inter eos ortas componat. Nec permittat in monasterio esse arma vel instrumenta musica, aut libros vanos.

ix. Ordinarias tantum poenitentias delinquentibus imponere debet, quae in constitutionibus praescriptae sunt. Delegare autem poterit vicario, ut eas ipse praescribat, vel legi in refectorio praecipiat.

x. In iis, quae ad victum, vestitum, habitationem et alia necessaria pertinent, curet, ut, quamvis sit in quo virtus et sui abnegatio probetur, non desit tamen quo sustentetur natura, habitâ ratione personarum secundum Deum. Egrotorum habeatur cura magna, tam in victus ratione, quam in ceteris. Hospites tum saeculares tum religiosi benigne suscipiantur et pertractentur. Si cui particulari quidpiam ad potum vel cibum pertinens ab externo aliquo mittatur, id in communem usum accipiatur et dispensetur.

xi. Depositum pecuniae nullum prorsus admittat; aliarum vero rerum nonnisi cautiissime, dummodo sine magnâ offensione id negari non possit.

xii. Lites fugiendae, nec ullam, inconsulto abbate generali aut provinciae, vel, si absentes fuerint et urgeat necessitas, inconsultâ monachorum congregatione, intentet, aut intentatae respondeat.

xiii. Si faciendae sint expensae extraordinariae, vel fabrica magni momenti, vel monasterium aere alieno gravandum est, habitâ prius monachorum congregatione, eorumque potiori parte annuente, rem ad abbatem generalem deferat.

xiv. Etsi proprium abbatis officium est monasterium sibi commissum diligenter gubernare, neque is propter aliud quidpiam huic muneri deesse debet; si quando tamen per officii sui occupationem licebit, concionari, et confessiones audire poterit.

xv. Tam abbas quam omnes alii sacerdotes aliquando intra annum officium vel officia eorum qui monasterio inserviunt ad tempus aliquod obibunt, ad exercitium religiosae humilitatis et mortificationis.

i. Vicarius eligitur ab abbate monasterii, eiusque officium tamdiu durat, quamdiu officium abbatis; nec ab eo removeri debet, nisi de consensu congregationis monachorum. Eius autem locus sit primus post abbatem, et post eos qui abbatis generalis vel hegumenorum officio functi sunt.

ii. Munus praecipuum vicarii est abbatem iuvare in iis quae in genere vel in particulari ei commendabit; nec dispensandi, aut mutandi, aut quidquam faciendi, nisi ex eiusdem praescripto, facultatem habebit.

iii. Absente abbate omnia facere poterit, quae ipse abbas secundum regulam, constitutiones et consuetudines approbatas sui monasterii. Si vero aliquid extraordinarium acciderit, quod adeo urgeat ut commode abbas expectari nequeat, id expedire poterit vicarius auditis consultoribus, statimque redeunti abbati referat. Praesente vero abbate, eâ tantum iurisdictione utetur, quae sibi fuerit commissa.

iv. Officiales visitet, quoties opus fuerit, observando quomodo suum quisque officium exequatur. Frequenter etiam adeat cellas et alia loca monasterii, ut domus munda sit, et omnia ubique decenter suis locis composita, ac praesertim in iis quae ab externis videri solent. Noctibus singulis portas monasterii videat, an bene clausae sint, et cellas monachorum visitet, ne quis extra cubiculum vagetur. Observet etiam crebro, num aliquid desit ex necessariis, aut abundet monachis, eorumque curam potissimum habeat, qui in corporis curâ minorem de se ipsis sollicitudinem gerunt. Rationemque de rebus omnibus monasterii, quas viderit, aut executus fuerit, abbati, quoties opus fuerit, reddat et referat. Redigatque in memoriam, quae necessaria monasterio iudicabit, ut de emendis rebus ad victum et vestitum necessariis, et fratrum nimio aut exiguo labore, de sanitate, et similibus.

v. Horis omnibus divinis nocturnis et diurnis, atque sacrae liturgiae personaliter intersit, et observet an omnes adsint, et an die statuto ad confessionem et communionem accedant, aut missam celebrent. Item notet, an constitutis horis in refectorio con-

veniant, aut e monasterio egrediantur, sive ad illud regrediantur, an e lecto surgant, aut cubitum eant. Defectus denique omnes, si quos in monasterio animadverterit, vel aliunde intellexerit, et quaecumque alia ad bonam gubernationem sibi occurrerint, abbati referat.

vi. Singulis hebdomadis disponat officia monasterii, tabulasque conficiat ministrorum chori et ecclesiae, horasque missarum inter sacerdotes distribuat. Quam quidem tabulam, ab abbate approbatam, in loco patenti exponat, aut in refectorio legendam curet. Ipse vero sibi hebdomadam, tam in choro quam in missis canendis, sicut et reliquis fratribus tribuat.

CAP. VIII.
De oeconomo
seu procuratore
monasterii.

i. Oeconomus sive procurator ab abbate monasterii constituitur, eiusque officium est res temporales monasterii curare et administrare, omniaque tempestive providere, quibus monachi indigent.

ii. In primis igitur nosse debet bona omnia monasterii, tam mobilia quam immobilia, agros, vineas, prata, oliveta, greges ovium, et his similia; quorum inventarium penes se habebit, quaeque saepe cum socio visitare debet, ne quid detrimenti ex ipsius negligentia capiant.

iii. Proventus quoscumque monasterii et eleemosynas, quas ipsum abbas exigere iubebit, exigat et recipiat: syngraphas vero solutionis, quando opus fuerit, ipse dabit subscriptas ab abbate, aut a se ex illius commissione. Utque id facilius assequatur, proventus omnes, et tempora quibus colligendi sunt, in peculiari libro scribat, et seorsim etiam quascumque res aut pecunias ex fructibus monasterii perceperit, addito a quibus et quando eae provenerint. Eleemosynae autem alio in libro scribantur.

iv. Singulis mensibus dati et accepti rationem abbati reddat, debitaque et credita monasterii prorsus intelligat. Nunquam vero oekonomus debita contrahat, sine expressa abbatis licentia. Vicissim singulis mensibus exigat rationem ab officialibus villarum, praediorum, pecorum et similium.

v. Pecunia, undecumque ea provenerit, si alicuius momenti fuerit, iudicio abbatis

in arca reponatur ad id designata. Huius abbas clavem unam, et ipse oekonomus alteram diversam custodiat. In eadem liber asservabitur, in quo scribetur pecuniae summa, tam eius quae inferitur, quam eius quae effertur. Si quando autem, cogente aliqua necessitate, pecunia in arcam non inferretur, nihilominus accepti et expensi summa in eodem libro statim scribatur. Quotiescumque vero ex arca pecuniam accipiet, eius summam et diem in libro suarum rationum adscribat; in alia vero libri parte expensi ratio constet.

vi. Diligenti cura asservabit in archivo ad hoc designato instrumenta originalia, quibus constet de iure eorum quae a monasterio possidentur: chirographa, syngraphas, inventaria et alia huiusmodi. Et archivi quidem clavem unam ipse habeat, abbas vero alteram diversam.

vii. Advertat, num ea, quae a monasterio possidentur, reparatione indigeant, ut ad abbatem referat. Si quid autem vendendum videretur, eodem inconsulto ne faciat.

viii. Curet, ut res omnes, praecipue diu duraturae, tempestive et quamopportune emantur, ne has non perinde bonas, aut non aequo pretio cogatur comparare. Caveat etiam, ne, dum nimium pecuniae parcit, non bonas, aut insalubres res emat. Videat autem, num ea, quae empta sunt, illaesa conserventur: atque animadvertens aliqua non ut oportet conservari aut expendi, abbatem aut vicarium admoneat.

ix. Emptori pecunias ad quotidianos sumptus ministrabit, a quo singulis diebus expensarum exigat rationem ex codice: summam vero in librum suum ipse referet. Emptor vero, quid empturus sit, ab abbate seu eius vicario intelliget: resque emptas cellerario tradat, sive in cellarario reponendas, sive coquo committendas.

x. Cum extraneis contra decentiam status monastici negotiari non praesumat.

xi. Curet, ut saeculares, tam in monasterio, quam in praediis eius servientes, honeste et christiane vivant: cogat omnes ut diebus festis et dominicis sacrae liturgiae

et divinis officiis intersint, et in festis solemnioribus sacramenta confessionis et communionis frequentent. Mercedem itidem debitam suo tempore iis persolvat. Querelas eorum libenter audiat; causas vero nunquam sine abbate iudicet. Neque eos insolitis poenis et oneribus aggravet, neque plus uni quam alteri eorum faveat. Quando vero aliquis eorum dimittendus sit, id fiat cum omni charitate et cum plenâ eius satisfactione quoad debitum stipendium.

xii. Ita demum oeconomus rerum temporalium sollicitudinem gerat, ut a monasticae vitae perfectione animum non relaxet. Quare orationem, ieiunium, ceterasque religiosi instituti disciplinas, quoad fieri poterit, non secus atque reliqui monachi, colere debet; saeculares vero, quibuscum conversatur, verbo et exemplo aedificare studeat.

xiii. Sicut ad abbates monasteriorum pertinet res temporales sibi commissas per oeconomum curare, ita poterit abbas generalis, si id expedire cognoverit, constituere oeconomum generalem, qui illum in conservandis bonis temporalibus totius Ordinis opportune adiuvet.

i. Abbas suos habeat consultores, tres saltem monachos senes, et in religiosâ perfectione exercitatos, quorum consilio et relatione adiutus, melius et facilius gubernare possit.

ii. Qui huic muneri deputabuntur, sint amatores boni communis, illudque in omnibus consultationibus prae oculis habeant.

iii. Cum abbas, illis auditis, aliquid statuerit, iudicium suum illius iudicio submittent, neque extra consultationem, aut quid statutum fuerit, sibi displicere, aut se in aliâ fuisse sententiâ significabunt, sed laudent potius abbatis consilium apud alios, atque tueantur. Quod si ob rei gravitatem ad abbatem generalem id esse deferendum iudicarent, re mature consideratâ et oratione praemissâ, faciant.

iv. Si quid tamen in mentem venerit, quod ad commune bonum vel alicuius personae particularis utilitatem pertineat, poterunt id abbati proponere.

v. Si quid circa victum, vestitum, labores et occupationes monachorum, aut circa gubernationem abbatis, moderandum, augendum vel mutandum censerent, illum praemissâ oratione admonendum curent, quod per admonitorem faciant.

vi. Si quis cum eis de difficultate aliqua suâ aut perturbatione agat, ita eum suis monitis et consilio iuvare studeant, ut semper, quantum possint, existimationem abbatis tueantur.

vii. Ita suum munus exequantur, ut nullam gubernationis partem sibi assumant, atque eâ submissione se gerant ut ceteris obedientiae exemplum praebeant.

viii. Singuli consultores bis in anno ad abbatem generalem aut provinciae de statu monasterii¹, et si quid esset corrigendum aut mutandum, eidem exponant; atque hae litterae a seniore inter eos obsignatae mittantur.

ix. In monasteriis frequentioribus poterit unus ex consultoribus designari ab ipso abbate, qui admonitoris nomen habebit:² officium erit admonere abbatem de iis quae consultores ei dicenda iudicaverint. De aliis vero, quae sive ipsi in mentem venerint, sive ab aliis monachis suggerentur, non facile eum admonebit: sed de iis dumtaxat, quae non levis momenti post orationem esse censuerit, sive ad officium abbatis pertinebunt. Et quorum abbatem admonuerit, meminerit ea tacitus apud se servare.

i. Eligantur ab abbate generali, vel ab abbate provinciae, in singulis monasteriis duo saltem graves et docti monachi, qui admittendos ad praedicationem verbi Dei vel ad audiendas confessiones etiam ipsorum monachorum, ac magistros publicos, et promovendos ad quoscumque ordines diligenter simul examinent, antequam probentur et ad huiusmodi ministeria vel ordines admittantur.

ii. Qui ad praedicationis officium admissi sunt, debent primo sacram Scripturam semper prae manibus habere, legere, et, quoad fieri poterit, quotidie aliquid memoriae man-

¹ Forsan deest verbum *scribant* (R. T.).

² Videtur deesse *eius* vel *cuius* (R. T.).

dare. Legant etiam expositiones patrum in utrumque testamentum, vitas sanctorum, historiam ecclesiasticam, opera ascetica patrum, conciones, homilias doctorum virorum, et alia similia, quibus evolvendis residuum temporis, quod ab officio divino aliisque spiritualibus et corporalibus exercitiis remanserit, impendant. Deinde nunquam sine praeparatione concionem faciant, sed illam prius scripturae commendent, et sedulo memoriae tradant.

III. Extra monasterium nemini monachorum fas erit concionari, aut docere, aut confessiones audire, sine expressa episcopi ordinarii licentia: cum vero ad aliquod oppidum vocati fuerint, dabunt operam, ut primo episcopi, chorepiscopi, aut parochi benevolentiam sibi comparent: deinde caveant discursum per domos, sed in aedes alicuius pii et exemplaris ecclesiastici se recipiant, ibique paupertatem religiosam in cibo, potu et ceteris omnibus servant, modestiae et gravitati coniunctam.

IV. Media autem spiritualia, quibus, iuxta nostrum institutum et abbatis beneplacitum, uti poterunt, haec fere sunt: ministerium verbi Dei in praedicationibus, privatisque exhortationibus et colloquiis; sacramentorum confessionis et eucharistiae administratio; exercitiorum spiritualium traditio; dissidentium reconciliatio; casuum conscientiae et sacrorum rituum ad ecclesiasticos privata explicatio; christianae doctrinae ad pueros aliosque rudes publica declaratio.

I. In omnibus monasteriis designandus erit praefectus rerum spiritualium, cuius munus sit confessiones monachorum excipere, eorumque profectum in spiritu promoveri.

II. Cognitionem itaque instituti habeat, et zelum boni progressus fratrum, quem procurare debet verbo et exemplo: amabilem praeterea se eis exhibeat, ut ad eum omnes confugiant, confidenterque sua omnia detegant, et ab eo consolationem et auxilium sperent in Domino.

III. Instruat monachos privatim, secundum uniuscuiusque captum: praesertim ut puram

1 Edit. Main. legit ut pro uti (R. T.).

intentionem divini servitii habeant et familiaritatem cum Deo in spiritualibus devotionis exercitiis.

IV. Petat quem procedendi modum in oratione habeant, et an contra suos defectus examen particulare observent, et an contra inordinatos affectus propria remedia adhibeant, et in solitis virtutibus acquirendis, praesertim obedientia, amore Dei et proximi, quibus utantur mediis, et de poenitentiis et aliis pietatis exercitationibus.

V. Versatum eum oportet esse in lectione librorum spiritualium, et unicuique decernat tempus et modum cum fructu eos legendi.

VI. Peculiarem curam habeat consolandi afflictos, et tepidos exhortandi, remedia pro cuiusque necessitate adhibendo, qualia sunt: frequentius Confessionis et Eucharistiae sacramenta obire, plus temporis orationi impendere, plus aliquid poenitentiae assumere, libros aliquos spirituales legere, et similia. Praecipuam vero curam adhibeat circa monachos laicos, novos praesertim et infirmiores, ut quieti sint et sorte Marthae contenti, dirigatque eos ubi opus fuerit. Praeter eos vero, quos satis instructos abbas iudicaverit, cum unoquoque agere de his ultra mensem non differat. Saepe vero consideret, quem fructum bonorum operum ex oratione et meditatione et ex reliquis rebus spiritualibus colligant, ut in dies magis in Domino proficiant.

VII. In his omnibus videat, ne ordo unicuique praescriptus impediatur, nisi cum abbas aliter iudicaverit.

VIII. Curam habeat novitiorum, si qui in monasterio fuerint, nisi ab abbate aliunde prospectum sit; et erga eos observare studeat quae iuxta regulas magistri novitiorum observari commode poterunt.

IX. Confessiones monachorum audiet; et, si abbas indicaverit eidem alium vel alios adiungere, poterit, non autem plures quam quatuor, et quidem in frequentioribus monasteriis tantum.

I. Praefectus ecclesiae ab abbate constituitur, cuius officium est res ecclesiae et chori custodire, et curare ut divina officia suo tempore decenter ac debite fiant.

CAP. XI.
De praefecto
rerum spiritua-
lium.

CAP. XII.
De praefecto
ecclesiae.

ii. In primis habebit inventarium rerum omnium ad ecclesiam et chorum spectantium tam in libris quam in sacris vestibus et vasis aliisque: cuius inventarii duo exempla erunt, alterum penes ipsum, alterum in archivo monasterii, in quo scripturae et instrumenta asservantur. Et quando novus ecclesiae praefectus instituitur, coram abbate et oeconomo rationem rerum omnium iuxta inventarium exiget a praedecessore.

iii. Librum etiam habeat dati et accepti pro ecclesiae expensis, ut rationem abbati unoquoque mense reddere possit.

iv. Eleemosynas quocumque modo obvenientes, et pecunias pro manutentione ecclesiae collectas, apud oeconomum deponat, ut in arcâ reponantur, cuius clavem unam habeat abbas, alteram ipse oeconomus. Quae vero pro missis celebrandis oblatae fuerint, diligenter describat in tabellâ sacristiae, ut missae dicantur secundum intentionem benefactorum; et notetur in libro, quo die et a quo sacerdote earumdem oneri fuerit satisfactum.

v. Satagat, ut necessaria ad divinum cultum non desint, ut altaria sint munda et bene praeparata, atque ut vasa sacra, ornamenta, libri et cetera omnia in suis locis apte reponantur et conserventur, panni omnes linei semper mundi servantur, et separatim corporalia et purificatoria laventur. Saepe etiam res pretiosiores visitet, ne aut laedantur aut amittantur. Templi, paramentorum, librorum instaurationes curet, sicut ab abbate fuerit praescriptum. Nihil vero eorum extrahere e monasterio, aut cuiquam alteri ecclesiae vel monasterio, etiam nostrae congregationis, commodare poterit, sine congregationis monachorum licentiâ.

vi. Det operam ut nullo modo lumen desit ante sanctissimum Eucharistiae sacramentum, neque interdiu, neque noctu, ubi illud asservari contigerit. Oleum sanctum, ut oportet, asservatum singulis annis renovandum curet, et sanctorum reliquias in vasculo ad id deputato decenter custodiat. Si quando autem devotionis causâ ostendenda erunt, duo cerei accendantur.

vii. Curet ut hostiae mundae sint et in vase decenti repositae; item vinum, quod ad sacrificium paratur, sit bonum et merum, eoque ipso die haustum; similiter et aqua et ampullae sint mundae; et thuribula identidem a fuligine extergat.

viii. Qualibet hebdomadâ catalogum conficiat, quo dies festi ac ieiuniorum proximae hebdomadae describantur, et horae missarum inter sacerdotes distribuuntur: vices quoque hebdomadariorum, ministrorumque, tam in divinis officiis, quam in missâ solemnibus celebrandâ, notentur. Eum porro catalogum ab abbate seu eius vicario approbatum in loco patenti affigat, aut in refectorio recitandum curet in prandio sabbati. Det autem operam, ne plura simul sacra inchoentur, sed commode omnia suis spatiis distinguantur. Curamque gerat missarum perpetuarum, quae pro benefactoribus annuatim celebrandae sunt, easque referat in tabellam, quae appendenda erit in sacristiâ. Ubi et in aliâ tabellâ notari debent casus superioribus reservati, et indulgentiae, si quae sint concessae.

ix. Ante missam et psalmodiam chori, signa ipse pulsabit: quod etiam faciet, cum primum quis ex fratribus vitâ functus fuerit, ut omnes eius animam commendent. Lumina tam in choro quam in dormitorio fratrum accendet.

x. Per se, vel per alium ab abbate designatum, promovendos ad sacerdotium instrui curet, et videat an omnes observent statutas caeremonias. Si quem defectum animadvertit, ad abbatem referat, vel ipse emendet. Notet etiam qualibet die nomina sacerdotum celebrantium, ut id abbati aut vicario referat.

xi. Externos sacerdotes ad sacrum faciendum non admittat, nisi intelligat eos a legitimis superioribus habere facultatem, cuius testes Ordinarii litteras cum ii exhibuerint, humanissime illos excipiet, et distinctis etiam pro uniuscuiusque dignitate paramentis indui curet. Saeculares quoque ad ecclesiam nostram adventantes benigne tractet.

xii. Habeat sibi subiectum aedituum monachum, maxime in frequentioribus mo-

nasteriis, cui vices suas in rebus minoris momenti committet, dum ipse in gravioribus occupatur.

Cap. XIII.
De praefecto
bibliothecae.

I. In maioribus nasteriis designandus erit monachus sacerdos, qui librorum curam habeat.

II. Omnium itaque librorum nasterii catalogum describat; utque libri unius nasterii ab aliis distinguantur, in primo cuiusvis libri folio haec verba notet: *Hic liber est nasterii N. Ordinis sancti Antonii Congregationis S. Isaiae.*

III. Nullum librum ex bibliotheca cuiuspiam monachorum dabit sine abbatis licentia, neque externo cuiuspiam sine licentia congregationis monachorum; et advertat, ne quis librum, etiam cum licentia, se inscio accipiat. Fratres autem, quibus aliquem librum tradet, propria manu scribant in codice, quo die et quem librum acceperint: cumque illum restituerint, notam deleant, aut e regione restitutio eius notetur. Quod si externis librum ex licentia, ut supra, dederit, ipse bibliothecarius in codice notabit diem, personam et tempus, quo liber sit restituendus.

IV. Monachos ad bibliothecam non admittat sine licentia, multo minus externos.

V. Abbatem moneat, si quos libros pro nasterio necesse sit comparare: nullum autem librum donare, vendere vel oppignorare poterit sine expressa congregationis monachorum licentia.

VI. Curet ut bibliotheca munda sit et composita, quam semel in hebdomada verret, et ex libris pulverem excutiet. Caveat etiam, ne libri humiditate aut alia re laedantur.

VII. Semel in anno librorum rationem dabit abbati iuxta inventarium bibliothecae: quod et praestabit, cum alter in eius locum succedit.

Cap. XIV.
De socio et
sigillo abbatis
generalis, hegumenorum, et
abbatis provinciae, atque coenobiarchae.

I. Abbas generalis, hegumeni et abbates provinciae ac nasterii deligant sibi ex monachis professis socium, qui secretarii munus gerat, ipsosque in litteris scribendis adiuvet, exeuntesque e nasterio comitentur.

II. Unusquisque ex dictis abbatibus et hegumenis sigillum proprium habeat, quod

in cella sua diligenter custodiat cum imagine, si fieri potest, sancti patris Antonii magni, aut emblemate figuram Tau repraesentante, et cum inscriptione officii quo unusquisque fungitur, videlicet: — *sigillum abbatis generalis Ordinis sancti Antonii Congregationis S. Isaiae*: — *sigillum primi (vel secundi, vel tertii, vel quarti) hegumeni Ordinis sancti Antonii Congregationis S. Isaiae*; — *sigillum provinciae N. Ordinis sancti Antonii Congregationis S. Isaiae*; — *sigillum nasterii N. Ordinis sancti Antonii Congregationis S. Isaiae*. Idque duplex sit; alterum maius, cuius usus erit in rebus magni momenti, et alterum minus, quo in rebus communibus utentur.

III. Nullus monachus litteras suas alio sigillo firmabit, quam abbatis nasterii.

IV. Ad officium socii et secretarii electus, quaecumque audierit, legerit aut scripserit, debet profundo silentio celare, nec, nisi urgente necessitate, a communibus nasterii officiis vacare.

I. In singulis nasteriis constituendus erit infirmarius, vir pius et patiens, qui curam habeat infirmorum: quorum aegritudo simul atque ei indicata fuerit, si censuerit rem esse alicuius momenti, abbatem aut vicarium admoneat.

II. Studeat, ut, quae aegrotanti danda sunt, ea et opportune emanent, et bona sint, et bene praeparata ministrentur.

III. Curet ut aegrotorum cubacula sint valde munda, et lecti concinne sternantur.

IV. Aegrotum consolari et exhilarare studeat verbis spiritualibus et laetis. Habeat etiam libros, quorum lectione aegroti recreari et iuvari in spiritu possint.

V. Quaecumque aegrotantium usui necessaria esse iudicabit, habere curet, et in loco convenienti custodire.

VI. A medico praescripta exacte servet: dies aegrotationis et horam febris advertat, tum ut medicum et superiorem admoneat, tum ut cibum tempestive praebeat.

VII. Si morbus sit contagiosus, supellex separari debet, ne cuiquam noceat.

VIII. Convalescentes e lecto surgere non permittat, priusquam id medicus concesserit.

Cap. XV.
De infirmario.

ix. Patientiae et cbaritatis erga aegrotos meminerit. Quare curabit, ne debita ministeria aegrotis desint.

x. Morbo ingravescente, abbatem moneat, ut aegrotus, antequam iudicii usu privetur, omnia sacramenta accipiat. Quod si aegrotus diu, licet sine periculo, decumbat, curet ut octavo quoque die communicet, nisi aliqua ratio iudicio abbatis impediat.

xi. Instante mortis articulo, sive proximo periculo, abbatem admoneat ut orationibus omnium fratrum valde peculiaribus infirmum iuvare faciat, atque eo magis, quo morti propinquiorem viderit, et ut morienti quo plures poterunt ex fratribus adsint, qui convenientibus illi articulo auxiliis moribundum iuvent. Et cum primum vitâ functus fuerit, praefectum ecclesiae seu aedituum admoneat ut consuetum signum pulset.

xii. Provideat ut mortuorum fratrum corpora ad sepulturam praeparentur, et ut spatio unius diei naturalis decenter super terram teneantur.

xiii. Non infirmis tantum praesit, ut dictum est, sed sanorum etiam curam gerat in iis quae ad sanitatem conservandam spectant. Quare eius munus est observare, num quis ex nimia fatigatione corporis aut spiritus plus aequo laboret, vel aliâ de causâ morbi periculo se exponat. Et, si in cibis, aëre, frigore, aut aliâ quapiam in re aliquid probabili ratione animadvertat, quod communi omnium vel alicuius saluti obesse possit, abbatem admoneat.

Cap. XVI.
De ianitoribus.

i. Monasterium perpetuo sit clausum, clavisque in portâ non relinquatur: ac propterea ianitor ab abbate constituatur monachus mansuetus, humilis, patiens et sedulus, qui ianuae custodiendae semper assistat, eamque nemini monachorum aperiat, nisi socium et exeundi licentiam obtinuerit. Nullus autem e monasterio egrediatur, nisi cum socio, licentiâque petita ac impetrata, et benedictione acceptâ ab abbate seu vicario, aut, in horum absentia, ab antiquiore ex professis.

ii. Vocantibus cito adsit, et respondeat: non tamen prius portam aperiat, quam per fenestram videat qualitatem personae adve-

nientis. Quae si eius conditionis fuerit ut paucis verbis expediatur, id faciat cum omni humanitate. Si vero fuerit persona gravis aut religiosa, portam aperiat, interroget quid velit, ad locum honestum ad id destinatum intromittat, et sine morâ significet abbati.

iii. Neminem monachorum sine facultate abbatis ad ianuam vocet, nec, nisi urgeat necessitas, ianitor licentiam pro illo vocando ab abbate petat, aut abbas illam det, cum tempus sit divini officii in choro, prandii, coenae, silentii, aut congregationis. Nec facile idem abbas licentiam dabit introducendi saeculares in claustra monasterii, et multo minus in dormitorium fratrum, nisi sint magni viri, aut praelati.

iv. Monasterii portas ante noctem claudat ianitor. Exinde vero eas nullius causâ aperiat, inconsulto abbate. Et antequam cubitum eat, claves eidem tradens, si quis foris maneat, illi renunciabit. Abbas vero aut vicarius quandoque de nocte eas observet.

v. Litteras omnes et schedulas, et quaecumque alia domesticis mittuntur, abbati reddat, ut ea videat, et ad eos, ad quos diriguntur, si velit, transmittat. Caveat etiam, ne alicuius domestici litteras, aut quid simile, externis det sine¹ iussu abbatis.

vi. Nihil custodiendum a quopiam extra-neo recipiat, abbate inconsulto.

vii. Si pauperes ad ianuam eleemosynae causâ accedere contingat, cum iisdem benigne se habeat, et sedulo quaerat quid eis erogari possit, iuxta abbatis arbitrium.

viii. Mulieres, si quando ad ostium accedant, paucis verbis dimittat; aut, si pluribus opus esse videretur, in ecclesiam, si extra monasterii claustrum sit, ad aedituum eas mittat, ubi ipsis responderi poterit, aut aedituum seu abbatem vocet, ut earum negotia expediant, prout res postulaverit.

ix. Si quis eleemosynam ad ianuam dabit, eam oeconomo statim tradet.

x. Loca portae vicina munda servet, et ut iuxta ianuam omnes submissâ voce loquantur curet.

xi. Ut ianitor ad portam sollicitus assistere possit, primo post persolutas matuti-

¹ Edit. Main. legit *in* pro *sine* (n. 7.).

nas horas sacrificio intersit. Cum autem cibum sumit, aut in aliquo ministerio intra vel extra monasterium occupatur, alius ab abbate seu vicario ad custodiam portae destinatur.

CAP. XVII.
De custode
vestium.

I. Servare debet omnem suppellectilem, sive lineam, sive laneam, et quidquid ad indumenta, et, ubi opus fuerit, etiam ad calceamenta attinet. Quae diligenti curâ, ut res pauperum Christi, custodiet in loco ad id destinato.

II. Inventarium rerum, quae ipse custodit, si alicuius momenti sint, in libro habeat. Et seorsim scribat quae de novo sunt, ut abbati sui muneris rationem reddere queat.

III. Vestes ordine dispositas servet; ne corrumpantur, videat, et resarciendas etiam curet. Quas vero non amplius usui fratrum futuras iudicabit, eas abbati ostendat, ut ille de iis statuât.

IV. Quae singuli novitii ad monasteria attulerint, ea alicubi separatim asservet, donec professionem emittant.

V. Singulis mensibus cellas visitabit, ut, ex abbatis arbitrio, si quid eis desit, suppleri possit. Si quid etiam superfluum invenerit, vestes duplices, instrumenta itineris, et similia, in vestiariâ officinâ custodiantur.

VI. Inspiciat etiam quinam vestibus indigeant, ut abbati referat: eo vero inconsulto, nihil cuiuspiam dabit.

VII. Linei panni lotori, sive externus ille sit, sive domesticus, scripto numero dentur et accipiantur.

VIII. Tunicae singulorum, quae staturae induentium convenire debent, signis particularibus internoscantur, ne eas permisceri contingat.

IX. Sabbati vespere linea munda per omnes cellas distribuât: dominicâ vero die, mane, ex eisdem cellis immunda colliget; et an omnia, quae dederat, recipiat, animadvertat.

CAP. XVIII.
De cellarario.

I. Custodiendis in monasterii cellario victualibus ab abbate cellararius deputetur, vir sobrius et non prodigus: idemque curam habeat omnium eorum quae ad cibum et potum spectant, singula in locis suis reposita et clausa servans.

II. In rebus distribuendis iussu abbatis

sequatur: et quamvis communiter aequalitatem inter omnes servare debet, habeat tamen infirmorum, convalescentium, eorumque qui laboriosa opera exercent, rationem, prout ei fuerit ab abbate praescriptum, sine cuius arbitrio neque ientaculum, neque aliud quidpiam ulli concedet.

III. Antequam penitus absumantur victualia quae in monasterio reconduntur, abbatem admoneat ut tempestive per oeconomum providere possit.

IV. Curet munditiem tam cellarii quam rectorii, eorumque omnium quae eius usibus serviunt, utque mensae rebus necessariis paratae sint, cum refectionis signum dabitur.

V. Catalogum habeat rerum quae ad cellarium et ad refectorium pertinent; alterum etiam eorum quae per hebdomadas aut menses debet fratribus ministrare tam in cibo quam in potu; tertium denique eorum qui mensae ministraturi sunt.

VI. Quae ex mensâ supersunt, colliget, atque coquo tradet, qui illa conservabit, memor paupertatis, ut de domesticis et externis pauperibus usui esse possint iuxta praescriptum abbatis.

CAP. XIX.
De coquo.

I. In iis omnibus quae ad suum munus pertinent, munditiem servet ipse, et ab aliis servandam curet: detque operam ut omnia recte et opportune parentur, ea praesertim quae ad aegrotos pertinent.

II. Semihorâ, aut saltem quartâ horae parte, antequam in mensâ sit sedendum, praeparati omnes cibi esse debent.

III. Circa qualitatem et quantitatem, ordinem ab abbate praescriptum sequatur.

IV. Coquere, aut aliud quidpiam pro aliquo particulari parare, infirmario tantum excepto, neminem sinat, neque ipse faciat sine abbatis facultate.

V. Scriptum in codice habeat catalogum rerum, quarum est usus in coquinâ, quas ipse servare debet.

VI. Diligentiam in rebus, quas consumit, adhibebit, ne quid non necessarium insumatur contra paupertatem religiosam.

VII. Si quem adiutorem haberet, satagat ut eum verbo et exemplo aedificet, praesertim novitios.

CAP. XX.
De hebdoma-
dario mensae.

I. Abbas monasterii, seu eius vicarius, singulis hebdomadis catalogum faciet, quo, per turnum monachorum omnium qui legere norunt, notetur hebdomadarius mensae.

II. Officium hebdomadarii mensae est libros ad mensam legere. Ab hoc officio eximitur abbas monasterii.

III. Hebdomadarius mensae libros pro lectione ante mensam apertos habeat; et quando leget, attendat in quo emendetur ab abbate aut vicario; et emendatus assumat cum humilitate, et repetat, prout emendatus fuerit. Ad signum abbatis aut vicarii finiet lectionem; libri autem, qui legentur, sunt: Sacra Scriptura, vitae sanctorum, historia ecclesiastica, et opera ascetica, quae ab abbate assignari debent, servato ordine, ut primum legantur aliquot versiculi ex Scripturâ, deinde succedat lectio ex vitis sanctorum, aut ex historiâ ecclesiasticâ, et claudatur lectione alicuius tractatus ascetici.

PARS QUARTA.

CAP. I.
De congrega-
tione generali.

I. Congregatio generalis de triennio in triennium celebretur, nisi forte ob aliquam urgentem necessitatem esset anticipandum tempus aut prorogandum ex decreto congregationis hegumenorum, quod debet opportune toti Ordini significari. Casus autem, ob quos congregatio generalis prorogari vel anticipari potest, sunt: — Primo, mors abbatis generalis, aut eius ad altioris dignitatem promotio, aut quando de eiusdem depositione, suspensione vel publicâ reprehensione agendum sit, ut dictum est supra parte III, cap. IV, n. II: — Deinde publica rerum regionumque perturbatio ob pestem vel bellum, aut propter persecutionem infidelium vel haereticorum vel schismaticorum, aut communem totius Ordinis vel principalium potiorumque monasteriorum necessitatem, quae iudicio congregationis hegumenorum urgens visa fuerit: in quo nihilominus casu significandum id erit abbatibus monasteriorum.

II. Penes abbatem generalem est congregationem indicere, eique praesidere usque ad successoris electionem. Si vero ipse mortuus fuerit aut promotus, aut de ipsius

causâ consultandum sit, tunc ad hegumenos spectabit illum indicere, eique praesidere usque ad novi abbatis generalis electionem, aut veteris probatam innocentiam: servatâ semper vicarii generalis inter hegumenos praeeminentiâ, ut dictum est alibi. Vivente tamen abbate generali, etiam quando de ipsius causâ agendum est, in litteris, in quibus ab hegumenis congregatio indicetur, nomen eiusdem abbatis praeponatur nominibus hegumenorum.

III. Duobus saltem mensibus ante diem quo celebranda erit congregatio, indicatur per encyclicas epistolas ab abbate generali et hegumenis subscriptas, et ad omnia nostri Ordinis monasteria missas. Si quod vero monasterium longius distet, tot mensibus ante indicenda erit, quot sufficere videbuntur iudicio hegumenorum. Dies autem congregationis celebrandae destinari solita, est XV octobris, qua Ordinis nostri congregatio instituta fuit.

IV. Ad congregationem generalem vocandi erunt, eique interesse, et in eâ vocem habere poterunt, praeter abbatem generalem et quatuor hegumenos eorumque vicarios (si qui antea electi fuerant), abbates omnes tam provinciarum quam monasteriorum, et cum unoquoque abbate socius a congregatione monachorum illius monasterii electus; quotquot praeterea officio abbatis generalis vel hegumenorum functi sunt, modo non fuerint ob defectus aliquos depositi. Iis autem unumquodque monasterium de necessario viatico providebit, tam in eundo quam in redeundo, ob quem finem a primoribus tum ecclesiasticis tum saecularibus illius provinciae abbates eleemosynam colligant, et eam secum deferant.

V. Si quis abbas, vel officio abbatis generalis aut hegumeni defunctus, ob legitimum impedimentum a congregatione monachorum probandum, per se ipsum adesse nequiverit, mittat monachum idoneum, qui vices suas in congregatione generali suppleat, habeatque locum in congregatione tamquam absentis procurator. Qui vero propter contumaciam vel inanes causas adesse neglexerit, cognitâ et declaratâ eius causâ in congre-

gatione generali, excommunicetur; et monachi ab eius obedientia absolvantur: socii autem abbatum, qui in congregatione monachorum electi fuerint, neminem possunt sibi substituere, nec suae electioni renunciare.

vi. Nemo in congregatione generali vocem habeat, nisi sex annos in Ordine compleverit, inchoando ab annis probationis, et nisi triginta annos aetatis saltem inchoatos habeat. Item nemo in monasterium ad celebrandam congregationem destinatum intret, nisi tribus diebus antequam inchoanda sit congregatio, exceptis iis qui ex longinqua regione per mare veniunt. Qui ad congregationem venerint sine licentia, per totum tempus, quo congregatio durabit, detineantur in loco poenitentiae; congregatione autem terminata, decernat de eis congregatio hegumenorum. Si quis vero querelas habeat ad congregationem deferendas, mittat eas cum abbate vel eius socio propria manu subscriptas.

vii. Unusquisque abbas ad congregationem veniens, aut vicarium suum mittens, debet afferre secum, vel cum vicario mittere: 1° Sigillum monasterii; 2° Catalogum, in quo descriptus sit numerus monachorum vivorum, et quot defuncti sunt post ultimam congregationem, et quot recepti; 3° Rationem dati et accepti toto regiminis sui tempore. Socius vero abbatis debet secum afferre: 1° Litteras monachorum de auctoritate deputatione; 2° Querelas eorundem, si quae erunt.

viii. Abbas generalis, vel, eo absente, hegumeni, opportuno tempore provideant de rebus ad celebrandam congregationem necessariis. Quare: 1° Abbatem monasterii, in quo congregatio celebranda est, vel, eo absente, monachum alium constituent, qui oeconomus congregationis generalis nomen gerat, curetque ut locus congregationi opportunus praeparatur, ut adsint victualia, lecti et quaecumque ad receptionem monachorum hospitum necessaria sunt; 2° Deputent duos saltem confessarios cum facultatibus opportunis, necnon unum scribam congregationis qui suffragia notabit et litteras ad congregationem directas coram

omnibus legat; unum praeterea aedituum, qui curam habeat sacelli ubi congregatio fiet, et unum ianitorem, qui portas congregationis observabit. Hi vero omnes, praeter abbatem supradictum, idest confessarii, scriba, aedituus et ianitor, debent esse ex eorum numero qui suffragia non habent in congregatione. Reliqua autem coenobii ministeria, tam in ecclesia quam in choro et refectorio, per eiusdem coenobii monachos diligenter obeantur, nec congregationis praetextu quidquam ex regulari disciplina omittatur.

ix. Cum dies assignata advenerit, non obstante cuiuscumque absentia, congregatio incipiat. Cognitores autem suffragiorum sunt: 1° Abbas generalis; 2° Quatuor hegumeni; 3° Duo ex monachis congregationis a communione vocalium electi, in quorum tamen electione neque abbas generalis, neque hegumeni vocem habebunt.

x. Congregatio generalis per septem dies durabit. Singulis autem diebus, post cantata divina officia et celebratam sacram liturgiam, scrutinium fiet, cui praemittetur sermo paraeneticus ab abbate generali aut alio quopiam ad conventum monachorum per semihoram.

xi. In primo triduo, Ordinis statum examinent, seduloque explorent, si quid supplendum aut resecandum sit. Singulisque permittitur, quodcumque apud se statuerint, suggerere abbati generali aut hegumenis, qui monachorum suggestiones in commentarium relatas coram congregatione recitabunt. Interim hegumeni iussu abbatis generalis a monasteriorum abbatibus statum et rationes exigant singulorum monasteriorum, easque, in tabularium totius Ordinis referendas, eidem generali abbati exhibeant. Quartâ die proceditur ad electionem abbatis generalis et hegumenorum ut infra. Si autem non ob electionem superiorum, sed ob aliam causam coacta fuerit congregatio, de illâ tractabitur. Tribus postremis diebus monachorum causae finiuntur, eorumque postulatis satisfiat, et si quid contra regulam, constitutiones vel consuetudines Ordinis peccatum est, corrigatur.

xii. Septimo die postquam congregatio terminata est, dato signo a generali abbate, aperiatür porta, ita ut etiam non vocales adesse possint et audire. Tum a scriba congregationi legatur: 1^o Tabula novorum officialium a tota congregatione sive ab abbate generali et hegumenis electorum, necnon monachorum ad monasteria, quae idem abbas generalis designaverit, mittendorum; 2^o Constitutiones, si quae fuerint a congregatione sancitae; 3^o Recitantur nomina monachorum omnium ab ultimâ congregatione defunctorum, ut pro iis omnibus una missa sollemnis celebretur; 4^o Recenseantur etiam nomina insigniorum benefactorum, simulque omnes moneantur, ut pro iis sacerdotes quidem unam missam celebrent, laici vero dicant quinquaginta *Pater noster*, *Ave Maria*. Abbas generalis faciat absolutionem generalem, et sic congregationem dimittat.

xiii. Dimissâ congregatione generali, una cum hegumenis faciat congregationem hegumenorum, et primo quidem eligantur abbates provinciarum et monasteriorum, singulisque patentes litterae tradantur ut ad officia sua adeant.

xiv. Forma litterarum congregationis monachorum, cum mittunt ad congregationem una cum abbate monasterii seu provinciae socium ab ipsis electum: *Reverendissimi patres, notum facimus vobis congregationem nostram habitam in monasterio N., mense N., anno N., communi consilio elegisse reverendum patrem N., ut, nomine totius monasterii vel provinciae, una cum nostro abbate ad congregationem generalem accedat. Quocirca tradimus ei potestatem agendi pro nobis in congregatione generali omnia et singula, quae facere possemus, si praesentes essemus, ratum gratumque habituri quidquid in eadem congregatione factum fuerit. Datum in monasterio N., anno N., mense N., die N. — Sigillum † monasterii. — Et subscribent omnes iuxta ordinem suum.*

xv. Forma litterarum abbatis provinciae vel monasterii, cum mittit procuratorem vel procuratorem ad congregationem generalem: *Reverendissimi patres, notum facio vobis, me,*

ob causam N. impeditum, elegisse reverendum patrem N., ut tamquam meus vicarius et procurator ad congregationem generalem accedat: ei quoque sigillum et rationes officii mei tradidisse, necnon facultatem in congregatione generali omnia et singula agendi, quae ego facere possem, si praesens essem; ratum gratumque habiturus quidquid in eadem congregatione factum fuerit. Datum in monasterio N., anno N., mense N., die N. — Sigillum † officii. — N. abbas provinciae vel monasterii N.

i. Ante electionem legantur constitutiones de requisitis eligendorum, deque eorum officio.

ii. Nemo potest in abbatem generalem aut hegumenum eligi, nisi compleverit annum aetatis trigesimum, et annum in nostro Ordine octavum quidem abbas generalis, sextum vero hegumenus.

iii. Electio nullo modo fiat per absentium, sed praesentium dumtaxat suffragia, eaeque secreta sint, non publicatis eligentium nominibus.

iv. In loco pro electione deputato, aedituus aram maximam, ubi venerabile Eucharistiae sacramentum in ciborio conditum prostabit, solemniori, quam in primo triduo congregationis, ritu instruat. Super altari ante ciborium alta crux collocetur, sex hinc inde accensis candelis. A dextris crucis evangeliorum codex pretioso velo coopertus, a sinistris vero imago sive reliquiae sancti patris nostri Antonii, et codex regulae cum constitutionibus. Infra altare ad latus dexterum ponatur mensa, iuxta quam assidebit scriba seu secretarius, qui, datâ servandi secreti fide, solus ex patribus non vocalibus in congregationem introducetur. Super mensam vas seu arcula collocetur, in quam ab electoribus schedulae emittendae erunt. Sic autem fabricetur, ut demissae e superiori orificio schedulae dilabi aut extrahi nequeant, donec, functione peractâ, legitime a cognitoribus suffragiorum reseretur. Alterum praeterea vas intra cancellos altaris praeparetur aquâ oppletum, in quod schedulae praedictae statim proiciantur.

v. Habeatur sermo paraeneticus ad electores per semihoram de eligendo digniori

CAP. II.
De electione
abbatis genera-
lis et hegume-
norum.

abbas generalis, dignitibusque hegumenis, de quo videretur necessitas praesentandi ab omnibus.

vi. Absoluta peracta, abbas generalis et quatuor hegumeni hinc inde ad dexteram laevamque ipsius ante portam mediam in genua praecedunt, et post hos, provinciarum monasteriorumque abbates, deinde reliqui monachi, secundum antiquitatem propriae professionis, postremo scriba seu secretarius et aedituus, et ad portam ianitor.

vii. Sequatur votorum renovatio, abbate generali et hegumenis praecedentibus, deinde reliquis simul prosequentibus, de verbo ad verbum, et cum pausa, ut supra, part. II, cap. XI.

viii. Abbas generalis, absolutâ votorum renovatione, beatissimae Virginis Mariae litanias cum cantu inchoabit: quibus finitis, fratres admonet, ut, praemisso contritionis actu, intentionem pariter rectam habere student, simulque omnes dominicam orationem recitent, et SS. Trinitatis opem, necnon Desiperae et S. Antonii intercessionem implorent. Mox assurgit ipse, et, fratribus in genua adhuc provolutis, generalem absolutionem pronunciat. Post universi e templo egressi, ad ferenda suffragia accedunt, si alibi electio facienda est; si vero in eodem templo, aedituo foras egresso, porta clauditur, quam ianitor ab exteriori parte observabit.

ix. Antequam ad novi abbatis generalis electionem procedatur, debet is, cuius officium expirat, sigillum et officium in manibus hegumenorum resignare ac deponere in haec verba: *Reverendi patres, in manibus vestris resigno ac depono officium abbatis generalis, quod mihi indigno congregatio generalis commisit, simulque veniam peto de omnibus culpis a me in eo commissis.* Hoc idem facere debet unusquisque hegumenus coram electo abbate generali, cum ad successoris sui electionem procedendum est, dicens: *Reverendissime pater, in manibus vestris resigno ac depono officium hegumeni, quod mihi indigno commissum est, simulque veniam peto*

de omnibus culpis a me in eo commissis. Factis tamen resignatione, in suo loco et ordine tandem stabit, donec succedet delectetur. Si per obitum aut promotionem abbatis generalis, aut aliquod legitimum eius impedimentum, electus fuerit vicarius generalis, hic etiam ante electionem novi abbatis generalis resignabit officium in haec verba: *Reverendissimi patres, in manibus vestris resigno ac depono officium vicarii generalis, quod mihi indigno commissum est, etc.* Idem dicendum de vicario hegumeni.

x. Suffragiorum ordo est: Primus, abbas generalis, ad mensam accedens, suum suffragium in schedula scribet, nomine tantum electi expresso, hoc modo: *Eligo reverendissimum patrem N. in abbatem generalem nostri Ordinis.* Tum schedulam propriis manibus complicit, atque in praeparatam arcam iniiciat. Sequantur ordinatim singuli hegumeni, postea abbates provinciarum et monasteriorum, postremo reliqui patres vocales, habitâ semper ratione antianitatis professionis. Si quis patrum indigeat operâ scribae, hic suggestum ab illo nomen scribat in schedula, eamque plicatam ipsi reddat in praedictam arcam ab eodem propria manu statim dimittendam.

xi. Post lata suffragia, in locum suum unusquisque regrediatur: loca autem extra cancellos altaris disposita erunt. Tum vero abbas generalis solus cum quatuor hegumenis et duobus a patrum coetu ad cognoscenda suffragia electis, sanctuarium ingressus, schedulas ex arca extrahat, mox numeret; et si patrum numerum superent aut minime sequent, electio non constabit, nec aperiendae erunt schedulae, sed continuo in vas aquâ oppletum immittantur, et nova electio fiat. Si vero suffragiorum numerus bene constet, tunc abbas generalis singulas schedulas coram hegumenis et duobus suffragiorum cognitoribus aperiat, nomenque electi altiori voce pronunciet, ut monachi in templo stantes audiant, et illud a secretario in arcam reponatur.

xii. Si suffragiorum supra dimidium vocalium maior convenire in electione reperiatur, ea censetur facta: sin autem in

† Pessime ed. Main. legit *pono* pro *post* (n.r.).

duas personas suffragia dividantur, his a ferendo suffragio exclusis, incipit scrutinium. Si rursus aequalis pro utroque suffragiorum numerus constituit, praeferebatur prior tempore professionis. Si autem professionis tempore aequales fuerint, aetas attendenda, et senior iuniori praeeligatur.

xiii. Si vero suffragia in diversas personas distraherentur, ita ut in neminem maior congregationis pars conveniat, secundo, ac tertio scrutinium repetatur. Quod si etiam tunc nemo habeat maiorem suffragiorum partem, contingat autem duos vel tres habere plura suffragia, ita ut singuli quartam saltem partem suffragiorum obtineant, per abbatem generalem promulgentur his verbis: *Reverendus pater NN. et reverendus pater NN. habent plura suffragia quam reliqui. Ex his igitur potestis unum eligere in abbatem generalem totius Ordinis.* Tum illis, qui nominati sunt, exclusis, vocales reliqui ad electionem modo supradicto procedant, unum ex nominatis eligentes, in quem maior pars suffragiorum convenerit.

xiv. Finito scrutinio, electus abbas generalis promulgetur a suo praedecessore, vel si ipse in officio confirmatus fuerit, a primo hegumenorum, his verbis: *Reverendi patres, facta suffragiorum collatione, invenimus maiorem partem congregationis nostrae convenire in electione reverendi patris NN.; ideo nomine totius congregationis nostrae, et potestate per vos omnes mihi concessa, pronuncio et declaro reverendissimum patrem NN. electum fuisse, et eum nostrum omnium totiusque Ordinis nostri abbatem generalem.*

xv. Facta electionis proclamatione, primus hegumenus, aut dignior inter vocales, intonat psalmum xix, reliquis alternatim prosequentibus: *Exaudiat te Dominus in die tribulationis, protegat te nomen Dei Iacob, etc.* Interea hegumeni ducunt electum ad sedem ad cornu sinistrum altaris paratam, qui osculatur primum altare, deinde sedet. Tum a digniori traditur ei liber regulae et constitutionum, ac sigillum officii: qui retinens sigillum, tradit uni ex vocalibus, ut legat caput iii partis iii, quod est de praeminentia et officio abbatis generalis. Interim

fratres singuli iuxta ordinem suum ad eum accedentes, genibus flexis, manus eius osculantur. Ipse vero laudis in loco suo sedebit, donec hegumeni quatuor eligantur: nec e sede sua recedit, nisi cum suffragium proprium scripturus est, et in archa immisurus, et suffragia monachorum, et supra, cogitatus, electumque proclamaturus: quo statim proclamato, ad eodem suam redibit.

xvi. Si electus absens fuerit, postquam proclamata est illius electio, cantatur psalmus xix, ut supra: quo finito, statim proceditur ad electionem hegumenorum, quorum primus vices abbatis generalis geret, donec abbas generalis aderit. Quod si adesse possit antequam congregatio generalis absolvetur, tunc entronismus eius modo supradicto fiat.

xvii. Neque abbati generali, neque hegumenis fas est electionem suam recusare aut officium abdicare. Si vero contigerit eos ex legitima causa ab officii executione impediri, in congregatione hegumenorum potest vicarius eius substitui, ut dictum est part. iii, cap. iv.

xviii. Absoluta abbatis generalis electione, continuo ad electionem quatuor hegumenorum iuxta praedictum ordinem procedent, etiamsi electus generalis absens fuerit. Primum hegumenus in manibus abbatis generalis, vel, eo absente, in manibus dignioris ex vocalibus resignat sigillum et officium, ut supra. Mox suffragia feruntur, et si duo vel tres plura suffragia habere reperiuntur, ita ut quartam saltem partem singuli obtineant, abbas generalis recens electus, vel, eo absente, dignior ex vocalibus (exclusis iis qui nominantur), dicat ad coetum monachorum: *RR. PP. NN. et NN. habent plura suffragia, quam reliqui. Ex his igitur potestis eligere unum in hegumenum.* Finito scrutinio, electus hegumenus promulgatur ab abbate generali, aut, eo absente, a digniori ex vocalibus, in haec verba: *Reverendi patres, facta suffragiorum collatione, invenimus maiorem partem congregationis nostrae convenire in electione reverendi patris N. Ideo, nomine totius congregationis nostrae*

omnes simul hegumenos spectabiliter inducere, et prior in ordine praecedat tamquam vicarius abbatis generalis, ut supra dictum est.

iii. Per septem dies ea durabit: singulis autem diebus, praemissa oratione dominica, et litanis beatissimae Virginis, coram altari ab aedituo parate, ianitore portam observante, et secretario ad mensam assidente, nec non duobus monachis suffragiorum cognitoribus, suffragia ferent, ut supra dictum est de congregatione generali. Porro secretarius, aedituus, ianitor et duo suffragiorum cognitores ab abbate generali et hegumenis praecigendi sunt. Antequam vero prima congregatio inchoetur, sermo paraeneticus fiat ab idoneo monacho, quem abbas generalis designaverit.

iv. Si post congregationem generalem eligendi sint abbates provinciarum et monasteriorum, primo congregationis die, sedentibus in ordine suo abbate generali et hegumenis, accedunt abbates, quorum officium expirat, vel eorum vicarii, unus post alium; et genuflexi, sigillum et officium in manibus abbatis generalis et hegumenorum resignant, et deponunt in haec verba: *Reverendissimi patres, in manibus vestris resigno ac depono officium abbatis provinciae N., vel monasterii N., quod mihi indigno commissum fuit, simulque veniam peto de omnibus culpis a me in eo commissis.* Si vicarius fuerit, aut procurator, dicat: *Reverendissimi patres, nomine ac vice reverendi patris N., in manibus vestris resigno ac depono officium abbatis provinciae N., vel monasterii N., quod ipsi commissum fuit, simulque veniam peto de omnibus culpis ab ipso in eodem officio commissis.* Facta resignatione, unusquisque extra congregationem recedet; et clauso ostio, legat secretarius coram abbate generali et hegumenis excessus vel defectus, si quos dicti abbates in suo officio commiserint, oblatas adversus eos subditorum monachorum accusationes, et similia, quae in ultimo triduo congregationis generalis examinata sunt, et in acta relata, ut cap. i huius partis num. ii dictum est. Mox generalis et hegumeni de iis deliberent: et

et quid in regulam, constitutiones, consuetudines vel monachos penitus deprehensi fuerint, vocatus singulum, et introducantur ad congregationem, ibique represententur, et digna molesticia potestatis mittentur: alii omnes simul introducuntur, et genuflexi benedicuntur ab abbate generali, et absolvantur his verbis: *Deus adiuvet vestri, etc.*, ut capite superiori circa finem. Tum extra congregationem dimittantur, et abbas generalis cum hegumenis per suffragia secreta eligat abbates provinciarum et monasteriorum eodem modo quo supra de electione generalis et hegumenorum dictum est. Suffragium in schedula scribatur sic: *Eligo reverendum patrem N. in abbatem provinciae N., vel monasterii N.* Extrahuntur autem suffragia a duobus monachis eorum cognitoribus, et scribuntur in carta a secretario. Et unus ex illis duobus professione antiquior nomen electi altiori voce pronunciat, ut generalis et hegumeni audiant: et qui plura suffragia habuerit, ille abbas erit: quem proinde generalia proclamabit in haec verba: *Nomine congregationis nostrae pronuncio et declaro reverendum patrem N. abbatem provinciae N., vel monasterii N.* Finito scrutinio, omnes electi abbates, qui in eo monasterio praesentes fuerint, genua flectunt coram abbate generali et hegumenis, manumque eorum deosculantur, et invicem ab his ad osculum pacis admittuntur. Abbas autem generalis tradit unicuique eorum sigillum officii sui: deinde, omnibus praeter hegumenos genuflexis, impertitur benedictionem, dicens: *Benedicat vos omnipotens Deus, Pater † et Filius † et Spiritus † Sanctus.* Fratres: Amen. Et procedunt unusquisque ad cellam suam. Abbas generalis et hegumeni tradunt singulis patentes litteras tenoris sequentis: *Venerabilibus fratribus Ordinis sancti patris nostri Antonii congregationis S. Iacobi provinciae N., vel monasterii N., salutem in Domino et benedictionem. Notum facimus vobis, fratres, congregationem hegumenorum habitam die N., mense N., anno N., communi consilio elegisse reverendum patrem N. in abbatem vestrum proprium et peculiarem, qui carne et*

et potestate a nobis nobis concessa, pronuncio et declaro reverendissimum patrem N. electum fulvum, et eum hegumenum. (Addat in fine, primum, secundum, tertium, vel quartum, iuxta unicuiusque hegumeni locum). Hegumenus electus abbati generali genuflectat, eiusque manus deosculatus, ad dexteram ipsius vel sinistram iuxta ordinem suum stabit. Abbas vero generalis illum ad osculum admittet, ei quoque sigillum officii tradet. Tum fratres iuxta ordinem suum, facti prius altari, deinde abbati generali et hegumenis antea electis aut officio confirmatis reverentia, coram hegumeno recens electo genuflectentes, manum eius osculantur. Hegumeni vero antea ut supra electi, collegam admittunt. Si hegumenus sacerdos non fuerit, sola pacis appreciatione, omissa genuflectione, honorabitur.

xix. Penes congregationem generalem est abbatem generalem confirmare vel novum eligere. Hegumenorum pariter potestatem prorogare aut abrogare, sive quosdam confirmare, et alios de novo eligere: nam omnes simul eodemque tempore mutare minus expedire videtur, ut nimirum novus hegumenus a veterano rudimenta novi officii capiat. Si vero, attentis circumstantiis, secus agendum electoribus in Domino visum fuerit, ad omnium etiam hegumenorum depositionem tuto procedent.

xx. Secretarius congregationis tam generalis abbatis quam hegumenorum electionem in acta referat, quae, subscriptionibus omnium vocalium firmata, in archivio asservetur.

xxi. Absoluta quatuor hegumenorum electione, divinae maiestati gratiae agenda sunt. Quocirca abbas generalis cum hegumenis et omnibus patribus vocalibus ante portam mediam altaris procidat in genua, primus ipse, deinde quatuor hegumeni, mox reliqui iuxta ordinem suum. Tum incipit psalmum cxlviii, reliquis hunc et duos sequentes psalmos mox alternatim cantantibus: *Laudate Dominum de caelis, laudate eum in excelsis, etc.* Quibus finitis, assurgens abbas generalis, stansque in porta media, conversus ad altare, fratribus genuflexis, sequen-

tem orationem recitabit: *Gratias agimus tibi, Deus noster, Trinitas Sanctissima, Pater, et Fili, et Spiritus Sancte, quoniam, sicut ad tuum nos peculiarem famulatum assumpti, atque in sanctis tabernaculis tuis collocasti, fratresque in spiritu coniunctos effecisti, et constitisti in monte Sion, qui est religiosus status, ponens pacem fines suas, muroque circumdatus obedientiae, castitatis et voluntariae paupertatis, quo spectaculum fereamus angelis et hominibus: illo hodie gratia tua innovasti vinculum, quo iungimur dilectioni tuae: nosque in hierarchias et choros in similitudinem angelorum distinxisti ad officia ministerii tui in paradiso domus tuae, quem plantasti nobis, et in quo nos collocasti, nosque illum operamur, beneplacitum tuum perficientes, et divinae voluntati tuae obsequentes. Et nunc, Domine Deus, tuere nos, et custodi vineam istam quam plantasti dexteram tuam, et domum tuam aedifica, quam virtute tua fundasti: quia, nisi tu, Domine, aedificaveris domum, frustra vigilant qui custodiunt eam. Da, Domine, assistricem sedium tuarum sapientiam iis, quos ad ministerium domus tuae elegisti. Benefac nobis, et corda nostra sanctifica, mentesque nostras in obsequio tuo confirma: intercedentibus sancta Dei genitrice Maria Virgine, et beatissimo patre nostro S. Antonio magno, et omnibus sanctis. Fratres: Amen. Deinde abbas generalis, facta altari reverentia, ad eos adhuc genuflexos conversus, facit absolutionem generalem in haec verba: *Deus misereatur vestri, et dimittat debita vestra, et tribuat vobis absolutionem et remissionem omnium peccatorum vestrorum, in nomine + Patris, et + Filii, et + Spiritus Sancti. Fratres: Amen.* Et surgunt, eiusque manum ordinatim osculantur, et ad suas singuli cellas secedunt.*

I. Congregatio hegumenorum de semestri in semestrem ab abbate generali et quatuor hegumenis celebretur, et quoties de rebus agendum est aut valde urgentibus aut potestatem eiusdem congregationis exigentibus.

II. Penes abbatem generalem est illam indicare eique praesidere. Si vero ipse mortuus fuerit, aut promotus, aut de ipsius causa et reatu consultandum sit, tunc ad

CAP. III.
De Congregatione hegumenorum et electione abbatum provinciae vel monasterii.

omnes simul hegumenos spectabit illam indicere, et prior in ordine praesidebit tamquam vicarius abbatis generalis, ut supra dictum est.

iii. Per septem dies ea durabit: singulis autem diebus, praemissa oratione dominica, et litiis beatissimae Virginis, coram altari ab aedituo parato, ianitore portam observante, et secretario ad mensam assidente, nec non duobus monachis suffragiorum cognitoribus, suffragia ferent, ut supra dictum est de congregatione generali. Porro secretarius, aedituus, ianitor et duo suffragiorum cognitores ab abbate generali et hegumenis praeeligendi sunt. Antequam vero prima congregatio inchoetur, sermo paraeneticus fiat ab idoneo monacho, quem abbas generalis designaverit.

iv. Si post congregationem generalem eligendi sint abbates provinciarum et monasteriorum, primo congregationis die, sedentibus in ordine suo abbate generali et hegumenis, accedunt abbates, quorum officium expirat, vel eorum vicarii, unus post alium; et genuflexi, sigillum et officium in manibus abbatis generalis et hegumenorum resignant, et deponunt in haec verba: *Reverendissimi patres, in manibus vestris resigno ac depono officium abbatis provinciae N., vel monasterii N., quod mihi indigno commissum fuit, simulque veniam peto de omnibus culpis a me in eo commissis.* Si vicarius fuerit, aut procurator, dicat: *Reverendissimi patres, nomine ac vice reverendi patris N., in manibus vestris resigno ac depono officium abbatis provinciae N., vel monasterii N., quod ipsi commissum fuit, simulque veniam peto de omnibus culpis ab ipso in eodem officio commissis.* Facta resignatione, unusquisque extra congregationem recedet; et clauso ostio, legat secretarius coram abbate generali et hegumenis excessus vel defectus, si quos dicti abbates in suo officio commiserint, oblatas adversus eos subditorum monachorum accusationes, et similia, quae in ultimo triduo congregationis generalis examinata sunt, et in acta relata, ut cap. i huius partis num. ii dictum est. Mox generalis et hegumeni de iis deliberent: et

si quid in regulam, constitutiones, consuetudines vel monachos peccasse deprehensi fuerint, vocentur singillatim, et introducantur ad congregationem, ibique reprehendantur, et digna malefactorum poenitentia mulcentur: alias omnes simul introducantur, et genuflexi benedicantur ab abbate generali, et absolvantur iis verbis: *Deus misereatur peccati, etc.*, ut capite superiori circa finem. Tum extra congregationem dimittantur, et abbas generalis cum hegumenis per suffragia secreta eligat abbates provinciarum et monasteriorum eodem modo quo supra de electione generalis et hegumenorum dictum est. Suffragium in schedula scribatur sic: *Eligo reverendum patrem N. in abbatem provinciae N., vel monasterii N.* Extrahuntur autem suffragia a duobus monachis eorum cognitoribus, et scribuntur in carta a secretario. Et unus ex illis duobus professione antiquior nomen electi altiori voce pronunciat, ut generalis et hegumeni audiant: et qui plura suffragia habuerit, ille abbas erit: quem proinde generalis proclamabit in haec verba: *Nomine congregationis nostrae pronuncio et declaro reverendum patrem N. abbatem provinciae N., vel monasterii N.* Finito scrutinio, omnes electi abbates, qui in eo monasterio praesentes fuerint, genua flectunt coram abbate generali et hegumenis, manumque eorum deosculantur, et invicem ab his ad osculum pacis admittuntur. Abbas autem generalis tradit unicuique eorum sigillum officii sui: deinde, omnibus praeter hegumenos genuflexis, impertitur benedictionem, dicens: *Benedicat vos omnipotens Deus, Pater † et Filius † et Spiritus † Sanctus.* Fratres: Amen. Et procedunt unusquisque ad cellam suam. Abbas generalis et hegumeni tradunt singulis patentes litteras tenoris sequentis: *Venerabilibus fratribus Ordinis sancti patris nostri Antonii congregationis S. Isaias provinciae N., vel monasterii N., salutem in Domino et benedictionem. Notum facimus vobis, fratres, congregationem hegumenorum habitam die N., mense N., anno N., communi consilio elegerisse reverendum patrem N. in abbatem vestrum proprium et peculiarem, qui carne et*

spiritus vos gubernet iuxta nostras consuetudines, constitutiones et regulam; quociens mandamus vobis in virtute sanctae obedientiae, ut eidem secundum nostras congregationis regulam pareatis, cumque abbatem seu patrem nostrum appelletis, ipsique veluti legitime praeposito vobis debitam obedientiam, honorem atque reverentiam exhibentis. Si quis illi subesse noluierit, noverit se suorum votorum transgressorem fore. *Benedictio sit super obediens. Datum in monasterio N. die N. mense N. anno N. — Congregatio hegumenorum. — Sigillum † generalis et hegumenorum.* Cum dictae litterae ad monasterium venerint, unus ex fratribus, reliquis audientibus, in ecclesia vel refectorio, abbate electo praesente, illas legat: finitæque lectione, continuo abbati electo vel confirmato, omnes genuflectant; abbas vero iis benedicat, dicens: *Benedicat vos omnipotens Deus, Pater et Filius † et Spiritus Sanctus.* Et respondent, Amen. Et surgunt, eiusque manum osculantur. Abbas suae electionis patentes litteras apud se custodiat; cumque statuto tempore exactoratus, vel confirmatus fuerit, abbati generali illas restituet. Secretarius autem monasterii eas de verbo ad verbum describat et in archivo reponat. Sequentibus sex diebus in congregatione hegumenorum de rebus ad universum ordinem spectantibus agatur.

v. Si vero congregatio hegumenorum non post congregationem generalem, sed praestituta temporibus suis fiat, primo die de gravioribus negotiis agendum erit, postmodum reliqua definiantur.

vi. Terminata congregatione, describi current a secretario acta omnia, electiones officialium et constitutiones, si quae factae fuerint; sigilloque et propria generalis atque hegumenorum subscriptione firmentur, et in archivo reponantur. Quae vero monachis significanda sunt, ea per encyclicas litteras a generali et hegumenis subscriptas significentur. Exemplum autem litterarum omnium, quae nomine congregationis huius mittentur, a secretario eiusdem congregationis descriptum maneat in libro regestorum, qui in congregatione generali tradatur

novo abbati generali et novis hegumenis in archivo reponendus.

i. Congregatio provinciae unoquoque anno per triduum celebretur ab abbate provinciae et abbatibus monasteriorum subiectorum; congregatio vero monasteriorum sit quolibet mense per unum diem ab abbate monasterii et monachis omnibus professis. Primam autem indicit abbas provinciae, alteram abbas monasterii; et illa quidem uno saltem mense ante constitutum diem significari debet: haec vero tribus ante diebus.

ii. Quo mense facienda erit congregatio provinciae, praemittenda est opportuno tempore congregatio uniuscuiusque monasterii, ut in promptu habeat abbas, si quid ad eam congregationem referendum sit. Similiter quo anno celebrabitur congregatio generalis, opportune praemittatur congregatio provinciae.

iii. Congregationi provinciae, praeter abbates monasteriorum, intererit socius abbas uniuscuiusque monasterii a congregatione monachorum eligendus. Eius autem electio fieri debet tribus saltem diebus antequam ad congregationem provinciae procedatur, ut sufficiens tempus habeat ad sumendum informationem de statu monasterii, deque querelis et causis monachorum: idem dicendum de socii abbatum ad congregationem generalem discessu. Omnia autem, quae socius congregationi generali vel provinciali nomine monachorum praesentabit, debent esse sub sigillo monasterii clausa et ab iis subscripta.

iv. In utraque congregatione idem ordo servetur, de quo supra in congregatione hegumenorum dictum est num. iii et vi. Secretarius autem, aedituus et ianitor ab abbate eligantur; duo vero suffragiorum cognitores a monachis ad congregationem convocatis.

v. Agendum porro erit primo de rebus spiritualibus ad profectum monachorum spectantibus, inquirendumque in mores uniuscuiusque, si quid contra regulam, constitutiones et consuetudines peccetur; secundo de regimine superiorum et subiectorum

CAP. IV.
De congrega-
tione provin-
ciae et monas-
teriorum.

obedientiâ ; tertio de temporalibus monasteriorum rebus.

vi. Abbate ad congregationem generalem eunte, aut vicarium mittente, adhuc celebretur congregatio monachorum de mense in mensem, cui ipse abbas vel eius vicarius praeerit: non tamen celebrabitur congregatio provinciae, nisi de anno in annum, et ipso abbate praesente.

vii. Si abbas monasterii decesserit, vicarius mortem eius tam abbati provinciae, quam abbati generali statim significabit, et interim monasterium administrabit usque ad novi abbatis electionem et adventum. Quod si vicarius in illo monasterio non fuerit, tunc antiquior professione vicarius erit; et inter aequales professione, antiquior aetate praeferatur, et sacerdos non sacerdoti. Mortuo autem abbate provinciae, abbas illius monasterii, in quo residere solet, ad abbatem generalem litteras scribat: nemo tamen in eius officio se immiscebit, donec abbas generalis in congregatione hegumenorum de successore aut vicario decreverit.

CAP. V.
De congrega-
tione hebdoma-
dali.

i. In qualibet hebdomadâ per omnia monasteria feriâ vi, aut aliâ die non impeditâ, debet fieri congregatio omnium monachorum.

ii. Sedentibus omnibus, et novitiis, si qui erunt, stantibus, abbas seu vicarius aliquid ex libris spiritualibus legat vel legi faciat ad monachos.

iii. Deinde (novitiis foras dimissis) idem abbas seu vicarius faciat brevem exhortationem contra defectus in monasterio occurrentes, nullam tamen personam nominando.

iv. Absolutâ exhortatione, abbas stans, reliquis genuflexis, dicat: *Deus misereatur nostri, et dimittat debita nostra, et tribuat nobis absolutionem et veniam omnium peccatorum nostrorum. In nomine Patris, et Filii, et Spiritus † Sancti. Fratres, Amen.* Et surgunt, eiusque manum deosculantur, et ad suas uniusquisque cellas abeunt.

CAP. VI.
De electione
in communi.

i. Ab electione tam activâ quam passivâ in quolibet officio Ordinis nostri, donec cum eo fuerit dispensatum specialiter, arcetur omnis excommunicatus, suspensus, interdictus, irregularis, non professus, et qui non

subest nostrae Congregationi, etiamsi fuerit monachus professus Ordinis sancti patris nostri Antonii: item qui ab Ordine nostro apostataverit, et qui ab illo ad alium Ordinem, etiam cum licentiâ superiorum, transivit, nec postea ad nostrum rediit: item, qui habet impedimentum naturale, ut fatuus, delirus, lunaticus: item qui est notorie infamis ob publicum delictum, ut est homicidium, fornicatio, furtum, periurium, ebrietas: item subornator, qui prece, pretio, minis, vel quocumque alio modo induxerit eos, qui in electione vocem activam habent, ut seipsum vel monachum aliquem determinatum eligant, singulatim eum nominando: item, qui per se ipsum vel alium procurat sibi dignitatem aliquam extra Ordinem: item, qui publice et scandalose Romano Pontifici, aut patriarchae vel Ordinario loci detraxerit, aut eorum canonicas sanctiones contempserit: denique, qui monachum notorie indignum sciens et prudens aliquando elegerit.

ii. In iis impedimentis, quae ex iure canonico proveniunt, dispensatio petenda est a legitimo superiore (qualis est sanctissimus Romanus Pontifex, reverendissimus dominus patriarcha, et ordinarius loci episcopus respective). In aliis vero, quae ex nostris constitutionibus inducuntur, abbas generalis dispensare poterit, vel, eo absente, congregatio generalis.

iii. Nemo eligi aut eligere poterit in abbatem generalem aut hegumenum sive in abbatem provinciae aut monasterii, nisi triginta annos saltem inchoatos aetatis habeat, et nisi sex annos in Congregatione nostrâ compleverit, includendo annos probationis.

iv. In congregationibus hegumenorum, provinciae et monasterii, ii tantum vocem activam habent, quorum mentio ibi fit. Vocem vero passivam in congregatione generali et hegumenorum habere possunt omnes monachi professi. In congregatione vero provinciae et monasteriorum ii tantum monachi, qui sunt illius provinciae et monasterii.

v. Nemo potest habere plures voces acti-

vas, etiam si habeat plura in Ordine officia, sed unusquisque usam tantum vocem habeat.

vi. Omnis electio fiat per suffragia secreta.

vii. Ante electionem legantur constitutiones de officio eligendorum et de electione.

viii. Si suffragia fuerint aequalia, aut in diversas personas illa distraherentur, ut in nullum maior pars conveniat, id fiat quod supra, cap. ii, num. xii et xiii, dictum est.

CAP. VII.
De visitatione.

i. Abbas generalis semel saltem in triennio visitet omnia monasteria Ordinis, et abbas provinciae semel quolibet anno monasteria sibi subiecta, ut dictum est part. iii, cap. iii, num. iii, et cap. v, num. ii.

ii. Si legitime fuerint impediti, substituent vicarium visitatorem, cui tempus et auctoritatem per suas litteras designant, eique socium seu secretarium adiungent. Nulli autem vicario visitatori credatur, nisi litteras suae delegationis antea exhibuerit coram monachis in congregatione convocatis in eo monasterio quod visitandum erit. Eam vero monachorum congregationem abbas convocabit statim atque ei exhibitae fuerint litterae abbatis generalis, aut hegumenorum, aut abbatis provinciae. Si autem abbas fuerit absens, aut obedire noluerit, tunc ipse vicarius visitator eam convocabit. — Forma litterarum vicarii visitatoris: *Venerabilibus fratribus Ordinis sancti patris nostri Antonii congregationis S. Iacobi provinciae N., vel monasterii N., salutem in Domino et benedictionem. Notum facimus vobis, fratres, nos elegisse reverendum patrem N. in vicarium nostrum, eique vices nostras commisisse, ut visitet vos et vestrum monasterium in temporalibus et spiritualibus, et inquirat in omnia ad vos dictumque monasterium spectantia, iuxta nostras consuetudines, constitutiones et regulam, cum facultate decernendi, quae decernenda esse urgens necessitas compulerit; alia vero ad nos deferendi; non tamen alium in locum suum substituendi, nec visitationem in quolibet monasterio ultra triduum prorogandi. Quocirca mandamus vobis in virtute sanctae obedientiae, ut reverendum patrem N. tanquam vicarium visitatorem a nobis deputatum recipiatis, eique debitam reverentiam et obedientiam iuxta commissum ipsi officium*

exhibeatis. Si quis illi contradicere ausus fuerit, noverit se suorum votorum transgressorem fore. Benedictio sit super obedientes. Datum in monasterio N., die N., mense N., anno N. — Abbas generalis, vel hegumeni, vel abbas provinciae N. — Loco † sigilli.

iii. *Ante* in congregatione litteris, statim omnes genuflectent, excepto vicario visitatore; deinde surgentes deducunt illum in ecclesiam a dextris abbatis monasterii procedentem. Si abbas generalis aut abbas provinciae personaliter ad visitandum monasterium venerit, convocata ab abbate loci monachorum congregatione, significabit breviter ut praeparent se ad reddendam rationem, quam sequenti die exigere incipiet: deinde procedet una cum abbate monasterii et monachis ad ecclesiam, ut supra.

iv. Ante aram maximam omnibus ordinatim genuflexis, abbas seu vicarius visitator, item genuflexus, ad portam mediam orabit aliquantulum, deinde intonabit psalm. cxlviii *Laudate Dominum de caelis, etc.*, quem una cum duobus sequentibus psalmis monachi alternatim cantent¹. Et dicto *Gloria Patri*, surgit abbas, seu vicarius visitator, et facta ad altare reverentia, conversus ad monachos genuflexos, faciat absolutionem, dicens: *Deus misereatur vestri, et dimittat debita vestra, et tribuat vobis absolutionem et veniam omnium peccatorum vestrorum. In nomine Patris †, et Filii †, et Spiritus † Sancti. Fratres, Amen.* Et surgunt, eiusque manum ordinatim osculantur, et abeunt in cellas suas.

v. Visitator primum locum tenebit cum socio suo, qui secretarii munus geret, etiam ante abbatem monasterii. Cum autem officio suo functus fuerit, ipse et socius locum iuxta dignitatem suam vel antiquitatem professionis habebit.

vi. Primo visitationis die, cantatis divinis officiis, ac terminata per abbatem loci aut vicarium sacra liturgia, antequam detur a celebrante benedictio, omnibus monachis ordinatim genuflexis, visitator diligenter visitabit totam ecclesiam: ac primum aram

¹ Edit. Main. legit *cantet* (R. T.).

maximam, ubi repositum est sanctissimum Eucharistiae sacramentum, deinde reliquae, si quae erunt, altaris, an omnia munda sint, et decenter ornata et composita. Qua visitatione absolutâ, reversus ad portam mediam, et factâ altari reverentiâ, dat benedictionem dicens: *Benedicat vos omnipotens Deus, Pater †, et Filius †, et Spiritus † Sanctus. Fratres, Amen.* Visitor prosequitur hanc admonitionem: *Auctoritate Dei totiusque Ordinis nostri praecipio vobis in virtute sanctae obedientiae, ut, cum unusquisque vestrum de omnibus et singulis personis ac rebus ad hoc monasterium spectantibus interrogatus fuerit, debeat secundum conscientiam pure et veraciter revelare, secluso omni odio, favore et affectu: nec ullus vestrum extra monasterium discedere praesumat, sine expressâ nostrâ licentiâ.* Visitor, depositâ stola, in sacristiam vadit cum socio, abbate monasterii, et praefecto ecclesiae, seu sacrista, eamque diligenter, visitat, considerando an munda et composita sint vasa sacra, vestes, libri, et omnia utensilia. Deinde procedit visitor cum socio ac abbate loci ad cellam ipsius abbat, qui primo offert visitori scripta nomina et officia singulorum monachorum et personarum, etiam saecularium qui monasterio inserviunt; secundo, librum regulae et constitutionum Ordinis; tertio, librum decretorum, quae alii visitatores ei monasterio reliquerunt; quarto, libros proventuum et expensarum monasterii et ecclesiae. Quibus peractis, visitor ad cellam sibi destinatam per ipsum abbatem loci, aut monachum ab eo designatum, advocabit singulos monachos, et inquisitionem inchoabit a iunioribus, et desinet in ipsum abbatem, qui de singulis ipsi reddet rationem. Quae autem a singulis monachis referuntur, per socium et secretarium visitationis in cartâ notabuntur, in quorum fine unusquisque nomen suum subscribat, vel, si scribere nescit, ipse secretarius eius nomen subscribat de ipsius mandato.

vii. Postridie visitor cum secretario lustrabit primo die cellas omnium fratrum; secundo alias monasterii mansiones, ut scholam, bibliothecam, hospitium, infirmariam,

vestiariam, cellariam, coquinam et refectarium, praesentibus abbate loci, eoque monacho qui cellae illius curam habebit.

viii. Tertio et postremo die, convocatâ totius monasterii congregatione in locum ad id paratum, visitor brevem adhortationem faciet ad procurandam regulae et constitutionum observantiam, et legi faciat per secretarium monita relicta monasterio, moneatque omnes et singulos ut se ad poenitentiam negligentiarum faciendam disponant. Tum genuflexis omnibus coram visitatore, culpas suas dicant ordinatim incipiendo ab abbate loci usque ad iuniorem monachum, et veniam petant a visitatore, qui singulis cum discretione et charitate poenam iniungat salutarem. Mox faciat absolutionem, dicens: *Deus misereatur vestri, etc.*, ut supra, n. iv: atque ita cum osculo pacis dimittat congregationem.

ix. Si ipse generalis aut abbas provinciae visitationem facit, utatur auctoritate suâ in correctione abbat, et monachorum: si vero fuerit vicarius, ad substituentem omnia referat. Non tamen abbatem loci deponere, aut ab officio suspendere poterit, nisi specialem facultatem habuerit a congregatione hegumenorum. Quod si necessitas requirat, ut monachum de illo monasterio in aliud transferat, id auctoritate suâ facere poterit, si generalis fuerit aut abbas provinciae: si vero delegatus fuerit, consentiente abbate loci, in quo est, et abbate monasterii, ad quod transferendus est monachus, id faciet; illis autem dissentientibus, rem ad delegantem referet.

x. Haec fere sunt de quibus visitor inquirere debet: an singuli debitam abbati obedientiam exhibeant; an abbas officio suo erga omnes aequaliter utatur; an inter omnes et singulos pax et concordia servetur; an sit aliquis proprietarius in monasterio vel scandalosus, ebriosus, otiosus, assuetus iurare vel turpia loqui, notatus de suspectâ familiaritate intra vel extra monasterium, cum scandalo alium non alloquens, rixosus, contumeliosus; an ab omnibus observentur regula et constitutiones quoad divinum officium, confessionem, communionem, ora-

tionem mentalem, ieiunium, refectarium, silentium, aliisque communitatis officiis, et quomodo ritus et caeremoniae ecclesiasticae observentur; an aliquid deest vel superfluum sit in victu, potu, vestitu, et quomodo tractentur ab abbate tam monachi sani quam infirmi et hospites; quomodo monachi iuniores instruantur, et qui sint mores saecularium qui sunt in ministerio coenobii.

x. Acta omnia a secretario excepta, sigilloque munita, in archivum Ordinis inferat, et si vicarius siue delegatus fuerit, ad abbatem generalem vel provinciae referat.

xii. Omnem operam adhibeat ut pacem et concordiam in monasterio relinquat.

PARS QUINTA.

Cap. I.
De processu
iudiciali.

Cum monachorum causae a superioribus iudicandae sint, communis ordo iudiciorum servetur:

i. Iudex secretarium praesentem habeat ab ipso aut a maiori superiore eligendum, qui examini adsit, et dicta examinandorum excipiat, et sententiam scribat.

ii. Iudicium introducendum erit vel per accusationem, vel per denunciationem, vel per diffamationem. Si per accusationem processus inchoetur, certus esse debet accusator, et capita accusationis porrectae suâ manu subscribat: ante omnia autem examinandus accusator, an sit integrae famae, an moveatur aliquo odio, aut alio pravo affectu, an quae proponit habeant aliqua adminicula vel indicia veritatis, puta, quia accusatus alias in eodem genere peccati deliquerit, aut alio modo eius fama et existimatio laboret. Haec autem exactius observanda sunt, quando accusator procedit contra abbates: isti enim falsis delationibus et querelis maxime obnoxii sunt, et rursus, cum regiminis columninae sint, non facile, neque ex levibus delationibus in periculum existimationis et famae vocandi sunt. Si per denunciationem procedatur, denunciator similiter certus sit, subscribere se debet denunciationis capitibus, sicut accusator, etsi ipse non tenetur processum prosecui et obiecta probare. Si autem per diffamationem

procedatur, examinandum primo, an fama aut diffamatio a probis et honestis viris ortum habeat, eaque diffamatio non semel, sed saepius ad aures superiorum pervenerit.

iii. Post accusationem seu denunciationem seu diffamationem, iudex ad testium examinationem deveniat, a quibus exhibitio de veritate dicenda iuramento, vel facto iis de veritate dicenda in virtute sanctae obedientiae praecepto, primo, si sint extranei, generaliter interrogabit super eorum qualitatibus; deinde super praedictis capitibus accusationis, annotetque diem, mensem et annum quo singuli testes fuerint examinati, et quaecumque deposuerint; demum curabit ut iidem testes manu propria subscribant suas depositiones, et si ipsi litteris ignorant, apponant suâ manu figuram crucis, et alius ex ipsorum mandato subscribat eorundem nomina, annotando se illorum iussu subscripsisse.

iv. His peractis, iudex accusatum seu denunciatum vel diffamatum citabit, eumque examinabit super praedictis, non semel, sed bis vel ter, cum intervallo tamen, ut, si contradictoria dixerit, possit ex sua confessione redargui. Et si opus fuerit ad reum convincendum eumque ad veritatem dicendam inducendum, poterunt coram eo produci testes qui ipsum convincant.

v. Finito examine, dandum erit ipsi reo exemplar depositionum testium examinerum, sine eorum nominibus, cum termino competenti ad faciendas suas defensiones. Et si delicta sibi obiecta non diluat, eaque sint probata sufficienter, vel rei confessionem, aut per testes reus fuerit convictus, poterit praevia citatione ad sententiam deveniri, et reus in poenâ eius delicto debita condemnari. Si vero diluerit legitime, erit absolvendus aut declarandus innocens. Sin autem de eius innocentia non plene constiterit, debet absolvi, nihilominus appositâ clausulâ *ex hactenus deductis*, quia innocentia rei non fuit plene probata.

vi. Si abbas generalis, aut hegumeni, vel abbas provinciae commiserint alicui ut causam examinet et iudicium ferat, is de-

1 *Antius lege litteras* (R. T.).

bel primo terminos facultatis suae non excedere, sed intra eos se continere; nimirum si examen tantummodo ipsi commissum fuerit, non debet sententiam ferre; secundo, confectum, ut supra, processum iudicalem, propriaque manu subscriptum et sigillo monasterii signatum, transmittat ad superiorem.

VII. Monachi omnes curare debent: primo, ut delinquentem charitative moneant, iuxta sanctum Evangelium, antequam accusetur vel denunciatur: secundo, ut, quantum fieri potest, evitent formam iudicii, multoque magis exceptiones quae dari solent vel possunt contra solemnitatem iuris in processu facto et sententiâ latâ. Nam institutum monasticum, quod assumpsere, docet eos non contendere iudicio, sed propriae voluntati renunciare, poenitentiam agere, et pro Domino pati.

VIII. Non debet in re levi vel ex mera suspicione fieri accusatio aut denunciatio, sed in delicto gravi et certo, vel quasi certo. Item ab accusatione excluduntur ebriosi, detractores, iracundi, aut similibus vitiis laborantes, qui, prius frequenter moniti, emendati non fuerint. Et qui voce activâ et passivâ privati sunt, iidem non debent a iudice ad testimonium admitti, bene tamen ad informationem. Quando vero ex processu constiterit innocentia accusati, debet a iudice accusator in poenâ talionis condemnari.

IX. Si delictum, de quo quis accusatur, aut denunciatur, vel inquiritur, non fuerit publicum, curare debet iudex ne illud evulget, sed secretum servet, quantum fieri potest.

X. Qui poenitentiam sponte facere recusaverit, compelli poterit per censuras. Quod si istas proterve spreverit, acriora remedia adhibeantur, semper tamen habito respectu circumstantiae loci, temporis et personae.

Cum constitutiones nostri Ordinis non obligent ad culpam, nisi propter contemptum et scandalum, sed solum obligent ad poenam transgressoribus infligendam; ideo dicendum nunc est de poenis, quae ad correctionem culparum imponuntur.

I. In primis superiores intelligant, sibi cum fratribus agendum in spiritu lenitatis, nec nisi causâ attente perspectâ, ad acriora remedia esse progrediendum. Quare plerumque praemittenda erit admonitio charitativa seu per se seu per alios, ita ut subditus doceatur, emendationem delictorum a superiore quaeri, non delinquentium ruinam.

II. Intelligant pariter subditi, eadem piâ animi praeparatione sibi suscipienda esse ista charitatis remedia, cum qua a superiore illa applicari iustum est credere, cum magno scilicet desiderio proprii profectus et emendationis; neque dandum locum diabolo suggerenti fuitiles querelas adversus superiores, aut secum ipsis, aut, quod omnino cavendum est, cum aliis, praesertim externis, etiamsi contingat poenitentias iniungi insontibus ex falsâ, ut aliquando accidere necesse est, delatione et errore.

III. Praeterea superiores frequenter recogitent, se de suis subditis rationem Deo reddituros, ac proinde diligenter serioque caveant ne ex propriâ indulgentiâ et remissione regularis disciplina laxetur, dum nimirum subditi, impunitatem sibi ex superioris conniventiâ pollicentes, quodlibet audere paulatim assuescunt. Quamobrem caute circumspecteque attendant ne quis contra constitutiones abusus quovis praetextu inducatur, noverintque ex parvis transgressionibus magnam quandoque ruinam disciplinae regulari imminere, idque, si ipsorum vitio contingat, gravissimae ipsos noxae reos fore.

IV. In poenis iniungendis superiores haec praecipue observent. Primum, ut, auctâ gravitate culpae ex gravitate circumstantiarum, poena pariter augeatur: et in iis quidem monasteriis, in quibus est frequentior monachorum numerus, ad mensam communem, ex schedulâ a superiore vel eius vicario scribendâ, legatur culpa et poena, indicato etiam nomine delinquentis, ad communem aedificationem, nisi forte ipse reus eodem in loco ex suâ devotione velit se ipsum simili modo accusare: quod etiam superior, cum id expedire in Domino iudicaverit, in-

iungere poterit. Secundum, ut poena gravior et gravissima non nisi cum maturiori consilio potius seniorum ab abbate indigatur, easque in scriptis, et postquam de culpa constiterit per confessionem rei, vel per competentis testimonio; et, si id rei gravitas exposcat, abbatis etiam generalis sententia rogetur. Tertium, ut fratribus pro vectae aetatis, quoad aliquas poenas aetati minime convenientes, abbas ita dispenset, ut alias simul magis congruentes iniungat: in graviore vero et gravissima culpa, taxatam in constitutionibus poenam nullatenus mutet, nisi causa commutandi sit legitime probata coram abbate generali. Quartum, ut abbas, dum alicuius culpam redarguit, aut poenam ei iniungit, caveat summo opere, ne id ex ira aut odio aut vehementi animi perturbatione faciat, multoque minus ne iniuriis verbis aut contumeliis sive imprecationibus reum excipiat: quod si id fecerit, a seniore monasterii moneatur semel, bis, tertio; sique emendatus non fuerit, ad abbatem generalem deferatur, qui ei debitam culpae poenam omnino iniungat.

v. Si quis ex fratribus iniunctam sibi poenitentiam ex protervia aut alia animi perturbatione subire detrectaverit, in cellam includi reum iubeat abbas; et postea mittat ad eum seniores patres, qui illum moneant ad poenitentiam et inducant ad obedientiam: quam si fecerit, bene erit; si autem adhuc in contumacia perseveraverit, triduo illum includi in cella iubebit, et pane tantum et aqua vesci. Idque cum culpa, ob quam poena iniungitur, non sit gravior aut gravissima: nam in eo casu augenda erit poenitentia iuxta qualitatem delicti, quemadmodum infra dicetur cap. xiv, num. 1.

vi. Cum culpae aliae sint leves, aliae graves, graviores et gravissimae, debet abbas poenitentias iuxta culparum qualitatem iniungere, ut infra praescribitur. Poenas vero commutare, et pro gravibus leves iniungere, aut viceversa pro levibus graves imponere, non poterit sine consilio et congregatione monachorum. Quae autem hic taxatae non sunt poenae, cum consilio eorundem monachorum in Domino taxabit.

Levium culparum non est numerus. Ex his autem, quae hic apponuntur, de ceteris iudicare prout erit. Levis culpa est:

CAP. III.
De levi culpa
et poena.

i. Si quis ad inchoationem officii, vel congregationis, vel collationis spiritualis non adfuerit;

ii. Si quis aliquid dixerit vel fecerit, unde fratres offendantur;

iii. Si quis quidpiam utensilium ex desiderio frerit aut perdiderit, vel cibi potusve aliquid effuderit;

iv. Si quis communi refectio non interfuerit;

v. Si quis constitutis horis silentium frerit;

vi. Si quis pro victu, aut vestimentis, aut alia re murmuraverit;

vii. Si quis eorum, qui communibus officiis deputati sunt, minus suum in re aliqua neglexerit;

viii. Si quis potum vel cibum sine licentia sumpserit;

ix. Si officio in tabula assignato defuerit;

x. Si quis in caeremoniis missae divinarumque officiorum minus decenter se gesserit, aut aliquid omiserit, vel de suo addiderit;

xi. Si quis oculos vagos ad vanitatem direxerit;

xii. Si quis strepitum in cella, vel monasterio, aut ecclesia, sonitumque fecerit.

Quicumque in praefatos et similes defectus inciderit, et de illis proclamatus fuerit, vel ipse se sponte proclamaverit, vel aliunde hoc ipsum constiterit, abbas iniungat peccanti unum psalmum, vel aliquot orationes dominicas, vel psalmos seu genuflexiones in refectorio aut ecclesia, iuxta modum quo excessit, et qualitatem personae.

Gravem culpam censemus:

CAP. IV.
De gravi culpa
et poena.

i. Si quis frater cum fratre vel externo, intus vel foris, rixas habuerit, si quis fratri vel saeculari contumeliam dixerit, vel minas et maledicta in eosdem protulerit;

ii. Si quis inter fratres discordiam, dicta unus alteri referendo, vel alio modo, seminaverit;

iii. Si quis iurare, mentiri, turpia vel scurrilia dicere, ad risum alios ineptis gar-

ritionibus provocare, silentium frangere, cum offensione præsertim fraternâ, in consuetudinem duxerit ;

iv. Si quis cum feminis aut pueris colloquendo, attentis circumstantiis loci, temporis et personarum, suspicionem aliquam vitii ingesserit aut ingerere potuisse iure præsumptus fuerit ;

v. Si quis dormierit sine tunica et cucullo ;

vi. Si quis exiverit sine socio assignato, aut illum mutaverit, aut extra monasterium reliquerit, vel solus sine licentiâ iverit, vel horâ, qua in monasterium redire debet, non redierit ;

vii. Si quis ex cellâ egrediatur et per monasterium vagetur tempore dormitionis ;

viii. Si quis medicinam sumpserit aut sanguinis minutionem fecerit sine licentiâ ;

ix. Si quis culpam præteritam fratri, pro qua satisfecerit, impropaverit ;

x. Si quis ieiunium ab Ordine præscriptum fregerit ;

xi. Si quis missam, confessionem, communionem, aut officium divinum in choro sine licentiâ omiserit.

Pro supradictis et similibus culpis iniungatur ieiunium, et strictum silentium per aliquod tempus, genuflexiones et prostrationes tempore refectionis communis, aut in ecclesiâ, psalmi etiam et orationes aliquot dominicae, secundum discretionem abbatis.

Gravior culpa est :

i. Si quis ieiunia Ecclesiae violaverit ;
ii. Si quis peccatum mortale manifeste commiserit contra praecepta Dei vel Ecclesiae, præter casus infra recensendos, cum de gravissimâ culpâ sermo erit ;

iii. Si quis sciens et volens sententiam excommunicationis aut suspensionis incurrit a iure vel ab homine latam, tam a praelato ecclesiastico, quam a superiore religioso, exceptis item casibus, in quibus, ob gravissimam culpam, excommunicatio vel suspensio infligitur ;

iv. Si quis sciens se esse excommunicatum aut suspensum, ut supra, celebraverit, vel in suis ordinibus ministraverit ;

v. Si quis calumniam in fratrem struxerit, sive in iudicio, sive privatim ;

vi. Si quis per fas aut nefas procuraverit ut ipse vel alter eximatur a potestate superioris tam monasterii quam provinciae aut abbatis generalis ;

vii. Si quis per contumaciam vel manifestam rebellionem inobediens suo superiori fuerit, vel cum eo intus aut foris contenderit ;

viii. Si quis secreta congregationum generalis, hegumenorum, provinciae et monasteriorum, aliis monachis sive professis, sive novitiis, vel etiam externis temere revelaverit ;

ix. Si quis decretis congregationum antedictarum se se opposuerit, aut superiori, præcipienti aliquid in virtute sanctae obedientiae, contradixerit ;

x. Si quis praelato ecclesiastico aut principi saeculari, in eis quae ad illos spectant, inobediens et contumax extiterit.

Pro huiusmodi et similibus culpis iniungantur ieiunia ; item assignetur ultimus locus, prostratio ante fores templi vel refectorii vel chori, dum fratres intrant, se-iunctio aut sequestratio a fratribus, ita ut nullus fratrum audeat se illi coniungere vel aliquod ei mittere, nec vocetur ad aliquod officium in ecclesiâ vel in choro ; mensa ponatur eidem sequestrata, ne cum aliis commisceatur ; demum privatio vocis activae et passivae in strictâ formâ ad aliquos annos iniungatur. Ex praedictis autem poenis superior, cum consilio seniorum patrum, plura vel pauciora, longius vel brevius, iuxta culpam, poenitenti imponat.

Gravissima culpa est :

i. Si quis haeresim aut schisma contra unam sanctam catholicam et apostolicam Ecclesiam secutus fuerit, aut a fide christi-
anâ defecerit ;

ii. Si ab Ordine nostro post professionem apostataverit, dimisso vel retento habitu ;

iii. Si quis proprietarius fuerit in pecuniâ, libris, vestibus, aut re aliâ magni momenti, tam recipiendo quam dando, vel alienando ;

iv. Si quis graviter fratrem vel extraneum quemcumque percusserit, et leviter etiam superiorem, idque irato animo ;

v. Si quis sigillum confessionis fregerit ;

vi. Si quis litteras nomine abbatis generalis, hegumenorum, abbatis provinciae vel monasterii, aut monachi alicuius vel monachorum confecerit, sive eas sigillo officii aut dignitatis vel personae firmaverit, sive non; itam qui litteras ad abbatem generalem aut hegumenos directas intercepterit, aut aperuerit et legerit;

vii. Si quis beneficium, incantationem, sortilegium, necromantiam, aut quaecumque aliam diaboli invocationem exererit;

viii. Si quis publicum scandalum vel infamiam gravem Ordini fecerit per manifestam lapsum carnis, cuiuscumque speciei sit;

ix. Si quis maligne conspirationem in superiorem suum machinatus fuerit;

x. Si quis machinationes et schismata ad destructionem vel divisionem Ordinis attentaverit;

xi. Si quis a superiorum sententia ad tribunalia saecularia appellare aut confugere ausus fuerit; quod si ab abbate gravari se praetenderit, ad abbatem generalem aut ad congregationem hegumenorum vel ad congregationem generalem recurrat; et si adhuc ab his praetenderit se gravari, recurrere poterit ad patriarcham, aut Romanum Pontificem;

xii. Si quis ordinem aliquem ecclesiasticum sine superiorum licentia ab episcopo acceperit, aut sine licentia episcopi ordinarii ausus fuerit ad saeculares concionari, eorum confessiones audire, a casibus Ordinario reservatis sciens et volens illos absolvere, aut sacramenta baptismi, extremae unctionis vel matrimonii administrare, uno verbo ministeria parochi obire.

Pro talibus criminibus, cum consilio fratrum seniorum, praeter poenas gravioris culpae, reus privetur cucullo et corona, et in cellam tamquam in carcerem detrudatur, ab omnium fratrum consortio seiunctus ad aliquos menses. Ne tamen huiusmodi poenitens propter impatientiam suam in desperationem praeceps ruat, mittat ad eum quandoque superior patres seniores, qui illum blandis verbis commoneant ad poenitentiam, et provocent ad patientiam: foveant per consolationem et inducant ad emendationem.

Recogitet autem abbas, qualem Deo sit ipse redditurus rationem, si forte sua impatientia et imprudenti severitate fratrem perdat pro quo Christus mortuus est. Memineritque sanctum patrem nostrum Antonium solitum fuisse dicere: « Fratrem in aquas lapsum, erigendum esse, non ad naufragium impellendum ».

i. Quaecumque de levi, gravi, graviori et gravissima culpa et poena dicta sunt, ea de superioribus respective intelliguntur, ita ut delinquentem abbatem monasterii abbas generalis puniat, hunc congregatio generalis: idque intelligendum de poenis suspensionis ab officio, depositionis et privationis vocis, loci et coronae, de quibus infra sermo erit.

ii. Levis culpa abbatis est, si cellas monachorum et officinas per se vel per vicarium visitare neglexerit; si ad divinum officium et ad communem refectionem sine causa aliquoties non venerit; si e monasterio sine necessitate exierit; si caeremonias ecclesiasticas minus decenter exercuerit; si quid dixerit vel fecerit, unde fratres offendantur; si in cibo, potu et vestimentis fratres cum indebita parsimonia tractaverit; si erga aliquem fratrem plus favoris vel asperitatis exhibuerit; si quid poculentorum vel esculentorum, in re tamen parvi momenti, extraneis dederit sine causa legitima. Pro huiusmodi defectibus ab abbate maiore corripiatur, et psalmi vel aliquot orationes dominicae seu genuflexiones ei iungantur.

iii. Gravis culpa est, si fratri vel externo verba iniuriosa dixerit, maledicta et imprecationes pronunciaverit; si discordias inter fratres seminaverit; si iurare, mentiri, turpia vel scurrilia dicere frequenter deprehensus fuerit; si saecularium domos sine necessitate frequentaverit; si cum feminis aut pueris colloquendo, attentis circumstantiis, suspicionem aliquam vitii ingesserit; si dormierit sine tunica et cucullo; si medicinam sine licentia medici sumpserit; si culpam praeteritam, pro qua satisfactum sit, alicui exprobaverit; si sine socio extra monasterium iverit; si ieiunium ab Ordine praescriptum fregerit; si missam, divinum

CAP. VII.
De culpis et
poenis superiorum.

officium in choro sine causâ omiserit; si absque eorum culpâ officiales ab officiis maligne removerit. Pro huiusmodi culpis iniungatur ieiunium per aliquot dies: item psalmi aliquot et orationes dominicae et genuflexiones.

iv. Gravior culpa est, si peccatum mortale manifeste commiserit contra praeceptum Dei vel Ecclesiae, praeter casus infra recensendos, cum de gravissimâ culpâ sermo erit; si sciens et volens sententiam excommunicationis aut suspensionis incurrerit; si sciens se esse excommunicatum vel suspensum, celebraverit, vel in suis ordinibus ministraverit; si rationem dati et accepti in libro describere neglexerit; si quem novitium admiserit non praevio examine; si nomina novitiorum et professorum non descripserit; si abbati generali aut abbati provinciae de statu sui monasterii aut provinciae non scripserit, ut supra suo loco dictum est; si monachum de suo monasterio in aliud sine causâ et sine congregatione monachorum miserit; si calumniam in fratres struxerit; si procuraverit ut ipse vel alter eximatur a potestate superioris, aut in officio confirmetur; si per contumaciam vel manifestam rebellionem inobediens superiori fuerit, vel cum eo contenderit; si secreta congregationum revelaverit; si decretis congregationum vel abbatis generalis sese opposuerit; si superiori praecipienti aliquid in virtute sanctae obedientiae non obedierit; si quid parvi momenti in virtute sanctae obedientiae fratribus praecipere consueverit; si praelato ecclesiastico aut principi saeculari in eis, quae ad illos spectant, contradicere culpabiliter, ac temere praesumpserit; si fratribus propriae conscientiae rationem iuxta morem reddentibus, secretum non servaverit. Pro similibus culpis iniungatur ieiunium per plures dies, item psalmi plures, et orationes dominicae, et genuflexiones; aut demum ab officio suspendatur vel removeatur, ex consilio congregationis hegumenorum.

v. Gravissima culpa est, si haereticus aut schismaticus fuerit, aut a christianâ religione defecerit; si ab Ordine nostro apo-

stataverit; si graviter fratrem vel extraneum percusserit, et leviter etiam superiorem; si absque superioris licentiâ fabricam magni momenti praeceperit; si munus a fratre acceperit ut ei officium aliquod committat; si bona mobilia aut immobilia monasterii sine congregatione monachorum aut abbatis generalis, aut eorum, ad quos spectat, licentiâ, alienaverit; si monachum propria auctoritate e monasterio eiecerit sine licentiâ abbatis generalis; si sciens et volens novitium impedimentum aliquod habentem admiserit, nec facultatem habuerit vel a legitimo superiore obtinuerit; si sigillum confessionis fregerit; si litteras nomine abbatis generalis vel hegumenorum vel congregationis generalis confinxerit, aut nomine monachorum; si litteras ad superiores directas interceperit, vel aperuerit et legerit; si veneficium, incantationem, sortilegium, necromantiam, aut alias huiusmodi diabolicas artes exercuerit; si legitime convictus fuerit peccatum carnis admisisse; si conspiracy in abbatem generalem molitus fuerit; si machinationes et schismata ad destructionem vel divisionem Ordinis attentaverit; si a superiorum sententiâ ad tribunal saecularium appellaverit; si sine licentiâ abbatis generalis ordinem aliquem ecclesiasticum acceperit, aut sine licentiâ episcopi ordinarii ausus fuerit concionari ad saeculares, eorumque confessiones audire, aut reliqua facere, quae facultatem Ordinarii requirunt. Pro talibus criminibus, ex consilio congregationis hegumenorum, praeter poenas gravioris culpa, reus in cellam ad aliquos menses, tamquam in carcerem detrudatur; praeterea voce activâ et passivâ per quinquennium privetur. Si vero apostata fuerit vel homicida, aut proprietarius, eam poenam subibit quae infra describetur. Eandem apostatarum poenam luent, qui a sanctâ catholicâ fide ad haeresim, vel schisma, vel infidelium sectam defecerint.

1. Si quis fratrum vel abbatum animo irato percussione alicui comminatus fuerit, poenam gravioris culpa per hebdomadam sustinere cogatur; si vero aliquem fratrem aut extraneum manu percusserit,

CAP. VIII.
De percussio-
ribus.

eandem poenam luat per quindecim dies, nisi gravis laesio fuerit; si vero percusserit ligno aut lapide, vel aliâ re, sine gravi laesione, per mensem eidem graviori poenae subiaceat.

II. Propter gravem autem laesionem fratris vel extranei, sive manu, sive quacumque aliâ re percussio fuerit, vel levem etiam laesionem superiori factam, percussor poenam gravissimae culpae per duos menses sustineat, et utrâque voce per triennium careat, a solo abbate generali absolvendus.

III. Si vulnus lethale inferatur, mors tamen non sequatur, eandem poenam gravissimae culpae per sex menses absque ullâ dispensatione sustineat, et per quinquennium voce careat. Si autem (quod Deus avertat) usque ad homicidium aliquis prolaberetur, talis omnino sine ullâ dispensatione puniatur poenis gravissimae culpae per decennium, et utrâque voce perpetuo careat.

IV. Tantum vero praedictis poenis addatur, quantum abbati de consilio patrum seniorum visum fuerit expedire, attentâ qualitate personae percutientis, percussae, percussione, et scandali magnitudine.

V. Frequentans hoc vitium, etiam levi percussione, ad nullum officium eligibilis censeatur.

VI. Percussores superiorum, praeter expressas poenas, voce utrâque perpetuo careant cum suis complicitibus et fautoribus.

I. Qui cibum, potum, aut alia parvi momenti sine licentiâ superioris receperit, primâ vice charitative moneatur a superiore; pro secundâ gravius reprehendatur; deinceps vero poenâ graviori puniatur pro arbitrio abbatis.

II. Si pecuniam aut aliquam rem magni momenti sine licentiâ a quocumque habuerit vel alienaverit, non debet a confessario absolvi, nisi prius ipse poenitens illud superiori praesentaverit, aut alienatum, si possibile fuerit, recuperaverit. Deinde, si peccatum proprietatis publicum fuerit, aut a superiore per indicia vel testes deprehensum, proprietarius, praeter privationem vocis activae et passivae, per mensem gravioris culpae poenam luat, quae augeri et

minui poterit iuxta qualitatem delicti et quantitatem materiae. Debet autem a congregatione generali determinari quantitas materiae sufficientis ad culpam gravem proprietatis, ut dicatur res magni momenti quae recipitur vel alienatur, et propter quam incurritur in casum reservatum et in poenam graviorem, atque eadem notificari.

III. Si post mortem proprietarius quis inventus fuerit, sive subditus, sive abbas, nec in infirmitate peccatum confessus fuerit deque eo doluerit, sacrificium aut aliquod officium pro ipsius animâ non fiet, et sepultura ecclesiasticâ privetur, idque cum consilio patrum seniorum, nisi forsan ex tali poenâ scandalum saecularibus generaretur.

IV. Surripientes aliquid tam ex monasterio, quam ex cellâ fratrum, et ab externis, praeter infamiam, duplicatâ poenâ proprietariorum puniantur.

V. Qui non revelat pecunias aut bona mobilia seu immobilia acquisita a se vel ab aliis fratribus, inter proprietarios recenseatur et poenâ proprietariorum plectetur. Eandem culpam et poenam incurret abbas, qui bona monasterii in loco abscondito ponit sine duorum saltem fratrum notitiâ.

I. Monachus quicumque, si post professionem habitum sponte dimiserit, aut retento habitu, sed inconsulto superiore, monasterium deseruerit, cum magnâ charitate et prudentiâ a superiore requiratur: qui proinde per se vel per alios omnes operam impendat ut ovem errantem ad ovile quamprimum reducat: redeuntem cum omni charitate et paterni amoris significatione recipiat: et antequam poenas poenitenti iniungendas procedat, eundem doceat per se vel per aliquem ex patribus senioribus, non eas imponi ad ipsius poenitentis destructionem, sed ad aedificationem et salutem. Cum autem ad suscipiendam correptionem illius animum bene praeparatum fuisse comperebit, sequentes poenitentias eidem iniungat cum consilio patrum seniorum. Primo ad praelationem per quinquennium inhabilis fiat, et voce tum activâ tum passivâ pri-

CAP. X.
De apostatis.

CAP. IX.
De proprietatibus.

vetur, et primo anno ultimum locum teneat: et per mensem integrum coronâ et cucullo privetur, si habitum dimisisset; secus, si eum retinuisset: si vero laicus aut clericus in minoribus ordinibus constitutus esset, per quinquennium novissimus sedeat, et voce activâ et passivâ privetur, perque mensem cucullo privetur, si habitum dimisisset. Secundo, per aliquot menses in cellam includatur, et ieiunet in pane et aquâ. Tertio, per unam hebdomadam, postquam e cellâ egressus et ad consortium fratrum admissus fuerit, sequestratum locum habeat in ecclesiâ, in choro et in mensâ.

II. Si secundo vel tertio apostataverit, poenae suprapositae ei multiplicentur ex consilio patrum seniorum. Quod si cum scandalo, relicto Ordine, inhonesta vixerit, aut diutius extra Ordinem permanserit, poena illi augeatur iuxta qualitatem scandali, delictorum et morae diuturnitatem. De quo vero non constat, quod habitum dimiserit, aut ex Ordine fugerit, sed tantum vagus intra vel extra provinciam, praetextu ad-eundi superiorem, in habitu circumierit, is poenas gravioris culpae sustineat, iuxta moram vagationis et qualitatem delictorum; tamen, ut superior prudenter prospiciat, quid attento praesenti statu poenitentis in Domino expediat, adhibito etiam seniorum patrum consilio, ne remedia, quae in salutem infirmorum fratrum excogitata sunt, in eorum ruinam et exitium vertantur.

III. Apostata ab Ordine monastico, vel fugitivus, sive monachus fuerit sive abbas, a nullo absolvi potest, nec in monasterium recipi, praeterquam ab abbate generali: ad quem proinde remittendus erit reus, vel saltem scribendum. Cum autem abbas generalis facultatem suam abbati monasterii commiserit, tunc, convocatâ monachorum congregatione, genuflexus reus humiliter culpam suam dicat, et abbas intonat psalmum *LI Miserere mei Deus*, quem fratres alternatim prosequuntur. Dictoque *Gloria Patri*, abbas illum absolvit, dicens: *Deus misereatur tui et dimittat debita tua, et ego, auctoritate ipsius et reverendissimi patris nostri N. abbatis generalis, absolvo te a vinculo*

excommunicationis, in quam propter apostasiam vel fugam ex Ordine incurristi, et restituo te communioni et iunctis fidelium, et participationi sanctorum Ecclesiae sacramentorum. In nomine Patris † et Filii † et Spiritus Sancti. Amen. Sed si fuerit abbas generalis, dicat: *Deus misereatur tui, et ego auctoritate ipsius absolvo te, etc.* Tunc iniungat ei poenitentiam, ut supra.

IV. Tempus apostasiae vel fugae non computatur monacho inter annos monachatus.

V. Idem dicendum de apostasiâ a fide christianâ vel catholicâ ad haeresim, schisma aut infidelium sectam, quod dictum est de apostasiâ a professione monasticâ: ab eo tamen casu absolvi nequit nisi ab Ordinario competente.

I. Solus abbas generalis potest poenam excommunicationis infligere monachis. Id tamen raro admodum fiat et ex urgentissimâ necessitate. Et primo quidem ex consilio et deliberatione congregationis hegumenorum;

II. Ob unam ex culpis gravissimis, quae supra cap. VI et VII recensentur;

III. Post factum canonicè processum, et praemissâ trinâ monitione canonicâ cum certis intervallis, ut puta unius, vel plurium dierum, aut etiam horarum, si periculum sit in morâ.

IV. Affigenda erit sententia excommunicationis cellae eius, qui excommunicatur, aut legenda in congregatione monachorum sive excommunicatus praesens, sive absens fuerit.

V. Vulgandum erit eius nomen omnibus illius monasterii et provinciae monachis, ut ab omnibus devitetur. Sententia vero excommunicationis concipietur in hunc modum: *Ego N. abbas generalis, habitâ hegumenorum NN. NN. congregatione, per hanc sententiam, quam in scriptis pronuncio, auctoritate Dei omnipotentis, Patris et Filii et Spiritus Sancti, et exigente contumaciâ patris NN. ob tale delictum (quod debet omnino exprimi), ipsum excommunico, et pro excommunicato haberi declaro; et tandiu ipsum vitandum denuncio, donec adimpleverit quod mandatur.* Si abbas monasterii vel visitator

CAP. XI.
De excommu-
nicatione.

ex commissione abbatis generalis sententiam excommunicationis pronunciet, dicat: *Ego N. abbas monasterii N., vel visitator monasterii aut provinciae N., specialiter ab abbate generali et hegumens deputatus, per hanc sententiam, quam in scriptis pronuncio, etc.* Cum erit absolvendus, utatur abbas formula, quae supra descripta est cap. x.

vi. Omnis excommunicatus quascumque excommunicatione, sive a canone sive ab homine, tam a praelato ecclesiastico quam ab abbate generali, non ingrediatur ecclesiam vel chorum, neque ad communem cum fratribus mensam admittatur. Neque officio ullo aut dignitate fungatur in monasterio, neque vocem activam aut passivam habeat in electionibus. Quinimo, quamdiu sic steterit, ab omnibus evitetur, donec resipiscat, et a legitimo superiore absolvatur, postquam id, quod praeceptum est, adimpleverit.

i. Qui privatur voce passivâ, per hoc redditur inhabilis ad maiora officia in nostro Ordine; minora tamen potest exercere, ut sunt infirmarii, ianitoris, coqui et similia. Privatus autem voce activâ non potest suffragium ferre in aliquâ electione aut congregatione, neque potest fieri accusator, aut testis adversus fratrem: potest tamen assumi secreto pro aliquâ informatione rei necessariae. Privatus voce omnimodâ nulum fratrem poterit alloqui, nisi prius a superiore licentiâ petita pro aliquâ re necessaria.

ii. Nullus abbas audeat fratrem privare voce, nisi in casibus supra positis, idque adhibito consilio et consensu fratrum seniorum.

iii. Privatus loco, ultimum locum occupet in choro, ecclesiâ et refectorio: sacerdos quidem inter sacerdotes, diaconus inter diaconos, et sic deinceps.

iv. Qui poenâ erit maiori dignus quam sit privatio loci aut vocis propter suam proterviam et pravissimam culpam, poterit cucullo et coronâ privari, et ad obsequia infirmâ in monasterio destinari, ut dictum est supra, cap. v, vi, vii, viii et x.

i. Abbas, qui suspenditur ab officio, per hoc inhabilis redditur ad illud exercendum, et insuper utrique voce carebit. Si vero proterve officium exercuerit, procedi debet ad depositionem; et inhabilis redditur per quinquennium in omne officium, et utraque voce per integrum annum carebit.

ii. Qui deponitur ab officio, per hoc privatur non solum eo officio, quod statim alteri committi debet; sed etiam voce activâ et passivâ per annum carebit.

iii. Solus abbas generalis cum congregatione hegumenorum suspendere potest aut deponere hegumenum et abbatem provinciae ac monasterii. Abbatem vero generalem suspendere ac deponere non potest nisi congregatio generalis.

iv. Qui praeter abbatem generalem, hegumenos et abbates provinciae vel monasteriorum ab officio suspenduntur vel deponuntur, non idcirco voce privabuntur, nisi in culpam graviores et gravissimam incidissent.

v. Nemo ex abbatibus suspendi aut deponi debet, nisi ob culpam de qua supra.

vi. Si acciderit aliquod ex peccatis (averat id Deus) quae sufficiunt ad abbatem generalem ab officio suspendendum vel privandum, simul atque per testimonia sufficientia, vel ipsius confessionem, aut facti notorietatem constiterit, quatuor hegumeni unâ congregati, rem, donec veritas elucescat, secretam tenentes, congregationem generalem abbatum provinciarum et monasteriorum, litteris omnium subscriptione signatis, convocabunt, ut dictum est supra, part. iii cap. iv, num. ii. Si vero res divulgata et manifesta esset, non expectatâ hegumenorum convocatione, abbates locorum et provinciarum alii alios vocando conveniant. Et primum audiantur accusatores, deinde reus; nisi res notoria esset, reo foras dimisso, primus hegumenorum cum antiquiore abbate et cum secretario ad hanc causam electo, de toto negotio scrutinium faciet. Et primo quaeratur an constet de peccato, quod obiicitur; secundo an huiusmodi sit,

Cap. XIII.
De suspensione et depositione ab officio.

Cap. XII.
De privatione vocis, loci, cuculli et coronae.

1 Ed. Main. legit *infirmâ* pro *infirma* (R. T.).

1 Videtur legendum ad (R. T.).

ut propter illud ab officio suspendi aut deponi debeat. Et idem suffragia promulget, quae, ut sufficiant, duas tertias partes excedent; et tunc statim de alio eligendo agatur; et, si fieri potest, non prius inde egrediantur, quam electionem perfecerint. In qua re duo animadvertenda sunt. Primum, ut, si defectus ad suspensionem aut depositionem sufficientes non deprehenderentur, aliis de rebus agatur, propter quas convocata congregatio videatur, et quod ad abbatem generalem attinet, dissimuletur, imo vero nullo tempore divulgari debet: et sic, cum abbates convocantur, praemonendi sunt de secreto. Secundum, si constitutum fuerit illum ab officio suspendere aut deponere, tunc etiam cum eodem abbate generali secreto agendum est, ut ipsemet se officio abdicet, ut, cum hoc promulgatum fuerit, peccatum et officii propter peccatum privatio occultetur. Si autem defectus non fuerit eiusmodi, ut privandus officio suo non sit, sed tantum corrigendus videretur, quinque eligentur, quibus cura iniungatur considerandi, quae correctio ei conveniat, et ipse omnino obedire congregationi generali teneatur.

VII. Crimina, ob quae abbas generalis suspendi vel deponi ab officio potest, sunt haec: si haereticus fuerit aut schismaticus aut a Christi fide ad sectam infidelium defecerit; si ab Ordine nostro apostataverit; si graviter fratrem vel extraneum percusserit, aut homicidium commiserit; si fabricam magni momenti praeceperit, aut bona religionis alienaverit, aut novum monasterium acceperit vel fundaverit, aut vetus deseruerit, inconsulta congregatione hegumenorum; si novitium contra constitutiones Ordinis receperit habentem impedimenta, a quibus ipse dispensandi non habet facultatem; si sigillum confessionis fregerit; si litteras ad congregationem generalem vel hegumenorum directas interceperit et occultaverit, aut aperuerit legeritque; si veneficium, sortilegium et quid simile exercuerit; si peccatum carnis admiserit; si munera a fratre acceperit, ut ei officium aliquod daret; si muneribus, dolo, vi aut

arte qualibet officium sibi ipsi aut aliis dari aut confirmari procuraverit; si machinationes et schismata ad destructionem vel divisionem Ordinis fecerit; si a sententia congregationis generalis aut hegumenorum ad tribunal saecularium appellaverit vel confugerit. Si sine licentia Ordinarii ea sacramenta administraverit, quae expressam licentiam requirunt; si vero infirmo corpore et adversa valetudine fuerit, ita ut regimine vacare non possit, non debet deponi, sed ei a congregatione hegumenorum vicarius substituitur, donec commissi regiminis triennium compleatur.

VIII. Si quis hegumenorum in unum ex supra enumeratis criminibus inciderit, debet ab abbate generali et reliquis hegumenis deponi.

I. Qui unum vel plures ex gravioribus vel gravissimis criminibus a cap. v ad cap. xiii supra descriptis commiserit, saepeque monitus non resipuerit et qui poenitentiam pro illis non acceptaverit, sex mensium spatio in ieiunio probetur, et ad tres menses ab omnium consortio segregetur. Idque praeter privationem vocis activae et passivae, aut etiam loci, coronae et cuculli, quam subire debebit iuxta qualitatem culpae gravioris aut gravissimae. Si vero unum ex infrascriptis gravissimis criminibus commiserit, atque semel, iterum, ac tertio admonitus et correctus ad idem crimen redierit, post tertiam admonitionem, ne alios contagione pestifera perdat, eiici tandem poterit, servatis servandis, non aliter tamen, quam ab abbate generali de consilio et assensu quatuor hegumenorum; deque eius eiectione certior fiat reverendissimus dominus patriarcha ab eodem abbate generali.

II. Eiectus extra Ordinem degens, sit perpetuo suspensus ab executione Ordinum.

III. Quia vero sumus in medio nationis pravae, ne forte eiectus ad haereticos vel infideles accedat, debet abbas generalis rem antea cum patriarcha tractare, hominemque in manus eius consignare, ut pro sua prudentia et arbitrio de eo disponat.

IV. Crimina, ob quae monachus ex Or-

Cap. XIV.
De poena eiectionis ex Ordine.

dias alibi potest, postquam admonitus et correctus non responderit, idem ter in communis, tertio de illa non responderit, quavis ter admonitus et correctus, sunt haec: si a sancta catholica ecclesia ad haereticos, schismaticos vel infideles defecerit; si ab Ordine nostro apostataverit; si fratrem vel extraneum graviter percusserit aut occiderit; si fornicatus fuerit; si rem magni momenti furatus fuerit e monasterio vel a saecularibus; si sciens et volens cellam, monasterium, templum, aut quod simile incenderit; si sigillum confessionis fregerit; si veneficia, incantationes et cetera huiusmodi exercuerit; si in iudicio periculosus fuerit; si ab obedientia Romani Pontificis, aut patriarchae proterve rebellaverit; si sine licentia Ordinarii sciens et volens ea sacramenta administraverit quae expressam licentiam requirunt; si machinationes et schismata fecerit ad destructionem vel divisionem Ordinis; si a sententia abbatis generalis, aut a congregationis generalis vel hegumenorum ad infideles provocaverit; si ad infideles confugerit, ut procurent sibi vel aliis aliquod officium vel dignitatem in Ordine aut extra Ordinem. Penes congregationem hegumenorum erit iudicare, poenamque electionis infligere etiam ei monacho, qui non in idem ex supradictis criminibus ter incidit, sed tria diversa, vel plura ex iis crimina commisit.

v. Atque hoc loco rursus superiores admonentur, ne sua socordia aut vitiosa severitate fratres suos ad hunc miserabilem saltum de monasterio ad saeculum, de saeculo in infernum adigant; sed, cum vix ullum ingenium sit, adeo pertinax et ferox, quod, adspirante Dei gratia, mansuetudine et lenitate superiorum vinci, tractuque temporis ad bonam frugem revocari non possit, ut superiores ad hoc extremum remedium devenire non cogantur, discant ab Apostolo omnia sua in charitate esse facienda: *charitas autem patiens est, benigna est; charitas non aemulatur, non agit perperam, non inflatur; non est ambiciosa, non quaerit quae sua sunt, non irritatur, non cogitat malum, non gaudet super iniquitate, sed gaudet veritati.*

Quamobrem antequam ad electionis poenam progrediantur, praemittenda erunt omnia alia remedia a sanctis Patribus praescripta, adeo ut, si fieri potest, communal omnium et privatis singulorum fratrum aedificationi et saluti prospiciatur.

i. Ut defectibus in Ordinem sensim irrepentibus occurratur, et religiosa perfectio conservetur, vel etiam augeatur, possunt aliquae novae constitutiones pro toto Ordine praesentibus addi, quae eandem vim ac robur habeant, sive nonnullae ex iis mutari vel abrogari, dummodo regula, quae in prioris partis capitibus duodeviginti continetur, intacta maneat; idque non aliter fiat, nisi in congregatione generali. Insuper, pro bono particularium monasteriorum, possunt ab abbate generali, aut a congregatione hegumenorum, vel a visitoribus a generali vel hegumenorum congregatione deputatis, aliquae particulares constitutiones fieri, quae tamen generalibus huius constitutionibus expresse non adversentur, sed iis, quantum fieri potest, accomodentur.

ii. Explicatio constitutionum et regulae pertinet ad solum abbatem generalem cum consilio hegumenorum; isque erit genuinus earum sensus, in quem maior pars congregationis hegumenorum consenserit.

iii. Omnes abbates tenebuntur habere in quolibet monasterio duo saltem exemplaria regulae et constitutionum tam generalium quam particularium, si quae sunt, proprii monasterii, illasque in publica mensa aut congregatione faciant legi fratribus, sub poena suspensionis ab officio, quolibet mense, die determinanda, per congregationem generalem; idque intelligitur de prima, secunda et quinta parte; nam tertia et quarta pars constitutionum legi debent semel in anno, die item per congregationem generalem determinanda.

iv. Et quia per vigilantiam aut socordiam superiorum, ut plurimum, profectus aut defectus monachorum in Ordine constant, idcirco omnes superiores in Domino monentur, ut memores sint rationis, quam in novissimo die reddituri sunt pro grege sibi commisso: ac propterea omni studio invi-

CAP. ULTIMUM.
Monita generalia pro observatione constitutionum.

gilent, ut, quae ex disciplina sancti patris nostri Antonii et ex regulis sanctorum patrum nostrorum Pachomii et Basilii, aliorumque sanctorum, in hoc codice collecta sunt, quaeque maxime circa vota Ordinis, chorum, orationem mentalem, ieiunium, aliaque spiritualia exercitia praescribuntur, omnia et singula adamussim observentur: intelligantque super his veluti fundamentis totius monastici instituti aedificium construendum et ampliandum esse.

v. Ut vero omnia ordinate peragantur, monachus quisque officii sui regulas seu constitutiones in tabulâ vel codice scriptas apud se habeat, easque diligenter perlegat et observare satagat.

Ad laudem et gloriam Dei omnipotentis Patris et Filii et Spiritus Sancti, et ad honorem SS. Virginis Deiparae Mariae, et sancti patris Antonii, omniumque sanctorum. Amen.

Supra relatas constitutiones plenissime probat Clemens.

§ 4. Nos igitur, ipsorum Simonis abbatibus, et Abrahami, Bimini ac Pauli definitorum et monachorum votis hac in re, quantum cum Domino possumus, favorabiliter annuere volentes, eosque a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodati existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutos fore censes, istiusmodi supplicationibus inclinati, omnes et singulas regulas ac constitutiones praeinsertas, et in eis contenta quaecumque, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, perpetuo confirmamus et approbamus, illisque inviolabilis apostolicae firmitatis robur adiicimus, ac omnes et singulos iuris et facti, ac solemnitatum quarumlibet in similibus etiam de necessitate observandarum, aliosve quoslibet etiam formales et substantiales defectus, si qui in praemissis, principaliter vel accessorie, aut alio

quovis modo intervenerint, seu intervenisse dici, censeri vel praetendi possent, penitus et omnino supplemus et sanamus.

§ 5. Decernentes, easdem praesentes litteras, ac regulas et constitutiones praeinsertas, semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore quodcumque spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis respective inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, ac S. R. E. praedictae cardinales, etiam de latere legatos et Apostolicae Sedis nuntios, aliosve quoslibet quacumque praeeminentiâ et potestate fungentes et functuros, sublatâ eis et eorum cuilibet quavis aliter iudicandi et interpretandi facultate et auctoritate, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Sicque semper et ubique servari iubet et definiri.

§ 6. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ac, quatenus opus sit, Congregationis et Ordinis praefatorum, aliisve quibusvis, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis, etiam Congregationi et Ordini praedictis, illorumque superioribus monachis et personis, sub quibuscumque verborum tenoribus et formis, ac cum quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, efficacissimis et insolitis clausulis, irritantibusque et aliis decretis, in genere vel in specie, seu aliâs quomodolibet, in contrarium praemissorum concessis, ac pluries confir-

Derogat obstantibus.

matas, approbatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, etiamsi pro illorum sufficienti derogatione de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa et individua; ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quaevis alia expressio habenda aut alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores huiusmodi, ac si de verbo ad verbum, nihil penitus omisso, et formam in illis traditam observatam, exprimerentur et insererentur, praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliis in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Transumptis
eodem addit.

§ 7. Volumus autem ut earumdem praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, sic impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiastica dignitate munitis, eadem prorsus fides tam in iudicio quam extra illud ubique locorum habeatur, quae haberetur ipsis praesentibus si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xvii ianuarii mcccxl, pontificatus nostri anno x.

Dat. die 17 ianuarii 1740, pontif. anno x.

CCLXXIII.

Breve Alexandri VII, quo usus transiendi ad aliam religionem, provinciis Ss. Ioannis Baptistae et Iosephi fratrum Ordinis Minorum sancti Francisci de Observantia Discalceatorum nuncupatorum concessus, abrogatur, extenditur ad provinciam S. Antonii in Brasiliâ eiusdem Ordinis.

Clemens Papa XII, ad perpetuam rei memoriam.

§ 1. Emanarunt dudum a felici recordationis Alexandro PP. VII praedecessore nostro litterae in simili forma Brevis expeditae tenoris qui sequitur, videlicet:

Breve Alexandri VII, de quo in rubrica.

« Alexander PP. VII, ad futuram rei memoriam. Cum, sicut dilecti filii ministri provinciales et fratres provinciarum Ss. Ioannis Baptistae et Iosephi Ordinis Minorum sancti Francisci de Observantia Discalceatorum nuncupatorum regni Hispaniarum nobis nuper exponi fecerunt, ipsis aliis provide consideraverint incommoda, quae eisdem provinciis in dies proveniunt ex eo quod nonnulli earumdem provinciarum religiosi huiusmodi, praetextu vitae melioris, praetendant e dicto Ordine transire ad fratres Carthusianos, petita dumtaxat, licet non obtenta, ad id suorum superiorum licentiam: nobis propterea iidem exponentes, ut eadem provinciae in eorum statu reformato et in pacis et quietis universalis amoenitate conserventur, humiliter supplicari fecerunt ut in praemissis opportune ut infra providere de benignitate apostolica dignaremur. Nos igitur, eosdem exponentes specialibus favoribus et gratiis prosequi volentes, et eorum singulares personaset a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censentes, huiusmodi supplicationibus inclinati, de venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. cardinalium negociis et consultationibus episcoporum et regularium praepositorum consilio, atten-

tis narratis, ad evitanda exposita inconvenientia, ac aliis iustis de causis, ut in futurum nulli Ordinis huiusmodi religioso professo, etiam sub praetextu arctioris vitae, seu quovis alio quaesito titulo, liceat ad quamcumque aliam religionem quantumlibet strictiorem transire, nisi prius in pleno definitorio licentiam transeundi petierint, eamque per maiorem partem suffragiorum favorabilium legitime obtinuerint; ac nullum et inane quidquid secus gestum fuerit, apostolicâ auctoritate, tenore praesentium, decernimus: cognitionem vero causarum praetensorum gravaminum propter denegationem praedictae licentiae eisdem cardinalibus etiam privative quoad alios quoscumque iudices, quantumvis specificâ et specialissimâ mentione dignos, avocamus et reservamus. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ac dicti Ordinis, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis firmitate aliâ roboratis, statutis et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permansuris, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xviii martii MDCLIX, pontificatus nostri anno IV ».

Huiusmodi Breve ad provinciam S. Antonii in Brasiliâ extendi petii provincialis.

§ 2. Quoniam autem dilecti filii moderni minister provincialis, custodes et definitores provinciae sancti Antonii in Brasiliâ eiusdem Ordinis fratrum Minorum sancti Francisci de Observantiâ Excalceatorum nuncupatorum nobis nu-

per exponi fecerunt, ipsi litteras praedictas ad huiusmodi provinciam per nos extendi plurimum desiderant¹:

§ 3. Nos, piis eorumdem exponentium votis hac in re, quantum cum Domino possumus, benigne annuere volentes, ac eorum singulares personas a quibusvis excommunicationis, suspensionis et interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris et poenis, a iure vel ab homine, quavis occasione vel causâ latis, si quibus quomodolibet innodatae existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes et absolutas fore censentes, supplicationibus eorum nomine nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, praeinsertas memorati Alexandri praedecessoris litteras, omniaque in illis disposita quoad provincias Ss. Ioannis Baptistae et Iosephi dicti Ordinis regnorum Hispaniarum, ad provinciam S. Antonii in Brasiliâ eiusdem Ordinis, auctoritate apostolicâ, tenore praesentium, extendimus pariter et ampliamus.

§ 4. Decernentes, easdem praesentes litteras semper firmas, validas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus sortiri et obtinere, ac illis, ad quos spectat et pro tempore spectabit, in omnibus et per omnia plenissime suffragari, et ab eis inviolabiliter observari, sicque in praemissis per quoscumque iudices ordinarios et delegatos, etiam causarum palatii apostolici auditores, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

§ 5. Non obstantibus praemissis, ac constitutionibus et ordinationibus apostolicis, necnon provinciae S. Antonii ac Ordinis huiusmodi, etiam iuramento, confirmatione apostolicâ, vel quavis fir-

Concedit Clemens.

Firmitas harum litterarum.

Derogatio coarctationum.

¹ Edit Main. habet *desiderant* (n. r.).

mitate aliâ roboratis, et consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis et litteris apostolicis in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis et innovatis; quibus omnibus et singulis, illorum tenores praesentibus pro plene et sufficienter expressis, ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliâs in suo robore permanens, ad praemissorum effectum, hac vice dumtaxat, specialiter et expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Transumptis
danda fides.

§ 6. Volumus autem ut earumdem praesentium litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu notarii publici subscriptis, et sigillo personae in ecclesiasticâ dignitate constitutae munitis, eadem prorsus fides ubique locorum; tam in iudicio quam extra illud adhibeatur, quae ipsis praesentibus adhiberetur si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, sub annulo Piscatoris, die xxii ianuarii mcccxl, pontificatus nostri anno x.

Dat. die 22 ianuarii 1740, pontif. anno x.

CCLXXIV.

Damnatio et prohibitio libri gallico idiomate impressi sub titulo Histoire du livre de réflexions morales sur le Nouveau Testament et de la Constitution Unigenitus. A Amsterdam.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Inter ceteras pastoralis curae sollicitudines, quibus premimur assidue, illa potissimum nos urget, ut ad succrescentia pravarum doctrinarum atque haeresum zizania, quae nequitiae operarii in vineâ Domini, quae est Ecclesia, licentius superseminare nituntur,

ex¹ iniuncto nobis divinitus apostolici muneris debito, quantum cum Domino possumus, convellenda iugiter animum intendamus.

§ 1. Eapropter, cum non sine intimo cordis nostri moerore accepimus² in lucem prodierit librum quemdam in quatuor tomos distributum, gallico idiomate impressum, cui titulus *Histoire du livre des réflexions morales sur le Nouveau Testament et de la Constitution Unigenitus, A Amsterdam*, plures autem fratres nostri S. R. E. cardinales, auditâ libri huiusmodi censurâ sibi relatâ, illum, tamquam continentem propositiones falsas, captiosas, piarum aurium offensivas, scandalosas, temerarias, Ecclesiae et eius praxi iniurias, neque in Ecclesiam solum, sed etiam in potestates saeculi contumeliosas, seditiosas, impias, blasphemias, suspectas de haeresi, ac haeresim ipsam sapientes, necnon haereticis et haeresibus ac etiam schismati faventes, erroneas, haeresi proximas, pluries damnatas, ac demum etiam haereticas, variasque haereses, et praecipue³ Iansenianam ac Quesnellianam manifeste innovantes et asserentes respective, prohibendum ac condemnandum esse censuerint:

§ 2. Nos itaque, ne christifidelium animae apertis mendaciis ac damnabilibus deceptae opinionibus a veritatis et iustitiae semitâ amoveantur, de eorumdem cardinalium consilio, ac etiam motu proprio et ex certâ scientiâ et maturâ deliberatione nostris, deque apostolicae potestatis plenitudine, supradictum librum sub supra expresso aliove quocumque titulo ubicumque et quocumque alio idiomate seu quavis editione aut versione hucusque impressum,

Libellum haereticos Iansenianam et Quesnellianam innovans, erroneis propositio-
nibus,

Damnatur.

¹ Edit. Main. legit et pro ex (R. T.).

² Ex syntaxi legendum accepimus (R. T.).

³ Edit. Main. legit praecipuae (R. T.).

aut imposterum, quod absit, imprimendum, tenore praesentium damnamus et reprobamus, ac legi seu retineri prohibemus, ipsiusque libri impressionem, descriptionem, lectionem, retentionem et usum omnibus et singulis christifidelibus, etiam specificâ et individuâ mentione dignis, sub poenâ excommunicationis per contrafacientes ipso facto absque aliâ declaratione incurrendâ, a qua nemo a quoquam (praeterquam a nobis seu Romano Pontifice pro tempore existente), nisi in mortis articulo constitutus, absolutionis beneficium valeat obtinere, omnino interdiciamus.

Exemplaria
locorum Ordina-
riis tradenda,
ut flammis con-
signentur.

§ 3. Volentes et auctoritate apostolicâ mandantes, ut, quicumque librum huiusmodi penes se habuerint, vel in futurum quodcumque habebunt, illum, statim atque praesentes litterae eis innotuerint, locorum Ordinariis vel haereticae pravitatis inquisitoribus tradere et consignare teneantur; hi vero exemplaria sibi sic tradita illico flammis aboleri curent: in contrarium facientibus non obstantibus quibuscumque.

Publicatio
damnationis.

§ 4. Ut autem praesentes litterae omnibus facilius innotescant, nec quisquam illarum ignorantiam allegare possit, volumus et auctoritate praedictâ decernimus, illas ad valvas basilicae Principis Apostolorum ac Cancellariae Apostolicae necnon Curiae generalis in Monte Citatorio et in acie Campiflorae de Urbe per aliquem ex cursoribus nostris, ut moris est, publicari, illarumque exempla ibidem affixa relinqui; sic vero publicatas, omnes et singulos, quos concernunt, perinde afficere, ac si unicuique illorum personaliter notificatae et intimatae fuissent; ipsarum autem litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impresis, manu alicuius notarii publici subscriptis, et sigillo personae

in ecclesiasticâ dignitate constitutae munis, eandem prorsus fidem, tam in iudicio quam extra illud ubique locorum haberi, quae haberetur eisdem praesentibus, si forent exhibitae vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem sub annulo Piscatoris, die xxvi ianuarii MDCCXL, pontificatus nostri anno x.

Dat die 26 ianuarii 1740, pontif. anno x.

CCLXXV.

Damnatio et prohibitio cuiusdam libri Gallico idiomate impressi sub titulo Histoire du Concile de Trente écrite en italien par Frâ Paolo Sarpi de l'Ordre des Servites, et traduite de nouveau en françois avec des notes critiques, historiques et théologiques par Pierre François le Courayer, docteur en théologie de l'université d'Oxford, et chanoine régulier et ancien bibliothecaire de l'Abbaye de S. Genéviève de Paris. A Amsterdam chez I. Wetstein et G. Smith, MDCCXXXVI.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Creditum humilitati nostrae divinitus pastoralis curae atque vigilantiae munus salubriter exequi, adiuvante Domino, satagentes, a perniciosis pravarum doctrinarum pascuis dominicum gregem universum arcere, et orthodoxae fidei puritatem servare, quantum nobis ex alto conceditur, iugi studio nitimur, ne animae, pretioso Salvatoris et domini nostri Iesu Christi sanguine redemptae, pestiferâ tabe inficiantur, et in perpetuae damnationis periculum adducantur.

Prooemium.

§ 1. Cum itaque, sicut accepimus, in lucem prodierit quidam liber gallico idiomate editus, cui titulus *Histoire du Concile de Trente écrite en italien par*

Liber, de quo in rubrica, erroribus, haereticisque sceleribus propositio-
nibus.

*Frâ Paolo Sarpi de l'Ordre des Servi-
tes, et traduite de nouveau en françois
avec des notes critiques, historiques et
théologiques par Pierre François le
Courayer, docteur en théologie de l'U-
niversité d'Oxford et chanoine régulier
et ancien bibliothécaire de l'abbaye de
S. Geneviève de Paris, A Amsterdam
chez I. Wetstein et G. Smith MDCCLXXVI;
venerabiles autem fratres nostri S. R. E.
cardinales in tota republicâ christianâ
contra haeticam pravitatem generales
inquisitores a Sede Apostolicâ speciali-
ter deputati, auditâ libri huiusmodi cen-
surâ sibi relatâ, illum tamquam conti-
nentem propositiones falsas, temerarias,
scandalosas, captiosas, seditiosas, aliâs
damnatas, omnibus episcopis, Sanctae
Sedi, totique catholicae Ecclesiae iniu-
riosas, erroneas, schismaticas ac hae-
reticas respective, nec non ad stabi-
liendum systema religionis impium et
haeticum tendentes, prohibendum et
damnandum esse censuerint:*

E Adelium
consortio
mixatur.

§ 2. Hinc est quod nos, de memo-
ratorum cardinalium consilio, ac etiam
motu proprio et ex certâ scientiâ et
maturâ deliberatione nostris, deque a-
postolicae potestatis plenitudine, supra-
dictum librum sub supra expresso aliove
quocumque titulo ubicumque et quo-
cumque alio idiomate seu quavis edi-
tione aut versione hucusque impressum,
aut in posterum, quod absit, impri-
mendum, tenore praesentium damna-
mus et reprobamus, ac legi seu retineri
prohibemus; ipsiusque libri impressio-
nem, descriptionem, lectionem, reten-
tionem et usum omnibus et singulis
christifidelibus, etiam specificâ et in-
dividuâ mentione dignis, sub poenâ
excommunicationis per contrafacientes
ipso facto absque aliâ declaratione incur-
rendâ, a qua nemo a quoquam (prae-
terquam a nobis seu Romano Pontifice

pro tempore existente), nisi in mortis
articulo constitutus, absolutionis bene-
ficiû valeat obtinere, omnino interdi-
cimus.

§ 3. Volentes, et auctoritate aposto-
licâ mandantes, ut, quicumque librum
huiusmodi penes se habuerint, vel in
futurum quandocumque habebunt, illum,
statim atque praesentes litterae eis in-
notuerint, locorum Ordinariis vel hae-
reticae pravitatis inquisitoribus tradere
atque consignare teneantur: hi vero
exemplaria sibi sic tradita illico flammis
aboleri curent: in contrarium facienti-
bus non obstantibus quibuscumque.

Locorum Or-
dinariis, flam-
misque traden-
dus.

§ 4. Ut autem praesentes litterae
omnibus facilius innotescant, nec quis-
quam illarum ignorantiam allegare pos-
sit, volumus, et auctoritate praedictâ de-
cernimus, illas ad valvas basilicae Princi-
pis Apostolorum ac Cancellariae Aposto-
licae necnon Curiae generalis in Monte
Citatorio et in acie Campiflorae de Urbe
per aliquem ex cursoribus nostris, ut
moris est, publicari, illarumque exem-
pla ibidem affixa relinqui; sic vero pu-
blicas, omnes et singulos, quos con-
cernunt, perinde afficere, ac si unicuique
illorum personaliter notificatae et inti-
matae fuissent; ipsarum autem littera-
rum transumptis seu exemplis etiam im-
pressis, manu alicuius notarii publici
subscriptis, et sigillo personae in eccle-
siasticâ dignitate constitutae munitis,
eamdem prorsus fidem tam in iudicio
quam extra illud ubique locorum haberi,
quae haberetur eisdem praesentibus si
exhibitae forent vel ostensae.

Hanc litta-
rarum publica-
tio transumpto-
rum.

Datum Romae, apud S. Mariam Maio-
rem, sub annulo Piscatoris, die xxvi ia-
nuarii MDCCLX, pontificatus nostri anno x.

Dat. die 28 ianuarii 1740, pontif. anno x.

D. card. PASSIONEUS.

CCLXXVI.

Damnatio et prohibitio cuiusdam folii gallico idiomate impressi, cui titulus Arrest de la Cour du Parlement, portant suppression d'un imprimé intitulé Lettres de plusieurs évêques sur l'obligation de priver de l'oblation du sacrifice de la messe et des suffrages de l'Eglise ceux qui meurent appellants de la constitution Unigenitus; à Ypres, chez Pierre Jacques Rave, imprimeur de monseigneur l'évêque, rue Messine, 1739, avec approbation. A Paris, chez Pierre Simon, imprimeur du Parlement, rue de l'Harpe à l'Hercule, 1739.

Clemens Papa XII,
ad perpetuam rei memoriam.

Damnator folium, de quo in rubrica.

Cum, sicut nobis innotuit, in lucem prodierit quoddam folium gallico idiomate impressum, cui titulus: *Arrest de la Cour du Parlement portant suppression d'un imprimé intitulé Lettres de plusieurs évêques sur l'obligation de priver de l'oblation du sacrifice de la messe et des suffrages de l'Eglise ceux qui meurent appellants de la constitution Unigenitus*. A Ypres, chez Pierre Jacques Rave imprimeur de monseigneur l'évêque, rue Messine, 1739, avec approbation. A Paris, chez Pierre Simon, imprimeur du Parlement, rue de l'Harpe à l'Hercule 1739. Hinc est quod nos, pro commissâ nobis divinitus gregis dominici curâ, animarum periculis atque detrimentis, quae ex eiusdem folii lectione et usu provenire possent, pastoralis sollicitudine, quantum cum Domino possumus, occurrere volentes, motu proprio, ac ex certâ scientiâ et maturâ deliberatione nostris, deque apostolicae potestatis plenitudine, folium supradictum, tenore praesentium, damnamus et

reprobamus, ac legi et retineri prohibemus, ipsiusque folii descriptionem, retentionem, lectionem et usum omnibus et singulis christifidelibus, etiam specificâ et individua mentione et expressione dignis, sub poenâ excommunicationis per contrafacientes ipso facto absque aliâ declaratione incurrendâ, a qua nemo per quemquam, nisi per nos seu Romanum Pontificem pro tempore existentem, praeter quam in mortis articulo constitutus, possit absolvi, omnino interdici-mus. Volentes et auctoritate praedictâ mandantes, ut, quicumque folium huiusmodi penes se habuerint, vel in futurum quandocumque habebunt, illum, statim atque praesentes litterae eis innotuerint, locorum Ordinariis vel haereticae pravitatis inquisitoribus tradere et consignare teneantur; hi vero folia sibi sic tradita illico flammis aboleri curent. In contrarium facientibus non obstantibus quibuscumque.

§ 2. Ut autem praesentes litterae omnibus facilius innotescant, nec quisquam illarum ignorantiam allegare possit, volumus, et auctoritate praedictâ decernimus, illas ad valvas basilicae Principis Apostolorum ac Cancellariae Apostolicae, necnon Curiae generalis in Monte Citorio et in acie Campiflorae de Urbe, per aliquem ex cursoribus nostris, ut moris est, publicari, illarumque exempla ibidem affixa relinqui; sic vero publicatas, omnes et singulos, quos concernunt, perinde afficere, ac si unicuique illorum personaliter notificatae et intimatae fuissent;

Demandata damnationis publicatio.

§ 3. Ipsarum autem litterarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicuius notarii publici subscriptis et sigillo personae in ecclesiasticâ dignitate constitutae munitis, eandem prorsus fidem tam in iudicio quam extra illud ubique locorum haberi, quae ha-

Fides transumptorum.

beretur eisdem praesentibus si exhibitae forent vel ostensae.

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem sub annulo Piscatoris, die xxvi ianuarii mcccxl, pontificatus nostri anno x.

Dat. die 26 ianuarii 1740, pontif. anno x.

D. card. PASSIONEUS.

CCLXXVII.

Approbatio nonnullarum resolutionum Congregationis particularis a Sanctissimo deputatae super registris in officiis notariorum sacrae Rotae auditorii emanatarum.

Clemens episcopus,
servus servorum Dei,
ad perpetuam rei memoriam.

Prooemium.

Romanus Pontifex, providus iustitiae cultor a Deo constitutus in terris, ex vigili operosae suae mentis indagine libenter intendit ad ea, per quae in quibuslibet tribunalibus, praesertim in causarum palatii nostri auditorii¹, notariorum labor illorumque merces in eiusdem iustitiae lance aequo inter se subsistant pondere, et litigantium iura in eorum officiis fideli ad iudiciorum laudem et perennem litigantium indemnitate serventur studio, extinctisque litibus, nova non oriatur super litium extinctarum huiusmodi expensis litis occasio, sed iustitia et charitas in eodem auditorio, in quo graviores universorum fidelium promoventur causae, veluti in earundem conclusio horto, invioem inter se prospiciant et mutuo osculentur amplexu.

Ad tollendos abbas, qui in variis Urbis tribunalibus itrepant, Congregationem particularem deputat Clemens.

§ 1. Cum itaque nos nuper, ad submovendas nonnullas inter dilectos filios causarum palatii nostri apostolici notariorum ex una et causarum huiusmodi pa-

tronos et respective litigantes ex altera partibus exortas quaestiones, non ad dirimendos nonnullos in eorundem auditorii huiusmodi notariorum officiis in illorum et litigantium praeiudicium, contra formam et tenorem constitutionum et decretorum alias pro aequali litigantium et notariorum huiusmodi indemnitate a nonnullis Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris emanatarum et editorum, quarum et quorum respective tenores praesentibus pro expressis haberi volumus, irreptos abusos, Congregationem particularem duorum S. R. E. cardinalium duorumque Romanae Curiae praelatorum, videlicet, Vincentii tunc S. Nonuphrii, nunc vero S. Petri ad Vincula, Petra, poenitentiarum maiorem ac visitoris apostolici super omnibus tribunalium nostrae Urbis officiis specialibus ad id facultatibus concessis delegati, ac Marcelli S. Mariae in Aracaeli respective titularum presbyterorum Passari respective nuncupatorum, ac pro-auditoris nostri, dilectorum filiorum nostrorum, necnon Marcellini Corio, tunc nostrae Urbis praedictae gubernatoris et vice-camerarii, ac magistri Ludovici Merlini, signaturae nostrae iustitiae vrantis, et in Congregationis praedictae secretarium electi, dilectorum filiorum, et quoad Marcellinum nunc S. R. E. cardinalem Corio nuncupatum nostri² deputavimus³:

§ 2. Et Congregatio praedicta habita sub die xxvii ianuarii anno Domini mcccxxxv, re mature discussa, auditisque ad singulas resolutiones tam notariis auditorii praedicti, quam dilectis pariter filiis Dominico Ionantonii et Guglielmo Ricca ex antiquioribus patronis de collegio patronorum causarum palatii nostri praedicti pro interesse litigantium

Editae inde nonnullae leges.

¹ Vox nostri praeter rem esse videtur (R. T.).

² Ex synt. legend. deputaverimus (R. T.).

¹ Aptius lege auditorio (R. T.).

et procuratorum praedictorum de mandato nostro adscitis,

Notarii vero proprio regestris consignare debent iura producta ab anno MDCLXXI ad MDCCXXVIII.

I. Videlicet notarios auditorii praedicti a confectione regestrorum omissorum ab anno Domini MDCLXXI usque ad diem XXVIII aprilis anni eiusdem Domini MDCCXXVIII, qua constitutio felicitis recordationis Benedicti Papae XIII praedecessoris nostri desuper emanavit, absolvendos esse, cum hoc tamen quod notarii praedicti propriis eorum sumptibus omnia iura producta in singulis causis, quarum regestra ommissa fuerunt, recolligere, eademque in protocollis diligenter asservanda respective redigere teneantur;

Iura vero post annum MDCCXXVIII registranda sub poena huiusmodi censurae.

II. Regestra ommissa per notarios palatii nostri huiusmodi in causis expeditis a dicta die XXVIII aprilis praedicti anni MDCCXXVIII, qua praedicta constitutio Benedicti praedecessoris emanavit, omnino reintegrare, eaque facere in termino unius anni a die praesentis statuti, quo elapso, et non confectis regestris omissis praedictis, notarium seu notarios, qui defecerint, in decem scutis aureis pro qualibet die Congregationi S. Hieronymi Charitatis de Urbe gravari, respective decreverit et censuerit:

Adunata iterum Congregatio.

§ 3. Iterum vero praefata Congregatio sub die IX mensis septembris anni eiusdem Domini MDCCXXVII coadunata, adiunctisque ad petitionem notariorum praefatorum pro Camerae nostrae Apostolicae interesse thesaurario eiusdem Camerae generali, illiusque commissario:

Statuta merces pro regestris impostarum in expeditione causarum vel ad instantiam partium faciendis.

III. Regestra imposterum in actu expeditionis causarum, vel ad partium requisitionem facienda esse, et in utroque casu mercedem tantum deberi:

In alia Congregatione praedicta omnia confirmata.

§ 4. Et demum, adiuncto dilecto patris filio magistro Carolo Calcagnini, eiusdem auditorii auditorum et capellanorum nostrorum decano, eodemque interveniente, Congregatio praefata die

IV praesentis mensis ianuarii, reassumptis perpensisque sub maturo omnium examine tum praefatis resolutionibus, tum nonnullis aliis ad diversos effectus praecedenter acceptis, tam in praefatis quam etiam in aliis congregationibus intermedio tempore habitis, ad maiorem notariorum auditorii praefati, ac litigantium indemnitatem, recesserit a decisis; quo vero ad cetera alia superius non reassumpta et non expressa, et in reliquis, persistendo in decisis quoad resolutiones praedictas:

Pro regestris omissarum renunciarum nihil a notariis exigendum.

IV. Quoad regestra formalia, seu instrumenta actorum facta per eiusdem auditorii notarios in causis iam renunciatis vel transactis, comprehensis etiam illis factis a die XXVII mensis ianuarii anni MDCCXXV usque ad diem IX mensis septembris anni MDCCXXVII, nihil notariis praefatis deberi, nullaue iura ad eorum favorem esse reservanda;

Quid in causis reasumendis exigendum sit.

V. Tamen eisdem notariis emolumentum solius mercedis citationum et actorum in omnibus et singulis causis etiam renunciatis et transactis, seu renunciandis et transigendis, tam pro praeterito quam pro futuro; exceptis dumtaxat causis renunciatis vel transactis ante diem IX praefati mensis septembris dicti anni MDCCXXVII, pro quibus faciendam esse condonationem collitigantibus in compensationem regestrorum per eosdem notarios usque ad diem, qua praefata constitutio Benedicti praedecessoris praefati emanavit omissorum, dummodo tamen eadem causae renunciatae seu transactae ante diem IX praefati mensis septembris dicti anni MDCCXXVII nullo modo reassumantur, et sic respective, reservato iure notariis praedictis consequendi eorum mercedem, quatenus aliquam earundem causarum quoquo modo reassumi contingeret etiam quoad incidentia deberi;

Notariis pro mercede actio competat tam contra proci- riores, quam contra pri- cipales causas- rum.

VI. Pro exactione mercedis dictorum actorum et citationum factorum et faciendorum ad formam, ut praefertur, actionem notariis praefatis tam contra principales quam contra procuratores exercendam ad eorum arbitrium competere;

Causarum dubia non subscribenda, sed praevia attestatione notarii de citationibus, iurium transportationibus, etc.

VII. Causarum dubia in praedicto auditorio proponenda sub poenâ nullitatis subscribi non posse, et subscripta non proficere, nisi in actu dictae subscriptionis una simul exhibita fuerit auditori ponenti fides notarii actuarii gratis omnino danda, in qua de praedictis citationibus et respective actorum processuum seu extractorum et iurium transportationibus seu repetitionibus in suis respective casibus praecedenter factis plenaria attestatio, in omnibus et per omnia, iuxta eiusdem auditorii decretum praevio vivae nostrae vocis oraculo die XIII mensis octobris anni proxime praeteriti publicatum, habeatur;

Renunciatio causae penes quemcumque notarium fieri potest.

VIII. Ac demum renunciationes causarum pendentium et imposterum respective agendarum in eodem auditorio ad libitum litigantium, etiam extra acta eiusdem auditorii notariorum, et penes quemcumque aliorum tribunalium notarium, dummodo hoc casu fides authentica renunciationis extra eiusdem sacri auditorii acta emissae in actis notarii eiusdem auditorii, qui in causâ scripsit, intra quindecim dies exhibeatur, fieri posse, et aliâs prout in praedictâ Benedicti praedecessoris huiusmodi constitutione, et in illius § *Quamvis* in eiusdem paragraphi fine, cuius exactam observantiam iterum in hac signanter parte iniungendam esse censuerit:

Prælaudata decreta apostolica auctoritate confirmantur.

§ 5. Nos igitur, omnibus et singulis praedictae Congregationis, a nobis, ut praefertur, deputatae, provide censitis, debita meditatione pensatis, et attendentes quod ex illorum observantiâ iusti-

tiae decor et cultus, necnon litigantium indemnitas et publica oritura sit utilitas, motu proprio et ex certâ scientiâ et apostolicae potestatis plenitudine, omnia et singula censita praedicta, et eorum quodlibet, apostolicâ auctoritate, tenore earundem praesentium, perpetuo approbamus et confirmamus, omnesque et singulos defectus, etiam substantiales, si qui in eis quomodolibet interrvererint, seu intervenisse dici possit, auctoritate motuque nostris praedictis, supplemus:

§ 6. Eaque ab eiusdem auditorii notariis, illiusque causarum patronis, ac in eodem auditorio litigantibus, sub poenis praedictis, inviolabiliter observari, et ab eis nullo unquam tempore, sub quovis praetextu, titulo aut colore, aut quavis causâ, minime resiliari posse, necnon praesentes et in eis contenta quaecumque, etiam ex eo quod quicumque alii, in praemissis seu eorum aliquo interesse habentes seu habere quomodolibet praetendentes, ad praemissa minime vocati et auditi, minusque causae, propter quas eadem praesentes emanarint, adductae, verificatae, seu aliâs sufficienter, aut etiam nullatenus iustificatae fuerint, nullo unquam tempore de subreptionis, obreptionis, nullitatis, aut invaliditatis vitio, seu intentionis, aut alio quovis defectu, etiam quantumvis magno, inexcogitato et substantiali, sive etiam ratione enormis, enormissimae et totalis laesionis, aut quocumque alio praetextu aut iure, etiam in corpore iuris clauso, seu etiam occasione vel causâ, etiam quantumvis iustâ, rationabili et privilegiatâ, etiam tali quae ad effectum validitatis praemissorum necessario exprimenda foret, notari, impugnari, invalidari, retractari, in ius vel controversiam revocari posse, neque ipsas praesentes sub quibusvis similium vel dissimilium dispositionum

Praesentes litterae observandae et nullo notandae vitio,

revocationibus, limitationibus, aut aliis contrariis ordinationibus pro tempore quomodolibet faciendis comprehendere, sed semper ab illis exceptas, perpetuo validas, firmas et efficaces existere et fore, suosque plenarios et integros effectus obtinere, ab omnibus et singulis, ad quos spectat et quomodolibet spectabit in futurum, inviolabiliter observari, sicque et non alias in praemissis omnibus et singulis per quoscumque iudices, etiam palatii nostri apostolici praedicti auditores, ac praedictae S. R. E. cardinales, etiam de latere legatos, ac alios quavis auctoritate et potestate fulgentes, in quavis causâ et instantiâ, sublatâ eis et eorum cuilibet aliter iudicandi et interpretandi facultate et auctoritate, iudicari et definiri debere, ac irritum et inane si secus super his a quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari, decernimus.

*Derogatio
contrariorum.*

§ 7. Non obstantibus constitutionibus et ordinationibus apostolicis, ac nostrâ de non tollendo iure quaesito, aliisque Cancellariae Apostolicae regulis, necnon erectionibus officiorum praedictorum, et illorum concessionibus, acquisitionibus, gratiis, privilegiis, facultatibus et indultis quibuscumque, ac aliis quomodolibet motu, scientiâ et potestatis plenitudine paribus ac etiam consi-

storialiter, et aliis quomodolibet per Romanos Pontifices praedecessores et successores nostros, ac etiam per nos hactenus concessis, etiam sub quibuscumque clausulis, etiam insolitis, ac derogatoriis derogatoriis, irritantibus et aliis decretis; quibus omnibus et singulis, ceterisque, illorumque tenores, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso, et formâ in illis traditâ observatâ et inserti forent, praesentibus pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permansuris, hac vice dumtaxat, harum serie, derogamus et derogatum esse volumus.

§ 8. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrae approbationis, confirmationis, defectuum supplementationis, decreti, derogationis et voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire; si quis autem hoc attentare praesumpserit, indignationem omnipotentis Dei, ac beatorum Petri et Pauli apostolorum eius se noverit incursurum.

*Poenae contra temerarios
huiusmodi Constitutionis.*

Datum Romae, apud S. Mariam Maiorem, anno Incarnationis dominicae MDCCCLX, vi kalendas februarii, pontificatus nostri anno x.

Dat. die 26 ianuarii 1740, pontif. anno x.

A card. pro-datarius.

Visa de Curia.

N. ANTONELLUS.

I. B. EUGENIUS.

MONITUM.

Eam operis partem, quae mihi sorte obtigerat, ut potui, Deo iuvante, adimplevi. Ne vero quis mihi aliquid amplius adtribuat, quam quod reipsa peregi, moneo me elapso fere biennio post evulgatum tomum decimum provinciam hanc primum suscepisse. Quatuordecim quae sequuntur volumina, quinque annorum spatio, dum ederentur, solus ipse curavi. Quo studio, quantaque diligentia, non est quod ipse dicam, nam ipsa volumina praesto sunt. Hoc unum gaudeo, istiusmodi me labore potuisse aliquod vel minimum obsequii mei erga Sedem Apostolicam testimonium exhibere. Iam nunc quae adhuc supersunt edenda volumina parare, iuniori cuique valentiorique concedam. Ceterum si dum corrigendis alienis ἀμαρτήμασι intentus fui, et ipse erravi aliquando, lectorem rogo ut mihi indulgeat, preceturque pro me, ut et peccata mea mihi donet Deus.

IOSEPH BURONI Presb. Congr.^{nia} Miss.^{nia}

INDEX.

NOMINUM ET RERUM PRÆCIPUARUM.

NUMERUS PAGINAM INDICAT; *a* PRIMAM COLUMNAM; *b* SECUNDAM DESIGNAT.

A

Abbatia. — Circa vacationem abbatiarum obtinendarum in Congregatione regularium S. Salvatoris Ordinis S. Augustini praescriptio Benedicti XIII confirmatur, 68 *a* et seq.

Abbatia archimandritalis SS. Salvatoris, *vide* SS. Salvatoris.

Acquaviva (de) cardinalis Troianus tituli S. Caeciliae, *vide* Troianus.

Albanensium Italo-Graecorum seminarium, seu collegium, *Corsini* nuncupatum, 186 *a*; *vide* Collegia.

Albanus Annibal, *vide* Annibal Albanus.

Aldovrandus Pompeius, nunc S. R. E. cardinalis, tunc auditor antiquior S. Rotae et archiepiscopus Neocaesariensis, 12 *a*; illi tamen decanatus auditorii sub Benedicto adiudicatus fuit, *ibid.*

Alternativa. — Quoad alternativam in provinciis Ordinum regularium, *vide Ordines regulares sub propriis eorum titulis.*

Altieri Ioannes Baptista auditor cubiculi Clementis PP. XII, 74 *b*.

America Meridionalis. — Plures in vastissimis illius provinciis fundati parvi regulares conventus Ordinis Praedicatorum et Ordinis Eremitarum S. Augustini, vel in locis a civitatibus valde remotis, vel in oppidis parvis et miserrimis pro utilitate fidelium, 1 *b*; item alii qui dicuntur *prioratus* pro Indorum christifidelium assistentiâ, 2 *a*; eorum suppressio a Paulo V intimata, sed nunquam executioni demandata, 2 *a* et *b*; ipsis parvis conventibus et prioratibus privilegia maiorum conventuum vindicantur, 3 *a*.

Anconitana civitas, 296 *a*; super distributione salis *a cartella* nuncupatâ duo chirographa Pontificis referuntur, 296 *b*; et iterum confirmantur, 304 *a*.

Anglorum collegium in Urbe, *vide* Collegia.

Annibal Albanus episcopus Sabinensis, cardinalis S. Clementis, modernus S. R. E. camerarius, 48 *b*, 57 *b*.

Antonelli Nicolaus Senogalliensis, unus ex familiaribus Clementis PP. XII 74 *b*.

Antonii (S.) Abbatis Ordo, 604 *a*; *vide* Monachi Maronitae.

Antonii (S.) Viennensis Ordo, *vide* Canonici regulares Ordinis S. Antonii Viennensis.

Approbatio apostolica. — Approbatio constitutionum Ordinum regularium, *vide* *Ordines regulares sub suis titulis*; — decretorum capitulorum generalium vel provincialium, *vide* Decreta capitulorum Ordinum regularium, *et loca citata*; — decretorum Congregationum, *vide* Decreta Congregationum S. R. E. cardinalium, *et* Constitutiones particulares *et* acta publica.

Archiconfraternitas. — Archiconfraternitas nationis Senensium in Urbe in ecclesiâ S. Catharinae erigitur, 198 *a* *et seq.*; *vide* Confraternitas.

Archihospitale S. Spiritus in Saxiâ impotens foret ad ferendum onus admittendi ac alendi proicctos intra et extra Urbis districtum natos qui ad illud quotidie numerosissimi afferuntur, 316 *b*; id incumbere unicuique provinciae statuitur, 317 *a*; confessariis in illo conceduntur facultates iam concessae presbyteris confessariis hospitalis B. M. de Gratiâ, Consolatione et Porticu, 364 *b* *et seq.*

Artes medicinae et chirurgiae exercendi facultas tribuitur Capuccinis Gallis missionariis in partibus infidelium, 26 *b*.

Auditorium Sacrae Rotae, *vide* Rotae Sacrae Auditorium.

Augustiniani. — Provinciarum Peruntinae et Chilensis conventus, in quibus octo religiosi ali non possent, supprimi mandavit Paulus V, 1; suis privilegiis restituti, 3 *a*; incorrigibiles qua methodo ab his provinciis efficiendi, 496 *b*; quatuor antiquiores parochi provinciae Mexici huiusce Ordinis fruuntur privilegiis priorum provincialium eiusdem provinciae, 387 *b* *et seq.*; quoto tempore huiusmodi parochi curam animarum debent exercere ad privilegia provincialium consequenda, *ibid.*; tres quoque fratres provinciae huius antiquiores doctores graduati in universitate Mexicanâ magistrorum Ordinis privilegiis uti valent, 392 *b*; conditiones requirendae ad acquisitionem huiusmodi privilegiorum, *ibid.*; fratres huius provinciae confugientes ad alios Ordines suis superioribus restituendi, 509 *a* *et seq.*; quales civitates Italiae principales intelligendae sint, in quibus religiosi cursum decennalem praedicationis verbi Dei peragere debent ad magisterii lauream consequendam, 550 *b*; lectio quoque Scripturae per idem tempus habita in ecclesiâ S. Augustini de Urbe sufficit ad eundem effectum, 551 *a*; in priorem generalem eligi ii possunt, qui officium procuratoris generalis vel assistentis generalis exercuerunt, nullâ expectatâ temporis vacatione, 568 *a* *et seq.*; in hoc Ordine, ac praesertim in provinciâ Mexicanâ, non recipiendi *mulatti* *et mestizi*, 569 *b* *et seq.*

Augustiniani Excalceati. — Capitulis generalibus Ordinis huius Excalceatorum Congregationis Hispaniae et Indiarum prohibita collatio provincialium honorariorum, 103 *a* *et seq.*; vicarii generales, quo tempore extra capitulum ad vicariatum in vim statutorum *et* Congregationis huiusmodi subintraverint,

eisdem privilegiis fruuntur quibus electi in capitulo gaudent, 216 *a* et *seq.*; post celebratum capitulum provinciale si aliquis definitorum quocumque modo deficiat, eius vocem et vices supplere debet unus ex religiosis, qui pro patribus additis definitorio provinciali in praecedenti capitulo electi sunt, 537 *b*; electio vero regentis provincialis in casu obitus alicuius ex prioribus provincialibus fieri debet a vicario generali unâ cum definitoribus provincialibus, 539 *b*.

B

Barnabitae. — Eisdem suas ecclesias visitantibus indulgentia concessa in die festo S. Francisci Salesii, 219 *b*; extenditur ad universos fideles eorum ecclesiam visitantibus, *ibid.*; collegium erigunt in civitate Mediolanensi ad curandos instruendosque nobiles convictores, 559 *b*; *vide* Collegium *Longone*.

Beatificatio. — Venerabilis servus Dei Ioseph a Leonissâ, sacerdos expresse professus Ordinis fratrum Capuccinorum, Beatus dici potest, 287 *a* et *seq.*; item coli, eiusque nonnullis in locis recitari officium, *ibid.*

Bellum inter principes christianos dirum et atrox, 14 *b*; iterum repentinum et luctuosum in Italiâ insurrexit, longe lateque in aliis Europae partibus diffusum, adeo inter acerbissimos belli motus Italia pene tota exarserit, 382 *a*.

Beneventana civitas, 369 *a*; illi confirmantur privilegia concessa a Pio II, Iulio II et Sixto V, et ab Urbano VIII confirmata, praesertim quod primae et secundae instantiae causarum temporalium vel civilium extra dictam civitatem cognosci non possint, 369 *a* et *seq.*

Bethlehemitae. — Incurribiles qua methodo eliciendi ex Ordine, 105 *a*; vice-generalis qua polleat facultate procedendi contra eosdem, *ibid.*; qui sint vocales capituli generalis, 105 *b*; qualia officia in Ordine sint incompatibilia, 106 *a*; quae sit servanda methodus in accipiendâ renunciatione officiorum, et subrogatione ad eâ faciendâ, *ibid.*; qualitates requirendae ad hoc ut quis in assistentem generalem eligi queat, 106 *b*; in omnibus electionibus exquirenda maior votorum pars, 107 *a*; nemo gaudet voce activâ et passivâ nisi post triennium ab emissâ professione, *ibid.*; capitula generalia cogenda in urbe Guatimala, 107 *b*; quid praestandum si absens in generalem eligatur, *ibid.*; in uno regno generalis praefectus, in altero vice-generalis eligendus, 108 *a*; ipsis absentibus ad quem provinciarum regimen devolvatur, 108 *b*; quae praemittenda ad hoc ut tertiarii vel donati transeant ad professionem admittendam, 109 *a*; capitula generalia quolibet tenenda novennio, *ibid.*; dubiorum circa regulam insurgentium solutio ad quem pertineat, 109 *b*.

Bibliotheca Vaticana. — A Clemente XII aulâ, libris, vasis fictilibus, numismatibus certisque locupletata redditibus, 571 *b*; leges pro eâ a Sixto V PP. latae confirmantur, 572 *a*; novae conditae leges pro custodibus scriptoribusque, 573 *a* et *seq.*

Bibliotheca et Archivium conventus de Arâcaeli de Urbe Ordinis fratrum Minorum S. Francisci de Observantiâ nuncupatorum, 293 *a* et *seq.*; ordinationes pro illorum administratione, 294 *a* et *seq.*

Bona ecclesiastica. — Iamdiu ab haereticis occupata in Palatinatu Rheni inferiori et in ducatu Neoburgensi iis condonata qui ad fidem catholicam convertuntur, 59 *b* et *seq.*

Botteri Ioannes Florentinus capellanus secretus Clementis PP. XII, 74 *b*.

C

Cadavera missionariorum Ordinum regularium in partibus Syriae et Palestinae quomodo tumulanda, 41 *a*.

Caesaries fictitia prohibetur canonicis regularibus Ordinis S. Antonii Viennensis, 576 *b* et *seq.*

Camera Apostolica. — In ratiocinatores pro eâ assumpti tres legum periti a collegio procuratorum, 47 *b* et *seq.*; ratiocinatorum Camerae emolumenta, 50 *b*; quale munus, 53 *a* et *seq.*; cuilibet novo Pontifici bilancium expensarum praeteriti regiminis tradendum, 56 *a*; Camerae officiales debent Papae suggerere, ea quae eiusdem Camerae utilitati proficere possint, 56 *b*.

Canonici regulares Ordinis S. Antonii Viennensis. — Laici huius Ordinis professionem nonnisi post undecimum annum novitiatus emittere poterant, 484 *b*; huiusmodi terminus ad quadriennium redactus, 485 *a*; canonicis huius Ordinis fictitiam caesariam gestare vetitum sub poenâ suspensionis ipso facto incurrendae, 576 *b* et *seq.*

Canonizatio. — B. Vincentius a Paulo, fundator presbyterorum saecularium Congregationis Missionis et societatis Puellarum Charitatis, Sanctorum fastis adscriptus, 232 *a* et *seq.*; item B. Franciscus Regis presbyter Societatis Iesu, 246 *b* et *seq.*; item B. Catharina Flisca Aduerna Genuensis, 261 *a* et *seq.*; item B. Iuliana Falconeria Tertii Ordinis Servorum B. M. V. fundatrix, 275 *a* et *seq.*

Capuccini, vide Minores Capuccini.

Cardinales. — Ducatos septuagintaquinque, quos, iuxta constitutionem Pauli V, ministris sacri Collegii solvere debebant, post mortem cardinalium, illorum haeredes, deinceps solvere debebunt ipsi cardinales intra mensem suae promotionis, 4 *a* et *seq.*

Cardinalis vicarius, vide Vicarius cardinalis de Urbe.

Cardinalium Congregationes, vide Decreta.

Carmelitae. — Reformatae constitutiones nonnullae Ordinis huius, 89 *a*; prior provincialis provinciae Romanae nullâ gaudet iurisdictione in conventibus S. Martini ad Montes, S. Mariae in Transpontinâ et S. Antonii Praenestini, *ibid.*; in capitulis provincialibus provinciae huius ius suffragii habent prior generalis, magistri provinciae etiam degentes in dictis tribus conventibus, lector Sapientiae et regens Transpontinae, 89 *b*; sociis generalibus ius suffragii competit tam in capitulo quam in definitorio generali, *ibid.*; iis vero praedecentia non competit in religione, nisi quando sunt in actuali exercitio muneris, *ibid.*; innovatae litterae Summorum Pontificum, quibus fratribus Ordinis huius Congregationis Hispaniae prohibetur transitus ad aliam quamcumque Congregationem, 545 *b*.

- Carmelitae Excalceati. — Confraternitates erectae vel erigendae in Congregatione Hispaniae et oratoria ruralia exempta a visitatione Ordinariorum, 208 *a* et *b*; Tertiarii huius Ordinis et Congregationis, aliis Ordinibus adscripti, omnium respective Ordinum fruuntur indulgentiis, 555 *b* et 593 *a* et *seq.*; conventus Varsaviensis aliàs attributus provinciae Lituaniae denuo unitur provinciae Poloniae, provinciae vero Lithuaniae assignatur conventus Lublinensis, 288 *b* et *seq.*; nova provincia Hiberniae dudum reviviscens erecta, cui conventus omnes existentes et imposterum recuperandi adiudicantur, 305 *a* et *seq.*
- Carolus Borbonius Hispaniarum Infans, 382 *a*; regni Siciliae cum totâ terrâ citra Pharum usque ad confinia terrarum Ecclesiae, armis a patre Philippo Hispaniarum rege sibi traditis et donatis, integram et pacificam possessionem obtinuit, *ibid.*; petit et obtinet investituram regni utriusque Siciliae, 383 *b* et *seq.*
- Carolus Cerrius auditor minus antiquus in auditorio S. Rotae, 12 *a*; illi non fuit adiudicatus decanatus auditorii in concursu Pompeii Aldovrandi archiepiscopi Neocaesariensis, *ibid.*
- Carolus comes Palatinatus Rheni petit et obtinet ut haereticis, qui ad fidem catholicam convertuntur, bona ecclesiastica, quae possident, dimittantur, 59 *b* et *seq.*
- Carolus Maria Sacripantes thesaurarius generalis Camerae Apostolicae, 48 *a*.
- Carthusiani. — Fratres huius Ordinis non solum erigere possunt oratoria et altaria in grangiis et domibus, in quibus resident sacerdotes saeculares, sed etiam ad huiusmodi effectum sufficit, quod dicta oratoria et domus visitentur a visitatoribus Ordinis, 291 *a* et *seq.*
- Cassinenses. — Monasterium S. Scholasticae annuam contributionem monasterio Sacri Specus, non in pane, vino, ceterisque huius generis, sed in pecuniâ numeratâ facere debet, 37 *b*; ubi fuerint monasteria Ordinis huius, non construenda hospitia pro abbatum vel monachorum habitatione, 487 *b*; praelati absque legitimâ causâ a monasteriis abesse non debent, 488 *a*; monachorum mutatio de monasterio ad monasterium non facienda, 488 *b*; quomodo temporalia per abbates sit administranda, 489 *b*; de visitoribus et modo visitationis faciendae, 490 *a*.
- Catechismo interessentibus adultis, in Urbe, etc., indulgentiae communicantur iam concessae adultis docentibus et pueris discentibus doctrinam christianam, 45 *a*; extenduntur universis christifidelibus ubicumque locorum existentibus, 195 *b*.
- Catherinae (S.) confraternitas nationis Senensium in Urbe, *vide* Confraternitas.
- Chiappinus Vitelli, florentinus, unus e familiaribus Clementis PP. XII, 74 *b*.
- Chirurgia ars, *vide* Medicinae.
- Cistercienses. — Monasterium S. Mariae Sagittarii unitum provinciae Tusciae, 220 *b*; monachis huius Ordinis non licet transire ad alium quemcumque Ordinem praeter Carthusianum, 356 *b*; superioribus Ordinis huius Congregationis Portugalliae data facultas applicandi collegio universitatis Colimbriensis spolia monachorum pro dissolvendo aere alieno, 498 *a* et *b*; Ordinis huius capitulum generale habitum Cabillone anno MDCCXXXIX, editaeque in eo constitutiones confirmantur, 542 *a* et *b*.
- Clemens XII. — Restituit parvos conventus regulares in vastissimis Americae Meridionalis regionibus olim a Paulo V suppressos, 3 *a*; providet promptae ad-

ministratiōi iustitiæ, 11 a; statuit decanatum sacrae Rotae auditorii optari non posse ab episcopo etiam titulari, nec in Rotâ cognosci causas ipsorum auditorum eorumque consanguineorum in primo gradu, 13 a et b; quantis studiis principes christianos ad pacem inter se ineundam revocaverit, 15 a; iubilaeum universale indicit pro pace inter principes christianos, 15 b et seq.; iterum ad divinam opem implorandam contra Turcas, 552 a et seq.; contra homicidas ac deferentes arma prohibita in almâ Urbe et reliquo Statu Ecclesiastico plura statuit, 28 a et seq.; eadem extendit ad regna Hispaniarum, a et seq.; item totam ditionem Reipublicae Ianuensis, 595 a et seq.; providet meliori administratiōi Camerae Apostolicae, 47 b et seq.; privilegia concedit familiaribus suis, 74 b et seq.; dismembrat officium criminale ab officiis civilibus notariorum tribunalis eminentissimi almae Urbis vicarii, illudque in novum officium erigit, 93 b et seq.; praesenti Urbis vicario confirmat facultates omnes aliâs ei concessas praesertim a Benedicto XIII, 96 b et seq.; confirmat concordiam inter archiepiscopum Messanensem et archimandritam SS. Salvatoris Ordinis sancti Basilii super controversiis iurisdictionalibus, 111 a et seq.; collegium Italo-Graecorum Albanensium *Corsini* nuncupatum instituit, 156 b; cuius constitutiones referuntur, *ibid.*, quas confirmat, 193 a et b.; in album Sanctorum refert B. Vincentium a Paulo, 232 a et seq.; item B. Franciscum Regis, 246 b et seq.; item B. Catherinam Fliscam Adurnam, 261 a et seq.; item B. Iulianam Falconeriam, 275 a et seq.; refert et confirmat duo chirographa sua super distributione salis a *cartella* nuncupatâ in civitate Anconitanâ et illius districtu faciendâ, 296 a et seq.; dignitatum et canonicorum ecclesiae patriarchalis Ulyssiponensis occidentalis decentiori substantiationi et patriarchalis ecclesiae manutentioni providet, 317 b et seq.; ad huius ecclesiae dignitates et canonicatus ius patronatus et praesentandi asserit regibus Portugalliae, 331 b; item ad dignitates, canonicatus, praebendas, et beneficia ecclesiae cathedralis Ulyssiponensis orientalis, 339 a et seq.; condemnat societates seu conventiculas vulgo dictas *de' liberi muratori* seu *des francs massons*, 366 a et seq.; investituram regni utriusque Siciliae concedit Carolo Borbonio Infanti Hispaniarum, 377 a et seq.; confirmat institutionem missionum ab archiepiscopo Salisburgensi factam, 511 b et seq.; confirmat leges a Sixto V pro bibliothecâ Vaticanâ latas, novasque condit, 571 a et seq.; irritat electionem pseudo-archiepiscopi Ultraiectensis, 591 a et seq.; regi christianissimo indultum concedit nominandi ad beneficia in ditionibus Lotharingiae et Barri, 600 a et seq.; plures libros proscribit, 664 a et seq.; plura decernit super registris in officiis notariorum Sacrae Rotae auditorii, 668 a et seq.

Clerici regulares, *vide proprias eorum titulos.*

Collegia. — Collegium Anglorum de Urbe, 583 a; visitationi duorum cardinalium commissum, 583 b; decreta ab his lata, 584 a et seq.; a Clemente Pontifice confirmata, 588 b.

— Collegium Corsinum Italo-Graecorum in oppido de Ullano excitatum, 186 a; ad eius regimen efformatae regulae, 176 b; eiusdem rectori data facultas alumnos promovendi ad lauream doctoralem in studiis tum philosophiae tum theologiae, 535 b et seq.

- Collegia — Collegium *Longone* nuncupatum, Mediolani erectum, *vide* Longone.
- Collegium Sinensium et Indorum Neapoli erectum, 123 *a* et *seq.*; regulae et constitutiones a fundatore conditae, 124 *a* et *seq.*; prius a Congregatione de Propaganda Fide, postmodum a Clemente XII confirmatae, 180 *b*; eius alumnis congregationisque in hoc collegio erectae communicantur privilegia, praerogativae, indulgentiae et exemptiones Congregationibus Oratorii S. Philippi Neri et Piorum Operariorum concessae, ac omnes et singulae indulgentiae ecclesiae S. Mariae ad Martyres de Urbe, 347 *b* et *seq.*; item praefatis alumnis conceditur indultum alias ab Urbano VIII alumnis collegii de Propaganda Fide datum super sacris ordinibus suscipiendis, 349 *b* et *seq.*
- Commendae seu praeceptoriae hospitalis S. Ioannis Hierosolymitani, quomodo earum smutitio facienda, *vide* Equites S. Ioannis Hierosolymitani.
- Concordia inita inter archiepiscopum Messanensem et archimandritam commendatarium SS. Salvatoris de Lingua Phari, Ordinis S. Basilii, super diversis punctis iurisdictionalibus refertur, 112 *a* et *seq.*; et confirmatur, 120 *a* et *b*.
- Confessarii ne absolvere possint ministros S. Officii Inquisitionis revelantes et publicantes illius acta, tractata et gesta in regnis Portugalliae et Algarbiorum 360 *a* et *seq.*
- Confirmatio apostolica. — Confirmatio constitutionum apostolicarum, *vide* Constitutiones apostolicae confirmatae; — decretorum sacrarum Congregationum, *vide* Decreta Congregationum.
- Confraternitas. — S. Catharinae nationis Senensium confraternitas de Urbe in archiconfraternitatem erecta, 198 *a* et *seq.*; facultas eius officialibus data alias aggregandi confraternitates, *ibid.*
- Confraternitates Tertiariarum ubique erigendi, facultas conceditur ministro generali Ordinis sancti Francisci Capuccinorum 61 *a* et *seq.*
- Congregatio Cassinensis, *vide* Cassinenses.
- Congregatio Charitatis S. Hippolyti, *vide* Hippolyti (S.) Congregatio charitatis.
- Congregatio Doctrinae Christianae, *vide* Doctrinae Christianae Congregatio.
- Congregatio Missionis, *vide* Missionis Congregatio.
- Congregatio S. Ioannis Dei, *vide* Ioannis (S.) Dei Congregatio.
- Congregatio S. Salvatoris Ordinis sancti Augustini, *vide* S. Salvatoris Congregatio.
- Congregationes cardinalium, *vide* Decreta S. Congregationis.
- Conty Ioannes superior generalis Congregationis Missionis, 217 *b*, *vide* Missionis Congregatio.
- Constitutiones apostolicae confirmatae. — Privilegia provincialibus Societatis Iesu in partibus Indiae concessa a Pio IV confirmat Clemens XII, 5 *b* et *seq.*; item Pii II, Pauli II, aliorumque Pontificum adversus homicidas latas, 17 *a*; confirmatur constitutio Innocentii XII de non rehabilitandis iis qui animo praemeditato et doloso occidunt, 30 *a*; innovatur constitutio Urbani VIII, qua declaratur fratres Capuccinos per rectam lineam nunquam interruptam procedere a S. Francisco, 42 *a* et *b*; quae a Benedicto XIII statuta sunt circa provisionem abbatiarum vacantium in congregatione canonicorum S. Salvatoris Ordinis sancti Augustini confirmatur, 68 *a* et *seq.*; Gregorii XV et Clementis X innovatae constitutiones quod regulares in regno Lusitaniae curam animarum exercentes, 70

a et seq.; facultates a Summis Pontificibus cardinali Urbis vicario concessas, ac praesertim a Benedicto XIII, confirmat Clemens XII, 96 *b*; decreta Innocentii XI et Alexandri VIII de prohibenda quaestione Graecorum innovat, 181 *b*; confirmat quoque chirographa aliis concessa super distributione salis a cartella nuncupata in civitate Anconitana ac illius comitatu faciendâ, 296 *a et seq.*; innovat et confirmat litteras Eugenii IV de non permittendo monachis Cisterciensibus transitum ad alios Ordines praeter Carthusianum, 356 *b et seq.*; item Breve Urbani VIII, quo communitati civitatis Beneventanae conceditur ut causae temporales vel civiles in primâ et secundâ instantiâ extra eandem civitatem cognosci non possint, 369 *a et seq.*; constitutiones quoque Sixti V pro indemnitate et administratione bibliothecae Vaticanae innovat, 571 *a et seq.*

Constitutiones apostolicae derogatae. — Pauli V constitutioni, qua mandavit conventus Peruntinos et Chilenses Ordinum Praedicatorum et Eremitarum sancti Augustini, in quibus octo saltem religiosi non alerentur, suppressi, derogat Clemens, 2 *b et seq.*; constitutionem suam, qua annuam contributionem per monasterium S. Scholasticae Congregationis Cassinensis faciendam monasterio Sacri Specus in pane, vino, etc., fieri posse declaraverat, abrogat, 37 *b et seq.*

Constitutiones apostolicae moderatae. — Constitutiones Pii IV et Pauli V de non cognoscendis a sacrâ Rotâ causis auditorum, eorumque consanguineorum, affinium et familiarium, restrictae ad causas ipsorum auditorum consanguineorum in primo gradu, eorumque qui illorum studiis inserviunt, 13 *a*; Gregorii XIV constitutionem, qua cavebatur ne saecularium confessiones audirent patres Capuccini, moderatus est Clemens VIII, abrogavitque Clemens XII, 43 *a et seq.*

Constitutiones Ordinum regularium confirmatae, *vide Ordines regulares sub propriis eorum titulis.*

Constitutiones particulares et acta publica. — Constitutiones collegii parochorum de Urbe, 226 *b et seq.*; Congregationis seu collegii sub titulo *Familiae Iesu Christi* pro educatione alumnorum Sinensium et Indorum in civitate Neapoli erecti, 124 *a*; regulae collegii Corsini Italo-Graecorum Albanensium in oppido de Ullano fundati, 186 *b et seq.*; concordia inita inter archiepiscopum et archimandritam Messanenses super nonnullis punctis iurisdictionalibus, 111 *a et seq.*; sententia commissariorum apostolicorum et regis christianissimi super controversiis civitati Cavallicensi motis circa derivationem aquarum e flumine Druentiae, 200 *a et seq.*; edictum eminentissimi cardinalis Corsini signaturae iustitiae praefecti super privativa iurisdictionis Rotae Maceratensis, 204 *b et seq.*; resolutiones congregationis particularis pro expositis archihospitalis S. Spiritus in Saxiâ de Urbe, 316 *a et seq.*; in unâquaque provinciâ stabiliendus modus educandi infantes expositos, *ibid.*; leges ab archiepiscopo Salisburgensi latas pro missionariis missionum ab ipso fundatarum in dioecesi Salisburgensi confirmat, 511 *b et seq.*; constitutiones servandae a monachis Graecis Melchitis Congregationis S. Ioannis Baptistae in Soairo, in monasterio ad S. Mariam in Domnicâ de Urbe degentibus, 579 *a et seq.*

Conventuales, *vide* Minores Conventuales.

Conventus regulares parvi plures reperiuntur in vastissimis Americae meridionalis regionibus, 1 *b*; olim suppressi a Paulo V, 2 *a*; et litterae nunquam execu-

tioni mandatae, *ibid.*; Clemens XII illis conventibus antiqua iura et privilegia confirmat, 3 a.

D

Datum. — Impositio datii scutorum decem pro quolibet centenario super mercibus sericis, quae ex alienis in Statum Ecclesiasticum adportantur, 351 a et seq.; Decanatus sacrae Rotae auditorii, *vide* Rotae Sacrae auditorium.

Decreta Congregationis (S.) de Propaganda Fide. — Decretum de modo servando in tumulatione cadaverum missionariorum in partibus infidelium, 40 b et seq.; praefecto missionum Mequinez regni Marochii data facultas instituendi procuratorem missionum in urbe Matriti, 485 b et seq.

Decreta Congregationis (S.) episcoporum et regularium. — Capitula generalia hospitalaris Ordinis S. Hippolyti Mexicani non quolibet triennio, sed singulis sexenniis cogenda, 39 b et seq.; presbyteri Congregationis S. Hippolyti in Indiis occidentalibus nullam obtinere possunt in Ordine praelaturam, 86 a et seq.; capitulis generalibus Ordinis fratrum Eremitarum sancti Augustini Excalceatorum Congregationis Hispaniae et Indiarum non licet concedere provincialatus honorarios, 103 a et seq.; fratribus Ordinis Minimorum Congregationis Hispanicae promoveri licet ad lauream doctoralem, et magisterium in publicis universitatibus in eum finem dumtaxat, ut cathedras obtinere possint, non tamen quemcumque gradum in Ordine, 184 b et seq.; vicarii generales Congregationis Hispaniae Ordinis fratrum Eremitarum sancti Augustini Discalceatorum, tempore quo extra capitulum ad vicariatum in vim statutorum Ordinis et Congregationis huiusmodi subinfrant, exemptionibus, quibus electi in capitulo gaudent, fruuntur, 216 a et seq.; quo pacto suppleri debeat numerus definitorum quocumque modo deficientium post celebratum capitulum provinciale huiusce Ordinis et Congregationis, electio vero regentis provincialis in casibus mortis alicuius ex prioribus provincialibus a quo sit facienda, 539 b et seq.; monasterium S. Mariae Sagittarii Ordinis Cisterciensis unitur provinciae Tusciae eiusdem Ordinis, 220 b et seq.; magister generalis Ordinis B. M. V. Redemptionis captivorum, rite et canonice electus, muneris sui confirmationem ab Apostolica Sede non tenetur obtinere, 361 b et seq.; constitutiones Ordinis SS. Trinitatis Redemptionis Captivorum reformatae, 395 b et seq.; fratres Ordinis Eremitarum sancti Augustini provinciae Mexici ad alios Ordines confugientes, superioribus propriae religionis restituendi sunt, praestito tamen ab his iuramento de restituendo praefatos confugientes ecclesiis vel monasteriis ad quae confugerunt, si procedendum sit ad poenas corporales carceris perpetui, mortis et trirernium, 509 a et seq.

Decreta Congregationis (S.) Rituum. — Decretum approbationis sententiae latae ab episcopo Pisaurensi de casu excepto a decretis Urbani VIII, sive de cultu immemorabili praestito B. Michelinae viduae Tertii Ordinis sancti Francisci, 223 a et seq.; venerabilem servum Dei Iosephum a Leonissa Ordinis fratrum Capuccinorum Beatum dici colique posse, 287 a et seq.; pro electione B. M. V. Immaculatae in patronam principalem regni Siciliae ultra Pharum, 541 a et seq.

Decreta Ordinum regularium et Congregationum. — Decreta capituli generalis Congregationis clericorum saecularium Doctrinae Christianae circa vocem provincialium in capitulis generalibus, eorumque praesidentiam capitulis provincialibus, 9 *b* et *seq.*; constitutiones capituli generalis Ordinis Bethlehemitarum in regnis Mexicano et Peruano, 104 *b* et *seq.*; conventus generalis Parisiensis anno mdcclxxvi de suffragiis et de vicario generali Congregationis Missionis, 217 *b* et *seq.*; capituli generalis Ordinis Carmelitarum super divisione et nova assignatione conventuum provinciarum Poloniae et Litvaniae, 289 *a* et *b*; capituli generalis canonicorum regularium Ordinis sancti Antonii Viennensis, quo statuitur quod laici huius Ordinis post quadriennium a novitiatu professionem emittere possint, 484 *a* et *b*; capituli generalis Ordinis Cassinensis, pro regulari inducenda observantia, 487 *b* et *seq.*; capituli generalis Ordinis Cisterciensis habiti Cabillone anno mdcclxxxix, 542 *a* et *seq.*

Derogatio, *vide* Constitutiones apostolicae derogatae.

Distributio salis *a cartella* in civitate Anconitana et comitatu facienda 296 *a* et *seq.*

Doctrinae Christianae Congregatio. — Congregationis huius in Gallia capitulis generalibus, defuncto praeposito provinciali, interesse debet, tamquam vocalis, qui eam provinciam regit; capitulis vero provincialibus praepositus provincialis debet praesidere, 9 *b* et *seq.*; procurator generalis in domo provinciae Romanae debet residere, 368 *a*; conventiones initae inter provincias Gallicam et Romanam, 372 *b* et *seq.*; Congregatio Neapolitana unitur Gallicae, 373 *b*; provinciae Romanae quae sint attributae domus, 373 *b*; haec provincia per generalem visitanda quolibet sexennio, 374 *a*; qui sint vocales capituli provincialis, 374 *b*; dispensatio a votis a quibus dari possit, 375 *a*.

Doctrinam christianam docentibus et pueris discentibus indulgentiae concessae, 45 *a*; communicantur adultis catechismo interessentibus, pro Urbe, Italia, etc., *ibid.*; extenduntur christifidelibus ubicumque existentibus, 195 *b*.

Dominicani, *vide* Praedicatores S. Dominici.

Dotalia subsidia puellis conservatorii *delle Zoccolette* nuncupati distribui solita, 91 *a*; modus illorum distribuendorum, 91 *b* et *seq.*

Druentiae flumen in comitatu Venaissino, 199 *b*; super illius aquarum derivatione lites motae componuntur, 200 *a* et *b*.

E

Ecclesia Ferrariensis. — Quae semper fuerit eius dignitas et praestantia, 62 *b* et *seq.*; in archiepiscopatum erigitur, 65 *b* et *seq.*

Ecclesia Ulyssiponensis cathedralis orientalis. — Regi Portugalliae concessum ius patronatus et praesentandi ad omnes dignitates, canonicatus, praebendas et beneficia ecclesiae huius, 339 *a* et *seq.*

Ecclesia Ulyssiponensis patriarchalis occidentalis. — Patriarcha electus in concistorio immediate sequenti suam provisionem de patriarchatu inter S. R. E. cardinales cooptandus, 313 *b* et *seq.*; ecclesiae patriarchali pro sustentatione canonicorum applicata tertia pars reddituum ecclesiarum omnium regni Portugalliae et

- Algarbiorum, 317 *b* et *seq.*; patriarchae facta potestas novos erigendi canonicatus, 330 *b*; super huiusmodi canonicatibus assertum regi iuspatronatus, 331 *b*; huius ecclesiae canonicis et dignitatibus data facultas celebrandi seu celebrari faciendi quotidie, etiam per horam ante auroram et post meridiem, unam missam in privatis domorum suarum oratoriis in sui ac familiae praesentia, 355 *b*; patriarchae concessa potestas reformandi kalendarium, et praescribendi formam servitii praestandi huic ecclesiae, 499 *b* et *seq.*
- Equites S. Ioannis Hierosolymitani. — Quo pacto peragenda sit smutitio commendarum in hoc equestri ordine statuit magnus magister Raymundus Despuig, 213 *b*; id confirmat Pontifex, 215 *a* et *b*; datae Ordini huic leges pro restituenda consuetudine armandi naves contra piratas, 389 *b* et *seq.*; Graecorum merces quando licite praedandae, 390 *a*; quomodo iudicandum an praedatio fuerit legitima, necne, 391 *a*; causae non excedentes pretium tercentum scutorum iudici in insula Melitensi remittendae, 391 *b*.
- Equites S. Mariae de Montesa. — Haec militia regibus catholicis in administrationem et regimen data, 557 *a* et *b*; Philippus V eam consilio Ordinum univit, *ibid.*; hoc idem confirmatur, 558 *b*.
- Eremitae S. Augustini, *vide* Augustiniani.
- Eustachius Mauri ratiocinator Camerae Apostolicae, 47 *a*.
- Expositi infantes quotidie numerosissimi ex provinciis Status Ecclesiastici tam intra quam extra districtum almae Urbis ad archihospitale S. Spiritus de Urbe afferuntur, 316 *b*; ab unaquaque provincia statuendum esse locum et modum ut ii respective alantur, 317 *a*.

F

- Fabritius S. R. E. cardinalis Paulutius episcopus Albanensis officium vicariatus Urbis ab Innocentio XIII obtinuit, 97 *a* et *b*; atque iterum a Benedicto XIII cum iurisdictione cumulativa cum aliis iudicibus ordinariis Urbis, 100 *a*.
- Familiae Iesu Christi collegium alumnorum Sinensium et Indorum, *vide* Collegia.
- Ferdinandus Maria de Rubeis Ioannis Antonii cardinalis Guadagni vicarii in spiritualibus generalis Clementis PP. XII locumtenens, 94 *b*; deputatur ad visitanda tribunalia Urbis, *ibid.*
- Fidei (S.) archiepiscopus in regno Granatensi, *vide* S. Fidei archiepiscopus.
- Francs-Massons seu *Liberi Muratori*, 366 *a*; ipsorum societas et conventicula condemnantur, *ibid.*
- Fratres B. Mariae de Mercede redemptionis captivorum, *vide* Redemptionis Captivorum fratres B. M. de Mercede.
- Fratres Eremitae S. Augustini, *vide* Augustiniani.
- Fratres Minores S. Francisci, *vide* Minores.
- Fratres Praedicatores, *vide* Praedicatores.
- Fratres S. Ioannis Dei Congregationis Hispaniae, *vide* Ioannis (S.) Dei Congregatio.
- Fratres SS. Trinitatis redemptionis captivorum, *vide* Redemptionis Captivorum fratres SS. Trinitatis.
- Fratres Servi B. M. V., *vide* Servitae.

G

- Gaspar S. R. E. presbyter cardinalis de Carpineo nuncupatus Urbis vicarius a Clemente PP. X olim constitutus, 99 *b*.
- Graeci. — Graeci schismatici, subornatis aulae Turcicae ministris, sancta loca Hierosolymitana de manu fratrum S. Francisci de Observantiâ summo Latinorum dedecore usurparunt, iis praecipue subsidiis quae ex christifidelium eleemosynis iidem Graeci perceperunt, 181 *b*; quaestiones eis interdictae, 182 *a*; legati, nuncii apostolici et singuli ecclesiarum praelati litteras quaestionum non solum eis adimere, sed etiam quaesitas pecunias debent, 183 *a*; Graecorum merces quando licite praedari possint per naves equitum Ordinis S. Ioannis Hierosolymitani, 390 *a*.
- Graeci Melchitae, qui e Phoeniciâ sive Syriâ Romam appulerunt, 579 *b*; ipsis Clemens XII concessit ecclesiam S. Mariae in Domnica, vulgo *della Navicella*, *ibid.*; regulas sibi statuerunt quae referuntur, 580 *a* et *seq.*; quas confirmat Pontifex, 581 *b*; *vide* Monachi Graeci Melchitae.
- Guadagni Ioannes Antonius tituli Ss. Silvestri et Martini in Montibus cardinalis nuncupatus, Clementis XII secundum carnem ex sorore germanâ nepos, eiusdemque vicarius in spiritualibus generalis, 93 *b* et *seq.*

II

- Haereticis bonorum ecclesiasticorum possessoribus, qui ad fidem catholicam convertuntur, bona ipsa condonantur, 59 *a* et *seq.*
- Hierosolymitana sancta loca hactenus administrationi et custodiae fratrum S. Francisci de Observantiâ a sanctâ Sede Apostolicâ commissa, a Graecis schismaticis, subornatis aulae Turcicae ministris, summo Latinorum dedecore usurpata sunt, 181 *b*.
- Hierosolymitanus Ordo militaris, *vide* Equites.
- Hippolyti (S.) Congregatio Charitatis. — Presbyteri Congregationis huius, in civitate Mexicanâ aliisque Indiarum Occidentalium partibus existentes, obtinere nequeunt in religione ullam praelaturam, 86 *a* et *seq.*
- Hippolyti (S.) Mexicani Ordo hospitalaris. — Capitula generalia, quae iuxta statuta Ordinis cogi deberent singulis trienniis, ad sexennium protrahit, 39 *b* et *seq.*
- Hispaniarum rex catholicus, *vide* Philippus.
- Homicidae vel feris ipsis animantibus, utpote in genus suum minime saevientibus, crudeliores, 28 *b*; confirmatae contra eos constitutiones praedecessorum Pontificum, 29 *a*; occisor, si causa sit rixae, puniendus poenâ ordinariâ, 30 *a*; sex horarum spatium sufficiens ad divertendum ad actus extraneos, 30 *a* et *b*; reus, sive confessus sive convictus, poenae ordinariae subiectus, 30 *b*; homicida nullâ ex causâ rehabilitandus, nisi post elapsam quinquennium a patrato facinore, 31 *b*; privilegio fori non gaudet, 32 *b*; neque immunitate ecclesiastica, si praemeditato animo facinus commiserit, 33 *b*; leges omnes contra ho-

- micides latae in Statu Pontificio extenduntur ad regna Hispaniarum, 312 *b* et *seq.*; item ad totam ditionem Reipublicae Genuensis, regni Corsicae et insulae Caprariae, 599 *a* et *b*.
- Homicidia crebra in temporali S. R. E. ditione ac etiam in alma Urbe patrantur, 28 *a* et *b*; item in regnis Hispaniarum, 312 *a*; item in ditione Reipublicae Ianuensis, regno Corsicae et insula Caprariae, 599 *a*.
- Hospitalaris Ordo S. Hippolyti Mexicani, *vide* Hippolyti (S.) Ordo hospitalaris.
- Hospitale B. Mariae de Gratia, Consolatione et Porticum nuncupatum, 363 *a*; presbyteris confessariis in illo deputatis facultates concessae, 363 *a* et *b*.
- Hospitale S. Ioannes Hierosolymitani, *vide* Equites S. Ioannis Hierosolymitani.

I

- Immunitas ecclesiastica. — Ea non gaudent homicidae, etiam si sint clerici, 33 *b*; quo ordine ab ecclesia extrahendi sint qui crimen patnaverint, iuxta qualitatem personae et criminis, *ibid.*
- Indulgentiae concessae fratribus et sororibus Ordinis Servorum B. M. V. et confratribus Septem Dolorum, Ordinis ecclesias visitantibus, coronam Septem Dolorum recitantibus, etc., 18 *a* et *seq.*; visitantibus ecclesias fratrum Minorum sancti Francisci Conventualium die festo Ss. martyrum Berardi, Petri, Accursii, Adiuti et Othonis, 27 *b*; adultis qui catechismo intersunt, in Urbe et Italia ac insulis adiacentibus, 44 *b*; eadem extenduntur ad universos christifideles ubicumque locorum existentes, 195 *b*; sub horam noctis ad pulsum campanae recitantibus psalmus *De profundis*, vel semel orationem dominicam et salutationem angelicam, cum ✕ *Requiem aeternam*, 204 *a* et *b*; sacram communionem sumentibus in ecclesiis, in quibus a patribus Societatis Iesu agitur communio generalis, 212 *a* et *b*; visitantibus aliquam ex ecclesiis clericorum regularium Barnabitarum die festo S. Francisci Salesii, 219 *b*; indulgentiae, concessae visitantibus ecclesias seu oratoria missionariorum Gallorum in partibus infidelium, animabus defunctorum per modum suffragii applicari possunt, 222 *a* et *b*; indulgentia plenaria iis qui orationi Quadraginta horarum in ecclesiis patrum Capuccinorum interfuerint, 225 *a* et *b*; visitantibus ecclesias Congregationis Missionis et Puellarum Charitatis die xix iulii dicato B. Vincentio a Paulo, 295 *a* et *b*; pia exercitia a S. Francisco de Paula proposita facientibus tredecim sextis feriis ab eodem institutis, 495 *a* et *seq.*; *vide* Iubilaeum.
- Infantes expositi, *vide* Expositi infantes.
- Inquisitionis officii ministri in regnis Portugalliae et Algarbiorum, revelantes acta illius, excommunicationem incurrunt a qua absolvi non possint a confessariis, 360 *a* et *seq.*
- Investitura. — Carolo Borbonio Infanti Hispaniarum concessa investitura regni utriusque Siciliae nonnullis apposis conditionibus, 377 *a* et *seq.*; 384 *a* et *seq.*
- Ioannes Antonius Tartaglia, ratiocinator Camerae Apostolicae, 47 *a* et *seq.*
- Ioannes Baptista Leonori, ratiocinator Camerae Apostolicae, 47 *b* et *seq.*

Ioannes Conty superior generalis Congregationis Missionis, 217 *b*; *vide* Missionis Congregatio.

Ioannes Dominicus tituli S. Anastasiae cardinalis Parracianus nuncupatus olim officium vicariatus Urbis obtinebat, 97 *a*.

Ioannes Franciscus Marcus assumitur in ratiocinatorem Camerae Apostolicae, 48 *b* et *seq.*

Ioannes Iulianus Rubini, assumitur in ratiocinatorem Camerae Apostolicae, 48 *b* et *seq.*

Ioannes Portugalliae et Algarbiorum rex illustris, 314 *a*; eius merita enarrantur, *ibid.*; desiderat patriarcham pro tempore ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis, in consistorio immediate sequenti ad eius electionem et provisionem de patriarchatus, ad cardinalitiam dignitatem promoveri, *ibid.*; promovet cultum, 317 *b*, 318 *a*; ipsi asseritur ius patronatus et praesentandi canonicatus et dignitates ecclesiae patriarchalis Ulyssiponensis occidentalis, 331 *b*; item illi reservatur ius patronatus et praesentandi ad omnes dignitates, canonicatus, praebendas et beneficia cathedralis ecclesiae Ulyssiponensis orientalis, 339 *a* et *seq.*

Ioannis (S.) Dei Congregatio. — Additiones regulis huius Ordinis in capitulo generali factae, 329.

Ioannis (S.) Hierosolymitani, *vide* Equites S. Ioannis Hierosolymitani.

Iosephus Maria Perimezzi Ordinis Minimorum S. Francisci de Paula, 116 *b*; eius merita, 112 *a*; componit concordiam inter archiepiscopum Messanensem et commendatarium archimandritatus S. Salvatoris super diversis punctis iurisdictionalibus, *ibid.* et *seq.*

Iosephus Migliaccio olim archiepiscopus Messanensis, 111 *a*.

Isaiae (S.) Congregatio Syriae monachorum Maronitarum Ordinis S. Antonii abbatis, 604 *a* et *b*; *vide* Monachi Maronitae.

Italia pene tota inter acerbissimos belli motus exarsit, 382 *a*.

Italo-Graecorum Albanensium seminarium seu collegium *Corsini* nuncupatum, 186 *a*; *vide* Collegia.

Iubilaeum. — Iubilaeum universale ad implorandam divinam opem pro pace inter principes christianos, aliisque Ecclesiae necessitatibus, 14 *b* et *seq.*; simile ad divinam opem implorandam contra Turcas, et ad pestem avertendam, 552 *a* et *seq.*; *vide* Indulgentiae.

Iulius Oradinus auditor antiquior sacrae Rotae ad episcopatum Perusinum evectus, 12 *a*; ideo Pius IV sanxit decanatum auditorii, tamen non ferendum cum episcopatu, alicui auditori minus antiquo esse tribuendum, *ibid.*

Iurisdictio quasi episcopalis utrum et quomodo competat commendatario monasterii S. Salvatoris de Lingua Phari Messanensis 111 *b*.

Iurisdictionales controversiae inter archiepiscopum Messanensem et commendatarium monasterii S. Salvatoris de Lingua Phari nuncupati Messanensis Ordinis S. Basilii, 111 *a*, *vide* Concordia.

Ius patronatus et praesentandi ad omnes dignitates et canonicatus ecclesiae Ulyssiponensis patriarchalis occidentalis asseritur regi Portugalliae, 331 *b*; item ad omnes dignitates, canonicatus, praebendas et beneficia ecclesiae cathedralis Ulyssiponensis orientalis, 339 *a* et *seq.*; idem ius regi christianissimo concessum quoad ecclesias Lotharingiae et Barii, 600 *b* et *seq.*

L

- Leander tituli S. Callisti presbyter S. R. E. cardinalis Portia nuncupatus, 316 a; visitator apostolicus deputatur ad archihospitalis S. Spiritus de Urbe rationibus opportune providendum, 316 b.
- Leopoldus archiepiscopus Salisburgensis, 511 b; in amplissimâ diocesi suâ ad extirpandam haeresim missiones instituit, *vide* Missiones.
- Libri prohibiti. — Lettre pastorale de monseigneur l'évêque de Montpellier, 8 b et seq.; duae epistolae pastorales episcopi Pekinensis circa ritus Sineses, 51; liber gallico idiomate impressus, cui titulus: *Histoire du livre des réflexions morales sur le Nouveau Testament, et de la constitution Unigenitus, à Amsterdam*, 664 a; alius sub titulo: *Histoire du Concile de Trente écrite en italien par fr. Paolo Sarpi de l'Ordre des Servites, et traduite du nouveau en françois, avec des notes critiques historiques, par Pierre François le Courayer, docteur en théologie de l'université d'Oxford, etc., à Amsterdam, chez P. Wetstein et G. Smith, MDCCXXXVI* 665 b; folium cui titulus: *Arrêt de la Cour du Parlement, portant suppression d'un imprimé intitulé: Lettres de plusieurs évêques sur l'obligation de priver de l'oblation du sacrifice de la messe et des suffrages de l'Eglise, ceux qui meurent appellants de la constitution Unigenitus, etc.,* 667 a.
- Lites et litigantes. — Longarum litium ambages et controversiae ad debitum finem perducere exoptat et providet Clemens XII, 11 a; ad litigantium indemnitati et solatio consulendum indicta visitatio decennalis omnium curiarum Urbis, 94 a et seq.; quam sit absonum ab ecclesiasticâ disciplinâ et praelatorum dignitate lites fovere, eas potissimum quae simplicem iurisdictionem respiciunt, a quibus innumera scandala et detrimenta prodire solunt, 112 a, 116 b.
- Longone Petrus Antonius piâ dispositione statuit in civitate Mediolanensi fundandum fore collegium ad nobiles convictores educandos instituendosque sub regimine ac litterariâ disciplinâ clericorum regularium sancti Pauli Decollati Barnabitarum nuncupatorum, 560 a; huiusmodi collegium unitur collegio nobilium Imperiali nuncupato in eadem civitate sub quibusdam conditionibus, 560 b et seq.; quae unio et conditiones confirmantur, 565 b.
- Ludovico Francorum regi christianissimo iuspatronatus concessum quoad ecclesias Metensis, Tullensis et Virdunensis civitatum, 600 b et seq.

M

- Maceratensis Rota. — Illi privativa iurisdictio confirmatur contra abusum appellandi vel recurrenti ad auditorem praefecti signaturae iustitiae in Urbe, 204 b, 205 a et b.
- Maronitica natio S. Sedi semper addictissima orthodoxam catholicam fidem in Syriâ inter adversas superstitiones et haeresis sectas integerrime colit et custodit, 604 b; *vide* Monachi Maronitae.

Matrimonium. — Facultas facta patribus Societatis Iesu dispensandi cum neophytis Indiarum in gradibus iure divino non prohibitis ad matrimonia contrahenda, 5 b; renovatur, 6 a et b; matrimonia, iam contracta cum dicta dispensatione post expiratum terminum, validantur, 7 a.

Matthaeus Ripa fundator collegii seu Congregationis Sacrae Familiae Iesu Christi pro alumnis Sinensibus et Indis, 123 b; 347 b; 349 b.

Medicinae et chirurgiae artes exercendi facultas tributa Capuccinis Gallis missionariis in partibus infidelium, 26 b.

Meindarts, pseudo-archiepiscopus Ultraiectensis, vide Petrus Ioannes Meindarts.

Melchitae, vide Monachi Graeci Melchitae.

Messanensem archiepiscopum inter et archimandritam commendatarium monasterii S. Salvatoris de Lingua Phari nuncupati Ordinis S. Basilii controversiae iurisdictionales agitatae referuntur, 111 a et seq.; concordia super illis inita, 112 a et seq.; confirmatur a Pontifice, 120 a et b.

Michelina (B.) Pisauensis vidua e nobili Metellorum gente, 223 a; super cultu immemorabili illi praestito decretum Congregationis Rituum confirmatur a Pontifice, 223 b et seq.

Milites Ordinis Hierosolymitani, vide Equites.

Militia de Montesà, vide Equites.

Minimi. — Fratribus Congregationis Hispanicae huius Ordinis licet promoveri ad lauream doctoralem et magisterium in publicis universitatibus solummodo ad obtinendas cathedras, non gradum quemcumque in Ordine, 184 b et seq.

Minores Capuccini. — Huius Ordinis missionarii Galli in partibus infidelium exercere possunt artes medicinae et chirurgiae, 26 b; indulgentia plenaria eis concessa 207 b; hic Ordo per rectam lineam sine ulla intermissione descendit a S. Francisco, 42 a et b; generali et definitorio data facultas concedendi licentiam nonnullis huius Ordinis fratribus saecularium utriusque sexus audiendi confessiones, *ibid.*; eidem ministro generali et secundariis superioribus ab eo dependentibus ius competit, ubi etiam alii eiusdem Ordinis Tertiarii fuerint, novas erigendi confraternitates, 61 a et seq.; tertiariis huius Ordinis communicantur indulgentiae alias concessae confratribus et sororibus B. Mariae de Carmelo, 122 a et b; fratres huius Ordinis in provinciis Italiae deputare in confessariis ordinarios monialium episcopis aliisque locorum Ordinariis cautum, 197 a et b; nonnulli conventus provinciae Brixienensis uniti provinciae Lombardiae, 206 a et b.

Minores Conventuales. — A fratribus Ordinis huius faciendi recursus gradatim ad superiores Ordinis iuxta constitutiones et Bullas pontificias, 543 b et seq.

Minores Observantes. — Pro erecta bibliotheca et archivio in conventu Aracaelitano de Urbe sancit leges, 293 a et seq.; novae aedes ad conventum B. M. V. de Nive de Palazzola constructae nulli alteri usui applicandae praeterquam ad hospitium benefactorum Ordinis, 358 b et seq.

Minores Observantes Discalceati. — Conventus et ecclesia Ss. Quadraginta Martyrum de Urbe ad fratres Discalceatos nationis Hispaniae et Indiarum tantum pertinet, 230 a et b; Alexander VII fratribus provinciae Ss. Ioannis Baptistae et Iosephi transitum prohibet ad aliam religionem, 662 b; hoc idem statuit Clemens XII pro provincia S. Antonii in Brasilia, 664 a et b.

- **Minores Reformati.** — Fratribus provinciarum Lusitanae et S. Antonii in Brasilia vetitus transitus ad alias provincias sui Ordinis studiorum causâ, 589 *a* et seq.
- Missiones apostolicæ.** — Missiones in dioecesi Salisburgensi instituit Leopoldus archiepiscopus sub regimine sacrae Congregationis de Propaganda Fide, 511 *b* et seq.; missio pro patribus Ordinis S. Augustini in praefectura Hallensi et monte Turnbergensi, 512 *b* et seq.; pro patribus Capuccinis in oppido et praefectura Werfensi cum praefecturis in Abbtenu et Golling, 514 *a*; pro eisdem civitatis Radstadiensis intra montana per totam eius nominis praefecturam, 518 *b*; aliam pro eisdem monasterii in Damsweeg vallis Zungaviae ad confines Carinthiae per totam praefecturam Mosheimensem, 520 *a*; pro fratribus Ordinis sancti Benedicti in loco Swarzachiae pro praefecturis ad S. Ioannem Wagrain, Prosail, Gostein, Goldegg et ad S. Vitum, 522 *a*; pro patribus Recollectis Ordinis sancti Francisci in loco Hunsdorff super praefecturis Taxenbacensi, Raurensi et Zellensi, 527 *b*.
- Missionis Congregatio.** — Quomodo intelligenda sit maior pars suffragiorum super medietatem 217 *b* et seq.; mortuo superiore generali, vicario autem generali legitime impedito, Congregationem regere quis debeat, *ibid.*; assistenti generali admissio tamquam vicario generali, eadem quae huic competunt facultates tribuuntur, *ibid.*
- Monachi Cistercienses,** *vide* Cistercienses.
- **Monachi Graeci Melchitae Congregationis S. Ioannis Baptistae in Soairo.** — Eis ecclesia S. Mariae in Domnicâ de Urbe, 579 *b*; regulas sibi constituunt, 580 *a*; post completa studia parati esse debent ad obeundas missiones, *ibid.*; abbas et monachi monasterii huius abbati generali totius Congregationis subiecti esse debent, 580 *b*; quibus studiis operam dare debeant, 581 *a*.
- Monachi Maronitae Ordinis S. Antonii Congregationis S. Isaiae in Syria.** — Constitutiones efformant, Sedique Apostolicae porrigunt confirmandas, 604 *a* et *b*; de obedientiâ et castitate et paupertate, *ibid.*; de humilitate, de fraternâ charitate, de patientiâ, de habitu monachorum, 605 *b*; de morâ in cellâ, de iter agentibus, de mensâ, de opere manuum, de silentio, de oratione mentali, de oratione vocali, de confessione sacramentali, 606 *a* et *b*; de sanctorum mysteriorum communione, de modestiâ, de aegrotis, de novitiis, 607 *a* et seq.; de magistro novitiorum, 610 *b*; de professis, de clericis studentibus et magistris, 611 *a* et *b*; de sacerdotibus, 613 *a*; de monachis laicis, 613 *b*; de ordine domestico et honestate extra monasterium, 614 *b*; de fundatione monasteriorum, receptione hospitem, deque vitandâ monachorum vagatione, 615 *a* et seq.; de subiectione erga praelatos, 617 *a*; de iis quae observari debent in exigendâ ab abbatibus et reddendâ a monachis ratione conscientiae, 618 *a*; de renovatione votorum, 619 *a*; de monachis infirmis et decedentibus, 619 *b*; de eremitis et inclusis, 621 *a*; de monialibus, 621 *b*; de communi regulâ abbatum et superiorum, 624 *a*; de regimine, ordine et praeeminentiâ abbatum, 624 *b* et seq.; de abbate generali, 625 *b*; de hegumenis, 628 *b*; de abbate provinciae, 629 *a*; de abbate monasterii, 629 *b*; de vicario, 631 *b*; de oeconomo seu procuratore monasterii, 632 *a*; de consultoribus, 633 *a*; de praedicatoribus, 633 *b*; de praefecto rerum spiritualium, 634 *a*; de praefecto ecclesiae, 634 *b*; de prae-

secto bibliothecae, 636 *b*; de socio et sigillo abbatis generalis, hegumenorum etc., 636 *a et b*; de infirmario, 636 *b*; de ianitore, 637 *a*; de custode vestium, de cellerario, 638 *a*; de coquo, 638 *b*; de hebdomadario mensae, 639 *a*; de congregatione generali, 639 *a et seq.*; de electione abbatis generalis et hegumenorum, 641 *b et seq.*; de congregatione hegumenorum et electione abbatum provinciae vel monasterii, 644 *b*; de congregatione provinciae et monasteriorum, 646 *b*; de congregatione hebdomadali, de electione in communi, 647 *a*; de visitatione, 648 *a*; de processu iudiciali, 650 *a*; de culpis et poenis, 651 *a*; de levi culpa et poena, 652 *b*; de gravi culpa et poena, 652 *b*; de graviori culpa et poena, 653 *a*; de gravissima culpa et poena, 653 *b*; de culpis et poenis superiorum, 654 *b*; de percussoribus, 655 *b*; et proprietariis, 656 *a*; de apostatis, 656 *b*; et excommunicatione, 657 *b*; de privatione vocis, loci, cuculli et coronae, 658 *a*; de suspensione et depositione ab officio, 658 *b*; de poena electionis ex Ordine, 659 *b*; monita generalia pro observatione constitutionis, 660 *b*; supradictas regulas confirmat Pontifex, 661 *a et b*.

Monachi Silvestrini, *vide* Silvestrini.

Montesa. — Militia S. Mariae de Montesa, *vide* Equites.

Montis Libani Congregatio monachorum Syrorum Maronitarum Ordinis S. Antonii, 604 *b*, *vide* Monachi Maronitae.

Montispessulanensis episcopi epistola et alterum scriptum damnantur et prohibentur, 8 *a et b*.

N

Neoburgensis ducatus, *vide* Palatinatus Rheni inferior.

Nerius card. Corsinus, 204 *a et b*; eius edictum in confirmationem privativae iurisdictionis Rotae Maceratensis, 204 *b*; confirmatur, 205 *a et b*.

Nunus cardinalis de Cunha inquisitor generalis in regnis Portugalliae et Algarbiorum, 360 *a et seq.*

O

Oradinus Iulius, *vide* Iulius Oradinus.

Ordines regulares, *vide proprios ipsorum titulos*.

Ordo hospitalaris S. Hippolyti Mexicani, *vide* Hippolyti (S.) Ordo hospitalaris.

Ordo Minorum S. Francisci, *vide* Minores.

P

Palatinatus Rheni inferior, 59 *b*; haereticis qui bona ecclesiastica possident facta facultas ea retinendi si ad finem catholicam convertuntur, *ibid.*

Praedicatores S. Dominici. — Conventus provinciae Peruntinae et Chilensis, quamvis tres tantum religiosos de familia alerent, fruebantur privilegiis ceterarum do-

- morum regularium, 1 *b*; eos supprimi voluit Paulus V, qui octo religiosos non haberent, 2 *a*; restituit vero antiquis privilegiis Clemens XII, 3 *a*.
- Panormitana civitas iamdiu B. M. V. Immaculatam in principalem regni patronam elegit, 541 *b*; id confirmat Clemens XII, 542 *a*.
- Parochorum Urbis collegium, 226 *a*; capitulationes pro bonâ directione collegii dictorum parochorum, et tuitione iurium parochialium, 226 *b* et *seq.*; confirmantur, 229 *a* et *b*.
- Parochialium usus regularibus praescriptus a Gregorio XV, iterum praescribitur, 70 *a* et *seq.*
- Parracianus cardinalis Ioannes Dominicus, *vide* Ioannes Dominicus.
- Patriarcha. — Ulyssiponensis occidentalis patriarcha, in consistorio immediate sequenti ad eius provisionem de patriarchatu, sacro cardinalium collegio cooptandus, 313 *b* et *seq.*; *vide* Ecclesia.
- Paulutius cardinalis Fabritius, *vide* Fabritius.
- Pekinensis episcopi epistolae duae pastorales circa ritus Sinenses irritantur, 85 *a* et *b*.
- Petrus Antonius Longone, *vide* Longone.
- Petrus Ioannes Meindarts in pseudo-archiepiscopum Ultraiectensem electus, 591 *a*; censuris irretitus suspensusque declaratur, 591 *b* et *seq.*
- Petrus magister de Rubeis auditor minus antiquus in auditorio S. Rotae, 12 *a*; illi tamen adiudicatur decanatus auditorii in concursu Iulii Oradini episcopi Perusini, *ibid.*
- Philippus Boschetti, assumitur in ratiocinatorem Camerae Apostolicae, 48 *b* et *seq.*
- Philippus Hispaniarum rex catholicus, 311 *b*; tractatum cum Sede Apostolica vix-gintisex articulis comprehensum iniiit quod per mutuam reciprocamque regis praedicti et Clementis XII ratificationem et ratihabitationem firmatum et constabilitum fuit, *ibid.*; subsidiis et armis ab illo donatis Carolo Borbonio Hispaniarum infanti, iste regnum utriusque Siciliae acquisivit, 384 *a*.
- Piratae et piraticae naves sub exteris vexillis armatae depraedant pauperes Graecos christianos, 389 *b*; variae ordinationes pro navibus armandis contra piratas, 390 *a* et *seq.*
- Pompeius Aldovrandus, *vide* Aldovrandus Pompeius.
- Portia cardinalis Leander, *vide* Leander.
- Portugalliae et Algarbiorum rex, *vide* Ioannes.
- Privilegiatorum vulgo *patentati* nuncupatorum excessivo numero, administratio et cursus rectae et expeditae iustitiae, qua reipublicae salus praecipue innititur, summopere obturbatur, 32 *b*, et 308 *b*.
- Privilegium fori nemini suffragetur pro crimine homicidii, 32 *b*, et 308 *b*.
- Proiecti infantes, *vide* Expositi infantes.
- Puellis conservatorii *delle Zoccolette* nuncupati subsidia dotalia distribui solita, 91 *a*; modus illorum distribuendorum praescribitur, 91 *b*.

Q

Quadraginta horarum oratio, 225 *a*; iis, qui illi intersint, indulgentia conceditur, *ibid.*

R

Ratiocinatores Camerae Apostolicae, *vide* Camera Apostolica.

Raymondus Despuig magister hospitalis S. Ioannis Hierosolymitani et militantis Ordinis S. Sepulchri, 213 *b*; eius decretum circa smutationem praeceptoriarum praedicti hospitalis, *ibid.*; confirmatur, 215 *a* et *b*.

Redemptionis Captivorum fratres B. Mariae de Mercede. — Exgenerales Ordinis fruuntur privilegio celebrandi in privatis oratoriis conventuum Ordinis, prout magistri generales, 315 *b* et *seq.*; generalis huius Ordinis canonice et rite electus confirmatione apostolica non indiget ad munus suscipiendum, 361 *b* et *seq.*

Redemptionis Captivorum fratres SS. Trinitatis. — In provinciâ Italiae non recipiendi fratres aliorum Ordinum sub poenâ excommunicationis, 46 *a* et *b*; constitutiones Ordinis huius reformatae, 394 *b* et *seq.*; de voto obedientiae, 395 *b*; de voto castitatis, 396 *b*; de voto paupertatis, 397 *a*; de voto non ambiendi, 398 *b*; de redemptione captivorum, 399 *a* et *seq.*; de modo petendi elemosynas pro captivis, 401 *a* et 404 *a*; de electione et qualitate redemptorum, *ibid.*; de divisione familiarum, provinciarum, earum nominibus, ac de conventuum differentiâ et eorum aedificiis, 401 *b*; de numero religiosorum cuiuslibet conventus, 403 *a*; de vestitu religiosorum, *ibid.*; de officio divino, missâ, communione fratrum, et sacris initiandis, 406 *a* et *seq.*; de suffragiis faciendis pro defunctis, 409 *a* et *seq.*; de abstinentiâ a carnibus, 412 *a*; de vitâ communi, 414 *a*; de charitate erga infirmos, 415 *b*; erga hospites, 416 *b*; de silentio et clausurâ, 417 *b*; de correctione culparum, 420 *b*; de apostatis, fugitivis et incorrigibilibus, 423 *a*; de confessariis, praedicatoribus, lectoribus, studentibus, collegiis et bibliothecis, 426 *a*; de capitulis generalibus et congregationibus, 434 *a*; de definitorio generali, 450 *b*; de qualitate eligendorum in praelatos, ac de eorum et aliorum officiis, iure et potestate, 451 *b*; de capitulo provinciali, 454 *b*; de definitorio provinciali, 458 *a*; de visitationibus et visitatione conventuum, 461 *a*; de visitatione et depositione praelatorum, 469 *a*; de sigillis in Ordine utendis, 470 *a*; de procuratoribus generalibus, provincialibus et conventualibus, ac de eorum officio, 472 *b*; de novitiatibus, receptione, educatione et approbatione novitiorum, 475 *b*; de professione novitiorum, 480 *b*; de bonis et haereditatibus profitentium et professorum, 482 *a*.

Regulares. — Qui curam animarum gerunt in regno Lusitaniae, observare debent constitutiones Gregorii XV et Clementis X circa usum parochialium et sacramentorum administrationem, 70 *a* et *seq.*

Rex christianissimus. — Ei concessum indultum nominandi ad beneficia in ditionibus Lotharingiae et Bari, 600 *b* et *seq.*

Ritus Sinenses. — Duae epistolae pastorales episcopi Pekinensis circa ritus Sinenses editae, nullae et irritae declarantur, 85 *a* et *b*.

Rogerus rex anno 1096 monasterium SS. Salvatoris sub regulari observantiâ Ordinis sancti Basilii erexit tamquam caput omnium monasteriorum Graecorum,

114 *b*, 115 *a*; eiusdem archimandritae iurisdictionem tribuit cum praestatione census archiepiscopis Messanensibus, *ibid.*

Rota Maceratensis, *vide* Maceratensis Rota.

Rotae sacrae auditorium. — Decanatus Rotae ab episcopo etiam titulari optari non potest, 11 *b* et *seq.*; in Rotâ auditorum causae, eorumque consanguineorum in primo gradu cognosci non possunt, 12 *a*; causae in eâ semel inductae, advocari ab eâdem nequeunt, *ibid.*; a notariis auditorii sacrae Rotae quo pacto dirigenda sint registra, 668 *a* et *seq.*

S

Sacri Specus monasterium, *vide* Cassinenses.

Salis distributio *a cartella* nuncupata in civitate Anconitana ac illius statu et comitatu, 296 *a*; super eâ duo chirographa Pontificis referuntur, 296 *b* et *seq.*

Salisburgensis episcopus missiones instituit ad haeresim extirpandam, *vide* Missiones.

S. Fidei archiepiscopus in regno Granatensi in Americâ exponit non posse ad executionem devenire litterarum Pauli PP. V super suppressione parvorum conventuum in vastissimis Americae Meridionalis regionibus, 2 *a* et *b*.

S. Rotae, *vide* Rotae sacrae auditorium.

S. Salvatoris Congregatio Ordinis S. Augustini. — Stablitur modus servandus in provisione abbatiarum vacantium huiusce Congregationis, 68 *a* et *seq.*

SS. Salvatoris de Linguâ Phari monasterium seu archimandritatus, 111 *a*; ipsius historia refertur, 115 *a* et *b*; controversiae iurisdictionales circa ipsum *vide* Concordia.

S. Scholasticae monasterium, *vide* Cassinenses.

S. Sepulchri Ordo Militaris, *vide* Equites S. Ioannis Hierosolymitani.

S. Spiritus archihospitale, *vide* Archihospitale.

Scholopii. — Recursus a religiosis Congregationis huius gradatim faciendi a rectore domus ad praepositum provincialem, deinde ad praepositum generalem, 202 *b* et *seq.*

Senensium nationis confraternitas in Urbe, *vide* Confraternitas.

Sericae merces, quas ex alienis intra Statum Ecclesiasticum adportari contingat, datio scutorum decem pro quolibet centenario subiiciuntur, 351 *a* et *seq.*

Servitae. — Huius Ordinis superiores regulares, etiam locales, gaudent privilegio benedicendi sacra indumenta ad ecclesias Ordinis pertinentia, dummodo in benedictione sacri olei unctio non adhibeatur, 24 *b*; alternativa pro provincia Germanicâ inter nationes Austriacam et Tyrolensem stabilita confirmatur, 209 *a* et *seq.*

Silvestrini Monachi. — Monachis Congregationis huius denegatus recursus ad tribunalia, nisi previa appellatione ab abbate monasterii ad abbatem generalem, 194 *a* et *b*.

Silvius Valentinus Gonzaga archiepiscopus Nicaenus ac Sedis Apostolicae nuncius Bruxellis commorans, commendatarius vel archimandrita monasterii seu archi-

- mandatus S. Salvatoris de Lingua Phari nuncupati Messanensis, Ordinis S. Basilii, 111 *a* et seq.; vide Concordia.
- Sinenses Ritus vide Ritus Sinenses.
- Societas et Inferius alumnorum collegium seu Congregatio sub titulo *Familiae Iesu Christi* extra muros civitatis Neapolitanae, 123 *a*, vide Collegia.
- Smullio commendarum aut praeceptoriarum hospitalis S. Iohannis Hierosolymitani, quando facienda, vide Equites S. Iohannis Hierosolymitani.
- Societas Iesu. — Provinciales Indiarum facultate gaudent dispensandi cum neophytis Indiarum aliarumque orientalium regionum in gradibus affinitatis vel consanguinitatis a iure divino non prohibitis ad contrahenda matrimonia, 5 *b*; huic facultati Clemens XI terminum posuit viginti annorum, 6 *a*; illum prorogat Clemens XII, 6 *a* et *b*; matrimonia cum huiusmodi dispensationibus iam contracta post expiratum terminum, validat, 7 *a*.
- Subsidia dotalia puellis conservatorii *delle Zoccolette* nuncupatae distribui solita, 91 *a*; modus illorum distribuendorum, 91 *b*.
- Suppressio parvorum conventuum in vastissimis Americae Meridionalis regionibus a Paulo PP. V intimata, 2 *a*; minime executione demandata, *ibid.*; revocatur a Clemente XII, 3 *a*.

T

- Thomas de Vidal et de Nin, archiepiscopus Messanensis, 111 *a* et seq.
- Tractatus viginti sex articulis comprehensus inter inter Sedem Apostolicam et regem Hispaniarum catholicum memoratur, 311 *b*.
- Tribunalia Urbis. — Quolibet decennio per aliquem cardinalem visitanda, 93 *b* et seq.; vide Rotae sacrae auditorium et Vicarius cardinalis de Urbe.
- Trinitarii, vide Redemptionis Captivorum fratres SS. Trinitatis.
- Troianus tituli S. Caeciliae cardinalis de Aquaviva procurator et mandatarius specialis Caroli Borbonii Hispaniarum Infantis ad obtinendam pro nomine praedicti Caroli investituram regni utriusque Siciliae, 382 *a*; iuramentum fidelitatis Sedi Apostolicae nomine praedicti Caroli praestat, 384 *b* et seq.
- Tumulatio cadaverum missionariorum Ordinum regularium in partibus Syriae et Palaestinae quomodo facienda, 41 *a*.

U

- Ugo dum viveret archiepiscopus Messanensis quamdam concordiam iniit cum rege Siciliae tunc existente super censu solvendo archiepiscopis Messanensibus ab archimandritis monasterii S. Salvatoris de Lingua Phari, 111 *b*.
- Ultraiectensis pseudo-archiepiscopus Petrus Ioannes Meindarts censuris irretitus suspensusque declaratur, *a* et seq.
- Ulyssiponensis ecclesia patriarchalis occidentalis, 317 *b*; vide Ecclesia.
- Ulyssiponensis ecclesia parochialis orientalis, 339 *a* et seq.; vide Ecclesia.

V

Vaticana bibliotheca, *vide* Bibliotheca Vaticana.

Vicariatus Urbis et districtus ac suburbiorum officium Paulus PP. IV erexit et instituit 97 *a*.

Vicarius cardinalis de Urbe. — Ei demandata visitatio sui tribunalis, 94 *b*; confirmatae facultates alias concessae, 96 *b*; officium criminale ab officiis civilibus dismembratur, 95 *a*; quae sint eius muneris partes, 95 *b* et *seq.*; notarii civiles in causis criminalibus se immiscere non debent, 95 *a*.

Virgilius de Cinciis, Romanus, unus e familiaribus Clementis PP. XII, 74 *b*.

Z

Zoccolette (*delle*) conservatorii nuncupati puellis subsidia dotalia distribui solita, 91 *a*; modus illorum distribuendorum praescribitur.

INDEX INITIALIS.

A

| | |
|--|-----|
| Ad circumspectam Romani | 47 |
| Ad ea, per quae christifidelium | 225 |
| Ad excelsum pastoralis officii | 377 |
| Adiutor et susceptor noster | 495 |
| Admonet nos apostolici muneris | 70 |
| Ad sacrosanctam B. Petri | 499 |
| Ad seraphicae religionis | 293 |
| Ad sublimen sanctitatis montem | 246 |
| Aliàs felicitis recordationis | 4 |
| Aliàs felicitis recordationis | 219 |
| Aliàs felicitis recordationis | 295 |
| Aliàs felicitis recordationis | 303 |
| Aliàs inter diversas ordinationes | 87 |
| Aliàs nos, nempe die | 316 |
| Aliàs nos per nostras | 308 |
| Aliàs nos per nostras | 595 |
| Aliàs pro parte dilecti filii | 509 |
| Aliàs quidem felicitis recordationis | 600 |
| Apostolica haec sancta Sedes | 583 |
| Apostolicae procurationis | 288 |
| Apostolicae servitutis | 61 |
| Apostolicae sollicitudinis | 84 |

C

| | |
|--|-----|
| Caelestes Ecclesiae thesauros | 201 |
| Caelestium munerum thesauros | 27 |
| Caelestium munerum thesauros | 44 |
| Caelestium munerum thesauros | 207 |
| Circumspecta Romani Pontificis | 75 |

| | |
|---|-----|
| Circumspecta Sedis Apostolicae | 339 |
| Collegia et seminaria | 559 |
| Crediti nobis caelitus | 104 |
| Creditum humilitati nostrae | 665 |
| Cum aliàs, nempe die | 568 |
| Cum dudum felicitis recordationis | 5 |
| Cum felicitis recordationis | 212 |
| Cum nos aliàs per quasdam | 360 |
| Cum, sicut accepimus, | 91 |
| Cum, sicut ad apostolatus | 8 |
| Cum, sicut dilecti filii | 39 |
| Cum, sicut dilecti filii | 494 |
| Cum, sicut dilectus filius | 26 |
| Cum, sicut dilectus filius | 202 |
| Cum, sicut dilectus filius | 222 |
| Cum, sicut nobis innotuit | 199 |
| Cum, sicut nobis innotuit | 667 |

D

| | |
|---|-----|
| De salute dominici gregis | 593 |
| Dignissimam regibus ipsis | 571 |
| Dopo che la Congregazione | 351 |
| Dudum emanarunt a recolendae | 43 |
| Dudum emanavit a felicitis | 181 |
| Dudum felicitis recordationis | 545 |

E

| | |
|---|-----|
| Ea, quae a Romanis Pontificibus | 42 |
| Ecclesiae militantis regimini | 14 |
| Emanarunt dudum a felicitis | 356 |

| | | | |
|--|--|--|--|
| Praeclara Romanorum Pontificum . 535 | | S | |
| Pro suprema catholicae Ecclesiae . 349 | | | |
| Q | | | |
| Quam in omnibus fere 552 | | Sacrosancti apostolatus officium . . 206 | |
| R | | Sol iustitiae Iesus Christus 579 | |
| Religiosa christianorum principum. 317 | | Sollicitudo pastoralis officii 46 | |
| Romanus Pontifex providus 93 | | Sollicitudo pastoralis officii 122 | |
| Romanus Pontifex providus 668 | | Superna dispositione 24 | |
| | | Superna Hierusalem et beata . . . 232 | |
| | | U | |
| | | Unigeniti filii Dei salvatoris 18 | |



INDEX RUBRICARUM

CONSTITUTIONUM

CLEMENTIS PAPAE XII

AB ANNO QUINTO USQUE AD DECIMUM ET ULTIMUM.

CXL. Ut omnes conventus provinciarum Peruntinae et Chilensis Ordinis fratrum Eremitarum S. Augustini in possessionem privilegiorum, in quâ usque modo fuerunt, deinceps absque ullâ alteratione permaneant, etiamsi octo religiosos de familiâ non habeant, non obstantibus litteris Pauli V, quibus huiusmodi domos suppressi iuebatur, 1.

CXLI. Septuagintaquinque ducatos, qui post obitum singulorum cardinalium officialibus et ministris sacri S. R. E. cardinalium collegii per haeredes defuncti iuxta Pauli V constitutionem solvendi erant, deinceps a singulis cardinalibus in suâ ad cardinalatum promotione solvi praecipit, 4.

CXLII. Nonnulla privilegia provincialibus Societatis Iesu in partibus Indiarum existentibus a sanctae memoriae Pio IV concessa confirmantur, 5.

CXLIII. Damnatio et prohibitio libelli gallico idiomate editi sub titulo: *Lettre pastorale de monseigneur l'évêque de Montpellier adressée au*

clergé et aux fidèles de son diocèse pour leur notifier un miracle opéré dans son diocèse par l'intercession de M. François de Paris et les pré-munir contre un Bref de N. S. P. le Pape en date du 3 octobre 1733 et deux écrits de monsieur l'archevêque d'Embrun de la même année 1734, ac cuiuscumque alterius similis scripti ab eodem episcopo Montispessulanensi editi, vel quod deinceps edi contigerit, 8.

CXLIV. Confirmatio duorum decretorum seu statutorum a capitulo generali Congregationis clericorum saecularium Doctrinae Christianae in Galliâ editorum circa vocem provincialium in capitulis generalibus, eorumque praesidentiam capitulis provincialibus, 9.

CXLV. Quod decanatus sacrae Rotae auditorii ab episcopo etiam titulari optari non possit; nec in Rotâ cognosci causae ipsorum auditorum eorumque consanguineorum in primo gradu: causae vero in Rotâ se-

- mel inductae avocari ab eadem nequeant, 10.
- CXLVI. Iubilaeum universale ad implorandam divinam opem pro pace inter principes christianos et aliis catholicae Ecclesiae necessitatibus, 14.
- CXLVII. Summarium indulgentiarum, quae conceduntur fratribus et sororibus Ordinis Servorum B. M. V. et confratribus Septem Dolorum, Ordinis ecclesias statutis anni diebus visitantibus, vel etiam coronam Septem Dolorum nuncupatam recitantibus, adimplendo insuper nonnulla pia opera quae in hac constitutione praescribuntur, 18.
- CXLVIII. Superiores regulares, etiam locales, Ordinis Servorum B. M. V. facultate gaudent ecclesiastica indumenta ad huius Ordinis ecclesias pertinentia benedicendi, dummodo in benedictione huiusmodi sacri olei unctio non adhibeatur, 24.
- CXLIX. Facultas patribus Capuccinis Gallicis missionariis apostolicis in partibus infidelium degentibus exercendi artes medicinae et chirurgiae, 26.
- CL. Indulgentia plenaria perpetua pro visitantibus aliquam ex ecclesiis fratrum Ordinis Minorum S. Francisci Conventualium nuncupatorum vere poenitentibus et confessis ac sacra communione reffectis, tam hactenus erectis quam imposterum erigendis, die festo Ss. martyrum Berardi, Petri, Accursii, Adiuti et Othonis, 27.
- CLI. Contra homicidas ac deferentes arma prohibita in alma Urbe et reliquo Statu Ecclesiastico, 28.
- CLII. Annua contributio, per monasterium S. Scholasticae Congregationis Cassinensis Ordinis sancti Benedicti facienda monasterio Sacri Specus eiusdem Congregationis et Ordinis, fieri censetur etiam titulo compensationis quorundam bonorum, ac fieri debet in pecunia numerata, 37.
- CLIII. Statutum ut capitulum generale Ordinis S. Hippolyti Mexicani de cetero de sexennio in sexennium celebretur, 39.
- CLIV. Confirmatio decreti Congregationis de Propaganda Fide super tumulatione cadaverum missionariorum regularium in infidelium partibus existentium, 40.
- CLV. Confirmatio Brevis Urbani VIII super declaratione quod Ordo fratrum Minorum sancti Francisci Capuccinorum per rectam lineam sine intermissione descendit a linea S. Francisci, 42.
- CLVI. Concessa facultas generali nunc et pro tempore existenti Ordinis fratrum Minorum sancti Francisci Capuccinorum nuncupatorum una cum definitorio generali concedendi licentiam fratribus Capuccinis presbyteris ad audiendas saecularium confessiones ab Ordinario approbatis in illis locis, ubi conventus sui Ordinis existunt, in quibus confessoriorum penuria viget, 43.
- CLVII. Indulgentiae docentibus et pueris discentibus doctrinam christianam in Urbe ac universa Italia insulisque adiacentibus, extenduntur ad adultos qui catechismo huiusmodi intererint, 44.
- CLVIII. Prohibitio recipiendi in provincia Italiae Ordinis fratrum Ss. Trinitatis redemptionis captivorum religiosos cuiusvis Ordinis transitum requirentes, sub poena excommunicationis et privationis vocis activae et passivae tam contra recipientes quas receptos ipso facto incurrenda, 45.
- CLIX. In ratiocinatores Camerae Apostolicae assumuntur tres legumperiti et

- procuratorum collegio, cum aliis ordinationibus pro rectâ eiusdem Camerae ac rerum ad eam spectantium administratione, 47.
- CLX. Bona ecclesiarum, iamdiu ab hæreticis occupata in Palatinatu inferiore et ducatu Neoburgensi, iis condonantur possessoribus, qui ad fidem catholicam convertuntur, 59.
- CLXI. Declaratur quod ministro generali Ordinis sancti Francisci Capuccinorum et secundariis superioribus ab eo dependentibus tamquam veris et legitimis filiis eiusdem sancti Francisci conveniat et competat in quocumque loco, civitate, provinciâ et regno, instituere et fundare confraternitates, 61.
- CLXII. Ecclesia Ferrariensis, antea episcopalis, in archiepiscopalem erigitur, 62.
- CLXIII. Confirmatio cuiusdam paragraphi constitutionis Benedicti Papae XIII circa vacationem abbatiarum obtinendarum in Congregatione regularium S. Salvatoris Ordinis sancti Augustini, 68.
- CLXIV. Omnes regulares etiam Ordinis Cisterciensis in regno Lusitaniae tenentur observare constitutiones Gregorii XV et Clementis X circa parochialium usum et sacramentorum administrationem, 70.
- CLXV. Pontifex privilegia concedit nonnullis suis familiaribus, 74.
- CLXVI. Revocatio et annullatio duarum epistolarum pastoralium bonae memoriae Francisci episcopi Pekinensis datarum die vi iulii et xxiii decembris mcccxxxiii circa Ritus Sinenſes editarum, reservatâ insuper S. S. et Sedi Apostolicae facultate aperiendi fidelibus illarum partium mentem suam super rebus huiusmodi materiam respicientibus, 84.
- CLXVII. Confirmatio decreti Congregationis episcoporum et regularium, quo statuitur, presbyteros Congregationis S. Hippolyti in partibus Indiarum non posse habere in religione aliquam praelaturam, 86.
- CLXVIII. Confirmatio decreti particularis Congregationis cardinalium, quo resolvuntur nonnulla dubia super reformatione constitutionum Ordinis B. Mariae de Monte Carmelo, necnon super quibusdam aliis exortis quaestionibus occasione earundem constitutionum, 89.
- CLXIX. Extensio indulti circa subsidia dotalia puellis conservatorii *delle Zoccollette* nuncupatis distribui solita, 91.
- CLXX. Dismembratio officii criminalis ab officiis civilibus notariorum tribunalis eminentissimi almae Urbis vicarii, et eiusdem respective nova erectio, necnon confirmatio facultatum dicti eminentissimi vicarii procedendi tam in Urbe quam in suburbis et districtu in causis omnibus civilibus et criminalibus et mixtis, mere laicalibus et profanis, et inter mere laicos, ad instar aliorum Romanae Curiae iudicum ordinariorum, 93.
- CLXXI. Confirmatio decreti Congregationis episcoporum et regularium, quo prohibetur in futurum capitulo generali Ordinis fratrum Eremitarum sancti Augustini Excalceatorum nuncupatorum Congregationis Hispaniae et Indiarum, quominus concedat provincialatus honorarios, 103.
- CLXXII. Confirmatio aliquot novarum constitutionum et ordinationum in capitulo generali Ordinis fratrum Bethlehemitarum in Indiis Occidentalibus anno mcccxxx in civitate Mexicana celebrato pro felici regimine eiusdem Ordinis editarum, 104.

CLXXIII. Confirmatio concordiae inter archiepiscopum et archimandritam Messanae Initae super diversis punctis iurisdictionalibus, 110.

CLXXIV. Tertiariis Ordinis sancti Francisci, iurisdictioni pro tempore existentis ministri generalis Ordinis fratrum Capuccinorum subiectis, indulgentiae confratribus et consororibus B. Mariae de Monte Carmelo concessa communicantur, 122.

CLXXV. Confirmatio regularum et constitutionum Congregationis seu collegii sub titulo *Familiae Iesu Christi*, pro educatione alumnorum Sinenensium et Indorum erecti extra muros civitatis Neapolitanae, 123.

CLXXVI. Confirmato decreto Innocentii XI, quo Graecis cuiuscumque conditionis prohibentur quaestuationes, singulis cardinalibus legatis et nunciis apostolicis, ceterisque ecclesiarum praelatis committitur, eis non tantum litteras quaestuationis, sed quaesitas quoque pecunias adimere, 181.

CLXXVII. Confirmatio decreti Congregationis episcoporum et regularium, quo declaratur licere fratribus Ordinis Minorum sancti Francisci de Paula Congregationis Hispanicae promoveri ad lauream doctoralem et magisterium in publicis universitatibus, in eum finem dumtaxat ut cathedras obtinere et exercere valeant, ita tamen ut huiusmodi assumptio seu promotio nullum penitus gradum neque titulum seu praerogativam in Ordine praedicto inducat, sed circa huiusmodi graduum exclusionem exacte servant quae per constitutiones ipsius Ordinis praescribuntur, 184.

CLXXVIII. Confirmatio constitutionum seu regularum collegii seu seminarii Cor-

sini nuncupati Italo-Graecorum Albanensium in oppido S. Benedicti de Ullano Bisinianensis diocesis erecti, 186.

CLXXIX. Religiosi Congregationis monachorum Silvestrinorum Ordinis sancti Benedicti non possunt recurrere ad tribunalia nisi praevia appellatione ab abbate monasterii ad abbatem generalem, 194.

CLXXX. Indulgentiae, aliàs docentibus et adultis discentibus doctrinam christianam in Urbe ac Italiâ insulisque adiacentibus concessae, ad universos christifideles ubicumque locorum existentes extenduntur, 195.

CLXXXI. Ne de cetero fratres Ordinis Minorum sancti Francisci Capuccini in provinciis Italiae deputari valeant in confessarios ordinarios monialium ab episcopis seu locorum Ordinariis cavet, 197.

CLXXXII. Erectio confraternitatis sub denominatione sanctae Catharinae nationis Senensium in Urbe commorantium in archiconfraternitatem, cum facultate aggregandi, etc. 198.

CLXXXIII. Approbatio et ratificatio sententiae commissariorum apostolicorum et regis christianissimi die xxix maii proximi preteriti latae super quibusdam controversiis civitati Cavallicensi pro parte nonnullorum subditorum eiusdem regis motis circa derivationem aquarum e flumine Druentiae, 199.

CLXXXIV. Indulgentiae pro recitantibus sub horam noctis ad pulsum campanae psalmum *De profundis*, vel semel orationem dominicam et salutationem angelicam cum versiculo *Requiem aeternam*, etc., 201.

CLXXXV. Confirmatio Brevis Benedicti XIII super declaratione quod institutum Congregationis Portugalliae mona-

- chorum Ordinis S. Hieronymi in monachale, 201.
- CLXXXVI. Statutum circa appellationes et recursus religiosorum Congregationis clericorum regularium Pauperum Matris Dei Scholarum Piarum, 202.
- CLXXXVII. Confirmatio edicti publicati ab eminentissimo domino cardinali Corsino, signaturae iustitiae praefecto, in confirmationem privativae iurisdictionis Rotae Macerataensis, 204.
- CLXXXVIII. Unio provinciae Lombardiae Ordinis fratrum Minorum sancti Francisci Capuccinorum cum custodia Mantuanâ, et dismembratio conventus Castellionis Stiverorum a provincia Brixiae, eidem provinciae Lombardiae incorporati cum aliis quinque conventibus Mantuae, terrae Hostiliae, Goiti, Aquaenigrae et Sermini vici, 206.
- CLXXXIX. Indulgentia plenaria a SS. D. N. Clemente PP. XII benigne concessa missionariis Capuccinis Gallis in partibus infidelium existentibus, tum die quo ad ipsa loca missionum pervenerint, tum in articulo mortis, 207.
- CXC. Declaratio, quod Ordinariis locorum in Indiis non liceat visitare confraternitates erectas et erigendas in ecclesiis fratrum Ordinis B. Mariae de Monte Carmelo Excalceatorum nuncupatorum Congregationis Hispaniae, nec eorumdem oratoria ruralia, 208.
- CXCI. Alternativis factis pro nationibus, quibus conflatur provincia Germanica Ordinis Servorum B. M. V., iam approbatis a vicario generali Ordinis eiusdem, robur confirmationis apostolicae adicitur, 209.
- CXCII. Prorogatio indulgentiarum a Romanis Pontificibus concessarum sacramentum Eucharistiae sumentibus in ecclesiis, ubi a patribus Societatis Iesu agitur communio generalis, 212.
- CXCIII. Confirmatio deliberationum circa smultionem commendarum hospitalis S. Ioannis Ierosolymitani alias iam approbatarum a magno magistro Ordinis, 213.
- CXCIV. Confirmatio decreti Congregationis episcoporum et regularium, quo indulget quatenus vicarii generales Congregationis Hispaniae Ordinis fratrum Eremitarum sancti Augustini Discalceatorum nuncupatorum, pro tempore, quo extra capitulum ad dictum munus in vim statutorum Ordinis et Congregationis huiusmodi subintraverint, eisdem privilegiis et exemptionibus, quibus electi in capitulo fruuntur, in posterum fruuntur et gaudeant, 216.
- CXCV. Confirmantur duo decreta edita in conventu generali Congregationis Missionis ad tollenda dubia quae suboriri possent super intelligentia constitutionum eiusdem Congregationis, 217.
- CXCVI. Indulgentia plenaria iis qui aliquam ex ecclesiis clericorum regularium Barnabitarum visitaverint die festo S. Francisci Salesii, 219.
- CXCVII. Confirmatio decreti Congregationis episcoporum et regularium, quo monasterium S. Mariae Sagittarii, Ordinis Cisterciensis, unitum declaratur provinciae Thuseiae eiusdem Ordinis, 220.
- CXCVIII. Indulgentias, alias concessas pro visitantibus ecclesias seu oratoria missionariorum Capuccinorum Gallorum in partibus infidelium existentium, etiam pro animabus christifidelium per modum suffragii applicari posse benigne indulget, 222.

- CXCIX. Confirmatio decreti Congregationis Rituum super approbatione sententiae episcopi Pisaurensis de casu excepto a decretis Urbani VIII sive de cultu immemorabili praestito B. Michelinae, viduae, Pisaurensi, Terti Ordinis sancti Francisci, 223.
- CC. Indulgentia plenaria omnibus christifidelibus, qui orationi Quadraginta Horarum in ecclesiis patrum Capuccinorum interfuerint, 225.
- CCI. Confirmantur capitulationes a parochis almae Urbis factae, et decretum super iisdem a cardinali vicario editum, pro bonâ directione collegii dictorum parochorum, 226.
- CCII. Confirmatio litterarum procuratoris generalis Ordinis Minorum sancti Francisci Discalceatorum, quibus declarat novum conventum et ecclesiam Ss. XL Martyrum de Urbe ad fratres Discalceatos nationis Hispaniae et Indiarum tantum pertinere, 229.
- CCIII. Canonizatio B. Vincentii a Paulo fundatoris presbyterorum saecularium Congregationis Missionis et Societatis Puellarum quae *Charitatis* nuncupantur, 232.
- CCIV. Beatus Ioannes Franciscus Regis, Societatis Iesu presbyter, sanctorum confessorum canonice adscribitur, 246.
- CCV. Beata Catharina Flisca Adurna sanctarum viduarum albo adnumeratur, designata ad eius festivitatem annuam peragendam die xv septembris, 261.
- CCVI. Canonizatio B. Iulianae Falconeriae Terti Ordinis Servorum B. Mariae Virginis fundatricis, 274.
- CCVII. Beatificatio servi Dei Iosephi a Leonissâ sacerdotis expresse professi Ordinis fratrum Minorum S. Francisci Capuccinorum, 287.
- CCVIII. Confirmatio decreti capituli generalis Ordinis Carmelitarum Excalceatorum super divisione et novâ assignatione conventuum, cum impositione perpetui silentii, 288.
- CCIX. Ampliatio indulti Gregorii XV, nempe quod fratres Carthusiani non solum erigere valeant oratoria et altaria in eorum grangiis et domibus in quibus residebunt sacerdotes dicti Ordinis, sed etiam quod ad huiusmodi effectum sufficiat quod dicta oratoria, etc., visitata et approbata sint a patribus visitoribus eiusdem Ordinis, 290.
- CCX. Nonnullae ordinationes pro administratione bibliothecae et archivii conventus S. Mariae de Arâcaeli de Urbe Ordinis fratrum Minorum sancti Francisci de Observantiâ nuncupatorum, 293.
- CCXI. Indulgentia aliâs concessa visitantibus ecclesias Congregationis Missionis et Puellarum Charitatis die xxvii septembris applicatur die xix iulii B. Vincentio a Paulo sacro, 295.
- CCXII. Confirmatio chirographorum super distributione salis a *cartella* nuncupatâ in civitate Anconitanâ ac illius statu et comitatu faciendâ, 296.
- CCXIII. Restitutio seu nova erectio provinciae regni Hiberniae fratrum Ordinis B. Mariae de Monte Carmelo *strictioris observantiae* dudum reviviscentis, cui adiudicantur omnes conventus nunc existentes et in posterum recuperandi, 305.
- CCXIV. Extensio et ampliatio constitutionis, quae incipit *In supremo iustitiae solio*, contra homicidas editae pro Statu Ecclesiastico, ad regna Hispaniarum, 308.
- CCXV. Patriarchae pro tempore ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis perpetuo conceditur, quod, in concistorio im-

- med. sequenti ad eius electionem ac provisionem de patriarchatu, ad cardinalitiam dignitatem promoveri debeat, 243.
- CCXVI. Extensio indulti, magistris generalibus Ordinis B. M. V. de Mercede Redemptionis Captivorum a Sede Apostolicâ concessi celebrandi in privatis oratoriis conventuum dicti Ordinis in quibus eos commorari contigerit, ad exgenerales eiusdem Ordinis, 315.
- CCXVII. Confirmatio quarundam resolutionum Congregationis particularis pro expositis archihospitalis S. Spiritus in Saxiâ de Urbe, 316.
- CCXVIII. Quarta pars reddituum, a patriarchali, archiepiscopalibus et episcopalibus ecclesiis in Portugalliae et Algarbiorum regnis existentibus aliâs dismembrata favore dignitatum, canonicorum et beneficiarum patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis occidentalis a felicitis recordationis Clemente XI et Innocentio XIII summis Pontificibus, ampliatur ad tertiam dictorum reddituum partem, aliique ecclesiastici redditus pro eorundem dignitatum et canonicorum decentiori sustentatione et patriarchalis ecclesiae manutentione perpetuo applicantur, 317.
- CCXIX. Reservatio iuris patronatus et praesentandi ad omnes dignitates ac canonicatus et praebendas ceteraque beneficia cathedralis Ulyssiponensis orientalis serenissimo principi Ioanni eiusque successoribus Portugalliae et Algarbiorum regibus, 338.
- CCXX. Congregationi et collegio sacrae Familiae Iesu Christi Neapolitanae, eorumque ecclesiae, presbyteris saecularibus, alumni et convictoribus et personis, nunc et pro tempore existentibus, communicantur privilegia, praerogativae, facultates, favores, gratiae, indulgentiae, exemptiones et indulta Congregationibus Oratorii S. Philippi Nerii et Piorum Operariorum concessa, ac omnes et singulae indulgentiae ecclesiae S. Mariae ad Martyres vulgo *della Rotonda*, 347.
- CCXXI. Extensio indulti, ab Urbano VIII pro alumni et convictoribus collegii Propagandae Fidei concessi, ad alumnos et convictores pro Sinensibus et Indiis collegii Sacrae Familiae Iesu Christi in civitate Neapolitanâ erecti, 349.
- CCXXII. Impositio datii scutorum decem pro quolibet centenario super mercibus sericis, quae ex alienis intra Statum Ecclesiasticum adportari contingat, 351.
- CCXXIII. Dignitatibus et canonicis nunc et pro tempore existentibus patriarchalis ecclesiae Ulyssiponensis conceditur licentia celebrandi seu celebrari faciendi quotidie etiam per horam ante auroram et per horam post meridiem unam missam in privatis domorum suarum existentibus oratoriis in sui ac familiae praesentia, 355.
- CCXXIV. Confirmatio et innovatio litterarum Eugenii IV circa transitus monachorum Ordinis Cisterciensis Congregationis Portugalliae ad alios Ordines, 356.
- CCXXV. Decretum ut novae aedes, ad conventum B. M. V. de Nive de Pallazola Ordinis fratrum Minorum de Observantia constructae, nulli alio usui applicari possint nisi ad hospitium benefactorum eiusdem Ordinis, 358.
- CCXXVI. Prohibitio, ne confessarii absolvere possint ministros S. Officii Inquisitionis revelantes et publican-

tes illius acta, tractata et gesta in regnis Portugalliae et Algarbiorum, 360.

CCXXVII. Confirmatio decreti Congregationis episcoporum et regularium, per quod declaratur, quod generalis Ordinis fratrum B. Mariae Virginis de Mercede Redemptionis Captivorum canonice ac rite electus confirmationem et approbationem a Sede Apostolica obtinere minime teneatur, 361.

CCXXVIII. Ampliatio litterarum Pauli III, ad favorem presbyterorum confessoriorum per custodes et confratres deputatorum confraternitatis hospitalis B. Mariae de Gratia, Consolatione, et Porticu nuncupatae almae Urbis concessarum, ad quoscumque presbyteros, qui, audiendarum confessionum causâ, ad archihospitale S. Spiritus in Saxia solent accedere, 363.

CCXXIX. Condemnatio Societatis seu conventicularum, vulgo *De' liberi muratori*, aut *Des francs massons*, sub poenâ excommunicationis ipso facto incurrendâ, eius absolutione, excepto mortis articulo, Summo Pontifici reservatâ, 366.

CCXXX. Confirmatio decreti Congregationis particularis a Sanctissimo deputatae, per quod decernitur quod procurator generalis Congregationis Doctrinae Christianae Avenionensis in domo provinciae Romanae residere debeat, 368.

CCXXXI. Confirmatio Brevis Urbani VIII confirmatorii aliorum a Pio II, Iulio II et Sixto V editorum, nonnulla privilegia et indulta communitati et hominibus civitatis Beneventanae concessa continentium, praesertim quod primae et secundae instantiae causarum temporalium vel civilium ex-

tra dictam civitatem neci non possint, 369.

CCXXXII. Confirmatio duorum Brevium Benedicti XIII, necnon nonnullarum conventionum inter provincias Galliae et Romanam Congregationis clericorum saecularium Doctrinae Christianae initarum, 372.

CCXXXIII. Investitura regni utriusque Siciliae et Hierusalem pro serenissimo Carolo Borbonio Infante Hispaniarum, 377.

CCXXXIV. Ut quatuor dumtaxat antiquiores doctrinarii seu parochi provinciae SS. Nominis Iesu in regno Mexicano Ordinis fratrum Eremitarum sancti Augustini, omnibus privilegiis et indultis, quibus illi, qui priores provinciales provinciae et Ordinis praedictorum fuerunt, fruuntur et gaudent, frui et gaudere valeant, 387.

CCXXXV. Variae ordinationes pro restituendâ et conservandâ in hospitali S. Ioannis Hierosolymitani consuetudine armandi naves contra piratas, 389.

CCXXXVI. Indultum, ut tres dumtaxat fratres Ordinis eremitarum S. Augustini provinciae SS. Nominis Iesu antiquiores doctores graduati in universitate Mexicanâ, qui condiciones ad praemissum effectum praescriptas adimpleverint, privilegiis magistrorum dicti Ordinis uti valeant, 392.

CCXXXVII. Confirmatio constitutionum fratrum Discalceatorum Ordinis SS. Trinitatis Redemptionis Captivorum Congregationis Hispaniae, 394.

CCXXXVIII. Confirmatio decreti capituli generalis canonicorum regularium Ordinis sancti Antonii Viennensis, per quod statuitur quod laici dicti Ordinis professionem post quatuor annos tantum emittere possint, 484.

- CCXXXIX. Confirmatio decreti Congregationis de Propagandâ Fide super facultate praefecto apostolico missionum Mequinez Marochii concessâ instituendi procuratorem dictarum missionum in oppido Matriti, 485.
- CCXL. Confirmatio quorundam decretorum pro felici regimine Congregationis Cassinensis Ordinis sancti Benedicti iussu capituli generalis editorum, 487.
- CCXLI. Confirmatio constitutionum in formâ communi Ordinis fratrum sancti Ioannis Dei Congregationis Hispaniae, 493.
- CCXLII. Tredecim sextis feriis a S. Francisco de Paulâ institutis, vulgo ut *La divozione de' tredici venerdì*, pia exercitia ab eodem S. Francisco proposita facientibus, indulgentia plenaria concessa, 494.
- CCXLIII. Moderatio cuiusdam decreti particularis Congregationis super eiectione religiosorum Ordinis fratrum Eremitarum S. Augustini provinciarum Indiarum, 496.
- CCXLIV. Facultas superioribus Ordinis Cisterciensis Congregationis Portugalliae applicandi spolia monachorum collegio universitatis Colimbriensis pro dissolvendo aere alieno, 498.
- CCXLV. Abrogatis litteris Clementis Papae XI super servitio ecclesiae patriarchalis Ulyssiponensis occidentalis editis, et ab Innocentio Papa XIII in formâ *Rationi congruit* expeditis, necnon kalendario in illis inserto, patriarchae Ulyssiponensi novi kalendarii conficiendi ac novam servitii formam constituendi, praevis tamen consilio et consensu Portugalliae et Algarbiorum regis, auctoritas conceditur, 499.
- CCXLVI. Confirmatio decreti Congregationis episcoporum et regularium circa religiosos Ordinis fratrum Eremitarum S. Augustini provinciae Mexicanæ ad aliôs Ordines confugientes, 509.
- CCXLVII. Confirmatio institutionis missionum ab archiepiscopo Salisburgensi in civitate Salisburgensi factae, ac regularum ac legum pro missionariis conditarum, et a Congregatione de Propagandâ Fide approbatarum, 511.
- CCXLVIII. Facultas moderno et pro tempore existenti collegii Italo-Graeci *Corsini* nuncupati rectori, ut illius alumnos et convictores ad lauream doctoralem in philosophiae et sacrae theologiae studiis promoveat, 535.
- CCXLIX. Confirmatio decreti Congregationis episcoporum et regularium super deputatione definitorum quocumque modo deficientium post celebratum capitulum provinciale Ordinis fratrum eremitarum sancti Augustini Excalceatorum nuncupatorum Congregationis Hispaniae, 537.
- CCL. Confirmatio decreti Congregationis episcoporum et regularium, quo declaratur electionem regentis provincialis Ordinis eremitarum sancti Augustini Congregationis Hispaniae, in casibus mortis civilis seu naturalis alicuius ex prioribus provincialibus, esse faciendam a vicario generali unâ cum definitoribus provincialibus ad formam declarationis cardinalis Sauli anno MDCXXXIII factae, 539.
- CCLI. Confirmatio decreti sacrae Congregationis Rituum super electione B. M. V. Immaculae in patronam principalem regni Siciliae ultra Pharus, 541.
- CCXLII. Confirmatio capituli generalis Ordinis Cisterciensis anno MDCCXXXIX celebrato, 542.

- CCLIII. Decretum de ordine servando in recursibus faciendis a fratribus Ordinis sancti Francisci Minorum Conventualium, 543.
- CCLIV. Confirmatio et innovatio litterarum Pauli V, Urbani VIII, ac etiam S. S. contra transeuntes de Ordine B. Mariae de Monte Carmelo Congregationis Hispaniae ad alium Ordinem, 545.
- CCLV. Declaratio quod lectio Sacrae Scripturae, in ecclesiâ S. Augustini de Urbe Ordinis fratrum Eremitarum habenda, inter cetera requisita pro obtinendo gradu magisterii comprehendatur, 549.
- CCLVI. Iubilaeum pro christifidelibus Italiae et insularum adiacentium divinum opem contra Turcas et pestem implorantibus, 552.
- CCLVII. Commissio archiepiscopo Mexicano, ut declaret Tertiarios Ordinis fratrum B. Mariae de Monte Carmelo Discalceatorum nuncupatorum Congregationis Hispaniae aliis Ordinibus adscriptos, omnium Ordinum promiscue indulgentiis uti posse, 555.
- CCLVIII. Subiectio militiae B. Mariae de Montesa consilio Ordinum a rege catholico instituto, 557.
- CCLIX. Confirmatio nonnullarum conventionum pro provinciâ Lombardiae Congregationis clericorum regularium sancti Pauli Decollati Barnabitarum nuncupatorum, 559.
- CCLX. Confirmatio decreti Congregationis indulgentiarum sacrarumque reliquiarum, quo declaravit non spectare nec spectasse ad episcopum Terulensem facultatem benedicendi scapularia seu parvos habitus B. Mariae de Monte Carmelo, non obstante consuetudine, et aggregatos recurrere debere ad superiores Ordinis pro novâ aggregatione, 566.
- CCLXI. Ut in priorem generalem Ordinis eremitarum sancti Augustini eligi possint ii qui officium procuratoris vel assistentis generalis exercuerint, nullâ expectatâ temporis vacatione, 568.
- CCLXII. Confirmatio decreti capituli generalis Ordinis eremitarum sancti Augustini super prohibitione receptionis de *mulatti* et *mestizi* in fratres provinciae Mexicanae eiusdem Ordinis, 569.
- CCLXIII. Confirmatio censurarum Sixti V ac nonnullarum ordinationum pro Bibliothecâ Vaticanâ Apostolicâ, 571.
- CCLXIV. Confirmatio ordinationis abbatis generalis Ordinis canonicorum regularium sancti Antonii Viennensis super prohibitione gestandi fictitiam caesariem, 576.
- CCLXV. Confirmatio regularum pro monachis Melchitis nuncupatis Congregationis sancti Ioannis Baptistae in Soairo in Monte Libano Romae degentibus ad ecclesiam S. Mariae in Domnicâ, quae ecclesia etiam cum omnibus dependentiis eisdem conceditur, 579.
- CCLXVI. Confirmatio nonnullorum decretorum pro collegio Anglorum nuncupato de Urbe, 583.
- CCLXVII. Breve Urbani VIII, quo provinciae Lusitanae Ordinis fratrum Minorum sancti Francisci de Observantiâ reformatorum nuncupatorum fratribus prohibetur transitus ad alias provincias eiusdem Ordinis, studendi causâ, extenditur ad provinciam S. Antonii in Brasiliâ ipsius Ordinis, 589.
- CLXVIII. Irritatio electionis Petri Ioannis Méindarts in pseudo-archiepiscopum Ultraiectensem, qui censuris irretitus suspensusque declaratur, additâ prohibitionem se in archiepi-

- scopum consecrari faciendi, eaque exercendi quae sunt Ordinis, 591.
- CCLXIX. Ut Tertiarii quorumvis Ordinum regularium, Tertio Ordini B. Mariae de Monte Carmelo adscripti, indulgentiis et gratiis spiritualibus promiscue uti valeant, 593.
- CCLXX. Nonnulla in constitutione, quae incipit *In supremo iustitiae solio*, contra homicidas pro Ecclesiastica Ditione iam edita, ad dominium et ditiones tam Terrae firmae quam regni Corsicae et insulae Caprariae Reipublicae Ianuensis respective extenduntur, 594.
- CCLXXI. Regi christianissimo eiusque successoribus conceditur indultum nominandi ad beneficia in ditionibus Lotharingiae et Bari, 600.
- CCLXXII. Confirmatio regulae et constitutionum monachorum Maronitarum Ordinis sancti Antonii abbatis Congregationis sancti Isaiae in Syria, 604.
- CCLXXIII. Breve Alexandri VII, quo usus transeundi ad aliam religionem, provincialis Ss. Ioannis Baptistae et Iosephi fratrum Ordinis Minorum sancti Francisci de Observantia Discalceatorum nuncupatorum concessus, abrogatur, extenditur ad provinciam S. Antonii in Brasiliâ eiusdem Ordinis, 662.
- CCLXXIV. Damnatio et prohibitio libri gallico idiomate impressi sub titulo *Histoire du livre des réflexions morales sur le Nouveau Testament*, et de la Constitution Unigenitus. A Amsterdam, 664.
- CCLXXV. Damnatio et prohibitio cuiusdam libri gallico idiomate impressi sub titulo *Histoire du Concile de Trente écrite en italien par Frà Paolo Sarpi de l'Ordre des Servites, et traduite de nouveau en françois avec des notes critiques, historiques et théologiques par Pierre François le Courayer, docteur en théologie de l'université d'Oxford, et chanoine régulier et ancien bibliothécaire de l'abbaye de S. Genéviève de Paris*. A Amsterdam, chez I. Wetstein, et G. Smith, MDCCXXXVI, 665.
- CCLXXVI. Damnatio et prohibitio cuiusdam folii gallico idiomate impressi, cui titulus: *Arrest de la Cour du Parlement, portant suppression d'un imprimé intitulé Lettres de plusieurs évêques sur l'obligation de priver de l'oblation du sacrifice de la messe et des suffrages de l'Eglise ceux qui meurent appellants de la Constitution Unigenitus*. A Ypres, chez Pierre Jacques Rave, imprimeur de monseigneur l'évêque, rue Messine, 1739, avec approbation. A Paris, chez Pierre Simon, imprimeur du Parlement, rue de l'Harpe à l'Hercule 1739, 667.
- CCLXXVII. Approbatio nonnullarum resolutionum Congregationis particularis a Sanctissimo deputatae super registris in officiis notariorum sacrae Rotae auditorii emanatarum, 668.

FINIS TOMI VIGESIMIQUEARTI.

V. ex delegatione D. D. Archiepiscopi Taurin.

P. CLODOVAEUS A COSTILIOLIS Ord. Min.

ERRATA-CORRIGE

HUIUS NOSTRAE EDITIONIS.

IN TEXTU:

| | | | |
|-------------------------|------------------------------|------|------------------------------------|
| Pag. 308 b linea 9 ult. | suffragetur 1 | Lege | suffragetur |
| " 91 a " 4 | solitis | — | solita |
| " 91 a " 14 | solitis | — | solitis |
| " 115 b " 17 ult. | discrepationes | — | disceptationes |
| " 181 b " 15 ult. | custodiae sancti Francisci 9 | — | custodiae fratrum sancti Francisci |
| " 187 a " 6-7 | il quale ancora porti | — | dal quale ancora consti |
| " 218 b " 5 ult. | interverint | — | intervenerint |
| " 229 a " 1 | servet atque; ex | — | servet, atque ex |
| " 230 b " 8 ult. | comparandi | — | comparandis |
| " 317 a " 3-4 | respectivae | — | respective |
| " 394 b " " | CCXXVII | — | CCXXXVII |
| " 516 a " 15 | Gollingqua 3 | — | Golling |
| " 538 a " 7-8 | definitorium 4 | — | definitorium |
| " 542 a " 7 ult. | CCXLI | — | CCLII |
| " 583 a " 8 | nuncupatorum | — | nuncupato |

IN NOTIS:

| | | | |
|------------------|--------------|------|--------------|
| Pag. 20 a nota 1 | dedicationum | Lege | dedicationem |
| " 24 b " 1 | instituti | — | instituti |
| " 81 b " 1 | pro ab | — | pro ad |
| " 522 b " 3 | ut | — | est |
| " 564 b " 5 | qua | — | quo |
| " 589 b " 2 | aditimus | — | abitimus |

1 Ex ed. Mainard.

2 Ex ed. Main.

3 Ex ed. Main.

4 Ex ed. Main.

Typothetarum specimen

repositis curis confectis et revisis I. B. Duseo Taurinensis.

DEPOSITI.

ROMA. MARIETTI Cav.^e PIETRO di GIACINTO
Stamperia poliglotta *De Propaganda*
Fide.

— CAPO-BIANCHI PIETRO, *via dell'Impresa*

TORINO. A. VECEO E COMP., Editori, *via Carlo*
vour, 15.

— MARIETTI Cav.^e PIETRO di GIACINTO, Ti-
pografo-Editore, *Piazzetta della B.V.*
degli Angeli.

— MARIETTI GIACINTO, Libraio, *piazza S.*
Carlo.

— BOCCA FRATELLI, Librai di S. M., *via*
Carlo-Alberto, 3.

— LOESCHER ERMANNO, Libraio, *via Carlo*
Alberto, 5.

BELGIO e OLANDA. H. CASTERMAN, Tipo-
grafo Vescovile a Tournay (Belgio).

FRANCIA. P. M. LAROCHE, Libraio, gerente
di H. CASTERMAN, *via Bonaparte, 66.*
Parigi.

GERMANIA e AUSTRIA, Deposito cen-
trale:

— FEDERICO PUSTET, Tipografo di S. San-
tità a Ratisbona (Baviera).

— G. FRANZ, Libraio a Monaco di Baviera.

— L. A. KITTLER, Lipsia (Sassonia), Quer-
strasse, 34.

— PATERNOLI GIOVANNI, Libraio a Gorizia
(Illiria).

— WODISTZKA, Libraio a Zara (Dalmazia).

INGHILTERRA. BURNS, LAMBERT ET OATES,
Librai a Londra.

IRLANDA e SCOZIA. MURPHY, Libraio a
Dublino e Filadelfia.

NAPOLI. PELLERANO AGOSTINO, *strada Fio-*
rentini, 26, piano 4.º

PORTOGALLO. SILVA JUNIOR e C., Librai,
piazza D. Pedro, 20 a 25, Lisbona.

SPAGNA. MICHELE OLAMENDI, Libraio, *Calle*
de la Paz, Madrid.

SVIZZERA. RÄBER FRATELLI, Lucerna (Can-
tone Lucerna).

AMERICA. Deposito centrale: F. PUSTET,
Tipografo della S. Sede a New York
e a Cincinnati.

— MURPHY, Libraio a Filadelfia.

DÉPÔTS.

ROME. MARIETTI Chev. PIERRE de HIACYNTHÉ,
Imprimerie polyglotte *De Propaganda*
Fide.

— CAPO-BIANCHI PIERRE, *rue dell' Impresa.*

TURIN. A. VECCO ET C., Éditeurs, *rue Cavour, 15.*

— MARIETTI Chev. PIERRE de HIACYNTHÉ,
place de Notre Dame aux Anges.

— MARIETTI HIACYNTHÉ, Libraire, *place*
St-Charles.

— BOCCA FRÈRES, Libraires de S. M., *rue*
Charles Albert, 3.

— LOESCHER E., Libraire, *rue Charles Al-*
bert, 5.

ALLEMAGNE et AUTRICHE. Dépôt cen-
tral:

— FR. PUSTET, Typographe du St-Siège à
Ratisbone (Bavière).

— G. FRANZ, Libraire à Munich (Bavière).

— L. A. KITTLER, Leipsik (Saxe), Quer-
strasse, 34.

— PATERNOLI JEAN, Libraire, Gorice (Illyrie).

— WODISTZKA, Libraire, Zara (Dalmatie).

ANGLETERRE. BURNS, LAMBERT ET OATES,
Libraires à Londres.

BELGIQUE et HOLLANDE. H. CASTERMAN,
Imprimeur de l'Évêché, *rue aux Rats,*
20, à Tournay (Belgique).

ESPAGNE. MICHEL OLAMENDI, Libraire, *Calle*
de la Paz, Madrid.

FRANCE. P. M. LAROCHE, Libraire gérant
de H. CASTERMAN, *rue Bonaparte, 66,*
Paris.

IRLANDE et ECOSSE. MURPHY, Libraire à
Dublin et Philadelphia.

NAPLES. PELLERANO AUGUSTIN, *rue Fioren-*
tini, 26, 4.^e étage.

PORTUGAL. SILVA JUNIOR ET C., Libraires-
Éditeurs, *place D. Pedro, 20 à 25,*
Lisbonne.

SUISSE. RÄBER FRÈRES à Lucerne (Canton
de Lucerne).

AMÉRIQUE. Dépôt central: FR. PUSTET,
Typographe du St-Siège à New-York
et à Cincinnati.

— MURPHY, libraire à Philadelphie.